टेलीफोन न 74250 कांगड़ी

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक

वर्ष 17 अंक 1, 2 वैशाख सम्वत 2042 तदनुसार 14 अप्रैल 1985 दयानन्दाब्द 161। एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) विशेषांक



गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का प्रसिद्ध पुस्तकालय जहां आर्य समाज के इतिहास के विषय में अमूल्य साहित्य एकत्रित किया गया है।

इस विपुल पुस्तकालय का लाभ केवल यहां के छात्र- अध्यापक वर्ग ही नहीं उठा रहे बल्कि हरिद्वार क्षेत्र के रहने वाले सभी बुद्धिजीवी विद्या उपासक सरस्वती के इस पुस्तक मन्दिर का लाभ उठाते हैं। देश के अन्य विश्व विद्यालयों में शोध कर रहे अनेक छात्र भारतीय संस्कृति एवं ऋषि दयानन्द के तत्व दर्शन के अध्ययन हेतु इस पुस्तकालय का उपयोग उठाने सतत आते रहते हैं

आज से लगभग 84 वर्ष पूर्व सन 1900 में स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधीन हरिद्वार से पांच मील दूर गंगा के पूर्वीय तट पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। जो 20-22 वर्ष तक वहां खूब फलता फूलता रहा तथा अनेक शाखाओं के रूप में उसका विस्तार अन्य राज्यों में भी हो गया। किन्तु सन 1924 में गंगा की बाढ़ में उसके भवन प्राय नष्ट हो गए जिसके परिणाम स्वरूप अब यह संस्था हरिद्वार से तीन मील दूर दक्षिण दिशा में गंगा नहर के किनारे (कनखल ज्वालापुर रोड पर) एक विस्तृत रमणीक भू भाग पर स्थित है।

गुरुकुल का आदर्श

लेखक—श्री स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज



आचार्य और शिष्य दोनो के मिलाप से 'आचार्य-कुल' अथवा 'गुरु-कुल' बनता है। उस कुल मे सावित्री और पिता आचार्य है। मनु-स्मृति मे लिखा है—

मातुरग्रेऽधि जनन द्वितीय मौञ्जिबन्धने।
तृतीय यज्ञदीक्षाया, द्विजस्य श्रुति-चोदनात ॥
तत्र यद् ब्रह्म जन्मास्य, मौञ्जिबन्धन चिन्हितम्।
तत्रास्य माता सावित्री, पितात्वाचार्य उच्यते ॥

प्रथम जन्म माता पिता से होता है। दूसरा जन्म आचार्य कुल मे होता है और तीसरा यज्ञ दीक्षा से। मनु महाराज कहते हैं कि माता पिता तो जीवन-विद्या के ज्ञान से अनभिज्ञ होने के कारण काल वश होकर भी सन्तानोत्पत्ति कर देते हैं परन्तु वह जन्म अजर और अमर है जो ब्रह्मचारी को विद्या के गर्भ मे रख कर आचार्य देता है। अत विद्या आचार्य से मिलती है अत जन्म-दातृ माता की अनुपस्थिति मे माता का स्थान भी उसी को ग्रहण करना पड़ता है। अथर्ववेद काण्ड 11, अध्याय 3, सूक्त 5 के मन्त्र 3 मे आचार्य का लक्षण और उसका कर्तव्य इस प्रकार बतलाया है—

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिण कृणुते गर्भमन्त।
त रात्रीस्तिस्र उदरे बिभर्ति त जात द्रष्टुमभिसयन्ति देवा ॥

'ब्रह्म प्राप्ति की इच्छा रखने वाले ब्रह्मचारी को आचार्य अपने समीप कर के उसे गर्भ रूप मे धारण करता है उस को तीन रातो तक उसी गर्भ मे रखता है तब उसके उत्पन्न होने (द्वितीय बार आत्मिक जन्म लेने) पर उस को देखने के लिए विद्वान आते हैं।

वे तीन रात्रियें क्या हैं? 24 वर्ष का ब्रह्मचर्य पूर्ण कर वसु ब्रह्मचारी आचार्य के सामने बद्धाञ्जलि खड़ा होता है। आचार्य घर जाने की अनुमति देता है। श्रद्धा से पूरित वसु ब्रह्मचारी कहता है-भगवन्! अभी एक रात्री ही समाप्त हुई है केवल उत्तम गुणोका अपने अन्दर धारण करना ही सीखा है। अभी अपरिपक्व हूं, प्रलोभन मुझे सत्य मार्ग से विचलित कर सकते हैं, मुझे विशेष साधन सम्पन्न होने का अवसर दीजिए। शिष्य की असीम श्रद्धा को देख कर गुरु के हृदय मे वचन निकलता है— 'एवमस्तु।

32 वर्ष की आयु तक तप पूर्वक विद्याभ्यास करता हुआ नैष्ठिक ब्रह्मचारी रुद्र संज्ञा का अधिकारी बनता है। उस समय वह ऐसा शक्ति सम्पन्न होता है कि विषय पाप वासनाये तथा सम्पूर्ण दुर्वृत्तियें उस की बनावट से टकरा-टकरा कर छिन्न भिन्न हो जाती हैं। आचार्य फिर घर लौटने की अनुमति देता है। शिष्य फिर दोनो हाथ जोड़ कर आर्त्त-स्वर से निवेदन करता है— भगवन्! अभी अविद्यारी तीसरी रात सामने है, आक्रमण पर आक्रमण हो सकते हैं। अभी तेज स्वरूप से तेज धारण नहीं कर सका हूं। कुछ काल और आश्रम-निवास की आज्ञा दीजिये।

तीसरी रात भी समाप्त हुई। हृदय के अन्दर तेज ही तेज है। मुख की कान्ति 'आदित्य' ब्रह्मचारी बनने की साक्षी है। सावित्री के गर्भ से बाहर निकल कर आचार्य को प्रणाम करता है। ब्रह्मचारी के मस्तिष्क को सूर्य की कान्ति देदीप्यमान देख कर आचार्य आशीर्वाद देते हैं— तू अब 'आदित्य' है, तेरा प्रकाश स्थिर होगा। अन्धकार का साहस न होगा कि तेरे मार्ग को काट सके। जा, देवमण्डल मे सम्मिलित होजा। तब देवमण्डल उस का प्रेम पूर्वक स्वागत करता है।

आचार्य कैसा होना चाहिए यह ऊपर के प्रमाणो से कुछ 2 समझ मे आने लग गया है। परन्तु एक बात स्पष्ट प्रतीत होती है। शान्त बत्ती को जलती हुई बत्ती से ही जला कर प्रकाशमय बना सकती है, बुझी हुई बत्ती स चिराग नहीं जल सकता इसीलिए उक्त सूक्त के 17वें मन्त्र मे कहा है—

आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते।

आचार्य को पूर्ण ब्रह्मचारी होना आवश्यक है। इतना ही नहीं, उसके लिए यजुर्वेद में कहा है—

ब्राह्मणास पितर सोम्यास शिवे नो द्यावा पृथिवी अनेहसा।
पूषा न पातु दुरिता ऋतावृधो रक्षा माकिर्नो अघशस ईशत् ॥

अध्याय 29। म 47।

(सोम्यास) उत्तम, आनन्द कारक गुण धारक (ऋतावृध) सत्य को बढ़ाने वाले पितर) रक्षक, पालक (न) हमारे लिए (अनेहसा) सदैव रहने वाले (द्यावा पृथिवी) प्रकाश युक्त तथा अप्रकाशित लोक (शिवे) कल्याणकारी हो। (पूषा) पुष्टि कारक बल प्रदाता परमात्मा (न) हमारी (दुरिता) दुर्व्यसनों दोषों से (पातु) रक्षा करे। (न) हम पर (अघशस) पाप के प्रशसक (माकि ईशत) मत समर्थ हो।

यह भाव है जो हृदय में धारण कर के ब्रह्मचारी आचार्य के सम्मुख आने का साहस करे और गुरुकुल में प्रवेश करते समय गुरु से नीचे लिखी प्रार्थना करे—

ऋचीते परिवृङ्ग्धि नोऽश्माभवतु नस्तनू।
सोमो अधिब्रवीतु नोऽदिति. शर्म यच्छतु ॥

य 29। म0 49।

पूज्य आचार्य! अपने तेज से हमारे मानसिक और शारीरिक रोगों को सब ओर से दूर कीजिए। हमारा शरीर पत्थर के तुल्य दृढ़ हो। हमें मृत्यु और अमृत का रहस्य समझाइये और हमारे लिए कल्याण का विधान कीजिए।

आचार्य कौन होना चाहिए ?

1, जिसमें न केवल रक्षक पिता के ही गुण हों प्रत्युत जो माता के तुल्य शिष्य के सब भावों को समझ कर अपने प्रेम की गोद उसको अर्पण कर सके। माता जिस प्रकार अपनी सन्तान पर अपने आप को न्योछावर कर सकती है और जिस प्रकार वह सन्तान के सूक्ष्म भाव को समझ कर उसका संशोधन कर सकती है उसी प्रकार आचार्य में भी वह योग्यता साधारण बन जानी चाहिए। जिस विद्वान गृहस्थ पर अपनी सन्तान के माता के अभाव में तीनों बोझ पड़ चुके हों और जो उस परीक्षा में उत्तीर्ण हो चुका हो वही ब्रह्मचारी को अपनी ओर आकर्षित करने का साहस कर सकता है।

2, जो स्वय आदित्य-पद को प्राप्त होकर स्वाभाविक अन्धकार को दूर नहीं कर सकता वह आचार्य का कर्तव्य पूर्ण-तया पालन नहीं कर सकेगा। ब्रह्मचारी के सम्पूर्ण अंगों और प्रत्यगों का निरीक्षण प्रतिदिन करना आचार्य का कर्तव्य है। उस के अन्दर ऐसा दृढ़ सकल्प होना चाहिए जिससे बिना प्रयास के ही ब्रह्म-चारी के व्यसन दूर हो सकें।

3 आचार्य के इस तेज के ही प्रभाव से ब्रह्मचारी के मानसिक और शारीरिक रोग दूर हो सकते हैं। आचार्य के हृदय-मन्दिर के कपाट ब्रह्मचारी के लिए हर समय खुले रहने चाहियें।

4, ब्रह्मचारी अपने शरीर को चट्टान की तरह दृढ़ बनाना चाहता है। आचार्य का शरीर और मन अपने शिष्य के लिए अडोल होना चाहिए। उसको इतना साधन सम्पन्न होना चाहिए कि ब्रह्मचारी की आवश्यकताओ के अति-रिक्त और कोई चिन्ता उसे अपनी ओर खींच न सके।

5. मानसिक शिक्षा तो वर्तमान सासारिक विद्यालयों मे अच्छी से अच्छी मिल सकती है। ससार का दिखलावा उससे पूरा हो सकता है। परन्तु गुरुकुल में यदि कोई विशेषता है तो यही कि ब्रह्मचर्य की रक्षा से ब्रह्मचारी सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने का बल लाभ करता है। 'आदित्य' आचार्य शिष्य के अन्दर ऐसा प्रकाश भर देता है कि बिना परिश्रम के सहज मे ही जीवन और मृत्यु के प्रश्न उसके लिए हल हो जाते हैं। अत आचार्य, वेद तथा वेदांग का रहस्य सहित, ज्ञाता होना आवश्यक है।

साराश यह कि एक राष्ट्र का कल्याण इतना राष्ट्रपति और उसके अमात्यों की शक्ति पर निर्भर नहीं होता जितना कि राष्ट्र के आचार्यों के सदा-चार और तपोबल पर। जब तक ऐसा आचार्य न मिले और जब तक ब्रह्म-चारियो के साथ उस का निर्विघ्न सम्बन्ध न रहे तब तक गुरुकुल का दोष भाव ही रहता है। यदि किसी गुरुकुल को आदर्श तक पहुंचाना हो तो आचार्य और उपा-ध्यायो के अन्दर ये उच्च-भाव उत्पन्न होने चाहिएं।

—

सम्पादकीय—

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का महत्व

भारत सरकार यह विचार कर रही है कि देश की शिक्षा प्रणाली में क्या संशोधन किया जाए कि हमारे युवकों में न केवल देश सेवा की भावना पैदा हो अपितु अपने आपको वह देश के समर्पित नागरिक भी बना सकें। सरकार यह अनुभव करती है और यह है भी ठीक कि जो शिक्षा आज दी जा रही है उसका कोई सन्तोषजनक परिणाम नहीं निकल रहा। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य युवक वर्ग में एक ऐसी भावना पैदा करना होता है कि वह जब अपनी शिक्षा को समाप्त कर ले तो अपने आपको अपने देश धर्म और समाज की सेवा के लिए अर्पित कर सकें। कोई व्यक्ति चाहे कहीं और कोई काम करता है वह अपने व्यवहार से दूसरों पर अपना प्रभाव छोड़ सकता है। परन्तु यह उसी स्थिति में जब कि उसमें यह भावना भी हो कि उसका दूसरों के प्रति, अपने देश धर्म और समाज के प्रति भी कुछ कर्त्तव्य है। जो व्यक्ति अपने आपको देश, धर्म या समाज की सेवा के लिए अर्पण कर देते हैं उनमें भी यही भावना होती है और कई बार वह इतनी अधिक हो जाती है कि वह बड़े से बड़ा त्याग करने के लिए तैयार हो जाते हैं। हमने अपने जीवन में ही देखा है कि कई व्यक्ति अपने देश के लिए बलिदान हो गए, कई अपने धर्म के लिए। उनमें से कई वह भी हुए हैं जिन्हें उनके सम्बन्धियों मित्रों या सहयोगियों ने भी बार-बार समझाने का प्रयास किया था कि जिस मार्ग पर वह चल रहे हैं वह कांटों से भरा है और उसका परिणाम अच्छा न होगा। परन्तु जिन्होंने कुछ करना था उन्होंने कर दिया और इसका बड़े से बड़ा मूल्य भी चुका दिया। परन्तु यह लोग अधिकतर वह थे जिन्हें उनके घर में या उनकी पाठशाला या विद्यालय में कुछ ऐसी शिक्षा दी गई थी जिसने उन्हें आगे बढ़कर कुछ करने के लिए प्रेरित किया था।

अब स्थिति बदल रही है अब न तो उस स्तर के और उन विचारों के शिक्षक मिलते हैं जो पहले मिल जाते थे न ही अब उस प्रकार के शिष्य पैदा कर सकते हैं जैसे कि पहले पैदा होते रहे हैं। इसका यही परिणाम है कि हमारा सारा सामाजिक ढांचा ही अस्त-व्यस्त हो रहा है कहीं लड़के हड़तालें कर रहे हैं कहीं प्रदर्शन कर रहे हैं, कहीं अपने गुरुजनों का अपमान कर रहे हैं और कहीं कोई ऐसी कार्यवाही कर रहे हैं जिससे राष्ट्र को हानि पहुंचे। दूसरी ओर शिक्षक वर्ग का नैतिक पतन भी बढ़ रहा है। वह भी छोटी छोटी बातों पर हड़ताल करने को तैयार हो जाते हैं। पहले शिक्षकों में सेवा की भावना अधिक होती थी अब शिक्षकों में स्वार्थ की भावना अधिक होती जा रही है। इसका ही यह कारण है कि गुरु और शिष्य का सम्बन्ध भी टूट रहा है। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि एक बालक को बनाने वाले तीन व्यक्ति होते हैं, माता पिता और आचार्य। आज तीनों ही कर्त्तव्य हीन हो गए हैं इस लिए देश की युवा पीढ़ी हाथ से निकलती जा रही है। उसका यह परिणाम है कि हमारा सारा ढांचा ही लड़खड़ाने लगा है।

यह हैं वह परिस्थितियां जिनमें भारत सरकार ने शिक्षा प्रणाली पर नए सिरे से विचार करने का निर्णय लिया है। अब वह सोच रहे हैं कि इसे क्या रूप दिया जाए। प्रधानमन्त्री कह चुके हैं कि आगामी तीन चार मास में नई शिक्षा प्रणाली की घोषणा कर दी जाएगी। वह क्या होगी यह तो उसी समय पता चलेगा जब वह सामने आएगी, परन्तु आर्यसमाज का यह निश्चित मत है कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही हमारे देश को बचा सकती है। इसका यह अर्थ नहीं कि जिस प्रकार आज हमारे गुरुकुल चल रहे हैं वह कोई सन्तोषजनक स्थिति है, हम तो भारत सरकार का ध्यान उस गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की तरफ दिलाना चाहते हैं जिसके आधार पर श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल चलाया था। उसकी दो महत्वपूर्ण मान्यताएं थी—एक यह कि गुरु और शिष्य का वही सम्बन्ध हो जो एक बच्चे का अपने माता पिता से होता है। गुरु अपने शिष्य को यह समझकर अपने पास रखे कि यह उसका अपना ही बच्चा है और बच्चा भी यह समझे कि गुरु पिता समान है दोनों में यह सम्बन्ध बना रहे तो इसका प्रभाव दोनों पर पड़ेगा और समाज सब से अधिक लाभान्वित होगा।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का दूसरा आधार आश्रम प्रणाली है जो बच्चा गुरुकुल में पढ़ता है वह 14-15 वर्ष एक आश्रम में रहता है वहां वह कुछ अनुशासन भी सीखता है और अपने जीवन को इस प्रकार बनाता है कि आगे चल कर वह बड़ी से बड़ी विपदा का भी सामना कर सके। गुरुकुल कांगड़ी को स्थापित हुए अब 82 वर्ष से ऊपर हो गए हैं इस समय में वहां से जो बड़े बड़े स्नातक निकले हैं उन में से कई ऐसे हैं जिन पर कि हम गर्व कर सकते हैं। उनके कारण ही गुरुकुल का नाम चमका है। उनमें से कई बड़े बड़े विद्वान, चिन्तक हुए हैं साहित्यकार इतिहासकार, पत्रकार और अर्थ शास्त्र और राजनीति के विशेषज्ञ भी हुए हैं। यदि मेरा अनुमान गलत नहीं तो गुरुकुल के स्नातकों में दो चार को छोड़कर शेष सब ऐसे हुए हैं जिन पर कि गर्व किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में जब भारत सरकार अपने देश के बच्चों के लिए एक नई शिक्षा प्रणाली पर विचार कर रही है तो गुरुकुल शिक्षा प्रणाली उसका मार्ग दर्शन कर सकती है। गुरुकुल का इतिहास गौरवमय इतिहास है। यदि आज गुरुकुल के आधार पर सरकार देश की प्रत्येक तहसील में एक संस्था खड़ी कर दे और उसमें आश्रम प्रणाली के अनुसार गुरुओं और शिष्यों दोनों के रहने का प्रबन्ध कर दिया जाए और एक ही स्थान और एक ही वातावरण में रह कर और एक ही लक्ष्य को सामने रखते हुए गुरु और शिष्य दोनों अपने भविष्य का नव निर्माण करें तो उसी के आधार पर देश का नव निर्माण भी हो सकता है।

मैंने अपना विचार पाठक महानुभावों के सामने रखा है। गुरुकुल का शिक्षा वर्ग इसी आधार पर अपनी योजना बनाकर भारत सरकार को देने पर विचार कर रहा है कोई हमारी बात मानें या न मानें, सुनें या न सुनें हमें गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की विचार धारा को भारत सरकार के कानों तक पहुंचा देना चाहिए। हो सकता है कि वर्तमान धूमिल वातावरण में से निकल कर देश को एक उज्ज्वल और रचनात्मक भविष्य की तरफ ले जाने का श्रेय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को ही मिल जाए।

—वीरेन्द्र

महर्षि ने शिक्षा के सम्बन्ध में लिखा है—

विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए और वे लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोस एक दूसरे से दूर होनी चाहियें। जो वहां अध्यापिका और अध्यापक पुरुष वा नौकर चाकर हों वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री और पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें। स्त्रियों की पाठशाला में पांच वर्ष का लड़का और पुरुषों की पाठशाला में पांच वर्ष की लड़की भी न जाने पावे। अर्थात् जब तक वह ब्रह्मचारी वा ब्रह्मचारिणी रहें तब तक स्त्री वा पुरुष का दर्शन स्पर्शन, एकान्त सेवन भाषण विषय कथा, परस्पर क्रीड़ा विषय का ध्यान और संग इन आठ प्रकार के मैथुनों से अलग रहें और अध्यापक लोग उनको इन बातों से बचावें जिससे उत्तम विद्या शिक्षा, शील स्वभाव शरीर और आत्मा से बलयुक्त होके आनन्द को नित्य बढ़ा सकें। पाठशालाओं से एक योजन अर्थात् चार कोस दूर ग्राम या नगर रहे। सब को तुल्य वस्त्र, खान पान, आसन दिए जाएं। चाहे वह राजकुमार या राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र के सन्तान हों, सब को तपस्वी होना चाहिए। उनके माता पिता अपने सन्तानों से वा सन्तान अपने माता-पिताओं से न मिल सकें और न किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार एक दूसरे से कर सकें। जिससे संसारी चिन्ता से रहित होकर केवल विद्या बढ़ाने की चिन्ता रखें, जब भ्रमण करने को जाएं तब उनके साथ अध्यापक रहें, जिससे किसी प्रकार की कुचेष्टा न कर सकें और न आलस्य प्रमाद करें।"

(सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)

गुरुकुल देश का मार्ग दर्शन कर सकता है

ले.—डा. श्रीमती माधुरी शाह प्रधाना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

भारत के नव-जागरण के आन्दोलन में ऋषि दयानन्द का स्थान अद्वितीय है। उनसे प्रेरणा लेकर स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज ने आज से 84 वर्ष पहले एक नई आशा और नई स्फूर्ति से गंगा नदी के तट पर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी। उस समय की शिक्षा पद्धति से वे सन्तुष्ट न थे। एक ओर विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए युवक ब्रिटिश शासन के कार्यालयों में नौकरी की खोज करते थे। दूसरी ओर प्राचीन शिक्षा स्थलों पर चल रही पाठशालाओं में अध्ययन करते हुए विद्यार्थी आधुनिक ज्ञान विज्ञान से सर्वथा विमुख थे। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में ऋषि दयानन्द ने समग्र शिक्षा का जो मन्त्र प्रस्तुत किया था उसको मूर्त रूप देने हेतु महात्मा हंसराज और उनके सहयोगियों ने 1886 में डी. ए. वी. कालेज लाहौर की स्थापना की थी, किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द और पं. गुरुदत्त डी. ए. वी. कालेज की उपलब्धियों से सन्तुष्ट नहीं थे। अत. उन्होंने गुरुकुल की स्थापना का बीड़ा उठाया, जिसमें कि भारतीय और विदेशी दोनों शिक्षा पद्धतियों का समन्वय हो और दोनों के गुण ग्रहण करते हुए दोनों के दोषों से मुक्ति हो। गुरुकुल की प्रारम्भिक योजना में वेद-वेदांग और संस्कृत साहित्य की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान विज्ञान की शिक्षा को भी यथोचित स्थान दिया गया और शिक्षा का माध्यम राष्ट्रीय भाषा हिन्दी को रखा गया। गुरुकुल में गुरु-शिष्य परम्परा के अन्तर्गत ब्रह्मचर्य तप, स्वाध्याय; स्वावलम्बन और स्वदेशी का विशेष महत्व था।

आज जब चहुं ओर से हमें शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं ने घेर रखा है, वैदिक शिक्षा के आधारभूत मूल्यों पर गहन विचार करने की आवश्यकता है। आज देश में 120 से अधिक विश्वविद्यालय है, 4,500 कालेज हैं 40000 माध्यमिक पाठशालाएं हैं और छः लाख प्राथमिक पाठशालाएं हैं, उच्च शिक्षा के संस्थानों में लगभग दो लाख अध्यापक काम रहे हैं। इक्कीस लाख विद्यार्थी उनमें अध्ययन कर रहे हैं। वैज्ञानिक जनशक्ति की संख्या के अनुसार हमारी गणना विश्व के राष्ट्रों में तीसरे स्थान पर है। हमारे उच्चतम वैज्ञानिक विश्व के किसी भी राष्ट्र के वैज्ञानिकों के समकक्ष खड़े हो सकते हैं। लेकिन फिर भी देखा जाए तो वर्तमान शिक्षा प्रणाली हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं, सामाजिक लक्ष्यों और आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सफल नहीं हो पा रही। हमारे स्नातक स्तर के कोर्स जोकि पुरानी पद्धति पर आधारित है देश की आधुनिक आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पा रहे।

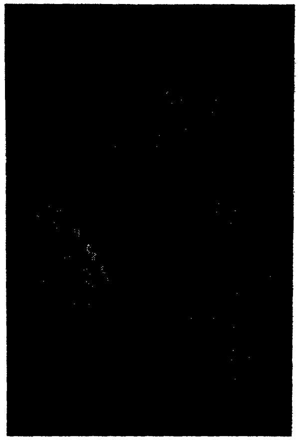
यह ठीक है कि विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य विद्या का प्रसार और नए अनुसन्धान करके जगत् के रहस्यों का प्राप्त करना है। इस कार्य हेतु यह आवश्यक हो जाता है कि विश्वविद्यालयों का वातावरण शुद्ध, शान्त और तपोमय हो: जिससे कि विद्योपार्जन और ज्ञान-विज्ञान के अनुसन्धान में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो। लेकिन यदि हम यहीं तक ही विश्वविद्यालय के लक्ष्य को सीमित कर दें तो जन साधारण के साथ यह एक बहुत भारी अन्याय होगा। आर्य समाज का नवां नियम है, प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए। किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। इस लक्ष्य की पूर्ति तभी हो सकती है यदि शिक्षा संस्थान अपने अड़ोस-पड़ोस में जाकर निर्बल वर्ग की ओर ग्रामवासियों की जरूरतों, इच्छाओं, अभिलाषाओं, कमजोरियों और शक्तियों का अध्ययन करें और उनके साथ मिल-जुल कर अपनी शिक्षा का लाभ उनको देते हुए उनके स्तर को ऊंचा करने की कोशिश करें। इससे एक ओर तो अध्यापकों और विद्यार्थियों में समाज सेवा की भावना उजागर होगी, दूसरी ओर यह भी जानकारी प्राप्त हो सकेगी कि हमारी शिक्षा में कहां त्रुटियां हैं और हमारे पाठ्यक्रम को क्या मोड़ देना अभीष्ट है?

इस बात को हमें स्पष्ट तौर पर समझ लेना चाहिए कि जो शिक्षा नैतिक मूल्यों के विकास की अवहेलना करती है उसे शिक्षा की संज्ञा नहीं दी जा सकती नैतिक मूल्यों का विकास और मानव में उच्चतम संस्कारों की प्रतिष्ठा किसी भी शिक्षा प्रणाली का आधार स्तम्भ है। गुरु-शिष्य परम्परा का मुख्य ध्येय है। गुरु शिष्य को निकटस्थ करके उसकी रक्षा और शिक्षा-दीक्षा करता है, उसकी समस्याओं का निदान करता है। उसके समक्ष आदर्श जीवन के लक्ष्य उपस्थित करता है, जिससे कि ब्रह्मचारी सन्मार्ग में प्रेरित हो और पापाचरण से बचे। जो धर्मयुक्त कार्य हों उनको ग्रहण करें। विद्वानों का सत्कार करे, माता-पिता आचार्य और अतिथि की सेवा करे, आज देश को ऐसे ही गुरुकुलों की आवश्यकता है, जहां चरित्रवान् और धर्मनिष्ठ, गुरु ब्रह्मचारियों के सम्मुख आदर्श जीवन का उदाहरण उपस्थित करने में सदा प्रयत्नशील हों, हमें ऐसे गुरुकुलों की आवश्यकता है जहां गुरुजन और ब्रह्मचारी सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्याग में सर्वदा उद्यत हों, जहां सब काम धर्म के अनुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके किए जाए, जहां का वातावरण परोपकार की भावना से ओत-प्रोत हो, जहां अविद्या के नाश और विद्या की वृद्धि हेतु अहर्निश यज्ञ रचे जाएं।

गुरुकुल कांगड़ी को विश्वविद्यालय स्तर की मान्यता प्राप्त है। इसका अर्थ यह है कि आपने विशेष क्षेत्र में अपना एक परिपक्व स्थान प्राप्त कर लिया है। और उस क्षेत्र में आपका स्तर अन्य संस्थाओं से ऊंचा है। भले ही इस विश्वविद्यालय में सामान्य विश्वविद्यालयों की तरह विभिन्न विषयों के अध्ययन-अध्यापन का प्रबन्ध नहीं, परन्तु अपने चुने हुए क्षेत्र में इस विश्वविद्यालय की उपलब्धियां और प्रतिष्ठा अद्वितीय होनी चाहिए। वेद सत्य विद्या की पुस्तक है। वेद को पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। अत: वेद में गहन अनुसन्धान करना, वेद का अध्ययन अध्यापन और विश्व की समस्त भाषाओं में इसका प्रचार करना, आपका मुख्य कर्तव्य है। यह प्रश्न आपको स्वयं से पूछना होगा और इसका उत्तर देना होगा कि आप इस दिशा में कितने अग्रसर हैं। इस प्रश्न का उत्तर आज राष्ट्र आप से मांग रहा है। आपके पास एक बहुत कीमती निधि है। आप उसका कितना प्रयोग कर रहे हैं? आज देश को मार्ग-दर्शन की आवश्यकता है। वैदिक ज्योति के आप प्रकाश पुंज हैं। आशा है, गुरुकुल विश्वविद्यालय से ऐसी ज्योति प्रस्फुटित होगी जो न केवल देश का अपितु विश्व का मार्ग प्रशस्त करेगी।

—

श्रद्धेय स्वर्गीय आचार्य रामदेव जी



आर्य समाज के इतिहास में आचार्य जी का विशिष्ट स्थान है उन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज की सेवा और गुरुकुल कांगड़ी के निर्माण में लगा दिया था। उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर भी उन्होंने सरकारी नौकरी को ठोकर मार दी। कन्या गुरुकुल देहरादून के वह संस्थापक थे। गुरुकुल कांगड़ी और कन्या गुरुकुल देहरादून की उन्होंने आजीवन सेवा की।

ऋषि दयानन्द का शिक्षा दर्शन

ले.—वेद मार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, पूर्व आचार्य एवं कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

1. ऋषि दयानन्द ने मानव जीवन के सभी क्षेत्रों से सम्बन्ध रखने वाली सभी समस्याओं पर विचार किया है और वेद तथा वेदानुकूल अन्य शास्त्रों के आधार पर उन समस्याओं के इस युग के लिए सर्वथा नवीन और अनूठे समाधान अपने 'सत्यार्थ प्रकाश' आदि ग्रन्थों में उपस्थित किए हैं। विभिन्न समस्याओं के सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द ने जो विचार और समाधान दिए हैं यदि उनके अनुसार मानव का जीवन बीतने लगे तो धरती स्वर्गधाम बन सकती है और मनुष्य के व्यक्तिगत और सामाजिक सब प्रकार के कष्ट क्लेश दूर होकर वह उन्नति और सुख समृद्धि की चरम सीमा पर पहुंच सकता है।

2. शिक्षा की समस्या मानव की एक बहुत बड़ी समस्या है। मनुष्य का सब कुछ उसकी इससमस्या पर निर्भर करता है। मनुष्य का व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन किस प्रकार का होगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम अपने बच्चों को किस प्रकार की शिक्षा देते हैं। ऋषि दयानन्दने शिक्षा के सम्बन्ध में भी सर्वथा नए और निराले विचार दिए हैं। शिक्षा के सम्बन्ध में विचार करते हुए सबसे बड़ा प्रश्न यह उपस्थित होता है कि बालकों की शिक्षा संस्थाए' किस प्रकार के वातावरण में हों, शिष्य और शिक्षकों के सम्बन्ध किस प्रकार के हों, बालकों को पढ़ाया जाए, बालकों का रहन-सहन. तथा दिनचर्या किस प्रकार की हो और राष्ट्र के प्रत्येक बालक को बिना किसी भेदभाव के ऊंची से ऊंची शिक्षा मिल सके। इसके लिए क्या व्यवस्था की जाए, ऋषि ने शिक्षा विषयक सभी समस्याओं पर अपने ग्रन्थों में विस्तार से विचार किया है। ऋषि के इस सम्बन्ध मे जो विचार हैं उनका अति सक्षिप्त उल्लेख हम इन पंक्तियों में कर रहे हैं।

3. शिक्षा संस्थाए नगरो से दूर प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त स्थानों में बनाई जानी चाहिए। जहां स्वाभाविक प्राकृतिक सौन्दर्य न हो वहा सुन्दर लता, वृक्षादि लगाकर शिक्षणालय के स्थान को हरा-भरा और शोभाशाली बना लेना चाहिए। जिसमें बालकों का शारीरिक स्वास्थ्य भी ठीक रहे और मानसिक भी। बच्चों को नगर का धुआ, धूल धमक्कड़ और दुर्गन्ध से भरी हवा में सांस लेना पड़े और वे नगर निवासी गृहस्थाओ के शान शौकत तथा शृंगार से भरे जीवन से भी पृथक् रहें और इस प्रकार गृहस्थों के विलासमय जीवन को देखकर कच्ची उमर में ही उनके मन में विलासप्रियता के निकम्मे विचार न उठने लगे। बालक शिक्षा समाप्ति से पूर्व नगरों में अपने घरों में नहीं आ सकेंगे। वे चौबीस घण्टे अपने गुरुओं के साथ शिक्षा संस्थाओं के आश्रमों में ही रह सकेंगे।

4, गुरु और शिष्य एकान्त में रहेंगे, शिष्यों के चौबीस घण्टों के जीवन पर गुरुओं की आंख रहेगी। गुरु शिष्यों के साथ रहकर उनके जीवन का निर्माण करेंगे। गुरु लोग शिष्यों को उनके हाल पर छोड़कर नगरों में रहने के लिए नहीं जा सकेंगे। गुरुओं का अपने शिष्यों के साथ इतना घनिष्ट सम्बन्ध होगा जितना मां को अपने गर्भ में पड़े बच्चे के साथ होता है। मा को अपने गर्भ में स्थित बच्चे के प्रति जितना प्यार और हित कामना होती है उतना ही प्यार और हित कामना गुरु में शिष्य के प्रति होनी चाहिए। मां को अपने गर्भ में स्थित बच्चे के प्रति जितनी एकात्मकता होती है उतनी ही एकात्मकता गुरु की शिष्य के प्रति होनी चाहिए। जिस प्रकार मां के गर्भ में स्थित बच्चे पर मां के अतिरिक्त बाहर का किसी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ सकता, उसी पकार गुरुओं के अतिरिक्त शिष्यों पर बाहर के लोगों का कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए गुरु लोग बाहर के जिन लोगों को व्याख्यान आदि के लिए बुलाना आवश्यक समझें उन्हीं का प्रभाव उन पर पड़ना चाहिए। जिस प्रकार मां को अपने गर्भ मे बच्चे को सब प्रकार से श्रेष्ठ और बढ़िया बनाने की ही चिन्ता रहती है उसी प्रकार गुरुजनो को अपने छात्रों को सब प्रकार से श्रेष्ठ और उत्तम बनाने की चिन्ता रहती है।

जब गुरुओं की शिष्यों के साथ इतनी गहरी घनिष्टता होगी और वे शिष्यों की मां की तरह हित कामना करेंगे तो शिष्य सर्वत्र उनकी आज्ञाओ का पालन करेंगे और छात्रो में आज की सी अनुशासन हीनता की समस्या उत्पन्न नहीं होगी।

5. बालकों को क्यों पढाना चाहिए, इस सम्बन्ध में भी ऋषि ने बड़े विस्तार से विचार किया है। 'सत्यार्थ प्रकाश' संस्कार विधि और ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका में किस प्रकार के ग्रन्थ पढ़ने चाहिए और किस प्रकार के नहीं। ऋषि की उस पाठ विधि का ध्यान से विश्लेषण करने पर एक बात तो यह स्पष्ट रूप ने सामने आती है कि ऋषि की सम्मति में पाठ विधि में भौतिक विद्या विज्ञान (फिजिकल साईंस) और आध्यात्मिक (सुपरीटिकल साईंस) दोनों का ही समावेश होना चाहिए। ऋषि ने जिन ग्रन्थों का उल्लेख किया है उनमें रसायन, भौतिक गणित, ज्योतिष, अर्थ शास्त्र, राजनीति, युद्ध विद्या शिल्पकला, आयुर्वेदादि भौतिक विद्या विज्ञानों का भी वर्णन है। उस पाठ विधि में संगीत के अध्ययन की व्यवस्था है। सस्कृत भाषा और उसके उच्च अध्ययन की व्यवस्था तो है ही ऋषि दयानन्द ने यह भी लिखा है कि प्रारम्भ से ही बल्कि पाठशाला में जाने से पहले ही घर में ही बालको को विदेशी भाषाओं का सिखाना आरम्भ कर देना चाहिए। इससे यह सकेत मिलता है कि विदेशी भाषा मे जो ज्ञान विज्ञान है उस के पठन-पाठन के पक्षपाती ऋषि दयानन्द भी थे। ऋषि दयानन्द की पाठ विधियो में तर्क और दर्शन शास्त्र को पढ़ाने की व्यवस्था है। चारो वेद ब्राह्मण ग्रन्थ और उपनिषदो के पठन-पाठन की व्यवस्था भी वहां है। वेदों में भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की विद्याओं की व्यवस्था है। दर्शन में उपनिषदों में आध्यात्मिक विद्याओं का वर्णन है। इस प्रकार ऋषि की सम्मति में भौतिक और आध्यात्मिक दोनो प्रकार की विद्याएं साथ-साथ पढ़ाई जानीं चाहियें। तभी मानव का सन्तुलित विकास हो सकेगा। किसी एक प्रकार की ही विद्याओं को पढने पढ़ाने से व्यक्ति एकांगी हो जाएगा। जिसके कारण व्यक्ति और समाज दोनों की हानि होगी। आज के ससार में जो कलह लड़ाई झगड़े युद्ध और अशान्ति दिखाई देती है वह शिक्षा मे आध्यात्मिक विद्याओ को स्थान न देने का ही परिणाम है। ऋषि दयानन्द ने जो विस्तृत पाठ विधि दी है वह सब विद्याओ के ज्ञाता, उच्चकोटि के महा विद्वान् व्यक्ति तैयार करने की दृष्टि से दी है। 'सत्यार्थ प्रकाश' के तृतीय समुल्लास के अन्त में इन्होंने एक न्यूनतम पाठ विधि की ओर भी सकेत किया है। उन्होने लिखा है कि जैसे पुरुषो को व्याकरण (निरुक्त) धर्म और अपने व्यवहार (आजीविकोपार्जन) की विद्या न्यून से न्यून अवश्य सीखनी चाहिए (वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण) धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्प विद्यायें तो अवश्य सीखनी चाहिए। सुविधानुसार पाठ-विधि में अधिक से अधिक विषयों को पढ़ाने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

6. ऋषि दयानन्द छात्रो मे वासनाओं को भड़काने वाले काव्य नाटक उपन्यास आदि पढाने के घोर विरोधी थे, वे छात्रों के जीवन में ब्रह्मचर्य, सयम और पवित्रता पर अधिक बल देते हैं। ग्रीस के प्राचीन महान् दार्शनिक प्लेटो ने भी इस प्रकार के कामोत्तेजक साहित्य को पढ़ाने का घोर विरोध किया है। इसी प्रकार आधुनिक विद्वान् एल्डस् हक्सले ने भी इस प्रकार के साहित्य को पढाने का घोर विरोध किया है। इसी प्रकार ऋषि दयानन्द ने श्राद्ध, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, भूत और प्रेतादि और अन्धविश्वास की शिक्षा देने वाले साहित्य का भी तीव्र विरोध किया है।

7. बालको को अन्य विषयो की शिक्षा के साथ-साथ योग की शिक्षा भी प्रारम्भ से ही देनी चाहिए। योग दर्शन आदि योग विषयक साहित्य भी पढाया जाना चाहिए और योग के यम, नियम, आसन, प्राणायम आदि इन आठ अगों का क्रियात्मक अभ्यास भी कराना चाहिए, आसनों और प्राणायम के अभ्यास से उन में मानसिक और आत्म पवित्रता उत्पन्न होगी जिसके कारण वे सब प्रकार की बुराईयों और दोषों से बचे रहेंगे। तथा योग के निरन्तर अभ्यास से वे परमात्मा के दर्शन के अधिकारी भी एक दिन हो जाएगे।

8. योग के यम और नियमो शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान ये पांच नियम कहलाते हैं। इन नियमों के पालन से छात्र-शरीर और वस्त्र की दृष्टि से स्वच्छ रहना सीखेंगे।

2. सफलता और असफलता में एक रस रहना सीखेंगे। 3-साज सिंगार तथा बनाव-ठनाव से दूर रहकर सादगी और कष्ट सहने की तपस्या का जीवन बिताना सीखेंगे 4—उनमें उत्तम और ज्ञानवर्द्धक ग्रन्थों के अध्ययन की क्षमता जागृत होगी 5—वे ईश्वर के उपासक बनेंगे। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पांच यम कहलाते हैं। उन पाचों यमो के पालन से छात्र 1—अपने स्वार्थ के लिए किसी प्राणी को किसी प्रकार का भी कष्ट न देंगे प्रत्युत दूसरों के कष्टो को दूर करने की भावना को अपने अन्दर जागृत करेंगे। 2—सत्य का पालन करना और असत्य से दूर रहना सीखेंगे 3—किसी भी प्रकार की चोरी की वृति से पृथक रहना सीखेगे 4—मन और इन्द्रियों को वश मे रखकर अपनी जननेन्द्रियो को वश मे रखने वाले सयमी बनेंगे। 5—वे लोभ और लालच से परे रहने वाले और आवश्यकता से अधिक धन सम्पत्ति अपने पास न रखने की वृति वाले बनेंगे। ये दशयो बातें जिन छात्रों के जीवन में ढल जाएगी उनके जीवन में आगे चलकर किसी प्रकार के पाप या बुरे कार्य नहीं होग और आज के समाज में जो घोर चरित्र भ्रष्टता पाई जाती है वह चरित्र भ्रष्टता इस प्रकार की शिक्षा दीक्षा मे पले युवकों से बने समाज में कभी दिखाई नहीं देगी। ऋषि दयानन्द ने अपनी शिक्षा पद्धति मे इन यम-नियमों पालन एक आवश्यक अग रखा है।

(क्रमशः)

आदर्श शिक्षा पद्धति

ले.-आचार्य आर्य भिक्षु जी अध्यक्ष आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर

शिक्षा का अर्थ मेरी दृष्टि मे पढ़ना-पढ़ाना नही अपितु बनना-बनाना है। अब मौलिक प्रश्न यह है कि कौन बनावे। इससे भी अधिक विचारणीय विषय है कहा बनावे।

आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में समाज के लिए इसे अत्यन्त आवश्यक जानते हुए ईश्वर विषय के पश्चात् तत्काल अपनी व्याख्या का विषय बनाया। इस समुल्लास के प्रथम अश मे शतपथ का सुप्रसिद्ध वचन उद्धृत किया।

'मातृमान् पितृमानाचार्यवान पुरुषो वेद।'

अर्थात् उनकी दृष्टि मे बनने वाला एक है किन्तु बनाने वाले तीन हैं। इन तीनो मे प्रथम माता, जिसके द्वारा बालक को लोरियो के माध्यम मे दिया हुआ विचार सस्कार के रूप में अन्ततोगत्वा परिणत हो जाता है, जो उसका चिर-साथी बन जाता है। इसी कारण उन्होने माताओ को विदुषी एव धर्म परायण एवं निर्मातृ होने पर बल दिया है। दूसरा निर्माता पिता है, जिसके आश्रय में बालक का पालन-पोषण होता है। बहुत अशो में पुत्र और पुत्रियां अपने माता-पिता के आधीन रहते हैं, इस प्रकार पिता का सदाचारी, परिश्रमी और परोपकारी वृत्ति वाला होना अत्यन्त आवश्यक है।

पूर्वाचल के ग्रामीण क्षेत्र में अत्यन्त सुप्रसिद्ध लोकोक्ति है "बाढे पूता के घर मे, खेती बाढे अपने कर में" अर्थात् पुत्र का ऐश्वर्यवान, धर्मात्मा और पुरुषार्थी होना, पिता के चरित्र का प्रतिबिम्ब मात्र है। इसके पश्चात् तीसरे निर्माण-कर्त्ता का प्रश्न है, जिसे हम आज की भाषा मे अध्यापक, शिक्षक तथा टीचर कहते हैं। यह अन्तिम निर्माणकर्ता है। इस से निर्माण की दिशा मे होने वाली भूल-चूक के सशोधन का प्रश्न ही शेष नहीं रहता, जैसे चित्रकार किसी छवि को अंतिम रूप देने के बाद जब उसे कला-भवन से बाहर निकाल देता है तो उस छवि मे उपस्थित त्रुटिया उस कलाकार के कला का मानदण्ड बन जाता है और जनता-जनार्दन उसकी कला के सम्बन्ध में व्यवस्था देने में सर्वथा स्वतन्त्र होती है और कलाकार बेचारा सर्वथा परतन्त्र होता है। ठीक इसी प्रकार से विद्यार्थी के बाहर निकलने पर उसके रहन-सहन हाव-भाव तथा आहार बिहार को देखकर लोग विद्यालय के सम्बन्ध में और अध्यापक के सम्बन्ध में व्यवस्था देने लगते हैं और उस समय विद्यालय की कीर्ति और अपकीर्ति तथा यश और अपयश, छात्र और छात्राओं के जीवन पर निर्भर करता है। फिर यह प्रश्न निरर्थक हो जाता है कि विद्यालय, महाविद्यालय था या साधारण विद्यालय तथा अध्यापक दीक्षित था या अदीक्षित था। इससे यह निर्णय हो जाता है जैसे मैंने प्रथम ही कहा है कि शिक्षा का अर्थ बनना बनाना, पढ़ना-पढ़ाना मात्र नहीं।

अब यह विचार करने का प्रश्न है कि इस समस्या का समाधान क्या है? वे कौन से दुर्घटना स्थल हैं जहा की उपज यह समस्याए हैं। चरित्रहीनता, अनुशासनहीनता, उदण्डता तथा उच्छृं-खलता, मैं स्पष्ट करना चाहूगा कि ये दुर्घटना स्थल वे विद्या मन्दिर हैं, जिन में बनने और बनाने वाले का सम्बन्ध चालीस मिनट से लेकर 60 मिनट तक रहता है। शेष लगभग 1। घण्टे से लेकर 18 घण्टे तक बनने बनाने वालो का कोई सम्बन्ध नहीं रहता।

प्राचीन काल के ऋषि-मुनियो ने अपनी दूरदर्शिता से एक आदर्श शिक्षा-पद्धति का आविर्भाव किया था यह शिक्षा-पद्धति सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर मध्य भारत पर्यन्त बनी रही। इसके परिणाम स्वरूप राम कृष्ण, कपिल गौत्तम आदि महापुरुष समाज से प्राप्त हुए। इस शिक्षा-पद्धति को गुरुकुलीय शिक्षा-पद्धति या वैदिक शिक्षा-पद्धति कहते हैं इसका पुन: उद्धार महर्षि दयानन्द, जो 19वीं शदी के महान् शिक्षा-शास्त्री थे, जिनके चरण-चिन्हों पर, योगीराज अरविन्द, टैगोर और महात्मा गाधी ने पृथक प्रयोग भिन्न भिन्न अशों को लेकर किये। जो सर्वांग रूपेण गुरु-कुलीय शिक्षा-पद्धति के ही बिखरे हुए कण हैं। इस प्रणाली में बनने और बनाने वाले एक दूसरे के पास रहते हैं और उन दोनो का निकटतम सम्बन्ध रहता है अर्थात् उठना, बैठना, सोना, जागना, खाना, पीना इत्यादि।

इन प्रचेताओं ने इसी स्थिति का चिन्तन करते हुए लिखा है ब्रह्मचारी अध्ययन-काल तक आचार्य के गर्भ में रहता है। शिक्षाणालय से बाहर आने पर मानों उसका दूसरा जन्म होता है, जैसे नगरपालिकाओं के कूड़ा-करकट कागज पेपर मिल में जाकर सुन्दर और स्वस्थ अभ्यास-पुस्तिकाओं के रूप में बाहर आते हैं तो मानों उनका दूसरा जन्म होता है।

गर्भ में माता बालक को रखने में जिस सावधानी, सक्रियता और जागरूकता का परिचय, अपने रहन-सहन, खान-पान, हाव-भाव में देती है, वह कठिन साधना है। जिसका परिणाम ही बालक का पूर्ण मनुष्य के रूप में विकसित होना है। इस अन्तिम निर्माता को उसके गम्भीर दायित्व की ओर निर्वाह योग्य बनाने के लिए पूर्णरूपेण दीक्षित एवं शिक्षित किया जाए, जिससे शिक्षा का अपेक्षित लाभ समाज को मिल सके। समाज स्वस्थ तथा निरोग हो जाए। इस के लिए हमें यह विश्वास वाक्य स्वीकार करना होगा। यह विश्व-शान्ति का आधार वाक्य भी होगा। इतना ही नहीं, यह मानव धर्म का ध्येय भी है।

—

शिक्षा नीति को नया रूप देने की आवश्यकता

ले.—श्री बलभद्र कुमार हूजा कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

आज हमारी शिक्षा नीति भटकाव के चौराहे पर खड़ी है। स्वतन्त्रता के बाद के हमारे शैक्षणिक कारखाने बेरोजगार नवयुवको की विशाल पक्तियाँ को बढाये जा रहे हैं। शिक्षा प्राप्त करना तथा नैतिक स्तर ऊचा किया जाना आज ये हमारे शैक्षणिक जीवन की दो अलग-अलग धारायें बन गई हैं। यह अत्यन्त खेद और चिन्तन का विषय है कि शिक्षा का उदात्त सस्कारों से कोई तालमेल नहीं दिखाई पड़ रहा है। कहां गई हमारे ऋषि मुनियों की वह आदर्श परम्परायें एवं प्राचीन सस्थायें जहा गुरु और शिष्य दीप से दीप जले की भावना से जगत् जीवन में नव जागरण का स्फुट सचार करते थे? कहां विलुप्त हो गई हमारी आध्यात्मिकता जिसका आज की शिक्षा से कोई सरोकार नहीं? शिक्षा मानव निर्माण का साधन है। शिक्षा मानव को पशु के स्तर से उन्नत कर सस्कारों से उसकी जीवन धारा बदल देती है। किन्तु शिक्षा के समग्र स्वरूप पर आज जन मानस दिग्भ्रान्त हो गया है। राष्ट्रीय शिक्षा के परिवेश में ऐसी जटिल स्थिति में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय ने वैदिक प्रणाली पर इस कार्यशाला का आयोजन किया है। इस अवसर पर शिक्षा जगत् की महान् हस्तियों का यह सम्मेलन हम सब के लिए अमूल्य सिद्ध होगा।

स्वामी दयानन्द ने आज से 100 वर्ष पूर्व नव भारत के निर्माण हेतु शिक्षा का जो स्वरूप हमारे मध्य उपस्थित किया उसके क्रियान्वित हेतु स्वामी श्रद्धानन्द ने ईस्वी 1900 में गुरुकुल कांगडी की स्थापना की। शिक्षा जगत् के विद्वान् जानते हैं कि यह गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के उजागर स्वरूप के सम्बन्ध में एक अत्यन्त सफल प्रयोगशाला और फिर निर्माणशाला के रूप में कार्य करता रहा है। यद्यपि गुरुकुल कांगड़ी की प्राचीन परम्परायें राष्ट्रीय शिक्षा के सन्दर्भ में नवप्रभात के सदृश सुखद रही तथापि कालान्तर में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय भी इन पुरातन मूल्यों की परम्परा का उस निर्मल रूप में पूर्णत: निर्वाह न कर पाया। अत: आज हम पुन: अपना लेखा जोखा करने के लिए एकत्रित हुए हैं। निसन्देह राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली हमारी आज की और भविष्य की आवश्यकताओ और आकांक्षाओ के अनुकूल होनी चाहिए। जितना थोड़ा बहुत अध्ययन में विभिन्न शिक्षा प्रणालियों का कर पाया हू, मेरा यह विचार सुदृढ़ होता गया है स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित ऋषि प्रणीत शिक्षा प्रणाली ही राष्ट्र को समुन्नत कर सकती है। उसके आधार स्तम्भ हैं, यम, नियम का पालन, गुरुशिष्य परम्परा, अन्य विषयों के साथ शिक्षाके कार्यक्रममें धनुर्वेद, आयुर्वेद गान्धर्व वेद और अर्थवेद अर्थात् शिल्प-विद्या का समावेश। यह जरूरी है कि रोजगार शिक्षा के साथ आत्मिक उन्नति के संस्कार भी प्रत्येक युवक में जागृत होने चाहियें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि शिक्षा के इन विभिन्न मानदण्डों पर शिक्षा जगत् के विशेषज्ञ विचार करेंगे।

—

गुरुकुल के स्नातकों को उपदेश

कुल-पिता स्वामी श्रद्धानन्द का दीक्षान्त समारोह में स्नातकों को उपदेश

पुत्रो ! आज मैं तुम्हें उन बन्धनों से मुक्त करता हूं, जिनके अनुसार गुरुकुल में चलना तुम्हारे लिए आवश्यक था। पर यह न समझना कि अब तुम्हारे लिए कोई बन्धन नहीं है। प्राचीन काल से हमारे ऋषियों ने कुछ बन्धन बांध रखे हैं, उन्हें मैं आज तुम्हें सुनाना चाहता हूं। इन बन्धनो के पालन करने में किसी का तुम पर दबाव नहीं। इसीलिए ये बन्धन और भी कड़े हैं। ये बन्धन उन उपनिषद् वाक्यों में वर्णित हैं, जिन्हे आज से हजारों वर्ष पहले इस पवित्र भूमि में प्रत्येक आचार्य अपने स्नातको को विद्या समाप्ति के समय सुनाया करता था। उन्हीं पुराने आचार्यों का प्रतिनिधि होकर मैं तुम्हें वे वाक्य सुनाता हू।

पुत्रो ! परमात्मा सत्य स्वरूप है। उसके प्यारे बनने के लिए अपने जीवन को सत्य स्वरूप बनाओ। तुम्हारे मन में, तुम्हारी वाणी में और तुम्हारी क्रिया में सत्य हो। धर्म मर्यादा का उल्लघन मत करो। इस मर्यादा का साक्षी अन्त:करण ही है। बाहर से कोई धर्म बतलाने वाला नहीं है। जो हृदय परमात्मा का आसन है, वह तुम्हें धर्म की मर्यादा बतलाएगा। अपनी आत्मा की वाणी को सुनो और उसके अनुसार चलो। स्वाध्याय से कभी मुख न मोड़ो। वह तुम्हें प्रमाद से बचाएगा।

जिस आचार्य ने तुम्हारी इतने दिनों तक रक्षा की उसके प्रति तुम्हारा जो कर्त्तव्य है. उसे अपने हृदय से पूछो। यह तुम्हारा आचार्य है। मैं नहीं जानता कि तुम इसे क्या दक्षिणा देना चाहते हो। मैं तुम से केवल एक ही दक्षिणा मांगता हूं। मैं चाहता हूं कि तुम्हारा ऐसा कोई काम न हो, जिससे तुम्हें अपनी आत्मा और परमात्मा के सामने लज्जित होना पड़े।

तुम में से अब कई गृहस्थ में प्रवेश करेंगे। उनसे मैं कहता हू कि पांचो यज्ञों के करने में कभी प्रमाद न करना। माता, पिता आचार्य और अतिथि ये तुम्हारे देवता हैं, इनकी सदा सुश्रूषा करना धर्म समझो।

पुराने ऋषि बड़े उदार और निरभिमान थे। वे कभी पूर्णतया दोषरहित होने का दावा नहीं करते थे। उन्हीं का प्रतिनिधि होकर मैं तुम्हे कहता हू कि हमारे अच्छे गुणों का अनुकरण करो और दोषों को छोड़ दो। इस ससार की अंधियारी में किसी को अपना ज्योति स्तम्भ बनाओ। पढ़ा-पढ़ाया कुछ अंश तक पथभ्रष्ट होता है पर सच्चे पथ-प्रदर्शक वे ही महापुरुष होते हैं, जो अपना नाम संसार में छोड़ जाते हैं। वे जीवन समुद्र ज्योति-स्तम्भ का काम देते हैं। ऐसे आत्म-त्यागी, सत्यवादी और पक्षपात रहित महापुरुषों के पग पर चलो, चाहे वे जीवित हों या ऐतिहासिक।

लेना तो सभी संसार जानता है, तुम इस योग्य हो कि अपनी बुद्धि और विद्या में से कुछ दे सको। जो तुम्हारे पास है, उसे उदारता से फैलाओ। हाथ खुला रखो, मुट्ठी को बन्द न होने दो। जो सरोवर भरता है वह फैलता है, यह स्वाभाविक नियम है।

जिस भूमि की मिट्टी से तुम्हारा देह बना है, जिस गंगा का तुमने निर्मल जल पिया है और जिसके गौरव के सामने संसार का कोई देश ठहर नहीं सकता, उस पवित्र भूमि भारत में रहते हुए तुम उसके यश को उज्ज्वल करोगे, इसकी मुझे पूरी आशा है। इसके साथ ही जिस सरस्वती की कोख में तुम ने दूसरा जन्म लिया है, उसे मत भूलना। किसी भी काम को करते हुए सावित्री माता की उपासना से विमुख न होना।

यह मैंने संक्षेप से उन वाक्यों का सारांश सुना दिया है, जोकि सहस्रों वर्षों से इस पवित्र भूमि में गूंजते रहे हैं तुम इन्हें गुरु मन्त्र समझो और अपना पथप्रदर्शक बनाओ।

इसके अतिरिक्त मेरा भी तुम्हारे साथ कई वर्षों का सम्बन्ध रहा है। मैं तुम से गुरुदक्षिणा नहीं मागता। गुरुदक्षिणा देना तुम्हारा धर्म है, मागना मेरा धर्म नहीं। मैं तुम से यह भी नहीं पूछता कि तुम्हारे राजनीतिक, सामाजिक या मानसिक विचार क्या क्या है? मैं केवल तुम से यही पूछता हूं कि क्या तुम्हारे सब काम सत्य पर आश्रित है या नहीं ? स्मरण रखो, यह ससार सत्य पर आश्रित है सत्य के बिना समाज के नियम पद्दलित करने योग्य है। यदि सत्य तुम्हारे जीवन का अवलम्बन है. तो मुझे न कोई चिन्ता है और न ही कुछ मागना है।

(यह उपदेश कुलपति ने दूसरे दीक्षान्त समारोह में 28 मार्च 1914 ई. को दिया था।)

कुल पिता स्वामी श्रद्धानन्द का कुल जन्मोत्सव के समय कुल-पुत्रों को उपदेश

पुत्रो ! आज मुझे कितनी प्रसन्नता है; तुम उसका अनुभव नही कर सकते। मुझे अपने जीवन मे जिस बात के देखने की आशा नही थी, उसे मैंने देख लिया। यदि आज मेरे प्राण भी चलने को तैयार हों, तो मैं बड़ी खुशी से उन्हे आज्ञा दे सकता हूं। इस आनन्द का कारण मैं बताना निरर्थक समझता हू, तुम में से प्रत्येक उसे अनुभव कर रहा है। लोग समझा करते थे कि हम दिमागों को परतन्त्र बनाना चाहते हैं, परन्तु अब लोग देख रहे हैं कि यदि कोई ऐसा स्थान है, जहा स्वतन्त्रता नही रुक सकती, तो वह यही स्थान है। मेरा अपने ब्रह्मचारियो को केवल एक ही उपदेश है—मत देखो कि लोग तुम्हे क्या कहते हैं, सत्य को दृढता से पकड़ो। सारे ससार का सत्य ही आधार है। यदि तुम्हारा मन, वचन और कर्म सत्यमय है, तो समझो कि तुम्हारा उद्देश्य पूरा हो गया : प्रसिद्धि के पीछे भाग कर कोई काम मत करो। प्रसिद्धि के पीछे भागने से किसी की प्रसिद्धि नही हुई। अपने सामने एक उद्देश्य रख लो, उसी में लग जाओ, फिर गिरावट असम्भव है। उपदेशक बनो या मत बनो, पर एक बात याद रखो बनावटी मत बनो। सब को परमात्मा वाणी की शक्ति या उपदेश देने की शक्ति नहीं देता। वाणी न हो न सही, किन्तु आचरण सत्यमय हो। नट न बनो, न इस ससार को नाट्यशाला बनाओ। स्वतन्त्र जीवन रखो। यदि इस प्रकार स्नातको का आचरण होगा, तो मुझे पूर्ण सन्तोष होगा।

(यह उपदेश कुल पिता ने चतुर्थ कुल जन्मोत्सव के समय फाल्गुण वदी 10, सम्वत् 1970 को दिया था।)

लुधियाना में विशाल पारिवारिक सत्संग

वेद प्रचार मण्डल लुधियाना की ओर से आर्य समाज फील्ड गज के सहयोग से रामनवमी के उपलक्ष्य मे श्री सतीश जी कपूर के निवास स्थान 135, खुड मोहल्ला चौक पर 31-3-85 साय 4 बजे से साढे छ बजे तक एक विशाल पारिवारिक सत्सग का आयोजन किया गया। श्री विजय कपूर तथा श्री अश्विनी कपूर सपत्नीक यजमान बने तथा प. रामकुमार जी आर्य, पुरोहित आर्य समाज फील्ड गज लुधियाना ने यज्ञ सम्पन्न कराया।

यज्ञ के पश्चात् आर्य युवक सभा लुधियाना द्वारा गठित वेद प्रचार भजन मण्डली, जिसका सचालन श्री किरपा राम जी तथा श्री यशपाल जी आर्य कर रहे हैं, ने अपने मनोहर गीतो एवं भजनो से आर्य भाइयो तथा बहनो को मन्त्र मुग्ध कर दिया। इनके अतिरिक्त श्रीमती बाला रानी तथा श्रीमती विनोद गाधी ने प्रभु भक्ति के गीत गाए तथा श्री रणवीर जी भाटिया ने भगवान श्री राम पर एक कविता पढ़ी।

श्री राम धन जी आर्य तथा श्री तिलक धर जी शास्त्री ने बडे ही सरल एव सारगर्भित ढग से मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेने के लिए धर्म प्रेमियो का मार्ग दर्शन किया। आर्य समाज फील्ड गज के प्रधान श्री ओम प्रकाश जी ने यजमान परिवार को वैदिक साहित्य भंट करते हुए आर्य नवयुवको को सत्सग के आयोजन पर बधाई दी तथा उनके कार्य की भूरि-भूरि प्रशसा की। इस अवसर पर यजमान परिवार ने मण्डल को 101 रु दान दिया तथा और भी महानुभावो ने दान दिया अन्त मे मण्डल के अध्यक्ष श्री रोशन लाल शर्मा ने सभी का धन्यवाद करते हुए युवको को आह्वान किया कि वे वेद प्रचार के कार्य मे जुट जाए।

—सुधीर भाटिया मन्त्री

आर्य समाज सरहिन्द में बलिदान दिवस

आर्य समाज सरहिन्द मे 22 मार्च को आर्य समाज स्थापना दिवस तथा नव सम्वत्सर मनाया गया तथा 23 मार्च को राजगुरु, सुखदेव भगतसिंह जी का बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल के बच्चो ने तथा श्री प. ओम् प्रकाश जी आर्य प्रेमी ने अपने भजनो द्वारा अमर शहीदो के चरणो में श्रद्धाजलि भेंट की। तीनों शहीदों के जीवन पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम बड़ा प्रभावशाली रहा।

जिला आर्य सभा की ओर से वेदों के प्रसिद्ध विद्वानों का शानदार स्वागत

17-3-85 रविवार प्रातः साढ़े 9 बजे से 11 बजे तक आर्य महिला कालेज लुधियाना के हाल में गुरुकुल कांगडी के विजिटर डा. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार तथा वेदों के विद्वान आचार्य सत्यकामजी विद्यालंकार मुख्य अधिष्ठाता गुरुकुल कांगडी का एक भव्य समारोह में शानदार स्वागत किया गया। समारोह की प्रधानता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के माननीय प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने की। सबसे पूर्व श्री मनोहरलाल आनन्द प्रिंसिपल आर्य कालेज ने विद्या सभा की बैठक में आए हुए बाहर के भाईयों का पुष्प मालाओं द्वारा स्वागत किया। बहिन कमला जी आर्या महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने दोनों विद्वानों का परिचय कराया। श्री प्रो. राजेन्द्र कुमार जी सैक्रेटरी आर्य कालेज ने अपने स्वागत भाषण में विद्वानों की भरपूर प्रशंसा की नगर की सब आर्य समाजों स्त्री आर्य समाजों आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा प्रतिष्ठित शहरियों की ओर से पुष्प मालाओं द्वारा उनका स्वागत किया गया जिला सभा की ओर से जिला सभा के प्रधान श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा ने आचार्य सत्यकाम जी विद्यालंकार तथा श्री सत्यानन्द जी मुन्जाल ने डा. सत्यव्रत जी को शाल भेंट की। आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री हरबसलाल जी शर्मा तथा कविराज वैद्य वेणी प्रसाद ने दोनों विद्वानों को एक-एक हजार रुपया भेंट किया। इस अवसर पर श्रीमती इन्द्रा मोहनी धर्म पत्नी श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा प्रधान जिला आर्य सभा ने आर्य कालेज तथा महिला कालेज को दो हजार रुपए दान दिया। स्टेज सैक्रेटरी का कार्य जिला सभा के महामन्त्री श्री आशानन्द आर्य ने सम्पन्न कराया। अन्त में कालेज के प्रधान श्री सत्यानन्द जी मुन्जाल तथा सभा के माननीय प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने सबका धन्यवाद किया। आर्य कालेज की ओर से सबको चाय आदि से सम्मानित किया गया। कालेज के उत्तम प्रबन्ध की सभी ने भरपूर प्रशंसा की। राष्ट्रीय गान के पश्चात् कार्यवाही समाप्त हुई।

—महामन्त्री जिला सभा

आर्य समाज जलालाबाद गर्बी का उत्सव

आर्य समाज जलालाबाद गर्बी जिला फिरोजपुर का वार्षिकोत्सव 24 से 28 अप्रैल तक होना निश्चित हुआ है। जिस में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री प. निरन्जनदेव जी इतिहास केसरी, श्री प. रामनाथ सि. वि. महोपदेशक, श्री प. सीताराम जी तथा श्रीराम जी भजनोपदेशक पधार रहे हैं। धर्मप्रेमी सज्जन समय पर पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ाएं और धर्म लाभ उठायें।

—डा. रिखी राम मन्त्री

स्त्री आर्य समाज से. १९ चण्डीगढ़ में राम-नवमी

स्त्री आर्यसमाज सैक्टर 19 की ओर से रामनवमी का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें श्री प. निरञ्जनदेव जी का प्रवचन और श्री सीताराम जी के भजन 24 मार्च से 31 मार्च तक बड़े प्रभावशाली होते रहे। इसके अतिरिक्त डा. सुषमा शर्मा और प्रिंसिपल वी. के. दीवान और कृष्णा कपूर ने श्रीराम जी के जीवन पर बहुत अच्छा प्रकाश डाला।

—प्रधाना सावित्री सेठी

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन न. 7425।

(रजि. न. पी. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 2, 9 वैशाख सम्वत् 2042, तदनुसार 21 अप्रैल 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

वेद सुधा—

उस महान् प्रभु का ध्यान करें

ले.—श्री स्वामी वेदानन्द जी महाराज

यस्तस्तम्भ सहसा वि ज्मो अन्तान् बृहस्पतिस्त्रिषधस्थो रवेण ।
त प्रत्नास ऋषयो दीध्याना पुरो विप्रा दधिरे मन्द्रजिह्वम् ॥

—ऋ 4।50।1

शब्दार्थ—(य) जिस (त्रिषधस्थ) त्रिलोकी में रहने वाले (बृहस्पति) महान लोक लोकान्तरो के पालक भगवान ने (सहसा) शक्ति तथा (रवेण) आदेश से (ज्म) ससार के (अन्तान) सिरो को (वि) विशेष रूप से (तस्तम्भ) थाम रखा है। (प्रत्नास) पुराने, सनातन व्यवहार कुशल (ऋषय) यथार्थदर्शी (विप्रा) मेधावी ज्ञानी (दीध्यान) ध्यान करते हुए (तम्) उस (मन्द्रजिह्वम) मधुरता के उपदेशक को (पुर) आगे (दधिरे) धरते हैं, अर्थात ध्यान करते हैं।

व्याख्या—

ससार मे व्यवस्था तथा नियम सूचित कर रहे हैं कि कोई ऐसा नियामक है जो इस सारे ब्रह्माण्ड का सचालन कर रहा है, जिसमे सबको वश मे रखने का सामर्थ्य है और जिसे सब दिशाओ का यथार्थ ज्ञान भी है अर्थात वह सवदेशी सर्वव्यापक तथा सवज्ञ है। मन्त्र के पूर्वार्द्ध मे उस महान का वणन है—

यस्तस्तम्भ सहसा वि ज्मो
अन्तान् बृहस्पतिस्त्रिषधस्थो
रवेण ।

जिस त्रिषधस्थ बृहस्पति ने सबसे बड रक्षक ने शक्ति तथा आदेश से ससार के सिरों को विशेष रूप से थाम रखा है वह त्रिषधस्थ तीनो लोको में एक साथ रहता है अर्थात् वह सदा सर्व व्यापक है, कारण और कार्य दोनो मे वह एक समान विराजमान है। सिद्ध हुआ कि बृहस्पति एक देशी नही सर्व देशी है। वह यह काम अपने सहज सामर्थ्य से कर रहा है। वह मन्द्रजिह्व मधुर उपदेशक है। उसके उपदेश मधु रस देते हैं। उपदेश ज्ञान के बिना नहीं हो सकता। सवत्र रहने वाले का ज्ञान भी सवव्यापक होना चाहिए।

अत सुखाभिलाषी ऋषि उसी का ध्यान करते हैं—

इसका एक भाव और भी है। पुरोधान आगे धरने का एक अथ है—नेता बनाना आदश बनाना। आदश जिसे बनाओ वह मन्द्रजिह्व या मधुर वाणी मीठी, जबान वाला हो। सचमुच भगवान के उपदेश मे कही भी कटुपन नहीं है। चारो वद पढ जाइए मिठास ही मिठास वहा मिलेगा। आलोचको का कहना है कि वेद के युद्ध सूक्तो मे भी एक मिठास है एक रस है।

क्या प्रत्यक मनुष्य भगवान का ध्यान कर सकता है? ध्यान करने वाले मे दो गुण होने चाहिए एक ऋषित्व और दूसरा विप्रत्व। महर्षि का अथ है—ऋषिदशनात जिन पद र्थों का यथाथ ज्ञान हो गया है जिसने प्रकृति के रजस और तमस के ब धन करने के गुण को देख लिया है वह क्य इस पाश मे फसेगा? किन्तु होता यह है कि मनुष्य बार बार भूल जाता है। प्रकृति तथा प्रकृतिजन्य ससार मे इतनी मोहकता इतना आकषण है कि प्राकृतिक विषयो के सामने आने पर मनुष्य को सारा ज्ञान भूल जाता है। अत केवल एक बार जान लेना ही पर्याप्त नहीं है वरन् उस ज्ञान को धारण करने का गुण भी होना चाहिए।

उस गुण का नाम है विप्रत्व विप्र कहते हैं मेधावी को मेधाबुद्धि वाले को। मेधा का अथ है धारणावती बुद्धि। इसी कारण वद मे अनेक स्थानो पर मेधा-बुद्धि की प्राप्ति क लिए प्रार्थना है।

परमेश्वर की मित्रता से परे न हों

ले—श्री प बिहारी लाल जी शास्त्री काव्य तीर्थ

अहमिन्द्रो न पराजिग्य इद्धन न मृत्यवे अवतस्थे कदाचन ।
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचत वसु न मे पूरव सख्ये रिषाथन । ऋ. 10-48 5

(अहम इन्द्र) मैं परमैश्वर्यवान इन्द्र हू (न पराजिग्ये) पराजित नहीं होता (इत धनम) और धन का स्वामी हू। (कदाचन मत्यवे न अवतस्थे) कभी मौत को नही प्राप्त होता (सोमम् इत सुन्वन्त) सोम शान्त्यादि गुणो का चयन करते हुए (मा वसु याचत) मुझ से धन मागो (पूरव मे सख्ये न रिषाथन) महान ज्ञानियो तुम मेरी मित्रता से परे मत हो।

इस मन्त्र द्वारा परमात्मा अपनी सामर्थ्य का प्रकाश करता हुआ मनुष्यो को आदेश देता है कि तुम लोग मेरी मित्रता से परे मत होओ और अपने मे शान्ति आदि गुणो को धारण करते हुए मुझ से जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक धन आदि वस्तुए मागो। मैं परमैश्वर्य शाली हू और कभी पराजय को नही प्राप्त होता तथा धनो का विजेता स्वामी हू और मै कभी भी मृत्यु को नही प्राप्त होता।

इस मन्त्र द्वारा परमात्मा तथा उस से याचना करने के सम्बन्ध मे निम्न सात बातो पर प्रकाश पडता है।

1 वह परमैश्वर्यशाली है।

2 उसे कोई जीत नही सकता।

3 वही धनो का एक मात्र स्वामी है।

4, वह अजर अमर है उसकी कभी मृत्यु नही होती।

5 मनुष्य को चाहिए कि वह शान्त्यादि गुणो को धारण कर योग्य बने।

6 योग्य बन कर पुरुषार्थ करता हुआ परमेश्वर से धनादि की याचना करे।

7 परमेश्वर ही सच्चा साथी है उसकी मित्रता मे रहे और उसका व्याघात कभी न करे।

हमे चाहिए कि हम सब भगवान की आज्ञानुसार अपने को योग्य बनावे और उसी परमेश्वर्यवान से जीवन की आवश्यक धनादि उत्तम वस्तुओ की याचना करें और कभी भी उस परम मित्र के स्नेह मे व्यवधान न आने दें।

या मेधा देवगणा
पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाग्ने
मेधाविन कुरु स्वाहा ॥

—यजु 32 13

जिस मेधा बुद्धि का सेवन निष्काम विद्वान तथा सकाम ज्ञानी करते हैं हे उन्नतिदायक प्रभो! उस मेधा बुद्धि से युक्त करके मुझे भी मेधावी कीजिए।

मेधा के बिना ससार का कार्य भी नही चल सकता। सच्चे मेधावी की पहिचान ही यह है कि वह भगवान का ध्यान करता हो।

वेद का उपदेश है कि मनुष्य का आदर्श बहुत ऊचा होना चाहिए। छोटे आदर्श वाले मनुष्य छोटे ही होते हैं।

वेद में उपदेश आता है—

उत्क्रामात पुरुष ।

हे मनुष्य इस अवस्था से ऊपर उठ।

अर्थात वर्तमान अवस्था पर ही सन्तोष करके नही रहना चाहिए वरन और अधिक उठने के लिए चेष्टा करनी चाहिए। अल्प मे सुख नही है, बडा बन का, बडाई प्राप्त करने का यत्न करना चाहिए। सनत्कुमार महात्मा ने नारद को ठीक ही कहा था—

यो वै भूमा तत्सुख
नाल्पे सुखमस्ति ।

जो सब मे बडा है, वही सुख है
थोड़े मे तो सुख है ही नही।

आओ! महान का अनुसधान करें। मनुष्य जीवन की इसी में सार्थकता है।

व्याख्यान माला (स्वामी अच्युतानन्द)

परमेश्वर प्रार्थनादि

अनुवादक—श्री सुखदेवराज शास्त्री विद्यावाचस्पति, श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जालन्धर

(7 मार्च से आगे)

यो ब्रह्माण विदधाति पूर्वं यो वै वेदाश्च प्रहिणोति तस्मै ।
त ह देवमात्म बुद्धि प्रकाश मुमुक्षुर्वै शरणमह प्रपद्ये ।31।

जो भगवान् पहले ब्रह्मा को बनाता है उसके लिए फिर वेद प्रदान करता है। उस आत्म ज्ञान के प्रकाशक दिव्य स्वरूप परमात्मा की शरण को प्राप्त होता हूं।

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय,
नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ।
नमोऽद्वैततत्त्वाय मुक्ति प्रदाय,
नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ।32।

तुझ सत्य स्वरूप, जगत् के कारण भूत प्रभु को नमस्कार हो तुझ चित्-स्वरूप, सर्व लोको के आश्रय भूत परमेश्वर को प्रणाम हो, मुक्ति प्रदान करने वाले एक अद्वैत तत्व, नित्य व्यापक ब्रह्म को बार-बार प्रणाम हो।

त्वमेक शरण्य त्वमेक वरेण्यम्-
त्वमेक जगत्पालक स्वप्रकाशम् ।
त्वमेक जगत्कर्तृ पातृ प्रहर्तृ
त्वमेक पर निश्चल निर्विकल्पम् ।33।

हे आनन्द स्वरूप परमेश्वर ! इस विश्व मे तू ही एक मात्र शरण लेने योग्य है, तू ही एक मात्र वरण करने योग्य जगत् का पालक तथा स्वय प्रकाशमान है। तू ही सकल जगत का कर्त्ता, धर्ता तथा हर्ता है तू ही सर्व श्रेष्ठ ध्रुव धर्म तथा अद्वितीय है।

भयाना भय भीषण भीषणानाम्,
गति प्राणिना पावन पावनानाम् ।
महोच्चै पदाना नियन्तृत्वमेक,
परेषा पर रक्षण रक्षणानाम् ।34।

हे परमात्मन ! आप ही भीषण भय देने वाले जीवा के भीषण भय हैं। समस्त प्राणियो को गति देने वाले तथा पवित्र से भी पवित्र है। आप ही सर्वोच्च स्वामी तथा सर्व नियन्ता हैं। श्रेष्ठो मे श्रेष्ठ है तथा रक्षको मे आप ही सर्वोपरि रक्षक है।

वयं त्वा स्मरामो वयं त्वा भजामो,
वय त्वा जगत्साक्षिरूपं नमाम ।
सदेकं निधानं निरालम्बमीशम्,
भवाम्भोधि पोतं शरण्यं व्रजाम: ।35।

हे प्रभो ! हम आपका स्मरण तथा भजन करते हैं जगत् ही जिसका साक्षात् स्वरूप है, ऐसे परमेश्वर को प्रणाम करते हैं। सत्य स्वरूप जगदाधार स्वय निराश्रय परन्तु जो सबका आश्रय एक परमेश्वर है जो ससार रूपी सागर के बीच नौका के तुल्य सहायी है जो सभी को शरण लेने योग्य है हम उसकी शरण को प्राप्त होते हैं।

विदुर्यं न चित्तेन्द्रियाणीन्द्रियेशम्,
विजानाति यस्तानि नित्यं नियन्ता ।
जगत्साक्षिण व्यापकं विश्वकल्पम,
चिदानन्दरूप तमीश प्रपद्ये ।36।

जिस परमेश्वर को इन्द्रिया तथा इन्द्रियों का स्वामी मन नहीं जानता है परन्तु जगत को नियम में रखने वाला वह परमेश्वर इन सभी को जानता है। ऐसे जगत् के साक्षी रूप, सर्वत्र व्यापक, सर्वकल्प उस चेतनानन्द स्वरूप ईश्वर को हम प्राप्त होते हैं।

अणोरप्यणीयान् महद्भ्यो महीयान्,
रवीन्दुग्रहैर्यो भूगोलादिकर्त्ता ।
य ईशो हि सृष्ट्यादिमध्यान्तसस्थ,
चिदानन्दरूप तमीश प्रपद्ये ।37।

जो परमात्मा सूक्ष्म से सूक्ष्म, महान् से भी महान् सूर्य, चन्द्र तथा तारागणों के द्वारा भूगोलादि ब्रह्माण्ड का रचयिता है। जो ईश्वर सृष्टि के आदि मध्य और अन्त अवस्थाओ मे स्थित रहता है उस चेतन व आनन्द स्वरूप ब्रह्म की शरण को हम प्राप्त होते हैं।

वशे यस्य विश्व समस्त सदाऽऽस्ते,
यदाभासतो भाति यद्वै विचित्रम् ।
न जानन्ति यन्तत्त्वतो योगिनोऽपि,
चिदानन्दरूप तमीश प्रपद्ये ।38।

सदैव जिस परमात्मा के वश मे सारा ससार रहता है निश्चय ही जिसके प्रकाशित होने से सम्पूर्ण जगत् अद्भुत सा प्रकाशित होता है योगीजन भी जिसे तत्वत नहीं जान पाते ऐसे चेतन स्वरूप, आनन्द घन परमेश्वर को हम प्राप्त होते हैं।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविण त्वमेव, त्वमेव सर्वमम देव देव ।39।

भगवन् ! आप ही हमारे माता-पिता, बन्धु तथा सखा हैं। स्वामिन् ! आप ही हमारे विद्याधन हैं। हे देवो के देव ? आप ही मेरे सर्वस्व हैं।

तमीश्वराणा परम महेश्वरन्तन्देवताना परमञ्च दैवतम् ।
पतिम्पतीना परम परस्ताद विदाम देव भुवनेशमीड्यम् ।40।

उस महेश्वरो के भी महेश्वर, देवताओ के भी परम देव पतियो के भी अधिपति, श्रेष्ठो से भी श्रेष्ठ, सर्व जगत के शासक स्तुत्य देव का हम ज्ञान प्राप्त करते हैं।

एको देव सर्वभूतेषु गूढ सर्व व्यापी सर्व भूतान्तरात्मा ।
कर्माध्यक्ष सर्वभूताधिवास साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च ।41।

वह दिव्य स्वरूप परमेश्वर एक सब प्राणियो मे अन्तर्निहित, सर्वव्यापी सब लोको मे व्याप्त सभी शुभाशुभ कर्मों के फल प्रदाता सब प्राणियो का आश्रय-भूत, सब प्राणियो के क्रिया-कलापो का प्रत्यक्षदर्शी चेतन स्वरूप तथा निर्गुण है।

अपाणीपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षु: स शृणोत्यकर्ण. ।
स वेत्ति वेद्य न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं महान्तम् ।42

वह ईश्वर हाथ-पाव रहित परन्तु सबको ग्रहण करने वाला तथा सब से अधिक वेग वाला है, आखें न होते हुए भी सब को तथा सब कुछ देखता है। बिना कान के ही वह सब कुछ सुनता है। वह सभी का पूर्ण ज्ञाता है परन्तु उसको पूर्णतया कोई नही जानता। इसीलिए उसे सब का अग्रणी महान् तथा परम पुरुष कहा गया है।

(क्रमश)

सम्पादकीय—

उजाले की एक किरण

जब किसी स्थान पर अन्धकार छा जाता है तो कुछ दिखाई नहीं पड़ता। कई बार अन्धकार में मानव ठोकरें भी खाता है और कई बार मार्ग से भी भटक जाता है। वह अपने रास्ते को भूल जाता है और गलत रास्ते पर चल पड़ता है, उसे यह पता नहीं होता, जिस रास्ते पर वह चल रहा है वह कहां पहुंचेगा। जब सूर्य की किरण पृथिवी पर पड़ती है तब चारों ओर उजाला फैल जाता है। रास्ता भूला हुआ व्यक्ति जब अपने रास्ते को देखता है जिस पर वह अन्धेरे में चला जा रहा था। उसे पता चलता है कि वह मंजिल की ओर नहीं बढ़ रहा, बल्कि मंजिल से पहले से भी दूर चल गया है। वह फिर पश्चाताप करता है परन्तु अब पछताने से कुछ नहीं होता जो भूल हो गई उसका दण्ड तो भुगतना ही पड़ेगा।

यह स्पष्ट है कि अन्धकार दुःखदायी और उजाला सुखकारी होता है। दूसरे शब्दों में उजाला पुण्य का प्रतीक है और अन्धकार पाप का। क्योंकि सभी प्रकार के पाप अन्धकार में होते हैं और पापी दुष्ट या चोर व्यक्तियों को अन्धकार ही प्यारा लगता है वह प्रकाश को चाहते भी नहीं। अपनी काली करतूतें करने के लिए उन्हें अन्धकार चाहिए। जब-जब किसी देश में अन्धकार बढ़ा, तब-तब पाप और अत्याचार भी बहुत बढ़े।

महर्षि दयानन्द के आने से पहले भारत में अनाचार, अत्याचार, पाप, पाखण्ड, पोपलीला, घृणा, द्वेष और अस्पृश्यता चरम सीमा पर पहुंचना चाहती थी। चारों तरफ अन्धकार छाया हुआ था। लोग अपना रास्ता ही भूल गए थे। स्थिति यहां तक बिगड़ गई थी कि हमें अपने स्वरूप का भी बोध नहीं था। भारत देश दिन प्रतिदिन अन्धकार के गर्त में गिरता चला जा रहा था। बड़ी शोचनीय दशा थी। इतनी देर में गुजरात से प्रकाश की एक किरण भारत भू-भाग पर पड़ती दिखाई दी।

टकारा में एक शिवालय में बैठे पुजारत बालक के हृदय में प्रकाश का उदय हुआ और वह प्रकाश निरन्तर बढ़ता चला गया, जहां इस प्रकाश से यह बालक स्वयं प्रकाशित हुआ वहां धीरे-धीरे ज्ञान प्राप्त करके वह प्रकाश का एक पुञ्ज बन गया और उसने अपनी किरणों को सारे देश में चारों ओर फैला दिया।

जब यह मूलशंकर से दयानन्द बन गए तो जहां भी जाते अज्ञानता के अन्धकार को छिन्न-भिन्न करके उसके स्थान पर प्रकाश फैला देते। बड़े 2 पण्डे, पुजारी, दिग्गज विद्वान् भी जो अन्धेरे में भटक रहे थे इस प्रकाश की किरण के पड़ते ही उन्होंने जाना कि वह अपने वास्तविक लक्ष्य से, जीवन के उद्देश्य से बहुत दूर चले गए हैं। वह सभी रास्ते पर आने लगे, कुरीतियों और अन्धविश्वासों का भण्डा फोड़ होने लगा। जो अपना अच्छा या बुरा बिना विचारे भेड़-चाल से चले जा रहे थे, उनके पांव रुके, बुद्धि के ताले खुले, सत् वचन महाराज के स्थान पर शंका-समाधान, तर्क वितर्क होने लगा।

सारे भारत देश में एक लहर-सी दौड़ पड़ी, मुस्लिम और ईसाई भी इससे प्रभावित हुए, उन्हें भी अपनी त्रुटियां महसूस होने लगीं। पहले उन्हें यह ज्ञान ही नहीं था कि उनमें भी कोई त्रुटि है। अन्धविश्वासों, पाखण्डों, छूआछूत और दूसरी सामाजिक बुराईयों के किले ढहने लगे। स्वार्थ और पेट-पूजा के स्थान पर परमार्थ आने लगा। जब भारतीय आकाश पर छाये यह काले बादल छिन्न-भिन्न होने लगे तब ज्ञान सूर्य की किरणें भारत-भू पर पड़ने लगी गुलामी की जंजीरों में जकड़े भारतीय जब आजादी के लिए छट-पटाने लगे, मानों वर्षों से पिंजड़े में बन्द पक्षी के परों और शरीर में नव-शक्ति का संचार हो गया हो और वह पिंजड़े को तोड़कर बाहिर निकलने को तैयार हो गया हो। देश प्रेम का गान सभी की जुबान पर आने लगा सारा ही सोया भारत अंगड़ाई लेकर खड़ा हो गया। यह किसका प्रभाव था उजाले की एक किरण का।

ऋषिवर ने आर्य समाज रूपी एक और दीपक जला दिया ताकि जहां तक उनके ज्ञान की किरण न पहुंच रही हो वहां तक यह दीपक प्रकाश पहुंचा दे। इस दीपक ने घर-घर, गली-गली, ग्राम-ग्राम, नगर-नगर और यहां तक पर्वतों की अन्धेरी कन्दराओं में और ऊंची चोटियों पर भी प्रकाश फैला दिया।

देश में एक नव-जागृति आई, बड़े 2 बुद्धिजीवी, वकील, डाक्टर, प्रोफेसर, अध्यापक इसकी ओर बढ़ने लगे और प्रकाश पाकर स्वयं को प्रकाशित करते हुए तथा दूसरों को भी प्रकाशित करने लगे। लेकिन दुर्भाग्य ही समझिए कि प्रकाश का वह पुञ्ज सभी को आलोकित करके एक दिन बुझ गया। परन्तु उसके चले जाने पर उसके द्वारा जलाए गए दीपक अन्धकार से लड़ने लगे उसके द्वारा संस्थापित आर्य समाज मैदान में आ डटा। भारत स्वतन्त्र हुआ, विदेशी अपना गोल बिस्तरा करके चलते बने। परन्तु उन्हें भारतीयों का वह संगठन नव-चेतना, नव-जागृति, आपस का स्नेह, प्यार व एकता स्वीकार नहीं थी। वह चलते 2 भी यहां फूट का बीज बो गए। जिससे आज फिर भारतीय आकाश पर विघटन के बादल मंडराने लगे हैं। आज फिर स्वार्थ पनपने लगा है। आज भाई का भाई शत्रु बन उसकी जान लेवा होता जा रहा है। सारे भारत वर्ष में फिर अराजकता सिर उठाने लगी है। स्वार्थी लोग आगे आने लगे हैं। धर्मात्मा और सदाचारी पीछे दुबकने लगे हैं। कुछ स्वार्थी मनमानी कर रहे हैं और धर्म परायण लोग कहने लगे हैं हमें क्या लेना है जो करेगा सो भरेगा।

मैं आर्य बन्धुओं से कहना चाहता हूं कि यदि महर्षि दयानन्द भी यही विचार बना लेते जो आज के बुद्धिजीवी बनाते जा रहे हैं तो उस समय देश की क्या स्थिति होती। इस पर विचार करें। वह तो संन्यासी थे उन्हें क्या था वह किसी कन्दरा में बैठकर प्रभु भजन करते, उन्हें क्या पड़ी थी कि वह दर-दर भटकते, ईंटें, पत्थर खाते, जहरें पीते, लोगों से शास्त्रार्थ करते। वह ऋषि थे, उन्होंने अपने कर्त्तव्य को समझाया और अनेकों कष्ट उठाकर भी उसे पूरा किया। कोई रुकावट कभी भी और कहीं भी, किसी भी क्षेत्र में उनका रास्ता न रोक सकी। हम भी उनके अनुयायी हैं फिर हमारा ही क्यों रास्ता रुकता है क्यों आर्य समाज रूपी गाड़ी को चलते 2 ब्रेक सी लग जाती है। ऋषि ने तो अपना कर्त्तव्य निभा दिया था क्या हम उनके अनुयायी कहलाने वाले आर्य समाजी अपना कर्त्तव्य नहीं निभाएंगे?

महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा संस्थापित आर्य समाज ने प्रत्येक क्षेत्र में उस समय देश का नेतृत्व किया था प्रत्येक समस्या को हल करने का प्रयास किया था चाहे वह धार्मिक थी, सामाजिक थी या राजनैतिक, इतिहास इसका साक्षी है, फिर आज ही क्यों आर्य समाज पीछे हटकर बैठा रहे। आज देश को आर्य समाज की फिर आवश्यकता है। उजाले की उस किरण की आवश्यकता है जो देशद्रोही, स्वार्थी और घातक लोगों के हृदय में छुपे अन्धकार को छिन्न-भिन्न कर दे और सभी के मनों में फिर से प्रेम का उजाला कर दे।

क्या प्रत्येक आर्य समाजी, देशभक्त आज की स्थिति पर बैठकर ठण्डे मन से विचार नहीं करेगा। आज आर्य समाज सभी क्षेत्रों से पीछे हटा दिखाई पड़ रहा है। धार्मिक, सामाजिक क्षेत्र खाली पड़े हैं इन क्षेत्रों में तो फिर भी थोड़ा-बहुत कार्य हो रहा है परन्तु राजनैतिक क्षेत्र तो बिल्कुल ही खाली पड़ा है। आज इस क्षेत्र में वह लोग आगे आ गए हैं जिनको अपनी गद्दियों की ही चिन्ता है उनकी कुर्सी बनी रहनी चाहिए। देश भले ही भाड़ में जाए या नष्ट हो जाए, उन्हें इसकी कोई चिन्ता नहीं। परन्तु वह भूल में हैं यदि देश है तो उनकी कुर्सी भी रह सकती है, यदि देश ही विदेशियों के हाथों मे चला जाएगा या विघटनकारियों के हाथों में चला जाएगा तो न वह बचेंगे न उनकी कुर्सी बचेगी। परन्तु उन्हें यह समझाए कौन? केवल एक आर्य समाज ही ऐसी संस्था है जो उन्हें यह बात समझा सकती है। इसलिए आर्य समाज को अपने प्रकाश को मध्यम न पड़ने देना चाहिए, यह ज्ञान का प्रकाश निरन्तर बढ़ता ही रहना चाहिए। हमें प्रत्येक क्षेत्र में, चाहे वह धार्मिक हो, सामाजिक हो या राजनैतिक, सभी में आगे आकर भारतीय जनता का मार्ग दर्शन करना चाहिए। भूले-भटकों को रास्ता दिखाकर उन्हें मार्ग पर लाने का प्रयास करना चाहिए। आर्य समाज ही आज एक उजाले की किरण है।

—सह-सम्पादक

गाजियाबाद (उ.प्र.) में संस्कृत संस्कृति स्वाध्याय सत्र

ले.—श्री ब्रह्मदत्त शर्मा कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर शहर

✻

अम्बू दयाल दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) मे पूज्य स्वामी सर्वानन्द सरस्वती जी अध्यक्ष यति मण्डल, के आदेशानुसार सस्कृत, सस्कृति स्वाध्याय सत्र दिनाक 18-3-85 से 31 3 85 तक सफलता-पूर्वक आयोजित किया गया। इस सत्र मे यति, वानप्रस्थी एव ब्रह्मचारी आहूत किए गए थे। यह सत्र 16-3 85 को पूर्व घोषणा के अनुसार प्रारम्भ होना था परन्तु आमन्त्रित श्रेणियो के व्यक्तियो की पर्याप्त सख्या मे उपस्थिति न होने के कारण प्रतीक्षा रूप मे दो दिन अधिक दिए गए और सत्र 18 3 85 को प्रारम्भ हो सका। इस सत्र मे राज-स्थान हरियाणा, उत्तर प्रदेश पजाब से वानप्रस्थी सम्मिलित हुए। मुझे भी स्वामी सर्वानन्द जी से विशेषानुमति लेकर सत्र मे भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हमारे अतिरिक्त उस आश्रम मे चल रहे उपदेशक विद्यालय के 6 ब्रह्मचारी और कुछ स्थानीय सन्यासी और वानप्रस्थी भी सम्मिलित हुए। दो देवियां भी इस सत्र मे यदाकदा आती रही जो स्थानीय थी। कुछ दिनो पश्चात एक ब्रह्मचारी कर्नाटक से और एक पौराणिक युवा सन्यासी (नैष्टिक) मध्य प्रदेश से शामिल हो गए जो ज्ञान की खोज मे भिन्न-भिन्न आश्रमो मे घूम रहे थे।

ऐसे उपयोगी सत्र मे लोग क्यो नही आए। 50 व्यक्तियो के आने की आशा थी पर 18 3-85 को बाहर से आने वालो की सख्या कुल 9 थी। इस के कारणो का पता लगाना चाहिए कि आया आमन्त्रित श्रेणियो के लोगो मे ऐसे सत्र के प्रति रुचि नही है या इसका पर्याप्त प्रचार और सूचना नही दी गई। मेरे विचार मे यदि ऐसे सत्र के लगने से एक मास पूर्व एक लेख जिस मे ऐसे सत्रो का उद्देश्य, शैक्षणीय विषय उप-योग्यता आदि विस्तृत रूप से हो सभी आर्य पत्रिकाओ मे प्रकाशित हो जाए और फिर इस सत्र के सम्बन्ध मे सूचना निरन्तर निकलती रहे तो विशेष लाभ-दायक सफल यह सत्र सिद्ध हो सकते हैं। अस्तु।

इस सत्र मे तीन आचार्यगण सर्व श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती, ब्रह्मचारी ज्ञानेश्वरार्य जी (जो प्राय तपोवन देहरादून में निवास करते हैं) भिन्न-2 विषयो का प्रशिक्षण देते रहे। इसके अतिरिक्त वहा आश्रम के उपदेशक विद्यालय के आचार्य श्री स्वामी प्रज्ञानन्द जी से कुछ लोगो ने सस्कृत पढना भी प्रारम्भ किया और थोडे समय मे पर्याप्त गति प्राप्त कर ली थी।

(1) श्री स्वामी दीक्षानन्द जी ने इस सत्र के लगाने का अभिप्राय और सस्कृत सस्कृति, स्वाध्याय और सत्र की बहुत सुबोध व्याख्या करके प्रतिदिन डढ या दो घण्टे (कभी-कभी तीन घण्टे) का समय देते हुए निम्नाकित विषयो का प्रशिक्षण दिया।

(क मूल स्वर 'अ की व्याख्या यह बताई कि यह सब मे है और इस मे सब हैं, अन्य स्वरो और व्यञ्जनो का ज्ञान शुद्ध व्यञ्जनो की पहचान आधे व्यञ्जनो को पढने और लिखने का प्रकार और शुद्ध उच्चारण।

(ख) भिन्न भिन्न स्वरान्त व्यजनो के उच्चारण का अभ्यास

(ग) वद मन्त्रो के पदो की अक्षरी करने का लिखित एव मौखिक अभ्यास वेद मन्त्रो के उच्चारण सुन कर लिखन का अभ्यास जो बाद मे स्वामी जी स्वय अक्षरी करके अपने लेख मे अशुद्धि देखने को हमे कहते जिससे सब को अपनी भूल का ज्ञान हो जाना और सुधार कर लिया जाता।

(घ, स्वर सन्धिया (दीघ गुण वृद्धि यण आदि) का ज्ञान प्रकार और इन मे परस्पर अन्तर इनका सधि प्रयोग और विच्छेद का अभ्यास,

(ङ) वेद मन्त्रो के पढने की विधि और यथावकाश थोडा अभ्यास भी कराया। सध्या स्तुति प्रार्थना उपासना मन्त्रो और दैनिक यज्ञ के मन्त्रो का उच्चारण करके हमे बताया जिससे हमे बोध हुआ कि हम लोग प्राय अशुद्ध उच्चारण करते हैं,

(च) सरित शब्द के सातो विभक्तियो के तीनो वचनो के रूपो मे मूल (सू औ, जस अम औट शस आदि) इक्कीस प्रत्ययो का पाणिनी जी के ग्रन्थ अष्टाध्यायी के कतिपय सूत्रो को सरल ढगो मे बताकर रूपान्तर करने का प्रकार बडी बुद्धिमत्ता शैली में बताया जिस का प्रयोग हर एक शिक्षार्थी ने समझा।

(छ) निरक्षर व्यक्तियो को देव-नागरी लिपि पढाने की बहुत सुगम विधि बताई।

(ज) उपनयन (यज्ञोपवीत) का रहस्य समझाया और इसका महत्व दर्शाया।

(झ) महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखित 'सत्यार्थ प्रकाश' की रूप रेखा बताई और उसको पढने का क्रम समझाया।

(ञ) स्वामी समर्पणानन्द जी द्वारा लिखित काया-कल्प' सार बताया और उसका अध्ययन कराया।

(ट) वक्तव्य देने या किसी विषय पर लेख अथवा पुस्तक लिखने का ढग समझाया और किसी पुस्तक के स्वाध्याय करने का नियम बनाया। उन्होने अपनी ओर से कोई 60 70 पुस्तकें दे रखी थी एक पुस्तकालय के रूप में मेरे पास रहती थीं जिसको मैं प्रति रात्रि मे आठ बजे सभी को बड हाल मे स्वेच्छा विहार पढने को देता था स्वामी जी स्वय भी यह देखने आते थे, यह सब पूज्य स्वामी जी ने इस उद्देश्य से हम लोगों को पढ़ाया और सिखाया कि हम अपने स्थान पर वापिस जाकर उसी तरह अन्य लोगो को पढाए और लिखाए।

(2) श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित सस्कार विधि मे से कई सस्कार यथा नामकरण चूडा कर्म (मुण्डन) उपनयन, विवाह एव अन्त्येष्टि आदि सस्कारो को कराने की विधि अच्छी तरह बताई और इन सस्कारो के सम्बन्ध में प्राय उठने वाली शंकाओं का युक्ति-युक्त समाधान बताया। हर एक क्रिया की पूरी जानकारी देकर हम लोगों में सस्कारो को स्वय-स्वतन्त्र रूप से कराने का विश्वास दृढ किया।

3 श्री ब्रह्मचारी ज्ञानेश्वरार्य जी ने महर्षि गौतम द्वारा लिखित न्याय दर्शन की जानकारी देकर पहला अध्याय (दो आह्णिक) पढाए जिससे हम लोगों को शास्त्रानुसार बातचीत करने और किसी अन्य मतावलम्बी से शास्त्रार्थ युक्तियुक्त करने का साहस पैदा करने का प्रयत्न किया केवल एक घण्टाप्रतिदिन ही संस्कृत सीखने की सुगम विधि का प्रबंध किया सत्रार्थियों में सस्कृत के लिए रुचि पैदा की।

आश्रम के अधिष्ठाता स्वामी प्रेमा-नन्द जी और मन्त्री श्री बनारसन भिक्षु जी ने सभी लोगो के आवास और भोजन आदि का बहुत उत्तम प्रबन्ध किया। आश्रम मे पढने वाले ब्रह्मचारियों ने अपनी सेवा द्वारा हमको बहुत सुविधाए पहुचाई। प्रातराश मे दूध, दलिया, प्रात और साय रोटी, दाल,सब्जी और रात्रि को हर-एक को पाव भर शुद्ध, दुग्ध हर कक्ष में आकर देते थे। सब प्रबन्ध सराहनीय था। सभी सत्रार्थियो हर तरह से सन्तुष्ट एव प्रसन्न मुद्रा मे 31-3 85 को आश्रमवासियो का धन्य-वाद करते हुए और भविष्य मे भी ऐसे शिक्षाप्रद और उपयोगी सत्रो को कम से कम एक मास की अवधि का लगाने का अनुरोध करके फिर मिलने की आशा से अपने 2 घरों के लिए प्रस्थान किया।

जवाहरनगर जालन्धर में विशेष यज्ञ

गत दिनो स्त्री आय समाज ऋषि कुञ्ज पक्का बाग जाल धर की मन्त्राणी श्रीमती सुशीला भगत ने अपनी सुपुत्री के विवाह सस्कार के उपलक्ष्यमे अपने निवासस्थान-71 न्यू जवाहरनगरमे एक सप्ताह तक विशेषयज्ञ तथा सत्सग का आयोजन किया था। जिसमे लगातार प्रतिदिन बहुत सी बहनो व भाईयो ने भाग लिया। यह यज्ञ व विवाह सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सभा के सहायक वेद प्रचार अधिष्ठाता प धर्मदेव जी आर्य ने करवाया। जिससे जनता बहुत प्रभावित हुई। इससे यज्ञ के प्रति लोगो की श्रद्धा बढी। सारा कार्यक्रम बडा प्रभावशाली रहा। इस अवसर पर श्रीमती सुशीला जी ने 101 रुपए वेद प्रचार और एक बिजली का पखा नव भवन मे लगाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को दान में दिया।

वैदिक विद्वान का सार्वजनिक अभिनन्दन

आर्यसमाज बडा बाजार कलकत्ता द्वारा आर्य समाज के लेखक साहित्यकार, वक्ता तथा गवेषक डा भवानीलाल भारतीय (अध्यक्ष दयानन्द शोध पीठ पजाब विश्व विद्यालय) का वैदिक मिशन की उन्नति हेतु उनकी साहित्य सेवाओ के लिए कलकत्ता के महाजाति सदन मे सम्मान व साइत्रानक अभिनन्दन दिनाक 4 मई 1985 का किया जाएगा।

—

मेधावी छात्रा



आर्य गर्ल्ज हायर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना की छात्रा कुमारी सीमा कपूर सपुत्री श्री मुलखनराजकपूर ने मार्च 1984 की आठवीं की परीक्षा में सस्कृत में 100में से 98 अक प्राप्त करके लुधियाना जिला मे द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा शिक्षा विभाग से छात्रवृत्ति प्राप्त की।

ऋषि दयानन्द का शिक्षा दर्शन

ले.—वेद मार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, पूर्व आचार्य एवं कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

(गतांक से आगे)

9. छात्रों की दिनचर्या में दोनों समय सन्ध्या और अग्निहोत्र करना अर्थात् दोनों समय परमात्मा की उपासना में बैठना और उसके गुणों का चिन्तन करना आवश्यक होता है जिससे वे परमात्मा के सत्य, न्याय, दया आदि गुणों को अपने भीतर धारण करके परमात्मा जैसे निर्मल और पवित्र बन सकें। छात्रों के लिए दोनों समय स्वच्छ वायु में खड़े होकर कोई न कोई व्यायाम करना या खेलना कूदना भी आवश्यक होगा। विद्यार्थियो के लिए तपस्वी होना अर्थात् सभी प्रकार के साज-सिंगार से परे रहकर पूर्ण सादगी का जीवन बिताकर अहिंसा के व्रती होकर वे मांस, मछली, अण्डों राजस और तामस भोजन से सर्वथा दूर रहेंगे। वे गौ का दूध, दही और मक्खन तथा गेहूं चावल, दाल, शाक और फलों आदि का विशुद्ध आदि सात्विक भोजन ही करेंगे। वे तम्बाकू-शराब आदि मादक द्रव्यों से सर्वथा दूर रहेंगे।

10. जिस प्रकार की सादगी संयम और पवित्रता की दिनचर्या विद्यार्थियों के लिए आवश्यक होगी वैसे ही दिनचर्या उनके गुरुओं के लिए भी आवश्यक होगी। अपने गुरुओं के जीवन से ही विद्यार्थियों ने सब कुछ सीखना है।

11 महर्षि दयानन्द सहशिक्षा के तीव्र विरोधी हैं, उनके अनुसार लड़कों की शिक्षा सस्थाएं पृथक् और लड़कियो की शिक्षा सस्थाएं पृथक होनी चाहिएं। लड़कों की सस्था में शिक्षक और अन्य कर्मचारी स्त्रियां ही होनी चाहिएं। सहशिक्षा के दुष्परिणाम आज के शिक्षा जगत् में भली-भांति देखे जा सकते हैं।

12. राष्ट्र के प्रत्येक बालक को ऊंची से ऊंची शिक्षा प्राप्त करने का अवसर अनिवार्य रूप से प्राप्त होना चाहिए। ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि जाति नियम और राजनियम होना चाहिए। कि पांचवें और आठवें वर्ष से आगे माता-पिता अपने बालक-बालिकाओं को अपनी अपनी 2 पाठशालाओं में पढ़ने के लिए अवश्य भेज देवें। कोई अपने बच्चों को घर में न रखे। जो माता-पिता ऐसा न करें उन्हें दण्ड दिया जाए। सब बालकों को भोजन, वस्त्र, आसन और पुस्तकें आदि सब कुछ शिक्षा सस्थाओं द्वारा राज्य की ओर से निःशुल्क दिया जाएगा। इस व्यवस्था से निर्धन से निर्धन बालक ऊंची से ऊंची शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। सभी बालकों को वस्त्र, भोजन आदि सब सामग्री एक साथ दी जाएगी। और सबको एक समान तपस्वी जीवन बिताना पड़ेगा चाहे जो बालक निर्धन मजदूर का हो और चाहे किसी ऊंचे राजकर्मचारी अथवा राष्ट्रपति का हो। सबके समान एक साथ समान वर्ताव किया जाएगा। इस व्यवस्था से जहां एक तो यह लाभ होगा कि राष्ट्र के प्रत्येक बालक के लिए ऊंची से ऊंची शिक्षा बिना किसी प्रकार के विघ्न-बाधा के प्राप्त कर सकना सम्भव होगा। वहां दूसरी ओर यह लाभ भी होगा कि शिक्षा काल के लम्बे समय तक एक समान जीवन के लिए अत्यन्त हानिकारक जन्म पर आधारित घृणा मूलक भावना भी नहीं उत्पन्न नहीं हो पाएगी। एक तीसरा लाभ इस अवस्था में यह होगा कि बालक यह सोचेंगे कि उन्हों ने अपनी शिक्षा राष्ट्र के व्यय पर प्राप्त की है इसलिए उनका कर्तव्य है कि वे अपनी शक्ति के अनुसार राष्ट्र की अधिक से अधिक सेवा करें। इस भावना से प्रेरित होकर युवक लोग जब राष्ट्र में विभिन्न कार्यों को सम्भाल लेंगे तो राष्ट्र को उनसे बहुत अधिक लाभ मिलेगा। शिक्षा के क्षेत्र मे ऋषि दयानन्द की पद्धति पराकाष्ठा की साम्यवादी है।

13. यह तो कहने की आवश्यकता ही नहीं है कि शिक्षकों को भी उनकी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आवश्यक भोजन-वस्त्र आदि सब कुछ राज्य की ओर से शिक्षा सस्थाओं की ओर से मिलेगा। पर शिक्षकों को भी सादगी और तपस्या और परिग्रह की वृत्ति का जीवन बिताना पड़ेगा। उन्हें धन के पीछे दौड़ने वाला नहीं होना होगा। उन्हे तो सभी दृष्टि से जनता के मार्ग दर्शक बनना पड़ेगा।

14. जितना-जितना विश्व की शिक्षा संस्थाओं में ऋषि दयानन्द के शिक्षा विषयक सिद्धान्तों को समाविष्ट किया जाता रहेगा उतना उतना ही वे सस्थाएं आदर्श शिक्षा को फैलाकर देश का अधिक कल्याण कर सकेंगी।

—

सभा द्वारा प्रकाशित एवं प्रचारित साहित्य

1. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका —16 रुपये।
2. सस्कार विधि —6 रुपये।
3. सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी सजिल्द —8 रुपये।
4. सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी अजिल्द —5 रुपये।
5. अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द ले.—इन्द्र विद्यावाचस्पति —5 रुपए।
6. आर्यसमाजके अतीत की उपलब्धियां तथा भविष्य के प्रश्न—10 रुपये।
—ले—डा भवानी लाल जी भारतीय
7. आर्य समाज के नियम (कार्ड) —50 रुपये सैकड़ा।
8. पंजाब का आर्य समाज द्वितीय (संस्करण) —4 रुपये।
ले.—श्री स्व. रामचन्द्र जावेद।
9. सगठन मे शक्ति है ले.—श्री वीरेन्द्र सभा प्रधान। 1 रुपया।
10. प्रमुख सिख विद्वानों से पांच प्रश्न —50 पैसे।
ले,—श्री स्वामी अमृतानन्द जी सरस्वती
11. धर्मवीर पण्डित लेखराम ले.—स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी। —40 पैसे
12. आर्य कीर्तन भजनावली 1 रुपया।
13 जन्म साखी (पंजाबी) ले,—ज्ञानी पिण्डीदास। 2 रुपये।
14 आर्य समाज दा दिग्दर्शन (पंजाबी) 2 रुपये।
ले.—आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद।
15 सिख गुरु अते आर्य सिद्धान्त ले.—स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी। 2 रुपये।
16. सिख तुष्टीकरण की राजनीति ले.—अरुण शोरी। 2—50 पैसे।
17. Swami Shardhanand —byK. N. Kapoor. 5—00
18. Glimpses from Satyarth Parkash 3—00
by D, N. Vasudeva.
19. Language problem and the political crisis in the Panjab by Sh. Virendra. 3—00
20. The Arya Samaj and Sikh. by Virendra 1—00
21. The Fundamentals of Arya Samaj 00—50
by Puran chand Advocat.

कृपया अधिकाधिक साहित्य मगवाएं। विशेष छूट भी दी जाएगी। डाक-व्यय अतिरिक्त।

प. चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर

प्रतिभावान् छात्रों के लिए सुअवसर 200 रु. मासिक छात्रवृति प्राप्त करें

सस्कृत महाविद्यालय गुरुकुल सिंहपुरा (रोहतक) मे महर्षि दयानन्द के मन्तव्यानुसार आर्ष पाठ विधि से अध्ययन करने के इच्छुक छात्रो के लिए विशेष व्यवस्था की गयी है। अध्ययनरत 10 छात्रो को 200 रु, प्रति मास छात्रवृत्ति दी जाएगी प्रवेश के लिए न्यूनतम 10वी कक्षा उत्तीर्ण होना आवश्य है। छात्रो के लिए महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की आर्ष विभाग की विशारद, शास्त्री एव आचार्य परीक्षाएं देने की भी व्यवस्था रहेगी। छात्रो को वैदिक कर्म-काण्ड तथा आर्य सिद्धान्तो का मर्मज्ञ बनाया जाएगा तथा वक्तृत्व कला एव लेखन की विशेष शिक्षा दी जायेगी। गुरुकल के अनुशासन एव आचार संहिता का पालन करना छात्रो के लिए अनिवार्य होगा। वैदिक सिद्धान्तो पर निष्ठावान् एव वैराग्यवान् छात्रो को प्राथमिकता दी जाएगी। छात्रो का प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। छात्रवृत्ति के इच्छुक छात्रो का आवेदन पत्र 30 जून तक आना अनिवार्य है। —आचार्य द्विजराजार्य

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना का वार्षिक उत्सव 17-18-19 मई 1985 को होना निश्चित हुआ है, जिसमे आर्य जगत् के उच्चकोटि के महात्मा, संन्यासी पधार रहे हैं। इससे पूर्व 13 मई 1985 को यजुर्वेद पारायण यज्ञ आरम्भ होगा तथा नित्य प्रात वेद-कथा भजनोपदेश होगे। इसके अतिरिक्त उत्सव पर और अन्य प्रभावशाली कार्यक्रम तथा सम्मेलन होगे। —मतवालचन्द

वेदार्थ और वेदान्त दर्शन

ले.—प्रा, श्री भद्रसेन जी होशियारपुर

भारत एक प्राचीन और विशाल देश है। केवल भारत का भू-भाग ही विविध प्राकृतिक तत्वो से भरपूर नहीं है अपितु भारतके उर्वरा मनीषियों ने प्रारम्भ से ही अनेकविध विद्या और विज्ञान की शाखा प्रशाखाओं का चरम विकास किया, भारत के प्राचीन शास्त्रो में चौसठ कलाओं तथा चौदह विद्याओं का वर्णन आता है। इन्हीं चौदह विद्याओं में एक प्रतिष्ठ विद्या दर्शन है। भारतीयों द्वारा विकसित भारतीय दर्शन ने सारे ससार पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। अतएव विश्व में भारतीय दर्शन का अपना आज भी एक प्रतिष्ठित एवं गौरवपूर्ण स्थान है।

दर्शन शब्द दृशिर प्रेक्षणे धातु से बना है, अत दर्शन शब्द देखने और देखने के साधन के अर्थ में आम प्रचलित है, पर प्र+ईक्षण—गहराई से किसी को देखना, सोचनाके भाव को भी दर्शन शब्द व्यक्त करता है। अत. दर्शन शब्द का एक अर्थ जहां चिन्तन है वहां अधिकतर दर्शन शब्द अध्यात्म विद्या के लिए प्रयुक्त होता है। जब एक विचारशील ससारी चिन्ताओं से निश्चिन्त होकर विचार करता है तो एकान्त शान्त स्थिति में उस के मन में अनेक प्रकार के विचार उभरते हैं कि मैं कौन हूं ? मैं यहां कैसे तथा किस लिए आया हू ? मैं सर्वतन्त्र स्वतन्त्र हू या किसी के वश में हूं ? मेरे चारों ओर वर्तमान ससार कब, कैसे बना ? इसका कौन कर्ता है या यह नित्य है ? यदि कोई इसका कर्ता है, तो उसका स्वरूप क्या है ? मेरा इस ससार का और इस ससार के बनाने वाले का आपस में क्या सम्बन्ध है ? इस प्रकार की जिज्ञासाओं का समाधान खोजना ही दर्शन है।

भारतीय दर्शनों मे वैशेषिक, न्याय, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा और वेदान्त ये छ दर्शन अधिक प्रसिद्ध हैं। अन्य भारतीय दर्शनो की अपेक्षा वेदान्त दर्शन अधिक प्रकृष्ट माना जाता है तथा अन्य दर्शन भी इनके महत्व को स्वीकार करते हैं। मनुष्य के मन में उभरने वाली जिज्ञासाओं के समाधान की अंतिम परिणति ही वेदान्त का विचारणीय विषय है। इस दर्शन में ब्रह्म—ईश्वर का मुख्य रूप से वर्णन होने से वेदान्त को ब्रह्म सूत्र भी कहते हैं।

भारतीय साहित्य में प्रस्थानत्रयी की विशेष महत्ता है। प्रस्थानत्रयी मे वेदान्त उपनिषद् और गीता का ग्रहण होता है। वेदान्त के मध्यकालीन सभी भाष्यकारों ने इस दर्शन के साथ उपनिषदो और गीता का भी भाष्य किया है वैसे उपनिषदों और वेदान्त का आपस में एक गहरा सम्बन्ध है। मूल उपनिषदो के भिन्न-भिन्न वाक्यों में परस्पर दीखने वाले विरोध का समाधान वेदान्त में किया गया है। जैसे पूर्व मीमांसा में ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रतीयमान विरोध या उन वाक्यों की एक वाक्यता दर्शाई गई है, वैसे ही उपनिषदों के विरोधात्मक वाक्यों की एक वाक्यता वेदान्त में दर्शाई गई है। इसी समानता के आधार पर ही वेदान्त को उत्तर मीमांसा भी कहते हैं। उपनिषदो और वेदान्त के पारस्परिक सम्बन्ध को सामने रखकर ही महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में पाठ्यक्रम का निर्देश करते हुए लिखा है—'परन्तु वेदान्त सूत्रों के पढ़ने से पूर्व ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य और बृहदारण्यक इन दस उपनिषदों को पढ़ने के पश्चात्—'
(पृ. 66। वेदानन्द सम्पादित)

वेदान्त—वेद और अन्त दो शब्दों के मेल से बनता है। वेद जहां भारतीय साहित्य के मूल आधारभूत ऋ.-यजु.-साम-अथर्व के लिए प्रयुक्त होता है, वहा अन्त शब्द अन्तिम मुख्य विषय, सिद्धान्त व्यवस्था के भाव को व्यक्त करता अर्थात् वेदों का मुख्य विषय ही वेदान्त कहलाता है। कठोपनिषद् में 'सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति—2, 15, शब्दों द्वारा जहां वेदों का मुख्य विषय ब्रह्म, ओम् बताया है, वहां महर्षि दयानन्द ने भी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के वेद विषय विचार प्रकरण में लिखा है—'तत्रापि ईश्वरानुभवो मुख्योऽस्ति। तत्रापि सर्वेषां वेदानां तात्पर्यमस्ति। इसी बात का समर्थन ही ये शब्द करते हैं—अत्रैव सर्वेषां वेदानां तात्पर्यमस्तीश्वरस्य खलु सर्वेभ्य·पदार्थेभ्य प्रधानत्वात्। अर्थात् वेदों में मुख्य रूप से परमेश्वर का ही वर्णन है।

वेदान्त का प्रारम्भ 'अथातो ब्रह्म-जिज्ञासा' से होता है अर्थात् वेदान्त के प्रथम सूत्र में ब्रह्म को जानने की इच्छा प्रकट की गई है। इस जिज्ञासा का समाधान करते हुए दूसरे सूत्र में ब्रह्म का स्वरूप बताया है कि इस दृश्य अदृश्य जगत् का बनाने, चलाने और समेटने वाला ब्रह्म ही है। तीसरे सूत्र में कहा है कि सारे शास्त्र भी ईश्वर को ही जगत् का कर्ता, धर्ता, संहर्ता मानते हैं तथा वेद रूपी शास्त्र का बनाने वाला भी ब्रह्म ही है। चौथे सूत्र में निर्देश किया है कि वह ब्रह्म सर्वत्र समन्वित व्याप्त है। ये चारों सूत्र ही वेदान्त के मूल आधार हैं, इस चतु: सूत्री से आगे यह चर्चा है कि उपनिषदों, शास्त्रों में प्राण, आकाश, आनन्द, अन्न आदि शब्दों द्वारा जहां कहीं जगत् रचना की चर्चा आई है। वह उन-उन शब्दों के माध्यम से ब्रह्म की ही है, क्योंकि उस-उस प्रकरण में जो-जो विशेषण आए हैं वे सब ब्रह्म में ही घटते। अत: अन्न आदि शब्दों द्वारा सम्पन्न होने वाली जगत्कर्तृत्व आदि की क्रियाएं केवल ब्रह्म की ही हैं। उन-उन प्रकरणों में जगत् जीव आदि को ब्रह्म से स्पष्ट ही अलग बताया गया है। इस प्रकार वेदान्त दर्शन में बड़े विस्तार से समझाया गया है कि प्राण, अन्न, आकाश आनन्द आदि शब्दों द्वारा जगत् रचना धारण का कर्ता केवल ब्रह्म ही है। अन्न आदि अलग अलग शब्द होने से ये अलग कर्ता सिद्ध नहीं होते, अपितु भिन्न-भिन्न नामों से एक ही ब्रह्म का निर्देश है।

जब हम वेद के अर्थ की बात करते हैं तो हमारा सबसे पहले इस दुविधा की ओर ध्यान जाता है कि वेदों में स्थान-स्थान पर कहीं अग्नि का वर्णन है तो कहीं इन्द्र की स्तुति मिलती है। कहीं वरुण की चर्चा है तो कहीं विष्णु का विवेचन प्राप्त होता है। इस प्रकार अग्नि, इन्द्र, विष्णु आदि अनेक देवताओं की स्तुति और चर्चा मिलती है। प्राय: इसी दृष्टि से अग्निर्देवता, वातो देवता, मन्त्र प्रस्तुत किया जाता है। इतिहास के ग्रन्थों में भी पढ़ाया जाता है कि वेदों में अग्नि आदि अनेक देवताओं की स्तुति और वर्णन मिलता है। कहीं इन्द्र को जगत् का बनाने और चलाने वाला बताया गया है तो कहीं विष्णु की ऐसी चर्चा मिलती है। इस प्रकार के वर्णनों को पढ़कर अनेक बार पाठक सन्देह में पड़ जाते हैं कि वेद एक ईश्वर को कर्ता-धर्ता मानते हैं या अनेक देवताओं को ? इस उलझन का वेदान्त में एक सुन्दर यथार्थ समाधान मिलता है। वेदान्त की प्रक्रिया के अनुसार जगत् रचना का कार्य एक ही कर्ता का सिद्ध होता है, हां वे भिन्न-भिन्न नाम एक ही कर्ता के हैं। वेदार्थ के इस रूप को स्पष्ट करने के कारण ही इस दर्शन का नाम वेदान्त है। वेदान्त की इस प्रक्रिया से विवेचन करने पर यह स्पष्ट होता है कि अग्नि, इन्द्र, विष्णु वरुण आदि भिन्न-भिन्न नामों से जिस जगत् रचना की चर्चा आती है वह वस्तुत: गुण, कर्म, स्वभाव भेद से एक ही परमात्मा के नाम हैं।

इसीलिए ही महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में इस दृष्टि से इन नामों की व्याख्या की है कि ये नाम किस प्रकार परमात्मा के वाचक हैं और इसमें शास्त्रों के प्रमाण भी दिए हैं। इस मूलभूत भावना को समझे बिना वेदार्थ अवगत नहीं हो सकता अत: सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम समुल्लास वेद की कुञ्जी है और यही प्रक्रिया वेदान्त से भी पुष्ट होती है। वेद के उन-उन प्रकरणों में जो विवेचन, क्रियाओं का संकेत है, वे एक ही परमेश्वर में चरितार्थ होती हैं। इसीलिए वेदों में 'इन्द्र मित्र वरुण' ऋग्वेद तदेवाग्नि: यजुर्वेद के मन्त्रों में ये सारे नाम एक के ही बताए गए हैं। ऋ. 2-1 में भी इसी बात का समर्थन मिलता है। अब इस विवेचन से स्पष्ट होता है कि वेदान्त की बात को ही प्रथम समुल्लास में बताया गया है।

—

सत्यार्थ प्रकाश का सार

ले.-श्री दिवसराम जी अग्रवाल एम॰ ए. 'गाफिल' रोपड

ऋषिवर महान् जमदोद्धारक दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ,
मन्थन कर वेदों-शास्त्रों का, जिस सत्य अर्थ प्रकाश किया ।1।
कहा नाम प्रभु के कोटिशत परन्तु मुख्य नाम है ओम् उसका,
से जीव प्रकृति का योगदान, प्रभु ने है सकल ब्रह्माण्ड रचा ।2।
यम-नियमों का पालन कर जो नर-आश्रम चार बिताते हैं,
वह लम्बी आयु सुख-समृद्धि यश और कीर्ति पाते हैं ।3।
गुरु मात-पिता की शरण बैठ शिक्षा ब्रह्मचारी ग्रहण करे,
उठ प्रात समय करके स्नान नित्य प्रेम से सन्ध्या हवन करें ।4।
हो राज्य व्यवस्था कैसी, यह इस पुस्तक में बतलाया है ।
हो अपना राज्य चाहे हो बुरा, ऋषिवर ने यह दर्शाया है ।5।
रच पचभूत और सूर्य-चन्द्र फल-फूल वनस्पति प्रभु रची ।
फिर सृष्टि रचकर मानुष की शुभ वेद ज्ञान की वर्षा की ।6।
संविधान बनाया वर्णों का जिसमे है सारा जगत् बधा ॥
रहो जाति पांति का भेद मिटा, ऋषिवर ने शुभ उपदेश किया ।
गुरु शिष्यों का सम्बन्ध बता, उनके कर्तव्य दर्शाए हैं ।
क्या पाठ विधि व पाठ्य पुस्तकें सभी जताए हैं ।8।
क्या भक्ष्य-अभक्ष्य बना जग में, क्या कर्म-अकर्म बखान किया ।
दस धर्म के लक्षण वर्णन कर, ऋषिवर ने सत् उपदेश दिया ।9।
कह मागृध कस्य स्विद्धनम, परमार्थ का पाठ पढाया है ।
मन-आत्मा बुद्धि गात्र की करो शुद्धि यही सिखाया है ।10।
तज वेद ज्ञान पौराणिक जैनी बौद्ध भटकते फिरते थे ।
अज्ञान-तिमिर का बन शिकार, सब नरक कुण्ड मे गिरते थे ।11।
अवतारवाद के भ्रम मे फस, अपराध क्षमा करवाते थे ।
मन्त्रो-तन्त्रो यन्त्रो मे उलझ, सब जीवन व्यर्थ गवाते थे ।12।
भूले थे मुहम्मद और ईसा, लोगों को भी पथभ्रष्ट किया ।
ईश्वर को एक देशीठहरा, उसकी शक्ति को नष्ट किया ।13।
किए चमत्कार ऐसे वर्णन, विज्ञान मे जो घट सके नही ।
भोले-भाले अज्ञानी लोग, सन्मार्ग छोड भटके थे कही ।14।
इस अमर ग्रन्थ की शिक्षा ने 'गाफिल' का चित्त है शान्त किया ।
अध्यात्मवाद व भोगवाद का, भेद बता, निर्भ्रान्त किया ।

उठ जाग आर्य वीरा

ले,—श्रीराम पथिक मानव सेवाश्रम छुटमुलपुर (सहारनपुर)

वैदिक धर्मियो का नारा कृण्वन्तो विश्वमार्यम है, करीब 50 वर्ष पूर्व प्रभात फेरी आदि मे उठ जाग आर्य वीरा का गीत प्राय सवत्र गाया जाता था, अब क्यो गाया जाना बन्द है । सभी वेद भक्त गहराई से विचारें तथा पुन पूर्व की भान्ति देश जाति के प्रति अपने कत्तव्य को पहचानते हुए देव दयानन्द के स्वप्नो को साकार करें । जल तथा वायु के बढते प्रदूषण को रोकने के लिए यज्ञो आदि का प्रचार प्रसार उस लग्न श्रद्धा, निष्ठा आदि से करें जैसे हमारे सनातन धर्मी (आत्मज) भाई-बहिन करते हैं । गगा-यमुना की शुद्धता हेतु हो रहे प्रयास एव दुग्ध धाराओ का हमें स्वागत करते हुए बृहदयज्ञो का मात्र प्रसार नही अब क्रियात्मक प्रचार सभी आर्य बन्धुओ को उसी लग्न श्रद्धा से करना चाहिए, यह महान कार्य मात्र दो-चार दस दिन या मासो का नही, निरन्तर होना चाहिए मात्र नारे नही ठोस क्रियात्मक रूप मे कुछ कर दिखाए हम भी ।

आशा नही पूर्ण विश्वास है सारे छोटे-बडे गृहस्थी तथा समाए और विद्वान इस ओर ध्यान दे दिखाकर मानव मात्र ही नही प्राणी मात्र की वह महान् सेवा करते हुए स्वय यश के भागी होगे ।

कोई भी लग्नशील श्रद्धालु वानप्रस्थी सन्यासी, गृहस्थी ग्रामो मे यज्ञ आदि के प्रचारार्थ समय देना चाहे तो पत्राचार करने का कष्ट जरूर करें । इन अल्प विचारो पर विशेष कर ग्रामा मे जहाँ आर्य समाज आदि वैदिक सस्थाओ का नाम तक नही, तप, त्याग की भावना वालों का आपका यह आश्रम स्वागत करेगा ।

बीती जो जा चुकी है
उसकी फिकर तू मत कर ।
बाकी की जो बची है
उसका सुधार कर तू ।

आर्य मर्यादा के आजीवन सदस्य बनाकर सहयोग दें

हमारी आर्य बन्धुओ से प्रार्थना है कि वह साप्ताहिक आर्य मर्यादा के नए ग्राहक बनाकर अपना पूरा सहयोग प्रदान करें ।

इस पत्र की आजीवन सदस्यता का शुल्क केवल 300 रुपए रखा गया है । एक बार तीन सौ रुपया देने वाले को आजीवन यह पत्रिका मिलती रहेगी । आर्य बन्धु स्वय आजीवन सदस्य बनें और अन्यों को भी बनावें । इससे पत्रिका की भी सहायता होगी और सदस्यों को लाभ रहेगा । —व्यवस्थापक

प्रान्तीय आर्य महिला सभा का सम्मेलन

पजाब हरयाणा और हिमाचल की स्त्री आर्य समाजो की बहिनो को सूचना दी जाती है कि प्रान्तीय आर्य महिला सम्मेलन 20-21 अप्रैल को चण्डीगढ 19 सैक्टर आर्य समाज मे होना निश्चित हुआ है । कृपया बहिनो से प्रार्थना है कि वह इस सम्मेलन को सफल बनाने मे जुट जायें और अधिक से अधिक बहनें पहुंचने की कृपा करें ।

कमला आर्या प्रान्तीय मन्त्राणी जालन्धर

जीवनोपयोगी अनमोल बातें

1 मनव बड़ो का मान और छोटो से प्यार करना सीखो।

2 फूलों से हंसना मुसकाना सिखो।

3 मधुमक्खियों से अपना कार्य परिश्रम से करना सीखो।

4, नदियों नालों से प्यास बुझाना और खेतों से हरियाली पैदा करना सीखो।

5 वृक्षों से फल देना फिर सिर झुकाना सीखो।

6 चन्द्रमा से संसार में चमकना सीखो।

7, सूर्य देवता से सब के लिए कल्याण करना सीखो।

8 अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करना सीखो।

9, आप बिना परिश्रम के आगे नहीं बढ़ सकते।

10, चोर बाजारी को उत्साहित करने से आप उन्नति नहीं कर सकते।

11 अधिक खाने से स्वास्थ्य ठीक नहीं रह सकता।

12 योगासन और प्राणायाम के बिना शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता।

13 पतझड़ पेड़ो से दुखो का सामना करना और अच्छे समय की प्रतीक्षा करना सीखो।

14 बड़ो के आशीर्वाद के बिना आप उन्नति नहीं कर सकते।

15, शराब मांस और सिगरेट का प्रयोग करके स्वास्थ्य प्राप्त नहीं कर सकते। —डा की एल बेदी दिल्ली

स्थापना दिवस एवं रामनवमी महोत्सव

गुरुकुल वैद्यनाथ धाम देवघर का उत्सव दिनांक 30 31 मार्च को कुल भूमि में प्रातः काल बृहद यज्ञ से प्रारम्भ हुआ इसके पश्चात् गुरुकुल के ब्रह्मचारियो का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ, सभाया मे स्थापना दिवस प हरिवास ज्वाल मन्त्री बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में मनाया गया, जिस मे गुरुकुल के प्रातःतम स्नातकों, आचार्यों और विशिष्ट व्यक्तियो ने स्थापना दिवस और मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र के जीवन चरित्र पर प्रवचन किए गुरुकुल शिक्षा पद्धति के गुणो और आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया और पुरुषोत्तम रामचन्द्र के गुणों का बखान किया गया।

लुधियाना में आर्य युवक सभा की [illegible]

आर्य समाज [illegible] नगर लुधियाना में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें यज्ञ के पश्चात् वेद प्रचार भजन मण्डली ने प्रभु भक्ति एवं देश भक्ति के गीतो द्वारा आर्य जनों को मन्त्र मुग्ध कर दिया। इसके पश्चात् आर्य युवक सभा पंजाब के संयोजक श्री रोशनलाल शर्मा ने विज्ञान और धर्म के सम्बन्ध में बोलते हुए बताया कि विज्ञान और धर्म में कोई विरोध नहीं है बल्कि वे एक दूसरे के पूरक हैं। उन्होंने कहा कि आज के नवयुवक भौतिक [illegible] में भटक रहे हैं, जिससे उनकी [illegible] राष्ट्र एवं समाज सेवा के कार्यों में उन की रुचि कम होती जा रही है। श्री शर्मा जी ने युवको से अनुरोध किया कि वे रचनात्मक कार्यों में अधिक से अधिक समय लगाए।

इस शुभअवसर पर आर्य युवक सभा की ईकाई का गठन किया गया तथा श्री यश जी आर्य को इसका संयोजक बनाया गया तथा उन्हे अधिकार दिए गए कि युवकों [illegible] तथा संगठन [illegible] समाज [illegible] अग्रवालजी ने [illegible] आर्य नवयुवकों [illegible] लिए बधाई दी तथा [illegible] 100 रु [illegible] दिया। [illegible] को भी [illegible] ओर से [illegible] धन्यवाद एवं [illegible] शान्ति पाठ [illegible]

—[illegible]

[illegible]

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं



गुरुकुल चाय

पायोकिल

भीम सेनी सुरमा



द्राक्षासव

सिद्ध मकरध्वज

स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी की औषधियों का सेवन करें

स्वास्थ्य के लिए गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी को औषधियों का सेवन करें

शाखा कार्यालय

63 गली राजा केदारनाथ चावड़ी बाजार देहली—110006

दूरभाष—269838

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जवाहिर प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन न. 74250

(रजि. न. पी. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 3, 16 वैशाख सम्वत् 2042, तदनुसार 28 अप्रैल 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

जैसा करोगे वैसा भरोगे

ले.—श्री पंडित बिहारी लाल जी शास्त्री काव्य तीर्थ

न किल्बिषमत्र नाधारोऽस्ति न यन्मित्रै समममान एति ।
अनून निहित पात्र न एतत् पक्तार पक्व पुनराविशाति ॥

अथर्व0 13 । 3 । 38 ॥

(अत्र किल्विषम् न) इस कर्मफल में कमी नहीं होती और (न आधार अस्ति) न सहारा ही है (न यत मित्रै सममान एति) न यह भी कि मित्रो के साथ गमन करता हुआ जा सकता है (न पात्रम्) हमारा पात्र (अनून निहितम्) पूर्ण रूप से सुरक्षित रक्खा हुआ है (पक्तार पक्व पुन आविशाति) पकाने वाले को पका पकाया फिर आ पहुचता है ।

मन्त्र मे बतलाया गया है कि कर्मफल मे न किसी प्रकार की कमी ही होती है और न किसी का सहारा ही लगता है । मित्रो के साथ जाते हुए भी जिससे नहीं बचा जा सकता । हमारे कर्मों का पात्र ज्यों का त्यों पूर्ण सुरक्षित रक्खा रहता है और पकाने वाले को फिर प्राप्त हो जाया करता है ।

मनुष्य जैसा करता है उसे वैसा ही फल मिलता है । कर्मफल मे किसी प्रकार की कोई कमी नही होती और न कोई सहारा ही लग सकता है । न इससे स्नेही सभी साथियो के साथ जाते हुए उनकी सहायता ही से बचा जा सकता है । मनुष्य कर्म करने में पूर्ण स्वतन्त्र है वह जैसा चाहे वैसा कर सकता है परन्तु फल भोगने में सर्वज्ञ नियामक की व्यवस्था में बधा हुआ है । यही बात गीता में कही गयी है । "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" कर्म मे ही तेरा अधिकार है फलों में नहीं ।

"अवश्यमेव भोक्तव्य कृत कर्मशुभाशुभम्"

किये हुये शुभ एव अशुभ कर्म को अवश्य ही भोगना पडेगा । किसी प्रकार इनसे नहीं बचा जा सकता । इसमे माता पिता बन्धु बान्धव साधु, सन्त, महात्मा, गुरु, पीर, पैगम्बर किसी की भी कोई सिफारिश नही चल सकती और न कोई इसमे हिस्सा बटा सकते हैं । समय आने पर कर्मफल तो कर्ता को ही भोगने पडते हैं ।

मनु महाराज ने कहा है —

मानस मनसैवायमुपभुङक्ते शुभाशुभम
वाचा वाचाकृत कर्म कायेनैव च
कायिकम ॥ मनु0 12 । 8 ॥

मनुष्य को अपने मन, वाणी और शरीर द्वारा किए गए शुभ एव अशुभ कर्मों के भोग, मन वाणी और शरीर से ही भोगने होते हैं ।

मनुष्य ससार मे अकेला ही आया है और वह अकेला ही जाएगा । उसके इष्ट मित्र बन्धु बान्धव सब यहीं रह जायगे । मरने के उपरान्त परलोक मे उसकी सहायता के लिए केवल उसका साथी उसके द्वारा किया गया धर्म ही होता हैं । अन्य कोई नहीं । मनु महाराज ने इसका विवेचन अत्यन्त सुन्दर शब्दो में किया है—

नामुत्र हि सहायार्थ पिता माता च
तिष्ठत ।
न पुत्रदारा न ज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठति
केवल ॥
एक प्रजायते जन्तुरेक एव प्रलीयते ।
एकोऽनुभुङक्ते सुकृतमेक एव च
दुष्कृतम् ॥
मृत शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसम
क्षितौ ।
विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनु-
गच्छति ॥

मनु0 4 । 239—241 ॥

परलोक मे सहायता के लिए माता और पिता नही ठहरते न पुत्र स्त्री तथा जाति वाले सम्बन्धी ही ठहरते हैं अकेला धर्म ही साथ रह जाता है ।

प्राणी अकेला ही उत्पन्न होता है और अकेला ही मृत्यु को प्राप्त होता है तथा अकेला ही अपने अच्छे और बुरे कर्मों के भोग को भोगता है ।

मृतक शरीर को काठ एव मिट्टी के ढेले के समान भूमि पर छोड कर बन्धु बान्धव मु ह फेरते हुए वापिस लौट जाते हैं परन्तु धर्म उसके पीछे पीछे जाता है ।

यही बात व्यास जी महाराज ने महाभारत मे कही है—

अन्यो धन प्रेतगतस्य भुङ्क्ते वयासि
चाग्निश्च शरीरधातून् ।
द्वाभ्यामय सह गच्छत्यमुत्र पुण्येन
पापेन च वेष्टयमान ॥

महा उद्योगपर्व 40 । 16 ॥

मेरे पीछे मृतक के धन को कोई दूसरा ही भोगता है और शरीर की धातुओ का भोग पशु पक्षी तथा अग्नि करती है यह तो केवल अपने पाप और पुण्य दोनो से घिरा हुआ ही परलोक को जाता है

मेरे पीछे मनुष्य के धन दौलत शरीर यही पर पड रह जाते हैं । उसका साथ तो केवल उसके पाप और पुण्य ही जाते हैं । सक्षेप मे कहा जा सकता है कि मनुष्य के तारने या डुबाने वाले उसके पुण्य या पाप कम ही होते हैं ।

यह बात कभी न भूलो । जैसा करोगे वैसा भरोगे जो बोओगे वही काटोगे, जो पकाओगे वही पकेगा, जैसा पकाया है वैसा ही सामने आयेगा । वेद का यही सनातन सन्देश है ।

'पक्तार पक्व पुनराविशाति'

पकाने वाले को पकाया हुआ फिर आ मिलता है ।

सदा कल्याणकारी बातें सुनो और देखो

भद्र कर्णेभि शृणुयाम देवा भद्र पश्येमाक्षिभिर्यजत्रा ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवासस्तनूभि र्व्यशेमहि देवहित यदायु ॥

यजु 25 । 21 ॥

(यजत्रा। देवा) हे यजनशील विद्वानो (कर्णेभि भद्रम शृणुयाम) हम सब कानो से कल्याणकारी बात को सुने (अक्षिभि भद्र पश्येम) आखो से कल्याणकारी दृश्यो को देख (तुष्टुवास स्थिरै अङ्गै तनूभि देवहितम् यत आयु व्यशेमहि) हम सब स्तुति अर्थात गुणगान करते हुए सुदृढ अगो वाले शरीरो से देवो का हित सम्पादन करने वाली आयु को प्राप्त होवें ।

मन्त्र मे उपदेश किया गया है कि मनुष्यो को अपनी आयु कल्याणकारी कार्यों में ही व्यतीत करनी चाहिए और इसके लिए उन्हे दृढ सकल्प होकर व्रत लेना चाहिए कि हम कानो से कल्याणकारी ही बात को सुनेंगे और आखो से कल्याणकारी ही दृश्य देखेंगे तथा कल्याणकारी गुणगान करते हुए अपने अगो को सुदृढ बनायेंगे और कल्याणकारी कार्यों को ही जीवन पर्यन्त करेंगे ।

जब हम सब मिल कर अपने अदर भद्र भावनाओं को लायेंगे तो निस्सन्देह हमारे चारो ओर कल्याणकारी ही वातावरण बनेगा और हम जीवन क सुपथ पर आगे ही बढते चले जाए गे ।

मनुष्य के जीवन पर उसके देखे और सुने का विशेष प्रभाव पडता है और उसके अनुसार ही उसमे विचार उत्पन्न होते हैं जो कि उसकी उन्नति एव अवनति के कारण बनते हैं । इसलिए हमे उन्नति के पथ पर बढने के लिए सदा कल्याणकारी बात ही कहनी सुननी और देखनी चाहियें ।

———

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के दीक्षान्त समारोह पर

श्री आर्यरत्न पं. सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार का दीक्षान्त भाषण

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुन्धरा पुण्यवती च तेन।
अपारसंवित्सुखसागरेऽस्मिन् लीनं परे ब्रह्मणि यस्य चेतः ॥

इन शब्दों से साथ, सौम्य-स्वभाव नवदीक्षित नवस्नातको ! मेरा स्नेह और सत्कार तुम्हें स्वीकृत हो।

विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी के अधिकारीगण ने इस वर्ष दीक्षान्त भाषण देने के लिए निमन्त्रित कर मुझे आदृत किया है, इसके लिए मैं सबका आभारी हूं। मुझे अपने गुरुकुलों से विशेष स्नेह है, जो स्वाभाविक है, क्योंकि मैं भी आपकी तरह से ही, गुरुकुलों में ब्रह्मचारी रहते हुए, इसी कुल भूमि से स्नातक रूप में दीक्षित हुआ था। मेरे मन, बुद्धि और आचार-विचार पर गुरुकुल शिक्षा का अमिट प्रभाव रहा है और उसके द्वारा ससार की सब तरह की भिन्न-भिन्न विपदाओ, सकटों और आधि-व्याधियों मे से गुजरते हुए, प्रभु मे अगाध विश्वास रखते हुए, किसी भी रूप में सदा कर्मयोगी नि.श्रेयस् मार्ग का दर्शन करता रहा हूं। जीवन यात्रा मे समय-समय पर गुरुकुल बन्धुओं से मिलते हुए सदा ऐसा अनुभव हुआ है जैसे अपने सगे-जैसे गुरु भाईयों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो। इस मिलन में कितना स्नेह, श्रद्धा, सरलता और पारस्परिक विश्वास प्राप्त होता है, इसके बारे में तो यही कहूंगा—'स्वय तदन्त करणेन गृह्यते।'

जब गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अध्ययन किया तो वैदिक ब्रह्मचर्य जीवन में 'भगवद्गीता' ने अद्भुत जीवन-ज्योति के लिए वैदिक कर्मयोग का अमिट आलोक प्रदान किया। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मे भारत की राजधानी दिल्ली या इन्द्रप्रस्थ के उत्थान और पतन का इतिहास सदा सामने रहा और जब गुरुकुल कांगड़ी की पुरानी और नई भूमि मे आवास हुआ तो गगा का वातावरण सदा के लिए जीवन पर छा गया। गगा अपने साधारण स्वरूप को छोड़कर ज्ञान गगा के प्रवाह मे हमें तैराती थी, डुबकियां दिलाती थी और अनमोल जीवन-प्रवाह का मधुर सन्देश देती थी। यहां पर ही अनुभव होता था कि गगा के साथ खडे पर्वत, जंगल, नदी नीर, सभी अपना-अपना सन्देश लिए हमें जीवन के विशाल रूप को दे रहे थे। गुरुजनो की कृपा से हमें कर्त्तव्य का उद्बोधन होता था और जिस कुलमाता की गोद में हम प्रेम से पल रहे थे उसके सवेदन से सहसा हृदय की धडकनो मे एक गूंज उठती अनुभव होती थी, जिसके स्वर थे—

वन पर्वत मे नदी नीर मे
माता जो पाया सन्देश।
तेरी पुण्य पताका लेकर
फैला दूंगा देश-विदेश।

सचमुच यह भावना सदा साथ में रही और तदनुसार भारत तथा विश्व के विविध प्रदेशों में यथाशक्ति और यथा-सम्भव वैदिक पुनीत सन्देश पहुंचाने मे मैंने तन-मन-धन आदि साधनो से कार्य किया है। आर्य सस्कारो में पले सभी अपने पारिवारिक जनो से भी पर्याप्त सहायता मिली।

यह सब कुछ गुरुजनों की कृपा का फल था। गुरुजनो का प्रेम तथा जिज्ञासाओ मे उद्बोधन सदा आनन्दप्रद रहा। उनके आशीस् वचनो का वरदान भी मिलता रहा है, इसी से नतमस्तक होकर अपने सब गुरुजनो का विशेष श्रद्धा के साथ अभिनन्दन करता हू। यथायोग्य रूप से गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के परमोत्कर्ष की भी हृदय से कामना करता हू।

अपने इस कुल की आत्मा का स्वरूप कुलपिता श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्व से अनुप्राणित था। वैदिक ज्ञान की विशुद्ध धारा, गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा, शिक्षा दीक्षा की सरस्वती के प्रवाह रूप मे अक्षुण्ण रूप से प्रवाहित हुई थी। परन्तु बीच में आ गयी बहुत सी चट्टानो से टकरा गई और भिन्न भिन्न धाराओ मे बहने लगी। मुख्य धारा कुछ विलुप्त-सी प्रतीत होती है—जब से भारत विप्लव या विभाजन की अवस्थाओं में से गुजर रहा है, भविष्य ने इस सब का निर्णय करना है। इसी से यह कहने का साहस करता हू कि महर्षि दयानन्द की वैदिक श्रद्धा फिर से किस रूप में उभरेगी यह अब भविष्य का विषय हो गया है। वर्तमान तो धूमधूसरित या धूमिल है।

'वैदिक वाङ्मय में, व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षया दक्षिणामाप्नोति, दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते' इस मन्त्र का सन्देश हमारी सम्पूर्ण शिक्षा का उपसंहार बता रहा है। ब्रह्मचर्य व्रत से आगे बढते-बढ़ते श्रद्धा की प्राप्ति और उससे परम सत्य का दर्शन या अनुभव, यही परमार्थता है जिससे अभ्युदय और नि:श्रेयस् का मार्ग प्रशस्त होता है। 'यो यच्छ्रद्धः स एव सः।'

इन दिनों में ससार विशेष रूप से दो विभागों में बंट गया है। दोनों का स्वरूप दक्षिणपक्ष (राईट विंग) और वामक या वाम पक्ष (लैफ्ट विंग) में है। नि:श्रेयस् मार्ग की तरफ सदा दक्षिण पक्षीय आते हैं और कान्तिमय लौकिक प्रेयमार्गी वामक पक्ष के हैं। ये सत् और जगत् की विचारधाराएं हैं। एक तरफ दैवीय प्रवृति उभरती है और दूसरी तरफ आसुरी प्रवृत्ति। परिणाम दैवी संपत का सचय या आसुरी सपत् की प्राप्ति होता है। इस पर गीता के विशेष प्रवचन ध्यान देने योग्य हैं। संसार को इन दो दृष्टियो में आसानी से समझा जा सकता है। दीक्षा से दक्षिणा पथ का अनुसरण करना ही वैदिक वाङ्मय का आदेश है। श्रेय मार्ग अभ्युदय को समुचित रूप से स्वय ही खींच लाता है और इससे धर्मसिद्धि प्राप्त हो जाती है—'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयस सिद्धि स धर्मः' अत. धर्म का सदा ध्यान रखना उचित है—'धर्मो धारयते प्रजाः।'

निराहार रहने में लोगों ने व्रत-दीक्षा को समझ लिया है। यह आरोग्य का एक साधन है। हमारी महान् शिक्षाएं इससे बहुत आगे बढ़ जाती है। योग दर्शन मे महर्षि पतञ्जलि ने यम-नियमों के विवेचन मे यमों को अर्थात् 'अहिंसा-सत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः एत. जाति देश काल समयानवच्छिन्ना सार्वभौमा: महाव्रतम्' कहकर ससार को सार्वभौम महाव्रत का सन्देश दिया है जिससे सयमित ससार सुख और शान्ति को आसानी से प्राप्त कर सकता है। ससार को सार्वभौम महाव्रत मे दीक्षित किया जाना शिक्षा का सार्वभौम यौगिक अग माना है जिससे शिक्षा की पूर्णता होती है। योगीराज पतञ्जलि के यम-नियम (ला-एण्ड आर्डर) एक शाश्वत सनातन आर्य धर्म है। इनके प्रति निरपेक्षता तो आत्म हत्या के रूप में ही समझी जानी चाहिए। यही वैदिक धर्म मार्ग है।

ससार के प्रथम कानून दाता महर्षि मनु के 'दशकं धर्मलक्षणम्' एव 'आचार: प्रथमो धर्मः' 'न हि सत्यात् परो धर्मः' 'व्रतपते ..अनृतात् सत्यमुपैमि' आदि वचन तथा वैदिक धर्म का मानव धर्म ही मनुष्यों को 'सर्वभूतहित रताः' वसुधैव कुटुम्बकम्' 'सर्वजनसुखाय' 'सर्वजनहिताय' 'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' आदि से मनुष्यों को सार्वभौम विचार धारा की ओर खींचता है। हमारे ऋषियों ने या धर्म ग्रन्थों ने दैशिक दृष्टि (नेशनलिस्ट व्यू) को तुच्छ समझते हुए मानव मात्र को भाई-बन्धु रूप में ही पहचाना है। 'माता भूमिः पुत्रोऽहंपृथिव्याः' 'पृथिव्यै अकर नमः' नमो मात्रे पृथिव्यै' आदि वैदिक पृथिवी सूक्त के मन्त्रोपदेश और निर्देश हमारी संस्कृति को संसार के उच्चतम शिखर पर ले जाते हैं।

भौतिक विज्ञान की उपलब्धियों से संसार एक बहुत छोटी इकाई बन गया है रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, कम्प्यूटर आदि के आविष्कार तथा तेज रफ्तार से उड़ने वाले हवाई जहाजो से दुनियां अब एकदेशीय है। हमारे सब विचार अब सार्वभौम दृष्टि से ही होने चाहिएं। ससार को विनष्ट करने वाली प्रवृतियों बड़े-बड़े एटम् बम, मिसाईल्स, जंगी जहाज, विषैली गैसें, कीटाणु बम आदि के हथियारों का सम्बन्ध प्राणि मात्र के जीवनों से है। आवश्यकता है कि जीवन मात्र को नष्ट करने वालो—आसुरी प्रवृति वालों के प्रति विरोध भावना बचपन से ही बच्चों की शिक्षा का अभिन्न अग हो। इससे जहां सदाचार या धर्म-सस्थापना होती है और नैतिकता के धर्म चक्र का प्रवर्तन होता है, मनुष्यो को सरक्षा पाने में जनता के नैतिक प्रभाव का बल प्राप्त हो जाता है। पृथिवी सूक्त के वैदिक सन्देश को एक सार्वभौम शाश्वत धर्म के रूप में संसार की सब सस्थाओ, शिक्षणालयों, धर्म स्थानों में गर्व से रख सकते हैं। कोई भी मत-मतान्तर इसे उच्च रूप में नेतृत्व न दे सकेगा। शब्द स्पष्ट हैं—

'सत्यं बृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवी धारयन्ति सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्नी, उरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।' 'मानो द्विक्षत कश्चन मा नो द्विक्षत कश्चन।

नवदीक्षित स्नातको, यहां पर 'दीक्षा' शब्द पर विशेष ध्यान देना। साथ के शास्त्र वचनो को भी याद रखना—

माता मे पृथिवी देवी, पिता देवो
महेश्वरः।
मनुजाः भ्रातरः सर्वे स्वदेशो भुवनत्रयम्।

इसके बाद मैं आपको याज्ञिक दीक्षा की तरफ भी आकर्षित करना चाहूंगा। हमारी शिक्षा-दीक्षा में यज्ञ की प्रधानता है—'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।' हमें पञ्च-महायज्ञों पर चिन्तन को समाप्त नहीं करना चाहिए। राष्ट्रीय दृष्टि से राजसूय तथा राष्ट्रमेध यज्ञों का नवीन रूप में विधान समझना चाहिए। इससे हम चक्रवर्ती राज्य (वन वल्ड वैलफेयर स्टेट) की दिशा को भी दृष्टि मे रख सकते हैं।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

हमारी नई शिक्षा प्रणाली क्या हो ?

भारत के वर्तमान प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी कई बार यह कह चुके हैं कि हमें एक नई शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा है कि भारत सरकार इस पर विचार कर रही है कि नई शिक्षा प्रणाली क्या हो। ज्यों ही वह किसी निर्णय पर पहुंचती है वह शिक्षा के क्षेत्र में अपना नया कार्यक्रम जनता के सामने रख देगी उन्होंने यह भी कहा था कि दो-तीन मास में नई योजना सामने आ जाएगी।

मैं प्रधान मन्त्री जी की इस घोषणा को उन सब व्यक्तियों और संस्थाओं के लिए एक चेतावनी समझता हूं जो यह समझते हैं कि शिक्षा द्वारा एक समाज का पुनर्गठन हो सकता है और हम जिस प्रकार की शिक्षा अपने बच्चों को देंगे, उसी प्रकार का समाज बनेगा और उसका प्रभाव आगे चलकर देश पर भी पड़ता है। आज हम यदि यह देखकर दु:खी होते हैं कि देश की युवा पीढ़ी हाथ से निकलती जा रही है तो उसका सबसे बड़ा कारण भी यही है कि देश के सामने कोई ऐसा लक्ष्य नहीं है जिसके द्वारा नई पीढ़ी को किसी निश्चित ओर निश्चित दिशा में ले जाया जा सके। आर्य समाज अत्यन्त सौभाग्यशाली रहा है कि इसे समय 2 पर ऐसे महानुभाव मिलते रहे हैं जो शिक्षा के महत्व को समझते थे और देश की युवा पीढ़ी को उन्होंने धर्म और संस्कृति के आधार पर एक निश्चित दिशा में ले जाने का प्रयास किया था। इसका प्रारम्भ महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया था, जब उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे और तीसरे समुल्लास में यह बताया था कि बच्चों को किस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए। उनसे प्रेरणा लेकर दो और महापुरुषों ने अपने 2 विचार के अनुसार शिक्षा की योजनाएं हमारे सामने रखी थीं। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को महत्व दिया और श्री महात्मा हंसराज जी ने कालेज शिक्षा प्रणाली को। दोनों का लक्ष्य और ध्येय एक ही था और इतिहास साक्षी है कि दोनों ने बड़े 2 विद्वान् प्रकाण्ड पण्डित और तपस्वी त्यागी व्यक्ति धर्म, देश और समाज की सेवा के लिए तैयार किए। वह इसमें केवल इसलिए सफल हो सके कि उन्हें महर्षि दयानन्द की प्रेरणा एक निश्चित दिशा की ओर ले जा रही थी। आज भी आर्य समाज यह गर्व कर सकता है कि शिक्षा के क्षेत्र में जो कुछ उसने किया है कोई दूसरी संस्था वह नहीं कर सकी, हम तो यह भी कहेंगे कि सरकार भी नहीं कर सकी। आजादी के बाद सरकार ने स्कूल और कालेज तो बहुत खोल दिए, परन्तु सब दिशाहीन। उनके सामने इसके सिवाय और कोई लक्ष्य नहीं कि ऐसे बाबू तैयार कर दिए जाएं जो कल को उसके काम आ सकें। यही लक्ष्य अंग्रेज सरकार के सामने था यही हमारी सरकार के सामने।

इसीलिए प्रधानमन्त्री की इस घोषणा को कि सरकार शिक्षा की एक नई योजना बना रही है, मैं आर्य समाज के लिए एक चुनौती समझता हूं। वह इस लिए कि सरकार जो कुछ भी करेगी, वह धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त को सामने रख कर करेगी, आर्य समाज का लक्ष्य यह नहीं है वह अपने धर्म और अपनी संस्कृति को सबसे अधिक महत्व देती है और यह समझती है कि जब तक हम अपने बच्चों में वही भावना पैदा न करेंगे जो हम में से पहली पीढ़ी ने की थी तो हम अपने धर्म और अपनी संस्कृति की रक्षा न कर सकेंगे, न अपने देश को उस तरफ ले जा सकेंगे, जिधर ले जाना चाहिए।

आज हमारा कोई लक्ष्य, ध्येय नहीं, कोई दिशा नहीं। हम एक ऐसी किश्ती में बैठे हुए हैं जिसके विषय में हमें पता नहीं कि वह किस किनारे पर जा लगे। यह स्थिति अत्यन्त ही शोचनीय है। इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। यह केवल आर्य समाज ही कर सकता है। लेकिन क्या वह कर रहा है ? यह एक प्रश्न है जिसका उत्तर मिलना चाहिए ? वह क्या हो सकता है ? यह आगामी अंक में लिखूंगा।

—वीरेन्द्र

महात्मा हंसराज की जयन्ती

21 अप्रैल 1985 को त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज की जयन्ती दिल्ली के ताल कटोरा गार्डन में बड़े समारोह से मनाई गई। इसका निमन्त्रण पत्र जब मुझे मिला तो मैं बहुत देर तक यह सोचता रहा कि देहली में रहने वाले आर्य भाईयों को महात्मा हंसराज की याद कहां से आ गई। महात्मा जी केवल देहली के आर्य समाजियों के पूजनीय ही नहीं थे, वह सारे आर्य जगत् के पूजनीय थे। नि:सन्देह आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और डी, ए. वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी के साथ उनका विशेष सम्बन्ध था। वह इन दोनों संस्थाओं के कर्ता-धर्ता थे। यह भी कहना अनुचित न होगा कि वह इन दोनों संस्थाओं के संस्थापक थे फिर भी वह सारे आर्य जगत् के एक महान् नेता थे। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज और महात्मा हंसराज जी यह दो ऐसी विभूतियां हैं जिन पर हम जितना भी गर्व करें कम है। इन दोनों के जन्म उत्सव या बलिदान उत्सव यदि सब आर्य समाजियों की ओर से संयुक्त रूप से मनाए जाएं तो उसका बाकी की जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ेगा। परन्तु हो क्या रहा है, श्री महात्मा हंसराज जी का जन्मोत्सव देहली में तो मनाया गया, पंजाब में किसी ने नहीं मनाया। देहली में बैठे आर्य नेताओं ने इतना कष्ट भी नहीं उठाया कि पंजाब के आर्य समाजियों से कह दें कि वह भी 21 अप्रैल को महात्मा हंसराज जी का जन्मोत्सव मनाएं, पंजाब में डी. ए. वी. कालेजों और डी. ए. वी. स्कूलों की कमी नहीं, बल्कि प्रादेशिक सभा की आर्य समाजें भी हैं परन्तु कहीं भी महात्मा हंसराजजी को याद नहीं किया गया। मालूम नहीं दिल्ली वालों ने उन्हें याद करने के लिए समय कैसे निकाल लिया, परन्तु आर्य समाज की स्थिति को देखकर दिल को चोट लगती है। यदि अपने महापुरुषों के साथ हमारा यह व्यवहार है तो कल को आर्य समाज को कौन याद करेगा।

इसी सन्दर्भ में मुझे एक और बात भी याद आ गई होशियारपुर के पास एक बजवाड़ा गांव है जहां महात्मा हंसराज जी का जन्म हुआ था। जो उनका पैतृक मकान था वह इस समय बहुत ही दयनीय स्थिति में है। पिछले दिनों दैनिक वीर प्रताप में उस टूटे-फूटे मकान का एक चित्र प्रकाशित हुआ था उसे देखकर मुझे ख्याल आया कि डी. ए. वी. कालेज की मैनेजिंग कमेटी कहां है ? कहते हैं कि उसके पास करोड़ों रुपया है। क्या वह इस छोटे से गांव बजवाड़ा में महात्मा हंसराज का कोई स्मारक नहीं बना सकती ? उसके अधिकारी प्राय: इस बात पर गर्व किया करते हैं कि वह जितना रुपया इकट्ठा करना चाहें कर सकते हैं। आगामी वर्ष में डी. ए. वी. कालेज आन्दोलन की शताब्दी मनाई जाएगी। क्या इस की प्रबन्ध कमेटी के अधिकारी उस अवसर पर श्री महात्मा हंसराज जी का कोई स्मारक उनके गांव बजवाड़ा में भी बनाने पर विचार करने का कष्ट करेंगे ?

—वीरेन्द्र

—श्री बलभद्र कुमार जी हूजा कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का

गुरुकुल काँगड़ी के दीक्षान्त समारोह पर स्वागत भाषण

ओ३म्

अर्चनीय संन्यासीवृन्द, मान्यवर कुलाधिपति जी, परिद्रष्टा महोदय, श्री भारद्वाज जी, माताओ, सज्जनो तथा ब्रह्मचारियों!

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के 85वें वार्षिकोत्सव और दीक्षान्त पर आप सबका हार्दिक स्वागत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस प्रसन्नता का एक कारण यह भी है कि आज नव-स्नातकों को आशीर्वाद देने हमारे मध्य इस विश्वविद्यालय के लब्ध-प्रतिष्ठित स्नातक श्री सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार पधारे हैं। आपने चौदह वर्ष तक गुरुकुल में रहकर वेद-वेदांगों का अध्ययन किया और फिर लुधियाना में सरकारी शिक्षणालय से नीटिंग इण्डस्ट्रीज का डिप्लोमा लेकर व्यवसायिक क्षेत्र में प्रवेश किया। 1934 में आप केनियां के नैरोबी शहर में गए और फिर 1949 में 'सन फ्लैग निटिंग वर्क्स' के नाम से उद्योग की स्थापना की। आपकी दूरदर्शिता, लग्न, कर्मठता तथा तथा व्यवसायिक पैनी दृष्टि का ही परिणाम है कि आज सन फ्लैग उद्योग के केन्द्र भारत, केनिया, तन्जानिया, नाइजीरिया, केमरून तथा लन्दन में स्थापित होकर निरन्तर प्रगति कर रहे हैं। वेद भगवान् के इस आदेश का कि सौ हाथों से एकत्र करो तथा हजार हाथों से दान करो, आपने अक्षरशः पालन किया है। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार तथा लोक-कल्याण के लिए आप द्वारा स्थापित भारद्वाज वैलफेयर ट्रस्ट' अनेक उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। 20 मार्च 1948 को नैरोबी में आर्य महासम्मेलन का विराट आयोजन आपके ही सहयोग में सम्पन्न हुआ। लन्दन में होने वाले सार्वभौम आर्य महासम्मेलन की सफलता में भी आपका अविस्मरणीय योगदान रहा है। श्री भारद्वाज ने समग्र भारत का भ्रमण कर जहां इसकी सांस्कृतिक, विरासत का अध्ययन किया, वहाँ वर्मा, स्याम, सिंगापुर इण्डोनेशिया, हांगकांग, टाइवान, जापान, नेपाल, अफ्रीका, अमेरिका, फ्रांस, इंग्लैंड, जर्मनी, नार्वे, स्विटजरलैंड तथा इटली आदि देशों का पर्यटन कर, प्रचुर अनुभव अर्जित किए हैं। ऐसे आर्य सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के लिए यायावरीवृत्ति ग्रहण करने वाले 'परिव्राजक' श्री भारद्वाज को अपने बीच पाकर हमारा गौरवान्वित होना स्वाभाविक ही है।

आज से 9 वर्ष पूर्व, जब मैंने विश्वविद्यालय के कुलपति पद का भार स्वीकार किया तब विश्वविद्यालय एक विकट संकट के दौर से गुजर रहा था। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने कह दिया था कि विश्वविद्यालय स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज द्वारा निर्धारित तथा आयोग द्वारा अपेक्षित लक्ष्य को पूर्ण करनेमें असमर्थ रहा है, अतः इसका विश्वविद्यालय के समकक्ष स्तर समाप्त कर, इसे मेरठ विश्वविद्यालय में विलीन कर देना चाहिए आयुर्वेद महाविद्यालय तब हमारा अंग था। वहां के अध्यापकों को कई मास से वेतन नहीं मिला था। वेतन भोगियों की उस दुर्वाह स्थिति के निराकरण हेतु तत्कालीन कुलसचिव डा. गंगाराम ने विश्वविद्यालय फण्ड से तीस हजार रुपया कर्ज देकर उनका कष्ट दूर किया। परन्तु इस प्रकार स्थिति में सुधार तो नहीं हो सकता था। अतः कालान्तर में आयुर्वेद महाविद्यालय में उत्पात हुए और यह राष्ट्र प्रसिद्ध और सुसम्पन्न संस्था आर्य समाज के हाथ से निकल कर सरकार के हस्तगत हो गई। आर्थिक और नैतिक संकट से विपन्न विश्वविद्यालय की समस्याओं के बारे में जब गुरुजनों से परामर्श हुआ तो पाया गया कि विश्वविद्यालीय संविधान में अपेक्षित संशोधन के बिना विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसन्धान और प्रचार के कार्य में अग्रसर नहीं हो सकता। फलतः इस हेतु पंजाब विश्वविद्यालय के पूर्व-कुलपति पद्मभूषण डा. सूरजभान की अध्यक्षता में दस-सदस्यीय समिति का निर्माण हुआ जिसने संविधान में उपयुक्त संशोधन प्रस्तावित किए। सन्तोष का विषय है कि आज विश्वविद्यालय के पास अपना ऐसा संविधान है जो उसके आधारभूत मौलिक स्वरूप की रक्षा तथा स्थायित्व में पूर्ण रूपेण सक्षम एवं सहायक है। इसके लिए तत्कालीन शिक्षा सचिव श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी धन्यवाद के पात्र है।

इसके साथ ही हमने पाया कि गुरुकुल में गुरु शिष्य परम्परा का पूर्ण ह्रास हो चुका है। गुरुजन ब्रह्मचारियों के आश्रमों में जाने से घबराते थे। दो वर्ष पूर्व ही एक विद्यार्थी ने पूज्य गुरु ओम्प्रकाश जी की इसलिए हत्या कर दी थी कि उन्होंने उसे परीक्षा में गलत साधनों का उपयोग करते हुए पकड़ा था। अतः गुरुजन के साथ बातचीत करके निश्चय हुआ कि गुरु-शिष्य परम्परा के पुनरुद्धार के लिए दयानन्द, श्रद्धानन्द लाजपतराय भगतसिंह तथा नेहरू इत्यादि परिवारों का गठन किया जाए और आश्रमों में दैनिक सन्ध्या का प्रबन्ध कराया जाए। इससे गुरुकुल का वातावरण बदला और उन मूल्यों को बढ़ावा मिला जिनके प्रचार-प्रसार के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का अवलम्बन लिया था। सन् 77 के बाद 82 तक के काल में विश्वविद्यालय के इतिहास में एक बार फिर तूफान आया। प्रसिद्ध विधिवेत्ता श्री सोमनाथ जी मरवाह एवं ऋषिपालसिंह जी के नेतृत्व तथा गुरुजन और कर्मचारियों के सहयोग से गुरुकुल इस संकट से पुनः उभरा और जुलाई 80 में सहारनपुर जिला जज के निर्णय के बाद यह कुहरा छटा। गुरुकुल में नये युग की शुरूआत हुई तथा शिक्षा मन्त्रालय और अनुदान आयोग ने गुरुकुल के वास्तविक अधिकारियों को मान्यता दी। परिद्रष्टा डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार तथा कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र के नेतृत्व में पुनः विधिवत् कार्य प्रारम्भ हुआ। अनुदान नियमित रूप से मिलने लगा। गुरुजनों तथा कर्मचारियों को रुका हुआ वेतन मिला। आर्थिक तथा परिसरगत शान्ति की दृष्टि से सबने राहत की सांस ली। इस वर्ष दीक्षान्त के लिए उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश श्री एच. आर. खन्ना पधारे। उन्होंने जहां इस संस्था की महान् परम्पराओं और राष्ट्रीय सेवाओं का उल्लेख किया, वहां इसकी विकासोन्मुख प्रवृति पर प्रसन्नता भी प्रकट की। फिर तो क्रमशः तीन दीक्षान्त भाषण लोकसभा के अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़, महामहिम राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह तथा लब्ध प्रतिष्ठ आर्य सन्यासी डा. सत्यप्रकाश सरस्वती डी. एस. सी. ने, देकर हमारे गौरव को चार-चांद लगा दिए। इसी क्रम में मुख्य अतिथि जी, आज आपका मार्ग दर्शन पाकर हम गौरव का अनुभव कर रहे हैं, आपके बहुमुखी एवं लोकसेवी व्यक्तित्व से स्नातकों को प्रेरणा मिलेगी।

श्रीमान् !

गुरुकुल विश्वविद्यालय भारतीयता मूलक पद्धति पर आधारित सम्पूर्ण शिक्षा की आदर्श प्रयोगशाला है। आज हमारे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी तथा शिक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त शिक्षा के परम्परित ढांचे में आमूल-चूल परिवर्तन के लिए कृत संकल्प हैं। अनुभव किया जा रहा है कि विश्वविद्यालयीय शिक्षा का वर्तमान ढांचा राष्ट्रीय समस्याओं की पूर्ति नहीं कर सकता है समाज सेवा, ग्रामोत्थान तथा प्रसार की धारा से विछिन्न होकर वह समाज से कट गया है। गत मार्च मास में दिल्ली में होने वाले एशिया के कुलपतियों के सम्मेलन में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षा श्रीमती माधुरी शाह ने मानवीय मूल्यों पर आधारित राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की रूप रेखा प्रस्तावित की और कहा कि यही प्रणाली वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय अखण्डता, समाज-सेवा, मानव जाति की एकता, विश्वव्यापी प्रेम, चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन, सामाजिक तथा 'लोकतान्त्रिक न्याय' सामूहिक कार्य चेतना; ज्ञान की खोज एवं प्रसार जैसे उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हो सकती है।

महोदय !

गुरुकुल में, विगत वर्षों में, हम इन्हीं मूल्यों की खोज का यत्न करते रहे हैं। अपने सीमित साधनों के बावजूद जहां एक ओर यहां आश्रम व्यवस्था का सुधार किया गया वहां ब्रह्मचारियों के आध्यात्मिक विकास के लिए व्रताभ्यास तथा वेद मन्त्र पाठ पर अधिकाधिक बल दिया गया। ब्रह्मचारियों ने प्रतिवर्ष जो सौ मन्त्र याद किए उनको गोवर्धन ज्योति रश्मियों के नाम से संघट विद्या सभा जयपुर की ओर से मुद्रित करवाकर निःशुल्क वितरित किया गया। इस बार वैदिक सूक्तियों तथा ब्रह्मचर्य सूक्त का प्रकाशन श्री सत्यकाम विद्यालंकार ने दिल्ली के राजपाल एण्ड सन्स से करवाया है। इनका विमोचन गत मास लुधियाना में पण्डित सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार कर चुके हैं। पिछली शताब्दी में प्रोफेसर गुरुदत्त ने वैदिक मैगजीन नामक एक पत्रिका निकाली थी। बाद में इसकी उपयोगिता समझते हुए आचार्य रामदेव ने पुनः इसका प्रकाशन आरम्भ किया। इस पत्रिका के माध्यम से ही आचार्य रामदेव ने टालस्टाय तथा रोमियां रोलां जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति लब्ध साहित्यकारों से पत्र-व्यवहार किया था। कालान्तर में यह पत्रिका बन्द हो गई थी। अब डा. हरगोपाल सिंह के सम्पादन में वैदिक पथ नाम से इसे पुनः जीवित किया गया है। बच्चों के लिए ध्रुव गुरुकुल हितैषियों के लिए गुरुकुल पत्रिका, विज्ञान के प्रसार के लिए आर्य भट्ट तथा पुराविद्याओं की गवेषणा के लिए प्रह्लाद पत्रिकाएं निकाली गई, जो क्रमशः डा. दीनानाथ, डा. मानसिंह, डा. विजयशंकर तथा डा. विष्णु दत्त राकेश के सम्पादन में नियमित प्रकाशित हो रही है।

(क्रमशः)

महात्मा हंसराज-जीवन दर्शन

म. हंसराज जी का जन्म दिन 21 अप्रैल 1985 को मनाया गया। वे आर्य समाज के उन इने गिने चोटी के नेताओं में से थे। जिनके तप: पूत जीवन और निष्काम सेवा से आर्य समाज के कार्य और यश में चार चांद लगे और जो आर्य जनों के भव्य एवं प्रेरणादायक विरासत छोड़कर महान् प्रकाश में विलीन हो गए। वे उन महानुभावों में से थे जिन्होंने आर्य समाज की शिक्षाओं पर अपना जीवन ढाला था और शिक्षाओं का महत्व जन साधारण पर दर्शाया था। इतना ही नहीं, उनका जीवन संस्था का रूप लिये हुए था। उनके जीवन के एक समीक्षक ने ठीक ही कहा था कि—

यदि आर्य समाज मुख्यत: पंजाब में एक जीवित और सशक्त संस्था बन सकी, तो केवल इस लिए नहीं कि उसके सिद्धांत अच्छे थे बल्कि इसलिए भी, कि इसको त्यागी एवं तपस्वी सेवक मिल गए। इन सेवकों में महात्मा हंसराज जी का नाम प्रमुख स्थान रखता है।

म. हंसराज जी एक साधारण स्थिति के परिवार में पैदा हुए थे। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उनके ग्रेजुएट बन जाने पर उनके परिजन किसी ऊंचे स्थान पर नौकरी पाने की आशा लगाए थे जिससे उनकी गरीबी का दारिद्रय दूर हो सके। पर विधाता का विधान कुछ और ही था। म. हंसराज जी के द्वारा आर्य समाज के कार्य में चार चांद लगाकर चमकाना अभीष्ट था।

उस समय बी. ए. पास कर लेना आई. सी. एस. बन जाने के बराबर था। यदि महात्मा जी चाहते तो अपने मित्र राजा नरेन्द्र की भान्ति डिप्टी कमिश्नर और फिर कमिश्नर बनकर अपनी गरीबी मिटा डालते। पारिवारिकजन उस घड़ी की प्रतीक्षा में थे कि हंसराज योग्य बनकर धन से मालामाल होकर असाधारण व्यक्ति बनें। पर सूर्य के प्रकाश को कोई समेट न सका। नदी एक खेत को नहीं सींचती। बादल एक पर्वत पर नहीं बरसेगा और घर वालों की आशाएं, सम्बन्धियों की उमगें, दौलत का चाव हंसराज को कैद नहीं कर सका। उन्होंने अपना जीवन देश और समाज को अर्पित कर दिया।

त्याग की पृष्ठ भूमि

1885 का समय था। हंसराज को जब यह ज्ञात हुआ कि महर्षि की स्मृति में खुलने वाला स्कूल व कालेज धन के अभाव में रुक रहा है। तब यह प्रश्न उनके मन में उठने लगा कि—



जिस महान् ऋषि ने लोकहिताय अपना सारा जीवन बलिदान कर दिया, उनकी स्मृति में चलाए हुए यज्ञ के लिए क्या मैं कुछ नहीं दे सकता? यह प्रश्न उन्हें व्याकुल कर रहा था। अन्तत: अपने अग्रज मुलकराज जी से मिले तथा अपनी अन्तर की पीड़ा को उनके सामने रखा। और बोले बड़े दु:ख की बात है कि धन के अभाव में दयानन्द महाविद्यालय जैसा कल्याणकारी कार्य कमजोर होकर समाप्त हो जाए। मेरा दृढ़ विश्वास है कि मैं बिना वेतन लिए अपना सारा जीवन दान कर दूं लेकिन एक बात है कि इतना बड़ा और कठिन कार्य आपके सहयोग के बिना मैं पूर्ण नहीं कर सकूंगा। बड़े भ्राता ने हंसराज के इस संकल्प को बड़े ध्यान व धैर्य से सुना और हर्षित होकर फूले न समाए। उस समय ला. मुलकराज 80) रुपए मासिक वेतन पाते थे आधा वेतन 40) चालीस रुपये हंसराज के लिए सुरक्षित कर दिया। शेष धन से अपना निर्वाह करना आरम्भ कर दिया। दोनों भाइयों ने त्याग का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। एक ने आधा वेतन दान में दिया तो दूसरे ने सारा जीवन त्याग में अर्पित कर दिया। अन्तत; वह महान् शुभ घड़ी आई जब कि आर्य समाज लाहौर के प्रधान को बिना कुछ लिये जीवनदान का प्रतिज्ञा पत्र स्नातक हंसराज जी ने दे दिया और 3-11-1885 को आर्य समाज की अन्तरंग ने अपार हर्ष और धन्यवाद के साथ इसे स्वीकार कर लिया।

इस घटना के बाद हंसराज महात्मा बन गये और म. हंसराज के नारों से आकाश गुंजायमान हो गया।

महात्मा जी का जन्म 19 अप्रैल 1864 में विजयवाड़ा होशियारपुर पंजाब में हुआ। 1885 में लाहौर मिशन कालेज से बी. ए. पास किया। 1 नवम्बर को जीवन दान दिया और 1889 में लाहौर के डी. ए. वी. कालेज के आचार्य बने। 1912 में विश्राम लिया। 1934 से 1938 तक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पद पर आसीन रहे और 15 नवम्बर 1938 को लाहौर में इस महान् जीवन का पटाक्षेप हुआ।

महात्मा जी ने स्वयं गरीबी का जीवन अंगीकार किया था। डी. ए. वी. का आन्दोलन, आर्य प्रादेशिक सभा, अकाल पीड़ितों की सेवा, शुद्धि कार्य आदि में उनकी त्याग-भावना, कर्मठता, मानवता और आर्य समाज के प्रति निष्ठा, मूर्तिमान् देख पड़ती थी। उनके हजारों शिष्यों, सहकर्मियों, अनुयायियों, कार्यकर्त्ताओं और आर्य जनों के हृदय पटल पर उनकी पुण्य-स्मृति कायम रहेगी और वह उस यादगार का काम देगी जिसे समय के थपेड़े मिटा न सकेंगे हम सब उनके दिखाए मार्ग का अनुसरण करें। यह कामना है।

संस्मरण

अर्धशताब्दी अजमेर में मनाई जा रही थी तभी एक बात जोर पकड़ रही थी कि महात्मा जी से कहा जाए कि वह संन्यास की दीक्षा ले स्वामी अच्युतानन्द जी ने प्रस्ताव रखा कि यह पवित्र कार्य स्वामी सर्वदानन्द जी को सौंपा जाये, जो लाहौर में प्राय: महात्मा जी के पास ही ठहरा करते थे। स्वामी सर्वदानन्द जी पास ही बैठे थे। यह सुनकर वीतराग सन्यासी ने उत्तर दिया कि—

भाई ऐसे व्यक्ति को जो अपने युवा काल से सन्यासाश्रम में प्रविष्ट हो चुका हो, उसे कैसे कह सकता हूं कुछ और करने को।

डी. ए वी, कालिज को अब एक ऐसा व्यक्ति मिल गया, जो सच्चा आर्य है जिसे महर्षि के मन्तव्यों में पूर्ण विश्वास है। सुशिक्षित और शिक्षण संस्थाओं के सञ्चालन में पूर्णतया सुयोग्य है। नि:सन्देह यह युवक-हंसराज का महान् त्याग था। जिसके कारण कालेज के स्वत्व को यथार्थ कर सकना सम्भव हुआ। यदि इसे सर्वमेध यज्ञ या बलिदान कहा जाए, तो भी अनुचित नहीं होगा क्योंकि म. हंसराज ने सांसारिक दृष्टि से अपने उज्जवल भविष्य और समृद्ध जीवन को बलि चढ़ाकर अपने को महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज के लिए समर्पित कर दिया था। सन 1885 में जब श्री हंसराज जैसा व्यक्ति, जो त्यागी व उच्च शिक्षित युवक कालेज के सञ्चालनार्थ उपलब्ध हो गया, तो आर्य समाज में नये उत्साह व स्फूर्ति का संचार होने लगा। कालेज की लोक-प्रियता में निरन्तर वृद्धि हो रही थी। आर्य समाजी ही नहीं अपितु अन्य हिन्दू भी इसमें अपनी रुचि ले रहा था कि यह उनकी अपनी संस्था है। आर्य समाज की संस्था का उद्देश्य व कार्य सामान्य शिक्षा के लिए स्कूल-कालेज खोलना न होकर, वेद व धर्म का प्रचार, समाज में फैली कुरीतियों का सुधार करना था। कुछ समय में उसने किस प्रकार एक ऐसे सशक्त आन्दोलन का रूप प्राप्त कर लिया।

इस प्रसंग में यह भी ध्यान रखने की आवश्यकता है कि समय की आवश्यकताओं तथा परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए डी. ए. वी. कालिज के सचालकों ने शिक्षा के सम्बन्ध में जो नीति अपनायी, वह जनता को बहुत लाभकारी प्रतीत हो रही थी। इसलिए डी. ए. वी. संस्थान में जो क्रांति के बीज बोये गये, उसकी लोकप्रियता में और निरन्तर वृद्धि होनी स्वाभाविक थी। यहां इतना ही निर्देश देना पर्याप्त है कि देश-काल-परिस्थितिवश होकर कालिज ने जो भी कार्य किया वह किसी भी अन्य आर्य संस्था के कार्य की तुलना में कम महत्व का नहीं है।

महात्मा हंसराज जी एक अनुशासन प्रिय व्यक्ति थे साथ ही योग्य शिक्षक भी थे। काम करने का तरीका उत्तम था, सबके प्रति स्नेह रखते थे। विद्यार्थियों से उन्हें वास्तविक हित था और उनके विचार भी अत्यन्त संयत व मध्यमार्गी थे। वेद-शास्त्रों के प्रति उनकी आस्था थी पर वह यह स्वीकार नहीं करते थे कि पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान तथा अंग्रेजी की उपेक्षाकर अपना सब ध्यान केवल संस्कृत की पढ़ाई पर ही लगा देना चाहिए।

आदर्शमय व्यक्ति-त्याग पूर्ण वृत्ति सदाचार, अनुशासन बद्ध जीवन की प्रेरणा देने वाले तपस्वी को शत-शत नमन।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
(दिल्ली)

विदेशों में वैदिक धर्म का प्रचार—

आर्य समाज बैंकाक के समाचार

विगत 7 मार्च 1985 को आर्य समाज बैंकाक ने अपने विशाल सभा कक्ष में स्थापना दिवस समारोह उल्लास के साथ सम्पन्न किया। स्वागताध्यक्ष श्री रामपलट पाण्डेय ने कार्य संचालन किया, वैदिक हवन के बाद उन्होंने वैदिक भजन प्रस्तुत किए। इसके बाद उन्होंने ऋग्वेद से एक मन्त्र का पाठ कर उसकी व्याख्या प्रस्तुत की। मनोनीत अध्यक्ष श्री गुरुमुखसिंह जी का समाज की ओर से स्वागत किया गया। इसके बाद थाईलैंड विख्यात संगीतज्ञ श्री जगजीतसिंह के राष्ट्रीय गीतों ने समस्त श्रोता समुदाय को मन्त्रमुग्ध कर दिया। तत्पश्चात् आर्य समाजके अनेक विचारकों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। जिनमें सर्वश्री नरसिंह शाही, श्री पलकधारी चन्द्र तथा श्री वीर-बहादुर चन्द्र के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस समारोह में भारत के माननीय शिक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त के आगमन पर सभी लोगों ने उठकर उनका भारतीय राजदूत का तथा साथ में आए सभी विशिष्ट व्यक्तियों का पुष्पमालाओं से स्वागत किया। आर्य समाज बैंकाक के प्रधान श्री सहदेव सिंह जी आर्य समाज की स्थापना से लेकर आज तक के इतिहास को शिक्षा मन्त्री जी के सम्मुख प्रस्तुत किया। होली के पर्व को समानता तथा पारस्परिक प्रेम का राष्ट्रीय पर्व उन्होंने बतलाया तथा इस बात पर सन्तोष व्यक्त किया कि थाईलैंड में रहने वाले सभी भारतीय एकता और प्रेम के सूत्र में बंधे हैं।

शिक्षा मन्त्री श्री पन्त ने आर्य समाज के प्रति आभार व्यक्त किया तथा बतलाया कि इन संगठनों को बिना देखे तथा उनके नेताओं से मिले बिना यदि मैं चला जाता तो मेरी यात्रा अधूरी ही रहती। शिक्षा मन्त्री ने स्वामी दयानन्द के द्वारा की गई सेवाओं तथा क्रान्तियों की विस्तृत चर्चा की तथा उन्हें भारतीय राष्ट्रीयता तथा गौरव का उद्बोधक बतलाया। थाईलैंड तथा भारत के सांस्कृतिक सम्बन्धों के इतिहास पर दृष्टि डालते हुए उन्होंने भारतीय प्रवासियों की भूमिका की चर्चा की तथा उन्हें दोनों राष्ट्रों की सेवा की साधना के लिए प्रेरणा दी। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की सरकारकी कुछ महान् उपलब्धियों की ओर उन्होंने संकेत किया। बारहवीं कक्षा तक बालिकाओं की निःशुल्क शिक्षा तथा दल-बदल पर प्रतिबन्ध की चर्चा की तथा कहा कि नई सरकार राष्ट्र में नैतिकता और एकता के संचार के लिए कटिबद्ध है।

इसके बाद प्रोफेसर बृज मोहन गुप्त ने शिक्षा मन्त्री के सम्मुख कुछ विडम्बनाओं को प्रस्तुत किया तथा कहा कि इन्हें चुनौती के रूप में हमें स्वीकार कर समाधान करना चाहिए। उन्होंने बतलाया कि जब बोलने वालों की संख्या के अनुसार हिन्दी का स्थान विश्व में तीसरा है तो राष्ट्र संघ के द्वारा स्वीकृत 6 भाषाओं में इसका स्थान क्यों नहीं है। यह समझ से परे है। यदि इस शिक्षा मन्त्री के कार्यकाल में हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में मान्यता मिली, तो सम्पूर्ण राष्ट्र उनकी इस सेवा के लिए सदा कृतज्ञ रहेगा उन्होंने कहा कि संस्कृति, इतिहास और भूगोल में थाईलैंड भारत के इतना समीप है, किन्तु यहां के किसी भी विश्वविद्यालय में हिन्दी का विभाग नहीं है। क्या यह विडम्बना नहीं? चीन, नार्वे अमेरिका आदि में हिन्दी के विभाग वहां के विश्व विद्यालयों ने खोले हैं परन्तु थाईलैंड में नहीं हैं। तीसरी विडम्बना का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि जापानी, अरबी तथा कोरियाई जैसे छोटे-छोटे समुदायों के पास थाईलैंड में अपने प्रेस हैं तथा उनकी भाषाओं में पत्रिकाएं छपती हैं किन्तु विशाल भारतीय प्रवासी समुदाय के पास न तो हिन्दी का प्रेस है और न ही पत्रिका। शिक्षा मन्त्री से अनुरोध है कि इन अभावों की पूर्ति के लिए सहयोग और आशीर्वाद दें। अन्त में अध्यक्ष महोदय ने सबको धन्यवाद दिया तथा शान्ति पाठ के बाद समारोह समाप्त किया गया।

—सहदेवसिंह
प्रधान आर्य समाज बैंकाक

आर्य मर्यादा उन्नत होता जा रहा है

सम्पादक के नाम पत्र

आर्य मर्यादा का गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) विशेषांक बहुत ही पसन्द आया क्योंकि इसमें गुरुकुल की पुरातन तथा वर्तमान स्थिति का काफी ज्ञान प्राप्त हुआ। गुरुकुल का [illegible] के जन्मदाता स्वामी श्रद्धानन्द [illegible] पुत्रों का आर्य जीवन व्यतीत [illegible] गुरुकुल प्रणाली की [illegible] इसके उद्देश्य को कितने [illegible] और [illegible]न्दर शब्दों मे लिखा है। मैं प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता गुरुकुल के स्नातकों को उपदेश यह लेख सभी ने बहुत पसन्द किए हैं और प्रशंसा की है इसी प्रकार मैं आपको इस अंक विशेषतया और आर्य मर्यादा के सरल और अमूल्य विचारों के लिए बधाई भेज रहा हूं कि यह पत्र ही घर-2में जाकर शान्ति और सुख का वातावरण पैदा कर सकता है।

—महावीर प्रसाद
ग्रेन मार्केट रायकोट (लुधियाना)

जिला आर्य सभा लुधियाना की गतिविधियाँ

प्रचार कार्य—हर रविवार सायं 4 बजे से 5-30 तक इन्डस्ट्रीयल एरिया-ए गरीब बस्तियों में सत्संग होता है हवन-यज्ञ, भजन और उपदेश होते हैं वहां की गरीब जनता काफी लाभ उठा रही है। इस प्रचार कार्यमें श्री राजेन्द्र कुमार दीवान एवं श्री महेन्द्रपाल वर्मा, पं. भरतसिंह, ओम् प्रकाश गुलबधर, श्री खुशवक्तराय सूद, ओमप्रकाश पासी, देशराज महता, सत्यपाल सूद; अयोध्या प्रसाद, राम-प्रसाद सचदे, श्री हंसराज जी खूब लग्न से भाग ले रहे हैं।

2, शीघ्र ही इन बस्तियों के बालकों के पढ़ाने के लिए जिला आर्य सभा एक पाठशाला खोल रही है।

3, गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के वार्षिकोत्सव के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को चार हजार रुपए जिला आर्य सभा की ओर से दिया गया।

—आशानन्द आर्य महामन्त्री

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना के समाचार

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में राम नवमी का पर्व 31 मार्च रविवार को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इससे पूर्व 22 मार्च 85,से 31 मार्च 85 तक सामवेद पारायण यज्ञ रखा हुआ था यह सामवेद का यज्ञ श्रीमती राजरानी जी ने रखवाया था। यज्ञ का सारा व्यय उन्होंने किया। यज्ञ का समय प्रतिदिन दोपहर बाद 3 से 5 बजे तक रखा गया था

यज्ञ के ब्रह्मा पं. सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री थे। उपदेश महात्मा प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी धूरी वालों का होता रहा 31 मार्च को यज्ञ की पूर्णाहुति डाली गई? तत्पश्चात् सभी आर्य भाई-बहिनों ने दम्पति को आशीर्वाद दिया। उसके बाद विशाल हाल में राम नवमी के उपलक्ष में पं. सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री तथा महात्मा प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के आदर्श जीवन पर अपने विचार रखे तथा उसके आचरण पर बल दिया। साथ में भजन होते रहे। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। बाद में सबको यज्ञ शेष वितरण किया गया।

—मतवालचन्द
मन्त्री

फ्रांसीसी युवति की शुद्धि एवं विवाह

आर्य समाज अजमेर द्वारा 30 वर्षीया फ्रांसीसी तथा हाल में पुष्कर प्रवास पर आई हुई मिस ब्रिजीत क्लाजी द्वारा स्वेच्छा से प्रार्थना करने पर शुद्धि कर उसे वैदिक हिन्दू धर्म में दीक्षित किया गया। उसने स्वयं बताया कि वह भारतीय वैदिक धर्म के आदर्शों से अत्यन्त प्रभावित हुई है। शुद्धि के पश्चात् उसका नाम कु. वीना रखा गया।

शुद्धि के पश्चात् उसकी प्रार्थना तथा पारस्परिक सहमति के आधार पर पुष्कर के लोटस होटल में सेनारत श्री भगवानदास बाबम के साथ वैदिक रीति से पाणि ग्रहण (विवाह) संस्कार श्री समाज मन्दिर में सम्पन्न हुआ। शुद्धि एवं विवाह संस्कार श्री आचार्य गोविन्द सिंह के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

मन्त्री
—रासासिंह

आर्यसमाज गढ़ा जालंधर में वेद प्रचार

आर्य समाज गढ़ा जालन्धर की स्थापना बैशाखी के शुभ अवसर पर हुई थी। इसलिए प्रति वर्ष वैशाखी का पर्व इस समाज में धूमधाम से मनाया जाता है प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी 10 से 13 अप्रैल तक श्री पं, रामनाथ जी सि. वि. महोपदेशक की कथा तथा श्री पं, सीताराम जी, श्रीराम मण्डली के भजन होते रहे।

13 अप्रैल को श्री पं धर्मदेव जी सहायक वेद प्रचार अधिष्ठाता, श्री कर्मचन्द जी मानी, श्री भगत लाभचन्द, श्री डा. इन्द्रजीत जी तथा अन्य कई सज्जनों के प्रवचन हुए तथा आर्य समाज में आर्य माडल स्कूल की स्थापना की गई,

—अमरनाथ आर्य
मन्त्री

राष्ट्र निर्माण के लिए कार्य करें

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में 24 मार्च 1985 को आर्य समाज का 110वां स्थापना दिवस समारोह विट्ठल भाई पटेल हाउस के प्रांगण में दिल्ली की सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं द्वारा बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

इस अवसर पर बोलते हुए समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय राज्य विधि मन्त्री श्री हंसराज भारद्वाज ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि आज देश की एकता व अखण्डता को हमें हर कीमत पर बनाए रखना चाहिए तथा देश को बाहरी खतरों से सामना करने के लिए हमें एक जुट होकर कार्य करना है। इस सन्दर्भ में आर्य समाज ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। उन्होंने कहा कि भारत ऋषि-मुनियों की पुण्य भूमि है। समय-समय पर यहां महापुरुषों ने जन्म लिया है। इसी भारत भूमि पर आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने जन्म लिया और उन्होंने आर्य समाज की स्थापना कर देश में फैली विभिन्न कुरीतियों का डटकर विरोध किया।

दिल्ली के महापौर श्री महेन्द्रसिंह साथी ने कहा कि जब मैं भारत की आजादी के आन्दोलनके इतिहासको पढ़ता हूं तो मेरे सामने यह एक दम स्पष्ट हो जाता है कि उस इतिहास में से यदि आर्य समाज के इतिहास को निकाल लिया जाए तो ऐसा लगता है कि जैसे आजादी के आन्दोलन की रूह ही निकाल दी हो। उन्होंने भाव विह्वल होकर कहा कि कल ही मुझे एक चिट्ठी मिली है जिसमें लेखक ने अपना नाम तो दिया है लेकिन पता नहीं दिया। उस चिट्ठी में मुझ से कहा गया है कि 10 अप्रैल तक तुम यह बता दो कि तुम हिन्दुओं के साथ हो या सिखों के साथ, क्योंकि 10 अप्रैल के बाद हमने हिन्दुओं का साथ देने वाले सिखों को खत्म करने का फैसला कर लिया है। पता न होने से मैं उस चिट्ठी के लेखक को जवाब तो नहीं दे सकता, परन्तु इस सार्वजनिक सभा में घोषणा करता हूं कि न मैं हिन्दुओं के साथ हूं न सिखों के साथ हूं, मैं तो देश की आत्मा के साथ हूं। अब तक जिन हिन्दुओं ने देश की आजादी में अपना योगदान दिया है और अब देश की एकता और अखण्डता को बनाए रखने के लिए जूझ रहे हैं। मैं उन हिन्दुओं के साथ भी हूं वैसे ही सिखों के साथ भी हूं। परन्तु देश के साथ गद्दारी करने वाले या देश का विघटन चाहने वाले या खून की होली खेलने वाले सिखों के साथ मैं किसी भी हालत में नहीं हूं।

उन्होंने पंजाब की समस्या की चर्चा करते हुए कहा कि जब से उग्रवादियों ने अपनी अलगाववाद की भावना फैलाई है तब से पंजाब का विकास रुक गया है। लहलहाते पंजाब के स्रोत उजड़ गए हैं और कारखाने बन्द हो गए हैं। पंजाब के नाम पर बन्दूक की गोली से अपना इरादा पूरा करने वालों ने जहां सारे देश को अपने विरुद्ध कर लिया है वहां पंजाब की सबसे अधिक हानि की है। क्या वे पंजाब की पानी की समस्या को खून का दरिया बहाकर हल करना चाहते हैं और चण्डीगढ़ शहर का आदमियों की हड्डियों से निर्माण करना चाहते हैं। इसी प्रकार चण्डीगढ़ शहर पंजाब ने नहीं सारे देश ने बनाया है इसी प्रकार देश का सबसे बड़ा अंग पंजाब के रहने वालों ने नहीं बनाया बल्कि सारे देशवासियों ने बनाया है। अगर आज पंजाब को जरूरत हो तो सारा देश उसके लिए अपनी सब नदियां उंडेल सकता है, बशर्ते कि पंजाब के हमारे इन बहके हुए भाईयों को कोई सद्‌बुद्धि दे।

श्री पं. शिवकुमार शास्त्री बताया के कि किस प्रकार ऋषि दयानन्द ने सत्य-सनातन वैदिक धर्म पर पड़े अज्ञान के आवरण को हटाकर उसका बुद्धि सगत समुज्जवल रूप प्रकट किया। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रवक्ता डा. वाचस्पति उपाध्याय ने आर्य समाज स्थापना दिवस को समस्त आर्य समाजियों का जन्म दिवस बताते हुए इसे सामूहिक रूप से मनाने का आह्वान किया।

प्रो. बलराज मधोक ने श्री के साथी विचारों का समर्थन करते हुए कहा कि पंजाब की असली राजधानी चण्डीगढ नहीं लाहौर होनी चाहिए और हिन्दुओं और सिखो को इसी मांग को लेकर खड़े होना चाहिए। इससे जहां देश में नव-चेतना आएगी वहां पंजाब समस्या का समाधान का रास्ता भी निकलेगा।

अपने अध्यक्षीय भाषण में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ला. रामगोपाल शालवाले ने कहा कि आज के दिन ही महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी साथ ही उन्होंने आर्य समाज के गौरवपूर्ण कार्यों पर प्रकाश डालते हुए आर्यजनों से कहा कि आत्महीनता की भावना को छोड़कर राष्ट्र निर्माण के कार्य में तन-मन धन से जुट जाना चाहिए। यही आर्य समाज स्थापना दिवस को मनाने की सार्थकता है। आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री श्री सूर्यदेव जी ने आर्य संस्थाओं से आए हुए सभी आर्यजनों को स्थापना दिवस की शुभ कामनाएं दीं तथा शान्ति पाठ के पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

—राजेन्द्र दुर्गा

बहराइच का मुस्लिम धर्मान्तरण निरस्त किया जाए और इसकी पुनरावृत्ति रोकी जाए

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री नारायणदत्त तिवाड़ी से मांग

दिल्ली—विगत 5 अप्रैल बहराइच जिला (उ. प्र.) के मुस्लिम बहुल क्षेत्र के अपढ़ एवं निर्धन नटों एवं कलन्दरों के सामूहिक मुस्लिम धर्मान्तरण के संदर्भ में जो अभी हाल में हुआ है सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री नारायणदत्त तिवाड़ी को एक ज्ञापन भेजकर मांग की है कि इस धर्मान्तरण को निरस्त करने और इसकी पुनरावृत्ति को रोकने के लिए समुचित प्रशासनिक कदम उठाए जाएं और अनिवार्य होने पर इन को रोकने के लिए आवश्यक कानून भी बनाया जाए।

श्री शालवाले ने यह भी लिखा है कि आर्य समाज बहराइच की सभा को प्राप्त जांच रिपोर्ट तथा अन्य समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारो से इस धर्मान्तरण की सत्यता प्रमाणित हो गई है। यह भी स्पष्ट हो गया है कि भय, प्रलोभन या बल प्रयोग द्वारा किए गए इस प्रकार के धर्मान्तरण का लक्ष्य धार्मिकता को बढ़ावा नहीं अपितु राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाकर देश को मुस्लिम बहुल राज्य में परिवर्तित करने की योजना को मूर्त रूप देना है। यह भारत व्यापी योजना पश्चिम के देशों मुख्यत: खाड़ी के देशों से निर्मित और पैट्रो डालर की मदद से चलाई जा रही है श्री शालवाले ने यह भी स्पष्ट किया कि उन्होंने भारत सरकार को इस कुचक्र तथा इससे पैदा होने वाले खतरों से कई बार सावधान भी किया है।

ज्ञापन में कतिपय मुस्लिम विधायकों और राज्याधिकारियोंके इस काण्डमें प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहभागी व सहयोगी, होने पर भी चिन्ता व्यक्त करते हुए सभा प्रधान ने इसकी गहरी छानबीन करने और अपराधियों को कड़े से कड़ा दण्ड देने की भी मांग की है।

श्री शालवाले ने उत्तर प्रदेश एवं भारत सरकार को आर्य समाज का पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

रायकोट में आर्यसमाज स्थापना दिवस हर्षोल्लास से सम्पन्न

आर्य समाज रायकोट में आर्य समाज स्थापना दिवस बहुत उत्साह से मनाया गया। दयानन्द माडल स्कूल रायकोट के स्टाफ तथा बच्चो ने बहुत ही मेहनत करके उत्सव का सारा प्रोग्राम बनाया तथा निभाया। इस प्रोग्राम मे महाशय प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी धूरी ने ध्वजारोहण किया तथा प्रोग्राम की अध्यक्षता की। आदरणीय पंडित रामनाथ जी सि. वि. तथा महात्मा प्रेम भिक्षु वानप्रस्थी ने आए नागरिको को बहुत आनन्दित किया। आर्य समाज रायकोट में इन तीस सालो मे पहली बार इतनी भीड़ देखने को नजर आई कि बैठने के लिए जगह मुश्किल से मिल रही थी। रायकोट शिवाला क्षयि कोषाध्यक्ष तथा भारतीय महावीर दल के प्रधान बलदेव कृष्ण गोयल ने आर्य समाज द्वारा समाज में जागृति पैदा करने तथा आज फिर समाज को जागृत करने की जरूरत पर जोर दिया।

बच्चो ने कविताएं सुनाईं जो बहुत प्रभावशाली थी। प्रधान भीमसेन जी ने अनुशासन रखने पर जोर दिया श्री जयप्रकाश जी सहमन्त्री ने आने वाली पीढ़ी के लिए धार्मिक शिक्षा की जरूरत पर जोर दिया। महाशय प्रेम प्रकाश वानप्रस्थी धूरी वाले के भाषण बहुत प्रभावशाली रहे। महाशय जी के कहने पर पुराने कपड़े इकट्ठे करने की योजना पर जल्दी अमल करने का यत्न किया जाएगा।

—सतीश कुमार कोडा

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज जलालाबाद (पश्चिमी) का वार्षिक निर्वाचन सर्वसम्मति से निम्न प्रकार हुआ—

संरक्षक—श्री मुकन्दलाल छाबड़ा, प्रधान—श्री मोहनलाल मोगा, उपप्रधान—श्री जनकराज जी, मन्त्री—श्री डा रिखीराम जी कुमार, उपमन्त्री—श्री रामबीर जी, कोषाध्यक्ष—श्री मुकन्दलाल अडीटर—श्री चमनलाल जी।

आर्यसमाज दीनानगर का वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज दीनानगर का वार्षिक चुनाव 7-4-85 को सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्नलिखित सदस्य सर्वसम्मति से चुने गए—

संरक्षक—स्वामी सर्वानन्द जी महाराज एवं श्री कर्मचन्द जी भारद्वाज, प्रधान—श्री रामकिशन जी महाजन (वानप्रस्थी उपप्रधान—श्री बलराम जी गुप्ता एव श्री देवीदास जी, महामन्त्री—श्री सतीश कुमार शास्त्री, उपमन्त्री—श्री पृथ्वीराज जिज्ञासु प्रचार मन्त्री—श्री बलदेवराज विज, कोषाध्यक्ष—श्री मक्खनराज महाजन, यज्ञ पुरोहित—श्री सतीशचन्द्र वानप्रस्थी, लेखा निरीक्षक—श्री योगेन्द्रपाल शर्मा, पुस्तकाध्यक्ष—श्री रघुनाथसिंह शास्त्री।

—सतीश कुमार शास्त्री

पुस्तकाध्यक्ष-श्री डा. करतारचन्द कालड़ा प्रचार मन्त्री—श्री देशराज जी'

अन्तरंग सभा के सदस्य—श्री राजकुमार जी आर्य, डा. तिलकराज कुमार, डा. वेद प्रकाश जी, श्री रामलाल जी सेतिया। ——डा. रिखीराम

आर्यसमाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर का वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर का वार्षिक चुनाव दिनांक 7-4-85 को पं. [illegible] की अध्यक्षता में हुआ [illegible] पदाधिकारी चुने गए—

प्रधान—श्री [illegible] जी आर्य, उपप्रधान—श्री [illegible] जी. श्रीमती वीरादेवी, [illegible], उपमन्त्री—श्री [illegible], श्रीमती अमरदेवी. प्रचार मन्त्री—श्री [illegible] कुमार कोषाध्यक्ष—पं. [illegible] पुस्तकाध्यक्ष—श्री विश्वम्भरदास, [illegible] कीपर—श्री [illegible], लेखा निरीक्षक—श्री [illegible],

अन्तरंग सदस्य

श्री [illegible] आर्य, श्री हरबंसलाल शर्मा, श्री पं. [illegible], श्री करतारचन्द, श्री हंसराज, श्री [illegible] श्रीमती सत्यादेवी, श्री [illegible], श्री चरणदास, डा. पूर्णचन्द, श्री [illegible]।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन न. 74251 (रजि. न. पा. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 4, 23 वैशाख सम्वत् 2042, तदनुसार 5 मई 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

पंजाब की वर्तमान स्थिति पर गम्भीरता से विचार करें

विघटनकारी और उग्रवादी शक्तियां फिर सिर उठा रही है

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्यसमाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

जैसा कि आपको मालूम है पजाब की राजनैतिक स्थिति पर विचार करने और समय-समय पर आर्य जनता को वास्तविक स्थिति से अवगत कराने के लिए पजाब राजार्य सभा बनाई गई थी। आर्य समाज राजनीति मे सक्रिय भाग तो नही लेना चाहता, यह अवश्य चाहता है कि आर्य जनता अपने प्रदेश की स्थिति की ओर जागरूक रहे और जो कुछ चारो तरफ हो रहा है उसे स्वय भी समझें और दूसरो को भी समझाने का प्रयास करे और धीरे-धीरे एक ऐसा जनमत सगठित किया जाए कि आने वाले चुनाव में वही व्यक्ति सफल हो सकें जो आर्य समाज के दृष्टिकोण का समर्थन करें।

इस उद्देश्य को सामने रखते हुए यह निश्चय किया गया है कि राजार्य सभा की ओर से प्रति मास एक मासिक पत्र आर्य समाजों के अधिकारियो को भेजा जाया करेगा। उसमे वतमान राजनैतिक स्थिति पर आर्य समाज का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जाएगा। इस आशा के साथ कि अधिकारी महानुभाव अपने सदस्यो तक आर्य समाज के दृष्टिकोण को पहुचा देंगे।

यह पहला मासिक पत्र आपकी सेवा मे भेजा जा रहा है। आपसे निवेदन है कि इसे अपने साप्ताहिक सत्सग मे पढकर सुना दे ताकि आपके सदस्य महानुभावो को भी इसके विषय में पता रहे। जो भी मासिक पत्र आपके पास आए, उन्हे सुरक्षित रखें। आगे चलकर काम आएगे।

आज हम आपका ध्यान अकालियो की मुख्य माग की तरफ दिलाना चाहते हैं, वह यह है कि 1973 में उन्होंने आनन्दपुर साहिब मे जो प्रस्ताव पारित किया था उसे स्वीकार किया जाए। पजाब में बहुत कम व्यक्तियों को यह पता है कि आनन्दपुर साहिब का प्रस्ताव है क्या? हम उस प्रस्ताव के कुछ विशेष भाग आपके सामने रखते हैं ताकि आपको पता चल सके कि यह प्रस्ताव क्या है?

इस प्रस्ताव के चार भाग हैं— पहले का सम्बन्ध शिरोमणि अकाली दल की धार्मिक समस्याओ से है। दूसरे का राजनैतिक पक्ष से, तीसरे का आर्थिक पक्ष से, और चौथे का सम्यचारिक या सामाजिक पक्ष से। जहा तक धार्मिक पक्ष का सम्बन्ध है हम केवल एक ही बात आपके सामने रखना चाहते हैं कि शिरोमणि अकाली दल सिखो को एक अलग कौम समझता है और सिखो मे पन्थक आजाद हस्ती की भावना पैदा करना चाहता है। इसके अतिरिक्त इस प्रस्ताव मे सिख धर्म के प्रचार के लिए कई प्रकार की योजनाए भी गई दी हैं।

जहा तक राजनैतिक लक्ष्य का सम्बन्ध है इस प्रस्ताव मे वह निम्नलिखित शब्दो मे पेश किया गया है—

—पन्थक राजसी निशाना निश्चय ही साहिब दशम पातशाह के आदेशो सिख इतिहास के पृष्ठो—और खालसा पन्थ के मन मन्दिर मे उठता चला आ रहा है। जिसका तात्पर्य खालसा जी के बोल-बाले हैं।'

इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए शिरोमणि अकाली दल यह चाहता है कि जो क्षेत्र पजाब से जानबूझकर बाहर रखे गए हैं, जैसे—गुरदासपुर मे डलहौजी अम्बाला जिला का चण्डीगढ, पजौर, कालका तथा अम्बाला सदर आदि होशियारपुर की सारी ऊना तहसील, नालागढ का 'देश' नामी इलाका, करनाल जिले का शाहबाद ब्लाक तथा गुहला ब्लाक और हिसार जिले की टोहाना सब-तहसीलें, रत्तिया ब्लाक तथा सिरसा की तहसील, राजस्थान तथा गगानगर के जिले की 6 तहसीले और उनके साथ लगते पजाबी बोलने तथा सिख आबादी के और सब इलाके तुरन्त पजाब मे आ जाए और एक ही प्रबन्धक ईकाई बन जाये। जिसमे सिखो तथा सिखो के अधिकार विशेष सुरक्षित रखे।

शिरोमणि अकाली दल भारत की ऐसी विदेश नीति का समर्थन करेगा जो शान्ति पर आधारित और कौमी हितो के अनुकूल हो, विशेषत भारत के सारे पडोसी देशो के साथ सिख आबादी के सिख गुरुधामो वाले देशो से प्रेम तथा सदभावना वाला हो। दूसरे शब्दो मे अकाली दल यह चाहता है कि पाकिस्तान के साथ उसे समझौता करने का अधिकार हो।

'शिरोमणि अकाली दल चाहता है कि केन्द्र के पास केवल रक्षा विभाग विदेश विभाग, तार और डाक विभाग, रेल और मुद्रा विभाग रहे। बाकी सारे विभाग पजाब सरकार के अधीन हो और इसके लिए पजाब को अपना विधान में सशोधन करने का भी अधिकार हो।

हमने सक्षिप्त रूप मे श्री आनन्दपुर साहिब की विशेष मागें आ ... दी है। इस ... का केन्द्र वि... है कि अकाली दल एक ऐसा राज्य चाहता है जहा कि खालसा जी का बोल बाला हो। अर्थात् खालसा जी का प्रभुत्व हो। उन्हे अपना विधान बनाने का भी अधिकार हो और बाहर के देशो के साथ सन्धि करने का अधिकार हो। यदि यह एक स्वतन्त्र राज्य की पृष्ठ भूमि नही तो क्या है? जिस राज्य मे खालसा जी का बोल-बाला होगा वहा दूसरे व्यक्तियों की क्या स्थिति होगी? इसका अनुमान लगाना कठिन नही है। भारत का वर्तमान विधान इस देश के प्रत्येक व्यक्ति को एक जैसा अधिकार देता है। आनन्दपुर साहिब के प्रस्ताव के साथ केवल सिखो को ही पजाब मे विशेष अधिकार प्राप्त होग। बाकी सब साधारण व्यक्ति समझें जायेगे और उन्हे कई ऐसे अधिकारो से वचित किया जा सकेगा जोकि उन्हे आज प्राप्त है।

हमारे प्रधानमन्त्री ने इसीलिए आनन्दपुर साहिब के प्रस्ताव का विरोध किया है। हम चाहते हैं कि प्रत्येक आर्य समाजी को सारी स्थिति का पूरा ज्ञान हो। कल को यदि पजाब मे हालात और बिगडे तो हम उनका मुकाबला करने के लिए तैयार रहे। इसीलिए हम चाहते हैं कि आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य को पता होना चाहिए कि आनन्दपुर साहिब का प्रस्ताव क्या है? आप आप कृपया अपने मित्रो, सम्बन्धियो और दूसरे परिचित व्यक्तियो को इस प्रस्ताव के विषय मे बता दें, ताकि किसी को कोई भ्रान्ति न रहे।

भवदीय

वीरेन्द्र — प्रधान

कमला आर्या — महामन्त्री

अमृतलाल बजाज

संयोजक पजाब राजार्य सभा

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के दीक्षान्त समारोह पर

श्री आर्यरत्न पं. सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार का दीक्षान्त भाषण

(गताक से आगे)

भिन्न-भिन्न अन्तर्राष्ट्रीय सगठन सगतिकरण रूप से यज्ञ रूप मे प्रवृत्त हो रहे हैं। हमे भी इस तरफ आगे बढना है इन यज्ञो मे लौकिकता का विशेष प्रभाव न हो सके परन्तु आध्यात्मिकता उन्पती हो, इसे ध्यान मे रखना चाहिए।

ससार मे आधुनिक वैज्ञानिक युग मे मनुष्य आकाश मे दूर से दूर पहुच रहा है। चन्द्रमा पर तो वह अपने पैर भी फैला चुका है। धरती के विस्तृत भू-खण्डो पर, उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवो के विशाल प्रदेशो पर भी पर्यवलोकन हो रहा है। समुद्रो और धरती की गहराईया भी मापी जा रही हैं। इन सब बडी-बडी दूरियो और गहराईयो को मापते हुए लौकिक पुरुषो ने बडी से बडी विजयो के झण्डे गाडे हैं। परन्तु इस धरती पर बसने वाले मानवो के हृदयो, मनो और बुद्धियो की गहराईयो को मापना अभी तक सीखा नही गया है। मनुष्य के मन और हृदय को अन्दर से जीतने मे और उसमे प्रेम सहानुभूति, उत्साह, सहृदयता तथा धीरता आदि का शान्तिमय सन्देश नही दिया जा सका है। यह मार्ग अभी तक प्रशस्त नहीं हुआ। यहा पर आकर भौतिक विज्ञान असफल हो गया है। यही से हमे श्रेय मार्ग को प्रशस्त करना है और यह यज्ञमय जीवन से प्रारम्भ होना है। 'बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे' का ध्यान रखते हुए हमे वर्तमान मे द्रव्य यज्ञो के प्रति बढती प्रवृत्ति को अन्ध-श्रद्धा की तरफ जाने से रोकना होगा। हमे यज्ञो की विविधता तथा विशालता को भी समझना चाहिए। सयतेन्द्रियता मे य यज्ञ ज्योतिर्मय हो जाते हैं। समझना चाहिए कि—

द्रव्ययज्ञा तपोयज्ञा योगयज्ञा तथापरे।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतय सशितव्रता।
श्रेयान् द्रव्यमयात् यज्ञात ज्ञानयज्ञ परतप।
सर्वं कर्माखिल पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।
नाय लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्य कुरुसत्तम।
श्रद्धावान् लभते ज्ञाम तत्पर सयतेन्द्रिय।
ज्ञान लब्ध्वा परा शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।

श्रद्धापूर्वक विभिन्न यज्ञो से, यज्ञमय जीवन से, ज्ञान प्राप्त करते हुए शान्ति की प्राप्ति सहज हो जाती है। हमारे भूतकाल में ज्ञानयज्ञ का अनुष्ठान सदा तीव्र रूप से अग्रसर होता हुआ, सामाजिक जीवनो मे विशुद्ध दृष्टि या चिन्तन को प्रदान करता था। ज्ञान की धारा लौकिक और अलौकिक, प्रेय और श्रेय, आसुरी तथा दैवी, वामपक्षी या दक्षिण पक्षी आदि द्वन्द्वो मे सघर्षात्मक दृष्टि से आगे बढी थी। दर्शन शास्त्र या आन्वीक्षिकी विद्या का इसमे विशेष भाग है। बडे-बडे ऋषि-मुनि और आचार्य जब उपरोक्त असत् और सत् विचारधारायो पर गम्भीर मन्थन करते थे तो जातियो के जीवन परिवर्तित हो जाते थे। धर्म, सस्कृति, सभ्यता और समाज रचना के नये-नये स्रोत बह निकलते थे और ससार को नवजीवन प्राप्त होता था।। मैं वर्तमान युग मे ज्ञानी पुरुषो मे भारतीय आन्वीक्षिकी विद्या या दर्शन शास्त्र की पूर्ण चर्चा का किया जाना आवश्यक समझता हू। यह विश्वविद्यालयो की पुण्यस्थली मे ही समुचित रूप से हो सकेगा। जब 'धर्मनिरपेक्ष शब्द बार बार सुना जाता है तो लौकिक दृष्टि से धर्म शब्द निरस्कृत हो जाता है। जब वैदिकी ज्ञान धारा 'आचार परमो धर्म' धर्मंचर' का उदघोष करती है तो 'सिक्युलर' शब्द धमनिरपेक्षता के अर्थों मे 'आचार निरपक्षता की तरफ खींच ले जाता है। यही कारण है कि वर्तमान भारतीय समाज मे 'भ्रष्टाचार बुरी तरह से फैलता जा रहा है और नैतिक मूल्य गिर रहे हैं। 'धर्म सस्थापन' या 'धमचक्र प्रवर्तन' एक हसी मात्र दिखाई देते हैं। धर्म शब्द महान् है—यह कर्त्तव्य, पुण्य कार्य कानन व्यवस्था आदि मे मुख्यत प्रयुक्त होता है। 'धमनिरपक्ष' शब्द को सरकारी रूप से तिलाञ्जलि दी जानी चाहिए। भिन्न-भिन्न मतो या सम्प्रदायो के साथ धर्म शब्द का व्यवहार हमारी अशिक्षा का परिचायक है। सब सम्प्रदायो के प्रति उदारता का परिचय देना, विभिन्न मतभेदो मे भी पारस्परिक आदरभाव रखना मानवमात्र के [illegible] ईचारे से वर्तना, ईश्वर के प्रति [illegible] और विश्वास रखना [illegible] [illegible] नहीं है।

भारत में इस विषय में अर्थ का अनर्थ किया जाना रोकना चाहिए। 'सेक्यूलर' विचारधारा वामपक्षीय लौकिक विचारधारा है जो अनीश्वरवादी नास्तिक विचारो से ओत-प्रोत हो जाती है।

जब वैदिक परम्पराओ में यान्त्रिक हिंसा और दुराचार प्रवृत्त हुए और लौकिक दृष्टि ही प्रमुख हो गयी तो बौद्ध धर्म ने पुरानी सदाचार की धर्म-मर्यादाओ को स्थापित किया था। नये-नये विचारो से दृष्टि परिवर्तन भी हुआ। करीबन डेढ हजार वर्ष पूर्व से हमारे वैदिक और अवैदिक सत् और असत्—दार्शनिको का ज्ञान चर्चा द्वाद अत्यन्त गम्भीरता से चलता रहा है। वैदिक आर्य दर्शनो पर बौद्ध आचार्यों के घात-प्रतिघात थे। इस संघर्ष में कई सदिया बीत गयी। आर्य दर्शनो के ऋषि कपिल, कणाद, गौतम, पतञ्जलि, व्यास, जैमिनी आदि का सम्पोषण समन्वयात्मक दृष्टि से अग्रसर करने मे वात्स्यायन, उद्योतकाचार्य, शकर वाचस्पति मिश्र, उदयनाचार्य आदि थे तो दूसरी तरफ असत् विचारधारा मे बौद्ध दार्शनिको ने भी प्रतिघात किए। इनमे नागार्जुन, दिङ्नाग, धर्मकीर्ति, कल्याण रक्षित, अतिशा, वसुबन्धु, आसग आदि प्रौढ विद्वानो द्वारा गम्भीर चिन्तन होता रहा और ज्ञान का चतुर्मुखी प्रवाह बहता रहा। इस तरह से दीर्घ काल के सघर्ष मे अन्त में वैदिक विचारधारा ने ही 'सतपक्ष मे भारत की विजय को स्थापित किया। अब वही विचारधारा आगे सैमेटिक विचारो से टकरा गई है। इसमे महर्षि दयानन्द का प्रकाण्ड साहस दूरदर्शिता गम्भीर चिन्तन तथा सार्वभौम सस्कृति, धर्म, सभ्यता को समन्वय रूप से वैदिक धम के मानववाद मे पाना अभी गम्भीर चिन्तन का विषय है जिसे भविष्य ने अपनी कसौटी पर परखना है।

भारत की सम्पूर्ण विचारधाराए गुरु शिष्य परम्पराओ द्वारा बडे बडे गुरुकुलो या विहारो मे पनपी थी। भगवद्गीता की वैदिक कर्मयोग को राज विद्या भी गुरु शिष्य परम्परा से ही विकसित हुई थी।

इम विवस्वते योग प्रोक्तवानहमव्ययम्।
विवस्वान् मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवे।

इत्यादि परम्परा प्राप्त ज्ञान हैं। क्षत्र विद्या के लिए हमे तक्षशिला गुरुकुल के आचार्य विष्णु गुप्त चाणक्य के शिष्य सम्राट चन्द्र गुप्त को भूलना नही चाहिए, इसी तरह से महर्षि पतञ्जलि द्वारा शिक्षित सेनापति पुष्यमित्र को भी भुलाया नही जा सकता। नवरत्न विभूषित उज्जयनी के महाराजा विक्रमादित्य को भी सदा याद रखना चाहिए। इन्होंने भूतकाल में आर्य जाति की स्वतन्त्रता को अखण्ड रूप से स्थापित किया था और भारत को शिरोमणि राज्य का स्थान दिलाया था। उस समय ब्रह्म और क्षत्र के समन्वय से भारत पुण्य लोक बन सका था।

राजधर्म को समझाने में जो कार्य रामायण तथा महाभारत ने किया है एव भारतीय स्मृति ग्रन्थों ने जो ज्ञान भारतीय मनीषियों को समय-समय पर दिया है, उस सबका भी पुनः भारतीय दृष्टि से चिन्तन आवश्यक है। वर्तमान सास्कृतिक या राजनैतिक विचारधाराए भारतीय चिन्तन में से न आकर विदेशी या पराए रूपमे हम पर लद-सी गई हैं यह गम्भीर चिन्तन भारतीय समाज शास्त्रियो का अब विशेष विषय है। हम सब कुछ अग्रेजी की ऐनक से देखते हैं और जैसा दीखता है उसी मे सत्य का दर्शन समझते हैं। अपनी स्वय की आखो की विशुद्ध दृष्टि ही अन्तत यथार्थ होगी, इसे जानना चाहिए।

सम्पूर्ण भारत की भौगोलिक एकता को कवि कुलगुरु कालिदास ने 'कुमारसम्भव' के प्रारम्भ मे अत्यन्त मधुरता से दिया है—

अस्त्युत्तरस्या दिशि देवतात्मा,
हिमालयो नाम नगाधिराज।
पूर्वापरौ तोयनिधी विगाह्य,
स्थित पृथिव्या इव मानदण्ड।

इसी तरह से 'रघुवश' मे रघु की सेनाओ ने जिस स्वराज्य की स्थापना की थी और जिसके द्वारा सूर्यवश या रघुवश ने भारतीय राजतन्त्र में 'राम राज्य' की विचारधारा को सनातन रूप दिया था, वह भी भुलाया नही जा सकता। रघुवश ने भारत के भौगोलिक स्वरूप को स्थायी दृष्टि दी थी। राघव वश के राम-राज्य की दृष्टि से भारत का केन्द्रीयकरण सदा ही हमारा उद्देश्य रहना चाहिए।

अयोध्या से निकल कर जब महाराजा रघु ने केन्द्रीय कृतार्थ (फार इन्टिगरेशन) महाभारत निर्माण मे जो सेना-प्रस्थान किया था वह पहले पूर्व की तरफ बढा था। मगध राज्य और सुह्य राज्यो को परास्त करते हुए वग देश के अन्तिम किनारे तक रघु के झण्डे गढ गए थे। इसी तरह से गगा सागर के सब द्वीपो को वश मे कर उडीसा और कलिंग में देश को वशवर्ती किया। पास के सब पहाडो प्रदेशो पर भी अपना झण्डा फहराते हुए रघु ने महेन्द्र पर्वत पर अधिकार जमाया। इस तरह से पूर्वीय भारत पर विजय पताका फहरा कर वे दक्षिण दिशा की तरफ समुद्र तट के साथ-साथ चले।

(क्रमश·)

सम्पादकीय—

हमारी नई शिक्षा प्रणाली क्या हो--2

इसी विषय पर आर्य मर्यादा के पिछले अंक में अपने विचार पाठक महानुभावों के सामने रखते हुए मैंने लिखा था कि अब जबकि भारत सरकार ने एक नई शिक्षा प्रणाली देशवासियों के सामने रखने का निर्णय लिया है तो उन संस्थाओं के लिए जिन्होंने इससे पहले शिक्षाके क्षेत्र में कोई दिशा दिखाई थी का वह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह एक बार फिर अपने देशवासियों का मार्ग दर्शन करें। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सबसे पहले हमें बताया था कि हमारी शिक्षा प्रणाली कैसी होनी चाहिए। उसके आधार पर ही श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज और श्री महात्मा हंसराज जी ने अपने 2 ढंग से अपने देशवासियों के सामने एक नई शिक्षा प्रणाली रखी थी। स्वामी जी महाराज ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली और महात्मा हंसराज जी ने कालेज शिक्षा प्रणाली। इन दोनों में भी कुछ अन्तर अवश्य था परन्तु लक्ष्य दोनों का एक ही था, वह यह कि देश की नई पीढ़ी को ऐसे संस्कारों में ढाला जाए कि वह बड़े होकर केवल धनोपार्जन ही अपना लक्ष्य न रखें, उसके साथ देश धर्म और समाज की सेवा के लिए भी अपने आपको तैयार करें। इतिहास साक्षी है कि श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के गुरुकुल और महात्मा हंसराज जी के डी. ए. वी. कालेज ने इन दोनों महानुभावों के लक्ष्यों को पूरा करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने एक अत्यन्त ही नया मार्ग अपनाया। जब उन्होंने 1902 में अपने गुरुकुल की स्थापना की, उससे पहले इस देश में कोई गुरुकुल न था। इसलिए जब उन्होंने गुरुकुल को प्रारम्भ करने की घोषणा की तो कई व्यक्तियों को यह आश्चर्य हुआ कि यह कैसे हो सकता है। परन्तु स्वामी जी एक निर्णय ले चुके थे और उसे सफल बनाने का भी उन्होंने सकल्प कर लिया था, यह उनके लिए भी एक नया परीक्षण था। इसलिए इसको सफल बनाने के लिए उन्होने अपना तन-मन-धन सब कुछ इसमें झोंक दिया। न केवल अपनी सम्पत्ति इसे दे दी, अपने दोनों बेटे भी सबसे पहले गुरुकुल मे दाखिल करा दिए। इसका यह परिणाम हुआ कि दूसरों में भी गुरुकुल के लिए विशेष रूचि पैदा हो गई। और बड़े-बड़े अच्छे परिवारों ने अपने बच्चे गुरुकुल में भेजने का फैसला कर लिया। आज जब कि गुरुकुल की स्थापना हुए 80 वर्ष से ऊपर हो चुके हैं, हम बड़े गर्व के साथ कह सकते हैं कि गुरुकुल कांगड़ी ने ऐसे उच्चकोटि के विद्वान् अपने देश को दिए हैं जिन पर कि गुरुकुल गर्व कर सकता है। मेरा तो यह भी निश्चित मत है कि किसी दूसरी शिक्षा संस्था ने ऐसे विद्वान् पैदा नहीं किए जैसे कि गुरुकुल कांगड़ी ने। उन में कई बड़े-2 लेखक, साहित्यकार इतिहासकार, संस्कृत के महान् पण्डित, वेदो के विशेषज्ञ और धार्मिक नेता भी थे, इस प्रकार गुरुकुल का योगदान देश के नव निर्माण में सबसे अधिक रहा है।

दूसरी तरफ डी. ए. वी. कालेज ने भी कई उच्चकोटि के विद्वान् पैदा किए। जिन्होंने अपना और अपने विद्यालय का नाम उज्ज्वल किया और उन में से भी कुछ ऐसे हुए हैं जिन्होने धर्म प्रचार के लिए भी अपना योगदान दिया था। परन्तु गुरुकुल और डी. ए. वी. कालेज इन दोनों में एक अन्तर अवश्य रहा है। गुरुकुल एक सर्वथा नया परीक्षण था और डी. ए. वी. कालेज उससे पहले चल रही कालेज प्रणाली में एक सुधार था। परन्तु दोनों ने अपने-अपने ढंग से अपने देश धर्म और समाज की सेवा की।

मैंने ऊपर लिखा है कि श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज और महात्मा हंसराज जी ने अपने सामने एक विशेष लक्ष्य रख कर अपने-अपने ढंग से नई शिक्षा प्रणाली को प्रारम्भ किया था, वह लक्ष्य था कि देश के नव निर्माण में आर्य समाज अपना क्या योगदान दे सकता है। उस लक्ष्य को पूरा करने के लिए दोनों ने त्याग किया, दोनों स्वयं एक प्रकाश स्तम्भ बन कर अपने देशवासियों का मार्ग दर्शन करते रहे। उनकी बनाई हुई संस्थाएं आज भी चल रही हैं परन्तु हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं कि आज इन दोनों के सामने वह लक्ष्य नहीं है जो स्वामी श्रद्धानन्द जी और महात्मा हंसराज जी के सामने था। हमें अपनी इस कमजोरी को स्वीकार करना पड़ेगा कि हम न तो दूसरा श्रद्धानन्द पैदा कर सके हैं और न महात्मा हंसराज। उनके समय मे और उनके तुरन्त बाद कुछ ऐसे व्यक्ति अवश्य थे जो उन से प्रेरणा लेकर काम करते थे। और उनके लक्ष्य को प्राप्त करने का अपनी ओर से प्रयास करते थे। परन्तु अब वह सारी स्थिति बदल चुकी है। स्वामी श्रद्धानन्द जी और महात्मा हंसराज तो अब हमारे पास नहीं हैं। लेकिन वास्तविक स्थिति यह है कि उनके बाद के नम्बर दो, नम्बर तीन के व्यक्ति भी हमारे पास नहीं हैं। हमें यह भी मानना पड़ेगा कि आर्य समाज में नेतृत्व का स्तर अब बहुत गिर चुका है। इसका प्रभाव न केवल सारी आर्य समाज पर पड़ रहा है, विशेष कर हमारी शिक्षा संस्थाओं पर भी पड़ रहा है। मेरा गुरुकुल कांगड़ी से घनिष्ट सम्बन्ध रहा है फिर भी मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं कि हम गुरुकुल को स्वामी श्रद्धानन्द जी का गुरुकुल नहीं बना सके। इसका अर्थ यह नही कि अब गुरुकुल की आवश्यकता नहीं है। यदि अब भी उसमें किसी प्रकार कोई सुधार लाया जा सके तो यह देश के नव निर्माण में बहुत अधिक सहयोग दे सकता है।

लेकिन मेरा प्रश्न शुरू में यह था कि अब जबकि भारत सरकार एक नई शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर रही है क्या आर्य समाज का यह कर्त्तव्य नही कि वह अपने पिछले अनुभव के आधार पर आज भी सरकार को अपनी ओर से कोई नई ऐसी योजना बनाकर दे जिसके आधार पर देश को एक नई दिशा दिखाई जा सके। इस सन्दर्भ में पाठकों की जानकारी के लिए यह भी बता देना चाहता हूं कि मैंने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्राध्यापक वर्ग के जिम्मे यह काम लगाया कि वह श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की विचार धारा को सामने रखते हुए और अपने अनुभव के आधार पर शिक्षा प्रणाली की नई योजना बनाकर भारत सरकार को दें। ताकि उसे भी यह पता चले कि आर्य समाज में ऐसे व्यक्ति भी हैं जो इस दिशा में अपने देशवासियों का नेतृत्व आज भी कर सकते हैं। इस प्रकार की एक योजना बना ली गई है और वह शीघ्र ही भारत सरकार को पेश कर दी जाएगी। परन्तु मेरे विचार में यह काम केवल एक शिक्षा संस्था का नहीं है, सारे आर्य जगत् को मिलकर इस दिशा में अपने देशवासियों का मार्ग दर्शन करना चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द जी का गुरुकुल कांगड़ी तो अपना कर्त्तव्य पूरा कर ही रहा है, क्या आर्य समाज भी अपना कर्त्तव्य पूरा करेगा? इसका उत्तर हमें मिलना चाहिए वह आगामी अंक में दूंगा।

—वीरेन्द्र

दक्षिण अफ्रीका में विश्व आर्य सम्मेलन

आर्य जनता को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि आगामी 14,15,16 दिसम्बर को आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका विश्व आर्य सम्मेलन का आयोजन कर रही है उस आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना हुए अब 60 वर्ष हो चुके हैं। इसी उपलक्ष में यह विश्व आर्य सम्मेलन वहा हो रहा है। दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले हमारे आर्य बन्धु यह चाहते हैं कि अधिक से अधिक आर्य समाजी उस अवसर पर वहां पहुंचें उसका प्रबन्ध वह अभी से कर रहे हैं। समय-समय पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का बाहिर की आर्य समाजों और आर्य प्रतिनिधि सभाओं से उनकी गतिविधियो के सम्बन्ध मे पत्र-व्यवहार होता रहता है। अब हमें दक्षिण अफ्रीका से भी एक पत्र आया है जिसमें वहां के आर्य भाईयों ने अपनी इच्छा प्रकट की है कि भारत से अधिक से अधिक नर-नारी इस अवसर पर वहां पहुंचें। मैं यह जानता हूं कि इसमें कई प्रकार की कठिनाईयां हैं। आर्थिक भी और राजनैतिक भी। फिर भी हमें प्रयास करना चाहिए कि जितने भी व्यक्ति वहां जा सकते हैं जाएं। इस दिशा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली बहुत सहायता कर सकती है। सबसे बड़ी कठिनाई तो भारत सरकार से यह आज्ञा लेने की है कि वह हमे वहा जाने की अनुमति दे दे। यदि इसमें हम सफल हो जाएं तो बाकी कठियाईयां दूर हो सकती है।

यह काम केवल सार्वदेशिक सभा ही कर सकती है उसे अभी से इसके लिए प्रयास शुरू कर देना चाहिए ताकि जो आर्य बन्धु और बहिनें इस विश्व आर्य सम्मेलन मे सम्मिलित होना चाहते हैं उनके रास्ता में कोई कठिनाई न हो। मेरा यह विश्वास है कि जो भी महानुभाव यहां से वहा जाएंगे, उनका वहां भव्य स्वागत होगा और आवास आदि की किसी प्रकार की कोई कठिनाई न होगी। इसलिए जो जा सकते हैं उन्हें इनके लिए अपना प्रयत्न अभी से शुरू कर देना चाहिए।

—वीरेन्द्र

—श्री बलभद्र कुमार जी हूजा कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का

गुरुकुल काँगड़ी के दीक्षान्त समारोह पर स्वागत भाषण

ओ३म्

(गतांक से आगे)

अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त राशि से इस वर्ष तीन शोधग्रन्थ स्वामी सत्यदेव परिव्राजक, भवभूति' उनका व्यक्तित्व तथा पात्र एवं कैम्बुज का प्राचीन इतिहास, ग्रन्थ श्री राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली तथा मीनाक्षी प्रकाशन से प्रकाशित हुए हैं। अंग्रेजी में डा. गंगाराम की पुस्तक 'वर्ल्ड पर्सपैक्टिव्स आन दयानन्द' तथा पण्डित प्रियव्रत वेदवाचस्पति की हिन्दी में तीन खण्डों में प्रकाशित वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त, ग्रन्थों से विश्वविद्यालय का सम्मान बढ़ा है। पण्डित प्रियव्रतजी की पुस्तक का विमोचन स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रधानमन्त्री भारत सरकार ने किया था।

गुरुकुल का एक प्रमुख दर्शनीय स्थान गुरुकुल का पुरातत्व संग्रहालय है। इसमें पुरातत्व, अभिलेख शास्त्र तथा मुद्रा शास्त्र की विविध दुर्लभ तथा रोचक सामग्री प्रदर्शित है। जन-साधारण को दिखाने के उद्देश्य से प्रचुर ऐतिहासिक सामग्री वीथिकाओं में सजाई गई है। राजस्थान सरकार के पूर्व पुरातत्व निदेशक तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय के विजिटिंग प्रोफेसर डा आर. सी. अग्रवाल ने डा. विनोदचन्द्र सिन्हा तथा उनके सहयोगियों के साथ कांगड़ी के सिद्ध स्रोत स्थान से ललितासनस्थ अग्निदेव, दिक्पाल ईशान या यम, सप्तमातृकाएं, सर्वतोभद्रिका, सिंहवाहिनी देवी तथा शिरविहीन कुबेर की मूर्तियां खोज कर इस वर्ष संग्रहालय को दीं। कुण्डी-सोटा नामक स्थान से अन्वेषित महिषमर्दिनी मूर्ति तो ईसा की नवीं शती की है। कला सौष्ठव की दृष्टि से नव-अन्वेषित कुबेर की प्रतिमा देश में उपलब्ध अन्य कुबेर मूर्तियों से भिन्न तथा स्वतन्त्र अस्तित्व रखती है।

संग्रहालय के साथ जुड़ा हुआ श्रद्धानन्द कक्ष भी दर्शनीय है। इसमें पूज्य स्वामी जी की पादुकाएं, वस्त्र, कमण्डल तथा दुर्लभ चित्र सुरक्षित हैं। भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास की एक स्वर्णिम कड़ी है स्वामी जी का व्यक्तित्व और इसका दर्शन होता है, इस स्मृति कक्ष में सजीव रूप में। स्वामीजी का वह चित्र तो अत्यन्त प्रेरणाप्रद है जब 1919 में अमृतसर में होने वाले राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन के वह स्वागताध्यक्ष थे। उनके साथ पण्डित मोतीलाल नेहरू, महामना मदनमोहन मालवीय, श्रीमती एनी बेसेन्ट तथा पाद-पंक्ति में पण्डित जवाहरलाल नेहरू बैठे हैं। अब यहां अष्टधातु तथा चित्र कक्ष की भी स्थापना हो गई है। छटी योजना के अन्तर्गत गुरुकुल विश्वविद्यालय में उत्खनन विभाग खोलने की स्वीकृति भी हमें विश्वविद्यालय आयोग से आयोग से प्राप्त हुई है। अत: आगामी योजना में हम इसे दत्तचित्त होकर अग्रसर होंगे। इसके साथ ही सातवीं योजना में गंगा संग्रहालय स्थापित करने का प्रयत्न किया जा रहा है। यह जानकर प्रसन्न होंगे कि पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष डा. विनोद चन्द्र सिन्हा को अनुदान आयोग ने राष्ट्रीय प्रोफेसर नियुक्त करके सम्मानित किया है और वह आगामी जुलाई से अपना पद-भार सम्भालेंगे।

यहां मैं अंग्रेजी विभाग के रीडर डा. राधेलाल वार्ष्णेय का भी जिक्र करना चाहूंगा जिन्हें गत वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने रूसी विश्वविद्यालयों की यात्रा पर भेजा। वहां जाकर उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादित किया और रूसी शिक्षा जगत् के समक्ष एक नया दृष्टिकोण उपस्थित किया। जुलाई 84 में राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षा शिक्षा सुधार के लिए एक कार्यशाला प्रोफेसर वी. नटराजन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय संघ के संकेत पर हुई। उसका संयोजक भी डा वार्ष्णेय ने किया उसकी विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित हो गई है। डा. वार्ष्णेय बधाई के पात्र हैं।

मित्रों !

आपको यह जानकर भी प्रसन्नता होगी कि हमारे वयोवृद्ध बौद्धिक विद्वान् पण्डित भगवद्दत्त वेदालंकार को इस वर्ष शिक्षा मन्त्रालय ने हमारे यहां बौद्धिक स्कालर के रूप में दो वर्ष तक कार्य करने की अनुमति प्रदान की है। उन्होंने पहली अप्रैल से अपना कार्य भार सभाल लिया है। इस प्रकार हमारे वेद विभाग को बल मिला है। इसके साथ उन्हें संस्कृत शिक्षा सभा ट्रस्ट, जयपुर ने इस वर्ष का आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार देकर सम्मानित किया है। मैं उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।

गुरुकुल पुस्तकालय तो उत्तर भारत के गिने-चुने पुस्तकालयों में एक है। यहां प्राच्य विद्याओं, धर्म, दर्शन, इतिहास तथा मानवीकी और विज्ञान की दुर्लभ पुस्तकें तथा पाण्डुलिपियां सुरक्षित हैं। विभिन्न विषयों पर एक लाख से ऊपर पुस्तकें यहां विद्यमान हैं जिनका उपयोग देश-विदेश के शोधार्थी करते रहते हैं। अनुदान आयोग ने इस वर्ष छटी योजनान्तर्गत पुस्तकालय के विभिन्न संघटकों के विकास हेतु साढ़े दस लाख रुपये की राशि दी है। विविध उपकरणों के साथ इस वर्ष 16 स्वाध्याय कक्ष स्थापित किए गए हैं। पांच हजार नई पुस्तकें, 350 पत्रिकाएं तथा शोध-सामग्री मंगाई गई है। राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता के निदेशक तथा गुरुकुल के विजिटिंग फैलो श्री डी. आर. कालिया के अनुभव से लाभ उठाकर पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जगदीश विद्यालंकार पुस्तकालय को पूर्णतया अप-टू-डेट (अद्यतन) करने की दिशा में प्रयत्नशील है। इस वर्ष हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. गणपति चन्द्र गुप्त भी विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में हमारे बीच कार्य कर रहे हैं। उनसे हमारे विद्यार्थी लाभान्वित हुए हैं।

प्रौढ़ शिक्षा का कार्य डा. ए. के इन्द्रायण, योग केन्द्र का कार्य श्री ईश्वरदत्त भारद्वाज, क्रीड़ा का कार्य प्रो. ओम्प्रकाश मिश्र तथा श्री खट्टर एवं गंगा समन्वित विकास योजना का कार्य डा. विजयशंकर देख रहे हैं। राष्ट्रीय केडेट कोर का कार्य मेजर वीरेन्द्र अरोड़ा देख रहे हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्य का श्रीगणेश मेजर अरोड़ा ने किया था जिसे डा. वी. डी. जोशी देख रहे हैं। हिमालय योजना के तहत, डा. जोशी के निर्देशन में जन्तु विज्ञान को भारत सरकार के पर्यावरण विभाग से लगभग दस लाख रुपए की अनुदान राशि अभी-अभी प्राप्त हुई है। एम. सी, सी. माइक्रोबायोलाजी का विषय भी विश्वविद्यालय में खुल गया है। इस दृष्टि से देश का यह पहला विश्वविद्यालय होगा जहां स्नातकोत्तर स्तर पर विज्ञान के एक विषय का 'शिक्षा-परीक्षा' सुधार नीति के अन्तर्गत नूतन क्रेडिट प्रणाली के अनुसार अध्यापन होगा। इसी प्रकार आगामी सत्र से हरिद्वार में अनुदान आयोग [illegible] गुरुकुल कन्या महाविद्यालय खोलने की भी योजना है। आरम्भ में यहां गृह-विज्ञान की विद्यालंकार तक की शिक्षा का प्रबन्ध रहेगा।

मित्रों, आपको यह जानकर भी प्रसन्नता होगी कि इस वर्ष तमिल कक्षाएं खोलने हेतु तमिलनाडु सरकार की ओर से यथेष्ठ धनराशि उपलब्ध कराई गई है। आशा है इस दिशा में आगामी सत्र से कार्यारम्भ हो जाएगा।

आर्य समाज का नवां नियम है कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। इस भावना को मूर्त रूप देने के लिए प्रयोग रूप में 1981 में कांगड़ी ग्राम को अंगीकृत किया गया था। सड़कों का निर्माण वृक्षारोपण, गोबर गैस संयन्त्र की स्थापना साक्षरता अभियान, नारी शिक्षा, परिवार कल्याण, गोवर्धन पुस्तकालय तथा वाचनालय की स्थापना ग्रामोत्थान के लिए किए गए महत्वपूर्ण कार्य हैं। जिला प्रशासनाधिकारी श्री दर्शनसिंह बैंस तथा स्टेट बैंक आफ इण्डिया के सहयोग से ग्रामवासियों ने कुटीर उद्योग धन्धे शुरू किए हैं। अब वे आत्म विश्वासी होते जा रहे हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविर भी यहीं लगाए जाते हैं। इससे विद्यार्थियों का ग्रामीण जीवन की समस्याओं से परिचय होता है और अब वह स्थानीय नवयुवक मंगल दल के सदस्यों के साथ मिलकर ग्राम सफाई तथा अन्य निर्माण के कार्य करते हैं तो एक समां सा बंध जाता है। विद्यार्थियों को रोजगार दिलाने के लिए रोजगार ब्यूरो की इकाई की भी विश्वविद्यालय में स्थापना की गई है तथा डा. तनेजा की देख-रेख में 'स्वास्थ्य-केन्द्र का कार्य भी सुचारू रूप से चल रहा है।

छठी योजनान्तर्गत अनुदान आयोग ने दस विभागों में दस प्रोफेसर पद निर्मित करने की स्वीकृति भी दी। प्रोन्नति योजना के तहत वरिष्ठ प्रवक्ताओं को रीडर व प्रोफेसर पद पर प्रोन्नत किया गया। प्रोफेसरों का चयन भी हुआ। अनुदान आयोग की जो समिति गुरुकुल पधारी, उसने लाजपतराय पीठ की स्थापना का अनुमोदन किया किया। भारतीय इतिहास की पुनर्रचना तथा स्वाधीनता आन्दोलन के मूल्यांकन का कार्य यह पीठ करेगी।

विश्वविद्यालय के आचार्यों के क्वाटर्स के लिए आयोग ने लगभग 18 लाख रुपए की राशि प्रदान की। आधुनिक सुविधा सम्पन्न ये आवास गृह लगभग बनकर तैयार हैं। इस योजना का प्रारम्भ परिद्रष्टा डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने किया था। अब शिक्षकेतर कर्मचारियों के आवास भी इसी प्रकार निर्मित कराए जाएंगे। नव-निर्माणाधीन आवास भवनों का शिलान्यास कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र के हाथों सम्पन्न हो चुका है।

(क्रमश:)

व्याख्यान माला (स्वामी अच्युतानन्द)

परमेश्वर प्रार्थनादि

अनुवादक—श्री सुखदेवराज शास्त्री विद्यावाचस्पति, श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जालन्धर

(14 अप्रैल से आगे)

अणोरणीयान्महतो महीयानात्माऽस्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् ।
तमक्रतु पश्यति वीतशोको धातु: प्रसादान्महिमानमात्मन: ।43।

वह प्रभु सूक्ष्म से भी सूक्ष्म, महान् से भी महान् तथा सब प्राणियों की अन्तरात्मा में व्याप्त है। उस कर्म रहित, ज्ञानमय अनन्त महिमाशील परमेश्वर का दर्शन शोक मुक्त जन उस परमात्मा की ही कृपा से किया करते हैं।

न तस्य कार्यं करणञ्च विद्यते न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते ।
पराऽस्य शक्ति र्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च ॥44॥

उस परमेश्वर का न तो कार्य ही और न कार्य साधन ही है, न कोई उसके समान सामर्थ्य वाला है और न ही अधिक सामर्थ्य वाला। स्वाभाविक ज्ञान-बल-क्रिया वाली इसकी विविध रूपा परा शक्ति सुनने में आती है अर्थात् उस सर्वत: सिद्ध परमेश्वर की शक्ति परम आश्चर्य वाली तथा उसका ज्ञान बल तथा क्रियारूप गुण स्वाभाविक है।

न तस्य कश्चित्पतिरस्ति लोके न चे शित: नैव च तस्य लिङ्गम् ।
स कारणं करणाधिपाधिपो न चास्य कश्चिज्जनिता न चा धिप: ॥45॥

इस ब्रह्माण्ड में उस भगवान् का कोई रक्षक नहीं (अपितु वह सबका रक्षक है) न ही उसका कोई शासक है (अपितु वही सब पर शासन करता है) उसका कोई लिङ्ग या चिन्ह भी नहीं है (अपितु वही सब जड़ चेतन को लिङ्गवान् बनाता है) इस अजन्मा को न तो कोई जन्म देने वाला है और न ही कोई इसका स्वामी है (अपितु वह परमेश्वर ही करणाधिपाधिप:) इन्द्रियों के स्वामी जीवों का स्वामी तथा सम्पूर्ण जगत् का कारणभूत है।

न तत्र सूर्योभाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्नि: ।
तमेव भान्तमनुभाति सर्व तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ।46।

उस अनन्त प्रकाश वाले प्रभु में न तो ये सूर्य, चन्द्र, तारे ही प्रकाशित होते हैं, न विद्युत ही अपना प्रभाव दिखा पाती है पुन: इस अग्नि का तो सामर्थ्य ही क्या है। अपितु उस परमेश्वर के प्रकाशित होने पर ही यह प्रकाशमय दीखने वाला जगत् उसी के प्रकाश से (न कि अपने प्रकाश से) प्रकाशित होता है।

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन ।
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम् ॥48॥

यह परब्रह्म न तो प्रवचन—विविध शास्त्रों के पाठ मात्र से ही प्राप्य है, न ही इसे विपुल तर्क वितर्क समर्थ मेधा बुद्धि से ही पाया जा सकता है, अपितु वह परमेश्वर ही जिस वरेण्य का एतदर्थ वरण कर लेता है। अर्थात् जिस पर उसकी अनुकम्पा हो जाती है। उसी के द्वारा वह ब्रह्म पाया जाता है तथा वह ब्रह्म भी अपने विराट् तथा रहस्यमय स्वरूप को उस भक्त पर ही प्रकट करता है।

न संदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम् ।
हृदा हृदिस्थं मनसा य एनमेवं विदुरमृतास्ते भवन्ति ॥48॥

इस ब्रह्म के समक्ष कोई रूप नहीं ठहरता क्योंकि स्वयं उसका कोई रूप नहीं इन भौतिक आंखों से भी उसका साक्षात् नहीं होता। हृदय में स्थित उस उपर्युक्त ब्रह्म को जो मन तथा हृदय से जान लेते हैं वे निश्चय ही अमृतत्व को प्राप्त हो जाते हैं।

भू: पादौ यस्य खञ्चोदरमसुरनिलश्चन्द्र सूर्यो च,
नेत्र कर्णावाश शिरोद्यौर्मुखमपि दहनो यस्य वास्तव्यमब्धि: ।
अन्तस्थं यस्य विश्वं सुरनरखगगोभोगिगन्धर्वदैत्यैश्चित्रं,
ररम्यते तन्त्रिभुवनवपुषं विष्णुमीशं नमामि ॥49॥

जिस परमात्मा के पृथ्वी चरण हैं और आकाश उदर है, वायु प्राण हैं और चन्द्र व सूर्य नेत्र हैं, दिशायें कान हैं, अन्तरिक्ष सिर है, अग्नि मुख है और समुद्र जिसका निवास स्थान है, जिसके अन्दर देवता मनुष्य-पक्षी-गऊयें-सर्प-गन्धर्व और दैत्यों के साथ सम्पूर्ण विश्व आश्चर्य पूर्वक रमण कर रहा है उस तीनों भुवनों रूपी शरीर वाले सर्वव्यापक परमेश्वर को मैं नमस्कार करता हूं।

ओ३म् सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥50॥

हे सर्वशक्तिमन्! ईश्वर आप की कृपा रक्षा और सहाय से हम लोग परस्पर एक दूसरे की रक्षा करें और हम सब लोग परम प्रीति से मिल के सब से उत्तम ऐश्वर्य अर्थात् चक्रवर्ति राज्य आदि सामग्री से आनन्द को आप के अनुग्रह से सदा भोगें, हे कृपानिधे आप के सहाय से हम लोग एक दूसरे के सामर्थ्य को पुरुषार्थ से सदा बढ़ाते रहें, और हे प्रकाशमय सब विद्या के देने वाले परमेश्वर आप के सामर्थ्य से ही हम लोगों का पढ़ा और पढ़ाया सब संसार में प्रकाश को प्राप्त हो और हमारी विद्या सदा बढ़ती रहे। हे प्रीति के उत्पादक आप ऐसी कृपा कीजिए कि जिससे हम लोग परस्पर विरोध कभी न करें किन्तु एक दूसरे के मित्र होकर सदा वर्तें।

पूर्णमद: पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥51॥

वह ब्रह्म पूर्ण है यह जगत् भी पूर्ण है। पूर्ण ब्रह्म से पूर्ण प्रकट होता है। पूर्ण की पूर्णता को लेने पर पूर्ण ही शेष रहता है।

श्री रामलुभाया नन्दा का सराहनीय कार्य

कुछ दिन हुए सभा महामन्त्री के नाते मुझे आर्य समाज शास्त्री नगर (बस्ती मिट्ठू) जालन्धर में जाने का अवसर मिला। वहां जो आर्य समाज मन्दिर तीन वर्ष पूर्व श्री रामलुभायानन्दा जी के अनथक परिश्रम के परिणाम स्वरूप निर्माण हुआ था वह देखकर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। नगर से इतनी दूर इस छोटी-सी बस्ती में समाज की स्थापना करके उसका मन्दिर निर्माण कराना श्री नन्दा जी का एक सराहनीय पग है। लोक हित के कार्यों मे उनकी रुचि इस बात से स्पष्ट प्रकट होती है कि वहां उन्होने महिलाओं के लिए एक नि:शुल्क सिलाई शिक्षा केन्द्र खोल दिया है। जो महिलाओं के लिए बड़ा उपयोगी सिद्ध हो रहा है। इस सिलाई शिक्षा केन्द्र से लगभग 100 (एक सौ) महिलाए सिलाई सीख कर निर्वाह कर रही हैं। 16 को मुफ्त सिलाई मशीनें दी गई तथा वर्तमान में 60 महिलाएं सिलाई सीख रही है। अब वे समाज के प्रबन्धान्तर्गत पांच बैडों का एक चिकित्सालय जारी करने के आयोजन में लगे हैं। विवाह आदि के अवसर पर जनता की आवश्यक सेवाओं में श्रद्धापूर्वक सहायता करते हैं और आर्य समाज का यश बढ़ाते हैं। आर्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि वे अपने-अपने स्थान पर श्री नन्दा जी की कर्मठता का अनुकरण करके आर्य समाज के प्रति लोगों को आकर्षित करके समाज के सदस्य- सभासद् बनाने का उपयोगी कार्य कर सकते हैं।

—कमला आर्या
महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

गंगा पुकार रही है—मुझे बचा लो

ले.—श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

—गंगा मर रही है।

—वह गंगा जिसे इस देश के लोग गंगा मैया के नाम से याद करते हैं।

—वह गंगा जो पतित पावनी कही जाती है।

—वह गंगा जिसके साथ हमारा हजारों वर्षों का इतिहास जुड़ा हुआ है।

—वह गंगा जिसमें एक डुबकी लेने से कुछ लोग समझते हैं कि उनके सारे पाप धुल गए हैं।

—वह गंगा जिसका जल एक मरते हुए व्यक्ति के मुंह मे डाल दिया जाए तो कुछ लोग समझते हैं कि मरने वाला सीधा स्वर्ग को जाता है।

—वह गंगा जिसके सन्दर्भ में कहा जाता है कि वह भगवान् शिव की जटाओं निकली है।

—वह गंगा मर रही है।

—गंगा का जीवन इसकी पवित्रता है। जिस दिन वह समाप्त हो जाएगी उस दिन गंगा का नामो-निशान मिट जाएगा और यह इस देश की अन्य नदियों की तरह एक नदी बन जाएगी। वह दिन हमारे लिए एक अत्यन्त अशुभ दिन होगा जिस दिन गंगा, गंगा न रहेगी।

—वह दिन अब आ रहा है। उसे रोकने के लिए भारत सरकार ने इस वर्ष 30 करोड़ रुपया खर्च करने का फैसला किया है।

हमारी स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को यह ख्याल आया था कि गंगा की पवित्रता समाप्त हो रही है इसके तट पर जितने नगर बसे हैं उन सबकी गन्दगी गंगा में फैंकी जाती है। यही पानी लोग डिब्बों में भर कर अपने घरों को ले जाते हैं। और पीते हैं। क्या इसे रोका नहीं जा सकता। उन्होंने अपने कुछ अधिकारियों को बुलाकर उनसे सलाह मशवरा किया था कि किस प्रकार गंगा की पवित्रता को सुरक्षित रखा जा सकता है। वह अपने विचारों को मूर्त रूप न दे सकीं। दो हत्यारों के पाश्विक कुकृत्य ने इन्दिराजीको हम से छीन लिया।

—जो कुछ माँ न कर सकी थी, वह अब बेटा करने का प्रयास कर रहा है। भारत सरकार के इस वर्ष के बजट में 32 करोड़ रुपया केवल इस कार्य के लिए रखा है कि गंगा के किनारे जो शहर बसे हुए हैं उनकी जो गन्दगी गंगा में फैंकी जाती है उसे कैसे रोका जा सकता है।

—राजीव ने गंगा के प्रति यह श्रद्धा अपनी मां से प्राप्त की और मां ने अपने पिता से। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी वसीयत में गंगा का उल्लेख इन शब्दों में किया—

—मेरी यह इच्छा कि मेरी कुछ अस्थियां गंगा में फैंकी जाएं कोई धार्मिक महत्व नहीं रखती। इस प्रसंग में मेरी कोई धार्मिक भावनाएं नहीं है। मेरा बचपन से ही गंगा और यमुना के साथ लगाव रहा है। ज्यों-ज्यों मैं बड़ा होता गया, वह लगाव भी बढ़ता गया। मैंने बदलते हुए मौसम के साथ उनकी उछलती लहरों को देखा है। कई बार इस इतिहास की परम्पराओं को और उन कहानियों को याद किया है जो इन दोनों नदियों के साथ सम्बद्ध रही हैं। मैंने वह गीत भी सुने हैं जो उनकी उछलती और कूदती लहरों के साथ लोग गाते रहे हैं। इनके साथ हमारा प्राचीन इतिहास सम्बद्ध है। गंगा भारत की गंगा, इस देश की नदी। भारत की जनता इसे प्यार करती है। इसकी पूजा करती है। इसके साथ इस देश की जनता की आशाएं और आकांक्षाएं जुड़ी हुई हैं। यह उनकी सफलता और विफलता का मुंह बोलता इतिहास है। यह भारत की प्राचीन संस्कृति की एक निशानी है। जो कभी मुर्झाती नहीं। सदैव एक नवजीवन की निशानी बनी रही है।

गंगा को देखकर मुझे हिमाचल पर्वत शिखिर याद आते हैं। यह सदैव मेरे लिए आकर्षण का कारण रहे हैं। मुझे वह मैदान भी याद आ जाते है जिन से यह गंगा गुजरती है। और जहां मुझे कुछ काम करने का कभी-कभी अवसर मिलता है। प्रातः यह नाचती कूदती दिखाई देती है शाम को मौन, शान्त। वर्षा ऋतु में इसकी उछलती-कूदती लहरें एक तीव्र गति से दौड़ती हैं, सर्दियों में यह सुकड़ जाती है। इसमें वही शक्ति है जो सागर में है। यह चाहे तो विनाश भी कर सकती है।

'गंगा मेरे लिए भारत के शानदार अतीत की निशानी रही है। अतीत से वर्तमान और वर्तमान से भविष्य। इस प्रकार यह चलती रही है और चलती रहेगी। यद्यपि मैंने बहुत सी प्राचीन परम्पराओं और रसम-रिवाजों को छोड़ दिया है और मैं चाहता हूं कि इस देश की जनता भी उन सब पुरानी जंजीरों को तोड़ दें जो उसके विकास को रोकें, फिर भी मैं अपने अतीत को पूरी तरह भूल नहीं सकता। मुझे अपनी प्राचीन संस्कृति और परम्पराओं पर गौरव है। मैं यह भी अनुभव करता हूं कि मैं भी इस लम्बी शृंखला की एक कड़ी हूं जो सृष्टि के आरम्भ से शुरू हुई और अब तक चल रही है। इस जंजीर को इस क्रम को और इस संस्कृति को मैं कभी भंग नहीं करूंगा। मुझे इस पर गर्व है और मुझे इससे प्रेरणा मिलती है। मैं चाहता हूं कि मेरी इस इच्छा को मेरे बाद पूरा कर दिया जाए। इसलिए यह प्रार्थना कर रहा हूं कि मेरी थोड़ी-सी राख इलाहाबाद के निकट गंगा में डाल दी जाए। ताकि यह उस सागर तक पहुंच जाए जो मेरे भारत के तट को आकर चूमता है।"

किस प्रकार सुन्दर शब्द हैं यह। कितनी उच्च भावनाएं हैं यह। पण्डित जवाहरलाल बारे कहा जाता था कि वह अंग्रेजी भाषा के धनी थे। वह बहुत अच्छा बोलते थे, बहुत अच्छा लिखते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि गंगा की स्तुति में उन्होंने अपनी कलम तोड़ दी थी। यह सब कुछ वही व्यक्ति लिख सकता है जिसे गंगा के प्रति अगाध श्रद्धा हो।

किन्तु गंगा का उल्लेख तो इकबाल को भी करना पड़ा था। इसीलिए उसने लिखा था—

ऐ आबे रूदे गंगा वह दिन हैं याद तुझ को।
उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा।

और जवाहरलाल की तरह इकबाल को भी हिमालय याद आता था। उसे सम्बोधित करके उसने लिखा था—

ऐ हिमालय! दास्तां उस वक्त की कोई सुना।
मस्कने आबाए इन्सां जब बना दामन तेरा।
कुछ बता उस सीधी-सादी जिन्दगी का माजरा
दाग जिस पर गाजाए रंगे तकल्लुफ का न था।
हां दिखा दे ऐ तसव्वुर फिर वह सुबह शाम तूं।
दौड़ पीछे की तरफ ऐ गर्दिशे अय्याम तूं।

(क्रमशः)

गुरुकुल काँगड़ी के उत्सव का सराहनीय प्रबन्ध

गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी गुरुकुल कांगड़ी का उत्सव वैशाखी के शुभ अवसर पर बड़े समारोह से सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में नवांशहर से तीन, बंगा से एक जालन्धर से एक मैटाडोर और पंजाब के दूसरे स्थानों लुधियाना आदि से लगभग 200 व्यक्ति गुरुकुल पहुंचे। इसी प्रकार दिल्ली से एक बस और हरियाणा से काफी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

यज्ञ के ब्रह्मा प्रसिद्ध विद्वान् पं. श्यामसुन्दर जी स्नातक थे। यजमान श्री वेद प्रकाश जी सरीन, श्री धर्म प्रकाश जी दत्त नवांशहर, गुरुकुल के प्रोफेसर सैगर तथा अरोड़ा जी, जालन्धर के श्री हरवंशलाल जी शर्मा सपत्नीक बने। यज्ञ के प्रसाद का वितरण श्री हरवंशलाल जी शर्मा की ओर से किया गया। इस अवसर पर उनकी धर्म पत्नी ने गरीबों में वस्त्र भी बांटे और गुरुकुल में वृक्ष लगाने के लिए धन भी दिया।

भोजन की व्यवस्था पंजाब के आर्य बन्धुओं की ओर से की गई थी जो बहुत सुन्दर थी, इसका प्रबन्ध श्री वेद प्रकाश जी सरीन, कैप्टन देसराज और मुख्याधिष्ठाता के सहयोग से सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के निर्देशानुसार कर रहे थे। 14 टीन देसी घी के लगे, भोजन में शुद्ध देसी घी का ही प्रयोग किया गया, भोजन की सभी लोगों ने सराहना की। 14 अप्रैल को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। दीक्षान्त भाषण श्री पं. सत्यदेव जी भारद्वाज वेदालंकार का हुआ।

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी जिस प्रकार इस उत्सव को सफल बनाने में और गुरुकुल को उन्नत करने में दिलचस्पी ले रहे हैं उसे देखकर लगता है कि आगामी वर्ष में यह उत्सव इससे भी अधिक धूमधाम से होगा और हजारों लोग वहां पहले की तरह पहुंचने लग जाएंगे।

—सम्पादकीय

मांस खाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

ले.—श्री वी. एस. वेदी डी-32 कीर्ति नगर नई दिल्ली

आज कल सारे संसार में मांस भक्षण का प्रचलन बढ़ रहा है जो बड़े शोक की बात है बहुत कम लोगों को पता है कि प्रकृति ने हमें शाकाहारी बनाया है न कि मांसाहारी संसार में डाक्टर लोग भी मांस भक्षण को बढ़ावा दे रहे हैं। प्रकृति द्वारा जो मनुष्य की रचना की गई है उससे सिद्ध होता है कि मनुष्य मांसाहारी नहीं वह शाकाहारी है।

1, मांसाहारी जीवों के दांत नुकीले होते हैं और पैरों में नख-नाखुन होते हैं ताकि वह मांस को चीर सकें परन्तु शाकाहारियों के दांत चपटे होते हैं ताकि वह खुराक को पीस सकें।

2. मांसाहारियों की आंतें छोटी होती हैं और शाकाहारियों की लम्बी।

3, मांसाहारी जीव चाट कर पानी पीते है परन्तु शाकाहारी खींच कर।

4. मांसाहारी जीव गहरी नींद नहीं सो सकते परन्तु शाकाहारी गहरी नींद सोते हैं।

5, शाकाहारी जीव बैठकर या झुक कर मूत्र त्याग करते हैं परन्तु मांसाहारी जीव खड़े होकर ही।

6. मांस मनुष्य का स्वाभाविक भोजन नहीं है यदि वह स्वभाव से मांस भक्षी होता तो उसके शरीर की रचना मांसाहारी जीवों की सदृश होती। वह भी कुत्ते, बिल्ली, शेर इत्यादि की तरह जीभ से पानी पीता, इन तथ्यों से सिद्ध हो गया कि प्रकृति ने मनुष्य को मांसाहारी नहीं बनाया, शाकाहारी बनाया है।

जीव हत्या से आनन्द के अवसरों को कलुषित करना अधर्म है

विवाह; जन्म दिन तथा अन्य खुशियों के समय पर जो व्यक्ति मांस की दावतें देते हैं उनकी तुलना उन व्यक्तियों के साथ की जाती है जो किसी के घर में आग लगाकर आग तापते हैं खुशी के समय पर पशु-पक्षियों का हनन करना अधर्म है।

मांस के विरुद्ध डाक्टरों की सम्मतियां

मांस भक्षण का आचार विचार पर तो दुष्प्रभाव पड़ता ही है मनुष्य के स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है दोषयुक्त मांस खाने से कई प्रकार के रोग शरीर में पैदा होते हैं मांस जल्दी नहीं पचता और नाना प्रकार के रोग शरीर में पैदा करता है अधिक मांस खाने से कब्ज, गठिया, फिट आदि के रोग पैदा हो जाते हैं। मांस खाने से दांतों की सफेदी खराब हो जाती है और कई दांतों के रोग पैदा हो जाते हैं। आज भी विज्ञान के युग में उच्चकोटि के डाक्टर मांस भक्षण के विरुद्ध अपना मत देने लग गए हैं संक्षेप में मांस भक्षण से इतनी हानियां हैं।

1. मांस भक्षण अनावश्यक अस्वाभाविक तथा अहितकर है।

2, यह अन्न से कम पुष्टिकर है।

3. यह आयु को घटाने वाला है।

4. यह आलस्य भारीपन तथा प्रात: काल शारीरिक श्रम में अरुचि उत्पन्न करता है।

मांस खाने से शराब पीने की बुरी और विनाशकारी आदत को प्रोत्साहन मिलता है जिससे देश के लोगो का जीवन आवश्यक रूप से खर्चीला हो जाता है।

अण्डे में विष

लोग मुर्गी के अण्डे को शाकाहार कहकर हड़पने लगे हैं सब जानते हैं कि मुर्गी पक्षी है, जीव है। विदेशी डाक्टरों का विचार है कि अण्डे में थोड़ी प्रोटीन है परन्तु इससे अधिक सोयाबीन है डाक्टरों का कहना है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

यदि बढ़िया अण्डे भी मिलें तो भी उनके बिना ही हम अधिक स्वस्थ रहेंगे क्योंकि अण्डो में को लेस्ट्रोल की मात्रा अधिक होती है।

5. जिसके कारण अण्डों से दिल की बिमारी हाई रक्तचाप गुर्दों की बिमारी पित्त की थैली में पथरी आदि के रोग पैदा होते हैं फल, सब्जियों और वनस्पतियों में तेलों में कोलेस्ट्रोल की मात्रा नहीं होती।

एक अण्डे में 4 ग्रेन कोलस्ट्रोल होता है और जब अण्डे खाए जाते हैं तो खून में कोलेस्ट्रोल की मात्रा बढ़ जाती है जिसके कारण पिताशय में पथरी और दूसरी बीमारीयां पैदा हो जाती हैं।

अण्डे की सफेदी अण्डे का खतरनाक भाग है अण्डे की सफेदी में एवींडन नामक जैसा तत्व होता है जो एगजीमा का कारण बनता है।

इन चीजों से सिद्ध हो गया कि मांस, अण्डा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

—

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जिला जालन्धर (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थायी मान्यता प्राप्त) में नये छात्रों का प्रवेश 18 जून 1985 से आरम्भ है। सरकारी स्कूलों में पढाए जाने वाले गणित अंग्रेजी आदि सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है।

नि:शुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम, योग्य एवं परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, भोजन, दूध आवास की मात्र 30 रुपये मासिक पर, समुचित व्यवस्था इस गुरुकुल की अपनी विशेषताएं हैं। प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा 5 पास होना जरूरी है।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिलें अथवा पत्राचार करें।

—नरेशकुमार, आचार्य गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जिला जालन्धर।

दहेज रहित सामूहिक विवाह

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी 18 मई से 20 मई 1985 तक मेरठ शहर में मनाई जाएगी। इस अवसर पर बिना दहेज के वैदिक रीति के अनुसार सामूहिक विवाह भी सम्पन्न होंगे। अत: इच्छुक व्यक्ति वर व कन्या पक्ष वाले) शीघ्र ही पूर्ण विवरण सहित आर्य समाज बुढ़ाना गेट, मेरठ शहर से सम्पर्क करें।

नोट—श्री मन्त्री जी, कृपया अपनी आर्य समाज में तथा सभी सदस्यों को उक्त सूचना देकर इस पुनीत कार्य के लिए प्रेरित करें एवं तन-मन-धन से सहयोग करें।

—इन्द्रराज मन्त्री

—

कुपोषण के शिकार भारत के आधे बच्चे

राष्ट्रसंघ की एक संस्था 'यूनीसेफ' द्वारा हाल ही में प्रकाशित 100 पृष्ठो की एक पुस्तिका दुनिया के सामने भारत के बच्चो की जो तस्वीर पेश करती है, वह काफी चौकाने वाली है और हमारे शासको को कुछ सोचने के लिए मजबूर करती है। पुस्तिका मे जो अनेक आकडे प्रस्तुत किए गए हैं, उनमे से कुछ इस प्रकार है—

● कुपोषण के कारण प्रति वर्ष 40 000 के करीब बच्चे अन्धे हो जाते हैं।

+ अच्छा पोषण, सन्तोषजनक स्वास्थ्य सेवा और पढ़ने लिखने की सुविधाए भारत के 270 000 000 बच्चो मे से आधे से भी कम उपलब्ध हैं।

● बचपन मे ही मर जाने वाले बच्चो मे से आधे से भी अधिक 4 वर्ष तक की आयु मे मर जाते हैं। एक तिहाई पहले वर्ष मे ही चल बसते हैं, और एक महीने तक ही जीने वाले आधे से भी अधिक बच्चे पहले सप्ताह मे ही काल ग्रसित हो जाते हैं।

+ पहले वर्ष में मरने वाले बच्चे कुपोषण के अलावा, इन रोगो से भी मरते हैं—टिटेनस, न्यूमोनिया, पेचिश, अतिसार, मलेरिया तिल्ली, आदि। अकेले अतिसार रोग से ही प्रति वर्ष 15 लाख पाच वर्ष से कम आयु के बच्चे मर जाते हैं। इस बारे मे सबसे ज्यादा सोचनीय बात यह है कि अतिसार से मरने वाले 60 से 70 प्रतिशत बच्चो को आसानी से बचाया जा जा सकता है, 'रिहायड्रेशन साल्ट का एक किफायती पैकेट अतिसार से पीड़ित बच्च को आसानी से मरने से रोक सकता है।

× बच्चो के प्रति हमारा समाज इतना लापरवाह है कि आवारा, आवासरिम और सड़को पर घूमने वाले बच्चो की संख्या प्रति वर्ष बढ़ती जाती है। ये बच्चे बड़े होकर चोर, गिरहकट, स्मगलर, हत्यारे बनते हैं और बच्चिया वैश्याए। उनके पुनर्वास के लिए जो केन्द्र सरकार ने बनाए हैं उनकी दशा एक दम शोचनीय है।

अग्रेजी में एक कहावत है, बच्चा मानव का पिता होता है और प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी के कथनानुसार बच्चे ही हमारा भविष्य है। समाज का कर्त्तव्य है कि वह उनका भविष्य सुनहरा और उज्ज्वल बनाए। हम अपने दिल पर हाथ रखकर ईमानदारी से इस सवाल का जवाब खुद को दें कि एक नागरिक के रूप मे हम इस कर्त्तव्य का किस हद तक पालन कर रहे हैं।

(—बहल फैमिली ट्रस्ट की ओर से)
बिहारीलाल

—

ग्रीष्मावकाश में

आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

दिनाक 1 जून 85 से 23 जून 85 तक महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन जसवन्त कालेज के पास महर्षि दयानन्द मार्ग जोधपुर में वैदिक सस्कारो का विधिवत् प्रशिक्षण शिविर रखा है। षोडश् सस्कार निपुण पण्डित मण्डली नामकरण से अन्त्येष्टि पर्यन्त सस्कारो का प्रशिक्षण देंगे। प्रत्येक आर्य समाज के मन्त्री, पुरोहित एव आर्य बन्धुओ के लिए सस्कारो का प्रायोगिक ज्ञान जरूरी है। आजिविका के साथ-साथ वैदिक धर्म, सिद्धान्तो व सस्कारो का भी प्रचार होगा और आर्य पुरोहितो की जो कमी अनुभव की जा रही है उसकी शून्यता भी समाप्त होगी। प्रशिक्षणार्थियों के आवास और भोजन की समुचित व्यवस्था रहेगी। पच महायज्ञविधि, सस्कार विधि और आवश्यक साहित्य भी उपलब्ध रहेगा। कोई आयु सीमा नही। इच्छुक बन्धु 31 मई 85 तक निम्न पते पर 101 रुपए का मनीआडर भिजवा देवें। इस स्वर्ण अवसर का अवश्य लाभ उठावें। पत्र व्यवहार शीघ्र करें—

—श्री रतनलाल द्विवेदी एडवोकेट मन्त्री,
महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास,
जसवन्त कालेज के पास, महर्षि दयानन्द मार्ग,
जोधपुर (राजस्थान)

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन नं. 74250

(रजि. न. पो. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 5, 30 वैशाख सम्वत् 2042, तदनुसार 12 मई 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

एक परमेश्वर के अनेक नाम

ले.—श्री रामेश्वर जी शास्त्री सिद्धान्तालकार एम, ए,

इन्द्र मित्रं वरुणमग्निमाहुरथोदिव्य: स सुपर्णो गरुत्मान् ।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यम मातरिश्वानमाहु: ॥
ऋ, 1-194-49 ॥

(इन्द्रम् मित्रम् वरुणम् अग्निम् आहु) उस परमेश्वर को इन्द्र मित्र वरुण और अग्नि कहा गया है (अथो स दिव्य: सुपर्ण गरुत्मान्) और निश्चय करके वह दिव्य सुपर्ण और गरुत्मान् है (एकम् सत विप्रा: बहुधा वदन्ति) एक होते हुए उसे ज्ञानीजन नाना प्रकार से पुकारते हैं (अग्निम् यमम् मातरिश्वानम् आहु) उसे अग्नियम और मातरिश्वा कहते हैं।

मन्त्र में कहा गया है कि परमेश्वर के एक होते हुए भी ज्ञानीजन उसे इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि. दिव्य, सुपर्ण, गरुत्मान् और मातरिश्वा आदि विविध नामो से पुकारते हैं।

परमेश्वर एक है, परन्तु उसमे अनन्त गुण कर्म एव सामर्थ्य का योग होने से उसे अनेक नामों मे पुकारा जाता है।

वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, धर्म शास्त्र आदि ग्रन्थों में परमेश्वर का अनेक नामो से वर्णन मिलता है। कहीं-कहीं परमेश्वर का वर्णन देव नाम से किया जाता है जैसे—'एको देव सर्वभूतेषु गूढ़' एक देव सारे भूतों में अन्तर्निहित है। देव शब्द का प्रयोग परमेश्वर के लिए होने से उसके नानात्व का सन्देह लोगों मे फैलने लगा, क्योकि वैदिक साहित्य मे तीन और तेतीस सख्याओ द्वारा अनेको स्थलों पर देवों का वर्णन आता है। पाश्चात्य विद्वानों ने देव शब्द का अनुवाद (गाड) किया और बहुवचन में (गाड्स्) किया। गाड शब्द का प्रयोग साधारणतया ईश्वर के लिए ही आता है, वेदों में बहुदेवों का वर्णन आने से और देव शब्द के यथार्थ अनुवाद न होने से पाश्चात्य लोगो में तथा उनका अनुकरण करने वालों मे वेद विषयक अनेक ईश्वर सम्बन्धी भ्रम बढ़ता ही गया। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज ने प्राचीन ऋषि-मुनियो के मन्तव्यानुसार देव शब्द के यथार्थ अर्थ को प्रकट कर वेदो के एकेश्वरवाद का समर्थन किया और जब वह पाश्चात्य विद्वान् मैक्समूलर आदि के सामने आया तो उनका दृष्टिकोण बदला और उन्होंने वेद मन्त्रो के अर्थ करते हुए जहा तहा एकेश्वरवाद का समर्थन किया।

देव शब्द 'दिवु' धातु से बना है जिसके दस अर्थ हैं 'दिवु क्रीडाविजगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु' क्रीडा, विजगीषा (विजय की इच्छा), व्यवहार, द्युति, स्तुति, मोद, मद स्वप्न कान्ति और गति, गति के ज्ञान गमन और प्राप्ति ये तीन अर्थ होते हैं। जिनमे ये अर्थ पाए जाए वे सब देव कहलाते हैं।

निरुक्तकार ने देव की निरुक्ति करते हुए लिखा है 'देवो दानाद्वा, दीपनाद्वा, द्योतनाद्वा, द्युस्थानो भवतीति वा' निरुक्त 7-15 देव देने से, प्रकाश करने से, द्योतन मे अर्थात् उपदेश आदि के द्वारा प्रकाश में लाने म और कोई द्युस्थान (प्रकाश का स्थान) होने से कहलाता है।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार विद्वासो हि देवा' विद्वानो को ही देव कहते हैं। कहीं कही उपनिषदादि मे पदार्थों का ज्ञान कराने के कारण इन्द्रियो के लिए भी देव शब्द का प्रयोग किया है। मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव' इत्यादि वचनो मे माता पिता आचार्य और अतिथि को भी देव कहा है।

इस प्रकार देव शब्द अनेक अर्थों मे प्रयुक्त हुआ है और उसके द्वारा केवल परमात्मा का ही ग्रहण न होकर अनेक पदार्थों का ग्रहण होता है। इसलिए हमें देव शब्द के अर्थ प्रकरण के अनुसार समझने चाहिए। 'विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव' एको देव सर्वभूतेषु गूढ' इत्यादि स्थलो मे देव शब्द का प्रयोग परमात्मा के लिए हुआ है। 'यस्मिन देवा विश्वे निषेदु' तस्मिञ्छ्रयन्ते य उ के च देवा:' इस प्रकार के स्थलो पर प्रयुक्त हुआ बहुवचनान्त देव शब्द दिव्य गुण युक्त पदार्थों के लिए ही है, अनेक ईश्वरों को प्रकट करने के लिए नहीं।

अथर्व वेद के निम्न मन्त्र में 33 देवो का उल्लेख आता है—

यस्य त्रयस्त्रिंशद्देवा अगे गात्रा विभेजिरे ।
तान्वै त्रयस्त्रिंशद्देवानेके ब्रह्मविदो विदु ।
अथर्व 10 4-27

जिसके अग मे शरीरावयवो के समान तैंतीस देव प्रकाशित हो रहे हैं निश्चय करके उन तैंतीस देवो को ब्रह्मवेत्ता जानते हैं।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वी महाराज ने अपनी 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पुस्तक मे इन 33 देवताओ का वर्णन सप्रमाण विस्तार से किया है। इस सम्बन्ध मे विशेष जानकारी के लिए उक्त पुस्तक का अवलोकन करना चाहिए। सक्षेप मे इनका विवरण यहा दिया जाता है।

कतमे ते त्रयस्त्रिंशदित्यष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्यास्त एकत्रिंशदिन्द्रश्चैव प्रजापतिश्चत्रयस्त्रिंशाविति ।

वे 33 देव कौन से है। 8 वसु, 11 रुद्र और 12 आदित्य ये सब मिलकर 31 हुए और इन्द्र तथा प्रजापति को मिलाकर कुल तैंतीस देव होते है।

अग्नि, पृथ्वी, वायु अन्तरिक्ष द्यौ चन्द्रमा और नक्षत्र ये 8 वसु कहलाते हैं क्योकि ये ही सब पदार्थों के बसने के स्थान हैं अर्थात् सब पदार्थ उनम ही निवास करते हैं।

प्राण अपान, व्यान, समान, उदान नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय ये दस प्राण और ग्यारहवा आत्मा मिलकर 11 रुद्र कहलाते हैं क्योकि ये मृत्यु के समय निकलते हुए मृतक के सम्बन्धियो को रुलाते हैं। इसलिए रोदन कराने से रुद्र कहलाते हैं।

सवत्सर के प्रसिद्ध चैत्रादि 12 मास ही आदित्य है। क्योंकि ये सबकी आयु का आदान करते हुए ही जाते हैं।

इन्द्र विद्युत को और प्रजापति को यज्ञ कहते हैं।

इस प्रकार ये सब मिलकर 33 देव होते हैं।

कतम एको देव इति स ब्रह्म त्यदित्याचक्षते।

एक देव कौन सा है वह ब्रह्म त्यद् कहा जाता है अर्थात् प्रसिद्ध ब्रह्म ही एक देव है।

देव शब्द के अनेक अर्थ होने से इस का प्रयोग अनेक पदार्थों के लिए होता है केवल ईश्वर के लिए नही। इसलिए वेदो मे अनेक देवो के वर्णन से हमे अनेक ईश्वर के भ्रम मे नहीं पड़ जाना चाहिए। ईश्वर एक है और उसके ही अनेक गुणो के योग से इन्द्र मित्र वरुण आदि अनेक नाम हैं। अनेक नामो के होने पर भी उसका अनेकत्व नहीं होता। जैसे लोक मे एक ही व्यक्ति को उसकी विविध विशेषताओ के कारण व्याख्याता लेखक, कवि, महाशय डाक्टर, नेता आदि अनेक नामो से पुकारते हैं वैसे ही ईश्वर को परमैश्वर्यवान् होने से इन्द्र सबसे स्नेह करने से मित्र सबसे श्रेष्ठ या वरणीय होने से वरुण ज्ञान स्वरूप एव पूजनीय होने से अग्नि प्रकाशको का प्रकाशक होने से दिव्य शोभन पालनादि कर्मों से सुपर्ण, अत्यन्त महान होने से गरुत्मान्, सबका नियामक होने स यम और वायु के समान बलवान होने से मातरिश्वा आदि अनेक नामो स पुकारते हैं।

ऋग्वेद क दशम मण्डल मे भी नाना प्रकार से उसके वर्णन का उल्लेख आता है।

सुपर्णं विप्रा कवयो वचोभिरेक सन्तं बहुधा कल्पयन्ति ।
ऋ. 10-114-5

ज्ञानी एव क्रान्तदर्शी पुरुष उस शोभन गुण कर्म करने वाले परमेश्वर के एक होते हुए भी उसका नाना प्रकार से वर्णन करते हैं।

मनु महाराज ने भी परम पुरुष परमेश्वर के जानने पर बल देते हुए उस के अनेक नामो का उल्लेख किया है।

गंगा पुकार रही है—मुझे बचा लो

ले.—श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

✲

(गतांक से आगे)

गंगा की महानता और इसकी जिन्दगी का रहस्य इसकी पवित्रता है । मैं तो इसमें विश्वास नहीं रखता कि केवल गंगा मे एक डुबकी लगाने से सारे पाप धुल जाते हैं, परन्तु हमारे देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो यह समझते हैं कि यदि गंगा में एक डुबकी लगा ली जाए तो उन्होंने जो भी अपराध किए हों वह सब धुल जाते हैं। ऐसे लोगों की संख्या लाखों नहीं करोड़ो है। इसकी तय में यह धारणा काम कर रही है कि यह हमारी सर्वाधिक पवित्र नदी है। यह गंगोतरी से शुरू होकर दो हजार पांच सौ 25 किलोमीटर यात्रा तय करके अन्त में समुद्र में जा मिलती है। कुछ लोग कहते हैं कि यह भगवान शिव की जटाओं से निकली थी। गंगोतरी मे यह जिस पहाड़ में से निकलनी शुरू होती है उसे भी गोमुख कहा जाता है। हम गाय की भी पूजा करते हैं। गगा जहां से निकलनी प्रारम्भ होती है यदि उसे हम गोमुख कहते है तो इससे भी अनुमान लगाया जा सकता है कि गंगा कितनी पवित्र समझी जाती है।

परन्तु अब इसकी यह पवित्रता समाप्त हो रही है, अपितु ऐसी परिस्थितियां भी उत्पन्न हो रही हैं कि सम्भवत: यह नदी सबसे अधिक गन्दी हो जाएगी। शायद यह ही कारण है कि हमारी स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने यह महसूस किया था कि गंगा की पवित्रता भंग हो रही है और अब भारत सरकार ने भी इसके लिए 30 करोड़ रुपया सुरक्षित कर दिया है। ज्यादा आश्चर्य और एक प्रकार से खेद भी इस बात का है कि जो लोग अपने आपको गंगा के बहुत बड़े भक्त कहते हैं उन्हें यह विचार नहीं आया कि गंगा की क्या दुर्दशा की जा रही है।

गंगा के किनारे हरिद्वार, प्रयाग और वाराणसी जैसे हिन्दुओं के कई तीर्थ स्थल भी हैं। वहां कई मन्दिर बने हुए हैं। वहां कई मठाधीश और मडलेश्वर तथा महामंडलेश्वर भी रहते हैं, अनेक साधु महात्मा रहते हैं। किसी ने आज तक गंगा के साथ किए जा रहे इस व्यवहार के विरुद्ध अपनी आवाज तक नही उठाई। यह लोग अपने मन्दिरों में केवल घड़ियाल बजाना ही जानते हैं, इससे अधिक कुछ नहीं। बड़ी-बड़ी सभाएं भी इनकी बनी हुई हैं वह भी नही बोलतीं कि यह क्या हो रहा है।

गंगा का फ़ासला लगभग 2525 किलोमीटर है। इसमें 6 सौ किलोमीटर ऐसा है जिसके किनारे बड़े-बड़े नगर अवस्थित हैं। हरिद्वार, कानपुर, कन्नौज, इलाहाबाद, वाराणसी, पटना और कलकत्ता। इनके अतिरिक्त छोटे बड़े सैकड़ों और भी शहर है। लगभग इन सब की सारी गन्दगी गंगा में जा गिरती है। यह क्रम हरिद्वार से शुरू होता है। इससे ऊपर का जो क्षेत्र है वह अभी तक सुरक्षित है परन्तु हरिद्वार में पहुंच कर गंगा इस गन्दगी का शिकार होनी प्रारम्भ हो जाती है जो इस नगर की नालियों के द्वारा गंगा में जाकर गिरती है। जिन लोगों ने हरिद्वार में हर की पौड़ी देखी है उन्होंने कभी वहां बड़ी-बड़ी मछलियां देखी होंगी। कई लोग उन्हें देखने के लिये ही वहां जाया करते थे। अब वह वहां से गायब हो गई है। वहां का पानी भी अब इतना गन्दा हो गया है कि मछलियां भी वह पानी पीने को तैयार नहीं हैं। परन्तु मनुष्य इसे पीते हैं और डिब्बों में भर-भर कर अपने घरों को ले जाते हैं।

गंगा के पानी को गन्दा करने के कई ढंग हैं। सबसे बड़ा तो यह कि बड़े-बड़े शहरों की गन्दगी नालियों के माध्यम से गंगा में जाती है। यह शहर को स्वच्छ रखने का सबसे सरल तरीका समझा जाता है। हम किन मूर्खों की दुनिया में रहते हैं इसका अनुमान इससे लगा सकते हैं कि जिस शहर की गंदगी गंगा में फैंकी जाती है उसमें रहने वाले कई लोग ऐसी गंगा में जाकर स्नान करते हैं और फिर यह समझते हैं कि उनके सभी पाप धुल गए हैं।

गंगा के किनारे जो बड़े-बड़े शहर हैं वहां कई बड़े-बड़े कारखाने लगे हुए हैं, उन कारखानों में जो तेल और कई प्रकार की अन्य दवाइयां प्रयोग होती हैं वह भी आखिर में गंगा में जाकर गिरती है।

वाराणसी और कुछ अन्य शहरों में कई मुर्दे जलाए नहीं जाते वह गंगा में बहा दिए जाते हैं। वह फूलकर गगा के ऊपर तैरने लगते हैं। फिर कई पक्षी अथवा अन्य जीव जन्तु उन्हें आकर नोचते हैं। कलकत्ता हमारे देश का सबसे बड़ा नगर है और यह गगा के किनारे आबाद है इसकी जनसंख्या अब एक करोड़ के लगभग होगी। इतने बड़े नगर की अधिकांश गन्दगी गंगा में आकर गिरती है। वहां बचाव केवल यह ही है कि थोड़ी दूर चलने के बाद गंगा बंगाल की खाड़ी से जाकर मिलती है परन्तु गंगा का तो सत्यानाश हो जाता है और इसकी जिस पवित्रता पर हम आज तक गर्व करते आ रहे हैं वह तो समाप्त हो जाता है। एक व्यक्ति ने गंगा की वर्तमान दुर्दशा को इन शब्दो में बयान किया है :—

"गरीब लोग इसके पानी में नहाकर अपनी सफाई करते हैं—भीतर की और बाहर की। जो अमीर हैं वह अपने कारखानो की सारी गन्दगी इसमें फैंकते हैं, और जिन्हें इसमें धार्मिक श्रद्धा है वह अपने मुर्दों के शव इसमें बहाते हैं।

1986 में हरिद्वार में कुंभ का पर्व होगा उस समय गगा की कितनी पवित्रता रह सकेगी इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं होना चाहिए। मुझे गंगा के सांस्कृतिक रूप में अधिक रुचि है और इसके धार्मिक रूप में मुझे कोई रुचि नहीं क्योंकि मैं यह नहीं मानता कि केवल गंगा में एक डुबकी लगाने से पाप धुल जाते हैं। वह तो प्रत्येक मनुष्य के अपने कर्मों से ही धुलते हैं परन्तु जिन लोगों की नजर में गंगा का कोई धार्मिक महत्व है उन्हें सोचना चाहिए कि गगा का क्या हश्र हो रहा है जिसे वह "पतित पावनी" कहते हैं वह आज स्वयं पतित हो रही है और इसकी पूजा करने वाले चुप बैठे हैं यह स्थितिका अत्यन्त दुखद पक्ष है।

हरिद्वार में राष्ट्र निर्माण सम्मेलन

हरिद्वार—विगत मास गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिक समारोह के अवसर पर राष्ट्र निर्माण सम्मेलन का आयोजन किया गया था। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री सोमनाथ जी मरवाह सुप्रीम कोर्ट के एडवोकेट ने की। उद्घाटन भाषण आचार्य भगवानदेव जी पूर्व सांसद ने देते हुए कहा कि हम राष्ट्र निर्माण तभी कर सकते हैं जबकि भारतीय संस्कृति की रक्षा करने का व्रत लें। एक-एक व्यक्ति के निर्माण से राष्ट्र का निर्माण सम्भव है।

इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री वीरेन्द्र, कुलाधिपति एवं प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपने ओजस्वी भाषण में पंजाब की समस्या का विस्तार पूर्वक वर्णन करते हुए बतलाया कि पंजाब के हिन्दू प्रत्येक दिन मौत के दिन गिन रहे हैं, फिर भी हम पंजाब को किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ेंगे। चाहे सभी हिन्दू बलिदान क्यों न हो जाएं।

इस सम्मेलन में प्रो. वेद प्रकाश जी शास्त्री ने निम्नलिखित प्रस्तावों को रखा—

1. राष्ट्र की अखण्डता को सुरक्षित रखने के लिए जातिवाद, धर्मवाद एवं भाषावाद के नाम पर उत्तेजना फैलाने वालों को कठोर दण्ड देना चाहिए।

2. राष्ट्र की सुरक्षा वैदिक उदात्त मान्यताओं के अनुसार ही सम्भव है।

इस अवसर पर मान्य कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी हूजा ने अपने सारगर्भित भाषण मे कहा कि राष्ट्र का निर्माण शिक्षा से ही सम्भव है। आपने प्रस्ताव रखते हुए कहा कि—

1. हम सभी भारतीयों को देश के प्रत्येक भाग में आने-जाने, भूमि क्रय करने का अधिकार होना चाहिए।

2. राष्ट्र निर्माण में संस्कृत की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। सभी प्रान्तीय सरकारों से यह गोष्ठी निवेदन करती हैं कि संस्कृत भाषा के उत्थान को सर्वाधिक महत्व दें।

उपर्युक्त इन सभी प्रस्तावों को सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

इस सम्मेलन के संयोजक डा. जयदेव वेदालंकार जी अध्यक्ष दर्शन विभाग ने अपने व्याख्यान में कहा कि जो जाति व देश, संगठन की तथा बलिदान की भावना नहीं रखते उनकी रक्षा नहीं हो सकती है, वे नष्ट हो जाते हैं। हमें राष्ट्र की रक्षा हेतु तन-मन और धन के बलिदान हेतु सदैव तत्पर रहना चाहिए।

—डा. जयदेव वेदालंकार
संयोजक राष्ट्र निर्माण सम्मेलन

आर्य समाज तिलकनगर दिल्ली का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज तिलकनगर नई दिल्लीका वार्षिकोत्सव 5 मई 85 से 12 मई 85 तक सोत्साह मनाया जा रहा है। जिसमे प. चूनीलाल जी के भजनोपदेश तथा श्री यशपाल जी का वेद प्रवचन सायं 8से10 बजे तक चलेगा। 12 मई के समापन समारोह में (प्रात: 7-30 12-30 तक) श्री रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा श्री सूर्यदेव जी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा धर्मपाल जी एव डा. धर्मपाल जी पधार रहे हैं। आप सादर आमन्त्रित है। —जगदीश नागपाल मन्त्री

सम्पादकीय—

हमारी नई शिक्षा प्रणाली क्या हो—3

इस विषय पर मैंने पिछले दो लेखों में यह विचार प्रस्तुत किये थे कि अब जब कि भारत सरकार एक नई शिक्षा प्रणाली बनाने पर विचार कर रही है आर्य समाज को भी इस दिशा में कुछ न कुछ अवश्य करना चाहिए और अपना दृष्टिकोण सरकार के सामने रखना चाहिए। यह मैं इस लिए कहता हूं कि आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जिसने सबसे पहले बच्चों की शिक्षा के विषय में सरकार से कुछ भिन्न मार्ग अपनाया था। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल के द्वारा और श्री महात्मा हंसराज जी ने डी. ए. वी. कालेज के द्वारा शिक्षा को एक नया रूप देने का प्रयास किया था। विशेषकर जो कुछ श्री स्वामी श्रद्धानन्द महाराज ने किया उसकी सराहना देश और विदेश के शिक्षा विशेषज्ञों ने भी की थी। अंग्रेज सरकार बहुत देर तक यह समझती रही कि यह एक ऐसी संस्था है जहां षड्यन्त्रकारी युवक तैयार किए जाते हैं। इसी भ्रान्ति के कारण भारत के वायसराय और इंग्लैंड के प्रधानमन्त्री को इस संस्था को देखने के लिए वहां जाना पड़ा था। दूसरी तरफ महात्मा गान्धी और प. मदन मोहन मालवीय जैसे देश के कई बड़े-बड़े नेता वहां गए थे। यह केवल इस लिए कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से वह सब प्रभावित हुए थे और वह देखना चाहते थे कि उस समय की प्रचलित सरकारी शिक्षा प्रणाली से यह किस प्रकार भिन्न है। इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि गुरुकुल ने जिस प्रकार के योग्य और उच्चकोटि के स्नातक पैदा किए वह सरकारी शिक्षा संस्थाएं नहीं कर सकती।

इन परिस्थितियों में मैं यह आवश्यक समझता हूं कि आर्य समाज भी अपना दृष्टिकोण सरकार के सामने रखे। वह क्या हो इस पर पहले विचार होना चाहिए। यह काम केवल सार्वदेशिक सभा ही कर सकती है। उसे पहले तो आर्य समाजिक विचारों के शिक्षा विशेषज्ञों का एक सम्मेलन करना चाहिए। वह एक दिन का नहीं अपितु दो-चार-पांच दिन का होना चाहिए। जहां यह सब विद्वान् बैठ कर सोच सकें कि वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज शिक्षा प्रणाली को क्या रूप दे सकता है इसके पश्चात् सारे देश की आर्य समाज की शिक्षा संस्थाओं के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन किया जाए और जो प्रस्ताव शिक्षा विशेषज्ञों के सम्मेलन में पारित हो जाएं उनकी समपुष्टि के लिए उन्हें बड़े सम्मेलन में प्रस्तुत किया जाए और जब वहां स्वीकार हो जाएं तो यह भारत सरकार को पेश किए जाएं। उसका कोई और परिणाम निकले या न, यह तो अवश्य निकलेगा कि हमारे देश-वासियों को यह पता चल जाएगा कि आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो देश की समस्याओं पर विचार कर सकती है।

मैंने जो सुझाव दिया है इसे केवल सार्वदेशिक सभा ही क्रियान्वित कर सकती है क्योंकि उसके पास साधन भी हैं और प्रादेशिक सभाओं के साथ उसका सीधा सम्पर्क भी है। यदि वह अखिल भारतीय आर्य शिक्षा सम्मेलन करके देश की शिक्षा समस्या पर कोई निश्चित दृष्टिकोण बना सके और उसे अपने देश-वासियों के सामने रख सके तो यह देश की भी और समाज की भी बहुत बड़ी सेवा होगी। मैं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति होते हुए अपने अनुभव के आधार पर यह कह सकता हूं कि हम सब आज एक ऐसी किश्ती में सवार हैं जिसके विषय में हमें भी मालूम नहीं कि वह किधर जाएगी। हम उसके बीच में बैठे जरूर हैं। परन्तु उसकी दिशा का कुछ पता नहीं यह कोई सन्तोष जनक स्थिति नहीं। आर्य समाज की हजारों शिक्षा संस्थाएं हैं क्या यह हमारा कर्त्तव्य नहीं कि हम अपनी इन शिक्षा संस्थाओं को कोई निश्चित दिशा दिखाएं। इसलिए यह एक ऐसा विषय है जिस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। केवल सार्वदेशिक सभा ही आर्य जनता का मार्ग दर्शन कर सकती है परन्तु क्या वह करेगी?

—वीरेन्द्र

सभा के अधिकारियों की समस्यायें

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारी वर्ग को कई बार आर्य समाजें अपने यहां बुलाती रहती हैं। कई बार किसी उत्सव पर बुलाया जाता है और कई बार किसी दूसरे समारोह पर। अधिकारियों के लिए वहां जाना इसलिए भी आवश्यक होता है कि उनके जाने से आर्य बन्धुओं को और आर्य समाजों के अधिकारियों को प्रोत्साहन मिलता है। इसी के साथ अधिकारियों को उन समाजों की समस्याओं का भी पता चल जाता है। कुछ भी हो, सभा के अधिकारियों का आर्य समाजों के साथ सम्पर्क रखना आवश्यक है, परन्तु उसमें एक कठिनाई है जिसकी ओर मैं आर्य समाजों के अधिकारियों का ध्यान दिलाना चाहता हूं। देखा यह गया है कि कई आर्य समाजें सभा से अनुमति लिए बिना ही अपने वार्षिकोत्सवों की तिथियां निश्चित कर देती हैं फिर सभा के अधिकारियों से कहती हैं कि वहां पहुंचें। न पहुंचें तो शिकायत पैदा होती है। अधिकारियों की यह कठिनाई होती है कि कई बार उनका कार्यक्रम पहले निश्चित हुआ होता है। इस सम्बन्ध में सबसे अधिक कठिनाई मेरे लिए पैदा होती है। मुझे कई स्थानों पर जाना पड़ता है, कई बार पंजाब से बाहिर भी जाना पड़ता है। देहली और हरिद्वार तो कई बार जाना पड़ता है। जब मैं किसी आर्य समाज में किसी दूसरे उत्सव या समारोह पर नहीं पहुंचता तो उसके अधिकारी नाराज होते हैं। इस मुश्किल को दूर करने का एक ही उपाय है कि आर्य समाजों के अधिकारी अपने उत्सव की तिथियां निश्चित करने से पहले सभा से अनुमति ले लिया करें, ताकि उसके अधिकारियों को पता हो कि किस आर्य समाज का उत्सव कब है और कहां उन्होंने जाना है। इस प्रकार आपस की भ्रान्ति पैदा नहीं हो सकती और सारा कार्यक्रम सुचारू रूप से चल सकता है।

इस सन्दर्भ में एक और बात भी कहना चाहता हूं कि जब कोई आर्य समाज सभा के किसी अधिकारी को बुलाए, विशेषकर प्रधान या महामन्त्री को बुलाएं तो उन्हें खाली हाथ वापिस नहीं भेजना चाहिए। वरिष्ठ अधिकारी अपना बहुत मूल्यवान् समय निकाल कर आर्य समाज के उत्सव पर जाते हैं, इस आशा के साथ कि उन्हें सभा के लिए वहां से कुछ राशि मिलेगी। कई स्थानों पर तो कुछ न कुछ मिल जाता है परन्तु कुछ आर्य समाजें कुछ भी नहीं देती। यह स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को इस समय धन की बहुत आवश्यकता है। विशेषकर जबकि हम सभा का नया भवन बनवा रहे हैं। प्रत्येक आर्य समाज का यह कर्त्तव्य है कि इस यज्ञ में वह अपनी कुछ न कुछ आहुति अवश्य डालें। परन्तु देखा गया है कि बहुत कम आर्य समाजों ने इस ओर ध्यान दिया है। इसलिए मैं अपने विषय में एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मैं भविष्य में किसी भी ऐसी आर्य समाज के निमन्त्रण को स्वीकार नहीं करूंगा, जहां से सभा के लिए मुझे कुछ आर्थिक सहायता नहीं मिलेगी। यह तो हो सकता है कि एक आर्य समाज एक वर्ष में एक बार सभा की कुछ न कुछ आर्थिक सहायता कर दे। दूसरी बार वह न करे परन्तु वर्ष भर मे कोई आर्य समाज सभा को कुछ भी न दे और फिर यह आशा रखे कि सभा के अधिकारी उसके निमन्त्रण पर पहुंचें तो यह सम्भव न होगा। प्रत्येक आर्य समाजी को अपने कर्त्तव्य को समझना चाहिए। आर्य समाज एक बहुत बड़ा संगठन है यह केवल बातों से नहीं चल सकता। इसके लिए कुछ रचनात्मक कार्य करने की आवश्यक होती है। पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों में विशेषकर आर्य समाज को अपने कर्त्तव्य को समझते हुए अपनी सभा की अधिक से अधिक सहायता करनी चाहिए। सभा के पिछले वार्षिक अधिवेशन में प्रत्येक आर्य समाज के जिम्मे कुछ राशि लगाई गई थी जो उसने पूरे वर्ष में सभा को देनी है। कई आर्य समाजों ने अभी तक उस में से एक पैसा भी सभा को नहीं दिया। ऐसी आर्य समाजों के किसी भी निमन्त्रण को सभा के अधिकारियों के लिए स्वीकार करना कठिन हो जाएगा। इसलिए मेरी पंजाब के सब आर्य बन्धुओं से यह सविनय प्रार्थना है कि वह स्थिति की गम्भीरता को समझें और अपने कर्त्तव्य को पूरा करें, आर्य समाज किसी व्यक्ति विशेष की निजी सम्पत्ति नहीं है। यह सब आर्य समाजियों का एक संगठन है जिसे जीवित रखना हम सब का कर्त्तव्य है। आशा है मैं जो निवेदन कर रहा हूं उस पर आर्य समाजों के अधिकारी गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे।

—वीरेन्द्र

—श्री बलभद्र कुमार जी हूजा कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का

गुरुकुल काँगड़ी के दीक्षान्त समारोह पर स्वागत भाषण

(गतांक से आगे)

विश्वविद्यालयीय संकायों के विद्यार्थियों तथा प्रबुद्ध नागरिकों के ज्ञानवर्धन के लिए भारतीय विश्वविद्यालयों के लब्ध प्रतिष्ठत विद्वानों के व्याख्यानों परिचर्चाओ, कार्यशालाओं तथा सम्मेलनों का आयोजन भी विश्वविद्यालय परिसर में समय-समय पर होता रहा। वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्यशाला, मानव मूल्य और समाज में अन्त: सम्बन्ध विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, अमेरिकन अध्ययन के अखिल भारतीय सगठन का अधिवेशन, परीक्षा सुधार-कार्यशाला तथा दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला का आयोजन विश्वविद्यालय की शैक्षिक, गवेषणात्मक तथा प्रसार-कार्य की उपलब्धियां हैं। उत्तर क्षेत्रीय 40 के लगभग, विश्वविद्यालयों के खिलाड़ी दलों का बैडमिण्टन टूर्नामेंट जिस धूम-धाम से सम्पन्न हुआ, उसका उल्लेख करते हुए मुझे हर्ष होता है। गत जनवरी में अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ के तत्वावधान में विश्वविद्यालयों में अनुसूचित तथा जन-जातियो के आरक्षण के प्रश्न को लेकर उत्तर क्षेत्रीय कुलपतियों का दो दिवसीय सम्मेलन यहां हुआ। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता पद्मश्री डा, आर. एस. मिश्र कुलपति लखनऊ विश्वविद्यालय ने की तथा उद्घाटन भाषण भूतपूर्व गृहसचिव तथा वर्तमान महालेखा नियन्त्रक, भारत सरकार श्री टी, एन, चतुर्वेदी ने किया। अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ के संयुक्त सचिव श्री अंजनी कुमार ने प्रस्तावना भाषण किया। इस सम्मेलन में निश्चय किया गया कि आरक्षण नीति का पुनर्मूल्यांकन होना चाहिए। दस वर्ष तक आरक्षण की नीति का पालन वर्तमान पद्धति से ही किया जाए और फिर इसे समाप्त कर दिया जाए। इस अवसर पर यह बात विशेष रूप से उभर कर आई कि यदि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली स्वीकार कर ली जाए तो आरक्षण का प्रश्न ही नहीं उठेगा। इस प्रणाली में सबके लिए समान वस्त्र, भोजन तथा समान शिक्षा का प्रावधान है। जात-पात तथा स्तरगत विषमता के भेद से ऊपर उठकर समस्त जन को शिक्षा देने की जो बात महर्षि दयानन्द और श्रद्धानन्द ने की थी, उसे विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने तहेदिल से स्वीकार किया। इस सम्मेलन की सुचारू व्यवस्था के लिए जहां इसके संयोजक प्रो, ओम्प्रकाश मिश्र अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग बधाई के पात्र हैं वहां बी. एच. ई. एल. के महाप्रबन्धक श्री सी एम. गुप्त तथा जन-सम्पर्क अधिकारी श्री चन्द्रकान्त सरदाना विशेष रूप से धन्यवाद के अधिकारी हैं।

बन्धुओ!

आर्य समाज की उपलब्धियों और अपेक्षाओं से जन-सामान्य का परिचय कराने के लिए इस वर्ष हमने महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला का आयोजन भी किया गया। स्वामीजी के निर्वाण के सौ वर्षों के लम्बे समय में देश में कई उतार-चढ़ाव देखे और जिन विस्फोटक परिस्थितियों में आज देश खड़ा हुआ है, उनमें स्वामी जी की प्रासंगिकता बढ़ गई है। नव-जागरण के युग में उन्होंने राष्ट्रीय एकता, सामाजिक जाग्रति, भारतीय शिक्षा, सामाजिक न्याय, स्वदेशी और स्वभाषा का जो शंख फूंका, उसने समृद्ध, रूढिमुक्त तथा आत्म निर्भर राष्ट्र के निर्माण की अहम भूमिका अदा की। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने मनु आदि धर्म शास्त्रकारो का युगानुरूप नवीन भाष्य प्रस्तुत किया। दयानन्द की दयालु तथा अन्त:भेदिनी दृष्टि ह्रासोन्मुखी सामन्ती समाज, पिछड़ी हुई दलित जातियों तथा नारी परतन्त्रता की ओर भी गई। प्रचारक होने के नाते दयानन्द पत्रकारिता की सम्भावनाओं से भी पूर्णतया जागरूक थे। उत: उन्होंने हिन्दी पत्रकारिता के प्रारम्भिक युग में पत्रकारिता को टकसाली हिन्दी और नये विचारणीय विषय दिए। अजमेर में प्रैस स्थापित किया तथा मेरठ से आर्य समाचार, फर्रुखाबाद से भारत सुदशा प्रवर्तक शाहजहांपुर से आर्य दर्पण तथा राजस्थान समाचार जैसे पत्र उन्हीं की प्रेरणा से निकले। फिर तो आर्य समाज, और साप्ताहिक तथा दैनिक पत्रों के सम्पादन का एक युग ही खड़ा कर दिया। स्वामी जी के इस बहुआयामी व्यक्तित्व के उद्घाटन के लिए हमने दयानन्द पीठ पंजाब विश्वविद्यालय के आचार्य डा. भवानीलाल भारतीय, सुप्रसिद्ध मार्क्सवादी तथा गांधी वादी विचारक और भारतीय भाषा परिषद् कलकत्ता के निदेशक डा. प्रभाकर माचवे ट्रिब्यून के पूर्व सम्पादक श्री मदन-गोपाल तथा साहित्य अकादमी दिल्ली के पूर्व सचिव पद्मश्री पं. क्षेमचन्द्र सुमन के क्रमश: दयानन्द सरस्वती विचार समय की कसौटी पर, दयानन्द, गांधी और मार्क्स' दयानन्द और प्रेमचन्द तथा दयानन्द और हिन्दी पत्रकारिता' पर व्याख्यान कराए तथा उन्हें पुस्तकाकार प्रकाशित कर नि:शुल्क वितरित कराया। इससे नगर के सभी वर्गों के लोगों तथा साधु समाज के विभिन्न सम्प्रदाय के आचार्यों को दयानन्द के कार्यों की जानकारी मिली। इस व्याख्यान माला की सफलता के लिए इसके संयोजक डा. विष्णुदत्त राकेश, प्रोफेसर हिन्दी विभाग साधुवाद के पात्र हैं।

इसके अतिरिक्त जिन विद्वानों ने अभ्यागत आचार्य अथवा नियुक्ति और विशेष बैठकों के सिलसिले में यहां आकर हमारे आचार्यों और ब्रह्मचारियों का मार्ग दर्शन किया, उनमें जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के श्री राम राहुल, मगध विश्वविद्यालय के डा. उपेन्द्र ठाकुर रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डा, अनुजकुमार धान, बर्दवान के कुलपति,डा. रमारंजन मुखर्जी, काशी विद्यापीठ के पूर्व कुलपति डा. राजाराम शास्त्री, जगन्नाथपुरी विश्वविद्यालय के कुलपति डा. सत्यव्रत शास्त्री, गुजरात विद्या पीठ के कुलपति डा. रामलाल पारीख, कश्मीर विश्वविद्यालय के कुलपति डा, वहीद मलिक, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. हरवंशलाल शर्मा. उज्जैन के पूर्व कुलपति तथा उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के अध्यक्ष पद्मभूषण, डा. शिवमंगलसिंह सुमन, मदुरई के कुलपति डा. एम. आराम, हिमाचल विश्वविद्यालय के कुलपति डा. एस. पी. सिन्हा, राजस्थान विश्वविद्यालय के डा. दयाकृष्ण तथा दिनमान के सम्पादक और प्रसिद्ध साहित्यकार श्री कन्हैयालाल नन्दन के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

(क्रमश:)

आर्य युवक सभा लुधियाना की गतिविधियां

आर्य युवक सभा लुधियाना द्वारा 28-4-85 को श्री कुन्दनलाल जी शर्मा के निवास स्थान बी. 8-617 लक्कड़ बाजार पर पारिवारिक सत्संग किया गया श्री पं. रामकुमार जी का प्रभावशाली उपदेश हुआ। यजमान परिवार को महर्षि का चित्र तथा वैदिक साहित्य भेंट किया, गया। श्री महेन्द्रपाल आर्य (प्रधान) ने सभी का धन्यवाद किया।

2, श्री रोशनलाल जी शर्मा संयोजक युवक सभा ने युवको के संगठन को शक्तिशाली व सक्रिय बनाने के लिए समराला खन्ना का दौरा किया। दोनों स्थानों पर आर्य युवक सभाएं बनाई जा रही हैं।

3. युवक सभा ने एक भजन मण्डली बना ली है जो सभी सत्संग में भाग लेती है। इस सभा ने लुधियाना में प्रचार की गतिविधियां तेज कर दी हैं।

—अरुण भारद्वाज
महामन्त्री

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला

दयानन्द, गांधी और मार्क्स

व्याख्याता—श्री डा. प्रभाकर माचवे निदेशक भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता

मनीषी मार्क्स

(7 अप्रैल से आगे)

कार्ल मार्क्स का जन्म 5 मई 1818 को प्रशिया मे राइन प्रदेश के त्रियेर नगर मे हुआ। अब यह पश्चिम जर्मन मे है। उसके पिता हाइनरिख वकील थे, काट और वाल्तेयर की पुस्तको के प्रेमी प्रशिया मे सविधान बनाने के आन्दोलन म उन्होने भाग लिया। उसकी मा हेनरिट्टा प्रेसबग हालैड से थी और आजीवन एक अक्षर जर्मन का ठीक से बोल न सकी। कार्ल छह बरस का था तब उसका बाप्तिस्मा हुआ। वे यहूदी थे। त्रियेर हाई स्कूल मे कार्ल 1830 से 35 तक पढे। ग्रीक भाषा, रोमन पुराण, कलाओं का इतिहास उनके विषय थे। जब वे बौन यूनिवर्सिटी मे पढने गये, अन्य छात्रो की तरह वे ऊधमी थे उन्होने एक द्वन्द्व-युद्ध लडा, एक दिन की जेल भी उन्हे काटनी प डी, अधिक शराब पीकर अनुशासनहीनता के लिए। आजीवन उन्होने केवल एक दिन जेल मे काटा।

अक्तूबर 1836 मे मार्क्स बर्लिन चले गए, कानून और दर्शन के विद्यार्थी बने। यहा वे हेगेल के दर्शन के सम्पर्क मे आए। 'यग हेगेलियन्स' के सदस्य बने। ब्रूनो बाउएर के व्याख्यानो के वे मुरीद बने, जिसमे यह सिद्ध किया जाता था कि जीसस क्राइस्ट कोई सचमुच का ऐतिहासिक व्यक्ति नही था, केवल एक काल्पनिक पुरुष था। ब्रूनो को नास्तिकता का प्रचार करने के कारण नौकरी से हाथ धोना पडा एडाल्फ रूटेनबेर्ग नामक एक पत्रकार मार्क्स का मित्र बना। वह समाजवादी विचारो के कारण जेल भुगत चुका था। अप्रैल 1841 मे मार्क्स ने जेना विश्वविद्यालय मे 'दिमाक्रतस और एपीकूरस के दर्शनो मे अन्तर विषय पर 'डाक्टरल डेसर्टेशन' लिखा। उपाधि प्राप्त की। इसी समय लुडविग फ्वारबाख के पुस्तक 'दास वेस्सेन डेस क्रिस्टेनडुम' (1841, 'ईसाईयत का सार') से बहुत प्रभावित हुआ। कोलोन से निकलने वाले 'राईनीशे त्साइटुग' पत्रिका मे मार्क्स लेख लिखने लगे। फ्वारबाख के भौतिकवाद का हेगेल के द्वन्द्ववादी तर्क से समर्थन मार्क्स करने लगे। इस समय मार्क्स ने प्रेस की स्वतन्त्रता पर एक लेख लिखा। मार्क्स 1842 मे इस पत्रिका के सम्पादक बने। कई विषयों पर उन्होने सम्पादकीय लिखे प्रशिया की सरकार ने पत्रिका बन्द करवा दी, रूसी सरकार के दबाव मे, मार्क्स पैरिस चले गए फ्रेंच कम्युनिज्म का अध्ययन करने।

पच्चीस वर्ष की आयु मे मार्क्स का विवाह जेनीफावेस्टफालेन के साथ हुआ वह उनसे चार बरस बडी थी। वह फौजी और प्रशासनिक कुल से आती थी। जेनी के पिता फ्रेंच समाजवादी सन्त सिमा के अनुयायी थे और कार्ल को चाहते थे, 1844 में उसने अपनी पहली पुस्तक 'ओकोनोमीश फिलासाफिशे मानुस्क्रिप्टे हाउस हेम आहरे लिखी, हेगेलवादी अर्नाल्ड रूज के साथ वह प्रति वर्ष साम्यवादी चिन्तन प्रकाशित करने जा रहा था। इन लेखो में उसने अपना प्रसिद्ध वाक्य लिखा —'धर्म जनता की अफीम है'। फ्रास से निर्वासित होकर मार्क्स ब्रूसेल्स गया। बेल्जियम मे उसने अपनी प्रशिया की नागरिकता छोड दी। यहा साम्यवादी यहूदी धर्म प्रचारक (रबाई) मोजेस हेस्स के प्रभाव मे आया और हेगल के विरोध मे पुस्तक लिखी 'डी हाईलिगे फामिली' (पवित्र परिवार) इसके बाद 1845-46 म लिखी 'डी डायत्शईडियोलोजी'मे अपने भौतिकवादी विचारोकी इतिहास की आर्थिक सम्बन्धों से व्याख्या की नीव रखी। फ्रासीसी समाजवादी प्रूधो ने 'दरिद्रता का दर्शन' मिजेरदला फिलासोफी 1846 मे लिखी, उसका जवाब अगले साल मार्क्स ने 'दर्शन की दरिद्रता (फिलोसोफी दला मिजेर) लिख डाला। इसके बाद आया वह प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसने विश्व के इतिहास मे बहुत क्रान्ति निर्मित की—'दि कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो' 1847 मे एगेल्स के साथ लिखा। मार्क्स अब लन्दन पहुच गए। और वही बडे कष्ट मे जीवन बिताया। मार्क्स पुन पैरिस और राइनलैड बुलाए गए। पर वहा जर्मन शरणार्थियो के बीच वे बहुत अलोकप्रिय हुए, चूकि उन्होने श्रमिको को जनतान्त्रिक बूर्जुआजी के साथ मिलकर राजनैतिक कार्यक्रम बनाने का निर्देश दिया। जून 1849 मे वे ससदीय जनतन्त्र के पक्ष मे और रूस पर आक्रमण करने के लिए लेख लिखते रहे। मजदूर यूनियन के क्रान्तिकारी नेता आद्रेस गोटशाक जब पकडे गए, तो उनके स्थान पर मार्क्स ने पहली राइनलैंड डेमाक्रेटिक काग्रेस 1848 मे बुलाई। जीवन-भर मार्क्स केवल लेख और पुस्तके लिखते रहे। सार्वजनिक सभा मे या भीड मे व्याख्यान उन्होने केवल एक बार दिया मजदूरो के सामने, कोलोन की सडको पर। उन पर मुकद्दमा चला और उन्होने आत्म समर्पण किया। छोड दिए गये, धन्यवाद सहित।

अगस्त 1849 के बाद मार्क्स बड दैन्य मे लन्दन मे सोहो स्क्वयर मे दो कमरो के मकान मे रहने लगे। चार बच्चे हो गए थे। सदा कर्ज मे रहना। एक बेटा गिउडो बिना दवादारू के मर गया। बेटी फ्राजिस्का की मौत पर उसके कफन के लिए मा दर-दर भीख मागती रही। कर्जदार आते तो बेटियो को झूठ जानकर बताने के लिए कहा जाता —'मार्क्स घर मे नही है। मार्क्स की पत्नी बीच बीच मे बेहोश हो जाने लगी। इस समय मार्क्स को आर्थिक आधार मिला न्ययार्क ट्रिब्यून' नामक अमरीका की पत्रिका के सम्पादक होरेस ग्रीले और चार्ल्स दाना से। 1851 से 1862 तक पाच सौ लेख और सम्पादकीय मार्क्स ने इस पत्रिका मे लिखे—दुनिया भर के विषयो पर भारत चीन, ब्रिटन, स्पेन सब पर। 1859 मे मार्क्स ने अर्थ शास्त्र पर अपनी पहली पुस्तक लिखी।

ब्रिटिश म्यूजीयम मे बैठकर बराबर सामाजिक, आर्थिक ऐतिहासिक प्रश्नो पर मार्क्स शोध करते रहते। 1864 मे लन्दन मे अग्रेजी ट्रेड यूनियन नेताओ ने एक सभा बुलाई। मार्क्स सभा मे चुपचाप बैठे रहे। पर उन्होंने फर्स्ट इन्टरनेशनल की इस आधार सभा के बाद सविधान और नियमावली बनाई। 1869 तक इसके आठ लाख सदस्य बन गए। 1870 तक मार्क्स को यूरोप मे कोई नही जानता था, पैरिस कम्यून के बाद वे एक दम लन्दन के सबसे निन्दित और आतक प्रचारक व्यक्ति बन गए। पैरिस कम्यून को मई 30, 1861 मे दमन का शिकार होना पडा। मार्क्स ने लिखा कि यह विश्व की पहली मजदूरो की तानाशाही (डिक्टेटरशिप आफ द्री प्रालितारियेत) है। 1867 मे लन्दन मे मजदूरो को मताधिकार मिला। मिखाइल अलेक्सेद्राविच बाकुनिन को 1848 मे मार्क्स ने रूसी एजेंट कहा था। इस कारण से क्रान्तिकारी बाकुनिन मार्क्स को जर्मन तानाशाही वृत्ति का यहूदी मानता था। बाकुनिन ने इटली, स्विट्जरलैंड फ्रास मे युवको का एक गुप्त दल सगठित किया—इन्टरनैशनल अलायेस आफ सोशल डमोक्रेसी। मार्क्स ने उसे अपने इन्टरनैशनल मे प्रवेश नही दिया। बाकुनिन मार्क्स की डिक्टेटरी नीति के विरोध मे दल जमा करने लगा। मार्क्स ने बाकुनिन का चरित्रहनन किया कि नेचायेक नामक विद्यार्थी नेता जो हत्यारा और ब्लैकमेलर था उसके साथ बाकुनिन की साठ-गाठ है 1872 को हेग की इन्टरनैशनल काग्रेस मे मार्क्स ने बाकुनिन को हराया। यही एक मात्र इन्टरनैशनल थी जिसमे मार्क्स उपस्थित थे।

अगले दशक मे मार्क्स 'डास कापिटाल (पूजी) ग्रन्थ लिखने मे डूब गए। इस बीच वे रूसी भाषा भी सीखी। पर मन कही जम नही रहा था। एक भी काम पूरा नही कर पाते थे। वे रूसी जारशाही का तख्ता पलटने के लिए यूरोप मे युद्ध की प्रतीक्षा करने लगे।। जार अलेक्जाद्र द्वितीय की 1881 मे रूस मे हत्या मार्क्स के अनुसार एक ऐतिहासिक अनिवार्य घटना थी। 1875 मे गोथा प्रोग्राम की मार्क्स ने कटु आलोचना की। जर्मन डमोक्रेटिक सोशलिस्ट बच्चो को बधुआ मजदूर बनाने के विरोध मे थे। मार्क्स ने उसका भी विरोध किया। 1879 मे जब फ्रास मे सोशलिस्ट वर्कर्स फैडरेशन बनी ता उसके नेता जूल गिस्द मार्क्स की सलाह लेने लन्दन गए। अन्तिम दिनो मे मार्क्स [illegible] स्वास्थ्य केन्द्रो मे घूमते रहे। एन्जी-यंस पहुचे। पत्नी की मृत्यु दिसम्बर 2 1881 को हुई बडी बेटी जेनी लागुएत की जनवरी 11 1883 को। फफडे के फोड़ म मार्क्स की मृत्यु लन्दन मे मार्च 14, 1883 [illegible]

(क्रमशः)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के दीक्षान्त समारोह पर

श्री आर्यरत्न पं. सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार का दीक्षान्त भाषण

(गतांक से आगे)

कावेरी नदी के सब भू-भागों को—पाण्ड्य राजाओं सहित—वशवर्ती करते हुए केरल प्रदेश को जीत कर वे भारत के सम्पूर्ण पश्चिमी प्रदेश पर छा गए। उधर से स्थल मार्ग से ही पारस देश (पर्शिया) में प्रविष्ट होकर उसके बड़े भाग को समेटते हुए सिन्धु नदी के पश्चिमी प्रदेशों में उन्होंने प्रवेश किया। जहां अफगानस्थान के काम्बोज या काबुल के राज्य को अपने साथ मिलाया, इसके बाद हिमालय के महान् प्रदेशों में सब राज्यों को वशवर्ती करते हुए अपने पराक्रम का सिक्का बिठा दिया। हिमालय की लौहित्य नदी को पार कर वे प्राग्ज्योतिष या आसाम में आ पहुंचे थे। इस तरह से महाभारत भूमि की पूरी परिक्रमा विजय द्वारा स्थापित कर उसका स्थायी मानचित्र बना दिया गया था। इस तरह से आर्य साम्राज्य की पूर्ण स्थापना कर वे वापिस अयोध्या में आ गए थे। विकेन्द्रित भारत एक महान् केन्द्रित (इन्टेगरेटिड) महाभारत में बदल कर 'राम-राज्य' में चरमोत्कर्ष पर पहुंचा था जिसका वर्णन महाभारत के शान्तिपर्व में 'रामे-राज्यं प्रशासति' प्रकरण में देखा जा सकता है। इन सब विजयों में रघु ने आर्य मर्यादाओं का कभी त्याग नहीं किया। जिसे जीता उसे सन्मार्ग पर लगाकर राज्य उसे ही सुराज्य स्थापना के लिए दे दिया। कोई बदले की भावना न थी। कोई ईर्ष्या या द्वेष न था। रघु ने विशाल स्वराज्य या धर्मराज्य को पैदा किया और राम ने सुराज्य' रूप में परमार्थता का दर्शन दिया साम्राज्य स्थापना में दिग्विजय के बाद रघु ने 'विश्वजित' यज्ञ को किया और 'परोपकाराय सतां विभूतय:' 'सर्वभूतहिते रता' 'सर्वजनसुखाय' के वैदिक आर्य उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सब कुछ दक्षिणा रूप में दान में देकर उन सब राजाओं को सम्मानित किया जो रघु से युद्ध में हार जाने से अपने को लज्जित तथा तिरस्कृत समझते थे। सभी को पूर्ववत् मान-मर्यादा देते हुए स्वयं एक तपस्वी, निर्धन वानप्रस्थी बनकर ऋषि आश्रमों में चले गए, क्योंकि 'योगेनान्ते तनुत्यजाम्' का उद्देश्य जो पूरा करना था।

इस तरह से मैंने भारत की प्राचीन गौरव गाथा आपके सामने रखी है। इससे संसार की महान् शक्तियों को बहुत कुछ सीखने को मिल सकता है। रघुवीर और यदुवीर जैसे आर्य वीर भारत के सदा चमकते सूर्य और चांद की तरह प्रकाश और जीवन देने वाले हैं। महर्षि दयानन्द के सामने भारत की यह गौरव गाथा सदा ज्योति स्तम्भ की तरह भविष्य का पथ-प्रदर्शन करने वाली रही है।

भारत में बहुत से साम्राज्य आए और उजड़ गए। उनमें भिन्न-भिन्न संस्कृतियां या सभ्यतायें बनी और उजड़ती रहीं। परन्तु आर्यत्व की महिमा पर और उसके उच्च आदर्शों पर कभी आंच न आ सकी। शरीर मर गया, परन्तु आत्मा सदा अपनी अमरता का सन्देश देती रही। ऐसी भावना को ही हमने गुरुकुल संस्थाओं में फिर धीमे धीमे पनपाना है। हमारे शिक्षा-केन्द्र या गुरुकुल, शिक्षा की व्यापारी दुकानें न बनें, बरन्तु पुण्य भूमियां बनें, जहां पहुंचते ही मनुष्य को सुख शांति, साहस, धैर्य और और ईश्वरीय जीवन का आनन्द मिलता हो, जहां मनुष्य नतमस्तक होकर आता हो और अपनी झोली को 'दैवी सपत्' से भर कर संसार में यह संपत् बांटता हो या बिखेर देता हो। यही हमारी लक्ष्मी पूजा है, इसी में हमारी सरस्वती वन्दना है और पुण्य भूमि की अर्चना है—'इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुव:।'

इस सबके बाद मुझे आपको वैदिक धर्म, आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के विषय में भी कुछ कहना है। यद्यपि ये तीनों अलग-अलग हैं परन्तु तीनों में एक समन्वय भी है।

वैदिक धर्म हमारी सभ्यता, संस्कृति, दर्शन, आचार, मर्यादाओं आदि का आधार है, जिसके बिना हम खड़े नहीं हो सकते। आर्य समाज या आर्य राष्ट्र एक समाज रचना या राष्ट्र रचना का विशिष्ट विधान है जो सब संसार को प्राणिमात्र के उपकार के उद्देश्य से, मानव को मानव से भाईचारे में जोड़ देता है। यहां 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श सामने आ जाता है। इस शिक्षा को सिखाने वाला महान् नेता दयानन्द है, जिसने हमें अपने भूत, वर्तमान और भविष्य के लिए उद्बोधित किया है। हम औरों की दृष्टि में बहुत पिछड़ गए प्रतीत होते हैं। इसी से जागरूक होने की हमारी आवश्यकता है। हमारी वाणी में हमारे आर्य नेता जागरूक नहीं, इसी से कहता हूं—'वयं राष्ट्रे जागृयाम स्याम पुरोहित:' 'अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु' 'देव सेना: सूर्यकेतव: प्रचेतस अमित्राम नो जयन्तु' 'कृतं (सत्यं) मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहित:' इत्यादि इत्यादि। (क्रमश:)

आर्य समाज जालन्धर छावनी का उत्सव

आर्य समाज जालन्धर छावनी का वार्षिकोत्सव 26 से 28 अप्रैल तक बड़े समारोह से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्र. नि. सभापंजाबके सहायक वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री पं. धर्मदेवार्य जी प्रसिद्ध विद्वान् प. ओम् प्रकाश जी आर्य श्री वेद प्रकाश जी मल्होत्रा तथा प. नरेशपाल जी प्रसिद्ध गायक के उपदेश तथा प्रवचन हुए। कार्यक्रम में जालन्धर छावनी के आर्य बन्धुओं व बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। 27 अप्रैल को दोपहर बाद स्त्री आर्य समाज का भी सम्मेलन हुआ। उत्सव हर प्रकार से सफल रहा।

—कांशीराम अग्रवाल
मन्त्री

आर्यसमाज नंगल टाऊनशिप का वार्षिक महोत्सव

6 मई से 12 मई 1985 तक (सोमवार से रविवार)

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि आपके आर्य समाज का 37वां वार्षिक महोत्सव आर्य समाज मन्दिर में ऊपरलिखित तिथियों में मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर श्री स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान; नजीबाबाद (बिजनौर)

श्रीमती कमला आर्या. सभा महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर।

श्री डा. सुरेन्द्र कुमार जी प्राचार्य डी. ए. वी. कालेज कांगड़ा (हि. प्र.)

श्री डा. भवानीलाल जी भारतीय, अध्यक्ष महर्षि दयानन्द शोध संस्था, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़।

श्री स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती, वैदिक साधु आश्रम रोपड़।

श्री पं. दीनानाथ जी वेदज्ञ, वेद प्रेमी चढ़तगढ ऊना (हि. प्र.)

श्री सीताराम जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर पधार रहे हैं।

11-12 मई शनिवार, रविवार को विशेष कार्यक्रम होगा। प्रात: के सभी कार्यक्रम आर्य समाज मन्दिर मे होंगे और रात्रि को शिव मन्दिर मेन मार्कीट में होंगे। धर्मप्रेमी सज्जन पधार कर धर्म लाभ उठावें।

—अविनाश चन्द्र महता मन्त्री

विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर

अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के उपलक्ष में आर्य समाज की प्रगतिशील नवयुवक सस्था केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश ने महर्षि कण्व की तपो भूमि तथा हिमालय की सुरम्य घाटियों के बीच स्थित गुरुकुल कण्वाश्रम, बलालघाटी कोटद्वार जिला पौढ़ी गढ़वाल में 14 से 23 जून तक एक रोमांचकारी विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी की अध्यक्षता में किया है।

इस शिविर में आसन-प्राणायाम, दण्ड-बैठक, लाठी, जूडो-कराटे व फ्री स्टाईल कुश्तियों के प्रशिक्षण के अतिरिक्त जड़ी-बूटियों का ज्ञान, प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर ऐतिहासिक धार्मिक पर्यटक स्थलों का भ्रमण तथा युवकों को मचान पर बैठाकर शेर, हाथी, भालू, हिरण, नील गाय आदि हिंसक-अहिंसक वन्य जीव-जन्तुओ के अवलोकन के रोमांचकारी अवसर मिलेंगे

आर्य समाज के नौजवान संन्यासी स्वामी जगदीश्वरानन्द जी महाराज की देख रेख में इन्हीं दिनों योग साधना शिविर का भी आयोजन किया जा रहा है जिसमें मांस, अण्डे, शराब, बीड़ी-सिगरेट व तामसिक पदार्थों के सेवन से मुक्त व्यक्ति ही इसमें भाग ले सकेंगे।

—चन्द्रमोहन आर्य प्रेस सचिव

आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाबद्वारा राजार्य सभा बनाने का स्वागत

ले.—श्री मुलखराज आर्य प्रधान आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर

हम आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब द्वारा राजार्य सभा पजाब में बनाने का स्वागत करते हैं कि यहा सारे देश में यह पग उठा कर पहल की है। ऋषि दयानन्दजी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश का छटा समुल्लास राजनीति के बारे मे ही लिखा है उन्होंने लिखा है कि सारे विश्व मे आर्यों का राज्य होना चाहिए यदि आर्य समाज की कोई भी राजनैतिक पार्टी ही न होगी तो विश्व में आर्य राज्य कैसे होगा। 1947 से पहले आजादी के लिए 90 प्रतिशत बलिदान आर्य समाज ने ही दिया था। परन्तु आर्य समाज की कोई भी पार्टी न होने के कारण देश की बागडोर दूसरों के हाथ में ही रही, यह ठीक है कि दूसरी पार्टियो मे आर्य समाजी तो राज्य में थे परन्तु वह दूसरो के नियमों मे बधे हुये थे वह आर्य समाज द्वारा अपनी आवाज नही उठा सकते थे। इसलिए आर्य समाज के नेताओ को आज 38 वर्ष पूर्व ही राजार्य सभा बनानी चाहिए थी जब भी इस पर विचार हुआ तो हमारे बडे-बडे नेता अपने स्वार्थ के कारण राजार्य सभा का निर्माण न होने देते थे क्योकि वह गद्दी पर चिपटे हुए थे इसलिए वह रुकावट डाल देते थे और कह देते थे कि आर्य समाज को राजनीति मे नही आना चाहिए। मैं उन नेताओ से पूछना चाहता हू कि वह आज तक राजनीति मे क्यो भाग लेते रहे हैं मुझे तो ऐसा कोई भी व्यक्ति नजर नही आता जो राजनीति मे भाग न लेता हो, यदि आर्य समाज पहले से ही राजार्य सभा की स्थापना कर देता तो आर्य समाज कभी भी कमजोर न होता, आर्य समाजो में दूसरी राजनीतिक पार्टियो ने प्रवेश करके आर्य समाज मे अपनी राजनीतियों के अनुसार आर्य समाजो को अखाडा बना दिया और आर्य समाज का प्रचार नाम मात्र रह गया। किसी आर्य समाज में जनसंघ ने कब्जा कर लिया। किसी आर्य समाज मे काग्रेस ने कब्जा कर लिया और जो आर्य समाजी नहीं थे उनको आर्य समाज मे भरती कर लिया और जो आर्य समाजी थे उनको आर्य समाज से बाहर निकाल दिया और आर्य समाज का प्रचार बन्द हो गया, यही कारण है कि आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सगों में उपस्थिति पांच-सात होती है क्योकि आर्य समाज मे जो सदस्यो की भर्ती की हुई है वह आर्य समाजी न होने के कारण आर्य समाज के सत्सगो मे नही आते। केवल चुनाव पर ही आते हैं क्योंकि उनको सदस्य केवल चुनाव के लिए ही बनाया जाता है शेष वर्ष भर उनको आर्य समाज मे आने की आवश्यकता नही परन्तु जो पुराने आर्य समाजी शेष हैं वह आर्य समाज मे इसलिए नही आ रहे कि आर्य समाज मे आकर अपमान ही कराना है यही कारण है कि सत्सगों मे उपस्थिति नही होती।

यदि पहले ही आर्य समाज ने अपनी राजनीतिक पार्टी बनाई होती तो दूसरी राजनीतिक पार्टिया आर्य समाज मे घुस नही सकती थी, हमे बडी खुशी है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने पहल करके यह पग उठाया है आशा है कि दूसरे प्रान्त भी यह पग उठाकर आर्य समाज को बचा लेंगे, हम तो यह चाहते है कि आर्य समाज का सदस्य किसी भी राजनीति पार्टी जो आर्य समाज के नियम के अनुसार न हो उसे आर्य समाज का सदस्य न बनाया जाए। यदि वह किसी भी राजनीति पार्टी का सदस्य बनना चाहता है तो वह केवल राजार्य सभा का ही सदस्य बन सकता है यदि वह किसी दूसरी राजनीति पार्टी का सदस्य हो तो उसको आर्य समाज का सदस्य न बनाया जाये तो आर्य समाज के अन्दर जागृति आएगी और आर्य समाज के अन्दर नव युवक भी आएगे क्योकि आज हर व्यक्ति राजनीति मे आना चाहता है कि मैं भी राजनीति मे भाग लू बहुत थोडे हैं जो आज तक किसी भी राजनीतिक पार्टी के सदस्य नही बनें। मेरी 68 वर्ष की आयु हो गई है परन्तु मैं आज तक भी किसी भी राजनीति पार्टी का सदस्य नही बना, कई बार राजनीतिक पार्टियो ने मुझे अपना सदस्य बनाने पर जोर दिया परन्तु मैं आज तक किसी का भी सदस्य नही बना, बहुत देर की बात है जब हमारी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान स्वामी आत्मानन्द जी महाराज थे तो उस समय स्वामी जी ने आर्य समाज को आदेश दिया था कि विधान सभा के चुनाव के लिए हिन्दी के समर्थक को ही मतदान दिया जा… उस समय आर्य समाज ने जनसघ के सदस्य श्री लालचन्द सभ्रवाल को मतदान का समर्थन किया था हमने उस समय जनसघ को हर प्रकार का सहयोग दिया और वह विधान सभा का चुनाव जीत गए चुनाव जीत जाने के पश्चात् कई जनसघ के सदस्य मेरे पास आए और मुझे कहा गया कि मैं जनसघ का सदस्य बन जाऊ, मैंने उनका सदस्य बनने से इन्कार कर दिया और मुझ से बार-बार प्रार्थना की आप जनसघ को हर प्रकार का सहयोग भी देते हैं फिर सदस्य बनने मे क्या आपत्ति है केवल चार आने चन्दा है मैंने कहा कि चार आने का प्रश्न है तो आप मुझ से चार आने ले जाए परन्तु मै किसी भी पार्टी का सदस्य नही बन सकता। अन्त मे बार-बार कारण पूछने पर कि मैं सदस्य किस कारण नही बनना चाहता मैंने उत्तर दिया कि भाई मै आर्य समाज का सदस्य हू। यदि मैं आपका सदस्य या किसी भी पार्टी का सदस्य बनता हू तो जिस भी पार्टी का मै सदस्य बनता हू तो उस पार्टी के नियमो के पालन करने का मेरा कर्त्तव्य बन जाता है फिर कई बार ऐसा होगा कि आपके नियम के अनुसार ऐसा ही मुझे काम करना पड सकता है जो आर्य समाज के नियम विपरीत हो तो उस समय यदि आपकी बात को मानकर आर्य समाज के नियमो ठुकरा देता हू तो मैं आर्य समाज का गद्दार बन जाऊगा। यदि मैं आर्य समाज को नही ठुकराता तो आपकी पार्टी का गद्दार बन जाऊगा। इसलिए मैं किसी का भी गद्दार नही बनना चाहता। मैंने उनको कहा था कि मैं आर्य समाजी हू इसलिए जब तक आर्य समाज कोई अपनी राजनीतिक पार्टी नही बनाता। मै किसी पार्टी का भी सदस्य नही बनूगा। इसलिए हमे आज बडी खुशी हुई है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने जो हमारा सकल्प था पूरा कर दिया है। इसके लिए हमारे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी बधाई के पात्र है।

परमात्मा करे कि वह पग जो आर्य समाज ने जो हिन्दुओ की रक्षा के लिए उठाया है उस पर आर्य समाज दृढ रहे क्योकि आर्य समाज ही है जो हिन्दू जाति की रक्षा कर सकता है यदि आर्य समाज ने हिन्दू जाति की रक्षा कर ली तो देश के सारे हिन्दू आर्य समाज के साथ होगे तो सारे देश मे तो क्या सारे विश्व मे आर्य राज्य होगा।

लुधियाना के नवयुवकों का कार्यक्रम

आर्य युवक सभा लुधियाना द्वारा 28-4-85 को आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार, लुधियाना मे डा एस-म्बी बागिया जी की अध्यक्षता मे एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया था। यज्ञ के पश्चात वेद प्रचार भजन मण्डली जिसका सचालन श्री किरपाराम जी आर्य तथा श्री यशपाल जी आर्य कर रहे हैं, ने अपने प्रभु भक्ति, दश भक्ति के गीतो द्वारा एक विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस अवसर पर आर्य युवक सभा पजाब के सयोजक श्री रोशनलाल जी शर्मा ने युवको को सम्बोधित करते हुए कहा कि वैदिक धर्म ही तर्क एवं सत्य की कसौटी पर पूरा उतरता है। धर्म की परिभाषा करते हुए उन्होने कहा कि मानव मे मानवता के गुणो को स्थापित करने के लिए बनाए गए कर्त्तव्य सदाचार, एव गुणों को धारण करना ही धर्म है। श्री शर्मा ने आगे कहा कि सभा पारिवारिक सत्संगो एवं सम्मेलनो के माध्यम से युवको को सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करेगी।

अन्त में आर्य युवक सभा लुधियाना की मीटिंग श्री धर्मपाल जी धसीन की अध्यक्षता मे हुई जिसमे सगठन को मजबूत बनाने के लिए विचार विमर्श किया गया। शान्ति पाठ एव जयघोषष के साथ कार्यवाही समाप्त हुई।

— अरुण भारद्वाज महामन्त्री

जिला बहराईच के शुद्धि समाचार

जिला बहराईच के गाव शिवपुरा तहसील नानपारा में स्वामी सेवकानन्द मन्त्री हिन्दू शुद्धि सरक्षक समिति हरियाणा ने 19 मुसलमान नटो की शुद्धि की। आस-पास के लोग भी इस शुद्धि समारोह में सम्मिलित हुए। इसी प्रकार ग्राम लखाहर्के 290ग्राम,भवरकापुरा मे 7 और गाव कादिवापुरा में एक युवती की शुद्धि की गई। इस कार्य मे मेधार्थी आर्य मायाराम आर्य, श्री प्रेमानन्द गुप्ता, श्रीराम प्रधान का सहयोग भी बराबर मिलता रहा है। शुद्धि का कार्य निरन्तर चल रहा है।

—परशसिंह मन्त्री

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर श्रद्धानन्द बाजार जालन्धर में बृहद् यज्ञ

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर (श्रद्धानन्द बाजार) जालन्धर में बृहद् यज्ञ समारोह 'आर्य समाज स्थापना दिवस' के उपलक्ष में सोमवार 29 अप्रैल 1985 से रविवार 5 मई तक मनाया गया।

कार्यक्रम—दैनिक प्रात 7 30 से 8-30 तक स्वस्ति यज्ञ (चारो वेदों के कल्याण करने वाले मन्त्रों द्वारा आहुतियां डाली गई।

8-30 से 9 बजे तक प्रवचन—पं. निरञ्जनदेव जी इतिहास केसरी। दैनिक रात्रि—7 से 7 30 तक भजन प सीताराम जी भजन मण्डली के भजन और रामायण कथा—7-30 से 8-30 बजे तक पं निरञ्जनदेव जी इतिहास केसरी जी करते रहे हैं।

—ओमप्रकाश सेठ प्रधान

श्री भीमसेन शास्त्री स्मृति व्याख्यान माला

कोटा में प्रो. भीमसेन शास्त्री विद्या भूषण स्मृति व्याख्यान माला का प्रथम व्याख्यान परम पूज्य ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी ई कन्हई वालों का हुआ। सभा की अध्यक्षता कुंवर आर्य मैत्र, श्री वेदप्रकाश सक्सेना, सैक्रेटरी जनरल आल इण्डिया दयानन्द सोशल सर्विस सोसाइटी ने की। सभा का संचालन श्री [illegible] एडवोकेट संयोजक केन्द्रीय डालमिया आर्य युवक परिषद् कोटा ने किया।

ब्रह्मचारी आर्य नरेश ने अपने भाषण में कहा कि स्व. प्रो. भीमसेन शास्त्री की [illegible] आर्य जगत् के सुयोग्य तथा प्रतिष्ठित विद्वान् थे। आज के आर्य जगत् में उनके [illegible] के प्रति किए कार्यों को [illegible] किया जाता रहेगा।

—वेद प्रकाश सक्सेना मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन नं. 74250

(रजि. न. पी. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य मर्यादा जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 6, 6 ज्येष्ठ सम्वत् 2042, तदनुसार 19 मई 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

जीवन रहस्य—

मृत्युञ्जयी बनो, यज्ञमय जीवन बनाओ

ले.—श्री आचार्य शिवराज जी शास्त्री एम, ए. मौलवी फाजिल

मृत्यो पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ।
आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूताः भवत यज्ञियासः ।

ऋ. 10-18-2

जीवन व मृत्यु विधाता के अमर विधान है जिन्हें ससार में आज तक बड़े-बड़े शक्तिशाली राजे-महाराजे योगी ऋषि कोई भी बदल नहीं सके । जीवन क्या है—

जिन्दगी क्या है अनासिर का जहूरेतरतीब
मौत क्या है उन्हीं अजजा का परेशा होना ।

प्रकृति के पांच तत्व मिलकर आत्मा को यह शरीर प्रदान करते हैं और जब वे अपने कारण रूप प्रकृति मे विलीन हो जाते हैं उसे मृत्यु कहा जाता है परन्तु आत्मा को इस चक्र में आने की क्या आवश्यकता होती है । वास्तव में जीवात्मा एक अजर अमर महा यात्री है जिस की यात्रा का न आदि है न अन्त । किसी कवि ने बड़े सुन्दर शब्दो में इस महा-यात्रा का वर्णन किया है—

मौत इक जिन्दगी का वक्फा है ।
यानी आगे चलेंगे दम लेकर ।

मृत्यु जीवन की महान् यात्रा का एक पड़ाव (विश्राम स्थल) है जिस पर यात्री विश्राम करके फिर आगे चल देता है

आत्मा रूपी महा यात्री अपने वास्तविक-लक्ष्य को न समझ कर जीवन भर भूल-भुलैयों में ही खोया रहता है । प्रभु ने यह शरीर जिस उद्देश्य से उसे दिया है उसे भी वह भूल जाता है ।

महाभारत में यक्ष के इस प्रश्न का उत्तर, 'कि संसार में सबसे आश्चर्यजनक घटना क्या है ? उत्तर देते हुए धर्मराज युधिष्ठिर ने कहा है—

अहनि अहनि भूतानि गच्छन्ति यम मन्दिरम ।
शेषाः स्थावरमिच्छन्ति किमाश्चर्यमतः परम ।

दिन-रात मनुष्य प्राणी काल के ग्रास बनते दिख रहे हैं परन्तु शेष रहने वालों को यह विश्वास ही नहीं होता कि हमारा भी यही अन्त है, वे यहीं बसे रहने की योजनाओं में अपना सारा समय बिताते रहते हैं इससे बड़ा आश्चर्य और कौन सा होगा ।

वास्तविक जीवन का लक्ष्य तो यह है—

य जीवति क्षणमपि प्रथित मनुष्यै, विज्ञान
शौर्य विभवार्य गुणै समेतम तन्नाम
जीवितमिह प्रवदन्ति तज्ञा काकोऽपि
जीवतिचिराय बलिंच भुङ्क्ते ।

जो अपने ज्ञान विज्ञान वीरता व आर्य गुणो के कारण एक क्षण भी जिन्दगी सफल बना लेता हैं । उसी का जीवन सार्थक है यो तो कुत्ते, कौए भी गन्दा मैला खाकर जीते हो हैं ।

ऋग्वेद के उपरोक्त मन्त्र मे मनुष्य को यही उपदेश दिया गया है । मन्त्र मे कहा है कि—

ऐ संसार के लोगो तुम्हे पद-पर पर मृत्यु व दुःख के चिन्ह दिखाई दे रहे हैं चिन्ता मत करो इन चिन्हो को अपने पैरो से कुचलते हुए यज्ञ भगवान की शरण मे आ जाओ । वही तुम्हे दीर्घ जीवन प्रदान कर सकते हैं । तुम्हारी यज्ञीय भावना के अनुसार तुम्हारे घर परिवार को उत्तम सन्तानो व धन ऐश्वर्य से भर देंगे । तुम अपने मन आत्मा को शुद्ध पवित्र बनाकर यज्ञ की शरण मे आ जाओ ।

महर्षि दयानन्द ने परिवार मे मृत्यु का दृश्य देखकर अमरत्व की खोज प्रारम्भ की, परिणाम स्वरूप उन्होंने अपना जीवन प्रभु की इस महान् जीवन यज्ञशाला मे समर्पित कर दिया । न जाने कितने ही लाखो साधु, सन्यासी रंगीन कपड़े पहने फिर रहे वे कोई अमर पद प्राप्त नहीं कर सका । महर्षि अपने विज्ञान वैभव से न केवल स्वयं अमर हो गए अपितु अपने प्रभाजन असख्य विद्वानो व महापुरुषो को उन्होंने अमरत्व प्रदान कर दिया ।

क्या इतिहास में से अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द शहीदे अकबर प लेख-राम आर्य मुसाफिर, त्यागमूर्ति प गुरुदत्त जी व महात्मा हंसराज जी और लाला लाजपतराय के नाम कभी मिटाए जा सकते हैं । यह उन्ही की तपस्या का फल है कि ऋषि का त्याग या आर्य समाज रूपी पौधा आज भी सर्वत्र पुष्पित पल्लवित हो रहा है । विश्व भर मे उनकी जय-जयकार हो रही है । भौतिक मृत्यु उनके अमर जीवन पर कोई प्रभाव नही डाल सकी ।

वास्तव मे यह श्रेय मनुष्य शरीर मे ही मनुष्य को प्राप्त होता है अन्य योनि मे कदापि नही । अत मनुष्य क्षणिक सासारिक सुख भोग विलास मे जीवन नष्ट तो कर सकता है, जीता हुआ भी मृतवत् ही जीवन बिता सकता है । परन्तु अमर पद पाने के लिए तो उसे अपना यज्ञमय जीवन बनाना परम आवश्यक है । इसीलिए यज्ञ को शास्त्रो ने श्रेष्ठतम कर्म बताया है ।

जीवन की सार्थकता के लिए मनुष्य को जीवन के सच्च आदर्शों उसके उन्नतम मूल्यो की प्राप्ति अनिवार्य है । इतिहास साक्षी है जिसने मौत से डर कर अपने उच्चादर्शों को ठोकर मारी वे निन्दनीय ही कहलाए, हकीकत ने अपने धर्म पर दृढ़ रहकर तभी तो जल्लाद से कहा था—

काट सकते हो तो असली को हकीकत काटो ।
इस नकली जीवन को पर तलवार नही ।

हकीकत अमर हो गए । आत्मा अजर अमर है इस सत्य को पहचान लेने वाले ही सत्पथ पर दृढ़ता पूर्वक चले आते हैं अपनी यज्ञमय जीवन प्रणाली से ससार को ज्ञान-विज्ञान सेवा परोपकार से स्वर्ग बनाने का अहर्निश उपाय करते रहते हैं । मन्त्र मे जीव की एक स्वभाविक इच्छा का बड़ी उत्तमता से निरूपण किया गया है । जहां मनुष्य अपनी यज्ञमा आत्मा अमर चाहता है वहां वह पुत्रैषणा व वित्तैषणा से भी छूट नही पाता । यह प्रकृति का विधान है कि प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन मे अपना उत्तराधिकारी अवश्य बनाना अनिवार्य है । जीवन यात्रा की सफलता के लिए धन का भी महत्व है । धर्म, अर्थ काम, मोक्ष ये चारो ही सफलता के साधन हैं । जिनकी प्राप्ति जीवन का लक्ष्य है ।

सन्तान यदि शुद्ध पवित्र है तो मानव जीवन सफल है यदि वह शाहजहां व औरगजेब के रूप मे हो मनुष्य के भावी जीवन को ही नष्ट प्राय नहीं कर देगी । इतिहास साक्षी है कि मुगल सल्तनत का विनाश पिता-पुत्र के सम्बन्धो मे असगति अयज्ञीय) भावना से ही हुआ । अत मन्त्र मे प्रजा शब्द का प्रयोग किया गया है । उत्तम प्रजा से ससार स्वर्ग बन जाता है जबकि निकृष्ट प्रजा से ही रौरव नर्क का स्वरूप बन जाता है । अत जीवन यज्ञ मे शुद्धता व पवित्रता का विशेष महत्व है । भगवान कहते हैं जीवन यज्ञ को सफल बनाने के लिए सभी प्रकार की शुद्धता व पवित्रता परमावश्यक है । धन व सन्तान दोनो शुभ हो तभी यश भी टिकेगा ।

ऋषियो ने यज्ञ में पवित्रता व शुद्धता प्राप्ति के सभी साधनो का सगति करण किया है । यज्ञकर्ता की शारीरिक मानसिक व आत्मिक पवित्रता की प्राप्ति के सभी उपायो का अवलम्बन आवश्यक है, वातावरण की शुद्धि के लिए सुगन्धित सामग्री, पौष्टिकता के लिए शुद्ध घृत, स्वच्छ समिधाएं व सर्वोपरि वाणी भी कल्याणी वाणी वेद माता की आवश्यकता है । वैदिक यज्ञ प्रणाली विधिपूर्वक करने

(शेष पृष्ठ 8 पर)

गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय में सन्दर्भ सेवा

श्री जगदीश विद्यालंकार पुस्तकालयाध्यक्ष, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार,

पुस्तकालय आदोलन के प्रणेता ऋषि दयानन्द —गुरुकुल पुस्तकालय की स्थापना भी गुरुकुल कांगडी की स्थापना के साथ ही हुई। गुरुकुल की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी ने 1902 मे ऋषि दयानन्द सरस्वती के शिक्षा सम्बन्धी विचारो को मूर्त रूप देने हेतु की। ऋषि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना करते हुए अपना यह मत भी प्रकट किया था कि आर्य समाज के माध्यम से प्रत्येक आर्य जन स्वाध्याय में रुचि जागृत करे तभी विद्या की वृद्धि तथा अविद्या का नाश हो सकता है। ऋषि दयानन्द ने अज्ञान से ज्ञान की ओर आर्यजनो को प्रवृत करते हुए आर्य समाज के संविधान मे इस व्यवस्था को अंगीकृत किया जिसके अनुसार आर्य समाज के पदाधिकारियो मे पुस्तकालयाध्यक्ष को प्रतिस्थापित किया।

आर्य समाज की इस संरचना मे पुस्तकालयध्यक्ष के पद का सृजन ऋषि दयानन्द सरस्वती की उस दिव्य दृष्टि को प्रकाशित करता है जिसके अन्तर्गत आर्यजनो को ऋषि ने यह आह्वान किया कि प्रत्येक आर्य स्वाध्याय मे लीन रहे तथा विद्या की वृद्धि करे। पुस्तकालयाध्यक्ष के इस पद की व्यवस्था के साथ ऋषि दयानन्द का यह एक अपूर्व स्वप्न था कि प्रत्येक आर्य सभासद अपने स्वरूप को पहचानने हेतु श्रेष्ठ ग्रन्थो का पारायण निरन्तर करता रहे। स्वामी श्रद्धानन्द ने भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही पुस्तकालय निर्माण की ओर गम्भीरता से ध्यान दिया।

आर्य समाज और गुरुकुल पुस्तकालय —स्वामी दयानन्द सरस्वती को भारत मे पुस्तकालय आदोलन का पितामह कहा जा सकता है। स्वामी दयानन्द ने उस समय समाजो की स्थापना के साथ ही प्रत्येक समाज मे एक पुस्तकालय की कल्पना की तथा उस पुस्तकालय की देख-रेख हेतु पुस्तकालयाध्यक्ष के पद का सृजन किया।

सत्यार्थ प्रकाश के रूप मे स्वामी दयानन्द ने जिस कृति का जन समुदाय के रूप मे सामने रखा वह कृति भी हजारो सन्दर्भो से सत्यासत्य के तत्वो को उदभाषित करने के महान सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप मे आवेष्ठित है। वैदिक विषयो पर प्रमाण सहित जवाब देने वाला ऐसा सुन्दर सन्दर्भ ग्रन्थ विश्व के पुस्तकालय को स्वामी दयानन्द से प्राप्त हुआ।

गुरुकुल कांगडी पुस्तकालय मे भी ऋषि दयानन्द के इन विचारो का प्रतिबिम्ब वृहत रूप से देखने को मिलता है। ऋषिदयानन्द के समस्त ग्रन्थ तथा उन ग्रन्थो पर लिखी विस्तृत समीक्षायें पुस्तकालय मे आर्य सामाजिक संग्रह के रूप में पृथक कक्ष में संयोजित है। इसके अतिरिक्त वैदिक सिद्धान्तों एव आर्य सामाजिक जीवन मूल्यों पर प्रकाश डालने वाले सहस्त्रो ग्रन्थ भी इस कक्ष के साथ सम्बद्ध हैं।

गुरुकुल के छात्र का तथा गुरुकुल के पुस्तकालय का अतरंग समस्त सम्बन्ध है। गुरुकुल मे प्रत्येक छात्र ज्ञान की जिज्ञासा प्राप्त करने हेतु पुस्तकालय की शरण मे आता है। तथा पुस्तकालय के द्वारा उसकी इस ज्ञान क्षुधा को विपुल वैदिक साहित्य के सागर द्वारा तृप्त किया जाता है। पुस्तकालय मे रखी उपस्थिति पंजिका के अनुसार गुरुकुल मे पढने वाला हर दूसरा छात्र पुस्तकालय का उपयोग करने पुस्तकालय आता है।

सन्दर्भ सेवा

पुस्तकालय की सदर्भ सेवा का अभिप्राय समझने हेतु पहले संस्कृत कोश के सन्दभ शब्द का अर्थ समझ लेना चाहिए। सदभ शब्द संस्कृत धातु दृभ बाधना या बुनना। मे "सम उपसर्ग लग कर बना है। अर्थात एक साथ बाधने वाला, सयन्त्रित करने वाला मिलाने वाला जो कि प्रतिपादित करते हैं। दो या अधिक वस्तुओ का सयोग। पुस्तकालय के सन्दभ मे दो बिन्दु हैं पाठक तथा पुस्तक तथा पाठक का पुस्तक मे लय हो जाना ही सदभ सेवा की चरम सफलता है।

पुस्तकालय के द्वारा पाठको को दी जाने वाली वैयक्तिक सहायता को ही सदभ सेवा कहा जा सकता है। सन्दभ सेवा का केन्द्र बिन्दु पाठक ही होता है जिसका प्रणय पुस्तक से कराया जाता है। एक विदेशी विद्वान जेम्स आई वायर ने पुस्तकालय की सन्दभ सेवा की व्याख्या इन शब्दो मे की अध्ययन और शोध कार्य हेतु पुस्तकालय संग्रह की व्याख्या करने में प्रदत्त सहानुभूतिपूर्ण और अनौपचारिक वैयक्तिक सहायता को सन्दर्भ कार्य कहते हैं।" 2

उपर्युक्त परिभाषा के सन्दर्भ में गुरुकुल पुस्तकालय का सर्वाधिक उपयोग यहां के छात्र, प्राध्यापक एवं कर्मीपरक रहने वाले शोध कर्ता निम्न प्रकार से उठाते हैं।

1. वांछित पाठ्य सामग्री मे सहायता

गुरुकुल में पढने वाला प्रत्येक छात्र प्राध्यापक एव शोध कर्ता पुस्तकालय मे उपलब्ध पाठ्य सामग्री निम्न प्रकार से खोजने का कार्य करता है।

1 50 प्रतिशत छात्र प्राध्यापक एव कर्मचारी सम्बद्ध पुस्तकालय कर्मचारी से पुस्तक के नाम या लेखक के आधार पर सीधे कर्मचारी सम्बद्ध पुस्तकालय कर्मचारी से वांछित पुस्तक प्राप्त करते हैं। इस कार्य मे पुस्तकालय में 20 वर्षो से कार्यरत बुकलिफ्टर गोबिन्द एव घनश्याम का वांछित पुस्तको के सम्बन्ध मे अर्जित लम्बे अनुभव का लाभ यहा के छात्र एव प्राध्यापक त्वरित रूप से उठाते हैं। पुस्तक का नाम कहते ही ये कर्मचारी उस पुस्तक को पाठको तक पहुचा देते हैं। इस के अतिरिक्त पुस्तकालय के 20 प्रतिशत पाठक वांछित पाठय सामाग्री खोजने हेतु पुस्तकालय के विषयवार संग्रह की जानकारी प्राप्त हो जाती है। वांछित पुस्तक का वर्गीकृत नम्बर इन रजिस्टरो मे देखने मे मिल जाता है। जिसे पुस्तकालय कर्मचारी को देकर प्राप्त कर लेते हैं। 20 प्रतिशत पाठक वर्ग केटलाग की सहायता से वांछित सामग्री की खोज करते हैं।

2 नवीनतम विश्व साहित्य की जानकारी निम्न सन्दर्भ ग्रन्थो के आधार पर दी जाती हैं 1 बुक्स इन प्रिन्ट (यू एस ए 1983 अमेरिका में 1983 तक प्रकाशित समस्त पुस्तको की जानकारी लेखक विषय एव शीर्षक के अनुसार—

2 ब्रिटिश बुक्स इन प्रिंट 1984 ब्रिटेन मे प्रकाशित 1984 तक की समस्त पुस्तको की जानकारी।

3 ब्रिटिश नेशनल बिबलोग्राफी ब्रिटेन मे उपलब्ध समस्त प्रकार की 1983 तक की पुस्तको की सूचना।

4 इण्डियन बुक्स इन प्रिन्ट 1984 भारत में 1984 तक प्रकाशित समस्त पुस्तको की जानकारी देने वाला सन्दभ ग्रन्थ।

5 पुस्तक समीक्षा पत्रिकाओं द्वारा नवीनता पुस्तको की जानकारी हेतु पुस्तकालय मे निम्न पुस्तक समीक्षा पत्रिकाये आती हैं।

1. बुक रिव्यू डाइजेस्ट
2. बुकलिस्ट
3. इण्डियन बुक क्रोनिकल
4. इण्डियन बुक इण्डस्ट्री
5. साहित्य अविरल
6. [illegible] बुक इन्डेक्स

[illegible] प्रकाशकों के केटलाग को विषयवार विभाजित है अवलोकन हेतु पाठको को [illegible] है।

शोध के [illegible] में सन्दर्भ सहायता

गुरुकुल का कोई छात्र शोध उपाधि हेतु पंजीकरण कराना चाहे तो उसे पुस्तकालय के द्वारा शोध के उसके रुचि के विषय की जानकारी दी जा सकती है तथा बहुत से शोध छात्र अपना विषय चुनने में इस सन्दर्भ सेवा का लाभ उठा रहे हैं। शोध छात्रों की सेवायें निम्न प्रकार से दी जा रही है।

1, पुस्तकालय के सन्दर्भ विभाग में भारत के सभी विश्वविद्यालयों में 1983 तक किए शोध कार्यों की जानकारी "एसोसिएशन आफ इंडियन यूनिवर्सिटी द्वारा सम्पादित "बिब्लियोग्राफी आफ डाक्टरल डिजटेशन 1970-1983 नामक सन्दर्भ ग्रन्थो की सहायता से दी जाती है। इन बहुखडी सन्दर्भ ग्रन्थों से शोध छात्रो को यह जानकारी हो जाती है कि उन के रुचि के विषय में शोध कार्य भारतीय विश्वविद्यालयों में कहा हुआ है तथा किसके निर्देशन में यह कार्य किया गया है।

2 इसी प्रकार समाज विज्ञान कला तथा विज्ञान के शोध छात्रो को भारत वर्ष के विश्वविद्यालय के ही शोध कार्य की जानकारी नही दी जाती बल्कि विश्व के प्रमुख विश्वविद्यालयों मे उनके रुचि के शोध क्षेत्रो मे क्या-क्या कार्य हुआ है इस की जानकारी 'डिजटेशन एब्सट्रक्ट भाग ए एव बी के माध्यम से दी जाती है। यह सन्दर्भ ग्रन्थ मासिक पत्रिका के रूप में मिशिगन विश्वविद्यालय यू एस ए से निकलता है। इस के अन्दर विषय का वर्गीकरण के अनुसार किए गए शोध कार्यों का सार सक्षेप भी अंकित होता हैं।

पुस्तक चयन मे सहायता

पुस्तकालय में प्राध्यापकों द्वारा श्रेष्ठ साहित्य को क्रय करने की संस्तुति देने हेतु उन्हे निम्न प्रकार का सन्दर्भ सहायता पुस्तकालय में उपलब्ध कराई जाती है।

(क) विषयवार पुस्तक विक्रेताओं के नवीनतम केटलाग पुस्तक चयन हेतु सम्बद्ध विभागो को भेजे जाते हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संम्पादकीय—

पंजाब में आर्य समाज का प्रचार कैसे हो ?

हमारे सामने इस समय सबसे अधिक ज्वलन्त समस्या यही है कि पंजाब में आर्य समाज का प्रचार कैसे हो ? हम बड़े-बड़े उत्सव किया करते थे, इसके साथ प्रभात फेरियां भी निकाली जाती थी और बड़े-बड़े नगरों में शोभा यात्राए भी निकलती थीं। आर्य समाज के प्रचार का एक ढंग था। कोई समय यह भी था जब लाहौर में आर्य समाज के वार्षिकोत्सवों पर हजारों लोग बाहर से आया करते थे और वह उत्सव एक प्रकार से आर्यों के पारस्परिक मिलन का एक साधन बन जाते थे। इस कारण आर्य समाज का संगठन भी बहुत शक्तिशाली था। प्रत्येक आर्य समाजी दूसरे आर्य समाजी को अपने ही परिवार का एक अंग समझता था। आज वह समय एक स्वप्न बन गया है। परिस्थितियां इतनी बदल गई है कि यह भी समझ में नहीं आता कि हम प्रचार कैसे करें। अब पहले की तरह प्रभात फेरी व शोभा यात्रा का आयोजन नहीं हो सकता। न ही इस प्रकार के बड़े-बड़े उत्सव हो सकते हैं। अब जो कुछ भी हो सकता है वह आर्य समाज मन्दिरों के अन्दर ही बैठकर हो सकता है।

अत: इन नई परिस्थितियों को देखते हुए आर्य समाज की प्रचार प्रणाली पर भी हमें नये सिरे से सोचना पड़ेगा। हमें यह भी समझ लेना चाहिए कि आर्य समाज ऐसी संस्था नहीं, जो हाथ पर हाथ रखे बैठी रहे। उसका सारा जीवन ही संघर्ष में रहा है। आज की परिस्थितियां उसके लिए एक और चुनौती बनकर आई हैं। कोई और संस्था हो तो सम्भव है मैदान छोड़ कर भाग जाए। आर्य समाज तो नहीं भाग सकता, उसे कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा। यह इसलिए भी आवश्यक है कि धर्म प्रचार के साथ-साथ समाज द्वारा वर्तमान परिस्थितियों और आने वाले भविष्य के विषय में भी जनता को सारी जानकारी दी जावे एवं उचित मार्ग दर्शन किया जाए। कई दूसरी धार्मिक सस्थाएं ऐसी हैं जो केवल मन्दिरों में जाकर घण्टा बजाना ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझती है। आर्य समाज तो बड़े से बड़े संकट में भी अपने कर्त्तव्यों का पालन करता रहा हैं उसका सारा इतिहास ही संघर्ष का इतिहास है। इसलिए आज जबकि कुछ चुनौतियां उसके सामने आ खड़ी हुई हैं वह मैदान छोड़कर भाग नहीं सकता बल्कि उन चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने आपको भी तैयार करें व अपने देशवासियों को भी ?

प्रश्न पैदा होता है कि अब हम क्या करें ? पुराने ढंग से उत्सव नहीं कर सकते। जनता तक आर्य समाज का सन्देश कैसे पहुंचाया जाए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों से मेरा यह निवेदन है कि अब अपनी प्रचार प्रणाली को बदल दें। दो बातों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। एक यह कि सब आर्यसमाजें समय-2 पर अपने मन्दिरों में यज्ञ करवाती रहें। उसमें सम्मिलित होने का विधिवत निमन्त्रण अपने क्षेत्र के सभी बन्धुओं को दिया जाए। यह आवश्यक नहीं कि केवल आर्य समाजी ही उसमें बुलाए जाएं। सनातन धर्मी जैनी व अन्य सम्प्रदाय के लोग भी बुलाए जा सकते हैं। मैंने देखा है कि कई सिख भी यज्ञ में आहुति डालना चाहते हैं। कहते हैं कि श्री गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज ने नैनादेवी पर 4 मास तक यज्ञ कराया था, इसलिए किसी सिख को यज्ञ पर आपत्ति नहीं हो सकती। यदि कोई करे तो उसे सरलता से समझाया जा सकता है कि यदि गुरु गोविन्दसिंहजी यज्ञ करा सकते थे तो किसी भी सिख भाई को उस पर आपत्ति क्यों हो सकती है। हमें अपने ही हरिजन या दलित भाईयों को विशेष रूप से यज्ञ में निमन्त्रित करना चाहिए। आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो उन्हें अपने साथ रख सकती है। इसलिए जब यज्ञादि हो तो उन्हें अवश्य बुलाया जाए।

दूसरा कार्यक्रम जो आर्य समाजें प्रारम्भ कर सकती हैं वह कथाएं हैं। विद्वान् पण्डितों को बुलाकर कथा कराई जाए। कथा प्राय: सायं काल के समय होती हैं। जब लोग अपने शेष कार्यों से निवृत्त हो जाते हैं वे सरलता से कथाओं में भाग ले सकते हैं। परन्तु यहां भी सब को प्रेम पूर्वक निमन्त्रित करना आवश्यक है।

तीसरा कार्यक्रम यह है कि विद्वान् उपदेशकों को बुलाकर भिन्न-भिन्न समस्याओं के सम्बन्ध में उनके उपदेश कराए जाएं, मेरा यह सब कुछ लिखने का अभिप्राय: केवल यह बताना है कि आर्य समाज को जनता के साथ अपना सम्पर्क किसी भी स्थिति में समाप्त नहीं होने देना चाहिए। किसी न किसी रूप में उसे बनाए रखना चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा कई विद्वान् उपदेशको को सभा मे लाने का प्रयास कर रही है। यह केवल इसलिए कि हम चाहते हैं कि किसी न किसी प्रकार पंजाब में आर्य समाज का प्रचार होता रहे। यह उसी स्थिति में सम्भव हैं यदि हमें आर्य समाजों का सहयोग मिलता रहे। सभी अपनी ओर से जो कुछ कर रही है वह करती रहेगी। आर्य समाजों को भी अपने कर्त्तव्य को समझते हुए ऋषि दयानन्द की जलाई हुई ज्योति को प्रज्जवलित रखना चाहिए।

—वीरेन्द्र

चौधरी बलबीर सिंह का बलिदान

आर्य समाज ने अपना एक और हीरा खो दिया। अपने गुरु व आचार्यों के पद चिन्हों पर चलते हुए चौधरी बलबीर सिंह जी ने अपना बलिदान दे दिया मैंने अपने जीवन में कई निर्भीक व्यक्ति देखे हैं परन्तु चौधरी बलबीर सिंह जैसे निर्भीक व्यक्ति बहुत कम देखे हैं। वह एक कट्टर आर्य समाजी थे और इस पर गर्व किया करते थे। होशियारपुर में वह आर्य समाज के सर्वसर्वा थे। डी. ए. वी. स्कूल की प्रबन्ध कर्तृ सभा के प्रधान थे। यह जानते हुए भी कि जो कुछ वह कहते हैं उसकी किसी समय बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी वह सब कुछ कह जाते थे। और अकाली साम्प्रदायिकता के वह कट्टर विरोधी थे। जो कुछ कहते थे सबके सामने कहते थे और कई बार यह भी कह देते थे, कि अकालियों ने मेरा जो कुछ बिगाड़ना है बिगाड़ कर देख लें। एक बार यह भी कहने लगे कि मैं आर्य समाजी हूं और आर्य समाजियों की आत्मा कभी मरा नहीं करती।

उनके जाने से पंजाब में हिन्दुओं को विशेषकर आर्य समाज को जो क्षति पहुंची है उसका अनुमान लगाना कठिन है। ऐसे कर्मठ आजकल बहुत कम मिलते हैं अपने धर्म का प्रचार करते हुए साथ ही समाज के पीड़ित वर्ग के भी वह बहुत बड़े सहायक थे। कहा करते थे कि धार्मिक विचारों से वह आर्य समाजी है परन्तु राजनैतिक व आर्थिक विचारों से वह समाजवादी है। बहुत देर तक वह सोशलिस्ट पार्टी के सदस्य भी रहे हैं। उनकी हत्या तो कर दी गई। मैं उसे उनका बलिदान कहता हूं। आर्य समाज की परम्पराओ के अनुसार उन्होंने अपना सर्वस्व अपने देश व धर्म पर निछावर कर दिया वह आर्य समाज की प्रसिद्ध नेता व सेविका और पंजाब आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीमती डा. विद्यावती जी के भाई थे। मैं समस्त संतप्त परिवार को अपनी व अपनी सभा की ओर से अपनी श्रद्धांजलि व सान्तवना संदेश प्रस्तुत करता हूं। परम-पिता परमात्मा से यही प्रार्थना हैं कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उनके शोक संतप्त परिवार को यह शक्ति प्रदान करे कि वह इस असह्य दुःख को सह सके।

—वीरेन्द्र

आर्य प्रतिनिधि सभा के नए महोपदेशक

पंजाब की आर्य जनता को सूचित करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि हमने अपनी सभा के लिए 11 भाषाओं के प्रसिद्ध विद्वान् व आर्य मुसाफिर कुंवर सुखलाल जी के छोटे भ्राता श्री आचार्य शिवराज जी शास्त्री जी मौलवी फाज़िल की सेवाएं प्राप्त कर ली हैं। उनका आर्य समाजों से बहुत पुराना अनुभव व सम्पर्क है। वे उच्चकोटि के वक्ता व लेखक हैं। हमारी प्रचार व्यवस्था में इस समय तक जो भी कमी रही है उसे हम अब कुछ सीमा तक ठीक कर सकेंगे। जो-जो आर्य समाजें उनकी सेवाओं से लाभ उठाना चाहती है वह सभा के महामन्त्री व वेद प्रचार अधिष्ठाता को सूचित कर दें ताकि उसके अनुसार अगला कार्यक्रम बनाया जा सके।

—वीरेन्द्र

—श्री बलभद्र कुमार जी हूजा कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का

गुरुकुल काँगड़ी के दीक्षान्त समारोह पर स्वागत भाषण

(गतांक से आगे)

अध्यक्ष जी !

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्ष श्रीमती माधुरी शाह भी इस वर्ष गुरुकुल में पधारीं। विश्वविद्यालय द्वारा संचालित योजनाओं और शैक्षिक गतिविधियों को देखकर उन्होंने सन्तोष व्यक्त किया। परिसर में शान्ति, व्यवस्था, अनुशासन तथा अध्ययन-अध्यापन का माहौल देखकर उन्होंने आचार्यों और अन्तेवासियों को बधाई दी। उन्होंने आशा प्रकट की, जहां इस विश्वविद्यालय में वैदिक साहित्य, आर्य सिद्धान्त तथा प्राचीन भारतीय विद्याओं का उच्चतर अध्ययन शोध और प्रसार का कार्य सम्पन्न हो, वहां इसमें संगणक विज्ञान जैसे आधुनिक पाठ्यक्रमों का समावेश भी होना चाहिए। विश्वविद्यालय को एक कम्प्यूटर देने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर चूंकि यह मेरा अन्तिम प्रतिवेदन होगा, इसलिए मैं विश्वविद्यालय के आचार्यों, ब्रह्मचारियों तथा कर्मचारियों से भी कुछ कहना चाहूंगा। गुरुदेव महर्षि विरजानन्द जी ने जैसे महर्षि दयानन्द से गुरुदक्षिणा मांगी थी, इस अवसर पर मैं श्रद्धानन्द जी का नाम लेकर आप से कुलदक्षिणा की मांग करता हूं। आज आप स्तर, वेतनमान तथा अन्य सुविधाओं की दृष्टि से देश के दूसरे विश्वविद्यालयों के समकक्ष खड़े हैं। मैं चाहूंगा कि आप वर्ष में कम से कम 250 दिन तथा एक सप्ताह में चालीस घण्टे विश्वविद्यालय के लिए कार्य करने का व्रत लें। गुरुकुल के कर्मचारी आर्य समाज के कोष में अपनी आय का एक प्रतिशत दें तथा जन-साधारण तक कल्याणी वेदवाणी का सन्देश पहुंचाएं। सत्य, ऋत, दीक्षा, दृढ संकल्प, तप, आस्तिकता और यज्ञ का व्रत लेकर मन, कर्म और विचार से समाज और राष्ट्र की सेवा करें तभी गुरुकुल शब्द अपनी सार्थकता प्रमाणित कर सकेगा। मुझे सन्तोष तब होगा जब यहां का प्रत्येक आचार्य तथा शिष्य संस्कृत में संभाषण करेगा, अंग्रेजी तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में दक्षता प्राप्त करेगा तथा संस्कृत का सन्देश पूर्वोत्तर भारत में तथा विदेशों में विदेशी भाषाओं के माध्यम से पहुंचाएगा। दयानन्द की व्याख्याएं विदेशी भाषाओं में करें, आप लोगों को यह अन्तर्राष्ट्रीय चुनौती है।

मान्यवर !

यह युवा वर्ष है। हम सचेष्ट हैं कि हमारे विद्यार्थी सामूहिक उत्साह के साथ खेल के मैदान में भी उतरें। आस्ट्रेलिया में विश्व क्रिकेट चैम्पियन मैच जीतकर तथा शारजहां में राथमैन्स कप जीतकर भारत के खिलाड़ियों ने युवा वर्ष का मंगलाचरण किया है। वे हमारे बधाई के पात्र हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे विद्यार्थी भी कपिलदेव और गावस्कर से प्रेरणा लेते हुए जीवन के मैदान में अच्छे खिलाड़ियों की तरह उतरेंगे तथा भावात्मक संगठन और शारीरिक सन्तुलन का परिचय देंगे।

इसी सन्दर्भ में विवेकानन्द जयन्ती पर हमने युवा वर्ष समारोह का आयोजन किया जिसमें विश्वविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने नगर की शिक्षण संस्थाओं के प्रतिनिधि कलाकारों के साथ अनेक रोचक कार्यक्रम दिए। आकाशवाणी नजीबाबाद के अधिकारी और मुख्य रूप से युवा कार्यक्रम के संचालक श्री हिन्दवान धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस कार्यक्रम का आकाशवाणी से प्रसारण किया। वेद मन्दिर में पण्डित सत्यव्रत जी की सन्निधि में आकाशवाणी ने भक्ति संगीत सम्मेलन का भी आयोजन किया। इसकी व्यवस्था के लिए श्री कमलेश नैथानी को मैं आशीर्वाद देता हूं।

आचार्यों और ब्रह्मचारियों के टूटते हुए सम्बन्धों को देखकर हमारा चिन्तित होना स्वाभाविक है। गुरुकुलीय शिक्षा का 'यहसम्बन्ध' दृढ़ अंग है। ब्रह्मचारी जहां राष्ट्र की मूल्यवान निधि है, आचार्य वहां उसका निष्काम रक्षक। हमारे कुल का मूल केन्द्र ब्रह्मचारी ही तो है। वह इस आश्रम का अपरिहार्य अंग है। उस की शिक्षा-दीक्षा सेवा तथा पोषण सर्वस्व शिशु की तरह आचार्यों को करना है, तभी ब्रह्मचारी आचार्य के अनुकूल कर्म करने वाला बनेगा, तभी कुल-माता के समान वह सद्भाव रखेगा। यदि वह आचार्य तथा कुल का, अनुकूली नहीं बन सका तो इसे आचार्य की विफलता मानिए।

गुरुकुल के बहुत से हितैषी गुरुकुल की भावी रूप-रेखा के बारे में यदा-कदा यत्र-तत्र अपने विचार प्रकट करते रहते हैं। मैं उन्हें बड़े ध्यान से पढ़ता हूं। कईयों का विचार है कि गुरुकुल की नींव ब्रह्मचारी है। मैं विनम्रता पूर्वक इससे मतभेद रखता हूं। गुरुकुल की नींव है गुरुजन। जैसे गुरुजन होंगे, वैसे ही शिष्य होंगे और यह भी कि किसी भी संस्था को उभारने, खड़ा करने या पुनर्जीवित करने के लिए केवल भाषणों या लेखों से ही काम नहीं चलेगा। किसी इमारत को खड़ा करने के लिए ईंट-पत्थर, सीमेंट इत्यादि इकट्ठा करना पड़ता है, व्यावहारिक साधन जुटाने पड़ते हैं जिससे कि संस्था को चलाने के लिए जिम्मेवार अधिकारी, कर्मचारी, गुरुजन दत्तचित्त होकर, मनोयोग से अपने-अपने कर्त्तव्यों का पालन करें।

जैसे कि मैंने ऊपर कहा है सि प्रत्येक शिक्षा-संस्था की नींव गुरुजन होते हैं। इसके लिए योग्य गुरुजन का चुनाव हो और जो गुरुजन संस्था में विद्यमान हों उनके लिए पुनर्शिक्षण की व्यवस्था हो। इस हेतु गुरुजन एवं कर्मचारियों को यथेष्ठ वेतन एवं श्रद्धा देनी पड़ेगी।

जहां तक विश्वविद्यालय का सम्बन्ध है, वेतनों के सम्बन्ध में तो अब कोई चिन्ता की बात नहीं, लेकिन विद्यालय विभाग में गुरुजनों को यथोचित वेतन प्राप्त नहीं हो रहे हैं। जब तक इसका प्रबन्ध नहीं होता, सुयोग्य शिक्षक कैसे उपलब्ध होंगे और विद्यार्थियों का स्तर कैसे ऊंचा होगा ?

आज का विद्यार्थी हमारे जमाने के विद्यार्थी से कहीं अधिक सचेत एवं जागरूक है। वह अपना भविष्य बनाने के लिए हमारे पास आता है, उसकी शिक्षा-दीक्षा के लिए हम उत्तरदायी हैं। हम स्वयं भी सचेष्ट एवं जागरूक हों और आधुनिक विज्ञान द्वारा उपलब्ध साधनों का पूर्ण उपयोग करें जिससे कि हमारे ब्रह्मचारी किसी भी संस्था के विद्यार्थियों के समकक्ष खड़े हो सकें।

आचार्यों तथा ब्रह्मचारियों !

प्रतिज्ञा करो आप लोग अपने देश तथा अपने कुल की गौरवमयी परम्पराओं का, ऋषि-मुनियों की विचार-सरणियों का, राष्ट्रीय और सामाजिक मूल्यों का तथा स्वकीय विकास के साथ मानव-मात्र के कल्याण और सेवा का व्रत कभी नहीं तोड़ोगे। आगामी वर्ष हरिद्वार में कुम्भ हो रहा है। स्वामी जी ने हरिद्वार में कुम्भ पर ही पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराई थी। देश में अभी भी पाखण्ड और अज्ञान का कुशासन व्याप्त है। कितना ही अच्छा हो कि गुरुकुल के आचार्य तथा ब्रह्मचारी और सार्वदेशिक सभा के अधिकारी इस अवसर पर एक वेद-विज्ञान शिविर लगाकर देव दयानन्द की पताका की पुनः प्रतिष्ठा करें। साथ में समाज कल्याण और सम्पूर्ण उत्थान हेतु अपने समीपस्थ क्षेत्रों नजीबाबाद और सहारनपुर की सेवा का व्रत लें।

आपको यह भी स्मरणीय होगा कि 1981 में हमें तीन वर्ष के लिए अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ की अस्थायी मान्यता प्राप्त हुई थी। अब उसकी अवधि दो वर्ष और बढ़ा दी गई है। आगामी सत्र में उनकी जांच समिति विश्वविद्यालय के मूल्यांकन हेतु इस आशय से आएगी कि इसे स्थायी मान्यता दी जाए अथवा नहीं। आशा है आप गुरुजन, ब्रह्मचारीगण तथा कर्मचारीगण तथा इस परीक्षा में यश के साथ उत्तीर्ण होंगे।

मुझे यह देखकर प्रसन्नता होती है कि हमारे आचार्यकुल ने करवट बदली है और अब इसके कतिपय सदस्य जागरूक होकर मनोयोग से पुनर्निर्माण की दिशा में कार्य करने लगे हैं। उनके लिए मेरे आशीर्वाद। शेष प्रभु इच्छा से इसके लिए तैयार होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। उन की सद्बुद्धि के लिए परमेश्वर से प्रार्थना। मैं चाहूंगा कि गुरुकुल अब फिर रोगग्रस्त न हो, इस कुल के सभी लोग हृष्ट-पुष्ट हों।

विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्।

देवियो और सज्जनों !

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि कि विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद् ने श्री सत्यदेव भारद्वाज जी को विद्यामार्तण्ड की मानद उपाधि से अलंकृत करने का अनुमोदन किया है। मैं उन्हें विद्यामार्तण्ड की उपाधि प्रदान करने की घोषणा करता हूं।

मैं एक बार फिर गुरुकुल की गत वर्ष की उपलब्धियों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, आकाशवाणी नजीबाबाद, विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद् कार्य परिषद् तथा शिक्षा-पटल के मान्य सदस्यगण के प्रति आभार प्रकट करना चाहूंगा जिन्होंने समय 2 पर हमें अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया तथा हमारा मार्ग प्रदर्शन किया। इसके साथ ही मैं स्थानीय प्रशासन को भी धन्यवाद देना चाहूंगा जिन्होंने यहां व्यवस्था बनाए रखने में अपना सहयोग दिया।

मैं इस अवसर पर अपने आचार्यों, ब्रह्मचारियों तथा कर्मचारियों को भी साधुवाद देना चाहूंगा, जिन्होंने मेहनत और लग्न से, ये सब उपलब्धियां प्राप्त कीं।

मान्यवर भारद्वाज जी !

इस वर्ष पी. एच. डी. की 8, एम. ए. की 50, एम. एस. सी. की 18, बी. एस. सी. की 30 तथा अलंकार की 13 उपाधियां प्रदान की गई हैं।

अब आप से निवेदन है कि नव-स्नातकों को आशीर्वाद देने की कृपा करें।

जालन्धर के दो स्कूल

जालन्धर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित दो स्कूल है। एक लड़कों का आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजां में, दूसरा लड़कियों का आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ में, कुछ समय हुआ जब आर्य हाई स्कूल ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को पांच हजार रुपए का दान दिया था। अब आर्य कन्या हाई स्कूल ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान को ग्यारह हजार रुपए की थैली भेंट की है। किसी दूसरी शिक्षा संस्था ने सभा के लिए इतना धन न दिया होगा, जितना इस कन्या हाई स्कूल ने दिया है। इसके लिए मैं आर्य कन्या हाई स्कूल की प्रबन्ध कर्त्री सभा का और विशेषकर इसके प्रधान श्री कर्मचन्द जी माली, इसके मैनेजर श्री रामलुभाया नन्दा जी और इसकी प्रधानाचार्य श्रीमती हर्ष अरोड़ा का विशेष रूप से धन्यवाद करना चाहता हूं। इन्होंने पंजाब सभा से सम्बन्धित दूसरी शिक्षा संस्थाओं के लिए एक बहुत ही अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है। यदि सब शिक्षा संस्थाएं अपने 2 कर्त्तव्य को इसी तरह पूरा करती जाएं तो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की आर्थिक समस्याओं का बहुत कुछ समाधान हो जाएगा।

आर्य हाई स्कूल और आर्य कन्या हाई स्कूल, यह कोई बहुत बड़ी संस्थाएं तो नहीं हैं। फिर भी इन्होंने सभा के लिए इतना कुछ किया है, वह अत्यन्त ही सराहनीय है और इसके लिए मैं इन दोनों संस्थाओं का विशेषकर आर्य कन्या हाई स्कूल का आभारी है और उनका धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने अपने कर्त्तव्य को समझते हुए वह कुछ कर दिखाया है जो पंजाब की बड़ी 2 आर्य समाजें भी नहीं कर सकीं। मेरी तो परम पिता परमात्मा से यह प्रार्थना है कि वह इन बड़ी 2 आर्य समाजों के अधिकारियों को कुछ बुद्धि दे और प्रेरणा दे कि वह हमारी इन दो शिक्षा संस्थाओं से कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकें और आर्य समाज के प्रति उनका जो कर्त्तव्य है उसे पूरा कर सकें।

--वीरेन्द्र

तपोवन में आवास सुविधा बढ़ाने के लिए एक लाख रुपए के दान के वचन प्राप्त

देहरादून, निगत 5 मई—वैदिक साधन आश्रम तपोवन में बृहद् यज्ञ की पूर्णाहुति के दिन दिल्ली से पधारे हुए आर्य नेता मलिक रामलाल जी ने अपने मित्रों और सहयोगियों को आह्वान किया कि वे आश्रम में आवास की कठिनाई को कम करने के लिए एक-एक कमरा बनवाकर देने के लिए दान करें। श्री मलिक की प्रेरणा से उनके मित्र श्री रामभज बत्रा ने 25000 रुपये दान करने की घोषणा की। अन्य कई मित्रों ने भी साढ़े बारह हजार रुपये एक कमरे के हिसाब से कमरे बनवाने की घोषणा की। छोटी राशियों की भी घोषणाएं हुईं। तपोवन ट्रस्ट के मन्त्री श्री देवदत्त जी बाली ने बताया कि इस योजना पर कुल सात लाख रुपये व्यय का अनुमान है। सोसायटी को दिया जाने वाला दान आय कर अधिनियम की धारा 80 ग के अन्तर्गत कर मुक्त है। दानी इसका लाभ उठा सकते हैं।

तपोवन में बृहद् यज्ञ आश्रम के आजीवन संरक्षक सदस्य महात्मा दयानन्द जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती, स्वामी सत्यपति जी, महात्मा आर्य भिक्षु जी, स्वामी ओमानन्द जी और आचार्य रामप्रसाद जी वेदालंकार ने इस सत्र में प्रवचनों द्वारा श्रोताओं को उपकृत किया। योग साधना का निर्देशन स्वामी सत्यपति जी के अधीन रहा।

तपोवन विद्या निकेतन के बच्चों ने वेद मन्त्र उच्चारण, संस्कृत श्लोक-पाठ, गीता के श्लोकों का पाठ तथा साथ-साथ उनका अंग्रेजी रूपान्तर पाठ भी प्रस्तुत किया। उपस्थित जनों ने प्रसन्न होकर विद्यालय के लिए 500) रुपये का दान दिया।

इस वर्ष बाहर से पधारने वाले श्रद्धालु जनों की संख्या अधिक रही। दिल्ली के आर्यजन मलिक रामलाल जी की प्रेरणा से तीन विशेष बसें लेकर पधारे।

—देवदत्त बाली

आर्य मर्यादा के नए ग्राहक

31 मार्च के अंक में आर्य मर्यादा के 30 नए ग्राहकों की सूची पृष्ठ 7 पर प्रकाशित हुई थी उससे आगे लुधियाना के शेष तथा जिला जालन्धर के नए ग्राहकों की सूची नीचे दी जा रही है। जालन्धर के ग्राहक बनाने मे हमें श्री इन्द्रसेन जी मलिक जालन्धर छावनी वालों का बहुत सहयोग मिला है। हम उनके आभारी हैं यदि इसी प्रकार आर्य बन्धु भी सहयोग दें तो ग्राहक संख्या बहुत बढ़ सकती है—

सूची निम्न प्रकार है—

31. ओम् प्रकाश जी सैनी, 32 श्रीमती आशापुरी, 33, श्रीमती हरबंश कौर, 34, कुमारी किरणजीत की, 35. श्रीमती रेणु सुदेश बाली, 36. श्रीमती उर्मिला खरबन्दा, 37. कुमारी मनप्रीत जी, 38. श्रीमती कृष्णा खोसला, 39. श्रीमती सतीश शर्मा।

जिला जालन्धर से

40. श्री इन्द्रसेन जी मलिक (छावनी), 41. श्री मधु सूदनलाल सेठी, 42. श्री चन्द्र प्रकाश जी गुप्ता, 43, श्री जवाहरलाल महाजन, 44. श्री दिनेश-चन्द्र ओहरी, 45. श्री मदनलाल सभ्रवाल, 46, श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा, 47. आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल करतारपुर, 48. कुमारी रमन चावला जी (करतारपुर), 49. आर्य माडल स्कूल करतारपुर, 50. श्री डा. श्रीचन्द जी आनन्द (करतारपुर), 51, श्री यशफूल चन्द्र जी (करतारपुर) 52. श्री ओम् प्रकाश प्रेमी (जालन्धर), 53. श्री पं. वेद प्रकाश जी, 54. श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा, 55. श्री सुरेश भाटिया जी, 56. श्री चिरंजीलाल जी, 57. श्री मेहता इलैक्ट्रीकल स्टोर, 58. राजन इण्डस्ट्रीज, 59. के. राज एण्ड कम्पनी, 60, श्री तिलक जी आर्य।

पादरी पर धोखाधड़ी का आरोप

केन्द्रीय जांच ब्यूरो ने फादर इगनेशियम नाम के एक पादरी के खिलाफ भारतीय राज्य व्यापार निगम से करोड़ों रुपयों की धोखाधड़ी करने का एक मामला दर्ज किया है। पिछले कुछ वर्षों में पादरियों पर धोखाधड़ी के इतने अधिक मामले दर्ज हुए हैं कि लोगों को अब ईमानदार पादरी भी धोखेबाज लगने लगे हैं। हर दो-तीन महीने बाद एक न एक ऐसा मामला सामने आ ही जाता है।

फादर इगनेशियम तमिल नाडु के सेंट एंथोनी गिल्ड से सम्बन्धित हैं। ऐसा कहा जाता है कि 1979 में उन्हें फेंसिसियन आर्डर के अन्तर्गत मुअत्तल किया था। उन पर ताजा आरोप यह है कि उन्होंने अब्दुल कादिर नाम के एक व्यक्ति और उसके बारह साथियों के साथ साजिश करके 25000 मीट्रिक टन आयातित सीमेंट केरल के विभिन्न इलाकों में काला बाजार में बेचा।

केन्द्रीय जांच ब्यूरो के अनुसार फादर इगनेशियम ने जुलाई 1983 में नयी दिल्ली स्थित राज्य व्यापार निगम के कार्यालय में 20,002 मीट्रिक टन आयातित सिमेंट दिए जाने का आवेदन दिया था। आवेदन पत्र में उन्होंने यह कहा था कि इस सीमेंट का उपयोग माधवराम नामक स्थान में गरीबों के लिए 300 मकान बनाने के लिए चाहिए। आरोप है कि उन्हें राज्य व्यापार निगम से सिमेंट प्राप्त हुआ उसे इन लोगों ने केरल के विभिन्न स्थानों पर गैर कानूनी ढंग से काला बाजार में बेच दिया।

जैसा कि हम ऊपर बता आए हैं, यह पहला मौका नहीं है, जब एक भारतीय पादरी ने विदेशों से प्राप्त धन राशि का उपयोग सेवा कार्यों के लिए न करके, अपने को अमीर बनाने के लिए किया है, चूंकि ऐसे अपराधों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है, इसलिए भारत सरकार को चाहिए कि विदेशों से आने वाली धन राशि, जिसका मुख्य उद्देश्य हिन्दुओं का धर्मान्तरण करना होता है पर या तो पूरी तरह रोक लगा दे, या उसे भ्रष्ट पादरियों के हाथों में जाने से रोके।

अमृतसर के शुद्धि समाचार

आचार्य देव प्रकाश धर्म प्रचार समिति जो केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर का एक उप विभाग है के द्वारा लल्लों मुसलमानों की शुद्धि की गई।

ग्राम तलवंडी घुमन (जि. अमृतसर) में दिनांक 17-4-85 को 9 मुसलमानों परिवारों के पच्चास सदस्यों की शुद्धि की गई।

—नन्दकिशोर महामन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के दीक्षान्त समारोह पर

श्री आर्यरत्न पं. सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार का दीक्षान्त भाषण

(गतांक से आगे)

निरुक्त में महर्षि यास्क ने जो एक पारसी ऋषि थे, हमें परमात्मा के दो विशेष वैदिक नामों का परिचय दिया है—प्रथम 'राष्ट्री' और द्वितीय अर्य'। ब्रह्माण्ड राष्ट्र का राष्ट्रपति राष्ट्री परमात्मा है और 'अर्य' अर्थात् संसार का स्वामी या मालिक। 'अर्यस्यापत्यं आर्यः' अर्थात् ईश्वर पुत्र हम 'अर्य' परमात्मा के पुत्र हैं। इसी से आर्य मानव हैं। सारा संसार हमारे पिता का राष्ट्र है, इसी से सब संसार हमारा राष्ट्र है। उसके उत्तराधिकारी हम 'राष्ट्रीय आर्य' हैं। इसी से कहता हूं—

'श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः।' 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।'

आर्यत्व में भद्रता है, उच्च चारित्र्य है,, नोबेलटी है, संसार को इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है। भौतिक विज्ञान की तरक्की ने लौकिक अभ्युदय में महान् सिद्धियों को प्राप्त करते हुए अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त किया है, परन्तु आर्यत्व या निःश्रेयस को नहीं दिया है। यही अब भारतीय संस्कृति में पोषित शिक्षणालयों से अपेक्षित है।

इस समय हमने शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति के मार्ग पर चलना है। हमारे कुछ स्नातकों को जर्मनी, फ्रांस, इटली आदि प्रदेशों में मान्यता मिली थी, जिससे स्नातक बनते के बाद कुछ स्नातकों ने सीधे ही उन प्रदेशों के विश्वविद्यालयों से उच्चतम उपाधियां प्राप्त की थीं। अब हमें भारत सरकार से मान्यता प्राप्त होने से दूसरे देशों में भी मान्यता प्राप्त हो रही है। इसमें अधिकारी वर्ग धन्यवाद के पात्र हैं। हमारा उद्देश्य महान् होना चाहिए। हमारा विश्वविद्यालय 'सार्वभौम आर्य विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी' के रूप में पनपे। संसार के सब देशों के विश्वविद्यालयों से हमारा सम्पर्क बढ़े, उनसे सहायता प्राप्त करने में कभी संकोच न होना चाहिए। संसार की भिन्न-भिन्न राज्य संस्थाओं और राज्याधिकारियों को भी सम्मानित कर उनसे सब तरह की सहायता लेनी चाहिए। प्रत्येक देश की अपनी विशाल शाला (विंग)हो, जिसमें उस देश की सर्वोत्कृष्टता को ग्रहण करने में कभी संकोच न हो। उनकी भाषा, दर्शन, विज्ञान आदि हमें सहज में प्राप्त होते हों। संसार के बड़े परोपकार कृत्यों को करने वाले संस्थानों (फाउंडेशन) से सम्पर्क कर उनसे विशिष्ट आर्थिक सहायता भी हमें लेनी चाहिए, क्योंकि हमारे उद्देश्यों में 'सारे संसार का उपकार करना' भी हमारा उद्देश्य है। इसमें संक्षेप से उन्नति पथ की तरफ आपका ध्यान खींच रहा हूं। आशा है, आर्य समाज तथा गुरुकुल के अधिकारीगण इस पर विशेष ध्यान देंगे।

जब हम गुरुकुल में पढ़ते थे तो जामिया मिलियां, देव बन्द आदि विद्यालयों के विद्यार्थी हमारे यहां आते थे, हम उनके स्थानों पर जाते थे, आपस में वाग्प्रति-योगिताएं होती थीं, कभी कोई प्रथम होता था कभी कोई। कभी कोई वैमनस्य पैदा नहीं हुआ। क्या यह प्रथा अब अपनी विशालता को पनपा नहीं सकती? हमने समन्वयात्मक धर्म, संस्कृति, सभ्यता आदि को सार्वभौम दृष्टि से पैदा करना है—'एष कामः' एष निर्देशः, एष सन्देश, एषा वैदिकी उपनिषद्।'

प्रिय स्नेहपूर्ण नवस्नातको! अन्त में "सत्यं वद", "धर्मं चर,, के ऋषियों के सनातन शिक्षा आदेश या दीक्षा की तरफ ध्यान दिलाते हुए यह कहकर समाप्त करता हूं कि 'सत्य स्वरूप परमात्मा के विषय में प्रवचन करना और चिन्तन करना, सत्य के दर्शन से धर्म के स्वरूप को समझते हुए उससे कभी निरपेक्ष न होना परन्तु सदा उस पर आचरण करते रहना' यही 'सत्यं शिवं सुन्दरं' का प्रशस्त मार्ग? । यह तुम्हें सदा प्राप्त होता रहे। अपने प्रेम, सद्भावना, सहृदयता तथा शिक्षा-संस्थान (गुरुकुल) की उन्नति में सदा अग्रसर रहने में सहायक होना—यह कहते हुए तुम्हारा बहुत सस्नेह अभिनन्दन करता हूं। गुरुकुल विश्वविद्यालय के सब अधिकारी वर्ग तथा गुरुजनों के सामने नतमस्तक होकर अपनी श्रद्धा के सुमन उपस्थित करता हूं। स्वामी श्रद्धानन्द जी की आत्म ज्योति आपको सदा प्रकाश देती रहे। प्रभु का सब पर सदा वरद हस्त बना रहे।

हिमालय की सुपुत्री पार्वती कहूं या गंगा माता से कुलमाता को याद करूं—कुछ भी हो—अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए कहना चाहूंगा—

जन्म यहीं मृत्यु यहीं खेलूं यहीं आ-आकर।
हंसना रोना हो यहीं माता तेरे चरणों में॥

समाप्त करने से पूर्व 'कुलमाता की पताका' पर ध्यान दिलाता हूं। यह सूर्य ज्योति से उज्ज्वलित है। यही 'ओम्' की सच्ची ध्वजा है—'सूर्य मगन्म ज्योति-रुत्तमम्।' इसका संदेश भी सामने रखो। इसमें श्रद्धा प्राप्त करो, सविता या सूर्यदेव के गुरुमन्त्र का भी मनन करो। इसे हम 'वेद माता' पुकारते हैं। यही हमारी 'वन्देमातरम्' है।

'श्रद्धया सत्यमाप्यते।' 'सत्यमेव जयते नानृतम्।'
ओ३म् शम्! ओ३म् स्वस्ति! ओम् शान्ति !!!

—

जालन्धर के आर्य बन्धु पं. रमेश से सावधान रहें

मुझे पता चला है कि पण्डित रमेश आर्य चैरीटेबल ट्रस्ट भार्गव नगर जालन्धर के नाम पर कुछ रुपया आर्य समाजों और आर्य बन्धुओं से एकत्रित किया जा रहा है। आर्य समाज का इस चैरीटेबल ट्रस्ट के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। यह किसी एक व्यक्ति ने रुपया बटोरने का ढंग निकाला है। आर्य समाज को लूटने की एक योजना है। हमें किसी ऐसी संस्था या किसी ऐसे व्यक्ति को प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए। यदि आर्य समाज के नाम पर इस प्रकार की संस्थाएं चलती रहीं, तो आर्य समाज का संगठन छिन्न-भिन्न हो जाएगा। इसलिए आप से मेरी प्रार्थना है कि आप अपनी आर्य समाज में यह घोषणा कर दें कि कोई भी आर्य समाज का सदस्य इस चैरीटेबल ट्रस्ट के लिए अपने पास से एक पैसा भी न दे और दूसरों को भी यह कहा जाए कि यह इस ट्रस्ट के लिए कोई राशि न दें, इसका आर्य समाज के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। यह आर्य समाज व आर्य जनता को लूटने का एक षड्यन्त्र है। आशा है आप इस ओर तुरन्त विशेष ध्यान देंगे।

—कमला आर्या—सभा महामन्त्री

मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि यह यज्ञाग्नि अखण्ड रहेगी

जालन्धर एवं पंजाब के सुप्रसिद्ध योगी श्री बाबा मोहनदास जी महाराज ने अपने श्री गुरु रघुनाथ मन्दिर के प्रांगण में निर्माण-संवत्सर की 1६ खम्भों वाली यज्ञशाला का उद्घाटन अपने गुरुवर राजस्थान के महान् सन्त शिरोमणि श्री स्वामी भरतदास जी महाराज (शतायु) के कर-कमलों द्वारा ऋग्वेद पारायण यज्ञ के श्री दिवसीय महान् यज्ञ के आन्याधान द्वारा दिनांक 22 मार्च वर्ष प्रतिपदा को किया। उद्घाटन एवं यज्ञ तथा वेदोपदेश आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री पं राजगुरु जी शर्मा विद्यावाचस्पति के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ बाबा के सैंकड़ो श्रद्धालु सिख एवं हिन्दू परिवारो ने इस यज्ञ मे भाग लिया। नित्यप्रति रात्री को श्री बाबा मोहनदास जी जो कि माने-माने शास्त्रीय संगीतज्ञ एवं भक्ति संगीत के रचियता भी हैं। अपने भक्ति संगीतज्ञ एवं उपदेश द्वारा लोगो को दुर्गुणो के त्याग एवं ईश्वर प्राप्ति हेतु योग एवं भक्ति का अत्यन्त ही मार्मिक एवं मधुर उपदेश भी करते थे।

यज्ञ की पूर्णाहुति का दृश्य अति स्मरणीय था एवं दर्शनीय था। समस्त यजमान पीले वस्त्रो मे परिवार सहित उपस्थित थे। 4-4 फुट के विशाल यज्ञ कुण्ड की धधकती हुई लपटो मे श्री बाबा मोहनदास जी ने यज्ञ की पूर्णाहुति प्रदान की।

श्री ब्रह्मा जी ने यज्ञ प्रेमियो को शुभाशीर्वाद प्रदान कर श्री बाबा मोहनदास जी को यज्ञ की सफलता पर बधाई देते हुए श्रीफल एंव 101 रुपये भेंट किया जिसे स्वीकार करते हुए बाबा जी भावविभोर हो गए तथा अत्यन्त ही मार्मिक दृश्य उपस्थित हो गया, जब बाबा जी की आंखो से प्रेम के आंसुओ की धारा बह निकली। श्री शर्मा जी ने बाबाजी से यज्ञ की दक्षिणा की याद दिलाई तथा कहा कि मुझे यज्ञ की दक्षिणा मे यह वचन दीजिए कि आपके यज्ञ कुण्ड की अग्नि कभी नहीं बुझने देंगे तथा नित्य प्रति यज्ञ करेंगे। बाबा का कण्ठ अवरुद्ध हो गया था अतः उन्होने सजल नेत्रो से हाथ जोड़कर तब तथास्तु मात्र कहा। एवं वैदिक धर्म की महर्षि दयानन्द की जय, वेद भगवान की जय, भारत माता की जय, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी महाराज की जय, योगीराज कृष्णचन्द्र महाराज की जयघोष से वातावरण आनन्दित हो उठा।

आयुर्वैदिक जड़ी-बूटियो एवं पंचगव्य द्वारा निर्मित सोमरस का यज्ञशेष वितरित किया गया।

इस अवसर मे गुरुकुल करतारपुर के आचार्य श्री नरेश जी, गुरुकुल के वेदपाठी ब्रह्मचारी व आचार्य धर्मवीर जी पधारे थे।

बाबा जी ने दूसरे दिन गुरुकुल करतारपुर मे पधार कर गुरुकुल के समस्त ब्रह्मचारियो तथा गुरुकुल परिवार को पूर्ण वस्त्र प्रदान किए एक टीन देसी घृत ब्रह्मचारियो के भोजन हेतु व 5 हजार रुपए भेंट किया।

इस वैदिक यज्ञ मे पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, महामन्त्री बहिन कमला जी आर्या एवं कई आर्य परिवार सम्मिलित हुए। यज्ञ का आयोजन सुप्रसिद्ध आर्य सेवक सेठ श्री चतुर्भुज जी मित्तल के सौजन्य से सफल हुआ जो अद्भुत एवं प्रशंसनीय था।

काश! भारत वर्ष के अन्य महन्त एवं साधु महात्मा भी इस प्रकार आयोजन कर सके व श्री बाबा मोहनदास जी महाराज का अनुकरण कर सके।

—

लुधियाना में चूड़ा कर्म संस्कार

गत दिनो जिला आर्य सभा लुधियाना के प्रधान तथा नगर के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री महेन्द्रपाल जी, वर्मा के पोते श्री ललित कुमार के सुपुत्र श्री सतीश कुमार जी वर्मा का मुण्डन-संस्कार आर्य हाई स्कूल के हाल मे श्री प सुरेन्द्र कुमार जी ने पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कराया। सार्वदेशिक सभा दिल्ली के उपप्रधान श्री सत्यानन्द जी मुन्जाल मालिक हीरोसाईकल, तथा नगर के कई उद्योगपति, धार्मिक नेता, पोलिटीकल नेता मौजूद थे श्री वर्मा जी ने इस शुभ अवसर पर विभिन्न संस्थाओ को ग्यारह हजार रुपए दान देने की घोषणा की और उपस्थित जनता को शानदार भोजन दिया गया।

—आशानन्द आर्य महामन्त्री

(2 पृष्ठ का शेष)

(ख) पुस्तक समीक्षा पत्रिकाए उपलब्ध कराई जाती हैं।

(ग) नवीनतम पुस्तको की प्रदर्शनियो आयोजित की जाती है। पुस्तकालय द्वारा गत एक वर्ष में विभिन्न पुस्तक विक्रेताओ को आमन्त्रित कर तीन पुस्तक प्रदर्शनियो का आयोजन हुआ। इन प्रदर्शनियो के माध्यम से प्राध्यापको द्वारा पुस्तकालय हेतु 2.50 लाख रुपए मूल्य की पुस्तको का अनमोल चयन किया गया।

× विश्व मे प्रकाशित पत्रिका साहित्य की जानकारी ●

विश्वविद्यालय के प्राध्यापको को विश्व मे प्रकाशित उनके विषय से सम्बद्ध पत्रिकाओ एवं उनमे प्रकाशित सामग्री की जानकारी निम्न सन्दर्भ स्रोतो से दी जा रही है।

(क) अधिकाश विषयो मे अन्तर्राष्ट्रीय सार सक्षेप पत्रिकाए मगवाई जा रही हैं जो उन-उन विषयो मे प्रकाशित सामग्री का सार सक्षेप प्रस्तुत करती है। जैसे साइक्लोजिकल एब्सट्रक्ट मासिकमनोविज्ञान की 5000 पत्रिकाओ का सार सकलन प्रस्तुत करती हैं। फिजिकल रिव्यू एब्सट्रक्ट, भौतिक विज्ञान की 1000 पत्रिकाओ का सार प्रस्तुत करती है। डिजर्टेशन एब्सट्रक्ट कला एवं विज्ञान मे विभिन्न विश्वविद्यालयो मे स्वीकृत प्रत्येक पाक्षिक अक मे 15000 शोध कार्यो का सार सक्षप दिया जाता है। इसी प्रकार करेन्ट कन्टेन्ट के नाम से साप्ताहिक पत्रिका मे कला एवं विज्ञान की 300 अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओ की विषय सूचिया दी जाती हैं। मैथेमैटिकल रिव्यु के द्वारा गणित के विषय मे प्रकाशित अधिकाश साहित्य का सार सक्षेप सकलित किया जाता है। ये सब पत्रिका सन्दर्भ ग्रन्थ मे पुस्तकालय मे सन्दर्भ हेतु हर समय विद्यमान रहते है।

(ख) बहुधा प्राध्यापको को 'उलरिच इन्टरनेशनल पिरियोडिकल्स निर्देशिका के माध्यम से यह जानकारी भी अविलम्ब दी जाती है कि उनके विषय मे पत्रिका साहित्य कहा कहा से किस तरह का निकल रहा है। भारतीय पत्रिकाओ की जानकारी प्राध्यापको को 'डायरेक्टरी आफ इण्डियन पिरियोडिकल एवं प्रैस एड एडवर्टाईजर वार्षिक निर्देशिका के द्वारा दी जाती है।

● वैदिक सिद्धान्तो को पृष्ठपोषित करने वाले प्रमाणो की अविलम्ब जानकारी देना—

गुरुकुल पुस्तकालय का प्रधान लक्ष्य गुरुकुल के स्थापना मूल्यो से जुड़ा हुआ है। बहुधा यहा पढने वाले छात्रो मे तथा प्राध्यापको मे भी वैदिक सिद्धान्तो के सन्दर्भ जानने की जिज्ञासा रहती है। इस दृष्टि से पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप मे हमने यहा 'केनन आफ नेमोनिक्स का सर्वथा नवीन प्रयोग किया। उसके अन्तर्गत विद्यार्थी काल मे लेखक के द्वारा याद किए गए लगभग 1000 वेद मन्त्र एवं सूक्तो का सचयन किया गया जिसे वर्गीकृत विषयानुसार बाटा गया। बहुधा जो भी जिज्ञासु छात्र वैदिक सिद्धान्तो पर प्रमाण जानना चाहे उसे याद किए गए मन्त्रो का उद्धरण तथा सन्दर्भ बिना किसी विलम्ब दे दिया जाता है। इस प्रकार की सन्दर्भ सेवा मे सन्दर्भ कर्ता का वैदिक वाङ्मय मे गहरी पैठ होना आवश्यक है यह एक सर्वथा नवीन प्रयोग है तथा गुरुकुल पुस्तकालय के पुस्तकालयाध्यक्ष की हैसियत से लेखक क्रियान्वयन सन्दर्भ सेवा मे कर रहा है। इस प्रकार की सन्दर्भ सेवा के अन्तर्गत पाठको को इसका एकेश्वरवाद पुर्नजन्म, त्रैतवाद, मूर्ति पूजा कर्मफल, मोक्ष, षोडस सस्कार आदि के बारे मे तुरन्त सन्दर्भ दिए जाते हैं।

+ गुरुकुल प्रकाशन सन्दर्भ सेवा

गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय द्वारा शोध एवं प्रकाशन के क्षेत्र मे गत 80 वर्षों मे बड़ा भारी कार्य हुआ है। अधिकाश लोगो का इसकी जानकारी न होने से उन्हे गुरुकुल का साहित्य क्षेत्र मे योगदान नगण्य दिखाई पडता है। बाहर के विद्यालयो के तथा गुरुकुल के छात्रो एवं प्राध्यापको को भी यहा के प्रकाशनो एवं शोध प्रवृत्तियो की जानकारी गुरुकुल द्वारा अब निम्न प्रकार मे उपलब्ध कराई जा रही है।

+पुस्तकालय के द्वारा गुरुकुल विश्वविद्यालय के समस्त शोध एवं प्रकाशन कार्यो का एकीकरण कर दिया गया है। जिसके अन्तर्गत निम्न सूचनाए पाठको तथा जिज्ञासु शोध छात्रा को एक ही प्रकाशन मे उपलब्ध हो जाएगी।

(क) गुरुकुल के स्नातको द्वारा प्रकाशित प्रमुख साहित्य।

(ख) गुरुकुल के द्वारा प्रकाशित सम्पूर्ण साहित्य की जानकारी।

(ग) गुरुकुल के द्वारा प्रकाशित अग्रेजी साहित्य की जानकारी।

(घ) गुरुकुल द्वारा स्वीकृत पी एच डी शोध प्रबन्धो की सूची।

(ड) शोध कार्य प्रगति मे।

(च) गुरुकुल मे स्वीकृत शोध उपक्रम।

(छ) गुरुकुल के प्राध्यापको के प्रकाशन।

(च) गुरुकुल छात्रो की हस्तलिखित पत्रिकाए।

पुस्तकालय मे उपलब्ध उपर्युक्त सम्पूर्ण साहित्य का पृथक सग्रह गुरुकुल स्नातक प्रकाशन सग्रह के नाम से बनाया गया है।

—

पंजाब की समस्या का उचित समाधान हो और हिन्दी को समुचित स्थान दिया जाए

सम्पादक के नाम पत्र

श्री मान्यवर वीर जी,

नमस्ते !

पंजाब समस्या सम्बन्धी आज कल के समाचार पत्रों में छपे आपके विचार बहुत महत्वपूर्ण हैं वास्तव में शुरू से ही अकाली भाई अपनी मांगें नहीं अपितु शर्तें किसी बातचीत द्वारा नहीं अपितु गोली-तलवार के जोर पर मनवाने के लिए सब कुछ कर रहे हैं और विपक्ष की प्रमुख पार्टिए अकाली सरकार में एक आध कुर्सी प्राप्त करने के लोभ में शुरू से ही परोक्ष रूप में झूठ वायदों व न मानने योग्य बातों का समर्थन करते आए हैं अकालियों का अपना एक लक्ष्य है जिसके लिए वे सचेष्ट हैं। किन्तु यह दूसरे देशद्रोही भारतीय अखण्डता की पीठ में छुरा घोंप रहे हैं। यदि राष्ट्र हित में यह सब भी उग्रवाद का खुलकर विरोध करते तो परिस्थितियां कदापि इतनी जटिल न होतीं। न ही एक धार्मिक स्थल कुटिल राजनीतिक गतिविधियों का अखाड़ा बनता व न ही संसार की महानतम देवी श्री इन्दिरा गांधी भूतपूर्व प्रधानमन्त्री की निर्मम हत्या होती।

इस सम्बन्ध में पंजाब में हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर उचित स्थान दिलाने के बारे भी आपका सुझाव महत्वपूर्ण है, क्योंकि हमारी बोल-चाल की जो भाषा पंजाबी है, वह मूलतः हिन्दी ही है अथवा हमारे सभी धार्मिक व सांस्कृतिक ग्रन्थ भी मूलतः हिन्दी ही में हैं, अतः हमारे दैनिक प्रशासनिक अथवा राजनैतिक कार्य प्रणालियों में हमें अपनी मातृ भाषा हिन्दी से वंचित रखना नितान्त असहनीय है, इसके अलावा हिन्दुओं की धार्मिक, सांस्कृतिक, नागरिकता राजनैतिक जिन्दगी की रक्षा के लिए एक सार्वजनिक सांझी हिन्दू समाज का गठन वर्तमान परिस्थिति में प्रमुख आवश्यकता है। सम्भवतः हिन्दी की मान्यता दिलाने में भी यह उचित अवसर बन जाए। यदि आप यही कर सकें तो आपका नाम भी इतिहास में अमर हो जाएगा।

शुभ कामनाओं सहित

डा. हरे कृष्ण

—

आर्य समाज दसूहा में शुद्धि

आर्य समाज दसूहा में 5-5-85 दिन रविवार को साप्ताहिक सत्संग में श्री फायल मसीह पुत्र श्री मच्छाराम, अब्दुल्ला-पुर निवासी को शुद्ध करके वैदिक धर्म में लाया गया और कर्मानुसार पूर्व वाल्मीकि वर्ण प्रदान किया गया। नवीन नाम पावनराम रखा गया। प्रसाद वितरण के पश्चात् शान्ति पाठ के साथ ही सत्संग सम्पन्न हुआ।

—श्रीराम प्रधान

आर्य समाज दसूहा

—

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पर सभी प्रकार की सांस्कृतिक प्रतिष्ठा का आधार बनती है। जीवन सार्थक करती है।

महर्षि ने इसी उद्देश्य से जहां पंच-महायज्ञों का विधान किया वहां अपने समस्त शिष्यों (महात्मा ... आदि) को सामूहिक विवाह यज्ञों की भी व्यवस्था प्रदान की। यद्यपि मध्य युग में यज्ञों का व्यवहार हो गया था परन्तु शताब्दियों के पश्चात् संसार ने यज्ञ के वास्तविक स्वरूप के दर्शन किए। आर्य जाति पुनर्जीवित हो गई।

देव दयानन्द की यज्ञीय भावना का प्रचार व यज्ञमय जीवन बिताने का आदर्श ही समाज के वर्तमान और विनाशकारी वादों तत्वों व तत्त्वों से मानव जाति को बचा सकता है।

प्रभु हमें इस सन्मार्ग पर चलने की शक्ति दे।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलोफोन नं. 74250 (रजि. न. पो. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य मर्यादा जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 7, 13 ज्येष्ठ सम्वत् 2042, तदनुसार 26 मई 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

संसार को स्वर्ग बनाना है— यज्ञ से प्रेरणा लो

ले.—श्री आचार्य शिवराज जी शास्त्री एम, ए. मौलवी फाजिल

यज्ञेन यज्ञमय जन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन्।
ते ह नाक महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या सन्तु देवा. ॥

यजुर्वेद 31-16

संसार मे कोई भी मनुष्य पराजय नहीं चाहता, कोई भी दुःख नहीं चाहता, कोई भी अभाव ग्रस्त होना नही चाहता।

एक विद्यार्थी परीक्षा सफलता के लिए ही देता है असफलता प्राप्त होने पर वह अपने गुण दोषो पर विचार करने पर विवश होता है। दरिद्रता से सभी बचना चाहते हैं परन्तु प्रत्यक्ष मे दरिद्रो की बढ़ती सख्या का कोई कारण खोजने का प्रयत्न नही करता। ससार के आधे भाग मे दरिद्रता निवारण के लिए धर्म त्याग, ईश्वर त्याग का नारा भी लगाया था चाहे वे आज अपनी भूल स्वीकारने लगे है।

वास्तव मे ससार के स्वरूप को न समझ पाने के कारण ही सारी खराबियां हैं। ससार प्रभु प्यारे की एक महान् यज्ञशाला है। इस यज्ञशाला में सभी कार्य यज्ञ रूप हैं। प्रभु का बनाया कोई पदार्थ केवल अपने लिए ही नहीं, वह अन्यो की सेवा के लिए हैं।

यज्ञ का मुख्य अर्थ है सगति व दान है, दृश्यमान् जगत् की व्यवस्था को बारीकी से अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि इसके रचयिता के समस्त कार्यों में कितना तालमेल है कितना नियमन है, कितनी वैज्ञानिकता है, कितनी सुन्दरता है कितना [illegible] है यह समस्त जगत्।

जगत् के इस विज्ञान के अध्ययन के लिए ही ससार के सभी वैज्ञानिक दिन-रात परिश्रम करते हैं फिर भी अभी उसकी महानता के सम्बन्ध की भी खोज नहीं कर पाए हैं। न ही विधाता के किसी नियम व्यवस्था में अणु मात्र भी कोई परिवर्तन कर पाए हैं।

सृष्टि रचना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें कोई वस्तु ऐसी नहीं जिसमें परमार्थ व परोपकार की हो शिक्षा न मिल मिल रही हो। सूर्य को स्वय प्रकाश की आवश्यकता नही, संसार को प्रकाश देना ही उसका लक्ष्य है चन्द्रमा को स्वय शीतलता नही चाहिए वह प्राणीमात्र को शीतलता प्रदान करने के लिए ही रचा गया? नदिया स्वय प्यासी नही वे भूतल वासियो की प्यास बुझाने के लिए ही लम्बी यात्रा कर रही हैं। वृक्ष अपने फल स्वय नही खाते वे ससार के पालन को ही फल देते हैं, गाए स्वय दूध नही पीती वे सबकी क्षुधा शान्तिमे रत हैं। प्रभु की रचना का प्रत्येक काय लोक कल्याण व परोपकार के लिए हैं।

यही स्थिति मनुष्य की है वह कितना ही धन पैदा कर ले उसके स्वय के जीवन यापन को तो परिमित राशि ही पर्याप्त है। फिर भी मनुष्य जीवन के लक्ष्य को भूलकर परोपकारमय जीवन बिताने की ओर भाग्य से ही प्रवृत्त हो पाता है।

यजुर्वेद के उपरोक्त मन्त्र मे कहा है कि—

भगवान् के इस यज्ञमय परोपकारमय व्यवस्थित नियमित सात्विक ससार को दिव्य गुण वाले ऋषियो ने देखा ता उन के भी पवित्र हृदय मे यज्ञमय जीवन बिताने की प्रेरणा उत्पन्न हुई। प्रत्येक वस्तु के धर्म को पहचान कर उन्हे धर्म का बोध हुआ। दुःख रूपी नर्क से बचने का ससार को स्वर्गमय बनाने का इससे बड़ा कोई उपाय नही सूझा कि मनुष्य मात्र को यज्ञमय जीवन बिताने की प्रेरणा शिक्षा व विधि बताई जाए। ऋषियो ने इसीलिए यज्ञ का विधिवत् निर्माण किया। सबको यज्ञमय जीवन बिताने के उपाय बताए। फलस्वरूप देवो के इस दैविक उपाय से ससार स्वर्ग बना। यह कार्य दैवीय भावना से ही सम्भव था इस कठिन व शास्त्रीय मार्ग के लिए साधना वे ही कर सकते थे। वे ही लोक कल्याण के लिए शास्त्रो, मर्यादाओं, धर्म ग्रन्थो की रचना कर सकते थे जिसको स्वाध्याय कर उनके अनुयायी ससार को स्वर्ग मय बना सके। निस्सन्देह सत्युग का निर्माण इसी व्यवस्था पर आधारित था।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम की याद मे आज भी लाखो करोड़ो लोग राम-राज्य की चर्चा करते हैं जिसके सम्बन्ध मे स्वय राम ने विजित लका को ठोकर मारते हुए कहा था—

जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

मेरी जननी जन्म भूमि मुझ स्वर्ग से भी अधिक प्यारी है। श्रीराम के काल तक यज्ञो का प्रचलन इतनी बडी मात्रा मे हो चुका था कि स्वय श्रीराम का जन्म ही यज्ञो के विधि विधान के द्वारा हुआ था। उन्होने स्वय धर्म शास्त्रो का विधिवत् अध्ययन किया था। बाल्मीकि उनके सम्बन्ध मे लिखते हैं—

वेद वेदाग तत्वज्ञ: धनुर्वेद च निष्ठित।

वे वेद व वेद के सभी अगो के मर्म को जानते थे और शस्त्र विद्या मे तो वे पारगत थे।

आज ससार नर्कमय बन चुका है। अनेक वाद अनेक मत-मतान्तर कोई ससार को स्वर्ग बनाने की बात करता है। कोई मरने के बाद स्वर्ग दिलाने का वादा करता है। वेद कहता है स्वर्ग इसी ससार मे है और नरक भी यही है। डा इकबाल ने इस सत्य को स्वीकार करते हुए कहा है—

अमल से जिन्दगी बनती है,
दोजख भी जहन्नुम भी,
ये खाकी अपनी फितरत में,
न नूरी है न नारी है।

मनुष्य के श्रेष्ट कर्मो से ससार स्वर्ग बन जाता है। नरक-स्वर्ग ससार से बाहर किसी भी अन्य स्थान पर नहीं है।

आज के त्रिविधिताप ग्रस्त मानव को यज्ञमय जीवन बिताने की शिक्षा व प्रेरणा देने से ही ससार की समस्याओ का समाधान हो सकेगा। नितान्त भोगवाद मे डूबा हुआ ससार आज अपने घातक प्रयोगो से नरक बनाने मे लगा हुआ है इसे कुमार्ग से बचाने के लिए ऋषियो ने वेद भगवान् के यज्ञमय जीवन की शिक्षा दी थी।

ये इनकी तहजीब इनके खजर से
खुद ही जाकर हलाक होगी।
जो शाखे नाजुक पै आशियाना,
बनेगा ना पायदार होगा।

—

★ जो मुक्ति चाहे वह जीवन मुक्त अर्थात् जिन मिथ्या भाषणादि पाप कर्मो का फल दुःख हैं, उनको छोड़, सुख रूप फल को देने वाले सत्य भाषणादि धर्माचरण अवश्य करें। जो कोई दुःख को छोड़ना और सुख को प्राप्त होना चाहे वह अधर्म को छोड़ धर्म को अवश्य करे।

—महर्षि दयानन्द

भारत की नई शिक्षा नीति के लिए सुझाव

ले.—श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति, भूतपूर्व कुलपति
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

गुरुकुल कांगड़ी के भूतपूर्व कुलपति आचार्य प्रियव्रत वेद वाचस्पति ने भारत के शिक्षा मन्त्री श्री के. सी. पन्त को शिक्षा सम्बन्धी सुझाव भेजे हैं जो पाठकों के ज्ञानवर्धन के लिए प्रकाशित किए जा रहे हैं।

—सम्पादक

आज कल भारत सरकार देश की नई शिक्षा नीति के सम्बन्ध में गम्भीरता से विचार कर रही है। इस सम्बन्ध में, मैं आपके विचारार्थ कुछ सुझाव उपस्थित कर रहा हूं। इन सुझावों पर भी यथोचित ध्यान देने की कृपा कीजिएगा। यदि इन सुझावों के अनुसार देश की शिक्षा नीति का निर्माण हो जाए तो देश की शिक्षा नीति को सही मोड़ मिल सकेगा और देश को उनसे भारी लाभ मिलेगा तथा उसे सही किस्म के नागरिक मिल सकेंगे।

1, शिक्षा में प्राचीन ब्रह्मचर्याश्रम पद्धति का समावेश अधिक से अधिक मात्रा में किया जाए। शिक्षा संस्थाएं नगरों के मध्य में न रह कर नगरों से बाहर स्वच्छ वातावरण में रहें। शिक्षा संस्थाओं के परिवेश को हरे-हरे वृक्षों, लताओं और फूलों से शोभायमान रखा जाए।

2 शिक्षा संस्थाओं के साथ छात्रावास भी हों। सब छात्र-छात्रावासों में रहें, छात्र घरों में न जाने पाएं। जिससे उन पर नागरिकों के गृहस्थ जीवन का विलासितामय बुरा प्रभाव न पड़ सके। छात्रावासों में छात्रों के छोटे-छोटे समुदायों के साथ एक एक उच्च शिक्षित और सदाचारी व्यक्ति चौबीसों घण्टे अधिष्ठाता के रूप में रहें जो अपने छात्रों की सब प्रकार की गतिविधियों पर दृष्टि रखें और उन्हें सत्परामर्श देने और सन्मार्ग दिखाते रहने का काम करें एवं उनकी सब प्रकार की समस्याओं तथा जिज्ञासाओं का समाधान करें। छात्रों को जब कभी बाहर भ्रमण आदि के लिए जाना हो तब ये अधिष्ठाता लोग भी उनके साथ हो जाएं और उनकी गतिविधियों पर निरीक्षण रखें।

(3) अध्यापकों को भी चौबीसों घण्टे छात्रों के समीप ही रहना चाहिए छात्रों का निर्माण ही अध्यापकों का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए। हर समय वे छात्रों की शैक्षणिक, चारित्रिक और शारीरिक उन्नति में लगे रहें। छात्रावासों में छात्रों के अधिष्ठाता भी प्राय अध्यापक लोग ही हों।

(4) छात्रों का दैनिक जीवन खर्चीला और शान-शौकत का न हो। उनका जीवन मितव्ययी, सादा, परिश्रमशील, तपस्या और संयम का हो। अध्यापक और अधिष्ठाता लोग भी ऐसा ही जीवन व्यतीत करें। छात्र अपने शिक्षकों के जीवन का ही अनुकरण करते हैं।

(5) छात्रों को कामवासना जगाने वाले खेल-तमाशे, नाटक एवं सिनेमा आदि न देखने दिए जाएं। इसी भान्ति मार-काट, हिंसा और डाकेजनी आदि से भरे खेल-तमाशे नाटक और सिनेमा आदि भी न दिखाए जाएं। छात्रों की भान्ति अध्यापक और अधिष्ठाता भी इस प्रकार के खेल-तमाशे, नाटक आदि को न देखें और अपने छात्रों के आगे उदाहरण स्वरूप बनकर रहें। इस प्रकार के सिनेमा-चित्रों आदि के निर्माण पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया जाना चाहिए।

(6) छात्रों के पाठ्यक्रम में भी इस प्रकार के काव्य नाटक और उपन्यास आदि न रखे जाएं जिनको पढ़ने से अश्लील और कुत्सित वृत्तियां जागृत होती हों।

(7) सब छात्रों की जीवनचर्या समानस्तर के आधार पर चले इसकी व्यवस्था की जानी चाहिए। सबको एक समान भोजन, वस्त्र, चिकित्सा और पाठ्य सामग्री आदि दी जाएं। छात्रों के जीवन में किसी प्रकार का ऊंच और नीच और धनी और गरीब का भेद न हो। सब एक समान रहें। इसके लिए शिक्षा और भरण-पोषण का सारा खर्च सरकार उठाए। छात्रों को किसी प्रकार की शिक्षा और पालन-पोषण का व्यय न उठाना पड़े।

(8) सभी शिक्षण संस्थाएं एक पद्धति से चलाई जाएं। पब्लिक स्कूल और साधारण स्कूल वाली शिक्षा संस्थाओं का भेद बिल्कुल समाप्त कर दिया जाना चाहिए। पब्लिक स्कूलों वाली पद्धति समाज में वर्ग भेद उत्पन्न करती है।

(9) सह-शिक्षा नहीं होनी चाहिए। लड़के और लड़कियों की शिक्षा संस्थाएं अलग-अलग होनी चाहिएं। लड़कियों की संस्थाओं में सब शिक्षक स्त्रियां चाहिएं और लड़कों की संस्थाओं में सब शिक्षक पुरुष होने चाहिएं।

(10) सब प्रकार की शिक्षा का माध्यम मातृ भाषा ही होना चाहिए। किसी भाषा के शिक्षण में आवश्यकतानुसार उस भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया जा सकता है।

(11) पाठ्यक्रम में संस्कृत भाषा और उसके साहित्य का अध्ययन आवश्यक बनाया जाना चाहिए। देश की सभी भाषाएं संस्कृत से अपना शब्द कोष लेती हैं। देश के सभी प्रान्तों में इस भाषा के प्रति आदर के भाव हैं, इस भाषा का प्रचलन देश की एकता में बहुत सहायक हो सकता है। इस भाषा में भारत की प्राचीन संस्कृति और ज्ञान-विज्ञान का कोष है जिसकी रक्षा होनी चाहिए और जिसमें निहित ऊंचे आध्यात्मिक मूल्यों से लाभ लिया जाना चाहिए।

(12) त्रि-भाषा फार्मूले में संस्कृत भाषा को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।

(13) छात्रों को धार्मिक शिक्षा आवश्यक रूप से दी जानी चाहिए। सभी धर्म ग्रन्थों से आध्यात्मिकता, ईश्वर-विश्वास प्रभु भक्ति, सच्चरित्रता, मानवता, प्राणीमात्र की सेवा संरक्षा सहनशीलता, क्षमा, दया, परोपकार, अहिंसा, सत्यपरायणता, संयम आदि की ऊंची भावनाओं को भरने वाले सन्दर्भों का संग्रह करके छात्रों को आवश्यक और नियमित रूप से पढ़ाया जाना चाहिए।

(14) पाठ्यक्रम में भान्ति-भान्ति के साहित्यिक और कला परक विषयों के पढ़ाने की व्यवस्था के साथ-साथ भान्ति-भान्ति के वैज्ञानिक विषयों के पठन-पाठन की व्यवस्था भी होनी चाहिए। पाठ्यक्रम में अधिक से अधिक विषयों में सन्निवेश हो। छात्र इनमें से अपनी रुचि के अनुसार कुछ विषयों को चुनकर उन का अध्ययन कर सकें।

(15) छात्रों पर विषयों और ग्रन्थों का बहुत अधिक भार न हो। छात्रों को पठनीय विषय चुनने का विकल्प बड़ी मात्रा में दिया जाए।

पठनीय विषयों की एक न्यूनतम संख्या निर्धारित हो। छात्र उसके अनुसार अपनी रुचि के विषय चुन सकें। शिक्षा के प्राथमिक, माध्यमिक, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयीय सभी स्तरों पर छात्रों को अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार पठनीय विषय चुनने का विकल्प सुलभ हो।

(16) प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर छात्रों को देश के प्राचीन और आधुनिक महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़ाने की व्यवस्था भी होनी चाहिए। जिससे छात्रों में इनके अनुकरण से उन जैसा ऊंचा पवित्र, चरित्रवान्, गुणशाली और देशभक्त बनने की भावना जागृत हो सके।

(17) यथा सम्भव देश के शिक्षणालयों में एक जैसी पाठ विधि चलाने का प्रयत्न करना चाहिए। इससे देश की एकता की भावना को बल मिलेगा।

(18) सरकारी नौकरियों के लिए डिग्रियों को प्रधानता नहीं दी जानी चाहिए। इसके लिए अलग से चुनाव-परीक्षाएं हों जिनमें कोई भी अभ्यर्थी बैठ सके। हां, एक न्यूनतम शिक्षा स्तर की योग्यता का अभ्यर्थी होना आवश्यक है जैसे कि स्कूल की दसवीं या बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण होना आदि। डिग्री पाठ्यक्रमों में तो वे ही छात्र जाएं जिन्हें ऊंची शिक्षा प्राप्त करके किसी विषय का निष्णात विद्वान् बनने की इच्छा हो।

(19) प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर छात्रों को किसी ऐसे विषय या कला-कौशल की शिक्षा देने की व्यवस्था भी होनी चाहिए जिसके द्वारा वे भविष्य में अपनी आजीविका भी स्वतन्त्र रूप से कमा सकें और नौकरियों के लिए मारे-मारे न फिरें।

(20) शिक्षा संस्थाओं में छात्रों के भीतर देश भक्ति और देश के लिए सब प्रकार के त्याग करने और बलिदान देने के लिए उद्यत रहने की भावना भरने का भी प्रयत्न होना चाहिए।

आज कल की शिक्षा पद्धति ने एक प्रकार के आर्थिक व्यवसाय का रूप धारण कर रखा है। शिक्षक लोग छात्रों की बौद्धिक और चारित्रिक उन्नति को अपना लक्ष्य न रखकर शिक्षण कार्य को धन कमाने का एक साधन मात्र ही समझते हैं। प्रायः शिक्षक लोग ट्यूशन करने में लगे रहते हैं। वे विद्यालय में छात्रों को पढ़ाने में अपना पूरा ध्यान और समय नहीं लगाते। छात्रों को अपने घर बुलाकर या छात्रों के घर जाकर उन से ट्यूशन करते हैं। छात्रों के अभिभावकों को इस प्रकार स्कूल की फीस

(शेष पृष्ठ 8 पर)

सम्पादकीय—

आर्य समाज में महिलाओं की भूमिका

आज जबकि बीसवीं शताब्दी समाप्त होने जा रही है। 200 वर्ष पूर्व भारत में नारी जाति की जो अवहेलना तथा हीन अवस्था थी उसकी कल्पना करना भी कठिन है। धर्माचार्यों ने नारी को नरक की खान, ताडन की अधिकारिणी, वेद मन्त्र सुनने पर उनके कान में पिघला हुआ शीशा डालने के घोर अत्याचार पूर्ण आदेश दे रखे थे।

धन्य हैं ऋषिवर दयानन्द को जिन्होंने महान् नारी की इस दुर्दशा पर तत्कालीन धर्माचार्यों के विरुद्ध घोषणा करते हुए लिखा—

जिस गृहस्थाश्रम में धार्मिक विद्वान् व प्रशसायुक्त पण्डिता स्त्री होती है वहां दुष्ट काम नहीं होते हैं—यजुर्वेद 17-45 भावार्थ।

सर्व विद्या निष्णात स्त्रियां विश्व को सुभूषित कर देती हैं ऋग्वेद 1-48-14

वही स्त्री श्रेष्ठ है जो ब्रह्मचर्य से समग्र विद्याओं को पढ़कर शूरवीर पुत्रों को उत्पन्न करती है।

ऋग्वेद 7- 6-5

यही कारण था कि आर्य समाज ने देश में नारी जागरण, नारी शिक्षा व नारी जाति को उन्नत बनाने का कार्य बड़े उत्साह से प्रारम्भ किया। आर्य समाजों की स्थापना के साथ ही साथ महिला आर्य समाजों की भी स्थापना की गई। आर्य समाज के सभी महान् सेवा अभियानों में नारी पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर सदा कार्यरत रही। आज तो यह आन्दोलन सभी सम्प्रदायों, सभी समाजों में अनवरत रूप से जारी हैं। इसका श्रेय आर्य समाज को ही है।

आर्य समाज के सगठन का एक विशेष पहलू यह है कि वैदिक धर्म के संस्कारों का जब तक हमारे परिवार के सदस्यों पर प्रभाव नहीं होगा समाज का विकास रुक जाएगा। यही कारण है हमारे सत्संगों व उत्सवों में वह वह रौनक नहीं रही जो हम इस शताब्दी के पांचवें दशक तक देख पाते थे।

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज के पुनर्जागरण व नव-जीवन सचार के लिए कृत संकल्प हैं। सभी आर्य समाजों से हमारा निवेदन है कि वह अपने प्रत्येक समाज में महिला आर्य समाज की स्थापना करे। जहां महिला समाजे है वहां उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें। पंजाब की जनता समाज के विगत कार्यों से अभी भी प्रभावित हैं। आवश्यकता है सुयोग्य सुपठित कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की। हिन्दू समाज एक बार फिर अपने पुराने रूढ़िवाद, ढोंग, पाखण्डवाद की ओर प्रवृत्त हो रहा है। स्वार्थी व अवसरवादी पण्डे व पुजारी तथाकथित सन्त-महन्त हिन्दू समाज को फिर उसी मिथ्यावाद की ओर धकेलना चाह रहे है जिस विनाश के गर्त से ऋषि दयानन्द ने हिन्दू समाज विशेषतया नारी समाज को निकाला था। आज वैदिक विचार धारा व महर्षि के युग जागरण सन्देश को फिर घर-घर पहुंचाने की आवश्यकता है। समाज के सामने नित नए चैलेंज प्रस्तुत हो रहे हैं। कुछ समाज के शुभ चिन्तक व ऋषि के भक्त इन चैलेंजों को स्वीकार करने की तैयारी में अपने को पाते हैं। लक्ष्य की पूर्ति के लिए जब समाज के दोनों अनिवार्य अंग पुरुष समाज व नारी समाज पूरे आत्म बल, निष्ठा, विवेक व ज्ञान प्रतिभा से समाज के सचालन का भार उठावेंगे तभी समाज व राष्ट्र उन्नति पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आशा है कि आर्य जन मेरे इस सामयिक व आवश्यक सुझाव पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर समाजोत्थान के नित नए कार्यक्रम तैयार कर पंजाब में आर्य समाज के भविष्य को महान् व उज्ज्वल बनावेंगे।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

आर्य समाज का उत्तरदायित्व

महर्षि दयानन्द ने जिन परिस्थितियो मे आर्य समाज व वैदिक धर्म का कार्य प्रारम्भ किया उसमें यह केवल महा शक्तिशाली, महा विद्वान्, महा सहनशील व महा तपस्वी ऋषि का ही साहस था कि वे समय की वेगवती धारा को उसकी विपरीत दिशा में मोड़ सके।

उस समय कोई मन्दिर, कोई सभा, कोई प्रधान, कोई मन्त्री उनका सहायक नही था फिर भी उन्होंने सारे देश को नतमस्तक करा दिया। उनके विरोधी भी उनकी इस विलक्षण क्षमता से आश्चर्य चकित रह गए।

आज 110 वर्षों में आर्य समाज के पास ऋषि दयानन्द के नाम पर अपार सम्पत्ति एकत्रित हो गई है। देश का कोई ऐसा बडा शहर या कस्बा नही जहा आर्य समाज किसी भी प्रकार से किसी से पीछे हो। हमारा ध्यान सम्पत्ति अर्जन में इतना व्यस्त हो गया है कि हम ऋषि के मूल उद्देश्यों को प्राय: पीछे डाल देते हैं। वर्ष में दो बार वार्षिकोत्सव करके वेद सप्ताह व ऋषि बोधोत्सव से आगे हमें कोई कार्यक्रम ही नहीं सूझता।

इस्लाम जीवित है केवल इसलिए कि प्रत्येक मुसलमान दैनिक नमाज पढ़ना अपना कर्त्तव्य समझता है। प्रत्येक ईसाई गिरजा जाना अपना धर्म मानता है। उनके हृदय में चौब्बीसों घण्टे अपने समुदाय के विकास व उन्नति की लग्न लगी रहती है।

आर्य समाज का प्रजातांत्रिक ढाचा दिनो-दिन धर्म कर्त्तव्य निरपेक्ष बनता जाता है, परिणाम स्वरूप हमारे साप्ताहिक सत्संग व उत्सवोंमें लोगों को रुचि नही दिखाई देती। मैं यह नहीं सोचता कि हम मे से प्रत्येक ऋषि दयानन्द जैसा कर्मठ या उद्यमी बनेगा। परन्तु—

अनुगन्तुं सतां वर्त्म यदि कृत्स्नं न शक्यते, स्वल्प मेवानुगन्तव्य मार्गस्थो नावसीदति।

अर्थात् महापुरुषों के मार्ग पर यदि हम पूरी तरह नही चल सकते तो भी हमें थोडा-थोडा तो चलना ही चाहिए उसी से हमारा कल्याण हो सकता है।

यदि प्रत्येक आर्य बन्धु अपने कर्त्तव्य का पालन करना अपना धर्म समझ ले, यदि थोडा-थोडा भी नित्यप्रति समाज सेवा को हम अपना कर्त्तव्य बना लें तो आज समाज के सामने जो शिथिलता का वातावरण बन गया है वह निवारण न हो सकता है। जनता की अपेक्षा तो आर्यसमाज से बहुत है कि आज देश के सामने जो विकट सामाजिक व राजनैतिक समस्याए उपस्थित हो रही हैं जिन्हे देखकर बडे से बडे नेता विचारवान, हताश व चिन्ताग्रस्त हैं—

हकीमों के चेहरे भी उतरे हुए हैं, मरज कौम का ला दवा बन चुका है।

आज साधन सम्पन्न महर्षि के अतुलित ज्ञान कोष का स्वामी आर्य समाज क्या मौन दर्शक बना देखता रहेगा. आने वाली पीढ़ी हमारे इस घोर अपराध को कभी क्षमा नही करेगी। इतिहास के निर्माण मे आर्य समाज को जो महत्वपूर्ण भूमिका अनिवार्य है क्या आर्य बन्धु उस उत्तरदायित्व को उठाने को एक बार सोत्साह आशान्वित भाव से वहन करने का अपना कर्त्तव्य पालन करेंगे।

स्त्री आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना का मासिक पारिवारिक सत्संग

इस मास का पारिवारिक सत्संग 1-5-85 को श्रीमती राज जी स्याल मान्य अध्यापिका आर्य गर्ल्ज स्कूल के गृह पर प्रेम नगर सिविल लाईन्ज में हुआ। यह यज्ञ व सत्सग नन्हे-मुन्ने चि. समीर की प्रथम वर्ष गाठ पर कराया गया। सर्व प्रथम सारे परिवार ने बहुत श्रद्धा भाव म यज्ञ में भाग लिया। यज्ञ समाज की प्रधाना श्रीमती कमला जी आर्या ने सम्पन्न कराया। उनकी यज्ञ कराने की शैली से परिवार के सब सदस्य बहुत प्रभावित हुए। उन्होने अपने विचार दिए कि गृहस्थ का असली धन सन्तान है उसे बनाने मे गृहस्थो को अधिकाधिक ध्यान देना चाहिए। सुसन्तान राष्ट्र को समर्पित करके अपने राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य से उऋण होना हर गृहस्थी का परम धर्म है। आर्य गर्ल्ज हायर सैकेण्डरी स्कूल की बहिनों ने सत्संग में बढ़ चढ़कर भाग लिया। बहिनों के प्रेरणाप्रद सुन्दर भजनों का सबने आनन्द उठाया। अन्त में बधाई का भजन गाकर चि समीर को सब ने आशीर्वाद दिया। सभी पधारी हुई बहिनों को सुन्दर ढग से जल-पान कराकर स्वागत किया गया। सारा कार्यक्रम हर दृष्टि से सराहनीय रहा।

—निर्मला बेरी मन्त्री

आर्य विद्या परिषद् पंजाब के परिणाम

धर्म शिक्षा परीक्षा परिणाम

इस वर्ष आर्य विद्या परिषद् पंजाब द्वारा आयोजित धर्म प्रवेशिका, धर्माधिकारी तथा धर्म ज्ञानी परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्र एवं छात्राओं के रोल न. नीचे दिए जा रहे हैं—इस बार धर्म प्रवेशिका का परिणाम 60 98 प्रतिशत, धर्माधिकारी परीक्षा का परिणाम 85.37 प्रतिशत तथा धर्म ज्ञानी परीक्षा का परिणाम 85 56 प्रतिशत रहा है। तीनो परीक्षाओ मे सर्व प्रथम, द्वितीय एव तृतीय आने वाले परीक्षार्थियो का विवरण निम्न प्रकार है—

धर्म प्रवेशिका परीक्षा

स्थान	रोल न.	नाम परीक्षार्थी एव विद्यालय	प्राप्तांक
प्रथम	1098	सीमा सुपुत्री श्री हरबंसलाल वैदिक कन्या पाठशाला बटाला	75
द्वितीय	216	कुमारी मीतु सुपुत्री श्री सोमनाथ जिन्दल दयानन्द केन्द्रीय विद्या मन्दिर बरनाला	74
तृतीय	132	कुमारी सुनीता सुपुत्री श्री रघुवीर चन्द आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल मुकेरिया	72

धर्माधिकारी परीक्षा

स्थान	रोल न.	नाम परीक्षार्थी एव विद्यालय	प्राप्तांक
प्रथम	2154	राकेश सुपुत्र श्री राय अवतार एम डी ए एस. हा सै स्कूल मोगा	132
द्वितीय	1901	अनुपम सुपुत्री श्री यशपाल आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल भटिण्डा	130
तृतीय	1602	अनुपम सुपुत्री श्री वीरेन्द्र कुमार शिवदेवी गर्ल्ज हाई स्कूल जालन्धर	126

धर्म ज्ञानी परीक्षा

स्थान	रोल न.	नाम परीक्षार्थी एव विद्यालय	प्राप्तांक
प्रथम	3073	सुधा सुपुत्री श्री प्रेम सागर के. एल. आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल जालन्धर छावनी	138
द्वितीय	3262	सुनीता सुपुत्री श्री ओम् प्रकाश देवराज गर्ल्ज हा सै. स्कूल जालन्धर	
तृतीय	3670	रामकुमार सुपुत्र श्री द्वारिका प्रसाद एम डी. ए एस हा सै, स्कूल मोगा	136

धर्म प्रवेशिका परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी

1 से 67, 69 से 80, 82 से 96, 98 से 106, 8 से 14, 16 से 27, 29 से 54, 56, 58 से 62, 64 से 74, 76, 77, 80, 81, 83 से 88, 90, 92, 93, 95 से 203, 5, 6, 8, 10, 11. 13 से 22, 25 से 30, 33, 35, 36, 40,41 46 से 50, 52 से 68, 71, 74, 77, 78, 80, 87, 88, 90, 93, 94, 301, 8, 10 से 14, 18, 20, 21, 23 से 31, 33, 34, 36 से 48 51, 53, 54, 56, 58, 59, 61 से 68, 71, 73, 74, 76 से 417, 19, 20, 22 से 24, 26 से 37, 39, 41 से 54, 59 से 61, 64, 66 से 502 4 से 13, 37 से 42, 44 से 53, 55 से 58 60, 61, 65, 68, 595 से 627 तक परिणाम बाद मे। 653 56, 57, 59, 70 से 79, 81, 83 से 86, 89 से 95, 97 से 710, 12 15 से 22, 24, 27 से 29, 33 से 39, 41 से 43, 45, 46, 48, 50, 90, 99. 802, 4, 8, 9, 1 , 19, 20, 37, 38, 46. 53, 54, 57, 63, 66, 67' 71 72, 85, 88 से 90, 941 42, 44 से 53, 56, 59, 66, 68, 70. 73, 74, 77, 78, 80 से 85, 87, 89, 92 से 1000, 1002 से 11, 13, 16, 17, 20. 24, 25 36 से 41 44 से 46, 48, 50 से 60, 62 से 71, 74, 85, 94 से 1147, 1149 से 53 तक।

धर्माधिकारी परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी

1501 से 14, 16 से 19, 21, 23 से 26. 28 से 31. 33 से 40, 42 से 44 46 से 55 57 से 60 62 से 76 78, 79 81 से 92, 94 से 98 1601 से 3, 5 से 7 9 से 13 15 से 18 20, 21 23 से 58. 60 से 97 99 से 1712 14 16 से 25 (1726 से 1776 तक परिणाम बाद में) 1780 से 83, 85 से 87, 89 से 92 94 से 1800, 1802, 3 5 6 8 10 से 25 27 28 31 33 38 41 46 से 70, 72 से 1904, 6 से 10 12 से 14 16 से 18, 21 से 41 43 45 46 48 से 5355 56 58 से 60 62 64 66 से 73, 75 से 78 80 से 96 98 से 2008 10 से 21 24 से 31 33 34 36 41 से 43 46 47 49 से 51 54 60 62 से 67 69 70 72 से 79 85 से 88 90 92 94 से 98 2100, 2101 3 से 5 7 से 9 12 17 से 19 27 29 36 से 43 45 से 63 65 से 88 90 से 2217 20 22 से 52 54 से 60 62 से 72 74 से 76 78 80 से 2308, 10 से 2432 तक।

धर्म ज्ञानी परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी

3001 2 4 से 29 31 से 35 38 से 41 43 से 55 58 से 89 91 92 94 97 से 3124 26 से 41 43 से 48 50 51 53 56 से 62 64 से 70 72 से 3213 15 से 35 37 से 45 (3246 से 3270 तक परिणाम बाद मे) 3271 73 75 से 78 80 से 82 84 90 से 95 98 से 3300 3305 6 8 12 13 15 से 57 59 61 62 64 65 67 से 78 80 से 84 86 से 96 98 से 3401 3 से 33 35 से 39 41 से 48 50 51 58 से 55 57 से 65 67 68 71 72 76 77 79 81 से 86 88 89 91 96 97 99 से 3502 4 से 6 8 से 13 15 से 19 32 से 34 36 38 से 48 50 से 57 59 60 62 से 76 78 79 98 से 3701 3 से 8 10 से 78 80 83 से 3805 तक।

समस्त परीक्षाओं मे सर्वप्रथम, द्वितीय व तृतीय आए परीक्षार्थियो को माता ज्ञानदेवी स्थिर पारितोषिक निधि से पारितोषिक दिया जाएगा।

धर्मप्रकाश दत्त रजिस्ट्रार।
आर्य विद्या परिषद् पजाब (रजि.)

सभा भवन निर्माण के प्राप्त दान

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुदत्त भवन किशनपुरा चौक जालन्धर के कार्यालय का नव-निर्माण हो रहा है। कुछ भवन बन चुके हैं। यज्ञशाला का कार्य अभी अधूरा है इसके साथ ही एक हाल कमरा व सभा कार्यालय के लिए नए भवन बनने अभी शेष है। हमें इस निमित्त समय-समय पर दानी महानुभावो से दान प्राप्त होता रहा है। परन्तु अब धनाभाव के कारण निर्माण कार्य रुका पड़ा है। सभी आर्य बन्धुओ से निवेदन है कि दिलखोलकर सभा भवन निर्माण कार्य मे सहायता प्रदान कर इस पुण्य कार्य को पूर्ण कराए। आर्य समाजों से प्राप्त राशि की सूची निम्न प्रकार है—

आर्य समाज भटिण्डा-7000) रुपये। जिला आर्य सभा लुधियाना—5101) जिला आर्य सम्मेलन अहमदगढ़ संगरूर 5100) आर्य समाज बरनाला 5000)। आर्य समाज धूरी 5000), आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर 3000) स्त्री आर्य साबुन बाजार लुधियाना 2500) आर्य समाज ग्रीन पार्क जालन्धर 2100) आर्य समाज बैक फील्ड गज लुधियाना 2100) श्रीमती शान्ता गौड़ प्रधाना आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना 1500) आर्य समाज अबोहर 1500, आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर 1100) आर्य समाज नवांशहर दोआबा 1100) आर्य समाज सैक्टर 22 ए चण्डीगढ़ 1100) आर्य समाज मीशाला रोड फगवाड़ा 1100) आर्य समाज गोविन्दगढ़ जालन्धर 1100) आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना 1100) आर्य समाज रोपड़ 1100) आर्य समाज ऋषि कुंज पक्का बाग जालन्धर 1000) आर्य समाज महतपुर जालन्धर 700) स्त्री आर्य समाज बस्ती पठाना 501) आर्य समाज सुलतानपुर लोधी 500) आर्य समाज माडल टाऊन अमृतसर 500) आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना 251) आर्य समाज गढ़शंकर होशियारपुर 251) आर्य समाज तलवाड़ा टाऊनशिप 201)।

—कमला आर्या महामन्त्री

महर्षि दयानन्दनिर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला

आर्य समाज- उपलब्धियां, सीमाएं और अपेक्षाएं दयानन्द सरस्वती के विचार—समय की कसौटी पर

ले.—डा. भवानीलाल जी भारतीय आचार्य व अध्यक्ष दयानन्द चेयर पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

प्ररोचना

यह बहुत ही सुखद बात है कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला का समारम्भ कर रहा है। अपने गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती से आलोक पाकर देश और समाज को अज्ञान की कन्दराओं से निकालने के लिए स्वामी जी ने पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराई। संस्कृत के उद्भट विद्वान् होते हुए भी हिन्दी को लेखन का आधार बनाकर वह सामान्य जन-जीवन के साथ जुड़े। उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश से संसार में अभूतपूर्व वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम मुद्रण 1875 तथा द्वितीय संस्करण 1884 में हुआ। इस दूसरी आवृत्ति का महत्व इस बात से भी है कि इस संस्करण की भाषा अधिक प्रांजल और टकसाली है तथा आधुनिक हिन्दी लेखन का मार्ग इसने प्रशस्त किया है। पुरानी सधुक्कड़ी हिन्दी को नया वैचारिक क्षितिज देकर स्वामी जी ने यह सिद्ध कर दिया कि वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को विविध वैचारिक सरणियों का उच्चतर अध्ययन-अध्यापन और चिन्तन-मनन हिन्दी में हो सकता है। वह हिन्दी को आर्य भाषा कहते थे। मादाम ब्लावत्स्की को लिखे एक पत्र में स्वामी जी ने स्पष्ट संकेत दिया था कि वह जिस पत्र का उत्तर उनसे चाहें, उसको नागरी लिपि में लिखवा कर उनके पास भेजा करें।

भारतीयता और राष्ट्रीयता का पाञ्चजन्य उन्होंने बजाया। वह भारतीय नवजागरण के अग्रदूत थे तथा समाज सुधारक, शिक्षा, औद्योगिक तथा वैज्ञानिक उन्नति और स्वतन्त्रता की उन्होंने सर्वप्रथम कल्पना की थी। यही कारण था कि उन्होंने धर्म व्यवस्था, आदर्श राज्य व्यवस्था, स्वतन्त्रता तथा समानता, समाज व्यवस्था तथा सर्वांगीण शिक्षा व्यवस्था पर अपने मौलिक तथा उपादेय विचार व्यक्त किए। सत्यार्थ प्रकाश एक खण्डन-मण्डनात्मक ग्रन्थ ही नहीं है, उसमें मनु आदि धर्म शास्त्रकारों का युगानुरूप नवीन भाष्य प्रस्तुत किया गया है। वह आधुनिक मनु की ऐसी विधि तथा आचार संहिता है जिसमें देश, काल, जाति, वर्ण, वर्ग तथा अलगाववाद से ऊपर उठे हुए मानव मात्र के लौकिक तथा पारलौकिक अभ्युदय और निःश्रेयस प्राप्ति का विधान बताया गया है। आत्मिक तथा भौतिक उन्नति का ऐसा सन्तुलित उपाय इतने विशद वैचारिक और व्यवहारिक स्तर पर महर्षि से पूर्व किसी समाज सुधारक तथा युगद्रष्टा ने नहीं दिया था।

स्वामी जी का निर्वाण 30 अक्तूबर 1883 को हुआ। उनके निर्वाण को सौ वर्ष हो गए। इस लम्बे अन्तराल में देश ने कई उतार-चढ़ाव देखे और आज जिन विस्फोटक एवं विषम परिस्थितियों में देश खड़ा हुआ है उनसे मानव धर्म लोकतन्त्र, सामाजिक समानता, सामूहिक अभ्युदय और लोकजीवन के उत्कर्ष से सम्बन्धित मूल्यों को खतरा पैदा हो गया है। अतः इन जटिल समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में स्वामी जी के कार्य का पुनर्मूल्यांकन होना चाहिए। आशा है इस व्याख्यान माला के प्रसंग से देश के अनुभवी विशेषज्ञ विद्वान् ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के अनुदान का अनेक विचार बिन्दुओं से अध्ययन-मनन करेंगे तथा ऋषि के विचार सूत्रों के पल्लवन द्वारा वर्तमान समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करेंगे। मुझे विश्वास है कि इस भाषण माला से ऋषि दयानन्द के बहुमुखी और विराट् व्यक्तित्व के विविध पहलू उजागर होंगे। आर्य समाज के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् डा. भवानीलाल जी भारतीय का मैं हृदय से आभारी हूं, उन्होंने व्याख्यान माला का अपने व्याख्यानों द्वारा शुभारम्भ कर महर्षि को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित की है। विश्वविद्यालय के यशस्वी विद्वान् डा. विष्णुदत्त राकेश को इस व्याख्यान माला का संयोजन करने के लिए अनेक साधुवाद।

—बलभद्र कुमार हूजा कुलपति गुरुकुल कांगड़ी

आर्य समाज—उपलब्धियां, सीमाएं और अपेक्षाएं

उन्नीसवीं शताब्दी का युग हमारे इतिहास में विशिष्ट महत्व का है। इस काल में यूरोपीय जातियों के भारत में आगमन के कारण उत्पन्न हुई परिस्थितियों का पूर्ण लेखा-जोखा हमारे इतिहासकारों ने लिया है और बहुत विचार के पश्चात् इसे नवजागरण का युग कहा है। वस्तुतः मध्य कालीन परिस्थितियों ने हमारे धर्म तथा राष्ट्रीय जीवन धारा को इतना विकृत, दूषित तथा हीन बना दिया था कि एक बार तो उबरना सर्वथा अशक्य नहीं तो कठिन अवश्य प्रतीत होने लगी। धर्म और उपासना के क्षेत्र में वैदिक एकेश्वरवाद तथा उपनिषद् प्रतिपादित ब्रह्मवाद की तो बात ही दूर रही, पुराणोक्त अवतारवाद तथा बहुदेववाद के सिद्धान्त भी केवल ग्रन्थों में ही रह गए और उनके स्थान पर हनुमान और भैरव, शीतला और चामुण्डा, मकबरे और मजार, श्मशान और समाधिस्थल नदी और वृक्ष, पशु और पक्षी पूजा और आराधना के पात्र बन गए। सामाजिक क्षेत्र में कट्टरता, अनुदारता तथा संकीर्ण भावों का प्रचलन हुआ जिसके परिणाम स्वरूप नारी को पर्दे में रखना, उनका बाल्यकाल में ही विवाह करना, विधवाओं का उत्पीड़न, मृत पति के साथ उसकी विधवा को जबरदस्ती चिता पर भस्म कर देना, जन्म के साथ ही कन्याओं का वध कर देना आदि अनेक कुप्रथाएं जन्म ले चुकी थी। बंगाल में कुलीन प्रथा के कारण अपने आपको आभिजात्य वर्ग का ब्राह्मण मानने वाले लोग अनेक स्त्रियों से विवाह कर लेते थे, पुनः जीवन भर उन निर्दोष बालाओं के साथ दाम्पत्य सम्बन्ध रखना भी उनके लिए कठिन हो जाता था तथापि वे स्त्रियां अपने पति के जीवित रहते ही कौमार्य अथवा वैधव्य की सी स्थिति में रहने के लिए विवश हो जाती थीं।

श्रम के वर्गीकरण तथा मनुष्य की वैयक्तिक योग्यता एवं अभिरुचि के स्वस्थ आधार पर बनाई गई वर्ण व्यवस्था सर्वथा नष्ट हो चुकी थी। इसके स्थान पर भारत का बृहत् हिन्दू समाज नाना जातियों, उपजातियों, शाखा-प्रशाखाओं तथा वर्गों में विभक्त होकर हतवीर्य, नष्ट प्रायः तथा नामशेष हो रहा था। मध्यकालीन संकीर्ण चिन्तन ने हमारे समाज में अछूत, अन्त्यज तथा दलित कहलाने वाली उन अनेक जातियों को भी जन्म दिया था जिनसे भोजन अथवा वैवाहिक सम्बन्ध रखना तो दूर, उनके निकट सम्पर्क में आने, एक ही स्थान पर उनके पास बैठने, उनके हाथ की दी हुई वस्तु को खाने से भी पाप लिप्त होने की आशंका की जाती थी। इधर मुसलमानों के सम्पर्क ने हमारी कूपमण्डूकता की प्रवृत्ति को अधिकाधिक बढ़ाया क्योंकि हम यह मानने लगे थे कि अन्य मतावलम्बियों के स्पर्श दोष से हमारा भोजन, निवास, यहां तक कि हमारा शरीर भी दूषित हो सकता है।

ईसाई जातियों के भारत आगमन ने हमारे देश में परिवर्तन की एक नवीन दिशा दिखलाई। इसके माध्यम से हमें समकालीन योरुप की गतिविधियों की जानकारी मिली। औद्योगिक उन्नति के कारण योरुप तथा अमेरिका आदि पश्चिम देशों में परिवर्तन की जो लहर उत्पन्न हुई थी, उसे मध्यकालीन परम्पराओं और रूढ़ियों को ढोने वाली यूरोपीय जातियां भी विस्मय विमुग्ध होकर देख रही थीं। नवीन ज्ञान एवं विज्ञान ने मानवी चिन्तन को अन्धविश्वास, परम्परानुपालन तथा रूढ़िवाद से मुक्त किया और उसे सोचने विचारने तथा बुद्धि एवं तर्क प्रवण बनाने में नवीन आयाम प्रदान किए। रेल, तार, डाक आदि के आविष्कारों ने देशों की भौगोलिक सीमाओं को कम किया और प्राच्य तथा पाश्चात्य जातियों का परस्पर सम्वाद होने लगा।

नवजागरण के आन्दोलनों में आर्य समाज का आन्दोलन सर्व प्रमुख है। यों तो नव जागृति की लहर राजा राममोहन राय के स्फूर्तिदायी व्यक्तित्व के कारण सर्वप्रथम बंगाल में उत्पन्न हो चुकी थी; किन्तु उसकी व्याप्ति केवल बंग देश तक ही सीमित रही। राम मोहन राय ने अपने विशाल अध्ययन, उदार दृष्टि तथा लोकहित के व्यापक चिन्तन के कारण देश और समाज में परिवर्तन की गति प्रदान की तथापि पश्चिमी आदर्शों के प्रति अत्याधिक प्रशंसा एवं सम्भ्रम के दृष्टिकोण से कारण वे अपने आन्दोलन को राष्ट्रीयता की उस सुदृढ़ भूमि पर प्रतिष्ठित नहीं कर पाए जो आगे चलकर स्वामी दयानन्द द्वारा प्रवर्तित आर्य समाज को प्राप्त हो सकी। राममोहन राय ने धर्म और समाज के क्षेत्र में सुधार, परिष्कार और परिवर्तन को पूर्ण रूप से अपनाने पर भी राष्ट्र हित का कोई भी ऐसा व्यापक आधार ढूंढने में सफलता प्राप्त नहीं की, जिसके कारण सम्पूर्ण जनमानस को चैतन्य सम्पन्न बनाना सम्भव होता। उनकी दृष्टि में भारत पर अंग्रेजों का राज्य एक दैवी वरदान ही था और वे आने वाले युगों तक इस राज्य की स्थिरता और दृढ़ता को देखने के वे इच्छुक थे।

(क्रमशः)

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला

दयानन्द, गांधी और मार्क्स

व्याख्याता—श्री डा. प्रभाकर माचवे, निर्देशक भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता

मनीषी मार्क्स

(12 मई से आगे)

मार्क्स का चरित्र विचित्र विरोधाभासों से भरा था। लगते थे वे बड़े उग्र सर्वनिषेधक विद्रोही, पर भीतर से थे वे एक विवश बौद्धिक। पावेल अन्नेनकोव नामक एक रूसी लेखक ने 1816 में मार्क्स को वाद-विवाद करते हुए देखा था। उसने लिखा है कि "मार्क्स तानाशाही ढंग से बोलता था, विरोध उसे बिल्कुल पसंद नहीं था।" भीड़ के सामने मार्क्स बहुत घबरा जाता था, झगड़े-टंटे से दूर रहता था। कभी किसी जुलूस में वह नहीं गया। उसकी पत्नी ने लिखा है कि वह सभाओं को भी टालता था। वह साथियों के छोटे-छोटे संगठनों में बहुत मुखर और यशस्वी रहता था। पिता के नाते वह वत्सल था, जीसस क्राइस्ट का 'बच्चों से प्रेम' उसे पसंद था। हर चीज में वह 'संघर्ष' देखता था। एक और भाषा सीखना एक और हथियार पाने के बराबर मानता था। उपन्यास बहुत पढता था, विशेषत: वाल्टर स्काट और बाल्जाक के। शेक्सपीअर तो पूरे मार्क्स-परिवार के देवता थे। मार्क्स की नौकरानी हेलेन डेमुथ को एक अवैध बेटा हुआ फ्रेडरिख। एंगेल्स जब मर रहा था तो उस ने यह रहस्य बताया कि यह पुत्र मार्क्स से ही था।

मार्क्स के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद, इतिहास की वर्ग-संघर्षवाली आर्थिक व्याख्या पूंजीवाद में मनुष्य का अलगाव (एलियेनेशन), पूंजीवाद में निहित उस के नाश के बीज, क्रांति की दो व्याख्याएं एक सामयिक, और दूसरी चिरन्तन आदि सब सुपरिचित है। परन्तु मार्क्स-वाद की यूरोप और भारत में कैसी परिणति हुई यह दर्शनीय है।

जर्मनी में एंगेल्स के बाद कार्ल काउटस्की (1854-38)-'डी न्यूई जाईट' के सम्पादक ने मार्क्स को आर्थिक चिंतक के नाते प्रस्तुत किया है। काउट्स्की किसान और मजदूरों की एकता का समर्थन नहीं करता। मजदूर ही अन्यायी राज्य को उलटाने में सक्षम होंगे ऐसा, उसका मानना है। वह शांति के मार्ग से सत्ता-परिवर्तन सम्भव मानता है। जर्मनी में ही बेनंस्टाइन (1850 1932) ने 1896 में लिखना आरम्भ किया कि मार्क्सवाद का 'संशोधन' आवश्यक है। पोलैंड के राजा लक्सेमबुर्ग ने भी काउट्स्की के साथ-साथ बेनंस्टाइन का विरोध किया। मजदूरों के मूल्य—सिद्धान्त को लेकर यह विरोध बढा। बेमंस्टाइन ने जर्मन: डच, अंग्रेजी सांख्यिकों के आधार पर मार्क्स के 'पूंजी' सिद्धान्त को झुठलाने का यत्न किया। उसके अनुसार मार्क्स का विश्लेषण वैज्ञानिक नहीं था, चूंकि वह हेगेल और रिकार्डो के सिद्धांतों पर आधारित था। आर्थिक स्थिति निरन्तर परिवर्तनशील थी। काउट्स्की का तर्क यह था कि ज्यों-ज्यों उद्योग बढते जाते हैं, कृषि भी उन पर निर्भर होती जाती है। कृषि भी आर्थिक और उद्योग प्रधान होती जाती है। रोजा लक्सेम्बुर्ग का कहना था कि पूंजीवाद के अन्तर्विरोध वित्त के अन्तर्राष्ट्रीय विनियोग और उपनिवेशवाद से बढ़ते जाते हैं, जिनसे युद्ध की अनिवार्यता बढ़ती है, और ऐसे समय जनशक्ति सत्ता हथिया सकती है, क्रांतिकारी ढंग से।

युद्ध और शांति के प्रश्न पर मतभेद बढ़ते गए। जर्मन राइशटाग के सोशल डैमाक्रेटोने प्रथम विश्वयुद्ध के पहले, युद्ध को वित्तीय सहायता देने का समर्थन किया। युद्ध-विरोधी जर्मन मार्क्सवादी थे लीब्कनेख्ट और लुक्सेमबुर्ग। लुक्सेम्बुर्ग ने 1913 में 'डी आकुमुलेशन डेस कापिताल्स' में तर्क दिया कि मार्क्स ने पूंजी खण्ड-2 में जो बात कही है उसमें परस्पर विरोध है। इस विदुषी के अनुसार पूंजी का संग्रहण अनिश्चित और अनन्तकाल तक चलेगा यह भी मार्क्स का मत है, और मार्क्स यह भी कहता है कि पूंजी के भीतर अन्तर्विरोध होकर वह मजदूर वर्ग द्वारा उस पर अधिकार प्राप्त होता आएगा। लुक्सेम्बुर्ग का कहना है कि मार्क्स अतिसरलीकरण कर रहे हैं, और मानकर चलते हैं कि दुनिया में पूंजीपति और श्रमिक ये दो वर्ग सदा ही रहेंगे। पूंजी अपने देश में से उठकर अन्य देशों में उपनिवेश बनाएगी। उसका अन्त तो उसी दिन होगा कि जब पूंजी-वादी देशों के बाहर भी उसका प्रभुत्व समाप्त हो जाएगा यानी वह एक अंतिम सीमा तक पहुंच जाएगा। इस पर बहुत बहस होती रही है।

आस्ट्रिया के समाजवादियों में ओटो बाउएर (1881-1938) ने अपने डी नात्सनालिटाननफ्रागे उण्ड डी सोजियाल डीमोक्राटी (1906) 'राष्ट्रकों का प्रश्न और सामाजिक जनतन्त्र') में जो आत्म-निर्णय के प्रश्न उठाए उनका विचार लेनिन ने भी किया है। हिल्फेरडिंग ने बैंकों तथा औद्योगिक मोनोपोलियों (एकाधिकारों) के प्रभाव और अधिकार में पूंजी कैसे आती जाती है इससे लेनिन भी प्रभावित हुआ और 1916 में लेनिन ने लेख लिखा, साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की सर्वोच्च स्थिति।

सोवियत रूस में मार्क्स के विचारों की परिणति का अध्ययन महत्वपूर्ण विषय है। 'डास कापिटाल' 1872 में रूसी में अनुवादित हुआ। गिओर्गी प्लेखानोव (1857-1918) ने मार्क्सवाद को रूसियों से परिचित कराया। पर लेनिन उसे व्यवहार में लाया। 1894 में लेनिन ने अपने 'जनता के मित्र' लेख में मार्क्स के 'भौतिकवादी सामाजिक सम्बन्ध' और आदर्शवादी सामाजिक सम्बन्धों के बीच अन्तर पर बल दिया। रूसी पूंजीवाद पर मार्क्स के विचारों को उन्होंने 1897-99 में प्रटित करते हुए किसानों की भूमिका पर लिखते हुए 'दि डेवेलपमेंट आफ एशियन 'कम्युनिजम' में लेनिन लिखते हैं—

'हम मार्क्स के विचारों को सम्पूर्ण और अपरिवर्तनीय या अखण्डनीय नहीं मानते। हम इससे उलटे इतना ही मानते है कि विज्ञान की एक कोनशिला मार्क्स के सिद्धान्तों ने स्थापित की। समाज-वादियों को इस विज्ञान को आगे बढ़ाना चाहिए। रूसी समाजवादियों को तो इस सिद्धान्त का एक स्वतन्त्र स्पष्टीकरण आवश्यक है।

लेनिन ने 'व्यावसायिक क्रान्तिकारियों के प्रशिक्षण पर अपनी दृष्टि जमाई। 1921 के वसन्त में पार्टी की दसवीं कांग्रेस में क्रोंसटाड में नाविक विद्रोह हुआ और देहान्तों में किसान असन्तुष्ट हों रहे थे, तब लेनिन ने सब तरह के विरोध को निर्मम भाव से दबाने और उस पर रोक लगाने का आग्रह किया। इसी में से स्तालिनवाद का आगे उदय हुआ जिसने अपने विरोधियों के सम्पूर्ण विनाश का कदम उठाया।

स्तालिन ने 'मार्क्सवाद-लेनिनवाद' शब्द दिया। लेनिन की 1924 में मृत्यु के बाद सोवियत संघ का विकास कार्य उसने बड़े उत्साह से उठाया। मार्क्सवाद का द्वन्द्ववाद की मान्यता थी कि वाद का प्रतिवाद होता है परन्तु वाद में से ही प्रतिवाद जन्म लेता है। अत: वाद पूर्णतय: नष्ट नहीं होता। उसमें कुछ रह जाता है जो प्रतिवाद में परिणत हो जाता है। दोनों अन्तत: सम्वाद की स्थिति में पहुंचते है। मार्क्सवाद की यह भी मान्यता थी कि विकास धीमे-धीमे न होकर छलांग से, सहसा, एक दम होता है। इसके लिए भीतर के अन्तर्विरोधो को प्रकट होना चाहिए। स्तालिन के शब्दों में 'प्रत्येक वस्तु और प्राकृतिक घटना के भीतर सकारात्मक और नकारात्मक दो तत्व होते हैं, इसलिए उसमें अन्तर्निहित परस्पर विरोध होता है। यह अन्तस्संघर्ष ही विकास की प्रक्रिया है।

स्तालिन और कार्ल मार्क्स में बहुत अन्तर आ गया। कार्ल मार्क्स ने शोषित जनता की बढती हुई क्रान्ति-चेतना, बौद्धिकता और वर्ग हित के ज्ञान पर जोर दिया। स्तालिन अधिक अधीर थे, उन्होने 'प्रालितारियेत' (जनता) के बदले 'डिक्टेटरशिप' (तानाशाही) पर जोर दिया। वह आत्म निष्ठता के बदले वस्तु-निष्ठ अधिक थे। इसलिए वह प्रसिद्ध कथा स्तालिन के बारे में हैं कि एक बार पुश्किन की प्रतिमा बनाने के लिए शिल्पीजनों से कहा गया। कई माडेल आए। जो पसन्द किया गया उसमें स्तालिन की प्रतिमा बनी थी और उसके हाथ में एक ग्रन्थ दिखाया गया था जिस पर 'पुश्किन-ग्रन्थावली' लिखा था और एक कहानी है स्तालिन के पास दो कम्यु-निस्ट पार्टी के प्रमुख अधिकारी पहुंचे। एक स्थानीय था जो स्तालिन से एकनिष्ठ था। दूसरा दूसरे देश का था और विरोधी था। स्तालिन ने कहा—'दूसरे को पहले भेजो'। इसी का परिणाम यह हुआ कि त्रात्स्की से स्तालिन की नहीं बनी। स्तालिन के ही शिष्य ख्रुश्चोव बाद में उनके विरोधी हो गए। स्तालिन के ताबूत में से उनका मृत शरीर निकालकर अन्यत्र दफनाया गया। एक दशक तक स्तालिन का नाम वहां नहीं लिया जाता था। अब क्रेमलिन के पास की दीवार पर मार्शल झुकोव आदि के साथ स्तालिन की भी अर्द्ध प्रतिमा है।

(क्रमश:)

शारीरिक उन्नति का स्वरूप

ले.—श्री जगदीशराम आर्य लुधियाना

उन्नति का स्पष्ट और सीधा अर्थ है—पूर्व स्थिति मे परिवृद्धि का होना। अत: शारीरिक उन्नति का अभिप्राय भी यही हो सकता है कि हमारे शरीर के सम्पूर्ण अर्न्त· बाह्य अंगो की शक्तियो, क्षमताओ और उनकी स्वस्थता में अपेक्षाकृत वृद्धि का होना। अर्थात् आख, कान, नाक, हाथ, पांव, भुजाओ और टांगो आदि बाह्य अंगो की क्षमताओ तथा इनकी निरोगता आदि मे उत्तरोत्तर परिवृद्धि का होना और इसके साथ-साथ हमारे अन्त करण सहित सभी आन्तरिक कर्म व ज्ञान इन्द्रियों का भी स्वस्थ और क्रियाशील तथा सक्षम बने रहना ही हमारी शारीरिक उन्नति का परिचायक है। जिसमें हमारी समूची शारीरिक क्रियाए सुचारू रूप से यथा समय निर्बाध सम्पन्न होती रहें।

हमारी सभी बाह्य शारीरिक क्रियाए स्वस्थता से तभी सम्पन्न हो सकती हैं। यदि हमारे शरीर के भीतरी वह अग जो हमारे शरीर का निरन्तर और शाश्वत रूप मे होने वाली सभी क्रियाओ के महत्वपूर्ण आधार हो। यथा हृदय की गति (धडकना) श्वास प्रश्वास का चलना शरीर के भीतर तरल, सूक्ष्म तथा स्थूल पदार्थों का स्वत स्थानान्तरण होते रहना। ये क्रियाए हमारे शरीर में सदैव निरन्तर चलने वाले शाश्वत पाच प्रवाहो के रूप मे स्वत होती रहती है। अर्थात वायु का प्रवाह रक्त का प्रवाह जो वातवाहनी और रक्त वाहनी नाडियो के द्वारा शरीर में सर्वत्र होता रहता है, तथा तीसरा जल का प्रवाह; जो जल हम मुख से पीते है वह शरीर के भीतर अपने विशिष्ट कार्य करता हुआ मूत्र और स्वेदन के रूप में बाहर निकल आता है। चौथा प्रवाह हमारे शरीर मे स्थूल भोजन का प्रवाह निरन्तर चल रहा है। अर्थात् हम जो स्थूल भोजन मुख के द्वारा लेते हैं। उसके अनेक पचन होकर तत्पश्चात् उसके कई रूपान्तर होकर उसके सप्त धातु बनते हैं और उनका यथा समय यथा स्थान स्थानान्तरण भी होता रहता है। उसका स्थूल अवशेष मल के रूप में गुदा के मार्ग से शरीर से बाहर निकल जाता है। पांचवा प्रवाह प्राण का प्रवाह कहलाता है। इस प्राण के द्वारा ही हमारे शरीर मे सभी सूक्ष्म तथा स्थूल चेष्टाएं सम्पन्न होती हैं और शरीर के भीतर समस्त पदार्थों का स्थानान्तरण भी इसी प्राण शक्ति के माध्यम से ही हुआ करता है, और भोजनादि के समस्त पचन और उनका रूपान्तरण भी इसी प्राण शक्ति के द्वारा ही हुआ करता हैं।

वस्तुत हमारा सम्पूर्ण शारीरिक सुख और विकास इसीपर निर्भर करता है कि हमारे शरीर के आन्तरिक और बाह्य सूक्ष्म व स्थूल सभी अग प्रत्यग अपना-अपना कार्य ठीक रीति से सर्वदा करते रहे।

अपने शरीर की ऐसी स्थिति बनाने के लिए हम घोर तप करना होगा तथा स्वास्थ्य रक्षा के आधार भूत नियमो का पूरी सावधानी से परिपालन करना होगा। अपने शरीर के सभी अगो को बलिष्ठ बनाना होगा। इसके लिए अत्यन्त उपयुक्त प्रक्रिया अपनानी होगी।

आयुर्वेद ग्रन्थो का 'यह निश्चित मत है कि हमारे शरीर को पूर्ण स्वस्थ सुदृढ बनाने के लिए प्रमुख आधार प्राणायाम और ब्रह्मचर्य ही है। अत इन दोनो को अपनाए बिना हम अपनी शारीरिक उन्नति के परम मनोरथ को कदापि प्राप्त नही कर सकते।

शारीरिक उन्नति का एक अन्य महत्वपूर्ण साधन है शरीर को आत्मा से मिलने वाला सहयोग। वस्तुत शरीर स्वतः निर्जीव है इसकी सभी क्रियाए और चेष्टाए आत्मा के सग से ही सम्पन्न हो रही हैं। आत्मा की प्राण शक्ति ही शरीर को गतिशील बनाती है जिसके बिना शरीर की कोई भी क्रिया नही हो सकती। आत्मा भी शरीर के माध्यम के बिना कोई कार्य सम्पन्न नही कर सकती आत्मा और शरीर अकेले अकेले कोई कार्य नही कर सकते। परस्पर मिलकर एक दूसरे के सहयोग से ही कार्य करने मे सक्षम हो सकते हैं।

मानव के सभी कार्यक्रम तभी सफल हो सकते हैं यदि इसकी आत्मा और शरीर दोनो ही स्वस्थ और निरोग हो। अपने शरीर की स्वस्थता तथा निरोगता को स्थिर बनाए रखना ही मानव का परम कर्तव्य हैं। जो स्वास्थ्य रक्षा के सभी नियमो का पालन करने और अपनी भोजन की व्यवस्था का पूर्ण सुधार करने से ही उपलब्ध हो सकती है। भोजन की व्यवस्था का आदर्श और सर्वश्रेष्ठ उपाय है युक्ताहार बिहार' अर्थात भोजन निश्चित समय पर ही अपनी प्रकृति के अनुकूल ही हो तथा अपनी पाचन क्षमता के अनुरूप मात्रा मे ही सदा लिया जावे।

—

लुधियाना में वैदिक धर्म प्रचार की धूम

आर्य युवक सभा पंजाब के संयोजक श्री रोशनलाल शर्मा के सत्प्रयासो से लुधियाना मे आर्य समाजो विशेष तथा आर्य युवको मे बडी उत्तमता से धर्म वैदिक धर्म का प्रचार हो रहा।

13 अप्रैल को आर्य समाज फोकल प्वाईट के सहयोग से समारोह पूर्वक वैशाखी पर्व मनाया गया, 14 अप्रैल को एक विशेष सत्सग का आयोजन किया गया।

28 अप्रैल की आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना मे डा ए बी बागिया की अध्यक्षता मे एक विशेष सभा का आयोजन किया गया जिसमे पंजाब के संयोजक श्री रोशनलाल शर्मा ने नवयुवको को उदबोधन किया। आर्य समाज के प्रधान डा रामसरूप जी ने नवयुवको की जागृति की महता पर भाषण देते हुए कार्यक्रम की सराहना की। समाज की ओर से 51) रुपये वेद प्रचार मे दान दिए।

5-5-85 को भी आर्य समाज फील्ड गंज लुधियाना द्वारा एक विशाल सत्सग का आयोजन किया गया।

—

आर्यसमाज हबीबगंज लुधियाना का उत्सव

आर्य समाज हबीबगंज लुधियाना का वार्षिकोत्सव 18 19 मई शनिवार रविवार को बडे समारोह से मनाया जा रहा है जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री प शिवराज सिंह जी शास्त्री एम ए मौलवी फाजिल तथा श्री सीताराम जी भजन मण्डली सहित पधारे तथा इस अवसर पर समाज द्वारा सभा मन्त्राणी श्रीमती कमला आर्या को प्रेरक भाषण हुआ। दीवान गजेन्द्रकुमार जी ने झण्डा फहराया। श्री ओम् प्रकाश गुप्त एम एल ए, ने आर्य समाज के कार्यों की महानता बताइ समाज के सामने सडक बनवाने का आश्वासन दिया।

धर्म प्रेमी सज्जनो ने बडा लाभ उठाया। उपस्थिति सन्तोषजनक रही।

—आशानन्द आर्य



श्रद्धेय पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज शाक्ता क्रूज बम्बई की ओर से 19-5 85 को महर्षि दयानन्द के ग्रन्थो व उनकी वेद भाष्य शैली के अधिकारिक विद्वान श्रद्धेय प युधिष्ठिर जी मीमासक का अभिनन्दन समारोह होगा। इस अवसर पर उन्हे स्वण पदक व 75000) रुपये की थैली भेंट की जाएगी।

समारोह की अध्यक्षता लोक सभा के अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ जी करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप मे प्रो वेद व्यास प्रधान. दयानन्द कालेज प्रबन्धकर्तृ सभा उपस्थित होंगे।

श्रद्धास्पद प, जी ऋषि दयानन्द के प्रतिपादित मार्ग पर जीवन-भर साधक रूप से समर्पित जीवन बित ते रहे है उन की बहुमूल्य सेवाओ का यह मूल्याकन समाज के लिए गौरव का विषय है। श्री देवेन्द्र कुमार व कैप्टन देवरत्न आर्य व समस्त सदस्य इसके लिए साधुवाद के पात्र हैं। —सम्पादक

खन्ना में आर्य नवयुवकों की सभा

12-5-85 रविवार को आर्य समाज खन्ना मण्डी लुधियाना मे आर्य नवयुवकों की एक सभा का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री हरिदेव चौधरी ने की। यज्ञ वेद प्रचार भजन-मण्डली के गीतों के पश्चात आर्य युवक सभा पजाब के सयोजक श्री रोशनलाल शर्मा ने नवयुवको को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज हमारे सामने देश की एकता और अखण्डता का एक बहुत बड़ा प्रश्न है, अनेक वीरो ने अपने प्राणो की आहुति दी, आज इसी स्वतन्त्रता को कायम रखने की जिम्मेदारी हम सभी पर है। श्री सुधीर जी भाटिया, श्री विनोद जी बासल तथा श्री यशपाल जी आर्य ने भी युवको को सम्बोधित किया।

—सुधीर भाटिया उप सयोजक
आर्य युवक सभा पजाब

—

आर्यसमाज नवांशहर

आर्य समाज नवांशहर दोआबा के वार्षिक निर्वाचन निमित बुलाई साधारण सभा द्वारा श्री देवेन्द्र कुमार सहीन को सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया एवं उन्हें यह अधिकार दिया गया कि वे अपने सहयोगी व स्वेच्छ से अन्य पदाधिकारियो व अन्तरग सदस्यों का चुनाव कर लें।

राधेश्याम वैदिक योगाश्रम गुरुकुल बुराड़ी दिल्ली

प्रथम वार्षिकोत्सव 24 से 26 मई 85 को समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। जिसमे 'वेद महायज्ञ' योग साधना शिविर आकर्षक प्रदर्शन नवीन ब्रह्मचारियो का प्रवेश आदि महत्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं।

—

(2 पृष्ठ का शेष)

और ट्यूशन का दूसरा अर्थ करना पड़ता है। ट्यूशन की प्रथा [illegible] होनी चाहिए। शिक्षकों को सरकार पर्याप्त वेतन देती है। आवश्यक होने पर उनके वेतन कम और बढ़ाए जा सकते हैं पर ट्यूशन करने की आशा शिक्षकों को नहीं चाहिए। ट्यूशन के कार्य को दण्डनीय अपराध बना देना चाहिए. ट्यूशन गुरु शिष्य के ऊंचे और पवित्र सम्बन्धों और आदर्शों के सर्वथा विरुद्ध है।

(21) शिक्षणालयों में छात्रों के वर्ग बहुत छोटे-छोटे होने चाहिए जिससे शिक्षक लोग प्रत्येक छात्र की प्रगति पर पूरा-पूरा ध्यान दे सकें। आदर्श स्थिति तो यह है कि किसी भी वर्ग में 10 से अधिक छात्र न हो। इसके लिए यथोचित सख्या में शिक्षको और भवनों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन न. 74250 (रजि. न. पा. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य मर्यादा जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अक 8, 20 ज्येष्ठ सम्वत् 2042, तदनुसार 2 जून 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

भूमि माता के दावेदार चेतो

ले.—श्री आचार्य शिवराज जी शास्त्री एम, ए. मौलवी फाजिल

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो यज्ञः पृथ्वीम् धारयन्ति ।
सानो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोक पृथिवीनः कृणोतु ॥
अथर्व 17-1-1

ससार में भूमि के भूभागो के लिए अनवरत सघर्ष चलता रहता है । नित नये इतिहासों का निर्माण हो रहा है । आज का मानव अपने स्वय के कल्पित भेद भावो मे इतना बट गया है कि अपने-अपने भाग की भूमि पर अपने अधिपत्य को स्थायी बनाए रखने के लिए मानव हत्या को अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्यो मे मान बैठा है । योरोप में तोमर सहार की इतनी बडी तैयारी हो रही है कि यदि कुछ मानवतावादी सस्थाए दिन-रात शोर न मचाती रहे तो किसी भी क्षण यह भूमि मानव रहित हो सकती है । घोर घातक हथियारो की दौड में प्रत्येक देश एक दूसरे से आगे बढ जाना चाहता है ।

कोई नही विचार करता कि यह एक अरब 97 करोड वर्ष पुरानी भूमि माता ने कितने वीरो सम्राटों व साम्राज्यो को जन्म दिया और सबको अपनी ही गोद मे फिर सुला लिया । आज उनमे से बहुत वीरो सम्राटो का तो नामो-निशान तक शेष नही है । भूमि माता फिर भी माता की भान्ति अहर्निश अपने असख्य पुत्रो को जन्म देती आ रही है । वे पुन माता की पुकार न सुनकर मनमाने ढग से नित नए मसूबे बनाकर भूमि माता के शाश्वत सत्य नियमो का उल्लघन करते हुए विनाश के बीज बोते आ रहे हैं । माता के स्वरूप को उन्होंने विकृत कर डाला है । वास्तव में पृथ्वी माता को धारण करने के लिए जिन नियमो की पृथ्वी माता के भी निर्माता प्रभु प्यारे ने कल्पना की है वह निम्न है । (बृहत् सत्य) बडा सत्य (उग्रम ऋतम) कठोर नियम (दीक्षा) दृढ सकल्प (तप.) परिश्रम (ब्रह्म) वेद (यज्ञ) यज्ञ (पृथिवीं धारयन्ति) इस भूमि माता को धारण करते हैं । (सान) वह भूमि माता ही (भूतस्य भव्यस्य) हमने जो कार्य पहले किए हैं और जो कार्य हम कर रहे हैं उनकी एक मात्र (पत्नी) सरक्षिका स्वामिनी है) वह ही (न) हमारे लिए (उरुम) विशाल विस्तृत (लोकम्) स्थान का (कृणोतु) प्रदान करे । यहा (न) हम शब्द समाज विशेष समुदाय विशेष के लिए प्रयुक्त हुआ । भूमि पर यश व स्थान अमर व टिकाऊ उन्हीं का रह सकता है जो अपने जीवन को भगवान के बनाए हुए स्थायी सुदृढ एव सत्य नियमो के अनुसार भूमि माता की सेवा करते है । आज लाखो वर्ष पश्चात भी मर्यादा पुरुषोत्तम राम की याद ताजा है । घर-घर उनका गुण-गान करते है । क्योकि उन्होने भूमि माता के शाश्वत नियमो का कभी उल्लघन नही किया । मान्धाताको स्मरण करते है जो पृथ्वी पर भूमि का अलकार बन कर रहे । रघुवशी दिलीप को याद करते हैं जिन्होने गोमाता की रक्षा मे घोर तपस्या की । योगीराज कृष्ण को याद करते हैं जिन्होने सत्य शाश्वत नियमो का पालन करते हुए ससार का मार्ग दर्शन किया । अन्यथा इस भूमि पर पर रक्त की नदिया बहाने वाले असख्य सम्राट् इस भूमि के दावेदार बनकर आए यह माता सबको अपनी गोद मे सुला कर आज भी नित नए मानवो का सृजन कर रही है —

यह चमन यू ही रहेगा
और हजारो बुलबुले ।
अपनी अपनी बोलिया
सब बोलकर उड जाएगी ।

पृथ्वी माता को सृजनहार के सत्य ने ही धारण किया हुआ है । मानव मात्र के सारे कार्यों की जो इतिहास की वस्तु मात्र बनकर रह गए हैं और भविष्य की मानव की मारी इस माता को हथियाने की योजनाए सभी यहा ही धरी की धरी रह जाएगी । वास्तविक स्वामी इस का केवल एक और एक परमपिता परमात्मा है । मनुष्य का धर्म एक केवल यही है कि प्रभु के नियमो, मर्यादाओ, सत्य दीक्षा, तप द्वारा जीवन मे माता के पुत्रो की सतत सेवा करते हुए अपनी जीवन यात्रा को सफल बनावें । माता का यश माता को अपनी जननी मानकर जीवन मे आने वाले उद्दण्ड, उश्रृखल व मिथ्या वाद-विवादो मे समय नष्ट न करके मानव मात्र की सेवा का व्रत धारण करे । इतने विशाल विस्तृत ससार मे एक प्राण धारी मनुष्य का अस्तित्व ही कितना है —

कोटानुकोटि भूमि जिसमे असख्य प्राणी,
भगवान अपना नम्बर मैं कौन सा
लिखाऊ ।

वास्तव मे विश्व का महान् नियामक नियन्ता कठोर नियमो से स्वय ही ससार का सचालन कर रहा है ।

ससार मे सभी महापुरुषो ने प्रभु की सत्ता स्वीकार करने का सन्देश मनुष्य मात्र को दिया था । उनके अनुयायियो ने महापुरुषो के नाम पर बडे बडे साम्राज्यो की रचनाए कर डाली । ससार का सुख वैभव पाकर मनुष्य परमात्मा तो भुला ही देता है अपने भूत-भविष्य को भी ध्यान मे नही लाता । गीता मे इस स्थिति का सुन्दर वर्णन है—

भोगैश्वर्य प्रसक्तानां तया अपहृत चेतसाम्
व्यवसायात्मिक बुद्धि समाधौन विधीयते ।

जब ससार के भोग ऐश्वर्य को जीवात्मा प्राप्त कर लेता है तो वह सर्वोच्च सत्ता को विसरा देता है । भोगैश्वर्य एक प्रकार का नशा है जिसे पाकर आदमी पागल सा बन जाता है किसी कवि ने बडा सुन्दर कहा है—

कनक कनक ते सौ गुनी मादकता
अधिकाय ।
यह खाए बौरात है वह पाए बौराय ।

धतूरे को तो खाकर मनुष्य पागल होता है परन्तु सोना तो जेब मे आते ही मनुष्य आत्मा परमात्मा को भूल जाता है । उस परम पिता की सत्ता से भी बडी शक्ति वह अपने अन्दर अनुभव करने लगता है । परन्तु भुलाने मात्र से परमात्मा की शक्ति व सत्ता मे क्या अन्तर पडता है । वह तो जब चाहे मनुष्य को पृथ्वी का राज्य दे दें और जब चाहे उसे फकीर बना दे । उसकी कर्म व्यवस्था मे इतनी बडी सच्चाई, इतना दृढ सकल्प, इतना दृढ नियमन है कि मनुष्य उसके फलरूपी बन्धन से किसी उपाय से भी छूट नही सकता है । तभी मन्त्र मे कहा गया है कि अपने अपने इस थोडे समय के उच्छृखल स्वामित्व पर इतराओ नही वास्तविकता को पहचानो तदनुकूल अपने कर्तव्यो का निश्चय करो और ससार मे रहते हुए भी जल कमलवत जीवन बिताना सीखो इस भूमि माता को प्रभु प्यारे के सिवा कोई धारण नही कर सकता—

ईशावास्य मिद सर्व यजर्वेद ।

सब कुछ प्रभु मय है अपनी सामर्थ्य व शक्तिया भी उसी पर आधारित हैं । उसके नियम इतने कठोर इतने सत्य, इतने व्यवस्थित व इतने परिपूर्ण हैं कि कोई अत्याचारी, प्रभु सत्ता से इन्कारी, अहकारी, बड से बडा शासक, सम्राट भी आज तक उसे भग नही कर पाया आत्मा सीमित समय इस शरीर मे रहकर ही सारे उपद्रव व प्रभु के नियमो के विपरीत काम कर सकता है शरीर छोडने पर तो सबको राम राम सत्य ही पुकारते सुना है । जैसे वह केवल मृत्यु के समय ही सत्य है । यही मनुष्य के पतन का कारण है । यही मनुष्य अपने लिए जीवन पथ मे काटे बोता है । जो उसे ही जीवन भर तो दुख देते ही हैं मृत्यु उपरान्त भी उसे उन्ही का भोग प्राप्त होता है । अतएव परम पिता परमात्मा की सत्ता शक्तियो को समझकर ही अपने जीवन के कर्तव्यो कर्मो का निर्णय व तदनुसार शुभाचरण व शुभ कर्मों का सचय करना मानव का अनिवार्य जीवन पथ है । प्रभु हमे शुभ कर्मों मे रुचि व अशुभ कर्मों से बचने की शक्ति प्रदान करे ।

महर्षि दयानन्दनिर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला

आर्य समाज- उपलब्धियां, सीमाएं और अपेक्षाएं दयानन्द सरस्वती के विचार—समय की कसौटी पर

ले.—डा. भवानीलाल जी भारतीय आचार्य व
अध्यक्ष दयानन्द चेयर पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

श्री देवेन्द्रनाथ ठाकुर को सामाजिक परिवर्तन का साधन बनाने का वैसा अवसर भी नहीं मिला जो उनके पूर्ववर्ती राजा राममोहन रॉय को प्राप्त हुआ था। यह अवश्य है कि वैदिक एकेश्वरवाद तथा औपनिषदिक ब्रह्मवाद को ब्राह्म की ब्राह्य पूजा पद्धति में सर्वोपरि महत्व देकर उन्होंने हिन्दू धर्म में व्याप्त बहुदेवोपासना जड़ पूजा तथा अपदेवताओं की अर्चना जैसे अन्धविश्वासों को धक्का दिया. परन्तु केशवचन्द्र सेन ने अपने पूर्ववर्ती ब्राह्म नेताओं के किये कराये पर पानी फेर दिया जबकि उन्होंने ईसाई मान्यताओं, ईसाई विश्वासों तथा ईसाई ढंग की पूजा पद्धति की श्रेष्टता एवं वरेण्यता का प्रतिपादन कर भारतीय हिन्दू धर्म की अस्मिता को ही ठेस नहीं पहुंचाई. उस पादरी वर्ग में प्रसन्नता की एक लहर भी उत्पन्न कर दी जो हिन्दू धर्म की इस परोक्ष आलोचना को देखकर गद्‌गद् हो रहे थे।

यों तो विदेशी शक्तियों ने इस देश में प्रारम्भ में ही अपने वाणिज्य और व्यवसाय की स्थापना कर अपनी जड़ों को मजबूत किया था किन्तु उनकी शक्ति में अधिक अभिवृद्धि उस समय हुई जबकि अपने उद्योग, व्यवसाय और व्यापार को सर्वथा सुरक्षित तथा स्थायी बनाने के लिए उन्होंने सैन्य शक्ति जोड़नी आरम्भ की। व्यापारिक प्रतिष्ठानों की रक्षा के लिए एकत्रित यह सेना कालान्तर में इस देश की सिख, मराठा, राजपूत, मुसलमान, गोरखा जैसी जातियों को उनके शक्ति स्रोतों से पृथक् कर किस प्रकार सम्पूर्ण देश को ही दास बना लेगी, यह इतिहास की एक स्मरणीय किन्तु शिक्षाप्रद घटना है जो हमें बताती है कि फिरंगियों पर विश्वास करके हमारे पूर्वजों ने कैसी भूल की थी। परन्तु बात केवल राजनैतिक पराधीनता की ही नहीं है। यदि अंग्रेज लोग केवल हमें पराजित करके ही सन्तोष कर लेते और अपनी ईसाईयत एवं तज्जन्य संस्कृति तथा जीवन पद्धति को हम पर थोपने का प्रयास नहीं करते तो सम्भवत: हम उन्हें यहां से निकालने में इतनी जल्दबाजी नहीं करते। परन्तु लार्ड मैकाले ने अपनी शिक्षा नीति का प्रचलन कर मानों हमें यह संकेत दे दिया कि उस पद्धति से शिक्षित लोग गोरे शासकों और उनके अधीन रहने वाले करोड़ों शासितों के बीच मध्यस्थ का कार्य करेंगे। यहां तक ही नहीं, इसी शिक्षा नीति को सफल बनाकर वे काली चमड़ी वाले हिन्दुस्तानियों को आचार, विचार, खान-पान तथा चिन्तन की दृष्टि से गोरा अंग्रेज बनाकर दम लेंगे।

इधर तो पश्चिमी शिक्षा तथा यूरोपीय भावधारा में दीक्षित भारत का नवयुवा वर्ग बेतहाशा पश्चिम का अन्धानुकरण करने लगा और उधर ईसाई प्रचारकों के कूट जाल में फसकर हमारे देश का अबोध, अशिक्षित तथा अन्धविश्वासों के पंक में आकण्ठ डूबा साधारण वर्ग अपनी आस्थाओं से मुंह मोड़कर ईसाई बनने में ही अपना त्राण देखने लगा। सर्वश्री माईकेल, मधुसूदनदत्त, नीलकण्ठ शास्त्री. रामचन्द्रबोस तथा पण्डिता रमाबाई आदि पठित वर्ग के भारतीय तो ईसाईयो द्वारा की गई हिन्दू धर्म की आलोचना का उत्तर देने में सर्वथा अक्षम ही थे, अत: उन्हें स्वधर्म का परित्याग कर ईसाईयत को स्वीकार करने में किञ्चित विलम्ब भी नहीं हुआ। दूसरी ओर अपने धर्म के मौलिक तत्वो से अपरिचित साधारण वर्ग के लोगों के द्वारा ईसाई प्रचारको के आक्रमण का उत्तर देना तो और भी कठिन हो रहा था।

कुछ इसी प्रकार की परिस्थितियों में गुजरात देशोत्पन्न एक चतुर्थाश्रमी दयानन्द सरस्वती ने सामान्यत: समस्त प्राणियों के हित और विशेषत. स्वदेशवासियों की अधोगति को दूर करने की दृष्टि से एक प्रबल आन्दोलन की आधारशिला बम्बई महानगर में 10 अप्रैल 1875 को रखी और उसे आर्य समाज का नाम दिया। स्वामी दयानन्द के विचारानुसार संसार की सर्वाधिक प्राचीन पूर्ण सभ्य तथा नाना प्रकार के आध्यात्मिक दार्शनिक तथा भौतिक उपलब्धियों के सर्वोच्च सोपान पर प्रतिष्ठित आर्य जाति के आदर्शों की यदि पुन: स्थापना का प्रयास किया जाए और आर्य सभ्यता संस्कृति एवं चिन्तन के आधारभूत वेदो की शिक्षाओं का पुन: प्रचलन किया जाए तो आर्यावर्त देश अपनी लुप्त परम्पराओं और गौरव को एक बार फिर प्राप्त कर सकेगा और आर्यावर्त की उन्नति ही अवशिष्ट संसार की उन्नति का कारण बनेगी। इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की थी। इस प्रबल आन्दोलन को जन्म देने के पश्चात् वे मात्र आठ वर्षों तक ही जीवित रहे थे किन्तु इसी अल्पावधि में उन्होंने अपने महान् तेजस्वी. व्यक्तित्व, अपार संकल्प बल तथा अपरिमित प्रज्ञा के द्वारा इस समाज को ऐसी राह पर डाल दिया जिससे कि आगामी आधी शताब्दी तक वह इस देश की धार्मिक. सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रगति का पूर्ण पर्याय बन गया। यहां संक्षेप में आर्य समाज की उन उपलब्धियों तथा सफलताओं की चर्चा आवश्यक है जो उसने अपने शताधिक जीवन काल में अर्जित की है।

सर्वप्रथम हमें धार्मिक क्षेत्र में आर्य समाज की उपलब्धियों का विवेचन करना है। हम देख चुके हैं कि स्वामी दयानन्द के आविर्भाव काल में हिन्दू समाज में प्रचलित पूजा उपासना की प्रणाली अत्यन्त विकृत हो चुकी थी। सच्चिदानन्दादि लक्षणों से युक्त परमात्मा के स्थान पर नाना देवी देवता, जड़, मूर्तियां, नदी. पर्वत, आदि हमारे आराध्य देवो का स्थान ले चुके थे। आर्य समाज ने बताया कि चेतन एवं प्रज्ञावान् मनुष्य के लिए जड पदार्थों की पूजा श्रेयस्कर नहीं है। इसी प्रकार आर्य समाज ने सच्चे धर्म का स्वरूप निरूपण करते हुए यह स्पष्ट किया कि वस्तु का स्वभाव ही उसका धर्म होता है और यह धर्म धर्मी से सर्वथा अपृथक् रहता है। आर्य समाज ने धर्म की उसी परिभाषा को मान्यता प्रदान की जो प्राचीन ऋषि मुनियों द्वारा स्वीकृत एव अनुमोदित है। वैशेषिक दर्शन के प्रणेता महर्षि कणाद के अनुसार धर्म वह तत्व है जिससे मनुष्य अपनी इहलौकिक और पारलौकिक उन्नति करता है। दूसरे शब्दों में मनुष्य की आध्यात्मिक भावनाओं के विकास के साथ-साथ उसका लौकिक उत्थान भी धर्म साधना का लक्ष्य है। महर्षि मनु ने धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच इन्द्रिय, निग्रह बुद्धि, विद्या, सत्य और अक्रोध को धर्म का लक्षण घोषित किया किन्तु साथ यह भी कह दिया कि आचार ही मनुष्य का परम धर्म है। स्वामी दयानन्द के विचारानुसार सत्य, न्याय, पक्षपात रहित तथा वेदाज्ञा के अनुकूल आचरण ही धर्म है। इस प्रकार विभिन्न परिभाषाओं को प्रस्तुत करने के अनन्तर आर्य समाज ने यह स्पष्ट कर दिया कि धर्म के जो मूलभूत तत्व है उन्हें स्वीकार करने में किसी भी देश, वर्ग या समाज के लोगों को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। यह सार्वभौम. सार्वकालिक तथा सार्वजनीन धर्म ही मनुष्य मात्र के लिए आचरणीय है। सत्य, अहिंसा, करुणा सर्वभूतहित विश्वबन्धुत्व आदि धर्म के वे मूल तत्व हैं जिन्हें स्वीकार करने में किसी भी व्यक्ति की विप्रतिपत्ति नहीं है।

इसके साथ ही आर्य समाज ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि आज संसार में धर्म के नाम पर जो नाना प्रकार के पाखण्ड, अनाचार, ढोंग तथा रूढ़िबद्ध कर्मकाण्ड आदि प्रचलित हैं, उन्हें धर्म कहना उचित नहीं है। यह अत्यन्त सन्तोष का विषय है कि आर्य समाज द्वारा प्रदत्त धर्म की इस मौलिक किन्तु व्यापक परिभाषा को सभी विचारशील प्रबुद्ध लोगों ने स्वीकार किया है। जिन मतों एवं सम्प्रदायों में धर्म के नाम पर नाना प्रकार के अन्धविश्वास मिथ्या कर्मकाण्ड तथा अनर्थक कर्म प्रचलित थे, उन मतों के अनुयायियों ने भी आर्य समाज के धर्म विषयक मन्तव्य की गुरुता को अनुभव करते हुए अपने सम्प्रदाय तन्त्र मे पर्याप्त परिशोधन एवं सुधार कर लिए है। स्वर्ग नरक: परलोक आदि के सम्बन्ध में जो अवैज्ञानिक धाराएं प्रचलित हो चुकी थी, आज उनका मूलोच्छेद भी हो चुका है. अत: यह कहने में हमें किसी प्रकार का कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि आर्य समाज ने मनुष्य के मनुष्यत्व को धर्म का पर्याय बताते हुए उसके कर्तव्य कर्मों को ही धर्म कहकर एतद्विषयक सारे भ्रमों का परिहार कर दिया है।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

नई शिक्षा प्रणाली और आर्य समाज

भारत सरकार इस समय देश में वर्तमान शिक्षा प्रणाली मे कुछ परिवर्तन करने पर विचार कर रही है। प्रधानमन्त्री कई बार कह चुके हैं कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली हमारी आवश्यकताओ को पूरा नहीं कर रही। उसमे कुछ सशोधन करने की आवश्यकता है। इस विषय में मैंने पहले भी लिखा था कि यह आर्य समाज के लिए नई चुनौती है। देश की किसी भी दूसरी सस्था ने शिक्षा क्षेत्र में इतने विशाल पैमाने पर कार्य नहीं किया जितना कि आर्य समाज ने किया। आज भी सारे देश मे सरकार के पश्चात् आर्य समाज ही दूसरी सस्था है जिसकी इतनी बड़ी सख्या मे शिक्षा सस्थाए है। किसी अन्य सस्था ने शिक्षा क्षेत्र मे इतना कार्य नहीं किया। इसका एक पक्ष और भी महत्वपूर्ण है वह यह कि श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने आज से 85 वर्ष पूर्व एक नया परीक्षण किया था। आज तो कई प्रान्तो मे गुरुकुल खुल गए हैं। हमारे पड़ोस मे हरियाणा प्रान्त मे ही कई गुरुकुल है। आज से 85 वर्ष पूर्व तो देश मे कोई गुरुकुल न था। जब स्वामी जी महाराज ने कागड़ी मे गुरुकुल प्रारम्भ किया तो देश के कई बड़े नेता उसे केवल इसलिए देखने आए कि शिक्षा के क्षेत्र मे यह नितान्त नूतन परीक्षण था। हमारी स्वतन्त्रता के इतिहास मे एक विदेशी पादरी श्री सी एफ, ऐन्ड्रूज का नाम कई बार आता है। उन्हे हमारे देश से प्रेम था और वह चाहते थे कि हमारा देश स्वतन्त्र हो जाए। वे महात्मा गाधी के भी बहुत निकट थे। इसलिए एक बार वह गुरुकुल कागड़ी मे यह देखने के लिए आए कि यह जो नया परीक्षण हो रहा है वह क्या है? वह इससे इतने प्रभावित हुए कि उन्होने गाधी जी को लिखा कि जो कुछ गुरुकुल में हो रहा है वह मानव जाति के नव-निर्माण मे एक एक उपयोगी प्रयोग हैं। उनके इन विचारो से गाधी जी भी बहुत प्रभावित हुए और वह भी कुछ दिनो गुरुकुल मे जाकर रहे। गुरुकुल की ख्याति हमारे देश की सरकार तक भी पहुच चुकी थी। बहुत देर तक भारत सरकार समझती रही कि इस गुरुकुल में सरकार के विरुद्ध क्रान्तिकारी तैयार किए जाते है। एक बार उत्तर प्रदेश के गवर्नर भी गुरुकुल को देखने आए और ब्रिटिश सरकार के प्रधान मन्त्री रेम्जे मैकडानल्ड भी आए।

यह सब कुछ लिखने का अभिप्राय: मेरा केवल गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली के महत्व को बताना, जनता व सरकार के सामने प्रस्तुत करना है। अब जबकि सरकार शिक्षा प्रणाली पर नए सिरे से विचार कर रही है तो कोई कारण नही कि वह गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली पर दृष्टिपात न करे और देखे कि उसके मौलिक सिद्धान्त क्या हैं और किस प्रकार वह आज की नई पीढी को इस प्रणाली के अनुसार एक नये रास्ते पर चला सकती है। परन्तु सरकार को भी किसी नये मार्ग पर डालने के लिए यह आवश्यक है कि उसे पहले हम लोग अर्थात् आर्य समाज जिसने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का एक नया परीक्षण किया था वह सरकार को बताए कि इस शिक्षा प्रणाली के आधारभूत सिद्धान्त क्या है? और उसके साथ इस समय तक आर्य समाज ने क्या कुछ किया। जैसाकि मैंने पहले भी लिखा था कि गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय का अध्यापक वर्ग इस दिशा में प्रयास कर रहा है कि वह अपनी एक योजना बनाकर भारत सरकार को दे रहा है। आज के इसी पत्र मे आचार्य प्रियव्रत जी का एक लेख प्रकाशित हो रहा है। उन्होने भी अपने कुछ सुझाव भारत सरकार को भेजे हैं। जिनकी केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री के सी पन्त ने प्रशसा भी की है। आचार्य प्रियव्रत जी का आर्य समाज की शिक्षण प्रणाली मे एक विशेष स्थान है। वे न केवल गुरुकुल के स्नातक हैं, गुरुकुल के कुलपति व आचार्य भी रह चुके हैं। वेदो का स्वाध्याय जितना उन्होंने किया है, बहुत कम व्यक्तियो ने किया होगा। थोड़ा समय हुआ जब उन्होने वेदो के राजनैतिक सिद्धान्तो पर एक बड़ा ग्रन्थ प्रकाशित किया। अब उन्होने अपने सुझाव भी सरकार को भेजे हैं और यह उस अनुभव के आधार पर है जो उन्हे एक लम्बे अरसे तक गुरुकुल में रहने पर प्राप्त हुए थे। कोई दूसरा व्यक्ति इस विषय मे इतना अधिकार पूर्वक नही कह सकता जिस अनुभूत मौलिक आधार पर आचार्य प्रियव्रत जी ने अपने विचार सरकार के सामने रखे हैं।

मैं तो यह समझता हू कि इस विषय पर आर्य समाज को अपने देश का नेतृत्व करना चाहिए। यह उसी स्थिति मे सम्भव हो सकता है कि यदि प्रमुख आर्यसमाजी जो शिक्षा विशेषज्ञ है एक स्थान पर इकट्ठे हो और कुछ समय लगाकर शिक्षा की सभी समस्याओं पर पारस्परिक विचार विनिमय करें। समस्या बहुत अधिक गम्भीर है। दो चार घण्टो के विचार विनिमय से इसका समाधान ढूढना सम्भव नहीं। इसके लिए तो कई दिनो तक बैठ कर विचार करना पड़ेगा कि हम किसी परिणाम पर पहुच सकेंगे। हमे यह न भूलना चाहिए कि जब स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल प्रारम्भ किया था तो उस समय की परिस्थिया व सामाजिक आवश्यकताएं आज से भिन्न प्रकार की थी। आज पाश्चात्य सभ्यता व पाश्चात्य विचारधाराओ का हमारे देशवासियो पर बहुत प्रभाव है। हमारे देश के नेता जब भी देखते हैं पाश्चात्यो की ओर देखते हैं। हमारे प्रधानमन्त्री ने कई बार कहा है कि वे अपने देश को इक्कीसवी शताब्दी की ओर ले जाना चाहते है। और साथ ही कम्प्यूटर एव दूसरे वैज्ञानिक उप-करणो का भी अधिक से अधिक उपयोग करना चाहते हैं। ससार की वर्तमान परिस्थितियो मे हम दूसरे देशो से पीछे नही रह सकते विशेषकर विज्ञान के क्षेत्र मे परन्तु उसी के साथ हमे अपने मौलिक सिद्धान्तो व अपनी सास्कृतिक परम्पराओ को भी सुरक्षित रखना है। यदि उन्हे भूल जाएं तो हमारा अपना कुछ भी न रहेगा। इसलिए आज आवश्यकता यह है कि अतीत की उपलब्धियो व वर्तमान की आवश्यकताओ का ठीक समन्वय कर ऐसी कोई नीति निर्धारित की जाए। यह महाभिक्रमण एक दो दिन चर्चा का विषय नही इस पर तो महीनो विचार करने के बाद ही किसी समुचित निर्णय पर पहुचने का विषय हैं। क्या आर्य समाज इसके लिए तैयार है। क्या उसमे यह क्षमता है कि वह देश का उचित मार्ग दर्शन कर सके। हमारे पास आज कोई श्रद्धानन्द नही परन्तु श्रद्धानन्द ने जिन्हे बनाया था उनमे से तो आज कई जीवित है। उन सबको एक जगह एकत्रित करने की कोई योजना बनानी चाहिए। मैं आर्य समाज के लिए इसे नई चुनौती समझता हू। क्या आर्य समाज इसे स्वीकार कर सकेगी?

—वीरेन्द्र

पंजाब की आर्यसमाजों से गेहूं के लिए अपील

पजाब के सस्कृत प्रेमी, भाईयो तथा बहिनो!

जैसा आपको विदित ही है कि महर्षि दयानन्द के गुरु ब्रह्मर्षि स्वामी विरजानन्द जी की जन्म भूमि करतारपुर मे विगत 14 वर्षों से सस्कृत महाविद्यालय चल रहा है। पजाब मे गुरुकुल पद्धति पर आधारित दादा गुरु विरजानन्द जी के नाम पर यह एक मात्र सस्कृत शिक्षण सस्था है।

इस वर्ष नए सत्र का प्रवेश 15 जून 85 से प्रारम्भ हो रहा है। इस बार प्रयत्न है कि 100 तक छात्र प्रविष्ट किए जाए। इसी हिसाब से खर्च भी बहुत बढ जाएगा। परन्तु आपके सहयोग से यह खर्च बड़ी आसानी से पूरा हो जाएगा। ऐसा मुझे पूरा विश्वास है। आज कल गेहू का मौसम चल रहा है। मैं चाहती हू कि इस मौसम मे कम से कम छात्रो के भोजन के लिए गेहू तो इकटठा हो ही जाए। विद्यालय के सह-अधिष्ठाता श्री सुखदेव जी इन दिनो गेहू इकटठा करने के लिए पजाब का दौरा कर रहे है अत मेरी सभी आर्य समाजो से सानुग्रह प्रार्थना है कि आप उन्हे स्थानीय मण्डी से अपने-अपने प्रभाव का प्रयोग कर तथा अपनी समाज की ओर से यथाशक्ति गेहू या तदर्थ राशि एकत्रित करवा कर सस्कृत प्रचार प्रसार मे सहयोग देकर विद्यालय को उन्नति की ओर ले जावे तथा पढने के लिए छात्रो को प्रविष्ट भी कराए। विशेष जानकारी के लिए आचार्य श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर (जिला जालन्धर) से सीधे सम्पर्क करें। अथवा पत्र लिखकर नियमावली मुफ्त मगावें। समयाभाव से मैं व्यक्तिगत आपको पत्र नही लिख सकी, इसके लिए मैं क्षमा चाहती हू। इस अपील को ही व्यक्तिगत सूचना समझें।

सहयोग की आशा से

—कमला आर्या सभा महामन्त्री

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला

दयानन्द, गांधी और मार्क्स

व्याख्याता—श्री डा. प्रभाकर माचवे, निर्देशक भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता

मनीषी मार्क्स

(26 मई से आगे)

भाषा और आत्म निर्णय के अधिकार के बारे में स्तालिन के वक्तव्य इस बात के साक्षी हैं कि वह मार्क्सवाद को आगे बढ़ाता रहा या आज जो रूस और चीन में मतभेद उभरे उनके बीच उसी कालमें बो दिए गए। स्तालिन दूर दृष्टा नहीं था। उसकी द्रुतगामी और निकट की सफलताओं में दिलचस्पी थी! परिणाम यह हुआ कि उसकी पुत्री ही उसकी सबसे बड़ी आलोचक हो गई, देश से बाहर निकल गई।

लिआं त्रात्स्की (1879-1994) की मृत्यु पर मैंने पटना से प्रफुलचन्द्र ओझा 'मुक्त' भारती, पत्रिका निकालते थे, उस में 'इस्का' नामक एक लेख छद्मनाम से लिखा था। रूसी क्रान्ति के 1905 और 1917 के दोनों बड़े पर्वों में बड़ी भूमिका थी। लेनिन की मृत्यु के बाद त्रास्की और स्तालिन शत्रुता बढ़ गई। त्रास्की की मान्यता थी कि पिछड़े हुए कृषि-प्रधान देशों में क्रान्ति किसानों को लेकर चलेगी। वहा खेती मे सुधार और समाजवादी विकास की गति भिन्न होगी. औद्योगिक, पूंजीवादी देशों में मजदूर क्रान्ति लाएंगे। इस तरह से 'क्रान्ति एक चिरंतन प्रक्रिया है' यह त्रास्की का विश्वास था। स्तालिन मानता था कि क्रान्ति एक ही वर्ग से. किसान या मजदूर या बौद्धिक कार्यकर्त्ता के सहारे अलग-अलग घटित हो सकती है। त्रास्की चाहता था कि क्रान्ति का शिक्षण विभिन्न प्रकारों से देना चाहिए। क्रान्ति का निर्यात हो सकता हैं। वह कम्युनिस्ट पार्टी में नौकरशाही ढग की संरचना के विरुद्ध था। वह अन्तिम क्रान्तिकारी विद्रोह को भी. वैज्ञानिक प्रयोग के ढग पर हर ब्यौरे और विवरण को ध्यान में रखकर सफल बनाना चाहता था। स्तालिन मे अधिनायकवाद, विभूति तत्व और प्रधान नेता के व्यक्तित्व के जादू पर अधिक आस्था थी। परिणाम स्पष्ट है—अमरिका में एक हथोड़े से स्तालिन के पुराने शत्रु त्रातस्की की हत्या कर दी गई। किसने की, यह पता नही चला।

चीन में मार्क्सवाद को माओ-त्से-तुंग लाए। 1930 के बाद वे मार्क्सवाद में चीनी परम्परित विचारों और संस्कृति का मिश्रण करते रहे। समाजवादी समाज के अन्तर्विरोध के बारे में माओ का विचार यह है कि वह दो प्रकार का है—एक तो 'हम और हमारे शत्रु' —इसका इलाज क्रान्ति ही है। दूसरा विरोध ऐसे परस्पर विच्छेदक ढंग का नहीं है, जैसे समाजवादी राज्य में शासन और शासित के बीच विरोध या दो प्रकार की कम्युनिस्ट पार्टियों का आपसी विरोध या एक ही कम्युनिस्ट राज्य में एक प्रदेश और दूसरे प्रदेश में विरोध—इनका इलाज बन्धुत्वपूर्ण आलोचना और आत्म-विश्लेषण है। माओ के अनुसार यह विरोध सामान्य और विशिष्ट दोनों हो सकते हैं। एक ही समय में दोनों का सह-अस्तित्व सम्भव है क्षम्य है। इन विरोधों में कभी बहुत स्पष्ट और कभी बहुत अस्पष्ट हो सकते हैं। कुछ प्राथमिक कुछ द्वैतीयिक प्रकार के हो सकते हैं। यह स्तालिनवादी अनमनीय सिद्धांत-निष्ठ मार्क्सवाद-लेनिनवाद से बहुत भिन्न है।

चीनी साम्यवाद ने कनफ्यूशियस (कां-फू) के दर्शन के प्रति जैसा रुख अपनाया और जैसे वह बदलता गया, उस से मार्क्स की इतिहास विश्लेषण की द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी और आर्थिक उत्पादन-सम्बन्धों पर आधारित दृष्टि से वह बहुत दूर की चीज है। चीन की विशाल लोक संख्या और प्राचीन सभ्यता का भी इस प्रकार के परिवर्तनवादी विचारों में हाथ में। 1958 में बड़ी लम्बी छलांग और 1961 में 'सांस्कृतिक क्रान्ति' के अध्ययन से यह पता चलता है कि शायद माओ अन्तिम दिनों में अधिनायकवादी होते जा रहे थे और अपनी पत्नी और 'चांडाल चौकड़ी' (गैंग आफ फोर) की गिरफ्त में अधिक थे। चीन के कम्युनिस्ट मानते हैं कि सोवियत रूस की तरह उनके नेता या शासक बूर्ज्वा या मैनेजरीयल नही हो गए हैं। माओ किसान नेता था और येनान की लाल मुक्तिवाहिनी का नेता अत: वह सारी प्रजा को साथ ले चलने में विश्वास करता था। चीनी माओवाद का प्रभाव माओ के चिन्तन पर है विशेषत मनुष्य और प्रकृति के सम्बन्धों के मामले में वह मार्क्स-ऐंगल्स की स्थापनाओं का अन्ध अनुयायी नहीं। संक्षेप में चीनी साम्यवाद कम कट्टर है, अधिक उदारवादी हैं।

यूगोस्लाविया में जोसिप ब्राज टीटो के सोवियत रूस और स्तालिन से 1948 में अलग होने पर एक अलग तरह का साम्यवाद पनपा: वह नौकरशाही और राष्ट्रीयता के अन्ध आग्रह का विरोधी है, टीटो मानता था कि कारखानों पर श्रमिकों का पूर्ण हक हो। अन्य बातों में वह वैसा ही पूंजीवाद-विरोधी हैं जैसे स्तालिनवादी है।

फिदेल कास्त्रो का क्यूबा में मार्क्सवाद सब प्रकार के अन्यायों के विरोध में तीसरी दुनिया का प्रतिनिधित्व है। वह फ्रांसीसि क्रान्ति से अधिक प्रेरणा लेता है, मार्क्सवाद के कट्टरपन, नौकरशाही, पन्थ बनाने के पक्ष के विरोध में कास्त्रो अपनी आवाजबार-बार उठाते हैं। एक तरह से कास्त्रो मार्क्सवाद का 'विद्रोही' रूप है जैसे वैदिक धर्म का बुद्ध या अन्य नास्तिक धर्म विकल्प चाहते थे। कास्त्रो का कहना है कि वही शुद्ध मार्क्सवादी है। कास्त्रो पहले राष्ट्रवादी हैं, मार्क्सवादी बाद में।

युरोकम्युनिज्म में आस्तित्वाद (नीत्शे कीर्कगार्द, फ्रायड) को मिलाकर चलने वाले कई चिन्तक हैं! अब मार्क्सवादी मक्का एक ही किताब. एक ही हर्फे आखिर एक ही मुल्ला और एक ही मिल्लत की तरह 'मक्का में टलिस्ट' नहीं रहा। वहां भी कई पन्थ-उपपन्थ, शाखा-प्रशाखाएं हो गई हैं। यह डेढ़ वर्षों की विश्व में मार्क्सवाद की विचार यात्रा है।

अब हम भारत की ओर मुड़ और विशेषत: हिन्दी प्रदेशों की ओर वहां मार्क्सवाद का प्रभाव ,बहुत देर से आया, बंगाल और महाराष्ट्र में यह प्रभाव अधिक जोरों से फैला। 1927 में कम्युनिस्ट पार्टी को भारत में स्थापना के बाद कई कांग्रेस समाजवादी बाद में कम्युनिस्ट पार्टी में गए। बाद में कई कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सिस्ट) में गये। इस सारी आतंकवादी क्रान्तिवादी विप्लवी आन्दोलन की मार्क्सवाद को अपनाने की प्रक्रिया में और उससे बाद में 'स्वप्नभंग' की स्थिति में आने में राहुल सांस्कृत्यायन के 'नए भारत के नए नेता' पुस्तक में कई उत्तम उदाहरण हैं। लेखक राहुलजी स्वयम् बाद में कम्युनिस्ट पार्टी से 19[illegible] से 1957 तक बाहर रहे। आत्म-निर्वासित या निष्कासित. जो ठी कह लें।

इस सिलसिले में एक महत्वपूर्ण मत मानवेन्द्रनाथ राय का है (मूल नाम नरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य जन्म फरवरी 22, 1887 कलकत्ता के पास एक गांव, मृत्यु जनवरी 195[illegible] देहरादून)। वे लेनिन के अत्यन्त निकट पहुंचे। कई नाम बदल कर बटाविया से जापान, चीन होते हुए सान फ्रांसिस्को 1616 में पहुंचे। न्यूयार्क में पकड़े गए। मैक्सिको 1917 में पहुंचे। 1919 में पहली कम्युनिस्ट पार्टी मैक्सिको में स्थापित [illegible] बोरोदिन के निमन्त्रण पर 1920 में दूसरी विश्व कामिटार्न कांग्रेस में पहुंचें।

(क्रमश:)

आर्य समाज का महान् संगठन एवं उसका कर्त्तव्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री डा. आनन्द प्रकाश जी के पधारने पर आर्य मर्यादा के लिए विशेष भेंट

प्र,—आपका आर्य समाज के भावी कार्यक्रम के बारे में क्या विचार है ?

उ,—वैदिक धर्म के सार्वभौमिक स्वरूप जिसका आधार विश्व शान्ति व मानव एकता है, का प्रसार करना आर्य समाज का भावी कार्यक्रम होना चाहिए। आज विश्व मानव को मानसिक शान्ति व प्रेम की महती आवश्यकता है। इस संदेश को प्रसार करने के नाम पर सैकड़ों व्यक्ति भारत से विदेशों में गए और उन्होंने स्थान-स्थान पर अपने केन्द्र बनाए इससे भारतीयता व भारतीय दर्शन के उज्जवल पक्ष का सीमित रूप से प्रचार हुआ। परन्तु वैदिक धर्म जो सम्पूर्ण जीवन दर्शन का सन्देश देता है का प्रचार अपने सच्चे रूप में अभी विश्व के समक्ष उपस्थित नहीं किया जा सका है जैसाकि महर्षि दयानन्द चाहते थे। अतएव इस देश की राष्ट्रीयता की अखण्डता के प्रति समर्पित होने के साथ ही विश्व के सम्मुख उपस्थित मानवीय जटिल समस्याओं के समाधान की दृष्टि से सच्चे मार्ग को उपस्थित करना ही आर्य समाज का भावी कार्यक्रम होना चाहिए।

प्र—आर्य समाज के संगठन को सुदृढ व प्रभावी बनाने के लिए आपके क्या सुझाव है ?

उ-जहां तक विस्तार का प्रश्न है भारत देश में आर्य समाज का संगठन किसी भी अन्य धार्मिक व सामाजिक सगठन से अधिक व्यापक है परन्तु उसकी प्रखरता व तेजस्विता बहुत मन्द हो गई है जिस का कारण संगठन की अनेक प्रकार की शिथिलताएं है। सगठन को प्रभावी बनाने के लिए सबसे पहले समर्पित कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। जैसाकि पूर्व काल में आर्य समाज के उपदेशक, प्रचारक विद्वान् व अधिकारीगण सर्वत्र आर्यसमाज का आदर्श उपस्थित करते थे। उसी प्रकार की लगन फिर से आनी चाहिए। कई बार 'चिराग तले अन्धेरा' जैसी स्थिति देखकर बहुत पीड़ा होती है। अपने संगठन के प्रमुख कार्यकर्ताओं को यहां यज्ञ देव व्रम, तो कम से कम अवश्य नियमित पालन करना चाहिए एवं अपने जीवन को आर्य समाज के अनुरूप बनाना चाहिए। हमारा सबसे बड़ा रचनात्मक कार्यक्रम पुस्तकालयों की स्थापना और स्वाध्याय की प्रवृत्ति को पुन: स्थापित करना है। वैचारिक पहलू को सुदृढ बनाए बिना बिना आर्य समाज का संगठन सक्रिय नहीं बनाया जा सकता अन्य रचनात्मक कार्यक्रम भी लाभदायक है परन्तु वे सभी इसकी अपेक्षा गौण हैं।

प्र.—आर्य समाज के आन्तरिक विवादों का आर्य समाज के प्रचार पर होने वाले प्रभाव को कैसे दूर किया जाए।

उ,—नि:सन्देह आर्य समाज में इतने अधिक आन्तरिक विवाद हैं कि शक्ति का बहुत बड़ा अपव्यय इन विवादों में हो रहा है। कहने की आवश्यकता नहीं कि सगठन के विवादों के कारण ही हमारी सारी शक्ति कुंठित हो गई है। पर यह बात ठीक है कि इन विवादो के रहते हुए भी आर्य समाज के प्रचार कार्य को बढावा देना चाहिए। यदि किसी विवाद में लगे हुए दोनो पक्ष आर्यसमाज से सच्चा प्रेम रखते हैं तो उसकी कसौटी यही है कि वे विवादों के रहते हुए भी आर्य समाज के प्रचार कार्य में एक जुट होकर कार्य करें। परन्तु अधिकतर ऐसा होता नही। एक दूसरे के अच्छे कार्य की भी निन्दा की जाती है और अच्छे कार्मों में भी बाधा उपस्थित करने की पूरी कोशिश की जाती है। यह नही होना चाहिए। वरिष्ठ अधिकारियों के विवाद-ग्रस्त पक्षों को यह प्रेरणा देनी चाहिए कि वे प्रचार कार्य में एक दूसरे का साथ दें।

प्र.—आज की युवा पीढ़ी का मार्ग दर्शन आर्य समाज किस प्रकार करे ?

उ.—पूर्व पीढ़ी में आर्य समाज युवा पीढ़ी का ही आन्दोलन हुआ करता था। युवा पीढ़ी ही सामाजिक परिवर्तन की अगुवाई करती है। आर्य समाज कार्यक्रम में युवा पीढ़ी की भागीदारी परम आवश्यक है। इसके लिए यह आवश्यक है कि आर्य समाज अपने अन्तर्गत युवा आन्दोलनको प्रोत्साहन दे। कार्यक्रम की दृष्टि से युवा आन्दोलन का सबसे बड़ा कार्य युवकों का चरित्र निर्माण और सामाजिक समस्याओं से निपटने के लिए एक नवीन दृष्टिकोण तैयार करना है। आर्य समाज के मार्ग दर्शन के द्वारा युवा पीढ़ी को समाज रचना की नई दिशा मिल सकती है।

प्र,—युवा पीढ़ी के बहके हुए कदमों को रोकने के लिए आप शिक्षा से क्या परिवर्तन सुझाव करते हैं।

उ,-शिक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन की बात सभी लोग करते है। वर्तमान प्रधान-मन्त्री श्री राजीव गांधी व शिक्षा मन्त्री श्री के. सी. पन्त ने भी नवीन राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति लागू करने का आश्वासन दिया है आर्य समाज ने शिक्षा के प्रसार में अतुलनीय योगदान दिया है। आधुनिक पद्धति पर आधारित शिक्षा और प्राचीन गुरुकुल पद्धति की इन दोनों ही दृष्टि-कोणों से आर्य समाज ने नवीन प्रयोग किए और शिक्षा प्रसार द्वारा सामाजिक उत्थान की दिशा में अत्यन्त सराहनीय कार्य किए। फिर भी महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के अनुकूल शिक्षा प्रणाली हम नहीं दे पाए। इस सम्बन्ध मे आज की वर्तमान परिस्थितियों में गम्भीर चिन्तन और भावी कार्यक्रम के निर्धारण की अत्यन्त आवश्यकता है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय एवं तृतीय समुल्लासों में शिक्षा के सम्बन्ध में जो बातें कही हैं आज सारे विश्व का झुकाव उस ओर है शिक्षा के परिवर्तन के सम्बन्ध में बहुत सी बातें कही जा सकती हैं। मैं समझता हूं दो मूल बातें यह हैं कि शिक्षा के द्वारा नैतिक मूल्यों का प्रसार हो, जिस से व्यक्ति समाज का योग्य नागरिक बने, साथ ही उसे कला-कौशल की दक्षता प्राप्त हो जिससे उसकी जीविका का स्थायी आधार बन सके। महर्षि दयानन्द ने इस बात पर काफी जोर दिया है।

(क्रमश:)

चौ. बलवीरसिंह का बलिदान

आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता एवं डी. ए. वी. मैनेजिंग कमेटी के स्थाई समिति होशियारपुर के चेयरमैन चौ. बलवीरसिंह जी की हत्या कर दी गई। वह आर्य समाज एव डी. ए. वी. आन्दोलन के स्तम्भ थे। श्री बलवीरसिंह जी पंजाब के राजनीतिज्ञ व पुराने समाजवादी नेता थे। उनका सिख समाज मे बहुत सम्मान था। यह समाचार मिलते ही डी. ए. वी. कालेज कमेटी एव प्रादेशिक सभा कार्यालय में शोक सभा की गई और परमात्मा से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई।

—रामनाथ सहगल मन्त्री
प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

नया प्रवेश

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरियाणा) में नया प्रवेश आरम्भ है, भोजन, निवास, पुस्तक वस्त्रादि का सारा प्रबन्धक सर्वथा नि शुल्क है मैट्रिक पास छात्राओं का प्रवेश होना है. अत: धर्म प्रचार में रुचि रखने के इच्छुक छात्र जोकि 22- 3 वर्ष से अधिक के न हों, अविवाहित हो. जल्दी ही पत्र-व्यवहार करें। प्रवेश 25 जुलाई तक ही होगा. स्थान सीमित है, अत प्रवेशार्थी जल्दी ही पत्र-व्यवहार कर अपना स्थान सुरक्षित करा लें।

निवेदक
सत्यप्रिय शास्त्री एम. ए. साहित्याचार्य
प्राचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय
हिसार (हरियाणा)

दयानन्द का अभिनय संभव नहीं

ले.—श्री भारतानन्द भारती दयानन्द मठ दीनानगर

17 मार्च के आर्य मर्यादा मे प्रकाशित श्री सत्यदेव जी विद्यालकार के लेख मे इन शब्दो मे एक बहुत बडा सत्य का तथ्य छुपा है—मै समझता हू कि आर्य समाज का बहुत बड़ा बहुमत (प्रस्तावित) महर्षि दयानन्द फिल्म द्वारा ऋषि दयानन्द के ऐतिहासिक सत्य स्वरूप को विकृत करने के विरुद्ध है। यह सत्य व तथ्य ही हमे इस प्रस्तावित महर्षि दयानन्द फिल्म निर्माण का विरोध करने के लिए प्रेरित करता है।

हम मानते हैं कि ऋषि दयानन्द का व्यक्तित्व एक सत्य है जिसका अभिनय कोई भी सामान्य लौकिक अभिनेता, चाहे वह कितना ही चरित्रवान व उच्च चरित्र का क्यो न हो ? कदापि करने में समर्थ नही हो सकता। फिर एक भ्रष्ट एव सदिग्ध चरित्र का व्यक्ति ऐसे महान और लोकोत्तर पुरुष का अभिनय कैसे कर सकेगा ? यहा हमे एक बात न भूलनी चाहिए कि फिल्म व्यवसाय का वर्तमान स्वरूप ऐसा नही जिसका कोई विशुद्ध नैतिक आधार हो। इसका कारण यह है कि उसका उद्देश्य अर्थ प्रधान है। अत आज जो अभिनेता एक महान लोकोत्तर पुरुष का अभिनय करता है वही कल एक पतित और बिलासी पुरुष का अभिनय भी कर सकता है। अथवा स्वय अपने चरित्र को इतना भ्रष्ट कर सकता है कि लोग उसे देखकर घृणा और तिरस्कार से उगली उठावें और कहे—यही वह व्यक्ति है जो अमुक फिल्म मे अमुक महापुरुष बना था। उदाहरण के लिए गाधी फिल्म मे गाधी का अभिनय करने वाले अभिनेता एटनबरो अपनी अगली फिल्म कोटस लाईन मे जिसके लिए सात सुन्दर युवती अभिनेत्रियो को चुना गया है, एक विलासी पुरुष का अभिनय कर सकता है। तब क्या लोग यह न कहेगे—यही वह व्यक्ति है जो गाधी फिल्म मे गाधी बना है। अथवा यह भी हो सकता है कि एटनबरो पहले ही अपनी फिल्मो मे किसी बदनाम व्यक्ति का अभिनय कर चुका हो। क्योकि वे लोग यह मानते हैं अभिनय तो आखिर अभिनय ही है इसका अभिनेता के वास्तविक जीवन से कोई सम्बन्ध नही होता।

हम जानते हैं कि फिल्मे मनुष्य को गिराती अधिक हैं उठाती कम है। प्राय फिल्मो में जो दृश्य दिखाए जाते हैं वे सामान्य घटिया वर्ग की लोक रुचि को तृप्त करने के लिए ही होते हैं। उनसे बिगडे लोग और बिगड़ते हैं और जो बिगडे नही हैं वे भी गिर जाते हैं और पतन के मार्ग पर चल पडते हैं। इतना ही नही प्राय अभिनेता भी बिगडते और पतित होते है। तब ऋषि दयानन्द का अभिनय करने वाला व्यक्ति ही महात्मा बन जाएगा या बना रहेगा, इसकी क्या गारन्टी है ?

किन्तु छोडे इस बात को हम तो इस बात पर एक दूसरे ही दृष्टि से सोचना चाहते हैं और वह यह है—क्या सिंह की खाल ओढे हुए गधा वैसे ही दहाड सकेगा जैसे सिंह दहाडता है। कर्णवास में रावराजा कर्णसिंह की तलवार को चलने से पहले ही छीनकर दो टुकडे कर देने वाले ऋषि दयानन्द का जैसा तेज क्या इस तेजहीन अभिनेता मे होगा ? हमें लगता है कि कर्णसिंह जब तलवार लेकर झपटेगा तब यह ऋषि दयानन्द का अभिनेता अत्यन्त अस्वाभाविक हो जाएगा और जितनी निर्भीकता से दयानन्द सत्य का प्रचार करते हैं यह उतनी निर्भीकता अपनी वाणी से कदापि न दिखा सकेगा। तब यह ऋषि दयानन्द फिल्म हमे तो बनती नही दिखती और यदि बनी भी तो सफल होती नहीं दिखती। यहा हम यह भी कह दें कि उसे बनाने मे एक फिल्म निर्माता असफल हो भी चुका है।

रही यह बात कि महापुरुष का अभिनय करने से कई बार अभिनेता भी सुधरता है किन्तु हम मानते हैं कि जैसे ब्राह्मण बना भाड कभी ब्राह्मण नही होता वैसे ही महापुरुष बना अभिनेता कभी महापुरुष नही बनता, सामान्य अभिनेता ही बनकर रह जाता है। इस बात का बुरा प्रभाव श्रोता और दर्शक पर पडता है। वह उसे जब महापुरुष के रूप मे अभिनय करता देखता है तब भी यही समझता है कि वह सामान्य अभिनेता ही है महापुरुष नही। फलत वह उसके अभिनय से तनिक भी प्रभावित नही होता, अपितु उसके अभिनय पर मन ही मन हसता और खीझता है।

फिल्मे जनता को सुधारती हैं यह बात कुछ हद तक ही ठीक है। इतने दर्शको और श्रोताओं मे से केवल उगलियो पर गिने जाने योग्य ही उनके अभिनय से प्रभावित होते हैं। गाधी फिल्म ने जनसाधारण को कही भी बडी सख्या में जनता को सुधारा हो, ऐसा हमे नहीं लगता और यही बात प्रस्तावित ऋषि दयानन्द फिल्म के सम्बन्ध भी होनी है।

असल बात यह है कि कुछ महापुरुषो का चरित्र ही इतना लोकोत्तर होता है कि अभिनेता उसका अनुकरण कर ही नहीं सकते और यदि करते हैं तो उनका वह अभिनय हास्यास्पद हो जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि उस से महापुरुष की प्रवृति को तनिक भी बल नही मिलता। उलटे उसमे दौर्बल्य ही आता है तब ऋषि दयानन्द फिल्म में ऋषि दयानन्द की प्रवृति— आर्य समाजी प्रचार को ही कैसे बल मिल सकता है यह बात हमारी समझ मे नहीं आती।

फिल्म वस्तुत तो स्वाग रास अथवा रामलीला का ही परिष्कृत रूप है। अत उसका मूलगत दोष फिल्म मे भी बना ही रहता है। तब जैसे स्वाग रास अथवा रामलीला में महापुरुष का चरित्र तथा लोक रुचि विकृत हो जाता है वैसा ही फिल्म मे होना स्वाभाविक है। तब ऋषि दयानन्द फिल्म को दयानन्द का स्वाग या दयानन्द लीला ही कहा जाएगा। उस को देखने वाले अभिनेता के बहुरूपियापन पर हसेंगे ही। उससे ऊचा उठने की प्रेरणा तो कदापि प्राप्त नही करेंगे।

यहा हमें एक बात न भूलनी चाहिए कि गाधी फिल्म को एटनबरो ने पैसा कमाने के लिए ही बनाया। गाधी के सिद्धान्तों या गाधीवाद का प्रचार करने के लिए कदापि नही। फिर यदि वह यह समझता कि फिल्म से किन्ही सिद्धान्तो या किसी वाद का प्रचार होता है तो वह एक फिल्म ईसा पर भी अवश्य ही बनाता किन्तु उसने ऐसी मूर्खता नही की करता भी कैसे भला, क्योकि महान् ब्रह्मचारी ईसा के चरित्र का चित्रण करना उसके बूते की बात न थी ? फिर यदि वह ऐसा करता तो ईसा के मर्यादा पुरुषत्व का उपहास ही करता।

इस बात को भी हमे न भूलना चाहिए कि सत्य धर्म का प्रचार करने के साधन भी सत्य ही होने चाहिए क्योकि फिल्म सत्य नहीं, मिथ्या है, और इस मिथ्यात्व से सत्य धर्म कदापि न फैलेगा। अतएव उसके लिए तो दूसरे प्रचार साधनों का ही अवलम्बन करना होगा। हम मानते हैं कि सत्य इतना विराट् होता है कि उसका चित्रीकरण करना अथवा उस की फिल्म बनाना, सम्भव नही है और ऋषि दयानन्द एक ऐसा ही विराट् सत्य है, अत उसका चित्रीकरण करना भी सम्भव नहीं है।

अन्त मे हमे यह निष्कर्ष निकालना पडता है कि यदि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने कभी ऋषि दयानन्द फिल्म के चित्रीकरण की स्वीकृति से दी हो तो अब इस नये प्रस्ताव का अनुमोदन कदापि न करना चाहिए और समूचे आर्य समाज को इस दल दल में धकेलने के गर्हित कार्य से अपना हाथ खींच लेना चाहिए। इससे आर्य समाज की एक छवि बनी रहेगी और वह उज्जवल भविष्य की ओर अपने पग तेजी से उठाता आगे बढ सकेगा।

हम इस ऋषि दयानन्द फिल्म का निर्माण रोकने पर इसलिए भी बल देते हैं कि इससे ऋषि दयानन्द और उनके यशमयी आर्य समाज के उज्जवल नाम पर कलक लगता है और कालिख पुतती है। फिर भी यदि हम वर्तमान पीढ़ी के आर्य समाजी इन दुष्प्रवृति का न रोक सके तो हमारी भावी पीढी को अथक और सतत् उपयोग करके हम कलक का परिमार्जन करना होगा और इस कालिख को धोना पड़ेगा। इसमें सन्देह नहीं है।

आत्मिक उन्नति का स्वरूप

ले.—श्री जगदीशराम आर्य लुधियाना

आत्मिक उन्नति का अर्थ है कि आत्मा के गुणों और इस की शक्तियों का परिवृद्ध होना, अर्थात् इनकी पूर्वावस्था में अपूर्व वृद्धि का होना और उत्तरोत्तर इस आत्मा की ज्ञान व कर्म की क्षमताओं में निरन्तर वृद्धि होते रहना है।

आत्मा के मूलभूत तथा स्वाभाविक दो गुण ही माने जाते हैं। एक ज्ञान और दूसरा प्रयत्न अर्थात् सभी पदार्थों और कर्मों का पूरा-पूरा ज्ञान (इन्हें भली-भांति जानना) होना तथा जाने गए पदार्थों को प्राप्त करना और अपने अनुभूत ज्ञान के माध्यम से अपने कर्तव्यों का पालन करना प्रयत्न कहलाता है।

कई ऋषियों ने इस आत्मा के छः गुण लिखे हैं। जो इस प्रकार हैं। ज्ञान कर्म, इच्छा, द्वेष, सुख और दुःख। पर यह अन्तिम के पांच गुण प्रयत्न अर्थात् पुरुषार्थ (कर्म) के अन्तर्गत आ जाते हैं। यथा इच्छित पदार्थों को प्राप्त करना घृणित पदार्थों का त्याग कर देना। इसी भान्ति सुख की प्राप्ति और दुःख से पृथक होना ये सभी कर्म की संज्ञा के अन्तर्गत आ जाते हैं।

आत्मा अपने ज्ञान की उपलब्धि तथा वांछित पदार्थों की प्राप्ति अपने आन्तरिक व बाह्य साधनों की सहायता से करता है। आन्तरिक साधनों की संज्ञा अन्तःकरण है और बाह्य साधनों को ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों के नाम से पुकारा जाता है।

आत्मा की ज्ञान तथा कर्म सम्बन्धी शक्तियों व कार्य क्षमताओं को बढ़ाने के लिए इसके अन्तःकरण अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार तथा बाहरी कर्मेन्द्रियों व ज्ञानेन्द्रियों की क्षमता को बढ़ाना अत्यावश्यक और अनिवार्य माना जाता है।

आत्मा के बाह्यकरण अर्थात् उसकी ज्ञानेन्द्रियां तथा कर्मेन्द्रियां जितनी स्वस्थ और बलिष्ठ होंगी, उतना ही आत्मा अपने संकल्पों को सफलता पूर्वक कार्य रूप दे सकेगा और अपने आपको परिवृद्ध और उन्नत बना सकेगा।

इसी प्रकार आत्मा अपने ज्ञान रूपी गुणों को और अपनी मनः चेष्टाओं तथा क्रियाओं को अपने अन्तःकरणों के माध्यम से ही सिद्ध कर सकता है। अर्थात् अपने मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार के द्वारा ही सिद्ध कर सकता है। आत्मा के ये चारों अन्तःकरण (साधन, भी जितने स्वस्थ और निर्मल होंगे उतनी ही सफलता से आत्मा अपनी अन्तःक्रियाओं और अपने मानसिक व्यापारों को सम्पन्न कर सकेगा। यही लक्षण एक उन्नत और प्रबुद्ध व विकसित आत्मा का हमारे शास्त्रों ने माना है।

कोई भी व्यक्ति जो अपने इस आत्मिक उत्थान के लिए कृत संकल्प हो चुका है। इसके लिए यह जानना अत्यावश्यक है कि आत्मा के इन अन्तःकरणों का शुद्ध स्वरूप क्या है तथा इनका परिवृद्ध और विकसित स्वरूप क्या है? यह जानना अत्यावश्यक है।

आत्मा के यह अन्तः साधन वस्तुतः आत्मा की चारों शक्तियों का ही नाम है। इन चारों शक्तियों को निरन्तर बढ़ाते रहना ही आत्मिक उन्नति और आत्म विश्वास कहलाता है। ये चारों शक्तियां हैं—मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार।

'मन' आत्मा की मनन शक्ति का नाम ही मन है। आत्मा अपनी ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा जो ज्ञान बाहर से अर्जित करता है। उसका मनन करके ही उसे अपने ज्ञान का स्थिर अंग बनाकर उसी के अनुसार अपनी मान्यताएं निश्चित करता है प्रत्येक मनुष्य जो भी कर्म करता है वह अपनी पूर्व निश्चित इन्हीं अपनी मान्यताओं के आधार पर ही कर्म करता है। बुद्धि अपने अर्जित किए हुए ज्ञान को जब आत्मा मनन करने के उपरान्त उस पर अन्तिम निर्णय लेना चाहता है तो उसे बुद्धि के अर्पण कर देता है। फिर बुद्धि अपने पूर्वार्जित ज्ञान के द्वारा उसका पूरी गम्भीरता से माप-तोल और परीक्षण करके उसके सत्य-असत्य का निर्णय करके उसे सत्य अथवा असत्य सिद्ध कर दिया करती है। आत्मा को जिस शक्ति से प्रत्येक बाह्य तथा अभीष्ट विषय का ज्ञान प्राप्त हो सकता है। उसी शक्ति को बुद्धि कहते हैं। इसके विकास तथा इसकी परिपक्वता के आधार पर इसे प्रज्ञा, मेधा और ऋतम्भरा: आदि नामों से भी पुकारा जाता है। प्रचुर ज्ञान के आधार पर प्रज्ञा पवित्र तथा निर्भ्रान्त ज्ञान के आधार पर मेधा और उसका उपार्जित ज्ञान जब पूर्णतय सत्यानुरूप तथा सत्य से भरपूर हुआ करता है तो उसे ऋतम्भरा कहते हैं। विकसित और परिमार्जित ज्ञान वाली बुद्धि ही सात्विक बुद्धि होती है। फिर इस बुद्धि द्वारा किए हुए निर्णय का और गम्भीर निरीक्षण करने के लिए 'चित्त' की बारी आती है,

'चित्त' आत्मा की चिन्तन शक्ति का नाम ही चित्त है। बुद्धि जब अपनी सामर्थ और क्षमता तथा संग्रहीत ज्ञान के आधार पर अपने किए हुए निर्णय को चित्त के अर्पण कर देती है तो फिर आत्मा की यह चिन्तन शक्ति चित्त पूरी एकाग्रता और तल्लीनता के साथ प्रस्तुत विषय पर बुद्धि द्वारा किए गए निर्णय की गहराई और उसके दूरगामी व निकटवर्ती परिणामों को समझ कर उसके प्रति अपना निर्णय दे देता है।

चित्त अपने इस निरीक्षणात्मिक कार्य को करते हुए शास्त्र सम्मत विशुद्ध वैदिक सिद्धान्तों को आधार प्रमाण मानकर प्रस्तुत विषय की तुलना प्रमाणित वैदिक सिद्धान्तों के साथ करता है। बुद्धि द्वारा कृत निर्णय जो वैदिक सिद्धान्तों के पूर्णतय अनुरूप होता है। उसी निर्णय को सत्य सिद्ध कर देता है। अन्य शेष सभी को असत्य घोषित कर देता है। अहंकार—अहंकार का अर्थ यहां इस प्रकरण में अभिमान नहीं है। अपितु जब आत्मा अपने ज्ञान, सामर्थ और अस्तित्व जो भौतिक शरीर तथा समस्त शारीरिक अवयवों से भिन्न व पृथक् अनुभूत कर लेता है तो इस भिन्नावस्था को ही अहंकार कहा जाता है। यही शरीर से भिन्नता की अनुभूति इसे प्रकृति से निवृत्ति और ईश्वर में इसकी प्रवृत्ति का दृढ़ आधार बन जाती है। परिणाम स्वरूप ईश्वर के प्रति इसकी निष्ठा उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। और अन्ततः यह ईश्वर भक्ति तथा ईश्वर प्रणिधान की भावनाओं में ओत-प्रोत होकर अपने अविद्या आदि सभी मलों को भस्मीभूत करके शुद्ध और पवित्र हो जाता है।

यदि हम इस प्रकरण में अहंकार का अर्थ अभिमान लेते हैं तो फिर इसकी (आत्मा की) स्थिति नितान्त विपरीत हो जाती है। अविद्यादि जड़ता के गुण इसमें उत्पन्न होकर इसकी दिव्यता को समाप्त कर देते हैं।

—

आर्य समाज बड़ा बाजार कलकत्ता का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

कलकत्ता के बड़ा बाजार आर्य समाज ने अपने वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्य समाज के प्रसिद्ध शोध विद्वान् तथा लेखक डा. भवानीलाल भारतीय का गत 4 मई को महाजाति सदन के विशाल सभागार में सार्वजनिक सम्मान तथा अभिनन्दन किया। इस सम्मान समारोह की अध्यक्षता आर्य समाज कलकत्ता के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री सीताराम आर्य ने की। पूर्वान्चल, विशेषतः बंगाल की सभी प्रमुख आर्य समाजों तथा आर्य संस्थाओं ने डा. भारतीय को माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया इस अवसर पर उपस्थित महात्मा आर्य भिक्षु जी, डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री तथा प्रो. उमाकान्त उपाध्याय आदि विद्वानो ने भारतीय जी की साहित्य सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की। आर्य समाज बड़ा बाजार की ओर से विद्वान् के सम्मानार्थ 1500 रु. की एक ऊनी शाल तथा अभिनन्दन पत्र अर्पित किया गया। आर्य समाज बड़ा बाजार के युवा कार्यकर्ता श्री चांदरतन दम्माणी ने अभिनन्दन पत्र वाचन करते हुए साहित्य पत्रकारिता तथा प्रचार के क्षेत्र में डा. भारतीय जी की सेवाओं का उल्लेख किया। स्वागत के उत्तर में भाषण देते हुए डा. भारतीय जी ने कहा कि साहित्यकार यद्यपि निःस्वार्थ एवं कर्त्तव्य पूर्ति की भावना से ही अपनी लेखनी चलाता है, तथापि यदि समाज उसको प्रोत्साहित करे तो वह अधिकाधिक उत्साह से समाज सेवा में लगा रहेगा। सम्मान समारोह के समय डा. भारतीय की पत्नी श्रीमती शान्ति भारतीय भी उपस्थित थीं।

अपने चार दिन के कलकत्ता प्रवास में डा. भारतीय विधान सरणी 'कलकत्ता के मन्त्री श्री पूनम चन्द जी तथा आर्य समाज कलकत्ता स्थापना शताब्दी समारोह समिति के संयोजक श्रीरामजी आर्यने समारोहों के आयोजन के सम्बन्ध में उपयोगी परामर्श किया। आर्य समाज बड़ा बाजार का उत्सव दिनांक 2 मई से 5 मई तक मनाया गया। इस अवसर पर, आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए डा. भारतीय ने आर्य समाज को राष्ट्र पर आए खतरों के प्रति सावधान किया। कार्यक्रम का संयोजक श्री दम्माणी जी ने किया था। वेद सम्मेलन की अध्यक्षता महात्मा भिक्षु जी ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. विष्णुकान्त शास्त्री उपस्थित थे। प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री तथा भवानीलाल भारतीय ने आर्य समाज का वेद विषयक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उत्सव की सफलता के लिए समाज के प्रधान श्री कन्हैया लाल जी आर्य, मंत्री श्री खुशहाल चन्द, कार्यकर्ता श्री चांदराम दम्माणी धन्यवाद के पात्र हैं।

—संवाददाता

वीरांगना प्रशिक्षण शिविर

तपोवनाश्रम नालापानी देहरादून

दिनाक 10 जून 1985 से 25 जून 1985 तक तपोवनाश्रम नालापानी, देहरादून मे आश्रम के सचालक श्री दयानन्द वानप्रस्थी जी की प्रेरणा व मार्ग दर्शन मे एक वीरागना प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है जिसमे हरियाणा, पजाब, हिमाचल व उत्तर प्रदेश से केवल 40 बहिने भाग लेगी। यह शिविर नि:शुल्क होगा। आने जाने का किराया सबका अपना अपना होगा।

इस शिविर मे निम्नलिखित महानुभाव प्रशिक्षक एव पबन्धक होगे।

1. स्वामी सत्यपति जी महाराज, 2. श्री दयानन्द जी वानप्रस्थी, सचालक तपोवनाश्रम, देहरादून। 3 प्रिंसिपल कुमारी विमला छाबडा, आर्य महिला कालेज बरनाला, 4. कुमारी पुष्पा महता भूतपूर्व मुख्याध्यापिका आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल करतारपुर।

उक्त शिविर के सचालक श्री दयानन्द जी वानप्रस्थी तथा प्रशिक्षक सयोजिका प्रिंसिपल कुमारी विमला छाबडा होगी।

इस शिविर मे भाग लेने के लिए बहिनो को सप्रेम निमन्त्रण है। इसमे शिक्षिका बहिनो को प्राथमिकता दी जाएगी। अत जो बहिने इसमे भाग लेना चाहे वे कृपया 30 मई 1985 तक अपने प्रार्थना पत्र सचालक महोदय को भेजकर स्वीकृति प्राप्त करने का कष्ट करें।

--प्रि कुमारी विमला छाबडा
सयोजिका

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज रोपड से साप्ताहिक सत्सग तिथि 15-5-85 मे पजाब के प्रसिद्ध आर्य समाजी चौ. बलबीरसिंह को गोली मारकर शहीद कर दिया। इस पर सब आर्य सज्जनो ने बडा दुख व्यक्त किया और सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास किया कि सरकार से अनुरोध किया जाए कि पजाब मे आए दिन ऐसे बेगुनाह लोगो के कत्ल को रोका जाए।

—प्रधान आर्य समाज रोपड

राष्ट्रीय पुस्तकालय संगोष्ठी का आयोजन

भारत सरकार पुस्तकालय सघ के तत्वावधान मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे दिनाक 23 मई से 26 मई 1985 की अवधि मे राष्ट्रीय पुस्तकालय सगोष्ठी का आयोजन किया गया। उक्त सगोष्ठी मे चर्चा का प्रमुख विषय पुस्तकालय सेवाओ का भावी योजना एव निर्णय मे भूमिका के सम्बन्ध मे था।

उक्त सगोष्ठी मे देश के लगभग 200 पुस्तकालय वैज्ञानिको के भाग लिया। सम्मेलन का उद्घाटन 23 मई को प्रात 10 बजे श्री टी आर चन्द्रशेखरन महाप्रबन्धक द्वारा किया गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री सी. पी. गुप्ता, कुलपति रुडकी विश्वविद्यालय थे।

सगोष्ठी के चार सत्रो का निर्देशन क्रमश श्री टी. एस. राजगोपालन, प्रो. पी. बी. मगला श्री एस एस मूर्ति एव श्री मिरजानुसार द्वारा किया गया। यह सम्मेलन देश की पुस्तकालय सेवाओ के सम्बन्ध में अपनी संस्तुतियाँ भी सरकार को प्रस्तुत करेगा।

उक्त सगोष्ठी का आयोजन भारत सरकार पुस्तकालय सघ द्वारा किया गया। पुस्तकालयो के इस सगठन के द्वारा हाल ही में एब्सट्रेक्टिंग एन्डेक्सिंग का पाठ्यक्रम भी अक्तूबर 84 में देहली मे चलाया गया था। सभी प्रकार पुस्तकालयो सेवाओ मे कम्प्यूटर प्रयोग सम्बन्ध में भी यह सगठन एक पाठ्यक्रम आयोजित कर रहा है।

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज नवाशहर दोआबा का वार्षिक निर्वाचन 12-5-85 को स्थानीय समाज मन्दिर मे सम्पन्न हुआ। श्री वेदप्रकाश सरीन सर्वसम्मति से प्रधान चुने गए। शेष पदाधिकारी एव अन्तरग सदस्यो को चयन करने का उन्हें पूर्ण अधिकार दे दिया गया।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन नं. 74350   रजि. न. पा. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 9, 27 ज्येष्ठ सम्वत 2042, तदनुसार 9 जून 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए)

जीवन संग्राम में विजय का एक मात्र सहारा

ले.—श्री आचार्य शिवराज जी शास्त्री एम. ए. मौलवी फाजिल

महि महे तवसे दीध्ये नृनिन्द्रायेत्था तवसे अत व्यान् ।
यो अस्मै सुमति वाजसातौ स्तुतो जने समर्यश्चिकेत् ।

ऋग्वेद 5-33-1

(य) जो सर्वशक्तिमान् परमात्मा समर्य) विजय दिलाने वाला (अस्मै जने) हम निर्बल मनुष्यो को भी (वाजसातौ) जीवन रूपी सग्रामो मे (सुमति चिकेत्) वही सदा सुबुद्धि पूर्वक हमारा मार्ग दर्शन करता है । उसी परमात्मा देव को (महि महे तवसे स्तुत.) श्रद्धा पूर्वक स्तुति प्रार्थना करते हुए उस महान् देव से महान् बल की याचना करें, उसी के सहारे (नून दीध्ये) अपनी पुरुषार्थ योग्य जीवन शक्तियो को विचार पूर्वक जागत प्रदीप्त करें और (इत्था) इस प्रकार (तवसे इन्द्राय अतव्यान्) हम लोग अपने बल पौरुष के लिए अपनी खोई हुई शक्तियो को जगाकर इस ससार रूपी महा सग्राम स्थली मे विजयी बने । जीवन एक सग्राम स्थल है । जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त मनुष्य सघर्ष ही करता रहता है । सघर्ष मे विजय केवल वही पाता है जो शक्तिशाली होता है । कठोर परिश्रमी होता है किसी कवि ने इस सत्य को बडे सुन्दर शब्दो मे प्रस्तुत किया है—

जिन्दगी रेशमो कम ख्वाब नहीं है सुन ले
तुझको जीना है तो पत्थर का जिगर
पैदा कर ।

जीवन में पराजय व जय का आधार प्रभु द्वारा मनुष्य को प्रदान की गई शरीर में अद्भुत दैवीय शक्तियां हैं । संसार के किसी कारखाने में मानव शरीर जैसी विचित्र मशीन आज तक न तैयार हुई है न कभी होने की सम्भावना है । जब रचनाकार से हमारा सम्बन्ध बना रहेगा, तब तुम विजय प्राप्त कर सकोगे । यदि अपने बनाने वाले को ही हम भूल जाएंगे तो हमारा क्या होगा यह प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है । देवासुर संग्राम में देवों की सदा विजय होती रही है इसलिए कि देवो को सर्वशक्तिमान् प्रभु का सहारा मिलता है । एक देव भी लाखों असुरों पर भारी रहा है । सारा आर्य जगत् का इतिहास इसका साक्षी है—

जीवति अनाथोऽपि वने विसर्जित ।
कृत प्रयत्नोऽपि गृहे विनश्यति ।

जिसे प्रभु बचाना चाहता है वह निर्जन वन मे भी सुरक्षित रहता है और लाख प्रयत्नो के करते हुए भी उत्तम गृह भी मनुष्य को बचा नहीं पाता । संसार मे मनुष्य की इस शरीर रूपी मशीन का बनाने वाला स्वय इस शरीर में ही रहता है वही इसे चलाता है वही इसकी रक्षा करता है—

श्रीमद्भगवद्गीता में इस सत्य को बडे सुन्दर शब्दों मे वर्णन किया है—

ईश्वर सर्वभूत नाम् हृदयेशर्जुन तिष्ठति
भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि
मायया ।

शरीर का निर्माता ईश्वर मनुष्य के रोम-रोम मे व्याप्त है और अपना सिंहासन मनुष्य के हृदय को बनाकर इस शरीर रूपी यन्त्र (मशीन) को इस प्रकार चलाता है जैसे कोई चालक (ड्राईवर) अपनी मशीन पर बैठकर चलाता है । इसीलिए योगियो ने प्रभु की प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ स्थान हृदय को माना है । आत्मा का स्थान भी हृदय देश ही माना गया है । प्रभु अपने प्रिय मित्र सखा को सहारा देने के लिए मनुष्य के हृदय मे ही विराज मान रहता है । तभी वेद ने इस सत्य को बडे सुन्दर ढग से स्पष्ट किया है—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया ।
समान वृक्ष परिषस्वजाते ।

आत्मा परमात्मा रूपी दोनो मित्र सखा रूप मे एक ही वृक्ष पर बैठकर अपने अपने चमत्कार दिखाते रहते हैं ।

परमात्मा मनुष्य का ऐसा मित्र है जो सदा साथ रहता है और बिना मागे बिना किसी बदले की भावना के मनुष्य का कल्याण ही करता रहता है । वह जिस पर कृपालु हो ससार की कोई शक्ति उसका कुछ नही बिगाड सकती है, सारा ससार एक ओर वह अकेला एक ओर क्यों न हो, उनकी रहमत का साया

रहे गर जमाना खफा हो रहा है ।

वही ससार में सभी सकटों से मनुष्य को बचाता है जीव तो अल्पज्ञ है उसे तो अपने हित अनहित का कोई ज्ञान ही नही रहता । परमात्मा ने उसे ससार में जीने के वहां अनेक साधन दिए हैं वहां उसे मन बुद्धि जैसे बहुमूल्य साधन दिए हैं । बुद्धि के द्वारा ही मनुष्य ससार की सारी समस्याओ को हल करता है । बुद्धि को मार्ग दिखाने के लिए स्वयं सर्वज्ञ प्रभु ने अपनी वेद रूपी कल्याणी वाणी दी है । जब तक मानव समाज इस कल्याणी वाणी का सहारा लेकर अपना जीवन चलाता रहा तब तक समाज में वैदिक काल में कोई ताप शोक सकट उसे नहीं था । जब से मनुष्य ने प्रभु की कल्याणी वाणी का सहारा छोडकर अपने अहकार व दम्भ के वशीभूत प्रभु प्रदर्शित मार्ग को त्याग कर दिया है । परिणामत आज का ससार त्रिविध तापों मे पीडित हैं । सुखी और दु खी सबके ही मन में अशान्ति भय व तीनो तापो का आतक छाया हुआ है । ऐसे सकट के समय ही ऋषि दयानन्द ने मानव जाति के कष्टो के निवारण के लिए (वेदो की ओर लौटो) का उद्घोष किया था । हिन्दू जाति जो सृष्टि के आदि से लेकर करोड़ों वर्ष तक ससार की सर्व श्रेष्ठ व सुरक्षित जाति रही उसे समाप्त करने के लिए अनेक मुद्राशय मत मतान्तरो ने भी उसे आत्मसात करना प्रारम्भ कर दिया था । स्वय आर्य जाति अनेको सकटी का शिकार बन गई थी ऐसे समय महर्षि द्वारा स्थापित आर्य समाज ने जाति मे नव-जागरण जीवन के अमर-तत्वो का प्रवेश कराया । जाति के घोर विनाश को रोका । जाति के अमर पुत्रो के विजय कामना एव विजय की सभी सम्भावनाओ को जागृत किया । उसे अन्दर-बाहर के सभी खतरो से सुरक्षित किया ।

आज फिर जाति अनेक सकटो की शिकार हो रही है उससे त्राण पाने का एक मात्र साधन प्रभु की शरण आने के सिवाय कोई अन्य नहीं दिखाई देता । जाति मे आत्म विश्वास, प्रभु प्रेम व वेद मार्ग पर चलने की प्रवृत्ति उत्पन्न करने से ही जाति का पुन कल्याण हो सकता है । मानव समाज मकडी के से जालो का निर्माण करके स्वय अपने बनाए कुचक्रो मे फसकर रह गया है । इन कुचक्रो से मानव समाज को बचाने के लिए महर्षि दयानन्द जैसा प्रभु विश्वास आत्म विश्वास, कर्त्तव्य परायणता उत्पन्न करने से ही समाज की रक्षा हो सकती है । जीवन के सग्रामो मे प्रभु प्रदत्त सुबुद्धि से ही हम विजय प्राप्त कर सकते हैं । जीवन स्वय एक सग्राम स्थली है । देवासुर सग्राम सदा से होते आए हैं देव-देवत्व के सहारे ही सदा इन सग्रामो में विजयी हुए देवो को प्रभु प्यारे का सहारा होता है जबकि असुरो को अपने शरीर व भौतिक अस्त्र-शस्त्रो का सहारा भौतिक होता है प्रभु के सहारे से आसुरी अस्त्र-शस्त्र स्वय नष्ट हो जाते हैं व अन्तिम विजय देवों की ही होती है ।

—

महर्षि दयानन्दनिर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला

आर्य समाज- उपलब्धियां, सीमाएं और अपेक्षाएं दयानन्द सरस्वती के विचार—समय की कसौटी पर

ले.—डा. भवानीलाल जी भारतीय आचार्य व
अध्यक्ष दयानन्द चेयर पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

(गतांक से आगे)

आर्य समाज ने धर्म का वास्तविक रूप निर्णीत करने के पश्चात् उस धर्म को जानने के लिए वेद रूपी प्रदीप का परिचय अखिल मानव जाति को कराया। जो लोग वेदो को प्रमाण मानते भी थे, उन्हे भी वेद के वास्तविक स्वरूप, उसकी उत्पत्ति, उसके प्रतिपाद्य विषयो आदि का सम्यक् ज्ञान नही था। यह विडम्बना ही थी कि वेदो के सारे शास्त्रो का मूलाधार एव परम प्रमाण मानने वाले भारत के आचार्य और सम्प्रदाय भी वेदो की विषय वस्तु तथा वैदिक वाङ्मय की परिसीमा के वास्तविक ज्ञान से अनभिज्ञ थे। आर्य समाज के प्रवर्त्तक ने इस सम्बन्ध मे नाना युक्तियो एव प्रमाण आदि देकर वैदिक ज्ञान की आवश्यकता उपयोगिता, महत्ता तथा सार्वभौमता का प्रतिपादन किया। साथ ही उन्होने यह भी बताया कि वेदो के वास्तविक अर्थ करने की प्रक्रिया कौन सी है? यह एक इतिहास सम्मत तथ्य है कि आर्य समाज ने वैदिक ज्ञान के पुनरुद्धार तथा उसके प्रचार के लिए जो महत्वपूर्ण कार्य किया है उसकी महत्ता को निष्पक्ष व्यक्तियों ने स्वीकार भी किया है। वेदो के अध्ययन अध्यापन, प्रचार-प्रसार तथा इन ग्रन्थो पर भाष्य, टीका, व्याख्या, विवेचना आदि के लेखन मे आर्य समाज के विद्वानो ने सार्थक श्रम किया है।

वेदो के प्रामाण्य के सिद्धान्त को शास्त्रीय तथा तर्क पूर्ण शैली मे प्रस्तुत करने के साथ-साथ आर्य समाज का आर्ष ग्रन्थ प्रमाणवाद का सिद्धान्त भी भारत के धार्मिक एव दार्शनिक जगत् मे एक क्रान्तिकारी उद्घोष है। इस मन्तव्य के प्रचार के द्वारा आर्य समाज ने यह स्पष्ट कर दिया है कि किसी ग्रन्थ का केवल सस्कृत मे लिखा जाना अथवा किसी मत सम्प्रदाय के मान्य ग्रन्थो की श्रेणी में आ जाना ही पर्याप्त नहीं है। देखना तो यह होगा कि क्या इस ग्रन्थ मे निरूपित बातें बुद्धिपाद, तर्क तथा सृष्टि क्रम के अनुकूल हैं अथवा प्रतिकूल। यदि किसी धर्म ग्रन्थ कहीं जाने वाली पुस्तक मे मानवी चिन्तन को कुण्ठित करने वाली मानव समाज मे विषमता, विरोध तथा वैमन्य का प्रचार करने वाली बाते लिखी है तो ऐसे ग्रन्थो को अनार्ष मानकर उनका बहिष्कार ही किया जाना चाहिए। इसी प्रसग मे आर्य समाज के प्रवर्त्तक ने यह स्पष्ट किया कि विमल मेधा के धनी पुरातन ऋषियो की लेखनी से निकला साहित्य ही आर्ष सज्ञा युक्त है क्योकि इन ग्रन्थो मे विवेचित बातें बुद्धि तथा विज्ञान के सर्वथा अनुकूल है तथा इनसे मनुष्य अपने चिन्तन का विकास कर सकता है। इस प्रकार वेदो को तथा परवर्ती आर्ष साहित्य को प्रमाण कोटि मे रखकर आर्य समाज ने हमारे शास्त्रीय वाङ्मय का जैसा विवेक पूर्ण विश्लेषण किया है, वह धार्मिक जगत् मे एक अभूतपूर्व उपलब्धि ही मानी जाएगी।

आर्य समाज ने धर्म मे आचार पक्ष को महत्व दिया है। इस दृष्टि से पञ्च-महायज्ञो का नित्य करना, अष्टांग योग की विधि से साधनापूर्वक योगाभ्यास तथा आश्रम मर्यादा को स्वीकार करते हुए जीवन यापन, यह आर्य समाज द्वारा प्रतिपादित धर्म का क्रियात्मक पहलू है। पञ्चमहायज्ञो मे ईश्वर, अग्नि आदि और जड, देवता, माता-पिता, पितामह आदि पितृगण, अतिथि तथा क्षुद्र जीव-जन्तुओ के सम्बन्ध मे मनुष्य के कर्तव्यो का विधि विधान बताया गया है। प्रकारान्तर से यो तो सभी मतावलम्बी उपर्युक्त यज्ञो का पालन और आचरण करते हैं किन्तु मन्वादि स्मृतिकारो द्वारा प्रतिपादित शास्त्रीय विधि से पञ्च यज्ञो की पद्धति का निर्धारण कर आर्य समाज ने मानव जाति का असीम उपकार किया है इसी प्रकार यम-नियम योगांगों का सेवन करते हुए धारणा ध्यान और समाधि रूपी संयम की साधना करने में विभूतियों की सिद्धि एव कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति होती है, यही मनुष्य का परम पुरुषार्थ है।

आर्य समाज ने आश्रम धर्म का जिस रूप मे निरूपण किया वह शरीर-शास्त्र मनोविज्ञान, समाज शास्त्र की दृष्टि से सर्वथा उपयुक्त, श्रेयस्कर तथा मानव जीवन के लिये अत्यन्त हितकारी है। यह बात नहीं है कि आर्य समाज से पूर्व आश्रम प्रणाली का विचार था ही नहीं। आश्रम व्यवस्था के समस्त नियम स्मृतिकारो तथा धर्म शास्त्रकारो ने विस्तार से वर्णित किए है, किन्तु उनकी वैज्ञानिक व्याख्या एव स्वरूप विवेचना अत्यन्त सतर्क ढंग से आर्य समाज ने की है। उसने ब्रह्मचर्य आश्रम के लिए प्राचीन गुरुकुल प्रणाली की शिक्षा जारी की, जहा रहकर छात्र अपने गुरुजनो के सान्निध्य मे विद्योपार्जन करता है। इन गुरुकुलों में उसे केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नही सिखलाया जाता; अपितु यहां शरीर, मन, आत्मा और बुद्धि का समुचित विकास करने के साधन भी प्रस्तुत किए जाते हैं। गृहस्थ के कर्त्तव्य कर्मों को भी सुव्यवस्थित एव सुनियोजित प्रणाली से निभाने के लिए आर्य समाज ने सदा ही प्रेरणा दी है। उसका दृष्टिकोण मध्य काल की श्रवण सस्कृति तथा जैन, बौद्ध, विचार धारा से नितान्त भिन्न रहा है जिसमे गृहस्थ जीवन को हेय दृष्टि से देखा गया है तथा वैराग्य प्रधान भिक्षु जीवन को ही मानव का आदर्श बताया गया है। आर्य समाज ने मनु के शब्दो मे यह स्पष्ट घोषित किया कि जिस प्रकार नदियां और नाले सागर मे जाकर स्थिरता एव शान्ति प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार ब्रह्मचारी, वनस्थ एव सन्यस्त जन भी स्व-जीवन निर्वाह के लिए गृहस्थियो के ही नजदीक आते हैं। इसी प्रकार वानप्रस्थ-व्यवस्था को पुनरुज्जीवित करने तथा सन्यासी वर्ग मे प्रचलित पाखण्डो और रूढ कर्म काण्ड के आचरणो को पृथक् कर लोकहित की दृष्टि से सर्वत्र भ्रमण करते हुए पारमार्थिक सिद्धि को प्राप्त करना ही सन्यासाश्रमी का लक्ष्य निर्धारित करना आर्यसमाज के एतद्विषयक स्वस्थ चिन्तन का परिचायक है।

आर्य समाज वैयक्तिक हित की ही भांति सामाजिक हित को भी महत्व देता है। उसने अपने दसवे नियम मे यह स्पष्ट कर दिया है कि सामाजिक तथा सर्वहित के नियमो को पालने मे हमे अपनी वैयक्तिक स्वतन्त्रता का किंचित परित्याग तो करना ही होगा। वैदिक दृष्टिकोण को आधारबिन्दु बनाकर आर्य समाज ने वर्ण व्यवस्था को समाज के सन्तुलित विकास का महत्वपूर्ण साधन माना है। आज हम देखते हैं कि वर्ण व्यवस्था पर नाना प्रकार के आरोप प्रत्यारोप लगाये जाते हैं। कभी उसे सामाजिक वैषम्य का प्रतीक कहा जाता है तो कभी ब्राह्मणो की अधिनायक मनोवृत्ति का सूचक। इन आरोपो मे अधिक सत्यता नहीं है पुराकालीन भारतीय ऋषियो ने समाज के सार्वत्रिक विकास के लिए श्रम विभाजन पूर्वक व्यक्ति के योगदान की दृष्टि से ही वर्ण व्यवस्था की कल्पना की थी।

इस योजना में अज्ञान एव अविद्या को निर्मूल कर मानव जाति को ज्ञानालोक से प्रकाशित करने का दायित्व ब्राह्मणो का माना गया है। अन्याय और अत्याचार के प्रतिरोध हेतु सन्नद्ध रहने की अपेक्षा क्षत्रिय से की गई है। समाज को भौतिक अभावो से मुक्त कर उसके जीवन को आवश्यक वस्तुओ से परिपूर्ण रखने का दायित्व वैश्यों को सौंपा गया है। किन्तु शूद्र समाज भी लाछना एवं तिरस्कार का पात्र नहीं है। वह अपनी शारीरिक शक्ति के द्वारा अन्य वर्गस्थों की सेवा द्वारा ही स्वजीविका का उपार्जन करता है। इस प्रकार आर्य समाज ने वर्ण व्यवस्था को एक तर्क सगत तथा बुद्धि ग्राह्य आधार प्रदान किया है। तथापि जन्मगत जातियो के जटिल जाल से हिन्दू समाज को मुक्त कर उसे गुण, कर्म पर आधारित सुसगत वर्ण व्यवस्था में ढाल देना एक कठिन कार्य है। इस क्षेत्र में बहुत कुछ करने पर भी हमे यह स्वीकार करना होगा कि अभी हमारी गति बहुत धीमी रही है। अन्तर्जातीय विवाहो को प्रोत्साहन देने पर भी यह ध्यान रखना होगा कि विवाह के लिए जिन जोडो का मिलान कराया जाए, वे गुण, कर्म, स्वभाव, अभिरुचि तथा शरीर, मन तथा बुद्धि के विकास की दृष्टि से एक दूसरे के सर्वथा अनुकूल हों।

(क्रमश.)

सम्पादकीय—

आर्य समाज कुछ त्याग मांगता है

आर्य समाज की वर्तमान स्थिति को देखते हुए मुझे कांग्रेस के इतिहास की एक पुरानी घटना याद आ गई। 1928 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन कलकत्ता में हुआ था। पं. मोती लाल नेहरू उसके अध्यक्ष थे। एक प्रश्न वहां यह आया कि कांग्रेस जो संघर्ष कर रही है उसका वास्तविक लक्ष्य क्या है। महात्मा गान्धी और पं. मोती लाल नेहरू दोनों उस समय कांग्रेस के बड़े नेता समझे जाते थे। परन्तु जवाहर लाल नेहरू और सुभाष चन्द्र के रूप में नई युवक शक्ति भी उभर रही थी। गांधी जी बहुत अनुभवी और सिद्धान्त-वादी नेता थे। नेहरू और बोस युवक भी थे उनमें उत्साह भी था और वह यह भी चाहते थे कि देश जितना शीघ्र स्वाधीन हो सकता है हो जाए। गान्धी जी भी स्वाधीनता के पक्ष में थे। साथ ही उनका यह भी विचार था कि कोई भी ऐसा पग नहीं उठाना चाहिए जिसके बाद के परिणामों के लिए हम पहले तैयार न हों जो हमारे लिए अन्त में हानि प्रद हो। अन्त में दोनों विचारों में यह समझौता हुआ कि सरकार को कह दिया जाए कि यदि आने वाले एक वर्ष में उसने कांग्रेस की मांगें स्वीकार न की तो पूर्ण स्वाधीनता का आन्दोलन प्रारम्भ कर दया जाएगा। इस प्रस्ताव पर युवक वर्ग में भी बहुत प्रसन्नता हुई उनका उत्साह भी बढ़ गया और उन्होंने एक आने वाले संघर्ष की तैयारी आरम्भ कर दी परन्तु गान्धी जी एक अनुभवी नेता थे। वह जानते थे, कि जब इस प्रकार का कोई संघर्ष प्रारम्भ किया जाए तो सफलता उसी स्थिति में मिलती है यदि अपना सगठन शक्तिशाली हो और शक्ति-शाली संगठन केवल नारेबाजी से नहीं होता उसके लिए ऐसा वातावरण पैदा करना पड़ता है कि जब परीक्षा का समय आए तो लोग उसके लिए पूरी तरह तैयार हों। इसके लिए गान्धी जी ने अपना एक रचनात्मक कार्यक्रम भी बनाया था और उसे कांग्रेस के अधिवेशन में पेश भी कर दिया। उसमें खद्दर का प्रचार अछूतोद्धार साम्प्रदायिक एकता के अतिरिक्त एक कार्यक्रम यह भी था कि कांग्रेस के सभी सदस्य अपनी आय का कुछ अंश कांग्रेस के कार्य के लिए दें।

इसमें सन्देह नहीं कि कांग्रेस एक बहुत बड़ी सस्था थी. सारे देश में इसका जाल फैला हुआ था। इसी के साथ लोग यह भी समझते थे कि कल को शासन की बागडोर इसके हाथ में आनी है। इसलिए उसे जितनी भी धन की आवश्यकता होती थी किसी न किसी प्रकार उसे धन मिल जाता था, फिर भी गांधी जी ने यह शर्त लगा दी थी कि प्रत्येक कांग्रेसी अपनी आय का कुछ न कुछ अंश कांग्रेस के कोष के लिए अवश्य दे।

कांग्रेस के इतिहास का यह अध्याय मैंने आर्य जनता के सामने इसलिए रखा है कि वह यह समझें कि तब तक कोई संस्था चल नहीं सकती यदि उसके सदस्य जिन्हें उसके सिद्धान्तों, कार्यक्रमों व नीति में निष्ठा न हो और उसके लिए कुछ त्याग करने को तैयार न हों। आर्य समाज को आज दो चीजों की अत्यन्त आवश्यकता है एक धन की और दूसरी समय की। जिनके पास धन है वह अपना भाग इसको नहीं देते। आर्य समाज के नियम उपनियमों के अनुसार प्रत्येक आर्य समाजी को अपनी आय का शतांश आर्य समाज के लिए देना चाहिए। कितने आर्य समाजी हैं जो इस शर्त को पूरा करते हैं। मुझे कई बार आश्चय होता है कि आर्य समाज के बड़े 2 पदाधिकारी शताश तो क्या अपनी आय का कुछ भी देने को तैयार नहीं होते और वह झूठ बोलते हैं और अपने आपको भी धोखा देते हैं अपनी संस्था को भी। इसका एक परिणाम यह हो रहा है कि आर्य समाज को जो काम करना चाहिए नहीं कर सकती। क्योंकि उसके पास उतना धन नहीं होता जितनी कि उसको आवश्यकता होती है। देश की सब धार्मिक संस्थाओं में आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जिसकी आर्थिक स्थिति बहुत ही कमजोर है। इसका एक कारण यह भी है कि आर्य समाज में चोर बाजारी से काम करने वाले बहुत कम लोग हैं परन्तु जो हैं उन्हें भी तो अपना कर्त्तव्य पूरा करना चाहिए, अपनी आय का शतांश कोई बहुत बड़ी राशि नहीं है। यदि वह भी पूरी हो जाए फिर भी कुछ न कुछ काम तो चल सकता है। आज वह भी पूरी नहीं हो रही। मैंने ऊपर लिखा है कि आर्य समाज कुछ त्याग मांगता है क्या हम उसके लिए इतना त्याग भी करने को तैयार नहीं कि हम अपनी आय का शतांश उसे दे दें। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित होते हुए मैं जानता हूं कि सभा के पदाधिकारी कई बार प्रचार की कई योजनाएं बनाते हैं परन्तु वह पूरी नहीं होती क्योंकि सभा के पास धन नहीं होता। इसलिए पहला काम जो प्रत्येक आर्य समाज के अधिकारियों को करना चाहिए, वह यह कि अपने सदस्यों को यह कह देना चाहिए कि वही व्यक्ति समाज का सदस्य रह सकेगा जो अपनी आय का शतांश देगा, जो इतना त्याग भी करने को तैयार नहीं उसे आर्य समाज का सदस्य रहने का क्या अधिकार है। यदि सदस्यों की संख्या कम हो जाए तब भी कोई बात नहीं जो भी रह जाएं वह निष्ठावान् तो होने चाहिएं। क्या हम नहीं देखते कि हमारे सिख भाई अपने गुरुद्वारों के लिए कितना देते हैं। हम उतना तो न दे सकेंगे क्योंकि हमारे पास उतना है ही नहीं, जो कुछ भी है यदि वह भी नियमानुसार अपनी 2 आर्य समाज को दे दें तो बहुत कुछ हो सकता है।

दूसरी आवश्यकता समय की है अर्थात् समय का कुछ त्याग। वह हम कैसे कर सकते हैं इसके विषय में आगामी लेख में अपने विचार प्रस्तुत करूंगा।

—वीरेन्द्र

आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

पंजाब राजार्य सभा ने अपने पिछले मासिक पत्र में पंजाब की वर्तमान राज-नैतिक स्थिति पर अपने विचार आपके सामने रखते हुए शिरोमणि अकाली दल द्वारा पारित आनन्दपुर प्रस्ताव के विषय में आपको सारी स्थिति बताई थी। उसके पश्चात् पंजाब की समस्या कुछ और जटिल हो गई है। हम चाहते हैं कि आर्य जनता को इसके विषय में पूरी जानकारी रहे। इस लिए यह दूसरा मासिक पत्र भेज रहे हैं। कृपया इसे अपने साप्ताहिक सत्संग मे पढ़ कर सुना दें ताकि आपकी समाज के सब सदस्य महानुभावों को पंजाब की वास्तविक स्थिति का पता चल जावे। यदि आर्य समाज के सदस्यों को पता होगा तो वह दूसरे व्यक्तियों को भी इस विषय में बता सकेंगे। हम चाहते हैं कि आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य जागरूक रहे और उसे पता होना चाहिए कि हम किधर जा रहे हैं। इसलिए यह पत्र आपको भेजा जा रहा है।

पिछला पत्र भेजने के पश्चात् अकाली दल में विघटन और अधिक गम्भीर हो गया है। दो धड़े बन गए हैं। एक के मुखिया सन्त हरचन्दसिंह लौंगोवाल हैं और दूसरे के मुखिया जरनैलसिंह भिण्डरांवाला के पिता बाबा जोगेन्द्रसिंह हैं। दोनों मे समझौता कराने का प्रयास पहले भी हो चुका है और अब भी हो रहा है, इसलिए कहना कठिन है कि आगे चलकर अकाली राजनीति क्या रूप धारण करती है हमें किसी भी भ्रम में नहीं रहना चाहिए। अभी कुछ समय तक वर्तमान स्थिति इसी प्रकार रहेगी। जो तनाव इस समय दिखाई दे रहा है, वह आगे भी चलता रहेगा। हमें किसी भ्रान्ति में रहकर यह न समझ लेना चाहिए कि चूंकि यह आपस में लड़ रहे हैं, इसलिए हम सुरक्षित हैं। धर्म के नाम पर यह सब कुछ कर सकते हैं। यदि आज आपस में लड़ते हैं तो कल को किसी भी समय यह मिल भी सकते हैं। इसलिए इस स्थिति को हमें कभी नहीं भूलना चाहिए।

आपने यह भी पढ़ा होगा कि सन्त लौंगोवाल के अकाली दल ने पहली जून से सात जून तक घल्लूघारा सप्ताह मनाने का निर्णय किया है। घल्लूघारा क्या है और उसके पीछे क्या मनोवृत्ति काम कर रही है? इसे हमें अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए। 1746 में जब अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण किया था तो सिखों की फौज ने उसका मुकाबला किया था। उसमें वह हार गए। इस पर अहमदशाह अब्दाली की फौज ने 10-15 हजार सिखों की हत्या कर दी। इसी प्रकार का एक काण्ड 1762 में भी हुआ था, जब फिर सिख फौजी हजारों की संख्या में मारे गए थे। इन दोनों घटनाओं को सिख इतिहासकारों ने घल्लूघारा का नाम दिया था। अब अकाली यह कह रहे हैं कि पिछले वर्ष जून मास में अमृतसर के दरबार साहिब में जो कुछ हुआ था, वह भी घल्लूघारा था। इससे हम इनकी मनोवृत्ति का कुछ अनुमान लगा सकते हैं। जो कुछ अमृतसर में हुआ था, उससे पहले पंजाब में भी बहुत कुछ होता रहा है। यदि अमृतसर में फौजी कार्यवाही को घल्लूघारा का नाम दिया जा सकता है तो उससे पहले पंजाब में हिन्दुओं की जो हत्याएं होती रही हैं, वह भी तो एक प्रकार से घल्लूघारा ही था।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

व्यक्ति के सामाजिक जीवन का स्वरूप

लेखक—पं. श्री जगदीश राम आर्य रतन
मिलर गंज लुधियाना

सामाजिक जीवन का विशुद्ध और वास्तविक स्वरूप समझे बिना कोई भी व्यक्ति अपने सामाजिक कर्त्तव्यों का भली-भांति पालन करने में समर्थ नहीं हो सकता। इसलिए अपने इस सामाजिक जीवन को सर्व प्रथम समझना अत्यन्त जरूरी है।

जीवन का अर्थ है "क्रियाओं का निरन्तर प्रवाह" और सामाजिक जीवन का अर्थ हुआ, हमारी वह सभी चेष्ठाएं और क्रियाएं जिन से हमारा समाज प्रभावित हो सकता है। अर्थात् हमारी जो चेष्टाएं और क्रियाएं हमारे समाज पर अच्छा या बुरा प्रभाव डालती है, वह सभी हमारे सामाजिक जीवन का अंग समझी जानी चाहिएं।

वैदिक साहित्य और संस्कृति में मनुष्य को सामाजिक प्राणी माना गया है। किसी भी मनुष्य का विकास समाज के बिना नहीं हो सकता। और किसी भी समाज का गठन मनुष्यों के बिना नहीं हो सकता। इसलिए समाज और व्यक्ति दोनों ही एक दूसरे पर आश्रित है।

जब हम इस अटल सत्य को स्वीकार कर लेते है। तो फिर हमें यह भी मानना ही पड़ेगा कि प्रत्येक व्यक्ति या मनुष्य के अपने समाज के प्रति कुछ जरूरी कर्त्तव्य भी है। जिस अवस्था में कोई मनुष्य अपने समाज सम्बन्धी कर्त्तव्यों का पालन करता हैं। वह उस का सामाजिक जीवन समझा जाता है। अर्थात् हमारे सभी वह कर्म जिन का अच्छा या बुरा प्रभाव हमारे समाज पर पड़ता है वही सामाजिक जीवन का स्वरूप समझना चाहिए।

परिवार ग्राम और नगर तथा राष्ट्र ये सब समाज के रूप ही है। इन सब के साथ व्यक्ति का कैसा व्यवहार होना चाहिए। यह सब मर्यादाएं बनी हुई हैं, और प्रचलित भी हैं। ऐसी मर्यादाओं का पालन करना ही मनुष्य का सामाजिक धर्म माना जाता है

इस सामाजिक धर्म का पालन करना ही उसके सामाजिक जीवन का विशुद्ध और वास्तविक स्वरूप समझना चाहिए।

अपने सामाजिक धर्म का पालन करना मनुष्य के लिए कितना अनिवार्य है। इसका संकेत हमें आर्य समाज के आधार भूत दस नियमों में से छटे नियम में मिलता। जिस की रचना आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने निम्न शब्दों में की है। संसार का उपकार करना इस समाज का (समाज के सदस्यों का) मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना' इससे पता चलता है कि अपने समाज की उन्नति करना मनुष्य का अनिवार्य धर्म है।

प्रत्येक व्यक्ति के लिए जितना अपनी शारीरिक और आत्मिक (अध्यात्मिक) उन्नति करना जरूरी है उतना ही या उस से भी अधिक जरूरी सामाजिक उन्नति करना है, अर्थात् अनिवार्य है। हर एक व्यक्ति अपने समाज के अटूट अंगों अर्थात् दूसरे मनुष्यों की उन्नति में सहायक बना रहे। क्योंकि उन्नत समाज के बिना व्यक्ति का विकास कभी भी सम्भव नहीं है।

सामाजिक उन्नति का अर्थ है, समाज मे प्रचलित कुरीतियों दूषित परम्पराओं और संकीर्ण तथा स्वार्थ पूरक परम्पराओं को बदल कर समाज की इकाई रूपी सभी व्यक्तियों की शारीरिक और आत्मिक (अध्यात्मिक) उन्नति के उपयोगी साधनों की उपलब्धियों और उनके प्रयोग से व्यक्तियों का उत्थान करना जिस से व्यक्तियों के आपसी सम्बन्धों में मधुरता और दृढ़ता आ सके। जिस से यह सामाजिक सम्बन्ध पनपते रहे।

प्रत्येक व्यक्ति का सामाजिक धर्म यह प्रबल मांग करता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता सामर्थ और अपने विशेष गुणों से समाज (मानव समूह) की शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक व आर्थिक उन्नति को बढ़ाने के लिए यथा सम्भव और अधिक से अधिक योगदान देता रहे।

अनुशासनहीनता व्यक्ति का एक महान् सामाजिक अपराध माना जाता है। इस दोष का दोषी व्यक्ति कभी भी अपने समाज के लिए उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकता। जैसाकि श्री स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज के दसवें नियम में लिखा है—"सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक स्व हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें" अनुशासन का अर्थ हैं, सामाजिक नियमों और परम्पराओं का पालन करना है।

जो व्यक्ति सदा स्वछन्द (मनमानी रीति से) चलने का अभ्यासी बन चुका है। और प्रत्येक व्यवस्था की मर्यादा की अवहेलना करना जिस का स्वभाव बन चुका है और जो किन्हीं विशेष गुणों से सम्पन्न न हो और विकासहीन बना हुआ हो, वह भी अपने समाज के लिए कुछ भी उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकता। विकसित मनुष्य ही समाज के विकास में साधक हो सकता है। यह अटल सत्य है।

प्रत्येक व्यक्ति प्रतिक्षण समाज से लाभ उठा-उठा कर समाज का ऋणी बनता चला जा रहा है। यदि वह समाज के उन ऋणों से उऋणी नहीं होता तो उस की इस से बड़ी कृतघ्नता और क्या हो सकती है, और यही उसकी कृतघ्नता सब से बड़ा सामाजिक अपराध माना जाता है। अपने समाज के प्रति कृतज्ञता पूर्ण भावना रखते हुए यदि कोई मनुष्य समाज के विकास में योगदान देने में रत और व्यस्त है तो वही उस की सामाजिक सेवा का विशुद्ध स्वरूप है।

वह व्यक्ति धन्य हैं, जिन्होंने अपनी जीवन चर्या में अपनी सामाजिक सेवाओं को प्रमुख स्थान दिया हुआ है। हमें ऐसे महानुभावों का आभारी बना रहना चाहिए। वास्तव में ऐसे महापुरुष ही दूसरों के लिए प्रकाश स्तम्भ होते हैं। उन के जीवन से जनसाधारण को प्रेरणाएं भी मिलती है।

और उनका मार्ग दर्शन भी उन्हीं से हुआ करता है।

उसी संदर्भ में वेदवचन भी यही है।

"देवा अधिम ग्रार्यन्न द्रवणो दा"

यजु. 17 म. 70

अर्थात् देवजन श्रेष्ठ पुरुष विद्या और सामर्थ इसलिए धारण करते है कि वह इसका दान अन्य पात्र जनों को करते रहें। जिससे सभी उपकृत होते रहें। यही आदर्श समाज सेवा है।।

—

आवश्यक सूचना

वैदिक यति मण्डल के सब सदस्य महानुभावों से निवेदन है कि मान्यवर श्री महात्मा दयानन्द जी तपोवन आश्रम देहरादून को वैदिक यति मण्डल का कार्यकर्ता अध्यक्ष प्रतिष्ठित सदस्यों के परामर्श से मैंने बना दिया है अतः वैदिक यति मण्डल सम्बन्धी पत्र-व्यवहार उन्हीं से करें।

—स्वामी सर्वानन्द सरस्वती वैदिक यति मण्डल दीनानगर (गुरदासपुर)

आर्य समाज का महान् संगठन एवं उसका कर्त्तव्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री डा. आनन्द प्रकाश जी के पधारने पर आर्य मर्यादा के लिए विशेष भेंट

(गतांक से आगे)

7, प्र.—आर्य समाज के प्रचारकों व उपदेशकों की योग्यता व कार्य शैली के सम्बन्ध में आपके क्या सुझाव हैं ?

उ.—उपदेशकों व प्रचारकों की शिक्षण योग्यता के साथ ही उन्हें वर्तमान परिस्थितियों व विश्व की प्रवर्तमान अनेक विचार धाराओं का भी अच्छा ज्ञान होना आवश्यक है। कार्य क्षेत्र में उतरने से पूर्व उसका यथेष्ठ प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। जहां तक कार्य शैली का प्रश्न है निस्सन्देह अपनी बात को पूरी दृढता से कहना चाहिए। परन्तु भाषा शैली सामयिक दृष्टि से उचित होनी चाहिए। इसके साथ ही यह भी ,आवश्यक है कि उपदेशक गण भाषण के अलावा जनस सम्पर्क भी करते रहें। वे जहां भी जाएं कुछ अच्छे प्रतिष्ठित परिवारों से सम्पर्क अवश्य करें और उन तक आर्य समाज का सन्देश पहुंचाएं। कार्य शैली की दृष्टि से मैं एक और बात उचित समझता हूं कि वह यह कि छोटी-छोटी गोष्ठियां बहुत प्रभावकारी होती हैं। ऐसी छोटी-छोटी गोष्ठियां आयोजित कर अपनी सैद्धान्तिक चर्चा करना भी बहुत महत्व-पूर्ण है।

7, प्र.—क्या आर्य समाज प्रचार कार्य में अपनी परम्परागत शैलियों व पद्धतियों से सफल हो सकता है।

उ,—परम्परागत शैलियों का सीधा अर्थ मैं खण्डन-मण्डन और शास्त्रार्थ से लेता हूं। यद्यपि बहुधा यह बात सुनी जाती है कि अब शास्त्रार्थों की आवश्यकता नहीं है क्योंकि अब तो आर्य समाज की बात सभी लोग मान रहे हैं। मैं समझता हूं कि यह बात सर्वांश में ठीक नहीं है। हमको समय के अनुकूल अपनी प्रचार प्रणालीमें परिवर्तन अवश्यक करना चाहिए पर साथ ही संगठन में ऐसे विद्वान् भी रहने चाहिए जो आवश्यकता पड़ने पर शास्त्रार्थों की चुनौतियों को स्वीकार कर सकें।

8. प्र.—प्रान्तीय सभाओं को सार्वदेशिक सभा क्या उपयोगी सहयोग व समर्थन प्रदान कर सकती है ?

उ,—सार्वदेशिक सभा का प्रमुख काम विश्व की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यों को संगठित कर उसे मार्ग दर्शन देना व वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार का प्रबन्ध करनाहै। इस प्रकार सार्वदेशिक सभा नीति निर्धारित करती है।। उसे क्रियान्वित करना प्रतिनिधि सभाओं व आर्य समाजों का काम है।

9. प्र.—प्रतिनिधि सभाओं के संगठन के लिए आपका सामयिक मार्ग-दर्शन क्या है ?

उ.—आर्य समाज के कार्यक्रमों को लागू करने का प्रमुख उत्तरदायित्व आर्य प्रतिनिधि सभाओं का ही है। आर्य प्रतिनिधि सभाओं में और गतिशीलता लाने के लिए इसके अन्तर्गत कर रहे सभी विभागों को, विशेषतः उपदेशक विभाग शिक्षा विभाग, प्रकाशन विभाग, पत्रिका प्रकाशन विभाग, आर्य वीर दल, महिला विभाग को सक्रिय करना चाहिए। जहां वार्षिक उत्सव नहीं होते वहां उपदेशकों को भेजकर वार्षिक उत्सव कराने चाहिए अपने अन्तर्गत शिक्षण संस्थाओं में वैदिक धर्म के प्रचार व नैतिक शिक्षा का सुप्रबन्ध होना चाहिए। कहने का सारांश यह कि आर्य प्रतिनिधि सभाओं को अपनी शक्ति का अधिक से अधिक उपयोग वैदिक प्रचार व रचनात्मक कार्यों में करना चाहिए। मैंने कहीं कहीं यह देखा है कि कुछ ऐसे कार्य ले लिए जाते हें जिनका आर्य समाज के मिशन से कोई भी सम्बन्ध नहीं होता। इससे बचना चाहिए।

10. प्र.—आर्य समाज राजनीति में प्रत्यक्ष भाग न लेकर भी देश की राजनीति को कैसे प्रभावित व उसका उचित मार्ग दर्शन कर सकता है?

उ.—आर्य समाज ने इस देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए जो बलिदान दिए हैं वह सर्व विदित हैं। भारत के बाहर भी जिन-जिन देशो मे आर्य समाज का प्रचार हुआ, उन-उन देशो में भी स्वाधीनता संग्राम में आर्य समाज ने सम्पूर्ण सहयोग व अपना कर्त्तव्य पालन किया है! आर्य समाज कभी सत्ता पक्ष व विपक्ष की राजनीति में प्रत्यक्ष भाग नही लेता क्योंकि यह विश्व संगठन है पर हम राष्ट्रीय धारा से पृथक् नहीं हैं। इस कारण राष्ट्र जीवन को सुदृढ बनाने के लिए जो बातें आवश्यक हैं उनका प्रचार करते हैं। सार्वदेशिक व प्रान्तीय राज्य आर्य सभाएं इस सम्बन्ध में नीति निर्धारण व मार्ग दर्शन का कार्य करती हैं। राष्ट्रीय संकटों के समय हम इस देश की अखण्डता जी बनाए रखने के लिए हर प्रकार की कुर्बानी देने के लिए तैयार रहते हैं। वैसे आपने यह मौलिक प्रश्न पूछा है। हमें चुनाव की राजनीति से अलग रहते हुए राष्ट्रीय प्रश्नों पर अपना मत व सुझाव देते रहना चाहिए और जन-मानस को प्रभावित करते रहना चाहिए। हम राष्ट्रीय सरकार को ऐसे सभी कार्यों में सहयोग देने के लिए तत्पर हैं जिनसे भारतीय तत्व ज्ञान व भारतीय संस्कृति का प्रसार होता है।

—

(3 पृष्ठ का शेष)

परन्तु अकाली 3 जून 84 से पहले की घटनाओं को याद नहीं करते। उन्हें 3 जून के बाद की घटनाएं ही याद हैं और आज जब एक वर्ष के पश्चात् वह सिखों को फिर भड़काने लगे हैं, तो इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि आगे चलकर वह क्या कुछ कर सकते हैं ?

इस निराशा में हमें केवल आशा की एक छोटी सी किरण भी दिखाई दे रही है, वह यह कि पजाब से बाहर रहने वाले सिख अब यह अनुभव कर रहे हैं कि जो कुछ पंजाब के अकाली कर रहे हैं, उसके कारण पजाब से बाहर रहने वाले सिखों को कई प्रकार की कठिनाईयां पैदा हो रही हैं। इसीलिए वह पजाब के अकालियों से बार-बार कह रहे हैं कि जिस मार्ग पर वह चल रहे हैं उसे छोड़कर सहयोग भ्रातृभाव का मार्ग अपनाएं। इसका अकालियों पर कोई प्रभाव पड़ेगा या नहीं, इसके विषय में कुछ कहना अभी कठिन है। इसीलिए हमने आप से कहा है कि हमें किसी भ्रान्ति में नहीं रहना चाहिए और अपने संगठन को शक्तिशाली बनाने का प्रयास करना चाहिए।

पंजाब की स्थिति अभी बहुत गम्भीर है और भविष्य मे क्या होगा अभी कुछ कहना कठिन है। इसलिए हमारा पंजाब की सब आर्य समाजों से यह सविनय निवेदन है कि आपस के सब मतभेद समाप्त करके अपने संगठन को जितना अधिक प्रभावशाली और शक्तिशाली बनाया जा सकता है, बनाने का प्रयास करना चाहिए। आज भी आर्य समाज ही पजाब मे एक ऐसी संस्था है जो हिन्दुओं के हितों की रक्षा कर सकती है। राजनैतिक दल अपने अपने स्वार्थ के लिए लड़ते रहते हैं और आज तो पंजाब में भी कोई ऐसा राजनैतिक दल नही, जो हिन्दुओं के हितों की रक्षा कर सके। आर्य समाज ही एक ऐसा संगठन है, जिसका अपना कोई स्वार्थ नहीं, जिसे अपने देश की रक्षा करनी है और जो यह समझता है कि देश की रक्षा के लिए हिन्दू समाज के हितो की रक्षा करना आवश्यक है, हिन्दू ही नहीं रहें, तो देश कहां रहेगा। आर्य समाज हिन्दुओं को किसी साम्प्रदायिक भावना से संगठित करना नहीं चाहता। राष्ट्रीय भावना से ही उनमें यह भावना पैदा करना चाहता है कि अपना देश सर्वोपरि है। राष्ट्र की रक्षा ही धर्म की रक्षा और धर्म की रक्षा राष्ट्र की रक्षा है।

आप से सविनय निवेदन है कि आर्य समाज के दृष्टिकोण को अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुंचाने का प्रयास करें और उन सब व्यक्तियों और संस्थाओ को संगठित करने का प्रयत्न करे जो इस देव भूमि भारत को अपनी मातृ भूमि और पुण्य भूमि समझते हैं।

वीरेन्द्र	कमला आर्या	अमृतलाल बजाज एडवोकेट
सभा प्रधान	सभा महामन्त्री	पंजाब राजार्य सभा जालन्धर शहर

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला

दयानन्द, गांधी और मार्क्स

व्याख्याता—श्री डा. प्रभाकर माचवे, निर्देशक भारतीय भाषा परिषद्, कलकत्ता

मनीषी मार्क्स

(2 जून से आगे)

लेनिन के प्रस्ताव का उन्होने विरोध किया, और राय के संशोधन को लेनिन ने माना। किसी स्कूल कालेज की शिक्षा न पाए हुए राय सात भाषाओं के पण्डित थे, संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी, जर्मन, रूसी, इस्पाहानी, फ्रेंच। राय कम्युनिस्ट इन्टरनैशनल के प्रेसिडियम के सदस्य बने और एशिया में साम्यवादी आन्दोलनों के संगठन का कार्य उन्हें सौंपा गया।

1927 में बोरोदिन के साथ काम करने राय को भेजा गया स्तालिन से उनके मतभेद हुए। राय को 1929 में कामिटार्न से निष्कासित किया गया। वह डा. महमूद के नाम से दिसम्बर 30 को भारत लौटे और जुलाई 21, 1931 को वे पकड़े गए। जेल से छूटने पर वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य बने। मौलाना आजाद के मुकाबले में रामगढ़ कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए खड़े हुए, हार गये। राय ने अपनी रैडीकल डैमोक्रेटिक पार्टी बनाई। ऐलेन गाट्चाक से 1937 में विवाह किया। गत महा युद्ध में वे फासिस्ट विरोधी मित्र राष्ट्रों के पक्ष में युद्ध प्रचारक बन गये। अपनी पार्टी भंग की। रैडिकल ह्यूमैनिस्ट दल देहरादून में स्थापित किया। यहां मार्क्स की राय द्वारा आलोचना हमारे लिए अर्थपूर्ण है। एम, एन, राय की मरणोपरान्त प्रकाशित 'रीजन' रोमैंटिसिज्म एण्ड रिवोल्यूशन, (दो खण्ड) पुस्तक अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उसमें मार्क्सवाद पर राय के निम्न मौलिक आक्षेप हैं।

(1) मार्क्सवाद कोई मौलिक दर्शन नहीं। फ्रांसीसि क्रान्ति से मार्क्स ने बहुत कुछ लिया, जोकि 'बूर्ज्वा' क्रान्ति थी। जैसे प्लेखेनोव ने भौतिकवाद के इतिहास में कहा है 'मार्क्सवाद का इतिहास विश्लेषण पुरानी ऐतिहासिक कल्पनाओं का ही एक न्याय सगत परिपाक है इतिहास की आर्थिक व्याख्या के बीज मार्क्स के पहले अनेक विचारकों में थे।

(3) मार्क्स अपने पूर्ववर्तियों को 'यूरोपियन' 'रोमांटिक' कहता है जबकि मार्क्स स्वयम एक बहुत बड़ा रोमैंटिक है, इसी के कारण से क्रान्ति की कल्पना परस्पर विरोधी की शिकार हो गई। द्वन्द्ववाद तर्क पर आधारित वैज्ञानिक प्रक्रिया है, मानव की बुद्धि और प्रज्ञा का उसे आधार है। मार्क्स क्रोध और हिंसा को क्रान्ति में प्रधानता देता है, जोकि निरी अ-बुद्धिवादी प्रक्रियाएं हैं। मार्क्स कहता है—'दुनिया को बदलने से आदमी अपने आपको बदलता है। दुनियां सभी से बड़ी है सबसे बड़े आदमी से बड़ी और हमेशा रहेगी। अंश से अंशी, खण्ड से पूर्ण बड़ा होने से यह बदलना सदा सीमित रहेगा।

(3) क्रान्तिकारी चमत्कारी पुरुष नहीं होता। मार्क्स मानकर चलता है कि मनुष्य इतिहास के हाथ की कठपुतली है, उसमें कोई नैतिक सकल्प जैसी चीज है ही नहीं। मार्क्स मानकर चलता है कि इतिहास में परिवर्तन कुछ संगठित अल्पसंख्यक दल ही घोषित करेंगे। व्यक्ति की अपार सम्भावनाओं के प्रति मार्क्स सशंक है।

(4) इस प्रकार मार्क्स का इतिहास दर्शन और क्रान्ति सिद्धान्त पार्टी द्वारा 'प्रालितारियत' का क्रान्तिकारी हरावल पैदा करने में एक प्रकार का 'सुपरमैन' (वैश्वानर) निर्मित करने के पन्थ का समर्थन करता है। इसी में से तानाशाही और तानाशाह पैदा होते हैं जो लोकतन्त्र का विकल्प नहीं हो सकता।

(5) साम्यवाद किसी 'क्वारंटाइन' जैसी स्थिति में सदा नहीं रह सकता। रूसी साम्यवाद ने यूरोप में फैलते हुए उदारमतवाद की पूंजीवादी अत: अनुपत और अछूत मानकर एक ऐसी मानसिकता पैदा की कि एक ओर पूंजीवादी समाज के विज्ञान और तन्त्रज्ञान से उत्पन्न मनुष्य के सामूहिक उत्पादन का तो रूसी लाभ ले, पर उसके द्वारा मानव को मिलने वाले अवकाश और दासता से मुक्ति को साहित्य संगीत कला में 'ह्रासोन्मुख पूंजीवादी अप संस्कृति माने' यह परस्पर विरोधी बातें।

(6) इसी कारण से रूसी साम्यवाद बार-बार साहित्य, कला, नाटक आदि में सब प्रकार की अमूर्तता, व्यक्तिगत भावनाशीलता का विरोध करके समाजवादी यथार्थवाद' और सोवियत श्रमिक को ही नया नायक मानकर उसका गौरव गुणगान करने में व्यस्त हो गया। रूसी साम्यवादी साहित्य समीक्षा अत्यन्त सीमित बन गई।

(7) भारत में पूंजीवादी और उपनिवेशशाही साम्राज्यवादी दोनों मिलकर राष्ट्रवाद को बढ़ावा दे रहे थे। मुस्लिम राष्ट्रों में सामंतवादी जमींदार तन्त्र के मुल्ला मौलवी तो और भी प्रति क्रान्तिवादी थे। अत: राजनीति में रहस्यवाद का प्रचार करने वाले गान्धी भक्त कांग्रेसी या हिन्दुत्वनिष्ठ या मुस्लिमलीगी सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे थे। वे सब अ-बुद्धिवादी थे।

(8) महात्मा गांधी का दर्शन नया नहीं था। रूसी स्विस दार्शनिक डेविड कोइगन ने 'मैन आफ रिनेसां' को 'मैन आफ रिवोल्यूशन' के विरोध में उपस्थित करके विधायक या रचनात्मक तत्व नकारात्मक तत्वों से किस प्रकार से अधिक महत्वपूर्ण और मूल्यवान् हैं और व्यक्ति की नैतिकता बढ़ाने में सहायक है यह फ्रांज मेहरिंग ने 'हिस्ट्री आफ फिलासाफी' में स्पष्ट किया है। अन्तत: फाशिज्म इसीलिए धर्म और रहस्यवाद का सहारा लेता है। हिटलर का 'स्वस्तिक' और 'आर्य' श्रेष्ठता का सिद्धान्त कैसे निकला, राय ने भविष्यवाणी की 1952 में, जैसे 1931 में नेहरू ने राष्ट्रीयता और समाजवाद को मिलाकर अन्तत: गांधीवाद की शरण ली। वैसे चीन में भी राष्ट्रवाद के सब पहलू उभरेंगे और समाजवाद के बदले तानाशाही वहां क्रान्तिकारी साम्यवाद को खा जाएगी। 'वैज्ञानिक राजनीति' के स्थान पर रोमैंटिक या अबुद्धिवादी राजनीति अपने रंग में बार-बार एशिया में उभरती आती है।

राय ने कहा था कि राजनीति सत्ता के लिए छीना-झपटी और अर्थ शास्त्र केवल स्वार्थ और कपट बन जाता है। अत: नैतिकता को महत्व देना चाहिए। समाज को मनुष्य ने बनाया, मनुष्य को समाज ने नहीं। राष्ट्र समाज का पर्यायवाची नहीं। जनतन्त्र को उसके मूल व्यक्ति नागरिक से आरम्भ करना होगा। मार्क्स ने पूंजीवादी समाज के बारे में जो कुछ भविष्यवाणी की थी वह सच नहीं निकली। क्रांति और प्रति क्रान्ति के परस्पर संघात से, विश्व युद्धों में साम्यवाद की प्रथम बलि हुई। राय अन्तिम दिनों में वेदान्त के बहुत निकट पहुंचे थे और 25 जनवरी 1954 के रैडिकल ह्यूमैनिस्ट में लिखते हैं कि 'मैं एक धार्मिक दयालु नैतिक सभ्य मनुष्य को कहीं अधिक पसन्द करूंगा, बनिस्बत की बीसवीं सदी के इन वर्बर 'नियांडरथेलर' से। यदि धर्म के सहारे जनजीवन में कुछ नैतिक भावना जागृत की जा सके तो उसमें क्या आपत्ति हो सकती है।

एम. एन. राय पर इतने विस्तार से लिखने का अर्थ अन्य साम्यवादी विचारकों डांगे और डी. डी. कोसंबी, नम्बूद्रीपाद और देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय' स्वामी सहजानन्द और राहुल सांस्कृत्यायन के महत्व को कम करना नहीं है। आज मार्क्सवाद पर प्राय: जो कुछ इन नेताओं ने और लेखकों ने लिखा है वह चर्वित चर्वण मात्र है। बहुत कम उसमें विचारों को नई दिशा देने वाला है। शानी देशपांडे के वेदान्त और मार्क्सवाद में कल्पना अधिक है।

सभा द्वारा प्रकाशित एवं प्रचारित साहित्य

1 ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका —16 रुपये।
2 संस्कार विधि —6 रुपये।
3 सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी सजिल्द —8 रुपये।
4. सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी अजिल्द —5 रुपये।
5. अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द ले —इन्द्र विद्यावाचस्पति —5 रुपए।
6 आर्यसमाजके अतीत की उपलब्धियां तथा भविष्य के प्रश्न—10 रुपये।
—ले —डा भवानी लाल जी भारतीय
7 आर्य समाज के नियम (कार्ड) —50 रुपये सैंकड़ा।
8. पजाब का आर्य समाज द्वितीय (सम्करण) —4 रुपये।
ले —श्री स्व रामचन्द्र जावेद।
9 सगठन मे शक्ति है ले —श्री वीरेन्द्र सभा प्रधान। 1 रुपया।
10 प्रमुख सिख विद्वानो से पाच प्रश्न —50 पैसे।
ले,—श्री स्वामी अमृतानन्द जी सरस्वती
11 धर्मवीर पण्डित लेखराम ले.—स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी। —40 पैसे
12 आर्य कीर्तन भजनावली 1 रुपया।
13 जन्म साखी (पजाबी) ले,—ज्ञानी पिण्डीदास। 2 रुपये।
14 आर्य समाज दा दिग्दर्शन (पजाबी) 2 रुपये।
ले —आचार्य पृथ्वीसिह आजाद।
15 सिख गुरु अते आर्य सिद्धान्त ले.—स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी। 2 रुपये।
16 सिख तुष्टीकरण की राजनीति ले —अरुण शोरी। 2—50 पैसे।
17 Swami Shardhanand —byK N Kapoor. 5—00
18. Glimpses from Satyarth Parkash 3—00
by D, N. Vasudeva.
19 Language problem and the political crisis in the Panjab by Sh Virendra 3—00
20 The Arya Samaj aud Sikh. by Virendra 1—00
21. The Fundamentals of Arya Samaj 00—50
by Puran chand Advocat

कृपया अधिकाधिक साहित्य मगवाए। विशेष छूट भी दी जाएगी। डाक-व्यय अतिरिक्त।

प. चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर

लुधियाना में विशाल पारिवारिक सत्संग

आर्य युवक सभा लुधियाना द्वारा 19-5-85 को पद्म श्री भीमसेन शर्मा के निवास स्थान पर पारिवारिक सत्सग आयोजित किया गया। प, सुरेन्द्र कुमार श्री शास्त्री, पुरोहित आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार ने यज्ञ सम्पन्न कराया तथा उनका मनोहर प्रवचन हुआ। इस शुभअवसर पर श्री रोशनलाल जी शर्मा सयोजक आर्य युवक सभा पजाब के नेतृत्व मे वेद प्रचार भजन मण्डली लुधियाना ने प्रभु भक्ति एव देशभक्ति के गीतों पर आधारित विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्रीमती कमला जी आर्या महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने आर्य युवक सभा की ओर से महर्षि दयानन्द जी सरस्वती का चित्र यजमान परिवार को भेंट किया। श्रीमती कमला जी आर्या ने नवयुवको के इस आयोजन की प्रशसा की तथा आशीर्वाद देते हुए आशा व्यक्त की कि आर्य नवयुवक वेद प्रचार के कार्य को बुजुर्गों के पदचिन्हो पर चलते हुए आगे बढाए गे। श्री रोशनलाल जी शर्मा ने विश्वास दिलाया कि नवयुवक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के निर्देशानुसार वेद प्रचार के काय को आगे बढाए गे। इस अवसर पर सरदार बलवन्तसिह जी एव श्री धनराज सभा के विशेष निमन्त्रण पर आए तथा उन्होने प्रभु भक्ति के सुन्दर गीत गाए। आर्य युवक सभा उनके प्रति आभार प्रकट करती है। श्री नरेन्द्रजी भल्ला ने सत्सग के आयोजन मे सहयोग दिया। हम उनके आभारी हैं। आरती, शान्ति पाठ एव जयघोष के साथ कार्यवाही समाप्त हुई उपस्थिति अच्छी रही।

—अरुण भारद्वाज आर्य युवक सभा महामन्त्री लुधियाना

सरकारी धन का दुरुपयोग

14-5-85 के पजाब केसरी के मुख पृष्ठ पर एक समाचार छपा है कि उत्तर प्रदेश की 'सस्कृत एकादमी' ने श्री स्वा. हरिहरनन्द स्वामी जी को उनके ग्रन्थ वेदार्थ पारिजात' पर एक लाख रुपये का पुरस्कार देने की घोषणा की है। पुरस्कार दिया भी जा चुका है।

इसके विषय मे निम्न बातें विचारणीय हैं—

1 वेदार्थ पारिजात' कोई मौलिक ग्रन्थ नही है। बनारस के कई प्रमुख विद्वानो ने मिलकर ऋषि दयानन्द की वेद सम्बन्धी मान्यताओ के खण्डन के लिए यह ग्रन्थ लिखा है। धार्मिक खण्डन ग्रन्थ पर पुरस्कार देना किसी अकादमी के लिए उचित नही।

2 इस ग्रन्थ मे ऋषि दयानन्द के लिए अनुचित और अपमानजनक शब्दो का प्रयोग किया गया है।

3, स्वामी करपात्री घोर अनुदारवादी विचारा के थ। उन्होने महात्मा गाधी जी के अस्पृश्यता आन्दोलन के विरोध मे बहुत प्रयत्न किया था। अग्रेजी सरकार की प्रेरणा से उनको इस कार्य के लिए बहुत धन मिला। एक हवाई जहाज तक मिला।

4 काशी मे विश्वनाथ के मन्दिर मे अछूतो के प्रवेश के सम्बन्ध मे उन्होने डटकर विरोध किया। जब सफल न हुए तो एक और उस मन्दिरके समीप ही विश्वनाथ का मन्दिर बनवाया था उसमे शिवलिंग को चादी की सलाखो के ढीके मे रखा ताकि कोई उसे छू न सके।

5 वे एक उच्चकोटि के विद्वान् तथा तपस्वी अवश्य थे पर कट्टर पुराण पन्थी थे पर न गाधी तथा ऋषि दयानन्द के उदार विचारो के कट्टर विरोधी।

6 उत्तर प्रदेश की सस्कृत एकादमी ने एक विवादास्पद खण्डनात्मक पुस्तक के लिए पुरस्कार देकर एक नई अवाछनीय परिपाटी कायम कर दी है।

7 आर्य समाज की ओर से इस की शिथिलता के कारण कब हानि हुई। ग्रन्थ का उत्तर लिखा गया है जिसे श्री विशुद्धानन्द शास्त्री से लिखवा कर सार्वदेशिक सभा ने प्रकाशित किया है।

आर्य समाज की ओर से तथा सभी उदार विचार के लोगो की ओर से इस पुरस्कार का विरोध होना चाहिए।

—सत्यदेव विद्यालकार जालन्धर

डी. ए. वी. शताब्दी वैदिक प्रशिक्षण शिविर समारोह सम्पन्न : वैदिक धर्म प्रचार का व्रत लें—प्रो. वेद व्यास का आह्वान

बोकारो इस्पात नगर—डी, ए वी आन्दोलन शताब्दी के उपलक्ष मे पूर्वी क्षेत्र की डी ए, वी सस्थाओ की ओर से स्थानीय डी ए वी, पब्लिक स्कूल मे 5 मई से 12 मई 1985 तक वैदिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे बोकारो जवाहर विद्या मन्दिर राची, धुर्वा राची, दुर्गापुर, नन्दराज राची तथा कोयला क्षेत्र स्थित रजरप्पा प्रोजेक्ट ढोरी पसेरो काकी बीना, अल्कुसा कुसुण्डा मूनीडीह (धनबाद) के डी ए वी पब्लिक स्कूल के एक सौ छात्रो ने भाग लिया। 5 मई को प्रात काल यज्ञोपरान्त 100 छात्रो का सामूहिक उपनयन सस्कार किया गया। इस अवसर पर डी, ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली के प्रधान प्रो वेदव्यास जी तथा सगठन सचिव श्री दरबारी लाल जी ने छात्रो के ऊपर पुष्प वर्षा की।

श्री बाबू दरबारी लाल जी ने इस समारोह मे उपस्थित भारी जन समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि अनेक भाई हम से यह प्रश्न पूछते हैं कि—आर्य समाज तो अपने प्रारम्भिक काल से गुरुकुल व हिन्दी माध्यम के स्कूलो व कालेजो के द्वारा हिन्दी का प्रचार करता रहा है। आज ये लोग अग्रेजी माध्यम के स्कूल क्यो खोल रहे है? मैं इस प्रश्न के उत्तर मे कहना चाहता हू कि अग्रेजी भाषा का हमे आग्रह नही है। आज देश मे अग्रेजी माध्यम स्कूलो मे अपने बच्चे को पढाने की लोगो मे एक सनक हो गई है। अग्रेजी के प्रति लगाव की एक बाढ आई हुई है। ईसाईयो ने, स्थान-स्थान पर कन्वेंट स्कूल चलाए हुए हैं। जिनमे पढकर हमारे बच्चे भारतीयता सभ्यता एव सस्कृति से विमुख होकर पाश्चात्य सभ्यता के पुजारी बन रहे हैं। इस स्थिति को देखते हुए विवश होकर हम अग्रेजी माध्यम स्कूल खोलने पड रहे हैं। हमारे स्कूलो मे बच्चों को राष्ट्रीयता भारतीयता सभ्यता एव सस्कृति तथा वैदिक धर्म की शिक्षा विशेष रूप से दी जाती है। इस प्रकार डी ए वी. सस्थाओ के द्वारा बच्चो को ईसाईयत के अराष्ट्रीय जाल से बचाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

श्री दरबारी लाल ने आगे बड़े जोरदार शब्दो मे करतल ध्वनि के बीच कहा कि हमारा मुख्य लक्ष्य आर्य समाज का प्रचार व प्रसार करना है। डी, ए वी. शिक्षण सस्थाए उस प्रचार का साधन मात्र हैं।

—रामनाथ सहगल

हरियाणा में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर धूमधाम से सम्पन्न हो रहे है

पलवल विगत 25 मई को आर्य वीर दल हरियाणा के तत्वावधान मे हरियाणा के विभिन्न जिलों मे आर्य वीर दल के ग्रीष्मकालीन शिविर बडी धूमधाम से सम्पन्न हो रहे हैं। आर्य समाज भाण्डवा (भिवानी) मे श्री धमपाल 'धीर शास्त्री जी के संरक्षण मे 24 5 85 से 1 6 85 तक, आर्य हायर सैकेण्डरी विद्यालय नरवाना (जीन्द) मे श्री रामकुमार जी आर्य के सरक्षण मे 26-5-85 से 2-6-85 तक डी ए, वी हायर सैकण्डरी विद्यालय के नाल मे श्री जगदीश चन्द्र मघोक मण्डलपति की देख रेख मे 27 5 85 से 2 6 85 तक शिविर लगाए गए।

आर्य समाज कु जपुरा करनाल मे भी एक सप्ताह का आर्य वीरांगना दल का प्रशिक्षण शिविर कु सन्तोष आर्य के नेतृत्व मे लगा रहा है

हिसार मे 14-6 85 से 21-6-85 तक श्री सजय कुमार जी आर्य के सहयोग से गुरुकुल झज्जर (रोहतक) में 14 6-85 से 23 6 85 तक आचार्य देवव्रत जी व्यायामाचार्य के नेतृत्व मे दयानन्द उच्च विद्यालय सैक्टर-16 फरीदाबाद मे 16 6 85 से 26 6-85 तक श्री कन्हैयालाल जी महता के सौजन्य से पलवल मे श्री सत्यपाल आर्य के सहयोग से 23 6 85 से 30-6-85 तक शिविर लगेगे व्यायाम प्राणायाम आसन जुडो, कराटे तथा आत्मरक्षा लाठी प्रशिक्षण भी सिखाया जा रहा है। उन्हें आत्मिक शारीरिक तथा सामाजिक उन्नति के साधन बताए जा रहे हैं समाज में व्याप्त अज्ञान अन्याय, अभाव को दूर करने की प्रेरणा दी जा रही है।

शिविरो मे 15 से 25 वष तक के युवक भाग ले रहे हैं। निवास तथा भोजन की व्यवस्था नि शुल्क है।

—अजीत कुमार आर्य मन्त्री
आर्य वीर दल हरियाणा

आर्य समाज कालेज रोड़ बरनाला

आर्य समाज कालेज रोड बरनाला के तत्वावधान में ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी ने 13-5 85 से 15-5-85 तक प्रात साय स्थानीय धर्मशाला मे वेद कथा की। इन्ही दिनो में सरकारी हाई स्कूल, जैन हैप्पी माडल स्कूल, सनातन धर्म हाई स्कूल और गांधी आर्य हाई स्कूल में उनके प्रवचन करवाए गये। बच्चो और अध्यापको पर उनके प्रवचनो का बहुत प्रभाव पड़ा। उनके प्रवचनो से प्रभावित होकर गीता भवन मे प्रवचन करने की प्रार्थना की। 16 मई से 17 मई तक गीता भवन में वेद कथा की और ओम् नाम की महिमा गाई। सभी श्रोताओ पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

—राजकुमार मन्त्री

—

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली 27 की कार्यकारिणी वर्ष 1985-86 के लिए निम्न पदाधिकारी दिनांक 12 मई 1985 को आयोजित साधारण सभा में सर्वसम्मति से चुने गए।

प्रधान-श्री हरिबाबू गुप्त, उपप्रधान—श्री जयभगवान वर्मा, श्री बख्तावरमल नामपाल श्री देशराज सेठी, मन्त्री—श्री नन्दकिशोर भाटिया, कोषाध्यक्ष—श्री ओम प्रकाश मलिक।

—द्विजेन्द्र कुमार शास्त्री पुरोहित
आर्य समाज राजौरी गार्डन
नई दिल्ली

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज नु विभाग गुरदासपुर का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री जगदीश राय अरोड़ा, उपप्रधान—श्री सत्यपाल नन्दा, श्री जोगेन्द्र मेहरा मन्त्री—श्री अमरनाथ कोहली, उपमन्त्री—श्री गुरबचन जी, प्रचार मन्त्री—श्री केदारनाथ मल्होत्रा, कोषाध्यक्ष—श्री द्वारका दास शर्मा।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन नं. 74250 रजि. नं. पा. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 10, 3 आषाढ़ सम्वत् 2042, तदनुसार 16 जून 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

मनुर्भव-हे मनुष्य !

तू मनुष्य बन

ले.—श्री अर्जुन देव स्नातक, 5 सीताराम भवन, फाटक, आगरा केन्ट

कितना सुन्दर यह वैदिक उद्बोधन है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए जो किसी भी मत को मानने वाला हो, किसी भी विचारों से अनुप्राणित हो, उसकी पूजा-पद्धति रीति-रिवाज, रहन-सहन आदि कैसे भी हों, सभी के लिए, सार्वभौम कल्याण के लिए माननीय है। हे मनुष्य ! तू मनुष्य बन। ससार के समस्त सम्प्रदायों के ग्रन्थ पढ़ जाइये। किसी भी सम्प्रदाय के आचार्य प्रवर से पूछिये कि संसार में सुख शान्ति कैसे प्राप्त होगी तो उत्तर होगा—कोई कहेगा कि ईसाई बन, कोई मुसलमान बन, कोई बौद्ध, कोई पारसी आदि बनने की बात कहेगा। किन्तु यह सब बनने पर क्या सुख शान्ति प्राप्त होगी, क्या जीवन आनन्दमय हो सकेगा ? उत्तर प्रत्यक्ष है।

आज का मानव नाममात्र का मानव रह गया है भौतिकता के परिवेश ने उसे पशुवृत्ति से भी गिरा दिया है। सत्य ही जब भौतिक उन्नति के दर्प में मनुष्य आत्मिक गुणों को तिलांजलि दे दे, जब सत्य, दया, न्याय एवं परमार्थ का स्थान असत्य, कठोरता, अन्याय तथा स्वार्थवृत्ति ले ले, तब क्यों न मानव का अधः पतन होगा आज चारों ओर विनाश की लीला अपना ताण्डव दिखा रही है। एक भाई दूसरे भाई का गला घोंटने में उसकी सम्पत्ति हड़पने में अपने कर्तव्य की इतिश्री समझता है। बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएं धराशायी होती हैं, अनेक शिशु अनाथ हो रहे हैं, अनेक सुहागिनों के सुख सिन्दूर असमय में पुछ जाते हैं, यह सब देखकर भी आज का मानव उसकी अट्टहास करता है। वह मानव को कलंकित करता है, उसकी इस वृत्ति ने सुख शान्ति को आकाशकुसुमवत् कर दिया है। भौतिकता की चकाचौंध में मनुष्य अपने रूप को भूल गया है।

आज मन्दिरों में पूजा के लिए, घण्टे बजाते हैं आज व्यक्ति उपासना के लिए मन्दिरों में आते हैं आज लोग दान देते हैं, दुखियों की सेवा करते हैं—उदार-वृत्ति के कारण ? नहीं नहीं यह सब बड़े बड़े दीखने वाले कार्य केवल बाह्य प्रदर्शन के लिए किए जाते हैं मिथ्या अहं को दोष देने के लिए, प्रसिद्धि को पाने के लिए, विचारने की बात क्या यही मानवता है तो दानवता क्या होगी ? यही शान्ति है तो अशान्ति क्या होगी यही सुख है तो दुःख क्या होगा ?

प्रश्न है इस अधः पतन का कारण क्या है ? अधः पतन का कारण है हम ईसाई हैं, मुसलमान हैं, बौद्ध हैं, जैन हैं, सिक्ख हैं, पारसी हैं आदि आदि हैं पर वह नहीं है जो होना चाहिए—वह है मनुष्य। वेद का यह उद्बोधन कितना प्रेरक है, उपादेय है एवं सुख शान्ति-प्रदायक है। हे मनुष्य ! तु मनुष्य बन केवल मनुष्य बन, मनुष्य से पृथक् कुछ न बन—केवल मात्र मनुष्य बन।

चलिए। विचार करें कि मनुष्य किसे कहते हैं और कैसे बनते हैं ? निरुक्तकार मनुष्य शब्द का अर्थ करते हैं—"मत्वा कर्माणि सीव्यति" जो विचार पूर्वक कर्म करे वह मनुष्य। "मननात् मनुष्यः" मनन पूर्वक, विचार पूर्वक कार्य करना ही मनुष्यता है। मनुष्य और पशु दोनों चेतन हैं, दोनों आहार, निद्रा, भय एवं मैथुनवृतियों से युक्त हैं किन्तु दोनों में अन्तर क्या है तो बस यही मनन पूर्वक कार्य करने का अन्तर है, परमात्मा ने मनुष्य को विचार करने के लिए बुद्धि दी है, ज्ञान दिया है मनुष्य के ही ज्ञान का विकास होता है पशु के नहीं। इसलिए ये विद्यालय, ये महान् ग्रन्थ आदि सभी मनुष्य के लिए ही सुलभ कराये जाते हैं—पशुओं के लिए नहीं। पशुओं की पाठशाला खोल कर उनके ज्ञान का विकास करना चाहें तो भी यह कार्य सम्भव नहीं है क्योंकि पशुओं को वह साधन ही प्राप्त नहीं है जिसे बुद्धि, ज्ञान कहा जाता है। यह तो केवल मनुष्य को ही प्राप्त होता है। किसी कवि ने क्या ही ठीक लिखा है—

येषां न विद्या न तपो न दानम्।
न ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ॥
ते मृत्युलोके भुवि भारभूता:
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥

मनुष्य होते हुए भी जिन्होंने परिश्रम पूर्वक विद्याध्ययन नहीं किया है न तपस्या की है, न दानादि देकर किसी का भला ही किया है, न ज्ञान, न चरित्र, न गुण और न धर्म का ही जीवन में पालन किया है। ऐसे मनुष्य नाम के ही मनुष्य हैं, पृथिवी पर भारस्वरूप हैं मनुष्य के रूप मे पशु के समान ही आचरण करते हैं। कितना सुन्दर प्रेरणादायक श्लोक है जो मानव मात्र को सच्चे अर्थों में गुणों से विभूषित हो कर मानव बनने की प्रेरणा दे रहा है। घर में जैसे छोटे बालक को सुन्दर वस्तु लाभप्रद कार्य के लिए दी जाए, और चपल बालक उसका सदुपयोग न करके दुरुपयोग करे तो कौन मनीषी ऐसा है। जो बालक से वस्तु को न छीनेगा, उसके छीनने का कारण बालक का पात्र न होना है। ठीक इसी प्रकार पूर्व जन्म के शुभ कर्मों के परिणामस्वरूप यह मानव देह प्राप्त हुई है—हमने इसका सदुपयोग नहीं किया—हमने अपने अन्दर मानवीय गुणों का विकास नहीं किया—मनुष्य नहीं बने तो फिर कब हम मनुष्य बनेंगे, कब हमारा जीवन सार्थक होगा ? यही तो अवसर है मनुष्य बनने का। यह यह शरीर मोक्ष धाम प्राप्त करने का साधन है। यह शरीर छूट गया तो अन्य शरीर में यह संभव नहीं। महान् मनुष्य कौन है, धन्य मानव कौन है, किसी कवि ने ठीक ही लिखा है—

विद्या विलास मनसो धृतिशीलशिक्षा
सत्यव्रतारहित मानमलापहारा:।
ससारदु:खदलनेन सुभूषिता:
धन्या: नरा: ये विहितकर्म
परोपकारा: ॥

इस प्रकार मानवीय गुणों का विकास करना ही तो मनुष्य बनना है। मन बड़ा चंचल है यह ससार में संसार की बाह्य चमक दमक की ओर शीघ्र आकर्षित होता है। इस आकर्षण में फंसा हुआ मनुष्य विवेकहीन हो जाता है। विवेकहीन मनुष्य ही मनुष्य होता हुआ भी मनुष्य नहीं रह जाता है। उसका शरीर मात्र मानव का होता है किन्तु उसके समस्त क्रिया कलाप अमानवीय हो जाते हैं। उस पर काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इन षड् रिपुओं का अधिकार हो जाता है। फिर वह पूर्ण तया स्वार्थवृत्ति में आकण्ठ निमग्न होता है। स्वार्थवृत्ति का विकास, मानव का विकास मानव का पतन—घोर पतन है।

इस स्वार्थवृत्ति से ऊपर उठने के लिए ही तो मनुष्य शरीर मिला है। महाभारतकार लिखते हैं—

पशवोऽपि जीवन्ति केवलं स्वोदरम्भरा:।
तस्यैव जीवितं श्लाघ्यं य: परार्थे हि
जीवति ॥

अपना पेट भरने के लिए तो इस ससार में पशु भी जीवित रहते हैं किन्तु उसी का जीवन प्रशंसनीय होता है जो दूसरों के हित के लिए जीवित रहता है। जीवन का सच्चा आनन्द परहित करने में है दूसरों को प्रसन्न देख स्वयं प्रसन्न होने में है तभी तो भारतीय मनीषियों ने उद्घोष किया है—

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु
निरामया: ॥
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्-
दु:खभाग्भवेत् ॥

कितनी कमनीय कामना है, कैसा भव्य भाव है। जीवन अनायास आनन्द में लीन हो जाता है।

किन्तु प्रश्न है यह सब सर्वसाधारण के लिए कब सुलभ है जब—

'मनुर्भव'

हे मनुष्य ! तू मनुष्य कब बनेगा। तेरा जीवन ही मनुष्य बनने के लिए है अतः तू मनुष्य बन-मनुष्य बन-मनुष्य बन।

(वेदवाणी से साभार)

आर्य समाज की शिक्षण संस्थाएं

ले.—श्री पं. रामनाथ जी सि. विशारद आर्य महोपदेशक
कृष्ण नगर मोरिण्डा

आर्य समाज का मुख्योद्देश्य वैदिक धर्म प्रचार है। वैदिक धर्म प्रचार में दूसरे साधन भी प्रयोग किये जा सकते हैं। यथा कालेज, स्कूल, पाठशालाएं, गुरुकुलादि। स्कूल, कालेज, पाठशालादि, गुरुकुल वैदिक धर्म का प्रचार का बहुत ही उपयोगी साधन है। यदि हमें ही कुछ न सूझे तो दोष कालेजों, स्कूलों, पाठशालाओं, गुरुकुलों का नहीं, हमारा है। घर में एक बढ़िया पौष्टिक औषधि पड़ी हुई। परन्तु हम हैं जिन्हें न उस औषधि के गुणों का पता न प्रयोग का।

संस्थाओं से लाभ

इन संस्थाओं में जो कोर्स पढाया जाता है, वह गवर्नमेंट का है, आर्यसमाज का नियत किया हुआ नहीं है। हमारा भाग तो केवल इतना है कि हम उनमें वैदिक धर्म प्रचार कराएं। यदि हम अपनी संस्थाओं में धर्म शिक्षा देते हैं या धर्म प्रचार करवाते हैं तो आर्य समाज के लिए साधक हैं वरन् बाधक हैं। कोई जनता को सस्था क आगे आर्य वैदिक दयानन्द का बोर्ड लगाकर चौंका दे कि वह संस्था आर्य समाज की है। जो कोर्स सरकारी स्कूलों में पढ़ाया जाता है या अन्य सम्प्रदायक संस्थाओं की ओर से चलाए जा रहे स्कूलों में पढाया जाता है वही यहां पढ़ाया जाता है फिर यह संस्थाएं आर्य समाज की कैसे हुई? यह मेरी समझ से बाहर की बात है। जब हमने आर्य समाज के भवन स्कूलो कालेजों और पाठशालाओं के लिए प्रयोग किए हैं आगे आर्य वैदिक दयानन्द का बोर्ड भी लगाया है तो कम से कम हम इन बोर्डों का तो कुछ ध्यान रखें। आर्यों का मन, वचन, कर्म एक होता है दो नहीं। बोर्ड लगाया है तो सीधी तरह आर्य शिक्षण संस्थाएं बनाएं। यह कैसे बने, इसके लिए कुछ सुझाव इन सस्थाओं के सचालकों की पवित्र सेवा में उपस्थित करता हूं। आप इन सुझावों को ध्यान से पढने की कृपा करें और क्रियात्मिक रूप देने की कृपा करें।

सुझाव

1. संस्थाओं में धर्म शिक्षा अवश्य ही पढाई जानी चाहिए यदि आपने किसी शास्त्री महोदय को अध्यापक के रूप में रखा हुआ है तो यह कार्य उनके जिम्मे नहीं होना चाहिए। वह अध्यापक है, वह परीक्षा परिणाम का जिम्मेदार है। आप की धर्म शिक्षा का नहीं। इसके लिए एक ऐसा मजा हुआ उपदेशक होना चाहिए जो वैदिक धर्म के सिद्धान्तों को छात्रों और छात्राओं के हृदयों पर लिखे। हमारी संस्थाओ में से जितने छात्र-छात्राएं पढ़कर निकलें। 100 प्रतिशत वैदिक धर्मी बनकर निकलें। यह जिम्मेदारी वैदिक धर्म शिक्षक की है।

प्र.—ऐसे धर्म शिक्षक हैं नहीं, कहां से आएंगे?

उ.—यदि आपके चार सुपुत्र हैं तो एक को उपदेशक अवश्य बनाएं। यदि तीन हैं तो भी एक को उपदेशक बनाएं, यदि आर्य समाज के साथ प्रेम है, सुपुत्र आपके दो हैं तो भी एक को उपदेशक बनाएं। फिर आप देखेंगे कि उपदेशकों की कमी न रहेगी। मैंने तो एक स्कूल कालेज के लिए एक ही धर्म शिक्षा लिखा है आप कई सस्थाओं के आगे लगाए बोर्ड को सार्थक कर सकते हैं।

2. सस्थाओं में प्रचार इतना आसान है कि कुछ भी नहीं करना पड़ता और प्रचार हो जाता है आप आर्य समाज में प्रचार करवाते हैं पहले मुनादी करवानी पड़ती है पर यहां मुनादी करवाने की आवश्यकता नहीं है। बच्चों को सूचना दे देनी ही पर्याप्त है।

3. आर्य समाज में प्रचार के लिए विज्ञापन छपवा कर दीवारों पर लगाने पड़ते हैं और बाटने पड़ते हैं। स्कूलों में विज्ञापन छपवाने की आवश्यकता नहीं है न दीवार पर लगाने की आवश्यकता है बांटने की।

4. आर्य समाज में प्रचार के लिए दरियां बिछानी पड़ती हैं, लाऊडस्पीकर का प्रबन्ध भी करना पड़ता है। स्कूलों, कालेजो में न दरियां बिछाने की आवश्यकता न लाऊडस्पीकर के प्रबन्ध की।

आर्य समाज में प्रचार के लिए आए श्रोता जब जी में आए उठकर जा सकते हैं यहां उठकर किसी ने नहीं जाना, पास अध्यापक अध्यापिकाएं हैं।

5. जब सारे स्कूल के बच्चे बैठे होंगे तो बोलने के लिए वक्ता का मन भी प्रसन्न होता है और वह अच्छी से अच्छी बात बताने का यत्न करता है।

, यह काम उन महानुभावों का है जो इन संस्थाओं को चला रहे है परन्तु अध्यापक और अध्यापिकाएं परीक्षा परिणाम की जिम्मेदार हैं धर्म शिक्षा की नहीं। यदि हम इन सुझावों पर आचरण कर सकते हैं तो यह हमारी संस्थाएं आर्यसमाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं वरन् इनसे जो हानियां हो रही हैं वह भी प्रत्यक्ष ही हैं इन संस्थाओं के पदों के लिए लड़ाईयां होतीहैं जिससे आर्य समाज का नाम बदनाम होता है। गैर आर्य समाजी धनी अधिकारी बन जाते हैं और बनाए जाते हैं। कई स्थानों पर किसी अतिथि के ठहरने के लिए भी स्थान नहीं है मन्दिर की पवित्रता समाप्त है यज्ञशालाओं पर जूतों समेत बच्चे कूदते हैं। रविवार को झाड़ू देकर कुछ आर्य पुरुष स्वाहा, स्वाहा करके चले जाते हैं। क्या इस प्रकार आर्य समाज का मिशन पूरा हो जाएगा। होना तो यह चाहिए कि आर्य समाज के अधीन संस्थाएं चलें पर यहां स्कूलों के अधीन आर्य समाजें हैं।

स्कूल तो महर्षि दयानन्द जी महाराज ने भी अपने काल में खोले थे यथा—

1927 बिक्रमी के अन्त में फर्रुखाबाद में पधार कर पन्नीलाल सेठ जिसने एक शिवालय बनवाया था। वहां मूर्ति की स्थापना करना चाहता था। स्वामी जी के प्रचार से प्रभावित होकर पाठशाला की स्थापना कर दी। पहले पच्चास विद्यार्थी थे। लाला दुर्गादास विद्यार्थियों को खाना, पन्नीलाल अध्यापक को 30 रुपए वेतन देते थे यह पाठशाला सात वर्ष रही।

2, दूसरी पाठशाला कास गंज में 1927 में स्थापित हुई। लाला गिरधारीलाल 17 रुपए मासिक देते थे। लोग ब्याह-शादी में भी सहायता किया करते थे।

3. तीसरी पाठशाला मिरजापुर में इसी साल खोली, 100 रुपये लोग देते थे। यह पाठशाला तीन साल रही।

4. चौथी पाठशाला छलेसर में ठाकुर मुकन्द सिंह रईस की सहायता से 6 साल रही।

5. पांचवीं पाठशाला 1930 में बनारस में खोली, अध्यापक वेदोक्त शिक्षा नहीं देता था, कहता था कि इससे रोजी में बाधा आती है। पाठशालाओं में सन्ध्या पढाकर दाखल किया जाता था। अष्टाध्यायी महाभाष्य, मनुस्मृति और वेदोक्त ग्रन्थों की शिक्षा दी जाती थी। जो सन्ध्या न करे उसको रोटी नहीं मिलती थी। शाम की सन्ध्या के पश्चात् मिलती थी। उसकी निगरानी की जाती थी दूसरी जगह न खा ले। इन पाठशालाओं से श्री पं, भीमसेन जी, पं. देवदत्त और पं. ज्वाला दत्त निकले। पाठशालाओं के खोलने का उद्देश्य पूरा न होता देखकर पाठशालाओं को बन्द कर दिया। हमारी पाठशालाओं में सारे अध्यापक, अध्यापिकाएं आर्य समाजी होने चाहिएं, जो नहीं है, फिर आर्य समाजी अध्यापक हो भी उसको वैसे ही नहीं रखते। मेरा एक सुपुत्र श्री सत्यपाल जी एम. ए, बी. एड, हैं, उसके लिए मैंने बीसियों स्कूलों के अधिकारियों से बात की, किसी ने नहीं रखा। अब वह एक डी, ए, वी, हायर सैकेण्डरी स्कूल में पढ़ाता है। पिछले वर्ष उसे स्कूल की ओर से प्रशंसा पत्र मिला कि इसका कार्य सन्तोषजनक है, सरकार की नीति एक ही है। चूंकि सरकार ग्रांट देती है यदि हम अपने तौर से इनमें धर्म प्रचार कर सकें तो लाभदायक है वरन् यह सरकार को सहयोग है। इन संस्थाओं के कारण प्रचार विभाग बन्द हो गया। हमारा उद्देश्य तो 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' है। ग्रामों में जो आर्य समाजें पहले आर्य पुरुषों ने बनाई, वह बन्द हो गई मन्दिर खड़े हैं उनको सफेदी कराने वाला भी कोई नहीं रहा। स्कूलों, कालेजों, पाठशालाओं में कुछ हो सकता था। वह भी नहीं हुआ। प्रत्येक स्कूल कम से कम 100 रुपये मासिक भी व्यय धर्म प्रचार पर करें। चार व्याख्यान वैदिक सिद्धान्तों पर महीने में करवाए तो भी कुछ बन सकता है वर्ष भर में 52 व्याख्यान एक स्कूल में हों तो बहुत कुछ काम हो सकता है। तोते की तरह सन्ध्या-हवन गायत्री मन्त्र रटवाकर दिखा दिया जाता है क्या स्कूल का कोई बालक बालिका समाज में आते हैं? नहीं आते तो रटवाए हुए हैं हृदयों पर नहीं लिखे हुए हैं लिखे हुए होते तो आर्य समाज में अवश्य आते। यह स्कूल के बच्चों की परीक्षा है।

—

सम्पादकीय—

आर्य समाज कुछ त्याग मांगता है-2

इसी क्रम के पिछले लेख में मैंने लिखा था कि आर्य समाज को आज दो चीजों की बहुत अधिक आवश्यकता है। एक धन की दूसरी समय की। जब तक हम इन दोनों के लिए त्याग की भावना से कार्य न करेंगे तो आर्य समाज आगे नहीं बढ़ सकता। कई बार यह प्रश्न भी किया जाता है कि आर्य समाज की गाड़ी रुक क्यों गई है? इसका उत्तर बहुत स्पष्ट है वह यह कि आज आर्य समाज में उन निष्ठावान् व्यक्तियों का अभाव हो रहा है जो इसके लिए तन-मन-धन सब कुछ देने को तैयार हों। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के विषय में कहा जाता है कि जब उन्होंने गुरुकुल प्रारम्भ किया था तो जालन्धर में उनकी जो कोठी थी वह भी उन्होंने दे दी थी। और अपने दोनों सुपुत्रों को लेकर उन्होंने गुरुकुल चलाया था। आज स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसा कोई व्यक्ति मिलना कठिन है फिर भी आर्य समाज में कई व्यक्ति हैं जो उसके लिए दिन-रात काम करते हैं परन्तु उनकी संख्या दिन-प्रतिदिन कम हो रही है। इसीलिए मैं कह रहा हूं कि यदि आर्य समाज को बचाना है तो हमें दो प्रकार का त्याग अवश्य करना पड़ेगा। धन के त्याग से मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि महात्मा मुन्शीराम जी की तरह हमारे पास जो कुछ भी है वह सब हम आर्य समाज को दे दें। हमारे अन्दर त्याग की वह भावना अभी नहीं आई जो महात्मा मुन्शीराम जी में थी। परन्तु यदि हमें आर्य समाज में निष्ठा है और हम चाहते हैं कि यह एक अत्यन्त शक्तिशाली संगठन बन जाए तो इसके लिए हमें कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा। केवल बातों से ही अब काम न चलेगा। हमें एक क्रियात्मिक आन्दोलन प्रारम्भ करना चाहिए। धन और समय के लिए त्याग की भावना प्रत्येक आर्य समाजी के मन में पैदा करनी चाहिए।

धन का त्याग तो कोई बहुत बड़ा त्याग नहीं है। आर्य समाज के नियम जो कुछ कहते हैं हम यदि उनके अनुसार ही अपना आचरण बनाएं फिर भी आर्य समाज की कुछ सेवा हो जाती है। नियमों के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आय का शतांश आर्य समाज को देना चाहिए। आय का शतांश कोई बहुत बड़ी राशि नहीं है फिर भी मैंने देखा कि लोग नहीं देते। जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन होता है उस समय प्रत्येक आर्य समाज को अपने सदस्यों के विषय में सभा को यह जानकारी देनी पड़ती है कि किस सदस्य की कितनी आय है और उसका शतांश क्या है? हमने देखा कि बहुत बड़ी संख्या ने अपना वार्षिक शुल्क 12 रुपये दिखाया होता है जिसका अर्थ है एक रुपया प्रति मास। क्या आज कल आर्य समाज के सदस्यों की आय इतनी थोड़ी है कि वह सारे वर्ष में आर्य समाज को केवल 12 रुपये ही दे सकते हैं। कोई व्यक्ति ईमानदारी से कह सकता है कि क्या ऐसा करना ठीक है? इससे अधिक शोचनीय और निन्दनीय प्रवृत्ति और क्या हो सकती है। परन्तु आज आर्य समाज में यह हो रहा है। दूसरी तरफ हम सिखों को देखते हैं। मैं सब के विषय में तो नहीं कह सकता, परन्तु बड़ी भारी संख्या में वह अपनी आय का दसवां भाग अपने गुरुद्वारों को देते हैं। कई तो इससे भी अधिक देते हैं। यही कारण है कि जगह 2 गुरुद्वारों के भव्य भवन खड़े हो रहे हैं। हमारी स्थिति यह है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अपना नया भवन बनवा रही है उसकी यज्ञशाला के लिए हमें जितना धन चाहिए वह भी नहीं मिल रहा। इसलिए जब तक आर्य समाजी अपनी आर्य समाज के लिए कुछ त्याग करना न सीखेंगे तब तक आर्य समाज आगे नहीं बढ़ सकता।

दूसरा त्याग मैंने समय का बताया है। यदि हम से प्रत्येक यह संकल्प कर लें, कि उसने कम से कम आधा घण्टा प्रतिदिन आर्य समाज की सेवा में लगाना है तो फिर भी बहुत कुछ हो सकता है। जो व्यक्ति इससे अधिक समय दे सकते हैं वह अधिक दें, परन्तु यदि किसी कारण से अधिक समय नहीं दे सकते तो कम से कम आधा घण्टा तो प्रतिदिन आर्य समाज की सेवा में लगाना ही चाहिए। उसके भी कई रूप हो सकते हैं और कुछ न कर सकें तो आधा घण्टा अपने आर्य समाज मन्दिर में जाकर उसकी सफाई कर दें। उसमें भी आवश्यक नहीं कि झाड़ू लेकर मिट्टी ही निकाली जाए। आर्य समाज में जो यज्ञशाला है और जहां न हो वहां भी यज्ञ के लिए जिन 2 चीजों की आवश्यकता होती है उनकी सफाई करके प्रतिदिन यज्ञ की तैयारी करें। यदि स्वयं यज्ञ करा सकें तो और भी अच्छा है।

दूसरा काम जो प्रत्येक आर्यसमाजी कर सकते हैं वह साहित्य प्रचार है जो स्वयं कुछ लिख सकते हैं वह स्वयं लिखें, जो स्वयं नहीं लिख सकते वह प्रकाशित साहित्य का प्रचार तो कर ही सकते हैं। एक बहुत ही छोटा-सा काम है जो एक प्रकार से बहुत बड़ा भी है वह मैं आर्य जनता के सामने रखना चाहता हूं। मैं समझता हूं कि आर्य समाज के नियमों का इतना प्रचार नहीं हो रहा, जितना होना चाहिए। जब हम साधारण व्यक्तियों के सामने वेद, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और इस प्रकार के बड़े-2 ग्रन्थ साधारण व्यक्तियों के आगे रखते हैं तो वह उन्हें देखकर घबरा जाते हैं। इसलिए उन्हें पढ़ते नहीं और इस प्रकार गाड़ी आगे नहीं चलती। हम यदि पहले आर्य समाज के दस नियम उन लोगों को पढ़ने के लिए दें तो मेरा विश्वास है कि वह उनसे अवश्य ही प्रभावित होंगे। इन नियमों में कोई भी बात ऐसी नहीं जिस पर किसी को आपत्ति हो सके। जब एक व्यक्ति आर्य समाज के 10 नियमों को पढ़ लेगा तो उसके पश्चात् वह यह जानने का प्रयास करेगा कि आर्य समाज क्या है? इस विषय में हमें बड़े 2 ग्रन्थ लोगों के सामने पढ़ने के लिए नहीं रखने चाहिएं। छोटे-छोटे ट्रैक्ट प्रकाशित करने चाहिएं। लोग बड़ी 2 किताबें नहीं पढ़ते। छोटे 2 ट्रैक्ट पढ़ लेते हैं। आज कल पुस्तकों का मूल्य भी बहुत बढ़ता जा रहा है इसलिए हमें छोटे ट्रैक्टों की छपाई की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। इसके लिए भी समय की आवश्यकता है। जो अपने आपको इस योग्य समझते हैं वह इसके लिए समय दे सकते हैं उन्हें अवश्य समय देना चाहिए। आर्य समाज की सेवा के लिए समय देने का ढंग यह भी है कि अपने 2 क्षेत्र में जो बूढ़े लोग हैं; निर्धन हैं, अपाहज हैं, बीमार हैं, उनकी हम यदि सेवा न भी कर सकें उनसे जाकर यदि एक बार यही पूछ लिया जाए कि उन्हें कोई आवश्यकता तो नहीं और जहां तक सम्भव हो सके हम उसे पूरा कर दें तो यह एक बहुत बड़ी बात है और इसके द्वारा भी आर्यसमाज की सेवा हो सकती है ईसाईयों ने अपने धर्म प्रचार का यही रास्ता व ढंग अपनाया है वह गरीबों की बस्तियों में चले जाते हैं, वहां उन्हें कपड़ा देते हैं, दवाई देते हैं। कुछ पढ़ने-पढ़ाने के लिए किताबें देते हैं और जहां आवश्यकता हो आर्थिक सहायता भी देते हैं। जब तक आर्य समाज प्रचार की इस प्रणाली को नहीं अपनाता, तब तक उसका विस्तार नहीं हो सकता। वह युग समाप्त हो चुका है जब बड़े 2 उत्सव हुआ करते थे और उनमें बड़े विद्वानों, पण्डितों और संन्यासियों के ओजस्वी भाषण हुआ करते थे आज न तो उस स्तर के हमारे पास व्याख्याता ही हैं न हमारी यह स्थिति है कि हम उस प्रकार के बड़े 2 उत्सव कर सकें, जो कभी लाहौर जैसे नगरों में हुआ करते थे। इसलिए हमको नया रास्ता ढूंढना पड़ेगा। मैंने ऊपर के लेख में उसकी तरफ संकेत भी किया है।

मेरे कहने का अभिप्राय: केवल यह है कि केवल बातों से अब आर्य समाज आगे नहीं बढ़ सकता। यह कुछ त्याग मांगता है और दान मांगता है विशेषकर धन और समय का। किसी भी व्यक्ति के विषय में यह कहना कि तुम यह दो और तुम वह दो, तो उसका कोई लाभ नहीं होता। लोग वही कुछ देते हैं जो उनका दिल कहता है। इसलिए हमें अपने आपको इसके लिए तैयार करना चाहिए कि हम यह समझ सकें कि आर्य समाज हमसे कुछ न कुछ मांगता है। उसे हम कहां तक और कैसे दे सकते हैं इसका अन्तिम निर्णय तो हमने स्वयं ही करना है वह उसी स्थिति में सम्भव है यदि हम उसके विषय में सोचना प्रारम्भ करें। अब समय आ गया है कि प्रत्येक आर्य समाजी को यह सोचना चाहिए कि वह आर्य समाज के लिए क्या त्याग कर सकता है। जो जितना और जिस भी रूप में कर सकता है उसे करना चाहिए।

—वीरेन्द्र

महर्षि दयानन्दनिर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला

आर्य समाज-उपलब्धियां, सीमाएं और अपेक्षाएं दयानन्द सरस्वती के विचार—समय की कसौटी पर

ले.—डा. भवानीलाल जी भारतीय आचार्य व अध्यक्ष दयानन्द चेयर पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

(गतांक से आगे)

आर्य समाज ने नारी जागरण के क्षेत्र में बहुत मूल्यावान् कार्य किया है। उस युग की कल्पना कीजिए जबकि नारी पुरुष समाज द्वारा लांछना, प्रताड़ना, शोषण तथा अपमान का ही पात्र समझी जाती थी। समान अधिकार दिए जाने की बात तो दूर रही, घर में उसका रहना भी अशुभ एवं अमंगल का सूचक माना जाता था। कन्याओं का जन्म होते ही उनका बध कर दिया जाता था और उधर विधवा नारी का दर्शन ही अकल्याण का प्रतीक बन गया था। ऐसी स्थिति में नारी के सर्वतोमुखी कल्याण के लिए प्रयास करना तथा उसमें सफलता पा लेना आर्य समाज की एक महती उपलब्धि ही कही जाएगी। आर्य समाज ने नारी के उत्थान के लिए जो कार्यक्रम बनाया उसमें वैदिक और उपनिषद्कालीन नारी के आदर्श को सामने रखा गया था। आर्य समाज की यह मान्यता रही है कि अत्यन्त पुरातन काल में नारी को महत्वपूर्ण स्थिति प्राप्त रही और वह समाज के सभी वर्गों के आदर तथा सम्मान की पात्र थी। मनुस्मृति का वह श्लोक प्रायः इस सन्दर्भ में उद्धृत किया जाता है जिसमें यह कहा गया है कि जहां नारियों की पूजा—अर्थात् सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं। यह सत्य है कि मध्यकालीन स्मृति ग्रन्थों तथा धर्म शास्त्र के निबन्ध ग्रन्थों में नारी के पद की वह गुरुता और महत्ता सुरक्षित नहीं रह सकी जो उसे वैदिक काल में प्राप्त थी। तथापि आर्य समाज का यह प्रयत्न रहा कि वह नारी को उसके गौरवपूर्ण पद पर पुनः प्रतिष्ठित करे और समाज में उसे आदर का स्थान दिलाए।

इसी सन्दर्भ में हमें आर्य समाज द्वारा किए गए सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के उस कार्य का भी जायजा लेना होगा जिसके कारण नारी का शोषण अपमान तथा उत्पीड़न बन्द हो सका है। इस प्रसंग में बाल-विवाह का उन्मूलन, वृद्ध एवं अनमेल विवाहों के विरोध में जनमानस को प्रबुद्ध करना पर्दे की प्रथा का बहिष्कार, नारी शिक्षा को प्रोत्साहित करना, विधवाओं के पुनर्विवाह को शास्त्र सम्मत ठहराना, दहेज तथा विवाहों में अपव्यय आदि पर रोक लगाने आदि कार्यों को लिया जा सकता है।

दलितोद्धार तथा अस्पृश्यता का निवारण आर्य समाज की सामाजिक क्रान्ति के ध्वजवाहक रहे है। आर्य समाज मानव समुदाय की एकता का पक्षपोषक रहा है। उसकी दृष्टि में जन्म- रंग, प्रान्त, देश लिंग आदि के आधार पर भेदभाव की जो रेखाएं उभर आई हैं, वे सर्वथा कृत्रिम हैं तथा मानव समाज की उन्नति में बाधक भी हैं। इसी दृष्टि बिन्दु को सामने रखकर आर्य समाज ने अस्पृश्यता की भावना को दूर करने तथा दलित एवं अछूत समझी जाने वाली जातियों के उद्धार का कार्यक्रम बनाया। कालान्तर में देश के स्वतन्त्रता प्राप्त करने तथा भारत के संविधान में देश के सभी नागरिकों को समान अधिकार दिए जाने परिणाम के स्वरूप पठित वर्ग में अस्पृश्यता तथा पारस्परिक भेदभाव की बुराई कुछ सीमा तक कम तो हुई किन्तु कट्टर एवं संकीर्ण विचारों के लोगों में से इस विकृति को सर्वथा दूर करना सम्भव नहीं हो सका। तथापि आर्य समाज के एतद्-विषयक प्रयत्नों का महत्व कम नहीं होता। आर्य समाज ने आर्थिक अथवा राजनैतिक संरक्षण देकर दलित जातियों को यथा स्थिति में रखने का कभी समर्थन नहीं किया। उसकी तो यह धारणा रही है प्रत्येक वर्ग को शिक्षा, संस्कार तथा सदाचार की दृष्टि से उन्नत बनने का अवसर मिलना ही चाहिए। इस शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में दलित जातियों में पाई जाने वाली अनेक कुरीतियों का उन्मूलन करने के लिए आर्य समाज ने श्लाघनीय प्रयास किया था। इसी का यह परिणाम हुआ कि इस वर्ग के अनेक बालक आर्य समाज द्वारा संचालित गुरुकुलों में अध्ययनार्थ प्रविष्ट हुए। वहां से अपना अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् उन्होंने अपना जीवन जिस ढंग से व्यतीत किया उससे यह सिद्ध हो गया कि आर्य-समाज जात-पात का भेदभाव किए बिना प्रत्येक बालक को सदाचारी, सुशिक्षित तथा संस्कारशील बनाने के लिए कृत संकल्प है। इस प्रकार भारतीय समाज को विषमता, पार्थक्य तथा भेदभाव के वात्याचक्र से मुक्त कर स्वतन्त्रता, समता तथा बन्धुत्व का स्वस्थ वातावरण प्रदान करना आर्य समाज का प्रमुख लक्ष्य रहा है।

यहां तक हमने आर्य समाज द्वारा धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में किए गए क्रान्तिकारी कार्यों का मूल्यांकन करने का प्रयास किया। परन्तु यह ध्यान रखना होगा कि आर्य समाज का मानव जीवन के प्रति दृष्टिकोण समग्रता का है। उसने धर्म दर्शन और अध्यात्म की ही भान्ति सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में भी स्वस्थ चिन्तन प्रदान किया है। आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने विदेशियों द्वारा किए जाने वाले देश के आर्थिक शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने पदे-पदे यह अनुभव किया था कि जब तक परकीय शासन समाप्त नहीं हो जाता तब तक स्वदेशवासियों को न तो भर पेट खाने के लिए रोटी मिलेगी और न वे अपनी उन्नति ही कर पाएंगे। इसी दृष्टि से स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण में शासकों द्वारा लागू किए गए उन कानूनों की कठोर आलोचना की है जो इस देश के दरिद्र वर्ग का शोषण करते हैं। नमक उत्पादन पर लगाए गए कर, वनों में पैदा होने वाली घास, लकड़ी तथा अन्य वस्तुओं को वहां से लाकर बेचने वाले गरीब लकड़हारों पर लगाए गए कर, अदालतों में लागू की गई स्टाम्प ड्यूटी आदि के बारे में स्वामी जी ने अत्यन्त प्रभावोत्पादक ढंग से अपने विचार व्यक्त किए हैं तथा शासक वर्ग से अपील की है कि वह दरिद्र वर्ग का शोषण बन्द करे। उन्होंने कृषि कर्म की प्रशंसा करते हुए किसान को राजाओं का भी अन्नदाता बताया और श्रमिक वर्ग के उत्थान को सर्वोपरि महत्व प्रदान किया।

गोरक्षा तथा अन्य उपयोगी पशुओं के संरक्षण संवर्धन को वे देश की आर्थिक उन्नति का एक सुदृढ़ उपाय मानते थे। गोरक्षा के प्रश्न को उन्होंने विशुद्ध आर्थिक दृष्टिकोण से ही देखा था। भावुकता का किञ्चित मात्र भी आश्रय लिए बिना उन्होंने निर्विवाद रूप से सिद्ध कर दिया कि गाय की रक्षा तथा गोधन की वृद्धि देश की आर्थिक उन्नति की रीढ़ है। गोधन का विनाश राष्ट्र का विनाश है। गोरक्षा दयानन्द प्रतिपादित नीति का अनुसरण करते हुए कालान्तर में आर्य समाज ने गोसंवर्धन तथा गोसंरक्षण की अनेक महत्वाकांक्षी योजनाएं क्रियान्वित की। यह एक विडम्बना ही थी कि भारत के संविधान में, गो आदि उपयोगी पशुओं की रक्षा को सुनिश्चित बनाने के लिए विभिन्न धाराओं का समावेश किये जाने पर भी कतिपय कारणों से गोवंश का उत्तरोत्तर ह्रास ही होता गया। परिवर्तित परिस्थितियों में इस समस्या का हल मात्र आन्दोलन चलाने से होने वाला नहीं है। विशुद्ध आर्थिक आधार पर गोरक्षा के महत्व को प्रतिपादित करने से ही इस समस्या में निहित साम्प्रदायिकता की मनोवृत्ति का उन्मूलन किया जा सकता है। स्वामी दयानन्द को भी गोरक्षा का आर्थिक पहलू ही वजनदार प्रतीत हुआ था।

प्रायः यह कहा जाता है कि आर्य समाज ने धर्म एवं समाज के क्षेत्रों में तो यत्किञ्चित कार्य किया है परन्तु देश को द्रुत गति से समुन्नत बनाने तथा देशवासियों के समक्ष उत्पन्न आर्थिक कठिनाईयों का सन्तोषपूर्ण समाधान निकालना उसके वश के बाहर है। इस कथन में आंशिक सत्यता तो हो सकती है, किन्तु पूर्ण सत्यता नहीं। प्रथम तो आर्य समाज का यह दृष्टिकोण रहा है कि भारत का प्रमुख हिन्दू समाज यदि अपनी धार्मिक विकृतियों को छोड़कर धर्म के स्वस्थ और लोकोन्नति में सहायक रूप को समझ लेता है तथा तदनुकूल आचरण करने के लिए तत्पर हो जाता है तो उसकी लौकिक एवं आर्थिक उन्नति भी सुनिश्चित है। इसी प्रकार उसकी यह भी धारणा है कि सामाजिक दृष्टि से सुसंगठित हुए तथा सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन किये बिना समाज के आर्थिक विकास का आधार ही तैयार नहीं होता। (क्रमशः)

डी.ए.वी. महा-वट वृक्ष और महात्मा हंसराज जी

ले.—श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार शान्ति सदन
सैन्ट्रल टाऊन जालन्धर

मेरे एक मित्र हैं। पिछले सप्ताह वे मुझे मिले। उन्होंने मुझे एक समाचार दिया। मुझे बड़ा अचम्भा हुआ। उन्होंने बताया कि वे डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल में अपने चार से साढ़े चार वर्ष के बच्चे को प्रवेश के लिए ले गए थे। उनसे 1200 रुपए प्रवेश शुल्क मांगा गया। जिसमें 500 रुपए चन्दा भी था। मुझे आश्चर्य मिश्रित हर्ष हुआ। यदि ऐसे उच्चकोटि के स्कूल भारत में हैं तो फिर किसी को बच्चों को इंगलैंड भेजने की क्या आवश्यकता है।

उत्सुकता वश मैंने एक और खालसा पब्लिक स्कूल का प्रोस्पेक्टस देखा। उस में कुछ और सूचना मिली। प्रवेश शुल्क लगभग 700 रुपए मासिक शुल्क लगभग 160 रुपए। यदि बोर्डिंग हाऊस में प्रवेश चाहें तो लटर पटर मिला कर लगभग 12 हजार वार्षिक खर्च आएगा।

"आर्य जगत्" के 21-4-85 के म. हंसराज विशेषांक के पृ. 27 तथा 29 के अनुसार ऐसे पब्लिक स्कूलों की संख्या 97 है। इन में आंध्र प्रदेश—3 बिहार-9, चण्डीगढ़-6, दिल्ली-14, हरियाणा-21, हिमाचल-8, जम्मू-काश्मीर-5, पंजाब-24, मध्य प्रदेश-9, उड़ीसा-1, उत्तर प्रदेश-4 तथा बंगाल-1, है।

विशेषांक के ऊपर म. हंसराज जी का भव्य चित्र है।

मेरे मन के पटल पर डी. ए. वी. कालिजों के कुछ यशस्वी प्रिंसिपलों के चित्र आए। जिन को थोड़ा बहुत देखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है। म. हंसराज जी। प. मेहरचन्द जी। ला. आनन्द जी। पं. रलाराम जी। ला. साईंदास जी। पं. कबीर चन्द जी। इन में से सम्भवतः किसी प्रिंसीपल के पास इतनी सामर्थ्य-बल नहीं था कि उनके बच्चे इन स्कूलों में प्रवेश ले पाते। बहुत सम्भव है कि वे अपने बच्चों को इन स्कूलों में भेजना पसन्द भी न करते। इन स्कूलों में प्रारम्भ से शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है तथा (को एजूकेशन) सह शिक्षा है। साथ ही वेशभूषा में क्रिश्चियन स्कूलों का अच्छा अनुकरण है।

फिर ये स्कूल किन के बच्चों के लिए हैं। प्रसिद्ध लेखक श्री खुशवन्त सिंह के लिखा है—(2-3-85 के पंजाब केसरी में) संक्षेप निम्न है—

1- पब्लिक स्कूल सरकारी अनुदान पर नहीं रहता। पब्लिक स्कूल एक चमकेदार नाम है—जैसे भगवां कपड़ा। यह डाल कर कोई भी आदमी सन्त, स्वामी, गुरु या महात्मा की पदवी को पा सकता है।

2- पब्लिक स्कूलों का सिद्धान्त इंगलैंड से लिया गया है। वहां केवल दर्जन भर अच्छे पब्लिक स्कूल हैं। उन की दो विशेषताएं हैं, वे बहुत मंहगे हैं, केवल धनाढ्यों के लिए सुरक्षित हैं। साधारण लोगों के लड़कों को बड़ी हिचकिचाहट के साथ लिया जाता है। उन्हें नीची निगाहों से देखा जाता है।

3- अंग्रेजों ने भारत में इनकी शृंखला चलाई। जैसे मेयो कालिज (अजमेर), सिन्धिया कालिज (ग्वालियर), डेलायस कालेज (इन्दौर) तथा राजकुमार कालेज (राजकोट)। इन में प्रवेश के लिए केवल पैसा ही नहीं, शाही खानदान का होना जरूरी था। जब शाही खानदान समाप्त हुए तो अमीरजादों के लिए बने स्कूलों ने भी यह नाम अपनाए। जैसे सेण्टपाल (दार्जीलिंग)। इनकी विशेषताएं अधिक खर्च कम से कम 1000 रुपए मासिक। अधिक सुविधाएं विशेष वर्दी। महत्वपूर्ण व्यक्तियों के आगे सलामी करने के ढंग आदि।

4- इनकी प्रमुख विशेषता (सनोबरी) बड़े होने का मिथ्या अभिमान-सामान्य जनता से अलगाव अनुभव करना।

केवल आर्य समाज ही नहीं ईसाई, हिन्दू, सिक्ख, सबको पब्लिक स्कूल खोलने का अमित चाव आ गया है। धड़ाधड़ पब्लिक स्कूल खुल रहे हैं। प्रबन्धकों और अध्यापकों के लिए भी आय के साधन हैं और नए अमीरजादों के लिए अभिमान का साधन। आवश्यकता आविष्कार की जननी है।

भारत की स्वतन्त्रता के बाद आर्थिक विषमता बहुत बढ़ी है। अनियन्त्रित बृहद् औद्योगीकरण की नीति ने एक ओर नये अमीरों की कतारें खड़ी की हैं और दूसरी ओर गरीबी का अपार समुद्र। गांव उजड़ रहे हैं। इधर पंजाब के गांवों से तरखाण, लोहार, नाई धोबी ब्राह्मण उजड़ गए। इनके धन्धे नष्ट हो गए। सब शहरों की ओर भाग रहे हैं। जो जमींदार गावों में रह गए हैं वे भी विषमता के शिकार हैं। 30-4-85 के पंजाब केसरी में श्री इन्द्रकुमार गुजराल ने इसका उल्लेख करते हुए लिखा है कि 10 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों के पास 76 प्रतिशत ग्रामीण सम्पदा का भाग है और निचले स्तर के 70 प्रतिशत परिवारों के पास केवल 6.94 प्रतिशत परिसम्पदा है। यही विषमता शहरों में है। एक ओर नए समृद्ध व्यापारियों नए उद्योगपतियों की कारों के काफिले हैं और दूसरी ओर 10 वर्ष से 40 वर्ष की आयु के दो अढ़ाई लाख गरीब मजदूर पंजाब के बाहर से गाड़ियों की छतों पर बैठकर प्रति वर्ष यहां पहुंच रहे हैं।

उद्योगपतियों तथा व्यापारियों के नए अर्थ पति समूह के साथ 2 राजनीति के दांव-पेचों से बने नए अमीर भ्रष्टाचार के भारत व्याप्त साधनों से सम्पत्ति अर्जित करने वाले तथा कच्छ-गुजरात की सीमा से लेकर पंजाब तक के स्मगलर के समूह में सब नई समृद्ध श्रेणी के लोग हैं। इनकी पंक्ति में धर्म के नाम पर देश-विदेश से चन्दे एकत्र करने वालों के नाम भी सम्मिलित कर लीजिए।

इन सब नये अमीरों की सन्तान को एक मिथ्या अहमन्यता की भावना से भरने की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिये पब्लिक स्कूलों का जाल बिछ रहा है। सब इस बहती गंगा में डुबकी मारने को उत्सुक हैं। पब्लिक स्कूल किसी राष्ट्रीय शिक्षा के परीक्षण का परिणाम नहीं। इनके मूल में कोई धार्मिक या सांस्कृतिक जागृति की भावना भी नहीं, एक व्यापारिक व्यवसाय मात्र है।

मैं तो केवल आर्य समाज के क्षेत्र में इस नए परीक्षण की बात करना चाहता हूं। डी. ए. वी. आन्दोलन एक महान् आन्दोलन है। एक सौ वर्ष इस आन्दोलन के प्रारम्भ को हो चुके हैं। डी. ए. वी. प्रबन्धकर्तृ सभा शतवार्षिकी समारोह मनाने की तैयारी कर रही है। ५ करोड़ रुपया संग्रह करने का संकल्प है। स्वागत समिति के प्रधान श्री बलराम जाखड़ जी के साथ 8 केन्द्रीय मन्त्री 2 संसद सदस्य, 13 जज भूतपूर्व गवर्नर 4 वाईस चांसलर तथा अन्य 60 देश-विदेश के महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। इससे सहज ही अनुमान हो सकता है कि समारोह बहुत महान् होगा।

(क्रमशः)

वार्षिक निर्वाचन

गत दिनों आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना का 1985-86 के लिए साधारण सभा अधिवेशन डा. रामस्वरूप जी की प्रधानता में हुआ, सर्वसम्मति से डा. रामस्वरूप जी को प्रधान चुना गया और अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों के गठन का अधिकार भी प्रधान जी को दिया गया।

संरक्षक—श्री राजाराम सरीन, श्री ओ. पी. पासी, वरिष्ठ उपप्रधान—श्री यशपाल बांगिया, उपप्रधान—प्रि. ओ. पी. टण्डन, श्री सत्यपाल आनन्द, श्री अमरनाथ शर्मा, महामन्त्री—डा. एस. बी. बांगिया, मन्त्री—श्री धर्मपाल भसीन, श्री धनपतराय जी, कोषाध्यक्ष—श्री रामधन जी-उपकोषाध्यक्ष—श्री मास्टर मुरारीलाल जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री हंसराज आर्य- उपपुस्तकाध्यक्ष—श्री देवकरण सैनी, स्टोरकीपर—मास्टर ओम् प्रकाश शर्मा, उपस्टोरकीपर—श्री विजय कुमार मगो, अन्तरंग सदस्य—श्री कुन्दनलाल वैद्य, डा. कृष्णलाल बांगिया, डाक्टर एच. एस. महेश प्रि. बी. पी. महिन्द्रू, मास्टर नारायणदास भाटिया, श्री जगदीश आर्य, श्री बीरेन्द्र सरीन, श्री हरबंसलाल सेठी श्री अमरनाथ छिब्बा श्री अमरनाथ शर्मा आर्य।

—मन्त्री

लोक सभा स्पीकर द्वारा ऋग्वेद का विमोचन

यजुर्वेद के पश्चात् इस वर्ष 14-4-85 को आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् पण्डित आशारामआर्य चण्डीगढ़द्वारा संपादित ऋग्वेद उर्दू के प्रथम भाग का विमोचन आदरणीय लोक सभा अध्यक्ष डाक्टर बलराम जी जाखड़ ने पार्लियामेंट हाऊस के अध्यक्षीय कार्यालय में अपने करकमलों से करते हुए श्री आर्य जी को हार्दिक बधाई भेंट की।

15-5-85 को दूरदर्शन पर रात के 9 बजे समाचार दर्शन में दूरदर्शन दिल्ली ने पंडित जी के इन्टरव्यू को बहुत अच्छी प्रकार से दिखलाया जिसमें आर्य जी ने वेद के मन्त्रों की व्याख्या करते हुए सार्वभौम भ्रातृ भाव और मैत्री के सन्देश में वेदों की महिमा को बड़े सुन्दर और तेजस्वी भाषण में बतलाया दर्शकों का यह कहना है कि गत 5 वर्षों में वेद प्रचार का ऐसा सुन्दर कार्यक्रम दूरदर्शन पर देखने को नहीं मिला।

हवन यज्ञ और वृष्टि विज्ञान

ले.—श्री यशपाल जी आर्य बन्धु, आर्य निवास
चन्द्र नगर मुरादाबाद

हवन यज्ञ का वृष्टि विज्ञान से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। किन्तु दुर्भाग्य यह है कि अन्य प्राचीन विज्ञानों की भान्ति इस विज्ञान को मानव भुला बैठा है। उसे सहसा विश्वास ही नहीं होता कि यज्ञ का वृष्टि से कोई सम्बन्ध है। प्राचीन ऋषि लोग इस तथ्य से भली-भान्ति परिचित है एवं वे इस विज्ञान का भरपूर उपयोग भी करते हैं। किन्तु आज इसकी चर्चा करना भी अटपटा सा लगता है। विशेष करके कोई वेद विद्वान् ऐसा कहे तो लोग उसे अतिशयोक्ति कहने लगते हैं किन्तु उसी बात को यदि कोई वैज्ञानिक कहे तो मानने को मजबूर हो जाते हैं। डा, ए. जोगाराव एम. एस. सी. डी, एस. सी. ने कुछ वर्ष पूर्व मदुरै विश्व-विद्यालय में यज्ञ द्वारा वर्षा के समर्थन में कई व्याख्यान दिए हैं। उन्होंने यह भी परामर्श दिया था कि इस कार्य के लिए स्वतन्त्र प्रयोगशाला स्थापित की जाए। उसमें प्राचीन यज्ञ विज्ञान के ज्ञाता और वर्तमान वैज्ञानिकों का सहयोग हो। वे स्वयं भी उसमें अवैतनिक सहयोग देने के इच्छुक हैं।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में महर्षि लिखते है कि—'जो वायु सुगन्ध्यादि द्रव्य के परमाणुओं से युक्त होम द्वारा आकाश तक के वर्षा जल को शुद्ध कर देता, और उससे वृष्टि भी अधिक होती है क्योंकि होम करके नीचे गर्मी अधिक होने से जल भी ऊपर अधिक चढ़ता है (वेद विषय विचार) इतना ही नहीं इस प्रश्न के उत्तर में कि हवन-यज्ञ से स्वर्ग प्राप्ति अर्थात् विशेष सुख की प्राप्ति कैसे होती है? महर्षि जी लिखते हैं कि हवन से वायु शुद्ध होकर सुवृष्टि होती है उससे शरीर नीरोग और बुद्धि विशुद्ध होती है, विद्या प्राप्त होती है अर्थात् स्वर्ग प्राप्ति होती है। (द्रष्टव्य पूना प्रवचन यज्ञ और संस्कार विषयक सातवां व्याख्यान) फिर विशेष रीति से विशेष प्रकार की वेदी क्यों बनाई जाए? इसके उत्तर में महर्षि जहां अन्य अनेक बातें लिखते हैं वहां इससे वृष्टि की बात को भी स्वीकारते हुए लिखते हैं कि—'विशेष योजना के अनुकूल कोई भी बात किए बिना उससे विशेष कार्य नियमित समय पर प्राप्त नहीं होता। इसी तरह कच्ची ईंटों की चार अंगुल गहरी और सोलह अंगुल ऊंची गणित प्रमाण से वेदी बनाकर उस में नियमित प्रमाण का ही मसाला लेकर प्रमाण से घृतादि का हवन करने से अल्प व्यय में अतिशय उष्णता उत्पन्न होती है और उष्णता के कारण वायु शुद्ध होकर जल परमाणु वायु में उड़ जाते हैं और इस उष्णता के कारण वायु का घर्षण होकर विद्युत उत्पन्न होती है और मेघ मण्डल में गड़गड़ाहट की आवाज उत्पन्न होती है इस प्रकार हवन की विशेष योजना के कारण विशेष उष्णता उत्पन्न होती है। (पूना प्रवचन वही)

महर्षि दयानन्द ने विशेष प्रकार की वेदी बनाने का प्रयोजन स्पष्ट कर दिया है। फिर भी इसके साथ सम्बद्ध कतिपय पाखण्डों का उन्होंने इन शब्दों में प्रबल खण्डन भी कर दिया है। वेदी की एक आध ईंट यदि टेढ़ी बैठी कि मानो यजमान मरता है इत्यादि कहना भी अप्रशस्त और निर्मूल है। यह सब लीला अर्वाचीन लोगों के मतलब सिद्धि की है। (तत्रैव) स्पष्ट है कि महर्षि विशेष प्रकार से वेदी का बनाया जाना भी कम व्यय में सुवृष्टि का विशेष आयोजन मानते हैं।

वेद में भी यज्ञ को 'वर्षवृद्धमसि' (यजु. 1-16) कहा है। फिर निकामे-निकामे न: पर्जन्यो वर्षतु' (यजु. 22-22) वाला प्रसिद्ध मन्त्र इसमें साक्षी है। किन्तु पं, वीरसेन जी वेदश्रमी के शब्दों में—आज आवश्यकता इस बात की है कि वर्षा के लिए 'इममद्य यज्ञं नयताग्ने (यजु. 1-12) इस यज्ञ प्रक्रिया को प्राथमिकता देकर जल-समस्या का हल प्राप्त करें। (द्रष्टव्य वैदिक सम्पदा पृष्ठ 425) दु:ख है कि इस ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जा रहा। आर्य समाज को चाहिए कि वह अपनी इस प्रतिज्ञा अथवा मान्यता को व्यवहारिक रूप से अथवा प्रयोगात्मिक रूप से सिद्ध करके दिखाए। किसी विश्वविद्यालय के प्रा. घोष ने भी अवर्षण होने पर यज्ञ द्वारा वर्षा कराने के लिए पं. वीरसेन जी वेदश्रमी को आमंत्रित करने के लिए शासन को प्रेरणा दी थी। जिसमें वे साथ रहना चाहते थे परन्तु दुर्भाग्य है कि हमारे देश में यज्ञ को एक धार्मिक अनुष्ठान मात्र मानकर उसके वैज्ञानिक स्वरूप को समझने एवं विकसित करने का विचार भी नहीं किया जाता। (द्रष्टव्य जनज्ञान आश्विन 2035 पृष्ठ 26)

पं. वीरसेन जी वेदश्रमी के अतिरिक्त दयानन्द वैदिक शोध पीठ, दयानन्द महा-विद्यालय अजमेर में संस्कृत विभाग के प्रवक्ता डा. कुंवरपाल सिंह जी ने भी इस विषय पर कुछ शोध किया है। अपने एक शोध लेख में वे लिखते हैं कि—वैदिक विज्ञान की विविध उपलब्धियों में वृष्टि विज्ञान का महत्वपूर्ण-स्थान है। हम यह देखते हैं कि वायु मण्डलीय पर्या-वरण में समय-समय पर विशेष परिवर्तन होते रहने के कारण वायु मण्डल पर कुछ ऐसे प्रभाव पड़ते हैं जिसके फलस्वरूप कहीं तो अतिवृष्टि, कहीं अनावृष्टि हो जाती है। अत: सन्तुलित वृष्टि न होने से राष्ट्र के कुछ भाग अकाल की स्थिति में दिखाई पड़ते हैं। परिणाम स्वरूप इन दोनों ही अवस्थाओं में जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है तथा राष्ट्रीय प्रगति अवरुद्ध हो जाती है। यद्यपि विश्व के वैज्ञानिकों द्वारा पर्यावरण शोधन का कार्य किया जा रहा है तथापि विशेष उपलब्धि अभी नहीं हो सकी है. साथ ही पाश्चात्य देशस्थ वैज्ञानिकों ने कृत्रिम वर्षा कराने में कुछ सफलता प्राप्त की है. इस प्रक्रिया में मेघ मण्डल के ऊपर कुछ रासायनिक पदार्थों का छिड़काव करने से कृत्रिम वृष्टि की जाती है, परन्तु इस पद्धति से जो जल उपलब्ध होता है वह रासायनिक पदार्थों से मिश्रित हो जाने से वह सिंचाई के पूर्ण रूप में योग्य नहीं होता। दूसरे इस प्रकार की यह कृत्रिम वृष्टि तभी सम्भव हो सकती है जब मेघ समुदाय की अन्तरिक्ष में विद्यमानता हो तथा वृष्टि कारक गुणों से युक्त हो। यदि अन्तरिक्ष में मेघ मण्डल की विद्य-मानता न हो तो यह वैज्ञानिकों की कृत्रिम प्राय: निष्फल हो जाती है। अत: कृत्रिम वृष्टि कराने के लिए ऐसी पद्धति के अन्वेषण की आवश्यकता है जिसके द्वारा अन्तरिक्ष में यदि मेघ है तो उन्हें बरसाया जा सके। और यदि अन्तरिक्ष मेघों से रहित है तो मेघोत्पत्ति करके वृष्टि कराई जा सके।' (द्रष्टव्य आर्य पुनर्गठन अजमेर पृष्ठ 3)

ऊपर हमने अनावृष्टि की अवस्था में कृत्रिम वर्षा की बात कही है। आज का वैज्ञानिक भले ही कृत्रिम वर्षा कराने में सफल हो गया है किन्तु वह अतिवृष्टि को रोकने में स्वयं को असमर्थ पा रहा है। जबकि अतिवृष्टि भी कम हानिकारक नहीं। हवन यज्ञ की यह विशेषता है कि वह वृष्टि को नियमित करता है। अन्यथा निकामे निकामे न: पर्जन्यो वर्षतु' इस वेद वाक्य का प्रयोजन ही क्या रहा। वेद का यह मन्त्र बता रहा है 'इच्छित अवसरों पर वर्षा कराई जाती है। यदि वर्षा का पर्यावरण की शुद्धि के साथ कोई सम्बन्ध है, जैसाकि डा, कुंवरपाल सिंह के उद्धरण में कहा गया है तो पर्यावरण की शुद्धि में यज्ञ की भूमिका निर्विवाद सिद्ध है। हम आचार्य वागीश जी के इन शब्दों से पूर्णतया सहमत हैं कि भविष्य के तमाम वैज्ञानिक मिलकर बहुत सोच-विचार और अनुसन्धान के बाद जो भी कोई उपाय सोचेंगे उसमें किसी न किसी रूप में अग्नि के साथ प्रदूषण नाशक पदार्थों का संयोग अवश्य सम्मिलित करना पड़ेगा और इस तरह वह अग्निहोत्र का ही बदला हुआ रूप होगा। आवश्यकता इस बात की है कि यज्ञ और वृष्टि विज्ञान पर व्यापक एवं गम्भीर अनुसन्धान हो। यज्ञ को कोरा एक धार्मिक कृत्य या कर्म-काण्ड न समझकर उसके स्वरूप पर अनुसन्धान किया जाना चाहिए।

आर्यसमाज नवांशहर का वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज नवांशहर की साधारण सभा 12-5-85 रविवार के अधिवेशन में प्रदत्त अधिकारों के अनुसार प्रधान श्री वेद प्रकाश सरीन ने निम्नलिखित अन्तरंग सभा का गठन किया—

संरक्षक तथा अन्तरंग सभा के वरिष्ठ सदस्य—श्री प. देवेन्द्र कुमार जी, प्रधान—श्री वेद प्रकाश जी सरीन, उप-प्रधान—श्रीमती कौशल्या मुक्कर, श्री जितेन्द्र भल्ला, व कामरेड मोहनलालजी, मन्त्री—श्री धर्मप्रकाश दत्त जी, उप-मन्त्री—श्रीमती पुष्पा छिब्बा, प्रचार-मन्त्री—श्री राजेन्द्र कुमार प्रेमी, कोषाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती इन्दुमति गौतम, सहायक पुस्तकाध्यक्ष—श्री दीनानाथ ओहरी।

समुदाय सदस्य व 12 प्रतिष्ठित सदस्य चुने गए। सभा में चौधरी बलवीर-सिंह जी के बलिदान पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

—मन्त्री आर्य समाज

आर्यसमाज बस्ती मिट्ठू शास्त्रीनगर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज शास्त्री नगर बस्ती मिट्ठू जालन्धर का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री रामलुभाया नन्दा जी मैनेजर आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ) वरिष्ठ उपप्रधान—श्री नोतनदास जी भाटिया सेवा निवृत तहसीलदार, उप-प्रधान—श्री त्रिलोकचन्द जी, महामन्त्री—श्री मास्टर लालचन्द जी नन्दा, मन्त्री—श्री प्रो डी. डी. अरोड़ा जी एम, एस. सी, प्रचार मन्त्री—प्रो, एम, एल, सेठी, कोषाध्यक्ष—श्री प्रेम भाटिया मालिक गणेश स्पोर्टस, पुस्तकाध्यक्ष—श्री किशोरी-लाल जी भोला, सम्पत्ति निरीक्षक—श्री मा. मोहनलाल जी, लेखा निरीक्षक-प्रेम अरोड़ा।

—

आर्य समाज कठुआ का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज कठुआ का वार्षिक चुनाव 19-5-85 को निम्न प्रकार हुआ-

सरक्षक—श्री रामरत्न जी, श्री भारत भवण जी, श्रीमती लज्जादेवी जी, प्रधान-श्री रूपलाल जी, उपप्रधान—श्री अन्चलसिंह जी, श्रीमती किरणजी, मन्त्री-श्री पंडित अमरनाथ जी, उपमन्त्री--मास्टर देशराज जी, कोषाध्यक्ष--श्री बुईलाल जी, पुस्तकाध्यक्ष-श्री धनीराम शास्त्री जी, स्टोरकीपर--श्री ललित कुमार जी, प्रचार मन्त्री--श्री मास्टर प्रेमनाथ जी, बिल्डिंग इन्चार्ज--श्री अमरनाथ जी मगलूरिया।

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज तिमारपुर दिल्ली का वार्षिक चुनाव 19-5-85 को निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान-श्री भीमसिंह जी, उपप्रधान-श्री जगदीशलाल दुग्गल, श्री ताराचन्द आर्य, मन्त्री--श्री कृष्णदेव, उपमन्त्री--श्री विमल कान्त शर्मा श्री उदयसिंह, कोषाध्यक्ष-श्री देवऋषि. पुस्तकाध्यक्ष--श्री जगत नारायण दीक्षित।

--मन्त्री

वैद्य की आवश्यकता

कादिया मे लेखराम स्मारक मण्डल के लिए एक योग्य आयुर्वेद वैद्य की आवश्यकता है। जो धर्मार्थ सेवा कर सके। यह एक धर्मार्थ ट्रस्ट है। इस विषय मे स्वामी सर्वानन्द जी महाराज दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब) से सम्पर्क करे।

पता -स्वामी सर्वानन्द जी महाराज दयानन्द मठ दीनानगर जि-गुरदासपुर

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

... द्वारा जगद्विजय प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा ... से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

स्व. मिहरचन्द धीमान के प्रति–श्रद्धाँजलि

ले.—श्री शैलेन्द्र बिहारीलाल एम. ए. कलकत्ता

सौम्य सभ्य, सरल शिष्ट
दानी ज्ञानी, नेता विशिष्ट
मृदुता का मूर्त रूप
स्थित प्रज्ञ कर्त्तव्य निष्ठ
सुपठित, स्वाध्यायशील
अध्ययन, चिन्तन मे अनुरक्त
आर्य समाज का सेवक अदम्य
ऋषि दयानन्द का परम भक्त,
उद्योगपति होकर भी
वैभव की न रखी चाह
भीषण कष्ट दुर्दिन में भी
कोसा न भाग्य नही भरी आह
सुख-दुख मे सम रहना ही
है संघर्ष का चरम निचोड
तत्वदर्शी होने में ही
साधको से किया होड
भव्य आकृति, वक्ता ओजस्वी
मनीषी, सेवक, साधक विद्वान्
बंग आर्य प्रतिनिधि सभा का
प्राण था मिहरचन्द धीमान ।

गुरुकुल करतारपुर में अब टाईपिंग शिक्षा भी

आर्य समाज ने जन-जन तक हिन्दी पहुचाने का जो सराहनीय कार्य किया, भारतीयता को जीवित रखने मे उसका महत्वपूर्ण योगदान है। उसी का परिणाम है कि हिन्दी भाषा आज राष्ट्रभाषा के पद को प्राप्त है। यह हम सबके लिए गौरव का विषय है। परन्तु अंग्रेजी के प्रभुत्व के कारण हिन्दी अभी हमारे कार्यालयो में स्थान नही ले पायी। ट्रस्ट की अन्तरग सभा की उत्प्रेरणा तथा सहयोग से श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय ने अक्तूबर 1984 से छात्रो के लिए टकन कला (टाईप) की निःशुल्क व्यवस्था कर प्रशसनीय तथा अनुकरणीय पग उठाया है। इतना ही नही अपितु हमे यह भी विश्वास दिलाया गया कि हमारे गुरुकुल से विद्याधिकारी वा शास्त्री कक्षा उत्तीर्ण छात्रो को जो कि पत्रलेखन कला गणित में विशेष गति रखते हैं। उन्हें अपने औद्योगिक कार्यालयो में स्नातक के समान वेतन तथा सुविधा पर कार्य प्राप्त कराने मे सहयोग दिया जाएगा। हमे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी और सस्कृत प्रेमी उद्योगपति हमारे विद्यार्थियो को अपने कार्यालयों में स्थान देकर ट्रस्ट के इस महान् कार्य में अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

हर्ष का विषय है कि जुलाई 1985 से छात्रों को पुस्तकीपिंग तथा अकाऊंटेंसी सिखाने की भी व्यवस्था की जा रही है। इन सभी कार्यक्रमों से यहां छात्रों का भविष्य उज्ज्वल एवं समुन्नत होगा वहां राष्ट्र की भी महान् सेवा होगी।

सस्कृत, धर्म शिक्षा तथा स्कूलों में पढाये जाने वाले विज्ञान, गणित, अंग्रेजी आदि सभी विषयों के साथ-साथ इन कोर्सों का छात्रों को बहुत लाभ होगा। इस प्रकार इस विद्यालय के छात्र अब स्कूलो में शिक्षक के रूप में कर्मकाण्ड कराने में पुरोहित के रूप में धार्मिक सस्थाओं में प्रचारक के रूप में तो कार्य कर ही सकेंगे, इसके अतिरिक्त सरकारी कार्यालयो में, बैंकों में औद्योगिक सस्थाओं मे टाईपिस्ट के रूप में तथा अकाऊंटेंट के रूप मे भी कार्य कर सकेंगे।

इच्छुक अभिभावक अपने बच्चों को दाखिल कराने के लिए नीचे पते पर तुरन्त सम्पर्क करें। नया प्रवेश 15 जून 1985 से आरम्भ है। छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा 5 पास होना जरूरी है।

प्राचार्य
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत
महाविद्यालय करतारपुर,
जिला—जालन्धर

जुलाई १९८५ से नया सत्र प्रारम्भ

गुरुकुल महाविद्यालय सिराथु इलाहाबाद—से विगत वर्षों से निरन्तर आप के बालकों को वैदिक धार्मिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा, शारीरिक एवं बौद्धिक शिक्षा द्वारा समाज के लिए योग्य नागरिक बनाना ही हमारा लक्ष्य है। गुरुकुल में विश्वविद्यालय की प्रथम श्रेणी से प्रथमा। 6 कक्षा से शास्त्री एम. ए. पर्यन्त अंग्रेजी, विज्ञान, गणित, सस्कृत, सामाजिक विषय के अध्ययन की सुविधा प्राप्त। मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति की भी सुविधा।

15 जुलाई से प्रवेश प्रारम्भ। नियमावली के लिए लिखें या मिलें।

—प्राचार्य डा. रमाशंकर शास्त्री

आर्य समाज हबीब गंज लुधियाना का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

13 मई से 19 मई तक यज्ञ भजनोपदेश होते रहे। 18 मई प्रात. यज्ञ के पश्चात सभा के महोपदेशक प. शिवराज सिंह शास्त्री तथा श्री सीताराम आर्य की भजन मण्डली ने अमृत वर्षा की। 19 मई रविवार प्रात यज्ञ की पूर्णाहुति में सैंकडों स्त्री पुरुषो ने भाग लिया। प्रो. राजेन्द्र कुमार प्रबन्धक आर्य कालेज लुधियाना ने ओम् का झण्डा लहराया। आर. बी. स्कूल के बच्चों ने गीत गाए। श्रीमती सुमित्रा मदान धर्म पत्नी स्व. श्री सरदारीलाल मदान ने गरीब बच्चों को पुस्तकें, कापियां बांटी, सभा के महामन्त्री बहन कमला जी आर्या का हार्दिक स्वागत किया गया और उन्हे आर्य समाज की ओर से वेद प्रचार दशांश तथा आर्य मर्यादा का शुल्क आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द जी भगत ने भेंट किया।

श्री ओम् प्रकाश गुप्ता एम. सी. ए. प. शिवराज सिंह जी शास्त्री, श्री आशानन्द जी आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आज के हालात तथा आर्य समाज के कर्त्तव्य पर प्रकाश डाला। श्री सीताराम जी आर्य की भजनमण्डली ने महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के सम्बन्ध मे गीत गाकर जनता को मुग्ध किया। आर्य समाज का सारा भवन भरा हुआ था। यज्ञ शेष तथा शान्ति पाठ के पश्चात कार्यवाही समाप्त हुई।

—वेद प्रकाश महाजन
मन्त्री आर्य समाज

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज हनुमान रोड दिल्ली के वार्षिक साधारण अधिवेशन में सर्वसम्मति से निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री राममूर्ति कैला, उपप्रधान—श्री सरदारी लाल वर्मा, श्री रतनलाल सहदेव, श्री हंसराज चोपड़ा, मन्त्री—श्री वीरावतीलाल भाटिया, उपमन्त्री—श्री त्रिलोकी नारायण मिश्र, श्री रघुवर दयाल जी, श्री आतिबन्धु भाटिया श्री वीरेश कुमा, कोषाध्यक्ष—श्री बुद्धराम गुप्त, पुस्तकाध्यक्ष—श्री हृदयराम भवानी अधिष्ठाता आर्य वीर दल—श्री राजीव भाटिया।

—वीरावतीलाल भाटिया

टेलीफोन नं. 74250 रजि. नं. पो. जे. एल. 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 11, 10 आषाढ़ सम्वत् 2042, तदनुसार 23 जून 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

वेदामृत—

पुनीत वाणी बोलिए

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत । अत्रा सखाय: सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीनिहिताधि वाचि ॥

ऋ. 10-71-2

सक्तु इव तितउना पुनत: यत्र धीरा: मनसा वाचं अक्रत ।

अत्रा सखाय: सख्यानि जानते भद्रा एषां लक्ष्मी: निहिता अधि वाचि ।

(1) (सक्तु) सत्तु को (इव) जिस प्रकार (तितउना) चलनी (छाननी) से छानते हैं, शोधते हैं।

(2) वैसे ही (यत्र) जहां (धीरा:) धीर जन (वाचं) वाणी को (मनसा) मन से (पुनन्त:) पुनकर शोधकर (अक्रत) उच्चारण किया करते हैं।

(3) (एषां) इनकी (वाचि अधि:) वाणी के ऊपर है (भद्रा लक्ष्मी) भद्रालक्ष्मी) (निहिता) निहित होती है।

(4) (अत्र) यहां सखाय: (मित्र बन) सख्यानि। मित्रताओं को (जानते) जानते हैं, समझते हैं, पहचानते हैं।

सक्तु का प्रयोग यहां उपलक्षण से खाद्य और पेय पदार्थों के लिए हुआ है। चलनी में छानकर पदार्थों का सेवन किया जाता है। सत्तु, आटा, दूध, घी, आदि पदार्थों को चलनी में छानकर सेवन करने से स्वाद तथा रोचकता आ जाती है और खाने में कण्ठ, तालु, जिव्हा, आदि में पीड़ा नहीं होती।

किसी भी पदार्थ का सेवन उसे अच्छी प्रकार शोधकर करना चाहिए। बिना शोधे पदार्थ का सेवन वर्जित है जब उसे अच्छी प्रकार शोधकर पदार्थ का सेवन करते हैं, तो सेवित पदार्थ जहां स्वादु, रोचक और प्रिय प्रतीत होता है, वहां वह सुपच, सुपोषक और स्वास्थ्यप्रद भी सिद्ध होता है। एक-एक कण को बीनकर प्रथम गेहूं के कणों को साफ किया जाता है। जौ के कण प्रथम ओखली में छरकर छाज से पुने जाते हैं। पुनने के पश्चात् गेहूं पीसे जाते हैं। पिसे हुए आटे को फिर चलनी में छाना जाता है। छानकर बूर अलग की जाती है। छाने हुए आटे की शुद्धता के साथ रोटियां बनाई जाती हैं। इस प्रकार बनाई गई रोटियां स्वादु, सुपच और पौष्टिक होती है।

इसी प्रकार जहां धीरजन वाणी को मन से पुन कर उच्चारण करते हैं, वहां इन बोलने वालों की वाणी पर लक्ष्मी निवास करती है। वही मित्र मित्रता को जानते, समझते और पहचानते हैं।

जो नर-नारी अपनी वाणी को अपने मन से शुद्ध और सुशोभित करके शब्दों का उच्चारण करते हैं, वे वीर कहाते हैं, यह बात इस मन्त्र से स्पष्ट ध्वनित हो रही है। मन से वाणी का शोधन और सुशोधन किया जा सकता है, यह संकेत भी इस मन्त्र से मिल रहा है। यह बताने की आवश्यकता नहीं कि शुद्ध और शोभनीय मन के द्वारा ही वाणी का शोधन और सुशोधन हो सकता है, मलिन मन के द्वारा नहीं। अशुद्ध, अशोभनीय मन के द्वारा तो वाणी की मलिनता और अशोभनीयता ही होती है।

अपने मन को पुनकर शुद्ध और शोभनीय बनाना और फिर पुनीत मन से वाणी को शुद्ध व शोभनीय करके सदा पुनीत, पावन और प्रिय वचनों का ही उच्चारण करना कोई सरल साधना नहीं है। यह बड़ी धैर्य साध्य साधना है। यह साधना बड़े तप और संयम की अपेक्षा रखती है। किन्तु मानव और मानवता के हित में यह साधना है नितान्त साधनीय और सर्वथा वाञ्छनीय।

जहां धीर जन अपने मन से अपनी वाणी को छानकर शुद्ध और सुन्दर शब्दों का उच्चारण करते हैं, वहां उनकी वाणी में भद्रा लक्ष्मी अन्तर्निहित हो जाती है। अभ्युदय और नि:श्रेयस लोक और परलोक भौतिक और आत्मिक दोनों प्रकार की सम्पदाओं से युक्त लक्ष्मी को भद्रा लक्ष्मी कहते हैं। लक्ष्मी नाम शोभा और ऐश्वर्य का है। सचमुच जहां धीर जन परस्पर शुद्ध, शिष्ट, शालीन, सुन्दर और समाधानकारक वाणी का प्रयोग करते हैं। उस समाज में उभय सम्पदाओं का सम्पादन होता है। वहां साक्षात् शोभनीयता सुशोभित होती है वहां शोभा और सौन्दर्य का निवास होता है। वहां सुख, शान्ति, आनन्द, उल्लास, हर्ष, विनोद प्रियता और निश्चिन्तता का अवलम्बन होता है।

जहां धीर जन अपने पवित्र मन से वाणी को शोधकर शुद्ध और सुन्दर शब्दों का प्रयोग करते हैं, वहां मित्र जन मित्रता को जानते निर्वाहते हैं और सखियां सखित्व को पहचानती निर्वाहती हैं। शुद्ध और सुन्दर वचनों के प्रयोग से मित्रता और सभ्यता की स्थापना होती है मैत्री भाव बढ़ता है, मित्रता में स्थायित्व आता है। परस्पर की सभ्यता में अभिवृद्धि होती है। जो मित्रता और सभ्यता के तत्व को जानते है, वे धीरजन सतर्कता और सावधानी के साथ सदा परस्पर नपे तुले शुद्ध पवित्र सुन्दर और सुष्ठु शब्दों का प्रयोग करते हैं।

खाद्य और पेय के समान ही वाणी के द्वारा उच्चारित शब्द भी स्वादिष्ट होते हैं। शुद्ध स्निग्ध मन से जिन शब्दों का उच्चारण किया जाता है, वे शब्द हृदयग्राही और बड़े ही स्वादिष्ट होते हैं। कुटिल मन से जिन शब्दों का उच्चारण किया जाता है, वे शब्द अप्रीतिकर और अस्वादिष्ट होते हैं। स्वादिष्ट शब्दों से समाज में पारस्परिकता की वृद्धि होती है। अस्वादिष्ट शब्दों से समाज में पारस्परिकता का विच्छेद होता है। जहां पारस्परिकता होती है, वहां सुखैश्वर्य की वृद्धि होती है और मैत्री सम्बन्ध स्थिर रहते हैं। जहां पारस्परिकता नहीं होती वहां दु:ख दारिद्र्य की बेलें फलती फूलती हैं और शत्रुता तथा वैर-विरोध का फैलाव होता है।

आज प्रत्येक क्षेत्र में वेद के इस सन्देश को पहुंचाने और कार्यान्वित करने कराने की बड़ी आवश्यकता है। प्रत्येक परिवार, समाज और संस्था में यह सन्देश हृदयंगम किया जाना चाहिए। इस शिक्षा के व्यापक व्यवहार से ही सर्वत्र सबके परस्पर के सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण होंगे। इससे वैर-विरोध और कटुता का निराकरण होगी और प्रेम भाव की स्थापना होगी।

आधुनिक समाचार पत्रों तथा सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं के लिए यह एक दिव्य सन्देश है। बड़े बड़े सन्यासी विद्वान् नेता और सम्पादक वाणी की इस वैदिक साधना से राष्ट्र और संसार का बड़ा हित सम्पादन कर सकते हैं। वक्ता जो शब्द बोले और लेखक जो शब्द लिखे अपने शब्दों को मन से शोधकर और नाप तोलकर बोले और लिखे। वे अपने लेखों और भाषणों में सत्य, शालीन, शिष्ट, हित साधक और समाधानकारक शब्दों का ही प्रयोग करें। इसी से सर्वत्र सुव्यवस्था की स्थापना होगी और सबका सब विधि कल्याण होगा।

(सविता से साभार)

डी. ए. वी. महा-वट वृक्ष और महात्मा हंसराज जी

ले.—श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार शान्ति सदन
सैन्ट्रल टाऊन जालन्धर

(गतांक से आगे)

डी. ए. वी. संस्थाओं का विस्तार भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद बहुत हुआ है। राष्ट्रीय सरकार की अनुदान नीति ने लगभग 95 प्रतिशत सहायता की नीति ने शिक्षा संस्थाओं के फैलाव में बहुत सहायता की है। इस समय डी. ए. वी. संस्थाओं में सहस्रों अध्यापक प्राध्यापक तथा लाखों की संख्या में विद्यार्थी होंगे। इसका अभिप्राय यह है कि डी. ए. वी. आन्दोलन के प्रबल साधन द्वारा ऋषि दयानन्द की वैदिक विचार धारा का सम्पर्क लाखों विकसित होते हुए मनों के साथ हो रहा है—अथवा होना चाहिए।

ऐसी महान् उन्नति की अवस्था में दो बातों की ओर बरबस ध्यान जाता है। एक तो इस महान् आन्दोलन की मूल भावनाएं क्या थी और इससे सामान्य जन-समाज को हम कितना अपनी ओर खींच पाए हैं।

मूल भावनाओं के विषय में तो जो उद्देश्य प्रधान श्री ला. लालचन्द जी ने 4 नवम्बर 1883 को इस वैदिक शिक्षा संस्था के प्रारम्भ होने पर रखे, वे ही पर्याप्त होंगे। उन्होंने कहा—

इस संस्था का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय भाषा तथा प्रान्तीय भाषाओं के अध्ययन को बढ़ावा देकर शिक्षित तथा अशिक्षित जनता के भेद को दूर करना होगा। संस्कृत शिक्षा द्वारा वैदिक तथा आध्यात्मिक सत्यों का ज्ञान विस्तार किया जाएगा। नियमित जीवन द्वारा स्थिर तथा प्रबल आदतों के निर्माण पर बल दिया जाएगा। इसके साथ ही अंग्रेजी साहित्य के गम्भीर ज्ञान तथा भौतिक विज्ञानों के अध्ययन द्वारा देश की आर्थिक तथा भौतिक प्रगति को विकसित किया जाएगा।

(म. हंसराज—ले. श्रीराम शर्मा पृष्ठ 19)

1 जून 1886 के स्मरणीय दिन आर्य समाज मन्दिर लाहौर मे दयानन्द एंग्लो वैदिक हाई स्कूल की स्थापना हुई, म. हंसराज जी ने इस कार्य के लिए अपना जीवन अर्पण कर दिया। आर्य जनता में इस बलिदान के लिए अगाध विश्वास और श्रद्धा उत्पन्न हुई। 5 दिन के अन्दर 300 विद्यार्थी प्रविष्ट हुए। 1 जनवरी 1889 तक कालेज की स्थिर निधि में एक लाख पांच हजार चार सौ छः रुपए जमा हो गए।

महात्मा हंसराज जी कौन से आदर्शों से अनुप्राणित थे? डी. ए. वी. आन्दोलन [illegible] भावनाएं चाहते थे?

अपने साथ कालेज तथा स्कूलों में कार्य करने के लिए जो आजीवन सेवक मण्डल उन्होंने तैयार किया। उसके विषय में उनका विचार था—

यह वांछनीय है कि ऐसे व्यक्ति कालेज के अध्यापक मण्डल में हों, जिनके मन में दयानन्द कालेज के आधार भूत आदर्शों तथा आर्य समाज के लिए कार्य करने की प्रबल आकांक्षा हो।

(वही पृष्ठ 53)

इन ही भावनाओं से भरकर उस देव पुरुष ने केवल 47 वर्ष की आयु में कालेज के प्रिंसिपल पद से अवकाश ग्रहण कर जीवन के शेष 57 वर्ष लगातार आर्य समाज की उन्नति के लिए व्यतीत किए। महात्मा हंसराज जी के अपने जीवन में मिथ्या अहंमन्यता का लेशमात्र भी न था। उनका रहन-सहन उनकी वेश-भूषा उन्हें सामान्य जन-जीवन का एक अभिन्न अंग बनाती थी। वे जब कालेज में पढते थे तो श्रेणी से बाहर उर्दू में बात न कर पंजाबी में बातचीत करते थे ताकि शिक्षित विद्यार्थियों मे मिथ्या अलगाव अहम्मन्यता की भावना न उत्पन्न हो। (वही पृष्ठ 8)

इन ही आदर्शों, भावनाओ और प्रेरणाओ के कारण डी. ए. वी. संस्थाएं आर्य समाज के हिन्दू समाज के जीवन का अभिन्न अंग बन गई थीं महात्मा हंसराज जी के जीवन मे भारत-भर में कहीं भी कोई आपत्ति या कष्ट हिन्दू समाज को हुआ, डी' ए. वी. कालेज तथा प्रादेशिक सभा ने उसके निवारण के लिए भरसक प्रयत्न किया। पंजाब में तो जन-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आर्य समाज का वर्चस्व था। अब भी जहां-जहां आर्य संस्थाएं भावना वाले आर्य सज्जनों द्वारा चलाई जा रही हैं, आर्य समाज का सामाजिक जीवन पर बहुत प्रभाव दिखाई देता है। दिल्ली, बम्बई आदि अनेक नगर आर्य संस्थाओं और आर्य समाज के कार्य से प्रभावित दिखाई देते हैं। पर पंजाब में तो जो कि किसी समय आर्य समाज का प्रभाव क्षेत्र रहा है, आर्य समाज जन-जीवन से बुरी तरह अलग-थलग हो गया है।

अभी गत दिनों आर्य समाज विक्रमपुरा के सत्संग में पुराने महोपदेशक पं. खुशीराम जी दु:खी होकर अपने प्रवचन में कह रहे थे कि कभी इसी आर्य समाज के सत्संग में हाल के भरने के बाद आंगन में भी बैचों पर आर्य सज्जन बैठा करते थे। उस दिन सत्संग में केवल 14 सज्जन थे। महात्मा हंसराज जी के जन्म दिवस पर केवल 50-55 व्यक्ति आए। यह अवस्था मैं लगातार तीन वर्षों से देख रहा हूं। जब से मैं टंकारा से अवकाश ग्रहण कर यहां आया।

पिछले तीन वर्षों में पंजाब क्षुब्ध समुद्र की तरह चंचल हो गया। 2 सहस्र के लगभग लोग गोलियों का निशाना बनाए गए। चार सौ के लगभग लोग मारे गए। पंजाब भर के हिन्दुओं में भयंकर असुरक्षा और भय की भावना भर गई है। कोई दिन ऐसा नहीं गुजरता जब कि किसी के गोली से उड़ाए जाने और किसी परिवार के अनाथ होने की सूचना नहीं मिलती। पर डी. ए. वी. संस्थाओं का काफिला गीता के स्थित प्रज्ञ सन्त के समान परम शान्त भाव से चला जा रहा है। मानो जो कुछ पंजाब के हिन्दुओं के साथ हो रहा है इसका उसके साथ दूर का भी सम्बन्ध नहीं। यह अच्छी तरह समझते हुए भी कि पंजाब में हिन्दू संस्थाओं का महत्व नहीं के बराबर होता जा रहा है।

मैं केवल वस्तु स्थिति की बात कर रहा हूं! किसी का महत्व नहीं घटा रहा, यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि जब कोई संस्था अपने आदर्शों से और जन-जीवन से कट जाए तो उसका ह्रास शुरू हो जाता है। आदर्श सूर्य के प्रकाश के समान है और जन-जीवन जल के समान है। जो संस्था रूपी वृक्ष को हरा भरा रखते हैं।

क्या किसी को समझाया जा सकता कि अंग्रेजी का माध्यम, सह-शिक्षा और शिक्षा का अत्यधिक महंगापन इनका ऋषि दयानन्द और महात्मा हंसराज के साथ क्या सम्बन्ध है। अनेक वर्षों के संघर्ष के बाद राष्ट्रीय भाषा हिन्दी और प्रान्तीय भाषाओं को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाया जा सका। पंजाब में तो आर्य संस्थाओं की हिन्दी आन्दोलन के लिए सुप्रीमकोर्ट तक जाना पड़ा और अंत हमने स्वीकार कर लिया कि हिन्दी शिक्षा का माध्यम बनने के अनुपयुक्त है। सहशिक्षा के विरुद्ध प्रचार करते हुए आर्य समाज के उपदेशकों ने सैकड़ों मेजें तोड़ दीं। ऋषि दयानन्द ने लिखा कि 16-17 वर्ष की कन्या युवती होकर विवाह योग्य हो जाती है। उसके सम्पर्क में विवाह के लिए 24-25 वर्ष के युवा को आना चाहिए।

और हम अपने स्कूलों में 15-16 वर्ष की युवतियों का सम्पर्क 15-16 वर्ष के लड़कों के साथ करते जा रहे हैं। आज कल के वातावरण में रेडियो, टी.-वी, सिनेमा, इश्तहार और नया साहित्य लगातार बच्चों के मानसिक सन्तुलन को नष्ट कर रहा है। पंजाब में तो प्रतिदिन लाखों मुर्गियां, हजारों बकरियां और हजारों मछलियां भोजन का अनिवार्य अंग बन गई हैं। वहां यह आशा करना कि बच्चों और व्यक्तियों के जीवन में कुछ स्वाभाविक संयम होगा, कुछ समझदारी की बात नहीं लगती, ऐसे समय में आर्य समाज का यह नया परीक्षण कहां तक आर्य समाज के नाम की शोभा बढ़ाएगा और दयानन्द के नाम को उज्ज्वल करेगा?

मैंने अपने जीवन के 37 वर्ष डी. ए. वी. संस्थाओं में व्यतीत किये हैं। डी. ए. वी. आन्दोलन के मूल में अनगिनत बलिदान तथा असंख्य हिन्दुओं की सात्विक कमाई का पैसा लगा हुआ है। इस महान् आन्दोलन के कारण लाखों लोग सुशिक्षित हुए, लाखों लोगों ने अच्छी से अच्छी आर्थिक और सामाजिक उन्नति कर अपने तथा राष्ट्र के जीवन को समृद्ध किया। इस समय तो यह आन्दोलन भारत व्यापी रूप से विकसित होने जा रहा है। क्या इस महत्व के अवसर पर यह आवश्यक नहीं कि हम बार 2 जांचें कि हम अपने मूल आदर्शों से कितना दूर चले गये हैं। और यह भी कि क्या हमारी संस्थाओं का आर्य समाज के जीवन प्रवाह के साथ हिन्दू जीवन प्रवाह के साथ गहरा सम्बन्ध है या नहीं।

आर्य संस्थाएं आर्य समाज मात्र की सम्पत्ति है किसी छोटे वर्ग या व्यक्ति की नहीं। इसके लिए समस्त आर्य हिन्दू भाईयों की चिन्ता स्वाभाविक है। इसी दिशा में यह एक नम्र निवेदन है।

—

सम्पादकीय—

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की शताब्दी

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का इस राज्य में एक विशेष स्थान है। यह आज का ही नहीं, लगभग पिछली एक शताब्दी से यह सभा पंजाब की भिन्न 9 प्रकार से सेवा करती चली आ रही है। 1947 से पहले जब अभी देश का बंटवारा नहीं हुआ था उस समय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब देश की सब प्रान्तीय सभाओं में सबसे ऊंची समझी जाती थी। दूसरे प्रान्तों में आर्य समाजों ने जब अपने उत्सव करने होते थे तो वह भी पंजाब से उपदेशक और भजनोपदेशक मंगवाया करती थीं। आर्य प्रतिनिधि सभा को इस ऊंचे स्थान पर पहुंचाने में जिन महानुभावों का विशेष योगदान रहा है उनमें श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जब वह महात्मा मुन्शीराम थे, श्री लाला रामकृष्ण जी, श्री महाशय कृष्ण जी, श्री आचार्य रामदेव जी, श्री पं, विश्वम्भरनाथ जी, श्री पं. ठाकुरदत्त जी शर्मा, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज, श्री पं. चमूपति जी, और श्री पं. बुद्धदेव जी, जो आगे चलकर श्री स्वामी समर्पणानन्द जी बने। इनके अतिरिक्त समाज के और भी कई श्रद्धालु सेवक थे जो 24 घण्टे आर्य समाज की सेवा किया करते थे। उन दिनों पंजाब प्रतिनिधि सभा का क्षेत्र बहुत फैला हुआ था और दिल्ली भी उसमें सम्मिलित था। जिसे आज हरियाणा या हिमाचल कहा जाता है वह भी इसी पंजाब में मिला हुआ था। देहली में श्री नारायणदत्त जी ठेकेदार, श्री इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, ला. ज्ञानचन्द जी ठेकेदार, ला. देशबन्धु गुप्ता और बाबा मिलखा सिंह जैसे आर्य समाज के कई प्रेमी दिन-रात इसके लिए काम किया करते थे। यदि मैं सबके नाम लिखने लगूं तो एक बहुत लम्बी सूची बन जाएगी। आज तो केवल इतना ही कह सकता हूं कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जो कुछ भी है उसे बनाने में सैंकड़ों नहीं हजारों व्यक्तियों ने अपना योगदान दिया।

हम अपना मुख्य कार्यालय गुरुदत्त भवन लाहौर में छोड़ आए थे उसके साथ वहां पर एक बहुत बड़ा पुस्तकालय भी था। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज और श्री स्वामी वेदानन्द जी महाराज के संरक्षण में वहां एक उपदेशक विद्यालय भी चल रहा था। जिसने बड़े 2 उच्चकोटि के उपदेशक तैयार किए थे। हमारे भू. पू, स्व. महामन्त्री श्री रामचन्द्र जी जावेद और दयानन्द मठ दीनानगर के आचार्य श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज भी उसी विद्यालय से दीक्षा लेकर निकले थे। इनके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने पहले हरिद्वार के पास कांगड़ी ग्राम में गुरुकुल स्थापित किया और बाद में वर्तमान गुरुकुल हरिद्वार में स्थापित किया। इसी के साथ एक फार्मेसी भी शुरू की गई जो अब भी चल रही है देहरादून में एक कन्या गुरुकुल भी शुरू किया गया था यद्यपि इसे चलाने वाले स्वर्गीय श्री आचार्य रामदेव जी थे. परन्तु वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के निरीक्षण व संरक्षण में ही चलता आ रहा है इन्द्रप्रस्थ में भी एक गुरुकुल शुरू किया गया था जो आज भी चल रहा है। पंजाब में सभा ने कई स्कूल और कालेज भी खोले थे।

यह सब लिखने से मेरा अभिप्राय केवल आर्य जनता को यह बताना है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपने देश, धर्म, और समाज की कितनी सेवा की है। सभा के कई बड़े 2 अधिकारी जैसे श्री महाशय कृष्ण जी, श्री आचार्य रामदेव जी, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज सक्रिय राजनीति में तो भाग न लेते थे परन्तु देश की स्वाधीनता के संघर्ष में वह किसी से पीछे न रहे थे और जब कभी आवश्यकता पड़ी, वह जेल भी गए थे। यह था इस सभा का इतिहास 1947 से पहले का।

1947 में जब देश का बंटवारा हुआ तो हमारी सारी सम्पत्ति पाकिस्तान में रह गई। गुरुदत्त भवन भी वहीं रह गया, बहुत बड़ा पुस्तकालय भी वहीं रह गया, कई बड़ी 2 आर्य समाजों के मन्दिर भी वहीं रह गए और जो थोड़ा बहुत धन सभा के पास था वह भी वहीं रह गया। जब विभाजन के पश्चात् हमारे नेता यहां आए तो उनके सामने यह प्रश्न उठा कि वह अब सभा का मुख्य कार्यालय कहां बनाएं। कुछ समय के लिए वह देहली में भी काम करते रहे परन्तु अन्त में वह इस निर्णय पर पहुंचे कि पंजाब सभा का कार्यालय पंजाब में ही रहना चाहिए वह इस लिए कोई जगह ढूंढने लगे और अन्त में जालन्धर में उन्होंने एक जगह खरीद ली जो अब गुरुदत्त भवन के नाम से प्रसिद्ध है। जिन व्यक्तियों ने लाहौर का गुरुदत्त भवन देखा था वह समझ सकते हैं कि दोनों में कितना अन्तर है। परन्तु मरता क्या न करता के अनुसार 1947 के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों के सामने इसके अतिरिक्त और कोई विकल्प ही नहीं था कि जो कुछ उन्हें मिल रहा है उसे वह ले लें और वहीं से अपना कार्य शुरू कर दें। उन्हें आर्य समाज के संगठन और उसकी शक्ति पर पूरा भरोसा था, इसलिए उन्होंने यहीं से अपना काम शुरू कर दिया। यह एक पुरानी टूटी-फूटी बिल्डिंग थी जिसमें बैठने की भी जगह न थी। आज उसके बाहिर 11 दुकानें बन चुकी हैं अन्दर तीन कमरे बन गए हैं। एक यज्ञशाला बन रही है और अब एक पुस्तकालय भी प्रारम्भ करने का विचार है। हमें यह न भूलना चाहिए कि 1986 में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अपने संघर्षमय जीवन के एक सौ वर्ष समाप्त करेगी। आर्य समाज के इतिहास में यह एक बहुत बड़ी घटना होगी। पंजाब के आर्य समाजियों को अभी से उसकी तैयारी शुरू कर देनी चाहिए। 15 जून को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की कार्यकारिणी ने इस पर विचार किया था। इसका कार्यक्रम बनाने के लिए शीघ्र ही सभा की अन्तरंग सभा की बैठक भी बुलाई जा रही है। मैं चाहता हूं कि पंजाब की आर्य जनता उन समस्याओं को समझ ले, जो इस समय उनकी सभा के सामने हैं। ताकि आगामी एक वर्ष में हम उन्हें निपटाने के लिए जो कुछ भी कर सकते हैं करें। वह समस्याएं क्या हैं और उनके विषय में हमें क्या करना चाहिए। इस पर आगामी अंक में कुछ प्रकाश डालूंगा।

—वीरेन्द्र

लेखक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक को सदा ही उच्चकोटि के लेखकों का सहयोग प्राप्त होता रहा है हम अपने लेखकों के आभारी हैं कि वह सभा से कुछ भी न लेकर अपनी अमूल्य रचनाएं हमें भेजते रहते हैं। श्री पं, सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार, श्री भवानीलाल जी भारतीय, प. बिहारीलाल जी शास्त्री, आचार्य विश्वश्रवा जी, पं, वेदश्रमी जी, आचार्य भद्रसेन जी, श्री यशपाल आर्य बन्धु, पं, सत्यदेव जी विद्यालंकार, श्री प. धर्मवीर विद्यालंकार आदि उच्चकोटि के लेखक अपनी रचनाएं भेजकर आर्य समाज की महान् सेवा कर रहे हैं।

हम चाहते हैं कि आर्य मर्यादा के द्वारा अपने लेखकों के विचार दूर 2 तक पहुंचाएं जो वेद मन्त्रों पर आधारित हों। वेद सभी विद्याओं का खजाना है। किसी भी विषय को ले लें, वेद उसमें मार्ग दर्शन करता है। इसलिए आज समाज को एक सूत्र में बांधने की फिर आवश्यकता है। क्योंकि विघटन बढ़ता चला जा रहा है। हमारी अपने सभी लेखकों से प्रार्थना है कि वह पारिवारिक संगठन सामाजिक संगठन, राष्ट्रीय और सार्वदेशिक संगठन तथा वर्तमान परिस्थितियों में मानव का कर्त्तव्य आदि विषयों पर अपनी 2 रचनाएं हमें भेजें। आज आतंकवाद और जातिवाद फिर सिर उठा रहा है। धर्म का स्वरूप बिगाड़ा जा रहा है। धर्म के नाम पर तरह-तरह के पाप किए जा रहे हैं। आज आवश्यकता ऐसे प्रचार की है जिससे पुन: शान्ति की स्थापना हो सके। हमें विश्वास है कि आर्य मर्यादा के लेखक अपनी रचनाएं पूर्व की भान्ति भेजते रहेंगे।

—व्यवस्थापक

स्वास्थ्य सुधा—

उच्च रक्त दाब-कारण और निराकरण

ले.—श्री डा. सत्यदेवजी आर्य एस. बी. 161 बापू नगर जयपुर

उच्च रक्तदाब पर कुछ विचार करने के पूर्व रक्तदाब या रक्तचाप क्या है तथा शरीर वृत्तिक क्रियाओं में इसका कितना महत्व है इस पर भी थोड़ा सा विचार कर लेना अनुपयुक्त न होगा।

शरीर के अंग-प्रत्यंग की समस्त कोशिकाओं को समुचित पोषण की आवश्यकता होती है जो हमें आहारीय पोषक तत्वों एवं श्वास-प्रश्वास से प्राप्त आक्सीजन से उपलब्ध होता है। लेकिन बगैर हमारे ऐच्छिक प्रयत्न-प्रयास के यह कोशिकाओं तक कैसे पहुंच पाता है, यह विचारणीय विषय है। इस विशिष्ट कार्य के लिए प्रभु ने हमें अत्यन्त ही कुशल एवं सक्षम रक्त परिसंचरण तन्त्र प्रदान किया है जिसमें हृदय और उससे लगी रक्त वाहिका नलिकाएं हैं। हृदय से निकलने वाली नलिका ऐओरटा' व उस की असंख्य शाखाएं उपशाखाएं जो शुद्ध रक्त शरीर के सभी अंग प्रत्यंगों की ले जाती है—धमनियां कहलाती हैं और वहां से जो अशुद्ध रक्त वापिस हृदय को लाती है। वह शिराएं कहलाती हैं। धमनियों व शिराओं का यह जाल इतना विस्तृत है कि यदि एक सामान्य वजन के युवा व्यक्ति के इस जाल को सीधी रेखा में बिछाएं तो यह लगभग 96000 मीटर लम्बाई का होगा। मोटापे में यह लम्बाई अनुपात से और अधिक बढ़ेगी। इतनी लम्बी पाईप लाईन में जीवन पर्यंत निरन्तर रक्त पम्प करने में हृदय रूपी पम्प को कितना सशक्त एवं सक्षम होना चाहिए. यह केवल हमारे सोचने-समझने की ही बात है। मुट्ठी-भर का यह हृदय गर्भ के चौथे मास से धड़कने लगता है और उमर भर औसतन 75 धड़कनें प्रति मिनट की दर से धड़कना ही रहता है। पल भर भी विश्राम नहीं करता। प्रत्येक धड़कन में यह निर्धारित मात्रा में अपने बायें भाग से शुद्ध रक्त कोशिकाओं के पोषण हेतु और दायें भाग से अशुद्ध रक्त फेफड़ों में शुद्धि हेतु धकेलता है। एक मिनट में यह लगभग 5 लीटर रक्त धकेलता है इस प्रक्रिया में हमें नियमित एवं निर्धारित श्रम करना पड़ता है। यही श्रम दबाव, रक्त प्रवाह का दवाव बनता है जिसे 'सिस्टोलिक' रक्तदाब कहते हैं, तथा दो धड़कनों के अन्तराल में रक्त धमनियों द्वारा अपनी लोचकता के अनुरूप रक्त-प्रवाह पर प्रतिक्रियात्मक दबाव डाला जाता है जिसे 'डायस्टोलिक' रक्तदाब कहते हैं। बढ़ती उम्र में रक्त धमनियों की लोचकता में कमी आने लगती है या इनमें अन्यथा कोई रुकावट पैदा हो जाती है तब हृदय को रक्त पम्प करने में अतिरिक्त श्रम करना पड़ता है, दबाव देना पड़ता है। जिससे सिस्टोलिक रक्तदाब बढ़ता है और साथ ही धमनि-काठिन्य से डाय. दाब भी। इससे हृदय की मांस-पेशियों में स्थूलता आने लगती हैं वह बढ़ने लगता है और उसके स्वयं के पोषण हेतु उसकी रक्त मांग बढ़ जाती है। लेकिन उसकी कोरोनरी धमनियों में भी कठोरता आने से उनमें रक्त प्रवाह में कमी होने लगती है। परिणाम स्वरूप रह-रहकर 'एन्जाइना' का दर्द उठने लगता है जो क्षणिक होता है तथा बाहों में विशेषकर बाईं बांह में उतर आता है आवेश या श्रम के साथ इसका अधिक सम्बन्ध रहता है। यह दर्द हृदय की थकावट या कार्य क्षमता की कमी का संकेत देता है। उपचार की मांग करता है लेकिन यदि उपचार में उदासीनता बरती जाती है तो कालान्तर में 'हार्ट फेल्योर' की स्थिति उभर आती है। यही नहीं. धमनि काठिन्य के कारण धमनी फटने या रक्त कोलेस्टराल की अधिकता के कारण कोलेस्टराल+कैलशियम की परतों का धमनी की भीतरी भित्ति में जमाव एथीरोस्क्लिरोसिस' होने से रक्त प्रवाह में रुकावट और कभी 2 'एथीरोमी' पदार्थ के टूटे टुकड़े रक्त में बहकर छोटी धमनियों विशेषकर हृदय और मस्तिष्क की धमनियों में फसकर रक्त प्रवाह रोक देते हैं जिससे 'हार्ट ऐटेक' या मस्तिष्क में रक्ताघात होने से पक्षाघात हो जाता है। दोनों ही घटनाएं दुःखद होती हैं। धमनी फटने की दुर्घटना में मृत्यु हो ही जाती है।

उच्च रक्त दाब को हम उसके कारणों के आधार पर दो श्रेणियों में विभक्त करते हैं। प्राईमरी व द्वितीयक।

प्राईमरी—में स्पष्टतया कोई कारण विशेष नहीं होते। ढलती उम्र की बीमारी है। अन्य अवयवीय रुग्णता से कोई सम्बन्ध नहीं। अधिकांश 90 प्रतिशत इसी श्रेणी का उच्च रक्त चाप देखने को मिलता है। आनुवंशिकता, ढलती उम्र, लिंग, महिलाओं में अपेक्षाकृत अधिक मोटापा, अनियमित, दिनचर्या, गरिष्ट भोजन रक्त कोलेस्टरोल बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थों की प्रचुरता नमक की अधिकता, भाग दौड़ का स्पर्धायुक्त जीवन यापन मानसिक तनाव-आवेश, उद्वेग, क्रोध चिन्ता, आशंका आदि, तम्बाकू तथा उत्तेजना पैदा करने वाले पेय पदार्थ, शराब आदि सम्बन्धित कारण बनते हैं।

द्वितीयक—में स्पष्ट कारण विद्यमान रहते हैं जैसे अन्तः स्रावी ग्रन्थियों-एड्रिनल पिटयूटरी, थाइरोइड जनन आदि ग्रन्थियों के हार्मोन्स में कमी-वेशी, रुग्णता या अर्बुद के कारण गुर्दों की विविध बीमारियां जिनमें चिरकारी शोथ, पथरी आदि 'ऐओरटा' के विकार समपीड़न उपदेश के पश्च प्रभावादि, गर्भावस्था में महिलाओं को कभी 2 होने वाले उपद्रव 'प्रि-इकलेम्पसिया या इकलेम्पसिया आदि उपचार से इन कारणों के निराकरण पर यह उच्च रक्त दाब स्वतः ही सामान्य हो जाता है।

सामान्य व उच्च रक्त दाब की सीमाएं—एक स्वस्थ्य सामान्य वजन के युवक व युवती का औसतन सामान्य रक्त दाब 120-80 एम. एम. एच. जी. अर्थात 120 सि. व 80 डाय.होना चाहिए। लेकिन परिस्थिति वश इसमें कुछ उतार-चढ़ाव हो सकते हैं जिसमें सि. 100 से 140 व डाय. 75 से 85 तक हो सकता है। अधिकांश 60 वर्ष की उम्र के बाद यह 150-85, एम, एम. तक भी रह सकता है लेकिन इससे अधिक जैसे कि किसी भी उम्र की महिला में 160-95, 55 वर्ष से ऊपर की आयु के पुरुष में 150-95 और 45 वर्ष से कम आयु के पुरुष में 130-90 निश्चय ही उच्च रक्त दाब माना जाना चाहिए डायास्टोलिक रक्तदाब यदि निरन्तर 100 या 105 एम, एम, से अधिक रहता है तो यह निश्चित रूप से उपयुक्त उपचार की अपेक्षा रखता है।

नियन्त्रण निराकरण—औषध या शल्य उपचार तो चिकित्सक द्वारा उसकी देख-रेख में ही करवाया जाना उचित है, लेकिन नियन्त्रण-निराकरण हेतु निम्न सावधानियां, उपाय अपनाना अत्यावश्यक है—

नियमित दिनचर्या, अधिक भाग-दौड़ व श्रम साध्य की जिन्दगी में यथासाध्य कमी कम से कम 4-5 कि. मी. प्रातः भ्रमण, सन्तुलित आहार जिसमें मिर्च मसाले कम, नमक विशेष रूप से कम, केवल 4-5 ग्राम प्रतिदिन ही जब सामान्यतया इसकी मात्रा 10-12 ग्राम रहती है। मिश्रित अनाजों का चोकर सहित आटा-मिस्सी रोटी छिलके सहित निर्मित दाले, अंकुर निकले अनाज व भुनें-चने अधिक लाभकारी हैं। ताजी सब्जियां विशेषकर हरे पत्ते वाली जिनमें पालक, मेथी, चन्दलाई, बथुआ, सरसों का साक, मूली के पत्ते आदि। कच्चे खाने योग्य खाद्य पदार्थ कच्चे ही खावें। लहसुन प्याज, टमाटर, गाजर, मूली, खीरा, ककड़ी, अमियां पोदीना व आंवला की चटनी तथा नींबू विशेष हितकर है। मठा छैना, दही और मलाई निकला दूध उपयुक्त मात्रा में अवश्य काम में ले आवें। इन सभी खाद्य पदार्थों में 'ए' 'सी' बी. वर्ग व कैलशियम-पोटाशियम पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं जो हृदय और रक्त वाहिका नालिकाओं की उपकला कोशिकाओं को सक्षम बनाये रखते हैं और रक्त दाब नियन्त्रण में अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होते हैं। गरिष्ट भोजन, अधिक मिष्ठान् और रक्त कोलेस्टराल बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थ प्रयोग में न लावें। इन में घी, मक्खन, मलाई, आईसक्रीम केक पेस्ट्री चाकलेट अण्डे की जर्दी नारियल का तेल आदि प्रमुख है। मांस का प्रयोग भी न किया जाए तो हितकर है। शुद्ध वनस्पति तेल रक्त कोलेस्टराल नहीं बढ़ाते। मौसमी फलों का प्रयोग वांछनीय है। शराब, काफी, कोको, भांग आदि का प्रयोग न करना ही हितकर है। तम्बाकू किसी भी रूप में चाहे सिगरेट बीड़ी, चुरुट, हुक्का, पाईप में या पान तथा चूने के साथ खाने में या सूंघनी के रूप में नितान्त वर्जित रखें।

मानसिक तनाव में यथा सम्भव कमी करने की चेष्टा करें। व्यर्थ का द्वेष, ईर्ष्या डाह, असूया, क्रोध, उद्वेग आवेश व चिन्ता आदि न पनपने दें सत् साहित्य स्वाध्याय और आप्त जनों का सत्संग इस दिशा में अत्यन्त हितकर है। ईश आस्था, स्तुति प्रार्थना उपासना प्राणायाम व कुछ यौगिक क्रियाएं श्वासनादि लाभकारी हैं। ईमानदारी नैतिकता सत्याचरण एवं निःस्वार्थ सेवा भाव मानसिक शान्ति के लिए अत्यन्त उपयोगी साधन हैं ऐसी सामाजिक कुरीतियों का जो आर्थिक विपन्नता उत्पन्न करें और मानसिक तनाव बढ़ावें। दृढ़ता से बहिष्कार करें जैसे दहेज प्रथा औसर-मौसर अमुक तान्त्रिक अनुष्ठानादि। अकेलापन भी मानसिक तनाव बढ़ाता है। संयुक्त परिवार में अधिकांश पारस्परिक सहयोग सहाय सद्भाव एवं सुरक्षा का वातावरण बना रहता है जो बहुत सी पारिवारिक चिन्ताओं से राहत दिलाता है तथा मानसिक तनाव के निराकरण में सहायक होता है।

आर्य प्र. नि. सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों व शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

आपको सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का वह परिपत्र प्राप्त हुआ होगा, जो उसने श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले के अभिनन्दन अवसर पर 11 लाख रुपये की थैली भेंट करने के लिए आपको लिखा है और साथ ही यह भी कहा है कि इसके लिए आप धन एकत्रित करके सार्वदेशिक सभा को भेजें।

इस सम्बन्ध में आपसे यह निवेदन है कि जिस समाज ने या जिस शिक्षण संस्था ने इस अभिनन्दन के लिए अपनी ओर से कोई राशि भेजनी हो, वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के द्वारा ही भेजी जाए ताकि हमें भी पता रहे कि पंजाब से कितनी राशि इस उद्देश्य से भेजी गई है। प्राय: यह देखा गया है कि कई समाजें सीधी राशि भेज देती हैं। और सभा को पता नहीं चलता कि पंजाब से कितना रुपया गया है। हम नहीं चाहते कि यह स्थिति फिर पैदा हो जाए। इसलिए आप से यह निवेदन कर रहे हैं।

इसी के साथ आपको यह भी याद दिलाना चाहते हैं कि आपने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भवन निर्माण के लिए भी धन एकत्रित करना है। वह भी जितना एकत्रित कर सकें, करके हमें भेजने की कृपा करें।

—वीरेन्द्र
सभा प्रधान

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

लुधियाना में विशाल सत्संग

आर्य युवक सभा लुधियाना के तत्वावधान में 23 जून रविवार को सिण्डिकेट बिल्डिंग सिविल लाईन के सामने पार्क में सायं साढ़े तीन बजे से साढ़े 6 बजे तक विशाल सत्संग का आयोजन किया गया है। श्री पं. सुरेन्द्र-कुमार जी शास्त्री पुरोहित आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार यज्ञ कराएंगे, उसके पश्चात् वेद प्रचार भजन मण्डली के भजन और स्वामी वेद भारती जी का प्रवचन होगा। सभी धर्म प्रेमी सज्जन भाग लेकर धर्म लाभ उठावें।

—रोशनलाल शर्मा

आर्यसमाज बटाला गतिविधियां

आर्य समाज ओहरी चौक बटाला की ओर से प्रति मास के अन्तिम रविवार को पोलियो आदि के टीके छोटे बच्चों को नि:शुल्क लगाये जाते है। इस कार्य में आर्य समाज को डा. रामगोपाल जी आर्य का पूरा सहयोग प्राप्त है। निर्धन बच्चों की सेवा के लिए यह कार्य किया जा रहा है हमारा बच्चों के माता-पिता से निवेदन है कि वह यह टीके अपने बच्चों को अवश्य लगवाएं।

शिवाजी अभिषेक दिवस मनाया गया

9-5-8 को आर्य समाज में छत्रपति शिवाजी का अभिषेक दिवस मनाया गया। जिसमें भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया। इस समारोह के मुख्य वक्ता श्री ज्ञानी प्रकाश देव थे।

समाज में दैनिक सत्संग तथा साप्ताहिक सत्संग रविवार को होता है धर्म प्रेमी सज्जन सत्संग में पधार कर धर्म लाभ उठाएं।

—सतीश महत्ता मन्त्री

प्रगति की ओर अग्रसर आर्य समाज चम्बा (हि. प्र.)

आर्य समाज चम्बा निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है। समाज के अन्तर्गत एक नि:शुल्क प्राईमरी पाठशाला तथा एक कन्या संस्कृत महाविद्यालय सफलतापूर्वक चल रहे हैं। संस्कृत महाविद्यालय के छात्रावास की कन्याएं नित्यप्रति यज्ञ-हवन करती हैं। जिससे प्रात: सायं सुमधुर वातावरण बना रहता है। आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में सभी छात्राएं एवं अध्यापक-अध्यापिकाएं अति उत्साह से भाग लेते हैं। वहां के मधुर वातावरण से प्रभावित होकर प्राय: माता-पिता अपनी कन्याओं को संस्कारित करने के लिए यहां के संस्कृत महाविद्यालय में पढ़ने के लिए भेजने को प्राथमिकता देते हैं।

विगत 5-5-85 को आर्य समाज चम्बा का चुनाव श्री स्वामी सुमेधानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सभी अधिकारियों एवं सदस्यों ने मासिक सदस्यता शुल्क के रूप में अपनी आय का शतांश देना स्वीकार किया। चुनाव निम्न प्रकार से हुआ—

प्रधान—श्री भगवती प्रसाद पन्त सहायक अभियन्ता, मन्त्री—श्री प्रो. शामलाल सल्होत्रा, कोषाध्यक्ष—श्री विश्वजीत महाजन, प्रचार मन्त्री—श्री सूरतराम शर्मा शास्त्री।

—प्रो. शामलाल सल्होत्रा
मन्त्री

श्री अश्विनीकुमारजी एडवोकेट की विदेश यात्रा



आर्य समाज ग्रीन पार्क जालन्धर के प्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री जालन्धर के प्रसिद्ध वकील श्री अश्विनीकुमार शर्मा एडवोकेट 21 जून 85 से लन्दन, अमरीका और कनेडा की यात्रा पर जा रहे हैं। वह इस अवसर पर उन देशों की आर्य समाजों में भी जाएंगे। इनकी यह प्रबल इच्छा है कि जहां विदेश की यात्रा की जाए वहां अपने उन आर्य भाईयों को भी अवश्य मिला जाए जो भारत से बाहिर और दूर रहते हुए भी आर्य समाज की सेवा में जुटे हुए हैं और वेद का प्रचार व प्रसार कर रहे हैं।

अम्बाला छावनी में वैदिक प्रचार मण्डल

वैदिक प्रचार मण्डल अम्बाला छावनी द्वारा म. कृष्णलाल जी के गृह पर आयोजित एक सप्ताह के यजुर्वेद यज्ञ को समारोह पूर्वक सम्पन्न कराया। इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी के प्रो वाईस चांसलर पं. रामप्रसाद जी के ओजस्वी विचारों का उपस्थित श्रोताओं पर अच्छा प्रभाव पड़ा। इस अवसर पर पं. जी द्वारा साहित्य वितरण किया गया। इससे पूर्व भी लगातार 4 मास से एक सप्ताह का यज्ञ भी सम्पन्न हो चुका है जिसमें प, भूदेव शास्त्री, प. रामप्रकाश गुरुकुल एटा आदि पधारे।

1, वैदिक प्रचार मण्डल प्रत्येक रविवार को पारिवारिक सत्संग का आयोजन करता है।

2. वैदिक प्रचार मण्डल को लगभग 200 गज का स्थान भी दान मे मिलने वाला है।

3. मण्डल द्वारा अम्बाला छावनी में वैदिकधर्म प्रचार की गतिविधियां तेज कर दी है। इस सभा के सुयोग्य प्रधान पं. देवदत्त जी (लघु भ्राता श्री सोम भाई) का मार्ग दर्शन प्राप्त है।

कृपया सदस्य बनकर मण्डल को सहयोग देवे।

—वेद मित्र

प्रान्तीय आर्य वीर दल महासम्मेलन

21-20 सितम्बर को कैथल में

—सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा का प्रान्तीय महासम्मेलन इस वर्ष 20-21 सितम्बर को कैथल मे होना निश्चित हुआ है। इसमें हरियाणा के लगभग दो हजार आर्य वीर पूर्ण गणवेश में भाग लेंगे तथा राष्ट्र रक्षा एवं सेवा का व्रत लेंगे।

इस अवसर पर आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् एवं संगीतकार भाग लेंगे। युवा आर्य वीर व्यायाम प्रदर्शन करेंगे तथा नगर में विशाल शोभा यात्रा भी निकाली जाएगी। सम्मेलन के मुख्य आकर्षण आर्य वीर गोष्ठी, आर्य वीर सम्मेलन, वेद सम्मेलन तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होंगे।

कैथल में सम्मेलन की तैयारियां बड़े उत्साह से प्रारम्भ हो चुकी हैं।

—अजीत कुमार आर्य
मन्त्री आर्य वीर दल हरियाणा

आवश्यक सूचना

आर्य समाज शास्त्री नगर बस्ती गुजां जालन्धर की अन्तरंग सभा की बैठक 2 जून को प्रधान श्री राम लुभायानन्दा जी (मैनेजर आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ) की अध्यक्षता मे हुई। जिसमे आर्य समाज का नाम सर्वसम्मति से बदला गया। पहले इस आर्य समाज का नाम आर्य समाज मन्दिर बस्ती मिट्ठू स्थित शास्त्री नगर जालन्धर था, परन्तु इसका भवन शास्त्री नगर मे होने के कारण इस का नाम भी 'आर्य समाज मन्दिर शास्त्री नगर डाकघर बस्ती गुजां जालन्धर रखा गया है। कृपया सभी सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी एवं सभी आर्य बन्धु अंकित कर लें।

—लालचन्द मन्त्री

अध्यापकों की आवश्यकता है

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर मे गणित, अंग्रेजी तथा विज्ञान विषयों के लिए अध्यापकों की आवश्यकता है।

वैदिक मान्यताओं मे विश्वास रखने वाले कर्मठ योग्य तथा अनुभवी अध्यापक सम्पर्क करें। प्रार्थी पत्राचार करते समय इच्छित मासिक वेतन सुविधा तथा अपनी योग्यताओं का स्पष्ट विवरण दें।

प्राचार्य
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जि. जालन्धर

आत्म अनुभूति का मार्ग

ले.—श्री स्वामी योगानन्द जी सरस्वती आर्य समाज
अशोक नगर कालोनी पीलीभीत

आत्म अनुभूति के लिए भारतीय दर्शन का अध्ययन करना पड़ेगा। स्वाध्याय करने से मानव को बोध होता है, आत्म सत्ता पर दृढ़ विश्वास होने पर ससार की चमक-दमक प्रभावहीन हो जाती है, इसी सम्बन्ध मे पाठको के समक्ष शिक्षाप्रद घटना लिखता हू।

शर्मा और गुप्ता दो मित्र थे एक ही कम्पीटीशन मे बैठे- परीक्षा उत्तीर्ण पश्चात इन्टरव्यू हुआ,। दोनो सिलैक्ट हो गए एप्वाइन्टमैंट लैटर साथ 2 मिले दोनो प्रसन्नता से उछल पड़े। साथ साथ कोठी किराए पर लेकर रहने लगे, इतनी घनिष्ठ मित्रता हुई कि एक दूसरे को देखे बिना चैन नही आता था पर दोनो ही अविवाहित थे भोजन करने होटल साथ जाते आफिस से साथ ही वापिसी होती, शाम को मनोरजन एक साथ होता, सोना-जागना साथ होता था यही उनकी दिन-चर्या थी।

कुछ समय पश्चात् गुप्ता विवाहित हो गया और नव विवाहित दुल्हन को साथ ले आया अब अलग कमरे मे रहने लगा। दुल्हन ने गुप्ता के जीवन मे एक मोड़ दिया। अब शर्मा से मित्रता का हास्य विनोद फीका पड़ गया। शर्मा अकेला कमरे मे मन से बातें करता रहता शर्मा के लिए गुप्ता का दरवाजा बन्द हो गया।

एक दिन की घटना है भादो की अन्धेरी रात थी, काली घटाए चन्द्रमा के प्रकाश को आच्छादित किए हुए थी अकाश मे बिजली चमक उठती बादल की गड़गड़ाहट से आकाश गूज उठता झूम झूम कर वर्षा मेढक बरसात के मस्त तराने गा रहे थे। पति-पत्नी बैठे बात-चीत कर रहे थे कि अचानक पत्नी के पेट मे शूल का दर्द उठा समय करीब 10 बजे का था। पत्नी दर्द से बचैन चारपाई पर करवटें बदल रही थी पर चैन नही पड़ता। विवश होकर कराहने लगी कुछ बेहोशी की अवस्था होने लगी यह देख गुप्ता घबरा गया। गुप्ता ने शीघ्र शर्मा को आवाज दी। शर्मा कमरा से शीघ्र दौड़ा हालत देखकर डाक्टर को बुलाने गया। शूल इतना बढ़ा कि पत्नी ने गुप्ता का साथ छोड़ दिया। शर्मा के लौटने तक काय सब समाप्त हो गया। डाक्टर विवश होकर लौट गया गुप्ता ने कहा मित्र अब क्या होगा। बोला 'अन्तिम सस्कार' गुप्ता के हाथ पैर फूल चुके थे आंखों में अश्रु प्रवाह हो रहा था। शर्मा ने ढाढस बाधते हुए कहा—मित्र मौत से किसी का चारा नहीं, अब तुम इस कमरे मे बैठो धैर्य धारण करो। गुप्ता ने कहा —मित्र इस कमरे में मेरा अकेला रहने का साहस नही, मुझे जिससे प्यार था। वह इसमें नहीं, वायदे समाप्त हो गए। मेरे लिए यह कमरा सूना है।

शर्मा ने अनुभव किया कि शरीर प्रेम का आधार नही, मानव उसी समय तक इससे प्यार करता है जब तक इसमे चैतन्य जीवात्मा है आत्मा निकलते ही घृणा, न वह फिर किसी का पिता, न पुत्र न पति न पत्नी कहा भी है—

'आत्मान कामाय सर्वप्रिय भवति'

आत्मा के लिए सब चीज प्रिय है शर्मा को अब वास्तिक आत्म तत्व की अनुभूति हुई उसने शरीर से आत्मा को अलग समझा, उसे ससार की लुभाने वाली चमक-दमक प्रभावहीन दिखाई दी औ यह आत्मा की खोज की तरफ बढ़ा। बैराग्य जागा यही मेरे मित्रो श्रेय मार्ग है जो ससार के बन्धनो से छुटकारा दिला सकता है।

उत्तर—गुप्ता को नई दुल्हन के वियोग से चैन नही पड़ता था चारपाई पर पड़ा करवटे बदलता रहता। याद आते ही दो आसू बहा लेता, विवश होकर गुप्ता ने दूसरा विवाह कर लिया।

यह आत्म अनुभूति से दूर ले जाने वाला ससार के बन्धनो मे फसाने वाला प्रेम मार्ग है।

उपनिषद ने कहा—
पराच कामाननुयन्ति बाला मृत्यो-
यान्ति विततस्य पाशम।
अथ धीरा अमृतत्व विदित्वा ध्रुवम
ध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते।

(पदाथ) जो (बाला) अज्ञानी पुरुष (पराच) बाह्य पदार्थो के सयोग से उत्पन्न हुए (कामान) विषय वासनाओ के (अनुयान्ति) पीछे भागते हैं (तो) वे (विततस्य, फैले हुए (मृत्यो) मृत्यु के (पाशम) पासो के (यान्ति) प्राप्त होते हैं (अथ) और (धीरा) विवकी पुरुषो (ध्रुवम) निश्चन (अमृतत्व) मोक्ष को (विदित्वा) जानकर (इह) यहा (अध्रुवेषु) अनित्य पदार्थो मे सत्व को (न प्रार्थयन्ते) नही चाहते।

भावार्थ—अज्ञानी पुरुष इन्द्रियों और विषयों के संयोग होने पर वासना रूप रस्सी से आकर्षित हुए उन पर दृढ़ हो जाते हैं परन्तु वे मृत्यु के बन्धन में जो इन विषयों के अन्तरगत फैला हुआ है, उन पक्षियो के समान जो दाने के लालच से शिकारी के जाल में फस जाते हैं उनको कुछ दिखाई नहीं देता।

परिणाम यह होता है कि वे मृत्यु के बन्धन में बार-बार पड़ते हैं परन्तु विवेकी पुरुष जो विवेक की दृष्टि से इसके परिणाम को जानते हैं वह संसार के इन अनित्य पदार्थों में जिनमें सुख का किञ्चित मात्र आभास नही और वास्तविक सुख नहीं। अलग रहते। उस परम पिता परमेश्वर के जानने का यत्न करते हैं। यहा कुछ भी भय शोक नहीं। मोह नहीं है।

—

आर्य सामज रायकोट की गतिविधियां

पिछले दिनों स्वामी गंगा गिरि महिला कालेज रायकोट मे वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पूज्य महात्मा प्रेम भिक्षु जी ने हवन-यज्ञ बहुत प्रेम से करवाया तथा कन्याओं को सुन्दर शब्दों में आशीर्वाद दिया। प्रि, महोदय ने बालिकाओ को अनुशासन, देशभक्ति और मानवता का सन्देश बहुत प्रभावी ढग से दिया और इसके बाद प्रीति भोजन हुआ।

दूसरे दिन प्रेम मारकीट रायकोट में श्री सुरेन्द्र कुमार जी पासी ने अपनी नई दुकान का उद्घाटन समारोह आर्य परम्परा से किया। महात्मा प्रेम भिक्षु जी ने बहुत ही प्रेम से सारा कार्य सम्पन्न कराया। मास्टर सतीश जी ने हवन यज्ञ के महत्व के बारे में प्रकाश डाला। इस महत्व को सुनकर काफी लोग प्रभावित हुए। श्री सुरेन्द्र कुमारजी ने आर्य समाज रायकोट को एक सीलिंग पखा दान में दिया। कार्यक्रम काफी प्रभावशाली रहा।

—जयप्रकाश
मन्त्री आर्य समाज रायकोट

पश्चातापाष्टक

ले.—कवि कस्तूरचन्द जी 'घनसार' कवि कुटीर,
पीपाड़ शहर (राज.)

(1)

क्या होगा इस आर्यवर्त में, आगे फिर अवलोकें ।
वर्तमान में चले चोर बल, चले ज्वाला के झोंके !
विलासता में डूब गये हैं होश भुलाकर डोलें !
अधर्म करें अनीति दल-दल चोर-चोर को तोलें !

(2)

वतन भूलकर बैठे निर्भय सुख में दशा भूलाये !
अत्याचार देश में बढ़ते शोक सिन्धु उमड़ाये !
मानवता सब डूब गई है दानव तरते जाते !
स्वार्थवादी मौज मांणते और नजर नहीं आते !

(3)

भरे उड़ान गगन के ऊपर पहुंचे इन्दु परे हैं !
अपने का सब दोष भुलाकर मन-मुख पाप करे हैं !
अंधकार भरते जाते हैं कौन ? सुने अब इसको !
जो भारत का सच्चा सेवक दशा न देखे जिसकी !

(4)

राम-राज्य का शासन चाहें गाते गीत चले हैं !
अत्याचार की बढ़ी है ज्वाला जिसमें दीन जले हैं !
होड़ लगाय रखी है अपनी कौन ? बढ़े हैं आगे !
किन्तु न देते ध्यान देश पर स्वार्थ प्यारो लागे !

(5)

बलात्कार बालाएं साथे करते दुष्ट न लाजे !
घोर अन्याय देश में होते कैसे ? भारत राजे !
प्रतिदिन हत्याएं होती हैं मानव करते आजे !
लूट-खोस की ज्वाला भभकी बम्ब वारी बरसाजे !

(6)

जबतक खलों को दण्ड न मिलता तब तक होगी हानि !
लाख उपाय अन्य जो कर लें न छोड़े मन मानी !
देश विराना हो जाएगा प्रबन्ध पहले कर लें !
'वय राष्ट्रे जागृयाम होके वीर भाव उर भर लें !

(7)

'सत्यमेव जयते नानृतम' हो असुर अन्याय हटा दो !
पापाचार रहा है बढ़ता इसको शीघ्र मिटा दो !
बहिन बेटियों की हो इज्जत क्योंनी शक्ति जागे !
ठेकेदार धर्मों का बैठा देख रहा है आगे !

(8)

होता है अधर्म भारत में लूट रहे हैं दुष्टी !
चलो वीर दल मिल के सारे मारें वज्र सी मुष्टी !
केवल धर्म की बातें करनी इन्हें धर्म न मानो !
'घनसार' देशहित तन-धन दे दो धर्म यही पहिचानो !

—

परोपकार की महत्ता

ले.—श्री द्वारकानाथ जी वासुदेव फगवाड़ा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह प्रतिक्षण दूसरों से सहायता और उपकार ग्रहण करता है। जीवन यात्रा सम्बन्धी उसकी कोई बात भी ऐसी नहीं: जिसे वह दूसरों से निरपेक्ष होकर कर सके। अत: उसे भी दूसरों की सेवा और सहायता अवश्य ही करनी चाहिए। इस विषय में महर्षि दयानन्द ने कितने मार्मिक शब्दों में लिखा है—यदि अपना भला ही करना उद्देश्य है तो मनुष्यता क्या हुई अपने लिए जीने का भाव जो गधों में भी पाया जाता है। पशु मात्र अपने लिए ही जीता है। परोपकार और पर-हित साधना का नाम ही मनुष्यत्व है।

अपने अमर ग्रन्थ में लिखते हैं जैसे परमेश्वर ने सब प्राणियों के सुख के लिए इस जगत् में सब पदार्थ रचे हैं वैसे मनुष्य को भी परोपकार करना चाहिए। गोकरुणानिधि में लिखा है—देखो-परमात्मा का स्वभाव कि जिसने सब विश्व और पदार्थ परोपकार ही के लिए रच रखे हैं। वैसे तुम भी अपना तन मन-धन परोपकार ही के लिए अर्पण करो। सूर्य-चन्द्रमा को देखो। दिन-रात उपकार करते हैं। सूर्य ताप देता है। रोग वाले कीटाणु मारता है। वर्षा लाता है। चन्द्रमा हृदय को प्रसन्न करता है। औषधियों की जड़ों को रस देता है पुष्याभि औषधि सर्वा सोमो भूत्वा रसात्मक: (गीता)

पशु-पक्षी वनस्पतियां भी उपकार करती हैं अत: ऐ मानव तू भी परोपकार कर। यो वै सामर्थ्ययुक्तश्चनोपकरोति वै। तत्सामर्थ्यं भवेद् व्यर्थ परत्र नरकं व्रजेत (शिवपुराण) सामर्थ्ययुक्त होने पर भी जो परोपकार नहीं करता वह कीट-पतंग आदि में जन्म लेता है।

एक कवि ने ऐसे कहा है—

अधिकारपदं प्राप्य नोपकारं करोति य: ।
अकारो लोपमात्रेण ककार द्वित्वतां व्रजेत ।

जो अधिकार पद को पाकर भी परोपकार नहीं करता है उसके जीवन को धिक्कार है।

परोपकार की महत्ता पर बल देते हुए स्वामी विवेकानन्द लिखते हैं—

हम यह निश्चित जान सकते हैं कि हम एक न एक दिन अवश्य मरेंगे और जब ऐसा है ही तो फिर किसी सत्कार्य के लिए हम क्यों न मरें। हमें चाहिए कि हम अपने सारे कार्यों को जैसे खाना-पीना सोना, उठना-बैठना आदि सभी आत्म त्याग की ओर लगा दें। भोजन द्वारा तुम अपने शरीर की पुष्टि करते हो। परन्तु उससे क्या लाभ हुआ यदि तुमने उस शरीर को दूसरों की भलाई के लिए अर्पण न किया ? इसी प्रकार तुम पुस्तकें पढ़कर अपने मस्तिष्क को पुष्ट करते हो। परन्तु उससे कोई लाभ नहीं। यदि समस्त संसार के हित के लिए तुमने उस मस्तिष्क को लगाकर प्राप्त ज्ञान व विद्या को दूसरों को न दिया। तुच्छ स्वयं के अभ्युदयार्थ यत्न करने की अपेक्षा यह श्रेष्ठ है कि तुम अपने करोडों भाईयों की सेवा करते रहो।

हे मानव ! प्रतिदिन विचार कर कि क्या तुमने उपकार या परहित का कोई काम किया है! उपकार करो और भूल जाओ।

—

अंग्रेजी भाषा की 'समृद्धि' का रहस्य

भारत के उपराष्ट्रपति महोदय श्री वैंकटरमन ने पिछले दिनों अपने अंग्रेजी और धर्म निरपेक्षता प्रेम का परिचय एक बड़े विचित्र प्रस्ताव के साथ दिया। उन्होंने यह सुझाव दिया कि राष्ट्रीय एकता और संगठन के हित में बच्चों को ए फार अल्लाह बी फार बुद्ध और सी फार क्राइस्ट की शिक्षा दी जानी चाहिए और ए फार एप्पल, बी फार बॉय और सी फार कार के पाठों को वर्णमाला की पुस्तकों से निकाल देना चाहिए।

पता नहीं, कितने लोग श्री वैंकटरमन के इस दिलचस्प सुझाव का समर्थन और स्वागत करेंगे, लेकिन इस बात से यह तो स्पष्ट हो ही गया है कि अंग्रेजी काफी मजेदार भाषा है, और उसका इच्छानुसार तोड़-मरोड़ कर अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

अपनी पूंजी के नाम पर अंग्रेजी के पास अपने मूल शब्दों की संख्या बहुत कम है, और उसने अपने अधिकांश शब्द विश्व की अन्य भाषाओं से ही लिए हैं। इस बारे में भारतीय भाषाओं का योगदान भी कम नहीं है। एक नव-प्रकाशित पुस्तक 'कॉमन वर्ड्स इन इंग्लिश' के लेखक के अनुसार हाल ही में आक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश का जो नया संस्करण प्रकाशित हुआ है, उसमें उन 2000 से अधिक भारतीय भाषाओं के शब्दों का भी अतिरिक्त समावेश है। जिन्होंने पिछले कुछ दशकों में अंग्रेजी भाषा को और अधिक समृद्ध बनाया है। इन शब्दों में अनेक ऐसे शब्द भी शामिल हैं जिन्हें भारतीय भाषाओं में मामूली और गवारू माना जाता है। आइए ऐसे कुछ शब्दों की बानगी लीजिए और साहब लोगों की अक्ल और समझदारी की तारीफ कीजिए।

साहब लोगों ने चुप रहो, पुकारो बनाओ को बन्वाओ खराब बात को कैंब रेट कागज को कागोज बाना पहना कर अपनाया है तो दिक्कत चार सौ बीस, 'बाबू' 'कुछ परवाह नहीं' को हुक्म, जैसे शब्दों को भी शब्दों का दर्जा देकर अपनी भाषा में शब्दों की वृद्धि की है।

जो भारतीय हिन्दी भाषा को सिर्फ इसलिए कोसते रहते हैं कि उसमें उपयोगी शब्दों की कमी है उन्हें कम से कम अंग्रेजी का बेहद इस्तेमाल करने वाली, श्रीमती इन्दिरा गांधी के इस कथन की याद दिलाना चाहेंगे, हिन्दी का शब्द भंडार विपुल है, लेकिन उसका लाभ हम रोजमर्रा की जिन्दगी में उसके शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग करके ही उठा सकेंगे।"

—सदाजीवतलाल
भारत कल्याण प्रतिष्ठान उपाध्यक्ष

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाए

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में प्रवेश आरम्भ

ब्राह्मण-संस्कृति के चलाने वाले गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय हरिद्वार में छः वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु के बालकों का प्रवेश प्रारम्भ। प्रवेश एक जुलाई से 31 जुलाई तक होगा।

विद्यालय का विशाल प्रांगण बालकों के खेल तथा सामूहिक व्यायाम के लिए आदर्श स्थान है। योग्य अध्यापकों द्वारा अंग्रेजी विज्ञान सामान्य ज्ञान, संगीत शिल्प एवं संस्कृत धर्म शिक्षा आदि आधुनिक तथा प्राचीन विषयों की समुचित व्यवस्था शिक्षा निःशुल्क पूर्ण जानकारी के लिए पांच रुपए का मनीआर्डर भेजकर नियमावली प्राप्त करें।

सहायक मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार
पो. आ. गुरुकुल कांगड़ी
जिला सहारनपुर (उ.प्र.)

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जनहित प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन न. 74250 रजि. न. पा. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अक 12, 17 आषाढ़ सम्वत् 2042, तदनुसार 30 जून 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये

अपनी शक्ति सामर्थ्य को पहचानो

ले.—आचार्य शिवराज जी शास्त्री ,एम. ए. मौलवी फाजिल

स्वय वानिनस्तन्वं कल्पयस्य स्वयं यजस्य स्वय जुषस्व ।
महिमा तेऽन्येन न सनशे ।

(यजुर्वेद 23-15

पदार्थ—(स्वय) अपने आप ही (वाजिन) समर्थ व शक्ति युक्त आत्मा (तन्व) अपने शरीर व सासारिक कार्यों का विस्तार कर (स्वय यजस्व) अपने यज्ञ का स्वय ही ब्रह्मा बनकर जीवन यज्ञ को सफल बना, (स्वय जुषस्व अपने पुण्य अथवा पापमय कर्मों का स्वय ही भोगकर लाभ उठा।

(महिमा ते) तू महान् है तेरी महिमा (अन्येनन सनशे)
किसी और के द्वारा तुझे प्राप्त नही हो सकती ।

प्रभु प्यारे की सृष्टि मे यों तो प्रत्येक वस्तु मूल्यवान् है उपयोगी है व ऐसी है जो अपने रचयिता का गुणगान कर रही है। सूर्य, चन्द्र का बनाने वाला कोई साधारण शक्ति वाला नहीं है। उसका वर्णन ससार के सभी ग्रन्थो मे किया गया है। परमात्मा के बनाए पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए सारे ससार के विद्वान दिन-रात परिश्रम कर रहे हैं फिर भी उनका पार पाने मे समर्थ नही हो सके। हजारो, लाखो ग्रन्थ प्रभु की रचना चातुरी के वर्णन मे रचे गए हैं। परन्तु स्वय मनुष्य जो प्रभु की सर्वोत्तम रचना है उसे अपने स्वरूप का सम्यक् ज्ञान न होने से वह भटक रहा है। सभी मन्दिरो मे जाकर अपने कल्याण की कामना सासारिक देवी देवताओ से करता है। किसी भगवान् के ही बनाए हुए महापुरुषों से अपने कल्याण की याचना करता है। वह स्वय मे क्या है इसका उसे ज्ञान ही नही हो पाता है, उसके शरीर रूपी महास्थ में जो विचित्र-विचित्र पुर्जे प्रभु ने उसे ठीक प्रकार चलाने के लिए लगा दिए हैं। जिससे वह ससार के बडे बडे अद्भुत कार्य भी कर लेता है वह किसने बनाए हैं कैसे बनाए हैं, इसका उसे कोई ज्ञान नहीं हो पाता है। ससार भर के ज्ञान का भण्डार मनुष्य के इसी शरीर मे रहता है। हजारों लाखों पुस्तकों के स्मृति चित्र भी मानस के मस्तिष्क पटल पर अकित होते रहते हैं। मनुष्य के शरीर के रूप मे परमात्मा ने एक ऐसी अद्भुत मशीन बनाई है जिसका विकल्प ससार की कोई मनुष्य निर्मित मशीन नहीं हो सकती। आज कम्प्यूटर की बहुत चर्चा है परन्तु कम्प्यटर भी तो मानव की बुद्धि स्मृति की एक छाया मात्र है। अपने आप मे उसका कोई उपयोग नही। वह स्वय अपने ज्ञान का विश्लेषण नही कर सकता। केवल मनुष्य को यह सत्ता शक्ति व साधन मिला है जिसके आधार पर प्रभु प्यारे का यह समस्त ससार चल रहा है।

मनुष्य ससार की खोज मे खोया है। कभी अपने अन्दर नही झाकता कि वह स्वय क्या है इसी उच्च भाव का ज्ञान कराने व ले उत्तम वेद मन्त्र मे परमात्मा ने मनुष्य को उसकी अपनी महानता का बोध कराया है। प्रभु कहते हैं—

मनुष्य मैंने तुझें असाधारण शक्ति का बनाया है। विश्व भर का सम्राट् बनने की क्षमता यदि किसी मे है तो वह मनुष्य देह धारी प्राणी मे ही है। बडे-बडे कल कारखाने, उद्योग धन्धे ससार की सारी विशाल ईमारतें, भव्य स्मारक सभी की रचना का मूल आधार इस मनुष्य रूपी प्राणी की कल्पना व महानता का बखान कर रही है। अत मनुष्य प्रभु के इस महान् यज्ञ मे एक याजक है। प्रभु आदेश देते हैं तू स्वय ही अपने जीवन के कार्यों का विस्तार करता हुआ जीवन रूपी महान् यज्ञ को सफल बना। तुझे किसी और सहारे की आवश्यकता नही। सारा ससार तेरे लिए प्रभु ने बनाकर दिया हैं, तुझे तो केवल अपनी सत्ता का, अपनी शक्तियो का, अपने योग्यताओ का अपने बुद्धि का कौशल का, अपने लक्ष्य का, अपनी उपलब्धियो का अपनी क्षमताओ का बोध होना आवश्यक है। वह तुझे हो गया। तू सचेत सतर्क हो गया। तू स्वावलम्बी, स्वाभिमानी हो गया तो सारा ससार तेरे कदमो पर आ पडेगा। भाग्य के भरोसे से पडा मत रह। भाग्य तेरा न कुछ बना सकता है न ही बिगाड सकता है। परमात्मा भी तेरा मुह तक रहा है कि देखे यह मेरा अमृत पुत्र जीवन सग्राम मे कहीं निराश तो नही, कही थक तो नही गया है। तेरी मदद के लिए उसने क्या नही दिया, तू ससार मे भाग्य की ठोकरें खाने के लिए नही भेजा गया। भगवान् स्वय तेरी आज्ञा तेरी इच्छा पूर्ति के लिए हर समय तैयार रहता है परन्तु जब तू स्वय अपने को नही पहचानता अपनी शक्तियो को अपने स्वरूप को जानने तक की जिज्ञासा नही करता तो परमात्मा भी तेरा कल्याण चाह कर भी कैसे कर पाएगा।

अरे मानव !

खुदी को कर बुलन्द इतना,
कि हर तकदीर से पहले।
खुदा बन्दे से खुद पूछे
बता तेरी रजा क्या है ?

तू अपनी आत्मा को पहचान कर उसे इतना बलवान व इतना उच्च बना ले कि स्वय परमात्मा भी तेरे भाग्य का निर्णय करने से पूर्व तुझ से स्वय पूछे कि ससार मे किस कार्य के लिए तेरी नियुक्ति करू जिससे तेरा मानव जीवन सफल हो सके। ऐसे श्रेष्ठ कर्म, ऐसे श्रेष्ट मार्ग का अनुसरण कर कि तू अपनी जीवन रूपी महायात्रा की किसी भी अन्य की सहायता के बिना ही सफलता पूर्वक सम्पन्न कर सके।

मानव जीवन की श्रेष्ठता सर्वोत्कृष्टता का इससे बडा प्रमाण पत्र और क्या हो सकता है। इसीलिए मानव के लिए आत्म बल, आत्म बोध, आत्म जागृति, आत्म चैतन्य नितान्त आवश्यक है। इसीलिए ऋषियो ने ज्ञानो मे श्रेष्ठतम ज्ञान को आत्म ज्ञान कहा है—

गीता मे ससार के माया जाल मे बधकर कर्तव्य हीन होकर जीने की इच्छा रखने वाले अर्जुन को इसीलिए योगीराज कृष्ण ने आत्म बोध कराने के लिए गीता का अमृतोपदेश दिया था जिसे पाकर अर्जुन अमर बन गया। विजयी बन गया अन्यथा बनवास व अज्ञातवास मे रहकर भिक्षाटन करने वाले अर्जुन को मानवीय इतिहास मे कहा स्थान मिलता, वह भी शत अज्ञात लक्षावधि राजपुत्रो की भान्ति इतिहास के किसी कोने मे गल सड कर मर जाता। आत्म ज्ञान ने ही दयानन्द को दयानन्द बनाया। गुरु विरजानन्द की कुटिया पर जब पूछा गया कि आगन्तुक तुम कौन हो तो ऋषि ने यही उत्तर दिया था कि मैं कौन हू यही जानने के लिए हो तो गुरु के चरणो मे आया हू। गुरु द्वारा आत्म बोध होने पर दयानन्द साधारण दयानन्द नहीं रहे वे महर्षि दयानन्द ब [illegible] वे विश्व विजयी विचारक बन गए। वे विश्व के अमर मार्ग दर्शक बन गए उनकी महानता को ऐसे पख लगे कि ससार के बडे से बडे विचारक भी उस ऊचाई तक नही पहुच पाते हैं।

(शेष पृष्ठ 6 पर

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला

आर्य समाज- उपलब्धियां, सीमाएं और अपेक्षाएं। दयानन्द सरस्वती के विचार—समय की कसौटी पर

ले.—डा. भवानीलाल जी भारतीय आचार्य व अध्यक्ष दयानन्द चेयर पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

(15 जून से आगे)

तथापि आर्य समाज ने यह अनुभव किया कि देश विविध कला-कौशल, उद्योग-धन्धों तथा व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से भी समृद्ध बनाना आवश्यक है। स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन काल में ही जर्मनी के प्रो. वाइज से पत्र-व्यवहार कर उससे प्रार्थना की थी कि वे इस देश के नवयुवकों को वहां रहकर कला-कौशल तथा नाना प्रकार के उद्योग व्यवसायों में प्रशिक्षित होने की सुविधा प्रदान करें। इसी प्रकार आर्य समाज द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं में भी छात्रों को नाना प्रकार के कुटीर उद्योगों की शिक्षा दी जाती रही। ये सब इस बात के प्रतीक हैं कि आर्य समाज का मानवी समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक, रचनात्मक तथा समग्र रहा है। आर्य समाज की अतीत काल में प्राप्त, उपलब्धियों का एक महत्वपूर्ण कारण भी यही था कि उसने मानवी विकास के सभी पहलुओं को स्पर्श किया था।

भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है आर्य समाज के प्रवर्तक दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम स्वराज्य का नारा दिया तथा यह घोषित किया कि स्वदेशी राज्य सर्वोपरि उत्तम होता है, किन्तु विदेशियों का राज्य चाहे माता-पिता के समान हितकारी ही क्यों न हो हमारे लिए कभी काम्य नहीं हो सकता। आर्य समाज ने राष्ट्रीयता का नारा उस समय बुलन्द किया जबकि राष्ट्रीय महा सभा (कांग्रेस) का जात कर्म भी नहीं हुआ था। जिस समय कांग्रेस के अधिवेशनों में महारानी विक्टोरिया की दीर्घायु कामना के प्रस्ताव स्वीकृत होते थे और विदेशी शासन से भारतीयों को प्रशासन सेवाओं में अधिक स्थान दिए जाने की प्रार्थनाएं की जाती थीं, उस समय आर्य समाज के व्याख्यान मंचों से स्वराज्य, स्वाधीनता और स्वदेशी का गौरव गान किया जाता था। स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग के लिए स्वामी दयानन्द ने अपने सम्पर्क में आने वाले भक्तों और शिष्यों को सदा प्रेरणा दी थी। लाहौर आर्य समाज के प्रथम प्रधान लाला मूलराज तथा मन्त्री लाला साईं दास स्वदेशी वस्त्रों तथा स्वदेश में बनी वस्तुओं के प्रयोग के कट्टर समर्थक थे।

स्वामी दयानन्द प्रतिपादित राष्ट्रवाद का ही यह परिणाम था कि कालान्तर में मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने के लिए श्याम जी कृष्ण वर्मा ने लन्दन में इण्डिया हाउस की स्थापना की तथा विनायक दामोदर सावरकर, लाला हरदयाल, मदनलाल धींगड़ा, जैसे क्रान्तिकारियों को स्वाधीनता यज्ञ में आत्माहुति देने की प्रेरणा मिली, जब यही क्रान्तिकारी विचारधारा भारत में फैली तो सरदार भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, सोहनलाल पाठक, गेंदालाल दीक्षित, ठाकुर रोशनसिंह आदि न जाने कितने आर्य समाजियों ने उसमें दीक्षा ली और देश को स्वतन्त्र कराने के लिए आत्म बलिदान किया। स्वाधीनता के इस संग्राम में आर्य समाज का निर्णायक योगदान रहा है।

इसी प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द आदि देशभक्तों का प्रेरणा स्रोत भी आर्य समाज ही रहा है। महात्मा गांधी जिस समय दक्षिण अफ्रीका में अपने सत्याग्रह संग्राम को सफलतापूर्वक चलाने के पश्चात् भारत आए तो यहां आर्य समाजों में व्याप्त राष्ट्रीय भावनाओं को देखकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई थी। 1920, 30, 32 तथा 42 के सभी आन्दोलनों में आर्य समाजियों ने सहस्रों की संख्या में भाग लिया तथा असहयोग. सविनय, अवज्ञा, नमक आन्दोलन तथा भारत छोड़ो आदि आन्दोलनों में कारागार की यातनाएं भोगीं। आर्य समाज की राष्ट्रीय भावना के प्रति अंग्रेजी सरकार सदा से शंकाशील रही। ब्रिटिश सरकार का गुप्तचर विभाग आर्यसमाज की कार्य पद्धति तथा उसकी प्रचार प्रणाली को बहुत गहराई से देखता था। आगे चलकर पटियाला राज्य में आर्य समाजियों पर सरकार के खिलाफ षड्यन्त्र करने का आरोप लगाकर मुकद्दमा चलाया गया। महात्मा मुन्शीराम ने इस अभियोग में आर्य समाज का पक्ष लेकर यह सिद्ध किया कि स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों में राष्ट्र के प्रति त्याग एवं समर्पण का भाव तो अवश्य विद्यमान है अतः आर्य समाजियों का राष्ट्र धर्म में दीक्षित होना न तो अपराध ही है और न पाप। आज इतिहास इस तथ्य को पूर्ण रूप से स्वीकार कर चुका है। कि भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य समाज का संस्थागत योगदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण और मूल्यवान् रहा है।

स्वामी दयानन्द और आर्य समाज ने हिन्दी का राष्ट्र भाषा के पद पर प्रतिष्ठित कराने में अपना उल्लेखनीय सहयोग दिया है। आर्य समाज के प्रवर्तक ने अपनी सूक्ष्मदर्शिता से यह अनुभव कर लिया था कि जब तक भारतवासी हिन्दी को अपनी सामान्य सम्पर्क भाषा स्वीकार नहीं कर लेंगे और विचारों के आदान-प्रदान के लिए विदेशी भाषा पर ही निर्भर रहेंगे तब तक उनमें सच्ची राष्ट्रीयता का विकास नहीं होगा। इसलिए स्वामी जी ने स्वयं तो अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए हिन्दी का प्रयोग किया ही अपने अनुयायियों को भी आदेश दिया कि वे अपने पारस्परिक विचार व्यवहार में आर्य भाषा का प्रयोग करें। इसका परिणाम यह निकला कि आर्य समाज के माध्यम से जो साहित्य प्रणीत हुआ उससे हिन्दी के ज्ञानमूलक तथा रसात्मक दोनों प्रकार के वाङ्मय की अभूतपूर्व अभिवृद्धि हुई। हिन्दी पत्रकारिता को आर्य समाज ने एक नवीन आयाम दिया। हिन्दी प्रचार का यह कार्य इस देश की सीमाओं तक ही आबद्ध नहीं रहा। अफ्रीका, मारिशस, फिजी, गायना, सुरीनाम आदि आदि विदेशी उपनिवेशों में बसने वाले भारतवासियों में हिन्दी का प्रचार करने का श्रेय भी आर्य समाज को ही है। आर्य समाज का हिन्दी से भी अधिक सम्बन्ध संस्कृत भाषा से है। स्वामी दयानन्द स्वयं संस्कृत के प्रौढ़ विद्वान् थे। उपदेशक काल के प्रारम्भिक दिनों में वे संस्कृत को ही अपने विचार विनिमय तथा शास्त्र चर्चा का माध्यम बनाते रहे। उनकी अधिकांश ग्रन्थ रचना भी संस्कृत में हुई है। इस प्रकार संस्कृत के महत्व को पुनः प्रतिपादित कर आर्य समाज ने यह सिद्ध कर दिया कि नवजागरण की प्रेरणा के लिए संस्कृत भाषा और साहित्य का पुनरुद्धार अत्यन्त आवश्यक है।

आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में जो सफलता अर्जित की है वह तो भारतीय शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अध्याय ही बन चुका है। स्वामी दयानन्द स्वयं एक सफल शिक्षा शास्त्री थे। शिक्षा विषयक उन्होंने अपने सूत्रों को सत्यार्थ प्रकाश संस्कार विधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, व्यवहार भानु: संस्कृत वाक्य प्रबोध तथा वेद भाष्य में यत्र तत्र कहीं विस्तार पूर्वक तो कहीं संक्षेप से संकलित किया है। आगे चलकर आर्य समाज ने डी. ए. वी. शिक्षा संस्थाओं तथा गुरुकुल पद्धति के द्वारा भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रवर्तन किया।

स्वामी दयानन्द अनुभव करते थे कि भारत की शिक्षा नीति में संस्कृत तथा हिन्दी जैसी भाषाओं को प्रमुख स्थान मिलना चाहिए। उन्होंने स्वयं अपने जीवन-काल में अनेक शिक्षण संस्थाएं प्रारम्भ कीं परन्तु जब अनुभव किया कि इससे यथेष्ठ काम नहीं हो रहा है तो उन्हें बन्द करना ही उचित समझा। स्वामी दयानन्द प्रतिपादित शिक्षा प्रणाली में गुरु शिष्य के निकट के सम्बन्धों पर सर्वाधिक बल दिया गया है। साथ ही शिक्षा का आदर्श चरित्र निर्माण को माना गया है। उनकी धारणा थी विदेशी माध्यम से दी गई शिक्षा अधिक लाभकारी नहीं हो सकती। स्वामी दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट इसी सूत्र को लेकर गुरुकुल कांगड़ी में स्नातक स्तर की विज्ञान की शिक्षा को मातृभाषा के माध्यम से देने की व्यवस्था भी आज से 60-70 वर्ष पूर्व ही की जा चुकी थी आर्यसमाज ने जिस शिक्षा प्रणाली को प्रवर्तित किया उसमें धनी एवं दरिद्र की सन्तान के साथ तुल्य व्यवहार करने तथा पठन-पाठन में उन्हें एक सी सुविधाएं देने की बात कही गई है।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की शताब्दी (2)

इसी क्रम के पिछले लेख में मैंने आर्य प्रतिनिधि पजाब के महत्त्व के विषय में कुछ जानकारी दी थी और बताया था कि देश के विभाजन से पहले इस सभा की क्या स्थिति थी और विभाजन के बाद क्या बन गई। विभाजन से पहले आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब इस देश की एक शिरोमणि प्रांतीय सभा समझी जाती थी। दूसरे प्रान्तों की सभाएं इस के उपदेशकों व भजनीकों को अपने उत्सवों में बड़ी श्रद्धा से बुलाया करती थी। पंजाब के आर्य समाजी नेता दूसरे प्रान्तों में जाते थे व सर्वत्र उनकी धाक बैठी हुई थी। परन्तु 1947 के विभाजन ने सारा काम चौपट कर दिया। हमारे पास वहां अपना कोई कार्यालय भी नहीं था। उस समय कुछ लोगों ने यह सुझाव भी दिया कि इसका मुख्य कार्यालय देहली लेजाया जाए जैसा कि आर्य प्रादेशिक सभा और डी. ए. वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी अपने कार्यालय वहां ले गई। ऐसे पंजाबियों की भी बहुत बड़ी संख्या थी जो देहली में जाकर रहने लग गए थे और वहीं उन्होंने अपना काम-काज शुरू कर दिया था। इसलिए यह सुझाव दिया गया था कि पंजाब सभा का मुख्य कार्यालय देहली में ही खोला जाए परन्तु उस समय के आर्य नेता विशेषकर श्री महाशय कृष्ण, श्री पं. विश्वम्भर नाथ श्री पं. ठाकुर दत्त शर्मा, रा. ब. दीवान बद्री दास जी और दूसरे कुछ महानुभावों ने यही कहा कि सभा पजाब में ही रहनी चाहिए उस समय पजाब की जो स्थिति थी, उसमें एक ऐसे संगठन की आवश्यकता थी जो पंजाब के हिन्दुओं के हितों की रक्षा कर सके यह आर्य समाज के अतिरिक्त और कोई सस्था ऐसी नहीं थी, जालन्धर में कन्या महाविद्यालय व दुआबा कालेज जैसी संस्थाए भी थी जिन्होंने देश के नव-निर्माण में महत्त्वपूर्ण भाग लिया था और जिन्हे प्रारम्भ करने वाले आर्य समाज के शीर्षस्थ नेता थे। जालन्धर का एक और इतिहास भी है श्री स्वा. श्रद्धानन्द जी महाराज जालन्धर के ही रहने वाले थे। जालन्धर से 20 मील पर तलवन नामक गांव में ही इनका जन्म हुआ था और जब उन्होंने अपनी वकालत प्रारम्भ की थी तो वह जालन्धर में ही की थी। उन्होने व ला. देवराज सोंधी ने मिलकर कन्या महाविद्यालय की स्थापना की थी और आज से 100 वर्ष पहले उस समय की गई थी जब नारी शिक्षा का कोई नाम भी नहीं लेता था। रा. ब. दीवान बद्री दास भी जालन्धर के ही रहने वाले थे। महात्मा हंसराज का जन्म होशियारपुर के पास बजवाडा ग्राम में हुआ था, आचार्य राम देव जी ने भी अपनी शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् जालन्धर छावनी के एम. डी. विक्टर डायमंड सैकेण्डरी स्कूल के प्रिंसिपल के रूप मे काम शुरू किया था।

इस सारी पृष्ठभूमि को सामने रखते हुए यही निर्णय किया गया कि आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब का मुख्य कार्यालय पंजाब में ही वह भी जालन्धर में ही रखा जाए। जालन्धर से 50 मील दूर अमृतसर है वह भी आर्य समाज का एक बहुत बड़ा केन्द्र रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती कभी अमृतसर भी गए थे वहां के प्रसिद्ध सिखों ने भी आर्य समाज की स्थापना में उन्हें पूरा सहयोग दिया था। जालन्धर से 40 मील दूर लुधियाना है वह भी आर्य समाज का एक बहुत बड़ा केन्द्र रहा है महर्षि की विशेष स्मृतियां भी इस नगर के साथ रही है। आर्य समाज की कई शिक्षण संस्थाएं भी इस नगर में हैं। इस प्रकार जालन्धर एक केन्द्र स्थल बन गया था अतः आर्य प्रतिनिधिसभा का मुख्य कार्यालय भी जालन्धर में ही स्थापित किया गया। परन्तु जिन परिस्थितियों में हमने कार्य प्रारम्भ किया वह अत्यन्त ही निराशाजनक थी। हमारे पास कोई स्थान नहीं था जहां बैठकर हम अपना कार्य प्रारम्भ कर सकते। एक मुसलमान की कोठी, हम लाहौर में जो सम्पत्ति छोड़ आए थे उसके बदले में हमें मिल गई मगर वह भी टूटी-फूटी थी फिर भी हम किसी प्रकार वहां काम चलाते रहे। पिछले 20 वर्षों में आर्य समाज के आन्तरिक विवादों के कारण सभा के कार्यालय को जो क्षति पहुंची मैं आज इसे दुहराना नहीं चाहता वह आर्य समाज के इतिहास का एक अत्यन्त दुखद अध्याय है जिसे हम भूल जाए तो बहुत अच्छा। अब हम इसी भवन को फिर से बनाने का प्रयास कर रहे हैं परन्तु उसके लिए जितना धन चाहिए वह हमारे पास नहीं है। इस समय तक हमने 11 दुकानें बनाई है। 4 अतिथि भवन के कमरे बनाए हैं। और अब एक यज्ञशाला बनाने का प्रयास कर रहे हैं। परन्तु हमारी योजना बहुत बड़ी है। जो कुछ हम बनाना चाहते हैं वह बना लें तो यह भवन उत्तर भारत में आर्य समाज का एक बहुत बड़ा केन्द्र बन जाएगा। इसके लिए 10-15 लाख रुपए की आवश्यकता है। सभा के पास तो वह है नहीं। आर्य जनता ही दे सकती है। इसी आर्य प्रजा पर हम बैठे हैं। जो कुछ मिलता जाता है हम इस पर लगाते जाते हैं। अब आर्य जनता को सोचना चाहिए कि इस योजना के प्रति उनका क्या कर्त्तव्य है। उन्हें यह न भूलना चाहिए कि पंजाब में जो परिस्थितियां पैदा हो रही हैं उन में एक मात्र आर्य समाज ही ऐसा संगठन है जो हिन्दुओं की रक्षा कर सकता है। यह मैं अपने अनुभव के आधार पर कह रहा हूं क्योंकि मैंने प्रायः सब हिन्दू संस्थाओं के साथ काम किया है। और इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि आर्य समाज के अतिरिक्त और कोई ऐसी संस्था नही जो उन शक्तियों के सामने खड़ी हो सके जो हमारे धर्म का नाश व देश का विघटन करना चाहती हैं। इस से हमें क्या करना चाहिए इस विषय में आगामी अंक में कुछ निवेदन करूंगा।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज लन्दन का चुनाव

आर्य समाज लन्दन बहुत देर से इंगलैंड में आर्य समाज प्रचार का कार्य कर रही है इसका यह सौभाग्य है कि उसे समय-समय पर ऐसे महानुभाव मिलते रहते हैं जिन लोगों ने अपने आपको आर्य समाज के लिये समर्पित कर रखा है उन के द्वारा वहां आर्य समाज बहुत अच्छा काम कर रही है पिछले दिनों आर्य समाज लन्दन का चुनाव हुआ, इसमें भी श्री धर्मवीरपुरी प्रधान निर्वाचित हुए हैं। श्री कपिल देव प्रिजा तथा श्री जगदीश राम शर्मा उपप्रधान श्री प्रियव्रत चोपड़ा कोषाध्यक्ष व श्रीमती शकुन्त कुमारी कोछड़ मन्त्री चुने गये।

वैसे तो जो नये अधिकारी निर्वाचित हुए हैं वे सभी बहुत श्रद्धा लग्न वाले व आर्य समाज की सेवा करते रहे हैं। परन्तु मुझे सब से अधिक प्रसन्नता मन्त्री श्रीमती शकुन्त कुमारी कोछड़ के निर्वाचन पर हुई है मैं उन्हें अच्छी प्रकार जानता हूं और मुझे मालूम है कि आर्य समाज के लिए उनके हृदय में जितनी श्रद्धा व लग्न है उनका सारा परिवार आर्य समाज के लिये समर्पित है। उनके दो बच्चे हैं एक लड़का और एक लड़की दोनो आर्य समाज की गतिविधियों में सक्रिय भाग लेते हैं। बहुत अच्छा गाते हैं, बहुत अच्छा बोलते हैं उनकी माता ने उन्हें आर्यसमाज की सेवा के लिये तैयार किया है आर्य समाज लन्दन की मन्त्री निर्वाचित होने पर मैं अपनी ओर व अपनी सभा की ओर से बहन शकुन्त को हार्दिक बधाई देता हूं। हमारे लिए यह भी गर्व का विषय है कि वह जालन्धर की रहने वाली है और हंसराज महिला महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् अपने पति देव के साथ लन्दन चली गई थी। अब वहीं रह रही हैं। और अपना सारा समय आर्य समाज की सेवा में लगाती है परमात्मा उनके स्वास्थ्य को ठीक रखे और वह दीर्घायु होकर आर्य समाज की सेवा करती रहे। यही मेरी हार्दिक कामना है।

—वीरेन्द्र

सोलह संस्कारों के द्वारा "मानव-निर्माण"

(ले. श्री जगदीश चन्द्र जी "वसु" विद्यावाचस्पति, सिद्धान्तालंकार, पानीपत)

परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में तथा ऋषि महर्षियों ने मानव जीवन-निर्माण के लिये, शारिरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिये, या यूं कहिये कि सम्पूर्ण जीवन के विकास के लिए गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त सोलह संस्कारों का विधान किया है। जो मनुष्य की सम्पूर्ण आयु में व्याप्त हैं। इन संस्कारो का उद्देश्य गर्भधारण समय से मृत्यु पर्यन्त मनुष्य के शरीर, मन और आत्म को बलवान बनाना तथा उन पर उत्तम-उत्तम संस्कार व शुभ विचारों का प्रभाव डालना है। वेद भगवान ने कहा है कि :—

ओं भद्रं कर्णेभि. शृणुयाम देवा
भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा:।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा सस्तनूभिर्व्यशेमहि-
देवहितं यदायु: ॥

भावार्थ—हे दिव्य-शक्तीय, शक्तियों वाले परमेश्वर ? आपकी महान् कृपा से हम कानों से अच्छे वचन सुनें, आंखों से, अच्छे दृश्य देखें स्तुतिशील रहते हुए, दृढ़ अंगों, और दृढ़ शरीरों से जितनी दिव्य गुणों द्वारा स्थापित दीर्घ-आयु है, उसे प्राप्त कर, हम अपनी सम्पूर्ण आयु को परोपकार में व्यतीत करें। इस मन्त्र में जीवन को स्वस्थ पवित्र बनाने की तथा आयु को परोपकार में लगाने की प्रभु से कामना की गई है। मनुष्य अपने जीवन को स्वस्थ तथा पवित्र: और परोपकार में तभी लगा सकता है जब उसका सम्पूर्ण जीवन संस्कारों से युक्त होगा। मानव निर्माण का आरम्भ जन्म से नहीं अपितु गर्भ से आरम्भ हो जाता है। गर्भस्थ बालक पर वैसे ही संस्कार पड़ते हैं, जैसे कि नवजात शिशु पर अत: बालक को शुद्ध पवित्र एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए माता-पिता गर्भाधान के समय से ही सावधान हो जाए संस्कारों के क्रम को पुन: जीवित करने वाले, संस्कारों द्वारा इसी शताब्दि के महान् सेनानी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय सम्मुल्लास में लिखते है कि माता और पिता को अति उचित है कि गर्भाधान से पूर्व, मध्य, और पश्चात् मादक द्रव्य, मद्य, दुर्गन्ध, रूक्ष बुद्धिनाशक पदार्थों को छोड़ कर, जो शान्ति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करें वैसे घृत, दुग्ध, मिष्ट अन्नपान आदि श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करें, कि जिससे वीर्य, भी दोषो से रहित होकर अत्युत्तम, गुणयुक्त बालक हो"

जन्म से पूर्व माता-पिता को तीन संस्कार करने होते हैं—गर्भाधान, पुंसवन और सिमन्तोन्नयन संस्कार इन तीनों संस्कारों के करने से बालक स्वस्थ उत्पन्न होता है। बाल्यकाल में बालक के छ: संस्कार किये जाते हैं=जात का नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, मुण्डन (चूड़ाकर्म) और कर्णवेध संस्कार। इन छ: संस्कारों के करने से बालक के कोमल हृदय (अन्त:करण) पर उत्तम कल्याणकारी संस्कार पड़ते हैं। जब बालक विद्या पढ़ना आरम्भ करता है तो उसके दो संस्कार माता-पिता करते हैं उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कार इसमें बालक का उपनयन (यज्ञोपवीत) तथा विद्या पढ़ाना होता है। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द जी अपने ग्रन्थ संस्कार विधी में उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कार के सम्बन्ध में लिखते—कि अष्टमे वर्षे ब्राह्मणमुपनयेतं, गर्भाष्टमे वा, एकादशे क्षत्रियम्, द्वादशे वैश्यम्: अषोडशाद ब्राह्मणस्यानतीत: काल. आद्वाविंशात क्षत्रियस्य आचतुर्विंशाद वैश्यस्य अत: उर्ध्व पतित सावित्री का भवन्ति। यह आश्वालायन गृह्य सूत्र का प्रमाण है। अर्थात् जिस दिन जन्म हुआ हो अथवा जिस दिन गर्भ रहा हो उससे आठवें वर्ष में ब्राह्मण के जन्म या गर्भ से ग्यारहवें वर्ष में क्षत्रिय के और जन्म या गर्भ से बारहवें वर्ष में वैश्य के बालक का यज्ञोपवित संस्कार करें, (यदि कुछ कारणवश उपरोक्त समय में तीनों वर्णों के बालकों का उपनयन यज्ञोपवीत संस्कार न हो सके तो) तथा ब्राह्मण के सोलह वर्ष क्षत्रिय के बाईस और वैश्य के बालक का चौबीसवें वर्ष से पूर्व पूर्व यज्ञोपवीत होना चाहिए। यदि पूर्वोक्त काल में इनका यज्ञोपवीत न हो तो वे पतित माने जावें। अब रही वेदारम्भ की बात महर्षि जी लिखते हैं कि—वेदारम्भ उस को कहते हैं—जो गायत्री मन्त्र से लेके सांगोपांग (शिक्षा कल्प, व्याकरण निरुक्त छन्द ज्योतिष। उपांग पूर्व मीमांसा वैशेषिक न्याय योग सांख्य और वेदान्त। उपवेद आयुर्वेद धनुर्वेद गान्धर्ववेद और अर्थ वेद अर्थात शिल्पशास्त्र। ब्राह्मणग्रन्थ—एतरेय शतपथ साम और गोपथ! वेद ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद इन सब को क्रम से पढ़ें) चारों वेदों के अध्ययन करने के लिये नियम धारण करना। जो दिन उपनयन संस्कार का है वही दिन वेदारम्भ का है। यदि उस दिवस न हो सके अथवा करने की इच्छा न हो तो दूसरे दिन करें। यदि दूसरा दिन भी अनुकूल न हो तो एक वर्ष के भीतर किसी दिन करें। जब सांगोपांग वेदादि सत्य शास्त्रों को तथा नाना विद्याओं को सीख लेता है तब विद्या समाप्त करने पर दो संस्कार किए जाते हैं—समावर्तन और विवाह संस्कार। महर्षि लिखते हैं कि समावर्तन संस्कार उसको कहते हैं कि जो ब्रह्मचर्य व्रत सांगोपांग वेदविद्या उत्तम शिक्षा और पदार्थ विज्ञान को पूर्ण रीति से प्राप्त होके विवाह विधान पूर्वक गृहाश्रम को ग्रहण करने के लिए विद्यालय को छोड़कर घर की ओर आना। और विवाह उसको कहते हैं कि जो सन्तानोत्पति और अपने-अपने वर्णाश्रम के अनुकूल उत्तम कर्म करने के लिए स्त्री और पुरुष का सम्बन्ध होता है। भगवान मनु जी महाराज से किसी ने प्रश्न किया महाराज ने बड़े मार्मिक शब्दों में उत्तर दिया :—

वेदान धीत्य वेदौ वा वेदं वापि
यथा क्रमम्।
अविलुप्तब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममाविशेत् ॥

ब्रह्मचर्य से चार तीन दो अथवा एक वेद को यथावत पढ़ अखण्डित ब्रह्मचर्य का पालन करके गृहस्थाश्रम को धारण करे अन्यथा गृहस्थाश्रम को धारण न करें यदि धारण करेगा (गृहस्थी बनेगा) तो नाना दु:ख सागर में डूब जाएगा इसमें कोई सन्देह की बात नहीं है! यही मुख्य कारण है कि आज का गृहस्थी दु:ख सागर में पड़ कर नाना दु:ख भोग रहा आज हमने गृहस्थाश्रम के कल्याणकारी वास्तविक स्वरूप को भुला दिया है। गृहस्थाश्रम तो स्वर्गाश्रम है। परन्तु हमने इसे नरकाश्रम बनाया हुआ है।

पिछली अवस्था में तीन संस्कार किये जाते हैं। वानप्रस्थ सन्यास, तथा अन्त्येष्टि संस्कार है। "वानप्रस्थ संस्कार उसे कहते हैं. जो विवाह से सन्तानोत्पति करके पूर्ण ब्रह्मचर्य से एक सन्तान हो जाए अर्थात् जब पुत्र का भी पुत्र हो जाए तब पुरुष वानप्रस्थाश्रम अर्थात वन में जाकर खोई हुई शक्ति को अर्जित करता हुआ मुक्ति के साधनों को अपनायें। संन्यास संस्कार उसको कहते हैं कि जो मोहादि आवरण पक्षपात छोड़ के विरक्त होकर सब पृथिवी में परोपकारार्थ विचरण कर परमार्थ की ओर अग्रसर होकर राष्ट्र में फैले अविद्यान्धकार को दूरकर विद्या रूपी प्रकाश को सर्वत्र फैलाये। सन्यासी सब कुछ परित्याग कर दें. परन्तु वेद को न त्यागे। मनुष्य भगवान ने कहा है।

"सन्यसेत सर्वं कर्माणि वेदमेकम्न सन्यसेत"। 3

अन्तिम संस्कार है अन्त्येष्टि संस्कार अन्त्येष्टि कर्म उसको कहते हैं कि जो शरीर के अन्त का संस्कार है। जिसके आगे उस शरीर के लिए कोई भी अन्य संस्कार नहीं है। इसी को नरमेध, पुरुषमेध, नरयाग, पुरुषयाग भी कहते हैं। "भस्मान्त शरीरम्"1 निषेकादिश्मशानान्तो मन्त्रैर्यस्योदितो विधि"2 मनु इस शरीर का संस्कार "भस्मान्तम्" अर्थात् भस्म करने पर्यन्त है ॥1॥ शरीर का आरम्भ ऋतुदान और अन्त में श्मशान अर्थात मृतक कर्म है। इस संस्कार के पश्चात मनुष्य का अन्य कोई संस्कार नहीं होता। यह सोलह संस्कार हैं जो मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन में फैले हुए हैं। इन संस्कारों को पूर्ण शास्त्रीयविधि से करने से पूर्णतया मानव, मानव बनता है। संस्कार शब्द का अर्थ सम पूर्वक कृधातु से संस्कार शब्द सिद्ध होता है, सम का अर्थ है श्रेष्ठ (अच्छा), कृ का अर्थ है करना, अर्थात् अर्थात् अच्छा करना, योग्य एवं उपयोगी बनाना संस्कार कहलाता है। किसी वस्तु के दोष दुर करके उसमें उत्तम, उत्तम गुणों का प्रवेश करा देना संस्कार कहलाता है। साधारण लकड़ी अथवा लोहा को लीजिये, यह बाजार में साधारण मूल्य में मिल जाता है, परन्तु इसको यदि साफ सुथरा कर दिया जाए तो कुर्सी-मेजादि के रूप में शुद्ध होकर उसका मूल्य सौ गुणा बढ़ जाती है। इसी संस्कार से सोना कुन्दन बन जाता है, गृह गन्दा पड़ा है उसे साफ किया गया, लीपा-पोता गया, सुन्दर-सुन्दर चित्र लगा दिए गये। यह गृह का संस्कार हो गया। इस प्रकार के अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं।

बालक जब उत्पन्न होता है तो वह तीन प्रकार के संस्कारों से प्रभावित होता है। 1 पूर्व जन्म के संस्कार 2 माता-पितादि से मिले संस्कार 3 तथा बाह्य वातावरण के संस्कार। यदि बालक के यह तीनों संस्कार उत्तम है। तो बालक सुसंस्कृत बनता हुआ, अपने गौरव को बढ़ाता है। अन्यथा गौरव को मिट्टी में मिला देता है। संस्कारों से ही बालक द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) बनता है, कहा है कि "संस्कारात द्विज उच्यते" जन्म से सभी बालक (चाहे वह ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्र घर जन्म लेवें शूद्र होते हैं। संस्कारों से ही बालक उत्तम-उत्तम गुणों को धारण करता हुआ ही ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य बनता है। ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए बालक के यदि संस्कार उत्तम नहीं है तो वह ब्राह्मण नहीं अपितु शूद्र कहलायेगा। मनु जी महाराज ने कहा है कि—

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सरकार अकाली वार्ता में हिन्दुओं को विश्वास में लिया जाए

राज आर्य सभा पंजाब समस्या के हल के हर प्रयास का स्वागत करेगी—वीरेन्द्र

आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब के राजनीतिक फोर्म राज आर्य सभा ने अकाली दल के प्रधान सन्त हरचन्द सिंह लौंगोवाल के उन हाल के बयानों का स्वागत किया है जिनमें उन्होंने खुल कर पृथकतावाद तथा आतंकवाद की ओर आशा व्यक्त की है कि इससे पंजाब की समस्या हल होने में मदद मिलेगी।

सभा के प्रवक्ता श्री वीरेन्द्र ने आज यहां एक प्रेस कान्फ्रेंस को सम्बोधित करते हुए प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की उस घोषणा का समर्थन किया कि पंजाब की समस्या देश के संविधान के अन्दर रह कर हल की जा सकती है।

श्री वीरेन्द्र ने कहा कि अकाली दल और सरकार दोनों में से कोई भी पंजाब समस्या के समाधान का प्रयास करेगा, राज आर्य सभा इन सभी प्रयासों का पूर्ण समर्थन करेगी। परन्तु सभा यह अवश्य चाहती है कि इन दोनों की ओर से ऐसा जो भी प्रयास किया जाए उस में पंजाब के हिन्दुओं को पूर्ण विश्वास में लिया जाए।

सभा प्रधान ने कहा कि पंजाब की समस्या केवल सिखों से सम्बन्ध नहीं रखती अपितु हिन्दू और सिख दोनों पूरी तरह उससे जुड़े हुए हैं जिसका प्रमाण यह है कि विगत तीन वर्षों से हिन्दुओं को आतंकवादियों की ओर से गोलियां का निशाना बनाया जाता रहा इसके बावजूद उन्होंने पंजाब नहीं छोड़ा. क्योंकि उनका जीवन और मरण इसके साथ पूरी तरह सम्बद्ध है।

स्वाभाविक रूप में हिन्दू भी पंजाब की उन्नति, समृद्धि और शान्ति के इतने ही इच्छुक है, जितने कि अकाली मित्र स्वय को समझते हैं इसलिए वह किसी स्थिति में भी पंजाब से बाहर नहीं जाएंगे जैसाकि 1947 में इन्होंने किया था।

श्री वीरेन्द्र ने यह बात दोहराई कि राज आर्य सभा देश की स्वतन्त्रता, अखण्डता और स्वायतत्ता को कोई भी आंच नहीं आने देगी। इसलिए वह संविधान के दायरा के भीतर पंजाब की समस्या के समाधान के लिए हर सम्भव सहयोग देने को तैयार हैं।

एक प्रश्न के उत्तर में श्री वीरेन्द्र ने कहा कि जहां अकाली दल सिखों की प्रतिष्ठा की बहाली की मांग करता है उसी तरह पंजाब के हिन्दुओं की प्रतिष्ठा को भी विगत तीन चार वर्षों से चुनौती दी जाती रही और सिखों के प्रति उनके विश्वास को डावांडोल किया गया है। इसलिए पंजाब समस्या को हल करते हुए इस बात को भी ध्यान में रखना होगा कि पंजाब में हिन्दुओं का भी व्यापार और विश्वास बहाल हो।

श्री वीरेन्द्र ने आतंकवादी गुरिन्द्र सिंह गिरोह के साथ सन्तोखसिंह रंधावा के सम्बन्धों के बारे प्रकाशित समाचारों की चर्चा करते हुए प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से मांग की कि वह इस मामला को श्री रंधावा के त्याग पत्र दे देने के बाद निपटा गया न समझे अपितु इसकी उच्च स्तर पर निष्पक्ष जांच कराएं ताकि लोगों के दिलों में इस बारे में उत्पन्न आशंकाएं दूर हो सकें कि यह आरोप कहां तक सत्य और कहां तक गलत है।

श्री वीरेन्द्र ने राष्ट्रीय सुरक्षा एक्ट के अधीन सभी गिरफ्तार हिन्दू नौजवानों की रिहाई की भी मांग की।

शोक समाचार

धूरी जिला आर्य सभा संगरूर के मन्त्री श्री मनोहरलाल जो खुराना के पिता महाशय गुरुदत्त जी 6 जून को प्राण त्याग गए हैं। आप अहमदगढ़ आर्य समाज के स्तम्भ थे। आप बड़े ही श्रद्धालु आर्य सज्जन थे। उनके चले जाने से आर्य समाज अहमदगढ़ को बड़ा धक्का लगा है प्रभु की इच्छा है भगवान् से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे. और परिवार को सहन शक्ति दे।

आर्य प्र. नि. सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

एयर इण्डिया के विमान के दुर्घटना ग्रस्त हो जाने से 325 व्यक्ति मारे गए ऐसी दुर्घटना इससे पहले हमारे देश में कभी नहीं हुई। जिन व्यक्तियों ने यह सब कुछ किया, उनकी पाशविकता व क्रूरता की जितनी भी निन्दा की जाए. वह कम है। हमारे देश में उग्रवाद अब सब सीमाओं को पार कर गया है। जनता का ध्यान इस नई विपत्ति की ओर दिलाने की आवश्यकता है। इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सब आर्य समाजें रविवार 30 जून को प्रार्थना दिवस मनाएं। उस दिन साप्ताहिक सत्संग में हवन-यज्ञ के पश्चात् उन दिवंगत आत्माओं की सद्गति के लिए प्रार्थना की जाए, जो इस दुर्घटना में मारे गए हैं। इसी के साथ जनता का ध्यान उग्रवाद के बढ़ते हुए संकट की ओर भी दिलाया जाए और अपने देशवासियों से भी कहा जाए कि वह इस नए संकट का मुकाबला करने के लिए अपने आपको तैयार करें। स्थिति अत्यन्त शोचनीय और भयानक होती जा रही है: हम सब की ओर से आंखें बन्द करके नहीं बैठ सकते।

वीरेन्द्र — सभा प्रधान

कमला आर्या — सभा महामन्त्री

सचित्र श्री कृष्ण ट्रैक्ट का विमोचन

नई दिल्ली विगत 27 मई को श्री कृष्ण महान् योगी, विद्वान् तथा ईश्वर के परम भक्त थे। रुक्मणि उनकी एकमात्र धर्म पत्नी थी और राधा या 16 हजार रानियों से इनका कोई सम्बन्ध न था। यह उद्गार शास्त्रार्थ महारथी व आर्य समाज के वयोवृद्ध संन्यासी महात्मा अमर स्वामी जी महाराज ने आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग में 'लोक नायक श्री कृष्ण. पुस्तिका का विमोचन करते हुए कहे।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश व लाला रामचन्द्र धर्मार्थ ट्रस्ट नया बाजार ने युवा पीढ़ी के चरित्र-निर्माण के लिए महापुरुषों पर सचित्र जीवनियां प्रकाशित करने की योजना बनाई है। 25 रुपये सैंकड़ा 200 रुपये हजार. 26 पृष्ठीय (मुख्य पृष्ठ 2 रंग सहित) निम्न पते से मंगाएं।

—लाला रामचन्द्र अनाज वाले
धर्मार्थ ट्रस्ट 4058
नया बाजार दिल्ली-6

आर्य समाज लन्दन का वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज लण्डन का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से दिनांक 18-4-85 को श्री सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अन्तरंग सभा के पदाधिकारी एवं सदस्य निम्नलिखित निर्वाचित हुए—

प्रधान—श्री धर्मवीर पुरी. उप-प्रधान—श्री कपिलदेव प्रिन्जा तथा श्री जगदीश राम शर्मा. मन्त्री—श्रीमती शकुन्त कुमारी कोछड़, उपमन्त्री—श्री राजेन्द्र कुमार ओबराय तथा श्री ओम् प्रकाश सोनी. कोषाध्यक्ष—श्री प्रियव्रत जी चोपड़ा, प्रचार मन्त्री पी. आर. ओ, —श्री अमरनाथ गिरधर, पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती शकुन्तला शर्मा, लेखा परीक्षक—आडीटर) —श्रीमती प्रेम लता सोनी,

अन्तरंग सदस्य—

श्रीमती सावित्री छाबड़ा, श्री फकीरचन्द सुमरा, श्री महिन्द्र वीर पलाना, श्री धर्मपाल भसीन' श्री प्रेम सुख शर्मा, श्रीमती वेदवती शर्मा,

नियुक्त सदस्य—

श्री यशदेव प्रिन्जा तथा श्री भरतभूषण शर्मा।

ट्रस्ट—प्रो. सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज तथा श्री फकीर चन्द मायर।

—मन्त्री

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन डर्बन (दक्षिण अफ्रीका) सम्बन्धी सूचनाएं

वेद निकेतन डर्बन के प्रधान पं. नरदेव विद्यालकार ने दक्षिण अफ्रीका में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के सम्बन्ध मे निम्न सूचनाएं हमें प्रकाशनार्थ भेजी हैं। तदनुसार वहां पहुंचने वाले दर्शकों के लिए 30 दिन की बजाय 20 दिन ठहरने की अनुमति भारत सरकार को देने की दिशा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यवाही करेगी। वैसे विदेश जाने वालो को पासपोर्ट में सामान्यतया दक्षिण अफ्रीका जाने की अनुमति नही दी जाती। फिर भी सरकार से पत्र व्यवहार हो रहा है।

2. वीसा के प्रार्थना पत्र का फार्म ठीक तरह से भरने पर उनके कथनानुसार विशेष कठिनाई की सम्भावना नही है। (आवेदन पत्र के इच्छुक वीसा फार्म की कापी इस सभा के प्राप्त कर सकते हैं)। प्रतिनिधि सभाएं इस सम्बन्ध में अपने प्रदेश क्षेत्र में भी ये सूचनाएं प्रकाशित करा दें।

3. वीसा फार्म के साथ पासपोर्ट के पहले चार पृष्ठों की फोटो स्टेट कापी, जिसमें पासपोर्ट नम्बर व्यक्ति की पहचान सार्वदेशिक सभा में प्रवेश करने की अनुमति आदि हो, वह भेजना जरूरी है। पासपोर्ट भेजने की आवश्यकता नही है, हर एक व्यक्ति के दो फोटो ग्राफ होने चाहिए जिसके पीछे उसके हस्ताक्षर स्पष्ट अक्षरों में (अंग्रेजी में पूरा नाम तथा जन्म तारीख लिखी हो।

4, ट्रैवल एजेंट से जांच करके यैलो फीवर तथा कोलेरा के हैल्थ के जरूरी सर्टीफिकेट वीसा के फार्म के साथ भेजे जाएं।

4. पासपोर्ट में प्रवास के देशों में साउथ अफ्रीका प्रवेश पर निषेध लिखा रहता है। इसको रद्द करवाना आवेदन के लिए जरूरी है। प्रवासी के लिए अगर डर्बन पहुचने पर पासपोर्ट फीस भरनी होगी तो उनकी ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा साऊथ अफ्रीका इस फीस को भर देगी।

ज्ञात हुआ है कि बम्बई और गुजरात से दर्शकों का एक अच्छा समूह इस अवसर पर वहां पहुंचेगा।

भारत सरकार से दक्षिण अफ्रीका में प्रवेश की अनुमति दिलाने में सम्भावित विलम्ब को देखकर श्री नरदेव जी का सुझाव है कि पासपोर्ट के पहले चार पृष्ठों की फोटोकापी एवं वीसा फार्म भेज देना चाहिए। दक्षिणी अफ्रीकी सरकार वीसा फार्म पर यह मानकर स्वीकृति दे देती है कि वहां उपस्थिति रहने के समय तक भारत सरकार की अनुमति पासपोर्ट पर मिल जाएगी।

—ओम् प्रकाश त्यागी

—

(4 पृष्ठ का शेष)

क्षत्रियाजातमेवन्तु, विद्या वैश्यस्त थैवच।
तामेति, ब्राह्मणश्चेति शूद्रताम्। शूद्रो ब्राह्मण-

अर्थात=शूद्र ब्राह्मण बन सकता है, और ब्राह्मण शूद्र हो सकता है इसी तरह हमें क्षत्रिय और वैश्य के सम्बन्ध में जानना चाहिये। यह सब परिवर्तन संस्कारो से ही होता है। संस्कारो का प्रभाव मनुष्य के जीवन में बड़ा भारी पड़ता है। मनुष्य अच्छे बुरे मार्ग बुरे मार्ग की ओर प्रवृत्त संस्कारों से ही होता है। महाभारत का उदाहरण हमारे सन्मुख है—महाभारत के युद्ध को रोकने के लिए योगीराज कृष्ण ने हर सम्भव प्रयत्न किये दुर्योधन से मिले बड़ा समझाया परन्तु कृष्ण की एक बात भी दुर्योधन ने नही मानी, धर्म का उपदेश देकर जब कृष्ण दुर्योधन को समझाते हैं तो दुर्योधन कृष्ण को सम्बोधित करते हुए कहता है कि—

जानामि धर्मं न च में प्रवृत्ति।
जानाम्य धर्मं न च में निवृत्ति॥
केनापि देवेन हृदि संस्थितेन।
यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि॥

महाराज! मैं धर्म को अच्छी तरह से जानता हूं कि धर्म क्या है परन्तु मेरी धर्म में प्रवृत्ति नही है। और अधर्म को भी मैं अच्छी तरह से समझता हूं कि अधर्म क्या है जिस पर चलने से मनुष्य का सर्वनाश हो जाता है परन्तु उससे मेरी निवृति नहीं है। मेरे हृदय मे ऐसे संस्कार हैं यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि जिधर वह संस्कार मुझे नियुक्त करते हैं (प्रेरित करते हैं) उधर ही मुझे झुकता पड़ता है। मैं क्या करूं इसमें मेरा दोष नहीं। यह सब संस्कारो की बात है।

इसी लिए मनुष्य जीवन मे जो कुछ भला बुरा करता है अथवा प्रेरित होता है वह सब संस्कारो के महत्व को समझने हुए अपने अमूल्य मानव जीवन को कल्याणकारी मार्ग पर ले आता हुआ इहलौकिक व पारलौकिक सुख को प्राप्त करें। विशेष जानकारी के लिए हमे महर्षि कृत संस्कार विधि का आद्योपान्त अध्ययन करना चाहिए मानव निर्माण में इन 16 सोलह संस्कारों का बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है। आओ' हम मानव निर्माण कर वैयक्तिक सामाजिक तथा राष्ट्रिय उन्नति में सहायता करें।

—

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना का मासिक पारिवारिक सत्संग

इस मास का संक्रान्ती 14-6-85 का यज्ञ श्रीमती सुशीला जी शर्मा कोषाध्यक्ष ने स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार में ही कराया। सभी बहिनों ने मिलकर बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में भाग लिया। यजमान बहिन ने बहुत श्रद्धा से अपनी सुपुत्री सहित यज्ञ कराया। इस सत्संग में बहिनों के सुन्दर भजन हुए जिन से सबने आनन्द उठाया। ऐसे सत्संगों का काफी प्रभाव रहता हैं। कई परिवार प्रभावित होकर अपने 2 घरों में मासिक यज्ञ कराने, का निमन्त्रण देती हैं जिससे प्रचार का आंकुन बहुत सुन्दर बनता है। साथ बहिन जी ने उपस्थित बहिनों का जल-पान से स्वागत किया। सत्संग में पधारने वाली बहिनों का धन्यवाद किया।

—निर्मला बेरी मन्त्री

—

श्रावणी विशेषाँक के आर्डर भेंजें

सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों तथा शिक्षा संस्थाओं के अधिकारी महानुभावों की सेवा में प्रार्थना है कि गत वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी श्रावणी (रक्षा बन्धन) के शुभ अवसर पर आर्य मर्यादा का एक विशेषांक प्रकाशित हो रहा है। जो अत्यन्त उपयोगी और प्रभावशाली होगा। इसलिए अपनी संस्था की ओर से तथा अपनी ओर से शीघ्र अति शीघ्र आर्डर भेजें। ताकि उतनी ही संख्या में विशेषांक छपवाया जा सके।

कमला आर्या
सभा महामन्त्री

डा. देव शर्मा विभागाध्यक्ष नियुक्त

आर्य समाज शिक्षा सभा अजमेर ने अपने अधीनस्थ संचालित दयानन्द महाविद्यालय के संस्कृत स्नातकोत्तर विभाग के अध्यक्ष पद पर गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक डा, देव शर्मा वेदालंकार को विभागाध्यक्ष नियुक्त किया है। डाक्टर देवशर्मा ने अपना कार्य विधिवत् सम्भाल लिया है।

आर्य समाज शिक्षा सभा अजमेर

दोआबा आर्य हायर सैकेण्डरी स्कूल नवांशहर

गत दिनो दोआबा आर्य हायर सै, स्कूल नवांशहर के प्रांगण में भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री स्वर्गीय पण्डित जवाहरलाल नेहरू जी की 21वीं वर्षी के उपलक्ष मे स्कूल के बच्चों ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला और स्कूल के प्राचार्य महोदय श्री हरबंशलाल भास जी तनेजा ने बच्चों को नेहरू जी के बताए गए पदचिन्हो पर चलने के लिए प्रेरित किया जिससे हमारा देश खुशहाल और समृद्ध हो।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

संसार मे जितने भी महापुरुष हुए हैं उन्होंने एक स्वर से इस सत्य को स्वीकार किया है कि आत्मा ही वह तत्व है जिस के लिए स्वयं परमात्मा सारी सृष्टि की रचना करता है। प्रत्येक वस्तु का उपयोग मनुष्य के लिए हैं इस सत्य को पहचानते आत्म हनन नही करे। यजुर्वेद मे आत्म हनन को घोर निकृष्ट योनि का पात्र घोषित किया है। अत: आत्मा अपने स्वरूप को, पहचान कर अपनी इहलौकिक व पारिलौकिक उन्नति कर सकता है परमात्मा का दर्शन भी आत्म दर्शन के पश्चात् ही होता है। योग दर्शन में कहा है—

तदाद्रष्टा स्वरूपे अवस्थानम्—परमात्मा को पाने के लिए आत्मा के लिए अपनी सत्ता स्वरूप एव सामर्थ्य का ज्ञान परमावश्यक है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में राष्ट्रीय पुस्तकालय संगोष्ठी

राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष संघ के तत्वावधान में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में पांचवीं राष्ट्र स्तरीय पुस्तकालय संगोष्ठी का शुभारम्भ 23 मई 1985 को हुआ। सम्मेलन में देश के विभिन्न पुस्तकालयों से लगभग 60 पुस्तकालयाध्यक्षों ने भाग लिया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा ने सम्मेलन में आये प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि आज गुरुकुल को देश के अनेक भागों से आए हुए पुस्तकालयाध्यक्षों के सम्मेलन के आतिथ्य का गौरव प्राप्त हो रहा है। श्री हूजा जी ने याद दिलाया कि स्वामी दयानन्द सरस्वती इस युग के सर्वप्रथम जन-नायक थे जिन्होंने राष्ट्रीय जीवन-धारा में पुस्तकालय के महत्व को समझा तथा आर्य समाज के संविधान में उन्होंने जिन कुछ पदों का गठन किया उनमें एक पद पुस्तकालयाध्यक्ष का भी था। स्वामी जी की मान्यताओं के अनुसार एक आदर्श समाज के लिए पुस्तकालय का उतना ही महत्व है जितना कि जीने के लिए अच्छे वातावरण की आवश्यकता होती है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एक ऐसा ऐतिहासिक स्थान है जिसके संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी ने लोगों में स्वाध्याय को जागृत किया तथा उन्होंने गुरुकुल के द्वारा स्वाध्याय की परम्परा को जारी रखने के लिए पुस्तकालय की महत्ता को सर्वोपरि रखा। जिसके परिणाम स्वरूप गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय पुस्तकालय का भारत के पांच विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में से एक प्रमुख स्थान है।

राष्ट्रीय पुस्तकालय सम्मेलन के इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी में इस पुस्तकालय के अतिथि प्राध्यापक श्री डी. आर. कालिया को भारत सरकार पुस्तकालयाध्यक्ष संघ की ओर से एक मान पत्र भी भेंट किया गया। इन को यह मान पत्र जीवन पर्यन्त पुस्तकालय की सेवाओं के सन्दर्भ में दिया गया।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री बी. बी. गुप्ता कुलपति रुड़की विश्वविद्यालय ने कहा पुस्तकालय ज्ञान का एक ऐसा आधार है जहां शोध एवं शिक्षा का उन्नयन निरन्तर होता रहता है। एक अच्छा पुस्तकालय शोध एवं शिक्षा को जारी रखने में सबसे अधिक योगदान देता है। पुस्तकालय की भूमिका पूरे शैक्षणिक वातावरण में शरीर में रक्त के समान महत्वपूर्ण होती है।

इस सम्मेलन का उद्घाटन श्री टी. आर. चन्द्रशेखरन, महाप्रबन्धक भेल रानीपुर हरिद्वार द्वारा किया गया उन्होंने प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि पुस्तकालय की भूमिका जीवन के हर क्षेत्र में व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र को एक उचित निर्णय लेने में सहायता करती है। ज्ञान निर्णय के इस वातायन से हर व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र को निर्णय सामग्री प्राप्त होती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि पुस्तकालय वैज्ञानिक शोध कार्यरत लाखों वैज्ञानिकों को उनके विषय से सम्बन्धित नवीनतम सूचना सामग्री उनके प्रयोगशाला तक पहुंचाए।

भारत सरकार पुस्तकालयाध्यक्ष संघ के अध्यक्ष श्री एम. के. जैन ने प्रतिनिधियों को कहा कि अब धीरे-धीरे शैक्षणिक वातावरण में तो पुस्तकालय वैज्ञानिकों की उपयोगिता महसूस की जाने लगी है, ज्ञान का विस्तार इतनी तेजी से हो रहा है कि पुस्तकालयों पर उसे विश्लेषित करने की जिम्मेदारी आ गई है। पुस्तकालय राष्ट्रीय ज्ञान सम्पदा के प्रतीक है आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्रीय ज्ञान सम्पदा को पुस्तकालय सन्दर्भ सेवा के मानदण्ड में एकीकृत करके राष्ट्रीय सूचना सेवाओं की सुनियोजित प्रणाली अपनाई जाए। पुस्तकालयाध्यक्ष का प्रारम्भिक दायित्व पुस्तकालय वैज्ञानिको द्वारा सम्पादित साहित्य की सुलभ जानकारी सम्बन्धित व्यक्तियों तक पहुंचाने का हो गया है।

इस समारोह के उद्घाटन के अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जगदीश विद्यालंकार ने अपने धन्यवाद प्रस्ताव मे विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा जी को यह विश्वास दिलाया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुस्तकालयो के महत्व को सर्वोपरि करने का जो जनमत बनाया था उस भावना को कायम रखा जाएगा।

उक्त सम्मेलन में अनेक तकनीकि गोष्ठियां हुईं। जिनकी अध्यक्षता, श्री टी. एस. राजगोपालन, निदेशक राष्ट्रीय विज्ञान प्रलेखन संस्थान श्री एस. एस. मूर्ति, निदेशक राष्ट्रीय रक्षा प्रलेखन सस्थान एव श्री पी. वी. मंगला डीन कला संकाय दिल्ली विश्वविद्यालय ने किया।

सम्मेलन मे सबसे अधिक जोर इस बात पर दिया गया कि विश्वविद्यालय एवं शोध संस्थानों में पुस्तकालय की बढ़ती भूमिकाओ को स्वीकार किया जाना चाहिए। पुस्तकालय वैज्ञानिकों की सेवाएं शोध प्रयोगशाला में कार्यरत वैज्ञानिकों को उनके विषय से सम्बन्धित सूचनाएं पहुंचाने की है। इसीलिए प्रत्येक शोध सस्थानों मे कम्प्यूटरो द्वारा सूचना सेवाओं को प्रारम्भ किया जाना चाहिए।

—जगदीश विद्यालंकार
पुस्तकाध्यक्ष



ला. रामगोपाल शालवाले को अभिनन्दन समारोह पर ग्यारह लाख रुपए की थैली भेंट करने का निश्चय

सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान श्रद्धेय श्री रामगोपाल शालवाले के अभिनन्दन के अवसर पर उन्हे 11 लाख रुपये की थैली भेंट करने का निश्चय अभिनन्दन समिति ने किया है धन संग्रह हेतु समिति ने अपनी 26 मई 1985 को सम्पन्न हुई बैठक मे एक धन संग्रह समिति का गठन किया है जिसमे देश भर के प्रमुख आर्यजन हैं—

संयोजक—श्री सोमनाथ मरवाह, सह-संयोजक—श्री इन्द्र नारायण, सदस्य श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास, श्री ओम् प्रकाश त्यागी, श्री सत्यदेव वेदालंकार, प्रो, वेद व्यास, श्री महाशय धर्मपाल, श्री सत्यानन्द मुंजाल, श्री गजानन्द आर्य, श्री इन्द्रराज श्री रामलाल मलिक श्री सूर्यदेव, श्री ओम्प्रकाश जी गोयल श्री रामनाथ सहगल, श्री कैप्टन देवरत्न आर्य श्री बी, किशनलाल, श्री रतन प्रकाश गुप्ता, श्रीमती कौशल्यादेवी।

—डा, आनन्द प्रकाश संयोजक
अभिनन्दन समिति

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज मन्दिर लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी का चुनाव निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री रामचन्द्र आर्य, उप-प्रधान—श्री द्वारकावर्मा व श्री अमरनाथ जी, मन्त्री—श्री जितेन्द्र ठाकुर, उप-मन्त्री—श्री मनोज आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री देवराज दत्ता, निरीक्षक—श्री सुख-दयाल जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री राजेन्द्र गुप्ता, वस्तु भण्डारी—श्री किशोरचन्द छाबड़ा,

अन्तरंग सदस्य—सर्वश्री चरणदास जी, कृष्ण प्रकाश चावला, सत्यपाल आनन्द, सुभाष ग्रोवर, रामदास जी।

—मन्त्री

आर्य समाज मुहल्ला गोविन्दगढ़ जालन्धर का वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज मुहल्ला गोविन्दगढ जालन्धर का वार्षिक चुनाव 9-6-85 को आर्य समाज भवन मे श्री अमृतलाल जी बजाज की अध्यक्षता मे प्रात 9 30 बजे हुआ। जिसमे निम्नलिखित अधिकारी सर्वसम्मति से चुने गए—

प्रधान—श्री राम प्रताप जी शर्मा, उपप्रधान—श्री नरेशकुमार जी, मन्त्री—श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा (रेलवे अकाऊटस आफिसर) उपमन्त्री—श्री ओम्प्रकाशजी जौहर, भण्डाराधिपति, कोषाध्यक्ष—श्री डा, ब्रह्मनाथजी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री ब्रह्मदत्त जी एम ए. पी, एच डी लेखा, परीक्षक—श्री प्रीतमनाथ जी।

अन्तरंग सदस्य—

श्री अमृतलाल जी बजाज, श्री चतर्भुज मित्तल, श्री मुनिलाल जी, श्री रविदत्त जी वासुदेव, श्री बलदेवराज जी, श्री सुरेन्द्र बजाज जी, श्री ओम् प्रकाश जी पुरी- श्री भीष्मदेव जी धवन,

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन रविवार दिनाक 9-6-85 को प्रात. 11 बजे साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् श्री शान्तिलाल सूरी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। समाज मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने पिछले वर्ष का विवरण तथा आय-व्यय प्रस्तुत किया, जिसकी सम्पुष्टि की गई। अगले वर्ष के लिए श्री शान्तिलाल सूरी प्रधान, श्री रामनाथ सहगल मन्त्री श्री रामदास खोसला, कोषाध्यक्ष—निर्वाचित हुए। शेष अधिकारी व कार्यकारिणी बनाने का अधिकार प्रधान जी को दिया गया।

—राजेन्द्र प्रसाद सार्वभौम

... तथा प्रकाशक द्वारा जगदीश प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन नं. 74250 रजि. नं. पो. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य मर्यादा जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 13, 24 आषाढ़ सम्वत् 2042, तदनुसार 7 जुलाई 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये

शासन—व्यवस्था प्रभु से सीखो

ले.—आचार्य शिवराज जी शास्त्री ,एम. ए. मौलवी फाजिल

यदा ते मारुतीर्विशस्तुभ्यमिन्द्र नियेमिरे
आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे ।

ऋग्वेद म. 8 अ. 2 सू. 12 मंत्र 39

पदार्थ—(इन्द्र) हे परमात्मन् ! (यदा) जब (ते) आपकी (मारुती: विश:) सैनिक प्रजाएं (तुभ्य) आपके आदेशों नियमों का पालन करने के लिए (नियेमिरे) सभी प्राणी मात्र का नियमन; नियन्त्रण करती हैं (आदित्) तभी उस व्यवस्था में (विश्वा ते भुवनानि) सारा ससार आपके बनाए लोक-लोकान्तर सभी (ये मिरे) नियम व्यवस्था पूर्वक चलते हैं ।

प्रभु प्यारे का संसार कितना नियम पूर्वक व्यवस्थित चल रहा है । उसमें कहीं कोई त्रुटि नहीं निकाल सकता । सूर्य ठीक समय पर उदय होता है ठीक समय पर ही अस्त होता है । उसके नियमों के जानने वाले ज्योतिष शास्त्री सैंकड़ों वर्षों तक की अंक गणना कर उसकी गतिविधियों का लेखा प्रस्तुत कर देते हैं । कभी कोई व्यवधान अनियमितता स्खलन की कोई सम्भावना भी नहीं रह पाती । ठीक उसी प्रकार चन्द्रमा एवं असंख्य ग्रह नक्षत्र अनेक लोक-लोकान्तरो की गतिविधियों का ज्ञान सत्य रूप में पता लगाया जा सकता है क्योंकि प्रभु की इस सारी रचना में निश्चित नियम निश्चित मर्यादाएं, निश्चित गतिविधियां विश्व का नियन्त्रण कर रही हैं । यही दशा प्रभु के बनाए मनुष्य शरीर की है । सारा नृतत्व शास्त्र जीव तत्व शास्त्र, प्राणी शास्त्र वनस्पति शास्त्र मर्यादा व निश्चित विधि-विधान के आधार पर ही सरलता से लेखबद्ध किया जा सकता है ।

यह सारी प्रभु की सैनिक प्रजाओं की भांति सारे ससार का संरक्षण सम्वर्धन संचालन एवं सगठन किए हुए हैं । इसमें लेश मात्र भी असुरक्षा अव्यवस्था अमर्यादितत्व असन्तुलन कहीं भी दिखाई नहीं देता । इसे प्रभु की शासन व्यवस्था कहा जा सकता है! जैसे अनुशासित सेनाएं विजय पर विजय मार्च करती हुई यशस्वी विजय करती जाती हैं । ठीक उसी प्रकार समाज का राष्ट्र, का, शासन भी किसी नियम मर्यादा एवं अनुशासन में रहेगा तो राष्ट्र भी दिन-दूनी रात चौगुनी उन्नति करता जाएगा ।

जैसे परमात्मा अपने प्राणी मात्र को नियमन अनुशासन करता है । कोई व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन में प्रभु के नियमों का उल्लघन नहीं कर सकता है, शरीर के जो अग जिस कार्य के लिए बनाए गए हैं वे उसी नियमानुसार कार्य करते हैं । नियम पूर्वक चल रहा शरीर सदा निरोग स्वस्थ एवं बलवान् रहेगा । रोग असन्तुलन होता ही तब है जब हम भगवान् के बनाए नियमों का उल्लंघन करते हैं ।

इसी प्रकार समाज राष्ट्र भी जब किसी नियम मर्यादा में रहता है तो उन्नति करता है ।

आज हमारे राष्ट्र पर घोर संकट के बादल छाए हुए हैं । कारण यह कि परमात्मा की तो सत्ता को ही अस्वीकार सा कर दिया है । आज के राजनीतिज्ञ धर्म की बात करना भी अपराध मानते हैं—

रकीबो ने रपट लिखवाई है,
जा-जा के थाने में ।
ये मूरख याद करता है-
प्रभु को इस जमाने में ।

मेरे विरोधियों ने मेरे विरुद्ध थाने में जाकर मेरी शिकायत की है कि यह मूर्ख आज के इस धर्मनिरपेक्ष काल में भगवान् का नाम लेता है । जब प्रभु से ही बिछुड़ गए तो उसके नियम उसकी मर्यादा उसके प्रभाव, उसके भय के बिना हम नियन्त्रण व अनुशासित कैसे रह सकते हैं ।

व्यक्तिगत जीवन में तो मनुष्य की स्वछन्दता व उछृंखला की सीमाओं का सर्वत्र अतिक्रमण हो गया है आज का युवक निम्नांकित कविता के आधार पर जीवन यात्रा कर रहा है—

अबस बगैर तलातुम के जिन्दगानी
है ।
सकूं पजीर जवानी भी कुछ जवानी है ।
है राह रौ वही जो हर कदम
उछलता है ।
सम्भल के राह जो चलता है खाक
चलता है ।
है अपनी राय जरा मुख्तलिफ
जमाने से,
गलत रवी कहीं इतर है ठहर
जाने से ।

अर्थात्—जीवन में यदि उत्थान-पतन न हो तो जीवन व्यर्थ है जो यौवन गम्भीर व व्यवस्थित है वह यौवन नहीं, यात्री वही है जो उछलता कूदता गिरता-पड़ता हुआ चलता है । जो व्यवस्थित व सम्भल कर चल रहा है वह भी कोई यात्री है । हमारी सम्मति ससार से सर्वथा भिन्न है इस सम्बन्ध मे यह है कि अगर ठीक रास्ते पर न चल सके तो उलटे वाम मार्ग पर ही चलते दौड़ते चलो ।

इसीलिए आज जीवन के हर क्षेत्र में वाम मार्ग को पसन्द किया जाता है । हमारे घरों में सन्ध्या-हवन से अधिक महत्व रेडियो, टेलीविजन के अश्लील व निरर्थक प्रोग्रामो का बन गया है । राजनीति में भी नियम अनुशासन से अधिक महत्व हड़तालों, उपद्रवों, आतंकवादों व व तोड़-फोड़ का है ।

इसीलिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनुष्य पराजित व पतित होता चला जा रहा है ।

बड़े-बड़े नामधारी महात्मा संयम, तप अनुशासन से अधिक महत्व लोक-दिखावे, लोक भ्रमोत्पत्ति व मिथ्याचार व भ्रष्टाचार को न केवल आश्रय अपितु बढ़ावा देते है नैतिकता, धार्मिकता का स्थान वामपन्थी प्रवृत्तियों ने ले लिया है ।

राजनीति को तो चर्चा ही क्या की जाए, एक ही उदाहरण बात समझाने के के लिए काफी होगा । प्रसिद्ध अभिनेता अमिताभ बचन सिनेमा क्षेत्र से नाचते-गाते राजनीति के रग मंच पर पहुंचे और यह कहकर उसी विलासिता व वाम मार्गी रंग शाला में पहुंच गए कि अरे मैं इस राजनीति की गन्दी नाली में कैसे आ फसा । कहां महर्षि दयानन्द व राष्ट्र पिता महात्मा गांधी का राष्ट्रवाद राष्ट्र निर्माण के सपने, राष्ट्र रक्षा के उपायों की बात कहां, आज के निरंकुश सिद्धान्तहीन भ्रष्टाचारी वाम मार्गी राजनीतिज्ञों के जीवन चरित्र, इसीलिए राष्ट्र विनाशकारी विप्लवों में धू धू करके जल रहा है ।

—

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला

आर्य समाज- उपलब्धियां, सीमाएं और अपेक्षाएं दयानन्द सरस्वती के विचार—समय की कसौटी पर

ले.—डा. भवानीलाल जी भारतीय आचार्य व अध्यक्ष दयानन्द चेयर पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ

(30 जून से आगे)

सर्वोपरि बात तो यह है कि इस शिक्षा पद्धति मे शिक्षित छात्र आगे चलकर राष्ट्र का एक प्रबुद्ध नागरिक तो बनता ही है उसमे राष्ट्रीय गौरव, स्वाभिमान तथा स्वदेश भक्ति के भावो का भी समुचित विकास होता है इधर कन्या शिक्षा के क्षेत्र मे नवीन क्रान्ति उपस्थित कर आर्य समाज ने यह स्पष्ट घोषित कर दिया कि समाज के अर्द्धांग नारी को अपने सर्वांगीण विकास के सभी साधन प्राप्त करने के पूर्ण अधिकार हैं।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि धर्म, समाज, संस्कृति, स्वदेश तथा स्वभाषा—इन सभी क्षेत्रो मे नवमूल्यो की स्थापना कर आर्य समाज ने मुख्यत भारत वर्ष और गौणत विश्वके प्रबुद्ध मानव वर्ग मे एक नवीन वैचारिक क्रान्ति का आरम्भ किया और उसमे उसे पूर्ण सफलता भी मिली।

इस प्रकार आर्य समाज की विगतकालीन उपलब्धियो का विवेचन करने के पश्चात हमे यह देखना होगा कि आधी शताब्दी से भी अधिक समय तक पूर्ण सक्रिय रहने के पश्चात् आर्य समाज के आन्दोलन मे शैथिल्य, हताशा और दिक्-मूढता का समावेश क्यो और कैसे हुआ। सर्वप्रथम हम धार्मिक क्षेत्र को ही लें। स्वामी दयानन्द ने धर्म को बुद्धिवाद पर आश्रित रखने पर जोर दिया था। उन का आग्रह था कि धर्माधर्म, कर्त्तव्याकर्त्तव्य आदि का निर्धारण करते समय हमे अपनी बुद्धि को काम मे लेना चाहिए। कोई वस्तु इसलिए श्रेष्ठ नही हो जाती क्योकि वह परम्परा से हमे प्राप्त है और न कोई अन्य वस्तु, इसीलिए अग्राह्य होती है, क्योकि वह नवीन है। विचार पूर्वक निर्णय करने के पश्चात् ही हमे धर्माधर्म का निश्चय करना होगा। स्वामी दयानन्द के इस बुद्धिवाद को स्वीकार करने मे लोगो को कोई कठिनाई नही हुई। परन्तु आज हम देखते हैं कि धर्म के नाम पर पाखण्ड, अन्धविश्वास मूढ धारणाएं तथा गुम्डम बढ रहा है। अब तक तो हम अपठित और अज्ञानी लोगो पर ही यह आक्षेप लगाते थे कि वे अन्ध-विश्वासी होते हैं, किन्तु अब तो पठित एव प्रबुद्ध लोग भी अन्धविश्वासो के शिकार हो रहे हैं। नए-नए बाबाओ, योगीराजाओ और भगवानों का प्रादुर्भाव यह सिद्ध कर रहा है कि आर्य समाज का तकाश्रित धर्म और बुद्धिवाद से प्रबोधित मतवाद लोगो को अस्वीकाय है। यह सब देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य समाज के प्रभाव मे दिन-प्रतिदिन क्षीणता आ रही है अथवा इस आन्दोलन की सक्रियता उग्रता तथा तेजस्विता मे निश्चय ही न्यूनता आ गई है।

परन्तु हमे उन मनोविज्ञानिक कारणो को भी ढूढना होगा जो धर्म के क्षेत्र में आर्य समाज की वर्तमानकालीन असफलता के हेतु हो सकते हैं। प्रथम तो यह कहा जा सकता है कि आर्य समाज ने धर्म के नाम पर चलने वाले पाखण्डो, आडम्बरो तथा रूढिवाद का खण्डन करने मे तो अपनी प्रबल शक्ति लगा दी परन्तु उसने यह चिन्ता नही की कि धर्म तथा उपासना के वास्तविक स्वरूप तथा उसकी आचरण मे लाने की विधि को भी जनता तक पहुचाया जाए। आध्यात्मिक और पारलौकिक चिन्तन चाहे कितना ही महत्वपूर्ण और उपयोगी क्यो न हो, उसके साधनो मे भी कुछ ऐसा आकर्षण होना चाहिए जिससे कि मनुष्य सहजभाव से उसकी ओर आकृष्ट हो सके। आर्य समाज ने साकारोपासना, प्रतीक पूजा, पौत्तलिक उपासना आदि का खण्डन तो किया किन्तु योगप्रेयस निराकारोपासना की किसी विधि को प्रचलित नहीं कर सका, जिसकी ओर आकृष्ट होकर उपासकों और साधकों का समूह दौड कर आए। आर्य समाजों की वैयक्तिक और सामूहिक उपासनाएं शुष्क, नीरस तथा दिखाऊ रह गई।

एक और कठिनाई थी। आर्य समाजों के उपासना स्थलों की सजा-सजाव, उनकी साज-सज्जा तथा व्यवस्था में ऐसा कोई आकर्षण नहीं था जिससे कि कारण बहुसख्यक लोग उसकी ओर आकृष्ट होते। संगीत के माध्यम से मनुष्य की मनोवृत्तियों का निग्रह और परिष्कार तो होता ही है वह उनकी एकाग्रता का भी कारण बनता है। यही कारण है कि प्रत्येक धार्मिक उपासना प्रणाली में संगीत को समुचित स्थान दिया जाता है। पौराणिकों के भजन गान और आरती पाठ. ईसाईयो का भक्ति संगीत, सूफी कव्वालों की वे कव्वालियां जो इश्क, हकीकी, को भावप्रवक शैली से उजागर करती हैं तथा सिख रागियों द्वारा गाई जाने वाली गुरुवाणी ये सभी धार्मिक संगीत के ही विभिन्न रूप हैं जो भक्त समाज को अनायास ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं। आर्य समाज मे संगीत पर आधारित कोई ऐसी उपासना प्रणाली विकसित नही हो सकी। आर्य समाज के प्रारम्भिक दिनो मे तो अमीचन्द मेहता, वासुदेव-चन्द्र कवि तथा इसी कोटि के अन्य गायकों कवियो तथा संगीतज्ञो ने अपनी रचनाओ के द्वारा आर्य समाज में भक्ति संगीत की सरिता को प्रवाहित किया था किन्तु कालान्तर मे वह कई कारणो से अवरुद्ध हो गई।

आज कल योग साधना की ओर अधिकाधिक लोगो का आकर्षण बढता जा रहा है। मांग के अनुसार ही पातञ्जल योग से भिन्न अनेक प्रकार के साम्प्रदायिक योग प्रशिक्षण केन्द्र भी खुलते जाते हैं। महेश योगी की अतीन्द्रिय ध्यान पद्धति रजनीश का भोग मिश्रित योग ब्रह्मकुमारियो का त्राटक आधारित राजयोग और न जाने कौन-कौन सी नवीन योग पद्धतियां प्रचलित हो चुकी हैं जो विशाल मानव समूह को निरन्तर अपनी ओर आकृष्ट कर रही है। आर्य समाज महर्षि पतञ्जलि द्वारा उपदिष्ट उस राजयोग का समर्थक है जिसे ईश्वर प्रणिधान तथा अष्टांग साधना के द्वारा सिद्ध किया जाता है यो विगतकालमे स्वामी लक्ष्मणानन्द, महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी ओमानन्द तीर्थ आदि अनेक योगियो ने स्वसाधना के द्वारा आर्य समाज मे रहते हुए योग मार्ग का अनुशासन और उपदेश किया था, किन्तु आज आवश्यकता इस बात की है कि योग के प्रति बढते हुए आकर्षण को देखते हुए आर्य समाज को योग साधना के वास्तविक स्वरूप तथा क्रिया पद्धति से लोगों को परिचित कराना चाहिए।

परन्तु धार्मिक विचारो का ठोस तथा प्रभावशाली प्रचार तो साहित्य के द्वारा होता है। स्वामी दयानन्द ने स्वयं साहित्य के माध्यम से धार्मिक जगत् मे जो वैचारिक क्रान्ति की उसका दूसरा उदाहरण मिलना कठिन है। आर्य समाज के प्रारम्भिक दिनो मे भी अनेक उत्कृष्ट ग्रन्थो की रचना के द्वारा स्वामी दयानन्द के धर्म विषयक विचारो को प्रसारित किया गया। परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् आर्य समाज के साहित्य प्रणयन के क्षेत्र मे गतिरोध आ गया साहित्य का लेखन और प्रकाशन भी पाठक समुदाय की योग्यता, क्षमताएव रुचि को देखकर किया जाना चाहिए। सामान्य जनो के लिए जो साहित्य लिखा जाता है वह प्रबुद्ध लोगो के लिए उपयोगी नहीं होता। इसी प्रकार बालको, स्त्रियो, कृषको, मजदूरो श्रम-जीवियो, छात्रो आदि विविध वर्गों के लिए विविध प्रकार का साहित्य लिखा जाना आवश्क हैं।

हमे यह स्मरण रखना होगा कि आर्य समाज का धर्मान्दोलन वेदो तथा तदनुवर्ती आर्य शास्त्र ग्रन्थो मे निर्दिष्ट शिक्षाओ उपदेशो तथा प्रतिपाद्य विषयो को आधार बनाकर चला था। आज वैदिक वाङ्मय को विविध तथा उसके आनुषगिक अगो एव उपागो का विशद वैज्ञानिक अध्ययन विभिन्न भारतीय तथा विदेशी विश्व-विद्यालयो मे हो रहा है। अत आर्य समाज का भी यह कर्तव्य हो जाता है कि वह अपना एक स्वतन्त्र शोध सस्थान स्थापित करे तथा उसके माध्यम से स्वामी दयानन्द के दृष्टिकोण को प्रमुखता देते हुए वेद-वेदाग, दर्शन, प्राचीन इतिहास आदि विषयों के ग्रन्थो का लेखन एव सम्पादन कराए। सामाजिक तथा राष्ट्रीय प्रश्नो एव समस्याओ मे अत्यधिक उलझ जाने के कारण आर्य समाज के विद्वानो का वैदुष्य तथा उनके चिन्तन की प्रमुखता अभी तक विद्वत्समाज तक पहुच नहीं पाई है। यही कारण है कि बौद्धिक समाज आर्य समाज के प्रति प्राय: उदासीन-सा रहता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि आर्य समाज का धर्मान्दोलन आज अनेक प्रकार की युगीन चुनौतियो से जूझ रहा है। यदि समस्याओ का सम्यक आकलन कर उनके निदान के लिए समयबद्ध कार्यक्रम अपनाए जाए तो कोई कारण नहीं कि आर्य समाज पुन वास्तविक धर्म का ध्वजवाहक बन सकता है।

(क्रमश)

सम्पादकीय—

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की शताब्दी (3)

इस क्रम के पिछले लेखों में मैंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पिछले इतिहास को आर्य जनता के सामने रखते हुए उन कठिनाइयों का जिक्र किया था जो देश के विभाजन के पश्चात हमारे सामने आई थी। सबसे बड़ी तो यह थी कि सभा का अपना कोई घर न था और बैठने के लिए कोई स्थान न था। लाहौर में गुरुदत्त भवन में एक विशाल पुस्तकालय था वह भी सारा का सारा वहीं रह गया था। ऐसी स्थिति में नए सिरे से सारा काम जमाना सम्भव न था फिर भी आर्य प्रतिनिधि सभा के पुराने अधिकारियों ने बहुत परिश्रम व लग्न से उस स्थान को प्राप्त किया यहां इस समय सभा का कार्यालय है। उसे धीरे-धीरे बनाते गए। पहले सभा का कोई रिकार्ड भी न था। कुछ वह भी बनाया गया। और हम धीरे धीरे इस योग्य हो गए कि पंजाब में आर्य समाज की गतिविधियों को कुछ निश्चित रूप दे सके।

सभा को दूसरा धक्का उस समय लगा जब 1966 में पंजाब का विभाजन हुआ। उस समय यह स्पष्ट था कि यदि पंजाब का राजनैतिक विभाजन हो गया है तो सभा पहले की तरह पंजाब और हरियाणा की एक सभा नहीं रह सकती थी। हिमाचल वालों ने भी उस समय यह कहना शुरु कर दिया कि उन की भी एक अलग सभा होनी चाहिए। भिन्न भिन्न प्रान्तों के अपने अपने कानून होते है। इसलिए पंजाब सभा का क्षेत्र अब हरियाणा व हिमाचल तक नहीं रह सकता था। इसलिए अब आन्दोलन प्रारम्भ हुआ कि जिस आधार पर हिमाचल व हरियाणा पंजाब से अलग किए गए है उसी आधार पर इन दोनों प्रान्तों की अलग सभाएं बना दी जाए। हिमाचल की सभा तो बहुत पहले बन गई थी परन्तु हरियाणा और दिल्ली की पृथक सभाएं 1975 में बनाई गई। जब सार्वदेशिक सभा ने राजकीय आधार पर देहली और हरियाणा की प्रादेशिक सभाएं बना दी। इस प्रकार जो सभा पहले पंजाब, हरियाणा व हिमाचल, देहली और जम्मू काश्मीर इस सारे क्षेत्र की सेवा करती थी वह केवल एक छोटे से प्रान्त की सभा बन कर रह गई। और पंजाब एक ऐसा प्रदेश है जहां विभाजन के पश्चात सिख बहुमत में आ गए थे। वैसे भी वह पंजाब पर अपना एक विशेष अधिकार पहले भी मानते थे। और पंजाबी सूबा बनने के पश्चात तो वह उस पर अपना अधिकार और भी अधिक जताने लगे। उन के साधन हम से बहुत अधिक थे। अमृतसर में दरबार साहिब और उसके परिसर के अतिरिक्त पंजाब के प्रत्येक गांव में एक गुरुद्वारा था जहां पहले न था वहां अब नए गुरुद्वारे बनने प्रारम्भ हो गये और प्रत्येक गुरुद्वारों से अब आवाज आने लगी कि (राज करेगा खालसा बाकी रहे न कोय) अतः स्पष्ट है कि जिनका इतना शक्तिशाली संगठन हो जिनके साहस इतने अधिक हो जिन्हें अपने धर्म में बहुत अधिक लग्न और जो अपने धर्म के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने को तैयार हों उन के मुकाबिले में खड़ा करना आसान न था विशेषकर इसलिए भी कि आर्य प्रतिनिधि सभा लाहौर से उजड़ कर आई थी और इसके साधन बहुत सीमित थे। परन्तु जो अपने धर्म के लिए निष्ठा लग्न व संगठन की शक्ति आर्य समाज में थी वह पंजाब को किसी दूसरी संस्था में न था। मैं किसी दूसरी हिन्दू संस्था के महत्व को किसी प्रकार कम करना नहीं चाहता। परन्तु यह एक वास्तविक स्थिति है कि आज भी किसी दूसरी संस्था का संगठन इतना प्रभावशाली नहीं है जितना कि आर्य समाज का। हमने पंजाब के मन्दिरों में मूर्तियां टूटती व जलती देखी हैं। परन्तु जो लोग इन मूर्तियों की पूजा करते हैं उनमें से कोई भी उनकी रक्षा के लिए नहीं पहुंचा। आर्य समाज ने अपने मन्दिरों की रक्षा की है 2-3 वर्ष पहले तक आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव भी होते थे। अब नहीं होते क्योंकि किसी भी सार्वजनिक स्थान पर अब उत्सव करना सुरक्षित नहीं है। अब कोई भी संस्था बाहर किसी मन्दिर में अपने उत्सव नहीं करती। सरकार कहीं कहीं करती ई वह भी पुलिस और फौज के संरक्षण में। मुझे इस स्वीकारोक्ति में कोई संकोच नहीं कि आज पंजाब में आर्य समाज का संगठन पहले से बहुत शिथिल हो गया है। उसका सबसे बड़ा कारण पंजाब की परिस्थितियां हैं पिछले 3-4 वर्षों में जो कुछ पंजाब में हुआ है उसने प्रायः सब संस्थाओं को शिथिल कर दिया है। फिर भी आर्य समाज का नाम आज भी सबकी जुबान पर है। हमारे अकाली भाई आर्य समाज को ही अपना सबसे बड़ा प्रतिद्वन्दी समझते हैं। हम न तो उनके विरोधी हैं न प्रतिद्वन्दी' उनकी विचार धारा से कुछ कुछ मतभेद अवश्य है। यह भी एक विचित्र स्थिति है कि सिख धर्म के सबसे अधिक विचारों के समीप कोई धर्म है तो वह वैदिक धर्म है। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज, व श्री स्वामी अमृतानन्द जी ने इस विषय पर जो पुस्तकें लिखी हैं उनसे उन्होंने वेदों के मन्त्रों व गुरु ग्रन्थ साहब की बाणी की तुलना की है बताया है कि किस प्रकार दोनों का दृष्टिकोण बहुत कुछ मिलता है। गुरु साहेबान के जीवन से भी कई घटनाओं को लेकर यह बताया गया है कि वह किस प्रकार वैदिक धर्म से प्रभावित थे। श्री गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज ने अपने विचित्र नाटक में यह लिखा है—श्री गुरु नानकदेव जी का वंश वेदी था और वेदी वह थे जो वेदों का पाठ किया करते थे। और गुरु गोविन्दसिंह ने यह भी लिखा है कि चारों वेद ब्रह्मा ने प्रकट किए थें। इसलिए वैदिक धर्म व सिख मत में कोई अधिक सैद्धान्तिक अन्तर नहीं रहता परन्तु उसकी संकुचित राजनैतिक विचार धारा उन्हें हिन्दुओं की तरफ बढ़ने नहीं देती, यही कारण है कि हिन्दू व सिखों में इतने मतभेद पैदा हो रहे हैं। जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है उससे यह पता चल जाता है कि किन कठिनाईओं में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब काम कर रही है और मैं बड़े गर्व से कह सकता हूं कि इस सभा ने पंजाब में आर्य समाज के झण्डे को नहीं झुकने दिया परन्तु हम ने जो कुछ भी किया है वह संतोषजनक नहीं क्योंकि हमारे पास साधन बहुत सीमित है। आर्य समाज एक ऐसी संस्था है जिसे सब धार्मिक संस्थाओं से कम धन मिलता है। मैंने कई बहुत बड़े बड़े धार्मिक सम्मेलन देखे हैं। यहां चोर बाजार में व्यापार करने वाले प्रमुख अधिकारी होते हैं और वह अपनी संस्थाओं को दान भी देते है। आर्य समाज में ऐसे व्यक्ति आप को नहीं मिलेंगे इसलिए आर्य समाज को यह धन नहीं मिलता जो मिलना चाहिए यही कारण है कि हम जो कुछ करना चाहते हैं नहीं कर पाते। पिछले दो लेखों में मैंने सभा के नए भवन के निर्माण के विषय में कुछ लिखा था। हम एक-एक रुपया एकत्रित करके इस भवन का निर्माण कर रहे हैं जिसके लिए हमें 10-15 लाख रुपये की आवश्यकता है। इसमें समय अवश्य लग जाएगा परन्तु हम कह सकेंगे कि यह जनता का भवन है जनता द्वारा और जनता के रुपए से ही बना है इसमें बड़े बड़े उद्योगपतियों का रुपया नहीं लगा। भवन निर्माण के साथ-साथ हम एक पुस्तकालय और साहित्य निर्माण का कार्य भी कर रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में सभा ने कई प्रकार के साहित्य का प्रकाशन किया है। इसके लिए भी धन की आवश्यकता होगी। आर्य समाज एक ऐसी संस्था है जो बिना भवन के भी काम कर सकती है। महर्षि दयानन्द के प्रचार काल में तो देश में एक भी समाज मन्दिर या भवन नहीं बना था फिर उनके विचारों के जादू ने जो कार्य किया वर्तमान समाज का ढांचा उसी की देन है। हम अपना भवन भी बना रहे हैं उसके साथ ही सभा का काम भी चला रहे हैं उसमें आर्य जनता हमें अपना क्या सहयोग दे सकती है इस विषय में अपने विचार आगामी अंक में रखूंगा।

—वीरेन्द्र

श्रावणी वेद प्रचार सप्ताह

सभा के पास स्थान-स्थान से वेद प्रचार सप्ताह के सम्बन्ध में उपदेशकों व भजनीकों की मांग आ रही है। सभा अपने सीमित साधनो से उस मांग को पूरा करने के लिए भरसक प्रयत्न करेगी। परन्तु कठिनाई यह है कि यदि सभी समाजें केवल श्रावणी से जन्माष्टमी तक अपनी तिथियां निश्चित करेंगी तो एक साथ इतने उपदेशकों व भजनीको की सबके लिए कैसे व्यवस्था हो सकेगी। अगस्त व सितम्बर में क्रमशः समाजें वेद प्रचार सप्ताह की व्यवस्था करें ताकि प्रचार का प्रबन्ध करने के सुविधा हो। आशा है समाजें केवल एक ही तारीखों का आग्रह छोड़कर अन्य सप्ताहों का भी उपयोग कर सभा को व्यवस्था में सहयोग प्रदान करेंगी। शीघ्रातिशीघ्र तिथियां निश्चित कर सभा कार्यालय को सूचित करें।

प्रदूषण की समस्या और हवन-यज्ञ

ले.—श्री यशपाल जी आर्य बन्धु, आर्य निवास
चन्द्र नगर मुरादाबाद

विज्ञान के बढते चरण जहा विश्व के लिए एक वरदान बनकर आये, वहां वे अभिशाप भी कुछ कम नही । प्रदूषण का अभिशाप उन मे स प्रमुख है । आज के युग की भयकरतम समस्या यदि कोई है तो वह प्रदूषण की समस्या है । वस्तुत प्रदूषण इस सीमा तक पहुच चुका है कि यह आशका होने लगी है कि प्राणियो को शायद पीने के लिए स्वच्छ जल और सास लेने के लिए स्वच्छ प्राणप्रद वायु भी उपलब्ध न हो सके ।

फरवरी 85 के दूसरे सप्ताह मे चण्डीगट मे प्रदूषण की समस्या पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया था। उस सेमिनार मे देश भर से 40 प्रतिनिधियो ने भाग लिया था। केन्द्रीय मन्त्री श्री जगन्नाथ कौशल भी उसमे उपस्थित थे। सेमिनार मे 15 निबन्ध पढे गए जिन मे प्रत्येक मे देश मे प्रत्येक भाग में हवा, पानी और वातावरण मे फैल रहे विष पर गहरी चिन्ता व्यक्त की गई। सेमिनार मे एक स्वर मे कहा गया कि शुद्ध प्राकृतिक वातावरण में रहने की सुविधा हर नागरिक का मौलिक अधिकार है। किन्तु आज इस अधिकार का हनन किया जा रहा है। आज की औद्योगिक सभ्यता ने शुद्ध प्राकृतिक वातावरण के विनाश का बीडा उठाया प्रतीत होता है। दूसरी ओर सम्मेलनो और सेमिनारो में चिन्तायें व्यक्त की जा रही हैं, प्रस्ताव पास हो रहे हैं पर विडम्बना यह है कि विगत 20-25 वर्षों में वातावरण के प्रदूषण पर जितनी अधिक चिन्ता बढी है, उससे कहीं अधिक प्रदूषण बढा है।

बिगडता हुआ पर्यावरण और गगा यमुना जैसी पवित्र नदियो मे फैला प्रदूषण अब जन सामान्य की चिन्ता का विषय बनता जा रहा है। उत्तरप्रदेश, बिहार और बगाल में गगा के किनारे बने कल-कारखानो और नदियो में फैंके जाने वाले कचरे के कारण वातावरण और गगा का जल इतना विषाक्त हो गया है कि जिसका वर्णन करना भी कठिन हो रहा है। इसस टाईफाईड पीलिया, हैजा अतिसार जैसे भयानक रोगो के कारण असख्य लोगो के जीवन सकट मे फस गए है। 1955-56 मे दूषित पानी के कारण चालीस हजार लोगो को पीलिया ने घेर लिया था और बहुत से लोग मर भी गए थे। 1979 मे अकेले बम्बई शहर मे पानी के प्रदूषित हो जाने से बीस हजार लोग पीलिया के शिकार हो गए थे। दशा इतनी गम्भीर हो चुकी है कि इस महानगर पालिकाओ के कारण नदिया-नहरें गन्दे नालो मे परिवर्तित होते जा रहे हैं।

मध्यप्रदेश कौसिल आफ साईस एण्ड टेक्नोलोजी के सचिव तथा विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन की वनस्पति शास्त्र की अध्ययनशाला के प्रमुख डा प्रेम शकर दुबे का एतद् विषयक वक्तव्य भी का देने वाला है। उनके अनुसार सारणी ताप बिजली घर से प्रतिदिन उडने वाली एक हजार टन कोयले की राख तथा सल्फर आक्साइड गैस आस-पास के वनो के लिए खतरा पैदा किए हुए हैं। मध्यप्रदेश के बढते सीमेन्ट के कारखानो में प्रेसीपीटेटर लगाने की अनिवार्यता बताते हुए डा, दूबे ने कहा कि अन्यथा वायु प्रदूषण भयकर रूप धारण कर लेगा। (देखें—नवभारत टाईम्स 6 मार्च 84 पृष्ठ 8)

पर्यावरण के प्रदूषित होने से कैसी-कैसी हानिया होतीं हैं एव कैसे कैसे रोग फैलते हैं, इसकी कल्पना भी अत्यन्त भयावह है। भोपाल की दुर्घटना इसका नवीनतम एवं भयंकरतम उदाहिरण है। जहा हजारों लोगों की जानें चली गई एवं लाखों लोग प्रभावित हुए। किसी की आख गई तो किसी को लकवा (पक्षापात) हो गया। कोई पीलिया का शिकार हुआ तो कोई दम घुटने का चिकित्सको एव वैज्ञानिकों के दल के दल इसके दुष्प्रभाव का आकलन कर रहे हैं पर कोई सही रूप से नही बता पा रहा है कि इससे क्या-क्या हानिया सम्भव हैं और भावी सतति पर इसका क्या प्रभाव पड सकता है। और सत्य तो यह है कि भावी सतति पर इसके दुष्प्रभाव की ओर वैज्ञानिको का ध्यान गया ही नहीं। किन्तु हम यहा राजस्थान बोर्ड आफ इण्डिया मैडिमन के अध्यक्ष वैद्य श्री ब्रह्मानन्द त्रिपाठी के उस वक्तव्य की ओर ध्यान दिलाना अपना कर्त्तव्य समझते हैं जिसमें उन्होंने पर्यावरण के कारण भावी सनति पर दुष्प्रभावो की चर्चा की थी। अजमेर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर वेद परिषद् के अध्यक्ष पद से बोलते हुए त्रिपाठी जी ने कहा था कि—"अभी कुछ वर्ष पूर्व वियतनाम युद्ध हुआ था। उत्तर वियतनाम और दक्षिण वियतनाम युद्ध ग्रस्त थे। उत्तर में वहां के स्वतन्त्रता प्रेमी लोग थे और दक्षिण में सहायता के नाम पर अमेरिका की सेनाए। युद्ध के कष्टों से हार कर दोनों में एक सन्धि हुई कि दोनो के बीच में युद्ध-रहित क्षेत्र बना लिया जावे। ऐसा क्षेत्र बन तो गया। परन्तु उत्तर वियतनाम के लोग क्षेत्र से परिचित होने के कारण लुक-छिप कर आते और अमेरिकी लोगो पर प्रहार करके भाग जाते। इस शान्ति क्षेत्र मे घने जगल थे। उनके कारण उत्तर लोगों ने घने वृक्षो के पत्तों को नष्ट करने के लिए अनेक प्रकार के रासायनिक द्रव्यो का छिडकाव किया। उन रसायनिकों के विष से उस क्षेत्र के वायु, जल और भूमि विषमय हो गए। कुछ समय बाद वहा के लोगो की सन्तान विकलाग उत्पन्न होने लगी। यहा तक कि 82-84 प्रतिशत तक बालक विकलाग जन्मने लगे। किसी का हाथ तो किसी का पैर तो किसी का मस्तिष्क विकृत होने लगा। वहा के लोगो ने इसे दैवी प्रकोप समझा। परन्तु अमरीकी लोगों ने इसका कारण समझने के लिए अपने क्षेत्र मे परीक्षण किए। वियतनाम जैसे ही दूषित वातावरण में ही कुछ चूहो को रखा गया। जब उनकी सतान हुई तो वह भी 84 प्रतिशत तक विकलाग पाई गई। तब यह निश्चित हुआ कि यह दूषित वातावरण ही विकलाग सन्तान उत्पन्न होने का कारण है। (देखें-परोपकारी का महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी विशेषाक पृष्ठ 79)

दुख है कि भोपाल की दुर्घटना में इस विषय पर अभी तक कोई अधिकारिक बात नहीं कही गई। परमात्मा न करे कि भावी सतति इससे प्रभावित होन पर हमारे वैज्ञानिको द्वारा इस विषय की उपेक्षा अवश्य ही खेदजनक एव चिन्ताजनक है। जो भी हो अणु और परमाणु के इस युग में पर्यावरण जिस तीव्रता से बिगडता जा रहा है, वह वस्तुत चिन्ता का कारण है। अमेरिका के प्रसिद्ध परमाणु शास्त्री एडवर्ड टेलर का मत है कि परमाणु बमो के विस्फोट से जो विषैले पदार्थ तथा गैस वायुमण्डल मे मिल रहे हैं, उससे सम्पूर्ण जीव जगत के अस्तित्व को ही खतरा पैदा हो गया है। उन्होंने आशका प्रकट की है कि यदि परमाणु विस्फोट का यह क्रम इसी प्रकार से चलता रहा तो पता नहीं कि मानव का कहीं अस्तित्व भी रहेगा या नहीं। परमाणु विस्फोट के निकले जहरीले पदार्थों तथा गैसों का प्रभाव प्रजनन कोशों पर पड़ता है जिससे आनुवांशिक विकार पैदा होते हैं तथा भावी सन्तानों पर विपरीत प्रभाव अवश्य पडता है। (दिनमान साप्ताहिक, मार्च 84 पृष्ठ 11) विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक सर्वेक्षण से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि पर्यावरण प्रदूषण विकलांग बच्चों के जन्म का कारण है।

'निक' से बने कीटाणु नाशक पदार्थ स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक हैं अपितु यूं कहना चाहिए कि अत्यन्त घातक हैं। (देखें-दैनिक जागरण 27-12-84 तथा दैनिक नवभारत टाईम्स दिनाक 23-12-84) श्री हरीश अग्रवाल का यथार्थ कथन है कि—"एक और विडम्बना है। रसायनों की वैज्ञानिक समझ बढ रही है। लेकिन नियंत्रण कारवाई सरकारो में समझौतों तथा प्रबन्धकीय व प्रशासकीय कारवाईयों की लगाम ढीली हो रही है। पश्चिमी देशों मे डी डी, टी पर अकुश लगाया जा सकता है लेकिन उस गरीब देश में कदापि नहीं जहा मलेरिया महामारी के रूप मे अब भी है। विश्व स्वास्थ्य सगठन ने कई बार गरीब देशों से कहा है कि कीटनाशक का उत्पादन सग्रह परिवहन तथा बिक्री खतरनाक चीज है। गरीब देश कुछ बहुराष्ट्रीय कम्पनियो के माल के डपिंग ग्राऊण्ड बन रहे हैं, इस लिए सुरक्षा कार्रवाइयों में बहुत सावधानी बरतने की जरूरत है। अनेक कीटनाशक अमेरिका, इग्लैंड आदि पश्चिमी देशो मे बन्द कर दिए गए हैं, लेकिन इनका इस्तेमाल भारत मे जारी है। इन में डी डी. टी बी एच, सी, मिथयल पेराथियन, हेप्टाक्लोर, लिडेन आदि हैं। भारत के सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों में छ से आठ हजार टन डी. डी टी इस्तेमाल होती है।

बी एच सी की वार्षिक खपत 33 हजार टन है। मिथयल पेराथिन डी, डी, टी, से 20 गुणा अधिक जहरीला है। भारतीयो के भोजन में काफी मात्रा में डी, डी टी व अन्य कीटनाशक पाए गए हैं। यहा तक कि पजाब, गुजरात व बम्बई के बेबी फूड मे डी, डी टी, के कुछ अश पाए गए।"(नवभारत टाईम्स दिनाक 23-12-84)

चरक सहिता के जनपदोद्ध्वंसनीय अध्याय मे वायु, जल, देश और काल के दूषित होने से पूरे के पूरे जनपदों का महामारियों से नाश हो जाता है. इसका विस्तार से वर्णन है ऐसा श्री ब्रह्मानन्द त्रिपाठी का कथन है। उनका यह भी कथन है कि प्राचीन आर्यों को यह अच्छे प्रकार से विदित था कि ऐसे प्रदूषण से सन्तान विकृत होतीं है और प्राणि विनाश होता है। उन्हे यह भी ज्ञात था कि इससे

(शेष पृष्ठ 6 पर)

प्रान्तीय आर्य महिला सभा पंजाब, हिमाचल, हरियाणा सम्मेलन एवं 85 का निर्वाचन

प्रान्तीय आर्य महिला सभा, पजाब, हिमाचल, हरियाणा का सम्मेलन पिछले दिनो स्त्री आर्य समाज 19 सैक्टर चण्डीगढ मे श्रीमती डा विद्यावतीजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में सर्वसम्मति से आगामी सत्र के लिए श्री कमला जी आर्या (लुधियाना) को प्रधान चुना गया। प्रधान को ही शेष पदाधिकारी तथा अन्तर ग सदस्य चुनने का अधिकार दिया गया। नव-निर्वाचित प्रधान ने तदनुसार निम्न पदाधिकारी एव अन्तर ग सदस्यों की घोषणा की है—

सरक्षक—श्रीमती मा. विद्यावती जी जालन्धर, एव श्रीमती शान्ताजी नन्दा जालन्धर, प्रधाना—श्रीमती कमला जी आर्या लुधियाना। कार्यकर्त्ता प्रधान—श्रीमती प्रकाशवती बैम्बी माडल टाऊन लुधियाना, उपप्रधान—श्रीमती चन्द्ररानी शर्मा परवाणु (हिमाचल) एव श्रीमती शान्ता जी गौड, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना। मन्त्री—श्रीमती सन्तोष रहेजा, आर्य समाज माडल टाऊन लुधियाना, उपमन्त्री—श्रीमती सरला खन्ना आर्य स्त्री समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना प्रचार मन्त्री—श्रीमती कमला आर्या स्त्री आर्य समाज ऋषि कु ज पक्का बाग जालन्धर। कोषाध्यक्ष श्रीमती कमला सेठ, स्त्री आर्य समाज पक्का बाग जालन्धर सहायक कोषाध्यक्ष—श्रीमती शकुन्तला जी स्त्री आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर।

अन्तरग सदस्यश्रीमती लक्ष्मीदेवी, स्त्री आर्य समाज बस्ती गुजा जालन्धर, श्रीमती सुशीला कोछड स्त्री आर्य समाज गोविन्दगढ जालन्धर, श्रीमती सुशीला यादव स्त्री आर्य समाज कृष्णपुरा जालन्धर, श्रीमती कौसल्यावती भल्ला स्त्री आर्य समाज सैक्टर 22 चण्डीगढ, श्रीमती सावित्री देवी स्त्री आर्य समाज सैं 19 चण्डीगढ श्रीमती विद्यावती खण्डूजा सैं 18 चण्डीगढ, श्रीमती सुमन प्रभा जी स्त्री आर्य समाज सैं 16 चण्डीगढ, श्रीमती सत्यावती स्त्री आर्य समाज सैं, 7 चण्डीगढ, श्रीमती आर्य प्रिया जी स्त्री आर्य समाज सैं, 22 चण्डीगढ श्रीमती शान्ता सुनेजा स्त्री आर्य समाज पठानकोट, श्रीमतीप्रीतम देवी स्त्री आर्य समाज बटाला, श्रीमती राजरानी जी स्त्री आर्य समाज हिसार, श्रीमती सीतारानी स्त्री आर्य समाज खेल बाजार पानीपत, श्रीमती कंचन मलिक स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन पानीपत, श्रीमती शान्ता रानी स्त्री आर्य समाज दसूहा, श्रीमती ज्ञानदेवी स्त्री आर्यसमाज दीनानगर, श्रीमती कौशल्या देवी स्त्री आर्यसमाज पटियाला, श्रीमती राजरानी स्त्री आर्यसमाज धारीवाल, श्रीमती प्रधाना स्त्री आर्य समाज रैय्या मण्डी अमृतसर की स्त्री आर्य समाजो, लोहगढ श्रद्धानन्द बाजार, लक्ष्मणसर लारेंस रोड की सभी प्रधानाए तथा केन्द्रीय स्त्री समाज अमृतसर की अध्यक्षा श्रीमती आज्ञावती, स्त्री आर्य समाज कादियां कुम्हीगेट नाभा, पाण्डुसर नाभा की प्रधानाए श्रीमती सावित्री जी स्त्री आर्य समाज फील्ड गज लुधियाना, सुदेश जी स्त्री आर्य समाज अहमदगढ मण्डी, सुन्दरनगर (हिमाचल) कण्डाघाट (हिमाचल) लोअर बाजार शिमला, चम्बा हिमाचल, भक्तिनगर अमृतसर, रानी का तालाब फिरोजपुर चौक फिरोजपुर फिरोजपुर छावनी, तलवाडा, सुजानपुर (हिमाचल) मनीमाजरा (चण्डीगढ) नवाशहर जलवाडा, सुलतानपुर लोधी, पजाबी मुहल्ला अम्बाला कैंट- स्वदेशी बाजार अम्बाला छावनी, रेलवे रोड अम्बाला शहर शाहाबाद मारकण्डा हरियाणा एव जालन्धर छावनी की प्रधाना इस प्रकार 50 अन्तरंग सदस्य घोषित किए गए।

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेशारम्भ

गुरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट करतार पुर की ओर से सचालित संस्कृत महा-विद्यालय (गुरुकुल करतारपुर) में नवीन छात्रों का प्रवेश आरम्भ है। पजाब के बच्चों का एक मात्र यह विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी से सम्बन्धित है। बच्चों की उच्च शिक्षा की व्यवस्था है। यहां के कई स्नातक शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं तथा आचार्य तक की शिक्षा पा रहे हैं हिन्दी से पाचवी श्रेणी उर्त्तीण छात्रो को प्रवेश दिया जाता है। स्थान सीमित हैं। प्रवेशार्थी शीघ्र आचार्य से निम्न पते पर सम्पर्क करे।

आचार्य नरेश जी शास्त्री एम. ए
गुरुकुल करतारपुर (जालन्धर)

—

आर्य बाल विद्या मन्दिर नवांशहर के मेधावी छात्र

1, शानदार परीक्षा परिणाम
आठवी श्रेणी 1985 आनन्द कुन्दराने पंजाब में 12वा तथा राजेश बस्सी ने पजाब में 38 वा स्थान प्राप्त करके नवाशहर के सभी स्कूलो को पछाड दिया।

2 कुल छात्र 40
3. प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले छात्र 20
4 द्वितीय श्रेणी प्राप्त करने वाले छात्र 13
5 तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले छात्र 5
6 मैरिट मे आने वाले छात्र 2
7 छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले 2+5 (टी एस,) 7
8, 75 प्रतिशत से अधिक अक प्राप्त करने वाले छात्र 8

1985 की पजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित पाचवी श्रेणी की छात्रा मृदुला जोशी ने 185—200 अक प्राप्त करके नवाशहर तहसील मे प्रथम स्थान प्राप्त किया।

बीना भल्ला एम ए, बी एड
प्रिंसीपल

—

(4 पृष्ठ का शेष)

(4 पृष्ठ का शेष)
बचने के लिए और अच्छी सन्तान, अच्छे पशु, अच्छे अन्न यहा तक कि ब्रह्मवर्चस की प्राप्ति और वृद्धि का साधन अग्निहोत्र है।" देखें-परोपकारी वही पृष्ठ 79)

आधुनिक ऋषि एव आर्य समाज के यशस्वी सस्थापक महर्षि दयानन्द ने हवन यज्ञ को पर्यावरण की शुद्धि का प्रबल हेतु बताया है। उनका कथन है कि जो होम के परमाणुयुक्त शुद्ध वायु है, सो पूर्व स्थित दुर्गन्ध वायु को निकाल के उस देशस्थ वायु को शुद्ध करके रोगो का नाश करने वाला होगा और मनुष्यादि सृष्टि को उत्तम सुख को प्राप्त करना है सार्वदेशिक साप्ताहिक के प्रथम जनवरी 1984 के अक मे सामयिक चर्चा के अन्तर्गत वस्तुतय बडी सामयिक चर्चा की गई है यथा—ससार मे सब प्रकार के विघ्नो को यदि हम केवल एक गोघृत से ही दूर करना चाहे तो निर्विवाद कर सकते हैं। गोघृत परम विषनाशक है। ससार में इस गोघृत जैसा अन्य कोई नही कि जो प्रयत्नशील हो, स्निग्ध हो, सुगन्धित हो, पुष्टिकारक हो, तथा विषनाशक हो ऐसे उत्तम पदार्थ से जब हवन-यज्ञ किया जाएगा तो ससार का विष निश्चय ही हर लिया जाएगा। यज्ञ को विश्वधा अर्थात् विष को धारण करने वाला तथा विश्वायु अर्थात् विश्व को आयु कहा गया है। यज्ञ को प्रजापति कहा गया है—यह इसलिए कि यह समस्त ब्रह्माण्ड मे व्यापक होकर प्रजा का पालन करता है। महर्षि का कथन है कि-जब वायु और वृष्टि जल को बिगाडने वाला सब दुर्गन्ध मनुष्यो के ही निमित्त से उत्पन्न होता है तो उसका निवारण करना भी उनको योग्य है। इतना ही नही महर्षि का कथन है कि-यह कार्य अन्य किसी प्रकार से सिद्ध नही हो सकता। अत आवश्यकता इस बात की है कि आर्य समाज अपने इस दावे को कि हवन यज्ञ पर्यावरण की शुद्धि का एक चमत्कारिक साधन है—आगे बढकर सिद्ध करे और हवन-यज्ञ के प्रचार-प्रसार से पर्यावरण प्रदूषण को शुद्ध करे।

—

पंजाब का घल्लूघारा-रस्सी का साँप

ले.—श्री आचार्य शिवराज जी शास्त्री एम. ए. मोलवी फाजिल

घल्लूघारा सप्ताह जब अकालियों द्वारा मनाया जा रहा था तो मैं पंजाब में ही था। सारे देश में घल्लूघारा शब्द से आतंकवादियों ने आतंक-सा उत्पन्न कर दिया था। देश भर में सुरक्षा व्यवस्था पर सरकार को अरबों रुपए का खर्च करना पड़ा। भारतीय प्रजा अपने इतिहास से अनजान इन सात दिनों को सांस बन्द करके सहन कर रही थी, यातायात लगभग 20 प्रतिशत रह गया था। मेरी जिज्ञासा जगी कि घल्लूघारा को समझा जाए। मैं 2 जून को उसी स्थान पर (बरनाला) था जहां इतिहास प्रसिद्ध यह घटना घटी थी।

इतिहास कनिंघम के अनुसार घटना निम्न प्रकार है—

अफगानिस्तान के मुसलमान शासक अहमदशाह अब्दाली ने सन् 1748 से लेकर 1767 तक भारत पर आठ बार आक्रमण किया। 1761 को प्रसिद्ध पानीपत का युद्ध उसका पांचवा हमला था जहां अहमदशाह अब्दाली विजयी हुआ। विजयी होने पर भी वह पंजाब पर अपना ठीक शासन स्थापित नही कर सका। उसके अफगानिस्तान वापिस जाते ही सिखो ने जगह-जगह पर अफगानों को भारी चोटें पहुचानी प्रारम्भ कर दी।

सन् 1762 के प्रारम्भ में अब्दाली ने सिखो को दबाने के लिए एक फौज अपने सेनापति नूरुद्दीन के नेतृत्व में भेजी परन्तु वह महाराजा रणजीतसिंह के बाबा राजा चरतसिंह के हाथो बुरी तरह पराजित हुई। वही हाल अब्दाली के पंजाब के गवर्नर अजेव खां का भी हुआ। उसे भाग कर लाहौर के किले मे शरण लेनी पड़ी।

सिखों में अपने गुरु गोविन्द सिंह के बच्चो और उनकी माता के हत्यारे शहर सरहिन्द को नष्ट करने का प्रबल आन्दोलन जगा और वे सरहिन्द को नष्ट करने की योजना बनाने लगे थे।

अफगान शासक अब्दाली को अपने पंजाब के विजित सूबों को बचाने के लिए अफगानिस्तान से दौड़कर भारत आना पड़ा। छटी बार वह 1762 के अन्तिम महीनों में लाहौर पहुंचा।

सिख उस समय सरहिन्द (जो उस समय पंजाब का एक सशक्त मुस्लिम सूबा माना जाता था, पर हमला करने की तैयारी कर रहे थे जिससे वे सरहिन्द को विजय करके अब्दाली से सीधी टक्कर ले सकें। अब्दाली एक अनुभवी सेना नायक था। उसने खतरे को पहचाना और बड़ी फुर्ती से दिन-रात दौड़ता हुआ सरहिन्द आ पहुंचा तथा सिख सेना को अचानक आ घेरा। सिख इस लड़ाई में बुरी तरह पराजित हुए। उनकी हार के तीन कारण थे —

1. वे हमले के मुकाबिले के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे।

2. उनको अब्दाली से जिसकी विजेता के रूप में पंजाब में काफी दहशत थी, सीधी टक्कर का पहले कभी अवसर ही नही आया था।

3. सिख अपने बीबी-बच्चो को साथ लिए हुए थे और सुरक्षित स्थान पर पहुचाने की कोई व्यवस्था नही कर पाए थे।

परिणाम स्वरूप सिखों का सरहिन्द विजय का सपना भयंकर हार के रूप में बदल गया। खून के प्यासे हत्यारे विधर्मी विदेशी आक्रमक पठानों ने अपनी राक्षसी वृत्ति का परिचय दिया! और हजारों भागते हुए सिख स्त्री पुरुष व बच्चो की निर्ममता पूर्वक हत्या कर दी। इतना खून बहा कि भूमि रक्त से लाल हो गई इस निर्मम हत्या काण्ड को इतिहास में घल्लूघारा के नाम से अंकित किया गया। इतिहासकारो के अनुमान के अनुसार भागते हुए 25000 नर नारी बालक इस हत्या काण्ड मे मारे गए।

फिर भी अहमदशाह अब्दाली की खून की प्यास नही बुझी। मुस्लिम आक्रमणकारियो के पदचिन्हो पर चलते हुए उसने दिवाली के उत्सव मना रहे लोगों पर अमृतसर में हमला किया।

मुस्लिम इतिहासकार मोहम्मद लतीफ लिखता है कि अब्दाली ने स्वर्ण मन्दिर को बारूद से उड़ा दिया जिसके मलबे से स्वर्ण मन्दिर का पवित्र सरोवर भर गया तालाब में उसने हजारों गायों व बैलों को कटवा कर उनका खून सरोवर में डलवाया। हजारों सिखों व हिन्दुओं के सिर कटवाकर अनेकों ताबूत (पिरामिड) खड़े किए ताकि सिख फिर सिर न उठा सकें।

घल्लूघारा के महान् बलिदान से सिखो के हृदय में देश धर्म की रक्षा के लिए मानो एक दैवीय चमत्कारिक शक्ति उत्पन्न हो गई। उन्होंने निश्चय किया कि अब पंजाब मे हमेशा के लिए पठान शासन समाप्त कर दिया जाएगा। अफगानिस्तान वापिस लौटते हुए अब्दाली चिनाब नदी तक ही पहुचा था कि सिख सेना ने संगठित होकर पहले कसूर की पठान रियासत को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला, फिर मालेर कोटला के पठान शासक हिम्मत खां को युद्ध मे मार डाला और रियासत पर अपना कब्जा कर लिया। तत्पश्चात् सरहिन्द पर चढ़ाई कर दी वहां के शासक पठान जैन खां और उसके सहायक अन्य मुस्लिम शासको को मारकर सरहिन्द को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। सिख वहा से पठानों का पीछा करते हुए जमुना पार सहारनपुर तक पहुंच गए तथा उन्होने बहुत हानि पहुंचाई। इसके पश्चात् सिख सेना ने लाहौर पहुचकर लाहौर को घेर लिया। वहां अब्दाली ने अपना एक हिन्दू शासक नियुक्त कर रखा था जिसका नाम था काबुलीमल। हिन्दू गवर्नर से उन्होने मांग की कि शहर में रहने वाले गौहत्यारे कसाईयो को उनके हवाले किया जाए।

दुविधा मे पड़े काबुली मल ने इन गौ हत्यारो, कसाईयों के नाक व कान कटवाकर शहर के बाहर भेज दिया तथा सिख सेना को समझा बुझाकर उन से सन्धि करके वापिस भेज दिया।

अब्दाली 1764 में लाहौर में आया इतिहासकार लतीफ लिखते है कि वह सिखों का कुछ नहीं बिगाड़ सका उसने अपना क्रोध सिखों व हिन्दुओ के धर्म स्थानों को अपवित्र करने व फसलों तथा मकानों को जलाने में उतारा विवश अपना गुस्सा उतार कर निराश हताश लौट गया। सिखों से बदला लेने के लिए 1767 में फिर वह पंजाब आया। परन्तु तब तक सिख लाहौर पर अपना अधिकार करके पंजाब में बचे-खुचे पठान शासन का नामो निशान मिटा चुके थे अत: अब्दाली को पद पद पर अपनी मौत ही मौत दिखाई देती थी।

अंग्रेज इतिहासकार कनिंघम व मुस्लिम लेख मौहम्मद लतीफ के लेखों के आधार पर 12000 हजार पठान सिपाही भयभीत होकर अफगानिस्तान भाग गए और अब्दाली भी उनके पीछे लौट गया सिख सेनाएं उन्हें खदेड़ती हुई अटक चली गई।

कहां हिन्दू पद पादशाही का उपरलिखित घल्लूघारा कहां पंजाब की भूमि पर हिन्दुओं का निर्दोष रक्त बहाने वाले तथा कथित गुरु के सिखों का घल्लूघारा जो केवल रस्सी का ही सांप बनकर रह गया। समझदार सिखों ने सात दिन के गुरु ग्रन्थ साहब के अखण्ड पाठ से अनुभव कर लिया कि हिन्दू सिख एक रक्त है। यह पठान रक्त नहीं। इसीलिए देश को चैन की सास आई और सप्ताह शान्ति से गुजर गया।

आर्य समाज—चुनौतियां और उत्तर

लेखिक—डा. पुष्पावती आचार्य मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल . वाराणसी

आर्य समाज के सम्मुख जोरदार चुनौतियां हैं। हां वे चुनौतियां कि जिन का उत्तर देना ही होगा यदि न दिया तो इसकी समाप्ति निश्चित है। यह कटु है पर है सत्य। कटु औषधि की तरह इसे पीना ही चाहिए। अन्यथा ...कोई भी समाज जब तक अपने घर को अपने में समेट कर रख सकता है तब तक वह संजीवन शक्ति से आप्लावित रहता है और जब उसके घटक विशेषकर निष्ठावान् घटक अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति एवं सुरक्षा के लिए दूसरे समुदायों का मुंह ताकने लगते हैं या दूसरे समुदायों का अंग बनते हैं। तब समझना चाहिए कि उस समाज में रोग लग रहा है। उसकी पाचन शक्ति कुंठित हो रही है और वह दुर्बल होता जा रहा है। जब चेतावनी देने पर भी उसके मुखिया या कर्णधार न चलें तो समझना चाहिए कि रोग असाध्य है।

आर्य समाज ने राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए तो अपने सदस्यों को दूसरे दलों में जाने की खुली छूट दे ही रखी थी, पर अब संस्कृति रक्षा व राष्ट्रीय संकट के समय भी उसके सक्रिय घटक आर्य समाज में कार्य क्षेत्र न पाकर निराश होकर दूसरे सगठनों की ओर जा रहे हैं तो आर्य समाज की स्थिति क्या है। इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

अतीत में भी आर्य जाति के पतन व विघटन का कारण यही था—पाचन शक्ति की कमी तब तो अविवेक के कारण रूढ़िग्रस्त समाज ने अपना विनाश किया था, पर अब तो ऋषि दयानन्द ने विवेक तर्क का दीपक देकर पौरुष ओज व तेज का सम्बल थमा दिया है पर ये सम्बल हमारे नेतृत्व वर्ग में कुण्ठित हो रहे हैं। नेतृत्व प्रधान लोगों का यह अनिवार्य कर्तव्य उत्तरदायित्व होता है कि वे समाज में नए शक्ति स्रोतों का अन्वेषण करें नई 2 प्रतिभाओं से इसे युक्त करें अर्थात् भावी पीढ़ी के लिए नए प्रकाश स्तम्भ तैयार करें। दूसरे शब्दों में जीवन धारा के प्रवाह को सर्वदा गतिशील रखें।

पर यहां उल्टी बात हो रही है जो भी नया शक्ति स्रोत नतन प्रतिभा मार्ग खोजती है उसे निरुत्साहित करके या तो दबा दिया जाता है, या पीछे धकेल दिया जाता है अथवा उसके लिए कोई भूल-भुलैया का जाल रच दिया जाता है जिस में उलझकर वा तो स्वयं कार्य क्षेत्र से वह पीछे हट जाता है या अन्य समुदायों में जा मिलता है। सशक्त अथवा जागृत नेतृत्व में चुम्बकीय शक्ति होनी है। उदारता- विचारशीलता एवं समन्वय कारिता का गुण होना है। यथायोग्य व्यवहार का अर्थ यही है जो जिस काम की क्षमता रखता है उसको उसी कार्य में लगा देना। आरम्भिक काल मे आर्य समाज के नेताओं में ये गुण थे। वे खोज खोज कर व्यक्तियों को लाते थे उन्हे प्रोत्साहित करते थे और कार्य क्षेत्र में लगाते थे। स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, पं. लेखराम, भगतसिंह आदि व्यक्ति आर्य समाज को इसी गुण केकारण से मिल चुके थे।

वर्तमान नेतृत्व वर्ग धन को मुख्यता देकर चल रहा है, कहीं उनसे आगे बढ़कर कोई उनका पद न हड़प ले। इसलिए वे नई शक्तियों से भयभीत होकर उन्हें आगे आने ही नहीं देते हैं स्वयं तो वे क्या खोजेंगे। यदि कोई प्रतिभाशाली व कर्मठ व्यक्ति स्वत: नेतृत्व से सहयोग की मांग करें तो अनेक बहाने बनाकर टाल दिया जाता है यदि आर्य समाज के कर्णधार आत्म लघुता इनफीरीरियरटी कम्पलैक्स से ऊपर उठकर यज्ञ भावना की समन्वय कारी प्रवृत्ति को हृदयंगम करके व्यवहार क्षेत्र में आएं और प्रत्येक विचारशील कर्मठ एव प्रतिभाशाली व्यक्ति को उस की क्षमता के अनुसार कार्य में लगा दें तो उनके पास अपार शक्ति समूह संचय हो जाए और उनकी मान व प्रतिष्ठा सौगुनी बढ़ जाए। इसके साथ ही आर्य समाज की गौरव वृद्धि होकर चहुंदिशि इसका यश गान फैल जाए।

आज राष्ट्र की संस्कृति को जातीय जीवन को सब ओरसे भयंकर चुनौतियां हैं। सब लोग त्राहि-2 मचा रहे हैं। क्या आर्यों को सामान्य व्यक्तियों की तरह डरना या उपेक्षा शील होकर अपनी रोजी-रोटी की ही चिन्ता करना शोभा देता है क्या आर्य समाज के शानदार ओजस्वी व्यक्तित्व के अनुरूप हैं यह इस समय तो सभी प्रान्तों के आर्यों को तनकर मैदान में डट जाना चाहिए। कन्या कुमारी से कश्मीर तक ब्रह्मपुत्र से सिन्धु नदी तक एक पुकार उठनी चाहिए थी कि दस्यु (आतंकवादी) लोग एक कदम नहीं बढ़ सकते। यह देश आर्यों का देश है अनार्यों दुस्साहस यहां नहीं पनप सकते। क्या तमाशा है आज हमारे देश की प्रिय प्रधान मन्त्री के हत्यारो का यहां सार्वजनिक अभिनन्दन होता है देश को विखण्डित करने वालों की वहा पूजा होती है और देश की जनता व सरकार टुकर 2 देख रही है और आर्य समाज रूपी शेर की गर्जना भी मौन है।

पर आर्य समाज को सर्वस्व समर्पित करने वाले इसे सच्चे दिल से प्यार करने वाले मूक रूप से ऋषि कार्य की पूर्ति में अपने को होम देने वाले समहित होकर पूछ रहे हैं कि आर्य समाज मौन क्यों है। उनका हृदय चीत्कार कर रहा है। भूल गया आर्य समाज अपने अतीत को, उस अतीत को जिसमें वह मस्ती भरे केसरी की तरह प्रत्येक सकट मे, भारत मां की चरण बन्दना करता हुआ आततायियों से जूझता था, सदा वह अन्याय व दमन, अनाचार, अत्याचार का प्रतिरोध करता रहा है। आज देश की सरकार भी ओजस्वी व्यक्तियों की खोज में हैं। आर्य समाज तो ओज का पुंज है। ओजस्वी, तेजस्वी व्यक्तियों का संगठन है फिर यह मौन हो केवल मूक दर्शक क्यों बन बैठा है।

रूढ़ि वादिता ने सर्वदा समाज को पंगु बनाया है आज आर्य समाज भी रूढ़िग्रस्त होता जा रहा है कुछ घिसी-पिटाई पिटी-पिटाई बातों को लेकर उपदेश करा देना, मनोरंजक भजन गवा देना ही प्रचार नहीं होता। कहीं 2 शास्त्रार्थ की चुटकियां भी ली जाती हैं पर इस उथल-पुथलमयी वेला में जबकि राष्ट्रीय व सामाजिक जीवन संकट में फंसा है केवल इस वाक प्रचार से काम नहीं चलेगा, आर्य समाज वर्ण व्यवस्था को मानता है तो आज क्षात्र शक्ति का तेज वह दिखाए केवल पण्डिताई भरी कोरी बातों से जीवन नहीं चलने वाला। यह वैसी ही बात हैं जैसाकि कृष्ण ने अर्जुन को उद्बोधन वेला में कही थी कि तुम पण्डिताई की बातें कर रहे हो जो कि कर्तव्य क्षेत्र से भागने का बहाना मात्र है, आज आर्य समाज को कृष्ण बनकर आगे आना था पर वह अर्जुन की तरह विषण्ण एवं कुंठित बुद्धि हो गया है अर्जुन को परिजनो का मोह सता रहा था और आर्य समाज को कुर्सी का मोह अपने प्राणों का मोह एवं सुख सुविधामय जीवन का मोह प्रतिबद्ध कर रहा है।

आर्य जनता फिर भी सरल हृदय है वह त्याग तप से पीछे हटने वाली नहीं, वह रण क्षेत्र में जूझ सकेगी पर नेतृत्व उसको सही दिशा दिखाए तभी वह आगे आएगी। क्या आर्य नेतृत्व जागेगा।

शोक प्रस्ताव

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट एव श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर की अन्तरग सभा की एक बैठक दोपहर बाद 26 मई 1985 को श्रीमती कमला जी आर्या की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। जिसमे गायत्री मन्त्र के पाठ पूर्वक दो मिनट के मौन के साथ निम्न दिवगत महानुभावो को ट्रस्ट एव विद्यालय की ओर से हार्दिक श्रद्धाजलिया अर्पित करते हुए प्रभु से उन की आत्मा की सद्गति एव शान्ति की प्रार्थना तथा तथा सम्बन्धित जनो को इस दुखद शोक को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई है।

दिवगत आत्माएं जिनके शरीर त्याग करने पर शोकाभिव्यक्ति की गई।

स्व आर्य भिक्षु जी वानप्रस्थी, वै, सा, आ, रोहतक। स्व, नोभराज जी, गाजियाबाद। स्व जगदीशराज जी सर्राफ शक्तिनगर अमृतसर। स्व. शोरीलाल शक्तिनगर अमृतसर। स्व, ओम्प्रकाश जी वैद्य श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर स्व, चौधरी बलवीर सिंह जी होशियारपुर।

स्मारक समिति ट्रस्ट तथा गुरुकुल करतारपुर इस शोक प्रस्ताव द्वारा उक्त महानुभावो के निधन पर हार्दिक शोक तथा परिवारजनों के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट करता है।

—चतुर्भुज मित्तल मन्त्री

शोक समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के गणक श्री नवाबसिंह जी का 25 जून को अपने ग्राम किशनपुर बराल जिला मेरठ (उ, प्र,) में अचानक निधन हो गया। आप सभा के कार्य पर 15 जून को पानीपत गए थे। पर वे अचानक बीमार हो गए। यात्रा की अवस्था मे उनका स्वास्थ्य अधिक खराब हो गया। 23 जून को उन्हें सहारनपुर हस्पताल मे उपचारार्थ ले जाया जा रहा था परन्तु मार्ग में ही उनका निधन हो गया। वे अपने पीछे नौजवान विधवा तथा एक छोटा लड़का और तीन लड़कियां रोती-बिलखती हुई छोड़ गए।

श्री नवाबसिंह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर मे 1960 में नियुक्त हुए थे। 1973 में पंजाब सभा के विभाजन के पश्चात् आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की सेवा में आ गए थे। उनके निधन का समाचार सुनते ही सभा का कार्यालय बन्द कर दिया गया।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके दुःखी परिवार को इस महान् दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

श्रीमती लक्ष्मीदेवी जी सौंधी का निधन

यह समाचार अत्यन्त दुःख से पढ़ा जाएगा कि श्री बलबीर राज जी सौंधी मैनेजिंग डायरेक्टर पंजाब काश्मीर फाईनैंस प्रा, लि. जालन्धर की पूज्य माता श्रीमती लक्ष्मीदेवी सौंधी का 26-6-85 को स्वर्गवास हो गया है। वे गत कुछ समय से रुग्ण चल रही थीं। स्वर्गीय कन्या महाविद्यालय के संस्थापक श्री ला, देवराज सौंधी की पुत्र वधु थी, आर्य शिक्षा मण्डल की आजीवन सदस्य और कन्या महाविद्यालय की प्रबन्धकर्तृ सभा की प्रतिष्ठित सदस्य थी। प्रभु से प्रार्थना है कि वह दिवगत आत्मा को सद्गति एव शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य व सहनशक्ति प्रदान करे।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज माडल टाऊन पठानकोट के लिए एक सुयोग्य विद्वान् पुरोहित की आवश्यकता है। वेतन योग्यता अनुसार दिया जाएगा। गृहस्थी पुरोहित को प्राथमिकता दी जाएगी। समाज मे आवास आदि की व्यवस्था है। निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें।

राममूर्ति प्रधान आर्य समाज माडल टाऊन पठानकोट।

प्रवेश आरम्भ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल डी, 45-129 नई बस्ती रामापुरा, वाराणसी में शिशु से आचार्य तक में प्रवेश आरम्भ है। वैदिक शोध छात्राओं को प्राथमिकता उपलब्धी, पीड़ित परिवारों की पुत्रियों को निःशुल्कता में। सम्पर्क सूत्र

सरदारीलाल वर्मा उपप्रधान।

डा, पुष्पावती मुख्याधिष्ठात्री

मे नरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलोफोन नं. 74250 · रजि. न. पो. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 14, 31 आषाढ़ सम्वत् 2042, तदनुसार 14 जुलाई 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये

मानव मानव बने—आज की पहली समस्या

ले.—आचार्य शिवराज जी शास्त्री ,एम. ए. मौलवी फाजिल

❋

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथोरक्ष धिया कृतान् अनुल्वणं वयत जोगुवामपो ।
मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ।

ऋ 10-53-6

ससार एक महान् गतिशील यात्रा स्थल है। जो समाज उसकी गतिविधि को न पहचान कर अपनी अज्ञानतावश आंख बन्द करके चलता है वह न केवल पिछड़ जाता है ससार यात्रा में असफल हो जाता है। भारत वर्ष ससार का गुरु होने का युगयुगो से दावेदार रहा है । मनु ने इस उद्घोष को हजारो, लाखो वर्ष [एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।] स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः कहकर ससार के सम्मुख रखा था कि ज्ञान का मूल स्रोत भारत है जो ससार का ठीक नेतृत्व कर सकता है। परन्तु भारतवासी स्वय निष्क्रिय व आलसी बनकर भारत मे वैदिक काल के पश्चात् उठने वाले घोर अन्धकारमय पाखण्डपूर्ण आन्दोलन को देखते रहे। वेद मार्ग से सर्वथा विपरीत मत-मतान्तरो का ऐसा मकड़ी-जाल सा बिछ गया कि सारी भारतीय प्रजा उसमें दुर्दैवग्रस्त होकर फस गई। चारों ओर अकर्मण्यता अविवेक अज्ञान का साम्राज्य छा गया। ससार के नेतृत्व की बात कौन करे। सिद्धान्तहीन अत्याचारी विदेशी सम्प्रदायो की शिकार बनकर अपना स्वराज्य ही नही गवा बैठी, सैकड़ों वर्षों तक पराधीनता की बेड़ियो में जकड़ी पड़ी रही। कोई महापुरुष महाशक्तिशाली व्यक्तित्व इस परिस्थिति को सम्भालने का साहस न कर पा रहा था। ऐसे घोर संकट काल मे प्रकाश की एक दैवीय किरण भारतीय रगमच पर महर्षि दयानन्द के रूप मे प्रकट हुई जिसने उपरोक्त वेद मन्त्र के आधार पर भारतीय समाज को झकझोरा व उसका उचित मार्ग दर्शन किया। उन्होने वेद भगवान् के उस उपदेश को न केवल जीवन मे चरितार्थ किया। परन्तु अन्धकारपूर्ण भारत व समस्त मानव जाति को जीवन ज्योति प्रदान की।

निष्क्रियता जीवन नहीं जीवन के सभी क्षेत्रों में कर्तव्यपरायण रहते हुए उसके सभी तारों धागों को बुनते हुए जीवन पथ को प्रकाश पूर्ण बनाना ही आदर्श जीवन का लक्ष्य है (तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि)

आज यौरोप ज्ञान विज्ञान से ससार का उन्नतशील कर्म क्षेत्र बन गया है। भारत में आज भी ज्ञान के नाम पर अज्ञान रूढ़िवादिता एव निष्क्रियता का साम्राज्य छाया हुआ है।

ऋषि दयानन्द ने स्वय किसी मत सम्प्रदाय की रचना नहीं की। ईसा मुहम्मद बुद्ध महावीर वल्लभ, रामानुज की भान्ति किसी ईश्वरीय प्रस्ताव की स्थापना न करके वेद की ज्योति से प्रकाशित ब्रह्मा से जैमिनी पर्यन्त जिन ऋषियो ने अपने मूल साधनो से दर्शन स्मृति ब्राह्मण ग्रन्थ उपनिषदो की रचना की थी उन्हीं के उस दैवीय ज्ञान की रक्षा की (ज्योतिष्मत पथो रक्ष) ऋषियो ने वेद की ऋचाओ का अपनी बुद्धि से साक्षात्कार किया था । उनके मार्ग मे आने वाले सभी सकटों सभी शकाओ, सभी अविवेकी चिन्तन व विचारधाराओ का निराकरण कर वैदिक धर्म को सर्वसम्मत सर्वग्राह्य, सर्वहितकारी बनाया गया। महर्षि दयानन्द ने भी उसी मार्ग का अनुसरण करके समाज मे फैले मिथ्या मत मतान्तरो द्वारा फैलाए हुए उलझनपूर्ण अविवेकी अवैदिक विचारो का न केवल निराकरण किया अपितु मानव-जीवन के श्रेष्ठतम मूल्यो व सुन्दरतम नैतिक मान्यताओं की स्थापना की थी। वे चाहते थे कि मनुष्य मनुष्य बने।

मनुर्भव जनया दिव्य जनम् ।

भगवान् के बनाए ससार मे उसके सभी पदार्थ सुरक्षित पाए जाते हैं। प्रभु ने मानव मात्र के सुख के लिए सभी साधन उपलब्ध कराए है। जैसा माता पुत्र को उत्पन्न करती है पिता उसकी पालना के लिए परिश्रम करता ? उसी प्रकार सभी मानव जाति की माता व पिता परम पिता परमात्मा ही है। उसने मनुष्य को मनुष्य के रूप मे उत्पन्न किया परन्तु वह अपना स्वरूप भूलकर देव से दानव बन गया है। मानव मानव की हत्या कर रहा है। मानव मानव को पीड़ा देने उस पर अत्याचार करने उसे नष्ट करने मे जुटा हुआ है। एक समाज दूसरे समाज का शत्रु बन बैठा है एक देश-दूसरे देश को नष्ट करने की योजना बना रहा है परमात्मा का स्वर्गमय ससार नर्क का रूप धारण कर बैठा है। वेद भगवान ने मनुष्य को इस पतन से बचाने के लिए उसके कल्याण के लिए उसे जो सर्वोत्तम उपदेश दिया था कि हे मानव तू मनुर्भव सबसे पहले मनुष्य बन। आज का मानव सीधा भगवान् बनने की योजना कर रहा है। जगह-जगह मनुष्य देहधारी भगवानो के साम्राज्यो की रचना हो रही है। भगवान् रजनीश ने तो योरोप को हिला रखा है। शक्तिशाली योरोप उनकी भगवान् रूपी शक्ति से त्राहि-त्रा-हि कर रहा है। किसी कवि ने कहा था—

हमने माना हो फरिश्ते शेख जी,
आदमी होना बहुत दुश्वार है।

ऐ मौलवी साहब आपने फरिश्ता बनने का दावा तो कर दिया है परन्तु मनुष्य का मनुष्य बनना बड़ा कठिन है इसीलिए वेद ने कहा पहले मनुष्य बनो। मत्वा कर्माणि सिव्यति स मनुष्य । जो बिना विचारे कोई काम नहीं करता, वही मनुष्य कहलाता है। आज पाप के परिणामों की चिन्ता, मनन किए बिना आसुरी भावनाओ को न केवल शिकार बन गया है। आकण्ठ आसुरी भावनाओ व उसके प्रतिक्रियाओ में डूब गया है। सारा ससार बारूद खाने के ज्वालामुखी पर बैठा है। न जाने कब कोई आसुरी भाव की चिन्गारी युद्धों के रूप में जल उठे तो प्रभु का समस्त संसार एक विशाल श्मशान के रूप में परिवर्तित हो जाएगा। इसलिए आज बड़े-बड़े भवनो बड़े बड़े मन्दिरो बड़े बड़े कल-कारखानो की अपेक्षा आवश्यकता इस बात की है कि पहले सच्चे व दिव्य मानवो का निर्माण किया जाए। मानव को दानवी आसुरी प्रवृत्तियो से बचाया जाए।

देव दयानन्द ने अपने महाभियान मे मानव के नैतिक मूल्यो की स्थापना के लिए जो अद्भुत आश्चर्यजनक प्रयास किया। उसका मूल्याकन करना भी सरल नही है। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे महर्षि ने सदाचार शिष्टाचार शील के लिए निश्चित विधि-विधान की सरचना की है। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त मनुष्य का एक-एक क्षण प्रभु प्यारे की आज्ञानुसार ही बीते इसके लिए 16 सस्कारो के द्वारा दैवीय विधान् का पूर्णत परिपालन नही होगा। मानवता पर छाया हुआ घोर संकट का निवारण नही हो सकेगा क्या मानवता की रक्षा के लिए कोई समाज, कोई देश, चिन्ताशील है। मानवता के लोप हो जाने से आज सारा ससार भयाक्रान्त, आतकित घोर नर्कमय जीवन बिता रहा है। कौन मानवता के इस घोर सकट से मानव को छुड़ावेगा। आज ससार की सबसे बड़ी यही समस्या है।

—

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला

आर्य समाज- उपलब्धियां, सीमाएं और अपेक्षाएं दयानन्द सरस्वती के विचार—समय की कसौटी पर

ले.—डा. भवानीलाल जी भारतीय आचार्य व
अध्यक्ष दयानन्द चेयर पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

(7 जुलाई से आगे)

आर्य समाज ने विराट् हिन्दू समाज के समक्ष उपस्थित तथा उसके विशाल ढांचे को जीर्ण-शीर्ण करने वाली विभिन्न सामाजिक कुप्रथाओं को दूर करने के लिए जो प्रयास किए उनका विहगावलोकन हम कर चुके हैं। यह सत्य है कि हमारा समाज आज उस मोड़ पर पहुंच चुका है जहां से वह उन्नति एवं प्रगति के मार्ग पर आगे तो बढ़ सकता है किन्तु पीछे हटकर 16वीं शती के मध्यकाल में पहुंच जाना अब उसके बस का नहीं है। आर्य समाज ने समाज सुधार के क्षेत्र में जो कार्य किए वे आज सर्व सम्मत हो चुके हैं। अब बाल विवाह अतीत की वस्तु हो चुकी है, नारी शिक्षा विवाद का विषय नहीं रहा। पर्दा और अस्पृश्यता के निवार भी समाप्त हो गए। विधवाओं का उत्पीड़न तथा नारी का तिरस्कार एवं शोषणभी अतीत काल की वस्तु बन गए। तथापि अभी तक सामाजिक क्षेत्र में बहुत कुछ करणीय हैं।

सामाजिक कुप्रथाओं और परपरागत संकीर्णताओं से चाहे हमें मुक्ति मिली हो, किन्तु समाज मे नित नये पाखण्ड अनाचार, फैशन की अन्धी अनुकरण प्रवृत्ति दहेज के नाम पर भीषण और अत्याचार आदि की दुष्प्रवृत्तियां बढ़ रही हैं। आज यही सब आर्य समाज के समक्ष चुनौति के रूप में आ रहे हैं। नवयुवक वर्ग में बढ़ने वाली स्वेच्छाचारिता, उद्दण्डता, अनुशासनहीनता तथा फैशनपरस्ती को कैसे रोका जाए, यह एक बड़ी समस्या है, आज का जनजीवन राजनीति से प्रभाव ग्रहण करता है। किन्तु आज राजनैतिक व्यक्ति जितना आचार शून्य, कर्त्तव्य विमुख तथा स्वार्थ परायण है उसे देखते हुए उससे अधिक आशा करना व्यर्थ होगा। अत: आर्य समाज का दायित्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि सार्वजनिक जीवन का शुद्धिकरण आज भी प्रमुख आवश्यकता है। जो बात सामाजिक जीवन में आचारगत मूल्यों की पुन: स्थापना को लेकर कही जा सकती है वही राजनैतिक जीवन पर भी लागू होती है।

भारत की राष्ट्रीय जागृति में आर्य समाज का जो शानदार योगदान रहा उसकी एक झलक हम देख चुके हैं। परन्तु यह देखकर अत्यन्त खेद होता है कि आज इतिहास लेखन के जो प्रयत्न हो रहे हैं उसमें जान-बूझकर आर्य समाज के एतद्विषयक अवदान को घटा कर दिखाया जाता है। राजनैतिक जीवन में जो भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, कुनबापरस्ती, सिफारिश तथा रिश्वतखोरी का बोलबाला आज दिखाई दे रहा है उसके उन्मूलन में यदि आर्य समाज किसी न किसी रूप में कारगर हो सके तो यह उसकी एक बड़ी उपलब्धि होगी। किन्तु उसके लिए उसे नैतिक मूल्यों की पुन स्थापना का एक जोरदार अभियान चलाना होगा। यह भी सत्य है कि हमारी आज की सभी राजनैतिक संस्थाएं इतनी दूषित तथा भ्रष्ट हो चुकी हैं कि उनसे कोई आशा नही की जा सकती। आर्य समाज ने अपने अतीत काल में नैतिक उच्चता के जो मानदण्ड स्थापित किये थे उन्हीं को स्मरण कर हम यह आशा कर सकते हैं कि यदि आज के दूषित विकृत तथा भ्रष्ट सार्वजनिक जीवन को पुन स्वच्छ बनाने का संकल्प आर्य समाज के नेता तथा अनुयायी कर लें, तो इसमें उन्हें निश्चय ही सफलता मिलेगी। आर्य समाज की राष्ट्र के वर्तमान जीवन मे एक अन्य भूमिका यह भी हो सकती है कि साम्प्रदायिकता के विष ने जिस प्रकार हमारे प्रशासन तन्त्र को विषाक्त बनाया है, उसे दूर किया जाए। हम नाम तो लेते हैं धर्म-निरपेक्षता का, किन्तु धर्म के नाम पर नाना पाखण्डों, मिथ्या कर्मकाण्डों तथा विद्वेषमूलक धारणाओं का प्रचार करते हमें किंचित् मात्र भी लज्जा नहीं आती। आर्य समाज की दृष्टि में कोई भी राज्य सम्प्रदाय अथवा मत निरपेक्ष तो हो सकता है, किन्तु धर्म के शाश्वत मूल्यों की उपेक्षा करने से कोई लाभ नहीं होगा। आर्य समाज इस सम्बन्ध में राजा और प्रजा का सही मार्ग दर्शन कर सकता है।

राष्ट्र भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए आर्य समाज ने जो कार्य किया वह तो इतिहास का एक अमर पृष्ठ बन ही चुका है किन्तु देश के स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् भी हिन्दी को जो उसका वास्तविक स्थान नहीं मिल पाया, यही हमारे लिए चिन्ता का विषय है। राज भाषा के सम्बन्ध में जो आज सरकार की स्थिति तथा अन्य मनस्कता है उसे देखते हुए तो आशा नहीं की जा सकती कि निकट भविष्य में अखिल राष्ट्र की सम्पर्क भाषा तथा सरकारी कामकाज की अधिकृत भाषा के रूप में हिन्दी अपना स्थान-ग्रहण कर लेगी। अत: आज राष्ट्र भाषा आन्दोलन को पुन: प्राणवान् बनाकर गतिदेनी होगी। हमें सब प्रान्तीय भाषाओं के सम्बन्ध में भी अपना मत निश्चित करना होगा, क्योंकि हमारा विरोध विदेशी भाषा अंग्रेजी से तो है किन्तु अपने ही देश की क्षेत्रीय भाषाओं से नहीं। यह एक सुनिश्चित बात है कि आज भारत के विभिन्न राज्यों का राज-काज तत् तत् प्रान्तों की भाषाओं में चलाए जाने के प्रयत्न हो रहे हैं। अत: समुचित यही होगा कि हम भी अपने साहित्य को प्रान्तीय भाषाओं के माध्यम से प्रकाशित करने के लिए सचेष्ट हों। सत्यार्थ प्रकाश तथा ऋषि दयानन्द के अन्यान्य ग्रन्थों का अनुवाद यों तो अनेक स्वदेशी एवं विदेशी भाषाओं में हो चुका है, किन्तु अब प्रचारात्मक साहित्य भी क्षेत्रीय भाषाओं में लिखा जाना आवश्यक है। उधर संस्कृत के प्रचार प्रसार में आर्य समाज को एक बार पुन: जुट जाना होगा क्योंकि इसी भाषा ने आर्य संस्कृति को अभी तक जीवित रखा है और यही भाषा आर्यों के उत्कर्ष, गौरव तथा अस्मिता का प्रतीक रही है।

आर्य समाज आन्दोलन की वर्तमान स्थिति तथा उसके मार्ग को अवरुद्ध करने वाली परिस्थितियों का सिंहावलोकन करने के पश्चात् हमें देखना होगा कि भविष्य के लिए हमारा दिशा बोध कैसा और किस प्रकार हो जिससे कि हम इस गौरवमय संस्था को सम्मान और आदर की उसी उच्च वेदी पर पुन: प्रतिष्ठित कर सकें जहां वह पहले थी। इस सम्बन्ध में हमारे कुछ रचनात्मक सुझाव हैं। जिन्हें संक्षेप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

आर्य समाज मूलत: एक धार्मिक संस्था है जो विश्व मानव के समक्ष धर्म के वास्तविक स्वरूप तथा उस पर आचरण करने का सन्देश देती है। वर्तमान परिस्थिति में उचित होगा कि (1) वैदिक धर्म के मौलिक मन्तव्यों को सारगर्भित, सरल और बोधप्रद भाषा में जनता के सामने प्रस्तुत किया जाए। (2) अन्यान्य मत सम्प्रदायों की तिक्त एवं कटु शैली में आलोचना करने की अपेक्षा वैदिक धर्म के उदात्त स्वरूप को ही ओजस्विनी और गरिमा मण्डित शैली में उपस्थित किया जाए। (3) प्रचलित अन्धविश्वासों और हानिकर रूढ़ियों के व्यष्टिगत एवं समष्टिगत दुष्परिणामों को उजागर अवश्य किया जाए तथा उनकी अवैज्ञानिकता एवं उनसे उत्पन्न हानियों से लोगों को परिचित कराया जाए।

जहां तक सामाजिक समस्याओं का प्रश्न है इस सम्बन्ध में आर्य समाज निम्न कार्य कर सकता है।

1. जन्माधारित जाति प्रथा के दोषों को प्रकट करके पूर्ण गुण, कर्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था के महत्व को प्रतिपादित किया जाना चाहिए। आर्य बिरादरी की चर्चा तो भूतकाल में भी हुई थी। किन्तु वास्तविक आर्य समाज के निर्माण का कार्य नहीं हो सका। आज आर्य समाज मन्दिर में तो हम आर्य हैं, किन्तु वहां से बाहर निकलते ही खत्री, कायस्थ, अग्रवाल, जाट और स्वर्णकार हो जाते हैं।

2. अस्पृश्यता को समाप्त करने तथा दलित जातियों वनवासी समाज तथा पिछड़े वर्ग के उत्थान का रचनात्मक कार्यक्रम बनाना आवश्यक है। आज इन वर्गों के लोगों को संसद तथा विधान सभाओं में आरक्षित स्थानों पर बिठाना तथा सरकारी सेवाओं में आरक्षित स्थान दिलाना ही आवश्यक नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि इस वर्ग में प्रचलित बुराईयों को समूल नष्ट किया जाए। नशाखोरी, जुआ, अस्वच्छता, मांस भक्षण आदि की बुराईयों से इन्हें पृथक् कर सभ्य समाज का अंग बनाने हेतु प्रयत्न किए जाने चाहिएं।

(क्रमश:)

सम्पादकीय—

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की शताब्दी (4)

इस लेखमाला के पिछले लेख में मैंने उन आवश्यकताओं की ओर आर्य जनता का ध्यान दिलाया था जो किसी भी संस्था, विशेषकर एक सभा को चलाने के लिए आवश्यक होती हैं। कार्यालय न हो तो सभा का कार्य नहीं चलता। हम कार्यालय का भवन बना रहे हैं, कुछ बन गया बहुत कुछ अभी बनना बाकी है। आशा है आर्य जनता के सहयोग और आशीर्वाद से वह भी धीरे-धीरे बन जाएगा। इसी लेख में मैंने यह भी लिखा था कि हमें एक पुस्तकालय की भी आवश्यकता है। देश के विभाजन से पहले लाहौर के गुरुदत्त भवन में एक बहुत बड़ा पुस्तकालय हुआ करता था दुर्भाग्य से वह सब कुछ वहीं रह गया। विभाजन के पश्चात् जब जालन्धर में सभा का भवन बना तो हमने यहां एक पुस्तकालय बनाना प्रारम्भ किया और कुछ पुस्तकें हमने यहां इकट्ठी कर भी ली थी परन्तु वह सारे का सारा पुस्तकालय हरयाणा के आर्य भाई यहां से ले गए. अब हमारे पास कोई पुस्तकालय नहीं है, परन्तु हमने उस ओर भी एक पग उठा लिया है सात जुलाई को जिस दिन जालन्धर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा की बैठक हुई थी, उस दिन हमने एक पुस्तकालय का उद्घाटन भी कर दिया था। कुछ समय पूर्व सभा की अन्तरंग सभा ने यह निर्णय लिया था कि यह पुस्तकालय स्वर्गीय श्री महाशय कृष्ण जी की स्मृति में बनाया जाए। इस उद्देश्य से मैंने दो नई अलमारियां और कुछ पुस्तकें जिन में कि वह वेद भी हैं, जो सार्वदेशिक सभा ने प्रकाशित किए थे। सभा को देकर पुस्तकालय का उद्घाटन कर दिया है। मेरे पास आर्य समाज के विषय में बहुत सी पुरानी पुस्तकें पड़ी हैं, मैं धीरे-धीरे वह सब सभा को दे दूंगा। इस प्रकार एक पुस्तकालय का निर्माण हो जाएगा। पंजाब के आर्य बन्धुओं और आर्य समाजों से मेरी यह प्रार्थना है कि जिन के पास आर्य समाज या वैदिक धर्म से सम्बन्धित ऐसा साहित्य हो जो वह सभा को दे सकें तो वह दान में दे दें। हम जो यह पुस्तकालय बनाएंगे उस में एक नाम पट पर यह भी लिख देंगे की इस पुस्तकालय के लिए किस-किस ने यह पुस्तकें दी हैं। यदि कोई महानुभाव एक अलमारी भी दे तो उस पर उसका या जिनका भी वह कहेंगे नाम लिख दिया जाएगा। इस प्रकार की अलमारी की कीमत एक हजार रूपये के लगभग है। जो महानुभाव दे सकें उन्हें अवश्य देनी चाहिए। धार्मिक संस्थाओं की सारी सम्पत्ति दानियों के दान से ही बनती है और आर्य समाज तो एक ऐसी संस्था है जो जीवन दानियों के सहारे चलती आई है। आज यदि हम जीवन दान नहीं दे सकते तो इस सभा की शताब्दी के उपलक्ष में जो कुछ भी दे सकते हैं हमें देना चाहिए।

एक और विशेष बात की ओर मैं आर्य जनता का ध्यान दिलाना चाहता हूं। वह यह कि हमारा प्रचार का कार्य बहुत शिथिल हो गया है। उसका एक कारण यह भी है कि अब हमारे पास उच्चकोटि के विद्वान् नहीं रहे जो पहले हुआ करते थे। पहले विद्वान् जीवन दानी हुआ करते थे अब वैसे तो नहीं मिलते जो मिलते भी हैं उनके सामने सबसे बड़ा प्रश्न उनके निर्वाह का होता है। यह हमारा कर्तव्य है कि हम उसका प्रबन्ध भी करें। इसके लिए भी धन की आवश्यकता रहती है। एक समय था जब हमें ऐसे उपदेशक मिल जाते थे जो केवल इतना वेतन लेते थे जिससे उनका निर्वाह हो जाए। आज परिस्थितियां बिल्कुल बदल गई हैं। कुछ समय हुआ जब हमने देश के सभी आर्य समाजी पत्र-पत्रिकाओं में यह विज्ञापन छपवाया था कि हम एक हजार रुपया मासिक देने तक को तैयार हैं फिर भी हमें अच्छे उपदेशक नहीं मिले। पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों के कारण भी बाहिर से बहुत कम व्यक्ति आते हैं परन्तु हमें इसका कुछ न कुछ प्रबन्ध करना ही पड़ेगा। इसलिए हम यह भी सोच रहे हैं कि पंजाब में प्रचार प्रणाली में किस प्रकार के परिवर्तन की आवश्यकता है। वह समय चला गया है जब आर्य समाज अपने उत्सव सार्वजनिक स्थानों में किया करता था। आज तो कोई भी नहीं करता। सिखों के पास अपने गुरुद्वारे हैं। मुसलमानों के पास मस्जिदें हैं। ईसाईयों के पास उनके गिरजा घर हैं वह जो कुछ करना होता है वहीं करते हैं, हमें भी धीरे 2 इस प्रथा को प्रोत्साहन देना चाहिए कि हम अपने उत्सव आर्य समाज मन्दिरों में ही करें। बड़े शहरों में जो आर्य समाज मन्दिर हैं उनमें कई ऐसे हैं जिनमें एक ही समय में चार-पांच हजार व्यक्ति बैठ सकते हैं। इसलिए यदि आर्य समाज मन्दिरों में उत्सव किए जाएं तो यह भी प्रचार का एक साधन बन सकते हैं इसी के साथ यज्ञ प्रणाली का अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिए। जब यज्ञ होता है तो हिन्दू प्रायः सभी आ जाते हैं वह चाहे सनातन धर्मी हों या आर्य समाजी। कई बार सिख भी आ जाते हैं। इसलिए अब हमें अपना कार्यक्रम यह समझ कर बनाना चाहिए कि पहले की तरह अभी सार्वजनिक स्थानों पर उत्सव न हो सकेंगे। आर्य समाज मन्दिरों में ही किए जाएं और यज्ञ भी आर्य समाज मन्दिरों में ही किए जाएं। परन्तु इसके लिए यह भी आवश्यक है कि आर्य समाज मन्दिरों की स्वच्छता और पवित्रता की भी सुरक्षा की जाए। इस विषय में हमें अपने सिख भाईयों का अनुकरण करना चाहिए। वह अपने गुरद्वारों को बहुत स्वच्छ और पवित्र रखते हैं बड़े 2 व्यक्ति भी वहां जाकर अपने हाथ से झाड़ू देते हैं। हमें भी आर्य समाज मन्दिरों को साफ रखने में कोई संकोच न करना चाहिए। ऐसे मन्दिरों में जब हम कोई सभा या यज्ञ आदि कराएंगे तो लोग वहां अवश्य आएंगे। क्या आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की शताब्दी के उपलक्ष में सब आर्य समाजों के अधिकारी यह संकल्प नहीं कर सकते कि वह अपने 2 मन्दिरों को साफ सुथरा रखेंगे? परन्तु देखा जाता है कि मन्दिरों में चित्र लगे होते हैं और उन पर मिट्टी और धूल चढ़ी होती है कोई उनकी सफाई भी नहीं करता। मेरा यह निश्चित मत है कि आर्य समाज मन्दिरों में विशेषकर उस स्थान में जहां सत्संग लगता है महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी विरजानन्द जी महाराज, पं. लेखराम जी, पं. गुरुदत्त, स्वामी श्रद्धानन्द जी और आर्य समाज के दूसरे संन्यासियों के अतिरिक्त किसी और का चित्र नहीं लगाना चाहिए। परन्तु देखा गया है कि कई आर्य समाजों में उनके पुराने और नए अधिकारियों के चित्र भी लगा दिए जाते हैं और उन पर भी मिट्टी चढ़ी रहती है। मुसलमान अपनी मस्जिदों में किसी का भी चित्र नहीं लगाते, ईसाई अपने गिरजाघरों में केवल ईशुमसीह का चित्र लगाते हैं। सिख अपने गुरुद्वारों में केवल गुरुओं के चित्र लगाते हैं परन्तु आर्यसमाज मन्दिरों में कई प्रकार के चित्र लग जाते हैं। कई ऐसे भी होते हैं जिनका कोई महत्व नहीं होता। यदि लगाने भी हों तो वह यज्ञशाला या सत्संग भवन में नहीं लगने चाहियें इन दोनों स्थानों की पवित्रता हमें अवश्य रखनी चाहिए। शेष आगामी अंक में लिखूंगा।

—वीरेन्द्र

आर्य समाजें वेद सप्ताह मनाएं

वर्षा काल के यह चार माह जो चौमासा के नाम से प्रसिद्ध हैं वेद प्रचार के लिए प्राचीन काल से विशेष माने जाते हैं। आर्य समाजें भी इन दिनों में वेद सप्ताहों का आयोजन करती हैं। मेरी सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वह रक्षा बन्धन और कृष्ण जन्माष्टमी पर ही केवल वेद सप्ताह न मनाएं बल्कि 29 जुलाई से 4 अगस्त तक 5 से 11 अगस्त तक, 12 से 18 अगस्त तक 19 से 25 अगस्त तक, 26 से 30 अगस्त तक तथा 2 सितम्बर से 8 सितम्बर तक, 9 से 15 सितम्बर तक, 16 से 22 सितम्बर तक, 23 से 29 सितम्बर तक और इसी प्रकार से अक्तूबर मास में भी वेद सप्ताह मनाएं। केवल 30 अगस्त से 7 सितम्बर तक ही वेद सप्ताह न मनाकर जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्तूबर में सभा की सुविधानुसार वेद प्रचार के कार्यक्रम रखें। इससे सभा को वेद सप्ताह का प्रबन्ध करने में सुविधा होगी और आर्य समाजों में वेद प्रचार भी हो जाएगा। अपनी तिथियां निश्चित कराने के लिए सभा से शीघ्र पत्र-व्यवहार करें और सभा को अपना सहयोग दें। —सभा महामन्त्री

इतिहास का महत्व-- पूर्ण प्रश्न

ले.—श्री स्वा. विद्यानन्द जी महाराज

श्री स्वामी जी ने एक ज्ञापन देकर भारत सरकार के शिक्षा मन्त्री श्री के. सी. पन्त का ध्यान इस ओर खींचा है।

—सहसम्पादक

आर्य और द्रविड़ उत्तर और दक्षिण आदि के विवाद के मूल में कुछ लोगों के इस देश के मूल निनासी होने तथा कुछ (आर्यों) के विदेश (ईरान आदि) से आकर यहांके आदिवासियों को यहां से खदेड़ कर इस देश पर अधिकार कर लेने की मान्यता है जिसे विदेशी शासकों ने स्वार्थवश। फूट डालो और राज्य करो। स्थापित किया, इतिहास विरुद्ध होने के साथ-साथ यह मान्यता देश की एकता और अखण्डता में बहुत बड़ी बाधा है। तमिलनाडू में राम के गले में जूतों का हार डालकर सारे बाजार में झाड़ुओं से मारते हुए उसका जलूस निकालना इसी का परिणाम है।

प्रो. एन्थोनी ने संसद में मांग की थी—

संस्कृत भाषा को भारतीय सविधान की धारा 6 शैड्यूल से निकाल देना चाहिए। क्योंकि यह विदेशी से भारत में आए हुए विदेशी आर्यों की भाषा है।

23 फरवरी 1978 को राज्यसभा में मांग की थी कि भारतीय उपग्रह का आर्यभट नाम भारतीय नहीं है। यह नाम आर्यों का प्रतीक है जो भारतीय न होकर इस महाद्वीप में आक्रमणकारी के रूप में आये थे। (नवभारत टाइम्स 24-2-78)

अभी कुछ समय से मुस्लिम इण्डिया नाम से एक अंग्रेजी मासिक का प्रकाशन हो रहा है जिसके मार्च 85 के अंक में लिखा है—"जासूसी कांड में पकड़े गए लगभग एक दर्जन लोगों में एक भी मुसलमान या ईसाई इस लिये नहीं है, क्योंकि ये लोग इस देश के मूल निवासी होने के कारण उसे प्यार करते हैं। इस के विपरीत हिन्दू (आर्य) बाहर से आकर इस देश में बसने के कारण इस देश को अपना नहीं समझते विदेशी होने के कारण हिन्दुओं को भी भारत से निकाल देना चाहिए, जैसे अंग्रेजों को निकाला गया है।

इस सन्दर्भ में हिन्दुस्तान टाइम्स के 31 अक्टूबर 1977 के अंक में प्रकाशित यह रिपोर्ट द्रष्टव्य है :—

इतिहासकारों, भाषा 'शास्त्रिओं पुरातत्व विदो के आधार पर जो सोवियत प्रजातन्त्र ताजकिस्तान के दुशम्बी नगर में एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में एकत्रित हुए थे इस बात का कोई निर्णायक प्रमाण नहीं पाया गया कि आर्य लोग भारत में किसी बाहर के देश से आकर बसे हैं। डा. आर. एन बनर्जी जो राष्ट्रीय म्युजियम के निर्देशक और भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य थे उन्होंने 'समाचार' को बताया कि भारतीय इतिहासकारों ने सेमीनार में इस पर विशेष जोर दिया तथा उसी आशय के पेपर्स प्रस्तुत किए जो बहुत पसन्द किए गए—

मेरा आपसे अनुरोध है कि जब भारत सरकार द्वारा नियुक्त इतिहासविदों, भाषा शास्त्रियों तथा पुरातत्ववेत्ताओं ने एक स्वर से घोषणा कर दी कि आर्य लोग इसी देश के मूल निवासी है तो उनके विदेश से आकर यहां बसने वाली मिथ्या कल्पना को दूर करना भारत सरकार का कर्त्तव्य है। इस के लिए आवश्यक है कि प्राइमरी से लेकर यूनिवर्सिटी स्तर तक की पाठ्य पुस्तकों में एतद्‌विषयक संशोधन किया जाए।

2- राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ करने, शिक्षा के स्तर को ऊंचा करने, अध्यापकों, छात्रों तथा प्रशासकों के निर्बाध रूप से एक राज्य से दूसरे राज्य में आने जाने के लिए आवश्यक है कि—

क—विश्वविद्यालय शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषायें न होकर राष्ट्र भाषा हो।

ख—शिक्षा को संविधान के अन्तर्गत राज्य सूची से निकाल कर केन्द्रीय सूची में डाला जाए।

3- समाजवाद की भावना को बल देने और सबको अवसर की समानता प्रदान करने के लिए आवश्यक है कि पब्लिक स्कूल जैसी संस्थाओं पर प्रतिबन्ध लगाया जाए।

4- शिक्षा काल मनुष्य का निर्माण काल है। यह निर्माण नैतिकता की नींव पर होना चाहिए। आवश्यकता को अनुभव करते हुए केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय में तत्कालीन शिक्षा सचिव प्रो, हुमायूं कबीर के हस्ताक्षरों से सभी राज्यों के शिक्षा मंत्रियों को एक प्रपत्र (डी, ओ. न. एफ 18-754 डी. आई. दिनांक 1-10-1955 द्वारा तमाम स्कूलों व कालिजों में धर्म शिक्षा की व्यवस्था किए जाने के आदेश दिये गये थे। उस पत्र के प्रारम्भ में कहा गया था—

नैतिक मूल्यों की एक पद्धति होती है जिसे बहुमत समाज की स्वीकृति व व सम्मान प्राप्त होता है बिना एक सामान्य नैतिक पद्धति के समाज उन्नति कर ही नहीं सकता! वास्तव में संस्कृत भाषा द्वारा ही व्यक्तिगत प्रयासों से यह महत्वपूर्ण पद्धति धर्म का रूप धारण कर चुकी है इसी के द्वारा सारा समाज बन्धा हुआ व संगठित है। हमें युवकों को इस प्रकार की शिक्षा द्वारा उन में नैतिकता के सामूहिक बन्धनों में बांधने का प्रयत्न करना चाहिए।

कालान्तर में इसके कार्यान्वयन के लिए बाबू श्री प्रकाश जी की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई थी। उस समिति ने धर्म शिक्षा के लिए हर कक्षा में सप्ताह में एक दो पीरियड नियत करने और विभिन्न कक्षाओं के लिए उपयुक्त पाठ्य पुस्तकें तैयार किए जाने की सिफारिश की थी। यह संभवत: 1982 के आस-पास की बात है। 1971 में मेरे एक पत्र के उत्तर में भारत सरकार ने लिखा था कि यह योजना विचाराधीन है फिर क्या हुआ मुझे पता नहीं।

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज कपूरथला का वार्षिक चुनाव दिनांक 21-4-85 को निम्नलिखित हुआ—

प्रधान—दरबारीलाल जी, उपप्रधान—मास्टर रोशनलाल, श्रीमती कमलेश कुमारी जी अरोड़ा, मन्त्री—श्री योगेन्द्रपाल, उपमन्त्री—श्री हरिचन्द जी, कोषाध्यक्ष—ओम् प्रकाश जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री त्रिलोकचन्द जी, अडीटर—श्री बंसीलाल जी,

अन्तरंग सदस्य

श्री लभूराम जी, श्री कृष्ण कुमार जी, श्रीमती प्रकाशवती जी प्रभाकर, श्रीमती प्रकाशवती वालिया, श्रीमती सावित्री देवी जी, श्रीमती कविता गुप्ता, श्री महेन्द्रलाल जी अटवाल, श्री सुदर्शन लाल जी कांजली वाले।

—मन्त्री

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज सोहन गंज दिल्ली 7 का वार्षिक चुनाव दिनांक 16-6-85 को सम्पन्न हुआ. सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारी चुने गए—

प्रधान—श्री शिव प्रसाद जी गुप्त. उपप्रधान—श्री सुशील कुमार नागेश. श्री हेमसिंह जी, मन्त्री—श्री प्रेम सागर जी गुप्त. उपमन्त्री—श्री माता प्रसादजी श्री नारायणदास जी मित्तल, कोषाध्यक्ष-श्री नृपति राय, पुस्तकाध्यक्ष—श्री कैलाश कुमार।

—शिव प्रसाद गुप्त

आर्य समाज बैंकाक थाईलैंड का वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज बैंकाक (थाईलैंड) का चुनाव निम्न प्रकार सर्वसम्मति से हुआ—

प्रधान—श्री सहदेवसिंह, उपप्रधान—श्री चन्द्रिका सिंह, मन्त्री—श्री संग्रामसिंह, उपमन्त्री-श्री दिनेशसिंह, पुस्तकाध्यक्ष-श्री वेदप्रकाश मौर्य, कोषाध्यक्ष-श्री पलकधारी चन्द, निरीक्षक--श्री नरसिंह शाली-

—संग्रामसिंह मन्त्री
आर्य समाज बैंकाक

प्रवेश आरम्भ

गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय शिक्षण संस्था है। प्रथम कक्षा से 14 कक्षा तक शिक्षा दी जाती है।

उच्च प्रशिक्षित शिक्षिका वर्ग पुस्तकालय, नैतिक शिक्षा, चित्रकला, साईंस संगीत, गृह विज्ञान, सांस्कृतिक गतिविधि की आधार भूत विशेषताएं हैं। विस्तृत खेल के मैदान आधुनिक सुविधाओं सहित बड़े छात्रावास, तीसरी कक्षा से संस्कृत एवं अंग्रेजी प्रारम्भ, निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है. मैट्रिक एवं इन्टर उत्तीर्ण कन्याएं भी प्रथम वर्ष तथा तृतीय वर्ष में प्रविष्ट हो सकती हैं। शिक्षा नि:शुल्क दी जाती है। 15 जुलाई से नवीन कन्याओं का प्रवेश दाखिला है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव 5) भेजकर नियमावली मंगा सकते हैं। --दमयन्ती कपूर आचार्या

अन्तर्राष्ट्रीय नैतिक व आध्यात्मिक अध्ययन व अनुसन्धान केन्द्र

वैदिक धर्म की महान् सेवा का अभियान

अमृतसर का एक स्वर्णिम काल हमने देखा है। वहां के लालाओं का धर्म प्रेम, सेवा निष्ठा अपने आपमें एक उदाहरण थी उसी महमामयी नगरी में कपूर परिवार के कुछ सम्प्राप्त सदस्योंने वैदिक धर्म की सेवा का एक छोटा पौधा लगाया। बरनियां (बुलन्द शहर) में स्वामी मंगलानन्द जी के एक साधक शिष्य (बाद के महा पण्डित) श्री ब्रह्मदत्त जिज्ञासु ठाकुर हरज्ञान सिंह जी की बैठक में रहा करते थे। उनकी ऋषि भक्ति व आर्ष पठन-पाठन, लग्न ने कपूर परिवार को अत्यन्त प्रभावित किया एवं छोटा सा पौधा श्रद्धेय जिज्ञासु के बाद उनके अत्यन्त निष्ठावान् व चमत्कारिक शिष्य श्री पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक के अहर्निश साधना से एक महान् वृक्ष के रूप में वैदिक धर्म की महान् सेवा कर रहा है। कपूर परिवार के ही एक साधक सदस्य श्री देवेन्द्र कुमार जी ने तो जैसे अपने पूर्वजों के महान् यश को भूतल पर विस्तृत करने का संकल्प ही कर लिया आपने स्वयं अपने अनुभव व अध्ययन के आधार पर दो ग्रन्थ उच्चकोटि के अंग्रेजी में-वैदिक कन्सैप्ट आफ मैडिटेशन, 2, त्वेक्चर्स आन योगा मैडिटेशनएज रिवील्ड इन होली वेदाज।
लिखे हैं जो बहुत ही प्रशंसित व प्रचारित हुए हैं। यह आपकी उत्कृष्ट वेद भक्ति व आध्यात्मिकता के प्रतीक स्वरूप हैं।
पिछले दिनों आर्य समाज शान्ताक्रुज के कर्मवीर महामन्त्री श्री कैप्टन देवरत्न के साहस पूर्ण प्रयासों से बम्बई में श्रद्धास्पद मीमांसक श्री पं. युधिष्ठिर जी का उनके 75वें वर्ष में अत्यन्त भव्य स्वागत व अभिनन्दन किया गया। स्वागत समारोह की अध्यक्षता वैदिक धर्म के परम-भक्त विशेषतया संस्कृत भाषा के महान् सेवक श्री बलराम जाखड़ (लोक सभा अध्यक्ष) ने की।

इसी अवसर पर कपूर जी एवं श्री देवरत्न जी की महत्वकांक्षा के फलस्वरूप वैदिक धर्म की एक विशिष्ट सेवा अभियान के प्रारम्भ की घोषणा की गई। तीन करोड़ की इस योजना का नाम 'इन्टर नैशनल आर्यन फाउंडेशन फार मोरल एंड स्प्रिच्युअल स्टैडीज एंड रिसर्च' रखा गया। श्री बलराम जाखड़ जी ने इस महान् योजना का विधिवत् उद्घाटन किया और अपने भाषण में कहा—संस्कृत मेरी माता है। माता की सेवा करना प्रत्येक व्यक्ति का परम कर्त्तव्य है। मैं वचन देता हूं कि इस योजना की सब प्रकार से मैं सेवा सहायता करना अपना परम धर्म मानूंगा। यह योजना सफल हो इसके लिए उन्होंने महाराष्ट्र सरकार पर पूरा प्रभाव प्रयोग पूना में इसके भवन निर्माण के लिए 10 एकड़ उपयुक्त भूमि दिलाने का भी आश्वासन दिया। इस योजना के लिए देश-विदेश के उदार मना आर्य बन्धुओं ने हृदय से पूर्ण समर्थन सहयोग का आश्वासन दिया है। संस्था द्वारा संस्कृत के उच्चकोटि के विद्वानों को एम, ए. पी. एच. डी. तथा अंग्रेजी के उच्चकोटि के विद्वानों को संस्कृत तथा वेद-वेदांगो की शिक्षा दी जाएगी। विदेशो में प्रचारार्थ जाने के लिए उन विद्वानों को जर्मन, फ्रेंच, आदि भाषाओं की उच्च शिक्षा दी जाएगी। विदेशी विद्यार्थियों को भारतीय वाङ्मय की उच्च शिक्षा देने की भी पूरी व्यवस्था की जाएगी। श्री युधिष्ठिर जी के अनुभवों के आधार पर पूना वैदिक संस्कृति का महान् केन्द्र है जिसे पुनर्जीवित व पुनर्निमित किया जाएगा। संस्था को इन्कमटैक्स विभाग से कर मुक्ति का भी पूर्ण प्रयास चल रहा है।

पूना भारतीय वैदिक संस्कृति का केन्द्र रहा है जहां संस्कृत साहित्य की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था भण्डार कर इन्स्टीट्यूट है। काफी समय पूर्वक स्वयं लेखक ने पूना में वेद पाठियों व याज्ञिकों के ऐसे घर देखे थे जहां सैकड़ों वर्षों से यज्ञ की अखण्ड ज्योति जल रही है।

कपूर परिवार की सात्विक सेवा भावना व वैदिक धर्म में प्रगाढ भक्ति व श्रद्धा तथा श्री देवरत्न आर्य की कर्मठता व लग्नशीलता से उक्त योजना प्रभु के आशीर्वाद से अवश्य सफल होगी ऐसी पूर्ण आशा है। हम श्री देवेन्द्र कपूर प्रधान आर्य समाज शान्ता क्रुज बम्बई व समाज के महामन्त्री कर्मवीर कैप्टन श्री देवरत्न आर्य के इस प्रयास पर हार्दिक बधाई देते हैं। आशा करते है सारा आर्य जगत् उनके इस महाभियान का हृदय से सहयोग करेगा।

—श्री शिवराज शास्त्री मौलवी फाजिल

आर्य मर्यादा का श्रावणी विशेषांक

वेद प्रचार सप्ताह के उपलक्ष में आर्य मर्यादा का विशेषांक बड़ी सज-धज से निकालने का निश्चय हुआ है। जिसमें उच्चकोटि की पाठ्य सामग्री प्रस्तुत की जाएगी। पत्र साहित्य प्रचार का स्थायी साधन है। अत: आर्य समाजों व आर्य संस्थाओं से प्रार्थना है कि वे शीघ्रातिशीघ्र अपने आर्डर अभी से बुक करा दें. ताकि उनको निश्चित रूप से अंक मिल सके। जनता में प्रचार का इससे उत्तम साधन व अवसर अन्य नहीं, इसलिए समाजों के अधिकारी अविलम्ब इधर ध्यान दें।

——कमला आर्या सभा महामन्त्री

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त से स्वामी विद्यानन्द की भेंट

स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त से उनके निवास स्थान पर भेंट करके एक ज्ञापन दिया जिसमें शिक्षा से सम्बन्धित कतिपय महत्वपूर्ण विषयों पर आवश्यक कार्यवाही करने का अनुरोध किया। शिक्षा मन्त्री महोदय ने आर्यों के विदेशी होने विषयक चर्चा में विशेष रुचि दिखाई। उन्होंने केवल सुना ही नहीं अपितु शिक्षा मन्त्रालय में विशेष सचिव से उसी समय सम्पर्क कर तत्काल आवश्यक कार्यवाही करने का निर्देश दिया। शिक्षा सचिव ने इस विषय पर चिन्ता व्यक्त करते हुए इतिहास विभाग के विशेष अधिकारी को एतद्विषयक खोज करके जल्दी से जल्दी अपनी रिपोर्ट देने के लिए कह दिया। स्कूलों-कालिजों मे अनिवार्य धार्मिक शिक्षा के विषय में भी शीघ्र कार्यवाही करने का आश्वासन दिया। शिक्षा मन्त्री ने इस विषय की फाईल अच्छी तरह देखी है। अन्य विषयों पर भी आवश्यक कार्यवाही करने का विश्वास दिलाया। छ: दिन बाद शिक्षा मन्त्री जी का लिखित उत्तर भी स्वामी विद्यानन्द जी को प्राप्त हो गया है।

--डा. धर्मपाल आर्य महामन्त्री

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज अबोहर का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री परमानन्द जी, उप-प्रधान—श्री कुन्दनलाल जी, श्रीमती स्वर्णलता अग्रवाल, मन्त्री—श्री रामशरण दास जी, उपमन्त्री—श्री विपिन कुमार, प्रचार मन्त्री—श्री कृष्णचन्द्र जी, श्री बाल गोविन्द जी, श्री सुन्दरलाल जी, कोषाध्यक्ष--श्री विद्याचन्द जी, आडीटर श्री मुकन्दलाल जी। सम्पत्ति अध्यक्ष-श्री नानकचन्द, पुस्तकाध्यक्ष-श्री ओम्प्रकाश, प्रबन्धक- बी. एल, वैदिक स्कूल-श्री देसराज, प्रबन्धक पुत्री पाठशाला-श्री लालचन्द, श्री उत्तमचन्द --श्री बूटाराम, जयदेवी — संरक्षक—डा श्रीराम जी, श्री चांदीराम अन्तरंग सदस्य—श्री केदारनाथ जी,

—मन्त्री

वीरता

ले.—श्री अमित प्रताप नारायण सिंह ग्रा. हाटा, पो. नदौली देवरिया

वीरता मानवों का सर्वोत्कृष्ट गुण है याद रखने की बात यह है कि मनुष्य को अपने व्यक्तिगत जीवन में भी विजय प्राप्त करने के लिए वीरता की आवश्यकता पड़ती है। संसार के काम बड़े अथवा छोटे वीरता व साहस के बिना नहीं होते। संसार के सभी महापुरुष साहसी और वीर थे। बिना किसी प्रकार का साहस व वीरता दिखाए किसी जाति या किसी देश का इतिहास नहीं बन सकता। वीरता व साहस रणभूमि में या डूबते हुए जहाज के लिए जितनी आवश्यकता है, उतनी ही व्यक्तिगत जीवन में सफलता या विजय प्राप्त करने के लिए भी आवश्यक है। संसार में वीर व साहसी न होने के कारण हमें बहुत से दुःखों और बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अपने साहस व वीरता के कारण ही अर्जुन भीष्म, भीम, अभिमन्यु इत्यादि आज हमारे हृदयों में बस गए हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन संघर्षों में विजयी होने का जीवन है। बलिदान का जीवन है। बलिदान किसी उच्च कार्य के लिए अपने को मिटा देना, बलिदान है वैदिक धर्म के प्रचार के लिए आदर्श शिक्षणालय गुरुकुल खोलने का निश्चय किया। वह शिक्षणालय जंगल में खोला गया था। जंगल भी अत्यन्त भयकर। मित्रों ने इस योजना का विरोध किया, सम्बन्धियों ने इस की पूर्ति में सन्देह व्यक्त किया, और उस के परिणाम सोचकर चिन्ता व्यक्त की। विरोधियों को असफल होने पर मजाक का अवसर मिलने की प्रसन्नता हुई। पर गुरुकुल खोलने के लिए तीस हजार रूपया इकट्ठा करने और एकत्र न होने पर घर न लौटने का निश्चय करके महात्मा मुन्शी राम निकल पड़े और उन्होंने 1902 ई0में हिमालय की गोदी में गुरुकुल की स्थापना करके दिखा दिया। आज वहीं से पढ़कर निकले स्नातक बड़ी शान से गाते है—

जिसकी चरण धूलि ने पाला,
जहां किया विद्या मधुपान
उस प्यारी कुलमाता को है, मेरा
बारम्बार प्रणाम।

वन पर्वत में नदी तीर में माता
जो पाया सन्देश,
तेरी पुण्य पताका लेकर फहरा
दूंगा देश विदेश॥

यही तो वीरता व साहस है। इस लिए हम लोगों को चाहिए कि स्वामी जी की तरह निडर, साहसी और धैर्यशाली बने। साहस और वीरता का ही प्रभाव था जिससे तैमूर, बाबर, शिवाजी, रणजीत सिंह महा राणा प्रताप और स्वामी श्रद्धानन्द जैसे सामान्य व्यक्तियों ने कुछ से कुछ कर दिया। महाभारत में एक कथा आती है कि एक बार सिन्धुराज ने संजय के राष्ट्र पर आक्रमण कर उसे जीत लिया और संजय ने सिन्धुराज से प्रार्थना की कि वह उसका राज्य लौटा दें और सन्धि कर ले। इससे यह लाभ होगा कि वह राजा भी बन जाएगा और रक्तपात भी न होगा। यह बात संजय ने अपनी मां से कही तो इसे सुनकर उस यशस्विनी कुलीना, संयमशीला, दीर्घ दर्शिनी वीर माता का चेहरा तमतमा गया क्रोध से। उसने कहा, अरे! अप्रियदर्शी तू मेरा पुत्र नहीं और न तू अपने पिता का ही अंश है। वीर पुरुष समर भूमि में मानवोचित पराक्रम दिखाते है न हीं तो वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं। युद्ध में जाओ और विजय को प्राप्त करके आओ।

मुहूर्त्तं ज्वलितं श्रेय: न च धूमयितं चिरात्।

लकड़ी की तरह धुंधुआ कर जलना अर्थात् नपुंसकों की तरह भीरुता का जीवन बिताना अच्छा नहीं प्रत्युत दो घड़ी के लिए जलती हुई लकड़ी की भान्ति युद्ध में अपना तेज दिखा कर वीरगति को प्राप्त होना क्षत्रिय के लिए कल्याणकारी है। संजय ने प्रेरणा पाकर युद्ध में जाकर विजय प्राप्त की। इसीलिए हमें कभी भी साहस और वीरता नहीं खोनी चाहिए। साहसी व्यक्ति में एक गुप्त शक्ति रहती है, जिसके बल से वह दूसरे मनुष्य को दुःख से बचाने के लिए प्राण तक देने को प्रस्तुत हो जाता है। साहस व वीरता के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं हैं क्योंकि वीरता व साहस दिखाने का अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में पल-पल में आया करते हैं। हम सभी लोग सोचेंगें कि वीर व साहसी कैसे बने? वीर व साहसी बनने का सबसे सुन्दर तरीका यह कि तुम अपने सामने कोई उच्च लक्ष रखो और उसके लिए संघर्ष प्रारम्भ करो। यदि हम लोग ऐसा करेंगे तो हमारे साथ जो भी घटना घटेगी वह हमको विजय की ओर ले जायेगी। हमारा लक्ष्य विज्ञान साहित्य समाज और राष्ट्र किसी के लिए भी हो सकता है। वीरता के लिए हृदय की पवित्रता तथा उदारता और चरित्र की दृढ़ता ऐसे गुणों की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ वीरता व साहस, तब तक पूर्णतया प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता, जब तक उसमें एक और गुण सम्मिलित न हो। इस गुण का नाम है, कर्त्तव्य परायणता। कर्त्तव्य का विचार प्रत्येक साहसी व वीर मनुष्य में होना चाहिए। बिना इस विचार के मनुष्य अपने परिवार नहीं-नहीं अपने शरीर अथवा अपनी आत्मा तक का कोई उपकार नहीं कर सकता। इसलिए हमें यह समझना चाहिए कि वीरता व साहस एक कर्त्तव्य है और इस कर्त्तव्य को पालन करने वाला ही उच्चतम श्रेणी को प्राप्त करता है।

1971 ई. की पाकिस्तान और भारत की लड़ाई में एक मोहिन्दरसिंह नाम का सिपाही था। 4 दिसम्बर की प्रात: काल शत्रु ने तीसरी बार फिर हमला किया तो वह अपने बंकर से ब्रेनगन लिए हुए बाहर निकला और जान की परवाह न करते हुए एक से दूसरी खन्दक पर कूदते हुए और दुश्मनों को रणभूमि में धराशायी करते हुए आगे ही आगे बढ़ने लगा उसने अकेले ही 15-20 शत्रुओं का सफाया किया और भारतीय झण्डा को शत्रुओं के क्षेत्र में ले जाकर गाड़ दिया। यही साहस व वीरता का एक परिचय है कि अकेले होते हुए भी उसने अपना साहस व वीरता नहीं खोई। हम स्वयं अपनी शक्ति को क्यों भूलते हैं—

तुम एक अनल कण हो केवल,
छप्पर तक जा सकते हो उड़कर-
जीवन की ज्योति जला सकते।
अम्बर में आग लगा सकते।
ज्वाला प्रचण्ड फैला सकती है।
छोटी सी चिन्गारी भी।

सचमुच हम लोगों को कभी जीवन में यह नहीं सोचना चाहिए कि हम अकेले ही हैं। अकेले चना, भाड़ नहीं फोड़ सकता पर हम अकेले जीवन में विजय में प्राप्त कर सकते हैं वेद बतलाता है—

एको अग्नि बहुधा समिद्ध,
एक: सूर्यो विश्वमनु प्रभूत,
एकैवोषा विश्वमनुविभाति
एक वाइदं वियभव सर्वम्।

अकेली आग कितनी चमक से चमकती है। अकेला सूर्य विश्व को प्रकाशित करता है। अकेली उषा सब दृश्यमान वस्तुओं को चमका रही है। अकेला परमेश्वर सर्वत्र छाया हुआ है। तू भी अकेला क्या नहीं कर सकता है। तू मनुष्य है। शक्ति और साहस का भण्डार है। जो तुम्हारे अन्दर भरा है। उससे तू शत्रुओं को नाश कर सकता है पहाड़ों तक को हिला सकते हो देखो—

सूर्यस्येव वक्षथो ज्योतिरेषां
समुद्रस्येव महिमा गंभीर:
वातस्येव प्रजवो नान्येन।
स्तोमा वसिष्ठा अन्वेतवे व:।
ऋ. 7-33-8

सूर्य के समान तुम्हारी ज्योति है। समुद्र के समान गम्भीर तुम्हारी महिमा है, वायु के समान तुम्हारा वेग है। हे वीर तुम्हारे इन गुणों का कौन पार पा सकता है। इसलिए अरे मनुष्य! तू अपने में साहस धारण कर उन्नत हो तू आगे बढ़। वेद में कहा है—

दिवं च रोह पृथिवीं च रोह।
राष्ट्रं च रोह द्रविणं च रोह।
प्रजां च रोहऽमृतं च रोह।
रोहितेन तन्वं सं स्पृशस्व।
अथर्व 13-1-34

अर्थात्—हे मनुष्य तू उन्नत हो, उन्नत हो इतना उन्नत हो कि आकाश में जा चढ़ पृथ्वी पर सबसे उन्नत हो। प्रजा में सब से उन्नत हो, अमृत प्राप्ति में सबसे उन्नत हो, उन्नति में तू सूर्य को छू ले।

उद्यानं ते पुरुष नावयानं
जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि।
अथर्व—8-10-6

हे नर! देख जीवन में तेरा विकास होना चाहिए। अधोगति नहीं। इसीलिए तेरे प्रभु अन्दर मैं जीवन बल और साहस भरता हूं।

—

आर्यसमाज अबोहर में वेद प्रचार

आर्य समाज अबोहर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से श्री सीताराम भजन मण्डली ने और दयानन्द मठ दीनानगर से श्री अनिरुद्ध कुमार शास्त्री जी ने एक सप्ताह 16-6-85 से 23-6-85 तक नगर की भिन्न-भिन्न आबादियों में वेद प्रचार किया। भजन मण्डली के भजनों व उपदेशों ने वेद प्रचार की धूम मचा दी। हम प्रतिनिधि सभा पंजाब और स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के बहुत आभारी हैं।

—रामशरण दास
मन्त्री

सभा द्वारा प्रकाशित एवं प्रचारित साहित्य

1. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका —16 रुपये।
2. संस्कार विधि —6 रुपये।
3. सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी सजिल्द —8 रुपये।
4. सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी अजिल्द —5 रुपये।
5. अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द ले.—इन्द्र विद्यावाचस्पति —5 रुपये।
6. आर्यसमाजके अतीत की उपलब्धियां तथा भविष्य के प्रश्न—10 रुपये। —ले.—डा. भवानी लाल जी भारतीय
7. आर्य समाज के नियम (कार्ड) —50 रुपये सैंकड़ा।
8. पंजाब का आर्य समाज (द्वितीय संस्करण) —4 रुपये। ले.—श्री स्व. रामचन्द्र जावेद।
9. संगठन में शक्ति है ले.—श्री वीरेन्द्र सभा प्रधान। 1 रुपया।
10. प्रमुख सिख विद्वानों से पांच प्रश्न —50 पैसे। ले,—श्री स्वामी अमृतानन्द जी सरस्वती
11. धर्मवीर पण्डित लेखराम ले.—स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी। —40 पैसे
12. आर्य कीर्तन भजनावली 1 रुपया।
13. सच्च साखी (पंजाबी) ले,—ज्ञानी पिण्डीदास। 2 रुपये।
14. आर्य समाज दा दिग्दर्शन (पंजाबी) 2 रुपये। ले.—आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद।
15. सिख गुरु अते आर्य सिद्धान्त ले.—स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी। 2 रुपये।
16. सिख तुष्टीकरण की राजनीति ले.—वरुण शोरी। 2—50 पैसे।
17. Swami Shardhanand —byK. N. Kapoor. 5—00
18. Glimpses from Satyarth Parkash by D, N. Vasudeva. 3—00
19. Language problem and the political crisrs in the Panjab by Sh. Virendra. 3—00
20. The Arya Samaj and Sikh. by Virendra 1—00
21. The Fundamentals of Arya Samaj by Puran chand Advocat. 00—50

कृपया अधिकाधिक साहित्य मंगवाएं। विशेष छूट भी दी जाएगी। डाकव्यय अतिरिक्त।

द. यमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रवेश सूचना

निम्न विभागों में जुलाई 1985 से प्रवेश प्रारम्भ है:—

1. विद्या विनोद (इन्टरमीडिएट)

प्रवेशार्थ योग्यता— 1. विद्याधिकारी (गुरुकुल कांगड़ी) 2. हाई स्कूल संस्कृत सहित, 3. पूर्व मध्यमा अंग्रेजी सहित (वाराणसी) 4. विशारद (पंजाब यूनिवर्सिटी) अंग्रेजी में मैट्रिक सहित 5. विद्या रत्न (गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर

2. अलंकार (बी. ए.)

प्रवेशार्थ योग्यता— 1. विद्या विनोद (गुरुकुल कांगड़ी) 2. इन्टरमीडिएट सस्कृत सहित 3. उत्तर मध्यमा अंग्रेजी सहित (वाराणसी) 4. विशारद (पंजाब यूनिवर्सिटी) अंग्रेजी में इन्टरमीडिएट सहित।

3. बी, एस, सी, (प्रथम एवं द्वितीय वर्ष)

ग्रुप 1. कैमिस्ट्री, बौटनी, जूलौजी।
ग्रुप 2, कैमिस्ट्री, फिजिक्स, गणित।
प्रवेशार्थ योग्यता— इन्टरमीडिएट या समकक्ष विज्ञान सहित।

4, एम. ए.

1. वैदिक साहित्य 2. संस्कृत साहित्य 3, दर्शन शास्त्र 4. प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व 5, हिन्दी साहित्य 6, मनोविज्ञान 7. अंग्रेजी 8. गणित।

प्रवेशार्थ योग्यता— 1. अलंकार (गुरुकुल कांगड़ी) 2, बी. एस. सी. 3, बी. ए, 4, बी, काम, 5, विद्याभास्कर 6. शास्त्री 7' आचार्य 8. साहित्यरत्न।

नोट.— गणित तथा मनोविज्ञान विषय में बी, एस, सी परीक्षा उत्तीर्ण छात्रों को एम. एस, सी की उपाधि प्रदान की जाती है।

5. एम. एस, सी (माइक्रोबायलोजी)

प्रवेशार्थ योग्यता— बी. एस. सी. बायलोजी ग्रुप (बी. एस, सी में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक में उत्तीर्ण)

6. पी. एच, डी,

वेद, संस्कृत, हिन्दी, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व, भारतीय दर्शन, मनोविज्ञान एवं अंग्रेजी विषयों में पी, एच. डी की व्यवस्था है। रजिस्ट्रेशन फीस 50 रू, है। प्रवेश फार्म तथा नियमावली शुल्क डाक व्यय सहित 6रू है

अन्य विशेषतायें— 1, सुयोग्य शिक्षक तथा सुसज्जित प्रयोगशालायें, पुस्तकालय एन, सी, सी, एन. एस, एस, क्रीड़ा आदि का उत्तम प्रबन्ध।
2, निर्धन एवं योग्य छात्रों को शुल्क मुक्ति तथा छात्रवृत्ति भी दी जाती है।

टिप्पणी— विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की धारा 3 के अन्तर्गत गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय भारत सरकार से मान्यता प्राप्त है तथा उपाधियां सरकार के प्रायः सभी विश्वविद्यालय द्वारा मान्य है।

प्रवेश पत्र तथा पाठविधि कार्यालय से प्राप्त करें। प्रवेश की अन्तिम तिथि 7-8-1985 है।

सुरेशचन्द्र त्यागी

लुधियाना में विशाल वैदिक सत्संग सम्पन्न

बच्चों के चरित्र निर्माण धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा के लिए प्रेम माडल हाई स्कूल लुधियाना में आर्य युवक सभा की ओर से एक वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। सत्संग का आरम्भ यज्ञ से हुआ जोकि प्रसिद्ध विद्वान् पं, राम कुमार जी आर्य ने सम्पन्न कराया। श्री प्रेमजी वर्मा सपरिवार यजमान बने। इस अवसर पर श्री रोशनलाल जी वर्मा, संयोजक आर्य युवक सभा पंजाब के नेतृत्व में वेद प्रचार भजन मण्डली ने प्रभु भक्ति मानवता तथा प्रेम के गीतों एवं भजनों पर आधारित विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्री कैलाश जी वर्मा प्रधान मन्दिर कमेटी पंजाब ने सभा की ओर से श्री प्रेम जी वर्मा को वैदिक साहित्य भेंट किया। श्री वर्मा जी ने नवयुवकों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आर्य युवक सभा ने वैदिक धर्म की जो ज्योति जलाई है, इससे जनता को एक नया रास्ता मिलेगा। श्री प्रेम जी वर्मा ने सभी महानुभावों को धन्यवाद करते हुए कहा कि उनका स्कूल बच्चों की प्रत्येक प्रकार की उन्नति के लिए अर्थात् शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए कटिबद्ध है। बच्चों की आध्यात्मिक उन्नति के लिए भविष्य में भी इस प्रकार के आयोजन किए जाएंगे। इस सत्संग में बच्चों के अभिभावकों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। आर्य युवक सभा द्वारा सड़क पर तथा गली में ओम् के झण्डे लगाए गए, प्रबन्ध अति उत्तम था।

बम्बई में गायों का अवैध बध

बकरियों तथा सींगो वाले पशुओं (इशारा गायों की ओर है) का अनधिकृत और गैर कानूनी बध बम्बई तथा उसके उपनगरो मे ही नही, उसके आस-पास के नगरों: भिवडी, थाना तथा नई बम्बई आदि में अवैध रूप में जोर-शोर से चालू है। यह है ईवनिंगर न्यूज आफ इण्डिया मे प्रकाशित एक समाचार का सारांश। इस समाचार में आगे कहा गया है ऐसे सैंकड़ों पशुओं का बध प्रतिदिन खुले आम होता है। जिन अस्वास्थ्यकर परिस्थितियो में यह कत्ल होते हैं उनके कारण प्रदूषण और अधिक बढ़कर सामान्य नागरिकों के स्वास्थ्य के लिए एक खतरा बन जाता है। उन नागरिको के लिए और भी अधिक जो इस मांस से बनी हुई चीजें खाते हैं।

जानकार लोगों का अनुमान है कि बम्बई के 50 प्रतिशत लाईसैंस शुदा मांस विक्रेताओ, रेस्तराओ और होटलों को जो मास मिलता है वह इसी प्रकार से गैरकानूनी ढंग से कत्ल किए हुए पशुओं से प्राप्त होता है। यह कत्ल अन्धेरी, गन्दी झोंपड़ियों में किए जाते हैं और कत्ल करने वाले न खून से सने फर्श को साफ करते हैं न अन्य अवशिष्ट पदार्थों को। उन पर मक्खियां भिन्न-भिन्नाती रहती हैं और उनमें से निकलती दुर्गन्ध आस-पास रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य के लिए भयंकर खतरा बन जाती है। अक्सर इन पदार्थों को बड़ी लापरवाही के साथ नालियों में फेंक दिया जाता है जिससे वह अवरुद्ध हो जाती हैं।

ऐसे गन्दे मांस का कुछ भाग खाड़ी देशो में भी भेजा जाता है। भेजे जाने से पूर्व उसे कोल्ड स्टोरेजों में रखा जाता है, हाल में बम्बई नगरपालिका की ट्रकों के कुछ ड्राईवर ऐसे अवैध मांस को इन ट्रकों में रखकर नयी बम्बई ले जाते हुए पकड़े गए। इससे पता चलता है कि इस अवैध व्यापार में कुछ भ्रष्ट नगरपालिका कर्मचारी भी लिप्त हैं।

एक शुभ संकेत यह है कि गोवध का विरोध करने वाले सत्याग्रहियों के कारण उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश, बिहार और राजस्थान आदि राज्यों से बम्बई में कटने के लिए आने वाली गायों का आना बहुत कम हो गया है। गो-प्रेमियों को चाहिए कि वे अधिकाधिक संख्या में इन सत्याग्रहियों में शामिल होकर ज्यादा से ज्यादा गायों को कत्ल होने से बचाएं। तभी गोवध क्रमश: समाप्त हो सकेगा।

महाराष्ट्र गोपालन समिति की ओर से

दु:खद समाचार

श्री बनवारी लाल जी शादां जो एक अच्छे कवि थे तथा आर्य समाज माडल बस्ती दिल्ली के मन्त्री थे तथा जिनकी रचनाएं समाचार पत्रों में छपती रही हैं। 15-6-85 को दिवंगत हो गए हैं। यह समाचार सुनकर हार्दिक दुख हुआ। परमात्मा उन्हें सद्‌गति प्रदान करे तथा सारे परिवार को सान्त्वना तथा धैर्य प्रदान करे।

व्यवस्थापक
आर्य मर्यादा साप्ताहिक

शुभ विवाह संस्कार

स्वर्गीय श्री ठाकुर लालसिंह जी के सुपुत्र श्री ... आर्य का शुभ विवाह लालडू जिला रोपड़ के प्रतिष्ठित परिवार में सम्पन्न हुआ, दो दिन भर में यज्ञोपदेश होते रहे। सभा को 101) रुपये वेद प्रचार के लिए प्राप्त हुए।

तथा

27-6-83 को श्री ठाकुर वेदसिंह जी आर्य के सुपुत्र श्री अमरपाल जी आर्य का शुभ विवाह निकटवर्ती ग्राम तड़ोली की आयुष्मति प्रमिला के साथ सम्पन्न हुआसभा को 101) रुपए वेद प्रचारार्थ प्राप्त हुए।

—रामनाथ आर्य महोपदेशक

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलोफोन न. 74250 रजि. न. पा. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 15, 6 श्रावण सम्वत् 2042, तदनुसार 21 जुलाई 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये

आनन्दपुर साहब प्रस्ताव का लक्ष्य स्वतन्त्र सिख राज्य ; यह हिन्दुओं को स्वीकार नहीं : दृढ़ व स्थिर केन्द्र ही देश को बचा सकता है—श्री वीरेन्द्र

जालन्धर, 14 जुलाई को एक सम्वाददाता सम्मेलन मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के राजनैतिक विंग राजार्य सभा ने अकाली नेतृत्व से कहा कि वह स्पष्ट घोषणा करे कि क्या वह भारतीय सविधान के ढाचे के भीतर पजाब समस्या का समाधान चाहते हैं या नही ?

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने कहा, कि अकालियो का आन्दोलन आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के ढाचे पर खडा है अकाली दल के दोनो ग्रुप बार 2 यह बात कहते हैं कि आनन्दपुर साहब प्रस्ताव को छोडकर हम सरकार से बातचीत नही कर सकते । अर्थात् आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव मे कोई कमी पेशी नही हो सकती

यह एक बडी कठिन स्थिति है। पजाब राजार्य सभा यह महसूस करती है कि यह प्रस्ताव देश की एकता, सगठन और मजबूती की जडो पर कुल्हाडी मारने के समान है। एक प्रकार से यह प्रस्ताव अल्प संख्यकों के लिए एक चुनौती है। अब समय आ गया है कि आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के सम्बन्ध मे अल्प सख्यको का दृष्टिकोण अकाली दल तथा सरकार दोनो के सामने स्पष्ट कर दिया जाए।

1. आगे श्री वीरेन्द्र जी ने कहा पजाब राजार्य सभा की यह धारणा है कि यह प्रस्ताव अल्प सख्यकों और विशेषकर हिन्दुओ को मान्य नहीं है। क्योंकि यह प्रस्ताव कहता है—

'कि पथ का राजनैतिक लक्ष्य स्पष्ट रूप से दशम गुरु के निर्देशो पर निर्धारित है। जो सिख इतिहास के पन्नो पर लिखा है और जो खालसा पन्थ के दिमो मे है। इसका लक्ष्य खालसा जी का बोलबाला है।'

अकाली दल के दिमाग मे एक ऐसे पजाब का नक्शा है जोकि एक सिख राज्य होगा, जहा अकाली दल राजनैतिक लक्ष्य खालसा का प्रभुत्व हो। इससे हिन्दू भारत के सविधान मे दिए आधार भूत अधिकारो से वचित रह जाएगे । जिसमे कि सभी नागरिक बराबर हैं अकाली दल के विचारो से खालसा का बोलबाला होगा, जबकि दूसरे सभी वर्गों के लोग दूसरे दर्जे के नागरिक बनकर रह जाएगे। यह पजाब के हिन्दुओ को कदापि स्वीकार नही होगा।

2, यद्यपि अकाली दल दूसरे राज्यो मे स्थित सिख अल्प सख्यको के लिए प्रभावशाली सरक्षण की माग करता है। परन्तु आनन्दपुर साहब प्रस्ताव मे हिन्दू अल्प सख्यको के लिए 'सरक्षण के प्रश्न पर बिल्कुल मौन है।

3. पजाब राजार्य सभा केन्द्र तथा राज्यो के सम्बन्ध के ताल-मेल के विरुद्ध नहीं है परन्तु वह अकाली दल की इस माग के विरुद्ध है कि केन्द्र अपने पास केवल पाच महकमे ही रखे और शेष सभी महकमें राज्यो के पास हो। राजार्य सभा का यह दृढ विश्वास है कि केवल एक मजबूत केन्द्र ही देश को बचा सकता है।

4 अकाली दल चाहता है कि उसे अपनी विदेश नीति तय करने का अधिकार हो। इससे देश के हितो को खतरा उत्पन्न होगा। क्योकि अकाली सरकार केवल अपने ही सकुचित स्वार्थों का ध्यान रखेगी

5 अकाली दल के आनन्दपुर साहब प्रस्ताव की सारी बुनियाद सम्प्रदायिकता व जातिवाद पर निर्भर है। वह इस बात को बिल्कुल भूल जाना चाहते है कि पजाब मे 48 प्रतिशत हिन्दू भी रहते हैं और उनको भी अपने अधिकारो की रक्षा की जरूरत है ।

6 एक और भडकाने वाली बात श्री गुरचरणसिह जी टोहरा का वह भाषण है जोकि उन्होने इस प्रस्ताव को लक्ष्य बनाकर लुधियाना की 1978 की अकाली कान्फ्रेंस मे दिया था। अपने भाषण मे श्री टोहरा जी से कहा था कि—

1, भारत एक ऐसा देश है जिसमे भिन्न 2 कौमे हैं और अल्पसख्यक हैं।

2, सिख एक अलग कौम है।

3. रूस के विधान की धारा 76 मे राज्यो को पूर्ण अधिकार हैं कि वह राज्य देश से अलग हो जावे अथवा देश के साथ रहे । ऐसा ही यहा भी होना चाहिए। इसी प्रकार इन सभी ब्यानो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव के आधार पर अकाली अपने अलग सिख राज्य की स्थापना की बुनियाद रखना चाहते हैं।

श्री जगदेवसिंह तलवण्डी ने भी इन विचारो की सम्पुष्टी कुछ दिन हुए एक साक्षात्कार मे की, जिसमे उसने कहा—

कि सिख अपनी अलग पहचान और खोई हुई शान को दोबारा तभी प्राप्त कर सकते हैं जबकि वह उत्तरी भारत के एक हिस्सा मे अपनी राजनीतिक प्रभुसत्ता को प्राप्त करें।

यह राजनैतिक धारणा आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव मे पूरी तरह वर्णित है जोकि सिखो के लिए पजाब मे एक खास दर्जा की वकालत करता है और राज्य के लिए ज्यादा अधिकार मागते हैं।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि आनन्दपुर साहब प्रस्ताव हमारे इस राज्य मे सम्मान पूर्वक रहने के अधिकार को नही मानता ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि इस प्रस्ताव का लक्ष्य एक स्वतन्त्र सिख राज्य की स्थापना है। जिससे हिन्दुओ के हितो को हानि पहुचेगी। इसलिए हमे यह प्रस्ताव बिल्कुल स्वीकार नही है।

पजाब राजार्य सभा अपने सभी देशवासियो से अपील करती है कि वह भी यह घोषणा करें कि यह प्रस्ताव उन्हें स्वीकार नही है और न ही इस पर कोई समझौता हो सकता है।

श्री वीरेन्द्र जी ने अकाली नेताओ से यह भी माग की, कि वे अपनी स्थिति पूर्ण रूप से स्पष्ट करें। उन्होने यह भी अपील की, कि अकाली दल इस बात की स्पष्ट घोषणा करे कि वह पजाब समस्या का समाधान सविधान के अन्दर रहकर या बाहिर जाकर करना चाहते हैं।

—

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला

आर्य समाज- उपलब्धियां, सीमाएं और अपेक्षाएं दयानन्द सरस्वती के विचार—समय की कसौटी पर

ले.—डा. भवानीलाल जी भारतीय आचार्य व
अध्यक्ष दयानन्द चेयर पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

(14 जुलाई से आगे)

(3) नारी समाज में सांस्कृतिक जागरण लाना आवश्यक है। यों तो भारतीय नारी शिक्षा, जीविकोपार्जन तथा अन्य क्षेत्रों में पुरुष वर्ग के समक्ष आ गई है। किन्तु इन्हीं कारणों से उनमें जो पश्चिम की अनुकरण वृत्ति, फैशनपरस्ती तथा आधुनिका बनने की प्रवृत्ति पनपने लगी है, उसे दूर कर भारतीय नारी की गरिमा प्रदान की जानी चाहिए। इसके लिए नारी के समक्ष भारतीय संस्कृति का गरिमा पूर्ण चित्र उपस्थित किया जाना चाहिए।

(4) सामाजिक कुरीतियों के उच्छेदन के लिए अत्यन्त जागरूकता के साथ प्रयास किये जाने चाहियें। विवाह तथा अन्य समारोहों में भारी अपव्यय, दहेज आदि का आग्रह, नवयुवा वर्ग में मदिरा तथा अन्य मादक पदार्थों का सेवन, धूम्रपान की बढ़ती हुई प्रवृत्ति के निवारण के लिए सशक्त अभियान चलाने आवश्यक हैं। इन कार्यक्रमों में युवा पीढ़ी का सहयोग लेना भी आवश्यक है।

(5) सर्वोपरि बात तो चरित्र निर्माण की है। हमें यह स्मरण रखना होगा कि आर्य समाज के प्रारम्भिक युग के आर्य पुरुषों को जो सफलता मिली, उसका प्रमुख कारण उनका उदात्त एवं आदर्श चरित्र ही था। एक आर्य की साक्षी से ही न्यायधीश को अपना निर्णय देने में कोई कठिनाई नहीं होती थी। आज का नागरिक चरित्र-संकट से ग्रस्त है। इसे उभारना ही राष्ट्र की सबसे बड़ी सेवा है।

जहां तक राजनैतिक क्षेत्र में देश को मार्ग दर्शन देने का प्रश्न है, आर्यसमाज को यह स्मरण रखना होगा कि भारत में प्रजातांत्रिक पद्धति की चर्चा का सूत्रपात सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द ने ही किया था। उन्होंने आर्य समाज के विधान को भी प्रजातन्त्र का आधार प्रदान किया तथा अपने राजनैतिक विचारों की मीमांसा करते समय यह स्पष्ट कर दिया कि एकतन्त्री शासन की अपेक्षा जन भावनाओं का प्रतिनिधित्व करने वाला उत्तरदायी शासन कहीं अधिक श्रेष्ठ होता है। परन्तु आज की राजनीति में छल कपट धूर्तता तथा चरित्र हनन आदि की जो बुराईयां आ गई है, उनके निवारण के लिए जन-मत को जगाना आवश्यक है। प्रजातन्त्र की प्रणाली चाहे कितनी ही अच्छी तथा श्रेयस्कर क्यों न हों, वह कदापि सफल नहीं हो सकती। यदि हम उसका दुरुपयोग करने पर उतारू हो जायें। आर्यसमाज स्वयं भी प्रजातन्त्र के दुरुपयोग के परिणाम भोग रहा है। आज हमारी सभाओं में विद्वान्, बुद्धिमान और विचारशील व्यक्ति की अपेक्षा उसी व्यक्ति का आदर होता है जो अपने पक्ष में अधिक से अधिक लोगों का समर्थन जुटा लेता है। यही कारण है कि आज आर्य समाज में त्यागी, तपस्वी संन्यासियों की अपेक्षा गुटबन्दी करने वाले नेताओं का ही प्राधान्य है।

दूसरी बात और भी महत्वपूर्ण है। हमें आर्य समाज को शासक दल या अन्य किसी राजनैतिक दल का दुम्मछल्ला नहीं बनना है। प्राय: देखा गया है कि हम अपने सम्मेलनों, उत्सवों तथा समारोहों में राजनीतिज्ञों, मन्त्रियों तथा प्रशासन की उपस्थिति से अधिक प्रसन्नता अनुभव करते हैं। मन्त्रियों के स्वागत सत्कार में कभी कभी तो इतने मग्न हो जाते हैं कि हमें अपने ही विद्वानों और संन्यासियों को यथोचित आदर देने का भी ध्यान नहीं रहता। हमें स्मरण रखना होगा कि आर्य समाज ने सच्चे ब्राह्मण-समाज के मार्ग दर्शन का कर्त्तव्य भार ग्रहण किया है वह उन राजनीतिज्ञों और स्वार्थी पार्टीबाज व्यक्तियों का पिछलग्गू नहीं हो सकता जिनके लिए येन केन प्रकारेण सत्ता प्राप्त करना ही अन्तिम लक्ष्य होता है। इसलिए आर्य समाज को चाहिए कि वह अपने आचरण एवं उपदेश के द्वारा राजनैतिक जीवन में उच्चतर मूल्यों की स्थापना के लिए प्रयत्न करे। राजनैतिक भ्रष्टाचार शोषण और अत्याचार को रोकने के लिए यदि हमें सत्याग्रह तथा बलिदान भी करने पड़े, तो इसके लिए उसे तत्पर रहना चाहिए।

आज का युग अर्थ प्रधान है उन्नीसवीं शताब्दी के महान् तत्वचिन्तक तथा स्वामी दयानन्द के समकालीन कार्ल मार्क्स ने अर्थ को ही मनुष्य की समस्त प्रवृत्तियों का मूल तथा उसकी गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु बताया था। प्राय: लोगों को आर्य समाज से यह शिकायत रही है कि उसने अपनी आर्थिक नीतियों को कभी स्पष्ट रूप से लोगों के समक्ष नहीं रखा आज के युग में पूंजीपति तथा श्रमिक वर्ग का संघर्ष आर्थिक दृष्टि से पीड़ित एवं शोषित वर्ग की हित रक्षा बृहत् उद्योगों का राष्ट्रीयकरण आदि ऐसी समस्यायें हैं जिनके बारे में आर्य समाज को अपना स्पष्ट मत बनाना चाहिए। नीतिज्ञ विदुर ने आर्थिक समस्याओं के समाधान में एक सूत्र प्रस्तुत करते हुए कहा था कि जो व्यक्ति धनोपार्जन करके भी लोकहित में व्यय नहीं करता वह समाज में रहने का भी अधिकारी नहीं है। इसी प्रकार जो व्यक्ति अपनी दरिद्रता का तो ढोल पीटता है, किन्तु श्रमकणों से अपने शरीर को सिंचित नहीं करता, अर्थात् परिश्रम नहीं करता, वह भी समाज में जीने का अधिकार नहीं रखता। इस प्रकार दान और परिश्रम के समन्वय से ही आर्थिक स्थितियों को अनुकूल बनाया जा सकता है।

आर्य समाज को समयानुसार अपनी प्रचार प्रणाली में भी परिवर्तन करना चाहिए। जो प्रचारक ग्रामीण जनता के हित की बात कह सकता है वह नागर जनों के लिए भी उपयोगी हो, यह आवश्यक नहीं है। अत: प्रचार प्रणाली में देश काल, पात्र और परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तन करना ही होगा। नगरों में जो व्याख्यान आयोजित किये जाएं, उनमें वकील, डाक्टर, प्राध्यापक, छात्र, पत्रकार आदि विभिन्न व्यवसायों के प्रबुद्ध लोगों को आमन्त्रित किया जाना चाहिए। व्याख्यानदाताओं को इस बात की हिदायत दी जानी चाहिए कि वे अपने विषय को पूर्ण तैयारी के साथ प्रस्तुत करें। व्याख्यानों में मण्डनात्मक शैली को स्वीकार करते हुए भी अंधविश्वासों, पाखण्डों तथा मिथ्याचारों पर चोट करने में संकोच नहीं करना चाहिए। वैदिक राजनीति, वैदिक अर्थनीति और वैदिक समाजनीति की स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत किये जाने वाले व्याख्यानों को वरीयता देनी चाहिए। प्रचार में संगीत का महत्व निर्विवाद है। उच्चकोटि के शिक्षाप्रद भजनों को संगीत की विविध रागरागिनियों के माध्यम से प्रस्तुत कर श्रोताओं को रससिक्त एवं आनन्द विभोर किया जा सकता है। गान और व्याख्यान को एक साथ प्रस्तुत करना अधिक लाभप्रद नहीं होता। इसका ध्यान रखा जाना आवश्यक है।

उपदेश प्रणाली में यथेच्छ सुधार एवं परिवर्तन तो तभी आ सकता है जब कि आर्य समाज में उपदेशकों के प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था हो। यह स्मरणीय है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने दयानन्द उपदेशक विद्यालय के द्वारा जिन उपदेशकों को प्रशिक्षित किया, अथवा उससे भी पूर्व पं. भोजदत्त आर्य मुसाफिर ने आगरे में आर्य मुसाफिर विद्यालय के संचालन के द्वारा शास्त्रार्थ विद्या निष्णात, तार्किक, वाग्मी तथा विभिन्न मत सम्प्रदायों के विशेषज्ञ उपदेशक तैयार किए, उसी प्रकार के उपदेशकों का शिक्षण होना आवश्यक है। इसमें हमें ईसाई प्रचारकों की कार्य पद्धति को भी देखना होगा।

आर्य समाज ने अपने अतीत काल में जो लोकप्रियता अर्जित की थी, उस का एक प्रमुख कारण था जन सेवा। महामारी, भूकम्प, दुष्काल आदि आकस्मिक विपदा ग्रस्त लोगों को उभारने के लिए आर्य समाज के दीवानों ने सेवाधर्म का जैसा प्रदर्शन किया, उसी के कारण जनता इसकी ओर आकृष्ट हुई थी। आज उसी सेवा भावना को पुन: जागृत करना आवश्यक है। कतिपय अन्य सुझाव संकेत रूप में ही दिये जाते हैं:—

क्रमश:

सम्पादकीय—

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की शताब्दी (5)

इस विषय पर अपने विचार आर्य जनता के सामने रखते हुए मैंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की कुछ आवश्यकताओं की ओर आर्य बन्धुओं का ध्यान दिलाया था। आवश्यकताएं तो बहुत हैं, आज के युग में जब प्रचार के नए 2 वैज्ञानिक साधन प्रयोग में लाए जा रहे हैं। ऐसे समय में कोई भी संस्था जो दूसरों के मुकाबला में सामने आना चाहती है उसे भी इस ओर ध्यान देना चाहिए। आर्य समाज के इतिहासकार वह युग समाप्त हो चुका है जब चिमटा-मण्डली के द्वारा हम आर्य समाज का प्रचार किया करते थे, आज जब हम अपने अतीत पर ध्यान देते हैं तो वह महानुभाव बहुत याद आते हैं जिनके द्वारा आर्य समाज का बहुत प्रचार हुआ करता था। मुझे आज भी वह समय याद है जब लाहौर में आर्य समाज का वार्षिक उत्सव हुआ करता था वह एक प्रकार का मेला बन जाता था। जहां सारा पंजाब इकट्ठा हो जाता था। आर्य समाज के उत्सव में हजारों व्यक्ति बाहिर से आया करते थे। वह एक प्रकार का पारस्परिक मिलन हुआ करता था जो लोग बाहिर से आया करते थे उनके सामने दो लक्ष्य हुआ करते थे। एक तो यह कि उस उत्सव पर दूसरे शहरों से आए हुए आर्य बन्धुओं से वह मिल लेते थे और दूसरा यह कि बड़े 2 विद्वानों के और भजनीकों के वह उपदेश सुन सकते थे। आचार्य रामदेव जी जब भाषण देने आते थे तो अपने साथ पुस्तकों का एक ट्रंक भर कर लाते थे और उनके द्वारा जनता को बताया करते थे कि आर्य समाज की विचार धारा संसार में किस प्रकार फैल रही है। श्री महाशय कृष्ण जी भी एक बहुत ओजस्वी वक्ता थे, लोग उन्हें भी सुनने आते थे। श्री पं० चमूपति जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी, इनमें से प्रत्येक में एक विशेष प्रकार का आकर्षण होता था जो हजारों लोगों को सारे पंजाब से लाहौर खींच लाता था। श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने जब तक आर्य समाज को नहीं छोड़ा था, जब वह लाहौर में अपनी कथा किया करते थे तो उनकी कथा में बीस बीस हजार व्यक्ति पहुंचा करते थे। उन दिनों लाऊड स्पीकर का इतना प्रचार न था। इसलिए प्रायः सब ही इसके बिना ही बोला करते थे। और उसका भी सब पर प्रभाव पड़ता था। उस समय के दो गायक बहुत प्रसिद्ध हुए थे। एक कंवर सुखलाल जी और दूसरी चिमटा भजन मण्डली। इनको सुनने के लिए भी बहुत लोग आया करते थे। वह केवल गाते ही नहीं थे। हमारे इतिहास के भिन्न-भिन्न पक्ष अपने गीतों के द्वारा जनता के सामने रखा करते थे। गुरुकुल के स्नातकों में पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार का का बहुत प्रभाव था।

कहने का अभिप्राय यह है कि जिस युग में लाऊडस्पीकर जैसे वैज्ञानिक यन्त्र प्रचलित न हुए थे उस युग में भी आर्य समाज का बहुत प्रचार होता था। मैं तो यह कहूंगा कि आज से भी अधिक होता था। मैंने आर्य समाज लाहौर के उत्सव का ऊपर उल्लेख किया है। आज सारे पंजाब में एक भी ऐसी आर्य समाज नहीं है जो सारे पंजाब को अपने उत्सव पर बुला सके। सारा पंजाब तो छोड़िए, अपने शहर में वह कोई उत्सव ऐसा नहीं कर सकते कि जिससे सारा शहर उनकी तरफ उमड़ता आए। अमृतसर, जालन्धर और लुधियाना यह तीन शहर है जो लाहौर की जगह ले सकते हैं। परन्तु इनमें कोई भी आर्य समाज इस स्थिति में नहीं है जो ऐसे उत्सव कर सके, जैसे कि लाहौर में हुआ करते थे। इन तीनों शहरों में आर्य समाजों के बड़े 2 भवन खड़े हैं। परन्तु उनमें से कई ऐसे हैं जिनके साप्ताहिक सत्संगों में कई बार 50 व्यक्ति भी नहीं होते। उनके भवन में जो फिल लगे हैं उन पर दो-दो फीट मिट्टी चढ़ी हुई होती है कोई उनकी सफाई नहीं करता। कई ऐसे व्यक्ति भी हैं जिन्होंने आर्य समाज को अपनी पैतृक सम्पत्ति बना लिया है। वह उसे अपने परिवार तक ही सीमित रखते हैं किसी और को उसमें घुसने नहीं देते। अमृतसर की शक्ति नगर आर्य समाज के भूतपूर्व प्रधान स्वर्गीय श्री जगदीश राज जी उन व्यक्तियों में से थे जो अपनी आर्य समाज को एक बहुत बड़ा केन्द्र बनाने का प्रयास किया करते थे। लुधियाना की आर्य समाज दाल बाजार, पठानकोट की आर्य समाज मेन बाजार, बरनाला की आर्य समाज और इसी प्रकार की दो-चार आर्य समाजें और होंगी, जहां कुछ सक्रियता दिखाई देती है। नवांशहर में हमारी शिक्षा संस्थाएं भी हैं और आर्य समाज भी है। दोनों का आपस में बहुत अच्छा सम्बन्ध है इसलिए वहां आर्य समाज का कुछ न कुछ प्रचार होता रहता है मोगा में भी एक आर्य समाज कहने को है उसको आर्य समाज कहा जाता है परन्तु यह एक ऐसी आर्य समाज है जिसका पिछले दस-बारह वर्षों में कोई चुनाव नहीं हुआ और कोई उत्सव भी नहीं हुआ और यह उस स्थिति में है जबकि मोगा में हमारी कई शिक्षा संस्थाएं हैं। मैंने यह कुछ उदाहरण उन आर्य समाजों के दिए हैं जो कुछ सक्रिय हैं। मोगा में अभी थोड़ा ही समय हुआ लगभग तीन वर्ष हुए हैं जब वहां एक स्त्री आर्य समाज बनी थी उसमें काम करने वाली देवियां मोगा की पुरानी आर्य समाजों से बहुत सक्रिय है उनके कारण ही वहां कभी 2 उत्सव हो जाता है। जालन्धर में आर्य समाज की जो दयनीय स्थिति है उसका भी मैंने ऊपर कुछ उल्लेख किया है परन्तु यहां कभी 2 प्रकाश की एक किरण भी दिखाई देती है। जालन्धर की मेघ बिरादरी में आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के लिए बहुत श्रद्धा है। उनके कार्यकर्त्ता किसी न किसी ढंग से आर्य समाज का प्रचार करते रहते हैं। जगह 2 जाकर यज्ञ करते हैं साहित्य बांटते हैं उपदेश देते हैं और यह सब कुछ विशेषकर उन भाईयों में जिन्हें हम अछूत या हरिजन कहते हैं। आर्य समाज छूत-छात में विश्वास नहीं रखता है। इसलिए उनमें भी उसी प्रकार से प्रचार होता है जिस प्रकार दूसरों में। जालन्धर में इन भाईयों को देखकर जिनका सम्बन्ध मेघ जाति से है कुछ आशा दिखाई देती है कि सम्भवतः यह लोग आर्य समाज को जीवित रख लेंगे। एक व्यक्ति अकेला ही कई बार क्या कुछ कर सकता है इसका एक उदाहरण हमें जालन्धर में मिलता है आर्य समाज का एक बहुत सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री रामलुभाया जी नन्दा भी दिन-रात आर्य समाज के लिए काम करते हैं और उन्होंने अकेले ही एक नया आर्य समाज मन्दिर खड़ा कर दिया है। पुराने आर्य समाजियों में एक पं. किशनचन्द जी भी हैं वह अब बूढ़े हो गए हैं उनकी आयु लगभग 80 वर्ष होगी, वह दिन-रात आर्य समाज की लग्न में घूमते रहते हैं। कई बार सोचता हूं कि ऐसे व्यक्ति फिर हमें कहां मिलेंगे।

आर्य समाज के सामने कई प्रकार की आर्थिक कठिनाईयां भी रहती हैं परन्तु आर्य समाज में अभी भी हमारी सभा के उपप्रधान श्री पं. हरबंस लाल जी शर्मा जैसे दानवीर भी हैं जो हर समय कुछ न कुछ देते ही रहते हैं। बहुत कम ऐसा समय आता है जब उनसे कुछ मांगा जाए और वह न दें। यही वह लोग हैं जिनके कारण आर्य समाज आज चल रही है इन्हें देखकर खुशी भी होती है, उत्साह भी बढ़ता है परन्तु साथ ही अपने भविष्य को देखता हूं तो सोचता हूं कि लाहौर की आर्य समाज से चलते हुए हम आज एक ऐसे स्थान पर पहुंच गए हैं जहां आर्य समाज का भविष्य धूमिल दिखाई देता है फिर भी आज कोई न कोई किरण दिखाई दे जाती है उसी के साथ यह प्रश्न भी उठता है कि इसके बाद क्या होगा ? यह प्रश्न इसलिए भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अपने जीवन के एक सौ वर्ष समाप्त कर रही है। इसलिए यह प्रश्न बार 2 उठ रहा है कि पहली शताब्दी तो हमने बहुत अच्छी तरह व्यतीत कर दी और आर्य समाज ने अपना गौरवमय इतिहास लिख दिया परन्तु आगामी इतिहास कौन लिखेगा। यह समस्याएं हैं, जो हमारे सामने आ रही हैं मैं चाहता हूं कि आर्य जनता इस ओर विशेष ध्यान दे और भी जो समस्याएं हैं उनके विषय में आगामी अंक में कुछ निवेदन करूंगा।

—वीरेन्द्र

पंजाब राजार्य सभा का सम्मेलन

पंजाब राजार्य सभा तो बहुत देर से बनी हुई है। अब वह कुछ अधिक सक्रिय हो रही है। जिस उद्देश्य के लिए यह प्रारम्भ की गई थी उसे हम कुछ पूरा कर रहे हैं। पंजाब की राजनीतिक समस्याओं के विषय में आर्य समाज का दृष्टि कोण अब समय समय पर जनता के सामने आता रहता है। और अब हम यह भी अनुभव करते हैं कि केवल समाचार-पत्रों के द्वारा प्रचार करना पर्याप्त नहीं। अब हमें अपना संगठन और भी अधिक सुदृढ़ और शक्तिशाली बनाना चाहिए।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

प्रसुव यज्ञपतिं भगाय (यजुः ६-१)

महान् ऐश्वर्य के लिए यज्ञपति उत्पन्न हों

ले.—श्री पं. वीरसेन जी वेदश्रमी, वेद सदन इन्दौर

यज्ञपति उत्पन्न हों

आज सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता इस बात की है कि यज्ञ करने वाले यजमान अधिकाधिक उत्पन्न हों और सर्वत्र यज्ञों का अनुष्ठान हो। यज्ञों के अनुष्ठानों से सर्वत्र ऐश्वर्य की वृद्धि होगी। ऐश्वर्य की वृद्धि होने से दुःख-दारिद्रय दूर होंगे और सुख की सर्वत्र वर्षा होगी। सर्वत्र आनन्द मंगल होगा। यज्ञपतियों के अभाव से ऐश्वर्य की वृद्धि तो नहीं होती है अपितु दुःख-दारिद्रय की वृद्धि भी होती है, वेद ने पृथिवी पर का साम्राज्य स्थापित करने के लिए पृथ्वी को देवयजनि कहा है। अर्थात् पृथ्वी देवों द्वारा यज्ञ-यागादि करने के निमित्त है यह घोषित किया है। यज्ञ देवों द्वारा अर्थात् वेदों के विद्वानों द्वारा ही होना चाहिए।

यजमानों का निर्माण करें

पृथ्वी को देवयजनि बनानेके लिए यज्ञपतियों यजमानों का निर्माण करना आवश्यक है यजमानों का निर्माण करने के लिए उस का विधि-विधान है। बिना उस विधि विधान की साधना के यजमान बनने की पात्रता नहीं होती। अपात्र यजमानों एवं अपात्र अविद्वानों द्वारा यज्ञ करने कराने से यज्ञ का बाह्याडम्बर मात्र विकास को प्राप्त हो जाता है और यज्ञ का सत्यस्वरूप अस्तित्व को प्राप्त नहीं हो पाता। देवों की समृद्धि नही हो पाती है जिससे ईष्ट लाभ नहीं होता। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने संस्कार विधि में यजमानों के निर्माण के लिए उन्हें मन्त्र से दीक्षित करने के लिए लिखा है। अत: यजमानों के निर्माण कार्य को सर्वाधिक प्राथमिकता देनी चाहिए। यजमानों को संस्कार विधि के सामान्य प्रकरणोक्त ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना मन्त्र स्वस्ति वाचन शान्तिकरण मन्त्र, हवन आदि के समस्त मन्त्र और वामदेव्य गान तथा महावाम देव्यगान मन्त्रों का अभ्यास एवं जिस वेद का जैसा उच्चारण है उस विधि से सस्वर पाठ का अभ्यास प्रत्येक यजमान को कराना चाहिए। इस निमित्त सस्वर वेद पाठ शिविरों का आयोजन होना चाहिए। जब इस योग्यता के यजमान होंगे तभी यज्ञ के शुभ परिणाम होंगे—अन्यथा नहीं।

ऋत्विजादि भी मंत्राभ्यास करें

सम्प्रति तो ऐसी दुरवस्था है कि यजमानों को शुद्ध मन्त्र पाठ भी नही सिखाया जाता है। जो यज्ञ कराने वाले ब्रह्मा, ऋत्विज होता अध्वर्यु पुरोहित हैं वे भी प्राय: शुद्ध मन्त्र पाठ नहीं जानते हैं—सस्वर मन्त्र पाठ और प्रति वेदानुसार पाठ की बात तो दूर ही है। जब पुरोहितादि भी नित्य अभ्यास में प्रयुक्त होने वाले मन्त्रों का यथोचित पाठ नहीं जानते हैं तो वे यजमानों को क्या सिखाएंगे। अन्धेनैव नीयमाना यथान्धा, की स्थिति विद्यमान है अत: यजमानों को अभ्यास कराने से पूर्व पुरोहितादि को शुद्ध सस्वर मन्त्र पाठ का अभ्यास कर देवत्व प्राप्त करना चाहिए और फिर यजमानों को भी सिखाना चाहिए।

अशुद्ध मन्त्रोच्चारण सर्वथा त्याज्य है

बिना शुद्ध एवं सस्वर मन्त्र पाठ के जाने जो यज्ञ किया जाता है वह तो यज्ञ का दम्भ मात्र है। नारदीय शिक्षा 1-61 में लिखा है—

प्रहीण: स्वर वर्णाभ्यां योविमन्त्र: प्रयुज्यते।
यज्ञेषु यजमानस्य स्वत्यायु: प्रजा पशून्।

अर्थात् उदात्तानुदात स्वर रहित तथा वर्णों के अशुद्ध उच्चारण द्वारा जो तथा कथित मन्त्र यज्ञ में बोला जाता है वह विमन्त्र कहाता है। उस स्वर और वर्णों से अशुद्ध प्रयुक्त मन्त्र से यजमान की आयु और प्रजा पशुओं की हानि होती है इसी प्रकार से अनेक शिक्षा ग्रन्थों में स्वर रहित और अशुद्ध मन्त्रों के उच्चारण को त्याज्य निन्दनीय तथा हानिकारक बताया है। अत: शुद्ध एवं सस्वर शुद्ध पाठ ही करना अति आवश्यक है। बिना वेद पाठ शिक्षण सत्रों के आयोजित किए यह न्यूनता सदा बनी रहेगी।

वेद मन्त्रों को प्रदूषण से बचाएं

वर्तमान समय में प्रदूषण निवारण का ध्यान सब ओर आकृष्ट हुआ है। वायु से. जल से, पृथ्वी से प्रदूषण निवारण के प्रयत्न हो रहे हैं क्योंकि प्रदूषण जीवन के लिए घातक है। गंगा आदि पवित्र नदियों को प्रदूषण रहित करने का प्रयत्न हो रहा है। देश और विदेश के वैज्ञानिक भी इस कार्य में सहयोग दे रहे हैं। वेदमन्त्रों को प्रदूषण से रहित रखने के लिए प्राचीन ऋषि-मुनियों ने स: वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्र शत्रु: स्वरतोपराधात् आदि वचनों द्वारा सावधान रहने का घोष किया। अत: वेद मन्त्रों को अशुद्ध और स्वर रहित उच्चारण के प्रदूषणों से बचाने का प्रबलतम प्रयत्न करना चाहिए वेद मन्त्रों का शुद्ध और सस्वर अभ्यास श्रुति परम्परा से गुरुमुख द्वारा ही होता है अन्यथा नहीं।

जब सर्वत्र यज्ञपतियों का बाहुल्य होगा तो वेद का पठन-पाठन भी सर्वत्र प्रचलित होगा और वेदज्ञ ऋत्विजों कोभी वृद्धि होगी। आज तो जो यज्ञ कराने वाले ब्रह्मा आदि हैं उनमें से बहुतों को गायत्री मन्त्र और विश्वानिदेव मन्त्रों का भी शुद्ध उच्चारण करना नहीं आता। अशुद्ध मन्त्रोच्चारण से अर्थ पर भी प्रभाव बहुत होता है तथा परिणाम विपरीत होते हैं। देव सवित: प्रसुव यज्ञम् इस मन्त्र में हो केतपू: केतं न: पुनातु-यह मन्त्र वाच्य है। अर्थात् ज्ञान का पवित्रकर्ता हमारे ज्ञान को बुद्धियों को अज्ञान रहित, दोष रहित, परम पवित्र करे। इससे सिद्ध होता है कि जब यज्ञपतियों को विधिवत् मन्त्राभ्यास कराके यज्ञपति बनाया जाएगा और ब्रह्मादि भी वेदज्ञ होंगे तो यज्ञ के मन्त्र विज्ञान, आहुति विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, मनोविज्ञानादि द्वारा भू-मण्डल के व्यक्तियों के मन और बुद्धियों में अपूर्व एवं अद्भुत परिवर्तन पवित्रता का, शान्ति का अवश्य होगा। सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु सर्वत्र मित्र भाव उत्पन्न होगा द्वेष कलह एवं युद्ध की विभिषिकाएं लुप्त हो जाएंगी।

केतपू: केतं न: पुनातु

केत शब्द का अर्थ ज्ञान, बुद्धि है तथा केत शब्द का अर्थ अन्न भी है। अत: उपरोक्त श्रेणी यजमानों द्वारा जब यज्ञानुष्ठान होगा तो यज्ञ की मन्त्र ध्वनि विज्ञान से आहुति के धूम्र विज्ञान से, यज्ञ के भस्म विज्ञान से, यज्ञ द्वारा सुवृष्टि विज्ञान से समस्त वनस्पति, वृक्ष, अन्न, फल, मूलकन्द आदि पवित्र होंगे आज की कृषि विषाक्त कीटाणु नाशक पदार्थों के आश्रय से होती है तो अन्न में भी विष का प्रभाव स्वाभावत: आ जाता है। ऐसे विषयुक्तअन्न के सेवन से रोगों की उत्पत्ति होने लगती है। अत: पूर्वोक्त प्रकार से वेद मन्त्राभ्यासी यज्ञपतियों के द्वारा किया यज्ञ रोग रहित तथा आयु वर्धक होता है।

वाचस्पतिर्वाचं स्वदतु

दैनिक यज्ञ में दोनों समय में देव सवित: प्रसुव यज्ञं—यह मन्त्र बोला जाता है। मन्त्र के इस अन्तिम भाग कहा गया है कि वाचस्पति अर्थात् वेद वाणी का रक्षक, शिक्षण या गुरुजन हमारी वाणी को मधुरा स्निग्ध, कोमल एवं प्रिय करें, यज्ञपति की वाणी में माधुर्य अवश्य होना चाहिए। महर्षि याज्ञवल्क्य ने वेद मन्त्रों के उच्चारण के लिए माधुर्य अक्षर व्यक्ति पदच्छेदस्तु सुस्वर:। धैर्यलय समर्थं च षडेत पाठ का गुणा:—ये छ: गुण बताए हैं। इनमें माधुर्य और सुस्वर- का मन्त्र में उपदेश पूर्व प्रकट किया ही है। महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने भी संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण के अन्त में लिखा है—सब संस्कारों में मधुर स्वर से मन्त्रोच्चारण यजमान ही करे—इस प्रकार वेद का यह आदेश है कि यज्ञपतियों का प्रशिक्षण द्वारा निर्माण होना चाहिए, उसका लाभ मन्त्र में ही भगाय शब्द के द्वारा अर्थात् ऐश्वर्य की उपलब्धि द्वारा बताया है तथा बुद्धि की वृद्धि अन्न की श्रेष्ठता एवं विशुद्धता और वाणी की शुद्धता, माधुर्य आदि का लाभ बताया है।

मन्त्र का संक्षेप से उपदेश

देव सवित: प्रसुव यज्ञम्—अर्थात् हे राजन्! या राष्ट्राध्यक्ष या राष्ट्रपति आप समस्त संसार के उपकार के लिए तथा ऐश्वर्य की वृद्धि के लिए विविध प्रकार के यज्ञों को प्रचलित करें।

प्रसुव यज्ञपति भगाय-विविध प्रकार के ऐश्वर्यों की वृद्धि के लिएयज्ञकर्ता, यजमानों को हमारे मध्य में प्रतिष्ठित कीजिए।

दिव्यो गन्धर्व: केतपू: केतं न: पुनातु- प्रकाशमान सूर्य की किरणों में स्थित पृथ्वी तथा वेदवाणी से पूर्ण समस्त दिव्य मण्डल हमारे ज्ञान एवं अन्न को पवित्र करें और—

वाचस्पति वाचं न: स्वदतु—हमारी वाणियों को वाचस्पति मधुर स्निग्ध सुकोमल अत्यन्तप्रिय बनावे जिससे सर्वत्र माधुर्यभाव प्रसारित हो।

भारत की नैय्या भंवर में—

लेखिका—डा. पुष्पावती जी आचार्य, मातृ मन्दिर
कन्या गुरुकुल वाराणसी

आज भारत के क्षितिज पर चहुं-विधि संकट के बादल छा रहे हैं, देश की नैय्या डोल रही है। सबसे अधिक चिन्तनीय विषय है कि रक्षक ही भक्षक बने हैं। आसन्न जासूसी काण्डों ने प्रमाणित कर दिया है कि देश के शीर्षस्थ पदों पर आसीन व्यक्ति भी देश प्रेम की भावना से रहित हैं। पर केवल उन्हें कोसने या चिन्ता करने से काम नहीं चलेगा। इस का कारण खोजना होगा। गहराई से विचारने पर ज्ञात होगा कि इस राष्ट्र द्रोह का बीज उनके शिक्षा काल में कान्वेंट स्कूलों में पड़ा जहां बच्चों को सिखाया जाता है कि हिन्दुस्तान पतित व गन्दे एवं चरित्रहीन लोगों का देश है इस देश में रहना प्रकार है। इंगलैंड व विदेश में बसना ठीक है। इत्यादि कन्वेन्ट के छोटे-छोटे बच्चों के मुख से ये वाक्य सुनकर कोई भी देश हितैषी माथा पीटकर रह जाता है और भारत के भविष्य पर छाई हुई इस काली छाया का मर्म आसानी से समझ सकता है।

आर्य समाज सदा से राष्ट्र सुरक्षा का सजग प्रहरी रहा है। इसने कान्वेन्ट विषैली शिक्षा की ओर से सर्वदा सावधानता बरती है। इसलिए लाखों विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, संस्कृत पाठशाला खोली। इन आर्य शिक्षणालयों से अनेक वेद के मनीषी विद्वान् व असंख्य देश भक्त स्नातक निकले जिन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में महत्व पूर्ण योगदान दिया था। आर्य समाज राजनीतिक लाभों के लिए महत्वाकांक्षी नहीं रहा। इसलिए राष्ट्रीय जागरण तथा स्वातन्त्र्य आन्दोलन में इसका योगदान मुखर नहीं हुआ, नींव की ईंट की तरह मौन व अलक्षित ही रहा। कभी 2 शहीद भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, श्याम जी कृष्ण वर्मा आदि क्रान्तिकारियों के रूप में मुखरित हुआ भी। कहना न होगा कि ये वीर आर्य समाज की ही उत्पत्ति थे। ऐसे लाखों वीरों ने स्वतन्त्रता की बलि वेदी पर अपने को होम दिया। कोई समय था जब आर्य समाज देशभक्तों का पर्याय ही समझा जाता था। प्रत्येक राष्ट्रीय संकट के समय आर्यसमाज प्राण हथेली पर रखकर आगे आया और भीषण व्याघाएं व कष्ट सह कर भी इसने राष्ट्र रक्षा की।

आज भी राष्ट्रीय संकट की इस नाजुक घड़ी में आर्य समाज ही पतवार थामे है। उग्रपन्थियों के आघातों को यही वीर केसरी अपने पर सह रहा है। उनकी चुनौतियों का मुंह तोड़ उत्तर दे रहा है, ईसाई यवनों के षड्यन्त्रों को यही ऋषि का लाडला बे-नकाब कर रहा है।

पर एक स्थान पर यह चूक कर रहा है। इतना सजग होते हुए भी आर्य समाज ने एक राष्ट्रीय शिक्षा नीति नहीं दी जिससे कम से कम इस की अपनी संस्थाएं तो एक सूत्र में बंध सकती थीं। यहां पर शिक्षा क्रम अव्यवस्थित है। कहीं सरकारी पाठ्यक्रम कम हैं, कहीं गुरुकुलों के अपने 2 पाठ्य है कहीं आर्ष पाठ विधि पर उसमें भी विविधता कहीं गुरुकुलों में भी सरकारी पाठ्य क्रम है। कहीं माडल स्कूलों का अपना ही पृथक् स्वरूप है। होना यह चाहिए था कि आर्य समाज की एक केन्द्रीय शिक्षा नीति होती। समस्त आर्य शिक्षणालयों में उसका परिपालन होता इन शिक्षणालयों की एक सामान्य वेश-भूषा होती। इस सबसे बच्चों के आर्य व्यक्तित्व का निर्माण होता। उनकी भावनाओं, रहन-सहन, विचार शैली में एकरूपता होती जिससे आर्य समाज की शक्ति केन्द्री भूत हो सकती।

केन्द्रीय शिक्षा नीति के अभाव में आज आर्य समाज का प्रभाव अपने ही शिक्षणालयों में नहीं है। और वे शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् आर्य समाज के प्रति न तो कृतज्ञता अनुभव करते हैं न इसके उद्देश्य पूर्ति की ओर प्रयासरत होते हैं।

सरकारी अनुदान का आकर्षण आर्य संस्थाओं को अपने लक्ष्य पथ पर से च्युत कर रहा है। सरकारी नियन्त्रण उनकी संजीवन शक्ति को समाप्त कर रहा है। वे अपने अध्यापकों को बच्चों में वैदिक संस्कार भरने के लिए प्रेरित नहीं कर पा रहे हैं। जब अध्यापक अपने नहीं तो बच्चों को वैदिक शिक्षा कौन दे।

दूसरी बहुत बड़ी भूल हो रही है कि आर्यजन ही अपने बच्चों को कान्वेन्ट स्कूलों में पढ़ाने को लालायित रहते हैं। बच्चों का वहां प्रवेश पा जाने पर गर्व से फूले नहीं समाते हैं और ये बच्चे वहां से जब पढ़कर निकलते हैं तो वैदिक धर्म व आर्य समाज के प्रति हेय दृष्टि अथवा उपेक्षा भाव लिए हुए आते हैं। इन सब लक्ष्यहीन शिक्षा नीतियों या शिक्षण क्रमों का परिणाम हो रहा है भावी पीढ़ी आर्य समाज में नगण्य ही रह गई है। यह कहना व्यर्थ है कि युवकों की रुचि के प्रोग्राम आर्य समाज में नहीं हैं। युवा पीढ़ी यदि आर्य समाज से प्रेम करे तो अपनी रुचि का प्रोग्राम वह स्वयं बना सकती है। प्रश्न तो है कि उन्हें विद्यार्थी जीवन में वैदिक संस्कार मिलें।

देश रक्षक आर्य समाज को इस ओर से सजग होना चाहिए। उसे सामान्य केन्द्रीय शिक्षा नीति अवश्य बनानी है। तथा अपने शिक्षणालयों का शिक्षण स्तर इतना ऊंचा व स्वच्छ बना दे कि कन्वेन्ट की चकाचौंध में आर्य व देश के जन भ्रमित न हो सकें। तभी वह देश के भविष्य को सुरक्षित रख सकेगा।

—

(3 पृष्ठ का शेष)

सम्भवत: तीन चार मास में पंजाब असैम्बली के नए चुनाव हो जाएं। राजार्य सभा अपना कोई उम्मीदवार खड़ा तो नही करेगी परन्तु हम यह तो कर सकते हैं कि जहां भी आर्य समाजी खड़े हों उन्हे समर्थन दिया जाए। कोई भी आर्य समाजी हो उसके राजनैतिक विचार चाहें कैसे हों जहां भी वह काम करता हो आर्य समाज के दृष्टिकोण को उसे नहीं भूलना चाहिए। यदि हम आने वाले चुनाव में उन्हें असैम्बली में भिजवा सकें तो इससे आर्य समाज की शक्ति और भी बढेगी। इसलिए पंजाब राजार्य सभा के संगठन को बहुत अधिक सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है इस सारी स्थिति पर विचार करने के लिए 18 अगस्त को जालन्धर में पंजाब राजार्य सभा का प्रान्तीय सम्मेलन बुलाने का निश्चय किया गया है। सब आर्य समाजों को अपने अपने प्रतिनिधि इस सम्मेलन में भेजने चाहिएं ताकि जो चुनौती आज हमें राजनैतिक क्षेत्र में मिल रही है हम सब संगठित होकर उसका सामना कर सकें। इस विषय में विस्तृत परिपत्र शीघ्र ही सब आर्य समाजों को भेज दिया जाएगा।

वीरेन्द्र

स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी द्वारा सम्मानित

आर्य विद्वत् परिषद् के संयोजक श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को उनकी 'तत्वमसि' पुस्तक पर उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी की ओर से प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी द्वारा 5000 रुपए का विशेष पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। यह समारोह मंगलवार 7 मई 1985 को तीन मूर्ति भवन में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ व मुख्यमन्त्री श्री नारायणदत्त तिवारी ने सभी विद्वानों का माल्यार्पण द्वारा सम्मान किया। पूज्यवर स्वामी जी को सरकार द्वारा सम्मानित तथा पुरस्कृत किया जाना आर्य समाज तथा वेद प्रेमियों के लिए गर्व की बात है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की आर्य समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से हम उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं तथा उनकी दीर्घायु की प्रभु से कामना करते हैं।

--धर्मपाल आर्य सभा महामन्त्री

—

आर्य समाज पीपाड़ नगर जोधपुर का वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज पीपाड़ नगर जिला जोधपुर का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री बंसीलाल जी आर्य, उपप्रधान—श्री हीरालाल जी आर्य, मन्त्री—श्री रामरखाजी आर्य उपमन्त्री—श्री पूनमचन्द जी, कोषाध्यक्ष—श्री चम्पालाल जी आर्य, प्रचार मन्त्री—श्री प्यारालाल जी, उपप्रचार मन्त्री—श्री कस्तुरचन्द, पुस्तकाध्यक्ष—श्री जुगराज जी, सहायक पुस्तकाध्यक्ष—श्री जवरीलाल जी अध्यापक, श्री हंसराज जी आर्य अध्यापक, लेखा निरीक्षक-श्री भंवरलाल जी,

---मन्त्री

मानवता की रक्षा के लिए दिव्य शासन स्थापित करो

ले.—श्री शिवराज जी शास्त्री ,एम. ए. मौलवी फाजिल

ओ३म् न किर्देवा मिनीमसि नकिरायो पयामसि । मन्त्र श्रुत्यं चरामसि । पक्षेभिरपि कक्षेभि सं रभामहे ।

ऋग्वेद 10-130-7

परम पिता परमात्मा ने सभी मनुष्यों को एक जैसा शरीर एक जैसे से हाथ पांव एक सी आंखें, एक सी अन्य सभी इन्द्रियां, मन, बुद्धि प्रदान करके संसार में भेजा है। सबको देखकर कोई भी यह नहीं कह सकता कि इसका रचने वाला कोई नहीं है। ऐसा लगता है जैसे एक पिता अपनी सन्तान को अपनी सम्पत्ति बराबर बराबर बांट देता है किसी को कम किसी को अधिक नहीं देता। इसी प्रकार वह परम पिता परमात्मा ही सबका पिता है बेद ने इसीलिए कहा है--

त्वं हि न: पिता वसो त्व माता शतक्रतोवभूविथ ।

समस्त संसार के प्राणीमात्र का माता पिता केवल मात्र सर्वशक्तिमान न्यायकारी दयालु परमात्मा है।

वह कभी अन्याय नहीं करता सबको समान रूप से सब प्रकार की सुविधाएं सुख के साधन व उत्तम उत्तम पदार्थ प्रदान करता है। मनुष्य जीवन में जीवों को स्वतन्त्रता प्रदान करता है। मनुष्य देव मार्ग भी अपना सकता है और मानवी मार्ग भी खुला हुआ है। वह स्वयं को राम भी बना सकता है चाहे तो वह रावण का रूप भी धारण कर सकता है। कृष्ण भी वह बन सकता हैं कंस भी बन सकता है।

मनुष्य ने अपनी अपनी प्रवृत्तियों के अनुसार स्वेच्छा से अपने अपने जीवन के मार्ग बनाए हैं। वेद के उपरोक्त मन्त्र में प्रभु मनुष्य से जो अपेक्षा करते हैं वह जीव के लिए कल्याण का मार्ग है उस देवी मार्ग का सुन्दर वर्णन किया है :--

(न कि: देवा) देव मार्ग के पथिक न तो (मिनीमसि) कभी किसी की हिंसा करते हैं न किसी को हानि पहुंचा कर अपना शासन स्थापित करते हैं। (न कि आयोपयामसि) नहीं लोगों में फूट वैर-ऊंच-नीच का भाव उत्पन्न कर अपना वर्चस्व स्थापित करते हैं। वे तो (मन्त्र श्रुत्यं चरामसि) वेद भगवान् के विश्व स्थित मन्त्रों व उनके आधार पर ऋषि-मुनियों के श्रुत ज्ञान के आधार पर बताए सत्य मार्ग पर चलते व सबको चलाते हैं।

उनका कभी किसी से वैर-विरोध नहीं होता वे राग-द्वेष से सर्वथा दूर रहकर (कक्षेभिरपि पक्षेभि सं रभामहे) अपने से छोटे से छोटे मनुष्य व प्राणीमात्र के प्रति भी दया, समता व सद्‌व्यवहार का पालन करते हैं जिससे मानव मात्र का कल्याण हो किसी को दु:ख अभाव अन्याय न सताएं। संसार आज हिंसा व राजनीतिज्ञों द्वारा पैदा की गई फूट के महारोग से पीड़ित है। भारत वर्ष का इतिहास बताता है कि भारत में ही प्रभु की कल्याणी वाणी वेद का प्रादुर्भाव हुआ था। यहीं से ऋषियों-मुनियों ने दैवी मार्ग का प्रचार प्रसार किया था। संसार इसीलिए भारत को अपना गुरु मानता था। भारत माता के दिव्य स्वरूप का दर्शन हमें वेद की इस ऋचा में मिलता है।

यत्र विश्वं भवत्येक नीडं

वैदिक संस्कृति का मार्ग ऐसा है जहां सारा संसार अपने वैर-विरोध को दूर करके शान्ति व सुख का आश्रय पा सकता है। लाखों- करोड़ों वर्ष तक संसार में सुख शान्ति का साम्राज्य रहा। परन्तु महाभारत काल की घोर हिंसा पारस्परिक राग-द्वेष ने भारत को भी सर्वनाश के पथ पर डाल दिया। फिर तो क्षुद्राशय, लोभी स्वार्थी, धर्म गुरुओं की चढ़ बनी : अपनी-अपनी डफली अपना अपना राग अलापने वालों ने वैदिक धर्म के स्थान पर भारत वर्ष को मिथ्या मत-मतान्तरों का चिड़ियाघर बना डाला : देश की एकता अखण्डता नष्ट-भ्रष्ट हो गई है। देश-विदेशों के हिंसक अत्याचारी आक्रमणों का सैंकड़ों वर्ष शिकार रहा। भारत भूमि रक्त से स्नान करने लगी। विदेशी छोटी-छोटी सेनाएं लेकर हमें दिन-रात लूटते व हमारे देश को दास बनाते रहे। हमारे धन-लोलुप स्वार्थ जीवी बन्धुओं को उनके पवित्र धर्म से पृथक् करके उन्हें अपने हिंसक व राग-द्वेष प्रधान सम्प्रदायों का सदस्य बना लिया। भारत की करोड़ों हिन्दू आर्येतर प्रजा विदेशी नहीं, यह भी आर्यों की ही सन्तान है जो हमारे सामाजिक दोषों, हमारे धार्मिक झमेलों से तंग आकर आज वह अनेक सम्प्रदायों के रूप में भारत में बसे हुए हैं। अंग्रेजी शासन इन्हीं कमजोरियों के कारण भारत में अपने पैर जमा सका। यहां भी डेढ़ सौ वर्ष तक उसकी शासन पद्धति का आधार हिंसा व पारस्परिक राग-द्वेष उत्पन्न करना रहा, इतिहास की घटनाएं साक्षी हैं कि इस प्रकार का शासन कभी प्रजा को सुख शान्ति नहीं पहुंचा सकता। महर्षि दयानन्द ने इसीलिए विदेशी शासन को पक्षपात पूर्ण व देश के लिए हानिकारक बताया और उन्हें वेद के दैवीय मार्ग को श्रेयस्कर बताया। वेद मार्ग पर उन्होंने समाज शास्त्र व शासन-तन्त्र पद्धति की संरचना की। प्राचीन ऋषि-महर्षियों के ग्रन्थों के आधार समस्त मानव समाज के लिए शुद्ध सात्विक व व्यवहारिक आचार संहिता निर्माण की। उस आचार संहिता के आधार पर महर्षि मानवों में कोई ईश्वर का सच्चा व दिव्य पुत्र बनाना चाहते थे। दैवीय पुत्र बनने के लिए मानव को प्रभु प्राप्ति व प्रभु आज्ञानुसार जीवन व्यतीत करने का उपदेश किया। मनुष्य दैवीय शासन की स्थापना करके ही पृथ्वी पर वर्तमान अशान्ति, हिंसा, राग-द्वेष, भ्रष्टाचार व अत्याचार आदि आसुरी प्रवृत्तियों को रोकने का साहस कर सकता है। इसीलिए भारत के महान् नेता लाला लाजपत-राय जी ने महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित संस्था आर्य समाज के सम्बन्ध में लिखा—

आर्य समाज ही मेरी माता है।

स्वतन्त्रता संग्राम के सभी नेताओं, महात्मा गांधी, पं, जवाहरलाल नेहरू, नेता जी सुभाषचन्द्र बोस, सरदार बल्लभ भाई पटेल आदि ने महर्षि दयानन्द के पद्‌चिन्हों पर स्वयं चलकर देश को सन्देश दिया कि भारत का कल्याण उसी मार्ग से हो सकता है। जिस मार्ग को महर्षि दयानन्द ने बतलाया है।

महर्षि का अपना जीवन इन्हीं दिव्य गुणों से ओत-प्रोत था। वे अहिंसा के अवतार थे अपने विष देने वालों की भी प्राण रक्षा कर उन्होंने अहिंसा का कीर्तिमान स्थापित किया। उनके हृदय में किसी के लिए राग-द्वेष नहीं था। उनके भक्तों में हिन्दू, मुसलमान: सिख, ईसाई अंग्रेज, अमेरिकन सभी थे वे उन्हें अपना पथ-प्रदर्शक मानते थे। इस्लाम को ज्ञान का नूतन मार्ग दिखाने वाले सर-सैय्यद अहमद ने उनकी मृत्यु पर कहा-आज मेरा पथ-प्रदर्शक संसार से विदा हो गया। महर्षि ने जहां धनवानों को सन्मार्ग दिखाया वहां वे देश की निर्धनता, दरिद्रता, देश के ऊंच-नीच भावों से पीड़ित अस्पृश्यों, उपेक्षितों के कल्याण के लिए भी पूरी लगन से प्रयत्नशील रहे। उन का बनाया आर्य समाज उन्हीं के बताए सन्मार्ग पर दैवीय भावनाओं के प्रचार-प्रसार में संलग्न तथा देश की हर समस्या पर कर्तव्यरत बनकर सेवा करता रहा है। (शेष पृष्ठ 7 पर)

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना में शपथ ग्रहण समारोह

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में 21-7-85 रविवार को सत्संग मध्य नव निर्वाचित आर्य समाज के अधिकारियों तथा अन्तरंग सदस्यों द्वारा आर्य समाज का कार्य करने की शपथ ग्रहण की जाएगी। आर्य समाज के एक उच्चकोटि के विद्वान् उन्हें शपथ ग्रहण कराएगें ताकि वह अपने दायित्व को वर्ष भर भली भान्ति निभा सकें।

गत रविवार 14-7-85 को इस समाज का वार्षिक निर्वाचिन आर्य समाज मन्दिर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री ब्रह्मदत्त शर्मा जी की देख रेख में तथा श्री देशराज जी मेहता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

बहुमत से 1985-86 के लिए प्रधान श्री नवनीत लाल जी आर्य को निर्वाचित किया गया तथा साधारण सभा ने अन्य सभी पदाधिकारियों के मनोनीत करने का उन्हें सर्वसम्मति से अधिकार दिया। प्रधान जी ने निम्न प्रकार अधिकारियों की घोषणा की।

संरक्षक—सर्व श्री ज्ञानचन्द जी, रामजीदास, प्रवीण गर्ग एडवोकेट, प्रधान श्री नवनीत लाल आर्य, सीनियर उपप्रधान-श्री ज्ञानी गुरदियाल सिंह आर्य, उपप्रधान सर्व श्री हरभगवान जी पाहवा, मदनमोहन चड्ढा, दुनीचन्द आर्य यशपाल आर्य। मन्त्री—श्री बलदेव राज सेठी, सीनियर उपमन्त्री श्री गोकल लाल शर्मा, उपमन्त्री सर्वश्री महेन्द्रप्रताप आर्य सुरेन्द्र कुमार, सुधीर भाटिया सुरेश चड्ढा कोषाध्यक्ष—श्री श्रवण कुमार जी, उप कोषाध्यक्ष श्री रामजीवनदास सूद पुस्तकाध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द जी वर्मा तथा श्री भगत मोहर, अधिष्ठाता आर्य वीर दल—श्री मलवास चन्द जी। अन्तरंग सदस्य—सर्व श्री दीवान राजेन्द्र कुमार, रणवीर भाटिया नरेन्द्र भल्ला, कुलदीप आर्य' विलायती राम, सीताराम कलसी एडवोकेट, कर्म चन्द चोपड़ा देवराज जी। आडीटर—श्री भीमसेन थापर, मैनेजर हस्पताल श्री नरेन्द्र भल्ला, यज्ञाध्यक्ष—श्री कुलदीप आर्य, शेष समितियां बाद में घोषित की जाएगीं।

यह सभी अधिकारी 21-7-85 को आर्य समाज में शपथ ग्रहण करेंगे।

—बलदेव राज सेठी मन्त्री

"एक तड़प"

ले.—श्री पृथ्वी राज जिज्ञासु दीनानगर

आज आर्य नेताओं सभासदों एवम् उपदेशकों से यही सुनने को मिलता है कि आर्य समाज के प्रचार में शिथिलता आ गई है, नवयुवक समाजों में नहीं आते। आखिर इसका कारण क्या है? क्या लोग आर्य समाज की विचार-धारा को पसंद नहीं करते अथवा हममें कोई कमजोरी है जिसके कारण हम लोगों को आकर्षित नहीं कर पा रहे। आर्य समाज एक क्रान्तिकारी संस्था है, लोगों के हृदयों में इसके प्रति आकर्षण न हो यह बात गलत है। वास्तविकता यह है कि हम ही ऋषि मिशन को जनता तक पहुंचाने का यत्न नहीं कर रहे। ऋषि दयानन्द सरस्वती ने हमारे सम्मुख कुछ कार्य रखे थे, जिनका घर-घर में प्रचार करना हमारा कर्तव्य था। आज उस कार्य क्रम से पीछे हट कर हम ऊल-जलूल कार्मों में उलझ कर अपनी शक्ति को गंवा रहे हैं। कोई भी संस्था जब मूल चिन्तन धारा से कट जाता है तो उसमें शिथिलता का आना स्वाभाविक हो जाता है। कौन से कार्य थे जो ऋषि हमारे जिम्मे लगा गए थे। क्या हमने कभी उन पर विचार किया है। आज राधा-स्वामी ब्रह्म कुमारी आदि मत बढ़ रहे हैं तो क्यों वे लोग अपने सिद्धान्तों को जनता के जहन में उतारने के लिए यत्न रत रहते हैं। यदि वे मत फैल सकते हैं तो आर्य समाज का प्रचार क्यों अवरुद्ध हो गया है। यह विचारणीय विषय है। ऋषि ने हमारे सामने निम्नलिखित कार्यक्रम रखे थे।

1. त्रैतवाद का प्रचार-
2, वर्णाश्रम व्यवस्था की स्थापना
3. हिन्दी भाषा को जन-जन तक पहुंचाना।
4. गो रक्षा तथा गो पालन
5, शुद्धि
6. इतिहास परिशोधन
7. वैदिक शिक्षा पद्धति का विकास
8. जातीयता उन्मूलन।
9, राष्ट्र एवम् राष्ट्रीय संस्कृति की रक्षा के लिए कटिबद्धता।
10, स्वकीय राज्य व्यवस्था।

क्या हम ऋषि के उपरोक्त कार्यों को कर रहे हैं। क्या हमने वर्णाश्रम व्यवस्था को अपनाया है नहीं। क्या हम हिन्दी को अपना रहे हैं अथवा विदेशी भाषा अंग्रेजी का प्रचार कर रहे हैं। उत्तर होगा अंग्रेजी का। क्या शुद्धि के लिए हमारे हृदयों में कोई तड़प है। नहीं क्या हमने इस देश के इतिहास को शुद्ध करने के विषय में कभी सोचा! क्या हमने कभी सोचा कि जो इतिहास हमारे बच्चों को पढ़ाया जा रहा है, वह हमारे बच्चों को आर्यत्व से विमुख नहीं कर देता। गो माता की जय का नारा तो हम बड़े ऊंचे स्वर में लगाते हैं, परन्तु कभी हमने गोपालन की ओर ध्यान दिया नहीं। जातीयता का उन्मूलन करना तो दूर रहा आज हम स्वयम् जातीयता की दल दल में बुरी तरह से फंसे हुए हैं। शिक्षा के सम्बन्ध में तो हम बुरी तरह से उपहास का विषय बन रहे हैं। उसका अनुभव मुझे तलवाड़ा जिला होशियारपुर में बुसे डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल से हुआ। वहां नर्सरी कक्षा के विद्यार्थी से दाखिला के समय 1100 रु. लिए जाते हैं। क्या ऋषि हमें यह कहते थे कि शिक्षा केवल धनाढ्य वर्ग के लिए ही सुरक्षित रखी जाए? नहीं ऋषि का उद्देश्य यह नहीं था। वह तो राजा एवम् रंक के लिए समान शिक्षा के पक्ष-पाती थे।

अमल से ही बनते है, जन्नत भी
जहन्नुम भी
खाकी अपनी फितरत से नूरी है न
नूरा है।

हमें अपनी ओर झांकना चाहिए। यदि हम अपने जीवनों एवम् क्रिया-कलापों को आर्यत्व के सांचे में ढाल लेंगे तो कोई कारण नहीं कि आर्य समाज के सत्संग भवन लबा-लब न भर जाएं। आज देश की परिस्थितियों को देखते हुए ऋषि-मिशन के प्रचार की महती आवश्यकता है। अत: हमारा यह परम कर्त्तव्य बन जाता है कि हम ऋषि मिशन की वीणा को उच्च स्वर में बजाएं अपने जीवनों में सुधार लाएं तथा सच्ची लग्न के साथ ऋषि के संदेश को अपने जीवन में उतार लें तभी हम लोगों में उसका प्रचार कर पाएंगे अन्यथा किसी शायर के शब्दों में यही कहा जाएगा।

खुदा के बन्दों को देख कर,
खुदा से मुनकिर हुई है दुनियां,
जिस खुदा के हैं बन्दे,
वह कोई अच्छा खुदा नहीं।

आओ आज ही हम संकल्प लें कि ऋषि की इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य नहीं करेंगे। उसी के अनुसार ही हम अपना जीवन बनाएंगे। तो फिर हम घर-घर में आर्य समाज का प्रचार करने में सफल होंगे। और ऋषि के सपनों का भारत निर्मित होने में कोई देर नहीं लगेगी। ऋषि के शब्द भारत पारस मणी है, इसे छूते ही विदेशी धनवान हो जाते हैं साकार हो सकेंगे।

—

हम दयानन्द के दीवाने

रचयिता—श्री हरिशचन्द्र शर्मा दाहोद (गुजरात)

हम रुकना झुकना क्या जाने।
हम बढ़ते हैं सीना ताने॥

हम सैनिक वीर शहीदों के।
पर हित में जिनके शीश कटे॥

हम दयानन्द के दीवाने...

जो गया राज में नेहरु के।
हम वीर हैं वीर सुमेरू के॥

हम वेद ज्योति के परवाने...

हम हंस हंस के दुःख झेलेंगे।
सर्वस्व धर्म पर दे देंगे॥

ये लेखराम से मस्ताने...

हम कर्म वचन के सच्चे हैं।
हम धुन के पक्के हैं।

सब दुनियां ही हम को जाने...

दुःख आता है तो आने।
सुख जाता है तो जाने दो॥

हम वीर हैं डरना क्या जाने।
हम रुकना झुकना क्या जानें...

शोक प्रस्ताव

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की यह शोक सभा एटलांटिक समुद्र के एयर इण्डिया जंबोजेट वायुयान दुर्घटना में 329 यात्रियों के मारे जाने पर गहन शोक प्रकट करती है। विश्वविद्यालय यह अनुभव करता है कि यह भीषण एवं हृदय विदारक दुर्घटना एक राष्ट्रीय क्षति के रूप में हम सब के सम्मुख है। दुर्घटना में मारे गए इन यात्रियों से पूरे राष्ट्र को एक गम्भीर क्षति हुई है। शोक के इस संतप्त वातावरण में विश्वविद्यालय की यह सभा ईश्वर से प्रार्थना करती है कि मृत व्यक्तियों के परिवारों को इस गहन दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करे। यह सभा सरकार से मांग करती है कि इस भीषण दुर्घटना के कारणों की सूक्ष्मता से जांच की जाए तथा यह सुनिश्चित किया जाए कि कहीं दुर्घटना में विघटनकारी शक्तियों का तो हाथ नहीं है।

विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारी
एवं
कर्मचारी

गुरुकुल करतारपुर का उत्सव

गुरु विरजानन्द ट्रस्ट संस्कृत महाविद्यालय (गुरुकुल करतारपुर) का वार्षिकोत्सव 6 से 13 अक्तूबर 1985 को होना निश्चित हुआ है। पंजाब की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से मेरी प्रार्थना है कि इन तिथियों में अपनी आर्य समाजों के उत्सव न रखें और सभी आर्य बन्धु इस उत्सव में पधार कर गुरुकुल को अपना सहयोग दें।

इस उत्सव में उच्चकोटि के बड़े-बड़े विद्वान्, तपस्वी, महात्मा पधार रहे हैं। गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी यह उत्सव बड़े उत्साह से मनाया जा रहा है।

चतुर्भुज मितल
मन्त्री

(5 पृष्ठ का शेष)

आज के राजनीतिज्ञों को भी अपनी कमियों, कमजोरियों का आत्म निरीक्षण कर देश के कल्याणकारी महर्षि दयानन्द व राष्ट्र पिता महात्मा गान्धी के बताए सत्य अहिंसा के मार्ग पर चलकर देश में सुशासन सुराज्य व सुव्यवस्था स्थापित करने का प्रयत्न करना चाहिए तभी देश की सभी जटिल एवं भयावह समस्याओं का समाधान हो सकेगा।

=

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा शोक प्रस्ताव पारित

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपनी 7 7-85 की अन्तरंग सभा मे अपने अधिवेशन मे देश के प्रसिद्ध आर्य नेता व उद्योगपति श्री लाला हंसराज जी गुप्ता के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया लाला जी सभा के स्तम्भो मे गिने जाते थे। इसी के साथ आर्य समाज के अद्वितीय कर्मठ नेता चौ बलबीर सिंह जी अध्यक्ष डी, ए वी कालेज कमेटी होशियारपुर अमृतसर के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री ओम-प्रकाश वैद्य, जालन्धर की महान् कर्मठ कार्यकर्त्री श्रीमती लक्ष्मीदेवी सौधी जो जालन्धर की महिला जागृति की कर्णधार रही। उनके निधन पर शोक प्रदर्शित किया गया तथा दिवगत आत्माओ की सद्गति व शोक सन्तप्त परिवारो से सम्वेदना प्रकट की गई।

—

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर में शोक प्रस्ताव

श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आदेशानुसार दिनाक 30 6 85 को रविवार सत्संग के पश्चात् एयर इण्डिया के जैम्बो जैट के आकाश मे उग्रवादियो व आतंकवादियो द्वारा किए गए विस्फोट मे मरने वालों के परिवारो मे एक प्रस्ताव द्वारा सहानुभूति प्रकट की गई। दिवगत आत्माओं की शान्ति हेतु तीन बार सामूहिक गायत्री मन्त्र का पाठ किया।

—वीरेन्द्र देवगण मन्त्री

शोक प्रस्ताव

श्रीमती माता लक्ष्मीदेवी जी सौधी की मृत्यु पर आर्य समाज शहीद भगत-सिंह नगर गहरा दुःख प्रकट करता है, माता जी का सारा जीवन आर्य समाज के ही अर्पण था माता जी काफी समय स्त्री आर्य समाज अड्डा होशियारपुर की प्रधाना रही हैं मैं जब आर्य समाज अड्डा होशियारपुर का मन्त्री था तो आर्यसमाज में हर कार्य पर हमारे साथ बड़ी गम्भीरता तथा प्यार से बात करती थी।

—मुलखराज आर्य प्रधान

—

शोक समाचार

आर्य समाज सनौर जिला पटियाला के भूतपूर्व प्रधान श्री गोरालाल जिन्दल का अकस्मात् 19-6-85 को निधन हो गया।

श्री गोरा लाल जिन्दल कई वर्षों तक आर्य समाज की सेवा प्रधान के रूप मे करते रहे। वो एक सादा जीवन व्यतीत करते थे तथा बच्चो से बहुत प्यार करते थे स्वर्गवास होने के समय वे आर्य समाज सनौर के उपप्रधान के पद पर थे। आर्य मर्यादा का पालन सारा परिवार करता है उनका अन्तिम शोक दिवस 30-6-85 को मनाया गया।

--राजेन्द्र वर्मा

—

शोक समाचार

पटियाला आर्य समाज चौक की मन्त्राणी कैलाश रानी की मृत्यु चिरकाल तक बिमार रहने के कारण गत दिनों हो गई उनकी आयु केवल 54 वर्ष की थी। उनका अभाव आर्य समाज में सदा खटकता रहेगा। परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—सत्यवती चोपड़ा प्रधाना

शोक समाचार

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना ने 2-7-85 का एक प्रस्ताव द्वारा कनिष्क वायुयान की भीषण दुर्घटना मे मृत 329 यात्रियो के प्रति शोक सम्वेदना प्रकट की। परम पिता परमात्मा मानव जाति के इस प्रकार के घोर विनाश से रक्षा करे ऐसी प्रार्थना की गई।

--निर्मला बेरी मन्त्राणी

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से [illegible] आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि [illegible] के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन नं. 74250 · रजि. नं. पा. ज. एल. 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 16, 13 श्रावण सम्वत् 2042, तदनुसार 28 जुलाई 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रु.)

आत्मा का दीपक-बुद्धि

ले.—श्री सुरेश चन्द्र वेदालंकार एम. ए.

आत्मानं ते मनसारादवजानामवो दिवा पतयन्तं पतङ्गम् ।
शिरो अपश्यं पथिभिः सुगेभिररेणुभिर्जेहमानं पतत्रि ॥

ऋ0 1-163-6

हे विद्वन्! (ते) तेरे (आत्मानं) आत्मा को (मनसा) विज्ञान द्वारा (आरात्) दूर या समीप से (अजानाम्) जान गया हूं, वैसे ही तू भी मेरे आत्मा को जान। तेरे (अवः) प्रीतियुक्त स्वभाव (पतत्रि) उत्थान और पतन या उन्नति और अवनति के स्वभाव तथा (शिरः) आश्रय को मैं जानता हूं, तू मेरे इन सब को जान। (सुगेभिः) सरल, सीधे (अरेणुभिः) धूलिरहित, साफ सुथरे (पथिभिः) मार्गों से (पतयन्तम्) आने वाले (दिवा) द्युलोक में, अन्तरिक्ष में (जेहमानम्) यत्न करने वाले (पतङ्गम्) सूर्य तुल्य जीवात्मा को (अपश्यम्) मैं देखूं।

वेद में जीवात्मा के विषय में कहा गया है कि यह अनेक मार्गों द्वारा शरीर में आता है और शरीर से पृथक होता है। वह अविनाशी है और वह इन्द्रियों का रक्षक है अर्थात् जब तक वह रहता है तब तक ही ये इन्द्रियां, इन्द्रियां हैं और अपना देखना, सुनना, बोलना, चखना, सूंघना, चलना, काम करना, स्पर्श करना, मूत्र और शौचादि करना रूप-क्रियाएं करती हैं और इसके चले जाने पर शरीर की इन्द्रियों का कोई मूल्य नहीं रहता। जब यह शरीर से चला जाता है तब शरीर तो नष्ट हो जाता है पर जीवात्मा उस समय भी बचा रहता है। यह अनादि है, परमात्मा व्यापक है, यह व्यापक नहीं, विभु नहीं। इसे पतंग शब्द से भी वेद में पुकारा गया है। पतंग का अर्थ है गति द्वारा स्थानान्तर में जाने वाला। सर्वव्यापक वस्तु में गति नहीं होती। गति के लिए स्थान की जरूरत है, खाली स्थान होने पर ही गति सम्भव है। इस जीवात्मा को अक्तम् भी वेद में कहा गया है। अक्तम् का अर्थ है जो शरीर के सम्बन्ध से प्रकाशित हो अर्थात् शरीर में न रहने पर आत्मा के स्वरूप को हम समझ नहीं सकते— जान नहीं सकते। इसे 'मरीचीकी पदम्', अर्थात् जिस प्रकार सूर्य एक जगह पर रहता हुआ सारे विश्व को अपनी किरणों से आलोकित करता रहता है, वैसे यह भी शरीर में किसी एक स्थान पर रहता हुआ शरीर को चेतना देता रहता है। इसी कारण जीवात्मा और सूर्य के बहुत से नाम भी समान हैं।

जीवात्मा के गुणों का वर्णन करते हुए वेद के एक मन्त्र में कहा गया है—

अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा
च पथिभिश्चरन्तम्।
स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ
वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः॥

—ऋ0 1-164-31

(आ च परा च) आने और जाने के (पथिभिश्चरन्तम्) मार्गों के द्वारा भ्रमण करने वाले (अनिपद्यमानम्) अविनाशी (गोंपां) रक्षक को—इन्द्रियस्वामी को (अपश्यं) मैंने देखा है। (सः) वह (सध्रीची) शरीर के साथ भी चलने वाला है और (विषूचीः) अलग होकर भी चलने वाला है, (वसान) वह प्रेम का निवास (भुवनेषु अन्तः) भुवनों के अन्दर (आ वरीवर्ति) बारम्बार आता है अथवा (सः सध्रीचीः विषूचीः वसानः) वह सीधी और टेढ़ी चालें चलता अर्थात् पुण्य-पाप करता हुआ (भुवनेषु अन्तः आ वरीवर्ति) संसार में पुनः पुनः लौटता है— जन्म-मरण के वश में होता है।

इस प्रकार वेद में आत्मा के गुणों का वर्णन किया गया है। इस मन्त्र में बताया गया है कि आत्मा को ज्ञान के द्वारा जानना चाहिए। जो व्यक्ति आत्मा को जान लेता है, इसकी वास्तविकता को समझ जाता है वह इसे सन्मार्ग की ओर ले जाने का प्रयास करता है, वह संसार मे किसी से डरता नहीं— अन्याय के आगे झुकता नहीं—प्रलोभन उसे मार्ग से विचलित नहीं कर सकता।

याद रखिए आत्मा को प्राप्त करने के लिए, उसे समझने के लिए ईश्वर ने प्रत्येक मनुष्य को बुद्धि का दीपक दिया है। इसलिए ईश्वर के प्रति हमारा कर्तव्य है कि हम अपने जीवन का उपयोग बुद्धिमतापूर्वक करें, उसे बुद्धिमतापूर्वक चलाएं। प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर उस के लिए आवश्यक बुद्धि देता है परन्तु हम बुद्धि का पूरा उपयोग नहीं करते। यदि जीवन में हम बुद्धि का वास्तव में उपयोग करेंगे तो हमें आत्मा को उत्थान की ओर ले जाने और पतन से बचाने का मार्ग पता चल जाएगा। हमें अपने खान-पान में बुद्धि का उपयोग करना चाहिए। हमें अपने धन का खर्च, अपने शब्दबल का प्रयोग इस प्रकार करना चाहिए कि लोगों में आशा और बल, उत्साह और आत्मविश्वास आ सके। बुद्धि आत्मा का दीपक है, इस दीपक का प्रकाश धुंधला न होने दें न इस प्रकाश की परिधि से दूर जाएं। इससे आपको आत्मा का वास्तविक स्वरूप समझने और उसे समझकर आत्मा को सन्मार्ग पर ले जाने में सहयोग मिलेगा।

आत्मा के वास्तविक स्वरूप को जानने वाले को अपूर्व शक्ति प्राप्त हो जाती है। संसार की सरकारें मनुष्य के लिए डरावनी वस्तुएं मानी जाती हैं संसार में बहुत से राज्यों द्वारा मनुष्यों पर किए गए अत्याचारों से मनुष्य भयभीत हो जाता है, परन्तु आत्म पथ के यात्री को कौन सता सकता है?

स्वामी दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन आत्म शक्ति के देदीप्यमान दीपक हैं। वे ओर देकर अत्याचारियों से, विरोधियों से कहते थे, 'हे विरोधियो'! तुम इससे ज्यादा मेरा और कुछ नहीं कर सकते, चाहे तुम अपने पूरे साज और सामान के साथ मुझ पर आओ, चाहे अपनी सुसज्जित डरावनी चतुरंगिणी फौज के साथ मुझ अकेले पर आक्रमण करो, चाहे अपनी भुवनों को कंपाने वाली गड़गड़ाहट के साथ मुझ पर चढ़ आओ, परन्तु तुम मृत्यु को ही क्लेश की पराकाष्ठा समझकर मुझे मृत्यु दण्ड देने मार सकनेके सिवाय कुछ नहीं करसकते हो। मैं तो फिर जन्म धारण कर सत्य का प्रकाश फैलाऊंगा—बुद्धि को ठीक जंचने वाले कार्य करूंगा।

आत्मज्ञ मौत को ललकार कर कहते हैं -हे मौत! तू विकराल 'काल' कहलाती है। लोग कहते हैं कि तू बड़ी डरावनी है, तेरा नाम सुनते ही दिल कांप उठते हैं। बड़े बड़े लोग मौत के आने पर छटपटाते मर गए। उनकी कुछ न बन पड़ी। किन्तु हे प्यारी मौत! यह सब झूठ है। यदि तू ऐसी ही होती तो फांसी का हुक्म सुनने के बाद भी रामप्रसाद बिस्मिल के चेहरे पर विषाद की छाया क्यों न आती? गोली खाने के बाद भी स्वामी श्रद्धानन्द का चेहरा और भावनाएं क्यों न मलिन हो जाती, लेखराम रेल से कूदकर अपने कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए क्यों बढ़ते चले आते? स्वामी दयानन्द का मुख विष-पान करके भी मरते समय भी दिव्य आनन्द से प्रफुल्लित क्यों देखा जाता?

जिस समय यह बुद्धि अपने प्रकाश से आत्मा के वास्तविक स्वरूप का दर्शन करा देती ?, जो आत्मा के 'पतत्रि' उत्थान या पतन या उन्नति और अवनति स्वभाव को समझ लेते हैं वे ही लोग दुनिया मे महान् कार्य कर जाते है, उन्हें हम महान् आत्मा कहते हैं और उन्हीं महान् आत्माओं के पुण्य प्रताप से ही हम तरह-तरह के सुख भोग रहे हैं बिना तकलीफ के [illegible] मे सैंकड़ों मील चले जाते है. [illegible] की हवा खा लेते हैं, चन्द्रमा [illegible] से रौंद देते हैं,

[illegible] 6 पर)

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला

आर्य समाज- उपलब्धियां, सीमाएं और अपेक्षाएं दयानन्द सरस्वती के विचार—समय की कसौटी पर

ले.—डा. भवानीलाल जी भारतीय आचार्य व अध्यक्ष दयानन्द चेयर पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

*

(12 जुलाई से आगे)

1. हमें अपने साप्ताहिक और वार्षिक अधिवेशनों को अधिक रोचक, उपयोगी तथा लोकप्रिय बनाना होगा।

2. आर्य समाज मन्दिरों को स्वच्छ, सुन्दर, आकर्षक तथा रम्य बनाना चाहिए ताकि वहां जाने मात्र से ही लोगों में धर्म एवं आध्यात्मिकता के उच्च भाव जागृत हो सकें।

3. आर्य समाज के वानप्रस्थ एवं संन्यासी वर्ग को संगठित कर सेवा कार्य में नियोजित किया जाए।

4. वैचारिक क्रान्ति के लिए स्तरीय साहित्य का प्रकाशन हो तथा शोध संस्थाओं के द्वारा दयानन्द के विचारों तथा उनके क्रान्तिकारी दर्शन पर अनुसन्धान कार्य कराये जाएं।

5, युवा शक्ति को आर्य समाज की ओर आकृष्ट करने के लिए तदनुरूप कार्यक्रम आयोजित किये जाएं। एतदर्थ आर्य कुमार सम्मेलन के आन्दोलन को पुनरुज्जीवित करना तथा उसी के माध्यम से धार्मिक परीक्षाओं का संचालन किया जाना चाहिए।

6, यज्ञों, संस्कारों और पर्वों को पूर्ण शालीनता तथा शास्त्रीय विधि के अनुसार सम्पन्न करना चाहिए ताकि उसका प्रभाव दर्शक वर्ग पर भी पड़े।

उपर्युक्त पंक्तियों में हमने आर्य समाज के अतीत और वर्तमान की ओर देखने का प्रयास तो किया ही है, साथ ही उसके भविष्य के लिए कुछ समयोचित सुझाव भी दिए हैं। इन्हें समुचित विचार के पश्चात् क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्त—समय की कसौटी पर

किसी भी महापुरुष के विचारों का उसके जीवन-यापन की प्रणाली शिक्षा संस्कार तथा उसके मानस पर पड़े प्रभावों की पृष्ठ भूमि में किया जाना ही समीचीन होता है। इस दृष्टि से दयानन्द जैसे युग पुरुष एवं विश्व मानव की विचार सम्पत्ति की विवेचना आरम्भ करने से पूर्व यह ध्यान रखना होगा कि उन्होंने अपने जीवन का बहुतांश भाग एक संन्यासी के रूप में जो व्यतीत किया था सामाजिक मोह-जालों से सर्वथा मुक्त होकर निर्द्वन्द्व भाव से विचरने में ही अपने जीवन की सार्थकता नहीं समझ बैठा हो किन्तु जो समष्टि हित तथा समस्त प्राणि वर्ग के मंगल विधान के लिए ही पदे-पदे चिन्तित रहता है, व्याकुलता प्रकट करता है। तथा अशेष जन समाज की पीड़ा, दुःख एवं कष्टों के निवारण के लिए सतत प्रयत्नशील भी रहता है।

दयानन्द सरस्वती का जन्म भारत के एक ऐसे ब्राह्मण परिवार में हुआ था जो अपनी धार्मिक आस्थाओं एव सामाजिक विधि-विधानों की परम्परानुमोदित व्यवस्थाओं के कठोरता पूर्वक पालन में ही अपने कर्त्तव्यों की इति श्री समझता था। उनका शैशवकालीन पालन पोषण तथा प्रारम्भिक शिक्षा भी परम्परागत ढंग से हुई जिसमें साम्प्रदायिक विश्वासों को यथावत् ग्रहण करने तथा उपासना के रूढिबद्ध इति कर्त्तव्यों के कड़ाई से पालन पर ही निरन्तर जोर दिया जाता था। तथापि इसे चमत्कार ही कहा जाएगा कि मध्यकालीन धर्म एवं आस्थाओं के जटिल संकुचित वातावरण में जन्म लेकर व पलकर भी दयानन्द सरस्वती इन्हीं क्षेत्रों में सर्वाधिक क्रान्तिकारी तथा प्रबुद्ध चिन्तन को उत्पन्न करने में सफल हो सके।

दयानन्द का जन्म उस युग में हुआ जबकि भारत का जन-मानस पश्चिम की विद्या, बुद्धि, विज्ञान एवं तर्कयुक्त चिन्तन के सम्पर्क में आकर यह समझ पाने में असमर्थ हो रहा था कि इस नव-चेतना को वह किस रूप में व किस प्रकार ग्रहण करे? क्या पश्चिमी जीवन पद्धति को समग्रता अंगीकार कर लेना उसकी निजी अस्मिता एवं पहचान की समाप्ति की घोषणा तो नहीं होगा? कुछ इसी प्रकार के संकल्प-विकल्प भारतीय मानस को झकझोर रहे थे, उद्वेलित कर रहे थे। भारतीय नव-जागरण का आरम्भ तो दयानन्द के जन्म की तिथि के आस-पास से ही माना जा सकता है, जबकि आधुनिक भारत के पिता तुल्य राम मोहनराय धर्म, समाज तथा देश के व्यापक सन्दर्भों में विभिन्न सुधारवादी चेष्टाओं में संलग्न थे। इतिहासकारों ने दयानन्द के विचारों, कार्यों तथा उनकी उपलब्धियों को भी भारतीय नव-जागरण के इतिहास से जोड़ा है। आपाततः इसमें कोई आपत्ति जैसी बात नहीं है, किन्तु यह ध्यान रखना होगा कि पुनरुत्थान के अन्य ज्योतिर्धरों एवं उन्नायकों ने जहां पश्चिमी विद्या, यूरोपीय चिन्तन तथा विचारधाराओं से प्रेरणा ग्रहण की, वहां दयानन्द को पश्चिमी का, किसी भी प्रकार से संस्पर्श तक प्राप्त नहीं था। वे जिस पारिवारिक वातावरण में पले, सामाजिक वातावरण में पढ़े तथा परम्परागत संस्कृत शास्त्रों के अध्ययन करने का उन्हें जैसा अवसर मिला, उसमें पश्चिमीकरण का लेश मात्र भी सम्पर्क नहीं था। अतः दयानन्द के उदाहरण से ही हमें पश्चिमी संस्कृति के रंग में रंगे उन लोगों द्वारा प्रचारित इस मिथ्या धारणा को तोड़ देना होगा कि भारत के जन-जागरण का एक मात्र श्रेय. अंग्रेजी शिक्षा एवं पश्चिमी विचार धारा के प्रचलन को ही है। यह भी एक संयोग ही था कि दयानन्द को छोड़कर राममोहन राय से लेकर गांधी पर्यन्त तक नवोत्थान के नेता अंग्रेजी शिक्षा एवं रीति-नीति से सुपरिचित थे। अकेले दयानन्द ही एक ऐसे अपवाद हैं, जो सर्व प्रकारेण पुरातन संस्कृत शास्त्रों में निष्णात होकर भी सर्वथा प्रगतिशील, सामयिक तथा समाज को उन्नति के मार्ग पर ले चलने में समर्थ कार्यक्रम प्रस्तुत कर सके।

इसी सन्दर्भ में दयानन्द के वेद विषयक विचारों से परिचित होना सर्वथा उचित माना जाएगा। दयानन्द वेद को ज्ञान का पर्याय मानते हैं और उनकी दृढ़ धारणा है कि सृष्टि के प्रारम्भ काल में ही मनुष्य को कोई ऐसा ज्ञान अवश्य प्राप्त हुआ था, जो देश, काल एवं व्यक्ति निरपेक्ष होने के कारण निखिल मनुष्य समाज के लिए उपयोगी, लाभप्रद तथा उन्नति का हेतु था। इसी मूल धारणा को लेकर वे भारत के बृहत्तर आर्य समाज में प्रचलित ऐसे विचार की वास्तविक मीमांसा प्रस्तुत करते हैं कि मनुष्य मात्र के हित की दृष्टि से प्रदत्त ऐसा ज्ञान वस्तुतः ईश्वरीय ज्ञान ही हो सकता है, उसे किसी पुरुष विशेष की कृति नहीं कहा जा सकता। यह दूसरी बात है कि सहस्राब्दियों प्राचीन इस ज्ञान की [illegible] को आज हम विस्मृत कर बैठे हों।

दयानन्द ने अपने वेद विषयक विचारों को स्वकीय ग्रन्थों में अनेक स्थानों पर न केवल सूचित ही किया है किन्तु अनेकत्र उनकी विशद व्याख्या एवं विवेचना भी की है उन्होंने वेदों की नित्यता, अपौरुषेयता तथा उनके सर्व ज्ञानमयत्व की स्थापना उसी प्रकार की है, जो भारतीय परम्पराओं में सर्वथा अनुमोदित एवं स्वीकृत रही है। तथापि दयानन्द की वेद-विषयक व्याख्या एवं विवेचना को ही इस बात का श्रेय है कि वेदों पर किए जाने वाले आक्षेपों एवं आपत्तियों का सतर्क उत्तर भी इसी प्रकार की व्याख्या प्रणाली से दिया जाना सम्भव है। यहां किञ्चित् विस्तार में जाकर दयानन्द के वेद विषयक विचारों की आलोचना करना अनुपयुक्त न होगा।

दयानन्द ने वेद के नित्यत्व, अपौरुषेयत्व अथवा ईश्वर कर्तृत्व आदि से सम्बन्धित जो विचार प्रस्तुत किए, उनसे मोटे तौर पर भारतीय परम्परा के किसी भी वेदार्थ चिन्तक अथवा वेदाभ्यासी विद्वान् की असहमति नहीं है। तथापि प्रायः यह आक्षेप किया जाता रहा है कि दयानन्द की वेदार्थ प्रणाली उन भाष्यकारों द्वारा भाष्य पद्धति को स्वीकार नहीं करती जिसका अनुसरण करते हुए भाष्यकार सायण आदि ने वेद भाष्य लिखे हैं।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की शताब्दी (6)

आर्य प्रतिनिधि पंजाब की जो समस्याएं हैं उनके विषय में, मैं पिछले कुछ अंकों में अपने विचार पाठकों के सामने रख चुका हूं परन्तु जो समस्या सबसे गम्भीर है वह आज पाठकों के सामने रखने लगा हूं। वह यह कि अब हमें उच्चकोटि के उपदेशक व भजनीक नहीं मिलते, जैसे कि पहले मिला करते थे। इसके दो कारण हैं एक यह कि शिक्षित वर्ग में अब आर्यसमाज के लिए वह उत्साह नहीं रहा: जो पहले हुआ करता था। गुरुकुल को स्वामी श्रद्धानन्द और आचार्य रामदेव जैसे गुरु मिल गए डी. ए. वी, कालेज को महात्मा हंसराज व लाला साईंदास जैसे त्यागी, शिक्षा विशेषज्ञ मिल गए। आज गुरुकुल के पास न तो कोई दूसरा श्रद्धानन्द या आचार्य रामदेव है न डी. ए. वी, कालेज के पास हंसराज या साईंदास है। प्रिंसिपल दीवानचन्द अपने समय में शिक्षा विशेषज्ञ होते थे, वे आर्य समाज के प्रचारक भी थे। गुरुकुल से पं, सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, आचार्य प्रियव्रत, डा, सत्यकेतु और श्री सत्यकाम विद्यालंकार (जैसे स्नातक अब नहीं निकलते। मेरा गुरुकुल से गहरा सम्बन्ध है। परन्तु मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं कि जिस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए गुरुकुल बनाया गया था आज उसकी प्रगति नहीं हो रही। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि गुरुकुल से कुछ ऐसे स्नातक भी निकले हैं जो इस महान् संस्था के नाम पर एक बहुत बड़ा बट्टा है। कहने का तात्पर्य यह कि अब आर्य समाज को वह पुराने विचारक व प्रचारक नहीं मिल रहे। पंजाब में हमें विशेषकर यह कठिनाई है। क्योंकि दूसरे प्रान्तों में प्रचार करने वाले उपदेशक अब पंजाब में आना पसन्द नहीं करते, यह हमारी एक बहुत बड़ी कठिनाई है। इसका एक और कारण भी है कि हम अपने उपदेशकों व भजनीकों का न तो वह सम्मान करते हैं जो करना चाहिए न उनकी वह आर्थिक सहायता करते हैं जो करनी चाहिए। आज की परिस्थितियों में कोई व्यक्ति चार सौ या पांच सौ रुपया मासिक पर अपना-घर-बार छोड़कर प्रचार नहीं कर सकता। पहले हमें अवैतनिक उपदेशक भी मिल जाते थे। आज वैतनिक मिलने भी मुश्किल हो रहे हैं जो महानुभाव उच्च शिक्षा प्राप्त करके सार्वजनिक जीवन में पदार्पण करते हैं वह यह भी आशा रखते हैं कि सभा उनका आर्थिक भार भी उठावे। अर्थात् उन्हें ऐसी दक्षिणा दी जाए कि यदि वे प्रचार के लिए जाते हैं तो उनके पीछे उनके परिवार को कोई कठिनाई न हो। इस समस्या को समझते हुए हमारी सभा ने यह निर्णय लिया था कि यदि आवश्यक हो तो एक अच्छे उपदेशक को 1000 रुपये मासिक तक भी दे दिया जाए परन्तु अब मैं यह अनुभव करता हूं कि यह भी थोड़ा है। इसलिए यह एक गम्भीर स्थिति है जो हमारे सामने है हमें यह भी न भूलना चाहिए कि अब हमें उस उच्चकोटि के संन्यासी भी नहीं मिलते जो पहले मिला करते थे। एक तो उनकी संख्या कम हो रही है, दूसरा उनमें से कई किसी स्वार्थवश वह काम नहीं करते जो उन्हें करना चाहिए। कुछ समय हुआ जब श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने यति मण्डल का गठन किया था। हम समझते थे कि यति मण्डल उस कमी को पूरा कर देगा। जो उच्चकोटि के उपदेशक न मिलने के कारण पैदा हो रही थी। परन्तु उसमें भी निराशा हुई है। हरिद्वार में एक वानप्रस्थ आश्रम है वहां चार सौ से अधिक व्यक्ति रहते हैं। मैंने उनमें कईयों से कहा कि उस वानप्रस्थ आश्रम में रहने की बजाय क्यों नहीं वह एक आर्य समाज मन्दिर को सम्भाल लेते, लेकिन कोई इसके लिए तैयार नहीं है।

यह है स्थिति जिसमें से हम अब गुजर रहे हैं, यह कोई सन्तोषजनक स्थिति नहीं। जो कठिनाई पंजाब सभा के सामने आ रही है वही प्राय: सभी सभाओं के सामने है जिस बात की आवश्यकता थी वह नहीं हो रही। आर्य समाज के केन्द्रीय नेतृत्व अर्थात् सार्वदेशिक सभा का यह कर्त्तव्य था कि वह इस समस्या पर विचार करके कोई ऐसी योजना बनाती कि आर्य समाज में प्रचार का काम पहले की तरह चल सके। परन्तु सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों के पास इस पर विचार करने के लिए समय नहीं है। ऐसी स्थिति में प्रान्तीय सभाओं की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। पंजाब सभा को क्या करना चाहिए। इस विषय में मैं आगामी अंक में अपने विचार पाठकों के सामने रखूंगा।

—वीरेन्द्र

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नए कुलाधिपति

आर्य जनता को यह सुनकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सुयोग्य स्नातक व प्रसिद्ध इतिहासकार डा० सत्यकेतु विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के नए कुलाधिपति बनाए गए हैं। उनका गुरुकुल से और आर्य समाज से बहुत पुराना सम्बन्ध है। उनकी गणना देश के प्रसिद्ध इतिहासकारों में होती है। इससे पूर्व वे गुरुकुल के कुलपति भी रह चुके हैं उससे पहले वहां पढ़ाते भी रहे हैं और चूंकि उन्होने अपने पूर्व जीवन के 14 वर्ष वहीं व्यतीत किए थे इसलिए वे जानते है कि गुरुकुल क्या था और क्या बनाना चाहिए चूंकि उनका गुरुकुल व आर्य समाज दोनों से सम्बन्ध रहा है इसलिए वे गुरुकुल को वैदिक सिद्धान्तों के अध्ययन का एक बहुत बड़ा केन्द्र बना सकते हैं उनमें यह योग्यता भी है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से मैं उन्हें बधाई देता हूं और उन्हें यह विश्वास भी दिलाता हूं कि सभा की ओर से उन्हें पूरा सहयोग मिलता रहेगा। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ही संस्था है। उसके भिन्न भिन्न भवनों में लगा एक एक पत्थर बोल रहा है कि यह संस्था किस ने बनवाई थी इसलिए उसका जो भी कुलपति व कुलाधिपति हो उसे अपना सहयोग देना सभा अपना कर्त्तव्य समझती है। इसलिए मैं भी डा. सत्यकेतु को बधाई देता हुआ अपने व अपनी सभा के सहयोग का आश्वासन देते हुए यह आशा करता हूं कि डा. सत्यकेतु इस गुरुकुल को स्वामी श्रद्धानन्द का गुरुकुल बनाने का प्रयास करेंगे।

—वीरेन्द्र

श्री हरिराम चोपड़ा का निधन

आर्य समाज अपने त्यागी व कर्मठ सेवकों की सेवा से वंचित होता जा रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के बहुत पुराने सदस्य व आर्य समाज के निष्काम सेवक फगवाड़ा के श्री हरिराम चोपड़ा भी हमें छोड़ गए। बहुत कम आर्य समाजियों को आर्य समाज में वह श्रद्धा व निष्ठा होगी जो हरिराम जी में थी। वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा की किसी भी बैठक से कभी अनुपस्थित न हुए थे। उनके जिम्मे जो भी काम लगाया जाता था बड़ी प्रसन्नता से करते थे। यह कहना अत्युक्ति न होगी कि वे आर्य समाज के एक बहुत बड़े स्तम्भ थे। ऐसे व्यक्ति अब आर्य समाज को मिलने बहुत कठिन हो रहे हैं। परन्तु जीवन व मरण किसी के हाथ में नहीं। इसका निर्णय तो कोई और ही करता है और हमें उसके आगे सिर झुकाना पड़ता है। हरिराम जी के जाने से उनके परिवार को तो अघात पहुंचा ही है आर्य समाज की भी कुछ कम क्षति नहीं हुई। परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि हरिराम जी की आत्मा को सद्गति प्रदान करे व उनके परिवार को यह शक्ति दे कि वे इस वियोग को सहन कर सकें।

—वीरेन्द्र

श्रावणी विशेषांक के आर्डर भेजें

आर्य मर्यादा के 30 जून के अंक में भी सभी आर्य बन्धुओं से प्रार्थना की थी कि रक्षा बन्धन व जन्माष्टमी पर्व पर आर्य मर्यादा का श्रावणी विशेषांक छप रहा है। सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के तथा शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी महानुभाव तथा अन्य आर्य बन्धु इस विशेषांक के लिए अपने आर्डर शीघ्र अति शीघ्र सभा कार्यालय में भेजें। ताकि जितने आर्डर हों उसके अनुसार ही अंक छपवाया जाए। गत वर्ष इस विशेषांक के आर्डर देरी से आने के कारण हम बहुत से आर्य बन्धुओं को विशेषांक नहीं भेज सके थे। इसलिए कृपया आप आर्डर शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

—कमला आर्या, सभा महामन्त्री

महात्मा गांधी और स्वामी श्रद्धानन्द

ले.—श्री डा. कमल किशोर गोयनका दिल्ली

भारत के आधुनिक काल के इतिहास में उन्नीसवीं शताब्दी अनेक कारणों से महत्व पूर्ण है। एक प्रमुख कारण यह है कि इस शताब्दी में अनेक युग पुरुषों दार्शनिकों, सुधारकों, विद्वानों, जन-नेताओं आदि ने जन्म लिया और देश की सोयी और दासता में जकड़ी जनता को जाग्रत किया। ऐसे महापुरुषों में महात्मा गांधी और स्वामी श्रद्धानन्द का नाम इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित है। महात्मा गांधी और स्वामी श्रद्धानन्द दो ऐसे युग पुरुष हुए जिन्होंने अपने अपने क्षेत्रों में क्रान्ति उत्पन्न कर दी।

स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म 22 फरवरी 1858 तथा महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्तूबर 1869 में हुआ। इस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द, गांधी से लगभग 12 वर्ष बड़े थे। स्वामी श्रद्धानन्द जब सन् 1879 में बरेली में आए व स्वामी दयानन्द से अपनी जिज्ञासाओं को शान्त कर रहे थे, तब गांधी प्रारम्भिक पाठशाला में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। स्वामी श्रद्धानन्द अर्थात् मुन्शीराम सन् 1886 में आर्य समाज के विधिवत् सदस्य बने तब गांधी नवीं कक्षा के छात्र थे।

गांधी मई 1893 में एक बैरिस्टर की हैसियत से भारतीयों का मुकद्दमा लड़ने के लिए दक्षिण अफ्रीका गए तो उस समय तक मुन्शीराम आर्य समाज की सम्पूर्ण गतिविधियों पर छा गए और आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने।

गांधी दक्षिण अफ्रीका में कई भारतीय आर्य समाज के प्रचारकों के सम्पर्क में आए और उनके आत्म त्याग एवं देश भक्ति को देखकर वे इतने प्रभावित हुए कि जुलाई 1905 में जब आर्य समाज के प्रचार के लिए भाई परमानन्द दक्षिण अफ्रीका पहुंचे तो गांधी ने उन्हें जोहानिसबर्ग में मानपत्र समर्पित किया।

इधर भारत में स्वामी श्रद्धानन्द ने 26 नवम्बर 1898 में आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से गुरुकुल स्थापना का प्रस्ताव स्वीकार करा लिया था और अनथक प्रयत्नों से सन् 1902 में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर दी थी।

महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीय कुलियों के सम्मान एवं अधिकारों के लिए सन् 1908 में सत्याग्रह आरम्भ किया। यह जन आन्दोलन, धरना देना, बिना परवाना फेरी लगाना और व्यापार करना, मांगने पर पंजीकृत प्रमाण पत्र न दिखाना, अगूठों की छाप देने से इन्कार करना और नेपाल की सीमा पार करके दांसवाल में प्रवेश निषेध का उल्लंघन करना आदि अनेक रूपों में चल रहा था।

स्वामी श्रद्धानन्द को इस आन्दोलन की जानकारी मिली और उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि गांधी के नेतृत्व में लड़े जाने वाले इस सत्याग्रह आन्दोलन को धन की आवश्यकता है। स्वामी श्रद्धानन्द ने तुरन्त गुरुकुल के छात्रों को कुली के रूप में कार्य करके धन संग्रह करने की प्रेरणा दी। इस प्रकार संग्रहीत धन मेरे प्रिय भाई संबोधन के पत्र के साथ गांधी को भेजा।

स्वामी श्रद्धानन्द और गांधी के प्रथम परिचय की यह कहानी, स्वयं महात्मा गांधी ने 'यंग इण्डिया' के 6 जनवरी 1927 के अंक में स्वामी जी के संस्मरण शीर्षक से प्रकाशित की।

गांधी ने अपने संस्मरण में लिखा—स्वामी जी ने मुझे जो पत्र भेजा था, वह हिन्दी में था। उन्होंने मुझे मेरे प्रिय भाई कहकर संबोधित किया था। इस बात ने मुझे मुन्शीराम का प्रेमी बना दिया। इस प्रकार इस छोटे से सम्पर्क से जो सम्बन्ध बना, वह स्वामी श्रद्धानन्द के शहीद होने तक घनिष्ठ एवं आत्मीय सम्बन्धों के रूप में चलता रहा।

महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका से भारत आने पर स्वामी श्रद्धानन्द से उन की पहली भेंट गुरुकुल कांगड़ी में 6 अप्रैल 1915 को हुई। गांधी 9 जनवरी 1915 को दक्षिण अफ्रीका से बम्बई बन्दरगाह पर पहुंचे और शान्ति निकेतन में महाकवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर से मिलते हुए 5 अप्रैल को हरिद्वार में प्रवेश किया। गांधी को स्वामी श्रद्धानन्द से इतने शीघ्र मिलाने का श्रेय सी. एफ. एण्ड्यूज को है जिन्होंने गांधी को यह सलाह दी थी कि भारत जाने पर भारत के तीन महान् सुपूतों के दर्शन अवश्य ही करने चाहिए इन तीन महान् सुपूतों में एक स्वामी श्रद्धानन्द भी थे।

गांधी ने भारत आने से कई मास पूर्व 27 मार्च 1914 को नेहाल (दक्षिण अफ्रीका) से स्वामी श्रद्धानन्द को पत्र में ऐण्ड्रयूज के सुझाव और उनके दर्शन की अपनी उत्सुकता को व्यक्त किया महात्मा गांधी ने 'प्रिय महात्मा जी' संबोधन के बाद पत्र में लिखा—श्री ऐण्ड्रयूज मुझे आपके नाम और काम में बारे में बतला चुके हैं। इसलिए ऐसा नहीं लगता कि मैं किसी अजनबी को पत्र लिख रहा हूं। आशा है इस संबोधन के लिए आप मुझे क्षमा करेंगे क्योंकि मैं और श्री ऐण्ड्रयूज दोनों ही आप और आपके काम के बारे में चर्चा करते समय यही संबोधन करते रहे हैं। श्री ऐण्ड्रयूज ने मुझे यह भी बतलाया था कि 'गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर और श्री सुशील कुमार रुद्र पर आपका कितना अधिक प्रभाव पड़ा है। उनसे मुझे पता चला कि आपके शिष्यों ने सत्याग्रहियों के लिए कितना काम किया था। उन्होंने गुरुकुल के जीवन के इतने सुन्दर शब्द चित्र खींचे थे कि यह पत्र लिखाते समय लगता है जैसे मैं गुरुकुल में ही पहुंच गया हूं। श्री ऐण्ड्रयूज ने मेरे मन में उक्त तीनों स्थानों को देखने और इन संस्थाओं के प्रधान भारत के तीन महान् सुपूतों के प्रति सम्मान प्रकट करने की उत्कट अभिलाषा जगा दी है।

महात्मा गांधी के गुरुकुल कांगड़ी पहुंचने से पहले मगनलाल गांधी फोनिक्स पाठशाला के 25 छात्रों के साथ वहां पहुंच चुके थे। गांधी ने 8 फरवरी 1915 को पत्र लिखकर स्वामी श्रद्धानन्द को बच्चों को प्रेम देने तथा उनके साथ परिश्रम करने के लिए धन्यवाद दिया और लिखा, बिना आमन्त्रण ही आपके निकट पहुंचकर आपके चरणों में सिर झुकाना मेरा कर्त्तव्य है।

गांधी 8 अप्रैल 1915 को गुरुकुल कांगड़ी पहुंचे जहां स्वामी श्रद्धानन्द की उपस्थिति में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने उनका स्वागत करते हुए मान पत्र भेंट किया।

गांधी ने अपने उत्तर में अन्य बातों के साथ स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा उन्हें भाई कहने की बात का विशेष रूप से उल्लेख करते हुए कहा, महात्मा जी ने मुझे अपने एक पत्र में भाई कहा है उसका मुझे गर्व है कृपया आप लोग यही प्रार्थना करें कि मैं उनका भाई बनने के योग्य हो सकूं। मैं 25 वर्ष बाद अपने देश में आया हूं- मैं कोई सलाह नहीं दे सकता। मैं तो मार्ग दर्शन प्राप्त करने आया हूं और जो भी मातृ भूमि की सेवा में लगा है ऐसे प्रत्येक प्राणी के सम्मुख झुकने के लिए तैयार हूं। मैं अपने देश की सेवा में प्राण देने के लिए तैयार हूं। अब मैं विदेश नहीं जाऊंगा। मेरे एक भाई (लक्ष्मीदास गांधी) चल बसे हैं। मुझे आशा है कि महात्मा जी उनका स्थान ले लेंगे और मुझे भाई मानेंगे।

स्वामी श्रद्धानन्द ने भाई के नाते मानो आशीर्वाद देते हुए कहा. मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि आप अब भारत में रहेंगे और अन्य लोगों की भान्ति बाहर रहकर भारत की सेवा करने के लिए विदेश नहीं जाएंगे। मुझे आशा है कि गांधी भारत के लिए ज्योति स्तम्भ बन जाएंगे। स्वामी श्रद्धानन्द की यह भविष्यवाणी कितनी सच हुई, यह हम भारतवासी ही नहीं सारा संसार जानता है।

महात्मा गांधी स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन काल में दो बार 8 अप्रैल 1915 तथा 20 मार्च 1916 को गुरुकुल कांगड़ी गए तथा उनके शहीद होने के लगभग चार मास उपरान्त 19 मार्च 1927 को दीक्षान्त भाषण देने गए थे।

इससे पूर्व गांधी 20 मार्च 1916 को गुरुकुल के वार्षिक उत्सव पर जब आए तो उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी को 'स्वशासित-प्रजातन्त्रीय' और राष्ट्रीय संस्था' मानते हुए स्वामी श्रद्धानन्द की प्रशंसा करते हुए कहा था, आर्य समाज की गतिविधि का सर्वश्रेष्ठ परिणाम कदाचित् गुरुकुल की स्थापना और उसके परिचालन में दिखायी पड़ता है। यह ठीक है कि महात्मा मुन्शीराम की प्रेरणादायक उपस्थिति ही उसकी शक्ति का अधिष्ठान है, किन्तु यह संस्था सच्चे अर्थों में एक स्वशासित प्रजातन्त्रीय और राष्ट्रीय संस्था है, किसी भी प्रकार सरकारी सहायता या आश्रम से वह बिल्कुल मुक्त है इस भाषण में गांधी ने निर्धन व्यक्तियों द्वारा दान देने तथा संस्था के प्रबन्धकों की जबरदस्त संगठन शक्ति की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

महात्मा गांधी ने अपनी 'आत्मकथा' में पहली यात्रा के अनुभव के सम्बन्ध में लिखा। जब मैं पहाड़ से दीखने वाले महात्मा जी के दर्शन करने और उनका गुरुकुल देखने गया. तो मुझे बड़ी शान्ति मिली। हरिद्वार के कोलाहल और गुरुकुल की शान्ति के बीच का भेद स्पष्ट दिखायी देता था महात्मा ने मुझे अपने प्रेम से नहला दिया। ब्रह्मचारी मेरे पास से हटते ही न थे।

यात्रा के बाद महात्मा गांधी और स्वामी श्रद्धानन्द में सहयोग निरन्तर बढ़ता गया और स्वाधीनता संग्राम में कई बार मिलकर कार्य किया। जब अंग्रेजों ने रौलट अधिनियम लागू किया. तो स्वामी श्रद्धानन्द ने 30 मार्च 1919 को दिल्ली में 40 हजार व्यक्तियों के जलूस का नेतृत्व करते हुए उसका विरोध किया। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा गांधी को भेजे गए तार के अनुसार इस दिन हुए

(शेष पृष्ठ 7 पर)

रचियता की अद्भुत रचना

ले.—म. प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी, धूरी पंजाब

सूर्य पूर्व से उदय होता है चन्द्रमा पश्चिम से उदय होता है। सूर्य गर्मी देता है और चन्द्रमा शीतलता देता है। सूर्य अन्न फल औषधियों को पका रहा है और चन्द्रमा उनमें रस का सम्पादन कर रहा है। सूर्य पानी को शुद्ध करके खींच रहा है और बादल पानी को बरसा रहा है। पृथ्वी सूर्य का चक्र लगा रही है और चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है। कैसी विचित्र रचना है रचयिता की !

कहीं वृक्ष झूम 2 कर पुष्प सुगन्धी छोड़ 2 कर और समुन्द्र की लहरें छीं-छीं की ध्वनि में वहती नदियों का जल कल कल की ध्वनि में एव तपस्वी आत्म-ध्वनि में उसी की स्तुति का गान गा रहे हैं। ... उषा उन्हें बधाई देती हुई आरती उतार रही है, मानो सारा जगत् उसकी रचना का स्वयं प्रमाण बन कर खड़ा है। दूर दूर तक उसकी कीर्ति का कीर्तन हो रहा है।

बन्धुओ ! कई हमारे भाई सृष्टि को तो बना मानते है परन्तु सृष्टि रचियता को नहीं मानते। हम उनको कहना चाहते हैं कि हम उनकी बात ठीक मान लेते यदि सृष्टि में सर्वदा नियम न होते। कभी सूर्य तीन बजे निकलता और कभी 6 बजे। कभी गेहूं बो कर चना उत्पन्न हो जाता, कभी जो। या बड़े 2 वृक्षों पर पेटठं लगे होते और छोटे 2 पौधों बेलों पर बेर खुर्मानी आदि। मानना ही पड़ेगा कि कोई नियन्ता है जिसके नियम में सब नियन्त्रित है। कमाल हैं उसके नियम।

सूर्य ग्रहण अमावस्य को ही लगेगा, और चन्द्रमा ग्रहण पूर्णमासी को ही। कर्ता की कृति एक अद्भुत कमाल है। पत्ता पत्ता उसकी सत्ता और महता का पता दे रहा है। यह सारी सृष्टि रचियता का ज्ञान करा रही है।

कृति को देखकर कर्त्ता का ज्ञान होना स्वभाविक है। जैसा कर्ता वैसी कृति ! मैं एक दिन संगतरे की फाड़ी को देख रहा था, सगतरे की हर फाडी पर एक पलास्टक नुमाकवरऔर कई फाड़ियों पर एक शानदार पैकिंग मन में आया यह टोफियाँ और बिस्कुटों के पैकिंग रचयिता की नकल है असल नहीं।

मैंने एक सूअर पालने वाले से पूछा, सूअरी के दूध का रंग कैसा होता है। सफेद ! सफेद !! सफेद !!! मेरे मुख से निकल गया भगवान् ने बड़ी मात्रा में सूअरी के पेट में रंग काट रखा हुआ है। यही नहीं भगवान् का मिल्क प्लांट गाय घास खाती है और दूध देती है परन्तु मानव का मिल्क प्लांट दूध खाता है और घास देता है। क्योंकि आपने देखा होगा मिल्क पाउडर की शक्ल पीसे हुए घास के समान होती है।

संसार में अनेक आश्चर्यों में एक यह भी आश्चर्य है कि काले रंग पर सफेद रंग चढ़ा देता। किन्तु भगवान् ऐसा भी करते हैं। एक दम नहीं और वह भी मनुष्य इच्छा के विपरीत।

मनुष्य गेहूं डालने के लिए बोरी बनाता है गेहूं कहीं तैयार होता है। बोरी किसी और फैक्ट्री में तैयार करता हैं और सूतली से सिलाई कोई और करता हैं परन्तु भगवान की मिर्च देखो ! एक ही समय में क्वर और उसमें बीज और ऊपर सील तैयार कर देता है अर्थात् भगवान सब माल को पैकिंग में ही तैयार करते है। मानना ही पड़ेगा कि रचयिता की रचना एक अद्भुत कमाल है।

इस पृथ्वी और विशाल द्यौलोक को देखकर आश्चर्य होना स्वाभिक है क्यों ? क्योंकि इस सौरमण्डल में असख्य लोक लोकान्तर हैं, सभी में गति है परन्तु गति में भारी अन्तर है। सभी एक स्तर और प्रोग्राम के अनुसार चक्र लगा रहे हैं। क्या कभी कोई दुर्घटना हुई ? परन्तु मानव अत्यन्त सावधानी से मोटर, रेल, वायुयान चलाता है चलने, उतरने, ठहरने के स्टेशन बने हुए है। तार वायरलैस से चलने की सूचना भेजता है तो भी कितनी दुर्घटनाएं होती हैं कोई अनुमान ? परन्तु रचयिता की रचना एक अद्भुत कमाल है, कभी कोई ग्रह किसी ग्रह से नहीं टकरा सकता।

पृथ्वी के ऊपर नीचे मध्य में जल है दो भाग समुद्री जल, एक भाग पृथ्वी का है। आप मिट्टी का ढेला पानी में डालिए, पानी मे घुल जाएगा। परन्तु पृथ्वी के ऊपर नीचे मध्य और चारों ओर जल है कितने छोटे 2 द्वीप है। यह जल में क्यों नहीं घुलते ? समुद्र की लहरें इन द्वीपों को हर समय टक्कर मारती हैं। और सहस्रों ही नदियों का जल समुद्र में हर समय गिरता है परन्तु नहीं उछलता, भगवान् का ज्ञान महान्, बल महान, रचना महान्, महान् का सब कुछ महान् है।

आंखें अपना धर्म नहीं छोड़ती। कान श्रवण के अतिरिक्त कुछ करने को तैयार नहीं। आंखें सामने देखती है और कान चारों ओर की बात को सुन सकते हैं। भगवान् का धन्यवाद करो, यदि ऐसा न होता तो सड़क पर चलते ही हमारा मनीआर्डर हो जाता। सारे विश्व में नियम और व्यवस्था है। सूर्य पृथ्वी, सभी सौर मण्डल उसकी शक्ति से ही गति कर रहे हैं जैसे हम मानव रहित राकेट को आकाश मे छोड़ते हैं वह मानव की दी हुई गति के आधार पर चल रहा है। राकेट में अपनी कोई शक्ति नहीं, शक्ति मानव की कार्य करती है। ऐसे ही सभी पृथ्वी लोक, द्युलोक प्रभु की शक्ति से गति कर रहे हैं। इनमें अपनी कोई शक्ति नहीं। कई लोग केवल आकर्षण के सहारे ही इस विशाल ब्रह्माण्ड को ठहरा मानते हैं, किन्तु आधार के बिना आकर्षण भी नही होना। चुम्बक यदि लोहे को खीचता है तो उसका आधार पृथ्वी है। भला पृथ्वी से साढ़े तेरह लाख गुणा बड़ा सूर्य जो नौ करोड़ तीस लाख मील दूर होते हुए भी यदि अपने आकर्षण से पृथ्वी को खीचता है। तो पृथ्वी का भाग जो सूर्य से पृथक् हुआ वैज्ञानिक मानते हैं, पृथक् हों ही नहीं सकता था। अत: वेद ने कहा 'सदाधार पृथ्वी' द्यामुतेमाम्:।

मानव ने रेल का इंजन बनाने का कारखाना लगाया और वायुयान बनाने का भी और लगाना भी चाहिए मानव और भगवान् की रचना में अन्तर यह है कि भगवान् दैनिक सांचे नही बनाते, भगवान् की गाय-गाय पैदा कर सकती है, कबूतर-कबूतर पैदा कर सकता है और मनुष्य, मनुष्य पैदा कर सकता है। उस की फैक्ट्रीयां कमाल हैं। परन्तु मानव इस वैज्ञानिक युग में भले शुक्र तारे से चित्र ले रहा हैं और चांद की यात्रा कर रहा है, यहां तक मानव का सभी कार्य मशीने करने लग गई हैं। परन्तु मानव की बनाई हुई घड़ी अपनी जैसी घडी पैदा नहीं कर सकती, मानव की बनाई हुई सुई अपनी जैसी सुई पैदा नहीं कर सकती और मानव का बनाया पैन है पैन पैदा नहीं कर सकना अपितु मानव की बनी वस्तुएं जिन पदार्थों से बनती है या बनकर चलती हैं वे पदार्थ भी मानव निर्मित नहीं। इसीलिए महर्षि दयानन्द जी ने कहा, सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है

आर्य समाजें अपने प्रतिनिधियों के नाम भेजें

पंजाब राजार्य सभा का साधारण अधिवेशन रविवार 18 अगस्त को जालन्धर में बुलाने का निश्चय किया है। पंजाब की वर्तमान स्थिति को देखते हुए इसमें बहुत से महत्वपूर्ण विषयों पर विचार और निर्णय लेने की सम्भावना है। आपकी आर्य समाज का इसमें सहयोग आवश्यक है। आप से प्रार्थना है कि आप कम से कम दो और ज्यादा से ज्यादा चार प्रतिनिधि अपनी समाज की ओर से इस अधिवेशन के लिए अवश्य भेजें। आप अपने प्रतिनिधियों का पूरा नाम व पता सभा के कार्यालय में 4 अगस्त तक भेजे ताकि उनको 18 अगस्त 1985 के अधिवेशन के लिए विधिवत निमन्त्रण पत्र भेजा जाए और उनके भोजनादि का भी प्रबन्ध किया जा सके।

—अमृतलाल बजाज एडवोकेट
संयोजक पंजाब राजार्य सभा, जालन्धर

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इष्ट-मित्रों के पास सन्देश भेज सकते है, रेडियो और टेलीविजन से संसार का समाचार जान सकते हैं। आत्म ज्ञानी मनुष्य के चेहरे पर एक ऐसी प्रसन्नता रहती है जो न केवल स्वय ही आनन्दित होता है परन्तु उस मनुष्य की ओर देखकर जिसके मुख-मण्डल पर आत्मा के आनन्द का प्रकाश फैल रहा हो. हमारे मन में दिव्य भाव आने लगते हैं, उदासी, निरुत्साह, निराशा दूर होने लगती है, आनन्द आशा और उत्साह का मनोहर आलोक फैलता जाता है। आप बुद्धि द्वारा आत्मा के आनन्द को बढ़ाइए। आनन्द-स्वर्गीय आनन्द के प्रवाह मे तन्मय रहिए, अपनी आत्मा को आनन्दमय प्रभु की ओर उन्मुख कीजिए, सदा आनन्द की मधुर रेखा से अपने मुख-मण्डल की दिव्यता बढ़ाते रहिए। याद रखो यह आत्मा उस दैवी प्रवाह की ओर जाना चाहता हैं जहां सत्य है आनन्द है और वह है ईश्वर। जब-जब हम बुरा काम करते हैं. जब जब हम सत्य से विचलित होते हैं, जब कभी हम नीचता और बेईमानी का काम करते है तब-तब हम सर्वशक्तिमान् आनन्द स्वरूप उस दिव्य सत्ता से अपनी आत्मा को दूर करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि भय, शंकाएं और सन्देह हम पर अपना अधिकार कर हमे अपना शिकार बना लेते हैं। उस दिव्य सत्ता से अलग होने पर हमारी दशा उस निस्सहाय बालक की-सी हो जाती है जो घोर अन्धकार मे छोड़ दिया गया हो।

आईए, बुद्धि द्वारा हम उस अरेणुभि-धूलरहित पतङ्गम—सूर्य तुल्य जीवात्मा के दर्शन करें जब हम उसके दर्शन कर लेंगे तो इस संसार के झूठे कष्ट दूर हो जाएंगे। इस जीवन मन्दिर के आकाश में कोई दुःख की छाया नहीं पड़ सकेगी। जब गे इस जीव के अनन्त, अविनाशी आनन्द मे जगत् की कोई भी वस्तु बाधा न डाल सकेगी, उस समय सारा संसार आनन्द की ज्योति से जगमगा उठेगा। ओम् आनन्द ! आनन्द ही आनन्द हो जाएगा।

जैसे खाना मुंह का विषय है सुनना कान का और देखना आंख का, ऐसे ही ईश्वर का विषय इन्द्रियों का नहीं, आत्मा का है। अत: हमारी इतनी बात तो मान उसको आत्मा से पहचान।

दयानन्द गंगा

ले.— श्री पं. सत्यपाल पथिक कृष्णकोट अमृतसर

संसार में पवित्रता बहुत बड़ी चीज है प्रत्येक मानव के जीवन में इसका होना अनिवार्य है। इस के बिना जीवन का वास्तविक आनन्द प्राप्त किया ही नहीं जा सकता। मानव जीवन के कई पहलु हैं प्रत्येक पहलू में पवित्रता होनी चाहिए। अर्थात् वाणी में पवित्रता, हृदय में पवित्रता, आचार में पवित्रता, व्यवहार में पवित्रता आदि। जीवन में सभी पहलूओं में पवित्रता को धारण करने वाले अनेक जीवन भारतीय इतिहास के कोष में अनमोल रत्नों के समान सुरक्षित विद्यमान हैं।

परन्तु मध्यकालीन कुछ व्यक्तियों ने इस पवित्रता का एक विचित्र स्वरूप मानव समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। जिस कारण लोगों ने कुछ पदार्थों को इतना पवित्र कह कर संसार को बहकाया कि इन पदार्थों के स्मरण, दर्शन, स्पर्श अथवा स्नानादि करने मात्र से जीवन पवित्र हो जाता है। उन के कथनानुसार सभी प्रकार के मानसिक मल विक्षेप दूर हो जाते हैं। अत: अनेक स्थानों व पदार्थों में से गंगा भी जोकि भारत की एक प्रसिद्ध नदी है उसको तथा उसके जल को यही श्रेय प्राप्त हुआ। जबकि मानव धर्म शास्त्र में मनु महाराज ने लिखा कि:—

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मन: सत्येन शुध्यति।
विद्या तपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति॥

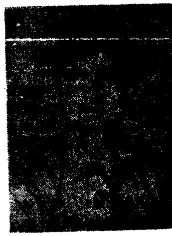
अर्थात् जलों से (केवल) शरीर के अंग पवित्र होते हैं मन सत्य से पवित्र होता है। प्राणियों की आत्मा विद्या और तप से पवित्र होती है। यह सत्य है कि गंगा भारतीय इतिहास का सदा गौरव रही है और आगे भी रहेगी। उस का जल अत्यन्त स्वच्छ एवं निर्मल है जोकि शारीरिक मलों को दूर करता एवं ठण्डक प्रदान करता है। मानसिक अथवा आध्यात्मिक विक्षेपों को दूर करना जलों का काम नहीं फिर भी लोग आत्मिक शुद्धियों को प्राप्त करने के लिए इन नदियों पर बने तीर्थों की अनेक यात्राएं करते हैं। परन्तु आध्यात्मिक शुद्धियां इन लोगों को कितनी प्राप्त होती हैं। आजकल यह प्रश्नचिन्ह बना हुआ है।

हां एक ऐसा प्रवाह अवश्य है जिस की यात्रा करने से अथवा उसमें स्नान करने से अवश्यमेव आध्यात्मिक पवित्रता प्राप्त होती है। वह है श्रेष्ठ महापुरुषों का जीवन चरित्र रूपी प्रवाह। इस प्रवाह में स्नान करने वाला प्रत्येक व्यक्ति अन्त:करण सहित आपाद मस्तक पवित्र हो जाता है। ऐसे महापुरुषों में परिव्राजकाचार्य आदित्य ब्रह्मचारी योगीराज महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज का पवित्र जीवन चरित्र है। महर्षि के जीवन रूपी गंगा में स्नान से एक जीवन नहीं अनेक जीवन पवित्र हुए हैं तथा अनेकों पवित्र हो सकते हैं (महर्षि के जीवन में वे सभी विशेषताएं विद्यमान हैं जोकि मानव समाज के अन्दर प्रत्येक दिशा में पवित्रता ला सकती है। ऐसा अनूठा जीवन चरित्र सब प्रकार के मल को दूर करने की पूर्ण क्षमता रखने वाला जीवन चरित्र है, इसीलिए ऋषिवर के जीवन प्रवाह को दयानन्द गंगा नाम देना सार्थक ही है। जिसने भी दयानन्द गंगा में डुबकी लगाई वह अन्दर-बाहर से पवित्र हो गया। दयानन्द गंगा में कोई भी स्नान करे, अपना हो अथवा बेगाना इस देश का वासी हो चाहे दूसरे देश का, जो भी श्रद्धा के साथ इसके तीर पर आया वह पवित्र हो गया है। शतश: उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते है।

इसी उपरोक्त भाव को महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवन सामग्री एकत्रित करने वाले एक मनीषि श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने ऋषि के जीवन चरित्र की भूमिका में इस प्रकार से व्यक्त किया है-

'परम हंस-गण गंगा की उत्पत्ति-भूमि से आरम्भ करके गंगा के किनारे विचरते हुए गंगा सागर तक गमन करके अपने परिक्रमण का कार्य समाप्त समझते हैं। हमने भी दयानन्द के जन्म गृह से आरम्भ करके उनकी श्मशान भूमि तक का पर्यटन किया है। टंकारा के जिस जीवापुर मुहल्ले के एक घर में उन्होंने जन्म लिया था उससे प्रारम्भ कर अजमेर के तारागढ़ के नीचे अश्रुपूर्ण नेत्रों से उस निदारुण श्मशान भूमि को देखकर आए हैं वहां उस भारत के सूर्य दिव्य देह को चितानल ने कुछ मुट्ठी भर भस्म में परिणत कर दिया था। कोई संन्यासी कहते हैं कि हरिद्वार से प्रारम्भ करके गंगा सागर तक पर्यटन करने में प्राय: तीन वर्ष लगते हैं। परन्तु हमने 'दयानन्द गंगा' के परिक्रमण में प्राय: पन्द्रह वर्ष काटे हैं। इत्यादि इन पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय तथा श्री पं. लेखराम जैसे महामानवों ने दयानन्द रूपी गंगा को उनके जीवन चरित्र ग्रन्थ रूपी स्वर्ण कलश में भर दिया है।

श्री वेद प्रकाश जी सरीन प्रधान आर्य समाज नवांशहर को बधाई



श्री योग रमन सरीन

श्री वेद प्रकाश सरीन प्रधान आर्य समाज नवांशहर के पौत्र श्री योगरमन सुपुत्र श्री सुदर्शन कुमार सरीन ने पंजाब ऐजूकेशन बोर्ड की मार्च 1985 की मैट्रिक परीक्षा में पंजाब भर में 1200 अंकों में से 1106 अंक लेकर प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए एक कीर्तिमान स्थापित किया। इनके दूसरे पौत्र श्री पंकज सरीन सुपुत्र श्री सतीश कुमार सरीन ने भी मैट्रिक में 913 अंक लेकर फर्स्ट डिवीजन प्राप्त की।

इस उपलक्ष में श्री वेद प्रकाश जी सरीन ने 14-7-84 को अपने निवास स्थान मोहल्ला सालियां नवांशहर में एक बृहद् यज्ञ का आयोजन किया। इस अवसर पर आए हुए विद्वानों तथा मित्रों ने बच्चों को आशीर्वाद दिया। श्री वेदप्रकाश जी सरीन तथा उनके परिवार को बधाई दी। सरीन परिवार की ओर से आए हुए अतिथियों का जल-पान द्वारा स्वागत किया गया। श्री सरीन जी ने 100 रुपये आर्य समाज नवांशहर तथा दोनों बच्चों की ओर से सौ-सौ रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को देने की घोषणा की है।

श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक का निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भू. पू. कार्यालयाध्यक्ष तथा सार्वदेशिक पत्र के सह-सम्पादक माननीय श्री रघुनाथ प्रसाद जी पाठक का 85 वर्ष की आयु में 15 जुलाई 1985 को शाहदरा (दिल्ली) में निधन हो गया। उनके निधन का समाचार सुनकर आर्य जगत् को एक गहरा आघात पहुंचा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में एक शोक सभा में दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले ने श्री पाठक जी के निधन को सार्वदेशिक सभा के इतिहास में एक अपूरणीय क्षति बताया। उन्होंने बताया कि श्री पाठक जी 1925 से महात्मा नारायण स्वामी की प्रेरणा से सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में आए और तब से अब तक लगातार 60 वर्ष तक सार्वदेशिक सभा के कार्यालय का सफलता पूर्वक संचालन किया है किसी भी धार्मिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में इतने लम्बे समय तक ऐसे महत्वपूर्ण पदों पर कोई दूसरा सफलतापूर्वक काम करता रहा हो, यह असम्भव है। श्री पाठक स्वयं सार्वदेशिक सभा थे, सार्वदेशिक सभा को पाठक जी से अलग करके सोचा भी नहीं जा सकता था। यद्यपि पाठक जी को सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने उपमन्त्री नियुक्त किया था परन्तु उन्होंने इस पद का अपने नाम के साथ कभी प्रयोग भी नहीं किया। उन्हें श्री महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जैसे प्रभृति उच्चतम कोटि के नेताओं का सानिध्य एवं मार्ग-दर्शन व शुभ आशीर्वाद प्राप्त था।

सार्वदेशिक साप्ताहिक का सन् 1927 में मासिक रूप में और 1965 में साप्ताहिक निकलना शुरू हुआ। इसका कार्य-भार पाठक जी के हाथों में रहा। सभा के अंग्रेजी वैदिक लाईट के सम्पादन में भी उनका मूल्यावान सहयोग प्राप्त रहा।

श्री पाठक जी के निधन से सार्वदेशिक सभा अपने को अनाथ समझती है। यह सभा स्व. पाठकजी की अमूल्य सेवाओं के लिए सदैव ऋणी रहेगी।

अन्त में शोक प्रस्ताव पारित करके दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की गई और शोक सन्तप्त परिवार के प्रति हार्दिक सम्वेदना प्रकट की गई।

इसके उपरान्त सार्वदेशिक सभा का कार्यालय बन्द कर दिया गया।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

अथवा संयोजित रूप से उसको प्रवाहित कर दिया है। आईए हम सब आर्यजन एक बार तो महर्षि के जीवन चरित्र रूपी गंगा के उद्गम स्थान से लेकर विलीन स्थान पर्यन्त यात्रा अवश्य करें। अर्थात् महर्षि के जीवन चरित्र को आद्योपान्त कम से कम एक बार तो अवश्यमेव पढ़ लें। जितनी बार आप ऋषि जीवन का अध्ययन करेंगे उतनी बार आप को एक अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। बार-बार दयानन्द गंगा में स्नान कीजिए और अपनी अपनी आत्मा को तथा अन्त:करण को पवित्र कीजिए।

कल्याण के मार्ग पर चलें

ले.—श्री पं. जगदीश राम जी आर्य मिलर गज लुधियाना

ओ३म्

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्या चन्द्र-मसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ।
ऋ. 5-51-15

पदार्थ—(स्वस्ति) कल्याण के (पन्थाम्) पन्थ का (अनुचरेम) हम अनुसरण करें। (सूर्या चन्द्रमसौ) सूर्य और चन्द्र के तुल्य (पुनर्ददता) बार 2 देने वाले दानशील (अघ्नता) पूर्ण अहिंसक) (जानता) पूर्ण ज्ञानी विद्वानों की (संगमेमहि) संगति के माध्यम से।

भावार्थ—हम सूर्य और चन्द्र के तुल्य अपने कल्याणकारी मार्गों पर सदैव चलते रहें। हम ऐसा कल्याणकारी आचरण अपने इन उपदेशकों और अध्यापकों की संगति में बैठकर तथा उन की शिक्षा दीक्षा से ही सीख सकते हैं। जो हमें विद्या का प्रकाश बार 2 देने वाले हो तथा जो स्वभाव से ही दानशील हैं। और जिनका व्यवहार पूर्ण अहिंसामय हो, जो मन, वाणी और कर्म के द्वारा कभी हिंसक व्यवहार न अपनाते हों और वह अपने विषय में पूर्ण और अतीव निपुण विद्वान् हों।

व्याख्या

इस वेद मन्त्र का अर्थ जब हम जीवन निर्माण के प्रकरण में करेंगे तो इस प्रकार होगा। इस मन्त्र में जो सूर्य और चन्द्र की उपमा दी गई है। उस पर विशेष रूप से ध्यान देना आवश्यक है।

इस वेद मन्त्र में ईश्वर से यही याचना की गई है कि हम सूर्य और चन्द्र के तुल्य सदा कल्याणकारी मार्गों का ही अनुसरण करते रहें। ऐसा हमें सामर्थ्य प्रदान कीजिए। इसमें विचारणीय यही तथ्य है कि सूर्य और चन्द्र में कौन 2 सी विशेषताएं हैं। हम भी उन्हीं विशेषताओं का अनुसरण करते हुए अपने कल्याणकारी मार्गों पर ही चलते रहें।

सूर्य और चन्द्र में हमें निम्न गुण स्पष्ट प्रतीत होते हैं। (क) नियमबद्धता (ख) समय का परिपालन (ग) सूर्य अपना ताप और प्रकाश तथा अपने रासायनिक प्रभावों का प्रदान और प्रसारण समस्त जड़ और चेतन जगत् को निरन्तर समान रूप में सर्वत्र करता रहता है। (घ) चन्द्र भी अपनी प्रकाशयुक्त आभा और शीतलता तथा अपना रासायनिक प्रभाव सभी वस्तुओं और प्राणि मात्र को बिना किसी भेद-भाव के निरन्तर अभाव रूप में सर्वत्र देता रहता है।

अत: हमें इस वेद मन्त्र के माध्यम से यही प्रेरणा और शिक्षा मिल रही है। कि हम अपनी दिनचर्या और जीवनचर्या की सभी क्रियाओं को करते हुए सूर्य और चन्द्र का पूरा-पूरा अनुकरण करते हुए नियम बद्धता तथा समय का परिपालन पूरी तत्परता और लग्न से निष्ठा पूर्वक सदैव करते रहें। अर्थात् अपना प्रत्येक कर्म नियमित रूप से और उसके निश्चित समय पर ही किया करें।

यदि हम इस भान्ति नियम पूर्वक और निश्चित समय पर अपने सभी कार्य करते रहने के अभ्यासी बन जाएंगे तो जहां हमारी कार्य सम्पन्नता यथा समय होती रहेगी। वहां हमारी मानसिक शान्ति में भी आशातीत और अभूत पूर्व दृढ़ता और स्थिरता भी परिपक्व होती जाएगी और हमारे साथ सभी सम्बन्धित व्यक्तियों की आत्म तुष्टि और सुखानुभूति भी स्थिर बनी रहेगी।

सूर्य और चन्द्र जिस प्रकार अपने गुणों के प्रसारणों से और उदारता पूर्वक उनके प्रदान से सभी जड़ और चेतन जगत् को समान रूप में लाभान्वित निरन्तर करते रहते हैं। इसी भान्ति हमें भी अपने उपार्जित ज्ञान और सामर्थ्य से प्राणिमात्र को बिना किसी भेद-भाव के निरन्तर लाभान्वित करते रहना चाहिए।

हमें अपने जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए जो मार्ग दर्शन लेना है वह अपने उन्हीं विद्वान् उपदेशकों और अध्यापकों से ही मिलेगा। जो स्वभाव से ही दानशील हों और जिन का अपना जीवन अहिंसा से ओत-प्रोत है और वह अपने विषय के परिपूर्ण विद्वान् और सफल व्याख्याता तथा प्रवक्ता भी हों। उन्हीं की संगति में बैठकर हमें अपने जीवन को प्रकाशित करना चाहिए।

—

वैवाहिक सूचना

एक 20 वर्षीय प्रज्ञाचक्षु एम, ए, म्यूजिक सरकारी हाई स्कूल में लगभग 1500 रुपए मासिक कमाने वाले अरोड़ा जाति वर के लिए साधारण पढ़ी-लिखी कन्या की आवश्यकता है।

—मूलचन्द वर्मा मन्त्री
आर्य समाज फाजिल्का

आर्य स. सांताक्रुज द्वारा वेद-वेदांग पुरस्कार

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई की साधारण सभा दिनांक 1?-6-8? ने कैप्टन देवरत्न आर्य के इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित किया कि आर्य समाज सान्ताक्रुज एक स्थाई पुरस्कार की घोषणा करे जिस के अन्तर्गत प्रतिवर्ष आर्य जगत् के एक विशिष्ट विद्वान् को उनकी वैदिक धर्म एवं आर्य समाज के प्रति की गई सेवाओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेतु आर्य समाज सान्ताक्रुज वेद-वेदांग पुरस्कार दिया जाए। इस अवसर पर पुरस्कृत विद्वान् को 21000 रुपए की थैली, अभिनन्दन पत्र रजत ट्राफी व शाल से सम्मानित किया जाए। विद्वान् का चयन एक समिति करेगी जिसमें आर्य समाज के प्रधान एवं महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा आर्यसमाज सान्ताक्रुज की अन्तरंग सभा द्वारा मनोनीत तीन सदस्य होंगे। इस अवसर पर सन् 198?-86 हेतु वार्षिक निर्वाचन बड़े सौहार्द पूर्ण वातावरण में सर्वसम्मति से निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री देवेन्द्र कुमार कपूर, उपप्रधान—श्री ओंकारनाथ आर्य, श्री चन्द्रभान मल्होत्रा, महामन्त्री—कैप्टन देवरत्न आर्य, मन्त्री—श्री विश्वभूषण आर्य, श्री नरेन्द्र कुमार पटेल, कोषाध्यक्ष-श्री कस्तूरीलाल जी मदान।

—कैप्टन देवरत्न मन्त्री

—

(4 पृष्ठ का शेष)

गोलीकांड में 4 हिन्दू ? मुसलमान मारे गए तथा 13 घायल एवं 20 लापता हुए।

गांधी ने 3 अप्रैल 1919 को इस बलिदान एवं धैर्य के लिए स्वामी श्रद्धानन्द को तार दिया और लिखा. रौलट कानून का विरोध करने में आपने तथा दिल्ली के लोगों ने जिस अनुकरणीय धैर्य से काम लिया है. उसके लिए मैं आपको तथा दिल्ली के लोगों को साधुवाद देता हूं। हम उसके पीछे निहित दमन की भावना का विरोध कर रहे हैं। यह कोई आसान काम नहीं है।

लेकिन वीरमगाव और अमृतसर में हुए दुःखदायी कांडों के बाद जब गान्धी ने सत्याग्रह स्थगित कर दिया तो स्वामी श्रद्धानन्द ने दिल्ली समिति भंग करके आंदोलन से अपना हाथ खींच लिया। स्वामी श्रद्धानन्द गान्धी की ओर से निराश हो गए और उन्होंने गान्धी के दृष्टिकोण का जोरदार विरोध किया। यह दोनों की महानता थी कि प्रेमभाव फिर भी बना रहा। गांधी ने "स्वामी जी के संस्मरण" में लिखा है कि जितना जोरदार उनका विरोध होता था उतना ही जोरदार उनका प्रेम होता था।

स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या से गांधी को बड़ा आघात लगा। गांधी कांग्रेस कमेटी की बैठक में भाग लेने के लिए गौहाटी जा रहे थे। उन्हें सोरभोग नामक एक छोटे से रेलवे स्टेशन पर लाला लाजपतराय का तार मिला। गांधी इस हत्या से स्तब्ध थे किन्तु उनके विचार में यह हत्या नहीं "वीरगति" थी। गांधी ने गौहाटी की 24 दिसम्बर 1926 की बैठक में इसे "अपूर्वमरण" एवं धन्य मृत्यु कहा और कामना की कि ऐसी मृत्यु हम सबको मिले।

26 दिसम्बर 1926 के अधिवेशन में गांधी ने स्वयं शोक प्रस्ताव रखा और उसमें स्वामी श्रद्धानन्द के देश प्रेम निष्ठा निर्भयता एवं अन्य गुणों की प्रशंसा की।

"यंग इण्डिया (30-12-1927) में" शहीद श्रद्धानन्द जी शीर्षक से लिखी अपनी श्रद्धांजलि में गांधी ने उन्हें वीरता का अवतार "धर्मवीर" एवं "योद्धा" कहा तथा लिखा, धर्म और सत्य" के लिए प्राण देने के कारण मृत्यु भी धन्य हो गयी।" गान्धी ने 9 जनवरी 1927 को बनारस में उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए गंगा स्नान किया और उस "महान् आत्मा" के कार्यों को पूरा करने की ईश्वर से प्रार्थना की।

महात्मा गांधी ने स्वामी श्रद्धानन्द के हत्यारे अब्दुल रशीद को दोषी न मानकर उन अखबारों एवं लोगों को उत्तरदायी ठहराया, जो स्वामी श्रद्धानन्द. लाला लाजपतराय और मदनमोहन मालवीय को "इसलाम् का शत्रु" घोषित कर रहे थे। गांधी ने अनेक बार स्पष्ट शब्दों में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द "इसलाम के शत्रु" नहीं हैं। गांधी ने कहा कि हिन्दू-मुसलमानों को इस हत्या से शिक्षा लेनी चाहिए और उनके रक्त से अपने-अपने हृदय का पाप धो देना चाहिए। गान्धी ने प्रतिशोध और बदले को भी धर्म विरोधी कहा और निर्देश दिया कि हिन्दुओं को आत्मसंयम रखना चाहिए।

महात्मा गांधी स्वामी श्रद्धानन्द को कुछ मामलों में असहमति के बावजूद अपना भाई, आदरणीय सहयोगी मानते हुए उनके गुणों के प्रशंसक बने रहे। अस्पृश्यता निवारण के लिए उन्होंने जो कार्य किए उनकी गांधी ने सदैव मुक्त कंठ से प्रशंसा की। यद्यपि दोनों देश भक्तों के क्षेत्रों एव कार्यप्रणाली में अन्तर था, लेकिन क्या यह संयोग ही था कि दोनों को एक जैसी वीरगति प्राप्त हुई।

—

आर्य समाज बड़ा बाजार पानीपत का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज बड़ा बाजार पानीपत का वार्षिक निर्वाचन वर्ष 1985-86 के लिए रविवार दिनांक 7-7-85 को आर्य समाज मन्दिर में सम्पन्न हुआ, सर्वसम्मति से निम्न सदस्य निर्वाचित हुए —

प्रधान—श्री रामानन्द सिंगला, उपप्रधान—श्री बाबूराम जी मित्तल, मन्त्री-श्री ठाकुरदास जी बत्रा, उपमन्त्री—श्री मदनमोहन जी, कोषाध्यक्ष—श्री कुलभूषण जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री दीपचन्द निर्मोही।

अन्य अन्तरंग सदस्यों को चुनने का अधिकार उपरोक्त अधिकारियों को दिया गया। इस चुनाव को सर्वसम्मति से कराने के लिए श्री दलीपसिंह जी आर्य जिन की अध्यक्षता में चुनाव सम्पन्न हुआ की भूरि-भूरि सराहना की गई।

—ठाकुरदास बत्रा
मन्त्री

—

लुधियाना में वैदिक सत्संग

आर्य युवक सभा लुधियाना और पार्कलेन वैलफेयर सोसायटी, सिविल लाईन लुधियाना के सहयोग से दिनांक 23-6-85 रविवार सायंकाल साढ़े तीन से साढ़े 8 बजे तक विशाल वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। प्रातः काल हवन-यज्ञ पंडित रामकुमार पुरोहित आर्य समाज फील्ड गंज द्वारा सम्पन्न कराया गया। पार्कलेन वैलफेयर सोसायटी की तरफ से ऋषि लंगर का आयोजन भी किया गया।

सायंकाल के समय आर्य युवक सभा लुधियाना की वेद प्रचार भजन मण्डली ने प्रभु भक्ति, देश भक्ति के गीतों पर आधारित बहुतही मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद कार्यक्रम प्रस्तुत किया। गीतों के माध्यम से राष्ट्र की एकता और अखण्डता को प्रमुख रखा गया।

उपस्थिति इतनी थी कि यह वैदिक सत्संग अपने आप ही वैदिक सम्मेलन बन गया।

—महेन्द्र प्रताप आर्य प्रधान

आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर में वेद प्रचार

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् भजनोपदेशक पं, सत्यपाल 'पथिक' जी 7-7-85 रविवार से 16-7-85 तक प्रतिदिन प्रातः काल 7-15 से 8-15 बजे तक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती की संगीतमय जीवन कथा करते रहे। कथा से पूर्व साढ़े छः बजे तक दैनिक सन्ध्या एवं यज्ञ होता रहा।

—रामरखा मल मन्त्री

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज रानी का तालाब फिरोजपुर का चुनाव 14-7-85 को श्री चमनलाल जी जुल्का की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री हुकमलाल जी महता, उपप्रधान—श्री वेद प्रकाश जी बजाज, मन्त्री...श्री जगदीशचन्द्र आर्य, उपमन्त्री—श्री मोहनलाल जी, कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश जी भाटिया,

—मन्त्री

शोक समाचार

विगत ज्ञात एयर इण्डिया के कनिष्क विमान के अटलांटिक महासागर में क्षति ग्रस्त होकर गिराए जाने तथा परिणामतः लगभग 329 यात्रियों के दुःखद निधन पर आर्य समाज संगरूर के सदस्यों द्वारा अपराधियों की तीव्र भर्त्सना और निन्दा की गई।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति प्रदान करे और उनके परिवारजनों को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

श्री वीरेन्द्र ...... तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन नं. 74250

रजि. नं. पो. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 18, 27 श्रावण सम्वत् 2042, तदनुसार 11 अगस्त 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

१५ अगस्त प्रति वर्ष अनेकों क्रान्तिकारियों की यादों को ताजा कर जाता है

क्रान्ति की प्रतिमा : दुर्गा भाभी

दुर्गा देवी भारतीय नारी की उच्चतम परम्परा का प्रतिनिधित्व करती हैं, क्रांतिकारी आन्दोलन में उन्होंने साहस, वीरता एवं त्याग के जो प्रतिमान कायम किए वे अनुकरणीय एवं अविस्मरणीय हैं ?

ले.—श्री शिव-प्रिया जी

दुर्गा भाभी यानी भगवती चरण की पत्नी ! दुर्गा देवी का जन्म 7 अक्तूबर, 1907 को इलाहाबाद में एक जज के यहां हुआ था। उन दिनों लड़कियों की शिक्षा-दीक्षा पर कोई खास ध्यान नहीं दिया जाता था, सो ग्यारह वर्ष की उम्र में ही दुर्गा देवी का ब्याह एक सरकारी उच्चाधिकारी के पन्द्रह वर्षीय पुत्र भगवती चरण बोहरा से कर दिया गया।

भगवती बाबू पंजाब के अग्रणी क्रान्तिकारियों में थे। लेकिन दुर्गा देवी को उन दिनों क्रान्ति से कोई मतलब नहीं था। हां, आजादी के दीवाने क्रान्तिकारियों से जरूर उन्हें स्नेह था। भगवती चरण के क्रान्तिकारी साथी दुर्गादेवी को भाभी कहते थे, सो वह भी एक ममतामयी भाभी की ही तरह अपने देवरों के सुख-दुःख की चिन्ता करती थी—क्रान्तिकारी इतिहास में इसके कितने ही उदाहरण मिल जाएंगे।

उन दिनों सरदार भगतसिंह पंजाब क्रान्तिकारी दल के नेता थे। कुछ लोगों ने एक बार उनसे शिकायत की कि भगवती पुलिस का जासूस है और क्रान्तिकारियों का भेद लेने भर के लिए दल में मिला हुआ है। सुनते-सुनते भगतसिंह को भी शक हो गया ...आखिर आदमी के मन की बात कौन जानता है। सरकारी अफसर का बेटा ठहरा, क्या पता बाप की तरह बेटे के दिल में भी अंग्रेजों की गुलामी थपेड़े मार रही हो। हो सकता है अंग्रेज सरकार की निगाहों में चढ़ने के लिए सचमुच जासूसी कर रहा हो। बस तुरन्त एक साथी को पिस्तौल पकड़ाते हुए आदेश सुना दिया, भगवती चरण जासूस है. उसे गोली मार दो।

भगतसिंह का आदेश टालने की हिम्मत दल के किसी सदस्य में नहीं थी। उस दिन शायद भगवती को गोली मार ही दी गई होती, लेकिन भगतसिंह ने सोच समझकर खुद ही अपना आदेश वापस ले लिया। आखिर एक रोज एक दूसरे साथी सुखदेव को बुला कर आदेश दिया 'आज भगवती दिन भर के लिए बाहर गया है। मौका अच्छा है तुम जाकर उस के कमरे की तलाशी लो। उसके जासूस होने का कोई प्रमाण मिलते ही मैं उसकी जान ले लूंगा।

सुखदेव के पहुंचते ही दुर्गा देवी ने स्नेह से पूछा, कैसे हो!'

सुखदेव कुछ देर का एकान्त चाहते थे सो बहाना बनाया जुकाम के कारण सिर और पूरा बदन दर्द में फटा जा रहा है।

दुर्गा भाभी एकदम चिन्तित हो उठी दुनिया भर के उपदेश देकर बोली, अच्छा लेट जाओ, मैं सिर में तेल डाल देती हूं।

लेकिन सुखदेव तो एकान्त चाहते थे, सो उसके लिए बहाना साथ लेते आए थे। जेब से जोशांदा की पुड़िया निकाल कर थमाते हुए कहा, तुम इसे पका दो, तब तक मैं सोना चाहता हूं।

दुर्गा भाभी फौरन सारा काम छोड़कर उठ पड़ी, रसोई की ओर जाती हुई बोली. अच्छा तुम चुपचाप उसके कमरे में लेटकर आराम करो, मैं अभी काढ़ा बनाकर लाती हूं।

सुखदेव की आंखें गीली हो उठीं। वह मोहभरी आंखों से दुर्गा भाभी को ताकते ही रह गए—कितनी स्नेहमयी और सीधी है। तबीयत खराब होने की बात सुनते ही काढ़ा बनाने दौड़ पड़ी, लेकिन अगर भगवती सचमुच जासूस हुआ तो...

तो...

दुर्गा भाभी कूट-पीस कर जोशांदा का काढ़ा बनाने में लगी थी और सुखदेव भगवती के कमरे में अन्दर से दरवाजा बन्द करके धड़कते मन से तलाशी ले रहा था लेकिन भगवती चरण न जासूस थे न उनके जासूस होने का कोई प्रमाण मिला, वह बच गए. यह संयोग ही था वरना अगर भगतसिंह ने बिना खोजबीन कराए भगवतीचरण को जासूस होने के अपराध में गोली मरवा दी होती तो एक ममतामयी भाभी का सुहाग छीनने और एक ईमानदार साथी की हत्या का दोष जीवन भर कचोटता रहता।

सचमुच क्रान्तिकारियों के प्रति दुर्गा भाभी के मन में अपार स्नेह था। उनके हित के लिए वह कुछ भी कर सकती थी।

सन् 1928 की बात है लाहौर में साईमन कमीशन का बहिष्कार करते समय जुलूस के नेता लाला लाजपतराय की पुलिस ने इतनी बेहरहमी से पिटाई की कि उन्हीं चोटों के कारण बाद में लाला जी की मृत्यु हो गई। भगतसिंह आदि क्रान्तिकारियों ने बदला लेने का निश्चय किया और दिन-दिहाड़े अंग्रेज सार्जेण्ट साण्डर्स को गोली से उड़ा दिया, इसके साथ ही सारे शहर में एक परचा भी चिपका दिया गया था, जिसमें सरकार को चुनौती दी गई थी यह देशभक्त लाला जी की मौत का बदला है।

अंग्रेज सरकार ने बौखलाकर क्रान्तिकारियों को पकड़ने के लिए पूरे लाहौर में पुलिस का जाल बिछा दिया। मंजाल थी कि उसकी निगाह से बचकर एक चींटी भी निकल जाए। फिर भी करीब-करीब सभी क्रान्तिकारी वेश बदल कर पुलिस की आंखों में धूल झोंककर बच निकले। लेकिन भगतसिंह को धोखा देकर निकालना जरा कठिन काम था। सरदार होने के कारण उनकी दाढ़ी-मूंछ से पुलिस तो क्या कोई बच्चा भी उन्हें पहचान लेता !

लेकिन उनके बच निकलने का भी एक उपाय सूझ ही गया। सुखदेव फौरन दुर्गा भाभी के पास पहुंचे और बिना पूरी बात बताए कहने लगे किसी को बचाना है। तुम्हे उसके साथ उसकी बीबी बनकर सफर करना होगा।

ठीक है, चली जाऊंगी। दुर्गा भाभी फौरन तैयार हो गई। उन्होंने एक बार भी यह नहीं पूछा कि किसके साथ कहां जाना होगा। जैसे बिना कहे ही समझ गई हो कि सुखदेव कह रहा है तो किसी क्रान्तिकारी को बचाने के लिए ही यह नाटक होगा और एक क्रान्तिकारी की जान बचाने के लिए वह उसकी बीबी बनना तो क्या कुछ भी कर सकती थीं।

उसी रात पंजाब के फर्स्ट क्लास डिब्बे में एक नौजवान अंग्रेज जोड़ा सवार हुआ। क्लीन शेव साहब पूरे सूट-बूट में था, सिर पर थोड़ा आगे को झुका हुआ फैल्ट हैट आंखों पर चश्मा, अंगुलियों में फसा हुआ सिगार और चेहरे के सामने फैला अंग्रेजी अखबार। पास ही में सजी-संवरी उसकी मेम बैठी थी और छोटा-सा प्यारा-प्यारा बेटा बर्थ पर ऊंघ रहा था। उस अंग्रेज-परिवार को देख कर कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि दाढ़ी मूंछ मुड़

(शेष पृष्ठ 5 पर)

शंकाओं के घेरे में—हवन यज्ञ

ले.—श्री यशपाल जी आर्य बन्धु, आर्य निवास
चन्दन नगर मुरादाबाद

विज्ञान के इस युग में मनुष्य का यह स्वभाव बन गया है कि वह प्रत्येक बात में क्या—क्यों—कैसे ? आदि विभिन्न शंकाएं विकसित कर उनका वैज्ञानिक आधार पर समाधान खोजना चाहता है। अन्वेषण की इस पद्धति को आज के वैज्ञानिकों ने वैज्ञानिक पद्धति का नाम दे रखा है। वैसे यह प्रवृत्ति कोई अनुचित भी नहीं। हमें किसी भी बात को मानने का कोई न कोई वैज्ञानिक आधार अवश्य ही होना चाहिए। हवन-यज्ञ इसका अपवाद नहीं। इस पर लोगों ने नाना प्रकार की शंकाएं की हैं कर रहे हैं और करते रहेंगे। यह आर्य समाज का दायित्व है कि हवन-यज्ञ पर उठने वाली शंकाओं का समुचित समाधान प्रस्तुत करे क्योंकि हवन-यज्ञ के प्रचार-प्रसार का दायित्व उसी का है किसी अन्य का नहीं।

संसार में सभी लोगों का दृष्टिकोण वैज्ञानिक नहीं हो सकता। भले ही विज्ञान कितनी ही उन्नति कर लें। हर एक व्यक्ति वैज्ञानिक नहीं हो सकता। न ही उसका दृष्टिकोण ही अनिवार्यतः वैज्ञानिक हो सकता है। पर किसी भी बात पर शंका भी कर सकते हैं जिनका दृष्टिकोण वैज्ञानिक है ही नहीं। ऐसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण विहीन लोगों ने हवन-यज्ञ पर कोई कम शंकाएं नहीं कीं। आज भी लोग यह कहते नहीं थकते कि इस भीषण महंगाई में जब घी-दूध सूंघने को नहीं मिलते। यह आर्य समाजी लोग इसे अग्नि में फूंक-फूंक कर स्वाहा (पंजाबी में स्वाह-अर्थात् राख) कर रहे हैं। वे युक्ति देते हैं कि यदि इस घी को कोई खाता तो उसको अवश्यमेव लाभ होता। किन्तु जलाकर तो उसे नाश कर देना ही है। महर्षि के सम्मुख भी ऐसी शंकाएं अवश्यमेव आई होंगी तभी उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में इसकी चर्चा की है।

प्रश्न—चन्दनादि घिस के किसी को लगाने या घृतादि खाने को देवे तो बड़ा उपकार है।

अग्नि में डालकर व्यर्थ नष्ट करना बुद्धिमानों का काम नहीं।

उत्तर—जो तुम पदार्थ विद्या जानते तो कभी ऐसी बात न कहते। क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नहीं होता। देखो, जहां होम होता है, वहां दूर से दूर देश में स्थित पुरुष के नासिका से सुगन्ध का ग्रहण है, वैसे दुर्गन्ध का भी। इतने से ही समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होके के वायु के साथ दूर में जाकर दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है।

प्रश्न—जब ऐसा ही है तो केशर, कस्तूरी, सुगन्धित पुष्प और अतर आदि के घर रखने से सुगन्धित वायु होकर सुखकारक होगा।

उत्तर—उस सुगन्ध का वह सामर्थ्य नहीं है कि गृहस्थ वायु को बाहर निकाल कर शुद्ध वायु को प्रवेश करा सके क्योंकि उसमें भेदक शक्ति नहीं है और अग्नि ही का सामर्थ्य है कि उस वायु और दुर्गन्ध-युक्त पदार्थों को छिन्न-भिन्न और हल्का करके बाहर निकाल कर पवित्र वायु को प्रवेश करा देता है।

हवन यज्ञ का वैज्ञानिक आधार यह है कि हवन सामग्री के प्रत्येक पदार्थ में रोग निवारण तथा पुष्टि वर्धन की शक्ति विद्यमान है परन्तु वह प्रकट तभी होती है कि जब वह स्थूल से सूक्ष्म रूप धारण कर लेती है। कारण कि स्थूल पदार्थ के परमाणु जब सूक्ष्म रूप धारण करते हैं तभी उनके भीतर निहित शक्ति प्रकट हो पाती है। यह कार्य अग्निहोत्र के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार से भी संभव नहीं है। अग्नि द्वारा सूक्ष्म परमाणुओं में विभक्त कर दिए जाने पर उस औषधि के गुण और परिमाण दोनों में आश्चर्यजनक वृद्धि हो जाती है। उदाहरण स्वरूप हम एक मिर्च को ही ले लेते हैं। यह मिर्च यदि घर में कहीं पड़ी हो तो किसी को उसका पता तक भी नहीं चलता, क्योंकि स्थूल रूप में एक स्थान पर पड़े होने से उसकी धसक नहीं उत्पन्न होती। वही मिर्च जब हम इमामदस्ते में कूटने लगते हैं तो उसकी धसक उठने लगती है एवं कूटने वाला तथा आस-पास के व्यक्ति उसके प्रभाव से छींकने लगते हैं। ऐसा क्यों ? निश्चय ही कूटे जाने से मिर्च के सूक्ष्म कण वायु के संयोग से इधर-उधर फैल जाते हैं। किन्तु जब हम किसी एक मिर्च को अग्नि में डाल देते हैं तो दूर-दूर तक के लोग उसके धुएं से परेशान हो उठते हैं एवं छींकने लग जाते हैं। स्पष्ट है कि अग्नि में पड़कर मिर्च के परमाणु सारे घर में बिखर जाते हैं। मनु जी तो यहां तक कहते हैं कि—अग्नौ हुतं हविः सम्यक् आदित्यं उपतिष्ठति। अर्थात् अग्नि में डालने से हवि सूक्ष्म होकर सूर्य तक फैल जाती है।

स्पष्ट है कि स्थूल पदार्थों में निहित परमाणु जब तक अलग नहीं होते उनमें शक्ति का विस्फोट नहीं होता। आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली में प्रयुक्त की जाने वाली विभिन्न भस्में तथा यूनानी के कुश्ते सूक्ष्मीकरण के इसी सिद्धान्त के आधार पर ही तैयार किये जाते हैं। हम देखते हैं कि लोह, रजत, कांसा, सीसा आदि विभिन्न धातु अग्नि के संयोग से अत्यन्त गुणकारी जीवनप्रद औषधियों का रूप ले लेती हैं। जिसमें अग्नि की जितनी अधिक पुट होती है वह उतनी ही अधिक शक्तिशाली मानी जाती है।

यज्ञाग्नि औषधियों को सूक्ष्म कर वायु के सहयोग से आकाश मण्डल को सुवासित एवं निर्दोष कर देती है। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द ने एक लौकिक उदाहरण देकर विषय को और भी सरल कर दिया है। वे लिखते हैं कि—जैसे दाल और शाक आदि में सुगन्ध द्रव्य और (घृत) इन दोनों को चमचे से अग्नि पर तपा के उनमें छौंक देने से वे सुगन्धित हो जाते हैं क्योंकि उस सुगन्ध द्रव्य और घी के अणु उनको सुगन्धित करके दाल आदि पदार्थों को पुष्टि और रुचि बढ़ाने वाले कर देते हैं वैसे ही यज्ञ से जो भाप उठती है वह भी वायु और वृष्टि के जल को निर्दोष और सुगन्धित करके सब जगत् को सुख करता है। (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका वेद विषय) इतना ही नहीं हवन यज्ञ की उपादेयता एवं उपयोगिता को बतलाते हुए महर्षि लिखते हैं कि—'ब्रह्माण्ड में से संचार करने वाला जो वायु है वही जीव का हेतु है। अन्तर वायु द्वारा ठीक-ठीक व्यापार होवे इसलिए बाहर का ब्रह्माण्ड वायु शुद्ध रहना चाहिए। ब्रह्माण्ड वायु शुद्ध करने के लिए यज्ञ कुण्ड में घृत, कस्तूरी, केशरादि, सुगन्धित पुष्टिकारक द्रव्यों का हवन करना चाहिए। (देखें—पूना प्रवचन, यज्ञ और संस्कार विषयक)

हवन एक छोटी सी कृति है इससे ब्रह्माण्ड वायु कैसे शुद्ध होगा ? इसके समाधान में महर्षि लिखते हैं कि—इसका समाधान यह है कि सौ घड़े रायते में थोड़ी सी ही बघार से रुचि आ जाती है यह प्रत्यक्ष है। इसकी जैसी उत्पत्ति समझी जाती है तद्वत यह प्रकार भी है महर्षि आगे लिखते हैं—कोई ऐसी शंका करे कि होम तो यहां करो और अमेरिका में उसका परिणाम कैसे होगा ? तो उस का समाधान यह है कि वायु द्वारा शुद्धि सर्वत्र फैले यह वायु का धर्म है।' (पूना-प्रवचन वही) और वायु अपने धर्म का निर्वाह करता ही है। मनु जी का प्रमाण हम पूर्व में दे ही चुके हैं कि अग्नि में डाली गई हवि सूक्ष्म होकर सूर्य तक फैल जाती है और फिर सूर्य उसे समस्त सौर मण्डल में प्रवाहित कर देता है।

जब हवन वायु जल आदि की शुद्धि के लिए किया जाता है तो फिर इसमें मन्त्रोच्चारण का क्या प्रयोजन है। इसका समाधान महर्षि के शब्दों में इस प्रकार है कि—जैसे हाथ से होम करते हैं आंख से देखते और त्वचा से स्पर्श करते हैं वैसे ही वाणी से वेद मन्त्रों को भी पढ़ते हैं। क्योंकि उनके पढ़ने से वेदों की रक्षा, ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना होती है। तथा होम से जो-जो फल होते हैं उनका स्मरण भी होता है। वेद मन्त्रों के बारम्बार पाठ करने से वे कंठस्थ भी रहते हैं और ईश्वर का होना भी विदित होता है कि कोई नास्तिक न हो जाए क्योंकि ईश्वर की प्रार्थना से ही सब कर्मों का आरम्भ करना होता है। सो वेद मन्त्रों के उच्चारण से यज्ञ में तो उसकी प्रार्थना सर्वत्र होती है। (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका वेद विषय)

यज्ञ में वेद मन्त्रों के पाठ से एक और लाभ भी है। वह यह कि हवन कुंड के चारों ओर बैठे याज्ञिकगण जब वेद पाठ करते हैं तो उससे स्वतः ही एक प्रकार का प्राणायाम (दीर्घ-श्वसन) होने लग जाता है। परिणाम स्वरूप यज्ञीय सौरभयुक्त प्राणप्रद वायु वेद पाठियों के फेफड़ों में अच्छी तरह भर जाता है और उन्हें स्वस्थ और निरोग बना देता है। साथ में यह भी कि वेद मन्त्र के बोलने में जितना समय लगता है उतने समय में पहले डाली हुई आहुति अच्छी तरह भस्म हो जाती है।

यह तो रही वे शंकाएं जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण विहीन लोगों की ओर से प्रायः उठाई जाती हैं। किन्तु हवन यज्ञ वैज्ञानिक शंकाओं से भी मुक्त नहीं है। सबसे बड़ी आपत्ति जो वैज्ञानिक आधार पर की जाती है, वह है कि हवन यज्ञ से कार्बन डाई-आक्साईड गैस उत्पन्न होती है कि जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है, इस बात से तो कोई इन्कार नहीं कर सकता कि अग्नि के जलाने से कार्बन डाय आक्साईड गैस नहीं उत्पन्न होती। किन्तु देखना यह है कि क्या हवन यज्ञ से केवल कार्बन-डायआक्साईड गैस ही उत्पन्न होती है या अन्य कोई स्वास्थ्यप्रद गैसें भी उत्पन्न होती हैं और साथ में यह भी कि क्या कार्बन डाई आक्साईड गैस इतनी हानिकारक गैस है कि जिसके भय से हवन यज्ञ से मिलने वाले अन्य अनेकों लाभ को भी छोड़ दिया जाए।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य समाज में अनुशासन की आवश्यकता

कोई भी संस्था चाहे राजनैतिक हो या धार्मिक प्रगति नहीं कर सकती यदि उसके सदस्यों में अनुशासन न हो। महर्षि दयानन्द सरस्वती बहुत दूरद्रष्टा थे, इसलिए उन्होंने जहां आर्य समाज को स्थापना की उसके साथ तीन और सभाओं के निर्माण का आदेश भी दे दिया। धर्मार्य सभा, विद्यार्य सभा और राजार्य सभा। जहां तक धर्म प्रचार और संगठन का प्रश्न है वह आर्य समाज के जिम्मे था। परन्तु स्वामी जी महाराज यह समझते थे कि धार्मिक सिद्धान्तों पर कई बार मतभेद हो जाते हैं उन्हें समाप्त करने के लिए उन्होंने धर्मार्य सभा बनाने का आदेश दिया था। वह यह भी जानते थे कि यदि आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में कुछ काम करना है तो वहां भी उसे कुछ नियन्त्रण रखना पड़ेगा। इसलिए उन्होंने विद्यार्य सभा के संगठन का निर्देश दिया।

आर्य समाज एक धार्मिक संस्था है इसका सक्रिय राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उसकी देश की राजनीति में कोई रुचि नहीं है महर्षि दयानन्द जी ने अपनी अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश में के छटे समुल्लास में कई राजनैतिक सिद्धान्तों का यदि उल्लेख किया है तो केवल इसलिए कि वह चाहते थे कि आर्य जन सक्रिय राजनीति की दल दल में फंसे बिना देश की राजनीति की तरफ अपना ध्यान रखें और जहां तक सम्भव हो सके अपने संगठन द्वारा उसे प्रभावित करें। इसी उद्देश्य से उन्होंने राजार्य सभा का विचार भी आर्य जनता को दिया था।

आर्य समाज की स्थापना और उसके पश्चात् इन तीन सभाओं का निर्माण यह केवल इसलिए किया गया था कि वैदिक विचार धारा में निष्ठा रखने वाले व्यक्ति अपना एक संगठन बनाएं और उनके सामने समय समय पर जो समस्याएं पैदा होती रहें उनका समाधान अपनी इन संस्थाओं के द्वारा करते रहें। दूसरे शब्दों में महर्षि दयानन्द अनुशासन को बहुत अधिक महत्व देते थे। यदि आज तक आर्य समाज कुछ प्रगति कर सका है तो उसका एक कारण यह भी है कि वह पूर्णतया अनुशासन बद्ध रहा है। हम यह भी जानते हैं कि आर्य समाज में समय समय पर नेताओं में मतभेद भी पैदा होते रहे हैं। उनके कारण पहले आर्य समाज के विशेष कर पंजाब में दो ग्रुप बन गए थे एक गुरुकुल विभाग दूसरा कालेज विभाग। परन्तु वह एक प्रकार से सिद्धान्तिक मतभेद थे इसलिए उन्होंने आर्य समाज की प्रगति पर कोई अधिक प्रभाव न किया था। दूसरा कारण यह भी था कि आर्य समाज के नेता निस्वार्थ भावना से काम किया करते थे। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जो पहले लाला मुन्शीराम फिर महात्मा मुन्शीरामजी के नाम से प्रसिद्ध हुए थे और दूसरी ओर महात्मा हंस राज जी। यह दोनों महानुभाव तपस्या और त्याग की मूर्ति थे। इन्होंने अपने लिए आर्य समाज से कुछ न मांगा था। परन्तु जो कुछ अपने पास था उसे भी आर्य समाज को दे दिया। उनके जो साथी थे वह भी प्राय: इसी स्तर के हुआ करते थे। यही कारण था कि आर्य समाज पंजाब में एक बहुत शक्तिशाली और प्रभावशाली संस्था बन गई थी। यह केवल संस्था ही न थी एक बहुत बड़ा आन्दोलन था। धर्म प्रचार और समाज सुधार के लिए जब भी कोई इतिहासकार इस देश का इतिहास लिखता है तो वह देश के सामाजिक पुनरुत्थान के लिए और धार्मिक जागृति के लिए आर्य समाज का जो योगदान था उस का अवश्य वर्णन करता है। यह सब कुछ केवल इसलिये हुआ कि आर्य समाज अनुशासन बद्ध होकर चलता रहा। अब उसमें कुछ परिवर्तन आ रहा है इसलिए आर्य समाज शिथिल होता जा रहा है। आज हमारे इतिहास में आर्य समाज का वह उल्लेख नहीं होता जो पहले हुआ करता था। हमें अपनी कमजोरी को मानना चाहिए कि आज आर्य समाज इस देश के सामाजिक और धार्मिक इतिहास में कहीं भी नहीं है। हमारे देश में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और विश्व हिन्दू परिषद् जैसी संस्थाओं का अधिक प्रचार होता है। विश्व हिन्दू परिषद् में लगभग पांच वर्ष पहले यह घोषणा की थी कि वह पांच करोड़ रुपये हिन्दू संगठन के लिए इकट्ठा करेगा और उसने कर लिया। इसी प्रकार की एक घोषणा आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा की ओर से भी की गई थी, परन्तु पांच लाख भी एकत्रित नहीं कर सकी। यह शिथिलता आज आर्य समाज में सारे देश में हो है। बल्कि जो आर्य समाजें विदेशों में हैं वह अधिक सक्रिय और अधिक शक्तिशाली हैं। नैरोबी, लन्दन, मौरिशस और दक्षिण अफ्रीका की जो आर्य समाजें हैं। वह इस देश की आर्य समाजों से अधिक संगठित और प्रभावशाली हैं। यह हमारे लिए कोई बहुत सन्तोषजनक स्थिति नहीं है कि हम पिछड़ रहे हैं। कठिनाई यह है कि आज आर्य समाज में अनुशासन की कमी है और आर्य समाज में अब उस स्तर के नेता नहीं मिलते जो आज से पच्चास-साठ वर्ष पहले मिला करते थे। आज के नेता तो स्वयं धड़ाबन्दी को प्रोत्साहन देते हैं। अपने निजी स्वार्थों के लिए वह अपनी संस्थाओं में विघटन पैदा करते हैं। यह स्थिति बहुत सन्तोषजनक नहीं है और इसे देखकर कई बार आर्य समाज का भविष्य बहुत धूमिल दिखाई देता है। मैं कई बार यह लिख चुका हूं कि अब वह समय आ गया है जब आर्य समाज के नेताओं को बैठकर सोचना चाहिए कि अब आर्य समाज को आगे कैसे चलाया जाए। जो कार्यक्रम आर्य समाज ने पच्चास वर्ष पहले देश की जनता के सामने रखा था उसे तो सभी ने अपना लिया। अब हम कोई नया कार्यक्रम नही दे सके। आर्य समाज की जन्म शताब्दी भी समाप्त हो गई और महर्षि निर्वाण शताब्दी भी समाप्त हो गई. लेकिन आर्य समाज के नेता इसे कोई नई दिशा न दिखा सके। दिखाए भी कौन? किसी के पास इसके लिए समय हो तो वह इस पर विचार करे और जब नेता ही कोई नई दिशा नहीं दिखा सकें तो आर्य समाज के अनुशासन की सुरक्षा कौन करेगा।

—वीरेन्द्र

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का सहायता कोष

आर्य जनता को याद होगा कि लगभग पांच-सात वर्ष पहले हमने सभा में सहायता कोष खोला था एक गुम नाम व्यक्ति ने पांच हजार रुपए मुझे दिए थे जो मैंने सभा को दे दिए थे। इसके पश्चात् कुछ और व्यक्तियों ने भी दान दिया था और लगभग 15 हजार रुपया हो गया था। वह हमने धीरे 2 पीड़ितों की सहायता के लिए दे दिया। इस समय हमारे पास ऐसा कोई कोष नहीं जहां से हम पीड़ित व्यक्तियों की सहायता कर सकें और आज उसकी बहुत आवश्यकता है पंजाब में जो व्यक्ति बाढ़ग्रस्त हुए हैं उनकी सहायता की आवश्यकता है। इस समय सभा ने अपने कोष से साढ़े 8 हजार रुपया सहायता के लिए दिया है और भी जहां 2 आवश्यकता होगी सभा देगी। इसके अतिरिक्त कुछ आर्य समाजें स्वयं कार्य कर रही हैं। उनके भी साधन सीमित हैं। इसलिए सभा का सहायता कोष बनाना आवश्यक है जिसमें से समय-समय पर सभा उन व्यक्तियों की सहायता कर सके जो बिल्कुल निस्सहाय हों और जिनका कोई सहारा नहीं। मैं पंजाब की सभी आर्य समाजों से यह निवेदन करूंगा कि वह सभा के सहायता कोष में जो कुछ भेज सकती हैं भेजें। प्रत्येक नगर में ऐसे दानी महानुभाव होते हैं जो निस्सहाय व्यक्तियों की सहायता करते रहते हैं उन्हें भी मिलकर कहना चाहिए कि वह सभा के सहायता कोष के लिए दान दें। किसी गरीब की, बीमार, बूढ़े, अनाथ और निस्सहाय व्यक्ति की सहायता करना सबसे बड़ा पुण्य है। जो आर्य समाजी अपने पास से कुछ दे सकते हैं उन्हें भी इसके लिए देना चाहिए। हम लोगों की जितनी सेवा करेंगे आर्य समाज का उतना ही यश बढ़ेगा और उसके साथ उसका प्रचार भी होगा।

—वीरेन्द्र

व्याख्यान माला—

धर्म महात्म्य धर्म का स्वरूप

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर

(गतांक से आगे)

यौवनं जीवितं चित्तञ्छाया लक्ष्मीश्च स्वामिता ।
चञ्चलानि षडेतानि ज्ञात्वा धर्मरतो भवेत् ॥19॥

यौवन, जीवन, चित्त, छाया, लक्ष्मी और स्वामित्व इन छ: को चंचल जानकर धर्म में लीन रहे ।

सर्वमात्मनि संपश्येत्सच्चासच्च समाहित: ।
सर्वमात्मनि संपश्यन्नधर्मे कुरुते मन: ॥20॥

मनुष्य समाहित चित्त होकर सब सत् और असत् को उस परमात्मा के ही अधीन समझे । क्योंकि सब कुछ परमात्मा में ही समाहित मानते हुए वा देखते हुए अर्थात् उसे सर्वव्यापक मानते हुए मनुष्य का मन अधर्म की ओर प्रवृत्त नहीं होता ।

दिवसेनैवतत्कुर्याद्येन रात्रौ सुखं वसेत् ।
अष्टमासेन तत्कुर्याद्येन वर्षा: सुखं वसेत् ॥31॥

मनुष्य को चाहिए कि वह दिन भर कार्य करे जिससे रात्री सुखमय व्यतीत हो तथा वर्ष भर में आठ माह सत्कार्य करे जिससे वर्षा ऋतु के चार माह सुखमय व्यतीत हों ।

पूर्वे वयसि तत्कुर्याद्येन वृद्ध: सुखं वसेत् ।
यावज्जीवेन तत्कुर्याद्येनामुत्र सुखं वसेत् ॥22॥

प्रथम युवावस्था में वह उत्तम कर्म करे जिससे वृद्धावस्था सुखमय व्यतीत हो तथा जीवन पर्यन्त वह शुभ कार्य करे जिससे परलोक सुखी हो ।

धर्म एव प्लवो नान्य: स्वर्गं द्रौपदि गच्छताम् ।
सैव नौ: सागरस्येव वणिज: पारमिच्छत: ॥23॥

समुद्र के पार जाने की इच्छा रखने वाले बनिए की नौका की तरह हे द्रौपदी ! स्वर्ग में पार जाने वाले मुमुक्षु लोगों के लिए धर्म ही जहाज है और कोई वस्तु नहीं । यही धर्म रूपी नौका सबको पार उतारने वाली है ।

अफलो यदि धर्म: स्याच्चरितो धर्मचारिभि: ।
अप्रतिष्ठे तमस्येतज्जगन्मज्जेदनिन्दिते ॥24॥

यदि धर्मात्माओं द्वारा आचरित धर्म निष्फल हो जाए तो यह सारा जगत् बिना किसी की निन्दा में ही अप्रतिष्ठित अधर्मान्धकार में डूब जाए ।

वेद: स्मृति: सदाचार: स्वस्य च प्रियमात्मन: ।
एतच्चतुर्विधं प्राहु: साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥25॥

वेद, स्मृति सदाचार और आत्म सन्तुष्टि ये चार प्रकार का साक्षात धर्म का लक्षण कहा गया है ।

श्रुति स्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन्हि मानव: ।
इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम् ॥26॥

जो मानव वेद तथा स्मृति विहित धर्म का अनुष्ठान करता है वह इस संसार में कीर्ति तथा मरने के पश्चात् परलोक में सर्वोत्तम सुख को प्राप्त होता है ।

सुखितस्य दु:खितस्य च संसारे धर्म एव तव कार्य: ।
सुखितस्य तदभिवृद्धयै दु:खभुजस्तदुपघाताय ॥27॥

हे मानव ! तेरा इस संसार में सुख अथवा दु:ख में धर्मानुष्ठान करना ही कार्य है । क्योंकि धर्म सुखी व्यक्ति के सुख की वृद्धि के लिए और दु:ख भोगते हुए मनुष्य के दु:ख के विनाश के लिए होता है ।

येषां च बहव: शूराज्ञातयो धर्ममाश्रिता: ।
ते जीवन्ति सुखं लोके कर्वन्ति च महद्यश: ॥28॥

जिनकी बहुत सी शूरवीर जातियां धर्म पर आश्रित हैं वही लोग संसार में सुख पूर्वक जीते हैं और महान् यश को प्राप्त करते हैं ।

विद्या रूपं धनं शौर्यं कुलीनत्वमरोगता ।
राज्यं स्वर्गश्च मोक्षश्च सर्वं धर्म्मादवाप्यते ॥29॥

विद्या, रूप धन, शौर्य, कुलीनता, निरोगता, राज्य, स्वर्ग और मोक्ष ये सभी धर्म के द्वारा प्राप्त होते ।

शक्तिमानप्यशक्तोऽसौ धनवानपि निर्धन: ।
श्रुतवानपि मूर्खश्च यो धर्मविमुखो नर: ॥50॥

जो मनुष्य धर्म से विमुख है वह धनवान् होते हुए भी निर्धन है । शक्तिवान् होते हुए भी अशक्त है तथा विद्वान् होते हुए भी मूर्ख है ।

धर्मादपेतं यत्कर्म यद्यपि स्यान्महाफलम् ।
न तत्सेवेत मेधावी नहि तद्धितमुच्यते ॥31॥

धर्म से रहित कर्म चाहे महान् फल देने वाला भी क्यों न हो तो भी बुद्धिमान् पुरुष उसका सेवन न करे क्योंकि उससे कोई हित नहीं हो सकता ।

परेषां नो धनं हार्यम् धर्म एष सनातन: ।
मन्यन्ते बलवन्तस्ते दुर्बलै: सप्रकीर्तितम् ॥32॥

दूसरों के धन का अपहरण न करना ही सनातन धर्म है । इसलिए कभी भी पर-धन हरण नहीं करना चाहिए, ऐसे लोग बलवान् नहीं माने जाते, क्योंकि बलवान् तो वही पुरुष माने जाते हैं जिन्होंने दुर्बलों की सहायता करके कीर्ति प्राप्त की हो ।

न ह्यत्यन्तं बलवन्तो भवन्ति सुखिनोऽपि वा ।
तस्मादनार्जवे बुद्धिर्न कार्या ते कदाचन ॥33॥

अत्यन्त बलवान् व्यक्ति भी सुखी नहीं होते, इसलिए कुटिलता युक्त कर्मों में कभी बुद्धि को नहीं लगाना चाहिए अपितु धर्म युक्त कार्य ही करें ।

दातव्यमित्ययं धर्म उक्तो भूतहिते रतै: ।
धनयुक्तो मतो दाता कृपणो वै तत: परम् ॥34॥

दान देना चाहिए. यही धर्म है ऐसा भूत प्राणियों का हित चाहने वाले महा पुरुषों ने कहा है । इसलिए दान देने वाला ही धनवान् माना गया है । उससे भिन्न अर्थात् दान न देने वाले तो कृपण-कंजूस ही माने जाते हैं ।

वेदोदितं स्वकं कर्म नित्यं कुर्यादतन्द्रित: ।
तद्धि कुर्वन्यथाशक्ति प्राप्नोति परमां गतिम् ॥35॥

मनुष्य को वेदों द्वारा कहे गये अपने करने योग्य कर्म बिना आलस्य के नित्य करने चाहिए क्योंकि यथा शक्ति उस वेदोक्त को करता हुआ मनुष्य ही परम गति को प्राप्त होता है ।

धर्मो माता पिता चैव धर्मो बन्धु सुहृत्तथा ।
धर्म: स्वर्गस्य सोपानं धर्मात्स्वर्गमवाप्यते ॥36॥

धर्म ही माता-पिता, बन्धु अथवा मित्र है, धर्म ही स्वर्ग की सीढ़ी है । धर्म से ही स्वर्ग (सुख) को पाया जाता है ।

(क्रमश:)

जात-पात की उलझन

ले.—प्रा. श्री भद्रसेन जी, होशियारपुर

सब अपने चारों ओर अनेक प्रकार के पदार्थ देखते हैं। इन में रूप, रंग, गुण, स्वभाव आदि की विविधता तथा विभिन्नता दृष्टिगोचर होती है। ये जड़—चेतन या प्राणी-अप्राणी रूप में दो प्रकार के हैं। प्राणों की सत्ता कुछ में स्पष्ट है, तो कुछ में अस्पष्ट है। प्राण धारण से ही किसी के जीवन की पहचान होती है जीने की इच्छा सभी प्राणियों में स्वाभाविक है और सभी जीना चाहते हैं। इसी लिए जीवन से प्यार करते हैं। अत: एव जीवन के लिए जरूरी भूख-प्यास, विश्राम, भय, साथी का साथ आदि स्वाभाविक इच्छाओं की पूर्ति के लिए पूर्ण प्रयास करते हैं।

प्राणी, अप्राणी दोनों ही प्रादुर्भाव की कहानी से जुड़े हुए हैं। कुछ के प्रादुर्भाव की प्रक्रिया प्रत्यक्ष होती है, तो कुछ की परोक्ष पुनरपि प्रत्येक प्रादुर्भूत पदार्थ जन्म, सत्ता, परिवर्तन, वृद्धि आदि भाव विकारों के फेर में पड़ता है। किसी प्राणी के प्रादुर्भाव की कहानी ही प्रस्तुत प्रसंग से संपृक्त है। जात, जाति, जन्म आदि शब्द जनि प्रादुर्भाव पदा होना, प्रकट होना। धातु से बनते हैं। प्रादुर्भूत पदार्थों में से बहुत सारे अनेक रूप में परस्पर समान होते हैं। कुछ आकृति, वर्ण की दृष्टि से कुछ मूल प्रकृति कच्चे माल की समानता के कारण आपस में एक से होते है, तो कुछ जन्म प्रक्रिया की सदृशता से एक से परिलक्षित होते है।

जाति की परिभाषा—

पदार्थों में प्राप्त होने वाली समानता सामने रख कर वैशेषिक दर्शन में सामान्य पदार्थ का चित्रण किया है। वहां सामान्य का दूसरा नाम जाति है, जिस के पर और अपर दो भेद हैं। जैसे कि गाय, भैंस, ऊंट, बकरी, शेर आदि सभी पशु हैं। यह पशु शब्द सब को अपने में समेटने के कारण व्यापक अर्थ रखता है, पर गाय, भैंस आदि अपने-अपने वर्ग तक सीमित होकर प्रयुक्त होते हैं। व्यापक अर्थ को बताने वाला शब्द पर सामान्य और उस की अपेक्षा सीमित अर्थ को बताने वाला शब्द अपर सामान्य में परिगणित होता है।

वैशेषिक की अपेक्षा न्याय दर्शन (2,2,68) में जाति शब्द पर कुछ अधिक सूक्ष्म विचार उपलब्ध होता है और वो कि जन्म की प्रक्रिया पर आधारित है। न्याय के अनुसार जिन के जन्म की प्रक्रिया समान है वे एक ही जाति में आते हैं। इस का और भी सूक्ष्म भाव है, कि जो अपने समान को जन्म दें वे एक ही जाति में गिने जाते हैं।

जातिभद विचार—

मनु स्मृतिकार 1-48-47 ने प्रसव प्रक्रिया के आधार पर सभी प्राणियों के जरायुज, अण्डज स्वेदज और उद्भिज्ज चार भेद माने हैं। इस प्रकार प्रादुर्भूत प्राणियों की स्थूल रूप से चार ही जातियां बनती हैं। पर इस प्रकरण में और अन्य स्थलों की समालोचना करने से स्पष्ट होता है कि इनके अनेक भेद हैं। अपने समान को जन्म देना, जाति की इस परिभाषा के अनुरूप अनेकों की पृथक्-पृथक् सत्ता, व्यवहार, गुण एवं स्वभाव है। दण्ड निर्धारण की व्यवस्था में इन चारों के अतिक्ति अनेक अलग-अलग जातियां स्वीकार की गई हैं। जीव विज्ञान में लाखों जातियां मानी जाती हैं

मानव जाति विचार—

मानव, मनुष्य, मानुष मनुज शब्दों का मूल मनु है, जोकि उसकी विचारशीलता को प्रकट करता है। विचारशीलता, सामाजिकता, आकृति, प्रत्येक शरीर में विद्यमान रस-रक्त, मांस आदि धातुओं तथा नेत्र, जनन प्रभृति इन्द्रियों और हृदयगत जिजीविषा, जिज्ञासा, स्नेहाभिलाषा आदि भावनाओं की समानता से मनुष्यों की एक ही जाति सिद्ध होती है। इसीलिए किसी चेहरे से किसी कल्पित तथाकथित जाति का बोध नहीं होता। स्त्री-पुरुष इसके दो कुछ स्पष्ट भेद हुए भी, ये दोनों एक दूसरे के आपूरक ही हैं इनकी पूर्णत: स्वतन्त्रता सत्ता नहीं है, क्योंकि ये पारस्परिक सहयोग के बिना अलग-अलग अपने जैसे को जन्म देने में सर्वथा असमर्थ हैं। यदा-कदा लिंग परिवर्तन की प्रकाश में आने वाली घटनाओं से भी यह प्रमाणित होता है कि नर-नारी अलग-अलग जाति नहीं है।

पालतू और वन्य दोनों प्रकार के पशुओं में अनेक समानताएं होती हैं। अत: वे सभी जहां पशु कहलाते हैं वहां पशु रूप में परिगणित गाय, भैंस, शेर, भेड़िया आदि में अनेक स्पष्ट विषमताएं भी हैं। (क्रमश:)

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कर निश्चिन्तता से सिगार के कश लेता हुआ अंग्रेजी अखबार पढ़ने वाला गोरा भगत सिंह था। बगल में उन की मेम बनी भगवती बाबू की पत्नी दुर्गा भाभी बैठी थी। और बेबी था उनका बच्चा-शची। उस दिन अंग्रेजों की आंखों में धूल झोंकर भगतसिंह को सकुशल लाहौर से कलकत्ता पहुंचाने का पूरा श्रेय दुर्गा भाभी को ही है।

दुर्गा भाभी स्वयं भले क्रांतिकारिणी नहीं थीं, पर क्रांतिकारियों के लिए उन से आगे बढ़ कर खतरा मोल लेने को तैयार रहती थी। उनका स्नेहपूर्ण त्याग ही नहीं समूचे देश और नारी जाति के लिए गौरव की गाथा है।

पब्लिक सेफ्टी बिल के विरोध में असेम्बली में बम फैंक कर भगतसिंह ने अपने को गिरफ्तार करवा दिया था, उस समय सरकार ने उन पर कितने ही अभियोग लगाकर मुकद्दमें चलाए। फांसी की सजा निश्चित प्राय: थी। चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, भगवती बाबू आदि क्रान्तिकारियों ने मिलकर भगतसिंह को जेल से भगाने का निश्चय किया। सारी योजना बन गई। तैयारी पूरी हो जाने के बाद भगतसिंह को भगाने का दिन भी निश्चित कर लिया गया। उससे एक रोज पहले 30 मई सन् 1930 की शाम को भगवती बाबू एक साथी के साथ दो बम लेकर उसका परीक्षण करने जंगल में गए, लेकिन दुर्भाग्य, जाने किस गड़बड़ी के कारण एक बम परीक्षण के पहले ही फट गया। भगवती बाबू लहू-लुहान होकर गिर पड़े। साथी एक दम घबरा गया। वैसी स्थिति में भगवती बाबू को उठाकर भागना अकेले उसके वश का भी नहीं था। आखिर भागा-भागा घर पहुंचा। खबर पाते ही चारपाई और चादर लेकर कई साथी दौड़े-दौड़े पहुंचे, लेकिन तब तक भगवती इस संसार से विदा हो चुके थे।

साथियों का मन दुख से भारी पड़ गया। भगतसिंह को छुड़ाने का उत्साह मन्द पड़ गया। लेकिन दुर्गा भाभी जाने किस माटी की बनी थीं कि उन्होंने दृढ़ता से कहा, 'जो होना था, सो हो गया, उसके बारे में समय नष्ट करने से कोई फायदा नहीं इस समय बैठकर दुख मनाने से बड़ा काम है भगत सिंह को छुड़ाना। आप लोग इसकी तैयारी कीजिए। पल भर रुक कर दुर्गा भाभी ने जोर से सांस ली, बोली, 'भगत को छुड़ाने की योजना से 'वह' बहुत खुश थे, लेकिन—अगर हम इस योजना को पूरी कर सकें तो यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।'

भगवती बाबू की मृत्यु के बाद चन्द्रशेखर आजाद ने दुर्गा भाभी के संरक्षण का भार लिया। दुर्गा भाभी पंजाब से दिल्ली चली आई और क्रास्थवेट गर्ल्स कालेज में अध्यापिका का कार्य करने लगी। छ: महीने तक वहीं छात्रावास में रहने के बाद वह कानपुर चली आई और वहीं रहने लगी, लेकिन 27 फरवरी 31 को आजाद के बलिदान के बाद वह फिर लाहौर लौट गई। उसी समय उन्हें नजरबन्द कर लिया गया।

सन् 1934 में नजरबन्दी हटने के बाद दुर्गा भाभी गाजियाबाद चली आई। यहां वह अध्यापन कार्य करने के साथ खुल कर राजनीति में भी भाग लेने लगी सन् 1938 में उनकी सेवाओं का मूल्यांकन हुआ और वह दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षा चुनी गईं सन् 1938 के अन्त में ही दुर्गा भाभी ने मांटेसरी की ट्रेनिंग ली और लखनऊ में एक मांटेसरी स्कूल की स्थापना करके अपना शेष जीवन उसी को समर्पित कर दिया।

लुधियाना में मानव कल्याण यज्ञ

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना में 4 अगस्त से लेकर 11 अगस्त रविवार तक मानव कल्याण विशेष यज्ञ प्रारम्भ किया जा रहा है इस यज्ञ के ब्रह्मा प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी मनीषानन्दजी महाराज गुरुकुल ऐटा वाले हैं जो कि प्रथम बार लुधियाना पधार रहे हैं। आप सभी धर्म प्रेमियों से प्रार्थना है कि अपने सम्बन्धियों ईष्ट मित्रों सहित नीचे लिखे कार्यक्रमानुसार आर्य समाज में पहुंच कर धर्म लाभ उठाएं।

5 अगस्त सोमवार से 10 अगस्त शनिवार तक। यज्ञ व स्वामी जी का प्रवचन 6-30 से 8 बजे तक प्रात: प्रति-दिन। 11 अगस्त रविवार—यज्ञ 7-30 से 8-30 बजे प्रात:। पूर्णाहुति 8-30 से 9 बजे प्रात: तक। साप्ताहिक सत्संग—9 बजे से 11 बजे तक प्रात:।

जिसमें वेद प्रचार मण्डली के भजन स्वामी जी का मनोहर प्रवचन तथा अन्य विद्वानों व भजनीक अपना 2 कार्यक्रम रखेंगे : —बलदेवराज सेठी मन्त्री

स्थापना दिवस

आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर स्थापना दिवस पर दिनांक 11 8-85 से 18-8-85 रविवार तक वेद प्रचार सप्ताह मना रहा है। आर्य जगत् के विद्वान पं. सत्यपाल पथिक यजुर्वेद परायण यज्ञ सम्पन्न करवाएंगे तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री शिवराज शास्त्री के ओजस्वी प्रवचन होंगे सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि जरूर दर्शन देवें।

उप-मन्त्री राकेश मेहरा

राष्ट्र की एकता

ले.—श्री मोहनलाल शर्मा 'रश्मि' 907 ए,
फ्री लेंड गंज दाहोद (गुजरात)

इन महकते गुलों से ये गुलशन सजाओ।
राष्ट्र की एकता के तुम नूतन गीत गाओ ॥
अभी यहां लोग बैठे हैं स्वार्थ समेटे।
अभी यहां लोग लेटे हैं ईर्ष्या में ऐंठे ॥
एकता का मन्त्र तुम उन्हें जाओ पढ़ाओ।
राष्ट्र की एकता के तुम नूतन गीत गाओ।
वही ताने-बाने अभी बने जा रहे हैं।
अभी यहां पन्थ नूतन देखो बुने जा रहे हैं ॥
आपस में मिल-जुल के रहना सिखाओ।
राष्ट्र की एकता के तुम नूतन गीत गाओ ॥
साम्प्रदायिकता धरा पर है फिर दन-दनाती।
भाई को भाई का यहां ये दुश्मन बनाती।
अब तुम तजो नींद इसको जड़ से मिटाओ।
राष्ट्र की एकता के तुम नूतन गीत गाओ।
संगठन की राहें जो थीं बुजुर्गों ने बताई।
उन्हीं को आज है हम सभी ने भुलाई।
अब वही रास्ता तुम फिर से आजमाओ।
राष्ट्र की एकता के तुम नूतन गीत गाओ।
फूट की आग में है जल रहा देश सारा।
जात-पातों की बातों में फंसा भारत हमारा।
उठो फूट-परस्ती को अब 'रश्मि' भगाओ।
राष्ट्र की एकता के तुम नूतन गीत गाओ।

लेखक महानुभावों की सेवा से

हमें गर्व है कि आर्य मर्यादा को बड़े उच्चकोटि के लेखक अपना 2 सहयोग देते हैं। जब भी उन्हें लेख भेजने के लिए प्रेरित करते हैं वह अपने लेख भेजते हैं। हम अपने सभी लेखकों के बड़े आभारी हैं। हमें विश्वास है कि उनका सहयोग हमें इसी प्रकार मिलता रहेगा।

रक्षा बन्धन और कृष्ण जन्माष्टमी पर आर्य मर्यादा का विशेषांक प्रकाशित हो रहा है। हम चाहते हैं कि यह विशेषांक दोनों पर्वों का सम्मिलित अंक बना दिया जाए। हमारी लेखक विद्वानों से प्रार्थना है वेद मन्त्रों पर आधारित जीवनोपयोगी लेख तथा श्री कृष्ण जी के यज्ञ के प्रति और योग के प्रति क्या भाव थे, इन विषयों पर अपने लेख शीघ्र अति शीघ्र भेजने की कृपा करें ताकि समय पर इस विशेषांक का प्रकाशन किया जा सके। गत वर्ष देरी से आने के कारण हम कई विद्वानों के लेख प्रकाशित नहीं कर सके। इसलिए अपनी अमूल्य रचनाएं शीघ्र भेजें ताकि यह विशेषांक समय पर प्रकाशित किया जा सके।

—सह-सम्पादक

श्रावणी विशेषांक के आर्डर भेजें

आर्य मर्यादा गत के अंकों में भी सभी आर्य बन्धुओं से प्रार्थना की थी कि रक्षा बन्धन व जन्माष्टमी पर्व पर आर्य मर्यादा का श्रावणी विशेषांक छप रहा है। सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के तथा शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी महानुभाव तथा अन्य आर्य बन्धु इस विशेषांक के लिए अपने आर्डर शीघ्र अति शीघ्र सभा कार्यालय में भेजें। ताकि जितने आर्डर हों उसके अनुसार ही अंक छपवाया जा सके। गत वर्ष हम विशेषांक के आर्डर देरी से आने के कारण हम बहुत से आर्य बन्धुओं को विशेषांक नहीं भेज सके थे। इसलिए कृपया आप आर्डर शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

—कमला आर्या महामन्त्री

योग जिज्ञासुओं के लिए स्वर्णिम अवसर

करतारपुर में योग शिविर

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि प्रति वर्ष की भान्ति गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय एवं श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर का वार्षिकोत्सव 6 से 13 अक्तूबर 85 को हो रहा है। इन्हीं तिथियों में इस बार योग साधना शिविर का आयोजन भी किया जा रहा है। जिसे योग के विषय में शोध कार्य कर रहे श्री आचार्य गौतम जी देहली वाले संचालित करेंगे। 12 तथा 13 अक्तूबर के लिए योग मर्मज्ञ श्री स्वामी योगेश्वरानन्द जी महाराज के परम शिष्य तथा योग निकेतन ट्रस्ट ऋषि केश के संचालक श्री स्वामी मुक्तानन्द जी महाराज ने भी योग जिज्ञासुओं के लाभार्थ अपना समय देना स्वीकार कर लिया है अतः योग में रुचि रखने वाले सज्जनों तथा देवियों से विनम्र निवेदन है कि इस स्वर्णिम अवसर का लाभ अवश्य उठाएं।

कार्यक्रम की विस्तृत रूप रेखा शीघ्र प्रकाशित की जाएगी। भोजन एवं आवास का प्रबन्ध ट्रस्ट की ओर से होगा। ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ अवश्य लावें।

जिज्ञासुजन शीघ्र ही पत्र द्वारा सूचित करके आवास के लिए अपना स्थान सुरक्षित करवाएं जिससे कि व्यवस्था करने में ट्रस्ट को सुविधा हो सके।

इसके अतिरिक्त आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री श्याम सुन्दर जी स्नातक 6 से 13 अक्तूबर तक सामवेद पारायण यज्ञ कराएंगे जिसकी पूर्णाहुति 13 अक्तूबर प्रातः 9 बजे होगी। श्रोताओं को सत्यपाल जी पथिक (अमृतसर) अपने संगीत द्वारा सप्ताह भर आनन्दित करेंगे। साथ ही 12-13 अक्तूबर शनिवार तथा रविवार को विशेष कार्यक्रमों तथा सम्मेलनों के अन्तर्गत आर्य समाज के विविध विद्वानों के उपदेश सुनने को मिलेंगे।

गुरुकुल के ब्रह्मचारी अपने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा श्रोताओं के समक्ष अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। अतः पुनः सभी महानुभावों से निवेदन है कि वे इन सभी कार्यक्रमों में सम्मिलित होकर लाभ उठाएं। विशेष जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार करें।

चतुर्भुज मित्तल, मन्त्री — शिवचन्द अग्रवाल, प्रधान
श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट
करतारपुर (जिला जालन्धर)

आर्य समाज समाना का वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज मन्दिर सामाना एवं इसके द्वारा संचालित दयानन्द माडल स्कूल सामाना (पटियाला) के पदाधिकारियों का चुनाव वर्ष 1985-86 के लिए सर्वसम्मति से किया गया, जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गए—

संरक्षक—श्री देसराज जी, प्रधान—श्री रणवीर कुमार जी, उपप्रधान—श्री दीनानाथ जी एवं श्री रणवीर सिंह जी, मन्त्री—श्री कंवर भान जी, उपमन्त्री—श्री पद्मकान्त जी, कोषाध्यक्ष—श्री ओम् प्रकाश जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री गंगाचरण जी, भण्डाराध्यक्ष—श्री नारायण दास जी।

दयानन्द माडल स्कूल सामाना

प्रधान—श्री रणवीर कुमार जी. प्रबन्धक—कंवरभान जी, लेखा निरीक्षक श्री सत्यपाल जी एवं ओम् प्रकाश जी. कोषाध्यक्ष—डा. रतन कुमार जी एवं श्री रणवीर सिंह जी, कार्यकारिणी सदस्य-श्री पद्मकान्त जी, श्री राजेन्द्र जी, श्री दीनानाथ जी. श्री रणवीर सिंह जी एवं श्री वेदप्रकाश :

—मन्त्री

बाल जगत्—

आप स्वार्थी न बनें : बच्चों का सुधार करें

ले.—श्री सुरेन्द्र मोहन 'सुनील' विद्यावाचस्पति भौंकर
अलवर (राजस्थान)

शिशु का शैशव काल उसके जीवन की आधार शिला है जिस पर उसके भावी जीवन का प्रवाह निश्चित होता है। इस काल में अधिक सावधानी की आवश्यकता होती है।

माता-पिता और गुरु ये तीनों ही बालकों के भाग्य विधायक माने जाते हैं। यह कहना अनुपयुक्त नहीं है कि बच्चों की पहली पाठशाला उसका परिवार है।

बच्चों के चरित्र पर अधिकांश में उन के मां-बाप की तत्कालीन विचार धारा की छाप पड़ती है। यदि मां के स्वभाव में धीरज और सन्तोषी है तो उसकी सन्तान पर भी वही असर पड़ता है और उसके बच्चे आगे चलकर स्वार्थी या दुश्चरित नहीं बनते। बड़ी से बड़ी विपदा में भी ये समय को धीरज और सन्तोष से काट देते हैं। यदि मां झगड़ालू और खुद पेटू हुई और अपने पति व परिवार के अन्य सदस्यों की ओर सेवा भाव न अपना सकी तो बच्चों पर भी इसकी प्रतिक्रिया होगी। वे स्वार्थी और रूखे स्वभाव के होंगे, न समाज उनका आदर करेगा और न वे समाज के लिए उपयोगी साबित होंगे।

इसी तरह यदि बाप योग्य और सहिष्णु तो सन्तान भी उसके कदमों पर चलेगी। वह उदार स्वभाव वाला और दूरदर्शी हुआ तो बच्चा पिता के सम्पर्क में रहकर पिता के गुणों को ग्रहण करेगा, इसलिए बच्चों का जीवन यदि आदर्श बनाना है तो मां-बाप को रास्ता फूंक-फूंक कर चलना पड़ता है तभी जाकर बच्चों का सुधार होता है।

बच्चों को जन्म देना आसान है परन्तु बच्चों को हीरा बनाना महा कठिन है।

यदि हम जीवन को एक विद्यालय समझें तो जिस मनुष्य ने सम्पूर्ण पृथ्वी की यात्रा कर ली। उस पर भू-मण्डल की भिन्न-भिन्न सभाओं और जातियों का भी इतना असर नहीं पड़ सकता है जितना बाल्यावस्था में उसकी माता का उस पर पड़ता है। एतएव बच्चों के चरित्र निर्माण के लिए उत्तम आदर्शों की आवश्यकता है। यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे सच्चरित्र, सुशील और सदाचारी बनें तो हमें चाहिए कि उनके सामने उत्तम से उत्तम आदर्श रखें। जो आदर्श बच्चों के सामने सदैव रहता है वह उसकी माता है माता से बढ़कर संसार में कोई भी शिक्षक नहीं हो सकता।

एक माता सौ स्कूल मास्टरों से बढ़कर होती है: सौ मास्टरों का भी इतना असर नहीं पड़ सकता जितना कि माता का पड़ता है। माता घर में मुख्य होती है माता ही घर की मालिक व शासक होती है। माता हर समय बच्चे के निकट रहती है। बच्चा भी माता के प्रत्येक मन-वचन और कर्म के योग को देखता रहता है। चाहे माता एक शब्द भी न कहे तो पर भी बच्चा कुछ न कुछ उसके द्वारा सीखता रहता है।

माता की प्रत्येक चाल-ढाल उसका प्रत्येक शब्द उसका हंसना, उसका रोना: उसका खाना, उसका सोना बच्चे पर असर डालता रहता है विश्व इतिहास में आज जितने व्यक्तियों का नाम स्वर्णाक्षरों में चमक रहा है उनकी प्रसिद्धि में उनको ऊंचा उठाने में उनकी माताओं की ही शिक्षा नजर आती है।

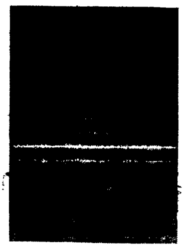
इब्राहीम लिंकन ने एक बार कहा था...

मैं जो कुछ भी हूं मेरी देवी तुल्य माता के कारण हूं। कौन नहीं जानता कि वीर शिवा जी को बहादुर बनाने में उसकी माता जीजाबाई का महत्वपूर्ण सहयोग रहा था।

मोहनदास कर्मचन्द गांधी को महात्मा गांधी बनाने में उनकी माता पुतलीबाई का ही सहयोग रहा था। इसी तरह बालक सुभाष को नेता जी सुभाष चन्द्र बोस बनाने में उसकी परम पूजनीया माता जी का ही सहयोग रहा था तभी तो भविष्य में आगे चलकर नेता जी राष्ट्र के नायक बने। माता-पिता तथा अन्य बड़ों को बालकों के सम्मुख आदर्श पूर्ण व्यवहार करना चाहिए। क्योंकि बालक उनके गुण तथा अवगुणों का बड़ी शीघ्रता से अनुकरण करता है।

बालक का भावी व्यक्तित्व तथा सामाजिक जीवन कैसा होगा यह उसके शैशव के वातावरण पर निर्भर करता है। बालक उसी हद तक विकास कर सकेगा जहां तक उसकी शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा किया जाएगा। बालक भविष्य में सबल बनेगा या दुर्बल, साहसी होगा या डरपोक पढ़ाई में रुचि होगी या अरुचि आदि बातें उसके कौटुम्बिक तथा निकट के सामाजिक वातावरण पर निर्भर करती है। शैशव में ही हम इच्छित परिवर्तन बालक के अन्दर ला सकते हैं। जब वह बड़ा हो जाता है तब हम उसके अन्दर उसी प्रकार परिवर्तन नहीं ला सकते जिस प्रकार गीली मिट्टी के बर्तन के पक जाने पर उसमें कोई परिवर्तन नहीं लाया जा सकता। छोटे बच्चों का पालन पोषण करना सरल नहीं, परन्तु खेद है कि इस कार्य की गुरुता हमारे देश के माता-पिता ठीक ढंग से नहीं समझते। यही कारण है कि हमारे बच्चे अयोग्य दिखलाई पड़ते हैं। यदि मां बाप बुद्धिमान हुए तो जीवन की सारी नींव बचपन में डाली जा सकती है। बच्चे देश का धन होते हैं पर स्वदेश में इस धन को कूड़ा-कचरा समझा जाता है। बच्चे के बिगड़ जाने पर लोग हाथ मलकर पछताते हैं परन्तु अभिभावकों को पता नहीं कि बच्चा क्यों और कैसे बिगड़ जाता है। बालक के अपराधी होने के निम्न चार कारण हैं—

1, बुरा नैतिक वातावरण, 2, माता-पिता अथवा दोनों का मानसिक असन्तुलन, 3, बच्ची बातें सिखला सकने में माता-पिता की अयोग्यता। 4, झगड़ालुपन।



आर्य समाज लुधियाना पश्चिम के सचिव श्री बलदेवराज लम्ब की सुपुत्री तथा गवर्नमेंट कालेज लुधियाना की छात्रा कुमारी नीरू लम्ब ने पंजाब विश्वविद्यालय की इस वर्ष की एम, ए, हिन्दी की परीक्षा में 589-800 अंक प्राप्त करके सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया तथा नया कीर्तिमान स्थापित किया।

टंकारा ट्रस्ट के नए आचार्य डा. धर्मवीर विद्यालंकारकी नियुक्ति

आर्य जनता को हमें सूचना देते हुए बड़ा हर्ष हो रहा है कि गुरुकुल कांगड़ी के पुराने स्नातक, आर्य समाज के उत्साही कार्यकर्ता टंकारा ट्रस्ट के नए आचार्य नियुक्त किए गए हैं। उन्होंने 18-7-85 से वहां पर चार्ज ले लिया है। आशा है कि उनके आचार्यत्व में उपदेशक विद्यालय तथा अन्य वहां पर चल रहे कार्य आगे और भी सुचारू रूप से चलेंगे। मेरी समस्त आर्य जनता से यह प्रार्थना है कि जब भी वे आर्य समाज के लिए कोई दान निकालें, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट में चल रहे कार्यों को कभी न भूलें। महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के लिए भी उसमें से थोड़ी राशि अवश्य भेजें। —रामनाथ सहगल

चण्डीगढ़ विश्ववेद परिषद् के समाचार

आषाढ़, श्रावण की पौर्णमासी यज्ञ एवं वेद गोष्ठी समारोह श्री सुखाराम अग्रवाल चीफ इन्जीनियर और श्री गंगाराम अडवानी के परिवारों में सम्पन्न हुए जिनमें ब्रह्मचारी आर्य नरेश, डा. पुष्पावती मातृ मन्दिर काशी श्री बालकृष्ण दीवान वेदालंकार और डा. भवानीलाल जी भारतीय के वेद प्रवचन हुए।

केन्द्रीय आर्य समाज

21 जुलाई को विशाल वेद समागम इसकी ओर से अनाज मण्डी के विशाल मैदान में बड़ी धूमधाम से मनाया गया, जिसमें महात्मा अमर स्वामी जी, प्रो. वेद सुमन जी, डा. गणेशदास और ठाकुर दुर्गासिंह, अमरसिंह की भजनमण्डली ने खूब आनन्दित किया।

फिल्म र महर्षि दयानन्द और ला. लाजपतराय की वीर गाथाओं को सुनाया गया।

महा शोक

सार्वदेशिक साप्ताहिक के पुराने वयोवृद्ध विद्वान् महारथी सम्पादक, प्रसिद्ध पत्रकार पं. रघुनाथ प्रसाद पाठक के निधन के समाचार से सभी सार्वजनिक क्षेत्र दुःख से भर गए। आर्य समाज को ऐसा मिशनरी अनुभवी अनेक भाषाओं का विद्वान् पत्रकार कहां मिलेगा?

आर्य समाजें सूनी—

चण्डीगढ़ के प्रसिद्ध आर्य संगीतकार देवी कृष्णा कपूर की अचानक मृत्यु हो जाने से नगर की समाजों के सत्संग सूने हो गए हैं। उनका श्रद्धांजलि समारोह अनुपम था।

—आशुराम आर्य
महामन्त्री विश्ववेद परिषद्

वैदिक क्रीड़ात्व पर गोष्ठी

वेद संस्थान की शोध समिति के तत्वावधान में यह वेद गोष्ठी प्रति मास के द्वितीय रविवार को प्रातः 11 से 1 बजे तक होती है। यह वेद गोष्ठी 11 अगस्त को होगी। इसमें पूर्व से आमन्त्रित महानुभाव ही भाग लेते हैं। जो लोग इसमें श्रोता के रूप में अथवा चर्चा में भाग लेने के लिए पधारना चाहें वे निम्न पते पर सम्पर्क करें।

ए-3-11 पश्चिम विहार दिल्ली-63।

—चैतन्य मुनि मन्त्री

लुधियाना में वैदिक धर्म का प्रचार

जिला आर्य सभा लुधियाना की ओर से लगातार एक वर्ष से हर सप्ताह रविवार को सायं झुग्गी झोंपड़ियों इण्डस्ट्रियल एरिया-ए में सत्संग लगता है। जिससे हवन-यज्ञ भजन उपदेश होते हैं वहां की काफी जनता शामिल होकर लाभ उठा रही हैं। उनमें प्रचार करने तथा विद्या पढ़ाने के लिए एक वैदिक पाठशाला खोली गई है जिसमें लगभग साठ बच्चे पढ़ रहे हैं, वहां के निवासियों को पानी की बहुत तकलीफ थी जिला आर्य सभा की प्रेरणा पर लुधियाना के प्रसिद्ध आर्य समाजी श्री अयोध्या प्रसाद मल्होत्रा ने अपनी ओर से एक हैंड पम्प लगवाने की घोषणा की है जो एक सप्ताह में लग जाएगा।

—आशानन्द आर्य
महामन्त्री लुधियाना

जिला आर्य सभा की गतिविधियां

21-7-85 रविवार को जिला आर्य सभा की एक बैठक आर्य समाज गुरदासपुर में श्री रामकृष्ण महाजन की अध्यक्षता में हुई। जिसमें जिले की लगभग सभी समाजों ने भाग लिया। इस बैठक में यह निर्णय लिया गया कि जिला गुरदासपुर की सभी समाजें कोई न कोई सेवा कार्य करेंगी। प्रत्येक समाज हरिजन बस्तियों में हवन यज्ञों का आयोजन करेगी। पारिवारिक सत्संगों की व्यवस्था की जाएगी।

जिला सभा के पदाधिकारी समय-समय पर समाजों के इस कार्यक्रम की जांच करेंगे। सभा की आगामी बैठक में सभी समाजें अपने 2 कार्य का विवरण प्रस्तुत करेंगी।

जिला सभा जिले की गति को तेज करने के लिए एक उपदेशक रखने पर विचार कर रही है। कुष्ट रोगियों के स्वस्थ बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए एक योजना पर सभा द्वारा गंभीरता से विचार किया जा रहा है।

—प्रो. स्वतन्त्र कुमार महामन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन न. 74250 राज. न. पा. ज. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 19, 3 भाद्रपद सम्वत् 2042, तदनुसार 18 अगस्त 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

मन और वाणी का धारक जीवात्मा

ले.—श्री प. सुरेशचन्द्र जी, वेदालकार एम. एः

ओ३म्

पतङ्गो वाच मनसा विभर्ति ता गधर्वोऽवदद्गर्भे अन्त ।
तां द्योतमाना स्वर्यं मनीषामृतस्य पदे कवयो निपान्ति ॥

—ऋ 10।177।2

(पतङ्ग) जीवात्मा (मनसा) मन के साथ (वाच) वाचाशक्ति को (विभर्ति) धारण करता है। (ता) उसी वाणी को (गधर्व) शब्द का धारक प्राण (गर्भे अन्त) अन्दर ही अन्दर (अवदत्) बोलता है (तां) उस (द्योतमाना) तेजस्वी (स्वर्य) आत्म प्रकाश स्वरूप (मनीषा) मनोगत प्रकट करने वाली वाणी को (ऋतस्य पदे) सत्य के स्थान पर अथवा सत्य के ज्ञापक वेद के निमित (कवय) ज्ञानी (निपान्ति) सुरक्षित करते हैं।

हम जो कुछ कहना या बोलना चाहते हैं उस बात को जीवात्मा मन के अन्दर प्रेरित करता है। उसके बाद उस प्रेरणा से प्राण शक्ति को प्रेरणा प्राप्त होती है। प्राण शक्ति की प्रेरणा से एक शक्ति या प्रकाश जिसे वाणी कहते हैं उत्पन्न होती है। इस वाणी से ससार के सभी कार्य चलते हैं। ज्ञानी लोग सत्य के द्वारा उस वाणी का सरक्षण करते हैं। इस प्रकार यह जीव मन और वाणी का धारक है। वास्तव में वाणी शब्द यहा सभी कर्मेन्द्रियो का उपलक्षण है। भारतीय दर्शनो के अनुसार शरीर का व्यापार मन पर अवलम्बित होता है। मनुष्य का मन कोई दूसरी वस्तु नहीं जिसे अगुली रखकर बतलाया जा सके कि देखो मन इसे कहते हैं। मन अत्यन्त सूक्ष्म है। इन्द्रियातीत है। मन एक इन्द्रिय है। मन से परे आत्मा है।

वात्स्यायन जी महाराज लिखते हैं—

आत्मा मनसा संयुज्यते मन इन्द्रियेण, इन्द्रियमर्थेन ।

अर्थात् आत्मा जब कुछ जानना चाहता है तो मन से सयुक्त होता है और उसके बाद मन का इन्द्रिय से सयोग होता है, और उसके बाद इन्द्रिय और अर्थ का और तब पदार्थ का बोध हो जाता है।

इसको दूसरे शब्दो मे हम इस प्रकार कह सकते हैं कि यदि पचभूत-आकाश, वायु अग्नि, जल और पृथिवी हो, ज्ञानेन्द्रिया और कर्मेन्द्रिया भी हो मन भी विद्यमान हो, परन्तु एक आत्मा के शरीर मे न रहने पर तो इस सारी सेना के विद्यमान होते हुए भी कोई कार्य नही हो सकेगा। इस विषय मे भावमिश्र का यह श्लोक देखिए—

एव चतुर्विंशतिभिस्तत्वै सिद्धवपुर्गृहे,
जीवात्मा नियतेर्विघ्नो वसति
स्वाक्तदूतवान ॥

अर्थात् चौबीस तत्वा द्वारा निर्मित इस प्राकृतिक शरीर रूपी घर मे नियति (कर्मों) के अधीन हुआ मनरूपी दूतवाला जीवात्मा वास करता है।

इस प्रकार मन के सयोग से जीवात्मा सभी कार्यों का प्रेरक है, कर्ता है। वास्तव मे जीवात्मा और शरीर का एक विशेष सम्बन्ध है। वह सम्बन्ध यह है कि शरीर आत्मा के भोग का साधन । शरीर और आत्मा का वास्तविक सम्बन्ध भोक्ता और भोग्य का, कर्ता और कर्म का, साधक और साधन का है। मनुष्य ही मकान में रह सकता। चेतन ही जड का उपभोग कर सकता है, जड चेतन का उपभोग नहीं कर सकता शरीर ही आत्मा का साधन हो सकता है, आत्मा शरीर का साधन नहीं हो सकता। शरीर आत्मा नहीं है, शरीर आत्मा का साधन है आत्मा शरीर का भोक्ता है, शरीर रथ है, आत्मा उसका रथी है—आत्मान रथिन विद्धि शरीर रथमेव तु। यथार्थ सत्य यही है। यह आत्मतत्व जब अपने स्वरूप को भूल कर स्वय रथ और शरीर को रथी समझ रहा है, शरीर के लिए अपने को मिटाये दे रहा है—ठीक इसी जगह इस कमजोरी को निकाल देने की, गलती को पकड लेने की आवश्यकता है। आत्मा यह सब कार्य मन के साथ सयुक्त होकर कर रहा है। उसके बिना सभी इन्द्रिया बेकार हैं, पगु हैं। यही सोचने-समझने की बात है। इसलिए मन्त्र कहता है कि जीवात्मा मन के साथ वाचा शक्ति को धारण करता है।

आत्मा और शरीर के भेद को समझना आवश्यक है। जो शरीर को ही आत्मा समझ लेते है वे राक्षस होते हैं, असुर होते हैं। जो शरीर और आत्मा के भेद को जान लेते है, वे देव होते हैं।

कहते हैं प्रजापति ने एक बार घोषणा की 'यह अजर, अमर, पाप से रहित आत्मा ही जानने और खोजने की वस्तु है। जो इसे जान लेता है वह सभी लोको और इच्छाओ को पूर्ण कर लेता है। इस घोषणा को देवो और असुरो ने सुना। दोनो ने सोचा जिस आत्मा को जान लेने से सभी लोक प्राप्त होते हैं, सभी इच्छाए पूर्ण होती हैं, उसे अवश्य जानना चाहिए। दोनो के प्रतिनिधि इन्द्र और विरोचन प्रजापति के पास गये और बोले महाराज! यह आत्मा क्या है?'

प्रजापति ने 32 वर्ष ब्रह्मचर्यपूर्वक अपने आश्रम मे रहने का आदेश दिया और उसके बाद बताने की बात कही। 32 वर्ष के बाद जब वे दोनो पहुचे तो प्रजापति ने शीशे मे उन्हे देखने को कहा और पूछा क्या देखते हो? अपने शरीर के प्रतिबिम्ब को देखकर विरोचन प्रसन्न हुआ और शरीर को आत्मा समझ कर असुरो के पास जाकर बोला 'यह शरीर ही आत्मा है।' असुर शरीर की सेवा मे लग गये। शरीर के लिए मकान, मोटर, गलीचे, कपडे रेडियो और सभी सुख के साधन जुटाने मे लग गये।

दूसरी ओर देवताओ के प्रतिनिधि इन्द्र को उससे सन्तोष नहीं हुआ और वह बोला, 'महाराज! यह शरीर आत्मा नही हो सकता। आप मुझे वास्तविक आत्मा का स्वरूप बतलाइए। प्रजापति ने उसे 32 वर्ष और ब्रह्मचर्यपूवक आश्रम मे रहकर तपस्या करने को कहा। 32 वर्ष पूरे होने पर तीसरी और चौथी बार उसी प्रकार रहने को कहा। तब जाकर बताया कि आत्मा क्या है। उन्होने कहा, यह शरीर आत्मा नही। शरीर को ही आत्मा समझकर उसकी पूजा करने वाला विनाश की पूजा करता है।

इस प्रकार यह जीवात्मा शरीर से पृथक है और मन तथा वाणी का धारक है। कहने का तात्पर्य यह है कि जो शरीर और जीवात्मा इन दोनो को पृथक् समझ लेने हैं और आत्मा की उन्नति मे लग जाते हैं उन्हे वास्तविक आनन्द की अनुभूति होती है, उनके मन मे दृढ सकल्प आते हैं जिन्हे वह वाणी अर्थात् इन्द्रियो द्वारा क्रिया रूप मे परिणत करते हैं।

आत्मा की शक्ति महान् है। उसे जाग्रत करने पर वह शक्ति ससार मे अदभुत काम कर सकती है। जैसे पाचो भूत जड हैं पृथिवी बेकार पडी है परन्तु इसकी शक्ति का पता बीज डालने पर चलता है। जल की असीम राशि व्यर्थ मे ही बहती जा रही है परन्तु उससे विद्युत उत्पन्न कर तथा पिपासा की तृप्ति कर उसके महत्व और शक्ति को जाना जा सकता है। अग्नि मे छिपी शक्ति से रेल, जहाज तोप, बन्दूक चलती रहती हैं। इसी प्रकार आत्मा मे भी असीम शक्ति छिपी है। इसके विकास के लिए साधना करनी पडगी तपस्या करनी पडगी, चिन्तन और मनन करना पडेगा। इसका विकास होने पर अनेकता के स्थान पर एकता स्वार्थ के स्थान पर परार्थ, द्वेष के स्थान पर प्रेम एव अशान्ति के स्थान पर शान्ति पैदा होगी। आत्म शक्ति के विकास के बिना मनुष्य मानवता के लक्ष्य को प्राप्त नही कर सकेगा।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

स्वतन्त्रता का मन्त्र दाता—महर्षि दयानन्द

ले.—श्री यशपाल जी आर्य बन्धु, आर्य निवास
चन्दन नगर मुरादाबाद

उन्नीसवीं शती में भारतीय पुर्नजागरण के सन्दर्भ में आर्य समाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द जी की गौरवशालिनी महत्वपूर्ण भूमिका रही है दुख है—विद्वत जगत द्वारा उसका तदनुरूप अध्ययन एव आकलन नहीं किया गया। महर्षि दयानन्द ने जिस समय कार्य क्षेत्र मे पदार्पण किया था उस समय देश के क्षितिज पर सर्वत्र निराशा के घने बादल छाए हुए थे। ब्रिटिश शासन के लोह पजो मे जकडे होने के कारण देश मे सर्वत्र उदासीनता एवम् अकर्मण्यता का वातावरण व्याप्त था। महर्षि दयानन्द ने इस सारी स्थिति का सूक्ष्मता से अध्ययन किया और देश को उबारने का सकल्प लिया। महर्षि दयानन्द को केवल एक धर्माचार्य अथवा समाज सुधारक समझ लेना बहुत बडी भूल होगी। महर्षि अन्य धर्माचारियो तथा समाज सुधारको से सर्वथा भिन्न थे। उन्होने अपने राष्ट्रीय विचारो को बडे स्पष्ट शब्दो मे व्यक्त किया है। वे मूलत राष्ट्रवादी थ। वस्तुत जैसाकि डाक्टर विजेन्द्रपाल सिंह का कथन है यह स्वामी दयानन्द के तेजस्वी व्यक्तित्व का ही प्रभाव था कि आर्यसमाज भारतीय राष्ट्रवाद का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अभिकरण बन सका। देश मे राष्ट्रीय चेतना जागृत करने मे यह सबसे शक्तिशाली सिद्ध हुआ। योगी अरविन्द ने ठीक ही कहा है कि दयानन्द मे राष्ट्रीय चेतना थी और वे उसे उद्दीप्त कर सके थ। सुप्रसिद्ध फ्रेन्च लेखक रोमा रोला उन्हे पुनर्जागरण का अग्रदूत कहते हैं जबकि ऐनी बीसेन्ट के अनुसार वे भारतवासियो के लिए स्वतन्त्रता का सर्वप्रथम उद्घोषक हम महर्षि दयानन्द सरस्वती को स्वतन्त्रता का मन्त्र दाता मानते हैं। स्वराज्य अथवा स्वतन्त्रता की भावना सर्वप्रथम उन्ही के हृदय मे उद्भूत हुई थी। उनके सभी ग्रन्थ उत्कृष्ट राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत है। इनमे भी सत्यार्थ प्रकाश का विशिष्ट महत्व है। अकेले इस ग्रन्थ मे महर्षि का हृदय देश की पराधीनता के लिए एक स्थल पर नही अठारह स्थलो पर रोया है। स्वराज्य स्वदेशी आदि की भावना जागृत करने मे इस अमर ग्रन्थ का अपूर्व योगदान है। यदि इसे स्वतन्त्रता सग्राम को महर्षि की अनुपम देन कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्रान्ति वीर बिस्मिल, प्रो. रगा महावीर त्यागी तथा ऐसे ही अनेको को स्वराज्य समर मे कूदने की प्रेरणा इसी सद्ग्रन्थ के स्वाध्याय से मिली थी। इतिहास साक्षी है कि दादा भाई नौरोजी ने स्वराज्य की भावना सत्यार्थ प्रकाश से ही ग्रहण की थी।

काग्रेस के मच से सर्वप्रथम स्वराज्य की घोषणा दादा भाई नौरोजी ने सन् 1906 ई मे की थी। होम रूल आन्दोलन के दिनो मे इस शब्द का कुछ खुलकर प्रयोग होने लगा था। सन 1916 मे लखनऊ काग्रेस मे स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है की घोषणा लोकमान्य तिलक ने की थी। 1928 मे काग्रेस ने लाहौर मे पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति की घोषणा की थी। किन्तु महर्षि दयानन्द ने तो सन 1875 मे ही सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से स्वराज्य का उद्घोष कर किया था। डा भक्तराम शर्मा तो यहा तक लिखते हैं कि—उन्होने उस समय अपने ग्रन्थो मे स्थान स्थान पर स्वराज्य साम्राज्य और चक्रवर्ती राज्य की चर्चा की थी जबकि राष्ट्रीय शब्द कोष मे स्वराज्य शब्द का अभी समावेश भी न हुआ था। राष्ट्रीय शब्द कोष मे स्वराज्य शब्द का न होना उस समय की दासता की दयनीय कहानी का द्योतक है। सत्य तो यह है कि स्वराज्य की भावना तो दूर स्वराज्य शब्द भी महर्षि दयानन्द की देन है। यदि विचारपूर्वक देखें तो इसी परिणाम पर पहुचेंगे कि दादा भाईनौरोजी गोखले तिलक, गाधी आदि राष्ट्र नेताओ ने स्वराज्य के उसी मन्त्र को दुहराया जो महर्षि अपने अमर ग्रन्थो मे दे गए थे। जी, पी भटटाचार्य के अनुसार तिलक ने केवल उसी मार्ग का अनुसरण किया था जिसका उद्घाटन दयानन्द कर गए थे—वीर सावरकर ठीक ही कहते हैं—'यदि आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश मे स्वराज्य शब्द न लिखते तो आज स्वराज्य की पुकार न सुनाई देती। महर्षि ने घोषणा की थी कि 'कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मत-मतान्तर के आग्रह— रहित अपने और पराए का पक्षपात शून्य प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय एव दया के साथ विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है। महर्षि के इस अमर मन्त्र पर श्री सत्यदेव विद्यालंकार लिखते हैं—कितनी सुन्दर यह कल्पना है, कितनी उज्ज्वल यह भावना है और कैसा उत्कृष्ट है यह राष्ट्रवाद ? अंग्रेजी राज्य को इस कसौटी पर कसने की जरूरत नहीं। स्वामी दयानन्द का अनुयायी इसका या किसी भी विदेशी राज्य का भक्त नही बन सकता। यहा महर्षि ने स्वतन्त्रता का जो पाठ-मन्त्र दिया है उसे आप किसी भी राष्ट्र पर घटा कर देख लें वहीं के लिए उपयुक्त प्रतीत होगा। स्वामी वेदानन्द के शब्दो मे—इस पवित्र वाक्य मे गौरव और भी भासने लगता है, जब हमे यह ज्ञात होता है कि यह वाक्य उस समय लिखा गया जब दुर्दान्त अग्रेज शासको के विरुद्ध बोलना मृत्यु को आमन्त्रण देना था, इससे ग्रन्थकार की निर्भीकता का आभास मिल जाता है। दयानन्द को जो लोग वर्तमान स्वराज्य आन्दोलन का सूत्रपात करने वाला कहते है वे निराधार बात नही कहते हैं। महर्षि दयानन्द का राष्ट्रवाद राष्ट्रीय धर्म के रूप मे मुखरित हुआ। वे राजनीति को राजधर्म के रूप मे प्रस्तुत करते है। राष्ट्रीय धर्म स्वराज्य का जनक, रक्षक और पालक माना जाता है जी. पी भटटाचार्य ठीक ही लिखते हैं स्वय राजनीति की परिधि से बाहर रहकर भी उन्होने राजनीति क्षेत्र मे भी प्रसूत अवदान किया है। अत्यन्त धार्मिक होकर भी उन्होने मनुष्य के अस्तित्व के भौतिक पक्ष की उपेक्षा नहीं की। मानव जीवन का कोई भी पक्ष उनके लिए परकीय नहीं था उनके मिशन का उद्देश्य था कि सम्पूर्ण मानव जीवन को अध्यात्म दर्शन के निर्देश मे लाया जाए। उनके राजनीतिक विचार की अत्यन्त आकर्षक विशेषता जो बडी सरलता से हमारा ध्यान आकृष्ट कर लेती है, उनके राष्ट्रीयता के विचार के अवदान मे है।

स्वदेशी की भावना

स्वराज्य ही नही स्वदेशी की भावना मूलत महर्षि दयानन्द की ही देन है। सत्यार्थ प्रकाश के खण्डनात्मक प्रकरण में महर्षि के निम्न वाक्य उसी अन्तर्वेदना की मुह बोलती तस्वीर है। देखो! अपने देश के जूते को आफिस और कचहरी मे जाने देते हैं देसी जूते को नहीं। इतने ही में समझ लो कि अपने देश के बने जूते का भी जितनी मान-प्रतिष्ठा करते हैं, उतनी अन्य देशस्थ मनुष्य की भी नहीं करते। श्री सत्यदेव विद्यालंकार के शब्दो में वस्तुत. जिस व्यक्ति के हृदय में अपने देश के बने जूते के लिए इतना मान-सम्मान हो कि वह उसका विदेशी जूते के मुकाबिले में कचहरी या दफ्तर में न जाने देने तक का अपमान सहन न कर सकता हो उसके हृदय में समाई स्वदेशी की भावना का अनुमान सहज में किया जा सकता है ? दुःख तो तब होता है कि जब स्वराज्य तथा स्वदेशी आदि की उत्कृष्ट भावनाओं से भरे ग्रन्थों के रहते हुए भी विद्वान् महर्षि दयानन्द को केवल एक समाज सुधारक अथवा धर्म प्रचारक के रूप में प्रस्तुत कर देते हैं और उनकी राजनीतिक देनो की सर्वथा अवहेलना कर देते हैं और जो कहीं उनका वर्णन भी करते हैं तो बडे बे-मन से।

महात्मा गाधी आदि राष्ट्र नेताओ की स्वदेशी की भावना कपडों वस्त्रो आदि तक ही सीमित थी किन्तु महर्षि तो इससे बहुत आगे जाते हैं। उनकी स्वदेशी की भावना कपडो वस्त्रो तक ही सीमित न थी। अपितु स्वदेशी भाषा, धर्म, संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन आदि सभी कुछ स्वदेशी था। उनका [illegible] आधार उनका प्रेरणा स्रोत आदि सभी कुछ अनिवार्यता स्वदेशी था। साधु टी.-एल वास्वानी का कथन है कि दयानन्द की देशभक्ति का आधार उसका आर्य आदर्श के लिए प्रेम था। उनकी देशभक्ति उन लोगो के समान न थी जो मुख पर भारत को रखते हैं किन्तु अपने भोजन वस्त्र मे अपने विचारो मे, अपने जीवन और रहन-सहन मे यूरोप के आदर्श रखते हैं। डा भवानीलाल भारतीय ठीक ही लिखते हैं कि—दयानन्द अपने समकालीन तथा परवर्ती सभी स्वाधीनचेता महापुरुषो को पीछे छोडते प्रतीत होते हैं। राष्ट्र पुरुष गाधी ने कहा अपने सर्वोदय के विचारो के लिए जान रस्किन और टाल्सटाय जैसे पश्चिमी विचारकों से प्रेरणा ग्रहण की। वहा दयानन्द के प्रेरणा स्रोत वेद के वे महनीय सूक्त हैं जिनमे स्वराज्य की अर्चना है। निश्चय ही महर्षि ने स्वराज्य शब्द ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के स्वराज्य सूक्त से लिया है यह कोई पश्चिम के प्रभाव का प्रतिफल नहीं। महर्षि का स्वदेशी का अनुराग उन के हिन्दी प्रेम के रूप में भी प्रवाहित हुआ है। आचार्य रामानन्द शास्त्री ने ठीक ही लिखा है कि—स्वामी दयानन्द ने अपने सत्यार्थ प्रकाश को हिन्दी में लिखा तथा उसका नाम आर्य भाषा दिया इससे भारतीय एकता में ऋषि का अनुराग प्रकट होता है। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, गगाधर, तिलक गोखी. अरविन्द आदि महापुरुषों ने आजीवन अंग्रेजी साहित्य की सेवा की जबकि वे सर्वदा राष्ट्रीयता का दम भरते रहे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय—

स्वाधीनता संग्राम में आर्य समाज का योगदान

हमारा एक और स्वतन्त्रता दिवस निकल गया। आजादी के 38 वर्ष अब समाप्त करके हमने 39वें वर्ष में पदार्पण किया है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आजादी के बाद हमारे देश ने बहुत अधिक प्रगति की है। हमारा आर्थिक स्तर भी कुछ ऊंचा हुआ है। यह सब कुछ होते हुए भी हम यह नहीं कह सकते कि जो कुछ होना चाहिए था वह सब कुछ हो गया। किसीको देश की वर्तमान स्थिति पर सन्तोष हो तो हो आर्यसमाज को नहीं हो सकता। क्योंकि इस आजादी के लिए आर्य समाज का योगदान सबसे अधिक रहा है। न केवल हजारों आर्य समाजी जेलों में गए थे। कई आर्य युवक फांसी पर भी झूल गए थे। कोई भी इतिहासकार जब स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास लिखने बैठता है तो वह आर्य समाज के योगदान की अवहेलना नहीं कर सकता। 1885 में कांग्रेस की स्थापना हुई थी। उससे 10 वर्ष पहले अर्थात् 1875 में आर्य समाज की स्थापना हो गई थी 1885 में कांग्रेस की स्थापना न हो सकती यदि उससे पहले देश की जनता में राजनैतिक और सामाजिक जागृति पैदा न होती और उसमें आर्य समाज का एक विशेष योगदान रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी कृति सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि दूसरे का राज्य चाहे कितना ही अच्छा क्यों न हो वह स्वराज्य जैसा नहीं हो सकता। महर्षि के एक विख्यात क्रान्तिकारी शिष्य श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा जब उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए इग्लैंड जाने लगे तो महर्षि ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए दो मन्त्र दिए थे और कहा था कि इन्हें कभी न भूलना और इनके लिए संघर्ष करना। वह दो मन्त्र थे स्वधर्म और स्वराज्य। अर्थात् अपने धर्म की रक्षा करो अपने राज्य के लिए प्रयास करो। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने लण्डन में रहते हुए देश की स्वाधीनता के लिए जो कुछ किया था, वह हमारे इतिहास का एक गौरवमय अंग बन गया है। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा के प्रभाव में आकर ही श्री मदन लाल ढींगरा, वीर सावरकर, लाला हरदयाल और भाई परमानन्द जैसे क्रान्तिकारियों ने देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था। यही कारण है कि जब कभी कोई इतिहासकार, इतिहास लिखने लगता है तो वह आर्य समाज और उसके प्रवंतक महर्षि दयानन्द सरस्वती का उल्लेख अवश्य करता है।

इसलिए अब जब कि हमारा देश आजाद हो गया है और हमने उसकी आजादी की 38वीं वर्षगांठ पिछले दिनों मनाई है तो हमें उस पर गर्व करना चाहिए परन्तु उसका एक धूमिल पक्ष भी है जिसकी अवहेलना नहीं की जा सकती वह यह कि देश का सामाजिक और कुछ आर्थिक विकास उस ढंग से नहीं हो रहा जैसा कि होना चाहिए था। हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आर्य समाज ने समाज सुधार के लिए जो प्रयास किए थे और जो आन्दोलन चलाया था वह इस रूप में तो सफल हुआ कि लोगों में नई जागृति आ गई है आर्य समाज के कार्यक्रम को बहुत कुछ देश ने अपना लिया है। हिन्दी देश की राष्ट्र भाषा बना दी गई है। गऊ हत्या पर भी कुछ प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। नारी जाति को समान अधिकार मिल गए हैं। प्रत्येक व्यक्ति की शिक्षा भी अनिवार्य हो गई है और भी कई सुझाव हैं जो आर्य समाज ने दिए थे और अब सारे देश ने उन्हें अपना लिया है। परन्तु हम यह भी जानते हैं कि अब लोग शराब पहले से अधिक पीते हैं। रिश्वत पहले से अधिक ली जाती है। भ्रष्टाचार और व्यभिचार भी पहले से अधिक बढ़ गया है। जिस प्रकार की फिल्में दिखाई जाती हैं उनके कारण जनता का नैतिक स्तर गिर रहा है अर्थात् जो सामाजिक क्रान्ति आर्य समाज लाना चाहता था। अब उसकी प्रतिक्रिया शुरू हो गई है। आगे बढ़ने की बजाए हम पीछे की तरफ चलने लग पड़े हैं। यह अत्यन्त शोचनीय स्थिति है इसकी ओर आर्य समाज को ध्यान देना चाहिए। आर्य समाज का इतिहास गौरवमय इतिहास है। उसने इस देश को बहुत कुछ दिया है। अब आर्य समाज का यह कर्त्तव्य है कि वह देखे कि उसने जो कुछ दिया था वह छिन्न न जाए। देश की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए आर्य समाज को एक ऐसी योजना बनानी चाहिए कि वह देश को फिर से एक नई दिशा दिखा सके। अगर आर्य समाज ने इस ओर ध्यान न दिया तो जो कुछ अपने पिछले एक सौ वर्षों में प्राप्त किया है वह सब नष्ट हो जाएगा। हमारा स्वाधीनता दिवस यह कहते हुए चला गया है कि जागो! देश वासियो जागो! संसार आगे भी बढ़ रहा है, उनमें परिवर्तन भी आ रहा है उसे देखते हुए अपने धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक ढांचे को बदलने के लिए कोई ऐसी योजना बनाओ कि यह भारत देश एक बार फिर उसी प्रकार सारे संसार का नेतृत्व करने लग जाए, जिस प्रकार प्राचीन काल में किया करता था। आर्य समाज इसमें अपना बहुत बड़ा योगदान दे सकता है, इसलिए उसे इस ओर ध्यान देना चाहिए।

—वीरेन्द्र

राजार्य सभा का प्रान्तीय सम्मेलन

इस समय तक राजार्य सभा के अधिकारीगण किसी न किसी प्रकार इसे चलाते रहे हैं और समय 2 पर पंजाब की स्थिति पर राजार्य सभा की ओर से जो वक्तव्य प्रकाशित होते रहे हैं उनके कारण अब यह सभा जनता के सामने आ गई है और लोग पूछते हैं कि यह क्या है? परन्तु अब अधिकारीगण यह भी अनुभव करते हैं कि दूसरी गतिविधियों को बढ़ाने की आवश्यकता है वह क्या हों? इस पर विचार करने के लिए रविवार 18-8-85 को एक प्रान्तीय सम्मेलन जालन्धर में किया जा रहा है। यह एक ऐसा सम्मेलन नहीं होगा कि जिसमें प्रत्येक व्यक्ति आ सके। केवल आर्य समाजों के प्रतिनिधि ही इसमें आएंगे। और वह आपस में बैठकर विचार करेंगे कि पंजाब में जो कुछ हो रहा है इसमें क्या किया जा सकता है। हिन्दुओं की कोई दूसरी संगठित संस्था नहीं है इसलिए आर्य समाज का उत्तरदायित्व और भी बढ़ जाता है। आशा है कि सब आर्य समाजों के प्रतिनिधि उस दिन इस सम्मेलन में सम्मिलित होकर कोई ठोस योजना बनाएंगे।

—वीरेन्द्र

युवा शक्ति से

संसार का इतिहास बताता है कि जिस क्षेत्र में युवा शक्ति आगे बढ़ी वह क्षेत्र भी आगे ही बढ़ता गया। यही स्थिति आर्य समाज की भी रही है। महर्षि दयानन्द ने युवा अवस्था में ही इतना बड़ा कार्य किया था जिसे देखकर आश्चर्यचकित होना पड़ता है, श्री पं. गुरुदत्त, महात्मा हंसराज जी, महात्मा मुन्शीरामजी पंडित लेखराम जी तथा दूसरे आर्य समाज के कर्णधारों तथा नेताओं ने युवा अवस्था में ही आर्य समाज में प्रवेश करके महर्षि दयानन्द के दर्शाए हुए मार्ग पर चलकर महान् कार्य किया था जो आज स्वर्ण अक्षरों में लिखा है जवानी में मानव की रगों में गर्म खून होता है। उत्साह, साहस और शौर्य होता है। उसके कदम जिस रास्ते पर बढ़ते हैं बड़ी दृढ़ता से बढ़ते हैं। बढ़े कदम कभी पीछे नहीं हटते।

आज आर्य समाज में युवा शक्ति का कुछ अभाव सा होता जा रहा है। ऐसी बात नहीं कि आर्य समाज में युवक नहीं हैं, वह हैं और पर्याप्त संख्या में हैं परन्तु आर्य युवक भी आज के युग से प्रभावित होकर अपने कर्त्तव्य को भूलते जा रहे हैं वह कहते हैं हमें क्या कोई कुछ भी करे, यह विचारधारा ही आज आर्य समाज में शिथिलता का कारण है।

आज अनाचार, भ्रष्टाचार, दुराचार, अन्धविश्वास ढोंग, पाखण्ड फिर पनपने लगा है। क्या आर्य समाजों तथा दूसरे बिगड़ते हुए सामाजिक ढांचे को संवारने के लिए आर्य युवक आज आगे नहीं आएगा। युवा शक्ति आगे बढ़े और महर्षि के सपनों को साकार करने के लिए प्रत्येक सामाजिक क्षेत्र में कूद पड़े। वह हर क्षेत्र में सफल होंगे, ऐसा हमें पूरा विश्वास है।

—सह-सम्पादक

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला

आर्य समाज- उपलब्धियां, सीमाएं और अपेक्षाएं दयानन्द सरस्वती के विचार—समय की कसौटी पर

ले.—डा. भवानीलाल जी भारतीय आचार्य व अध्यक्ष दयानन्द चेयर पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

※

(4 अगस्त से आगे)

जबकि अनार्ष ग्रन्थों की रचना तो मनुष्य की चिन्तन शक्ति को कुण्ठित करती है तथा उसे मानसिक जड़ता, प्रतिगामिता तथा रूढ़िवादिता का शिकार बनाती है। देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय के शब्दों में विगत पांच हजार वर्षों की अवधि में इस आर्य भूमि में अनेक आचार्यों का प्रादुर्भाव हुआ परन्तु उनमें से कोई भी ऋषि महर्षि प्रवर्तित ज्ञान के पुनरुद्धार में अपना योगदान नहीं कर सका। शंकर रामानुज एवं माध्व आदि ने जितना परिश्रम अपने अपने सम्प्रदायों के संगठन में किया उतना आर्ष ज्ञान के पुनरुद्धार में नहीं । यह श्रेय दयानन्द को ही जाता है कि संस्कृत भाषा में निबद्ध तथा शास्त्र नाम के प्रसिद्ध विशाल ग्रन्थ समुदाय की सम्यक् परीक्षा के अनन्तर उन्होने यह स्पष्ट घोषणा की कि अब समय आ गया है जबकि 'बाबा वाक्य प्रमाणम्' को छोड़कर हमें आर्ष एवं अनार्ष का विवेक करना होगा तथा यह देखना होगा कि वे ग्रन्थ कौन से हैं जो हमें उन्नतिगामी बनाते हैं जो हमारी बुद्धि एवं विचार शक्ति का विकास करते हैं हमारी मनोवृत्तियों को निर्मल एवं पवित्र बनाते है तथा हमें अभ्युदय एवं निश्रेयस के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। ऐसे ही ग्रन्थ हमारे लिए पठनीय एवं विचारणीय है। संस्कृत भाषा में लिखे होने मात्र से ही कोई ग्रन्थ प्रामाण्य कोटि में नहीं आ जाता।

वेद प्रामाण्य और आर्ष ग्रन्थों की वरीयता का सिद्धान्त स्वीकार कर लेने के पश्चात् दयानन्द के लिए यह अत्यन्त सहज हो गया था कि धर्म के नाम पर प्रचलित उन सहस्रों मिथ्या रूढ़ियों, जटिल कर्मकाण्डों, अन्धविश्वासों तथा मूढ़ धारणाओं का वे प्रबल प्रतिवाद करते, जो वैदिक धर्म में स्वीकृत उच्च आध्यात्मिक विश्वासों उदात्त उपासना पद्धतियों तथा प्राणिमात्र के हित के लिए प्रवर्तित क्रिया काण्डों के स्थान पर प्रचलित हो गये थे।

दयानन्द के द्वारा किए गए धर्म के नाम पर प्रचलित मिथ्या विश्वासों के प्रबल खण्डन को लक्ष्य में रखकर प्राय: लोग उन्हें संकुचित दृष्टि युक्त, अनुदार भावापन्न अन्य सम्प्रदायों के प्रति द्वेष बुद्धि रखने जैसे लाछन भी लगा बैठते हैं। निश्चय ही दयानन्द ने जिसे असत्य समझा, जिसे अन्याय युक्त माना तथा जिसे अधर्म कहा, उसका तीव्र खण्डन करने में उन्होने कभी संकोच नहीं किया। परन्तु उनका यह खण्डन कुठार उसी वस्तु या विचार पर गिरता था, जो मानव जाति के लिए हानिकारक उसकी एकता का विनाशक तथा उसे पतन की ओर ले जाने वाला होता था। खेद है कि खण्डन मण्डन में प्रयुक्त दयानन्द की तथ्य पूर्ण साथ ही बिना किसी लाग-लपेट वाली भाषा के अभिप्राय: को न समझकर उन्हें कटु भाषी खण्डन-पटु आदि न जाने क्या क्या कह दिया जाता है खण्डन-मण्डन की प्रयोजनीयता का उल्लेख करते हुए दयानन्द ने अपने विख्यात ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' की भूमिका तथा इसके उत्तरार्द्ध के प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में लिखी गई अनुभूमिकाओं में यह स्पष्ट कर दिया है कि उनका मुख्य प्रयोजन सत्य अर्थ का प्रकाश करना है। अर्थात् जो-जो सब मतों में सत्य सत्य बातें हैं, वे-वे सब में अविरुद्ध होने से उनको स्वीकार करके जो जो मत-मतान्तरों में मिथ्या बातें हैं उनका खण्डन किया है। वस्तुत: दयानन्द की दृष्टि में धर्म तो एक ही है। ऐसा धर्म जो वस्तु का स्वभाव होने के कारण सर्वथा अखण्डनीय ही होता है। अत: सच्चे धर्म का तो खण्डन हो ही नहीं सकता। दयानन्द ने तो विभिन्न सम्प्रदायों में प्रचलित अन्धविश्वासों, युक्ति तर्क एवं विज्ञान से विरुद्ध उन मिथ्या धारणाओं का ही खण्डन किया है। जो मत सम्प्रदायों के अनुयायियों में पारस्परिक द्वेष एवं फूट का संचार करती हैं। अत: दयानन्द को अन्य मतों के प्रति असहिष्णु कहना अन्याय पूर्ण है। दयानन्द ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वे प्रथम दृष्टि में ही किसी सम्प्रदाय विशेष के ग्रन्थ को आलोचना की दृष्टि से नहीं देखते हैं अपितु उसके गुण-दोषों का सम्यक् विवेचन करने के पश्चात् ही उनके सम्बन्ध में अपनी धारणा बनाते हैं। सम्प्रदायों में पाए जाने वाले दोषों को प्रकाशित करने का उनका लक्ष्य भी यही होता था कि लोग सत्य एवं असत्य का निर्णय करें ताकि सच्चाई को ग्रहण करने तथा मिथ्या को त्यागने का वे सामर्थ्य प्राप्त कर सकें। इसी अभिप्राय को उन्होंने अन्यत्र भी व्यक्त किया है।

दयानन्द द्वारा किए गए खण्डन-मण्डन के पीछे उनके दृष्टिकोण को विवेचना के प्रसंग में डा, रघुवंश को पुन: उद्धृत करना अनुचित नहीं होगा। उनके शब्दों में स्वामी दयानन्द ने सत्य धर्म एक ही माना है और उनकी दृष्टि में वह धर्म वही हो सकता है जो श्रेष्ठ मानव मूल्यों की रचनात्मक प्रक्रिया को गतिशील रखने में सक्षम हो सके। बाद के समन्वयवादियों और अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों ने दयानन्द को कट्टरपन्थी और खण्डन-मण्डन करने वाले सुधारक के रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। परन्तु वस्तु स्थिति यह है कि उनके जैसा उदार ...नतवादी नेता दूसरा नहीं रहा है।'

दयानन्द से एक शिकायत ईसाई तथा मुसलमान वर्ग के उन लोगों को भी रही, जो उनके खण्डन-मण्डन के पीछे निहित भाव को समझने में असमर्थ रहे थे। उन्होंने यह समझने का यत्न नहीं किया किया कि दयानन्द का सबसे अधिक विरोध तो धर्म के नाम पर व्यवसाय करने वाले पण्डे पुजारियों, महन्तों और मठाधीशों से था। दयानन्द ने यदि इस्लाम और ईसाईयत की आलोचना की तो इसलिए नहीं कि वे उन्हें भारत से इतर देशों में उत्पन्न सेमेटिक विचार धारा का वाहक समझते थे अपितु उनकी आलोचना के लक्ष्य तो इन सम्प्रदायों में विद्यमान असत्य, अन्धविश्वास तथा मूढ़ धारणाएं ही रही।

एक बात और भी थी। दयानन्द यह जानते थे कि इस्लाम और ईसाईयत के प्रचारक गण हिन्दू धर्म में प्रचलित रूढ़ियों अन्धविश्वासों तथा अनेक मूर्खतापूर्ण विधि-विधानों की ओट में पिछड़े वर्ग के लोगों को मत परिवर्तन की प्रेरणा देते रहते हैं। उनका कहना था कि जो स्वयं कांच के घरों में निवास करते है उन्हें दूसरों पर पत्थर फैंकने का क्य अधिकार है ? इसी तथ्य को लक्ष्य में रखकर उन्होंने ईसाई मत एवं इस्लाम की तथ्य पूर्ण आलोचना की। मानो उन्हें सचेत कर दिया कि उनकी स्थिति भी उन हिन्दू धर्म के अनुयायियों से किसी भी प्रकार भिन्न नहीं है जो अपनी कमजोरियों के कारण पादरियों और मौलवियों की आलोचना के शिकार बनते हैं। उदार भावापन्न लोग चाहे वे ईसाई थे या मुसलमान। स्वामी दयानन्द के दृष्टिकोण की वास्तविकता को समझकर सदा उनके प्रशंसक बने रहे। भारत में मुस्लिम नव-जागरण के अग्रदूत सैयद अहमद खां अजमेर से प्रकाशित होने वाले राजपूताना गजट के सम्पादक मुन्शी मुरादअली जैसे व्यापक दृष्टिकोण के मुसलमान तथा बरेली के पादरी डा, स्काट जैसे विचारशील ईसाई धर्म याजक दयानन्द के मित्र प्रशंसक तथा भक्त कहलाने में गर्व का अनुभव करते थे। यह दूसरी बात है कि कालान्तर में भारत में ही कुछ ऐसी राजनैतिक एवं सामाजिक परिस्थितियां उत्पन्न हो गई जिनके कारण स्वामी दयानन्द द्वारा प्रवर्तित आर्य समाज ईसाई तथा मुसलमानों से बहुत अधिक मधुर सम्बन्ध नहीं रख सका किन्तु उसका यहां विचार करना अप्रासंगिक है।

दयानन्द के दार्शनिक विचार—

दयानन्द जो समाज संशोधक धर्माचार्य तथा राष्ट्र निर्माता युग पुरुष के रूप में तो प्राय: स्मरण किया जाता रहा है किन्तु उनके दार्शनिक विचारों का बहुत कम ऊहापोह हुआ है। एतद् विषयक भ्रम यहां तक फैल गया कि अनेक अहम्मन्य प्रकृति के लोगों ने तो दयानन्द में दार्शनिकता का नितान्त अभाव ही घोषित कर दिया तथा उनके द्वारा प्रकट किए गए दार्शनिक विचारों को भी अति सामान्य छिछला तथा अनति गम्भीर कहने का प्रयास किया है। (क्रमश:)

जात-पात की उलझन

ले.—प्रा. श्री भद्रसेन जी, होशियारपुर

(गतांक से आगे)

जिस के कारण गाय आदि की अपनी 2 अलग सत्ता एवं व्यवहार, गुण, स्वभाव होने से वे अलग-अलग गाय, भैंस आदि जाति के रूप में पुकारे जाते हैं। यही स्थिति पक्षियों की भी है। पर मनुष्यों में पशु, पक्षी के सदृश कोई प्राकृतिक पृथक पृथक पहचान परिलक्षित नहीं होती। जिस के आधार पर मनुष्यों में अलग-2 जातियों की सत्ता प्रमाणित की जा सके। हां, कुछ ने अपनी पहचान बनाने की कोशिश की है, पर वह अधूरी एकांगी, अस्थायी और परिवर्तनशील है।

प्रदेश, रंग, खान-पान, रहन-सहन, कार्य और माता-पिता का देह पर प्रभाव होता है। जिस से मनुष्यों में पहाड़ी, मैदानी, शीत-उष्णगत सामान्य सा भेद प्राप्त होता है। जो कि उनके प्रादुर्भाव की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। प्रत्येक प्रादुर्भूत पदार्थ में अनेक कारणो का सम्मिश्रण होता है। भौतिक विज्ञान के नियम के अनुरुप कारण के गुण कार्य में आते है किसी कार्य की रचना में कम से कम तीन कारण अवश्य ही होते हैं जो कि उपादान, निमित और साधारण कारण के नाम से स्मरण किए जाते है। गीतामें इन की संख्या पांच मिलती है। माता-पिता का शरीर जहां किसी अन्य शरीर का समवायी कारण होता है, वहां वे उस के निमित कारण भी होते है। अत: कारण गुणपूर्वक कार्यगुण के नियमानुसार बालक पर माता-पिता का अनेक विध प्रभाव होता है। जोकि शारीरिक, आकृति वर्ण संस्कार आदि के रूप में परिलक्षित होता हैं। इस आनुवंशिक संस्कार तथा प्रभाव के अस्तित्व को किसी रूप में भी भुलाया नहीं जा सकता।

वर्ण व्यवस्था का मूल—

आकृति, शरीर में विद्यमान धातुओं इन्द्रियों और भावनाओं की समानता से जहां सभी मनुष्य एक समान तथा एक ही जाति के सिद्ध होते हैं वहां कार्य रुचि गुण, स्वभाव आदि के कारण कुछ भिन्नता भी होती है। इसी भिन्नता के कारण मनुष्यों के अनेक वर्ग मिलते हैं। जैसे कि सभी आजीविका के लिए कोई न कोई कार्य करते हैं पर कार्य की भिन्नता के कारण अलग-अलग संगठन (यूनियनें) बनते हैं और उनमें अनेक समानताएं मिलती हैं। आज देश, धर्म, भाषा तथा कार्य के कारण मनुष्यों के अनेक विध वर्ग और उनके फिर आगे अनेक भेद-उपभेद हैं। ये सारे भेद-उपभेद बहुत ही अधिक कृत्रिम एवं अस्थायी हैं। जो कि समय के साथ सदा बदलते रहते हैं।

मानव जाति की इस प्रकार की विभिन्नताओं के कारण प्राचीन भारतीय साहित्य में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आदि चार वर्ण इनके रथकार, सूत आदि उपभेद मिलते हैं। मनुस्मृति और गीता आदि में इनका जिस प्रकार का वर्णन आया है वह अधिकतर आज कल की यूनियनों की तरह ही प्रतिभासित होता है। उन दिनों के सीधे-सादे जीवन में कारोबार के अधिक भेद नही थे। अत. वहां चार का ही चित्रण है पर आज के जीवन की विविधता और कारोबारों के फैलने के कारण यूनियनों के अनेक भेद उपभेद हो गए हैं।

भारतीय साहित्य में वर्णों का चित्रण जहां स्वभाव और कार्य के कारण मिलता है वहां अनेक स्थलों पर जन्म मूलक भी प्राप्त होता है। जिसमें सामाजिक दृष्टि से स्पष्ट ही अन्याय का पुट भी परिलक्षित होता है। आनुवंशिक प्रभाव संस्कार जहां एक सर्वमान्य बात है वहां अपनेपन के मोहवशात् अपना सर्वस्व अपने प्रतिनिधि को सौंपने की स्वाभाविक भावना भी इसमें सहयोगी बनी। जैसेकि सभी क्षेत्रों में अपने कर्मचारियों के बच्चों के लिए स्थान संरक्षण की भावना बलवती हो रही है। सारे सामाजिक जीवन में इसी भावना का प्रभाव दिखाई देता हैं जैसेकि चलचित्र में अनेक अभिनेता अपने बच्चों को आगे लाने का प्रयास कर रहे हैं जबकि पहले सभी मेहनत, सूझ-बूझ से उभरते थे इस प्रकार कार्य रुचि, मूलक भावना ही वर्ण व्यवस्था मे जन्म मूलक बन गई। इसका सबसे प्रबल प्रमाण राजनीतिक क्षेत्र हैं जो एक बार विधायक, सांसद बन जाता है, वह अपनों के लिए भी उसे सुरक्षित रखना चाहता हैं। वैसे आनुवंशिक और परिश्रम दोनों का किसी कार्य में योगदान अपने-अपने रूप में प्रत्यक्ष हैं।

जन्मना वर्ण व्यवस्था के दुष्परिणाम प्राचीन साहित्य में एक वर्ण से दूसरे वर्ण में आने-जाने के अनेक उदाहरण उपलब्ध होते हैं। पर इसके साथ ही वहां अपनी जन्म मूलक उच्चता, श्रेष्ठता को स्थापित करके बिना श्रम के विशेष अधिकार प्राप्त करने की इच्छा आदि से बनी हुई है अनेक विध व्यवस्थाएं भी स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होती हैं। भारतीय साहित्य और इतिहास में अनेक उद्धरण उपलब्ध होते हैं जिन से सिद्ध होता है कि सामाजिक उच्चता-नीचता और जन्मगत स्पृश्यता-अस्पृश्यता की मान्यता के कारण समाज में बहुत ही अन्याय, अत्याचार, भेदभाव, घृणा का व्यवहार हुआ है। उन दिनों कुछ के शिक्षा और धर्म के द्वार ही बन्द नहीं किए गए, अपितु जीवन की आधारभूत मूल आवश्यकताओं की पूर्ति भी कठिन बना दी गई। नि:सन्देह समय के साथ आज इस स्थिति में बहुत अधिक परिवर्तन आ चुका है।

जन्मगत भेदभाव के कारण जब किसी को समान रूप से प्रगति का अवसर प्राप्त नहीं होता तो स्वाभाविक रूप से उसमें निराशा उदासीनता, अकर्मण्यता और आत्महीनता आदि की भावना घर कर जाती है। जिससे परस्पर सहयोग, सद्भाव, समान की प्राप्ति में बाधा आती है। दूसरी ओर श्रेष्ठता, उच्चता का वृथा अभिमान आता है, जिस से कर्मठता, स्पर्धा में कमी आती है। इस प्रकार के कल्पित जातीय व्यवहार से अपनों के प्रति भेदभाव, पक्षपात, मोह एव अभिमान की भावनाएं पनपती हैं। जोकि क्रमश लोभ, अन्याय को जन्म देती है। इन कल्पित जातीय भेदभाव के कारण परायापन आने से घृणा, अलगाव, ईर्ष्या द्वेषवशात् अन्याय शोषण को समर्थन मिलता है

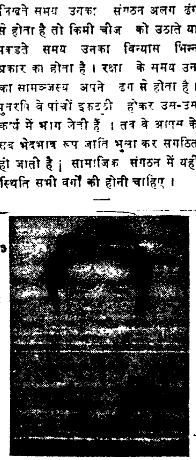
समय की मांग

वस्तुत: आज विद्या और भौतिक विज्ञान के विकास ने यह प्रमाणित कर दिया है कि किसी का किसी क्षेत्र में एकाधिकार नहीं है। सभी सूझ-बूझ युक्त श्रम एवं सहयोगी साधनों के द्वारा सफलता प्राप्त कर सकते है। आज के सामाजिक जीवन में कोई वर्ग एक दूसरे से अलग रहकर न तो जी सकता है और न ही प्रगति कर सकता है भौतिक विज्ञान के सामयिक यातायात और सन्देश संचार के साधनों के कारण मानव अनेक प्रकार से परस्पर निकट आ गया है। सामयिक यान्त्रिक आविष्कारों ने सारे संसार को एकरूपता दे दी है जिसके परिणाम स्वरूप अब कोई भी जात-पात की भावना में बढ़कर नहीं जी सकता। अत: मानव जीवन की मौलिक सहायक और सुविधा-वर्धक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक परिवार की तो बात ही क्या? प्रत्येक वर्ग एवं देश दूसरे पर निर्भर है।

जहां तक शास्त्रों की बात है उनमें सार्वकालिक और तात्कालिक दोनों प्रकार की बातें मिलती हैं। तात्कालिक विचारों की दृष्टि से जाति प्रथा के दोनों पक्षों के पोषक प्रमाण शास्त्रों में प्राप्त होते हैं। उन दिनों के शास्त्रों की इस प्रकार की विचारधारा को गौण कर देना चाहिए। क्योंकि मनुस्मृति आदि शास्त्र उन दिनों के समाज शास्त्र हैं। समाज शास्त्र के अनेक सिद्धान्त समय के साथ बदलते रहते हैं। जैसे मनु या किसी राजा का राज्य एवं समय में उस का संविधान मान्य होता था ऐसे ही आज के संविधान को ही प्रमुखता देनी चाहिए। अत: सामयिकता और संगठन की दृष्टि से अब विशेष निर्णय लेने चाहिएं। पुन: उन निर्णयों के अनुरूप ही सामाजिक व्यवहार स्थान रिवाज आदि मान्य होने चाहिएं। अन्यथा पारस्परिक संगठन सुदृढ विकसित और सुस्थिर न हो सकेगा।

वस्तुत: मानव समाज की स्थिति हाथ की अंगुलियों की तरह ही हैं। अंगुलियों का हाथ में केवल स्थान क्रम और आकार ही भिन्न नहीं है अपितु कार्य करने की शक्ति में भी स्पष्ट भेद है। कोई छोटी है तो कोई बड़ी। कोई मोटी है तो कोई पतली। लेकिन जब कोई कार्य करने का अवसर आता है तो कार्य के अनुरूप वे संगठित हो जाती हैं। लिखते समय उनका संगठन अलग ढंग से होता है तो किसी चीज को उठाते या पकड़ते समय उनका विन्यास भिन्न प्रकार का होता है। रक्षा के समय उन का सामञ्जस्य अपने ढंग से होता है। पुनरपि वे पांचों इकट्ठी होकर उस-उस कार्य में भाग लेती हैं। तब वे आत्म के सब भेदभाव रूप जाति भुला कर संगठित हो जाती है। सामाजिक संगठन में यही स्थिति सभी वर्गों की होनी चाहिए।

—



दोआबा आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल नवांशहर का छात्र अमित सरीन जिसने हायर सैकेण्डरी परीक्षा मार्च 1985 में 631-800 अंक लेकर नवांशहर इलाके में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

सभा भवन के लिए दान

आर्य मर्यादा के गत अंक में सभा भवन निर्माण के लिए जो दान प्राप्त हुआ है उसकी सूचि दी गई थी। व्यक्तिगत रूप से आगे निम्न दानियों से दान प्राप्त हुआ है।

श्री प्राण जी अरोड़ा। मै, किशन चन्द एण्ड कम्पनी लुधियाना—1100 श्री डी. के. ओसवाल वर्धमान मिल लुधियाना—1100 रु. श्री प्रिंसीपल अश्विनी कुमार जी दीनानगर—1100 रु, श्रीमती शारदा जी औलक लुधियाना—1100 रु, श्री हरिचन्द जी बजाज कपूरथला—1000 रु. श्रीमती सुवर्णापति जी जम्मू—1000 रु. श्री राम कुमार जी शर्मा हैडमास्टर जालन्धर—1000 रु. श्री ब्रह्मदत्त श्री वाली सुपुत्र श्री विशम्भर दास वाली कलासर (रोपड़) 1000 रु. श्री एम. सी. औल लक्ष्मी सेविंग मशीन लुधियाना 1001 रु. श्रीमती सावित्री देवी इकबाल गंज लुधियाना 1001 रु. श्रीमती ज्ञान देवी अध्यापिका दीनानगर—1000 रु. श्री शान्तिलाल जी ढल लुधियाना —1000 रु, श्री देव शर्मा जी दीनानगर—500 रु. श्री हरिचन्द इस्लामाबाद अमृतसर—500 रु, श्री डा. लालचन्द जी सुलतानपुर लोधी—500 रु. श्रीमती उर्मिला भाटिया बरनाला—430 रु.

श्रीमती राम प्यारी धर्म पत्नी श्री शिवलाल भाटिया जालन्धर—250 रु, श्री रवीन्द्र नाथ जी अग्रवाल लुधियाना—251 रु.। श्री सुरेन्द्र मोहन सुपुत्र श्री सत्य देव लुधियाना—2000 रु. श्री डा. के. के. पसरीचा जालन्धर-500) श्रीमती शान्ता गुप्ता लुधियाना—500 रु श्रीमती शान्ता अग्रवाल लुधियाना 251 रु, श्रीमती वीरां वाली उधमसिंह नगर लुधियाना—251 रु. श्री आनन्ददेव जी राजपुरा टाऊनशिप—100 रु, श्रीमती प्रिंसीपल आनन्द जी लुधियाना—201 रु. श्रीमती सत्यभामा सोनी समराला-200 रु, श्रीमती विमला जी भाटिया मदनपुरी लुधियाना—101 रु.

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

स्वामी गंगागिरी जनता कालेज रायकोट में यज्ञ

प्रथम अगस्त 1985 को कालेज का नया सैशन शुरू हुआ। ठीक 9 बजे सभी विद्यार्थियों की उपस्थिति में वेद मन्त्रों की पुनीत ध्वनि स्वामी गंगागिरी जनता कालेज में गूंजने लगी सभी प्राध्यापिकाओं और बेटियों ने हवन मन्त्रों का बहुत लय के साथ पाठ किया। हवन का सारा प्रोग्राम मास्टर सतीश जी कौड़ा ने किया। सभी विद्यार्थियों का यज्ञ की महिमा और महत्व पर ध्यान दिलाया गया। रमेश जी कौड़ा, सरदार गुरचरण-सिंह मलिक लुधियाना ट्रांस्पोर्ट तथा श्री कृष्ण गुप्ता ने अपने 2 विचार पेश किए। कालेज की विद्यार्थी कु. राजरानी ने बहुत मीठी आवाज में एक भजन सुनाया, सभी ने इसे बहुत पसन्द किया। अन्त में प्रिंसिपल श्रीमती उप्पल के भाषण के बाद प्रोग्राम शान्ति पाठ के साथ सम्पन्न हुआ।

—जय प्रकाश बुद्धिराजा
मन्त्री आर्य समाज रायकोट

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाजकिंग्जवे कैंप दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ—
प्रधान—श्री ठाकुर दास सपड़ा, उपप्रधान—श्री मुरलीधर जी, श्री राजेन्द्र दुर्गा, उपप्रधाना—श्रीमती भवानीदेवी, मन्त्री—श्री गोपाल आर्य, उपमन्त्री—श्री अशोक भाटिया, श्रीमती सुशीला सूद, प्रचार मन्त्री—श्री सत्यकाम जी, कोषाध्यक्ष—श्री देवराज नारंग, सह-कोषाध्यक्ष—श्रीमती शारदा रानी, पुस्तकाध्यक्ष —श्री देशबन्धु आर्य।

-मन्त्री

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज भुच्चो मण्डी (भठिण्डा) में जिला आर्य सभा की बैठक के अवसर पर इस आर्य समाज का चुनाव किया गया। समाज पूर्व से स्थापित होते हुए भी कार्य नहीं चल रहा था। चुनाव निम्न प्रकार हुआ-

प्रधान-श्री अमरचन्द जी, उपप्रधान--श्री बृजलाल जी, मन्त्री-श्री महाशय चतर राम, कोषाध्यक्ष--श्री लभाराम जी,

--ओम् प्रकाश वानप्रस्थी

जन्म दिवस के अवसर पर शोध संगोष्ठी

दिनांक 6-8-85 को वेदों के मर्मज्ञ विद्वन्मूर्धन्य पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी सरस्वती (प. बुद्धदेव विद्यालंकार) के 91वां जन्म दिवस स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल मेरठ (उ. प्र.) में बड़े धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें विद्वानों ने पण्डित जी के जीवन कार्य एवं विद्वता पर प्रकाश डाला। उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री इन्द्राज जी ने स्वामी समर्पणानन्द जी को पाण्डित्य का अगाध समुद्र बतलाया। इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा एक त्रैमासिक हस्तलिखित पत्रिका 'अनन्त विजय' का विमोचन पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ तथा उन्हीं की अध्यक्षता में एक शोध संगोष्ठी भी सम्पन्न हुई। जिसमें श्री सोमदेव शतांशु निगमालंकार एवं श्री वत्स निगमालंकार ने क्रमशः वैदिक वाङ्मय में सोम और 'शब्द ब्रह्म का स्वरूप एवं भर्तृहरि' पर अपना शोध प्रबन्ध पढ़ा। अपने अध्यक्षीय भाषण में पूज्य स्वामी जी ने वेदों के विरुद्ध चलाए जा रहे षड्यन्त्रों का पर्दाफाश करते हुए वैदिक शोध कार्य की महत्ता एवं आवश्यकता पर प्रकाश डाला। इस संगोष्ठी में नागरिकों के साथ साथ बड़ी संख्या में ग्रामवासी बुद्धिजीवी वर्ग भी उपस्थित था। संगोष्ठी अत्यन्त सफल एवं प्रशंसित रही। अगली शोध संगोष्ठी 3 नवम्बर 1985 को आयोजित करने का निश्चित किया गया है।

—

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

महर्षि दयानन्द ने इस आत्मा की शक्ति को पहचाना था। (आत्मवत् सर्व-भूतानि यः पश्यति स पण्डितः) यही कारण था कि वे विश्व में किसी से शत्रुता नहीं रखते थे। फर्रुखाबाद में गंगा के किनारे महर्षि एक झोंपड़ी में रहते थे। उनके मित्र स्वामी कैलाश आश्रम ने आकर पूछा 'महाराज! मैं अन्दर आ जाऊं?

महर्षि ने हंसते हुए कहा 'अवश्य आओ महात्मा जी। इस छोटे-से झोंपड़े में यदि कैलाश पूरा आ सकता है तो आओ अवश्य।

स्वामी कैलाश ने आते ही कहा, 'दयानन्द! इतना तप, इतनी साधना करने के बाद भी क्यों सारे संसार के कष्टों को दूर करने की चिन्ता तुम्हें अशान्त कर देती है?

महर्षि ने कहा, सुनो कैलाश! जो कुछ तुमने कहा उसे मैं समझता हूं, मैं केवल अपने लिए मोक्ष नहीं चाहता। मैं इस दुःख में जलते हुए संसार के लिए शक्ति चाहता हूं। इस संसार में आकर देखो। यह संसार दुःख और कष्ट के समुद्र में डूब रहा है। मैं इसे छोड़कर जाऊंगा सबको साथ लेकर नहीं तो यह मुक्ति मुझे नहीं चाहिए।

खुदा के बन्दे तो हैं हजारों,
वनों में फिरते हैं मारे-मारे
मैं उसका बन्दा बनूंगा जिसको,
खुदा के बन्दों से प्यार होगा॥

स्वामी श्रद्धानन्द ने मरने से पूर्व कामना की थी कि भगवान! मुझे मुक्ति नहीं चाहिए। मुझे पुनर्जन्म देना जिससे मैं भारत की ही नहीं विश्व की दीन-हीन मानव जाति की सेवा कर सकूं और उसे गुलामी से मुक्त करा सकूं।

यह है आत्म शक्ति के कार्य और भावनाएं। आइए आत्मा और शरीर के भेद को समझकर केवल शारीरिक एवं भौतिक विकास में न लगे रहकर आत्मा की उन्नति की कामना भी करें।

—

प्रण करना होगा

ले.—श्री पं. सत्यपाल जी 'पथिक' सिद्धान्त शास्त्री
आर्य भजनोपदेशक अमृतसर

अब उठो वतन के नवयुवको तुमको यह प्रण करना होगा।
इस भारत की बलिवेदी पर जीवन अपना धरना होगा।
एक रोज बजाया था मिलकर तुमने ही बिगुल आजादी का।
झुकने न दिया अपने ध्वज को बाना पहना बरबादी का।
हर कीमत पर इस दुखिया के हर सकट को हरना होगा।
अब उठो वतन के नवयुवको

आजादी की इन राहो में कितने राही कुर्बान हुए।
हसते-हसते सब कष्ट सहे हसते हसते बलिदान हुए।
बलिदानों से भारत मा के इस दामन को भरना होगा।
अब उठो वतन के नवयुवको

भारत माता के दुश्मन को धरती से मिटा के दम लेंगे।
हर ककर को हर पत्थर को रस्ते से हटा के दम लेंगे।
आन्धी से न घबराना होगा तूफा से न अब डरना होगा।
अब उठो वतन के नवयुवको

यह देश अखण्ड रहे इसके टुकडे न कभी होने देंगे।
अलगाव फूट और नफरत के हम बीज नही बोने देंगे।
गद्दारो और मक्कारो को लोहे के चने चबाना होगा।
अब उठो वतन के नवयुवको

इस देश के अन्दर हम गैरो की चाल नहीं चलने देंगे।
वे बुरा सोचें उनकी हम दाल नही गलने देंगे।
इसके ही लिए जीना होगा, इसके ही लिए मरना होगा।
अब उठो वतन के नवयुवको

यह अमर शहीदो की धरती बलिदान मागती आज यहा।
गरमा के खून सर देकर भी रखनी है वतन की लाज यहा।
दुनिया मे रहेगा सर ऊचा, वरना यह 'पथिक' सर न होगा।
अब उठो वतन के नवयुवको——

आर्य समाज शहीद भगतसिंह कालोनी जालन्धर की इमारत वर्षा से गिर गई

आर्य समाज शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर के भवन का नव-निर्माण हो रहा था बडे परिश्रम से इस कालोनी की तथा दूसरी आर्य जनता के दान द्वारा इसका निर्माण कार्य चल रहा था। यज्ञशाला तथा दूसरे दो कमरे बने थे और कुछ और बनने वाले थे। गत दिनो जालन्धर में वर्षा ने जो अपना प्रकोप दिखाया और सारे जालन्धर में पानी भरा, वहा भगतसिंह कालोनी भी इससे बाहिर नही रही यहा भी बहुत पानी भरा। आर्य समाज मन्दिर की ओर पानी बहुत अधिक था इसलिए यज्ञशाला की छत तथा दूसरे कमरो की खडी दीवारें गिरने से सभी कुछ नष्ट हो गया। यह निर्धन लोगो की कालोनी है। इनमे पुन इस समाज को बनाने का सामर्थ्य नही है। मेरी दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि वह इस छोटी सी समाज को अपना सहयोग दे। ताकि इसका पुन निर्माण किया जा सके।

—मुलखराज आर्य प्रधान

आचार्य सोमदेव शास्त्री पी. एच. डी. की उपाधि से सम्मानित

वैदिक सहिता पाठ और पद-पाठो का विश्लेषण एव मूल्याकन—

विषय पर आचार्य सोमदेव शास्त्री को राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर ने पी एच डी की डिग्री प्रदान की है।

पाणिनी महाविद्यालय बनारस मे अध्ययन करते हुए सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से मध्यमा शास्त्री आचार्य परीक्षाए प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण की। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से सस्कृत मे एम, ए परीक्षा प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण की। अध्ययन के साथ सस्कृत प्रचार आपके जीवन का आवश्यक अग रहा। 1973 से 1979 के बीच आप राजस्थान और मध्य प्रदेश के विविध नगरो मे सस्कृत शिविर का सचालन करते रहे उसके साथ-साथ शोध विषयक सामग्री का सकलन भी करते रहे। जिसे उन्होने 1980 से 1983 तक आर्य समाज सान्ताक्रुज मे सस्कृत कक्षाओ का सचालन करते हुए सम्पन्न किया। इस बीच आर्य समाज सान्ताक्रुज से ही इन का स्वर सिद्धान्त नामक शोध ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। इस समय वे आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई द्वारा स्थापित आर्य विद्या मन्दिर मे अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

उपरोक्त शोध ग्रन्थ मे उपलब्ध समस्त सहिताओ एव पद-पाठो का परिणाम है ऋग्वेद की शाकल सहिता के प्रथम मण्डल ऋचाओ की तुलना समस्त सहिताओ मे की है जिसमे लगभग 200 ऋचाए ऐसी हैं जिनमे पाठ भेद मिलता है।

वेदो की रक्षा मे अष्टविध पाठो का अभूतपूर्व योगदान रहा है। शोध प्रबन्ध मे 8 अध्याय हैं।
प्रथम अध्याय मे सहिता पद क्रम जटादि पाठो का वर्णन शाकल सहिता की प्रथम ऋचा अग्निमीड पुरोहित के समस्त पाठ विविध पाठो तथा इस विषयक समस्त उपलब्ध साहित्य का परिचय दिया है।

द्वितीय अध्याय मे उपलब्ध सहिताओ पद पाठो और प्रातिशाख्यो का वर्णन किया है। 3-4 अध्याय मे पाणिनी व्याकरण तथा निरुक्त के योगदान और शोध प्रबन्ध का 5वा अध्याय अत्यन्त महत्वपूर्ण है। छठे अध्याय मे पद पाठो के नियमो का पालन वेद भाष्यकारो ने कहा तक किया है ऋषि दयानन्द की इस विषय मे क्या मान्यता है यह स्पष्ट किया गया है। 7वे अध्याय मे इन आक्षेपो का तर्क एव प्रमाणो द्वारा खण्डन करके यह मान्य प्रतिष्ठापित की गई है। 8वे मे उपसहार करते हुए शोध प्रबन्ध के निष्कर्ष पद पाठो के नियम वेद भाष्यकारो का मूल्याकन सम्भाए वेद का सहिता-पाठ आधार है शोध प्रबन्ध की परीक्षको तथा विश्वविद्यालय के अधिकारियो ने अनुरोध को समझकर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से सहयोग से विश्वविद्यालय प्रकाशित करेगा ऐसी घोषणा की गई।

—कैप्टन देवरत्न आर्य महामन्त्री

(2 पृष्ठ का शेष)

स्वदेश प्रेम

स्वदेश प्रेम को जागत करने मे महर्षि दयानन्द का योगदान अनन्यतम है। महर्षि के निम्न शब्द इस मे प्रमाण हैं—जिस देश के पदार्थो से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता आगे होगा, उसकी उन्नति तन मन धन से सब जने मिलकर प्रीति से करे। ब्राह्म समाज तथा प्रार्थना समाज आदि की देशभक्ति की न्यूनता पर कटाक्ष करते हुए महर्षि लिखते है—"जब आर्यावर्त देश मे उत्पन्न हुए हैं और इस देश का अन्न जल खाया पिया अब भी खाते पीते हैं तब अपने माता-पिता व पितामह आदि के मार्ग को छोडकर दूसरे विदेशी मतो पर अधिक झुक जाना और एतद्देशस्थ सस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान प्रकाशित करना, इगलिश भाषा पढ के पण्डिताभिमानी होकर झट एक मत चलाने मे प्रवृत्त होना, मनुष्यो का स्थिर और वृद्धिकारक काम क्योकर हो सकता है? क्या स्वदेश स्वभाषा तथा स्वधर्म के प्रति प्रेम और अपने पूर्वजो के लिए गौरव तथा अभिमान इन पक्तियो के एक-एक शब्द से प्रस्फुटित नही हो रहा।

परतन्त्रता के कारणो का विश्लेषण

महर्षि दयानन्द ने केवल स्वतन्त्रता का मन्त्र ही दिया हो, ऐसी बात नही, परतन्त्रता के कारणो का विश्लेषण भी महामनीषी की दृष्टि से ओझल नही हुआ। अपार दुख, व्यथा और वेदना भरे शब्दो मे महर्षि लिखते हैं—विदेशियो के आर्यावर्त मे राज्य होने के कारण आपस की फूट मतभेद ब्रह्मचर्य का सेवन न करना विद्या न पढना पढाना, बाल्यावस्था मे अस्वयवर विवाह विषयासक्ति, मिथ्या भाषण आदि कुलक्षण, वेद विद्या का अप्रचार आदि कुकर्म है। और जब आपस मे भाई-भाई लडते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पच बन बैठता है। परस्पर फूट पर दुख तथा आक्रोश व्यक्त करते हुए महर्षि की लेखनी से निम्न पक्तिया निःसरित हुई हैं—आपस की फूट से कौरव पाण्डव और यादवो का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया। परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्यो का सब सुखो से छुडा कर दुख सागर मे डुबो मारेगा। उसी दुष्ट गोत्र हत्यारे स्वदेश विनाशक, नीच के दुष्ट मार्ग मे आर्य लोग अब तक भी चलकर दुख बढा रहे हैं। परमात्मा कृपा करे कि यह राजरोग हम आर्यो मे से नष्ट हो जाए। यद्यपि यह पक्तिया एक शती पूर्व लिखी गई थी तथापि आज भी इनकी उतनी ही उपयोगिता है उतना ही महत्व है जितना कि सौ वर्ष पूर्व था। न जाने यह फूट हमे कहा ले जाकर पटकेगी?

आर्यसमाज जालन्धर छावनी का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज जालन्धर छावनी का चुनाव 28-7-85 को निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री मधु सूदनलाल सेठी, उपप्रधान—श्री कृष्णलाल गुप्ता एडवोकेट श्री चमनलाल जी नन्दा, मन्त्री—श्री काशीराम जी अग्रवाल, उपमन्त्री—श्री सुदेश कुमार लाला कोषाध्यक्ष-श्रीरामनाथ जी मलिक, पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामचन्द्र जी, अधिष्ठाता आर्य वीर दल—श्री यतेन्द्र गुप्ता, अन्तरग सदस्य—श्री मदनलाल सभ्रवाल, श्री जनकराज महाजन, श्री बलदेवराज शर्मा, श्री इन्द्रसेन जी मलिक- श्री चन्द्र गुप्ता, श्री इन्द्रसेन जी, श्री जवाहर महाजन, श्री धर्मेन्द्र कुमार अग्रवाल।

—काशीराम मन्त्री

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज सगरूर का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ जिसमे श्री सुरेश कुमार जी सर्वसम्मति से प्रधान चुने गए तथा उन्हे अपने बाकी सहयोगी चुनने का अधिकार दिया गया तथा उन्होने जो अधिकारी मनोनीत किए हैं वे निम्नलिखित हैं—

प्रधान—श्री सुरेश कुमार जी, सरक्षक—श्री निरञ्जनदास जी, सीनियर उपप्रधान--श्री शिवराम जी महान्, उपप्रधान—श्री भीमसेन जी, श्री मोतीराम जी, मन्त्री श्री अशोक कुमार जी आर्य उपमन्त्री—श्री मेहरचन्द जी, कोषाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्रपाल जी (उषा वाले) सह-कोषाध्यक्ष—श्री मदनलाल जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री राजेन्द्र प्रसाद जी आर्य, सह-पुस्तकाध्यक्ष—श्री जय दयाल जी।

—अशोक आर्य मन्त्री

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग अम्बाला छावनी का वार्षिक चुनाव दिनाक 18-7-8 को सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री जयप्रकाश बी. ए एल एल, बी, आर्य प्रधान चुने गये, उन्हे अन्तरग सभा बनाने का अधिकार दिया गया जिसमे निम्न पदाधिकारी 'घोषित किए गए—

सरक्षक—मा पन्नालाल जी प्रधान श्री जयप्रकाश आर्य,एम,ए,एल,एल बी मन्त्री—श्री जगदीश आर्य,प्रचार मन्त्री—श्री वेदमित्र हापुड वाले, उपमन्त्री—श्री ओमप्रकाश सिंगला एव खैरायती लाल, कोषाध्यक्ष—श्री वेदप्रकाश शर्मा, उपप्रधान—श्री डा दिलबाग राय, मा.सर्वदयाल पुस्तकाध्यक्ष श्री सामप्रकाश आर्य प्रतिष्ठत सदस्य—श्री रामलाल जी, भोजराज जी वैद्य प्रेम सागर, डा. जयदेव, डा, हरिप्रकाश एव कर्नल सतीश धवन, प्रतिष्ठित सदस्य मनोनीत किए गए।

--वेदमित्र हापुड वाले

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज विनय नगर (सरोजिनी नगर) नई दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन 18-7-85 को सर्व सम्मति से निम्न प्रकार हुआ--

प्रधान--डा, विजय कुमार सहगल, उपप्रधान—सर्वश्री महीराज भाटिया, श्री देसराज बुद्धराजा श्री बलबीर वर्मा. श्री तिलकराज चोपडा, मन्त्री—श्री आत्मदेव जी, प्रचार मन्त्री—श्री रोशनलाल गुप्त उपमन्त्री—सर्वश्री सुरेन्द्र-कुमार जी गर्ग श्री बोहरीलाल श्री कश्यप,श्री किशोर कुमार, श्री सत्यस्वरूप कोषाध्यक्ष—श्री मुलखराज जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री फकीरचन्द ठाकुर, लेखा-निरीक्षक—श्री राममेहर आर्य।

परीक्षा परिणाम

आर्य हायर सैकेण्डरी स्कूल दीनानगर का वर्ष 1985 का परिणाम—मैट्रिक का शतप्रतिशत रहा। अजय अग्रवाल 1056 अक (प्रथम रहा) ग्यारहवीं का परिणाम भी शतप्रतिशत रहा। अजय महाजन अक 680 प्रथम रहा दलबीरसिंह 633 द्वितीय रहा।—सतीश कुमार मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन नं. 74250 ... रजि. नं. पा. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 20, 10 भाद्रपद सम्वत् 2042, तदनुसार 25 अगस्त 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

पंजाब की राजनीति में आ.स. सक्रिय योगदान देगा

आर्यसमाज अब हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठ सकता

धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिए हमें संगठित रूप से अपनी आवाज उठानी चाहिए

पंजाब राजार्य सभा के महत्वपूर्ण निर्णय

जालन्धर 18 अगस्त (विशेष सम्वाददाता द्वारा) पंजाब में पिछले कुछ वर्षों से जो राजनैतिक परिस्थितियां पैदा हो रही थी उनके कारण पंजाब का आर्य समाज यह अनुभव कर रहा था कि उनका भी कोई ऐसा मंच होना चाहिए जहां से देश की राजनैतिक समस्याओं के विषय में उसका दृष्टिकोण जनता के सामने आ सके। इस उद्देश्य को सामने रखते हुए आर्य प्रतितिधि सभा पंजाब ने पंजाब राजार्य सभा की स्थापना की थी। पिछले छः-सात मास में इस सभा की ओर से भिन्न 2 राजनैतिक समस्याओं के विषय में आर्य समाज का दृष्टिकोण समाचार पत्रों, दूर दर्शन और आकाशवाणी के द्वारा जनता के सामने रखा गया है।

परन्तु आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी यह अनुभव कर रहे थे कि इस समय सारी आर्य जनता को साथ लेकर एक ऐसा सगठन बनाने की आवश्यकता है कि आवश्यकता पड़ने पर पंजाब की राजनीति को एक नई दिशा दिखा सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए रविवार 18 अगस्त 1985 को जालन्धर में आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्य कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा में पंजाब राजार्य सभा की एक प्रान्तीय बैठक हुई। इसमें भिन्न-भिन्न नगरों से लगभग 150 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए और चार घण्टे भिन्न भिन्न समस्याओं पर विचार किया गया, कई महानुभावों का कहना था कि हमें किसी दल विशेष का समर्थन या विरोध नहीं करना चाहिए। अपितु यह देखना चाहिए कि किस प्रकार के प्रत्याशी खड़े किए जाते हैं। आर्य समाजियों को अपना संगठित वोट केवल उन व्यक्तियों को देना चाहिए जिनके समर्थन की घोषणा राजार्य सभा करे। इसके लिए निम्नलिखित व्यक्तियो की एक समिति बनाई गई है जो यह निर्णय लेगी कि कौन से प्रत्याशी ऐसे हैं जो इस योग्य हों, कि उन्हें वोट दिया जाए। इसका निर्णय निम्नलिखित महानुभावों पर निर्धारित समिति करेगी।

1, श्री वीरेन्द्र प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब।

2. श्रीमती कमला जी आर्या महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब।

3, श्री पं. हरवंशलाल जी शर्मा उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब।

4. श्री सरदारी लाल आर्य रत्न मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब।

5, श्री अमृतलाल बजाज एडवोकेट संयोजक पंजाब राजार्य सभा।

6. श्री ऋषिपालसिंह जी एडवोकेट वेद प्रचार अधिष्ठाता।

7. श्री रणवीर जी भाटिया लुधियाना।

8. श्री वेद प्रकाश जी ङ्सरीन नवांशहर।

9. श्री रामनाथ शर्मा अमृतसर।

10, श्री मनोहर लाल जी डोगरा जालन्धर।

यह समिति अपना निर्णय लेने के पश्चात् पंजाब की सब आर्य समाजों को सूचित कर देंगी कि उसकी सम्मति में कौन से ऐसे प्रत्याशी हैं कि जिनके पक्ष में आर्य समाजियो के वोट पड़ने चाहिएं, इस सभा में यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि आर्य समाज को राजनैतिक सत्ता प्राप्त करने की कोई अभिलाषा नही है। हम केवल यह चाहते हैं कि जो भी व्यक्ति हमारे प्रनिनिधि बनकर पंजाब असैम्बली में जाए वह वहां जाकर कोई ऐसी कार्यवाही न करें जो हमारे देश और धर्म के विरुद्ध हो। विशेषकर पंजाब में हिन्दुओं के हितों की रक्षा अत्यन्त आवश्यक है।

पंजाब में और कोई भी ऐसी संस्था नहीं है जो कि हिन्दुओं के हितों की रक्षा कर सकें। पिछले गत वर्षों में जो कुछ पंजाब में होता रहा है वह किसी से छुपा हुआ नहीं है। आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो हिन्दुओं के हितों की रक्षा कर सकती है। परन्तु इस कार्य के लिए सभी आर्य समाजियों के सगठन की आवश्यकता है। सभी का वोट इकट्ठा एक ही प्रत्याशी को पड़ना चाहिए। जिसका समर्थन पंजाब राजार्य सभा करे। आने वाले चुनाव में सभी आर्य समाजियों को अपने संगठन का परिचय देना चाहिए।

पंजाब राजार्य सभा के निर्माण से पंजाब की आर्य जनता में बड़ा उत्साह पाया जा रहा है और आशा की जा रही है कि यह सभा पंजाब की राजनीति को प्रभावित करके एक नई दिशा दिखा सकेगी। क्योंकि इस सभा का अपना कोई स्वार्थ नहीं है। इसका निर्माण केवल पंजाब के हिन्दुओं के हितों की रक्षा के लिए किया गया है। इस दिशा में इस सभा ने अपना कार्य करना आरम्भ कर दिया है।

इसी के साथ राजार्य सभा ने पंजाब के सभी हिन्दी प्रेमियों से निवेदन किया है कि इस प्रान्त में अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखने के लिए वह अपने दैनिक सामाजिक, व्यवहारिक जीवन में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करें ताकि हमारी इस राष्ट्र भाषा को पंजाब में सम्मान और आदर मिले।

इस सम्मेलन में जो प्रस्ताव पारित किए गए हैं वह भी इसी अंक में अन्दर पृष्ठ चार पर दिए जा रहे हैं—

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला

आर्य समाज- उपलब्धिया, सीमाएं और अपेक्षाएं दयानन्द सरस्वती के विचार—समय की कसौटी पर

ले.—डा. भवानीलाल जी भारतीय आचार्य व
अध्यक्ष दयानन्द चेयर पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ

(18 अगस्त से आगे)

तथ्य यह है कि दयानन्द के सम्पूर्ण व्यक्तित्व एव कृतित्व के पीछे एक अत्यन्त स्पष्ट सुविचारित तथा सतर्क चिन्ता धारा कार्य कर रही थी। यदि दयानन्द दर्शन मे वैसी यथार्थवादिता, गहराई तथा स्पष्टता नही होती तो इसमे सन्देह ही है कि वे अपने विचारो को जन-सामान्य तक पहुचा पाते तथा बहुसख्यक समाज उनका अनुयायी बन जाता।

दयानन्द ने विश्व प्रपच की व्याख्या यथार्थवादी दृष्टि से की है। उनका दर्शन जीवेश्वर के भेद तथा प्रकृति की अनादिता के सिद्धान्त पर आधारित है। इस दृष्टि से वे शाकर वेदान्त के प्रखर आलोचक भी है। उनकी दार्शनिक विचार धारा जहा वैदिक एव औपनिषदिक दार्शनिक चिन्तन पर पूर्णतया आधारित है वहा प्रबल युक्तियो एव प्रमाणो से उसे परिपुष्ट भी किया गया गया है। इसका यह अर्थ नहीं कि वे उपनिषदो के उन वाक्यो की अनदेखी कर जाते हैं जो एकाधिक बार अद्वैतवाद का समर्थन करते है। वे ऐसे वाक्यो की सगति स्वतन्त्र रूप से लगाते है और उनका कहना है कि यदि प्रसगानुसार ऐसे अभेदक प्रतीत होने वाले उपनिषद वचनो का सम्यक विचार किया जाए तो उनसे शाकर सिद्धान्त को पुष्ट करना असम्भव ही हो जाएगा।

दयानन्द का शकर पर स्पष्ट आरोप है कि उन्होने न केवल उपनिषदो की अपितु वेदान्त सूत्रो की भी व्याख्या स्वाभिमत के अनुकूल ही की है और ऐसा करते समय वे यह विस्मृत कर जाते हैं कि सूत्रकार ऋषि का आशय निश्चय ही वह नही है जो उनकी व्याख्या मे लिया जा रहा है। आचार्य शकर पर वैयासिक सूत्रो के अर्थो मे खीचतान का आरोप दयानन्द ने ही लगाया था, ऐसी बात नही है। पुनर्जागरण के ही एक अन्य कर्णधार तथा अपने आपको महान् वेदान्ती कहने वाले स्वामी विवेकानन्द जी ने इस सम्बन्ध मे लिखा था—'शकर अद्वैतवादी थे, इसलिए उन्होने सभी सूत्रो की केवल अद्वैत मत मे व्याख्या करने की चेष्टा की है। उन्होने एक व्याख्यान मे यहा तक कह दिया था कि—'शकराचार्य जैसे बडे-बडे भाष्यकारो ने अपने मत की पुष्टि के लिए जगह-जगह पर शास्त्रो का ऐसा अर्थ किया है जो मेरे विचार मे समीचीन नही है।' दयानन्द ने भी लगभग ऐसा ह कहा है।

परन्तु बात केवल अद्वैतवाद के दार्शनिक पक्ष या सैद्धान्तिक पहलू की ही नही थी।। दयानन्द तो व्यवहारवादी, यथार्थ दृष्टि सम्पन्न दार्शनिक थे। उन्होने स्पष्ट अनुभव किया था कि शाकर अद्वैतवाद और मायावाद ने देशवासियो को कर्मशील जीवन से विरत कर उन्हे स्वप्न लोकवासी, परलोक चिन्तन करने वाले मात्र मोक्ष गामी ही बना दिया है समाज और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वो की सर्वथा विस्मृत कर 'अह ब्रह्मास्मि' और 'तत्वमसि' के तथाकथित महा वाक्यो की मीमासा करने वालो ने दर्शन जगत् मे ख्याति के चाहे जैसे झण्डे गाड दिए हो, किन्तु उनसे देश तथा समाज का हित तो कदापि नही हुआ। जन सेवा, लोकहित के लिए स्वार्थ त्याग देश और जाति के व्यापक कल्याण की सिद्धि के लिए समर्पण भाव आदि के उदात्त तत्व उन वेदान्तवादियो में यदा-कदा ही दिखाई पडते हैं। अत: यदि हमे अपने जीवन को जड, निष्क्रिय तथा पलायनोन्मुख नहीं बनाना है तो वेदान्त की मोहमयी मदिरा का त्याग करना ही होगा, यह दयानन्द की पक्की धारणा थी।

इस प्रकार शाकर मत का सर्वभावेन निरसन करने के पश्चात् दयानन्द ने जीवेश्वर भेदवाद के पोषक द्वैत सिद्धान्त (अथवा जीव, ईश्वर एव प्रकृति की त्रिविध अनादि सत्ताओ को स्वीकार करने वाले त्रैतवाद) की स्थापना की। उन्होंने जीवेश्वर सम्बन्धो की विवेचना करते हुए इनमे परस्पर उपास्य उपासक, राजा-प्रजा, गुरु-शिष्य, मित्र-मित्र तथा सेव्य-सेवक भावो को स्वीकार किया।

भारत के दार्शनिक चिन्तन को दयानन्द की एक अन्य महत्वपूर्ण देन, उनके आर्ष ग्रन्थ प्रामाण्य के सिद्धान्त से ही अनुस्यूत हुई है। वे यह मानते हैं कि न्याय, वैशेषिक, साख्य, योग तथा वेदान्त एव मीमासा—छहो वैदिक दर्शन एक दूसरे के विरोधी न होकर एक दूसरे के पूरक है। उन्होने 'सत्यार्थ प्रकाश' के तृतीय तथा अष्टम समुल्लास मे षड्दर्शन समन्वय का उल्लेख किया है तथा एतद् विषयक चर्चा को सूत्र रूप मे उठाया है। यदि उन्हें समय मिलता तो सम्भवत वे सभी दर्शनो की समन्वयात्मक दृष्टि से व्याख्या भी करते। दर्शन सूत्रो मे सामञ्जस्य स्थापित करने का यह श्लाघनीय प्रयास उनके इसी मन्तव्य पर आधारित था कि साख्यादि दर्शनो के प्रणेता कपिल आदि साक्षात्कृत धर्मा, जीवन एव जगत् के रहस्यो को हस्तामलकवत् जानने वाले परावरज्ञ कोटि के ऋषि थे। अत ऋषियो के कथन मे कोई मौलिक मतभेद नही हो सकता शैली भेद भले ही हो।

दयानन्द का दर्शन जीव एव ईश्वर के परस्पर भेद के विचार पर आधारित है। अत मूलत दयानन्द ने जीव के लिए ससार के स्रष्टा एव विधाता परमात्मा की प्रणति पुरस्सर उपासना करने का ही विधान किया है यहा यह ध्यातव्य है कि वैदिक साहित्य तथा विचार धारा मे ज्ञान कर्म एव भक्ति (उपासना) की त्रिपुटी को परस्पर विरोधी तथ्यो के रूप मे प्रस्तुत न कर एक दूसरे के पूरक के रूप मे विवेचित किया गया है। यह एक विडम्बना ही थी कि कालान्तर मे [illegible]आचार्य जैसे ज्ञानमार्गी दार्शनिको ने ज्ञान और कर्म मे छत्तीस का सम्बन्ध ठहराया और इन्हे परस्पर विरोधी घोषित किया। इसी की प्रतिक्रिया वैष्णव सम्प्रदाय के भक्त आचार्यों मे हुई, जिन्होने ज्ञान एव कर्म का आत्यन्तिक बहिष्कार कर मात्र भक्ति को ही कलिकाल मे परमात्मा की प्राप्ति का एकमेव साधन बताया। यह मध्यकालीन भक्ति भी कैसी थी ? जो सामाजिक दायित्वो तथा सामाजिक सन्दर्भो से व्यक्ति को सर्वथा विछिन्न कर एक ऐसी आवेशपूर्ण स्थिति मे ले आती थी, जिसके वशवर्ती होकर मनुष्य अपने सभी सासारिक इति कर्त्तव्यो से मुह मोड लेता था।

दयानन्द ने वैष्णवो की इस आवेशमयी भक्ति का डटकर विरोध किया जो केवल एक बार के नाम स्मरण मात्र से ही अथवा तुलसी दल समर्पित कर देने मात्र से ही जीव के लिए मोक्ष का द्वार खोल देने का दावा करती थी चाहे भक्त का वैयक्तिक जीवन कैसा ही अपराध पूर्ण क्यो न हो तथा उसके कर्म कितने ही दोषो से भरे क्यो न हो ? देवता की प्रतिमा के समक्ष एक पुष्प समर्पित कर देने गगादि तीर्थों मे एक बार गोता लगा लेने अथवा गलत सही किसी भी तरीके से नारायण के नाम एक बार उच्चारण कर लेने से ही मनुष्य भव पाशो से मुक्त होकर परमात्मा के परमधाम का अधिकारी हो जाता है। ऐसे भावो एव आस्थाओ ने भारतवासियो की पुरुषार्थ वृत्ति को कुण्ठित कर उन्हे दैववादी, प्रारब्धवादी, अकर्मण्य एव पलायनवादी बना दिया है, यह दयानन्द का सुदृढ विश्वास था।

दयानन्द का भक्तिवाद

तथापि इससे यह निष्कर्ष निकाल लेना अनुचित ही होगा कि दयानन्द एक शुष्क विचारक एव तार्किक तथा 'वेदाभ्यासजडमति मीमासक का ही व्यक्तित्व लेकर देश के सार्वजनिक जीवन के मच पर अवतरित हुए थे। स्वय के अनुसार उन्होने सार्वजनिक जीवन को सर्वतोमुखी उन्नत बनाने का जो महद् अनुष्ठान आरम्भ किया था, वह प्रबल ईश्वर विश्वास के बल पर ही किया गया था। दयानन्द परमात्मा के अनन्य उपासक हैं। वे समर्पणशील भावना लेकर जगन्नाटक सूत्रधार के सम्मुख आने वाले एक विनम्र सेवक हैं, जिन्होने अत्यन्त भावप्रवण हो कर अपने आराध्य देव से कहा, "आपका तो स्वभाव ही है कि अगीकृत को कभी नहीं छोडते।" वेदो पर आधारित दयानन्द का यह भक्ति सिद्धान्त आर्याभिविनय में सगृहीत विभिन्न मन्त्रो की व्याख्याओ में पदे पदे प्रकट हो रहा है।

(क्रमश:)

सम्पादकीय—

सन्त लौंगोवाल की हत्या

शिरोमणी अकाली दल के अध्यक्ष सन्त हरचन्द सिंह जी लौंगोवाल की हत्या कर दी गई है। इसमें सन्देह नहीं कि यह अत्यन्त दुःखद घटना है। हिंसा हमारी राजनीति में दिन प्रतिदिन अधिक प्रवेश कर रही है। चार वर्ष पहले जब अकाली दल ने अपना धर्म युद्ध शुरू किया था, उस समय यह स्थिति न थी। साम्प्रदायिक तनाव तो कई बार पैदा हो जाता था परन्तु यह स्थिति न बनी थी कि अपने मतभेदों के कारण किसी की हत्या कर दी जाए। राजनीति में हत्या और हिंसा या उग्रवाद भिण्डरांवाले के समय आया। दरबार साहिब में बैठकर उसने उन व्यक्तियों की हत्याएं करवानी शुरू की जो किसी कारण उससे सहमत न थे। फिर वह भी समय आया जब कुछ व्यक्तियों की इसलिए हत्या की गई कि वह हिन्दू हैं। उन्हें बसों से उतार उतार कर गोलियों में उड़ा दिया जाता था। कई बेचारे अपनी दुकानों पर बैठे होते थे उनकी हत्या कर दी जाती थी। इस प्रकार उग्रवाद दिन प्रतिदिन हमारे प्रान्त में बढ़ता गया और संगठित होता गया। फिर यह भी पता चला कि इसके पीछे पाकिस्तान का भी हाथ है। कई सिख युवक पाकिस्तान चले जाते थे वहां उन्हें प्रशिक्षण मिलता था और वह यहां आकर आतंक फैलाना प्रारम्भ कर देते थे। दरबार साहिब में पहले गुरूनानक निवास फिर रामदास सराय और अकाल तख्त उग्रवादियों की गतिविधियों के केन्द्र बन गए। इसका एक परिणाम यह भी हुआ कि जो हिन्दू पहले दरबार साहिब में जाया करते थे उन्होंने वहां जाना बन्द कर दिया। धीरे धीरे वहां सिखों की संख्या भी कम होने लगी क्योंकि जो लोग वहां गुरूवाणी को सुनने जाया करते थे वह यह अनुभव करने लगे कि अब यह वह स्थान नहीं रहा जिसकी पवित्रता पर पहले हम गर्व किया करते थे। अब यह आतंकवाद और उग्रवाद का केन्द्र बन गया है। इसलिए दरबार साहिब में पूजा-पाठ के लिए जाने वालों की संख्या दिन प्रति दिन कम होती गई।

यह वह समय था जब सारे देश में यह आवाज उठने लगी कि दरबार साहिब को उग्रवादियों और आतंकवादियों से खाली कराया जाए। कुछ लोगों ने अकाल तख्त के जत्थेदार से यह मांग भी की कि वह हिंसा के विरुद्ध हुकमनामा जारी करे। लेकिन यह भी न हुआ। उधर भारत सरकार बार-बार कह रही थी कि दरबार साहिब में बाहिर से आए हथियार जमा किए जा रहे हैं उन्हें रोको। अकाली नेताओं ने फिर भी कुछ न किया और इसी के साथ हिन्दुओं की हत्याएं होती गईं। ऐसे समय में जब भारत सरकार ने देखा कि अकाली कुछ भी सुनने को तैयार नहीं हैं तो उसने वहां अपनी फौज भेज दी। वहां जो कुछ हुआ वह हम सब सुन चुके हैं। उसका एक परिणाम यह हुआ कि कुछ उग्रवादियों ने हमारी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या कर दी। उसकी प्रतिक्रिया यह हुई कि कई स्थानों पर फसाद हुए जिनमें कुछ सिख भी मारे गए। फिर देहली, हरियाणा, राजस्थान और चण्डीगढ़ में बमों के धमाके हुए और उसमें भी कई लोग मारे गए। तात्पर्य यह कि पिछले चार वर्षों से लगातार जो आतंक फैलाने का प्रयास हो रहा था उसे रोकने के लिए अकाली नेताओं ने कुछ भी न किया। बल्कि कई नेताओं ने ऐसे उत्तेजनात्मक भाषण दिए और वक्तव्य जारी किए जिससे युवक वर्ग और भड़क उठा और वह इतना भड़क गया कि भारत सरकार के साथ किसी समझौता के लिए तैयार न था। ऐसे युवकों को पाकिस्तान भी प्रोत्साहन दे रहा था। इसकी प्रतिक्रिया देश के दूसरे प्रान्तों में सिखों के विरुद्ध हो रही थी और वह अकालियों पर यह दबाव डाल रहे थे कि वह पंजाब की समस्या का कोई समाधान निकालें। इस पर सन्त लौंगोवाल ने प्रधानमन्त्री के साथ एक समझौता कर लिया। उसका व्यापक स्वागत हुआ। परन्तु जिन युवकों को अकालियों ने स्वयं भड़काया था वह इस समझौता के लिए तैयार न थे। उन्होंने इसका विरोध शुरू कर दिया और अब वही गोलियां जो पहले हिन्दुओं पर चलाई जाती थी अब सन्त लौंगोवाल पर चलाई गई।

जो कुछ ऊपर लिखा गया है उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अकाली नेताओं ने स्वयं ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि अपने जिस युवक वर्ग को उन्होंने हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काया था वही अब उनके विरुद्ध हो गए हैं। जब हम अकाली नेताओं से कहा करते थे कि इन्हें सम्भालो और दरबार साहब में जो कुछ हो रहा है उसे रोको, तो वह हमारी बात सुनने को तैयार न होते थे। उस का एक परिणाम यह हुआ कि अकाली दल का सबसे बड़ा नेता उन्हीं गोलियों का शिकार हो गया है जो कल तक हिन्दुओं पर चलाई जाती थी।

सन्त लौंगोवाल की हत्या हम सब के लिए एक सन्देश देती है और वह यह कि राजनीति में हिंसा किसी भी समस्या का समाधान नहीं कर सकती। बल्कि उससे समस्याएं और बढ़ती हैं। जब एक उग्रवादी अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठता है तो वह किसी का लिहाज नहीं करता। गान्धी को मारने वाला एक हिन्दू था। लौंगोवाल को मारने वाले सिख हैं। इसी से हम अनुमान लगा सकते हैं कि हिंसा हमारी किसी समस्या को तो हल नहीं करती, नई समस्याएं अवश्य खड़ी हो जाती हैं।

—वीरेन्द्र

30 अगस्त को श्रावणी पर्व मनाएं

इस बार हमारा श्रावणी पर्व 30 अगस्त को आ रहा है। जिसे रक्षा-बन्धन भी कहा जाता है। वैसे यह पर्व स्वाध्याय और श्रवण करने का पर्व है। प्राचीन काल से यह सारे भारतवर्ष में मनाया जाता है। ज्ञानार्जन और स्वाध्याय के साथ इस पर्व का सीधा सम्बन्ध है। उत्थान के लिए स्वाध्याय अत्यन्त महत्वपूर्ण पग है इसके बिना ज्ञान नहीं और ज्ञान के बिना उन्नति नहीं हो सकती। सचमुच यह जीवन संग्राम में सफलता प्राप्ति का प्रमुख साधन है। जीवन में धार्मिकता लाने के लिए ऋषियों ने स्वाध्याय को एक अंग अर्थात् सहायक माना है 'स्वाध्यायामान् मा प्रमद:' अर्थात् स्वाध्याय करने में कभी प्रमाद न करें, ऐसा आदेश दिया है। योगेश्वर श्री कृष्ण ने स्वाध्याय को दैवी सम्पत्ति के रूप में स्वीकार किया है और वाणी का सबसे बड़ा तप बताता है।

मनु जी महाराज ने 'स्वाध्याय नित्य युक्ता स्यात्' कहकर आदेश दिया है नित्य प्रति स्वाध्याय करना चाहिए।

इस प्रकार चौमासा अर्थात् वर्षा ऋतु के यह चार मास स्वाध्याय के लिए मुख्य माने गए हैं। श्रावणी पर्व भी हमें स्वाध्याय की याद दिलाने के लिए प्रति वर्ष आता है। प्राचीन शास्त्रों में श्रावणी उपाकर्म, ऋषि तर्पण नाम से इस पर्व का वर्णन मिलता है। यह श्रवण नक्षत्र की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इसका वर्णन हमें कई ग्रन्थों में मिलता है। 'श्रावण्यां पौर्ण मास्यामासाढ्यां वोपकृत्य' अर्थात् श्रावण पूर्णिमा को उपाकर्म आरम्भ करें। इसलिए हमें यह पर्व श्रावणी उपाकर्म व ऋषि तर्पण के रूप में मनाना चाहिए। इस दिन से विशेष यज्ञों व वेदों का स्वाध्याय आरम्भ किया जाए। थोड़ा 2 प्रतिदिन स्वाध्याय करने से हम बहुत बड़े विद्वान् बन सकते हैं। आज कल यह पर्व केवल रक्षा बन्धन के रूप में ही मनाया जाता है। राखड़ियों से बाजार सजे रहते हैं। बहिनें अपने भाईयों को राखड़ियां भेजती हैं तथा बांधती हैं और अपनी रक्षा की उन्हें याद दिलाती हैं ताकि वह अपनी बहिन के प्रति अपने कर्त्तव्य को भली-भान्ति निभा सकें। कहीं-कहीं ब्राह्मण भी अपने यजमानों को रक्षाएं बांधते हैं। भाई इस अवसर पर बहिनों को कुछ भेंट आदि देते हैं। परन्तु रक्षा बन्धन का इतिहास इतना पुराना नहीं मिलता जिसे बहुत बड़ा महत्व दिया जा सके। मुगल काल की एक दो घटनाएं ही इसकी पक्ष-पोषक हैं।

आर्य बन्धुओं को यह पर्व केवल आर्य समाज में बैठकर यज्ञ, सत्संग, भजन आदि करके घण्टा दो घण्टे के लिए दस-बीस व्यक्ति इकट्ठे होकर मना लेने में ही इतिश्री नहीं समझ लेनी चाहिए बल्कि इस दिन वेद का स्वाध्याय करने का व्रत लेना चाहिए। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। इस परम धर्म का पालन करने के लिए वेद का पाठ प्रारम्भ करके उसका पारायण हम निरन्तर करते रहें। तभी हम सच्चे अर्थों में आर्य समाजी बन सकेंगे।

—सह-सम्पादक

पंजाब राजार्य सभा की जालन्धर में हुई बैठक दिनांक 18 अगस्त 1985 में पारित प्रस्ताव

24 जुलाई 1985 को प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी और अकाली दल के प्रधान श्री हरचन्दसिंह लौंगोवाल के बीच पंजाब की समस्या के समाधान के लिए जो समझौता हुआ है, पंजाब राजार्य सभा यद्यपि सैद्धान्तिक रूप से प्रधान मन्त्री के किसी एक राजनैतिक दल के साथ समझौता करने के विरुद्ध है। फिर भी इस समझौते का स्वागत करती है। पंजाब में पिछले चार वर्षों से जो स्थिति पैदा हो गई थी, उसके कारण न केवल हिन्दुओं-सिखों में मन-मुटाव पैदा हो रहा था, परन्तु एक ऐसी स्थिति बन रही थी, जिसमें इन दोनों के लिए इकट्ठा रहना भी कठिन दिखाई दे रहा था! इसी के साथ पंजाब का राजनैतिक और सामाजिक वातावरण इतना दूषित हो गया था कि पंजाब के लिए कई प्रकार की आर्थिक और सामाजिक कठिनाईयां पैदा हो रही थी, इसलिए किसी समाधान को ढूंढने के लिए कोई रास्ता निकालना आवश्यक था। आशा रखनी चाहिए कि अकाली दल अपने पिछले इतिहास को दुहराते हुए कोई नई ऐसी मांग फिर न पेश करेगा। जिस के कारण ये समझौता विफल हो जाए। इसे सफल बनाना अब बहुत कुछ अकाली दल पर निर्भर है। यदि किसी कारण इसमें कोई कठिनाई पैदा हुई, तो अत्यन्त ही गंभीर और खेद जनक स्थिति पैदा हो सकती है। इसलिए सन्त हरचन्द सिंह लौंगोवाल और दूसरे अकाली नेताओं का यह कर्त्तव्य है कि वह देखें कि जिस उद्देश्य को सामने रखते हुए यह समझौता किया गया है वह पूरा हो जाए और पजाब को फिर वह दिन देखने न पड़े, जो 1984 से लेकर 1985 तक हमें देखने पड़े हैं।

इसी के साथ पंजाब राजार्य सभा इस समझौते के दो आपत्तिजनक निर्णयों की ओर भी सरकार का ध्यान दिलाना चाहती है। प्रधानमन्त्री सारे देश की जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं। किसी एक राजनैतिक दल के साथ कोई समझौता करना उनके लिए उचित नहीं है। अकाली दल के साथ समझौता करके उन्होंने उसे वह महत्व दे दिया है, जो पंजाब राजार्य सभा के विचार में किसी एक राजनैतिक दल को न मिलना चाहिए इसी के साथ राजार्य सभा को इस बात की भी आपत्ति है कि यह समझौता करते समय पंजाब की 48 प्रतिशत हिन्दू जनता की बिल्कुल अवहेलना कर दी गई है और उससे यह पूछने का कष्ट नहीं किया गया कि पंजाब की समस्या के समाधान के विषय में उसकी क्या सम्मति है, राजार्य सभा इसे पजाब की सारी हिन्दू जनता का अपमान समझती है। जिन लोगों ने कल तक पंजाब में आतंकवाद और हिंसात्मक मनोवृत्ति को प्रोत्साहन दिया था, सरकार ने उनके साथ समझौता कर लिया है परन्तु जो प्रान्त में शान्ति और सद्भावना के आधार पर शासन व्यवस्था को पूरा सहयोग देते रहे हैं और आतंकवादियों की हिंसा के शिकार बनते रहे हैं। उनके जख्मो पर मरहम रखने के लिए सरकार ने उनसे एक बार भी नहीं पूछा कि वह क्या चाहते हैं, राजार्य सभा इस अपमानजनक और निन्दनीय व्यवहार पर अपना रोष प्रकट करती है और आशा करती है कि भविष्य में सरकार हिन्दुओ के साथ इस प्रकार का निन्दनीय व्यवहार न करेगी, जैसाकि इस बार किया गया है।

राजार्य सभा और उसकी मुख्य प्रेरणा स्रोत आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पारस्परिक सद्भावना, प्रेम, शान्ति, अहिंसा और अनुशासन में विश्वास रखती है। इस समझौता से कुछ मतभेद होते हुए भी इसके विरुद्ध कोई ऐसी कार्यवाही नहीं करना चाहती, जिससे पंजाब का वातावरण फिर दूषित हो जाए। जो समझौता हुआ है, उसके द्वारा पंजाब में एक सुखद सन्तोषजनक और न्यायपूर्ण व शान्तमय वातावरण पैदा करने के लिए जो भी पग उठाए जाएंगे राजार्य सभा उसमें अपना पूरा सहयोग देगी।

राजार्य सभा यह भी मांग करती है अब जबकि सब अकाली रिहा कर दिए गए हैं। जो हिन्दू नेता इस समय तक जेलो में बन्द हैं वह भी सब रिहा कर दिए जावें।

आशा है भारत सरकार पंजाब कांग्रेस और अकाली दल, ये तीनों मिल कर पंजाब में ऐसा वातावरण पैदा करने का प्रयास करेंगी जिससे कि पंजाब की जनता पहले की तरह ही एक बार फिर सुख का सांस ले सके और शान्तमय वातावरण में अपना जीवन व्यतीत कर सकें।

प्रस्ताव संख्या 2

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी और सन्त हरचन्दसिंह लौंगोवाल के बीच जो समझौता हुआ है, उसके अनुसार सरकार पंजाब मे और पंजाब से बाहर पंजाबी भाषा की प्रगति व प्रसार के लिए उचित पग उठाएगी। पंजाब राजार्यसभा पंजाबी के विरुद्ध नहीं है, पंजाबी की प्रगति के लिए सरकार जो भी कार्यवाही करें पंजाब राजार्यसभा उसका स्वागत करेगी। परन्तु यह सभा पंजाब सरकार का हिन्दी के प्रति जो विरोधात्मक व्यवहार है, उसकी निन्दा किए बगैर नहीं रह सकती। पंजाब में हिन्दी को प्रशासन में समाप्त करने का पूरा प्रयास हो रहा है। पंजाबी के साथ अंग्रेजी तो चल सकती है। परन्तु देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी नहीं चल सकती। आजादी के 38 वर्षों के पश्चात् भी यदि हम अंग्रेजी की गुलामी से आजाद नहीं हो सकते, तो फिर कल को हमारी स्वतन्त्रता के लिए एक नया संकट पैदा हो सकता है। कोई स्वाभिमानी देश और स्वतन्त्र राष्ट्र यह सहन नहीं कर सकता कि उसकी राष्ट्रभाषा की अवहेलना की जाए और एक दूसरे देश की भाषा जनता पर ठोसी जाए, राजार्यसभा पंजाब सरकार की भाषानीति को अत्यन्त घृणित और निन्दनीय समझती है और पंजाब सरकार से यह मांग करती है कि इस प्रदेश में अंग्रेजी के स्थान पर सब राजकीय कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग होना चाहिए। राजार्यसभा अकाली दल के अध्यक्ष सरदार हरचन्द सिंह लौंगोवाल के इस वक्तव्य का स्वागत करती है कि वह हिन्दी के विरुद्ध नहीं हैं और यदि हिन्दी अंग्रेजी का स्थान ले ले, तो इस पर उन्हें कोई आपत्ति न होगी।

इसी के साथ राजार्यसभा पंजाब के सब हिन्दी प्रेमियों से निवेदन करती है कि इस प्रान्त में अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए वह अपने दैनिक सामाजिक, व्यापारिक जीवन में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करें। ताकि हमारी इस राष्ट्रभाषा को पंजाब में सम्मान और आदर मिले सरकार ने अपनी नीति में संशोधन न किया तो राजार्य सभा को जो भी आन्दोलन करना पड़ेगा उसका उत्तरदायित्व पंजाब सरकार पर होगा।

प्रस्ताव संख्या 3

पंजाब में विधानसभा चुनाव 22 सितम्बर को होंगे। राजार्य सभा इस चुनाव में अपने उम्मीदवार खड़ा करने का विचार नहीं रखती। परन्तु वह यह अवश्य चाहती है कि पंजाब के हिन्दुओं का वोट उन उम्मीदवारों को दे दिया जाए, जो एसेम्बली में जा कर हिन्दुओं के हितों की रक्षा कर सकें। हमारे सिख भाइयों के हितों की रक्षा के लिए अकाली दल समय-समय पर कई प्रकार के पग उठाता रहता है। हिन्दुओं की रक्षा करने वाली कोई पार्टी पंजाब में नहीं है। सरकार की ओर से चुनाव की तिथियां घोषित हो जाने के पश्चात् जो-जो व्यक्ति खड़े होंगे, उनके विषय में उनके विचारों को सुनने के पश्चात् राजार्यसभा उनके नाम घोषित करेगी, जो इसकी सम्मति में पंजाब एसेम्बली में जा कर हिन्दुओं की रक्षा करने के योग्य होंगे। इसलिए पंजाब राजार्य सभा पंजाब के हिन्दुओं और विशेष कर आर्य समाज से सम्बन्धित सब बहिनों और भाईयों से निवेदन करना चाहती है कि वह केवल उन्हीं उम्मीदवारों के पक्ष में अपना वोट दें, जो राजार्य सभा द्वारा घोषित किए जाएं। राजार्यसभा किसी प्रत्याशी के केवल राजनैतिक विचारों को ही नहीं देखना चाहती, वह यह भी देखना चाहती है कि उसका आचार विचार व आज तक उसका नैतिक आचरण क्या रहा है? यह भी देखने की आवश्यकता है कि उसकी जनता में ख्याति कैसी है? इसलिए जब तक राजार्यसभा अपनी ओर से कोई घोषणा न करे, कोई आर्य समाजी किसी ऐसे व्यक्ति को वोट न दें, जिसका व्यवहार संदिग्ध रहा हो और जिसके विरुद्ध किसी प्रकार के भ्रष्टाचार का कोई आरोप हो।

प्रस्ताव संख्या 4-पिछले डेढ़ दो मास में पंजाब में वर्षा के कारण जनता को विशेष कर आर्थिक रूप से [illegible] वर्ग को जो क्षति पहुंची है, उसका वर्णन करना कठिन है। इसका प्रभाव लाखों लोगों पर पड़ा है। हजारों ही बेघर हो गए हैं। कई ऐसे हैं, जिनके पास आज न तो सिर छुपाने को जगह है न अपना पेट भरने को। यह अत्यन्त ही गम्भीर तथा दुखद स्थिति है। सरकार ने भी इस दिशा में अपनी ओर से बहुत कुछ किया है। उससे भी अधिक कई सामाजिक संस्थाओं ने अपने भाईयों और बहिनों की बहुत सेवा व सहायता की है। पंजाब राजार्य सभा उन सब संस्थाओं को बधाई देती है, कि उन्होंने ऐसे समय में अपने बहनों व भाईयों की सहायता की है। प्रत्येक जाति के लिए यही एक परीक्षा की घड़ी होती है हम गर्व कर सकते हैं कि पंजाबियों ने इस मुसीबत में अपने पीड़ित भाईयों की पूरी तरह सहायता की है। कई आर्य समाजों को पंजाब राजार्यसभा विशेष रूप से धन्यवाद देती है। परन्तु इस सभा का भी निश्चित मत है कि जो कुछ किया गया है, अभी उससे भी अधिक करने की आवश्यकता है, यह केवल सरकार ही कर सकती है। उसने जो कुछ किया है, उसके लिए अपना आभार प्रकट करते हुए पंजाब राजार्यसभा यह मांग करती है कि पंजाब सरकार इस पीड़ित वर्ग की सहायता के लिए अपना एक विशेष विभाग स्थापित करे, जो केवल बाढ़ पीड़ित लोगों की सहायता करे और जिस व्यक्ति को, जिस चीज की आवश्यकता हो वह उन्हें पहुंचाई जाए। इस समय सारा पंजाब दुःखी है। इसके लिए सरकार जो कुछ भी कर सकती है, उसे करना चाहिए।

जन्म-मरण की उलझन

ले.—प्रा. श्री भद्रसेन जी साधु आश्रम होशियारपुर

किसी नगर से एक मील की दूरी पर बाईपास के समीप एक चौराहा है। जहां से तीन रास्ते गांवों की ओर जाते हैं और चौथा नगर की ओर बाईपास और ग्रामीण चौराहे के कारण वहां चार दुकानें खुली हुई हैं, वहीं बाईपास से सटा हुआ एक छोटा-सा उद्यान है। जिसमें प्रदेश से उग सकने योग्य अनेक तरह के फलों के दो-दो वृक्ष हैं अन्तिम सीमा के आस-पास लगे हुए हैं। उनसे आगे छोटी-छोटी क्यारियां हैं जिनमें मौसम के अनुकूल अनेक प्रकार की सब्जियां यदा-कदा देखने में आती हैं। क्यारियों के मध्य में एक विशाल प्रांगण (मैदान) है, जिसमें बड़े आराम से दो हजार व्यक्ति बैठ सकते हैं। प्रांगण के एक ओर तीन अलग-अलग साधारण कमरे हैं जिन के आगे बरामदे हैं। मैदान में चारों तरफ बाहर की ओर कच्चे रास्ते हैं जोकि मुख्य द्वारों से जुड़े हुए हैं। इन मार्गों के दोनों ओर फूलों की एक फुट भर की चौड़ी क्यारियां है जिनमें एक तरफ गुलाब के फूल हैं और दूसरी ओर मौसम के अनुकूल पुष्पों के पौधे अपने सुमनों से सदा सभी को सुवासित करते रहते हैं। तीनों कमरों के पीछे एक मुख्य द्वार के साथ तीन फलश बने हुए हैं उनके साथ ही एक स्नानागार है, जिसके पास ही विद्युत कूप है। जिससे यहां की सारी सिंचाई की व्यवस्था चलती है। इसी मुख्य द्वार के दूसरी ओर एक साधारण सा कमरा है, जिसमें हर जरूरतमन्द को ठहरने का अवसर प्राप्त होता है। उद्यान के चारों ओर गुलाब के पौधों की बाड़ है।

यह स्थान विवेक आश्रम के नाम से प्रख्यात है। इसके मुख्य प्रबन्धक का नाम विवेकशील है जिन्होंने दो वर्ष पूर्व स्थानीय कालेज से अवकाश प्राप्त किया है। आपने इतिहास, समाज शास्त्र और अंग्रेजी के साथ बी. ए. परीक्षा उत्तीर्ण की थी। इसके पश्चात् एक विशेष प्राध्यापक से प्रभावित होकर इतिहास के विषय को चुना। एम. ए. होते ही इनको राजकीय महाविद्यालय में अध्यापन का अवसर प्राप्त हो गया था। इतिहास का पूर्ण परिशीलन करने के लिए बाद में समाज शास्त्र की एम. ए. भी की। भारत के प्राचीन इतिहास को पढ़ाते हुए इनका विचार बना कि भारत का प्राचीन साहित्य अधिकतम संस्कृत भाषा में है और भारतीयों का धर्म- संस्कृति, सभ्यता, इतिहास तथा परम्परा इसी भाषा से जुड़ी हुई हैं। संस्कृत भाषा के अच्छे अध्ययन के बिना भारत के इतिहास की सर्वांगीण समालोचना नहीं हो सकती। इसीलिए अपने कालेज के संस्कृत प्राध्यापक से संस्कृत का नियमित अध्ययन आरम्भ कर दिया। वैसे मैट्रिक में उन्होंने संस्कृत का सामान्य ज्ञान पहले से प्राप्त किया हुआ ही था। अनेक वर्ष तक नियमित अध्ययन लगन और दृढ़ इच्छा से संस्कृत भाषा पर अच्छा अधिकार हो गया। भारतीय इतिहास में आप ने विशेष योग्यता अर्जित की और इस सम्बन्ध में अनेक पुस्तकें भी लिखी, जोकि अनेक विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं।

कार्यक्रम होने से एक वर्ष पूर्व ही विवेकशील जी ने यह भूमि खण्ड खरीदने के लिए बातचीत शुरू कर दी थी। भूमि के स्वामी को जब पता चला कि ये एक आश्रम बनाने के लिए भूमि चाहते हैं तो धर्मशील ने अपनी ओर से उतनी ही भूमि दी और वह भी आश्रम की प्रबन्धक समिति में सम्मिलित हो गया और अपने लिए एक कमरा भी व्यय पर बनाया और अधिकतर वहीं रहता। कार्यमुक्त होकर विवेकशील जी ने आश्रम बनवाना शुरू कर दिया तब तक एक झोंपड़ी बनवा कर वहीं रहने लगे। प्रातः स्नान आदि आवश्यक कार्यों से निवृत्त हो ध्यान करते. पुनः प्रातराश करके धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करते। इसके पश्चात् प्रतिदिन नियमित रूप से दोनों समय क्यारियों में कार्य करते। इस प्रकार आर्थिक दृष्टि स्वावलम्बी रहते और अपनी जरूरत की अधिकतर सारी वस्तुएं उत्पन्न कर लेते थे। उसके साथ दूसरे वर्ष से एक सज्जन और रहने लगे इनका नाम मधुर शील था। ये संगीत के विशेषज्ञ थे और प्रत्येक कार्य में विवेकशील जी को पूरा सहयोग देते थे वे भी एक संगीत विद्यालय से कार्य मुक्त हुए थे। दिन में यदा-कदा कुछ अभ्यागत आते उन दोनों से विचार-विमर्श करते और कोई कोई रुचि होने पर वहां स्वाध्याय भी करता।

एक वर्ष तक यह व्यवस्था इसी प्रकार चलती रही पुनः कुछ व्यक्तियों के विशेष अनुरोध पर रविवार को सायंकाल के समय सत्संग का कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया गया। नगर और समीपवर्ती ग्रामों के सत्संग प्रेमी आ जाते। सत्संग के शुरू में संगीतज्ञ मधुरशील जी किसी उपयुक्त विषय पर अपने विचार रखते। कभी-कभार किसी व्यक्ति के विशेष जिज्ञासा प्रकट करने पर उसी दिन दिन या अगले सत्संग में उस विषय पर विचार चर्चा होती।

एक दिन सत्संग प्रारम्भ करते हुए महात्मा जी ने कहा अभी कुछ देर पहले मेरे पास कुछ विद्यार्थी आए वे एक दुर्घटना की चर्चा कर रहे थे। उनमें से एक छात्र ने बताया, कि हमारे एक साथी के पिता जी का जगराओं यात्रा से वापिस आने पर घर में आपस में बातचीत करते-करते एक दम देहान्त हो गया। हमारा यह साथी कमलेश बड़ा ही हंसमुख पढ़ाई में प्रवीण, सहयोगी और अच्छा खिलाड़ी है। इस दुःखद घटना के कारण इसमें पर्याप्त परिवर्तन आ गया है, सारा दिन गुमसुम रहता है। कभी-कभार इस दुर्घटना के बारे में दो-चार बातें करता है कई बार ऐसे-ऐसे प्रश्न पूछता है जो हम सब के लिए भी अचरज भरे होते हैं। इनके घर में इसके सामने यह पहली घटना होने से बड़ी हैरानी है कल कह रहा था। लोग कहते हैं मेरे पिता जी मर गए?, अभी कुछ देर पहले हम सबसे बातें कर रहे थे। साथ-साथ पत्र भी देख रहे थे। वे सारे पत्र उन के हाथ में पकड़े के पकड़े ही रह गए और वे एक दम घबरा गए तभी डाक्टर आया, उसने परीक्षण के पश्चात् इन्जैक्शन लगाया, मलने के लिए दवाई दी, बहुत ही प्रयास किया, पर फिर बार-बार बुलाने पर बोले नहीं, आंखें बन्द की बन्द ही रह गईं, एक दम यह क्या परिवर्तन हो गया है।

आज के सत्संग में वे सारे विद्यार्थी मेरे सामने ही बैठे हैं। इसलिए आज किसी और बात की चर्चा न करके इसी के सम्बन्ध में कुछ चर्चा करते हैं। जिस संसार में हम रह रहे हैं वहां बहुत सारी वस्तुएं बनती हुई दिखाई देती हैं। जैसे कि हम किसी मकान को बनते हुए देखते हैं। ऐसे ही कहीं फर्नीचर को और किसी कारखाने में कुछ चीजें बनते हुए देखते हैं एक विचारशील जब अपने चारों ओर की चीजों पर विचार करता है तो धीरे-धीरे उसको उन चीजों कहानी कुछ कुछ समझ आने लगती है। वह देखता है कि चीजें उसके सामने ही बनती हुई दिखाई देती हैं। तब वह देखता है कि बनाने वाला कुछ चीजें लेता है और उनके मेल से किसी चीज को बनाता है। जैसे कि एक बढ़ई लकड़ी, कील, आदि लेता है और अपने औजारों की सहायता से लकड़ी को बनने वाली चीज के अनुरूप काट-छील कर मेज, कुर्सी आदि के रूप से उस चीज को बनाता है, ऐसे ही एक हलवाई दूध, मीठाई घी, मैदा आदि लेकर अपनी विधि से औजारों की सहाता कुछ से कोई न कोई मिठाई बनाता है। या हम अपनी रसोई में रोटी, सब्जी आदि को बनते देखते हैं। तब हम कहते हैं यह चीज बन गई, पैदा हो गई। इसी का नाम जन्म हैं।

हमारी दुनिया में कुछ चीजें ऐसी भी हैं जिनको हम स्पष्ट बनती हुई नहीं देखते। स्पष्ट बनती हुई दीखने वाली वस्तुओं और जो स्पष्ट बनती हुई नहीं दीखती उन सब में एक व्यवस्था, एक नियम होता है। सारी वस्तुएं किसी न किसी प्रक्रिया में बन्धी हुई अपना-अपना कार्य करती हैं। जैसे कि न जाने कब से यह सूर्य प्रकाशित हो रहा है और अपनी उषा, उष्मा और ऊर्जा से सभी को लाभ दे रहा है। यह व्यवस्था में बन्धा हुआ अपनी परिधि में घूम रहा है, तभी तो सूर्य ग्रहण, सूर्य उदय और अस्त आदि का समय विशेषज्ञ पहले ही से बता देते हैं। चाहे हम उसको बनता हुआ नही देखते।

ये बनी हुई सारी चीजें चलते-चलते एक न इक दिन घिस कर पुरानी हो जाती हैं तब वे टूट-फूट जाती हैं और अपना काम करना बन्द कर देती है। जैसे कि हमारे कपड़े, ये पहनते-पहनते पुराने हो जाते हैं और फिर एक दिन फट जाते हैं कई बार ऐसा भी होता है कि नया कपड़ा या बिना पुराना हुए ही वह खींचने से या कहीं अड़ जाने से भी फट जाता है। ऐसे ही मेज, कुर्सी, मकान आदि सारी चीजें पुरानी होकर वा टकटकर, आदि से नष्ट हो जाती हैं। इस प्रकार किसी के नष्ट होने को उसका मरना या उसकी मौत भी कहते हैं। तब बनी हुई चीज में मिले हुए हिस्से या उस में मिली हुई चीजें अलग-अलग हो जाती है। किसी वस्तु को बनते के दिन से पुराना होकर नष्ट होने के समय तक को उसकी आयु कह सकते हैं यही उसका जीवन है। इस प्रकार हर मकान आदि वस्तु जितने दिन सामान्य रूप से रह सकती या जितने दिन रहती है वह उसकी औसत आयु कहलाती है।

(क्रमश:)

भगवान् की अलंकारिक वाणी का रहस्य

राष्ट्र की भव्य कल्पना एवं राष्ट्र रक्षा के उपाय

ले.—श्री आचार्य शिवराज शास्त्री एम. ए. मौलवी फाजिल

ओ३म् चत्वारि श्रृंगां त्रयो अस्य पादा, द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति, महादेवो मर्त्यां आविवेश ।

ऋग्वेद 4-58-3 यजुर्वेद 17-91

उक्त मन्त्र ऋग्वेद व यजुर्वेद दो स्थानों पर आया है । सायणादि भाष्यकारों ने इसका यज्ञ परक अर्थ किया है । यज्ञ शब्द इतना विस्तृत एवं महान् है कि उस की पूर्ण परिभाषा करना सरल नहीं । वेद में 1800 बार से भी अधिक यज्ञ शब्द का प्रयोग हुआ व अनेक अर्थों में । शतपथ ब्राह्मण में भाष्य करते हुए वेद-वेदांगों के अद्वितीय विद्वान् पं. बुद्धदेव जी विद्यालंकार ने यज्ञ की बड़ी सुन्दर व्याख्या की है ।

सामुदायिकं यो.क्षेममुद्दिश्य समुदायगतथा क्रियम.ण कर्म यज्ञ ।

ऐसे कार्य जो समुदाय के हित में समुदाय के लालन-पालन के लिए समुदाय के लोग मिल-जुलकर करते हैं वे कार्य यज्ञ कहलाते हैं। राज्य शासन व्यवस्था भी ऐसा हीसामुदायिक कार्य है। अथर्ववेद में एक पृथ्वी सूक्त सामुदायिक कार्यों का विशेष वर्णन करता है। वहां पृथ्वी को धारण करने वाली महाशक्ति को यज्ञ कहा है। वेद ही वह ज्ञान है जिससे राष्ट्र की कल्पना सर्वप्रथम प्रभु प्यारे ने मनुष्य मात्र को दी संसार के किसी अन्य ग्रन्थ में राष्ट्र की इतनी अद्भुत स्थायी व सुस्थिर शासन का विधि-विधान उपलब्ध नहीं। वेद तो प्राणी मात्र की कल्याणी वाणी है। संसार में सर्वत्र नए-नए राष्ट्रों का निर्माण उनका वैधानी करण हो चुका है। परन्तु राष्ट्र क्या है, राष्ट्र का क्या स्वरूप है इसकी सुस्थिर परिभाषा वेद भगवान् ने जो उपरोक्त मन्त्र में दी है वह अद्भुत व चमत्कारिक है।

मन्त्र का शब्दार्थ बड़ा ही अलंकारिक वर्णन शैली से ओत-प्रोत है।

(महादेवा मर्त्या आविवेश) संसार के सामान्य प्रजाजनों में एक महादेव आकर घुस गया—कैसा है यह महादेव ?

वह चार सींगों वाला है, उसके तीन पैर हैं, उसके दो सिर हैं और सात हाथ हैं (चत्वारिश्रृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्ता सौ) ऐसा होते हुए भी वह तीन मजबूत रस्सियों से बांधा गया है (त्रिधाबद्धो) ऐसे महादेव का नाम वृषभ (बैल) है। जैसे (बैल) सांड उकराता है वैसे ही वह हर समय उकराता। (शोर मचाता) रहता है। अपनी रक्षा की पुकार सुनाता रहता है। हिन्दू पौराणिक साहित्य में शिव की सवारी बैल बताई है। इसीलिए हिन्दुओं के प्रत्येक शिव मन्दिर में शिव की मूर्ति के साथ उनकी सवारी बैल की प्रतिमा अवश्य पाई जाती है। भारतीय इतिहास की पुरातत्व प्रणाली में शिव कैलाश वासी देव है। जो कैलाश पर्वत पर बैठे बैठे सारे भारत वर्ष की रक्षा करते हैं।

वास्तव में यह शब्द जाल व शब्दालंकार व समझने वाले पण्डितों की सूझ-बूझ का ही परिणाम है। लौकिक संस्कृत में वृषभ बैल को कहते हैं परन्तु वेद भगवान् के शब्दों का निरुक्तकार अ, 13, खण्ड 7) एवं महा भाष्यकार (अ, 1, पा.1 आ. 1) के अनुसार महर्षि दयानन्द ने (वृषभ:-सुखानाम् अभि वर्षक:) मनुष्य मात्र में सुख की वर्षा करने वाली शक्ति किया है और उसे ही महादेव का नाम दिया है।

इतनी बात समझ आने के बाद यह आसानी से समझ आ सकता है यह सुख की वर्षा करने वाला देव और कोई नहीं इसे पृथ्वी सूक्त में राष्ट्र देवों भव कहकर राष्ट्र को ही देव माना है।

अब विचारिए राष्ट्र के चार सींग (उपमालंकार) जैसे बैलों को सींग अपनी रक्षा के लिए भगवान देता है वैसे ही राष्ट्र की चार दिशाएं पूर्व, दक्षिण, उत्तर, पश्चिम यह सभी सुदृढ़ रहनी चाहिएं। दो सिर (द्वे शीर्ष:) राष्ट्र की रक्षा के लिए दो महा शक्तियों का निर्माण आवश्यक है वह ब्रह्म (ज्ञान) शक्ति व क्षत्र (सुरक्षा सेना) शक्ति वे शक्तियां राष्ट्र से तीन चरणों (त्रिधाबद्धो) को किसी नियन्त्रण (सूत्र) में बांधकर ही चल सकती हैं। ये तीन चरण राष्ट्र का भूत भविष्य और वर्तमान होता है। भूत से वर्तमान बनता है वर्तमान से भविष्य बनता है। इनमें थोड़ा सा भी असंगतिकरण हुआ तो राष्ट्र लड़खड़ा जाएगा। इसीलिए महा कवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा--

हम कौन थे क्या हो गए हैं,
और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें बैठ कर,
अपनी समस्याएं सभी।

महर्षि दयानन्द ने भारत की एक महान् राष्ट्र के रूप में पहचाना उन्होंने राष्ट्र की रक्षा का भार किन पर सौंपा, ऋग्वेद के मन्त्र (4-10-6) की व्याख्या करते हुए ऋषिवर लिखते हैं--

हे राजन् जो सूर्य के सदृश तेजस्वी धनयुक्त, कुलीन, पवित्र, प्रशंसित अपराध रहित श्रेष्ठ शरीर युक्त विद्या व अवस्था में वृद्ध, वे अपनी व आपके राष्ट्र की रक्षा करें।

ऋग्वेद (1-33-4) की व्याख्या में ऋषिवर लिखते हैं...

कोई भी मनुष्य सब शास्त्रों में प्रवीण राज धर्म के ठीक-ठीक जानने वाले पर अपर इतिहास के वेत्ता, धर्मात्मा, निर्भयता से सब विषयों के वक्ता, शूरवीर, दूतों और उत्तम राजा सहित सभासदों के बिना राज्य पाने पालने व बढ़ाने और परोपकार में लगाने को समर्थ नहीं हो सकता है।

इस राष्ट्र रूपी वृषभ महादेव के सात हाथ हैं। हाथों का काम राष्ट्र को सम्भाल कर रखना होता है। इसका उत्तर भी वेद माता ने स्वयं अपने पृथिवी सूक्त में दे दिया है—

सत्यं बृहत् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो।
ब्रह्म यज्ञ: पृथिवीं धारयन्ति।

(अथर्व वेद कांड 92 सू. 1 मं. 1) राष्ट्र की रक्षा के लिए सत्य की परमावश्यकता है जिस राष्ट्र में मिथ्याचार व परस्पर राग-द्वेष रहगा वह सदा असुरक्षित रहेगा।

भारत राष्ट्र की समस्याएं इनका ज्वलन्त उदाहरण है। सारा राष्ट्र परस्पर आरोप-प्रत्यारोप हिंसा, भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार की धधकती भट्टी बना हुआ है। धर्म स्थानों में भी सत्य का दर्शन दुर्लभ हो गया है। प्रभु ही बचा सकेंगे और कोई आशा की किरण दिखाई नहीं देती है।

वेद ने कहा सत्य भी बृहत् महान् विश्व व्यापी हो वह भी केवल हमारा माना हुआ घी के स्थान पर बनस्पतिघ्न हो वास्तव में ऋत् हो त्रिकाला बाधित सत्य हो और उस सच्चाई में इतनी उग्रता (जैसी महर्षि दयानन्द में थी हो जो असत्य को परास्त कर सके हम किसी सिद्धान्त नियम अनुशासन में दीक्षित निष्ठावान् दृढ़ संकल्प हो ऐसा न हो कि—

पेश आ जाए जो मस्जिद,
तो नुमाजी भी सही।
बुत जो मौके पै मिले दस्त दराजी
भी सही।

अगर कभी मस्जिद नजर आ गई तो नुमाज पढ़ने लगे और मन्दिर सामने आ जाए तो मूर्तियों के आगे हाथ फैला दिया। क्या आज का तथाकथित धर्मात्मा ऐसा ही नहीं है। महर्षि दयानन्द ने कभी असत्य से समझौता नहीं किया। उदयपुर के राजा ने एक लिंगेश्वर की लाखों रुपए की आय वाली गद्दी महर्षि को भेंट करनी चाही, उन्होंने कहा, मेरा ऋत व सत्य बृहत् है। मैं आपके राज्य को तो एक दौड़ में पार कर सकता हूं परन्तु अनन्त प्रभु के विराट् साम्राज्य में प्रभु को क्या मुंह दिखाऊंगा। अतएव ऋषि ने निर्भयता पूर्वक मिथ्या मत,मतान्तरों के विरुद्ध आवाज उठाई और ऋत सत्य की स्थापना की।

राष्ट्र की सर्वोच्च शपथ दीक्षा होती है जिसे आज की राजनीतिक भाषा में राष्ट्र के सर्वोच्च न्यायाधीश के समक्ष शपथ ग्रहण करना कहते हैं। यह शपथ विधि किसी व्यक्ति को राष्ट्र सेवा कार्य में दीक्षित करती है उसकी सेवा के प्रति निष्ठावान् रहने का यह प्रमाण होता है, यदि वास्तव में राष्ट्र सेवा निष्ठावान हाथों में रहे तो राष्ट्र का कभी बाल बांका नहीं हो सकता। परन्तु व्यक्तिगत स्वार्थपरता में निष्ठा भंग हो जाने से जो राष्ट्र को हानि पहुंचती है उसके उदाहरण भारत में होने वाले जासूसी काण्डों व भ्रष्टाचार के अनेक रूपों में स्पष्ट देखे जा सकते हैं जो राष्ट्र को न केवल हानि पहुंचा रहे हैं। राष्ट्र के लिए अनेक समस्याएं व संकट उत्पन्न कर रहे हैं।

पांचवां गुण जो किसी राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक है वह राष्ट्र की रक्षा का सबसे आवश्यक हाथ है सहारा है, वह है राष्ट्र के नेताओं में तपस्वी जीवन बिताने की श्रद्धा। कौन नहीं जानता कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगीराज कृष्ण महाराज, प्रताप, वीर शिवा जी अपने तपस्वी जीवन के सहारे ही आज तक जन-जन के प्रेरणा व आशा के केन्द्र बने हैं। महात्मा गांधी ने इन्हीं महापुरुषों से प्रेरणा लेकर राष्ट्र सेवा के लिए लंगोटी पहनकर ब्रिटिश शासकों से टक्कर ली थी व विजय प्राप्त की थी। आज राष्ट्र के संकट के आधार बने नेताओं के सम्बन्ध में ही किसी दिल वाले कवि ने कहा है—

कौम के गम में डिनर खाते हैं,
हुक्काम के साथ।
रंज लीडर को बहुत है,
मगर आराम के साथ।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना की गतिविधियाँ

मानव कल्याण यज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न

लुधियाना—4 अगस्त से 11 अगस्त तक आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना में मानव कल्याण यज्ञ का सफल आयोजन किया गया। जिस के ब्रह्मा प्रसिद्ध विद्वान् तथा उच्चकोटि के कथा वाचक स्वामी मनीषानन्द जी महाराज गुरुकुल ऐटा वाले थे प्रतिदिन प्रातः काल की सुहावनी बेला में यज्ञ व स्वामी जी का मानव कल्याण सम्बन्धी उपदेश होता रहा। स्वामी जी के सरल तथा सुन्दर ढंग से वेद मन्त्रों के आधार पर दृष्टांत सहित व्याख्यानों ने लोगों को लाभान्वित किया बहुत बड़ी संख्या में आर्य बन्धु परिवार सहित यज्ञ में सम्मिलित होते रहे, विशेषकर श्री नवनीत लाल जी प्रधान का सारा परिवार लगभग प्रतिदिन उपस्थित होता रहा तथा यजमान पद भी ग्रहण करते रहे। श्री ज्ञानी गुरदियाल सिंह आर्य वरिष्ठ उपप्रधान तथा बलदेव राज सेठी मन्त्री तथा इनकी धर्म पत्नियां भी यज्ञ में भाग लेती रही व यजमान भी बने। यज्ञाध्यक्ष श्री कुलदीप जी आर्य श्री रणबीर जी भाटिया आदि अधिकारियों तथा आर्य युवक सभा के नवयुवकों ने भी इसमें पूर्ण सहयोग दिया। 11 अगस्त रविवार को यज्ञ की पूर्णाहुति डाली गई। स्वामी जी ने सभी यजमानों को आशीर्वाद दिया तथा सर्व श्री बलैयती राम महत्ता, मास्टर लक्षमन दास, कृपा राम, कुलदीप राय आर्य, ज्ञान चन्द साबन वाले, मतवाल चन्द जी को स्वामी जी ने फूल मालायें इनके गलों में डाल कर इनके लिए शुभ मंगल कामनाएं की, क्योंकि इन आर्य बन्धुओं की सत्संगों में उपस्थितियां सब से अधिक थी और कइयों को उन के अच्छे कार्य के लिए सम्मानित किया गया। वेद प्रचार मंडल के भक्ति भरे गीतों को सभी ने सराहा। दो छोटे-छोटे बच्चों ने जिन में एक श्री रोशन लाल शर्मा का लड़का तथा दूसरी बच्ची समाज के कोषाध्यक्ष श्री श्रावण कुमार जी ने भी भजन सुना कर लोगों का मन मोह लिया। इस प्रकार प्रभु की अपार कृपा से मानव कल्याण यज्ञ बड़ी सफलता से सम्पन्न हुआ।

1 से 8 सितम्बर तक वेद सप्ताह

1 सितम्बर से 8 सितम्बर तक वेद सप्ताह मनाने का निर्णय किया है। जिस में भारत भर से उच्चकोटि के विद्वान् तथा संगीतकार सम्मिलित हो रहे हैं। वेद पाठ करने के लिए स्वामी गुरु विरजानन्द ट्रस्ट करतारपुर के ब्रह्मचारी 30 अगस्त को पहुंच रहे हैं।

आयोजन की तैयारी आरम्भ कर दी गई है। अन्तरंग ने इस के लिए एक उप समिति की नियुक्ति कर दी है। स्वामी मनीषानन्द जी महाराज से प्रार्थना की गई है कि वह भी इस वेद सप्ताह में अवश्य पधारें।

स्वर्गीय दीवान रामशरण दास (भूतपूर्व सभा प्रधान) की पुण्य स्मृति

लुधियाना आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार लुधियाना) मे स्वर्गीय दीवान राम शरणदास की स्मृति में उन की पुण्य तिथि (5 अगस्त) समाज मन्दिर की विशाल सभा में मनाई गई। लुधियाना नगर के विद्वान् व कवि तथा समाज के अनथक कार्यकर्ता श्री रणबीर भाटिया ने स्वर्गीय दीवान साहिब के समाज के प्रति कार्यों की चर्चा करते हुए कहा, कि वह आर्य समाज के स्तम्भ थे। 6-9-1925 में इस आर्य समाज की स्थापना स्वामी स्वतन्त्रता नन्द जी महाराज के कर कमलों द्वारा हुई थी 1920 में दीवान साहिब इस समाज के दूसरे प्रधान बने तथा वह 1929 तक फिर 1931 से 1933 तक, 1935 से 1941 तक, 1945 से 1948 में 1954 में, तथा 1956 से 1962 तक लगभग 25 साल तक आर्य समाज दाल बाजार के प्रधान रहे। आप स्वयं अनुमान लगायें कि जो व्यक्ति समाज के 37 सालों में 25 साल प्रधान रहा हो तो समाज की उन्नति में उसका कितना योगदान होगा। समाज का यह सुन्दर भवन समाज की छवि, उन्नति में दीवान साहिब का बहुत बड़ा योगदान है, जो भुलाया नहीं जा सकता। 1975 में आर्य समाज की शताब्दी लुधियाना में मनाई गई। सारे पंजाब से आर्य बन्धु इस में सम्मिलित हुए। वह उस महा सम्मेलन के अध्यक्ष थे। उन की कार्य कुशलता से यह महा सम्मेलन एक यादगार का रूप धारण कर गया था। भाटियां जी ने अन्त में एक कविता द्वारा स्वर्गी दीवान के महान् व्यक्तित्व को दर्शाया तथा श्रद्धांजलि देते हुए सभी से संकल्प कराया कि हम उनके छोड़े हुए अधूरें काम पूरे करेंगे।

—बलदेवराज सेठी
मन्त्री

श्रावण पर्व

ले.—श्री कवि कस्तूर चन्द 'घनसार' कवि कुटीर
पीपाड़ शहर (राज.)

(1)

श्रावण मास कथा हो पावन, मिटे ताप सब दोष अपावन।
वैदिक कर्म करे जन सारा, सन्ध्या हवन कर होत सुधारा।।
स्वाध्याय है वेद का करते, तासे ताप-भव रूज को हरते।
घर-घर वेद कथाएं बोले, कोविद वैदिक मन्दिर खोले।।

(2)

श्रोता सुने वेद की बानी, मानुष जीवन की कल्याणी।
सन्यासी इक ठौर विराजे, वेद वचन जिन के मुख साजे।।
श्रावण पर्व वेद विधि माने, धर्म-कर्म जिनको सद जाने।
प्रतिदिन यज्ञ करे सद-सन्ध्या, धरे कर्म रहा जिन मन्ध्या।।

(3)

अभिवादन कर वृद्ध हो विज्ञ, आर्य देव वर हो प्रिय नज्ञ।
सोमित देव सभा बिच सोई, आर्य सन्यासी कोविद होई।।
श्रावण बरसे धार सुधा सी, यथा ज्ञान नव विज्ञ बुधासी।
हरे सकल जग-ताप-तपे जो, ओम्-ओम् सत्-मन्त्र जपे जो।।

(4)

नर-नारी सब मन्त्र उभारे, बन यजमान सुस्वाद उकारे।
''अमृतस्य तन्तु वितते दृशेकम्'' भर जीवन में अमृत दम-दम।।
श्रावण सुखद मास यह जानो, विश्व देव रचना पहचानो।
आर्ष ग्रन्थ पढ़ो कर प्रीति, [illegible] वैदिक रीति।।

(5)

गुरुकुल पढ़े विद्यार्थी सोभे, गुरु वर का मन देखत लोभे।
महर्षि दयानन्द की वाड़ी, विकसत रहे सदा फुलवाडी।।
पावन पावस परम सुभावे, दादुर-सारङ्ग बोल सुनावे।
मन्त्र उदात्त बोल यज्ञ करते, सुन 'घनसार' सुधा-उर भरते।।

(6)

गगन घोर घन ऊपर आते, रिम-झिम रिम-झिम जल बरसाते।
महि हरियाली हर्ष बढ़ावे, बोलत सारङ्ग प्यास बुझावे।।
गुरुकुल में बटु रटन लगावे, समय पाय सरिता तट न्हावे।
धन्य-धन्य महर्षि की धरणी, देव-मुनी सद करने करणी।।

—

आर्य गर्ल्ज हायर सै. स्कूल लुधियाना का परीक्षा परिणाम

सन 1984-85 का ग्यारहवी तथा दसवी का परीक्षा फल शत-प्रतिशत रहा। ग्यारहवी कक्षा की छात्रा कुमारी ऋचा ने 663 अंक प्राप्त कर पंजाब स्कूल बोर्ड द्वारा घोषित मैरिट लिस्ट मे स्थान प्राप्त किया तथा इसी छात्रा को संस्कृत विषय मे 200 200 अंक प्राप्त करने का श्रेय भी प्राप्त किया। स्कूल की प्रधाना श्रीमती कमला जी आर्या तथा प्रबन्धक श्रीमती विजयलक्ष्मी जी शर्मा ने सौ-सौ रुपए पुरस्कार स्वरूप दिया। प्रबन्धकर्त्री सभा प्रिंसिपल तथा स्टाफ की ओर से इस छात्रा को सम्मानित किया गया।

—कान्ता सूरी आचार्या

तलवाड़ा में वेद सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज तलवाड़ा टाउनशिप मे 1 से 8 अगस्त तक वेद सप्ताह मनाया गया जिसमे स्वामी वेदानन्द जी महाराज कथा करते रहे। वर्षा के दिनो मे भी लोग उत्साह से आते रहे। स्वामी जी महाराज ने बड़ी प्रभावशाली वेद कथा की है। हमारी समाज के सदस्यो ने यह भी निश्चय किया है कि सितम्बर मे या अक्तूबर मे फिर वेद सप्ताह किया जाए। इसके लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशकों भजनोपदेशकों के लिए प्रार्थना कर दी है।

—मनोहरलाल मन्त्री

बाढ़ तथा वर्षा से पीड़ित लोगों की सहायता

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर की ओर से एक हजार किलो आटा तथा 250 पहने हुए कपड़े दुखी भाईयो मे बांटे गये जो गत दिनो जालन्धर मे बाढ आने पीडित हुए आर्य समाज के सदस्यो तथा लभूराम दोआबा स्कूल के अध्यापको ने मुहल्ला किशनपुरा, बलदेव नगर काजी मण्डी ढन मुहल्ला, गांधी कैंप, भार्गव कैंप इत्यादि निचले इलाको मे घर घर घूम कर एक सौ आटे की दस दस किलो की थैलीया तथा 250 कपड़े प्रत्येक परिवार को दिए गए। मानव सेवा आश्रम, छुटमुलपुर सहारनपुर की ओर से श्रीराम पथिक द्वारा एक हजार रुपए का ड्राफ्ट सहायतार्थ दिया गया। वह स्वय भी अपने दो साथियो सहित 4-5 दिन सारे क्षेत्र मे सेवा करते रहे।

—योगेन्द्रपाल सेठ प्रधान

(6 पृष्ठ का शेष)

यही कारण ? राष्ट्र सेवा का कार्य पद-लिप्सा व ऐश्वर्य अर्जन ने ले लिया है। देश जिन परिस्थितियो मे होकर गुजर रहा है इसकी चर्चा किन शब्दो मे की जाए। देश की समस्याओ के समाधान के बड़े बड़े विचारक भी यह करने पर विवश हैं—

हकीमो के चेहरे भी उतरे हुए हैं।
मरज कौम का ला-इलाज बन चुका है।

आवश्यकता है कि हम भगवान् के तप त्यागमय जीवन बिताने के इस राष्ट्रीय उपदेश को हृदयङ्गम करें व राष्ट्र को सकटो से उबारें। राष्ट्र का कटा हाथ ब्रह्म ज्ञान है, ज्ञान की बहुत चर्चा है। स्कूलो कालेजो की भरमार हो रही है, करोड़ो युवक-युवतियो की शिक्षा पर असीमित धन राशि खर्च हो रही है। परन्तु फिर भी शिक्षा ज्ञान का निश्चित व सत्य मार्ग न बन पाने के कारण राष्ट्र नायकों को नित नए उपाय खोजने पड़ रहे हैं। शिक्षा मे आमूल-चूल परिवर्तन की बात होती है। परन्तु मार्ग तो वही श्रेयस्कर हो सकता है जिस पर चलकर राष्ट्र भारत सर्व स्वतन्त्र सुरक्षित व सुदृढ बना रहा, महर्षि दयानन्द ने जैसी शिक्षा का प्रारूप भारतीय राष्ट्र रचना के लिए प्रस्तुत किया जो पहले भी सत्य था आज भी सत्य है आगे भी सत्य रहेगा केवल अक्षर ज्ञान से राष्ट्र रक्षा नहीं हो सकती यह दिव्य स्वप्न है जो कभी पूरा नहीं उतरेगा। राष्ट्र के भावी कर्णधारों को धार्मिक शिक्षा देना परमावश्यक है तभी वे राष्ट्र के सच्चे निष्ठावान् नागरिक बन सकेंगे। युवक ही किसी राष्ट्र की सुदृढ भुजा होते हैं जिनके कन्धो पर राष्ट्र का भावी भार रखा जाता है। अतएव राष्ट्र प्रेमीजन को राष्ट्र की सुदृढ भुजाओं को विधिवत् निर्माण करने की योजना बनाना परमावश्यक है।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

ओ३म्

आर्यमर्यादा साप्ताहिक जालन्धर



14/1/07

अंक 27

सितम्बर

1985

श्रावणी कृष्ण जन्माष्टमी विशेषांक

श्री कृष्ण जी की महानता

महर्षि के शब्दों में

"देखो ! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है उनका गुण कर्म स्वभाव आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से लेकर मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत् वाले ने अनुचित मन-माने दोष लगाये हैं । दूध दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम, परस्त्रियों से रासमण्डल क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्री कृष्ण जी में लगाए हैं। इसको पढ़-पढ़ा के सुन-सुना के अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत निन्दा करते हैं। जो यह भागवत् न होता तो श्री कृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्यों कर होती।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य मर्यादा—अंक 21 22 दिनांक 17 व 24 भाद्रपद सम्वत् 2042
तदानुसार 1 तथा 8 सितम्बर 1985 का सम्मलित अंक

इस अंक का मूल्य—4—00 वार्षिक शुल्क 20 रुपये

सम्पादकीय

तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चयः

भगवान् कृष्ण की गीता में मानव जीवन के कई पक्षों के सम्बन्ध में मार्ग दर्शन किया गया है। जब अर्जुन ने कुरूक्षेत्र में अपने ही सगे सम्बन्धियों के साथ लड़ने से इन्कार कर दिया था, तो सबसे बड़ा प्रश्न जो उसके मन में उस समय उठा वह यह था कि जब धर्म और अधर्म में युद्ध हो और किसी न किसी कारण उसमें मनुष्य का स्वार्थ भी आ जाए तो क्या किया जाए ? एक मनुष्य के लिए उसके निकटतम सम्बन्धी विशेष महत्त्व और आकर्षण रखते हैं। उनके लिए कई बार मनुष्य अपना सर्वस्व न्योच्छावर करने को भी तैयार हो जाता है। यही समय उसकी परीक्षा का होता है। उसका धर्म उसको कहता है यहां अन्याय हो रहा है इसके विरुद्ध संघर्ष करो। दूसरी तरफ अपने सम्बन्धियों से उसका जो सम्बन्ध होता है वह उसे रोकता है और यह समझते हुए भी कि इस न्याय और अन्याय के युद्ध में उसके सम्बन्धी अन्याय के पक्ष में खड़े हैं। फिर भी वह उनके विरुद्ध शस्त्र उठाने को तैयार नहीं होता।

कुछ ऐसी मानसिक स्थिति अर्जुन की भी उस समय हो गई थी जब वह कौरवों के विरुद्ध लड़ने के लिए कुरुक्षेत्र के रण क्षेत्र में पहुंचा था। भगवान् कृष्ण उसके सारथी थे और सारथी एक प्रकार से मार्ग प्रदर्शक भी होता है। जब वहां पहुंच कर अर्जुन ने श्री कृष्ण से यह कहा कि मेरे सामने तो मेरे भाई बन्धु खड़े हैं मैं इनके विरुद्ध शस्त्र कैसे उठा सकता हूं। इस पर श्री कृष्ण जी ने जो पहली बात उससे कही वह यह थी कि जिस कुरुक्षेत्र में वह खड़ा है वह केवल कर्मक्षेत्र ही नहीं, वह धर्म क्षेत्र भी है। अर्थात् यहां कोई साधारण युद्ध नहीं हो रहा है, यह धर्म युद्ध है। अन्याय के विरुद्ध तुमने लड़ना है। और धर्म युद्ध में फिर यह नहीं देखा जाता कि

सामने कौन है। इस लिए उन्होंने अर्जुन से कहा कि तू क्या सोच रहा है, दोनों तरफ से तुम्हें लाभ होगा। यदि इस युद्ध में मारे गए तो तुम स्वर्ग में जाओगे। क्योंकि तुम अधर्म और अन्याय के विरुद्ध लड़ रहे हो और यदि जीत गए तो तुम इस पृथ्वी पर राज्य करोगे। इस लिए हे कुन्ती के पुत्र उठ और युद्ध के लिए तैयार हो जा।

जो कुछ हम भगवान् कृष्ण के इस उपदेश से समझ सकते हैं वह यह कि मनुष्य के जीवन में कई प्रकार की समस्याएं उठती हैं और कई बार उसे एक ऐसा युद्ध भी लड़ना पड़ता है जिसके लिए वह स्वयं तैयार नहीं होता। परन्तु उसका कर्त्तव्य उसे बार-बार यह कहता है कि तुम्हारा धर्म इसी में है कि अन्याय के विरुद्ध लड़ो। वास्तव में महाभारत की सारी लड़ाई ही धर्म और अधर्म में लड़ाई थी। भगवान् कृष्ण पाण्डवों को अपना समर्थन दे रहे थे तो इसलिए कि वह यह अनुभव कर रहे थे कि पाण्डवों के साथ अन्याय हो रहा है। धर्म उनके पक्ष में है परन्तु जो अधिक शक्तिशाली है वह अन्याय कर रहे हैं। वह धर्म के विरुद्ध अधर्म की लड़ाई लड़ रहे हैं। पाण्डव केवल पांच थे। कौरव एक सौ थे। भगवान् कृष्ण ने सौ का नहीं पांच का समर्थन किया और वह स्वयं अर्जुन के सारथी बन कर युद्ध क्षेत्र में पहुंच गए। उनके सामने जो लोग खड़े थे वह केवल अर्जुन के ही निकट सम्बन्धी न थे। उनमें कई भगवान् कृष्ण के निकटतम मित्र और कुछ सम्बन्धी भी थे। भीष्म-पितामह और द्रोणाचार्य इन दोनों के लिए श्री कृष्ण के दिल में अगाध श्रद्धा थी। साथ ही वह यह भी अनुभव कर रहे थे कि यह दोनों दुर्योधन का पक्ष लेकर अन्याय का पक्ष ले रहे हैं। महाभारत का युद्ध प्रारम्भ होने से पहले भगवान् कृष्ण दुर्योधन के पास भी गए थे। उसे भी उन्होंने समझाने का बहुत प्रयास किया था परन्तु वह माना न था जब वह दुर्योधन के दरबार से वापिस जा रहे थे तो रास्ते में उन्हें पाण्डवों की माता कुन्ती मिली। कुन्ती ने उनसे पूछा कि वह क्या कर चले हैं। भगवान् कृष्ण ने बताया कि उन्होंने दुर्योधन को समझाने का बहुत प्रयास किया है परन्तु वह नहीं माना और उस पर उन्होंने कुन्ती से पूछा कि क्या उसने अपने पुत्रों के लिए कोई सन्देश देना है, तो कुन्ती ने कहा कि मेरे बेटों से जाकर कह देना कि जिस समय के लिए क्षत्राणियां बेटे पैदा करती हैं वह समय अब आ गया है। दूसरे शब्दों में माता कुन्ती ने भी अपने पुत्रों से यही कहा कि अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए तैयार हो जाओ।

वास्तव में सारी महाभारत की लड़ाई अन्याय के विरुद्ध न्याय की लड़ाई है और अन्त में न्याय की विजय हुई और अन्याय की पराजय। पाण्डवों और कौरवों के बीच बहुत अन्तर था। पाण्डव केवल पांच थे और कौरव सौ थे और उनके साथ

बहुत बड़ी सेना भी थी। भीष्मपितामह और द्रोणाचार्य जैसे महायोद्धा और कर्ण जैसे युद्ध वीर भी उनका साथ दे रहे थे। फिर भी श्री कृष्ण ने यह नहीं देखा कि अधिक शक्तिशाली कौन है बल्के यह कि किस का पक्ष न्याय संगत है। यही वह सन्देश है जो महाभारत से हमें मिलता है। महाभारत में से हम भगवान् कृष्ण को निकाल दें तो उसमें बाकी कुछ भी नहीं रहता। भगवान् कृष्ण की गीता ने केवल अर्जुन को ही युद्ध के लिए तैयार नहीं किया अपितु वह सारी मानव जाति का मार्ग प्रदर्शन करती है। जब उन्होंने अर्जुन से यह कहा था कि उठ और युद्ध के लिए तैयार हो जा तो उनके सामने धर्म युद्ध था और यही वह उपदेश है जो भगवान् कृष्ण हमें देते हैं कि मनुष्य के जीवन में जहां भी धर्म और अधर्म न्याय और अन्याय, सदाचार और दुराचार, सत्य और असत्य के बीच लड़ाई हो वहां मनुष्य का एक ही कर्त्तव्य है कि वह धर्म, न्याय, सत्य और सदाचार का साथ दें यदि हम भगवान् कृष्ण के इस उपदेश को समझ लें और इसे अपने जीवन में ढाल लें तो इसी धरती पर स्वर्ग भी बन सकता है और यदि हम इस ओर ध्यान न देंगे तो यह धरती नरक बनी रहेगी और मनुष्य का इसी प्रकार पतन होता रहेगा। जैसा कि आज हो रहा है। भगवान् श्री कृष्ण और उनका उपदेश हमारी समस्याओं का समाधान हमारे सामने रखता है उसे समझने और अपने जीवन में क्रियान्वित करने में ही मानव का कल्याण है। गीता में जो कुछ कहा गया है बहुत कुछ उपनिषदों के आधार पर। उपनिषदों में जो कुछ कहा गया है बहुत कुछ वेदों के आधार पर। इसलिए यदि हम गीता को समझ लें तो वेदों की शिक्षा भी हमारी समझ में आ जाएगी। गीता के रूप में भगवान् श्री कृष्ण संसार को एक ऐसा रास्ता दिखा गए हैं जिस पर चलते हुए हम अपने जीवन को सफल और सार्थक बना सकते हैं।

—वीरेन्द्र

शान्ति का दूत श्रीकृष्ण

ले.—श्रीमती कमला आर्या सभा महामन्त्री

भगवान् श्री कृष्ण पर कई लोग जहां और तरह के कई लांछन लगाते हैं वहां यह भी दोष लगाते हैं कि महाभारत युद्ध के कराने वाले तथा भाई-भाई को आपस में लड़ाने वाले श्री कृष्ण जी ही थे। यदि श्री कृष्ण जी न होते तो महाभारत का युद्ध न होता।

ऐसा समझना उन लोगों का भ्रम है जो ऐसा कहते है। यदि महा भारत को ध्यान से पढ़ा जाए तो पता चलेगा कि श्री कृष्ण जी जैसा कोई और शान्ति का दूत हो ही नहीं सकता। वह किसी से लड़ना नही चाहते थे, न ही वह रक्तपात के पक्ष में थे। यदि ऐसा होता तो कंस के मार दिए जाने पर जब जरासंध बार-बार मथुरा पर आक्रमण कर रहा था तो उस समय वह मथुरा न छोड़ते। बेकसूर लोगों को युद्ध में मरता हुआ वह न देख सके और उन्होंने कहा कि क्योंकि जरासंध मेरे कारण से मथुरा पर बार-बार चढ़ाई कर रहा है। इसलिए यदि मैं यहां से चला जाऊंगा तो यह युद्ध व नरसंहार भी बन्द हो जाएगा और यहां शान्ति स्थापित हो जायेगी। सचमुच ही श्रीकृष्ण जी ने अपने बन्धु-बान्धवों सहित मथुरा को छोड़ कर समुद्र के किनारे पर जाकर द्वारिका नाम का एक नगर बसा लिया था। यदि वह झगडालू प्रकृति के होते तो कभी भी ऐसा न करते। जब उन्होने देखा मेरे कारण से मथुरा में अशान्ति पैदा हो गई तो उन्होंने अपनी कोई चिन्ता न करते हुए लोकहित के लिए मथुरा को ही छोड़ दिया। इससे बढ़ कर शान्ति प्रिय होने का और क्या उदाहरण हो सकता है।

कौरवों और पाण्डवों के बढ़ते हुए वैमनस्य को देख कर वह स्वयं कभी-कभी दुःखी हो जाते थे। वह नहीं चाहते थे कि यह आपस मे झगड़ें। यह ठीक है कि उनका झुकाव पाण्डवों की ओर अधिक था। उसका कारण भी दुर्योधन द्वारा उनके साथ अन्याय करना था। क्योंकि श्री कृष्ण जी एक धर्मात्मा व्यक्ति थे वह नहीं चाहते थे कि किसी के साथ अन्याय किया जाए। जब उनसे यह झगड़ा न देखा गया तो शान्ति का दूत बन कर वह द्वारिका से हस्तिनापुर की ओर चल पड़े। धृतराष्ट्र की आज्ञा से दुर्योधन ने मार्ग में स्वागत् द्वार और विश्राम गृह बनवा दिए। द्वारिका से चल कर श्री कृष्ण जब हस्तिनापुर में पहुंचे तो नर नारियों की भारी भीड़ द्वारा

उनका स्वागत किया गया । दुर्योधन के अतिरिक्त सारे कौरव कुल के समस्त प्रमुख व्यक्तियों ने अर्घ्य आदि से श्री कृष्ण की अगवानी की। परन्तु वह विदुर जी के घर ही ठहरे । क्योंकि एक धर्मात्मा किसी धर्मात्मा के घर ठहरना पसन्द करेगा । वह वहा अपनी बुआ तथा पाण्डवो की माता कुन्ती से भी मिले । उनकी दु:ख भरी गाथा सुन कर वह दुर्योधन से मिलने गए ।

दुर्योधन ने उनके खाने के लिए कुछ खाद्य पदार्थ प्रस्तुत किए परन्तु श्री कृष्ण जी ने उन्हें स्वीकार नही किया । उन्होंने कहा दूत अपना प्रयोजन सिद्ध होने पर ही भोजन और सम्मान स्वीकार करता है । फिर किसी के घर का अन्न किसी से प्रेम के कारण अथवा सकट की स्थिति मे लिया जाता है । प्रेम तुम मे मेरे प्रति नहीं है और संकट मे मैं नही हू । मेरे लिए तो यहा केवल विदुर का अन्न ही ग्राह्य है ।

कौरवों की दुर्भावना को जानते हुए जब विदुर ने श्री कृष्ण को कौरवों की सभा में जाने से रोका तो तब श्री कृष्ण ने कहा—मैं यह सब जानता हुआ भी यहा आया हूं। क्योंकि सारे भू-मण्डल पर इस समय इस सम्भावित युद्ध से विनाश के बादल मंडरा रहे हैं । इस विनाश से व प्रबल सहार से मुक्त कराने का मैं प्रयत्न करूंगा ताकि इन दोनों मे सन्धि हो जाए ।

कौरव सभा मे जाकर श्री कृष्ण जी ने सन्धि वार्ता की भूमिका बान्धते हुए श्री धृतराष्ट्र से अनुरोध किया कि कौरव कुल मे यह भयकर सकट पैदा हो गया है । यदि इसकी उपेक्षा की गई तो समूचा भूमण्डल विध्वस्त हो जाएगा। आप ही इसका निवारण कर सकते है । यह कठिन कार्य न होकर आप के और मेरे अधीन है । आप अपने पुत्रों को मर्यादा मे रखे। पाण्डवो का मै सम्भाल लूगा । मेरा प्रबल आग्रह है कि पाण्डवो को आप उनके पैत्रिक राज्य का हिस्सा दिला दे । धृतराष्ट्र ने कहा, आप ही दुर्योधन को समझाए वह बडा ही हठी है, मेरी बात नही मानता । श्री कृष्ण सहित भीष्म, द्रोण, विदुर और धृतराष्ट्र सभी ने दुर्योधन का समझाने का प्रयत्न किया। परन्तु दुर्योधन ने अपना दुराग्रह नहीं छोडा उसने पाण्डवो को पाच गाव देने से भी इन्कार करते हुए कहा कि :—

हे कृष्ण बिना युद्ध के मै "सूच्यग्र नैव दास्यामि" अर्थात् सुई के अग्रभाग जितनी भूमि भी नही दूंगा ।

श्री कृष्ण ने कौरवो को समझाते हुए कहा कि युद्ध से महा सहार हो जाएगा। सभी कुछ जल कर नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगा । युद्ध का बिभित्स रूप श्री कृष्ण ने उनके सामने रखा, परन्तु दुर्योधन ने एक न मानी । अन्त मे श्री कृष्ण ने धृतराष्ट्र आदि समझौते के पक्षपातियों के सामने एक प्रस्ताव रखा। वह यह कि दुर्योधन, कर्ण, शकुनि, दुःशासन इन चारों को कैद कर लिया जाए और शेष कौरव पाण्डवों के साथ

(पृष्ठ 8 पर देखें)

जीवन में मधुरता

ले—डा. भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ़

मधुमन्मे विक्रमणं मधुमन्मे परायणम् ।
वाचा वदामि मधुमद् भूमासं मधु संदृशः ।।

अथर्व० १.३४.३.

परस्पर में मधुर व्यवहार करके ही समाज में सुख सामञ्जस्य तथा ऐश्वर्य की वृद्धि की जा सकती है। परस्पर की कटुता द्वेष तथा डाह के भावों ने आज जन-जीवन को क्षुब्ध तथा दुःखी बना रखा है। मधुर वाणी, व्यवहार तथा मधुर चेष्टाओं से हमारे जीवन में जो स्वर्गिक सुख आ सकता है। उसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। यह मधुरता का भाव हमारे चाल-चलन, हमारे अध्ययन तथा जीवन प्रत्येक गति एवं प्रणाली में दृष्टिगोचर होना चाहिए। हमारा आना-जाना भी दूसरों को अच्छा लगे। देश के किसी भी भाग में हम जावें तो लोग हमारे उच्च आदर्शों से आकर्षित होकर हमारा सत्कार करने के लिये दौड़े आयें। यह तभी सम्भव होगा जब हम अपना क्रियाओं, आचार-विचार, वाणी तथा व्यवहार को मधुर बनायें। हमारा स्वाध्याय और अध्ययन भी देशवासियों में मधुरता के भावों की अभिवृद्धि करने वाला होना चाहिए। इस प्रकार मधुरता से बोलते हुए हम जहां अपनी वाणी को पवित्र बनायेंगे, वहां अन्य लोग भी हमारे मधुर व्यवहार से प्रभावित होंगे। जीवन में सर्वत्र मधुरता चाहिए।

(पृष्ठ 7 का शेष)

सन्धि कर लें। परन्तु यह कार्य भी सिरे न चढ़ सका। यदि यह बात भी श्री कृष्ण की मान ली जाती तो युद्ध रुक जाता।

इतने में सात्यकि ने सभा में प्रवेश करके दुर्योधन द्वारा श्री कृष्ण को कैद करने के षड्यन्त्र का भाण्डा फोड़ दिया। तब श्री कृष्ण ने शान्त स्वर में कहा—दुर्बुद्धे ! तू मुझे अकेला समझ कर पकड़ना चाहता है। जरा चारों तरफ आंख उठा कर देखो। मैं चाहूं तो तुम्हें और तुम्हारे साथियों को बन्दी बना कर तुम्हें कुन्ती पुत्रों के हाथ सौंप दूं। परन्तु मैं ऐसा निन्दित कर्म नहीं करूंगा।

जब दुर्योधन और उसके साथियों ने चारों ओर देखा तो वह श्री कृष्ण के साथियों से अपने आप को घिरे हुए देख कर हैरान रह गए।

यदि शान्ति के दूत श्री कृष्ण जी की बात गोत्र हत्यारा दुर्योधन मान लेता तो महाभारत का भयंकर युद्ध न होता और आज भारत-वर्ष का सब देशों पर एक छत्र राज्य होता।

वर्षों की भारत की गुलामी दुर्योधन के इस दुराग्रह का परिणाम थी। यदि महाभारत का युद्ध रुक जाता तो आज भारत का स्वरूप ही और होता।

इस प्रकार श्री कृष्ण जी शान्ति के महान् दूत के रूप में हमारे सामने आते हैं।

श्री कृष्ण और यज्ञ

लेखक—श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा सभा कोषाध्यक्ष

हमारे देश में यज्ञ का बहुत बड़ा महत्त्व है। सभी प्राचीन गृहस्थी तथा विद्वान् ऋषि, मुनि, राजा महाराजा सभी यज्ञ किया करते थे। बड़े-बड़े यज्ञों का वर्णन भी हमारे प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है। रामायण काल में अयोध्या के महाराजा दशरथ का पुत्रेष्टी यज्ञ और महाभारत काल में पाण्डवों का राजसूय यज्ञ इसके उदाहरण हैं। महाराज दशरथ जी के यज्ञ में सारे देश के ऋषि मुनि विद्वान्, ब्राह्मण क्षत्री, वैश्य, शूद्र, ब्रह्मचारी, गृहस्थी, सन्यासी, सभी सम्मलित हुए थे। इसी प्रकार पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में सारे भारत वर्ष के ही नहीं देश विदेश के राजा, महाराजा और दूसरे व्यक्ति सम्मलित हुए थे। महाभारत काल ही भगवान् श्री कृष्ण का काल था और इस राजसूय यज्ञ के प्रमुख श्री कृष्ण जी महाज ही थे।

भगवान् श्री कृष्ण जी को योगेश्वर कृष्ण कह कर पुकारा जाता है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि वह केवल एक योगी ही थे। वह एक वीर शिरोमणि, कर्मयोगी, गीता उपदेष्टा, लोक नायक राष्ट्रपुरुष थे। यज्ञ के प्रति उनकी बड़ी निष्ठा व श्रद्धा थी। उन्होंने यज्ञ का कई रूपों में वर्णन किया है। वह गीता के अध्याय तीन के 10वें श्लोक में सारी सृष्टि को ही यज्ञ मय बताते हैं। और सर्व प्रथम इस यज्ञ का कर्ता परमात्मा (प्रजापति) को मानते हैं—

"सह यज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः" यह कह कर श्री कृष्ण स्पष्ट कर देते हैं कि सर्वप्रथम यज्ञ कर्त्ता परमात्मा है। उसने सृष्टि के आदि में यज्ञ सहित प्रजा की रचना करके कहा कि इस यज्ञ से तुम लोग वृद्धि लाभ प्राप्त करो। यह यज्ञ तुम लोगों के लिए इष्ट कामनाओं का देने वाला बने।

सारी सृष्टि में हमें एक यज्ञ प्रक्रिया दिखाई देती है। परमात्मा का बनाया हुआ सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र मण्डल, पृथ्वी, जल, वायु सभी निरन्तर यज्ञ कर रहे हैं और यह सारी सृष्टि यज्ञ के आधार पर ही ठहरी हुई है।

श्री कृष्ण जी महाराज ने गीता में यज्ञ शब्द का अर्थ केवल देवयज्ञ न करके इसका अर्थ—कर्म, त्याग, दान, तथा अध्यात्मिक तत्त्व रूप में किया है। वैसे यज्ञ शब्द का अर्थ देव-पूजा, संगति करण और दान मुख्य रूप से किया जाता है। यज्ञ के

द्वारा देवों की पूजा की जाती है और देव वृटिष आदि के द्वारा मानव समाज का कल्याण करते हैं। गीता के अध्याय 3 श्लोक 11 में लिखा है।

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ।

अर्थात् मानव द्वारा किया गया यज्ञ देवताओं की वृद्धि करता है और देवता मानव को वृष्टि आदि के द्वारा समृद्धि प्रदान करते हैं। परस्पर आदान-प्रदन से दोनों की वृद्धि होती है। यज्ञ के द्वारा मानव को सभी इष्ट पदार्थ प्राप्त होते हैं।

श्री कृष्ण अर्जुन को कहते हैं :—

एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीहयः ।
अघायुरिन्द्रयारामो मोघंपार्थ सजीवति ।। गीता अ० 3·16

हे अर्जुन जो व्यक्ति यज्ञ आदि कर्म नहीं करता केवल अपनी इन्द्रियों के रमण में ही लगा रहता है वह मानव पापी बन जाता है उसका जीवन व्यर्थ है। बांट करके खाना भी एक यज्ञ है। पंच महा यज्ञों में बलिवैश्वदेव तथा अतिथि यज्ञ भी अपना महत्त्व पूर्ण स्थान रखते हैं। यह दोनों यज्ञ करने के बाद जो अन्न अर्थात् भोजन बचे उस भोजन को खाने वाला व्यक्ति पाप रहित हो जाता है।

श्री कृष्ण जी फिर गीता में कहते हैं।

"यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषै ।।

(गीता अ० 3,13)

अर्थात् यज्ञ शिष्ट ही अमृत है ऐसे भोजन से मानव का मन और चित्त प्रशन्न रहता है और शुद्ध पवित्र हृदय ही परमात्मा का गुणगान भजन कर सकता है। ऐसा कह कर वह बलिवैश्वदेव यज्ञ और अतिथि यज्ञ का महत्त्व प्रदर्शित करते हैं।

मानव के प्रत्येक कर्म में श्री कृष्ण जी ने यज्ञ के ही दर्शन किए हैं वह अर्जुन से कहते हैं :—

द्रव्य यज्ञास्तपोयज्ञा योग यज्ञास्तथापरे ।
स्वाध्याययज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशिव्रताः ।।

अर्थात् अग्निहोत्र देव यज्ञ है, दान भी यज्ञ है, तप भी यज्ञ है, योग, स्वाध्याय, ज्ञान व्रत यह सब यज्ञ कर्म ही हैं। इन्द्रिय सयंम एवं प्राणों का नियन्त्रण भी यज्ञ है। योगी जन इस यज्ञ को करते रहते हैं। श्री कृष्ण जी ने केवल देव यज्ञ को ही यज्ञ नहीं कहा बल्कि यज्ञ का बड़ा विस्तृत स्वरूप बताया है। यज्ञ को अपने जीवन की प्रक्रिया में उतार लेने पर वह बार-बार जोर देते हैं। वह बार-बार कहते हैं यज्ञ कर्म के बिना मनुष्य कर्म बन्धन में जकड़ा रहता है :—

यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः (गीता 3-9)

अर्थात् यज्ञ कर्म बन्धनों को काटने वाला है।

इस प्रकार अनेकों स्थानों पर गीता में श्री कृष्ण जी ने यज्ञ की महिमा का वर्णन किया है। क्योंकि वह स्वयं भी प्रति दिन यज्ञ सन्ध्या बन्दना किया करते थे। महा भारत में हमें इसका वर्णन विस्तार से मिल जाता है। जब वह दुर्योधन से सन्धि वार्ता करने के लिए चले जा रहे थे तब रास्ता में जहां सायं काल हो जाता था वहां वह सायंकाल तथा प्रातः यज्ञ सन्ध्या बन्दना करके फिर आगे चलते थे। महा भारत में लिखा है—

"प्रातरुत्थाय कृष्णस्तु कृतवान् सर्वमाह्निकम् ॥"

प्रातः काल उठ कर श्री कृष्ण ने (अह्निक) सन्ध्या हवन की सभी प्रक्रियाएं पूर्ण की और फिर आगे प्रस्थान किया। उनकी यज्ञ के प्रति श्रद्धा और आस्था तथा विद्वता और उनकी महानता को देखकर ही पांडवों के राजसूय यज्ञ में उन्हें ही सर्व प्रमुख मनोनीत किया गया था।

इस प्रकार नित्य सन्ध्या उपासना कर्मयोग आदि की क्रियाएं करने वाले योगीराज श्री कृष्ण जी को लोगों ने कहीं माक्खनचोर, कहीं गोपियों के साथ नाचने वाला और कहीं-कहीं तो बड़े घिनौने रूप में वर्णित किया है। वह एक लोक नायक और सिद्ध साधक थे। आर्य समाज उन्हें इसी रूप में मानता है। सात सितम्बर को उनका जन्म दिवस है सभी आर्य बन्धु उसे बड़े उत्साह से मनाएं।

ईश्वर ही सृष्टि कर्ता है

देखो ! शरीर में किस प्रकार की ज्ञानपूर्वक सृष्टि रची है कि जिसको विद्वान् लोग देख कर आश्चर्य मानते हैं। भीतर हाड़ों का जोड़, नाड़ियों का बन्धन, मांस का लेपन, चमड़ी का ढक्कन, प्लीहा, यकृत, फेफड़ा, पंखा कला का स्थापन, जीव का संयोजन, शिरो रूप मूल रचना, लोम नख आदि का स्थापन, आंख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत् ग्रन्थन, इन्द्रियों के मार्गों का प्रकाशन, जीव के जागृत, स्वप्न, सुषुप्त अवस्थाओं के भोगने के लिए स्थान विशेष का निर्माण, सब धातु का विभाग करण, कला कौशल स्थापना आदि अद्भुत सृष्टि को बिना परमेश्वर के कौन कर सकता है। (स. प्र. स. 8)

—महर्षि दयानन्द

महान् नीतिज्ञ श्री कृष्ण

श्री कृष्ण जी जहां एक धर्मात्मा थे वहां वह एक महान् योद्धा और महान् नीतिज्ञ भी थे। शक्ति और भक्ति उनके पास दोनों थी। जहां उन्हें धर्म ग्रन्थों का पूरा-पूरा ज्ञान था। जो ज्ञान उन्होने युद्ध के मैदान में अर्जुन को दिया वह सारी उपनिषदों का सार है। इसी मे उनको महान् विद्वान् कहा जाता है। थोड़े से समय में इस प्रकार का ज्ञान देना कोई साधारण बात नहीं थी और वह भी उस समय जब दो सेनाएं आमने-सामने खड़ी हों और युद्ध के बिगुल बज चुके हों। ऐसे समय में हताश और निराश अर्जुन को युद्ध के लिए तैयार करना उनका ही काम था।

श्री कृष्ण के कई रूप हमारे सामने आते हैं। हमारे पौराणिक भाईयों ने तो उन्हें कहीं माक्खन चोर, कहीं रास लीलाएं करने वाला और कहीं-कहीं बड़े-बड़े चमत्कार दिखाने वाला सिद्ध किया है। परन्तु आर्य समाज इस महापुरुष पर किसी प्रकार का लांछन लगाने का घोर विरोध करता है। महर्षि दयानन्द ने उन्हें "आप्त पुरुष" कहा है। और साथ ही यह भी कहा कि महाभारत में जो श्री कृष्ण जी का जीवन मिलता है उसे पढ़ कर यह स्पष्ट हो जाता है कि उनका जीवन बहुत महान् था। परन्तु भागवत् आदि में योगेश्वर श्री कृष्ण के जीवन को बिगाड़ कर प्रस्तुत किया गया है।

वह केवल एक योगी ही नहीं थे महान् नीतिज्ञ भी थे। महाभारत का सारा युद्ध उनके चारों ओर घूमता है। उन्होंने सारे युद्ध में हथियार नहीं उठाया परन्तु यदि ध्यान से देखा जाए तो सभी बड़े-बड़े योद्धाओं को पराजित करने वाले श्री कृष्ण जी ही नज़र आते हैं।

सबसे पहले हमें उनकी नीति मथुरा को छोड़ समुद्र के किनारे द्वारिका बसाने में और कंस को मारने में दृष्टिगोचर होती है। वह चाहते थे कि समुद्र के रास्ते से जो भी विदेशी आये उस पर उनकी नजर रहे। दूसरी बार उनकी नीति पाण्डवों के राजसूय यज्ञ के समय जरासन्ध के मारने में दृष्टि गोचर होती है। उन्होंने महाबली भीम से बड़े ही अनोखे ढंग से देश के एक महाशत्रु को समाप्त करवा दिया।

समझाने पर भी जब कौरव न माने और युद्ध आवश्यक हो गया तो बड़े ही नीतिपूर्ण ढंग से वह अर्जुन के सारथी बन गए। क्योंकि अर्जुन उनके सारथी बनने से ही

भीष्म, द्रोण, कर्ण दुःशासन और दूसरे महावली योद्धाओं पर विजय प्राप्त कर पाया । सबसे पहले युद्ध का मोर्चा महाबली वयोवृद्ध भीष्म पितामह ने सम्भाला था । जब पितामह कई दिन तक युद्ध करते हुए पाण्डव सेना का संहार कर रहे थे । तो अर्जुन ने घबरा कर श्री कृष्ण जी से कहा कि यदि पितामह एक दो दिन और इसी प्रकार लड़ते रहे तो सभी योद्धा समाप्त हो जाएंगे । श्री कृष्ण ने अर्जुन को एक विधि समझाई कि सायं काल के समय सभी पितामह जी से मिलने चले चलेंगे । आप सब उनका आशीर्वाद प्राप्त कर लें सब ठीक हो जाएगा । सायंकाल ऐसा ही हुआ । जब सन्ध्या वन्दना करके भीष्म जी उठे तो अर्जुन सहित पाण्डवों ने पितामह के चरण छुए और उन्होंने आशीर्वाद दिया कि बेटा विजयी रहो । बस यहीं श्री कृष्ण जी ने इस शब्द को पकड़ लिया और बोले ! आपका यह आशीर्वाद कैसे पूरा हो सकता है । जब से आपने कौरवों की सेना की बागडोर सम्भाली है तब से पाण्डव सेना का संहार होता जा रहा है यदि ऐसा ही होता रहा तो पाण्डवों की विजय कैसे होगी ?

भीष्म पितामह ने कहा कि मैं क्षत्रि हूं क्षत्रि जब तक दम में दम रहता है युद्ध के मैदान में लड़ता है । इसी प्रकार मैं भी लड़ता रहूंगा । परन्तु मैं केवल क्षत्रियों से ही लड़ता हूं । किसी नपुसंक से नहीं । मेरी प्रतिज्ञा है कि मैं किसी नपुसंक पर हाथ नहीं उठाऊंगा ।

श्री कृष्ण ने पाण्डवों को कहा जल्दी पितामह का आशीर्वाद लेकर चलो ताकि आराम करके प्रातः काल होने वाले युद्ध की तैयारी की जा सके । श्री कृष्ण बहुत खुश थे, परन्तु अर्जुन की कुछ समझ में नहीं आ रहा था । जब प्रातः काल युद्ध का बिगुल बजा और सेनापतियों की घोषणा हुई, एक तरफ से भीष्मपितामह और दूसरी ओर से शिखण्डी, क्योंकि यह बहादुर नपुसंक था और इसका सभी को पता था । भीष्म जी ने जब यह घोषणा सुनी और शिखण्डी युद्ध करने के लिए उनके सामने आया तो उन्होंने युद्ध करना बन्द कर दिया तथा धनुषवाण अपने रथ में रख दिया । यह देख कर श्री कृष्ण ने अर्जुन को इशारा किया कि अब समय चूकने का नही है । वाण चलायें । इस प्रकार बडी नीनि से भीष्म पितामह पर अर्जुन की विजय श्री कृष्ण जी ने कराई ।

जब कर्ण ने मोर्चा सम्भाला तो श्री कृष्ण ने बड़ी नीति से अर्जुन के रथ को कर्ण के सामने से हटा कर एक कीचड़ व दल-दल भरे रास्ते पर दौड़ा दिया पीछे कर्ण अपना रथ लेकर दौड़ रहा था । श्री कृष्ण तो अपने रथ को बड़े ढंग से बचा कर ले जा रहे थे । परन्तु बेताहाशा रथ को दौड़ाने से कर्ण का रथ कीचड़ में फंस गया । फिर क्या था श्री कृष्ण ने अर्जुन का रथ मोड़ कर कर्ण के रथ के सामने कर दिया । कर्ण अपने रथ का पहिया निकालना चाहता था । परन्तु श्री कृष्ण ने अर्जुन

को तीर चलाने के लिए कहा और महाबली कर्ण को जिसे पराजित करना बड़ा कठिन था। बड़ी बुद्धिमत्ता से श्री कृष्ण जी ने उसका भी संहार करा दिया।

महाबली गुरु द्रोण ने जब कौरवों का सेनापतित्व सम्भाला तो उन्हें भी पराजित करना अर्जुन के वश की बात नहीं थी। गुरु और शिष्य में घमसान युद्ध हो रहा था। उस समय श्री कृष्ण ने गुरु द्रोण की एक कमजोरी को पकड़ लिया और कहा इन का अपने पुत्र अश्वत्थामा से बड़ा स्नेह है यदि उसे युद्ध में मरा घोषित कर दिया जाए तो द्रोण हथियार डाल देगा। अश्वत्थामा नाम के हाथी को मार कर युधिष्ठिर से यह घोषणा करवा दी थी की अश्वत्थामा हाथी मारा गया। गुरु द्रोण के कान में केवल युधिष्ठिर का अश्वत्थामा शब्द ही पड़ने दिया हाथी वाला शब्द भेरियों व नगाड़ों की गड़गड़ाहट में लोप हो गया। द्रोण ने हथियार रख दिए और इस प्रकार उसका भी संहार हो गया।

दु:शासन और दुर्योधन को समाप्त करने में भी महान् नीतिज्ञ श्री कृष्ण जी की ही बुद्धिमत्ता थी।

इस प्रकार महा भारत को पढ़ने वाले जानते हैं कि महाभारत के युद्ध में अर्जुन के बल से विजय प्राप्त नहीं हुई। यह विजय श्री कृष्ण जी की नीतियों का ही परिणाम थी। इस विजय का सारा श्रेय उन्हीं को जाता है।

आज भारत में जो आतंक वाद, स्वार्थ वाद, जातिवाद सम्प्रदाय वाद, उग्रवाद, और पद्लिप्सा बढ़ती जा रही है। इसे रोकने के लिए एक महान् नीतिवान की आवश्यकता है। श्री कृष्ण जी जैसा नीतिवान ही आज भारत को इस संकट से बचा सकता जो पैदा हो गया है।

हम सात सितम्बर को इस महान् नीतिज्ञ का जन्म दिवस मनाते हुए इनसे प्रेरणा लें और सभी प्रकार के स्वार्थों को त्याग कर देश रक्षा का व्रत लें ताकि आज फिर इस कौरव पाण्डवों की तरह भाई-भाई में सुलगती हुई आग को बुझाया जा सके। आज देश को फिर अवश्यकता है श्री कृष्ण जैसे राज नीतिज्ञ की।

—धर्म देवार्य व्यवस्थापक

महान् त्यागी श्री कृष्ण

ले.—श्रीमती सुशीला भगत मन्त्राणि स्त्री समाज पक्का बाग जालन्धर

सारे भारत वर्ष तथा भारत से बाहिर भी 7 सितम्बर को कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया जा रहा है। इस दिन योगेश्वर श्री कृष्ण जी का जन्म हुआ था। उनके जन्म दिवस के उपलक्ष्य में यह पर्व मनाया जाता है। आर्य समाज जिस रूप में इस पर्व को मनाता है उससे तो कोई प्रेरणा मिलती है परन्तु शेष सभी मनाने वाले जिस रूप में इस पर्व को मनाते हैं उसमें वास्तविकता बहुत कम होती है और आडम्बर अधिक होता है। उनके कई चमत्कारों का वर्णन किया जाता है जिससे साधारण पुरुष उन्हें भगवान मान कर उनके जीवन से कोई प्रेरणा लेने का प्रयास नहीं करते। यही कारण है कि हम उनके आदर्शों को नहीं अपना रहे जो उन्होंने कायम किए थे।

उनका सारा जीवन बहुत त्यागमय था। गोकुल के अन्दर रहते हुए उन्होंने गऊओं की सेवा में जो जीवन बिताया और उसके बाद संदिपनी गुरु के आश्रम में शिक्षा प्राप्त करते हुए जो तप और त्याग दिखाया वह बड़ा अपूर्व है। उन्हें धन का तनिक भी मोह नहीं था। न ही उनमें पदलिप्सा थी। जब उन्होंने अपने बाहुबल से महान् दुष्ट राजा कंस को मारा तो यदि वह चाहते मथुरा की गद्दी पर स्वयं बैठ जाते या जेल से छुड़ा कर अपने माता-पिता देवकी और वसुदेव जी को राज्य सौप देते। परन्तु उनकी त्यागमय मनोवृति ने ही कंस के पिता महाराज उग्रसेन, जो जेल में बन्द थे, क्योंकि कंस ने अपने पिता को भी जेल में डाला हुआ था। उनको जेल से मुक्त करा कर मथुरा का राज्य उन्हें सौंप दिया। यह उनका कोई कम त्याग नहीं था। कंस को उन्होंने अपने बाहूबल से मारा था। राज्य प्राप्ति का उन्हें अधिकार था परन्तु फिर भी राज्य स्वयं नहीं लिया। न ही उस पर कोई अधिकार रखा।

दुष्ट राजा जरासन्ध को मरवा कर उसकी जेल में बन्द सभी राजाओं को मुक्त करा कर उन्होंने उसके राज्य पर भी कोई अधिकार नहीं जमाया। जरासन्ध के बेटे को ही राज्य सौप कर त्याग का एक अनूठा उदाहरण पेश किया।

पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में जब सभी अपने-अपने जिम्मे काम ले रहे थे तो इस त्यागी तपस्वी ने अपने स्वभाव के अनुरूप यज्ञ में भाग लेने वाले ब्राह्मणों, विद्वानों के पांव धोने का कार्य लिया। इतना महान् व्यक्तित्व होते हुए भी कितना छोटा और सेवा का कार्य उन्होंने लिया।

वह काम करने में विश्वास रखते थे परन्तु उसके फल की इच्छा नहीं रखते थे यही उन्होंने अर्जुन को भी समझाया था कि तेरा काम लड़ना है क्योंकि तू क्षत्रिय है। इसलिए कर्म करता चल। श्री कृष्ण जी का जीवन भोग परक न होकर कर्त्तव्य—परायण, था। श्रम, कर्म, सेवा, त्याग और राष्ट्र सेवा के लिए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया था।

आज के राजनैतिक जीवन में भी हर कोई अधिकार प्राप्ति व सत्ता (कुर्सी) के लिए दौड़ता हुआ दिखाई पड़ता है। क्या पहले ऐसा नहीं था। हां ! था तभी तो दुर्योधन ने राज्य के लिए अपना तथा अपने सारे कुटुम्ब का नाश करवा दिया था। परन्तु श्री कृष्ण जी ने इस युद्ध को टालने का भरसक प्रयत्न किया। वह दूत बन कर शान्ति, सन्धि के लिए गए लेकिन सत्ता हथियाने की उन्होंने कभी अभिलाषा नहीं की। वैसे वह कम शक्तिशाली नहीं थे, वह महा बली थे। महान् तेजस्वी थे।

मित्र सुदामा की आर्थिक स्थिति को देख कर और उसे बिना बताए, बिना सूचित किए उसे अपने पास रख कर, पीछे उसके झोंपड़े के स्थान पर एक सुन्दर भवन बनवा कर और उसमें सभी खाद्य तथा दूसरी सामग्री प्रचुर मात्रा में भर कर, त्याग का एक महान् परिचय दिया दिया था। आज लोग 10 रुपया देकर समझते हैं कि दस बार उनका नाम बोला जाए। परन्तु श्री कृष्ण जी महाराज इतना महान् कार्य करने पर भी सुदामा को या किसी और को एक बार भी नहीं कहते कि मैंने यह सब कर दिया है। यह कितना बड़ा त्याग है।

इस प्रकार जिधर से हम श्री कृष्ण जी के जीवन को देखते हैं वह महान् प्रेरणा-देने वाला जीवन दिखाई पड़ता। वह प्रकाश के महान् स्तम्भ हैं उनका जन्म दिवस मनाते हुए हम उनके जीवन से प्रेरणा लें। तभी यह दिन मनाना सफल होगा।

श्री कृष्ण की प्रतिष्ठा क्यों ?

लेखक—श्री कवि कस्तूरचन्द जी घनसार पीपाड़ शहर

संसार में जिसकी महान् प्रतिष्ठा बढ़ी चली हम उसका वर्णन नहीं कर पाते, क्यों इतनी हो पाई, और वे किसी को कहते भी नहीं कि "हमारी सुकीर्ति यश लोक में फैल जाय।" यह एक विचारमय बात है इस आर्यवर्त में ही नहीं सारे विश्व में योगी कृष्ण की महिमा का कोई पारावार नहीं रहा! कितने ही उनके अनुयायी साम्प्रदायी भक्त बने। लाखों की तदाद में मन्दिर बना डाले। इतना ही नहीं कृष्ण को साक्षात् ईश्वर ही समझकर अहर्निश उपासक उपासना में जुट गये। इतना प्रभावशाली नरवीर, रणधीर' कर्मबली, धर्मसेवी, वेदपाठी, नीति-रीति में तथा राजनीति में परिपक्व, पूर्ण ज्ञाता ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय, सम-दम, श्रद्धायुक्त, अध्ययन, शील, संयम-नियम, के दृढ़व्रतधारी, महापुरुष कहलाया है।

कारावास में जन्म, बालकाल में गोकल नन्द के घर ग्वालों में रमण करने वाला, दुग्ध दधी सेवन कर तथा माखन को खाने वाला, गौवें चराने वाला जंगल में मस्त बंशी-बजाने वाला, मलयुद्ध, कसरत करने वाला, अपनी शक्ति से बड़े खलदुष्टों को धराशायी करने वाला, वह वीरपुरुष कहलाया। बड़े होने पर अपने मातुल कंस को जाकर पछाड़ा, माता को कारावास से छुड़ाकर अपना कर्त्तव्य पालन कर माता-पिता का ऋण अदा किया। करने योग्य काम कर दिखलाये आचार्य वेदवेता सन्दीपन के आश्रम में विधि पूर्वक विद्या प्राप्त की गई। थोड़े ही काल में सर्वज्ञान एवम् राज्य नीति-पूर्ण प्राप्त करे अपना राज्य भार सम्भालते अनेक कष्ट आपत्तियों को झेलते हुए आगे बढ़ते ही रहे। पाडवों के साथ न्याय नीति से सहयोग दिया गया। दुर्योधन को समझाने में रात-दिन एक कर दिखाया गया। सारे विश्व पर दृष्टि डालते हुए विचार धारा में उतर पड़े कि —"महायुद्ध न होवे" किन्तु जो होनहार होता है वो होकर ही रहता है।

कृष्ण के दिल में कभी ऐसा न था कि महायुद्ध हो जाय मगर पापों का घट भरे बिना कभी फूट नहीं पाता वैसा ही हुआ। अन्त में सारी संस्कृति वेदवेत्ता तथा महापुरुष एवम् वीरों का नाश देखना पड़ा। समर में अर्जुन के हताश होने पर भी वेदमन्त्रों द्वारा उपदेश किया गया तथा गीता की रचना का प्रारम्भ किया। उस रणभूमि में वास्तविक उपनिषद् का सारा तत्त्व दिखाया गया। कर्मयोग, ज्ञानयोग

भक्तियोग आदि तत्वसार अर्थात् आर्ष ग्रन्थों का निचोड़ दिखाया गया । आज नित-नयी गीता ज्ञान धारावत् शिक्षा करती रही है । ऐसे महापुरुष योगी कृष्ण कहलाये । हमारे भारतवर्ष का गौरव एवम् महान् शक्तिशाली देश की, गरिमा ज्ञान के सत्पथ पर चलने वाले का आज नित नया ज्ञान करते भक्त जन थकने ही नहीं पाते । जन्मदिवस जिसका इस महान् घोररात्रि भाद्र कृष्ण पक्ष अष्टमी बुद्धवार रोहिणी नक्षत्र में हुआ हम सभी उत्साह के साथ इसे मनाते आये हैं ।

महाभारत के पश्चात् इतना अन्धकार फैला कि जिसकी सीमा न रह पायी । राधेश्याम-राधेश्याम ही नाम लेने लग पड़े, विचार भी नहीं कर पाये कि राधे कौन थी । कृष्ण केवल गोकुल में रहने से नन्द परिवार से सम्बन्धित थे । उनका राधा से कहीं ऐसा सम्बन्ध नहीं था । आज रूकमणि को याद नहीं करते रूकमणी श्याम गाना चाहिए था, मगर लोग जिस रास्ते पड़ जाते हैं वापिस लौट कर नहीं देखते कि— "हम किधर जा रहे है ।" लोग कार्टून बन कर साथ में कृष्ण को नचाने लगे । बड़े पुरुषों को कामी बतलाना और उसका हास्य विलास का एक रासमण्डल बनाकर अश्लीलता आदि दिखाना अनुचित नहीं समझा । मगर अभी तक सत्य वास्तविकता पर नहीं चल पायें । हमारे आर्य विद्वानों ने भली भांति से प्रमाण-द्वारा सामने रखा किन्तु अभी तक लकीर के फकीर बने बैठे हैं । कहा है —

कृष्णबली सद् भाविक था अति, वेद विरुद्ध चले न चलाए ।
वीर बड़े रणधीर बड़े सद, नीति सही कर काम दिखाए ॥
योगी महावर था मतिसागर, कृष्ण कला धरदैव कहलाए ।
सो 'घनसार' सो गौरवता रख, आदर्श जीवन को दरशाए ॥

आज हमें भी कृष्ण के जीवन चरित्र को याद कर अपना स्वयं विचार उसी ढांचे में ढालने की बड़ी अवश्यकता है । केवल रामेश्याम-राधेश्याम गाने से कुछ नहीं हो पाता । हमारा कर्त्तव्य हो जाता है कि महापुरुषों की पद्धति वैदिक रीति जो सदा से चली आई उसे कभी न भुलावें ।

योगीराज कृष्ण जन्माष्टमी का महत्व व महात्म्य

(ले:—आचार्य शिवराज शास्त्री, एम. ए. मौलवी फाजिल)

योगीराज श्री कृष्ण जी की महान् कृति श्रीमद् भगवद्गीता संसार को अनोखी देन है। गीता पर संसार भर के ऋषियो, महर्षियों, विद्वानों विचारकों, तत्वजानियों ने जितना-जितना विचार किया है उतनी-उतनी ही रहस्यमय व गरिमापूर्ण गीता की भाषा होती गई है। हजारों पृष्ठ इस रचना पर लिखे गए। आर्य जाति के तीन बड़े सम्प्रदायों का तो आधार ग्रन्थ ही यह बना। शंकराचार्य, रामानुजाचार्य व वल्लभाचार्य तीनों ने ही अपनी पूरी योग्यता व प्रतिभा से इसकी महानता का बर्णन किया है। बर्तमान काल में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, योगीराज महर्षि अरविन्द, आचार्य विनोवा भावे एवं प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री श्रीपाद् दामोदर सातवलेकर ने बडी उच्चकोटि की टीकाएँ लिखी हैं। इसके अतिरिक्त भी सैकड़ों पुस्तकें गीता के सम्बन्ध में लिखी गई हैं।

आर्यसमाज के संस्थापक दृढ़ वैदिक धर्मी महर्षि दयानन्द ने योगीराज कृष्ण को आप्त पुरुष कहा है। आप्त कौन होता है—

न्यायदर्शन में प्रमाण कोटि में आप्त पुरुष भी आते हैं :—"आप्तोपदेश:"

फिर भी गीता के भाष्यों के अनेक सम्प्रदायो में परिवर्तित हो जाने के परिणाम स्वरूप गीता की मुख्य विचारधारा के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की भ्रम भ्रान्तियों का निराकरण होना शेष है। आज भी कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय वाले उन्हे सर्वशक्तिमान निराकार ब्रह्म के रूप में उनकी पूजा करना अपना धर्म समझते है। यह भ्रम भ्रान्ति गीता के जिस श्लोक से होती है वह निम्न है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्यतदात्मान सृजाम्यहम्

यदा यदा—जब-जब; हि—ही; धर्मस्य—धर्म की; ग्लानि—हानि ह्रास भवनि—होता है; भारत—भरतकुल में उत्पन्न हे अर्जुन; अभ्युत्थानम्—उन्नति, अधर्मस्य—पाप बुराई की होने लगती है, तदा—तब; आत्मानम्—मैं अपने आप को,

अहम्—मैं; सृजामि—पैदा करता हूं, शरीर धारण करता हूं । लौकिक भाषा में अवतार लेता हूं । यहीं से संसार भर में अवतारवाद का विचार उत्पन्न होकर संसार अनेक अवतारों के नाम पर चलाए जा रहे सम्प्रदायों के रूप में बंट गया ।

श्री कृष्ण से पूर्व अवतारवाद की कल्पना न चारों वेदों में न छः दर्शनों में न ब्राह्मण ग्रन्थों में न उपनिषदों में न अन्य आर्य ग्रन्थों में पाई जाती है । महर्षि दयानन्द ने काशी के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ में इसी आधार पर सभी पौराणिक पण्डितों की बोलता बन्द कर दी थी ।

परन्तु आश्चर्यजनक बात यह है कि महर्षि ने इस श्लोक पर कोई टीका-टिप्पणी अपने किसी भी ग्र थ में नहीं की । जबकि सारी गीता को लेकर वेद से पृथक अनेक सम्प्रदायों ने गीता को अपना एकमात्र धार्मिक ग्रन्थ घोषित कर गीता के प्रचार मात्र को ही अपना लक्ष्य बनाया है वे वेद की ओर आंख उठा कर भी नहीं देखते ।

जैसे हम आर्यसमाज मे भी ऐसे लोगों को देखते हैं जो केवल संध्या के व हवन के मन्त्रों का पाठ करना ही अपना धर्म मानते हैं, उसके अर्थों से हमें क्या लेना देना कह कर छुट्टी पा लेते हैं । ठीक यही दशा गीता वादियों की है वे केवल पाठमात्र के लिए गीता पढ़ते हैं जो लाखों करोड़ों गीता पाठियों की नित्य परम्परा बन गई है । इसीलिए आर्य विद्वानों ने गीतावादियों की इस कमजोरी को समझ कर गीता पर भी सुन्दर सटीक भाष्य लिखे हैं उन उच्च कोटि के विद्वानों में सातवलेकर जी के अतिरिक्त प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य प्रवर पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, गुरुकुल विश्व-विद्यालय कांगड़ी के कुलपति पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, आर्यसमाज के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी श्री अमर स्वामी जी महाराज (अप्रकाशित) अनेक विद्वानों की रचनाएं गीता के संन्देहों शंकाओं का निवारण कर गीता को भी शुद्ध वैदिक धर्म का स्वरूप प्रदान करते हैं ।

गीता के उक्त श्लोक को पढ़ कर जो भ्रान्ति उत्पन्न होती है उसके निराकरण के लिए हमें समस्त गीता का अध्ययन करना चाहिए है । श्लोकों के सन्दर्भों प्रसंगों का परस्पर मिलान किए बिना गीता के रहस्यमय श्लोक साधारण बुद्धि में समझ ही नहीं आ पाते हैं ।

गीता के कृष्ण स्वयं योगीराज हैं । उन्होंने योग के सभी स्वरूपों का न केवल सुन्दर वर्णन किया है । अपने क्रियात्मिक जीवन में योग की इन्हीं विभूतियों का प्रदर्शन भी किया है । वे स्वयं को अवतार न मान कर एक जीवात्मा के रूप में सर्वत्र वर्णन करते हैं परन्तु जीवात्मा योग शक्ति को प्राप्त करके अध्यात्म की किन उच्च कोटि की शक्तियों व आश्चर्यजनक विभूतियों को प्राप्त कर लेता है इसका अनुभव न कर सकने वाले सामान्य प्रजाजन कृष्ण के स्वरूप को ही ईश्वर मान कर उसकी

काल्पनिक मूर्तियों के पुजारी बन जाते हैं। जबकि स्वयं श्री कृष्ण ने ईश्वर की सत्ता व स्वरूप को इन शब्दों में वर्णन किया है :—

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुनतिष्ठति
भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ।। गीता 18-61

यह ईश्वर की शरणागति का अत्यन्त गुह्य उपदेश है। कहीं भटकने की आवश्यकता नहीं। किसी मन्दिर मस्जिद में नहीं, ईश्वर तो प्राणी मात्र के हृदय प्रदेश में विराजमान है। हे अर्जुन जैसे एक ड्राईवर अपनी मशीन पर बैठ कर मशीन को चालू रखता है ठीक उसी प्रकार संसार में जहां-जहां गति पाई जाती है। समझ लो कि यह प्रभु प्यारे की ही माया रचना एवं उसी का कर्तृत्व कौशल है। उसे बाहर की आंखों से नहीं अपने हृदय की आन्तरिक दिव्य चक्षुओं द्वारा ही देखा पहचाना जा सकता है।

फिर प्रश्न होता है कि यदा-यदा हि वाले श्लोक को कैसे समझा जाए। उसके पूर्वा पर प्रसंगों में जो बात योगीराज कृष्ण अपने प्रिय शिष्य अर्जुन को समझा रहे हैं उन्हें ध्यान से पढ़ो शंका निवारण हो जाएगी। यह श्लोक गीता के चौथे अध्याय का 7वां श्लोक है। पहले 6 श्लोकों में कहीं अवतारवाद का वर्णन नहीं है। तीसरे अध्याय में जो अन्तिम श्लोक है और अध्याय भर में जो विशेष व्याख्यान है वह जीवात्मा के स्वरूप और जीवात्मा द्वारा किए जा सकने वाले कर्मों के साथ ही उसके निष्काम रूप जीवन दर्शन का विषद् वर्णन है। कृष्ण कहते हैं अर्जुन मनुष्य अपनी बुद्धि मन और इन्द्रियों के वशीभूत अपने जिस स्वरूप को भूल कर संसार रूपी माया जाल में फंस कर निकम्मा हो जाता है। उसकी अपनी महानता विकसित व परिपूर्ण नहीं हो पाती। केवल योग ही ऐसा मार्ग है जो उसे इस कीचड़ में फंसने से बचा सकता है। यहां अर्जुन के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कृष्ण कहते हैं कि योगी ही अपनी सत्ता व स्वरूप को पहचान सकता। अर्जुन की बुद्धि सांसारिक होने से अर्जुन श्री कृष्ण से फिर पूछते हैं कि मैं आप का शिष्य हूं यह ज्ञान आप मुझे दे रहे हैं तो यह बताइए कि इसका ज्ञान आपको कैसे मिला और आप ने यह ज्ञान किस-किस को दिया। संसार को यह ज्ञान कैसे मिला। आत्मा परमात्मा के स्वरूप का स्पष्ट वर्णन कीजिए इस विचित्र प्रश्न का समाधान श्रीकृष्ण करते हैं :—

ब्रह्म ज्ञान की यह परम्परा अति प्राचीन है। यह अनश्वर है, मैंने इस अनश्वर कर्मयोग को सबसे पहले अपने ही एक जन्म में विवस्वान ऋषि को प्रदान किया था। विवस्वान ने यह ज्ञान अपने वैवस्वत मनु (विवस्वान के पुत्र) को दिया। वैवस्वत मनु ने यह ज्ञान अपने पुत्र इक्ष्वाकु को दिया। (श्लोक 1)

इस प्रकार परस्परा से प्राप्त इस योग को राजर्षियों (जनक आदि) ने जाना।

हे अत्यन्त तप करने वाले अर्जुन बहुत काल बीत जाने पर यह योग इस लोक में लुप्त हो गया। (श्लोक 2)

वह पुरातन योग की शिक्षा मैंने आज तुझे दी है। तू मेरा भक्त है, सखा है। इसलिए आत्मा व परमात्मा के ज्ञान का जो अत्यन्त उत्तम रहस्य है (वह मैं तुझे समझा रहा हूं)। (श्लोक 3)

यहां अर्जुन प्रश्न करते हैं कि आप का जन्म तो अब हुआ है और विवस्वान का पहले हुआ था। अत: मुझे यह विश्वास कैसे हो कि आदि काल में आप ने ही यह मार्ग (योग विद्या) विवस्वान को बताई थी। (श्लोक 4)

इस प्रश्न का समाधान करते हुए श्री कृष्ण कहते हैं—हे अर्जुन मेरे और तेरे भी बहुत से जन्म हो चुके हैं (अर्थात् मैं भी तेरी तरह जीवात्मा हूं भगवान नहीं, परन्तु मैंने योग द्वारा अपने सभी जन्मों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त किया हुआ है परन्तु तुझे योग की सिद्धि प्रदान न होने के कारण तू अपने पूर्वजन्मों के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता। (श्लोक 6)

यहां 7वां श्लोक अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इसमें जीवात्मा के स्वरूप का वर्णन करते हुए योगीराज कृष्ण सामान्य जीवों से अपनी विशेषता का वर्णन करते हैं :—

मैं अजन्मा (जीवात्मा उत्पन्न नही होता शरीर उत्पन्न और नष्ट होता है) अविनाशी; सांसारिक मनुष्यों का स्वामी (श्रेष्ठता के कारण होता हुआ भी प्रकृति स्वभाव को अपने वश में करके स्वेच्छा से जन्म लेता हूं और इसमें जन्म धारण करने में भी मेरी एक विशेष माया (रचना उद्देश्य) होता है।

ब्रह्मलीन योगी जन्म मरण के चक्र में क्यों पड़ते हैं यह भी एक ईश्वरीय इच्छा है उसका उद्देश्य वर्णन करते हुए वह अवतारवादी लगने वाला श्लोक योगीराज कृष्ण ने कहा है :—

(यदा यदा हि......) जब-जब संसार में धर्म का नाश हो जाता है और अधर्म का साम्राज्य स्थापित हो जाता है तब-तब मैं अपनी आत्मा को शरीर धारण की ओर प्रवृत्त करता हूं। अर्थात् अधर्म का अन्त केवल हथियारों से महायुद्धों से नही होता कोई प्रभु प्यारे के संसार का हित साधना से जीवन बिताने वाला महायोगी ही धर्म की स्थापना करने को जीवन का परम लक्ष्य बना कर जब संसार के कल्याण के लिए कार्य करता है तभी संसार में शान्ति समृद्धि एवं धर्म का राज्य स्थापित होता है। इसी लिए महाभारत के महायुद्ध का नाम धर्मयुद्ध पड़ा। क्योंकि उसका उद्देश्य दुर्योधन के अधर्म राज्य को समाप्त करके युधिष्ठर का धर्म राज्य स्थापित करना था।

दुर्योधन तो योगिराज कृष्ण के धर्मोपदेश के उत्तर में बोला था।

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्ति
जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्ति।

(शेष पृष्ट नं० 28 देखें)

धर्म युद्धों के विजेता

लेखक—आचार्य प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति, पूर्व कुलपति, गुरुकुल
कांगड़ी-विश्व-विद्यालय, हरिद्वार

एक वर्ष के बाद आज पुनः सारे देश में श्रावणी का पर्व मनाया जा रहा है। इस प्रकार यह पर्व देश मे न जाने कब से मनाया जाता चला आ रहा है। जिसे आज कल श्रावणी कहा जाता है उसे प्राचीनकाल मे उपाकर्म कहा जाता था। उपाकर्म का अर्थ आरम्भ करना होता है। प्राचीन काल में गुरुकुलों अर्थात् शिक्षणालयों में अन्य अनेक विषयों के साथ वेद का अध्ययन एक आवश्यक विषय होता था। शिक्षा समाप्ति के अवसर पर दीक्षान्त के समय आचार्य नवस्नातकों को अन्तिम उपदेश के रूप में अन्य अनेक जीवनोपयोगी बातों के साथ एक बात यह भी कहा करता था कि स्नातको ! वेद का स्वाध्याय कभी न छोड़ना, वेद का स्वाध्याय प्रतिदिन नियमित रूप से करते रहना। स्नातक ऐसा करते रहने की प्रतिज्ञा करके गुरुकुलों से वापिस अपने घर आते थे। उपाकर्म के दिन गुरुकुलो और देश के सब गृहस्थों के घरों मे विशेष यज्ञ किये जाते थे। जिनमें वेद के चुने हुए शिक्षा दायक मन्त्रो के द्वारा आहुतियां दी जाती थी। गृहस्थ लोग इस अवसर पर देखते थे कि उन्होंने दीक्षान्त के अवसर पर की गई वेद का प्रतिदिन नियमित रूप से स्वाध्याय करते रहने की प्रतिज्ञा का वर्ष भर कहा तक पालन किया है और आगामी वर्ष उस प्रतिज्ञा का पालन करते रहने के अपने निश्चय को पुनः दृढ करते थे। उधर गुरुकुलो में इस दिन से अवकाश आरम्भ हो जाते थे। पढाई के दिनो मे पढ़े हुए वेद को अवकाश के दिनों में दोहराते रहने का कार्य होता था और इसके स्मारक रूप मे इस दिन वेद मन्त्रों मे विशेष यज्ञ किया जाता था। क्योंकि इस दिन वेद का अध्ययन करते रहने के निश्चय को पुनः दोहराया जाता था और इस दिन वेद का अध्ययन आरम्भ किया जाता था इसलिये इसे उपाकर्म अर्थात् वेद के अध्ययनारम्भ का दिन कहा जाता था। उपाकर्म का यज्ञ समारोह श्रावणी अर्थात् श्रावण मास की, पौर्णमासी के के दिन मनाया जाता था। इस कारण संक्षेप मे इसका नाम श्रावणी भी पड़ गया। कालान्तर में लोग इस दिन वेद पढ़ने और वेद मन्त्रों से यज्ञ करने की बात को भूल गये और आजकल प्रचलित रक्षा बन्धन के रूप में यह त्यौहार मनाया जाने लगा।

इस युग में महर्षि दयानन्द ने मानव के सही कल्याण और उसको सर्वांगपूर्ण सही उन्नति के मार्ग दर्शक के रूप में वेद के पढ़ने-पर पुनः भारी बल दिया। आर्य-समाज, ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों और मन्तव्यों का प्रचार करता है। इसलिये जनता में वेद के पढ़ने-पढ़ाने की रूचि को जागृत करने के लिये आर्य-समाज अनेक प्रकार के उपाय करता है। इसी प्रसंग में आर्य समाज ने प्राचीन-काल की श्रावणी या उपाकर्म की परिपाटी को पुनः आरम्भ किया है। इस दिन सभी आर्य समाजों और संस्थाओं में विशेष यज्ञों का आयोजन होता है जिनमें वेद मन्त्रों के द्वारा बड़ी संख्याओं में आहुतियां दी जाती हैं। इतना ही नहीं, इस दिन से यज्ञ आरम्भ करके आगामी कृष्णजन्माष्टमी के दिन तक आर्यसमाजों में वेद सप्ताह भी मनाया जाता है। इस सप्ताह में प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ होता है। और वैदिक विषयों पर विद्वानों के उपदेश और कथा-वार्ताएं कराई जाती हैं और इस प्रकार जनता तक वेद का सन्देश पहुंचाया जाता है और उनमें वेद के स्वाध्याय की रूचि उत्पन्न करने का यत्न किया जाता है। इसी प्रयोजन से श्रावणी और वेद-सप्ताह के अवसर पर आर्य पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांक भी प्रकाशित किये जाते हैं।

आर्य-मर्यादा के पाठकों के स्वाध्याय के लिये यहां हम वेद का एक मन्त्र प्रस्तुत कर रहे हैं। मन्त्र में कई प्रकार से परमात्मा की महिमा और विभूति का वर्णन करते हुए कहा गया है कि प्रभु की एक विभूति यह भी है कि वे पापियों और अधर्मात्माओं से युद्ध करते रहते हैं और सदा ही उन्हें पराजित करते रहते हैं। मन्त्र की व्याख्या में परमात्मा की इन महिमाओं और विभूतियों का संक्षिप्त दिग्दर्शन कराया गया है। मन्त्र इस प्रकार है :—

यो हत्वाहिमरिणात् सप्त सिन्धून यो गा उदाजदपधा बलस्य।
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक् समत्सु स जनास इन्द्रः॥

ऋग्० 2.12.3

अर्थ—(यः) जो (अहिं) मेघ का (हत्वा) विदारण करके (सप्त) बहने वाले (सिन्धून्) जलों को (अरिणात्) बहा देता है (यः) जो (बलस्य) बल का (अपधा) धारण करने वाला (गाः) इन्द्रियों को (उदाजत्) चलाता है (यः) जिसने (अश्मनोः) शिलाओं या बादलों के (अन्तः) भीतर (अग्नि) अग्नि को (जजान) उत्पन्न किया है, जो (समत्सु) संग्रामों में (संवृक) शत्रुओं का वध करने वाला है (जनासः) हे (मनुष्यो) (सः) वह (इन्द्रः) परमैश्वर्यशाली भगवान् ही है।

भगवान् की महिमा विचित्र है। उसकी थाह कोई नहीं पा सकता। जितना उस पर विचार करें उतना ही आश्चर्य-चकित रह जाना पड़ता है। देखो, अभी आकाश खाली पड़ा है उसमें कहीं बादलों का नाम नहीं है। उसमें चमक रहा सूर्य

अपनी झुलसा डालने वाली किरणों से धरती पर आग बरसा रहा है। धरती के प्राणी गरमी से तड़प रहे हैं। पर देखिये भगवान् की लीला, बात ही बात में आकाश पानी से भरे हुए घने, काले बादलों से छा जाता है। शीतल वायु की लहरें चलने लग पड़ती हैं। रंभा रही है दुधारू गाय की तरह धरती पर अपना अमृत बरसाने के लिये उत्कण्ठित् बादल उसकी ओर झुक आता है और सहस्रों धाराओं से पृथिवी को उर्वरा और जीवित करता हुआ पानी बह निकलता है। यह किसकी लीला है ? जो खाली आकाश है उसे बादलों से भर कर अनन्त धाराओं से झरने वाला झरना कौन बना देता है ? वही भगवान्।

गौवें किस की शक्ति से चल रही हैं ? सूर्य और चन्द्र की किरणें गौवें हैं। हमारी इन्द्रियां गौवें हैं। हमारी वाणी और हमारा ज्ञान गौ है। ये सब गौवें किस की शक्ति से चल रही हैं ? किसकी शक्ति से अपना-अपना निर्दिष्ट कार्य कर रही हैं यह उसी भगवान् की महिमा है। वह चाहता है तो सूर्य और चन्द्र चमकता है। यदि उसकी इच्छा होती है तो बड़े-बड़े लोकों को परस्पर टकराकर विध्वंस कर देता है। वह जब तक चाहता है, तभी तक हम जी सकते हैं तथा हमारी इन्द्रियां अपना-अपना कार्य कर सकती हैं। जिस समय उसकी इच्छा होती है उसी समय हमें अपनी इन्द्रियों के कार्य बन्द करके इस शरीर को यहीं छोड़ कर प्रयाण करने के लिये विवश होना पड़ता है। उस बलधारी की इच्छा और शक्ति के बिना हमारी ये सभी प्रकार की गौवें-निकम्मी हो जाती हैं, अभाव में मिल जाती हैं।

देखो ये पत्थर की शिलायें कैसी निर्जीव और शक्ति हीन सी पड़ी हैं। इनमें न कोई बल दीखता है न गरमी। पर इनको गति में ला कर देखिये और परस्पर संघर्ष में डालिये। इनमें कितना बल दीखने लगता है, कितनी गरमी और आग दीखने लगती है। दो साधारभ-सी शिलाओं की रगड़ से इतनी बिजली उत्पन्न हो सकती है जो कि नगरों के नगरों को प्रकाशित कर सकती है। उस पर आश्चर्य यह कि इन शिलाओं को संघर्ष में लाकर जितनी चाहो विद्युत की अग्नि उत्पन्न कर लो वह कभी समाप्त नहीं होती। तुम लेते जाओ वह निकलती जायेगी। बादल तो जल के वाष्प हैं। उनमें आग का क्या काम ! परन्तु नहीं, देखो उस विधाता की विभूति से उन जल-रूप बादलों में ही जब बिजली उत्पन्न होती है तब अपने आलोक से विश्व को चकाचौंध और अपनी कड़क से ब्रह्माण्ड को कंपित कर देती है। प्रभु की आश्चर्य-सीमा का कोई अन्त नहीं पा सकता।

भगवान् युद्ध भी करते हैं। वे स्वयं शस्त्र हाथ में लेकर युद्ध करने नहीं आते उनके ऐसे वर्णन तो आलंकारिक हैं। भगवान् एक अन्य प्रकार से युद्ध करते हैं। भगवान् सत्य, न्याय, नियम और दया की मूर्ति हैं। उनकी इच्छा है कि उनके अमृत

पुत्र मनुष्य भी सत्य, न्याय, नियम और दया का जीवन व्यतीत करें। हम में से अनेक उनकी इस इच्छा का उल्लघंन करते चले जाते हैं और भगवान को अपने अनाचरणों से पराया कर लेते हैं। हम संसार में अधर्म की वृद्धि करके मानो भगवान् से शत्रुता करने लग जाते हैं। परन्तु हममें से ही बीच-बीच में ऐसे व्यक्ति उत्पन्न हो जाते हैं जो भगवान् का अनुभव कर लेते हैं और जिनके आत्मा पर भगवान् की संसार में सत्य, न्याय, नियम और दया का प्रसार करने की स्वाभाविक इच्छा प्रबल रूप में अंकित हो जाती है। इन लोगों के आत्माओं में भगवान् का वास हो जाता है। उसकी बदौलत उनमें एक अद्‌भुत और अदम्य शक्ति आ जाती है। वे अपने धर्म-प्रचार के कार्य में जुट पड़ते हैं। और वह देखो, उनके धर्म-प्रचार के इस महान् और पवित्र कार्य में जुट पड़ने की देर थी, उनके जुट पड़ते ही लगे अधर्म के— असत्य, अन्याय, अनियम, और क्रूरता के दुर्ग धड़ा-धड़ गिरने। लगे भगवान् के विरोधियों के नगर एक के पीछे दूसरा विजय होने? अधर्म पर धर्म की यह विजय किसके बल पर हो रही है? उसी भगवान् के बल से। इन धर्म-युद्धों का वास्तव में विजेता कौन है? भक्त के हृदय में विराज रहा वही भगवान्। ऋषि दयानन्द भी एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने अपने हृदय में वास कर रहे भगवान् को पहचाना था और उसके दर्शन किये थे। ऋषि ने अपने आपको भगवान् के आगे समर्पित कर दिया था। उन्होंने सत्य, न्याय, नियम और दया की मूर्ति भगवान् की इच्छा को पहचाना था। अपने प्रभु की इच्छानुसार असत्य, भय, हिंसा, घृणा, निर्दयता आदि पापों के और इन सब के मूल कारण नाना प्रकार के अज्ञान के साम्राज्य को धरती पर से मिटाने का संकल्प लेकर ऋषि दयानन्द कार्य-क्षेत्र में उतर पड़े। जिस समय ऋषि कार्य-क्षेत्र में उतरे उस समय मानव समाज घोर अज्ञान के अन्धकार में डूबा पड़ा था। जो धर्म नहीं था उसे धर्म समझा जा रहा था, जो करने योग्य नहीं था उसे करने योग्य समझा जा रहा था। अपने स्वार्थों के साधन के लिये मानव दूसरे मानवों पर अन्याय-अत्याचार करने में सलंग्न थे। अनेक प्रकार की हानिकारक प्रथाएं और रीति-रिवाज तब समाज में व्याप्त थीं। शुद्ध धर्म और ज्ञान के स्रोत वेद का पठन-पाठन विलुप्त हो चुका था। स्त्रियों शूद्रों को वेद पढ़ाना तो दूर रहा, पढ़ाया ही नहीं जाता था सर्वसाधारण लोग भी शिक्षा से दूर रहते थे। बालविवाहों की प्रथा थी। विधवाएं जीवन भर वैधव्य का कष्ट भोगने के लिये विवश की जाती थीं और पुरुष जितने चाहें विवाह कर सकते थे। अछूतों के साथ घोर अपमान और निर्दयता का बर्ताव किया जाता था। गुण-कर्म पर आधारित वर्णाश्रम-व्यवस्था का लोप हो चुका था और उसके स्थान पर जन्म पर आधारित वर्णाश्रम-व्यवस्था चल पड़ी थी जिसमें परस्पर एक दूसरे के प्रति ऊंच-नीच, घृणा और छूत-अछूत के निन्दनीय विचार घर कर चुके थे जिसके कारण सारा हिन्दू समाज बिखर कर टुकड़े-टुकड़े हो गया था।

धर्म का रूप ऐसा विकृत, निन्दनीय, असह्य और दुर्बल हो गया था कि उस पर आक्रमण करके ईसाई और मुसलमान लोग हिन्दुओं को धड़ा-धड़ अपनी ओर खेंच रहे थे और हिन्दू जाति का ह्रास हो रहा था। ऐसे मन्तव्यों प्रथाओं और रीति-रिवाजों को धर्म माना जाने लगा था जो कि असल में धर्म नहीं थे, प्रत्युत अधर्म थे, और जिनके कारण हिन्दू लोग इतने शक्ति हीन हो गये थे कि वे सैकड़ों वर्षों तक विदेशियों से आक्रान्त और पद्‌दलित होते रहे। जब ऋषि आये तब भी देश में अंग्रेजों का राज्य था। ऋषि की दृष्टि में यह सब गलत हो रहा था और यह सब कुछ ऋषि की दृष्टि में अधर्म को धर्म समझ बैठने के घोर अज्ञान का परिणाम था। ऋषि ने इस घोर अज्ञान को दूर करने के लिये भगवान् द्वारा मानव को सृष्टि के आदि में दिये गये शुद्ध-धर्म वैदिक धर्म, का शंख फूंका और समग्र शक्ति से उसके प्रचार में जुट गये। लोगों ने ऋषिकी मेघ-गम्भीर वाणी को सुना और उसकी सच्चाई को समझा और वे अपनी भूलों को अनुभव करने लगे। ऋषि ने जो कुछ छोड़ने को कहा लोग उसे छोड़ने लगे, जो कुछ करने को कहा उसे करने लगे और इस प्रकार, लगे अधर्म के, पाप के, अन्याय-अत्याचार और अज्ञान के दुर्ग धड़ा-धड़ गिरने। लगी अधर्म पर धर्म की विजय होने। ऋषि के हृदय में बैठे भगवान् ने शक्ति देकर उन्हें इस प्रकार धर्म-युद्धों का महान् विजेता बना दिया। क्या कभी हम भी ऋषि के उपदेशों पर ठीक से चलकर उनकी भांति धर्मयुद्धों के विजेता बन सकेगें ?

श्रावणी से आरम्भ हो रहे वेद-सप्ताह के अन्तिम दिन कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व भी है। इस दिन भगवान् श्री कृष्ण की गुण गाथाएं गाई जाएंगी। भगवान् भी प्रभु के परम भक्त और उपासक थे। वे भी प्रभु की आज्ञाओं पर चलने वाले महापुरुष थे। वे भी वेद के महान् ज्ञाता थे। उन्होंने भी अधर्म का नाश और धर्म की स्थापना का व्रत धारण कर रक्खा था। उनके समय में भी भारत में अपने प्रकार का बड़ा अधर्म फैला हुआ था। उस समय देश में कंस, जरासन्ध, शिशुपाल और दुर्योधन आदि अनेक अत्याचारी और अधार्मिक राजा लोगों पर अत्याचार कर रहे थे। भगवान् कृष्ण ने इनमें से अनेक अत्याचारी राजाओं का अपने पराक्रम से संहार किया। और अन्य अनेक अत्याचारी राजाओं का विनाश उन्होंने पाण्डवों के द्वारा अपने नीति-कौशल से कराया। इस प्रकार सब अत्याचारी राजाओं का संहार करके उन्होंने धर्मनिष्ठ राजा युधिष्ठिर को सारे भारत का चक्रवर्ती सम्राट् बनाया। भगवान् कृष्ण क्षत्रिय थे। उन्होंने अपने क्षात्रबल और नीति कौशल के द्वारा अधर्म का नाश और धर्म की रक्षा की। ऋषि दयानन्द ब्राह्मण थे, उन्होंने ब्राह्मणों के शास्त्र ज्ञान-प्रसार के द्वारा अधर्म का नाश और धर्म की रक्षा की। भगवान् कृष्ण को भी उनके हृदय में बसने वाले परमेश्वर ने शक्ति देकर धर्म-युद्धों का महान्

विजेता बनाया था। क्या भगवान् कृष्ण को मानने वाले हम सब भी उनकी राह पर चलकर कभी उन जैसे धर्म युद्धों के विजेता बन सकेंगे ?

श्रावणी और वेद-सप्ताह वेद का नियमित रूप से स्वाध्याय करते रहने का निश्चय दृढ करने का अवसर है और वेद के परम-उद्धारक तथा प्रचारक ऋषि दयानन्द के गुणों को स्मरण करने का भी अवसर है। जन्माष्टमी भगवान् कृष्ण के गुणों को स्मरण करने का अवसर है। इस अवसर पर धर्म-युद्धों के महान् विजेता इन दोनों महापुरुषों के गुणों का स्मरण करके हमें उनकी राह पर चलने का दृढ़ निश्चय करना चाहिये।

□

(पृष्ठ 22 का शेष)

मुझे धर्म का ज्ञान तो है पर मेरा मन धर्म पालन मे नहीं लगता। मुझे यह भी ज्ञान है कि मेरे कार्य अधर्म परक हैं परन्तु मेरे मन में उनसे बचने का विचार ही नही आता।

इसीलिए योगीराज कृष्ण को महाभारत के महायुद्ध का निर्णय करना पड़ा और धर्म के गम्भीर रहस्यों को गीता रूपी महा ज्ञान के रूप में संसार के सन्मुख रखना पडा। संसार तक इस ज्ञान को पहुंचाने का श्रेय उस काल के महर्षि वेद व्यास को जाता है। आज भी हजारों वर्ष के पश्चात् भी गीता करोड़ों धर्म प्रेमियों का धर्म ग्रन्थ मान कर पूजी जाती है। अकेले अमेरिकन संस्था "कृष्ण कान्शैन्स" ने ससार की अनेकों भाषाओं में इसके अनुवाद कराकर करोडों की संख्या में प्रकाशित कराई है। ऐसे महान् ग्रंथ के रचयिता को उनके जन्मदिवस के पवित्र अवसर पर जितना अभिनन्दन किया जाए, उनके पवित्र ज्ञान का जितना अध्यात्मिक लाभ उठाया जाए, उतना ही संसार का कल्याण होगा।

आज फिर संसार को इस प्रकार की मुक्त ब्रह्मलीन आत्माओं की अपेक्षा है इसीलिए आर्य जाति योगीराज भगवान् कृष्ण की जन्म तिथि बड़े गौरव व उत्साह उल्लास पूर्वक मनाती है।

□

यज्ञोपवीत धारण करें

लेखक—पं॰ सत्यपाल जी 'पथिक' सिद्धान्त शास्त्री, अमृतसर

जब से सृष्टि बनी है तब से विभिन्न संस्कृतियां विश्व के क्षितिज पर उभरी तथा समय की असीम अन्धेरी गुफाओं में सदा-सदा के लिए विलुप्त हो गई। अपने पीछे अपनी कुछ स्मृतियां, चिन्ह अथवा अवशेष छोड़ गईं। जिन से अतीत में विलीन उनके अस्तित्त्व का संकेत मात्र प्राप्त होता है इन सभी संस्कृतियों के किसी समय कुछ मूलभूत परिचयात्मक चिन्ह, रीति, रिवाज रहन-सहन निश्चित एवं स्पष्ट रहे हैं। जिन से कि वे संसार में प्रत्यक्ष जानी गईं। किन्तु वैदिक संस्कृति सर्वश्रेष्ठ तथा अद्वितीय रही है। जो अभी तक उसी रूप में विश्व का सिरमौर बनी हुई है।

वैदिक संस्कृति का उद्भव मानव सृष्टि के प्रारम्भ में हुआ और सम्पूर्ण विश्व की संस्कृतियों से प्राचीन होने के साथ-साथ मानव समाज में सर्वोत्तम मानी गई है। यही कारण है कि करोड़ों वर्षों से जो अपना प्रभुत्व बनाकर वैदिक संस्कृति चली थी उसका स्वरूप आज भी ज्यों का त्यों विद्यमान है। इतना अवश्य है कि इस को पादाक्रान्त करने, इसे जड़ से ही विनष्ट करने के लिए अनेकों आक्रमण हुए। कई बार तो कुछ समय के लिए इस पर संकट के ऐसे घने बादल भी छाए हैं कि इसके अस्तित्व को पहचानना ही दुष्कर हो गया। परन्तु जिस संस्कृति के पीछे ईश्वरीय प्रेरणा कार्य कर रही हो वह अधिक देर तक तमाच्छादित कैसे रह सकती है। अतः वह सूर्य के समान फिर से चमक उठी। इसके अपने कुछ मूलभूत सिद्धान्त नियम, आचार, व्यवहार, मर्यादाएं तथा आदर्श हैं। इस वैदिक संस्कृति का एक आदर्श है "यज्ञोपवीत"। यज्ञोपवीत का महत्त्व उतना ही पुराना है जितना वैदिक संस्कृति का।

जिस प्रकार से सामान्य जन-जीवन व्यवस्था में हम देखते हैं कि प्रत्येक वर्ग, विभाग अथवा समुदाय के लोगों के कुछ विशेष चिन्ह अथवा संकेत होते हैं। जिनकी पृष्ठ भूमि में उनके मन्तव्य एवं रहस्य रहते हैं। सामान्यतया इन्हीं चिन्हों से इनके प्रति पर्याप्त जानकारी उपलब्ध हो जाती है। यज्ञोपवीत भी आर्यों का एक विशेष चिन्ह माना गया है जिससे आर्यों की आस्तिकता, विद्या, शिक्षा, सदाचार, कार्य-कुशलता आदि शुभ गुण धारण करने के व्रत का पता चलता है। मानव जीवन के प्रारम्भिक काल अर्थात् बाल्यावस्था में ही वैदिक मर्यादानुसार द्विजों के बालकों को

यज्ञोपवीत धारण कर गुरुकुल में उत्तम शिक्षा एवं सदाचार के व्रतों का पालन आयु पर्यन्त करते रहने के लिए संकल्प करना होता है। व्रतों के पालन में यज्ञोपवीत एक प्रेरणासूत्र के रूप में काम करता है। जैसे एक छोटा सा कपड़ा जिसे कि राष्ट्र के ध्वज के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है तब वह कपड़ा केवल कपड़ा न होकर राष्ट्र का मान-सम्मान हो जाता है तथा राष्ट्र रक्षा के लिए प्रेरणास्रोत बन जाता है। सहस्रों प्रकार के बलिदान देकर भी राष्ट्र के उस ध्वज की रक्षा की जाती है। ठीक उसी प्रकार से यह यज्ञोपवीत जो कि सूत के धागे से बना है। किसी आर्य के धारण कर लिए जाने पर अनेक प्रकार की शुभ प्रेरणाएं एवं शिक्षाएं प्रदान करता है। जिस से जीवन के अन्दर महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं तथा मानव जीवन को सफलता की ओर अग्रसर करता है।

यज्ञोपवीत को पहनते समय धारण-कर्त्ता के समक्ष यह भाव भी प्रतिलक्षित होता है कि मैं आज से यज्ञोपवीत के द्वारा संकेतित श्रेष्ठाचरणों को धारण करने का बीड़ा अपने कन्धे पर उठा रहा हूं। कन्धे पर पड़ा यज्ञोपवीत यही प्रकट करता है। यज्ञोपवीत में तीन धागे होते हैं जो कि तीन ऋणों (पितृऋण, ऋषि ऋण तथा देव ऋण) के प्रति सदा जागरूक रहने तथा उन कर्त्तव्य कर्मों में उदासीनता व प्रमाद को सर्वदा सर्वथा दूर रखने की शिक्षा देते हैं। परमात्मा जीवात्मा एवं प्रकृति के ज्ञान को प्राप्त करने की ओर अग्रसर होते रहने की प्रेरणा भी इस से मिलती है। तथा प्राणिमात्र के प्रति उचित व्यवहार के लिए यज्ञोपवीत उत्साह प्रदान करता है। इसी लिए वेद, शास्त्र, स्मृतिएं तथा वैदिक वाङ्मय के अन्तर्गत आने वाले सभी ग्रन्थ एवं ऋषि, मुनि, योगीजन यज्ञोपवीत धारण करने का सब मनुष्यों के लिए उपदेश करते हैं। पुरुषों के साथ-साथ स्त्रियों को भी यज्ञोपवीत धारण करने का समान रूप से अधिकार है। इसी से श्रेष्ठ व्यक्तियों की पहचान हो सकती है। उत्तम गुण कर्म स्वभाव की इच्छा करने वाले प्रत्येक नर-नारी को इन्हीं प्रेरणाओं के लिए यज्ञोपवीत अवश्य ही धारण करना चाहिए।

महाभारत के युद्ध के पश्चात् वैदिक मान्यताओं तथा कर्मकाण्डों में बहुत से परिवर्तन हुए जिन का आधार तथा उद्देश्य निकृष्ट स्वार्थ परायणता ही था। इन परिवर्तनों के फलस्वरूप नरबलि, पशुबलि, यज्ञों में मांस आदि का विधान, खान-पान मे मांस, मछली, मदिरा आदि मादक पदार्थों का प्रयोग वैध कर दिया गया। इसके विपरीत जो श्रेष्ठाचरण, खान, पान, व्यवहार थे उन को तिलाञ्जलि दे दी गई। इसी प्रवाह में यज्ञोपवीत का अधिकार भी सर्व साधारण से छीन कर कुछ इने गिने लोगों तक ही सीमित कर दिया गया। यही कारण है कि शिवा जी महाराज को यज्ञोपवीत लेने के लिए काशी के ब्राह्मणों एवं पण्डितों ने अनधिकारी घोषित किया

(शेष पृष्ठ नं० 33 देखें)

यज्ञोपवीत महिमा

लेखक—पं० सत्यपाल "पथिक" कृष्ण कोट, अमृतसर

तर्ज —ऐ दिल ज़रा सम्भल जा.........

यज्ञोपवीत लेकर खुद को निहारना है।
जीवन सुधारने का संकल्प धारना है।
हर झूठ की तरफ से मुंह अपना फेरना है।
सच्चे व्रतों का पालन करने की प्रेरणा है।
तप त्याग साधना को हर दम उभारना है।
जीवन सुधारने का.........

गायत्री जाप सन्ध्या स्वाध्याय यज्ञ करना।
दुष्टों की संगति में हरगिज़ न पांव धरना।
भगवान को कभी न दिल से विसारना है।
जीवन सुधारने का.........

समझो ये तीन ऋण हैं कन्धे पे तीन धागे।
जब तक हैं प्राण इन से व्यक्ति कभी न भागे।
निष्कपट स्वच्छ सुन्दर जीवन गुजारना है।
जीवन सुधारने का.........

पितरों की टहल सेवा देवों की उचित पूजा।
ऋषियों के संग जैसा कर्त्तव्य है न दूजा।
माता पिता व गुरु के ऋण को उतारना है।
जीवन सुधारने का.........

नेकी के काम करके तत्काल भूल जाना।
निष्काम-भाव होकर औरों के काम आना।
शिक्षा का सूत्र है यह मन में विचारना है।
जीवन सुधारने का.........

शुभ चिन्ह आर्यों का यज्ञोपवीत है यह।
सब श्रेष्ठ लोग पहनें ऋषियों की रीत है यह।
दुनियां में "पथिक" इस के यश को निखारना है।
जीवन सुधारने का.........

वेद प्रचार

लेखक—श्री आचार्य मुंशीराम जी शर्मा कानपुर

रक्षाबन्धन और जन्माष्टमी दोनों पर्व आठ दिवस के अन्तर से आते हैं। रक्षाबन्धन श्रावणी पर्व भी कहलाता है। जन्माष्टमी का सम्बन्ध गीतागायक भगवान् कृष्ण के साथ है भग का अर्थ है ऐश्वर्य। ऐश्वर्य ईश्वर का भाव है। ईश्वर में ईश धातु स्वामित्व या शासन का अर्थ रखती है। यह स्वामित्व सर्वप्रथम अपने ऊपर होता है। जिसने अपने को वश में कर लिया उसने मानों सबको वश में कर लिया—वह ईश्वर हो गया, भगवान् के पद में पहुंच गया। रक्षा का बन्धन या साधन भी आप इसे कह सकते हैं।

श्रावणी में श्रवण तो कृष्णाष्टमी में रोहिणी नक्षत्र की प्रधानता है। श्रवण करो वेद कथा और उससे उद्यानीपथ पर आरोहण करो। पुराकाल में वेद श्रवण उत्तम माना जाता था। वेद अनादि निधना वाणी है जो ब्रह्मा के मुख से उच्चरित हुई। अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ने इसे पृथक-पृथक् चार रूपों में ग्रहण किया। अग्नि से ऋग्वेद, वायु से यजुर्वेद, आदित्य से सामवेद और अंगिरा से अथर्ववेद चला। यह सनातन वेद वाणी का क्रम है।

ऋग्वेद में पदार्थ विज्ञान, यजुर्वेद में कर्मकाण्ड, सामवेद में भक्तिकाण्ड और अथर्ववेद में अविचल अध्यात्म विद्या है। चतुर्वेद मीमांसा में हमने इसका सविस्तार उल्लेख किया है। मानव जीवन का विकास इन्हीं चार क्षेत्रों से होता है। अन्तिम उपलब्धि अध्यात्मक ज्ञान है, जिसमें बाहर भीतर का सर्वस्व भरा पड़ा है। इधर अभ्युदय है तो उधर निश्रेयस। वैदिक धर्म इन दोनों की प्राप्ति कराता है। इसीलिए वेद का श्रवण श्रावण आर्य मात्र का कर्त्तव्य है।

वेद सृष्टि के आदि काल से चला आ रहा है। उसी से सब विद्यायें निकली हैं। स्मृति, दर्शन, षड्ङ्गकाव्य सब वेद की दुहाई देते हैं मनु इसे सनातन चक्षु कहते हैं। जब तक विश्व में आर्यों का शासन रहा, तब तक वैदिक मान्यतायें भी विश्व में प्रचलित रहीं। जब आर्यत्व क्षीण होने लगा और मानव दस्युता की ओर दौड़ लगाने लगा, तब से वेद प्रचार में भी क्षीणता आने लगी, पर वह नष्ट नहीं हुआ। नष्ट हो भी नहीं सकता। सूर्य को बादल आकर घेर लेते हैं पर फिर बादलों के फटते ही चमकने लगता है। सूर्य संसार का प्राण है। वेद भी संसार का प्राण और आंख दोनों है। वह दर्शन और बल दोनों का प्रदाता है। प्रभु प्रदत्त वाणी अमर है। वह आर्यों की अमृतत्वदायिनी संजीवनी है। उसी के कारण आर्य जाति भी अजर अमर है।

आर्यत्व भाव में कमी आ जाय, यह दूसरी बात है, पर वह नष्ट नहीं हो सकता। आर्यत्व का विनाश तो मानवता का मरण ही सिद्ध होगा।

इस युग में आर्यत्व का संवर्धन महर्षि दयानन्द ने किया। वेद उनकी दृष्टि में आर्यत्व की सर्वश्रेष्ठ सम्पदा है। वेद प्रमुख है अन्य स्मृति, शास्त्र आदि गौण, उसी के आधार पर निर्मित। जो वेद के अनुकूल हैं। वह ग्राह्य हैं और जो उसके प्रतिकूल हैं, वह त्याज्य हैं। भारत क्या विश्व भर में जो रूढ़ियां और अन्धविश्वास प्रचलित हो गये थे, महर्षि ने उनके निराकरण का अपने जीवन में प्रयत्न किया और अपने पश्चात् आर्यसमाज के हाथों में यह काम सौंप गये। आर्यसमाज के हम सभी सदस्यों का पुनीत कर्त्तव्य हो जाता है कि हम महर्षि के छोड़े हुए और सौंपे हुए कार्य का दृढ़ निष्ठा के साथ सम्पादन करें। तभी रक्षा बन्धन वेद रक्षा की प्रेरणा देगा और जन्माष्टमी आर्यत्व के पुनीत पुनर्जन्म को प्रेरित करेगा।

(पृष्ट 30 का शेष)

था। शिवा जी के बार-बार विशेष आग्रह करने पर गागाभट्ट जैसे पंडितों ने देश भर के विद्वानों से व्यवस्थाएं लेकर यह रास्ता निकाला कि शिवा जी को पश्चाताप करने के उपरान्त यज्ञोपवीत दिया जाए। तब पश्चाताप के निमित्त लगभग 14 करोड़ रुपए दान दक्षिणा आदि में व्यय करवा कर शिवा जी को यज्ञोपवीत दिया था। जिस का कि इतिहास साक्षी है। यह भी पढ़ा तथा सुना जाता है कि औरंगजेब आदि मुस्लिम बादशाह हिन्दुओं के गले से यज्ञोपवीत उतरवा कर अपने हमाम गर्म किया करते थे।

ऐसी विकट परिस्थिति में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज आए। उन्होंने अनेक प्रकार के कष्ट झेल कर लोगों का विरोध सहन करके विष के प्याले पी कर भी उपरोक्त विपरीत परिस्थितियों का डट कर मुकाबला किया तथा वे जन साधारण से छीने हुए सभी मानवीय अधिकारों को वापिस दिलाने में सफल हो गए। तब ऋषि ने हिमालय की चोटी पर खड़े हो कर वेद का बिगुल बजाकर आर्य जनों को एक आवाज़ दी और कहा कि सदियों से तुम से छीने हुए तुम्हारे सभी अधिकारों को मैं वापिस ले आया हूं। वेद की शरण में आओ तथा अपने अधिकार ले लो। लोग आंधी के वेग से भागे तथा वेद की शरण में आकर सब अधिकार प्राप्त कर लिये। अन्य अधिकारों में से यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार भी सब को प्राप्त हुआ। अतः महर्षि दयानन्द सरस्वती के असंख्य उपकारों में यह भी आर्यों पर एक महान् उपकार है जिसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। आधुनिक युग में महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्वारा दिलाए गए इस अधिकार से कोई भी आर्य नर-नारी वञ्चित नहीं रहना चाहिए। प्रत्येक आर्य को अवश्य ही यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए। इस से हमारी प्राचीन वैदिक संस्कृति की, सत्य सनातन वैदिक धर्म की, वैदिक मर्यादाओं की रक्षा भी होगी तथा हमारा समाज एक अच्छा समाज, वैदिक समाज या आर्य समाज बन सकेगा।

मेरे देश

लेखक—श्री आचार्य मुंशीराम जी शर्मा कानपुर

रजत, कनक, हीरा, मणि मूंगा तुमने पैदा किये अशेष ॥ 1

वसुधा में वसु भरा पड़ा है, तुम वसुधा के अंग विशेष
उमड़ रहा पदतल में सागर, ऊपर फहराते हिम केश ॥ 2

सिन्धु-ब्रह्म-गंगा-यमुना-जल करते उर्वर उदर प्रदेश
विन्ध्य-मेखला कटि में शोभित, विविध वर्णयुत बना सुवेश ॥ 3

भूप चक्रवर्ती सुत तेरे हुए प्रसिद्ध राज—राजेश
श्याम-ब्रह्म-आर्यायन चमके सूर्य-चन्द्र-कुल-कान्ति -निवेश ॥ 4

आर्य केतु भूमण्डल भर में फहरा, देता रहा निदेश
सदाचार में निरत प्रजाजन आह्लादित रहते अनिमेष ॥ 4

मानव-मानव रहें प्रेम से बन्धुभाव का ले संदेश
कोई बड़ा न छोटा, सब सम, सदृश गमन है, सदृश प्रवेश ॥ 6

अति पुनीत परिवार प्रथा है, पुत्र-पितासम प्रजा-प्रजेश
बढ़ें इसी परिवार-वाद में, मिटे विषमता का परिवेश ॥ 7

रहे स्वराज्य सुराज्य राजता, कटे कलुष-कण्टकमय क्लेश
निजनिज धर्मनिरत, पर-हित-व्रत सदय करें निर्दयता शेष ॥ 8

सामगान में, साम्य स्वरों से थिरक उठें सुन देश-विदेश
तव रज शिर धर, विनय-विनत हों, सब पर कृपा करें अखिलेश ॥ 9

वैदिक पर्व-श्रावणी

लेखिका—आर्य मीरां यति जी वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर

हमारे यहां पर चार मुख्य त्योहार होते हैं। श्रावणी, विजयदशमी, दीपावली और होलिकोत्सव। जो क्रमशः ज्ञान, बल, ऐश्वर्य और प्रेम के द्योतक हैं। किसी भी समाज को समुन्नत होने के लिये इन चारों की ही आवश्यकता है। इन में से किसी एक को भी निकाल देने से समाज सुख विहीन हो जाता है।

जैसे किसी राष्ट्र में बल, धन, और प्रेम तो है किन्तु वह राष्ट्र ज्ञान शून्य है आप देखेंगे उस राष्ट्र की कभी उन्नति नहीं हो सकती। इस प्रकार, धन और प्रेम होने पर भी अगर शक्ति नहीं है तो वहां भी सुख नहीं हो सकता है। क्योंकि वीर भोग्य) वसुन्धरा इस उक्ति के अनुसार संसार वीरों के लिये बना है। धन के अभाव में हम आर्यवर्त्त के वीर शिरोमणि राणा प्रताप को वनवासियों जैसा जीवन बिताते देखते हैं! इसी प्रकार ज्ञान बल और धन होने पर भी जहां प्रेम नहीं है वहां भी ईर्ष्या द्वेष का आग धधकती रहती है और लोग उस में जलते रहते हैं।

श्रावणी का पर्व ज्ञान का सन्देश लेकर आता है। परमेश्वर ने भी जब आदि सृष्टि में मानवों को उत्पन्न किया तब उन्हें ज्ञान, विज्ञान की धरोहर के रूप में वेद को प्रदान किया था। बिना ज्ञान के मनुष्य का जीवन बेकार है। जिस मनुष्य को ज्ञान होता है वह देवत्व को प्राप्त करता है और ज्ञान से हीन मनुष्य बिना सींग और पूंछ के पशु माना जाता है। इसीलिये तो श्रावणी के पर्व को उपाकर्म भी कहते हैं। जिसका तात्पर्य है कि आज के दिन आप सब लोग वेद पढ़ना प्रारम्भ कर दें और वर्ष भर वेद का स्वाध्याय करते रहें। जितना आप वेद को पढ़ेंगे उतना ही ज्ञान की वृद्धि होगी। उतनी ही जीवन की वृद्धि होगी। उतना ही जीवन का सुधार होगा। इतना ही नहीं वेद का स्वाध्याय करने से जीवन में निखार आ जाता है।

वेद जैसा पावन ग्रन्थ अन्य कोई नहीं है एक-एक मन्त्र शिक्षा प्रद है। सबसे प्रथम ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र को ही देख लीजिये। "अग्निमीड़े पुरोहितं" भगवान् से सविनय निवेदन करता है। हे अग्निस्वरूप परमेश्वर मैं तेरी स्तुति करता हूं! क्योंकि तू प्रकाश का पुन्ज है सारे संसार को प्रकाश देने वाला है। तेरी चमक से यह सारा जगत् चमाचमा

रहा है। मेरे हृदय के भीतर भी तो तू ही प्रकाशित हो रहा है। हे अग्नि मैं तेरी स्तुति क्यों न करू ? फिर दूसरे मन्त्र को देख लीजिए 'स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव" ऋ० 1-5-1 हे प्रभो ! हम कल्याण के पथ पर चलते रहें। जिस तरह सूर्य चन्द्रमा चलते हैं। फिर सामवेद के अन्दर एक मन्त्र में हम भगवान् से क्या मांगते हैं "मा प्रगाम पथोवयं" प्रभो हम सुपथ पर चलें कुपथ पर कभी भूलकर भी पांव न रखें। इस प्रकार स्तुति प्रार्थना उपासना के अन्तिम मन्त्र में कहते हैं। "ओं अग्ने नय सुपथा राय" यजुः— हे अग्नि स्वरूप परमेश्वर सुपथ की ओर ले चलो। इसी प्रकार से "ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुवः यजु 30—3 हे ! समस्त संसार के उत्पन्न करने वाले (देव) मैं तेरे से याचना करता हूं प्रार्थना भी करता हूं वह यह है कि मेरे जीवन के दुर्गुण दुर्व्यसन को दूर कर दो और मेरे अन्दर भद्रगुण भर दो।

वेद माता स्वाध्याय करने वालों की झोली में क्या-क्या भर देती है हम स्वयं मां से ही पूछ लेते हैं। स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्ति द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। अथर्व 19-11-1

मैंने वेद माता ज्ञान की माता की स्तुति की है। वह आयु, बल, सन्तान, पशु यश, धन, ब्रह्मवर्चसम् वेदाभ्यास का तेज इत्यादि क्या-क्या देती है।

इस प्रकार से चारों वेदों में एक से एक बढ़िया मन्त्र है। हम जब इनका स्वाध्याय करते हैं तो बहुत आनन्द आता है और जीवन उन्नत होता है। वेद माता है इसी लिये वह अपनी पवित्र ऋचाओं द्वारा शिक्षा देती है। उद्यानं ते पुरुष नावयानम्।

हे मेरे प्यारे पुत्रों तुम्हारा उत्थान हो परन्तु पतन न हो। तुम धरती पर उन्नति करने के लिये आये हो इसलिये वही कार्य करो जिससे तुम्हारा जीवन मनुष्य योनि से भी ऊपर उठकर देवत्व, ऋषि मुनियों की कोटि को प्राप्त करें।

जब तक मनुष्य वेद का स्वाध्याय नहीं करेगा। तो फिर ज्ञान की प्राप्ति कैसे हो सकती है। आजकल अधिकतर लोग जो अपने आपको आर्य कहते हैं। वह भी वेद का स्वाध्याय नहीं करते। उन की रूचि भी नावल पढ़ने में है। इसलिए प्रत्येक आर्य नर-नारी से मेरी यह प्रार्थना है कि वह रक्षाबन्धन से लेकर जन्माष्टमी तक वेद सप्ताह मनाते हुए यह प्रतिज्ञा करें कि वर्ष भर वेद का स्वाध्याय अवश्य करेंगे। यदि अधिक नहीं कर सकते तो कम से कम प्रतिदिन स्वामी दयानन्द जी महाराज की लिखी हुई आर्याभिविनय 108 मन्त्रों की जो माला पुरोई हुई है उसका एक मन्त्र प्रतिदिन अर्थ सहित अवश्य पढ़ें। इसी प्रकार से आचार्य अभय देव जी की लिखी हुई वैदिक विनय में 365 दिन की एक-एक मन्त्र की व्यारुया लिखी हुई है उसको व्याख्या सहित पढ़ें तो देखो कितना लाभ होगा। इससे हम अपने ऋषि की आज्ञा का भी पालन कर सकेंगे जिन्होंने आर्य समाज के तीसरे नियम में लिखा है :—

"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

महर्षि दयानन्द जी महाराज का हमारे लिये एक बहुत बड़ा मार्ग दर्शन है, नहीं तो उनसे पहले हम भागवत सप्ताह ही मनाकर भुक्ति का द्वार खुला हुआ समझते थे। इस प्रकार मानव वाणी के पीछे तो हमारे सप्ताह व्यतीत होते थे किन्तु दैवी वाणी को कोई नहीं जानता था। यह उसी देव की दिव्य देन है कि आज हम मानव वाणी का सप्ताह न मनाकर देव-वाणी, वेद वाणी का वेद सप्ताह प्रत्येक आर्य समाज में मना रहे हैं। दैवी वाणी वेद तो सदैव कल्याण ही कल्याण करती है। स्वयं वेद ने प्रभु की इस वाणी को कल्याणी वाणी कहा है।

"यथेमां वाचं कल्याणी मा वदानी जनेभ्यः।"

मध्य काल में यह पर्व भाई बहिन के पवित्र प्रेम का प्रतीक भी बन गया था। इस दिन सब बहिनें अपने भाइयों के हाथ में प्रेम का प्रतीक राखी का धागा बान्धा करती थी और भाई, बहिन की रक्षा के लिए अपने को पूर्ण समर्पित कर दिया करते थे इसका महत्त्व न केवल हिन्दुओं में ही अपितु मुसलमान बादशाहों तक माना जाता रहा है। महारानी कर्मवती ने जब हुमायु को राखी भेजकर अपना भाई बनाया था तब उसके मन में एक क्षण के लिये भी हिन्दु-मुसलमान का भाव तक नहीं आया अपितु विशुद्ध बहिन भाई का भाव था।

हुंमायु ने महारानी कर्मवती की सहायता के लिए चलने में एक क्षण की भी देरी नहीं लगाई। यद्यपि वह जानता था कि कर्मवती का जिसके साथ युद्ध है वह मुसलमान है किन्तु भाई बहिन के विशुद्ध प्रेम में मत, पन्थ आगे नहीं आ सकता। इस लिये उसने अपनी परवाह न करके इन राखी के धागों का सम्मान करते हुए अपनी बहिन की लाज और मान सम्मान बचाने के लिये जो किया जा सकता था किया।

आज भी राखी के यह धागे उसके पावन परम्परा का निर्वाह करते हैं और हर भाई अपनी बहिन के सुख-दुःख में सदैव साथी रहता है। इस कारण इस पावन परम्परा के अनुसार जो पर्व मनाये जाते हैं उनसे हमें अवश्य शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। आज के इस शुभ और धार्मिक अवसर पर हम ज्ञान को प्राप्त करके अपने जीवन को उत्कृष्ट जीवन बनाने का प्रयास करें। मेरी यही अभिलाषा है। इसी शुद्ध भावना को लेकर मैंने यह लेख लिखा है।

□

आर्य समाज की वेद विषयक मान्यतायें

लेखक—श्री यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद

आर्यसमाज का मूलाधार वेद है। वेद के प्रचार-प्रसार के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना की गई थी। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म उद्घोषित हुआ है। सन् 1875 ई० में बम्बई में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना के समय पंजीकरण हेतु रजिस्ट्रार को दिये गये घोषणा पत्र में भी इसका उद्देश्य वेद का प्रचार करना ही उद्घोषित किया गया था। गत् 108 वर्षों से आर्यसमाज वेद का प्रचार भी करता आ रहा है। आर्यसमाज ने ही सर्वप्रथम चारों वेदों का आर्यभाषा में हिन्दी में अनुवाद कराकर प्रकाशित कराया है। आर्यसमाज ही एक मात्र ऐसा है। जो वैदिक धर्म का सच्चा अनुयायी है। आर्यसमाज के संस्थापक ने ही सर्वप्रथम वेदों का हिन्दी भाषा में अनुवाद किया था। स्पष्ट है कि आर्यसमाज का वेद के साथ अटूट सम्बन्ध है।

जब आर्यसमाज का मूलाधार ही वेद है तब यह जान लेना भी आवश्यक है कि आर्यसमाज की वेद सम्बन्धी मान्यता क्या है? आर्यसमाज की वेद सम्बन्धी वही मान्यता है कि जो उसके संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की थी। और महर्षि दयानन्द सरस्वती की मान्यता वह है कि जो ब्रह्मा से लेकर जैमिनि ऋषि पर्यन्त ऋषियों महार्षियों की रही है। अपितु यूं कहना चाहिये कि महर्षि दयानन्द की वेद विषयक मान्यतायें सभी ऋषियों की महार्षियों की मान्यताओं का समुच्चय है। फिर भी महर्षि दयानन्द का उनका प्रस्तुतिकरण अपने ही ढंग का है।

महार्षि दयानन्द ने अपनी वेद विषयक मान्यताओं को स्पष्ट करने के लिए एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विशाल पुस्तक ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के नाम से लिखी थी। इसके अतिरिक्त भी अपने प्रायः सभी ग्रन्थों विशेषतया सत्यार्थ प्रकाश में स्थान-स्थान पर स्पष्ट की हैं। इनके अनुसार महर्षि वेद को अपौरुषेय ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं।

और केवल मंत्रसंहिताओं को ही वेद की संज्ञा देते हैं। वे ब्राह्मण ग्रन्थों को वेद नहीं, वेद के व्याख्या ग्रन्थ मानते हैं। अपनी भ्रमोच्छेदन नामक पुस्तक में राजा शिव प्रसाद के साथ हुए प्रश्नोत्तर में महर्षि अपनी मान्यता को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि—

"राजा—आप वेद किसको मानते हैं ? स्वामी जी—संहिताओं को।

राजा—आप क्या उपनिषदों को वेद नहीं मानते ? स्वामी जी—मैं वेदों में एक ईशावास्य को छोड़ के उपनिषदों को नहीं मानता, किन्तु अन्य सब उपनिषद् ब्राह्मण ग्रंथों में हैं, वे ईश्वरोक्त नहीं हैं। राजा—क्या आप ब्राह्मण ग्रन्थों को वेद नहीं मानते ? स्वामी जी—नहीं, जो ईश्वरोक्त है, वही वेद होता है, जीवोक्त को वेद नहीं कहते। जितने ब्राह्मण ग्रन्थ हैं, वे सब ऋषि मुनि प्रणीत और संहिता ईश्वर प्रणीत हैं।"

स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द वेद (केवल संहित भाग) को ही ईश्वरीय ज्ञान की संज्ञा देते थे और उन्हीं का संसार में प्रचार चाहते थे। विगत तीन हज़ार वर्षों में किसी भी विद्वान् को यह संदेह नहीं हुआ कि ब्राह्मण ग्रंथ वेद नहीं हैं। अर्थात् सभी ब्राह्मण ग्रंथों को भी वेद मानते चले आये हैं। जबकि महर्षि का कथन है कि ब्राह्मण ग्रंथ वेद नहीं हो सकते क्योंकि उन्हीं का नाम इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा और नाराशंसी भी हैं। वे ईश्वरोक्त नहीं हैं, किन्तु महर्षि लोगों के किये व्याख्यान हैं। महर्षि कहते हैं कि एक कल्यायन को छोड़ कर किसी अन्य ऋषि ने उनके वेद होने की साक्षी नहीं दी है। और मंत्र-संहिताओं का वेद नाम इस लिये है कि ईश्वर रचित सब विद्याओं का मूल है। तात्पर्य यह कि महर्षि ने युक्ति प्रमाण और तर्क द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया कि ईश्वरीय ज्ञान की कोटि में तो केवल वेद संहिता ही आती हैं, अन्य कोई नहीं। वेदानुकूल होने से वे मान्य तो हैं पर उन्हें वेद कदापि नहीं कहा जा सकता। महर्षि का तर्क है कि वेद का एक-एक शब्द, अक्षर, मात्रा, स्वर आदि सभी कुछ मानव की कल्पना नहीं अपितु ईश्वर प्रदत्त है। जबकि ब्राह्मण आदि ग्रन्थ मानव कल्पित हैं। महर्षि के अनुसार शब्द दो प्रकार के होते हैं—एक नित्य और दूसरे अनित्य जो ईश्वर प्रदत्त शब्द हैं वे सब नित्य है और जो मनुष्य कल्पित शब्द हैं वे सब अनित्य हैं।

अब कोई कहे कि वेद का ज्ञान भी तो चार ऋषियों के द्वारा ही प्राप्त हुआ था तो फिर उन्हें उन ऋषियों की कल्पना क्यों न माना जाये ? इसमें महर्षि का यह तर्क है कि वह ज्ञान ऋषियों का इस लिए नहीं तब ज्ञान तो दूर उन्हें भाषा का भी व्यवहार न आता था। ईश्वर ने अपनी अनुकम्पा से भाषा सहित वेद का ज्ञान अर्थ और भावों सहित उन ऋषियों के हृदयों में प्रकाशित किया था। भाषा भावों

का वाहन है। फिर बिना भाषा के जाने भावाभिव्यक्ति कैसे हो सकती है? फिर जब भाषा को मनुष्य जान लेता है तो फिर अपने भावों को अपने शब्दों में भी व्यक्त कर सकता है। महर्षि की सुस्पष्ट मान्यता है कि यदि ईश्वर भाषा (शब्द, अर्थ और सम्बन्ध) का ज्ञान उन ऋषियों को न कराता तो उनको वेद का यथार्थ ज्ञान कदापि नहीं हो सकता था। उन महर्षियों ने ही परमात्मा से वेद का ज्ञान भाषा और अर्थ आदि के साथ जानकर फिर अन्यों को जनाया।

यह ईश्वरीय ज्ञान मानव तक कैसे पहुंचा? इस सम्बन्ध में भी महर्षि ने जो विचार दिये हैं, वे सर्वथा मौलिक युक्ति युक्त तथा तर्कसंगत हैं। महर्षि वेदज्ञान को किसी आसमानी पुस्तक द्वारा उत्तरा हुआ नहीं मानते, न हीं किसी पीर पैगम्बर पर नाजिल हुआ मानते हैं। न कोई आकाशवाणी न कोई स्वप्न की बड़बड़ाहट। महर्षि के अनुसार सर्वशक्तिमान परमात्मा ने सृष्टि के आदि में जन्में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नामक चार ऋषियों के अन्तरात्मा में वेद ज्ञान प्रकाशित किया था। परमेश्वर ने ही उन से अपनी सर्वशक्तिमत्ता से शब्दों का उच्चारण भी कराया था। यह चारों ऋषि सर्वाधिक पवित्रात्मा थे और अधिक समर्थ थे, फिर भी उनमें शब्द उच्चारण का सामर्थ्य स्वतः नहीं था। न ही उन्हें किसी शब्द अथवा भाषा का पहले से कोई ज्ञान ही था। ईश्वर ने अपना यह ज्ञान उन ऋषियों को शब्दों तथा भाषा आदि के साथ दिया। महर्षि का इसमें कथन है कि—"जैसे वादित्र को कोई बजावे या काठ की पुतली को चेष्टा करावे, इसी प्रकार ईश्वर ने उनको निमित्तमात्र किया था।" स्पष्ट है कि वेद में जितने शब्द, अर्थ और सम्बन्ध हैं, वे सब ईश्वर ने अपने ही ज्ञान से उनके द्वारा प्रकट किये थे। ईश्वर ने यह ज्ञान ऋषियों को शब्द, अर्थ और सम्बन्ध के रूप में ही दिया था, किसी मसी, कागज़, पत्र, अक्षर आदि के रूप में नहीं। फिर उन चार ऋषियों ने औरों को सुनाया इसलिये वेद का नाम 'श्रुति' भी पड़ा।

आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द की यह भी मान्यता है कि वेद और केवल वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है अन्य कोई नहीं। अब यहां यह शंका उठ सकती है कि कहने को तो अन्य मतमतान्तर वाले भी अपने अपने मान्य धर्म ग्रंथों को ईश्वरीय ज्ञान कह सकते हैं अन्यों को नहीं। तो फिर इसका निर्णय कैसे हो कि वेद ही एक मात्र ईश्वरीय ज्ञान है अन्य नहीं? इस पर हमारा विनम्र निवेदन है कि वे ईश्वरीय ज्ञान होने की जो कसौटियां हैं, यदि अन्य तथाकथित धर्मग्रंथ उनपर खरे उतरें तो उन्हें भी ईश्वरीय ज्ञान मान लेना चाहिये और यदि न उतरें तो फिर उन्हें ईश्वरीय ज्ञान कैसे माना जा सकता है?

ईश्वरीय ज्ञान की कसौटियां—

(1) प्रथम तो यह कि ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में मानव की उत्पत्ति के

साथ होना चाहिये क्योंकि ज्ञान की आवश्यकता सृष्टि के आदि में ही हुआ करती है जबकि मनुष्य सर्वथा अज्ञानी होता है। फिर यदि सृष्टि के प्रारम्भ में ज्ञान न दिया जाये तो कोई भी व्यक्ति भाषा भी नहीं जान सकता और भाषा के बिना लोक-व्यवहार चल ही नही सकता । और फिर जब तक मनुष्यों को धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, कर्त्तव्य अकर्त्तव्य का बोध न करा दिया जाये, उन्हें कर्मों के लिये उत्तरदायी कैसे ठहराया जा सकता है ? एक बात और भी है कि यदि ईश्वर सृष्टि के आरम्भ में ज्ञान न देकर कुछ काल पश्चात् देवे तो वह अन्यायी ठहरता है क्योंकि उसने अकारण इतने मनुष्यों को इतने काल तक अज्ञान में रखा। अतः तर्क इसी बात की पुष्टि करता है कि वेद का ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में दिया जाना चाहिये।

(2) दूसरी यह कि ईश्वरीय ज्ञान सृष्टिक्रम के अनुकूल होना चाहिये, विपरीत नही तात्पर्य यह कि सृष्टि और वेद एक ही ईश्वर की रचना होने से उनमें परस्पर कोई विरोध नहीं होना चाहिये। सृष्टि प्रत्यक्ष है अतः वही ईश्वरीय ज्ञान हो सकता है कि जो सृष्टिक्रम के अनुकूल हो।

(3) उसमें ईश्वर का वर्णन उसके गुण, कर्म, स्वभाव के विपरीत न हो।

(4) उसमें अनित्य इतिहास न हो न।

(5) उसमें कोई भ्रान्ति न हो, अर्थात् वह सर्वथा निर्भ्रान्त हो।

(6) वह अपने में पूर्ण हो, ताकि फिर किसी पूरक ज्ञान की आवश्यकता न पड़े।

(7) वह ज्ञान काल निरपेक्ष हो अर्थात् सभी कालों के लिए एक सा हो। उसमें किसी प्रकार के परिवर्तन की आवश्यकता न हो।

(8) वह किसी देश विशेष अथवा वर्ग विशेष के लिए न हो। अर्थात् मनुष्य मात्र के लिए हो।

(9) वह समस्त ज्ञान, विज्ञान और धर्म का मूल हो।

(10) उसमें मानव के अभ्युदय एवं निःश्रेय की सम्पूर्ण विधि निहित हो। आदि आदि।

अब इन कसौटियों पर यदि अन्य कोई भी ग्रंथ खरा उतरता है तो उसे ईश्वरीय ज्ञान माना जा सकता है और यदि न उतरे तो फिर उसे ईश्वरीय ज्ञान मानने में व्यर्थ की जिद् और हठ अच्छा नहीं। वेद के अतिरिक्त संसार की किसी भी पुस्तक ने सृष्टि के आदि में होने का दावा नहीं किया। जबकि वेद का तो यहां तक दावा है कि पूर्व कल्प में भी और आने वाले कल्प में भी इस ज्ञान में किंचिन्मात्र भी कोई

परिवर्तन नहीं हो सकता। मनुष्य कितना ही करे फिर भी वह अल्पज्ञ ही है अतः किसी भी मानवकृत ग्रंथ में समस्त ज्ञान-विज्ञान और धर्म का मूल कदापि सम्भव नहीं। अतः ईश्वरीय ज्ञान होने का गौरव तो एक मात्र वेद संहिताओं को ही प्राप्त है। आर्यसमाज ऐसा ही मानता है।

आर्यसमाज वेद को सत्य विद्याओं का पुस्तक मानता है। अब विद्या और सत्य विद्या में क्या अन्तर है, यह भी जान लेना आवश्यक है। सत्य विद्या तो वह है कि जिसमें कभी किसी प्रकार का कोई परिवर्तन न हो। हम तो यहां तक कहेंगे कि उसकी आवश्यकता ही न पड़े। और विद्या वह है कि जिसमें आवश्यकतानुसार कुछ परिवर्तन भी किया जा सके। यथा भूगोल और इतिहास आदि। ये विद्याएं तो हैं पर इन्हें सत्य विद्या नहीं कह सकते। भूगोल में भी सूर्य चन्द्र आदि ग्रह उपग्रहों का वर्णन सत्य हो सकता है। पर किसी ग्रह विशेष का नहीं उदाहरण के लिए वेद में पर्वत का तो वर्णन है पर पर्वत विशेष हिमालय का नहीं। इसी प्रकार उसमें नदी का तो वर्णन है पर नदी विशेष गंगा का नहीं। इतिहास की दृष्टि से देखें तो वे में राजा का तो वर्णन है किन्तु राजा विशेष का नहीं। उसमें सेनापति का तो वर्णन है पर सेनापति विशेष का नहीं। वेद में नगर और देश की चर्चा तो हो सकती है पर चीन, जापान अथवा पेकिंग और टोक्यो की नहीं। तात्पर्य यह कि वेद में अनित्य इतिहास आदि नहीं। ऐसा आर्यसमाज मानता है।

आर्यसमाज वेदाध्ययन का अधिकार भी मानवमात्र को देता है। वेद के अध्ययन-अध्यापन पर किसी प्रकार का कोई प्रतिबन्ध आर्यसमाज को स्वीकार नहीं। आर्य-समाज की मान्यता है कि जैसा यह भौतिक सूर्य सब के लिए है, वैसे ही वेद-सूर्य भी सभी के लिये है। जैसे सूर्य के प्रकाश का लाभ सभी उठा सकते हैं। वैसे ही वेद सूर्य का लाभ भी सभी उठा सकते हैं। और तथाकथित शूद्र को और स्त्रियों को पौराणिकों ने जो वेद के पढ़ने से वंचित कर रखा है, आर्य-समाज उसका प्रबल विरोधी है। आर्यसमाज का कहना है कि केवल बुद्धिहीन व्यक्ति ही वेद से वंचित रह सकता है कोई भी बुद्धिमान नहीं।

इस प्रकार आर्यसमाज की वेद-विषयक मान्यतायें अति स्पष्ट सुलझी हुई तर्कसंगत आधार लिये हुए हैं। आवश्यकता इस बात की है हम इन्हें जन-जन में अधिकाधिक प्रचारित कर सकें यदि हम ऐसा कर सकें तो निश्चय ही जनमानस वेद की ओर आकृष्ट होगा।

□

यज्ञ और उसका महत्त्व

लेखक—श्री योगेन्द्र पाल जी सेठ
प्रधान आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर

महर्षि दयानन्द के आने से पूर्व भारतीय यज्ञ के स्वरूप को भुला चुके थे। हां, कुछ स्वार्थी लोग हिंसक-यज्ञ अवश्य रचाया करते थे, जिसमें पशु-बलि तथा मादक द्रव्यों का आम प्रयोग होता था। गत एक सौ वर्ष के आर्य समाज के प्रचार का यदि कोई लाभ हुआ है तो वह "यज्ञ का रूप", जिसे भिन्न-भिन्न प्रकार से संसार के सब धर्मों ने अपना लिया है। आज सब धर्म-स्थलों में यज्ञ में आप को सुगन्धित पदार्थ अवश्य जलते हुए दिखाई देंगे।

आज विज्ञान का युग है. आज का विज्ञानिक भी जल तथा वायु में मिलावट के नाम पर बहुत घबराया हुआ है। जिसे वह अंग्रेज़ी में (Poilution in water and air) पोलियूशिन इन वाटर एण्ड ऐयर के नाम से पुकारता है। वह चिन्तत है कि पैट्रोलियम तथा कोयला के अधिक प्रयोग से बड़े-2 नगरों का वातावरण बहुत दूषित हो रहा है तथा नदियों में नगरों तथा कारखानों का गन्दा पानी फैंकने के कारण, नदियों का जल दूषित हो रहा है। गंगा का जल जब गंगोत्री से निकलता है तो वह कितना पवित्र और रोग-मुक्त होता है। परन्तु वही जल जब कलकत्ता के समीप पहुंचता है तो वह जल रोग-युक्त हो जाता है।

आज का विज्ञानिक तथा शासक-वर्ग, भारतीय संस्कृति के मूलभूत "यज्ञ" के दूत-रूप को नहीं समझता, वह उसी विचार को अन्य विज्ञानिक ढंगों से अपनायेगा, जिस पर अरबों रुपये खर्च होंगे। गत दिनों, भारत की राजधानी में "विश्व बैंक" का एक मुख्य अधिकारी आया हुआ था हमारी सरकार ने गंगा के जल को शुद्ध करने के लिये, उससे एक हज़ार करोड़ रुपये, इस कार्य की पूर्ति केलिए ऋण मांगा है। विज्ञानिकों को डर है कि यदि इसी प्रकार बड़े-2 नगरों की जनसंख्या तथा उन के समीप कारखानों की संख्या बढ़ती गई, तो एक दिन ऐसा भी आयेगा जब लोग दम घुटने से मरने लगेंगे।

हमारे पूर्वज राम-कृष्ण दैनिक यज्ञ किया करते थे। इस का वर्णन हमारे सब

धर्म ग्रन्थों में मिलता है । हमारे ग्रन्थों में यज्ञ की इतनी महानता दी गई है कि इसके साथ ही मनुष्य के सुख-दुःख को जोड़ा हुआ है । रामायण में लिखा है ।

नाना-हिता-अग्नि-र्ना-यज्वा न क्षुद्रो वा न तस्करः ।
कश्चिदासीद-अयोध्यायां न चावृत्तों न संकरः ॥

(वाल्मीकि रामायण—6-12)

भावार्थ—श्री नारद ने ऋषि वाल्मीकि जी को कहा, कि आयोध्या नगरी में कोई भी ऐसा नर-नारी नहीं जो दैनिक यज्ञ नहीं करता, जो व्रतों का पालन नहीं करता, न वहां कोई तस्कर या क्षुद्र, चोर, या वेश्य वृत्ति वाला वर्ण-संकर रहता है । एक अन्य स्थान पर लिखा है,

"ततः प्रभाते विमले कृताह्निकमरिंदमौ" (वा० रा०—11-10)

"राम-लक्ष्मण दोनों भाई प्रभात में उठ कर, सन्ध्या अग्निहोत्र आदि कर्मो से निवृत होकर विश्वामित्र के पीछे गंगा नदी की ओर चल पड़े । तुलसी रामायण में भी यज्ञ सम्बन्धी लिखा है ।

योगीराज श्री कृष्ण भी दैनिक सन्ध्या तथा अग्नि होत्र किया करते थे, ऐसा महाभारत में लिखा है । उन का यज्ञ में कितना दृढ़ विश्वास था, इसका प्रमाण श्री भगवद् गीता से पता चलता है, कि उन्होंने जो अर्जुन को उपदेश दिया था, उस में बहुत से ऐसे श्लोक हैं जिन में यज्ञ का वर्णन है । सृष्टि रचना और मनुष्य कर्म सम्बन्धी है,

"अन्नाद भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः ।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः ॥ गीता 3-14

बादल, जो वायु तथा सूर्य के यज्ञ रूप से उत्पन्न होते हैं, उनसे वर्षा, तथा वर्षा से अन्न उत्पन्न होता है । अन्न से मनुष्य को जीवन मिलता है । इसी प्रकार संसार भर की सब वस्तुएं, भिन्न-भिन्न पदार्थों के यज्ञ रूप में परिर्वतित होने पर उत्पन्न होती हैं, जिन का कर्म प्राणिमात्र का कल्याण करना है । यज्ञ शुभ कर्म से उत्पन्न होता है, और मनुष्य शुभ कर्म के लिए जन्म लेता है ।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः (यजु॰—40-2)

भावार्थ—ऐ मनुष्य तू सौ वर्ष तक शुभ कर्म करता हुआ जीवन व्यतीत कर ।

गीता में लिखा है, "नायं लोकोऽस्त्यज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम ॥"

(गीता—4-31)

हे अर्जुन, जो मनुष्य यज्ञ रूपी कर्म नही करता, उस का यह जीवन ही सुखदायक नहीं होता परलोक क्या सुखदायक होगा । लिखा है,

(शेष पृष्ट 47 पर देखें)

१९वीं शताब्दी का महान् सुधारक—दयानन्द

ले.—श्री धर्मवीर शास्त्री विद्यावाचस्पति जीतपुर (मेरठ)

स्वामी दयानन्द सरस्वती के कार्यक्षेत्र में आने से पूर्व भारतीय समाज की बहुत गिरी हुई हालत थी, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्र में—भारतीय समाज का पूरा ढांचा लड़खड़ा चुका था। जहां तक धार्मिक क्षेत्र का सवाल है, भारतीय समाज अनेक मत-मतान्तरों में बंटा था। मजहब और मतों को ही धर्म की संज्ञा दी जाती थी। धर्म के नाम पर अनेक अत्याचार होते थे। पशु बलि दी जाती थी, मन्दिरों में देवदासी प्रथा थी, मुक्ति का सस्ता नुस्खा बता कर जनता को ठगा जा रहा था, कोई अपने आपको ही ईश्वर प्रचारित कर मौज मस्ती ले रहा था, पत्थर पूजा थी, अपनी-अपनी पुस्तकें लिख कर उन्हें ईश्वर द्वारा प्रदत्त अमर वाणी बताया जा रहा था और जनता को लूटा जा रहा था। वेदों को गड़रियों के गीत कहा जाता था, वेदों पर अश्लील भाष्य लिख कर जनता को वेद विमुख किया जा रहा था, गंगा में नहाने से या काशी में जा कर मरने से मुक्ति मिल जाने की बात कही जाती थी, अन्ध विश्वास फैलाया जा रहा था, धर्म चौका चुल्हे में ही सिमट कर रह गया था।

सामाजिक क्षेत्र में—जनता जन्म से जाति-पांति के चक्कर में बुरी तरह से फंसी हुई थी। बाल विवाह रचाये जा रहे थे। विधवा जीवन भर दुःख के आंसू बहाने पर विवश थी। अगर किसी ने भोजन या वस्त्र छू दिए तो वे त्याज्य समझे जाते थे, स्त्री जाति को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था। अनाथों का रोना सर्वत्र सुनाई पड़ता था। गऊएं काटी जाती थीं, पद्दलित भाई ईसाई मुसलमान बन रहे थे।

राजनैतिक क्षेत्र में भारत की दशा बड़ी सोचनीय थी। भारत छोटी-छोटी सी देशी रियासतों में बंटा हुआ था, भारतीय राजाओं में एकता की सर्वथा कमी थी, राजा लोग प्रजा का समुचित ध्यान न रख विलासिता में डूबे थे और "यथा राजा तथा प्रजा" के सिद्धान्तानुसार प्रजा भी विलासिता में डूब कर कर्तव्य पथ से विमुख थी, राजाओं को सत्परामर्श देने के स्थान पर मन्त्री चाटुकार होते थे। अनुशासन-हीनता का सर्वत्र बोल-बाला था, परिणाम स्वरूप विदेशी-शक्तियों के हाथों समय-समस पर भारतीय जनता अपमानित हो रही थी। अंग्रेजों के द्वारा भारत परतन्त्रता की बेड़ियों में कसा जा चुका था, न कोई ठीक शासक था, न कोई समुचित दण्ड व्यवस्था थी।

ऐसे समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती गुरु आज्ञा से भारतीय रंग मंच पर आए उन्होंने भारतीय समाज के रोग को एक कुशल वैद्य की तरह समझा, विचारा तथा बिना विलम्ब किए पीड़ित भारतीय समाज के औषधोपचार में जुट गए। जैसे रोगी अच्छे वैद्य की कटु दवा को लेना पसन्द नहीं करता तथा उन्माद का रोगी तो वैद्य को गाली-गलौच तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि घूंसा-मुक्का अथवा जान से मारने तक उतारू हो जाता है ऐसे ही स्वामी दयानन्द रूपी सद् वैद्य की परिणाम में अमृत परन्तु वेदोपदेश रूपी कटु औषधि को सेवन न कर उन्मादी भारतीय समाज कभी स्वामी जी को गाली देने लगता। कभी पत्थर मारने लगता, कभी स्वामी जी के ऊपर सर्प फेंकने लगता तो कभी स्वामी जी का प्राणान्त करने के लिए ज़हर देने लगता—पर वाह रे दयानन्द तू पत्थर खा कर भी उन्हें फूलों की वर्षा बतलाता, गाली सुन कर भी मिठाईयां भिजवाता रहा, विषदाता को भी मुक्त कराता रहा।

धार्मिक, सामाजिक सुधार के साथ-साथ स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राजनैतिक सुधार भी किया। विदेशी राज्य को वे अच्छा नहीं समझते थे। उन्होंने वैचारिक क्रान्ति की, उन्होंने ही बताया कि—"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि होता है।" तथा 'पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।"

(सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास।)

उपरोक्त विचारों को कार्य रूप देने के लिए स्वामी जी ने स्थान-स्थान पर प्रवचन किए। अनेक पुस्तकों में अंग्रेजी सरकार को हटाने तथा वैदिक राज्य व्यवस्था लागू करने के लिए क्रान्तिकारी विचार लिखे। सत्यार्थ प्रकाश का छठा समुल्लास तो लिखा ही राजनीति पर है। राजा कैसा हो, मन्त्री कैसे हों, सदस्य कैसे हों और फिर एक संघीय शासन प्रणाली का खण्डन कर प्रजातांत्रिक प्रणाली पर मनु जी के श्लोक उद्धृत करते हुए सुन्दर विचार लिखे। अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने के लिए स्वामी जी ने उचित समझा कि राजाओं को जो आपस में बिखरे पड़े हैं और विलासिता में डूब कर अपने आप को शेर होते हुए भी गीदड़ समझ रहे हैं उनकी विलासिता दूर कर उन्हें संगठित किया जाए इसके लिए वे अन्त समय में राजस्थान गए। राजाओं को एकता के सूत्र में बांधना शुरू किया वैसे भी सभी सुधारों के लिए चाहे वे धार्मिक, सामाजिक अथवा राजनैतिक सुधार हों उसके लिए—ऋषि का यह पक्का मत था कि 'यथा राजा तथा प्रजा" अर्थात् जैसा राजा होता है वैसी ही उसकी प्रजा होती है अगर राजाओं को सुधार कर धार्मिक बना दिया जाए। उनमें सदाचार का बीजारोपण कर दिया जाए तो जनता भी (प्रजा भी) धार्मिक तथा सदाचारी बन जायेगी अतः स्वामी जी महाराज राजस्थान गए और वहां राजाओं को सदाचार का पाठ पढ़ाते रहे। संगठित करते हुए जोधपुर के राजा के पास ठहरे उन्हे

राजनीति पढ़ानी शुरू की लेकिन देश का दुर्भाग्य था कि वहां का राजा वेश्यागामी था। स्वामी जी को जब पता चला तो उन्होंने राजा को डांटते हुए कहा—शेरों के पास कुतिया का क्या काम ? बस इससे वह वेश्या जल-भुन उठी उसने षड्यन्त्र रच डाला और उस षड्यन्त्र में अंग्रेजी सरकार ने तथा विरोधी लोगों ने पूरा-पूरा साथ दिया। स्वामी जी को जगन्नाथ पाचक के द्वारा कटु व तीखा विष दिला कर उनकी जान ले ली गई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वामी जी का बलिदान भी इसी कारण हुआ कि वे भारतीय राजाओं को सुधार कर तथा उन्हें संगठित करके विदेशी सरकार को देश से निकाल कर भारत स्वतन्त्र कराना चाहते थे। मैकाले की गलत शिक्षा नीति जिस के माध्यम से वह हर भारतीयों को अन्दर से ईसाई बनाना चाहता था। स्वामी जी के वैदिक शिक्षा नीति के ऊपर बल देने से फीकी पड़ने लगी। स्वदेशी वस्त्रों तथा वस्तुओं के प्रयोग की भी शिक्षा स्वामी जी ने अपने ग्रन्थों में दी, हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा घोषित किया। स्वयं गुजराती होते हुए भी गुजराती न लिख कर हिन्दी पर विशेष बल दिया। उन्हीं के कारण आज हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी है। आर्थिक पक्ष पर भी स्वामी जी ने बल दिया। गौ जैसे दुधारू पशु को न मार कर यदि उसके दूध आदि का सेवन किया जाए तो खाद्य समस्या आदि हल हो सकती है। गोवध को रोकने के लिए स्वामी जी ने अनेकों हस्ताक्षर गो भक्तों के करा कर ब्रिटिश सरकार के सामने रख कर तथा गौ करुणानिधि जैसी पुस्तक में गाय के लाभ बता कर तत्कालीन जनता की तथा सरकार की आंखें खोल दीं।

अन्त में हमें आज इस श्रावणी पर्व पर यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि स्वामी जी ने जो सुधार का सिलसिला जारी किया था उसे हम पूरा करेंगे तथा कुछ ऋषि ऋण से उऋण होने का प्रयास करेंगे। ☐

(पृष्ट 44 का शेष)

"कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ॥" (गीता 3-15)

वेद ज्ञान द्वारा मनुष्य को कर्म करने का अधिकार सृष्टि के आदि में ईश्वर ने दिया था, वह स्वयं यज्ञ रूपी शुभ कर्म कर रहा है अत: मनुष्य को भी अपने पिता की आज्ञा का पालन करना है। यजुर्वेद में भी यही भाव दिया है।

"अग्ने वेर्होत्रं वेर्दूत्यमवतां त्वां द्यावापृथिवीऽअव त्वं द्यावापृथिवी।
(यजु० 2—9)

भावार्थ—ईश्वर ने मानव को वेद द्वारा ज्ञान दिया कि जैसे द्यौ तथा पृथिवी मेरी सांसारिक रचना की रक्षा करते हैं, तुम भी निज जीवन में शुभ कर्म रूपी यज्ञ से इस जीवन की रक्षा करो। यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है इसे श्रद्धापूर्वक करना चाहिए, "श्रेष्ठतमायकर्मण" (यजु—1-1) हे मनुष्यों, श्रेष्ठ-यज्ञ अर्थात् पर-उपकार को निस्वार्थ भाव से ज्ञान पूर्वक, शुभ कर्म रूप में करना ही तुम्हारे जीवन का लक्ष्य है। ☐

अवसर मत चूकिए

ले.—श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. ए. आर्यसमाज, गोरखपुर

कृतं मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहितः ।
गोजिद् भूयासमश्वजिद्, धनञ्जयो हिरण्यजित् ।।
अथर्व. 7-50.8

मैं हाथ पर हाथ धर कर बैठने वाला नहीं हूं। मेरे दाहिने हाथ में कर्म और बाएं में विजय रखी है। इस कर्म रूपी जादू की छड़ी को हाथ में लेते ही गौ, घोड़े, धन धान्य, सोना, चांदी जो चाहूंगा सो मेरे आगे हाथ बांध कर खड़ा हो जाएगा।

सूर्यो मे चक्षुर्वातः प्राणो
अन्तरिक्षमात्मा पृथिवी शरीरम् ।
अस्तृतो नामाहमयामस्मि ।। अथर्व 5।9।7

यह मेरी देखने में छोटी-सी लगने वाली आंख शक्ति में छोटी नहीं, किन्तु सूर्य के बराबर है। मेरी प्राण शक्ति का अनुमान करना हो तो इस अपार वायुमण्डल से कर लो। मेरे मध्यभाग की तुलना अन्तरिक्ष से कर लो और मेरा यह छोटे से कद वाला शरीर देखने में छोटा होता हुआ भी, शक्ति में छोटा नहीं किन्तु समूची पृथ्वी के बराबर है। मैं अविनश्वर हूं किसी के मारे मर नहीं सकता।

ये हैं वैदिक वीर के उद्‌गार। कई मनुष्य किसी भी कार्य को बड़े निरुत्साह से करते हैं। वे पहले ही सोचने लगते हैं कि यह काम तो बड़ा कठिन है, मुझ से कैसे होगा ? मेरे तो बस का नहीं है। पर यह वैदिक भावना नहीं है। वेद के अनुसार तो मनुष्य को सदा उत्साही और आत्म विश्वासी होना चाहिए।

अयुतोऽहमयुतो म आत्मा, ऽयुतं मे चक्षुरयुतं मे श्रोत्रम्
अयुतो मे प्राणोऽयुतो मे ऽपानो ऽयुतो मे व्यानोऽयुतो ऽहं सर्वः ।
अथर्व 19-51-7

जरा वैदिक वीर की किसी कार्य को करने से पूर्व कैसी उत्साह की भावनाएं हैं सुनिए वह कहता है, अरे मैं एक नहीं दस हज़ार हूं, अर्थात् दस हज़ार व्यक्ति मिलकर जिस काम को कर सकते हैं उसे मैं अकेला कर लूंगा। मेरे अन्दर दस हज़ार के बराबर आत्मबल है। मेरी आंखों और कानों की शक्ति दस हज़ार के बराबर है।

क्या-क्या बताऊं ? मेरा प्राण, अपान, कान का बल दस हजार के बराबर है। आंख, कान, नाक, मुख, हाथ, पैर, मन, बुद्धि, आत्मा सभी दश-सहस्र गुणित शक्ति से आपूरित हैं। मैं क्या नहीं कर सकूंगा ? कौन-सा कार्य मेरे लिए असाध्य है ?

यह वेद के मन्त्र मैं जब पढ़ता हूं और उस समय तो अवश्य इनका जाप करता हूं। जब जीवन के कार्य में निराशा या मन में कमजोरी होती है तो मुझे शक्ति प्राप्त होती हैं। बुरा न मानियेगा, हमने वेद को सत्य विद्याओं का पुस्तक माना, उसे पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार भी दिया तो भी इसे पढ़ने में उत्साह नहीं दिखाया। आर्य सार्वदेशिक सभा के प्रधान के पर्यवेक्षय में उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव हो रहा था। चुनाव के लिए जो तेजी, जो उत्साह, जो अशिष्टता और अनुशासनहीनता दृष्टिगोचर हो रही थी उसका एक शतांश भाग भी वेद पढ़ने के लिए हम देते तो अवश्य ही वेद की ज्योति जलती रहती। जाने दीजिए मैं चला था वेद के मन्त्र की व्याख्या करने और बात करने लगा आर्य समाज के लोगों की।

ऊपर के मन्त्रों को पढ़ते ही मुझे अपनी स्वर्गीया पूजनीया माता जी की याद आ जाती है। वे अनपढ़ थीं पर उन्हें वेद के कई मन्त्र याद थे। गायत्री मन्त्र का जाप करती थी। मुझे लगता है कि 'गायन्तं त्रायते' गाने वाले की यह मन्त्र रक्षा करता है अत: माता जी की वह सदा रक्षा करता था। एक दिन गोरखपुर में जब मेरे पूज्य पिता जी का अन्तिम दिन आया और रात को उन्होंने पानी मांगा तो पू० माता जी उठ कर गईं। मैं भी अपने पिता जी की नींद पर सोता और जागता था। मैं भी पानी मांगते ही उठा। वे पहुंच चुकी थीं। उन्होंने ग्लूकोज और पानी पिलाया। पिता जी ने—जो सदा गले में पड़ी हुई माला के मनकों को घुमाते हुए 'ओ३म्' का और गायत्री मन्त्र का जाप करते थे। जाप करने के लिए गले में माला खोजी। नहीं मिली। उन्होंने कहा 'माला नैखे मिलत, "बुझात है टूट गई लबा" वे भोजपुरी बोल रहे थे। डा० राजेन्द्र प्रसाद से तीन-चार वर्ष नीचे पढ़ते थे। छपरा में साथ रहे थे। उनकी भान्ति इन्हें भी भोजपुरी से मोह था। माता जी ने माला खोज कर हाथ में दी और कहा 'ओ३म्' का जाप करते हुए सो जाइए। अब आगे क्या हुआ पर यह पिता जी से उनकी अन्तिम बात थी। इस गायत्री मन्त्र ने उन्हें आत्म बल, आत्म-विश्वास और तीव्र बुद्धि अवश्य दे रखी थी। एक घटना बताऊं ?

एक गांव की लड़की दुलहिन की भान्ति खूब सजी-सजाई, रेशमी जोड़े में लिपटी सोने-चांदी के गहनों से लदी लाड़ली बिटिया पहली बार ससुराल से मायके आयी। उससे मिलने के लिए उसकी गांव की सखियां, सहेलियां, चाचियां और भाभियां सब आईं। बड़े प्रेम से मिलीं। जब सब चली गईं तो मां, बाबू जी, भैया, भाभी, बहनें सब घेर कर उसे बैठ गईं।

"सब से पहले मां ने पूछा ! तेरी सास कैसी है, बेटी ?"

"बड़ी बुरी है मां, बड़ी दुष्ट है, चंडालिन बुढ़िया दिन-रात बड़-बड़ाती रहती है।" बेटी ने बड़े गुस्से में उत्तर दिया।

"और तेरा ससुर ?" पिता जी ने धीरे से कहा। बेटी ने अपने पिता को सम्बोधित करके उखड़े-उखड़े कहा "पूछिए मत बाबू जी ! वह भी बहुत बुरा है।"

बहनों ने ननद के बारे में और भाभी ने वहां की भाभी के विषय में जानकारी प्राप्त करनी चाही। बेटी ने कहा, भाभी पूछो मत "वहां सभी बहुत बुरे हैं। यहां तक कि......"

उसने आह भर कर कहा "उनका दरवाजा है न ! वह भी बड़ा बुरा है। मैं अन्दर-बाहर आती जाती हूं, तो बार-बार वह मेरे सिर से टकराता है। यह देखो न ! कई जगह फूल गया है।"

बेटी की आंखों में आंसू भरे थे और सब चुप्पी साधे एक दूसरे का मुंह ताक रहे थे। तभी मेरी माता जी जो दूर बैठे तरकारी काट रही थीं और बातें भी सुन रही थीं, बड़े स्नेह से बोलीं—

"बेटी ! थोड़ा झुक कर चली होती !" इतना आसान उपाय खोज निकालना मेरी पूज्य माता जी की तीव्र बुद्धिमत्ता की निशानी है। इतना आसान उपाय ? बतला दिया जहां, यदि बेटी थोड़ा झुक कर चलती तो उसका सिर दरवाजे से न टकराता और नम्रता से जीवन बिताने से ससुराल में उलाहने न सुनने पड़ते। मनु जी ने कहा है :—

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारितस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम् ॥

जो व्यक्ति नम्र होता है, बड़ों का सम्मान करता है उसकी आयु, विद्या, यश और बल बढ़ते हैं।

लेने को हरिनाम है, देने को कुछ दान।
तारन को है नम्रता, डूबन को अभिमान ॥

नम्रता मनुष्य का आभूषण है। जो लोग अकड़े रहते हैं हर समय, उनकी एक दिन गर्दन टूटती है जरूर, दरवाजे से टकराना पड़ता है बार-बार। तेज तूफानी आंधा में बड़े-बड़े वृक्ष चर-चरा कर टूट जाते हैं। परन्तु छोटे पौधे, घास, तिनके बच जाते हैं। अकड़ वाले कष्ट में पड़ते हैं, झुकने वाले नहीं। मेरी पूज्या माता जी की यह बात गायत्री के जप का फल है। अन्यथा वह बिल्कुल अनपढ़ थी।

एक सफल ऐश्वर्य पूर्ण जीवन की कामना प्रत्येक के मन में छिपी रहती है। याद रखिए तलवार की लड़ाई में वही वीर विजय प्राप्त करता है जो केवल अपने बचाव में ही नहीं लगा रहता परन्तु अवसर ताक कर प्रहार करने की क्षमता व साहस रखता

है। जीवन भी कुछ इसी तरह का खेल है। यदि जीवन के संघर्षों में भी निर्भय हो, आगे बढ़ कर और परिस्थिति की कठोर कठिनाइयों को ध्वंस कर सफलता को न जीता गया तो जीवन बच-बच कर चलने का क्रम भर रह जाता है। इसीलिए वेद मन्त्र कहता है" अरे मनुष्य तू नए मार्ग को कठिनाइयों की परवाह न कर, असफलता और निराशा को दूर भगा दे और अनजाने रास्तों पर चल कर पर्वतों की चोटी पर चढ़ जा तब देख तुझे विजय मिलती है या नहीं? मुझे पूर्ण विश्वास है कि जीवन की सभी कामनाएं पूर्ण होंगी।

मेरे एक मित्र का पुत्र था। पिता बालीबाल के अच्छे खिलाड़ी थे। मैं बौल उछाल कर देता था। मेरे समय मुझ से अच्छा मेरी जगह खेलने वाला दूसरा कोई न था। मेरी जगह खेलने वाले को बूस्टर कहते थे और विशेषता मेरी यह थी कि गुरुकुल के चाहे वे बलवीर हों या हरिप्रकाश (अब वे गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता हैं) मेरे ही साथ खेल पाते थे। मेरे मित्र का नाम वेदरत्न था। अब वह नहीं रहा। स्कूटर दुर्घटना में वह स्वयं तो जाता ही रहा अपनी पत्नी को भी ले चला। दोनों नहीं बचे। उसके लड़के या भतीजे को पहली बार क्रिकेट की टीम में खेलने के लिए चुना गया। अपनी पारी पर, इस डर से कि कहीं वह जल्दी आउट न हो जाए, उसने हर गेंद को बड़ी सावधानी से खेला। आउट तो वह नहीं हुआ लेकिन रन भी वह न बना पाया। उसे उम्मीद थी कि उसका कप्तान उसकी प्रशंसा करेगा पर कप्तान ने उसे कहा "यदि तुम मैदान में टिक-टिक करते रहोगे तो अगले मैच में तुम्हें नहीं रखूंगा।" खेल के मैदान में आज उसने पहुचते ही अन्धाधुंध बल्लेबाजी की, रन बनाने के हर अवसर का लाभ उठाया, बराबर आउट होने के जोखिम से जूझता रहा और बारह मिनट में सत्ताइस रन बना कर दर्शकों की प्रशंसा का पात्र बना। अवसर कभी नहीं खोना चाहिए।

मेरे साथी जो एक अस्वस्थ व्यक्ति थे। थे अध्यापक——उस समय वेतन कुछ न था अत: चिकित्सा उनके वश की बात न थी। एक दिन वे चल बसे। हमारे देश में शिक्षक और शिक्षा दोनों की अत्यन्त दुर्दशा है। उनके कफन के लिए और लकड़ी के लिए मांग कर—चन्दा इकट्ठा कर आर्य समाज और विद्यालय के अध्यापकों ने व्यवस्था की। उसके बाद उनके परिवार के बच्चों और स्त्री के भोजन और जीवन-यापन की समस्या आई। हम लोग प्रधानाचार्य से मिल कर उसके एक पन्द्रह वर्षीय पुत्र को चपरासी की नौकरी दिलवाना चाहते थे। प्रधानाचार्य अत्यन्त विचित्र तरह का, उदारता और दया से रहित व्यक्ति था। उसने स्वीकार नहीं किया। परन्तु सब ओर से निराश होने पर उनकी पत्नी शीला ने चारदिवारी की सुरक्षा का दामन त्याग कर कारोबार की बागडोर सम्भाली। उसने गैस के सिलैंडर की एजेन्सी ली। दुकान और घर का काम देखती दुकान में खाली समय पा कर पढ़ती भी जाती थी और

परिणाम यह हुआ कि उसका व्यक्तित्व बदल गया। वह स्वयं खूब पढ़-लिख भी गई और सूझबूझ से दुकान भी खूब अच्छी चलने लगी और अब तो शहर में गैस के सिलैंडरों की वह सोल एजेण्ट है उसकी गणना मेधावी सुसंस्कृत, धनी महिलाओं में होती है।

कहने का मतलब यह है कि संसार में कोई भी व्यक्ति दीन-हीन नहीं। बस बात सिर्फ इतनी है कि समय को पहचान कर अवसरों का पूरा-पूरा फायदा उठाना ही सफल जीवन की कुंजी है। यदि असफलता का भय हमें काम करने से रोकता रहे, तो हम बहुत सी उपलब्धियों, अनुभवों या सुखों से वंचित रह जाएंगे। जोखिम से कभी मत डरिए। तर्क, साहस और अवसर को पहचान कर जीवन में आगे बढ़िए।

अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए और मनो वांछित सफलता के लिए परिश्रम तो करना ही होगा। परन्तु परिश्रम के साथ-साथ लगन और इच्छा शक्ति में भी कमी न आने देना होगा। अवसर का लाभ उठाने के लिए हमें तैयार रहना होगा। आइए एक पत्रिका में प्रकाशित दो घटनायें उस पत्रिका के सारांश रूप में बताऊँ :—

हनीफ खां केवल पन्द्रह साल का था तब उसके पिता की मृत्यु हो गई अपनी मां और अपनी जीबिका के लिए पढ़ाई के बाद का वह समय लगाता था। इससे उसकी पढ़ाई में व्यवधान उपस्थित हो गया। उसके दूसरे साथी शिक्षा में आगे बढ़ने लगे। अपने मित्रों को ऊँची शिक्षा के अवसर मिलते देख वह न तो हताश हुआ और न ही ईर्ष्या से कुंठा ग्रस्त हुआ और न ही अपने दुर्भाग्य पर बैठा रोता रहा। रेडियो के काम में उसे रूचि थी। इस रूचि लगन, मेहनत और तैयारी का यह फल हुआ कि वह देश की एक जानीमानी संस्था में रेडियो बनाने वाली कम्पनी में अधिकारी बन गया। उसे विदेश में भ्रमण का भी अवसर मिला। उसकी सफलता का रहस्य यही था कि आगे बढ़ने के अवसर सामने आने पर उसने लगन, परिश्रम तथा अध्यवसाय से पूरा-पूरा लाभ उठाया।

एक घटना और सुनिए। याद रखिए अवसर जीवन में छिपे रहते हैं। डाल का चूका बन्दर और अवसर का चूका मनुष्य कहीं के नहीं रहते। मनोवांछित सुख हमारे सामने होता है किन्तु उसको हम पहचान नहीं पाते। अपने जीवन की छिपी सम्भावनाओं को पहचानने के लिए वास्तव में अपने सोचने के ढंग को नकारात्मक नहीं स्वीकारात्मक बनाना चाहिए। एक अत्यन्त रोचक कहानी मैंने कहीं पढ़ी थी। उन्हीं शब्दों में आपको बता दूं।

अल हाफिद एक धनी किसान था। परन्तु वह ऐश और आराम की जिन्दगी का अकांक्षी था। परिश्रम नहीं करना चाहता था। अल ने रुपयों और हीरों के लोभ में उसने खेत बेच दिए और हीरों की तलाश में निकल पड़ा। दुनियां भर

में घूमते-घूमते उसका सारा धन स्वाहा हो गया पर उसे हीरे की खान नहीं मिली। दूसरी ओर अल हाफिद की जिसने ज़मीन खरीदी थी। उसने वहां काम शुरू किया। खेतों के बीच से एक छोटा सा नाला जाता था वह परिश्रमी था खेत सींचते समय नाले की मिट्टी में एक चमकदार वस्तु उसने देखी। उसे निकालने पर वह एक असाधारण इन्द्रधनुषीय चमक का पत्थर निकला। अपने एक मित्र से उसने जांच करवाई। वह पत्थर एक हीरा था। फिर क्या था ? दोनों ने मिलकर नाले की तह को छान डाला और बहुत से कीमती हीरे खोज निकाले। ऐसे चमत्कारी ढंग से गोलकुण्डा की प्रसिद्ध हीरे की खान की स्थापना हुई। इसी खान से आगे चलकर विश्व प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा पाया गया।

कैसी विडम्बना थी। जिन हीरों की खोज के लिए जमीन बेचकर अल हाफिद परिश्रम लगन और अवसर को न समझने से मारामारा फिरा, वह हीरे उसी के खेतों में छिछे हुए थे।

मेरे गांव का एक गरीब बढ़ई एक ठेकेदार के यहां कार्य करता था। वह दीन-हीन बना था उसे मालूम नहीं था कि उसके हाथ में एक सुन्दर कला छिपी हुई। एक दिन बिना किसी करण से उसे ठेकेदार ने नौकरी से हटा दिया। उसके बनाये लकडी के कुछ खिलौनों से मेरा पौत्रा चि० वैभव खेल चुका था। वह पेट की ज्वाला को शान्त करने नौकरी की तलाश में मेरे पास आया। मैं उसे नौकरी तो क्या देता ? उसके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की। उसकी कुछ आर्थिक मद्‌द की। एक दो छोटे मोटे औज़ार खरीदवा दिए। और अब कस्बे का वह प्रसिद्ध कारीगर हो गया है। उसका खिलौनों का एक कारखाना बन गया है और नैपाल आदि देशों में उसकी अच्छी बिक्री है।

अवसर ईश्वर द्वारा दिया गया वरदान नहीं। अवसर तो अल हाफिद की खानों की तरह प्रत्येक मनुष्य के सामने बिखरे रहते हैं। बस आवश्यकता है अवसर को सतर्क हो कर पकड़ने की।

वेद के शब्दों में मैं कहूंगा "मत डर कि उन्नति का पथ कण्टकाकीर्ण है :—

अपत्यं परिपन्थिनम् मुषीवाणम् हुरश्चितम् दूरमधि स्रुते रज ॥ ऋ० 1 । 42 । 3

अरे वीर घबरा मत, अवसर तेरे सामने है, इस अवसर में बाधा डालने जो कोई चोर कुटिल पापी राक्षस तेरे मार्ग में रास्ता रोक कर खड़ा हो उसे तू पकड कर रास्ते से दूर फैंक दे।

□

राष्ट्र के नागरिकों में समानता के भाव

समानी व आकूति समानाहृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुस-हासति ॥

अथर्व ६.६४ ३.

राष्ट्र के सभी नागरिकों में समानता, प्रेम बन्धुत्व तथा सौहार्द का भाव आवश्यक माना गया है। प्रत्येक नागरिक के संकल्प एक हों। राष्ट्र की अभिवृद्धि तथा लोकहित के लिये ही उनका चिन्तन सतत प्रवहमान होना चाहिए। उनके हृदयों में उठने वाले भाव और संवेदनाएं भी जन हित से प्रेरित होकर एक दूसरे को अनुप्राणित करने वाली हों। लोगों के मनों मे एक से ही भाव विचार, संकल्प और उद्वेग जन्म लें जिससे कि वे अपने देश और अखिल मानव जाति के सामूहिक उत्थान के लिए सक्रिय होकर कार्य कर सकें।

जब तक राष्ट्र के समस्त निवासी एक जुट होकर उपस्थित समस्याओं का समाधान नहीं करते, तब तक देश का सामूहिक हित होना सम्भव नहीं है। व्यक्ति और परिवार से भी बढ़कर लोकहित है। इसकी सिद्धि के लिये विचारों और भावों का एकता आवश्यक है। संकल्पवान नागरिक ही अपने देश को उन्नति और प्रगति के पथ पर ले जा सकते हैं।

—डा. भवानीलाल जी भारतीय

विषय संग से विनाश

विषयों का चिन्तन करते हुए पुरुष को उन विषयों में आसक्ति उत्पन्न हो जाती है। आसक्ति से राग और राग से क्रोध उत्पन्न हो जाता है। क्रोध से अविवेक और अविवेक से स्मृति विभ्रम अर्थात् स्मृति में विकार उत्पन्न हो जाता है। स्मृति विभ्रम से बुद्धि का नाश तथा बुद्धि नाश से मनुष्य भी नष्ट हो जाता है। (गीता)

—श्री कृष्ण जी

योगीराज श्री कृष्ण हमारे !

लेखक— श्री मोहन लाल शर्मा "रश्मि"
907/ए, फ्रीलैण्डगंज—दाहोद (गुजरात)

आये थे जो बन कर, भारत के भाग्य सितारे ।
महान् योद्धा थे वो, योगीराज श्री कृष्ण हमारे ॥

नूतन प्रकाश के द्वारा, अज्ञान अंधेरा दूर किया ।
सेवा का व्रत लेकर के मानव का हर जख्म सीया ॥

रग-रग में राष्ट्र भक्ति, दुखियों के थे सहारे ।
महान् योद्धा थे वो, योगीराज श्री कृष्ण हमारे ॥

शंख नाद वेदों का जिसने आर्य धरा पे गूंजाया ।
गीता का सन्देश था जिसने आकर हमें सुनाया ॥

महा तपस्वी, त्यागी जो थे आर्य-धर्म के रखवारे ।
महान् योद्धा थे वो योगी राज श्री कृष्ण हमारे ॥

दुष्टों के संहारक बन कर, कितनों का किया सफाया ।
पाठ प्रेम का पढ़ा के सबको, जग में नाम कमाया ॥

फंसी भंवर में नैया को, लाए थे जो किनारे ।
महान् योद्धा थे वो, योगी राज श्री कृष्ण हमारे ॥

शिक्षा निष्काम कर्म की जन-जन को बतलाई ।
प्रजा भक्त व शूर वीर बन, सेवा की राह दिखाई ॥

रवि सम कीर्ति "रश्मि" जिसकी करती उजियारे ।
महान् योद्धा थे वो योगीराज श्री कृष्ण हमारे ॥

श्री भगवती प्रसाद खेतान ट्रस्ट

खेतान भवन, 6 माला, 198, जमशेदजी टाटा रोड़,
चर्चगेट, बम्बई : 400020
टेलीफोन नं. 221645/221559 तार : खेतानसंस बम्बई,
टेलेक्स :—011-4803 **केबीसी इन की ओर से समस्त बुद्धिजीवियों, छात्रों, शिक्षित समुदाय और पाठकों से विनम्र निवेदन :—**

भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषतायें :—

1—सारे विश्व में सृष्टि संवत् की गणना केवल भारत में 1,95,29,49,084 वर्षों से चली आ रही है। जिसका प्रमाण सारे भारत में फैले करोड़ों पंचांगों में पाया जाता है।

2—भारतीय देश के सर्वमान्य ग्रंथ ऋग्वेद को पाश्चात्य विद्वान् मैक्समूलर ने भी भी विश्व की सर्वाधिक प्राचीन पुस्तक माना है।

3—विश्व के अनुपम आदर्श प्रजातंत्र व्यवस्था रामराज्य को राष्ट्रपिता बापू ने भी स्वीकार किया था।

4—इसी देशके आदर्श ग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता को इंटरनेशनल कृष्णा कौंसियसनेस ने 70 भाषाओं में करीब 10 करोड़ पुस्तकें तैयार कराकर सारे विश्व में फैलाया है। जिसकी रूस, चीन, इजराइल, अमरीका आदि देशों में भारी मांग है।

5—इसी देश के महाराजा श्री अग्रसेन जी का जीवन्त समाजवादी राज्य विख्यात है। जो आज से 5000 वर्ष पूर्व पंजाब हरियाणा सीमा पर अग्रोहा में था। वहां पर नवागंतुक को वहां के निवासी एक लाख परिवार एक-एक रुपया और एक-एक ईंट देकर अपने समान बना लेते थे। इससे सारे विश्व में बैंकिंग और सराफे के धनका केन्द्र अग्रोहा में था। किन्तु वहां धनपतियों से किसी को कोई ईर्ष्या विरोध नहीं था। जबकि आज बड़े देशों के लोग अपनी तरफ धन को खींचने में लगे हुए हैं।

6. भारत में आज भी करोड़ों मानव जोकि प्राणिमात्र की भलाई पर विचार व काम कर रहे हैं। जैसे वैष्णव, जैन संतमत, सूफीमत, गांधीवादी विचारधारा वाले इत्यादि। जबकि अपने आपको आज के वर्तमान में, वैज्ञानिक विद्वान् बड़े समझदार, ऊँचे पढ़े लिखे हुए विदेशों के लोग अपने आपको मानव मात्र की भलाई की बातों का दंभ भरते हैं। दूसरी तरफ घातक से घातक हथियार, एटम, बम, रसायन बनाकर प्राणिमात्र को ही समाप्त करने की होड़ में लगे हैं।

7—हमारी युवा पीढ़ी से अपील है कि वह अपनी संस्कृति को समझे जाने और उचित लगे तो उसके अनुरूप आचरण करे जिससे भारत पुनः विश्वगुरु बन सके। इसका श्रेय भी आपकी ही पीढ़ी को प्राप्त होगा। धन्यवाद।





द्राक्षासव

सिद्ध मकरध्वज

पायोकिल

भीमसेनी सुरमा

गुरुकुल चाय

स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी की औषधियों

का सेवन करें

मुद्रक—जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस, नेहरू गार्डन रोड जालन्धर शहर ।

टेलाफोन नं. 74250 रजि. न. पा. जे. एल. 55)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 22, 31 भाद्रपद सम्वत् 2042, तदनुसार 15 सितम्बर 1985, दयानन्दाब्द 161 । एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपए

प्रभो ! हमें निर्भय बना दो

ले.—श्री सुरेशचन्द्र जी, वेदालंकार एम-ए-एल-टी.
आर्य समाज, गोरखपुर

ओ३म्

इन्द्रः सुत्रामा स्ववां अवोभिः सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः ।
बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्च पतयः स्याम ॥

[illegible] ऋ. 6।47।12

(सुत्रामा) उत्तम रक्षक (स्ववान्) आत्म शक्ति से युक्त (सुमृडीकः) उत्तम सुख देने वाला (विश्ववेदाः) सर्वज्ञ (इन्द्रः) प्रभु (अवोभिः) अपनी रक्षाओं के साथ हमारी रक्षा करने वाला (भवतु) होवे। (द्वेषः बांधतां) शत्रुओं का नाश करे, हमें (अभयं कृणोतु) अभय करें और हम (सुवीर्यस्य) उत्तम वीर्य के सामर्थ्य के (पतयः) स्वामी (स्याम) होवें।

इस मन्त्र में निर्भय रहने के लिए बताया गया है कि मनुष्य को यह समझ लेना चाहिए कि परमात्मा सबका उत्तम रक्षक और स्वकीय आत्म शक्ति युक्त सर्वज्ञ है। अपनी रक्षक-शक्ति से वह हमारी पूर्ण रक्षा करे, हमारे शत्रुओं को दूर करे, हमें पूर्ण रीति से निर्भय करे, और उत्तम वीर्य सदा हमारे पास जागृत रहे।

'भय' संहारक है और 'आशा' जीवनदायिनी है, अर्थात् भय शिथिल कर देने वाला विष है, आशा जीवन दायक अमृत। भय किंकर्तव्य विमूढ़ता, निराशा और मृत्यु को जन्म देता है, आशा, प्रसन्नता शक्ति और जीवन को। भय ने कभी किसी की कोई सहायता नहीं की, आशा ने अनगिनत ऐसे व्यक्तियों के जीवन बचाये हैं जो मृत्यु के मुख में गए प्रतीत होते थे। पर, यह भय का भूत है क्या ? भय का वैसे कोई अस्तित्व नहीं है। कल्पना इसे जन्म देती है। यह एक छाया है, मस्तिष्क का एक रोग है। भय नामक दुनिया में न तो कोई व्यक्ति है, न कोई शक्ति ही है। यदि इसके जीवन रस नाशक असर के सामने घुटने न टेके जायें, इसे अपने पर हावी होने में इसकी सहायता न की जाए, तो किसी को कोई हानि पहुंचाने की शक्ति इसमें नहीं है।

'भय' मस्तिष्क का कीड़ा है। असल में भय नामक कोई चीज नहीं है। भय पूर्ण भावनाएं नाशक हैं। ये हमारे सामने केवल अड़चनें पैदा करती हैं। भय मानना उतना ही हास्यास्पद है जितना पक्षी का थपेड़ों से, असंस्कृत का भूत से या बच्चे का जू-जू से।

इसलिए यह मंत्र कहता है कि भगवान् हमें भय से मुक्त करे। वास्तव में जिस शक्ति ने हमें जन्म दिया है, वह ऐश्वर्यशालिनी शक्ति प्रभु की है और वह प्रभु सर्वज्ञ, सर्वद्रष्टा है। वह अपनी सर्वशक्तिमत्ता से सदा रक्षा कर रहा है:

भारतवर्ष में एक ग्राम कालड़ी की एक सच्ची घटना इसका प्रमाण है। कालड़ी ग्राम स्वामी शंकराचार्य की जन्मभूमि है। परन्तु जिस समय की यह घटना है, उन दिनों वहां हिन्दू नहीं, बल्कि ईसाई धर्म का ही प्रचार बढ़ रहा था। धड़ाधड़ लोग ईसाई बन रहे थे। यह देख कर कुछ हिन्दू सुधारकों के मन में बहुत दुःख हुआ। उन्होंने एक सभा की योजना की तो विरोधियों ने उसे भग करने का निश्चय किया। एक महात्मा बुलाये गए। सभा की कार्यवाही शुरू होते ही विरोधियों ने ईंट पत्थर फैंकने शुरू किए। लोगों में घबराहट फैल गई। नेताओं के भी रंग उड़ने लगे। पर यहां क्या ? महात्मा जी तो ईंटों की परवाह किए बिना बोलते ही जा रहे थे। उनके लिए मानो वे ईंट पत्थर नहीं, फूल पत्ते थे, जिनके प्रहार सहते, वे मुस्कराते हुए अपने शब्दों से अमृत वर्षा किए जा रहे थे। पर आखिर कितनी देर ऐसे चल सकता था। चोटों के कारण शरीर से रक्त बहना शुरू हो गया और कुछ देर बाद अत्यन्त निर्बल अवस्था में महात्मा जी गिर पड़े। पर मूर्छित होने से पहले उन्होंने अन्तिम अर्जना की। अच्छा अगर तुम्हारी यह इच्छा है तो अब से मैं यहीं रहूंगा और तब तक वहां से हिलूंगा नहीं जब तक यहां हिन्दू धर्म का उद्धार न होगा। इस के बाद महात्मा जी वहां रुक गए, और धीरे धीरे ईसाई बने सब हिन्दू अपने धर्म में लौट आए।

भय कितनी भयंकर वस्तु है, इसका प्रभाव हमें जीवन के अनेक भागों मे दिखाई देता है। एक सर्जन के पास एक स्त्री आई और उसने कहना शुरू किया कि उसे अन्दर ही एक गिल्टी हो गई है। डाक्टर बार बार उसका आपरेशन कर चुका था और वह गिल्टी काट भी दी थी। एक बार बिजली का धक्का लगने से उसे यह फिर वहम हो गया कि उसे दुबारा गिल्टी हो गई है और बिना आपरेशन के वह किसी भी तरह ठीक नहीं की जा सकती। सर्जन ने उसे बहुत समझाया, पर गिल्टी का वहम या डर किसी भी तरह दूर न हो सका। सर्जन ने उसका नकली आपरेशन किया उस स्त्री को आपरेशन की मेज पर लिटा कर इतनी दवा सुंघा दी गई कि वह अर्ध मूर्छित हो गई। वह केवल सुन और अनुभव कर सकती थी, देख नहीं सकती थी। सर्जन और नर्स आपरेशन का अभिनय कर रहे थे। रोगी के आपरेशन वाले अंग पर बर्फ का पानी बूंद-बूंद कर डालते रहे जिससे रोगी को मालूम हो मानो पट्टियां बांधी जा रही हैं, फिर उसे एंबुलैंस में डाल कर पहुंचाया गया। आपरेशन के इस अभिनय के फलस्वरूप वह कमजोर हो गई। दस दिनों तक यह बिस्तर पर लेटी रही और अन्त में ठीक हो गई।

वास्तव में उसका गिल्टी का भय एक काल्पनिक भय था और वह कल्पना से ही दूर भी कर दिया गया। जीवन में हम भी वास्तव में कल्पना से ही भयभीत होते रहते हैं।

इस वेद मन्त्र में भयों से बचने के लिए और अपने जीवन के मार्ग को सफल बनाने के लिए बताया गया है कि लोगों ? तुम भयभीत मत हो। डरो मत ! क्योंकि सर्वज्ञ, सर्व द्रष्टा, सर्व शक्तिशाली प्रभु हमारा उत्तम रक्षक है। वह अपनी आत्मिक शक्ति से युक्त हो कर हमारा सदा रक्षण कर रहा है। उसके प्रति विश्वास लाने से हम सर्वत्र अभय हो सकते हैं। उस समय हमें उस अद्भुत साहस की प्राप्ति होगी कि संसार की कोई भी कठिनाई हमारा मार्ग न रोक सकेगी। वास्तव में होता यह है कि प्रभु के प्रति विश्वास की भावना रख कर हम उसके जितना निकट होते जाते है, उतनी ही हमारी शक्तियां बढ़ती जाती हैं। यदि हम उस प्रभु के साथ अपनी एकता का अनुभव कर लें तो हमारे जीवन में एक नया उत्साह, नया उल्लास व नई शक्ति आ जाएगी।

सद्विचार मनुष्य को ईश्वर के निकट ले जाते हैं। ईश्वर स्मरण से ही हम उसके साथ स्वाभाविक सम्बन्ध बना लेते हैं। तब संसार मे हमें कभी भी अकेलापन अनुभव नहीं होता, क्योंकि हमारे साथ सदा हमारा ईश्वर रहता है। उस महान् स्रष्टा, उस महान रक्षक से नाता जोड़ कर हम अपने निर्माण कार्य में हाथ बटा सकते हैं। हमारा जीवन भी तभी सच्चा मानव जीवन होगा जब हम इस सुन्दर पृथ्वी को और भी सुन्दर बनायेंगे। मनुष्यता को ईश्वरत्व के पास ले जाएंगे। मनुष्य के भीतर एक ऐसा रूप बसा है जो बिल्कुल निष्कलंक और और सुन्दर है, जो न कभी पैदा हुआ है। और न कभी मरेगा वही यह आत्मा है जिसका यही स्वरूप कायम रखना।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

व्याख्यान माला—

धर्म से ही सुख को पाया जाता है

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर

ओ३म्

(11 अगस्त से आगे)

आर्ष धर्मोपदेशं च वेद शास्त्राविरोधिना ।
यस्तर्केणानुसन्धत्ते स धर्मं वेद नेतरः ॥37॥

वेदादि सत्य शास्त्रों के अनुकूल तर्क द्वारा सत्य सिद्ध तथा ऋषि-महर्षि प्रोक्त आर्ष धर्म को जो धारण करता है वही धर्म को जानता है दूसरा नही ।

केवलं शास्त्रमाश्रित्य न सुकार्यो धर्म निर्णयः ।
युक्ति हीन विचारेतु धर्म हानिः प्रजायते ।38।

धर्म का निर्णय तो केवल शास्त्र का आधार लेकर ही अच्छी प्रकार करना चाहिए, क्योंकि युक्ति रहित विचार से तो धर्म की हानि ही होती है ।

श्रुतिपराः ये सन्तुष्टाः महात्मानो महाबलाः ।
धर्मं पन्थान मारूढास्तानुपासस्व पृच्छ च ।39।

जो सन्तुष्ट वृत्ति वेदाभ्यासी महान् शक्ति के स्वामी निरन्तर धर्म मार्ग पर आरूढ रहते हैं तू उन महात्मा लोगों के समीप जाकर आश्रय ले और धर्म की बात पूछ ।

अवधार्य मतं तेषां बुधानां धर्म दर्शिनाम् ।
नियच्छ परया बुद्धया चित्तमुत्पथगामि वै ।40।

उन धर्म दर्शी विद्वानों के मत को अपने अन्तःकरण में धारण करके उलट रास्ते जाने वाले अपने चित्त को अपनी श्रेष्ठ बुद्धि द्वारा रोक ।

मनो हि सर्वभूतानां सन्तनोति शुभाशुभम् ।
अशुभेभ्यस्तदाक्षिप्य शुभेऽर्थे चावधारय ।41।

मन ही सब (भूत) प्राणियों के शुभ और अशुभ का निर्माण करता है । अतः उस मन को अशुभ भावों से खींचकर शुभ विचारो मे लगा ।

सोपानभूतं स्वर्गस्य मानुष्यं प्राप्य दुर्लभम् ।
तथात्मानं समाधत्स्व भ्रश्यसे न पुनर्यथा ।42।

स्वर्ग की सीढ़ी रूप इस दुर्लभ मनुष्य जन्म को पाकर तू अपने मन को अथवा अपने आत्मा को इस तरह से सिद्ध कर जिससे तू फिर कभी न गिर सके अर्थात् उत्तम कर्म करते हुए जन्म मरण के बन्धन से मुक्त हो ।

यदा नियति कार्पण्यमर्थेषामेव रोचते ।
न हृयत्यन्तं धनवन्तो भवन्ति सुखिनोऽपि वा ।43।

जब इन कृपणों को कृपणता अच्छी लगती ही है तो लगे, परन्तु उन्हें जान लेना चाहिए कि ऐसे मनुष्य अत्यधिक धनवान् होकर भी जरूरी नहीं कि सुखी हों अतः सुखी रहने के लिए हे कृपणो ? कृपणता छोड़कर उदार बनो ।

आनृशंस्यमहिंसा चाप्रमादः संविभागिता ।
श्राद्धकर्मातिथेयञ्च सत्यमक्रोध एव च ।44।
स्वेषु दारेषु सन्तोषः शौचं नित्यानुसूयता ।
आत्म ज्ञानं तितिक्षा च धर्माः साधारणा नृप ।45।

हे राजन् ! क्रूरता न करना अहिंसा, अप्रमादता, बांटकर खाना, श्राद्ध कर्म अतिथि सेवा, सत्य बोलना, क्रोध न करना । अपनी स्त्री से सन्तोष रखना, बाहर और अन्दर की पवित्रता रखना, किसी से घृणा न करना, आत्म ज्ञान और सहनशीलता ये सब साधारण धर्म ही हैं ।

सुखं हि वाञ्छते सर्वस्तच्च धर्म समुद्भवम् ।
तस्माद्धर्मं सदा कार्यः सर्व वर्णै प्रयत्नतः ।46।

सब सुख ही चाहते हैं पर सुख तो धर्म से पैदा होता है इसलिए सभी वर्णों को प्रयत्न पूर्वक सदा धर्म का पालन करना चाहिए ।

यज्ञ दानतपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् ।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ।47।

विद्वान् मनुष्य को यज्ञ, दान और तप ये तीन कर्म तो कभी छोड़ने ही नहीं चाहिए, क्योंकि यज्ञ, दान और तप ये विद्वानों को पवित्र करने वाले हैं ।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ।48।
चतुर्भिरपि चै वैतैर्नित्यमाश्रमिभिर्द्विजैः ।
दश लक्षणको धर्मः सेवितव्यः प्रयत्नतः ।49।

धैर्य, क्षमा, इन्द्रिय दमन, मन, वचन, कर्म से चोरी न करना, बाहर-भीतर की पवित्रता, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य, क्रोध न करना इन दश लक्षणों से युक्त धर्म कहलाता है । ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास, इन चारों आश्रमों को तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन द्विजों को ये दस लक्षण वाला धर्म प्रयत्न पूर्वक सेवन करना चाहिए ।

पुत्रैर्मित्रैर्गृहैर्दारैर्वियुक्तस्य धनेन वा ।
मग्नस्य व्यसने कृच्छ्रे पुंसः श्रेयस्करी धृतिः ।50।
धैर्येण युक्तं सततं शरीरं न विशीर्यते ।
विशोकता सुखं धत्ते धत्ते चारोग्यमुत्तमम् ।
आरोग्याच्च शरीरस्य स पुनर्विन्दते श्रियम् ।51।

पुत्रों से मित्रों से घरों से तथा स्त्रियों से नियुक्त मनुष्य का अथवा उन से रहित मनुष्य का या कठिन विपत्ति में फंसे मनुष्य का कल्याण करने वाली धृति धैर्य शक्ति ही होती है । क्योंकि लगातार धैर्य से युक्त शरीर कभी कमजोर नहीं होता, शोक दूर होता है सदा सुख और उत्तम आरोग्य मिलता है । मनुष्य फिर शरीर की पूर्व शोभा या तेज को प्राप्त कर लेता है ।

सपदी विलयमेतु राजलक्ष्मीरूपरि पतन्त्वथवा कृपाण धाराः ।
अपहरतुतरां शिरः कृतान्तो मम, तु मतिनमनागपैतु धर्मात् ।52।

चाहे मेरी राज्य लक्ष्मी इसी क्षण नष्ट हो जाए अथवा मेरे ऊपर अनन्त तलवारों के प्रहार हों, यमराज चाहे तो मेरा सिर ही क्यों न उड़ा दे । पर मेरी मति धर्म से एक क्षण भी न हटे ।

धर्माज्जन्म कुले शरीर पटुता सौभाग्यमायुर्बलम् ।
धर्मेणैव भवन्ति निर्मलयशोविद्यार्थसम्पदः ।
कान्तारच्च महाभयाच्च सततं धर्मः परित्रायते धर्मं ।
सम्यगुपासतां भवति हि स्वर्गापवर्गप्रदः ।33।

धर्म के कारण अच्छे कुल में जन्म, शरीर में पटुता स्फूर्ति, सौभाग्य, आयु और बल प्राप्त होते हैं । अत्यन्त भयावह जंगल से भी निरन्तर धर्म ही रक्षा करता है इसलिए धर्म की ही अच्छी प्रकार से उपासना करनी योग्य है । क्योंकि धर्म ही स्वर्ग (सुख) और मोक्ष का प्रदान करने वाला होता है ।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य समाज पर भ्रष्टाचार की छाया

यह एक ऐसा विषय है जो सम्भवत: सारे आर्य जगत् को झंझोड़ दे। कारण यह है कि आर्य समाज के जीवन के लगभग 110 वर्षों में उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि जनता में उसके विषय में यह भावना थी कि यह एक ऐसी संस्था है जहां साधारण व्यक्तियों के दिए गए दान का दुरुपयोग नहीं होता। इसलिए लोगों ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार सदा ही आर्य समाज को दान दिया। जिससे जो कुछ हो सका उसने दिया। जन-साधारण के दिल में आर्य समाज के लिए कितनी श्रद्धा थी, इसका कुछ अनुमान गुरुकुल कांगड़ी के उस भवन को देखकर लगाया जा सकता है जो हरिद्वार में गंगा के पार श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल विद्यालय के लिए बनवाया था। उसके एक 2 कमरे पर उस व्यक्ति के नाम का पत्थर लगा हुआ है जिसने उसके लिए रुपया दिया था इतना बड़ा भवन बनाने के लिए लाखों रुपए की आवश्यकता हो सकती थी। लेकिन श्री स्वामी जी महाराज ने किसी एक धन कुबेर के पास न जाकर जनता से दान मांगा और सब ने दिल खोलकर उन्हें दिया। क्योंकि लोग समझते थे कि वह जो कुछ दे रहे हैं उसका दुरुपयोग नहीं होगा। गुरुकुल का जो भवन इसके पश्चात् हरिद्वार में भी बनाया गया था उसके भी एक 2 कमरे पर किसी न किसी दानी के नाम का पत्थर लगा हुआ है। अब तो गुरुकुल विश्वविद्यालय को सरकार से अनुदान मिल जाता है। लेकिन जो भवन अब खड़े हैं वह सरकार के अनुदान से नहीं जनता के दान से बने हैं। इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि सर्व-साधारण आर्य समाज के लिए क्या कुछ दिया करते थे।

गुरुकुल के अतिरिक्त कई आर्य समाजों के भवन भी केवल लोगों के दान से ही बने हैं। देहली मे आर्यसमाज दीवान हाल केवल एक व्यक्ति के दान से बनाया गया था। आर्य समाज हनुमान रोड भी लोगों के दान से ही बना था। लाहौर में गुरुदत्त भवन के नाम का एक विशाल भवन था जहां आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का कार्यालय और एक बहुत बड़ा पुस्तकालय भी था। उसी के साथ एक उपदेशक विद्यालय भी था। जहां से कई बड़े 2 विद्वान् उपदेशक बनकर निकले थे। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज और श्री स्वामी वेदानन्द जी महाराज इस उपदेशक विद्यालय को चलाया करते थे। आर्य समाज की बहुत सी सम्पत्ति पाकिस्तान में रह गई है वह भी करोड़ों की होगी और उसे खड़ा करने में हमारे पूर्वजों ने स्थान 2 पर भटक कर पाई 2 जमा की थी और इतना कुछ बनाया था। उनकी निःस्वार्थ और निष्काम सेवा का ही यह परिणाम था कि आर्य समाज इतना फैल गया था। लोग आर्य समाज को धन देते थे क्योंकि वह समझते थे कि आर्य समाज को दिए गए धन का कभी भी दुरुपयोग नहीं होता। आर्य समाज और उनके नेताओं पर लोगों को इतना विश्वास होता था कि वह कई बार आंखें बन्द करके धन दे दिया करते थे। कोई आर्य समाजी यदि किसी अदालत में ब्यान देने जाता था और कह देता था कि वह आर्य समाजी है तो उसकी बात मान ली जाती थी।

यह सब कुछ लिखने से मेरा अभिप्राय: केवल यह बताना है कि आर्य समाज का नैतिक स्तर कितना ऊंचा रहा है। और इसका श्रेय उन महानुभावों को मिलता रहा है जिनके हाथ में आर्य समाज और उससे सम्बन्धित संस्थाओं की बागडोर रही है। मुझे यह सौभाग्य प्राप्त होता रहा है कि मैंने उनमें से कई महानुभावों को बहुत नजदीक से देखा है। वह अपने लिए बड़े से बड़ा कष्ट सहन करने के लिए तैयार रहा करते थे परन्तु आर्य समाज की कौड़ी का भी दुरुपयोग न होने देते थे और वह कहा करते थे कि लोग जो दान देते हैं वह धर्म प्रचार के लिए देते हैं। वह जानते थे कि कई व्यक्ति अपना और अपने बच्चों का पेट काट कर भी धर्म के लिए श्रद्धा से प्रभावित हो कर वह दान देते हैं। हमारा कोई अधिकार नहीं कि हम उसका किसी भी तरह दुरुपयोग करें। उनकी इस भावना का लोग आदर किया करते थे। इस लिए वह जो कुछ मांगते थे उन्हें मिल जाता था। आर्य समाज को कभी धन की कमी न हुई थी। इस लिए वेद प्रचार में हमें कोई कठिनाई पैदा न होती थी।

अब स्थिति कुछ बदल रही है, आर्यसमाज को अब उतना दान नहीं मिलता जितना पहले मिला करता था। इसके दो कारण हैं। एक यह कि अब उस स्तर के हमारे नेता ही नहीं रहे जिस स्तर के नेता लाखों रुपया इकट्ठा कर सकते थे। अकेले महात्मा मुन्शीराम जी ने गुरुकुल कांगड़ी खड़ा कर दिया था। महात्मा हंसराज जी ने डी. ए. वी. कालेज खड़ा कर दिया था। बड़ोदा में मास्टर आत्माराम जी ने एक बहुत बड़ा कन्या गुरुकुल खड़ा कर दिया था। हरियाणा में कई गुरुकुल खोल दिए गए थे। सारे देश में स्थान-2 पर स्कूल और कालेज खोले गए थे। कई स्थानों पर अनाथाश्रम खोले गए थे। देहरादून में आचार्य रामदेव जी ने कन्या गुरुकुल खोल दिया था। यह सब संस्थाएं हमें आर्य समाज के उस स्वर्णिम युग की याद दिलाती हैं। जब आर्य समाज का नैतिक स्तर बहुत ऊंचा था और इसमें एक कोड़ी का दुरुपयोग भी सहन न किया जाता था। जो व्यक्ति जनता के धन का दुरुपयोग करता है आर्य समाज में उसके लिए कोई जगह नहीं होती। आज ऐसे व्यक्तियों का सन्मान किया जाता है। और समझा जाता है कि उनके बिना कोई काम नहीं चल सकता।

मैंने इस लेख का शीर्षक आर्य समाज पर भ्रष्टाचार की छाया रखा है तो बिना किसी कारण के नहीं। जो कुछ मैं देख रहा हूं बहुत कम व्यक्तियों ने देखा होगा और यह अनुभव करता हूं कि यदि मैंने समय पर आर्य समाज को चेतावनी न दी तो मैं भी एक बहुत बड़े दोष का भागी बनूंगा। कोई मेरी सुने या न। इसकी चिन्ता न करते हुए आर्य जगत् को एक चेतावनी देना चाहता हूं कि आर्य समाज में भ्रष्टाचार सिर उठाने लगा है यदि इसे अभी से न रोका गया तो यह आर्य समाज को ले डूबेगा। यह घुन की तरह अन्दर ही अन्दर इसे खा रहा है। इस लिए अत्यन्त गम्भीरता के साथ इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। इस भ्रष्टाचार के कई रूप हैं। उनके विषय में आगे चल कर अपने विचार आर्य जनता के सामने रखूंगा।

—वीरेन्द्र

जन्माष्टमी विशेषांक के बाद दीपावली विशेषांक

आर्य मर्यादा के कृष्ण जन्माष्टमी विशेषांक के बाद अब दीपावली विशेषांक की तैयारी आरम्भ कर दी गई है। कृष्ण जन्माष्टमी अंक की कई पाठकों ने सराहना की है। हमें प्रसन्नता है कि पाठक और आर्य जनता आर्य मर्यादा के विशेषांकों को पसन्द कर रही है। इसी से हमें उत्साह मिल रहा है कि हम और भी अच्छे और उपयोगी लेखों से भरपूर आकर्षक विशेषांक प्रकाशित करें।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली) पर आर्य मर्यादा का एक और प्रभावशाली विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। इसका आकार कुछ बड़ा होगा और यह हजारों की संख्या में प्रकाशित होगा। इसके लिए हम जहां आर्य समाजों व शिक्षण संस्थाओं से व आर्य बन्धुओं से आर्डर भेजने के लिए अभी से प्रार्थना करते हैं। वहां हमारी सभी से यह भी प्रार्थना है कि आप विज्ञापन भेजकर अपनी इस धार्मिक पत्रिका की सहायता करें। बिना धन के आज के युग में कोई कार्य नहीं हो सकता। आर्य मर्यादा के स्तर को बढ़ाने के लिए भी धन की आवश्यकता है क्योंकि जितना हमारे पास धन होगा उतना ही हम आकर्षक अंक प्रकाशित कर सकेंगे। कागज भी आज कल बहुत मंहगा है और छपाई आदि का भी खर्चा बढ़ता चला जा रहा है। केवल ग्राहकों पर आधारित कोई भी समाचार पत्र सफलता पूर्वक नहीं चल सकता। विज्ञापन ही किसी समाचार पत्र का घाटा पूरा कर सकते हैं।

इसलिए हमें सरकार की ओर से तो कोई विज्ञापन मिल ही नहीं सकते। आर्य जनता ही हमारी सहायता कर सकती है। शिवरात्रि विशेषांक की भान्ति इस बार भी हम चाहते हैं कि सभी आर्य बन्धु हमें विज्ञापन भेजकर आर्य मर्यादा को तथा सभा को अपना पूरा 2 सहयोग दें।

आप अपने किसी पूज्य की स्मृति में अपने व्यवसाय सम्बन्धी आदि विज्ञापन भेज सकते हैं। हम यह अवश्य चाहते हैं कि जो भी विज्ञापन छपे उसमें ऐसी कोई बात न हो जो आर्य समाज के सिद्धान्तों के विपरीत हो। आशा है आर्य बन्धु अभी से इस ओर ध्यान देंगे।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

पंजाब के आर्य साहित्यकार मास्टर दुर्गा प्रसाद

ले.—डा. श्री भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ़

आर्य समाज के प्रारम्भिक युग में जिन लेखकों ने अंग्रेजी में उच्चकोटि के साहित्य का प्रणयन किया, उनमें पंडित गुरुदत्त के बाद जिनका नाम लिया जा सकता है, वे हैं मास्टर दुर्गा प्रसाद। खेद है कि उनके जीवन तथा क्रिया-कलापों के सम्बन्ध में बहुत कम सामग्री उपलब्ध होती है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के इतिहास के लेखक पंडित चमूपति ने श्री दुर्गा प्रसाद के सम्बन्ध में लिखा था—मा, दुर्गा प्रसाद में आत्मोत्सर्ग की मात्रा बहुत अधिक थी। वे एक सच्चरित्र पुरुष थे। उन्होंने पत्रों का प्रकाशन किया, पुस्तकें लिखीं वेद का अनुवाद किया सब प्रकार से आर्य समाज की अनथक सेवा की। शाकाहार के प्रचारार्थ वैजिटेरिन्यन सोसायटीभी बनाई, हार्बिजर नाम का पत्र भी निकाला। ऋषि भक्ति तथा वेद भक्ति उनकी नस-नस में समाई हुई थी। वे ब्रह्मचर्य का क्रियात्मक उदाहरण थे। पं. नरदेव शास्त्री लिखित आर्य समाज के इतिहास के आधार पर उनकी जीवनी के सम्बन्ध में कुछ तथ्य प्रस्तुत किए जाते हैं।

यद्यपि मास्टर दुर्गा प्रसाद का कार्य क्षेत्र पंजाब था, किन्तु उनका जन्म मध्य प्रदेश के सागर नगर में हुआ। मास्टर जी के पिता का नाम लाला उमरावसिंह तथा माता का नाम धना बाई था। जाति से ये कायस्थ थे। दुर्गा प्रसाद जब आठ वर्ष की आयु के ही थे, तभी उनकी माता का निधन हो गया और इनके पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। तब ये अपने मामा के घर भोपाल चले गये। तीन वर्ष के पश्चात् नानी का देहान्त हो जाने पर पिता इन्हें ननिहाल से ले आये। सौतेली माता के कारण इन्हें बचपन में बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। पढ़ने लिखने की कोई व्यवस्था नहीं हुई। इधर-उधर मारे-मारे फिरते रहे। दो वर्ष नागोद में कम सरयट के गुमाश्ते रहे। इस कार्य के समाप्त हो जाने पर फिर पढ़ने लगे। पिता ने सहायता करना बन्द कर दिया। जैसे-तैसे एफ-ए में पहुंचे ही थे कि उनके पिता का भी देहान्त हो गया। प्रचलित प्रथा के अनुसार बाल्यावस्था में ही उनका विवाह भी हो गया था। एक दो वर्ष जबलपुर में पढ़ते रहे, वहां से म्योर सैण्ट्रल कालेज इलाहाबाद में पढ़ने के लिए आये। प्रयाग में ही इन्हें स्वामी दयानन्द के व्याख्यान सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। बरेली के शास्त्रार्थ के समय ये स्वामी दयानन्द जी से मिलने बरेली गए। अब इनके विचार सर्वथा स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं के अनुकूल हो गए।

मास्टर दुर्गा प्रसाद ने लगभग 10 वर्ष तक सेना के नार्मल स्कूल में अध्यापन कार्य किया। इसी बीच इनकी पत्नी का देहान्त हो गया। अब ये पूर्ण विरक्त भाव धारण कर समाज सेवा और आत्मचिंतन में लग गए। अब इनका कार्य क्षेत्र लाहौर बन गया। यहां रहते हुए इन्होने दयानन्द हाई स्कूल की स्थापना की जो 11 वर्ष चल कर बन्द हो गया। 1890 ई. में जब आर्य समाज में कालेज दल और गुरुकुल दल के नाम पर विभाजन हुआ, तो मास्टर दुर्गाप्रसाद गुरुकुल दल के नेता महात्मा मुन्शीराम के दहिने हाथ सिद्ध हुए। गुरुकुल विभाग के ये मुख्य नेता और प्रवक्ता थे। लाहौर में मास्टर जी ने विरजानन्द प्रैस की स्थापना की जिसके माध्यम से विभिन्न उपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ। शाकाहार के समर्थन में हार-बिजर आफ हैल्थ नामक एक पाक्षिक पत्र भी दुर्गा प्रसाद ने प्रकाशित किया जो 1915 ई, तक निकलता रहा।

मास्टर दुर्गाप्रसाद का साहित्य प्राय; अंग्रेजी में है। इनके द्वारा लिखित ग्रन्थों की संख्या लगभग 37 बताई गई है। उपलब्ध ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है :—

1- सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद

स्वामी दयानन्द के सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ के अंग्रेजी अनुवाद का विचार मास्टर जी के मस्तिष्क में 1885 में ही अंकुरित हो गया था, किन्तु मूल ग्रन्थ के प्रकाशनाधिकार विषयक बाधाओं के कारण वे इसे शीघ्र ही क्रियान्वित नहीं कर सके। उन्होंने अनुवाद का कुछ अंश श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा के पास सम्मति हेतु भेजा तथा उनसे प्रशंसा एवं प्रोत्साहन पाकर वे इस कार्य में सर्वात्मना लग गये। कालान्तर में उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास का अंग्रेजी भाषान्तर शीर्षक से 1900 ई. में विरजानन्द प्रैस लाहौर से प्रकाशित किया। इसमें स्वामी दयानन्द की जीवनी की संक्षिप्त रूपरेखा के साथ-साथ स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद भी दिया गया था। तदनन्तर सत्यार्थ प्रकाश के 7-8-9 तथा 10 वें समुल्लासों का अनुवाद शीर्षक से 1903 ई. में प्रकाशित हुआ। इसमें इन समुल्लासों के साथ-साथ स्वामी जी के बनारस जालन्धर लखनऊ तथा बरेली में हुए शास्त्रार्थों का विवरण भी प्रस्तुत किया गया था। समग्र ग्रन्थ का प्रकाशन 1908 में प्रकाशित हुआ।

अनुवादक ने अपने ग्रन्थ को राय रोशनलाल बैरिस्टर एट-ला को समर्पित किया था और यह उन्हीं की आर्थिक सहायता से प्रकाशित भी हुआ था। ग्रन्थ के प्रारम्भ में स्वामी जी की आत्म-कथा तथा उनकी यात्राओं का विस्तृत वर्णन भी संकलित किया गया था। जन-ज्ञान प्रकाशन दिल्ली ने मास्टर जी के इस ग्रन्थ को 1970 ई. में पुनः प्रकाशित किया। परन्तु इसके प्रारम्भिक अंश (स्वामी दयानन्द की आत्म कथा उनके यात्रा विवरण) को उस नवीन संस्करण में संकलित नहीं किया। इन पंक्तियों के लेखक ने इस संस्करण के अन्त में सत्यार्थ प्रकाश के अनुवादक मास्टर दुर्गा प्रसाद की जीवनी की एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत कर दी थी। स्वामी दयानन्द के एक अन्य ग्रन्थ गो-करुणानिधि का भी अंग्रेजी अनुवाद शीर्षक से मास्टर जी ने किया था। पंच महायज्ञ विधि (स्वामी दयानन्द कृत) के अंग्रेजी अनुवाद की भी सूचना मिलती है।

दुर्गा प्रसाद ने स्वामी दयानन्द की आत्म कथा का सम्पादन 'दी टरमेफ आफ टूथ' शीर्षक से किया था। इसमें आत्म वृत्तान्त के अतिरिक्त स्वामी जी के बरेली में रैवरेण्ड स्काट तथा मुसलमीन मौलवियों से हुए शास्त्रार्थों का विवरण संकलित किया गया था। स्वामी जी की एक संक्षिप्त अंग्रेजी जीवनी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती शीर्षक 1883 ई, में प्रकाशित हुई। इसमें संक्षिप्त जीवन वृत्त के अतिरिक्त स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद भी किया गया था। साथ ही ए, जी, डेविस के स्वामी जी विषयक उद्गार तथा बैरिस्टर रामदास छबीलदास लिखित संस्कृत के 20 छन्द (सानुवाद) भी इसमें संकलित थे। पुस्तक विरजानन्द प्रैस लाहौर से प्रकाशित। इनके द्वारा अन्य लिखे गये ग्रन्थों की संख्या बहुत अधिक है।

—

जिला आर्य सभा भटिण्डा का वार्षिक निर्वाचन

जिला आर्य सभा भटिण्डा का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान—श्री बजीरचन्द जी भटिंडा, उपप्रधान—श्री शिवचन्द जी मानसा, मन्त्री—श्री ओमप्रकाश आर्य वानप्रस्थी भटिंडा, उपमन्त्री—श्री श्री महाशय चतरूराम जी आर्य भुच्चो मण्डी, कोषाध्यक्ष—श्री तरसेम कुमार जी गोनियाना मण्डी.

अन्तरंग सदस्य—श्री कृष्ण कुमारजी भटिंडा,

मन्त्री

गोविन्दराम जी की माता का निधन

अत्यन्त दुःख के साथ यह सूचित किया जा रहा है कि गोविन्दराम, जैसिंह, शेरसिंह, स्व, भक्तराम तथा बंसीलाल की 90 वर्षीया वृद्धा माता जी का लम्बी बीमारी के कारण 4-8-85 को सायं 7 बजे देहान्त हो गया है। दाह-संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से मा. विद्यानिधि और गोविन्दराम आर्य ने परिवार के सदस्यों के साथ सम्पन्न कराया।

इस अवसर पर आर्य समाज को श्रद्धापूर्वक दान भी दिया गया। दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई।

—मन्त्री आर्य समाज

परीक्षा परिणाम

गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी देवराज गर्ल्ज हायर सैकण्डरी स्कूल जालन्धर की ग्यारहवीं कक्षा का परिणाम शत प्रतिशत रहा। 232 छात्राओं ने परीक्षा दी जिनमें 45 छात्राओं ने छात्र-वृति प्राप्त की। याद रहे यह विद्यालय उत्तरी भारत में नारी शिक्षा को प्रदान करने में अग्रणी स्थान रखता है। इस वर्ष जिन छात्राओं ने विद्यालय की छवि को अच्छे अंक प्राप्त करके निखारा उन का ब्योरा निम्न है।

(1) ऊषा 687।800 (2) अनिता बस्टा 647।800 (3) सोनिया जैन 645।800 (4) मजीत 645।800 (5) जीवन माला 640।800 (6) कुसुम गुप्ता 618।800 (7) मृदुला खन्ना 605।800 (8) अनिता 613।800 (9) सोनू बांसा 608।800।

—सन्तोष सूरी — प्रिंसीपल

हमारा प्रतिनिधि कैसा हो

ले.—प्रा. श्री भद्रसेन जी,साधु आश्रम होशियारपुर

भारतीय संविधान और प्रशासन के प्रजातन्त्रात्मक होने से हमें लोक सभा, विधान सभा, नगरपालिका या पंचायत के रूप में कई बार अपने प्रतिनिधियों को चुनने का अवसर मिलता है। तब हमारे सामने प्रश्न उपस्थित होता है, कि हमारा प्रतिनिधि कैसा हो ? हम अपना प्रतिनिधि किस लिए चुनते हैं ? यदि हम इस पर विचार करें तो स्वभाविक रूप से स्वत: इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त हो जाता है। अर्थात् हमारे प्रतिनिधि ग्राम, नगर, प्रदेश और राष्ट्र रामराज्य, सुराज्य बन कर अपने नागरिकों के लिए समता सुरक्षा, स्वतन्त्रता समृद्धि और प्रगति देने में समर्थ हो सके। यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि योग्य उतरदायित्व पूर्ण व्यक्ति ही योग्य चिरस्थाई सुदृढ़ समृद्धिपूर्ण प्रशासन देने में सक्षम होता है। और ऐसा प्रजातन्त्रीय प्रशासन ही सब के लिए लाभप्रद हो सकता है। अत: हमारा प्रतिनिधि वही व्यक्ति हो, जो ऐसा करने में समर्थ हो।

कैसा प्रतिनिधि सुशासन दे सकता है इसका एक सुन्दर समाधान अथर्ववेद के बारहवें काण्ड के पृथिवी भूमि सूक्त में मिलता है। जहां बताया गया है कि अपनी पृथिवी मातृभूमि को कैसे सत्य शिव और सुन्दर बना सकते हैं। अर्थात् हमें अपने देश को उन्नत समृद्धिशाली बनाने के लिए क्या क्या करना चाहिए। प्रस्तुत प्रसंग की दृष्टि से इस सूक्त का पहला मन्त्र विशेष रूप से विचारणीय है

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म
यज्ञ पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं
पृथिवी न: कृणोतु ॥ 12-1

सत्यम्—मन-वाणी और कर्म की एकरूपता क्योंकि महात्माओं, सन्तों के जैसा मन में होता है, वैसा ही वाणी और व्यवहार में होता है। झूठे ही सोचते कुछ हैं, बोलते और कुछ हैं तथा उससे भिन्न ही करते है —मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकम् महात्मनाम्। कथनी और करनी में एक जैसापन हो, न कि हाथी के दांतों की तरह खाने के और दिखाने के और। कथनी और करनी में भेद न हो अर्थात् दुहरी जिन्दगी न हो, यही सदाचार है। बृहद—उदारता हृदय की विशालता सहानुभूति विशाल हृदय वाला ही सबके प्रति सहानुभूति व्यक्त कर सकता है, क्योंकि उसके व्यवहार में अपने पराए का भेदभाव नहीं होता। निष्पक्षपात वृति। ऋतम्—नियमों का पालन, संविधान के प्रति विश्वास भावना कर्त्तव्य परायणता। उग्रम्—प्रशासन के संचालनार्थ दृढ स्वभाव, न्याययुक्त सामाजिक नियमों का कठोर पालन। दीक्षा—योग्यता व्रतेन दीक्षामाप्नोति—किसी कार्य को करने से तत् विषयक योग्यता प्राप्त होती है कार्य कुशलम्। तप:—संयम, भूख प्यास आदि द्वन्द्व सहन की शक्ति, नियमित जीवन, सभी इन्द्रियों को अपने काबू में करना न कि उनके काबू में हो जाना अर्थात् विलासी जीवन का अभाव। ब्रह्म—ज्ञान शिक्षा, विद्या। और यज्ञ कर्म, दूसरों का भला, हित करने वाले कर्म अर्थात् दूसरों की भलाई करने की भावना। ये सत्य आदि गुण ही विकास, समृद्धि को धारण करते हैं। सत्य आदि गुणों से युक्त पृथिवी ही राष्ट्रवासियों के भूत-भविष्य और वर्तमान की रक्षिका एवं निर्मात्री होती है। तभी कोई देश दर्शनीय, प्रशंसनीय, विकसित, समुन्नत और समृद्ध होता है।

इस मन्त्र का सीधा सा भाव यही है कि जिस देश के नागरिक और विशेष रूप से प्रतिनिधि सत्य आदि गुणों से युक्त होते हैं, वही देश सुखी, सम्पन्न और समृद्ध हो सकता है। अत: हमारे प्रतिनिधि ऐसे ही हों, या उन्हीं को ही शासक पद पर प्रतिष्ठित करना चाहिए। जिनके जीवन और व्यवहार में इन गुणों का समावेश हो, अन्यथा बबलू के बीज बोकर आम खाने की आशा मात्र ही है।

प्रजातन्त्र देश के प्रतिनिधियों का सबसे मुख्य गुण सहानुभूति ही है, क्यों कि मतदाताओं को अपने विविध कार्यों के लिए प्राय: उसके पास जाना पडता है। जो बिना भेदभाव के हमेशा सब के कार्यों को करने के लिए उद्यत रहे, उसी को ही जनता का सच्चा प्रतिनिधि कहा जा सकता है। क्यों कि सहानुभूतिशील पुरुष में ही जनतन्त्र के दो मुख्य गुणजन सम्पर्क और जन सेवा होते हैं। इस का एक सुन्दर परीक्षण गत निर्वाचन के समय अम्बाला (हरियाणा) में हुआ।

निर्वाचन के दिनों में कुछ मतदाता मिल कर रात को पहले एक प्रत्याशी के पास गए और उससे निवेदन किया, कि हमारे पड़ोस के एक निरपराध व्यक्ति को झूठी शिकायत पर पुलिस वाले पकड़ कर थाने में ले गए हैं। अत: हमारे साथ थाने चलिए उसने कहा अब रात हो गई है, प्रात: काल आइए, मैं आपके साथ थाने चलूंगा। तब वे दूसरे प्रत्याशी के पास पहुंचे, उसने आने वालों की बात सुनने के बाद बहाना बना कर टाल दिया। जब वे सारे तीसरे प्रत्याशी के यहां पहुंचे और वह बात सुनते ही सोने वाले वस्त्रों में ही उनके साथ चल पडा। तब एक ने कहा आप वस्त्र तो बदल लें, उस ने उत्तर दिया, वस्त्रों की कोई बात नहीं, पहले दु:खी की मौके पर सहायता होनी चाहिए। तब उन्होंने सचाई बता कर धन्यवाद पूर्वक पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया। तभी तो अयोध्या सिंह उपाध्याय ने कहा है—

जो हो राजा और प्रजा दोनों का प्यारा,
जिस का बीते देश-प्रेम में जीवन सारा।
देश-हितैषी हमें चाहिए अनुपम ऐसा,
बहे देश हित की जिसकी नस-नस में धारा॥

प्रजातन्त्र राजनीति की असली जड़ यही है कि उस के प्रतिनिधि का जनता के साथ सीधा सम्बन्ध हो, वह उनके सुख-दु:ख में सहानुभूतिशील हो, आप भी उनके जैसा जीवन वैसी ही परिस्थितियों में बिताएं, न कि अलग-थलग रह कर। अत: प्रजातन्त्र की जड़-जन सम्पर्क, जन सेवा और जीवन व्यवहार में ही है।

इसलिए हमें वही प्रत्याशी अपने प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित करना चाहिए जिसके जीवन और व्यवहार में उपरोक्त गुण हों। अयोग्य, भ्रष्ट, संविधान के प्रति अनादर की भावना रखने वाला, सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन करने वाला, केवल अपना उल्लू ही साधने वाला और जन सम्पर्क एवं जन सेवा शून्य प्रत्याशी को किसी भी परिस्थितियों मे कभी भी अपना प्रतिनिधि नहीं चुनना चाहिए। जो शराब (पिला) धन (दे) और जात बिरादरी जैसे प्रलोभन देकर अपनी ओर आकर्षित करे, उसको तो कभी भी अपना प्रतिनिधि नहीं बनाना चाहिए। अत: मतदाताओ! आओ, जागो और मिल कर प्रतिज्ञा करो कि हमारा प्रतिनिधि केवल योग्यतम प्रत्याशी ही होगा।

—

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हमारे जीवन का उद्देश्य है। ऐसी जो महान् आत्माएं स्वच्छ और निर्मल होती हैं, उनका परमेश्वर से अटूट सम्बन्ध हो जाता है और वे कभी डरती नही।

ईश्वर के साथ एकता कर हम सच्चे रूप को पहचान लेते हैं। इससे हमें विश्वास हो जाता है कि हम मे ऐसी दिव्यता है जिसे कभी समाप्त नहीं किया जा सकता फिर मनुष्य किस से भयभीत होगा ? किस से डरेगा।

याद रख लीजिए भयपूर्ण विचार हमारी शक्ति का नाश करते है, रोगों को जन्म देते हैं, शान्ति का अपहरण करते हैं, जब सफलता आप से मिलना चाहती है तो उसे रोक कर आप को असफलता का दर्शन कराते हैं।

इसलिए निराशा और भय के काले बादलों पर आंख गड़ाना बन्द कीजिए और आशा तथा अपनी आत्म-शक्ति का दर्शन कीजिए। चिन्ता की आदत छोड़िए और समुज्ज्वल भविष्य की ओर दृष्टि उठाइए। निराशापूर्ण विचारों और भय पूर्ण आदतों का भय लाद कर अपने सिर को न झुकाइए। गर्दन ऊंची करके सुन्दर भविष्य की ओर देखिए। जिस शक्ति ने आपको जन्म दिया है, वह अपने पखों में भय, शोक, दु:ख और रोग से मुक्ति का रसायन लिए चारों ओर, आपकी रक्षा के लिए उड़ रही है, तैर रही है, सर्वश आपकी रक्षा की चिन्ता कर रही है। फिर भय कैसा ? जरा मुस्कराइए और उस शक्ति का स्वागत कीजिए। यही तो प्रभु की भक्ति है। कवि के शब्दो में में आइए उसमे कहे—

पहचान न पाया था जब तक तुम को हे मेरे जीवन धन।
तब तक जीवन दु:ख स्रोत रहा तब तक माना जन्म था बन्धन।
बाधाओं पर थी बाधाए, वैरी दल पर था वैरी दल।
कठिनाई पर भी कठिनाई, दुर्जय था यह ससार सकल।
हे विश्वनाथ! हे विश्म्भर! पर जब से शरण गही तेरी।
तब से तो मैं दिग्विजयी हूं, तब से संसृति दासी मेरी।
तेरे चरणों में मनको जब लगा चुका तो क्या डर है।
वांछित अब देने को उद्यत आहा! देखो दुनिया भर है॥
मन का जीता सब को जीता तुम को पाया सबको पाया।
है मरना जीना खेल मुझे, अब तेरे रस्ते पर आया॥
मुझ को अब कोई कमी नही, विश्वकोष मेरा ही धन,
मुझ मे अब कोई कमी नहीं, हूं पूर्ण पूर्ण अब मैं भगवान्॥

नेपाल में वैदिक धर्म के प्रचार की आवश्यकता

ले.—श्री दुर्गा बहादुर (नेपाली) 71-न्यू जवाहर नगर जालन्धर

नेपाल भारत का पड़ोसी देश है यह भारत के उत्तर मे स्थित है। नेपाल विश्व में भारत जैसा एक मात्र हिन्दू राष्ट्र है। हिमालय की गोद से बसा होने के कारण नेपाल को प्राय हिमालय राज्य कहते हैं। भारत नेपाल के विकास मे हर प्रकार की सहायता दे रहा है तथा सुनहरे भविष्य की कामना लेकर दोनो देश आगे बढ रहे हैं।

भगवान बुद्ध जैसा अहिंसक और राजा जनक जैसा ज्ञानी महापुरुष नेपाल की ही मिट्टी मे पैदा हुये थे। सीता। जैसी पतिव्रता नारी और भृकुटी जैसी धर्म का प्रचार करने वाली नारी भी नेपाल की मिट्टी मे ही पैदा हुई थी। पर आज दुःख इस बात का है कि नेपाल जैसे हिन्दू राष्ट्र मे भी ऋषि-मुनियो के जन्म स्थान में भी धर्म का लोप होता जा रहा है। भौतिकवाद का चकाचोंध बढ़ रहा है और आध्यात्मिक वाद का ह्रास वा नाश होता जा रहा है। आज नेपाल ठीक वसी ही स्थिति मे है जैसी स्थिति मे स्वामी दयानन्द के आने से पहले भारत था।

नेपाल मे बलि पूजा बहुत है। जिन्दा पशुओ की मन्दिर मे बलि दी जाती है, उस परम पिता परमात्मा को खुश करने के लिए इसे रोकने के लिए ना तो कानून बनाए गए हैं न ही स्कूलो मे पढाया जाता है कि भगवान पशु की बलि देने से खुश नही होते। नेपाल सरकार भी बलि पूजा रोकने के लिए बिल्कुल सहमत नहीं है।

नेपाल मे शराब भी बहुत पी जाती है। शराब के लिए भी मना करने वाला नेपाल मे आज तक कोई नही आया और तो बात ही क्या नेपाल मे धर्म के नाम पर मखौल किया जाता है। सिर्फ मखौल करना, ही नही पर उसे मारना, पिटना और भगा देना जैसा कुकर्म भी किया जाता है।

नेपाल मे छूत अछूत छोटा-बडा बाल-विवाह बहुत-विवाह आदि जैसी कुरीतिया पाई जाती हैं। नारी जाति के लिए बिल्कुल अधिकार नहीं की वे भी कुछ कर सकें। नारी जाति को सिर्फ सन्तान उत्पति का साधन माना जाता है। बिल्कुल नारी जीवन भर चार दिवारी के अन्दर ही रहती है और नारी को हर अधिकार से वंचित रखा जाता है। नेपाल की नारी यह नहीं जानती कि विश्व की नारी को उच्च स्थान में पहुंच चुकी है, वे भी हम जैसी ही हैं।

नेपाल में बलि पूजा, मूर्ति पूजा रोकने के लिए और कुरीतियों दूर करने के लिए साथ में नारी जाति को अधिकार दिलाने के लिए किसी एक का काम नहीं है. इस काम के लिए किसी संस्था या सब की जरूरत है, आर्य समाज के बिना यह कार्य पूर्ण हो ही नही सकता पर जहा धर्म का नाम ही नही हो और धर्म के नाम पर हसी उडाई जाती है वहा समाज की स्थापना करेगा कौन ? जहा की सरकार खुद ही गरीबो को कुचलने के प्रयास में हो वहा गरीबो को कौन उठाएगा। और जहा की सरकार ही बली पूजा रोकना नहीं चाहती उस देश में बलि पूजा समाप्त करेगा कौन ?

मेरे विचार मे यह कार्य आर्य समाज ही कर सकता है पर सिर्फ कोरा विचार करने की क्षमता मेरे में नही अगर हो भी जाए तो साथ देने वाला आदमी बिरला ही मिलेगा जो धर्म को जानता और मानता हो इस दशा मे नेपाल मे आर्य समाज की स्थापना और धर्म प्रचार प्रसार करना कोई आसान काम नही है। इसीलिए मैं भारत के आर्य जनो आर्य समाजियो से पूछना चाहता हू कि क्या आज भी नेपाल में आर्य समाज की स्थापना नही हो सकती है। वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार हो सकता है या नही ? और आप भी नेपाल में आर्य समाज की स्थापना करना चाहते हैं या नही ?

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना की ओर से गत दिनो मासिक पारिवारिक सत्संग श्रीमती शकुन्तला खुराना अध्यापिका के निवास स्थान रेढी मुहल्ला म, न, 1670 लुधियाना में हुआ। इस अवसर पर श्रीमती यशवती जी भल्ला का प्रवचन हुआ। विषय था रामायणादि धार्मिक ग्रन्थो में मिलावट और उससे हानियां।

इस उपदेश का आई हुई बहिनों पर बहुत प्रभाव पड़ा। कई बहिनो ने इस अवसर पर भजन भी सुनाए। सारा कार्यक्रम बड़ा प्रभावशाली रहा।

—निर्मला बेरी मन्त्राणी

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों व आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी महानुभावों से एक आवश्यक निवेदन

श्रीमन्नमस्ते।

अब जब कि पंजाब में चुनाव करवाये जा रहे हैं, इसलिए भिन्न-2 राजनैतिक दल अपना प्रचार भी प्रारम्भ कर रहे हैं। बाहर की परिस्थितियां ऐसी नहीं कि पहले की तरह कोई जनसभाएं हो सकें। ऐसी स्थिति में सम्भव है कि कुछ राजनैतिक दल आर्य समाज मन्दिर या हमारी शिक्षा संस्थाओं में अपना प्रचार करने के लिए हमसे कुछ स्थान मांगे। इस विषय में सभा का यह निश्चित मत है कि किसी भी राजनैतिक दल को अपने प्रचार के लिए न तो समाज मन्दिर दिया जाए न अपनी किसी शिक्षा संस्था में उनको कोई बैठक या सभा करने की अनुमति दी जाए। यदि किसी अधिकारी ने इस आदेश की अवहेलना की तो सभा को उसके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करनी पड़ेगी। हम अपने मन्दिरों और शिक्षा संस्थाओं को राजनैतिक दलों के दंगल का अखाड़ा नहीं बनाना चाहते, इसलिए किसी भी राजनैतिक दल को आर्य समाज मन्दिर में या किसी शिक्षा संस्था में अपनी बैठक करने की कोई अनुमति न दी जाए।

इस चुनाव में आर्य समाज ने किसका पक्ष लेना है, किसका विरोध करना है, शीघ्र ही पंजाब राजार्य सभा की ओर से आपको आदेश मिल जाएगा।

—वीरेन्द्र
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य वीरदल हरियाणा का नौंवा प्रान्तीय महा सम्मेलन 20,21,22 सितम्बर को कैथल में होना निश्चित

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा का नौंवा प्रान्तीय महा सम्मेलन इस वर्ष 20 से 22 सितम्बर तक श्रीमती इन्दिरा गान्धी कन्या महाविद्यालय कैथल में बड़ी धूमधाम से मनाया जाना निश्चित हुआ है। सम्मेलन के अध्यक्ष लाला रामगोपाल जी वानप्रस्थ, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली होंगे।

शुक्रवार 20 सितम्बर की रात्रि को आर्य वीर गोष्ठी तथा विशाल कवि सम्मेलन होगा शनिवार 21 सि. को प्रात यज्ञ मे प्रो. रामविचार जी का प्रवचन होगा। साय 3 बजे आर्य वीरो की भव्य रैली नगर के मुख्य मार्गों से गुजरेगी। इसमें 1000 आर्य वीर पूर्ण गणवेश मे भाग लेंगे। रात्रि को राष्ट्रीय सम्मेलन और आर्य समाज सम्मेलन होगा जिनमें प्रो. शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा पं, बाल दिवाकर जी हंस (प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्य वीर दल) आचार्य सत्यप्रिय जी (हिसार) डा, राम प्रकाश जी (चण्डीगढ) भी भाषण देंगे।

रविवार 22।9 को प्रात: प. शिव कुमार जी शास्त्री का प्रवचन यज्ञोपरान्त होगा। "आर्य वीर दल और आर्य समाज" सम्मेलन स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे होगा मुख्य वक्ता श्री मीरूराम जी, प्रिंसपल सर्वदानन्द जी, श्री चन्द्र प्रकाश सत्यार्थी आचार्य सत्यप्रिय जी होंगे।

स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती यज्ञ के ब्रह्मा होंगे, आचार्य तथा गोष्ठी का संयोजन आचार्य देवव्रत जी (उपप्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्य वीर दल) करेंगे। कवि सम्मेलन का आयोजन डा, राणा प्रतापसिंह गन्नौरी करेंगे। सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री बाबूराम जी गुप्ता एडवोकेट होंगे। सम्मेलन के संयोजक श्री श्री हरी राम जी आर्य मण्डलपति होंगे।

आप सभी इस महत्वपूर्ण सम्मेलन में सपरिवार, इष्ट मित्रों सहित भारी संख्या में सादर निमन्त्रित हैं। कृपया इस सम्मेलन में भाग लेकर आर्य शक्ति एवं एकता का परिचय दें। दल की तन मन धन से सहायता भी करें।

—अजीत कुमार आर्य
मन्त्री

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यानमाला

आर्य समाज- उपलब्धियां, सीमाएं और अपेक्षाएं दयानन्द सरस्वती के विचार—समय की कसौटी पर

ले.—डा. भवानीलाल जी भारतीय आचार्य व अध्यक्ष दयानन्द चेयर पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ

(25 अगस्त से आगे)

अपने ग्रन्थों मे यत्र तत्र उपासना की चर्चा करते हुए दयानन्द ने योग-साधना पर अत्यधिक बल दिया है। चाहे हम 'सत्यार्थ प्रकाश' वर्णित उपासना प्रकरण (सप्तम समुल्लास) को लें अथवा 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' मे विवेचित 'उपासना के विषय, को देखें, हमें सर्वत्र योगांगो का विवेचन ही मिलेगा। दयानन्द ने स्वय पातञ्जल योग पद्धति का अनुकरण कर समाधि अवस्था का साक्षात्कार किया था। यम, नियमादि की व्यवस्थित साधना के अनन्तर वे योग के विभिन्न सोपानो पर चढते हुए निर्विकल्पक समाधि की स्थिति को प्राप्त कर पाये थे। परन्तु मध्य युग मे योग के नाम पर जैसी अटपटी एव भ्रष्ट साधनायें चल पडी थीं, दयानन्द का उनसे स्पष्ट वैमत्य था। वे न तो हठयोग की उन साधनाओं के पक्षपोषक थे, जो केवल शारीरिक क्रियाओ को ही महत्त्व देती हैं और न वे योग के नाम पर नाना गुह्य एव रहस्यपूर्ण बातो को ही प्रश्रय देना चाहते थे। उपासना, धर्म अध्यात्म एव दर्शन के क्षेत्र मे दयानन्द की सर्वोपरि देन तो यही है कि वे पुरातन विश्वासी, धारणाओ तथा पद्धतियो से केवल इस लिए चिपटे रहने का उपदेश नही देते कि ये प्राचीन हैं, अत: हमारे लिये आचरणीय तथा मान्य हैं। वे मनुष्य के विवेक को जागृत करना चाहते हैं। जिन वेदो को सर्वोपरि प्रमाण मानने के लिए उन्हें प्राय दोषी ठहराया जाता है, उन वेदों के प्रति भी वे मानव जाति के विश्वास इसलिए जगाना चाहते हैं, कि वे वेदों को पूर्णतया बुद्धि सगत, तर्कसगत एव सृष्टि रचना के शाश्वत नियमो के सर्वथा अनुकूल मानते हैं। दयानन्द की मानव जाति को यदि कोई एक मात्र महत्वपूर्ण देन है, तो वह यही है कि वे मनुष्य को अपनी बुद्धि विवेक शक्ति तथा चिन्तन प्रणाली का प्रयोग करने के लिए कहते हैं, किसी बात को केवल इसलिए मान लेने के लिए नही कहते कि वह हमारे शास्त्रकारो का आदेश है, पूर्वजों की प्रणाली है, अथवा महाजनो से समर्थित आप्तवाक्य है।

दयानन्द का सामाजिक दर्शन—

दयानन्द जितने बडे धर्म सशोधक, धर्म व्याख्याता अथवा धर्माचार्य हैं, एक समाज-शास्त्री, समाज सस्कारक तथा सामाजिक नेता के रूप मे उनका व्यक्तित्व भी कम महत्वपूर्ण नही है। यो तो वे उन्नीसवी शती के उन समाज सुधारकों की ही परम्परा मे आते हैं, जिन्होने बृहत्तर हिन्दू समाज मे व्याप्त नाना बुराइयों, मूर्खतापूर्ण रीति-रिवाजो तथा पुरातन सडी-गली प्रथाओ के विरोध में आवाज उठाई थी, किन्तु दयानन्द का यह सुधारक रूप भी एक उग्र क्रान्तिकारी, समाज को आमूल चूल बदलने वाले युग प्रवर्तक तथा क्रान्तद्रष्टा की प्रभा से परिवेष्टित है। भारतीय समाज में व्याप्त नाना बुराइयो, विषमताओ शोषण की प्रवृत्तियो तथा अत्याचारमूलक प्रथाओ को नष्ट करने के लिए दयानन्द के प्रयासों का सर्वत्र सब कालों में अभिनन्दन हुआ है। वैयक्तिक, तथा पारिवारिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन को खोखला बनाने वाली भीषण प्रथाओ का उन्होंने किस प्रकार डटकर विरोध किया था। यह सब आज इतिहासकार की विवेचना में आ चुका है। अत: बाल-विवाह के उन्मूलन, विधवाओ की स्थिति को सुधारने, नारी को समाज में उच्चतर स्थिति प्रदान कराने, दलित एवं अस्पृश्य कही जाने वाली जातियो को उनका अधिकार दिलवाने, जन्मजात जाति प्रथा के दोषों की ओर जन समाज का ध्यान आकृष्ट करने आदि से सम्बन्धित उनके कार्यों का पुन. विचार करना पिष्टपोषण ही होगा।

परन्तु हमे यह भी ध्यान रखना होगा कि दयानन्द के तुरन्त पश्चात् ही हमारे देश मे एक ऐसा चिन्तक वर्ग उत्पन्न हो गया था, जो न केवल सुधारवाद का विरोधी ही था, अपितु जो प्रत्येक प्राचीन प्रथा के औचित्य को सिद्ध करने तथा सर्वथा जर्जर, मृतप्राय एव हानिकर रूढियो का शब्दाडम्बर युक्त एव आलंकारिक व्याख्या प्रणाली का सहारा लेकर समर्थन भी करता था। इन लोगो ने सुधारक वर्ग के कार्यों का अवमूल्यन तो किया ही, उन पर अनेक प्रकार से छींटाकशी भी की। सम्भवत वे सुधारको द्वारा सामाजिक बुराइयो की कटु आलोचना से भी चिढ गये थे, परन्तु सुधारको के इस प्रकार अग्नि जिह्वा हो जाने के कारणो की उन्होने कभी मीमासा नही की। यदि वे ऐसा करते तो निश्चय ही इस निष्कर्ष पर पहुंच जाते कि रूढियो और बुराइयो की समालोचना बिना किसी लागलपेट के ही करनी होती है, तभी उसका अभीष्ट फल भी प्राप्त होता है। कोमल शब्दावली का प्रयोग कर हम शताब्दियो से किए जाने वाले उन निर्मम अत्याचारो को समाप्त नही करा सकते, जिनके कारण दीर्घ काल तक हमारी प्रगति अवरुद्ध होती रही है।

देख लिया ?

ले.—श्री प. सत्यपाल जी 'पथिक'

काशी जा के देख लिया मथुरा जा के देख लिया।
कहीं पे मन की मैल न उतरी खूब नहाके देख लिया।
खबर नही तू कहा रहता है।
यहा पे है कि वहा रहता है।
घण्टा और घडियाल नगाडा ढोल बजा के देख लिया।
काशी जा के देख लिया———

वस्त्र भूषण भी पहनाए।
शयन जागरण भी करवाए।
धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प, जल, तिलक लगा के देख लिया।
काशी जा के देख लिया———

जिस वस्तु को हाथ लगाया।
किसी पे अपना नाम न पाया।
सब कुछ तेरा दिया हुआ था भेंट चढा के देख लिया,
काशी जा के देख लिया———
मन मे प्रश्न उठा इक ऐसे।
जड वस्तु हो चेतन कैसे ?
पत्थर की मूरत के आगे शीश झुका के देख लिया।
काशी जा के देख लिया———

यह मजबूर उमरिया तरसी।
अमृत की इक बूद न बरसी।
चातक तो प्यासे का प्यासा शोर मचा के देख लिया।
काशी जा के देख लिया———
जिस दिन मन मन्दिर मे देखा।
चमक उठी बिजली सी रेखा।

मिला पथिक' आनन्द प्रभु का ध्यान लगा के देख लिया।
काशी जा के देख लिया———

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्द गढ़, जालन्धर नगर का चुनाव

आर्य समाज का वार्षिक चुनाव गत दिनो आर्य समाज भवन मे श्री अमृतलाल जी बजाज की अध्यक्षता मे हुआ । जिस मे निम्न-लिखित अधिकारी एव अन्तरग सदस्य चुने गये । चुनाव सर्व सम्मति से हुआ ।

अधिकारो

प्रधान—श्री रामप्रताप जी शर्मा उपप्रधान...श्री नरेश कुमार जी, मन्त्री-श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा (रेलवे एकाऊट्स आफिर), उपमन्त्री एव भडाराधिपति—श्री ओ३म् प्रकाश जी जोहर, कोषाध्यक्ष-डा, श्री ब्रह्मनाथ जा, पुस्तकाध्यक्ष—श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा एम ए, पी, एच,डी. लेखा निरीक्षक—श्री प्रीतम नाथ जी

अन्तरग सदस्य

श्री अमृनलाल जी बजाज, श्री चतुर्भुज जी मित्तल श्री मुन लाल जी, श्री रविदत्त जी वासदेव, श्री बलदेव राज जी, श्री सुरेन्द्र जी बजाज, श्री ओम् प्रकाश जी पुरी, श्री भीष्म देव जी धवन ।

—ब्रह्मदत्त शर्मा
मन्त्री

आर्य समाज नाभा में प्रचार

गत दिनो शुक्रवार, शनिवार, रविवार आर्य समाज, दुल्लदो गेट नाभा मे वेद सप्ताह बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया । आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक प. रामनाथ सिद्धान्त विशारद मारिण्डा वाले और सभा भजनीक प रामनाथ यात्री बटाला व ले पधारे । वेद प्रचार सप्ताह उत्साह से सम्पन्न हुआ ।

—अशोक आर्य

नवयुवकों द्वारा लुधियाना में स्वतन्त्रता दिवस समारोह

भारत नौजवान सभा ने आर्य युवक सभा लुधियाना के सहयोग से अशोक नगर लुधियाना मे 15-8-85 स्वतन्त्र दिवसके अवसर पर एक समारोहका आयोजन किया । समारोह का आरम्भ यज्ञ से हुआ जो कि पण्डित सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री पुरोहित आर्य समाज दयानन्द बाजार लुधियाना ने सम्पन्न कराया । इसके पश्चात् वेद प्रचार भजन मण्डली ने अपना सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किया श्री कृष्ण चन्द्र जी गुप्ता ने ध्वजा-रोहण किया । इस अवसर पर आर्य युवक सभा के सयोजक श्री रोशनलाल जी शर्मा ने युवको को आह्वान दिया कि वे अधिक से अधिक समय रचनात्मक कार्यो मे लगाएं तथा भारत नौजवान सभा के आयोजन की सराहना की । इस अवसर पर स्कूल के बच्चों ने अपना रगारग कार्यक्रम प्रस्तुत किया ,

—अरुण भारद्वाज
महा. मंत्री

स्त्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना में वेद सप्ताह

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की ओर से वेद सप्ताह 20 अगस्त से 24 अगस्त 1985 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया । साम-वेद द्वारा विश्व कल्याणार्थ यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा प, सुरेन्द्र जी शास्त्री थे ।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यपाल जी पथिक के मनमोहक भजन होते रहे । डा वाल कृष्ण जी शास्त्री का मनोहर उपदेश हुआ । श्रीमती कमला जी आर्य महामन्त्री का उपदेश भी हुआ । यज्ञ की का यज्ञ शेष बड़ी श्रद्धा से बांटा गया ।

प्रधानी
कान्ता मौद

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ

टेलीफोन 74250 रजि. न. पी.जे एल 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य मर्यादा जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 23. 21 आश्विन सम्वत् 2042 तदनुसार 6 अक्तूबर 1985 दयानन्द 161 अंक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

मधुर वाणी

ले,— श्री अमित प्रताप नारायण सिंह

(हाटा, देवरिया)

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसावाचमक्रत ।
अत्र सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधिवाचि ॥

इस मन्त्र का भाव है चलनी में छान कर सत्तू को साफ किया जाता है, उसी प्रकार जिन विषयों में बुद्धिमान मनुष्य ज्ञान रूपी चलनी द्वारा वाणी को शुद्ध करके प्रयोग करते हे वे हितैषी विद्वान लोग हित की बातों को समझाते हैं। उनकी वाणी में कल्याण प्रदा लक्ष्मी होती है।

इस मन्त्र में उपमा अलकार है। उपमा अलंकार के चार अग होते हैं। उपमेय-जिसके लिए उपमा दी जाए, साधर्म्य दोनों में समान गुण और समता वाचक शब्द। साधर्म्य का तात्पर्य क्या है? न्याय दर्शन 1-1-6 में बताया गया है प्रसिद्ध साधर्म्यात् साध्य साधन मुपमानम् यहा साधर्म्य के साथ प्रसिद्ध शब्द का विशेषण देना बड़े ही महत्व की बात है। साधर्म्य का समान गुण। उपमेय और उपमान में ऐसा होना चाहिए कि झट से दिखाई दे जाए। इस मन्त्र में सत्तू और चलनी इन उपमाओ से वाच और मनसा दोनो उपमाओ के लिए चलनी या सूप का प्रयोग किया जाता है और शुद्ध और उत्कृष्ठ वस्तु मिलता है। इसी प्रकार सोच समझ कर शब्दों का उच्चारण करने में ही कहने और सुनने वाले का हितभाव छिपा हुआ है।

वास्तव में मनुष्य के जीवन मे वाणी का बहुत महत्व है। एक प्राचीन कथा है—

कहते है कि एक दिन मन और वाणी में विवाद उठ खड़ा हुआ कि दोनों मे कौन बड़ा है? मन अपने को वाणी अपने को श्रेष्ठ बता रही थी। अन्त मे निश्चय हुआ कि चलो सरस्वती के पास चला जाए। वाणी की देवी सरस्वती से बढ़कर कौन निर्णायक हो सकता है। दोनो गए और सरस्वती से यह निणय करने के लिए कहा कि हम दोनों मे कौन श्रेष्ठ है? सरस्वती थोडी देर सोचती रही और फिर बोली, "मन श्रेष्ठम मन श्रेष्ठम, मन श्रेष्ठम न सशय अर्थात् मन श्रेष्ठ है, मन श्रेष्ठ है, इसमे कोई सन्देह नहीं। निर्णय सुनकर वाणी उदास हो गई और बोली निर्णय तो आप का स्वीकार है परन्तु देवी! सारा ज्ञान मेरे द्वारा प्रकट होता हैं, सभी काव्य, वेद शास्त्र प्रकट करने वाली मैं हू और आपने मन को श्रेष्ठ बतलाया। सरस्वती मुस्कराई और बोली मन श्रेष्ठ है पर वाक तू साक्षात सरस्वती, वाणी तो साक्षात सरस्वती हैं। यह है वाणी का महत्व।

वाणी मधुर होनी चाहिए। नम्र वाणी ही महिमामयी होती है। नम्रता बहुत भारी गुण है। नम्रता से सब प्रसन्न रहते है। एक दिन स्वामी दयानन्द भोजन कर रहे थे। उनको हीन दिखलाने की दृष्टि से एक व्यक्ति ने पूछा— महाराज आप तो नाई की रोटी खाते हैं? उनका रसोईया नाई था। स्वामी जी ने झट से जवाब दिया, नाई की नहीं, गेहू की रोटी खाते हैं। विरोधी ताकता रह गया। गीता में कहा गया है—

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ॥14॥ (17)

उद्वेग को उत्पन्न न करने वाला प्रिय हितकारक सत्य भाषण स्वाध्याय और ईश्वर के नाम का जप—यह वाणी का तप है। यदि वाणी नम्र हो तो सभी के हृदय को जीता जा सकता है। वाणी का दोष मनु स्मृति मे बताया गया है—

पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः।
असबद्धप्रलापश्च वाङमयं स्याच्चतुर्विधम् ॥

कटुभाषण, झठ, चुगली और असबद्ध प्रलाप ये वाणी के चार दोष।

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढपाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥

पृथ्वी पर तीन ही रत्न हैं—1 जल 2 अन्न 3 मधुर वाणी। मूढ ही पत्थर के टुकडो को रत्न के नाम से पुकारते हैं।

विधाता की ओर से मनुष्य को प्रदत्त सबसे अनमोल उपहार है उसकी वाणी। यदि वाणी न होती, तो मनुष्य अपने अन्त स्थल के अवरुद्ध स्तरो की कैसे अभिव्यक्ति करता? अपने मन के गुप्त अभिलेखो को व्यक्त करने के लिए वाणी से बेहतर साधन कोई नही। वाणी के द्वारा हम केवल अपने मन की अतुल गहराइयो के द्वारा ही सम्बोधित करते हैं। इसी लिए सन्तो ने ऐसी वाणी बोलने का परामर्श दिया है जो औरो को शीतल करे और स्वय को भी ठण्डक पहुचाए। कबीर साहब ने कहा है—

ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे आपहु शीतल होय ॥

सचमुच ससार रूपी इस वट वृक्ष के दो अमृततुल्य फल हैं—सरस प्रियवचन और सुसगति। अतएव, ऐसी बातें बोलनी चाहिए जो दूसरो को सुख पहुचाए। वाणी के बाण से घायल करने के लिए लिए विधाता ने हमे वाणी नहीं दी है। गो. तुलसी दास द्वारा वाणी की मिठास का महत्व

तुलसी मीठे वचन ते सुख उपजत चहु ओर।
वशीकरण एक मन्त्र है, तज दे वचन कठोर ॥

वाणी के कारण ही पण्डित और मूर्ख, साधु और दुष्ट, सज्जन और दुर्जन की पहचान होती हैं। इसी कारण, मन का अहकार भूल कर मीठी वाणी बोलने का आग्रह कबीर दास जी ने किया है—

मधुर वचन है औषधि कटुक वचन है तीर।
श्रवण द्वार है सचरे सालै सकल शरीर ॥

एक दिन महगी साडी पहने एक धनाढ्य महिला ने जरा तीखे लहजे में रिक्शे वाले से कहा क्यो बुड्ढे टी, टी नगर चलना है? नही' रिक्शे वाले ने कहा—रिक्शा खाली नहीं है। उसके थोडी देर बाद एक छात्रा आई और उसी रिक्शे वाले से कहा—काका टी टी नगर पहुचा दोगे?

आओ बैठो बेटी रिक्शा वाला मधुर लहजे मे बोला। यह वाणी का ही तो मर्म है।

सभी लोग भारी आधी देखते होगे। आधी मे पेड गिर जाते हैं परन्तु वही घास को वही आधी नही गिरा पाती क्योकि घास झक जाती, इसलिए कि घास नम्र है। और पेड कठोर हैं।

लोग नम्र रह कर उन्नति करते हैं। जो कटु भाषी होगा वह कभी आगे नहीं बढ सकता। वह सर्वदा पतन को प्राप्त होता हैं। गांधी जी ने नम्रता से ही तो स्वाधीनता प्राप्त की। हम लोगो को भी नम्र बनना चाहिए। माता-पिता शिक्षक और बडो आदि सभी से नम्रता का व्यवहार करना चाहिए। नम्रता को सब चाहते हैं। जो कुछ बोलो-नम्रतापूर्वक बोलो जो कछ करो नम्रतापूर्वक करो। जिससे [illegible] नम्रता से मिलो। नम्रता जिसमे [illegible] होता है उसका सभी [illegible]

[illegible] को एक शिक्षा प्रद [illegible] इनके शिष्यो ने उनसे पूछा [illegible] शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। [illegible] मृत्यु के [illegible] को [illegible] रहती है। उन्होने उत्तर दिया [illegible] कठोर होते हैं।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

धर्म का वास्तविक स्वरूप

ले.—श्री आचार्य सत्यव्रत जी शास्त्री विद्या भास्कर धामपुर

धारणात् धर्म मित्याहुः धर्मात् धारयते प्रजा ।
य:स्यात् धारण संयुक्ता सधर्म इति निश्चय ॥ महाभारत कर्ण पर्व 69-65

इस श्लोक में धर्म नाम से किन्हीं विशेष चिन्हों को या आडम्बरों को या पाखण्डों को धर्म नहीं कहा गया किन्तु जिसको जिन मानवीय परम्परागत आदर्श चारित्रिक कर्तव्यों को या नियमों को वेद धर्म शास्त्र आदि ग्रन्थों में मानव मात्र के लिए कर्तव्य कर्मों का निर्देश किया गया है वे कर्तव्य धर्म नाम से कहे जाते हैं। उनको अपने जीवन में धारण करना सात्म करना उनके अनुकूल आचरण और व्यवहार करना ही धर्म है। 'धर्म चर' धर्म का आचरण किया जाता है उनका जीवन में व्यवहार किया जाता है वे सब कर्तव्य जीवन के अंग बन जाते हैं। उन का किन्हीं भी रूढिगत चिन्हों से तात्पर्य नहीं है।

धर्म और धार्मिक प्रथाओं में भेद है धर्म सनातन है अविछिन्न है, प्रथाएं आधुनिक हैं क्षणिक हैं, कल्पित हैं वे धर्म नाम से अभिहित नहीं हो सकती। धार्मिक प्रथाएं सनातन धर्म के सहारे स्थिर हैं। जैसे शरीर मे कड़ी हड्डियां और कोमल मांस, मांस शरीर में इन हड्डियों के ही सहारे टिका है बिना इन के नहीं रह सकता। इसी प्रकार धार्मिक प्रथाएं भी सनातन धर्म के सहारे टिकी हैं। जैसे दुर्बल अस्थियों का शरीर निकम्मा हो जाता है इसी प्रकार जब धर्म के सनातन अग शिथिल हो जाते हैं तो धार्मिक प्रथाए भी अपना स्वरूप परिवर्तित कर देती हैं। आज का प्रचलित सनातन धर्म अपने सनातनत्व को सर्वथा नष्ट कर चुका है अत: टूटी हुई हड्डियों का पिञ्जर मात्र है। जो धार्मिक प्रथाओं को ठीक नहीं रख सकता। धर्म वह शाश्वत कर्तव्य कर्म हैं जो सदा से मनुष्य के जीवन के साथ चलते आ रहे हैं और उसके जीवन पर्यन्त उसके साथ रहेंगे। आधुनिक तथाकथित सम्प्रदाय पन्थ मत मजहब धर्म की अपेक्षा सर्वथा नगण्य हैं, वे किन्हीं व्यक्ति विशेषों के नाम से कल्पित हैं जैसे दादू पन्थ, कबीर पन्थ, नानक पन्थ ये धर्म नहीं कहे जा सकते। किसी व्यक्ति विशेष के नाम से धर्म कभी भी स्थिर नहीं रहा। धर्म अनादि शाश्वत है।

ईसाई, मुसलमान, बौद्ध, जैन आदि धर्म नहीं हैं ये सब सम्प्रदाय हैं पन्थ हैं। मत हैं, मजहब हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र के अथवा परम नीति निष्णान्त योगीराज श्री कृष्ण चन्द्र के नाम पर अथवा अन्य किसी साधु, सन्त, महात्मा के नाम पर काल्पनिक धर्म भी सम्प्रदा मात्र हैं उनमें सनातनत्व नहीं है उस व्यक्ति से पूर्व वे ग्रन्थ या सम्प्रदाय मत, मजहब नहीं थे।

जैसे शाक्त, शैव, वैष्णव, राधा-स्वामी आदि ये सब वैयक्तिक आधार पर कल्पित मत हैं 'शिव, विष्णु, शक्ति कोई वास्तविक सत्ता नहीं है। केवल एक अनादि अनुपम सर्वाधार, सर्वनियन्ता स्वतन्त्र नित्य निर्विकार, अजर अमर अभय आदि विशिष्ट गुणों से युक्त सृष्टि की उत्पत्ति स्थिति प्रलयकर्ता सच्चिदानन्द स्वरूप सबका आराध्य एवं उपास्य जिसका वैदिक नाम ओम् है वही केवल एक परम पिता परमात्मा है। वही सनातन शाश्वत आराधनीय एवं उपासनीय है। जो युग परम्परा से अविच्छिन्न रूप से अपने स्वरूप से चला आ रहा है जिसका सम्बन्ध न त्रेता के मर्यादा पुरुषोत्तम राम से है न द्वापर के परम योगेश्वर श्री कृष्णचन्द्र से है। न कलियुगीन किसी पन्थ या सम्प्रदाय से है न देवी-देवताओं से है उसका ज्ञान जो वेद रूप से सृष्टि के आदि में प्रकट हुआ है वही एक मात्र मानव धर्म है। वही हमारा सर्वोपरि धर्म ग्रन्थ हैं। उसी का नाम वैदिक धर्म है। वही सनातन धर्म है। पौराणिक धर्म या मान्यताएं सनातन नहीं कहीं जा सकती। वे सब आधुनिक हैं। पुराणों की रचना महाभारत काल में वेद व्यास के नाम से हुए। इससे पहले त्रेता युग में और सत युग में पुराण नहीं थे। आधुनिक हिन्दुओं में सनातन धर्म का शब्द बहुत प्रचलित है एवं चर्चित है, बीसवीं शताब्दी से पूर्व 19 वीं शताब्दी मे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राष्ट्र की रक्षार्थ आर्य समाज नाम से एक आन्दोलन की स्थापना की। इसी आर्य समाज की स्थापना के कारण इस शब्द में एक नया उत्साह आ गया। आर्य समाज और सनातन धर्म नाम से दो मुख्य धाराएं जनमानस के सामने आने लगी। वस्तुत: आर्य समाज कोई नए धर्म की स्थापना करने वाला सम्प्रदाय नहीं है वह एक आन्दोलन मात्र है आर्यों के श्रेष्ठ गुण कर्म, स्वभाव वाले व्यक्तियों का समूह ही आर्य समाज का तात्विक अर्थ है। आर्याणो श्रेष्ठ गुण, कर्म स्वभाववतां पुरुषाणां समाज—समूह-आर्य समाज:-आर्य समाज कोई नया मत सम्प्रदाय पन्थ नहीं है। अर्थ: स्वामी वैश्यो वा-म, आ. सूत्र। अर्य:-ईश्वर, तस्य पुत्र आर्य:—तेषां समाज—सनातन धर्म का ही विशुद्ध स्वरूप सत्य-सनातन वैदिक वेद प्रतिपादित धर्म ही वैदिक धर्म है। वह कभी न पुराना होता है न नष्ट होता है न मरता है वह शाश्वत है अविच्छिन्न है।

आर्य: ईश्वर्य पुत्र:। अर्य इति ईश्वर नाम (निघण्टु 2-22।)

अमर कोष में 'सत्कुलोद्भव: आर्य:' ऐसा लक्षण किया है

जो सत कुल को श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न हो वह आर्य है।

कर्तव्य माचरन् कर्म, अकर्तव्य मनाचरन्' वर्तते प्रकृताचोर स आर्य इति कथ्यते'

जो कर्तव्य करने योग्य कर्मों का आचरण करता है और जो अकर्तव्य न करने योग्य निषिद्ध कर्म हैं उनका आचरण नहीं करता जो अपने वास्तविक आचार का पालन करता है वह आर्य है।

मत विचार नित्य बदलते रहते है ये सब अस्थायी हैं। आधुनिक हैं। सनातन धर्म अपरिवर्तनीय है वह यथा-पूर्व ही रहता है। सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग में नवीन सम्प्रदाय मतान्तर पन्थ तो नित्य प्रकट होते रहते हैं जो आज भी हो रहे हैं आज धर्म के नाम पर नित्य नए-नए आडम्बर पाखण्ड मिथ्या धारणा परम्पराएं नए-नए भगवान् और भगवानियां बड़े वेग से प्रकाश मे आ रही हैं। जैसे साईं बाबा, महेश योगी, आचार्य रजनीश, कई भगवान् तो विदेशों में जाकर वहीं अपना एहिक जीवन भोग विलास में व्यतीत कर रहे है उनके अनेक शिष्य एवं शिष्याएं हैं बड़ी 2 सम्पत्ति के स्वामी हैं नए 2 आश्रम खोल रखे हैं। चाहे जो बाबा बनकर अपना मन्तव्य प्रचारित कर दे उसी के अनुयायी सैंकड़ों, सहस्रों हो जाएंगे। 'गतानुगतिकोलोक: अन्धेनैवनीयमाना यथाऽन्धा:', एक के पीछे एक चल रहा है। बिना बुद्धि के बिना विचार के—हंसामत ब्रह्मकुमारी मत प्रचलित हैं। हिन्दू शब्द सर्वथा अवैदिक है न कोई हिन्दू जाति है न हिन्दु धर्म है न सम्प्रदाय है कुछ व्यक्ति सिन्धु का हिन्दू रूपान्तर समझ रहे हैं। यह भी उनका भ्रम है। वैदिक शब्द आर्य है जिससे आज के तथाकथित समाज को घृणा है वेद में आर्य शब्द का प्रयोग प्राय: कई स्थलों पर आता है। अहं भूमि ददामार्याय: 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' आदि मन्त्र द्रष्टव्य हैं। हिन्दू शब्द का अर्थ काला, काफिर, चोर आदि है। ऐसे लोगों का स्थान हिन्दुस्थान है। एक बार स्व, श्री डा, सर राधा कृष्णन सर्वपल्ली ने सन् 1965 ई, में अपने राष्ट्रपति पद से गणतन्त्र दिवस पर भाषण देते हुए राष्ट्र के सामने उसको सम्बोधित करते हुए हिन्दू शब्द की व्युत्पत्ति के सन्दर्भ में यह श्लोक उद्धृत किया था।

हिमालयं समारभ्य यावदिन्दु सरोवरम्
हिन्दुस्थान मितिख्यातं—आद्यन्ताक्षर योगत:।

जिसका भाव है हिमालय का हि, और इन्दु का न्दु, इस प्रकार दोनों आदि और अन्त के अक्षरों के योग से हिन्दु शब्द का मेल मिलाया था। हिन्दूना-स्थानम्-हिन्दुस्थानम्। सिद्ध किया गया था पर इस देश का परम प्राचीन नाम भारतवर्ष है—जिसके सम्बन्ध में—उत्तरेयत समुद्रस्य हिमाद्रिश्चैव दक्षिण.।

वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्तति।

भारतवर्ष का नामकरण राजा भरत के नाम से भी नहीं है। भरत नाम अग्नि-स्यात् प्रभु का है जो सबका भरण पोषण करता आ रहा है अत: भारत वर्ष इसका नाम परम प्राचीन है। यह श्लोक प्रसिद्ध है — हिन्दु शब्द हमारे किसी प्राचीन व अर्वाचीन वैदिक साहित्य में या लौकिक साहित्य में वेद-ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् धर्म ग्रन्थ मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य, स्मृति गीता, रामायण, महाभारत, श्रौत सूत्र गृह्यसूत्र, निरुक्त दर्शन शास्त्र, यहां तक नहीं प्रचलित सत्यनारायण की कथा में भी इस शब्द का नाम नहीं है। यह विक्रमी की 8वीं शताब्दी से प्रचलित हुआ है, वेदों में यत्र तत्र आर्य शब्द का ही उल्लेख है—अहं भूमिमद् दामार्याय। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' ये दोनों वेद की सूक्तियां हैं। मैंने आर्यों के लिए यह भूमि प्रदान की है। सारे विश्व को आर्य बनाओ। मानव धर्म शास्त्र मनुस्मृति में ब्रह्मावर्त, आर्यावर्त ब्रह्मर्षि देश इन शब्दों का प्रयोग किया है। धर्म का सम्बन्ध किसी देश विशेष से वर्ग विशेष से, जाति विशेष से सम्प्रदाय पन्थ या मत-मतान्तर, मजहब से नहीं है। वह मानव धर्म है मनुष्य मात्र का धर्म है मानव धर्म मनुष्य को मनुष्य बनना सिखाता है दानव नहीं बनाता; न एक दूसरे से परस्पर घृणा, ईर्ष्या, द्रोह सिखाता है। धर्म शब्द से कुछ कर्तव्य कर्मों का निर्देश है जिनके करने से नित्य प्रति के आचरण से मनुष्यों में नैतिकता, चारित्रिक सौन्दर्य एवं जागृति उत्पन्न होती है जिसका साक्षात् वर्णन मनु स्मृति श्लोक में आता है। (क्रमश:)

सम्पादकीय—

आर्य समाज पर भ्रष्टाचार की छाया—2

कुछ महानुभाव प्रश्न करेंगे कि मैं इस विषय में क्यों लिख रहा हूं। इसका एक कारण है पिछले कुछ समय से हमारे प्रधान मन्त्री यह कहते चले आ रहे हैं कि वह देश में भ्रष्टाचार को पूर्णतया समाप्त कर देना चाहते हैं। इसके लिए वह नए कानून भी बना रहे हैं। अन्त मे वह इसमें कहा तक सफल होते हैं यह तो आगे चलकर मालूम होगा। परन्तु इसमे कोई सन्देह नहीं कि वह देश मे एक स्वच्छ वातावरण पैदा करना चाहते हैं। कोई भी प्रधानमन्त्री कोई नया सुधार केवल कानून के द्वारा नहीं ला सकता। यदि कानून ही प्रत्येक प्रकार के अपराध को समाप्त कर सकता हो तो न किसी की हत्या की जाए न चोरी की जाए न डाका डाला जाए न कोई और अपराध किया जाए जो समाज की दृष्टि मे एक दोष समझा जाए। कानून होने पर भी हत्याएं होती हैं। लोग चोरी करते हैं। आजादी से पहले देश में न तो इतनी रिश्वत चलती थी जितनी कि आज चलती है न लोग इतनी शराब पीते थे जितनी की आज पीते हैं। इन अपराधों को रोकने के लिए कानून बने हुए हैं। फिर भी यह सब कुछ होता है और दिन प्रतिदिन बढ़ता चला जा रहा है।

आज यदि प्रधानमन्त्री कहते हैं कि वह भ्रष्टाचार को समाप्त करना चाहते हैं और उसके लिए वह कानून बना रहे हैं। उसमें वह तब तक सफल नही हो सकते जब तक देश में ऐसा वातावरण न पैदा कर दिया जाए कि कोई भी व्यक्ति और कोई भी संस्था भ्रष्टाचार को किसी प्रकार का प्रोत्साहन न दे। यह वही संस्था कर सकती है जिसका अपना आचरण इतना स्वच्छ हो कि उसकी तरफ कोई उगलि उठा कर न देख सके। मैं यह नहीं कहता कि हमारे देश मे और कोई ऐसी संस्था नही है परन्तु यह अवश्य कहता हू कि आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो देश में भ्रष्टाचार समाप्त करने में प्रधानमन्त्री जी की सहायक हो सकती है। यह मैं केवल अपने निजी अनुभव के आधार पर नहीं कहता, आर्य समाज का पिछले एक सौ वर्ष का इतिहास बोल रहा है। इतिहास का एक 2 पृष्ठ बोल रहा है कि आर्य समाज जैसा स्वच्छ जीवन बहुत कम संस्थाओ का इस देश में रहा है। एक सौ वर्ष मे यदि आर्य समाज ने इतनी प्रगति की है तो उस का भी एक कारण यही था। महर्षि दयानन्द का उदाहरण इसके सामने पेश करना निरर्थक हैं। वह एक योगी थे और साधारण मनुष्यो से वह बहुत ऊचे थे बचपन में ही उन्होने अपना घर छोड दिया था वह इसलिए कि वह संसारिक बन्धनों मे बन्धना नहीं चाहते थे। ऐसे महापुरुष किसी प्रकार के भ्रष्टाचार मे कैसे फस सकते हैं। हम यह भी जानते हैं कि आज के युग मे कई बडे 2 सन्त महात्मा और मठाधीश लाखों बना लेते हैं। और एक ऐसा जीवन व्यतीत करते हैं जो एक धन कुबेर भी नहीं कर सकता। हरिद्वार मे कई मठाधीश ऐसे भी हैं जो वातानुकूल कोठियो म रहते हैं बिना मोटर कार के नही चलते और वह सन्त महात्मा समझे जाते हैं लोग उनकी पूजा करते हैं।

आर्य समाज का यह परम सौभाग्य रहा है कि उसने कई उच्च कोटि के सन्यासी पैदा किए हैं परन्तु आर्य समाज के एक भी सन्यासी ने आज तक अपने लिए रुपया नहीं बनाया। मेरा यह दावा रहा है जिस उच्च कोटि के सन्यासी आर्य समाज में हैं किसी दूसरी संस्था में नहीं है। यह केवल इसलिए कि आर्य समाज की कुछ परम्पराएं हैं। कुछ उसके सिद्धान्त है और कुछ नियम हैं, जिनके अनुसार हम चलते हैं। इसलिए आर्य समाज के विषय में यह समझा जाता है कि यह एक ऐसी संस्था है जिसमें भ्रष्टाचार किसी भी रूप में सहन नहीं किया जाता अब तो स्थिति कुछ बदल रही है। एक समय वह भी था जब कोई व्यक्ति किसी न्यायालय में जाकर यह कह देता था कि वह आर्य समाजी है तो न्यायाधीश उस की बात मान लेता था। यह सब इसलिए होता रहा है कि आर्य समाज की ख्याति चारों ओर फैली हुई थी कि यह वह संस्था है जिसमें भ्रष्टाचार किसी भी रूप में सहन नहीं किया जाता। यहां जनता-जनार्दन द्वारा दिया गया पैसा सुरक्षित रहता है। मेरा एक ऐसे परिवार में जन्म हुआ जहां मैंने आर्य समाज के कई बडे 2 नेताओं को बहुत पास से देखा है। वह लोग आर्य समाज के लिए कितना त्याग करते थे यह भी मैंने देखा है। यह लोग वह हुआ करते थे जो घर फूक तमाशा देखा करते थे। उन्हीं के तप और त्याग के कारण आर्य समाज का नाम घर 2 पहुच जाता था। वह आर्य समाज को अपने पास से कुछ दिया ही करते थे उससे लेते नहीं थे। किसी ने आर्य समाज के लिए अपना खून दिया, किसी ने अपना धन दिया। किसी ने अपनी सम्पत्ति दी। इन लोगों के सहारे ही आर्य समाज ने इतनी प्रगति की है।

आज स्थिति बदल रही है। आर्य समाज का एक नया और विकृत रूप सामने आने लग गया है उसे देखकर केवल आश्चर्य ही नहीं दुःख भी होता है कि आर्य समाज क्या बन रहा है। मैंने कभी आर्य समाज का उज्जवल रूप देखा था, आज धूमिल रूप भी देख रहा हू। इसी लिए आर्य जनता को चेतावनी देना चाहता हू कि आंखे खोलो और देखो कि आर्य समाज मे क्या हो रहा है। इस समय तक बहुत सी बातों पर पर्दा पडा हुआ है। वह इसलिए डाला गया कि सम्भवत अन्दर ही अन्दर सफाई हो जाए और जनता के अन्दर वह बातें न जाए जिससे आर्य समाज की बदनामी हो। कुछ यह भी आशा थी कि आर्य समाज के कर्णधार इसे डूबने से बचा लेंगे अब देख रहा हू कि स्थिति दिन प्रतिदिन बिगड रही है। किसी का इस ओर ध्यान नहीं जा रहा। जब एक चौकीदार रात को लोगों को जगाता है और कहता है कि जागो तुम्हारा घर लुट रहा है तो कई बार लोग नाराज हो जाते हैं कि यह रात को सोने नही देता। परन्तु वह चौकीदार तो अपना कर्त्तव्य पूरा कर रहा होता है। उसी प्रकार के कर्त्तव्य से प्रभावित होकर मैंने भी यह लेखमाला प्रारम्भ की है। इस आशा में कि सम्भवत अब भी आर्य जनता जाग उठे। शेष आगामी अक मे पढें ?

—वीरेन्द्र

आर्य समाज मोगा का कायाकल्प

कई आर्य समाजो पर कुछ ऐसे लोग अपना अधिकार जमा लेते है जो उसे अपनी पैतृक सम्पति समझने लगते हैं और उसकी प्रगति की ओर कोई ध्यान नहीं देते। फिर ऐसा समय भी आता है जब आर्य समाज निर्जीव हो जाता है और जनता को उससे जो आशाए होती है वह सब समाप्त हो जाती हैं। फिर धीरे 2 जनता आर्य समाज को छोडकर दूसरी सस्थाओ की ओर चल पडती हैं। यह स्थिति पजाब मे कई स्थानो पर है। मोगा भी उन मे से एक हैं वहा की आर्य समाज भी पिछले कुछ समय से वैसी नही चल रही थी जैसी चलनी चाहिए थी। एक समय था जब मोगा की आर्य समाज पजाब की प्रमुख आर्य समाजो मे समझी जाती थी और अब एक ऐसी स्थिति बन गई थी कि कई वर्षों मे न तो उसका कोई वार्षिकोत्सव हुआ था न विधिवत सत्सग लगता था न उसके द्वारा वेद प्रचार होता था। इन परिस्थितिओ को देखकर वहा अब एक नई तदर्थ समिति बना दी गई हैं जिसके प्रधान श्री जगदीश राय जी बासन हैं। श्री जगदीश राय के पिता स्व0 श्री शिवलाल जी उन आर्य समाजियो मे से थे जिन पर आर्य समाज गर्व कर सकता है। ऐसे पिता की छत्र-छाया मे शिक्षा प्राप्त करके श्री जगदीश राय भी आर्य समाज के अनन्य भक्त बन गए। करतारपुर मे जो गुरु विरजानन्द संस्कृत विद्यालय चल रहा हैं उसकी प्रबन्धकर्तृ सभा के भी वह सदस्य हैं और समय 2 पर उस सस्था की भी सदस्यता करते रहते हैं। इसके अतिरिक्त आर्य समाज की गतिविधियो में सक्रिय भाग लेते हैं। नवयुवक है। कर्मठ हैं और महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त हैं। इसलिए मेरा यह विश्वास है कि उनके नेतृत्व मे अब मोगा का आर्य समाज पहले की तरह ही सक्रिय होता जाएगा और मोगा जैसी मण्डी मे एक बार फिर आर्य समाज का नाद सुनाई देने लगेगा। मैं अपनी और अपनी सभा की ओर से श्री जगदीश राय और उनके साथियो को अपने पूरे सहयोग का विश्वास दिलाता हू और आशा करता हू कि वह मोगा कि आर्य समाज मे नई जान डाल कर उसे जीती जागती सस्था बना देंगे।

—वीरेन्द्र

आज हम कहाँ खड़े हैं

ले.—श्री सत्यदेव जी वेदालंकार म. नं. 145, गली नं. 4
सेंट्रल टाऊन, जालन्धर

इस शीर्षक के पिछले लेख में जो 15-1-85 के आर्य मर्यादा पत्र में अंश्तः भी प्रकाशित हुआ है, मैंने यह दिखाने का प्रयत्न किया था कि महर्षि दयानन्द के जीवन को लेकर यदि किसी नाटक या लीला का मंचन होगा तो ऋषिवर एक ऐतिहासिक व्यक्ति न रहकर काल्पनिक व्यक्ति बन जाएंगे। ऋषिवर ने स्वयं ही महापुरुषों के जीवन के स्वांग भरे जाने का विरोध किया था यह ऐतिहासिक सत्य के नाश तथा महापुरुषों के महत्व की हानि की दृष्टि से बिल्कुल उचित है।

इसी सम्बन्ध में मैंने एक और लेख 'यति मण्डल' बनाने हेतु अध्यक्ष जी को प्रकाशनार्थ भेजा है।

अब आर्य समाज के विकास की दृष्टि से एक और महत्वपूर्ण विषय 'आर्य समाज तथा शिक्षा' का लेकर इस विषय को लिया जाए।

विषय को प्रारम्भ करने से पहले मैं समाचार पत्रों में प्रकाशित कुछ लेखों तथा एक विज्ञापन की ओर आर्य भाईयों का ध्यान खींचना चाहता हूं।

1, 11-1-85 के 'पंजाब केसरी' पत्र में एक विज्ञापन छपा है। उसके प्रारम्भ के शब्द हैं—

डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल ऐन इंगलिश मीडियम को-ऐजूकेशन स्कूल विद इंडियन कल्चरल बैक ग्राउंड और हमन टू

इस विज्ञापन का प्रकाशन डी.-ए. वी. कालेज प्रबन्ध कर्तृ सभा की ओर से हुआ है।

2. आर्य जगत् तथा आर्य मर्यादा आदि में तीन लेख माननीय श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार जी के प्रकाशित हुए हैं। शीर्षक है—'गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की देश व्यापकता'। माननीय पण्डित जी लगभग जीवन भर गुरुकुल से सम्बद्ध रहे। शिक्षा भी वहीं प्राप्त की। अध्यापन तथा प्रबन्ध कार्य भी किया। अनेक वर्ष कुलपति (वायस चांसलर) के रूप में गुरुकुल विश्व विद्यालय का संचालन भी किया तथा अब भी विजिटर के रूप में सम्बद्ध है। वे प्रख्यात शिक्षा शास्त्री हैं विद्वान् हैं; उनसे बढ़कर गुरुकुल शिक्षा के विषय में और कौन प्रामाणिक ज्ञाता होगा?

उनके लेखों का मूल अभिप्राय: जहां तक मैं समझ पाया हूं, यह है कि गुरुकुल की जो आश्रम पद्धति है वही मूल तत्व है। उस गुरु का आदर्श कुल परिवार की भावना, शिक्षा सम्बन्धी अनुशासन तथा आश्रम का वातावरण यही महत्व के कारक हैं। वे ही वस्तुतः सर्वमान्य हैं, इनको ही फैलाया जाना चाहिए। गुरुकुलों का आर्य समाज से अनिवार्य सम्बन्ध नहीं। अन्य धर्मों तथा विचार धाराओं के भी गुरुकुल हो सकते हैं यदि वे मूल-भूत आश्रम पद्धति को अपनाएं।

गुरुकुल विश्वविद्यालय तथा उसकी शाखाओं में क्या पढ़ाया जाए। इसके विषय में उनका कहना है—

इस देश व्यापी गुरुकुलों में जो गुरुकुल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हों, एक प्रकार से इस विश्वविद्यालय की शाखाओं में क्या पढ़ाया जाए यह सरकार के शिक्षा मन्त्रालय पर छोड़ देना चाहिए ताकि पुस्तकीय शिक्षा की दृष्टि से गुरुकुलीय विश्वविद्यालय तथा अन्य विश्वविद्यालयों में छात्रों का आदान-प्रदान तथा शैक्षणिक सम्पर्क बना रहे। देश की आवश्यकता के साथ साथ गुरुकुलीय जीवन के सिद्धान्तों को व्यापक रूप देने की है। सिर्फ पुस्तकीय शिक्षा के साथ-साथ गुरुकुलीय जीवन की शिक्षा देने से ही जीवन बन सकता है।

3. आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी के विश्वस्त सहयोगी पं. विशम्भरनाथ जी के सुपुत्र श्री योगेन्द्र अवस्थी जी ने भी एक लेख में कुछ ऐसा ही विचार दिया है। उनका कहना है कि मान्य पण्डित जी आज से 60-65 वर्ष पूर्व ही इस विचार के समर्थक थे कि शिक्षा पद्धति तो सरकारी हो पर आश्रम जीवन गुरुकुलीय हो।

श्री अवस्थी जी की बात ठीक है। पं, विशम्भरनाथ जी हमारे समय में भी गुरुकुलीय के मुख्याधिष्ठाता थे, उनका विद्यार्थियों के प्रति बहुत वात्सल्यमय व्यवहार होता था। उनके इन विचारों से हम सब परिचित थे। मैं तो स्नातक होने के बाद भी बहुत बार उनसे मिला हूं। वे गुरुकुल शिक्षा को अव्यवहारिक समझते थे।

इस विषय में इतना और कहना अप्रासंगिक न होगा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के बहुत से सहयोगी उनके शिक्षा सम्बन्धी [illegible] आदि क्रान्तिकारी विचारों से सहमत नहीं थे। उनके प्रशंसक तो थे पर उनके साथ चल नहीं सकते थे। महात्मा गांधी जी के कितने अनुयायियों ने उनकी तरह अपने बच्चों को परीक्षणों की भट्टी में झोंक दिया। क्रान्तिकारी महापुरुष ही अपना सर्वस्व होम कर सकते हैं सब नहीं।

इन कुछ उदाहरणों से स्पष्ट है कि आर्य समाज के अनेक विद्वान् तथा संस्थाएं अभी तक चली आई आर्यसमाज की शिक्षा सम्बन्धी विचार धारा से बहुत दूर हो गए हैं। विचारों का बदलना या विकास एक स्वाभाविक बात है पर उस परिवर्तन के क्रम और कारणों के विषय में गहराई से सोचना आवश्यक है।

आज कल आर्य समाज के शिक्षा क्षेत्र में अनेक परीक्षण चल रहे हैं।

1. नए विकसित मार्डन या पब्लिक स्कूल जिनमें प्रारम्भ से शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है, बालक और बालिकाएं इकट्ठा पढ़ते हैं पहनावे में नेक-टाई, स्कर्ट, निकर, पतलून का वेश है। पर पढ़ाई का ढांचा सरकारी स्कूलों जैसा ही है।

2, सामान्य डी. ए. वी. या आर्य स्कूल तथा कालेज। इनमें पढ़ाई सरकारी ढंग की ही है। हिन्दी, संस्कृत, धर्म-शिक्षा पर कुछ बल है। छात्रावास में आर्य वातावरण रखने का कुछ प्रयत्न रहता है।

3, गुरुकुल 1 वे गुरुकुल या आर्य विद्यालय जिनमें शिक्षा सरकारी है या सरकार मान्य है। आश्रम व्यवस्था साथ है तथा संस्कृत, हिन्दी पर अधिक बल है।

4. गुरुकुल 2. इनमें शिक्षा या पाठ्यक्रम बहुत कुछ स्वतन्त्र हैं, पर विश्वविद्यालयों की सरकार मान्य परीक्षाएं भी दिलवाई जाती हैं। आश्रम व्यवस्था पर अधिक बल दिया जाता है।

5. उपदेशक विद्यालय में वे विद्यालय हैं जिनमें तीन या चार वर्ष के लिए वेद शास्त्र दर्शन संस्कृत काव्य व्याकरण के साथ महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थों का अध्ययन करवाया जाता है। व्यायाम, संगीत आदि पर बल दिया जाता है तथा आश्रम व्यवस्था भी साथ चलती है।

6, इनके अतिरिक्त आर्य समाज के तत्वावधान में आयुर्वेद, एलोपैथी, [illegible] [illegible] [illegible] बनाए हैं। [illegible]

सरकारी मान्यता के अनुसार ही होती है थोड़ा बहुत [illegible] विचार नहीं होता है कहीं नहीं होता।

अब इन सारे विषयों को समझने के लिए और [illegible] के लिए कि शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज कहां से [illegible] पहुंचा है प्रारम्भ पर दृष्टि डालनी आवश्यक है। इससे यह स्पष्ट होगा कि आर्य समाज में शिक्षा कार्य का क्या क्रमिक विकास हो रहा है अथवा दिशाहीन प्रगति चल रही है।

महर्षि दयानन्द का निर्वाण 30 अक्तूबर 1883 है, [illegible] 1883 को लाहौर में महर्षि की पुण्य स्मृति में वैदिक कालेज बनाने का विचार उपस्थित किया गया। इस कालेज के आधार भूत आदर्श की अनु-संग्रह समिति के प्रधान ला. लालचन्द जी ने इस प्रकार प्रगट किया।

इस संस्था का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय भाषा तथा प्रान्तीय भाषाओं के अध्ययन को बढ़ावा देकर शिक्षित तथा अशिक्षित जनता के भेद को दूर करना होगा। संस्कृत शिक्षा द्वारा नैतिक तथा आध्यात्मिक सत्यों का ज्ञान विस्तार किया जाएगा। नियमित जीवन द्वारा स्थिर तथा प्रबल आदतों के निर्माण पर बल दिया जाएगा। इसके साथ ही अंग्रेजी साहित्य के गम्भीर ज्ञान तथा भौतिक विज्ञानों के अध्यापन द्वारा देश की आर्थिक तथा भौतिक प्रगति को विकसित किया जाएगा। (महात्मा हंसराज-श्रीराम शर्मा पृष्ठ 19)

महात्मा हंसराज जी ने इस महान् कार्य के लिए अपना जीवन अर्पण किया, वे प्रथम मुख्याध्यापक बने तथा ला. लाजपतराय द्वितीय अध्यापक। 1 जून 1886 के स्मरणीय दिन आर्य समाज मन्दिर लाहौर में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक हाई स्कूल की स्थापना हुई। 5 दिन के अन्दर 300 विद्यार्थी आ गए। जनता की महात्मा हंसराज जी के प्रति विश्वास और श्रद्धा के कारण 1 जनवरी 1889 तक कालेज की स्थिर निधि में (105406) एक लाख पांच हजार चार सौ छः रुपए जमा हो गए। 1894 तक बी. ए, तक कालेज रूप में विकास हो गया।

डी. ए. वी. आन्दोलन की मूल भावना को समझने के लिए उस महान् आत्मा के जीवन और विचारों आदर्शों की एक हल्की सी झांकी जानने चाहिए। जिसने इस आन्दोलन को जन्म दिया। उच्च स्तर की शिक्षा संस्थाएं अपने विद्यार्थियों में [illegible] की भावना [illegible] को [illegible] है। महात्मा हंसराज का सारा जीवन [illegible] [illegible] [illegible]

जन्म-मरण की उलझन

ले.—प्रा. श्री भद्रसेन जी साधु आश्रम होशियारपुर

(25 अगस्त से आगे)

दूसरी चीजों की तरह प्राणियो के शरीर भी अपनी अपनी प्रक्रिया के अनुसार बनते और बिगडते हैं । इसी जन्म-मरण की पहेली को कठोपनिषद् में भी समझाया गया है । इसीलिए किसी की मृत्यु हो जाने पर कुछ घरों मे कठ उपनिषद् की कथा होती है । इस उपनिषद् में एक आख्यान आता है कि वाजश्रवा का एक पुत्र था जिसका नाम नचिकेता था । वाजश्रवा ने एक बार सर्वमेध यज्ञ किया और उसकी दक्षिणा में बूढी गौ दान में दी गई । अनुपयोगी गौओं के दान से अनर्थ की आशंका वश नचिकेता ने पिता से पूछा, मुझे किसको दोगे ? तीसरी बार पूछने पर पिता ने कहा—मृत्यु के लिए दूंगा । उपनिषद् के अनुसार तब नचिकेता आचार्य यम के घर पर गया, वहां आचार्य की प्रतीक्षा में बिना खाए तीन दिन रहा । इसके प्रायश्चित के लिए यम ने उसे तीन वर मांगने के लिए कहा । नचिकेता प्रथम वर में पिता की शान्ति, द्वितीय में स्वर्ग अग्नि का ज्ञान तथा तृतीय में मृत्यु के पीछे आत्मा का अस्तित्व रहता है या नहीं, यह पूछता है । यमाचार्य पहले दोनो वर दे देता है, परन्तु तृतीय वर के मांगने पर कहता है—यह अणु और अबोध है, अत और कुछ मांग । नचिकेता द्वारा पुन उसी वर का आग्रह करने पर विविध प्रलोभन देकर यम ने उसे टालना चाहा । नचिकेता जब अपनी बात पर दृढ रहता है तो यमाचार्य उत्तर देता है । तृतीय वर के विवेचन में ही मृत्यु सम्बन्धी अनेक आशंकाओं और रहस्यो की चर्चा की गई है ।

कृषि प्रक्रिया के आधार पर

इस चर्चा में मानव के जन्म-मरण की पहेली को कृषि प्रक्रिया के आधार पर समझाते हुए कहा है कि सस्यमिव मर्त्य पच्यते सस्यमिवाजायते पुन. 1.1 6 जैसे फसल पकती है और फिर वे ही दानें दोबारा खेत में बोये जाने पर उग आते हैं । ठीक ऐसे ही कृषि की प्रक्रिया की तरह मानव के जन्म-मरण की भी एक कहानी है । अर्थात् जन्म-मरण की पहेली को समझने के लिए कृषि प्रक्रिया को समझना बहुत जरूरी है । अब पाठको आओ कृषि की पद्धति पर एक नजर डालें ।

कहीं लहलहाती फसलों, खेतों, बागों और हरी-भरी सुन्दर वाटिकाओं, एक दूसरे से आलिंगन करते, झूमते हुए वृक्षो को देखकर किस का मन झूम नहीं उठता । यही खुशिया बैसाखी आदि पर्व के रूप मे यत्र-तत्र सर्वत्र दिखाई देती है और अपने परिश्रम को फूलता-फलता देखकर कृषक समाज नाच उठता है । ऐसा महान् कार्य करने वाले स्वत सबकी श्रद्धा के पात्र बन जाते हैं । ऐसी स्थिति में यह एक स्वाभाविक जिज्ञासा होती है, यह सब कैसे हुआ ? एतदर्थ जब हम कृषि प्रक्रिया पर नजर डालते हैं तो स्पष्ट होता है कि इन लहलहाती फसलो के पीछे एक योजना है । तभी तो सबसे पहले उस-उस फसल के अनुरूप भूमि का चुनाव करके फिर हल सुहागे आदि के माध्यम से उसकी 'तैयारी की जाती है यथा समय बीज का छिडकाव करके उसको रोग रहित करते हैं । तब समय पर उचित ढग से बोते हैं । यथा समय खाद, सिंचाई, देख भाल और सम्भाल करने पर कुछ मास बाद वायु की मन्द-मन्द लहरो से झूमती हुई फसलो के दर्शन होते हैं । कुछ फसलें वर्ष मे दो-तीन बार बोई जाती हैं तो कोई सारा साल ही लेती है । ये सारी बातें हम सब समय-समय पर आकाशवाणी, दूर-दर्शन से सुनते ही अपने चारो ओर देखते या पत्र-पत्रिकाओ में पढते रहते हैं ।

ऋषि की यह प्रक्रिया हमारे मानव जीवन के बहुत ही निकट है । मानव जीवन की पद्धति को समझने का सबसे सुन्दर, सरल, सरस साधक रूप भी खेती ही है । इसलिए ही वेद उपनिषद आदि शास्त्रो मे स्थान स्थान पर मानव जीवन की उपमा कृषि जन्य पदार्थों मे दी गई है, अतएव संस्कृति के अर्थ मे कल्चर शब्द का प्रयोग किया जाता है । कठोपनिषद् मे आता है कि जैसे किसी प्रकार की फसल के लिये पहले भूमि की सफाई, बीज वपन, सिंचाई अभ्यास होती है और तब जाकर वह फसल तैयार होकर पकती है । ऐसे ही माता पिता विवाह आदि, पालन-पोषण, शिक्षा, संस्कार आदि से मानव जीवन की पूर्णता और एक दिन वह अपने सांसारिक क्रिया-कलाप को पूर्ण करके यहा से कूच करता है । तथा फिर फसल की तरह ईश्वर की व्यवस्था से अपने जन्मो के अनुरूप नए चोले को धारता है ।

मानव शरीर की विविध रस रक्त मांस, मज्जा आदि सात धातुए भी वृक्ष पौधे, लता आदि से मेल खाती हैं । कल्चर शब्द का स्वतन्त्र या ऐग्रीकल्चर शब्द मे खेती अर्थ किया जाता है । वैसे इसे संस्कृति के अर्थ मे भी प्रयुक्त करते हैं क्योंकि संस्कृति मानव जीवन निर्माण की प्रक्रिया का नाम है और जो कृषि की तरह एक योजनाबद्ध, सुनिश्चित प्रक्रिया पर आश्रित है । यह कृषि प्रक्रिया मानव जीवन के जीने का आधार ही नहीं अपितु जीवन पद्धति को समझने का एक सुन्दर रूपक है । तभी तो उपनिषद् के ऋषि ने कहा है—'सस्यमिव मर्त्यं पच्यते सस्यमिवा जायते पुन इसी पद्धति के आधार पर मानव चोले की कहानी को बताते हुए कठ उपनिषद के ऋषि ने कहा है—

> योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय
> देहिन ।
> स्थाणुमन्ये ऽनुसयन्ति यथा कर्म
> यथा श्रुतम् ।5-7

अर्थात् जिस आत्मा के जैसे कर्म और जैसा ज्ञान होता है वह आत्मा उसके अनुसार ईश्वर की व्यवस्था मे कभी किसी चोले को धारता है तो कभी कीट, पतग के शरीर को तो कभी किसी वनस्पति जगत् मे पहुच जाता है । इस प्रकार आत्मा आवागमन के चक्र को पूरा करता रहता है । फसल के बीज काण्ड, गुल्म आदि अनेक उगाने के तरीकों की तरह आत्मा कभी जरायुज योनि में जाता है, तो कभी अण्डज प्रक्रिया से प्राप्त होने वाले शरीरो को धारता है तो कभी स्वेद पसीने की गर्मी या गन्द से पैदा होने वाले जू सुण्डरी के देह में पहुच जाता है तो कभी वनस्पति जगत के अनेक कार्यों में घूमता प्रतीत होता है ।

जब कभी हम खेतो को देखते हैं तो वहा कभी हल चलता दीखता है, कभी बीज बोते हुए किसान को देखते हैं और फिर एक दिन वे बीज उग कर धीरे-धीरे बढते हैं । कुछ दिनो बाद वे दाने फसल के रूप में पक कर सामने आते हैं· यदि उस फसल को काट कर किसान नहो सम्भालता तो भी वह फसल वहीं बिखर जाती हैं । इस तरह वह लहलहाती फसल हमारी आखों से ओझल हो जाती हैं । वे दाने न जाने कहा-कहां पहुच जाते हैं, उनमें से कुछ कही मीलों दूर फिर किसी और किसान द्वारा बोये जाते हैं । इसी पद्धति के आधार पर मानव चोले की कहानी को बताते हुए कठ उपनिषद् के ऋषि ने कहा है कि जीव अपने कर्म और ज्ञान के अनुरूप कभी जरायुज योनि के चोले में तो कभी अण्डज प्रक्रिया से प्राप्त होने वाले पक्षियो के देह को प्राप्त करता है तो कभी स्वद्रज या स्थाणु शरीर को प्राप्त करता है । इस प्रकार खेतो की अनेक तरह की फसलो की तरह आत्मा अनेक तरह के शरीरो को धारता है ।

क्रमश

आर्य समाज भुच्चो मण्डी में वेद सप्ताह

आर्य समाज भुच्चो मण्डी मे वेद सप्ताह 5-8-85 से 11-8-85 तक मनाया गया । श्री ओम् प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी अधिष्ठाता आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भठिण्डा द्वारा भुच्चो मण्डी मे अलग अलग पारिवारिक सत्सग-सन्ध्या हवन यज्ञ और प्रवचन द्वारा बडा अच्छा प्रभावशाली कार्यक्रम रहा भुच्चो मण्डी मे आर्य समाज की स्थापना 28 7-85 को हुई । —मन्त्री

पाठकों की सेवा में

आर्य मर्यादा के पाठको की सेवा मे निवेदन है कि प्रिंटिंग प्रैस (मुद्रणालय) में हड़ताल होने के कारण आर्य मर्यादा के 22 सितम्बर तथा 29 सितम्बर के दोनो अंक प्रकाशित नहीं हो सके यह अंक 22 तथा 29 सितम्बर तथा 6 अक्तूबर का सम्मिलित अंक समझा जाए।

—प्रबन्धक

आर्य समाज नवाँशहर में वेद सप्ताह

आर्य समाज नवांशहर मे गत दिनों वेद सप्ताह बड़े समारोह से मनाया गया इस अवसर पर प्रात आर्य समाज मे और साय परिवारों में यज्ञ होता रहा। श्री वेद प्रकाश जी सरीन प्रधान आर्य समाज तथा दूसरे सदस्य इस कार्यक्रम को लगातार चलाते रहे। प्रत्येक परिवार में यज्ञ तथा भजन उपदेश के पश्चात आर्य समाज के नियम तथा महर्षि दयानन्द के चित्र वाले कार्ड बांटे गए। यजमानो ने श्री आर्य समाज को दिल खोलकर दान दिया। आर्य जनता पर इस कार्यक्रम का बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा।

—धर्मप्रकाश दत्त मन्त्री

गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट तथा वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर का 15वां वार्षिकोत्सव

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर का 30वा धार्मिक मेला तथा श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय का 15वा वार्षिक उत्सव तिथि 6 अक्तबर रविवार से 13 अक्तूबर रविवार तक बड़े समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इसी के साथ इस बार जनसाधारण को योग सीखने का अवसर प्रदान करने हेतु योग शिविर का भी 6 से 13 अक्तूबर तक आयोजन किया गया है। आप से सानुरोध प्रार्थना है कि नीचे लिखे कार्यक्रम के अनुसार सपरिवार तथा इष्ट मित्रो सहित सम्मिलित होकर जीवन लाभ उठायें।

सामवेद पारायण यज्ञ एव योग शिविर 6 से 11 अक्तूबर 85 व 12, 13 अक्तूबर प्रात: कालीनकायक्रम

प्रात 4 बजे जागरण, 4 से 5 बजे तक शौच, स्नान आदि। 5 15 बजे से 6 15 बजे तक योग शिविर (बौद्धिक एव शारीरिक)

सचालन— डा, आचार्य गौतम जी श्रीमाली देहली द्वारा

6 30 से 7 45 बजे तक सामवेद पारायण यज्ञ। यज्ञ ब्रह्मा—श्री प श्याम सुन्दर जी स्नातक देहली। वेद पाठी— श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर के ब्रह्मचारी। 7.45 से 8, 15 बजे तक भजन श्री प. सत्यपाल पथिक अमृतसर। 8,15 से 9 बजे तक प्रवचन एव यजमानो को आर्शीवाद (प्रतिदिन अलग अलग आर्य विद्वानो के द्वारा प्रवचन का प्रबन्ध होगा) 9 बजे—अल्पाहार (प्रातराश) 10 से 10 30 बजे तक शारीरिक एवं मानसिक व्याधियो के उपचार या आध्यात्मिक मार्ग दर्शन हेतु डा आचार्य गौतम जी श्री माली से निशुल्क परामर्श एव शका समाधान

12 बजे भोजन—साय 3.30 से 5 बजे तक सामवेद पारायण यज्ञ 5 से 5.20 तक भजन श्री प. सत्यपाल जी पथिक। 5.20 से 6 बजे तक प्रवचन एव यजमानो को आर्शीवाद। 6.15 से 7,15 बजे तक योग शिविर (बौद्धिक एव शारीरिक।) 7.15 बजे भोजन। 8.30 से 9 बजे तक सगीत श्री प. सत्यपाल पथिक 9 बजे 9.45 तक प्रवचन (किसी एक आर्य विद्वान द्वारा)

12 अक्तूबर शनिवार 1985—प्रात 8.30 बजे तक पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार योग शिविर, सामवेद पारायण यज्ञ, भजन सगीत एव यजमानों को आर्शीवाद 8 30 बजे प्रातराश, डी-ए-वी- स्कूल में।

ध्वजारोहण—8,30 से 9 बजे तक ध्वजारोहण पूज्य स्वामी मुक्तानन्द जी महाराज शिष्य श्री स्वामी योगेश्वरानन्द जी, योग निकेतन ट्रस्ट ऋषिकेश द्वारा

ध्वजगायन— ब्र, सजीव कुमार व ब्र, नरेन्द्र कुमार आर्य गुरुकुल करतारपुर। वाद्यवादक डी-ए-वी हाई स्कूल करतार पुर के छात्र।

महिला सम्मेलन— प्रात, 9 30 से 12.30 बजे तक।

संयोजिका— श्रीमती कमला जी आर्या मन्त्राणी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

अध्यक्षा— श्रीमती चादरानी जी परवाणु। मंगलाचरण—इ स्राज महिला महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा।

विशेष कार्यक्रम— (20 मिनट) आर्य कन्या पाठशाला करतारपुर की छात्रायें। सगीत— श्री प सत्यपाल जी पथिक अमृतसर। मुख्यवक्ता—श्रीमती कान्ता गौड वानप्रस्थ लुधियाना, श्रीमती आशावन्ती जी अमृतसर, प्रि. विमला जी छाबड़ा बरनाला, प्रि. कमला जी खन्ना जालन्धर, श्रीमती कान्ता नन्दा गुरदासपुर भोजन 12,30 से 2,30 बजे तक स्थान- डी-ए-वी हाई स्कूल करतारपुर।

श्रद्धाञ्जली सम्मेलन तथा अमर स्वामी सम्मान समारोह—2 30 से 3 बजे तक भजन श्री प. सत्यपाल जी पथिक अमृतसर। 3से 5,40 बजे तक महात्मा आर्य भिक्षु जी ज्वालापुर तथा अन्य आर्य विद्वान् अपनी भावभीनी श्रद्धाञ्जलि द्वारा गुरु दण्डी विरजानन्द जी को अर्पित करेंगे।

3 30 से 4 30 बजे तक आर्य जगत् के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी श्रीपाद् अमर स्वामी जी महाराज गाजियाबाद को ट्रस्ट एव विद्यालय की ओर से प्रशस्तिपत्रादि से सम्मानित किया जायेगा।

शोभा यात्रा— 4,30 बजे स्मारक भवन से आरम्भ होकर करतारपुर के मुख्य बाजारो से होती हुई 5 30 बजे स्मारक भवन में सम्पन्न होगी। 6 से 7 बजे सामवेद पारायण यज्ञ, 7 से 8 बजे तक भोजन डी-ए-वी हाई स्कूल करतारपुर में। 8 से 8,30 तक भजन श्री प सत्यपाल जी पथिक अमृतसर, 8.30 से 9 10 बजे तक प्रवचन महात्मा प्रेम प्रकाश जी धूरी, 9. 10 से 9.50 तक प्रवचन महात्मा आर्य भिक्षु जी।

13 अक्तूबर रविवार 1985— पूर्णाहुति प्रात 9 बजे यज्ञ ब्रह्मा श्री पं. श्यामसुन्दर जी स्नातक के तत्वाधान मे सम्पन्न होगी।

9 बजे प्रातराश डी-ए-वी हाई स्कूल करतारपुर मे

योग सम्मेलन—प्रात 9 30 से 11 बजे तक अध्यक्ष श्री स्वामी मुक्तानन्द जी, मुख्य सचालक— योग निकेतन ट्रस्ट ऋषिकेश, मुख्यप्रवक्ता— डा. आचार्य गौतम श्रीमाली देहली।

विद्यालय कार्यक्रम एव पारितोषिक समारोह— मध्याह्न 11 से 12 बजे तक। उद्घाटन— डा सत्यकाम जी कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार। अध्यक्ष— स्वामी वेदान्तानन्द जी गीता भवन, मोगा।

आर्य सिद्धान्त सम्मेलन—12 बजे से 2 बजे तक

अध्यक्ष— श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब।

प्रवचन— श्री प श्याम सुन्दर जी स्नातक देहली, श्री महात्मा आर्य भिक्षु जी ज्वालापुर

अध्यक्षीय भाषण —श्री वीरेन्द्र जी।

प्रथम पृष्ठ का शेष

है। इसलिए वे शीघ्र नष्ट हो जाते हैं जबकि जिह्वा कोमल और लोचदार होती है इसलिए वह दांत की अपेक्षा दीर्घजीवी होती है।

अत मधुर वचन से बिगड़ा कार्य भी बन जाता है। कटु भाषण से बना हुआ कार्य भी बिगड़ जाता है। जैसे एक कवि ने कहा है—

बातहि ते बनि जावहि,
बातहि ते बन जात।
बातहि ते धर धर मिलहि,
बातहि ते बीरान?

तब हम क्यों न ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमारे जीवन का हर पहलू मधुमय हो—

मधु मन्मे निष्क्रमण।
वाचा वदामि मधुमद् भूयासम्
मधुसन्दृशः।

हे प्रभु मेरा चलना मधुर हो, मैं मधुर ही वाणी बोलूं, मैं बार-बार मधुसदृश ही होऊं।

जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वा मूले मधूलकम् ममेदह क्रतावसो मम चित्तमुपायसि। अथर्व. 1-34-2

हे प्रभो! मेरी जिह्वा के आगे मधु हो, जिह्वा के मूल में भी मधु ही रहे तथा मेरे हृदय में भी मधुरिमा का वास हो।

आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना में वेद सप्ताह धूमधाम से सम्पन्न हुआ

स्त्री आर्य समाज तथा पुरुष आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना की ओर से 2 सितम्बर से 8 सितम्बर 85 तक वेद सप्ताह बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सभा के महोपदेशक श्री शिवराज जी शास्त्री एम. ए. श्री स्वामी मनीषानन्द जी सरस्वती गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारी आर्य गर्ल्ज हायर सैकेण्डरी स्कूल की बच्चियां आर्य युवक सभा लुधियाना की भजन मण्डली तथा श्री ज्ञान प्रकाश जी शर्मा ने अपने उपदेशों प्रवचनों, भजनों, गीतों, कविताओं और वेद मन्त्रों के पाठ द्वारा आर्य जनता को प्रोत्साहित किया।

यज्ञ का कार्यक्रम प्रतिदिन सायं तीन बजे से सायं पांच बजे तक चलता रहा। इस समारोह में लुधियाना की सभी स्त्री समाजों ने भाग लिया। पूर्णाहुति रविवार 8 सितम्बर 85 को डाली गई। इस यज्ञ में लगभग पच्चास यजमानों ने भाग लिया। प्रथम दिन दो सितम्बर को यज्ञ की अग्नि श्री भीमसेन जी शर्मा ने प्रज्वलित की। इस यज्ञ में जो देवियां पहली बार आर्य समाज में आईं और यजमान बनीं, उन्हें आर्य समाज की ओर से आर्य साहित्य आशीर्वाद रूप में उपहार स्वरूप दिया गया।

पूर्णाहुति के पश्चात् देसी घी का हल्वा (यज्ञशेष) श्री ओम् प्रकाश जी सूद ग्रीन पार्क वालों की ओर से वितरित किया गया। सभी यजमानों को फल श्रीमती कौशल्या जी शर्मा की ओर से भेंट किए गए।

इसके साथ सभी यजमानों को आर्य समाज के नियम तथा अन्य आर्य साहित्य भेंट किया गया।

7 सितम्बर को कृष्ण जन्माष्टमी भगवान् श्री कृष्ण का जन्म दिन भी बहुत समारोह से मनाया गया। इस सारे कार्यक्रम में महिलाओं के साथ पुरुषों ने भी भाग लिया। आर्य गर्ल्ज हायर सै. स्कूल और आर्य महिला कालेज लुधियाना का सहयोग सराहनीय है। सारा कार्यक्रम बड़ी सफलता व सज-धज के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को स्त्री आर्य समाज की ओर से एक हजार एक रुपया वेद प्रचार विशेष की राशि भेंट की गई।

—निर्मला बेरी मन्त्राणी

दक्षिण अफ्रीका में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन सूचना

सार्वदेशिक तथा अन्य पत्रों के द्वारा आर्य जनता को दिसम्बर 1985 में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के बारे में विस्तृत जानकारी पहले ही दी जा चुकी है। इस विषय में सार्वदेशिक सभा ने भारत सरकार से अनुरोध किया था कि उक्त सम्मेलन में भाग लेने के लिए दक्षिण अफ्रीका जाने के इच्छुक आर्य बन्धुओं को उनके पासपोर्ट पर विशेष अनुमति दी जाए। जैसा कि आप जानते हैं कि सामान्य अवस्था में भारत सरकार भारतीय नागरिकों को दक्षिण अफ्रीका में प्रवेश की अनुमति नही देती है।

हमें सूचित करते हुए हर्ष है कि भारत सरकार ने हमारी प्रार्थना स्वीकार करते हुए सैद्धान्तिक रूप से उन आर्य बन्धुओं को जो अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने डरबन जाना चाहते हैं, को दक्षिण अफ्रीका में प्रवेश के लिए विशेष आज्ञा देने का निर्णय ले लिया है किन्तु यह आज्ञा सामूहिक रूप से किसी संस्था या व्यक्तियों के किसी भी संगठन को नहीं दी जाएगी। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति जो स्वतन्त्र रूप से अपने क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी को आवेदन पत्र देना होगा। जो उस प्रार्थना पत्र को विदेश मन्त्रालय भारत सरकार नई दिल्ली को विशेष अनुमति प्राप्त करने के लिए भेज देंगे।

अत: उन समस्त आर्य बन्धुओं से जो आर्य महासम्मेलन में भाग लेने दक्षिण अफ्रीका जाना चाहते हों, हमारा अनुरोध है कि वे तुरन्त अपने क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी से इस विषय में आगे सम्पर्क करके उन्हें अपना प्रार्थना पत्र दे दें। आर्य समाज तथा आर्य संस्थाएं भी जो अपने प्रतिनिधि डरबन भेजना चाहते हों, वे भी अपने प्रतिनिधियों से व्यक्तिगत रूप से तदानुसार कार्यवाही करने का परामर्श देंगे।

प्रार्थना पत्र में यह अवश्य लिखा जाए कि मैं आर्य समाज से सम्बद्ध हूं और दक्षिण अफ्रीका जाने का मेरा एक मात्र उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेना ही है।

—ओमप्रकाश त्यागी महामन्त्री

आर्य समाज जागे

महर्षि दयानन्द ने स्वस्थ समाज का स्वप्न लिया था और इसका भार आर्य समाज पर रखा, पहले 50 साल में आर्य समाज ने बड़ा काम कर दिखाया, स्वराज्य प्राप्ति में उसका बड़ा योगदान रहा, परन्तु स्वराज्य प्राप्ति के बाद आर्य समाज शिथिल होता चला गया। इसके नेता राजनीति में चले गए। अवैतनिक कार्यकर्ता न रहे। गुरुकुल कालेज प्रचार के केन्द्र न रहे। जन्म-जातिवाद हम न मिटा सके। शुद्धि का कार्य मन्द पड़ गया हम ग्रामों में नहीं पहुंचे, हमारी दान प्रणाली मध्यम पड़ गई। वर्ण आश्रम मर्यादा भंग हो गई। सन् 50 के बाद कोई वानप्रस्थी व संन्यासी नहीं बनता, आर्य समाज ने राजनीति में भाग न लेकर सख्त गलती की है हम जनता में राष्ट्रीयता एकता न ला सके। हिन्दी को राष्ट्र भाषा न बना सके हमारा साहित्य बड़ा महंगा है हम इसको घर-घर नहीं पहुंचा सके। उपदेशको, पुरोहितो का काल पड़ गया है, जो हैं भी उनमें पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, स्व. स्वतन्त्रानन्द आदि आदि जैसी भावना नही है। कोई उपदेशक विद्यालय नहीं। पाश्चात्य सभ्यता हम पर बुरा प्रभाव डाल चुकी है हम सब माया वादी हो गए हैं। पद लोलुपता घर कर गई हैं हमारा संघर्ष मुसलमानों, ईसाईयों से है जिनके पास असीम साधन हैं हमने इनसे भ्रातृ प्रेम व संगठन नहीं सीखा। उनमें अपार श्रद्धा है हम में अतिथि सत्कार की कमी है। अत: कोई प्रचारक नहीं बनता। समाज को जगाकर आर्य समाज खुद सो गया है आज देश आर्य समाज की ओर देख रहा है और हम गाफिल हैं।

—सुबोधानन्द दयानन्द मठ
दीनानगर

...

फैसला हो जाए के उत्तर में

1, हर एक समाज में पुरोहित होना आवश्यक है। हमारे छोटे से नगर पठानकोट (पंजाब) में लगभग 1950 से लेकर लगातार पुरोहित रहा है। कभी कारण वश पुरोहित छुट्टी पर चला जाए तब भी हम उन दिनों के लिए किसी विद्वान् का प्रबन्ध करते हैं ताकि दैनिक यज्ञ-हवन एवं सत्संग की प्रथा बनी रहे।

2. समाज में पुरोहित का क्या स्थान है—और उससे क्या काम लेना चाहिए तथा पुरोहित का क्या कर्त्तव्य है इस प्रश्न के उत्तर में जहां तक मेरा विचार है और अनुभव है वह इस प्रकार से है—

1. पुरोहित जी तो अपने आपको समाज के अधीन समझे तथा उस समाज के बनाए नियमो पर चलें—और अधिकारियो का उचित मान सम्मान करें।

2. सभा के अधिकारी तथा सभासद् पुरोहित जी को अपना पूज्य और मार्ग दर्शक मानें तथा आदर सत्कार करें तो इस हालत मे समाज का कल्याण होगा और बड़ी सरलता से काम आगे बढ़ेगा।

3. जब पुरोहित अपने आपको सर्वोच्च समझकर मनमानी करने लगते हैं और सभा के नियमो तथा अधिकारियो की परवाह न करके गुरुडम की ओर अग्रसर होने लगते है तब बिगाड़ पैदा होता है।

—लालचन्द महाजन प्रधान
आर्य समाज मेन बाजार
पठानकोट

निःशुल्क सिलाई स्कूल

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर श्रद्धानन्द बाजार जालन्धर में 1 सितम्बर 1985 में खुल गया है दैनिक मध्यान्तर 1 बजे से 3 बजे तक एक ट्रेंड अध्यापिका लड़कियों को कपड़े काटने तथा सिलाई करने की शिक्षा देती है।

इच्छुक परिवारों से प्रार्थना है कि वह दाखले के लिए अपना प्रार्थना पत्र आर्य समाज के अधिकारियों तक पहुंचा कर अपना स्थान निश्चित कराएं। प्रथम प्रार्थना पत्र आने वालों को प्राथमिकता दी जाएगी।

-योगेन्द्रपाल सेठ

—

जालन्धर में वेद सप्ताह सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज मुहल्ला गोविन्दगढ़ जालन्धर की ओर से वेद सप्ताह 14 अगस्त 85 से 19 अगस्त 85 तक मनाया गया, जिसमे प. धर्मदेव जी आर्य ब्रह्मचारी आचार्य नरेश जी, मा. जगदीश मुनि जी के प्रवचन, भजन आदि सुनने को मिले। जनता पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा, 19 अगस्त को पूर्णाहुति प. हरबंसलाल जी शर्मा द्वारा की गई। यज्ञ शेष का प्रबन्ध श्री प. हरबंशलाल जी शर्मा ने किया। शहर की सभी स्त्री आर्य समाजों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। उपस्थिति आशा जनक रही। 51 रुपये वेद प्रचार के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को दिए गए। —कृष्णा कोछड़ मन्त्राणी

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर की साधारण सभा की बैठक 25 अगस्त 198८ को साय चार बजे प्रधान श्री योगेन्द्रपाल जी सेठ की अध्यक्षता मे . । सर्वसम्मति से आगामी वर्ष के लिए निम्नलिखित अधिकारी निर्वाचित हुए—

प्रधान—श्री योगेन्द्रपाल सेठ, उप-प्रधान प्रिंसिपल श्री ए, एल, खन्ना, सेठ चन्दूलाल जी. मन्त्री-श्री जसवन्तराय उपमन्त्री—श्री सुभाष सहगल, श्री सोहनलाल सेठ कोषाध्यक्ष-श्री राजेन्द्र अग्रवाल पुस्तकाध्यक्ष--श्री सुदर्शनलाल आनन्द, लेखा निरीक्षक--श्री हसराज शर्मा

अन्तरग सभा सदस्य

श्री दिवानचन्द, श्री कुन्दनलाल, श्री रामनाथ श्री हसराज मर्यो लक्ष्मूराम द्'वा हायर सैकेण्डरी स्कूल जो प्रबन्धकत सभा क सदस्य सब श्री योगेन्द्रपाल सेठ श्री जसवन्तराज, श्री अमृतलाल खन्ना, श्री सोहनलाल सेठ, श्री राजेन्द्र अग्रवाल, श्री रामनाथ यादव, श्री दिवानचन्द, श्री हसराज शर्मा, श्री प्रकाशचन्द कालडा, श्री दुनीचन्द थापर, श्री कुन्दनलाल अग्रवाल, श्री सुभाष सहगल श्रीमती फूल कुमारी धीर, श्री सत्यपाल धीर श्री विवेन्द्र सब्भरवाल एडवोकेट तथा प्रतिनिधि शिक्षा विभाग।

आर्य समाज स्कूल सम्पत्ति तथा शिक्षा प्रचार समिति के 16 सदस्य भी निम्न प्रकार हैं--सर्वश्री योगेन्द्रपाल सेठ, श्री जसवन्तराज, श्री राजेन्द्र अग्रवाल, श्री ए एल, खन्ना, श्री चन्दूलाल सेठ, श्री सोहनलाल सेठ, श्री सुदर्शनलाल आनन्द, श्री प्रकाशचन्द कालडा, श्री सुभाष सहगल, श्री हसराज मर्यो, श्री रामनाथ यादव, श्री भगवानदास, श्री विरेन्द्र सब्भरवाल एडवोकेट, श्री ऋषिपालसिंह एडवोकेट, श्री सत्यपाल धीर, श्री अमृतलाल बजाज एडवोकेट।

-जसवन्तराय मन्त्री

डरबन में आर्य महासम्मेलन

जाति भेद की नीति के गढ़ दक्षिण अफ्रीका मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के सानिध्य में जो ससार के समस्त आर्य समाजो की सार्वभौम सस्था है, दिसम्बर 1985 मे एक विश्व आर्य महासम्मेलन होने जा रहा है। इस महासम्मेलन मे देश-विदेश की अनेक सस्थाओ के प्रतिनिधियों के भाग लेने की आशा है। ससार मे वैदिक सस्कृति और विश्व भातृभाव के प्रचार एव प्रसार के लिए भावी कार्यक्रमो पर वहा विचार विमर्श होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका मे जो उस देश की आर्य समाजो की प्रतिनिधि संस्था है, ने इस आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया है। भारत के अतिरिक्त यूरोप, इग्लैंड, अमेरिका आदि से भी विभिन्न हिन्दू सस्थाओ के प्रतिनिधि इस सम्मेलन में भाग लेने पहुचेंगे। फीजी से आने वाले प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व लौटोका के पूर्व महापौर बैरिस्टर सुरेन्द्र प्रसाद करेंगे। वैज्ञानिक विद्वान् स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती डी, एस. सी. इस सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे। श्री [illegible] स्नातक जो भारत सरकार के सूचना और प्रसारण विभाग मे उच्चाधिकारी रह चुके हैं, अगले मास सार्वदेशिक सभा की ओर से डरबन जा रहे हैं। वे आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के पदाधिकारियों को सम्मेलन की कार्य व्यवस्था तथा चर्चा के लिए प्रस्तावित विषयों की रूप रेखा तैयार करने में सहायता करेंगे।

इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए जाने वाले व्यक्तियो को भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय ने समिति के लिए पासपोर्ट पर अनुमति देना स्वीकार कर लिया है।

-सुरेशचन्द्र पाठक

. . . सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250

रजि. न. पी.जे.एल.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 24. 28 आश्विन सम्वत् 2042 तदनुसार 13 अक्तूबर 1985 दयानन्द 161 अक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

जीवात्मा तथा परमात्मा का स्वरूप

ले.—स्व. श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम-ए

संस्कृत भाषा मे परमात्मा—परम + आत्मा तथा जीवात्मा=जीव + आत्मा दो शब्द हैं। परमात्मा शब्द का अर्थ है— सर्वश्रेष्ठ आत्मा और जीवात्मा का अर्थ है प्राणधारी आत्मा। आत्मा शब्द दोनो के लिए आता है और बहुधा परम-आत्मा तथा जीव आत्माओ का भेदभाव किए बिना समस्त जीवन तत्वो के लिए व्यवहृत किया जाता है। परमात्मा और जीवात्माओ के कार्यो मे इतनी समता है (निस्सन्देह उनके कार्यक्षेत्र भी अत्यन्त विभिन्न हैं) कि प्राय इनके सम्बन्ध के विषय मे भ्रम हो जाता है और इस भ्रम के कारण दर्शनशास्त्र तथा धर्म दोनो क्षेत्रो मे बहुधा बाल की खाल निकाली जाती है।

इस प्रसग मे दो और शब्द ध्यान देने योग्य हैं। वे है पिड=शरीर और ब्रह्माण्ड बड़ा अण्डा.. बड़ा क्षेत्र या ससार। हमारा शरीर मूलत: एक अण्डा हैं। समस्त शरीर मूल अण्डा से विकसित होते हैं। ससार, जो समस्त शरीर जिसके अत्यन्त छोटे छोटे अवयव हैं, एक बड़ा अण्डा है। भौतिक दृष्टि से जो अण्डा है, क्रियादृष्टि से वही चक्र बन जाता है। शरीर छोटा चक्र है, जगत् बड़ा चक्र बन ससार चक्र है। पिण्ड=शरीर और ब्रह्माण्ड, जगत मे बहुत समानता है। भारत मे यह लोकोक्ति सर्व साधारण मे प्रचलित है जो पिण्ड मे है, वही ब्रह्माण्ड में है। इसका तात्पर्य यह है कि हमारी शरीरिक क्रियाए ब्रह्माण्ड रूप विशाल समष्टि की सूक्ष्म प्रतिनिधि हैं। जिस प्रकार हमारे शरीर की अधिष्ठातृ-देवता आत्मा है, ठीक उसी प्रकार इस जगत का नियामक महान् अधिष्ठाता है जिसे ईश्वर या परमात्मा कहते हैं। वैदिक साहित्य में इन दोनों प्रकार के आत्माओ को-परमात्मा तथा जीवात्माओं को-पुरुष कहा जाता है—

स वा अयं पुरुषः सर्वासु पूर्षु पुरिशयो नैनेन किंचनानावृतं नैनेन किंचनासंवृतम् (बृहदारण्यकोपनिषद् 2-5-18)

यह पुरुष ही है, जो सब देहा मे रहता, इससे कुछ भी अनावृत या असवृत नही है।

जिसका शब्दार्थ है, शरीर मे रहने वाला। मैं पुरुष हू अर्थात अपने शरीर की अधिष्ठातृ देवता हू और आप अपने शरीर की। चीवटी के शरीर मे रहने वाला आत्मा पुरुष है, कुत्ता के शरीर मे रहने वाला आत्मा दूसरा पुरुष है। इसी प्रकार अन्यत्र समझ लीजिए। अर्थात् नाना शरीर हैं, उनमे नाना अधिष्ठातृदेव आत्मा या पुरुष है। किन्तु परम आत्मा परमपुरुष, परमात्मा एक है, वह समस्त ससार का अधिष्ठातृदेव है। हमारे शरीर जो यद्यपि छोटे छोटे स्वतन्त्र अवयवी हैं, ससार नामक महान् अवयवी के अवयव हैं और यह महान् अवयवी परमात्मा के शासन—नियन्त्रण मे है। किन्तु वे परमात्मा के नियन्त्रण के अतिरिक्त, नियन्त्रण के अन्दर एक और नियन्त्रण मे ऐसी चतुरता से नियन्त्रित हैं कि जीवात्माओ की चेष्टाए, यद्यपि वे परमात्मा के नियन्त्रण के कारण सीमित हैं अपने सीमित क्षेत्र मे सर्वथा स्वतन्त्र हैं। उदाहरणार्थ महान् सूर्य की प्रत्येक गतिविधि सर्वशक्तिमान परमात्मा के नियन्त्रण मे है, परन्तु मेरी आख जो मेरे नियन्त्रण मे है सर्वशक्तिमान परमात्मा के नियन्त्रण मे नहीं है। इसके शारीरिक या आंगिक कार्य उन नियमो के अनुसार होते है, जो मेरे अधिकार मे नही है, किन्तु आख का खोलना और बन्द करना सर्वथा मेरे वश मे है। जब तक मेरी आख स्वस्थ है, यह मेरी इच्छा पर खुलेगी और मेरी इच्छा पर बन्द होगी। इस तरह मेरी आख मे द्वैध शासन है, एक शासन के आधीन दूसरा स्वतन्त्र शासन है। कई आस्तिक परमात्मा के प्रति अपनी अत्यधिक भक्ति के कारण यह मानते हैं कि जो कुछ भी हम करते हैं, वह सब परमात्मा के निश्चयानुसार नियन्त्रित, प्रदिष्ट और शासित होता है। स्वतन्त्रतावादियो तथा दैववादियो दोनो प्रकार के दार्शनिको-मे बड 2 शास्त्रार्थ हुए हैं। कईयो का कहना है कि मनुष्य स्वतन्त्र नहीं है, वह विश्व ब्रह्माण्ड का अग होने के कारण परमात्मा के नियमो के उतना ही अधीन है जितना कि कोई जड पदार्थ दूसरे कहते हैं कि यदि ऐसा है तो मनुष्य किसी भी कार्य का उत्तरदाता नही होना चाहिए किन्तु ऐसा है नही। विचार और व्यवहार की स्वतन्त्रता और अतएव उत्तरदायित्व (फलभोक्तृता) मनुष्य मे स्वाभाविक है। जब मेरा पुत्र या आश्रित या कोई अन्य जन ऐसा व्यवहार करता है जिसे मैं अशुद्ध मानता हू, तो उससे मेरा क्रोध तथा मन्यु भडकते हैं, क्योकि मैं उसके अशुद्ध व्यवहार का कारण उस की स्वतन्त्र इच्छा के उच्छृङ्खल व्यवहार को मानता हू। स्वतन्त्र-इच्छा का एक बार लोप हो जाए, तो उचित और अनुचित की भेद भावना तथा समस्त मानुषीय सस्थाए समाप्त हो जाए। इतिहास भूगोल, नागरिकता, राजनीति, व्यापार, व्यवहार कलाकौशल और वह सब कुछ जिसे विद्या शिक्षा बढाती या उत्तेजना देती है व्यर्थ हो जाते हैं। पूर्व से निश्चित पूर्ण दैववाद से जड और चेतन का अजान और सुजान का, विद्वान् और मूर्ख का, पठित और अपठित का, दार्शनिक और अज्ञानी का भेद नष्ट हो जाता है। हा, यह भी सच है कि हमारी स्वतन्त्र इच्छा की भी एक सीमा है जिसे वह कभी नहीं लाघ सकती यद्यपि हम समस्त दृश्य जगत के सम्राट नहीं हैं, तथापि हम मे से प्रत्येक चाहे अत्यन्त दरिद्र ही क्यो न हो। अपने साम्राज्यो और अधिकारो की विभिन्न सीमाओं मे सम्राट है ही, एक विशेष मर्यादा में तो हम निर्विवादरुप मे सम्राट हैं और उसमे हमारा अखण्ड साम्राज्य है। उस मर्यादा के बाहर हम कईयो के समान हैं और कईयो के अधीन भी हैं। अपनी मर्यादा के भीतर जो चाहे करें, वहा किसी के विरोध या विपरीनता का भय नही है। किन्तु उस मर्यादा के बाहर, और तदपेक्षया बडी मर्यादा के घरे मे हम स्वच्छन्द सम्राट नही है। हम जो चाहते है करते हैं किन्तु एक विशेष सीमा तक और वह भी दूसरो की सहायता से। हम सेनासचालन कर सकते हैं किन्तु तभी तक जब तक कि सैनिक हमारा अधिकार स्वीकार करें और हमारे प्रतिभक्ति प्रदर्शित करें। हमें यह भी देखना होता है कि उन की यह भक्ति असन्दिग्ध है। इस विषय मे जरा सी भूल चूक हमारे सारे खेल को बिगाड सकती है। इस दूसरी मर्यादा के परे एक और बडा घेरा है। जिसमे हम सर्वथा सम्राट नही हैं जिसमे हम किसी दूसरे सम्राट की प्रजा हैं जो हम सब की अपेक्षा बडा अतएव सबसे बडा है। इसमे हम सर्वथा दूसरो के समान हैं, न हम किसी पर शासन कर सकते है और न कोई हम पर शासन कर सकता है। हम जो चाहते हैं करने किन्तु दूसरो की सम्मति और सहयोग से। हमारी इच्छा हमारी स्वतन्त्रता की सीमा के अनुरुप सीमित हैं। यहा हमे महत्वकाक्षा नहीं करनी चाहिए और बहुधा हम करते भी नही। इसी सीमा तक हम बढ सकते हैं। इससे आगे किसी भी उपाय से नहीं जा सकते। इससे आगे हमारी इच्छा रुक जाती है और ठहर जाती है। सचमुच तब बेबस होते है। हम अपनी समस्त ज्ञान-शक्तियो, अनुभवो एव इच्छाओ के साथ एक दूसरी शक्ति की पूरी पकड मे होते हैं स्वातन्त्र्य का एक कण भी हममें नही होता। हम चाहे तो अपने को दास कह सकते हैं।

क्रमश

आज हम कहाँ खड़े हैं

ले.—श्री सत्यदेव जी वेदालंकार म. नं. 145, गली नं. 4
सेंट्रल टाऊन जालन्धर

(6 अक्तूबर से आगे)

कर पजाबी मे बातचीत करते थे। पृ 81 उनका रहन-सहन, वेशभूषा, खान-पान कहीं भी मिथ्या अभिमान का लेश मात्र न था। वे सामान्य जन-जीवन का एक अभिन्न अग थे।

डी ए वी कालिज एक स्वतन्त्र वस्तु न थी। आर्य समाज तथा हिन्दू जनता की सेवा का एक माध्यम था। इसी भावना से महात्मा जी ने कालिज के आजीवन सेवको का एक मण्डल तैयार किया। उसका आधार —

"यह वांछनीय है कि ऐसे व्यक्ति कालिज के अध्यापक मण्डल मे हो जिनके मन मे दयानन्द कालिज के आधारभूत आदर्शों तथा आर्यसमाज के लिए कार्य करने की प्रबल आकाक्षा हो।" पृ 53।

यह ऊचा आदर्श था।

1911 मे कालिज प्रारम्भ को 25 वर्ष हुए। धूमधाम से जयन्ती मनाई गई और म हसराज ने केवल 47 वर्ष की आयु मे कालिज के प्रिंसीपल पद से सब के विरोध करते हुए भी अवकाश प्राप्त किया। आराम के लिए नहीं अपितु बृहत्तर क्षेत्र मे आर्य समाज, हिन्दू समाज तथा देश के लिए कार्य करने के लिए। यह कार्य नवम्बर 1938 तक, आयु के 74 वर्ष मे, जीवन के अवसान तक लगातार चलता गया। महात्मा जी का जीवन और कार्य, शिक्षा के क्षेत्र मे भी आर्यसमाज के सामने क्या आदर्श थे उनके समझने मे सहायक है।

आर्य समाज के शिक्षा कार्य की एक और परम्परा गुरुकुलो की स्थापना से प्रारम्भ होती है। प, गुरुदत्त विद्यार्थी आर्य समाज के एक महान् विद्वान् प्रतिभा शाली प्रचारक तथा डी-ए-वी कालेज के सस्थापको मे थे। वे वेद वेदागो की शिक्षा पर और भी अधिक बल देना चाहते थे। शिक्षा की ऋषि दयानन्द द्वारा वर्णित, सत्यार्थ प्रकाश तथा सस्कार विधि मे निर्दिष्ट आदर्शों के और अधिक समीप लाने के लिए एक और महान् प्रयत्न हुआ। 1897 मे महात्मा मुन्शी राम जी ने सद्धम प्रचारक पत्र मे गुरुकुल शिक्षा पद्धति के उद्धार के लिए आन्दोलन प्रारम्भ किया। 1898 मे प्रतिनिधि सभा मे गुरुकुल प्रारम्भ करने का प्रस्ताव पास किया तथा महात्मा मुन्शीराम जी ने इसके लिए तीस हजार रुपये इकट्ठे करने की कठिन प्रतिज्ञा ली। प्रतिज्ञा पूर्ण न होने तक के लिए उन्होने गृह त्याग कर आर्य समाज मे डेरा लगाया। लगभग 9 मास तक की श्रम यात्रा के बाद जिस में पजाब के अतिरिक्त अन्य प्रान्तो मे भी दौरा किया गया, यह कार्य पूरा हुआ। 1902 मे हरिद्वार से लगभग 3 मील दूर कागडी गाव के पास, गगा के किनारे, खैर और नील के जगलो मे थोडी सी भूमि साफ कर कुछ छप्पर डाले गए। 4 मार्च 1902 को 20 ब्रह्मचारी तथा कुछ कार्यकर्त्ताओ के साथ महात्मा मुन्शीराम जी ने अपनी तपस्या का सूत्रपात किया।

गुरुकुलो का विचार आर्य समाज मे एक आधी की तरह फैला, 1911 मे गुरुकुल वृन्दावन की स्थापना हुई। इससे पहले विशुद्ध सस्कृत- विकास के कार्यक्रम को लेकर 1907 मे ज्वालापुर महाविद्यालय की स्थापना हुई। लगभग 25 वर्ष के अन्दर 2 पजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य-प्रदेश, बम्बई, हैदराबाद, गुजरात आदि सारे भारत मे 77 गुरुकुलो की स्थापना हो गई। इन सब गुरुकुलो की निम्न विशेषताए थी।

1 स्थान बस्तियो से दूर रखे गए।

2 बालक और बालिकाओ को छोटी आयु मे इस आश्वासन पर लिया जाय कि गुरुकुल की पाठ-विधि समाप्त करके बाहर जायेंगे।

3 बालक और बालिकाए गुरुओ के समीप रहकर विद्यालय और आश्रम मे ब्रह्मचर्य के नियमो का पालन करें।

4, वेद वेदाङ्गो तथा सस्कृत वाड्मय की शिक्षा को प्रमुख स्थान दिया जाय।

5 शिक्षा का माध्यम हिन्दी भाषा हो।

6. देश मे स्वराज्य न था-अत गुरुकुलों के लिए सरकारी सहायता न ली गई।

यह स्मरण रखना चाहिए कि गुरुकुलो में भी उस पाठ-विधि का समावेश न हो सका जिसका पूरा ब्योरा ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश (समु. 3) तथा संस्कार विधि (वेदारम्भ प्रकरण) में दिया है। इस परिवर्तन के कारणों का उल्लेख स्व. आचार्य रामदेव जी ने प्रकाश पत्र में 1924 के अक में किया है। यह लेख आर्य मर्यादा के 1985 के शिवरात्रि अंक में पुन मुद्रित हुआ है आचार्यजी के कहने का सारांश यह है कि—

1 ऋषिवर ने 48 वर्ष के ब्रह्मचर्य की दृष्टि से लगभग 32 वर्ष का अध्ययन काल मानकर इस पाठविधि का ब्योरा दिया। अब केवल 17 वर्ष का अध्ययन काल है। ब्रह्मचर्य 23-24 वर्ष का है, जो बहुत सा सक्षेप करना होगा।

2 ऋषिवर की पाठविधि मे वर्तमान प्रचलित भूगोल, गणित, विज्ञान, इतिहास प्रान्तीय भाषाए, अन्तर राष्ट्रीय भाषा अग्रेजी तथा ऋषिवर के अपने ग्रन्थो का उल्लेख नही। अब इन सब का पढाना आवश्यक है। अत वर्तमान काल के गुरुकुलो मे मूल पाठविधि को परिवर्तित तथा सक्षिप्त करके ही प्रचलित किया जा सकता है।

प्रकाश के उस ही अक में म नारायण स्वामी जी का भी एक लेख है। उस मे मान्य स्वामी जी ने आर्य शिक्षा सस्थाओ के फैलाव पर चिन्ता प्रकट की है। उनका कहना है कि एक तो इन सस्थाओ का बढता हुआ आर्थिक भार समाज को दबा रहा है और दूसरे सस्थाओ के कारण प्रचार कार्य की ओर आवश्यक ध्यान नही दिया जा रहा। मैं समझता हू कि मान्य स्वामी जी की सूक्ष्म दृष्टि ने आने वाले खतरे को भाप लिया था। इसीलिए उन्होने यह विचार दिया कि नई नई सस्थाओ का खोलना बन्द कर दिया जाए वर्तमान सस्थाओ को आत्म निर्भर बनाने का प्रयत्न किया जाए तथा आर्य समाज का मुख्य कार्य प्रचार को माना जाए।

इन विचारो को प्रगट किए अब 60 वर्ष से ऊपर हो गए और डी-ए-वी आन्दोलन तथा गुरुकुल प्रणाली का प्रारम्भ भी लगभग एक सौ वर्ष पुराना हो गया। अब तो डी-ए-वी आन्दोलन से सम्बद्ध सस्थाओ का जाल भारत भर मे फैल गया है और सम्भवत बाहर भी। गुरुकुल प्रणाली की सस्थाओं का उतना विस्तार तो नहीं पर गुरुकुल स्वय एक विश्वविद्यालय के रूप को धारण कर गया है।

आर्य शिक्षा-सस्थाओ में लगातार परिवर्तन होते रहे हैं, पर पिछले 30-35 वर्ष में परिवर्तित सम्भवत आमूल चूल हो गया है। इस बड़े परिवर्तन का आधार देश में होने वाले महान् परिवर्तन अर्थात् स्वतन्त्रता प्राप्ति है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ देश का शैक्षणिक वातावरण बहुत बदल गया है। राष्ट्रीय शिक्षा विकास पर बहुत विचार हुआ। नए नए परीक्षण प्रारम्भ हुए और इन सब का प्रभाव आर्य समाज के शिक्षा कार्य पर होना स्वाभाविक था। इस परिवर्तन का एक बहुत बड़ा [illegible] अनिवार्य थी अब बाहुल और सुलभ हो गई इस समय कुछ विशुद्ध धार्मिक शिक्षण संस्थाओं को छोड़कर सब शिक्षा सस्थाए सरकारी अनुदान पर आश्रित हैं। इस अनुदान के कारण सस्थाओं की बनावट, प्रबन्ध और आदर्श सब पर प्रभाव पड़ा है। सब सस्थाओ को एक राष्ट्रीय या सरकारी ढाचे मे रहना आवश्यक है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की आलोचना के प्रारम्भ मे यह समझ लेना चाहिए कि हमारे देश में लगातार आवाज उठ रही है कि हमारी प्रचलित शिक्षा पद्धति हमारे राष्ट्र की आवश्यकता और आकाक्षाओ के अनुरूप नही है। इसका कारण यह है कि राजाराम मोहन राय के समय से जो अग्रेजी पद्धति चलाई गई वही थोड़े बहुत परिवर्तनो के साथ चल रही है। अब भी हम शिक्षा सम्बन्धी आदर्शों के लिए योरोप और अमेरिका की ओर ही देखते हैं। गुरुकुल के प्रारम्भ काल में ही श्री बाल कृष्ण जी को जो उपाचार्य थे। इग्लैंड भेजा गया था। यह और बात है कि उन्होने वहा से डाक्टरेट प्राप्त कर आने पर गुरुकुल मे कार्य करना स्वीकार नहीं किया, पुनर्विवाह भी किया तथा कोल्हापुर मे प्रिंसिपल बने। डी-ए-वी सस्थाओं की ओर से भी श्रीसूर्यभानु जी आदि अनेक विद्वान् इग्लैंड और अमेरिका गए अनगणित प्लेट फार्मों से मैकाले की निन्दा के बावजूद [illegible] ही प्रारम्भ किया हुआ ढाचा च रहा है।

सम्भवत अभी तक भारतीय आवश्यकताओं और आदर्शों के अनुरूप शिक्षा का कोई ढाचा विकसित नही हो पाया। पर इस दिशा में राष्ट्रीय स्तर पर प्रयत्न अवश्य हो रहा है। अभी अभी हमारे नए प्रधानमन्त्री जी ने भी इस सम्बन्ध में कुछ घोषणाए की है।

पर हमें तो आर्य समाज की दृष्टि से विचार करना है। आर्य समाज का इस क्षेत्र मे क्या योगदान है? आर्य समाज का शिक्षा कार्य खूब विस्तृत है। इस का कुछ उल्लेख पहले भी आया है। आर्य समाज के इन प्रयत्नों का मूल्यांकन होना चाहिए।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य समाज पर भ्रष्टाचार की छाया—3

इस विषय पर मैंने जो लेख इससे पहले लिखे हैं उनके द्वारा आर्य जनता का ध्यान इस नई स्थिति की ओर दिलाया है जो आर्य समाज मे पैदा हो रही है। जब कभी कोई सच्ची बात कही जाती है तो कई महानुभाव बुरा मनाते हैं और कई बार यह दोष भी समझा जाता है कि अकारण ही आर्य समाज को बदनाम किया जा रहा है। उस स्थिति में यह प्रश्न भी पैदा होता है कि यदि वास्तव मे ही आर्य समाज में भ्रष्टाचार की भावना पनप रही है तो उसे रोकने का कोई उपाय है या नही? मैं यह भी मानने को तैयार हू कि कई बार निराधार आरोप लगा दिए जाते हैं। ऐसी स्थिति मे जो भी व्यक्ति ऐसा अपराध करता है उसे अवश्य दण्ड मिलना चाहिए। मैं तो यह भी कहूगा कि उसे आर्य समाज से ही निकाल देना चाहिए। परन्तु यदि सब कुछ जानते हुए भी आर्य समाज के अधिकारी उन व्यक्तियों के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने को तैयार न हो जिनके विरुद्ध गम्भीर आरोप हों तो उस स्थिति में क्या किया जाए। मेरे विचार मे सब कुछ जानते हुए चुप रहना सबसे बडा पाप है। हम आर्य समाजी कई बार इस बात पर गर्व करते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ससार भर के मतमतान्तरो की जो बुराईया थी उन्हे ससार के सामने स्पष्ट रूप से रख दिया था। इसके लिए उन्हे अन्त मे अपना बलिदान भी देना पडा था। परन्तु उन्होने वैदिक धर्म को जो सच्चा धर्म है दूषित होने से बचा लिया था। आज तो हम बडे गर्व से महर्षि का उदाहरण पेश करते हुए कहते हैं कि उन्होने असत्य और अधर्म पर से पर्दा उठाने मे कोई संकोच न किया था परन्तु जब हमारी बारी आती है तो हम स्वय उस पर पर्दा डालने का प्रयास करते हैं। इस का यह परिणाम है कि आर्य समाज बदनाम हो रहा है। उसके लिए आज जनसाधारण में वह श्रद्धा नही जो पहले हुआ करती थी। कई बार हमें यह भी सोचते हैं कि क्या कारण है कि अब जनता में आर्य समाज के लिए वह आकर्षण नही रहा जो पहले था। इसका एक कारण यह है कि कई आर्य समाजो के अधिकारी कई बार वह लोग बन जाते हैं जिनका आचरण आर्य समाज के सिद्धान्तो और नियमो के बिल्कुल विपरीत होता है। जब दूसरे लोग उन्हे देखते हैं तो वह पूछते हैं कि क्या यही वह आर्य समाज है जो महर्षि दयानन्द ने बनाया था। उस आर्य समाज ने तो स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हसराज जैसे महापुरुष पैदा किए थे जो आर्य समाज के धन और सम्पत्ति का किसी भी प्रकार दुरुपयोग करना महापाप समझते थे। उनके अपने पास जो कुछ भी था उन्होंने वह भी आर्य समाज के लिए दे दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने तो अन्त में सन्यास ले लिया था। महात्मा हसराज जी ने विधिवत तो सन्यास न लिया था परन्तु वह किसी सन्यासी से कम न थे। उन्होंने दूसरो के लिए अपने जीवन का एक उदाहरण पेश किया था यही कारण था कि उनके बाद भी आर्य समाज मे समय 2 पर ऐसे व्यक्ति जन्म लेते रहे हैं जो अपने तप और त्याग से दूसरो के लिए एक ज्योति स्तम्भ बनकर आते थे आज आर्य समाज ससार की दृष्टि मे गिर रहा है तो केवल इसलिए कि नैतिकता का जो उच्च स्तर किसी समय आर्य समाज में दिखाई देता था वह आज नजर नहीं आता। इसलिए लोग पूछते हैं कि श्रद्धानन्द और हसराज का आर्य समाज कहा गया?

यह प्रश्न इसलिए भी उठ रहा है क्योंकि ऐसे कई उदाहरण सामने आए हैं जहा केवल भ्रष्टाचार का समर्थन ही नहीं किया गया। उसे प्रोत्साहन भी दिया गया। कोई संस्था के बड़े 2 नेताओं के संरक्षण में भ्रष्टाचार पनप रहा है। इसका परिणाम आर्य समाज और उसकी संस्थाओं के लिए अत्यन्त निराशा जनक हो रहा है। वास्तविक स्थिति क्या है इसके विषय में आगामी अंक मे अपने विचार पाठकों के सामने रखूंगा।

—वीरेन्द्र

करतारपुर पहुंचो ?

एक बार फिर गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत विद्यालय करतारपुर के वार्षिक अधिवेशन के दिन आ गए हैं। 30 वर्ष हुए जब यह क्रम शुरु हुआ था, प्रत्येक वर्ष इन्ही दिनो में इस सस्कृत विद्यालय का वार्षिक अधिवेशन होता है। लगभग 50 वर्ष पूर्व अफ्रीका से एक ऋषि भक्त श्री बद्रीनाथ जी जालन्धर आए थे। उन्होंने पूछा कि गुरु विरजानन्द का जन्म कहा हुआ था और उन्हें जब बताया गया कि करतारपुर के पास गगापुर नाम का एक गाव था जहा उनका जन्म हुआ था लेकिन अब वह गांव पानी में बह गया है। तो उन्होंने करतारपुर मे ही गुरु विरजानन्द का स्मारक बनाने के लिए अपने पास से पचास हजार रुपया आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को दिया। उस धन से गुरु विरजानन्द स्मारक बना दिया गया। लेकिन कई वर्ष यह फिर भी वीरान पडा रहा। कोई बीस पच्चीस वर्ष की बात है जब स्वर्गीय स्वामी विज्ञानानन्द जी ने यहा एक सस्कृत विद्यालय खोलने की व्यवस्था की। वह इसे एक सस्कृत विश्वविद्यालय बनाना चाहते थे। लेकिन अपने जीवन में वह जो कुछ बना सकते थे बना गए। उनके बाद इस सस्था को चलाने का दायित्व एक प्रबन्ध समिति को सौंप दिया गया। जिसके प्रधान श्री सेठ शिवचन्द जी हैं, मन्त्री श्री चतुंभुज जी मित्तल और अधिष्ठाता श्री ऋषिपाल सिंह एडवोकेट हैं। ये तीनों अपने अपने साथियो के साथ धीरे-धीरे इस सस्था को चला रहे हैं। और यह दिन दोगुनी रात चौगुनी उन्नति कर रही है पजाब मे कुछ हालात बिगड जाने से अब लडको की सख्या कुछ कम हो गई है लेकिन तीन वर्ष पूर्व 60-70 बच्चे केवल सस्कृत पढने के लिए इस गुरुकुल मे दाखिल हुआ करते थे। उनमे से कई अन्य राज्यो से भी आते थे। इस सस्था की सबसे बडी विशेषता यह है कि यह सरकार या किसी अन्य सस्था से धन नही लेती। लोगों के दान के सहारे ही यह चल रही है। और जो बच्चे यहा पढते हैं उन्हे नि.शुल्क शिक्षा दी जाती है। शुरु शुरु मे इसका एक हाल था, जो श्री बद्रीनाथ जी ने बनवाया था और दो कमरे थे। अब एक यज्ञशाला के अतिरिक्त आठ दस और कमरे भी बन गए हैं। एक गौशाला भी है जिसमे दस के लगभग गाए हैं। उनका दूध गुरुकुल के बच्चो को पिलाने के काम आता है।

इस बार का वार्षिक अधिवेशन एक दृष्टिकोण से 6 अक्तूबर से शुरु हो चुका है। उस दिन सामवेद पारायण यज्ञ शुरु किया गया है। जिसकी पूर्णाहूति रविवार 13 अक्तूबर को सुबह 9 बजे डाली जाएगी। आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् श्री प श्याम सुन्दर जी स्नातक यह यज्ञ करा रहे हैं। यह सुबह और शाम हर रोज होता है। इस बार के वार्षिक अधिवेशन की एक विशेषता यह है कि एक योग शिविर लगाया गया है जहा लोगो को योगासन और योग के अन्य लाभ बताए जाते हैं। डा आचार्य गौतम जी श्रीमाली जोकि इसके विशेषज्ञ समझे जाते हैं वे लोगो को योग के बारे मे सुबह शाम पूरी जानकारी देते हैं। इसके लिए कई लोग बाहर से भी आ रहे हैं। 12 अक्तूबर शनिवार को सुबह 8 30 से 9 बजे तक श्री स्वामी मुक्तानन्द जी महाराज झडा फहराएगे। उसी दिन 9 30 से 12 30 बजे तक प्रात श्रीमती चादरानी की अध्यक्षता में महिला सम्मेलन होगा। और उसी दिन 3 30 बजे तक श्री अमर स्वामी जी महाराज का अभिनन्दन किया जाएगा और उसी दिन शाम को 4 30 बजे जलूस निकलेगा। रविवार 13 अक्तूबर को प्रात 9 30 बजे से 11 बजे तक योग सम्मेलन होगा। 11 बजे से 12 बजे तक विद्यालय का पारितोषिक वितरण समारोह होगा जिसका उद्घाटन गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा. सत्यकाम करेंगे और इसकी अध्यक्षता मोगा के स्वामी वेदातानन्द जी करेगे। दोपहर को 12 से2 बजे तक आर्य सिद्धान्त सम्मेलन होगा जिसमें महात्मा आर्य भिक्षु जी अपने विचार जनता के सामने रखेंगे।

इस बार के वार्षिक अधिवेशन की एक विशेषता यह भी है कि इसे एक आध्यात्मिक सम्मेलन बनाया जा रहा है। अब इससे राजनीतिक नेताओ को नही बुलाया जाता। बडे बडे विद्वानो को सन्यासियो और महात्माओ को बुलाया जाता है ताकि आम जनता उनसे प्रवचन सुनकर अपने जीवन को सार्थक बना सके। राजनीतिक नेता इधर-उधर की बातें कर जाते हैं लेकिन काम की बात कोई नही करता इस गुरुकुल के वार्षिक अधिवेशन को उस महापुरुष के विचारो के अनुरूप

(शेष पृष्ठ 5 पर)

जादूगर की कहानी

ले.—आचार्य शिवराज शास्त्री एम. ए, मौलवी फाजिल

जादू वह होता है जो दर्शक को अपने विचार व आस्था परिवर्तन करने को बाध्य कर देता है।

ऋषिवर दयानन्द जी अपने युग के एक ऐसे ही महान् जादूगर थे। उनके काल में भारतवर्ष विभिन्न सम्प्रदायो का एक चिड़ियालय बना हुआ था। प्राय सभी सम्प्रदायो के पास विचारों के नाम पर जो कुछ था उसमे ईश्वर, धर्म एव अन्य आचार विचार के सम्बन्ध में प्राचीन भारतीय वैदिक पद्धति का सिद्धात परिवर्तन सा था, युग युगो से विश्व की प्राचीनतम आर्य जाति जिस वेद धर्म को अपना धर्म ग्रन्थ मानती थी उसके स्थान पर नाना प्रकार के पत्थर और धातुओ की प्रतिमाओ का पूजन, कथा, उन की बहुविध उपासना मानव का ध्येय बन गई थी, भारतवर्ष की इस दुर्दशा का लाभ उठा कर सभ्यता और संस्कृति से अति दरिद्र ईसाई और मुसलमानों ने आर्य जाति के वंशधरो को उनकी मान्यताओ की हीनता का प्रदर्शन कर उन्हे ईसा की भेड़ें और मुहम्मदी धर्म का आहार बना डाला। करोड़ो आर्य पुत्र धर्म विमुख हो कर ईसाई और मुसलमान बन गए। इस प्रकार देश मे अखण्ड आर्य वंश के अतिरिक्त दो नए वंश प्रचलित हुए जो अपना सम्बन्ध अरब और पाश्चात्य देशो से बतलाने लगे।

देव दयानन्द ने इस दुर्दशा को देखकर ऐसी कठिन परिस्थितियो मे जब कि वेद और वैदिक धर्म का नाम लेना भी काल का आह्वान करना था, सिंह समान वेद के विरोधियो को ललकारा।

आर्य जाति के वंशधरो को उनकी जड़ उपासना से विमुख हो कर चेतन तत्व, जो ईश्वर, जीव का वास्तविक स्वरूप समझाया एव उन्हे अपने आप को विदेशी मान कर आर्य जाति के सामुख्य मे खड़े होने से ललकारने को तैयार किया।

महान् आश्चर्य है कि महर्षि दयानन्द के इस प्रयत्न का प्रभाव न केवल समस्त आर्य (हिन्दू) जाति पर पड़ा अपितु मुसलमान और ईसाईयों को भी अपने विचारों, सिद्धातों एव मान्यताओं में मौलिक परिवर्तन करने पड़े, जिसके आधार पर वे प्रबुद्ध हिन्दू जाति के सामने टिकने की तैयारी कर सकें। यह दो शक्तियों का महान एव अद्भुत संघर्ष था जो भारतीय इतिहास की अमर-कहानी के रूप में आज भी सुरक्षित है।

ऋषि दयानन्द से पूर्व सारे हिन्दू सम्प्रदाय परमात्मा को साकार एक देशी काल विशेष मे उत्पन्न मानते आ रहे थे।

उपास्य मूर्तियों का इतिहास विशेष था जो पुराणो और अन्य लोक प्रचलित पुस्तकों द्वारा अनुमोदित था। ऋषि दयानन्द के प्रचार एव पाखण्ड खण्डन के परिणाम स्वरूप सभी सम्प्रदायों ने कहना प्रारम्भ कर दिया कि :—"परमात्मा निराकार तो है ही, साकार भी है।" इस का अनुमोदन करने के लिए अपने-अपने आचार्यों के ग्रन्थो से विशेष 2 प्रमाण प्रस्तुत करने प्रारम्भ कर दिए थे।

वेद अनुमोदित निराकार ईश्वर मे जनता जनार्दन की बढ़ी आस्था को देख मूर्तिके उपास्य स्थल मन्दिरो में ही गीता, उपनिषद, रामायण महाभारत के अतिरिक्त हिन्दी भाषा के उन विद्वानों की कविताओ की भी कथा वार्ता होने लग पड़ी जो अपने कालमे मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी व निराकारवाद के प्रबल समर्थक थे।

गीता के इस श्लोक पर—

ईश्वर सर्वभूताना हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयान् सर्व भूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥

अर्थ —विश्व का निर्माता जगदीश्वर सभी प्राणियो के हृदय में निवास करता है और समस्त प्राणियो के सचालन का कार्य ऐसे करता है जैसे एक यन्त्र चालक (ड्राईवर) अपने यन्त्र (मशीन) का।

जिन योगी राज कृष्ण के उपदेश गीता को परे फैंक कर उनके चित्रो की उपासना के लिए अनेक मन्दिरो की रचना की गयी थी, उन्हीं मन्दिरो मे कृष्ण के आध्यात्मिक स्वरूप को जनता जनार्दन के हृदयङ्गम करने के लिए निराकार के पोषक कृष्णामृत उपदेश श्रीमद्-भगवत गीता की स्थापना से होने लगी। यह वही कृष्णामृत है जिसके महात्म्य में कहा गया है .—

'सर्वोपनिषदों गावोदोग्धा गोपालनन्दन.।'

सारी उपनिषदें गाय स्वरूप हैं जिन का दुग्ध दोहने के लिए श्री कृष्ण ने गोपाल का रूप धारण कर उस दुग्धामृत का पान गीता रूपेण के रूप मे सब को कराया।

जता .... उपनिषदों की निराकार उपासना का वर्तमान हिन्दू धर्म के साकार देवी देवताओं एवं उनके षोड्श पूजा उपहार के साथ क्या सम्बन्ध? वेद के बाद एक गीता युग आया। इसे महर्षिवर दयानन्द .... पौराणिक जगत् के सिर पर चढ़ कर बोल उठा। श्री राम चन्द्र के जीवन चरित्र रामायण के .... तुलसी दास के यह .... भी जन-जन के हृदय मे घर करने लगे :—

बिन पग चले सुने बिनु काना।
कर बिन कर्म करे विधि नाना ॥

इतिहास की गुत्थियो को सुलझाने के लिए रामलीला का कोई महत्व हो सकता है परन्तु विश्व-विधायक, जगदुत्पादक, स्थिति कारक, सहारक, जगदीश्वर की उपासना में राम के साकार स्वरूप की उपासना का क्या महत्व? वे तो स्वय अपने जीवन भर जिस निराकार तत्व की उपासना वेद शास्त्रो के आधार पर किया करते थे उस का वर्णन गोसाईं तुलसी दास जी ने रामायण मे इन शब्दों में किया है .—

विगत दिवस मुनि आयसु पाई।
संध्या करन चले दोऊ भाई ॥

अर्थात् सायकाल होने पर ब्रह्मनिष्ठ मुनियों की आज्ञा पाकर श्री रामचन्द्र एव लक्ष्मण दोनो भाई लीलामय निराकार भगवान की सध्योपासना के लिए एकान्त स्थान की ओर प्रस्थान कर गए। राम निराकार की उपासना करें एव हम साकार राम की उपासना करें यह कैसा विचित्र सयोग?

ऋषि दयानन्द के पश्चातवर्ती प्राय सभी हिन्दी संस्कृत के कवियो की रचना का आधार जगन्नियन्ता को निराकार स्वरूप मे स्थानापन्न हो गया।

परमात्मा का साकार स्वरूप गौण व विवादास्पद बन गया अर्थात् परमेश्वर का निराकार रूप स्वय सिद्ध है जिसमें किसी मत मतान्तर को ननुनच करने को स्थान नहीं रहा प्राय सभी सम्प्रदायो के प्रचारक अपने-अपने आचार्यों के विशिष्ट काव्यों को दिखला-2 कर विश्वनियन्ता के निराकार स्वरूप को सिद्ध करने लग पड़े। यह चमत्कार ऋषि दयानन्द का ही कहा जा सकता है।

दूसरी ओर हिन्दू (आर्य) धर्म पर आक्रमण करने वाले विदेशी ईसाई मुस्लिम .... के साकार .... के विरुद्ध .... करने आरम्भ कर दिए थे। वे भारतीय मुस्लिमों को सिखाते थे।

मेरी .... तो .... में रहेगी।
यह .... चमन में रहेगी ॥

उन्हीं .... भारतीय ज्ञान गौरव का अनुभव किया तो उनके .... मुहम्मद इकबाल .... जैसे महाकवि गा उठे—

.... यही है मेरा वतन वही है ....
मीरेअरब (मुहम्मद साहब) को
आई ठंडी हवा जहां से।
मेरा वतन वही है मेरा वतन
वही है ॥

जन्नत 1 कलीम 2 इसके
परबत 3 यहां की सीना। (2)

(1) मनुष्य, (2) देवता, (3) सीना वह पर्वत जिस पर मूसा को ब्रह्म का दर्शन हुआ।

नूहे 1 नबी का आकर
ठहरा यहां सफीना 2
मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है।

अरब के रेगिस्तान की प्रशंसा करने के बजाय इकबाल ने भारतीय पर्वत हिमालय की प्रशसा मे गीत गाना प्रारम्भ कर दिया—

ए हिमालय ए फसीले 3 किश्वरे 4 हिन्दोस्तां।
ए हिमालय दास्तां 5 उस वक्त की कोई सुना ॥
मस्कने 6 इबनाए 7 आदम
जब बना दामन (8) तेरा।

भारतीय वैदिक सिद्धात आवागमन को न मानने वाले मुसलमानों को विवश किया कि वह स्वीकार करें कि—

मौत इस जिन्दगी का वक्फा 9 है
यानी आगे चलेंगे दम लेकर।
जो मुसलमान स्वर्ग व नर्क को
स्थान विशेष ॥

(1) नूह एक अवतार माने जाते हैं। (2) किश्ती (3) दीवार (4) स्वर्ग (5) कहानी (6) निवास स्थान (7) सन्तान (8) किनारा (9) क्षण।

पर मानते थे उन्हें समझाया कि—

अमल से जिन्दगी बनती है ....
दोजख भी जहन्नम भी है,
ये खू खाकी अपनी फितरत में,
न नूरी 1 है न नारी (2) है।

ऋषि दयानन्द के परम भक्त अलीगढ़ विश्वविद्यालय के संस्थापक सर सैयद साहब ने अपने विशेष कुरान भाष्य में लिखा—

"एक मुल्ला यह समझता है कि स्वर्ग या नर्क किसी विशेष स्थान पर है। स्वर्ग मे शहद व दूध की नदियां बहती हैं व हूरोंगुलमान (8) उन्हें प्राप्त होंगे।" इस प्रकार उर्दू अरबी, फारसी के सैकड़ों उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं जिन्हें पढ़ कर विश्वास हो जाता है कि ऋषि दयानन्द के विचारों .... मुसलमान विचारकों की विचारधारा .... हुआ।

(क्रमशः)

धर्म का वास्तविक स्वरूप

ले.—श्री आचार्य सत्यव्रत जी शास्त्री विद्या भास्कर धामपुर

(6 अक्तूबर से आगे)

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य भी यही है कि मनुष्य, मनुष्य बने। वेद का आदेश- मनुर्भव जनया दैव्य जनम्।

मनुष्य कुछ विचारशील बन विवेकी बन— मत्वा कर्माणि सीव्यति। निश्चय मनुष्य का बड़ा विस्तृत क्षेत्र है। वह उदार हृदय होना चाहिए -वसुधैव कुटुम्बकम् समस्त संसार उसका अपना परिवार है। ये उदात्त शिक्षाएं जिस धर्म मे हैं वही [illegible] सर्वात्मना उपादेय है। किसी भी शिक्षा शास्त्री का या कुशल प्रधानाचार्य का यही लक्ष्य है कि मेरा शिष्य सच्चा नागरिक बने। अभ्यसुशिक्षत सर्वात्मना चरित्र- वान् बने—शासक—प्रधानमन्त्री, मुख्यमन्त्री, संसद सदस्य, विधायक बने या न बने। धर्म सदा देश जाति, वर्ग विशेष सम्प्रदाय और पन्थ तथा मतमतान्तर एव मजहब से सर्वोपरि है। उस में भेद, घृणा अविश्वास, दुर्भावना नही है। देश भेद से भाषा भेद से धर्म मे भेद नहीं होता। विभिन्न देशो की, प्रान्तो की भाषा बोली रहन-सहन रीति-रिवाज भिन्न 2 होने पर भी धर्म सब का एक ही है यही धर्म की विशेषता है—

धर्म सता हित पुसा धर्मश्चैवाश्रय सताम्।
धर्माल्लोका स्त्रयस्तात प्रवृत्ता स चराचर ।। महाभारत।

धर्म ही सत्पुरुषों का हित है धर्म ही सत्पुरुषो का आश्रय है और चराचर तीनों लोकों का आधार एक मात्र धर्म ही है। य तीनो लोक धर्म के ही सहारे चलते हैं। धर्महीन मनुष्य पशु के समान है—धर्मेणहीन पशुभि समाना।

धर्म शब्द के सम्बन्ध में मनुस्मृति अ0 6-92 मे। दशक धर्म लक्षणम् ।। धृति क्षमा आदि दशलक्षण को धर्म कहा है। कहीं पर आत्म ज्ञान और तितिक्षा को साधारण धर्म कहा है। आत्म- ज्ञान तितिक्षा च धर्म साधारणो नृप ।। महाभारत। याज्ञवल्क्य स्मृति अ0 18 में। यज्ञ, आचार व्यवहार इन्द्रिय दमन, अहिंसा, दान, स्वाध्याय कर्म, को धर्म कहा है, आत्म दर्शन को परम धर्म कहा [illegible]ज्याचार दमोऽहिंसा दान स्वाध्याय कर्म च [illegible] परमोधर्म. यद्योगेनात्म- दर्शनम् ।। अ0 18

मनु— अ0 2-12 में- श्रुति वेद स्मृति, सदाचार, और स्वआत्मा को प्रिय हो इस प्रकार चार प्रकार का साक्षात— धर्म का लक्षण किया है—

श्रुति: स्मृति सदाचार स्वस्य च प्रियमात्मन।
एतच्चतुर्विधं प्राहु साक्षाद्धर्मस्य- लक्षणम्। 2-12

इन में उत्तरोत्तर की विशेषता दी है, सर्वोपरि श्रुति को स्थान दिया है। [illegible] एक स्थान पर श्रुति शब्द से वेद [illegible]

[illegible] किया।

अलोभ इति मार्गोऽय धर्मस्याष्ट विध स्मृत ।।

आचार परमोधर्म — ये सब प्रमाण वास्तविक धर्म के लिए उपयोगी हैं। दर्शन शास्त्रो मे भी धर्म का स्वरूप बड़ा ओजस्वी है।

यतोऽभ्युदय निश्रेयस सिद्धि स धर्म

धर्म के दो उद्देश्य हैं लक्ष्य हैं— अभ्युदय -सासारिक कल्याण वैभव और लोकोन्नति, चक्रवर्ती राज्य तथा अभ्युदय का विस्तार है अन्त मे निश्रेयस-प्राप्ति धर्म का चरम लक्ष्य है। धर्म अर्थ, काम, मोक्ष य चतुर्विध परम पुरुषार्थ हैं। वैशेषिक दर्शन योग सूत्र—'योग्यता वच्छिन्ना धर्मिणा शक्तिरेव (1 2) धर्म 3-14 योग्यता युक्त शक्ति ही धर्म है।

अर्थात् जिस वस्तु मे पदार्थ मे या व्यक्ति मे वह शक्ति रहती है जिस के कारण उसकी वह सत्ता है जिसमें अभाव मे पदार्थ की वा वस्तु की अथवा व्यक्ति की सत्ता ही नहीं रहती उस शक्ति का नाम ही धर्म है। जैसे पृथ्वी का गन्ध गुण है। इसी प्रकार प्रसिद्ध दार्शनिक [illegible] जैमिनी ने चोदनालक्षणो धर्म.। कणाद—धर्म का स्वरूप प्रकट किया है जिसके द्वारा लोक और परलोक की अभ्युन्नति के साधक शुभ कर्मों के अनुष्ठान की, उनके आचरण की प्रवृत्ति है प्रेरणा प्राप्त हो वह धर्म है। इन [illegible] किसी पन्थ पंथ जिन्हों की जिन्हों को धर्म के लक्षण मे सम्मिलित नही किया गया, ये ग्रन्थ सभी आधुनिक काल्पनिक ग्रन्थो की अपेक्षा सहस्रो वर्ष की परम्परा से चले आ रहे हैं। इनकी प्रामाणिकता सर्वोपरि है ये किसी विशेष पन्थ, सम्प्रदाय या मत, मजहब मे आबद्ध नहीं हैं इनका दृष्टिकोण सार्वभौम हित उदार है। इनके समय ये मत-मता- न्तर नहीं थे न उन ऋषि-मुनियो का हृदय सकुचित था अत वे किसी एक ओर नही झुके, ।

धर्म शब्द की भिन्न 2 व्याख्याए — प्रकृति सिद्ध नियमो को धर्म कहते हैं। जिससे ससार का धारण पोषण हो वह धर्म है। 2, जिससे ऐहिक लौकिक उन्नति हो अभ्युदय हो हो और पारमार्थिक पारलौकिक श्रेय या मोक्ष प्राप्त हो वह धर्म हैं।

जो व्यवस्था इन उद्देश्यों मे सहायक हो उसे धर्म कहते हैं या धर्म व्यवस्था कहते हैं।

किसी चिन्ह विशेष शिखा-सूत्र दाढ़ा केश कड़ा, कच्छा, कृपाण, तिलक छाप रामनामि या, कृष्ण नामी दुपट्टे, हरे राम, हरे कृष्ण—ये सब धर्म के नाम पर विडम्बना है। कल्पनाए हैं आधुनिक हैं।

प्राचीन समय मे वर्णाश्रम व्यवस्था भी धर्म व्यवस्था मानी जाती थी। धर्म व ज्ञान सम्बन्धी वैदिक ग्रन्थो का चिन्तन मनन पूर्वक स्वाध्याय नित्य पठन पाठन भी इसमें सहायक है।

धर्म शब्द से अभिप्राय उन आवश्यक नियमो से या कर्त्तव्य कर्मों से अथवा उन तथ्यो से या मान्यताओ से है जिन पर चलने से जिनके दैनिक आचरण से मनुष्य की आत्यधिक दुख निवृत्ति होकर जिसे त्रिविध ताप या दुख कहा गया है। आनन्द परम शान्ति एकान्त सुख अनुभव कर सके, यह धर्म का वैयक्तिक दृष्टिकोण है।

शक्तिमानप्यशक्तोऽसौ धनवानपि निर्धन।

श्रुतवानपि मूर्खश्च यो धर्म विमुखो नर।

धर्म एव प्लवो नान्य स्वर्ग द्रोपदि गच्छताम।

जिस धर्म के बिना समर्थ भी असमर्थ (महाभारत)।

प्रतीत हो धन सम्पन्न भी निर्धन प्रतीत हो शास्त्रज्ञ भी मूर्ख प्रतीत हो, वह धर्म है। अत धर्म विमुख नहीं होना चाहिए। हे द्रोपदि! स्वर्ग सदृश अनन्त सुख को प्राप्त करने के लिए जाने वालो के लिए धर्म ही आधार है। धर्म का सामाजिक दृष्टिकोण वह है जिससे समाज का उत्थान हो। धर्म शब्द से अभिप्राय वैयक्तिक काल्पनिक मान्यताओ से रूढियो से नही जिनका दिग्दर्शन पूर्व भी कराया जा चुका है। धर्म का स्व- रूप सत्य सनातन शाश्वत अविछिन्न अप्रतिहार्य कर्मों से है।

(क्रमश)

(3 पृष्ठ का शेष)

बनाया गया है। आज के हालात मे सरकार की मदद के बिना इस प्रकार के बिना किसी सस्था को चलाना आसान नही लेकिन जनता के आर्शीवाद से यह गुरुकुल चल रहा है। जिनके हाथ मे इसकी बागडोर है वे इसे सफल बनाने के लिए दिन रात एक कर देते हैं और जो कुछ इसके लिए दे सकते हैं देते हैं। छोटे छोटे बच्चे इस गुरुकुल मे आते हैं और कुछ न कुछ सीख कर जाते हैं। कोशिश यह की जाती है कि हिन्दी और सस्कृत मे विशेषता प्राप्त करने के अतिरिक्त वे टाईप- राईटिंग तथा इस प्रकार के कुछ और विशेष काम सीख लें जिनके द्वारा वे इस गुरुकुल से निकलने के बाद कुछ अपने लिए कमा भी सकें।

इस गुरुकुल की प्रबन्ध समिति को मैं विशेष रूप से बधाई देता हू क्योंकि वह सब मिलकर इसे एक अपनी सस्था के रूप मे चला रहे हैं। करतारपुर एक बहुत छोटा सा शहर है। यद्यपि व्यापारिक दृष्टिकोण से प्रसिद्ध है फिर भी इस सस्था को वहा से वह मदद नही मिलती जो मिलनी चाहिए। लेकिन इधर उधर से कुछ न कुछ मिलता ही रहता और है यह धीरे-धीरे एक विश्वविद्यालय का रूप धारण कर रही है। मेरा पजाब के धर्म प्रेमियो से वे हिन्दू हो या सिख, आर्य समाजी हो या सनातन धर्मी, सबसे यह आग्रह है कि वे इस गुरुकुल के वार्षिक अधिवेशन मे अधिक से अधिक सख्या में पहुच कर अपने उन भाईयो को प्रोत्साहन दें जो अनगिनत कठिनाईयों क बावजूद इस सस्था को चला रहे हैं, पजाब मे जो हालात पैदा हो रहे है उनमें ऐसी सस्था को चलाना आसान नही फिर भी यह चल रही है। एक सन्यासी ने अपने गुरु के नाम पर एक ज्योति जलाई थी। जो पिछले तीस वर्ष से अपना प्रकाश दे रही है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि यह ज्योति इसी प्रकार जलती रहे और इसका प्रकाश दूर-दूर तक पहुचता रहे।

—वीरेन्द्र

आर्य विद्वानों वेदभाष्य करना बन्द करो ; वैदिक साहित्य तुम्हारा साथ नहीं दे रहा व्याख्यानानि गृहे गृहे (वेङ्कटमाधव)

लेखक— आचार्य विश्वश्रवा व्यास, वेद मन्दिर बरेली

ओ३म्

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने यजुर्वेद का पूर्ण और ऋग्वेद 7 मण्डल 61 सूक्त 2 मन्त्र तक भाष्य किया। महर्षि का समस्त वैदिक वाङमय पर अधिकार था। वैदिक साहित्य के टीकाकारो वैदिकवाङमय जो विकृत रूप कर दिया। उस का कोई प्रभाव महर्षि पर नही था। वे ऋषियों के मूल ग्रन्थों को स्वयं समझते थे, पर आजकल के आर्य विद्वानो का सम्पूर्ण वैदिकवाङमय पर कोई अधिकार नही है। यदि वह किसी वैदिक साहित्य के ग्रन्थ को थोडा बहुत समझते भी है तो वैसा ही जैसा भ्रष्ट टीकाकार बताते हैं। ब्राह्मणो द्वार कोष देख कर कुछ प्रमाण दे देना पण्डिताई नहीं है। और न ये परक परक पद्य व्याख्यान करना ही पण्डिताई। मैं एक वेदमन्त्र की व्याख्या राजीव गान्धी परक करता हू सुनिए—

ओम अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥
(सामवेद प्रथममन्त्र)

हे (अग्ने) अग्रणी प्रधान मन्त्रिन राजीव गाधी (वीतये) हमारे घर भोजन करने के लिए (आयाहि) आइए (गृणान) हमसे स्तुति किए हुए आप अर्थात हम आप की स्तुति प्रार्थना करते हैं अत आप (हव्यदातये) हव्य जो हमारी मागे हैं उन को देने के लिए आइए। (होता) भारत के कर्त्ता विधाता आप (बर्हिषि) उत्तम सोफा सैट पर निसत्सि विराजमान हो। ऐसे ही तुम्हारे सब परक परक भाष्य हैं।

(तुम्हारे भाष्यो की दुर्दशा)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने सम्पूर्ण यजुर्वेद का भाष्य कराया। भाष्य करने वाले थे— प गगाप्रसाद उपाध्याय स्वामी ब्रह्ममुनि जी प रामदत्त शुक्ल प द्विजेन्द्र नाथ वेदशिरोमणि। सरायतरीन के शाह शिवचन्द्र जी ने कई हजार रुपये इसके लिए दिए छपा पर सब ही इस यजुर्वेद भाष्य को दीमक स्वाध्याय कर गई मनुष्य ने नही।

महर्षि ने जहा तक ऋग्वेद का भाष्य किया उसके आगे मे महामहोपाध्याय पं आर्य मुनि और प शिव शकर काव्यतीर्थ ने कलकत्ता बैठकर भाष्य किया सस्कृत और आर्य भाषा मे। कलकत्ता के सेठों ने धन दिया। वह भी छपा पर उसे भी कलकत्ता आर्य समाज मे दीमक ही खा गई

प, तुलसी राम स्वामी ने प्रैस लगा कर सामवेद पर भाष्य सस्कृत और आर्य भाषा मे किया। एक बार छप कर रह गया। कोई पूछने वाला नही।

प क्षेमकरण दास त्रिवेदी ने अथर्व वेद भाष्य किया। सस्कृत और आर्यभाषा मे उसकी भी यहीं दशा हुई।

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी पर जब शुन्य मचा कि चारो वेदो का भाष्य चारो वेदो का भाष्य। तब सार्वदेशिक सभा ने सब भाष्यो का आर्य भाषानुवाद हिन्दी भाष्य नाम से छाप कर उस चारो वेदो के भाष्य की आवाज को शान्त किया। महर्षि तथा प, आर्य मुनि, प, शिवशकर काव्यतीर्थ, प, क्षमकरण दास जी प- तुलसी राम जी के सस्कृत भाष्य सब दिवगत कर दिये। उनका नामलेवा पानी देवा कोई नही। यदि परोपकारिणी सभा न होती तो महर्षि के सस्कृत भाष्य का भी अदशने लोप हो जाता। यही हाल तुम्हारे वेद भाष्यो का होगा। बहुत हो गए वेद भाष्य। बस करो।

(तो फिर क्या करें)

प गगा प्रसाद उपाध्याय का शतपथ ब्राह्मण हिन्दी अनुवाद एग्लिग के अग्रजी अनुवाद का हिन्दी उल्था है। इसी प्रकार उपाध्याय जी का ऐतरेय ब्राह्मण का हिन्दी अनुवाद हा्ग के अग्रेजी अनुवाद का उल्था मात्र है। आप महर्षि क दृष्टिकोण को लेकर किसी एक वैदिक साहित्य के ग्रन्थ पर जीवन लगा दो। सस्कृत के भाष्य लिखो वह भावी आर्य विद्वानो का पथ प्रदर्शक बनेगा। स्थायी साहित्य होगा। महर्षि ने ब्राह्मण ग्रन्थो की विषय सूची तैयार की। विषय सूची पूरा भाष्य होता है। आज जो शतपथ ब्राह्मण सायणभाष्यसहित छापना है या ऐतरय आदि ब्राह्मण उनकी विषय सूची यह है जो सायण ने समझा यह महर्षि की विषय सूचिया परोपकारिणी सभा के हाथो मे है। और परोपकारिणी सभा मस्कृतानभिज्ञो या आलस्य दुर्विग्धो के हाथो मे है। उपाय सोचो। किसी एक ग्रन्थ पर जीवन लगा दो। अभी तक वैदिक साहित्य का ग्रन्थ हमारा साथ नही दे रहे हैं। आप के परिश्रम का परिणाम यह होगा कि वे ऋषियों के ग्रन्थ इन भ्रष्ट टीकाकारों के माया जाल से बचकर अपना यथार्थ स्वरूप प्रकट करें हमने तो निरुक्त को अपना विषय बनाया हुआ है और अब हम दावे से कहते हैं कि निरुक्त के भाष्यकार दुर्ग स्कन्द निरुक्त श्लोकवार्तिककार और वररुचि निरुक्त को समझते ही न थे कोई शास्त्रार्थ करके देख ले। आप भी किसी एक पर लग जाइए।

सभा द्वारा प्रकाशित एवं प्रचारित साहित्य

1	ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	—16 रुपये।
2	संस्कार विधि	—6 रुपये।
3	सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी सजिल्द	—8 रुपये।
4.	सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी अजिल्द	—5 रुपये।
5	अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द ले —इन्द्र विद्यावाचस्पति	—5 रुपये।
6	आर्यसमाजके अतीत की उपलब्धियां तथा भविष्य के प्रश्न —ले —डा भवानी लाल जी भारतीय	—10 रुपये।
7	आर्य समाज के नियम (कार्ड)	—50 रुपये सैंकड़ा।
8.	पजाब का आर्य समाज 'द्वितीय (सस्करण) ले —श्री स्व रामचन्द्र जावेद।	—4 रुपये।
9	सगठन मे शक्ति है ले —श्री वीरेन्द्र सभा प्रधान।	1 रुपया।
10	प्रमुख सिख विद्वानों से पांच प्रश्न ले,—श्री स्वामी अमृतानन्द जी सरस्वती	—50 पैसे।
11	धर्मवीर पण्डित लेखराम ले —स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी।	—40 पैसे
12	आर्य कीर्तन भजनावली	1 रुपया।
13	जन्म साखी (पजाबी) ले,—ज्ञानी पिण्डीदास।	2 रुपये।
14	आर्य समाज दा दिग्दर्शन (पजाबी) ले —आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद।	2 रुपये।
15	सिख गुरु अते आर्य सिद्धान्त ले —स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी।	2 रुपये।
16	सिख तुष्टीकरण की राजनीति ले —वरुण शोरी।	2—50 पैसे।
17	Swami Shardhanand —byK N Kapoor	5—00
18	Glimpses from Satyarth Parkash by D, N Vasudeva.	3—00
19	Language problem and the political crisis in the Panjab by Sh Virendra	3—00
20	The Arya Samaj and Sikh. by Virendra	1—00
21	The Fundamentals of Arya Samaj by Puran chand Advocat	00—50

कृपया अधिकाधिक साहित्य मगवाए। विशेष छूट भी दी जाएगी। डाक-व्यय अतिरिक्त।

प चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर

भूल सुधार

6 अक्तूबर के आर्य मर्यादा में कुछ अशुद्धियां छप गई हैं। प्रेस कम्पोजिटरों की हड़ताल के कारण दो अंक पूर्व बन्द हो गए थे। हम ने जैसे तैसे करके 6 अक्तूबर का अंक प्रकाशित करवाया। इसी कारण अशुद्धियां भी रह गई हैं। विशेष करके प्रथम पृष्ठ पर "मधुर वाणी,. लेख में वेद मन्त्र अशुद्ध छपा है। शुद्ध रूप में मन्त्र नीचे दिया जा रहा है। पाठक भूल सुधार कर लें। मन्त्र इस प्रकार से है—

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत् ।
अत्रा सखाय: सख्यानि जानते भद्रैषांलक्ष्मीर्निहिताधिवाचि ॥

—व्यवस्थापक

आर्य नेता पं. देवव्रत धर्मेन्दु जी को श्रद्धांजलि

आर्य नेता पं, देवव्रत धर्मेन्दु जी के आकस्मिक निधन पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के महासचिव श्री अनिल कुमार आर्य, आर्य युवक परिषद् दिल्ली (रजि.) के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश आर्य, परोपकारिणी यज्ञ समिति के मन्त्री श्री कमल किशोर आर्य, आर्य बाल गृह-आर्य कन्या सदन के श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व राजधानी के अनेक धार्मिक-सामाजिक नेताओं ने भी श्री धर्मेन्दु जी को अपनी श्रद्धांजलि दी है।

उल्लेखनीय है कि 16 सितम्बर, सोमवार सायं फिक्की आडिटोरियम नई दिल्ली में आयोजित अपने अभिन्न मित्र स्वर्गीय चौधरी देशराज की स्मृति सभा से लौटे थे कि उनका आकस्मिक निधन हो गया जबकि डाक्टरों ने उन्हें बीमारी के कारण घर से बाहर निकलने के लिए मना किया था। पं. देवव्रत जी राजधानी के प्रमुख आर्य नेता व आर्य युवक परिषद (रजि.) दिल्ली के प्रधान थे। वे आर्य समाज में युवा शक्ति को लाने में सदा प्रयत्नशील रहे।

सारे देश में सत्यार्थ प्रकाश परीक्षाएं करवाने तथा बच्चों-युवकों के लिए भाषण-प्रतियोगिताएं आयोजित करना, उनकी महत्वपूर्ण उपलब्धियां थीं।

—चन्द्र मोहन आर्य

श्रीमती अंजला लूथरा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित

आर्य गर्ल्ज हायर सै. स्कूल मोगा की प्रिंसिपल श्रीमती अंजला लुथरा को राष्ट्रीय एवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। श्रीमती लुथरा जी एक कुशल प्रिंसिपल हैं उनकी कार्य कुशलता और योग्यता को देखते हुए ही उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार दिया जा रहा है। महिला जगत् के लिए यह गौरव की बात है कि इस बार यह पुरस्कार एक आर्य स्कूल की महिला को दिया जा रहा है।

सभा भवन के लिए दस हजार रूपये का दान

17-9-85 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की महामन्त्री श्रीमती कमला आर्या को अमृतसर में सभा भवन निर्माण के लिए दस हजार रुपये की धन राशि भेंट की गई। जिसका विवरण निम्न प्रकार है।

स्त्री केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर की ओर से श्रीमती आज्ञावती जी ने पांच हजार रुपया भेंट किया तथा श्रीमती कोशल्या जी ने अपने स्व. पति श्री श्री बलवन्त राय (32 रेस कोर्स रोड़ अमृतसर) की पुण्य स्मृति में पांच हजार रुपये की धन राशि भेंट की।

सभा इन दानी बहिनों का धन्यवाद करती है जिन्होंने यह धन राशि भेंट करके सभा भवन निर्माण में सहायता प्रदान की है। यदि इसी प्रकार अन्य बहनें व भाई भी सहयोग दें तो सभा भवन का कार्य शीघ्र ही पूरा हो जाएगा जो अभी अधूरा पड़ा है।

दयानन्द अनुसंधान पीठ पंजाब विश्व-विद्यालय से पी.एच. डी. उपाधि प्राप्त विद्वान्

1— डा. वेदपाल वर्णी — आपने शतपथ ब्राह्मण तथा महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर 1985 में पी- एच- डी- की उपाधि प्राप्त की है। विद्वान् शोधकर्ता ने संस्कृत में प्रस्तुत किए गए अपने शोध प्रबन्ध में शतपथ की वेदार्थ प्रक्रिया का विस्तारपूर्वक ऊहापोह कर महर्षि भाष्य से उसका समायोजन किया है। इसी प्रसंग में वैदिक यज्ञों का स्वरूप यजुर्वेद का प्रतिपाद्य आदि नाना विषयों की गम्भीर विवेचना शोधकर्ता ने की है। डा. वर्णी ने अपने भावी शोधकर्ता के रूप में शतपथ ब्राह्मण की विस्तृत ऐतिहासिक समीक्षा को ही चुना है।

2— डा. राजपालसिंह— भारतीय षटदर्शन को आर्य समाज की देन पर डा0 राजपाल सिंह को इसी वर्ष उपाधि प्रदान की गई है। डा0 सिंह ने आर्य समाज के कृतित्व का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

3— डा. धर्मदेव शर्मा— आपका शोध का विषय स्वामी दयानन्द रचित संस्कार विधि का गृहसूत्रों से तुलनात्मक अध्ययन था। इस विषय के सम्बन्ध में शोधकर्ता ने विभिन्न गृहसूत्रों का अध्ययन कर संस्कार विधि प्रोक्त संस्कारों के विधि विधान से उनकी तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत की है।

4— डा. ओमपाल शास्त्री — डा. ओमपाल शास्त्री को प्रेम चन्द के परवर्ती हिन्दी उपन्यासकार पर आर्य समाज की विचारधारा का प्रभाव शीर्षक शोध कार्य पर पी- एच- डी- उपाधि प्रदान की है।

दयानन्द अनुसन्धान पीठ के अध्यक्ष डा. भवानी लाल भारतीय के निर्देशन में समस्त उक्त शोध कार्यों के अतिरिक्त सम्प्रति स्वामी दयानन्द के यजुर्वेदभाष्य में देवता तत्व, स्वामी दयानन्द की संस्कृत व्याकरण शास्त्र को देन पुनर्जागरण आन्दोलनों की दार्शनिक पृष्ठ भूमि आदि विषयों पर भी शोध कार्य किये जा रहे हैं।

—वेदपाल कार्यालय सचिव

स्वराज्य को सुराज्य में परिवर्तित करने के लिए हजारों युवकों की आवश्यकता

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली के छठे वार्षिक कार्य कर्ता अधिवेशन में युवकों को सम्बोधित करते हुए आर्य जगत् के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार ने आह्वान किया कि आज राष्ट्र समस्याओं से ग्रस्त है, उसमें आमूल चूल परिवर्तन करने के लिए युवक आगे आए तभी स्वराज्य सुराज्य बन सकेगा। श्री वेदालंकार ने कहा कि रक्षा करेंगे आक्रमण नहीं करेंगे, यह नीति गलत है। अहिंसा व्यक्ति को निर्बल बनाती है। अतएव हमें ऐसे युवकों को तैयार करना है जो रक्षा तो करेंगे परन्तु आक्रमण भी करने के लिए तैयार रहें।

उन्होंने बच्चों पर संस्कारों के महत्व की चर्चा करते हुए कहा कि 15 अगस्त 1947 को काश्मीरी गेट के तिकोने पार्क में श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने सुपुत्र 3 वर्षीय श्री राजीव गांधी से ध्वजारोहण कराया जोकि आज 38 वर्ष बाद भारत का प्रधानमन्त्री बना।

विभिन्न वक्ताओं ने चरित्र निर्माण, समय की पाबन्दी, अनुशासन, ब्रह्मचर्य पालन, सेवाभाव, संयमी जीवन, कर्मठता, ऊंचा मनोबल, कथनी करनी में एकता धार्मिक भावना, पिछड़े क्षेत्रों में संस्कृति जागरण आदि गुणों को जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी।

पुरस्कार वितरण श्री मुल्खराज भल्ला ने किया। कार्यक्रम का संचालन परिषद के महामन्त्री श्री अनिल कुमार आर्य ने किया। आगामी वर्ष के लिए नए प्रान्तीय, मण्डल व शाखाधिकारियों की नियुक्तियां की गई। श्री विनय सिंहल व श्री महेन्द्र आर्य ने सुन्दर गीत प्रस्तुत किए।

—चन्द्रमोहन आर्य प्रचार मन्त्री

कन्याओं को वेदाचार्य बनाने के लिए कन्या वेद गुरुकुलम् बरेली में प्रविष्ट कराइए

यहां कन्याओं को आरम्भ से वेद पढ़ाया जावेगा। बनारस संस्कृत यूनिवर्सिटी की प्रथमा, मध्यमा शास्त्री वेदाचार्य परीक्षाएं दिलाई जावेंगी। इन परीक्षाओं के द्वारा कन्याएं हाई स्कूल इन्टर बी. ए, एम. ए. परीक्षायें भी पास कर सकती हैं।

आजकल के कन्या गुरुकुलों में लड़कियों को साहित्याचार्य, व्याकरणाचार्य कराया जाता है। एक भी कन्या गुरुकुल ऐसा नहीं जहां कन्याओं को वेदाचार्य कराया जाता हो। आश्रम तथा भोजन व्यवस्था गुरुकुल में रहेगी। स्वतन्त्र स्थानीय कन्याएं भी पढ़ने आ सकती हैं। कन्या की आयु कम से कम दस, बारह वर्ष और पांचवीं श्रेणी उत्तीर्ण हो। प्रथमा, मध्यमा शास्त्री और वेदाचार्य कक्षाओं में भी प्रवेश हो सकता है यदि किसी ने पूर्व परीक्षाएं पास की हुई हों।

—सावित्री देवी शर्मा एम. ए.
आचार्य वेद मन्दिर— 103 बाजार मोती लाल बरेली (उ. प्रदेश)

आर्य समाज लोहगढ़ अमृतसर का उत्सव

आर्य समाज लोहगढ़ अमृतसर का वार्षिकोत्सव 27-10-85 से 3-11-85 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जाना निश्चित हुआ है। आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान् महोपदेशक तथा वीतराग सन्यासी अपने ओजस्वी विचार रखेंगे। सभी आर्य समाजों के अधिकारियों एवं सदस्य गण तथा धर्मप्रेमी सज्जन अधिक से अधिक संख्या में पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ावें।

—प्रो. एम. एल. तनेजा मन्त्री

अमृतसर में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर की ओर से गत दिनों ग्रामीण आंचल एवं पिछड़े अछूते क्षेत्रों में वेद प्रचार अभियान प्रारम्भ किया गया। श्री राजा राम श्री हेमराज जी शास्त्री तथा श्री यशवन्त राय डोगरा आदि आर्य युवक दल के कार्यकर्त्ताओं ने स्थान स्थान पर अग्निहोत्र, भजन कीर्तन प्रवचन के द्वारा वैदिक धर्म का सन्देश जनता तक पहुंचाया।

रविवार 1-9-85 को प्रातः दस बजे आर्य समाज मन्दिर में संस्कृत दिवस मनाया गया। सैंकड़ों श्रोताओं के सम्मुख छात्र-छात्राओं ने संस्कृत गीत, कविता पाठ श्लोक उच्चारण, संस्कृत प्रवचन आदि प्रस्तुत किए। संस्कृत प्रतिष्ठान मन्त्री श्री राजाराम शर्मा ने 10+2 पाठ्यक्रम के माध्यम से संस्कृत को समाप्त कर देने की योजना की निन्दा की। प्रि. सुश्री चन्द्रकान्त धर तथा सुश्री सन्तोष शर्मा ने नवम्, दशम् कक्षा की तालिका में संस्कृत को स्थान न देने पर विरोध प्रकट किया। सभा अध्यक्ष भू. पू. जिला गुरदास पुर जिलाधिकारी श्री देवराज जी ने 10+2 पाठ्यक्रम को विनाशकारी बता कर प्रत्येक को संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा दी।

—वीरेन्द्र देवगन मन्त्री

आर्य समाज बंगा का चुनाव

आर्य समाज बंगा का चुनाव गत दिनों सर्व-सम्मति से निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान- श्री गुरदासमल, उपप्रधान श्री देवराज जी, श्री बनारसी दास आर्य मन्त्री- श्री शादी लाल, उपमन्त्री-श्री छज्जू राम, कोषाध्यक्ष- श्री रमेश लाल पुस्तकाध्यक्ष- श्री श्याम लाल, आर्य वीर दल अध्यक्ष- श्री श्याम लाल, लेखानिरीक्षक- श्री राजेन्द्र पाल।

शादी लाल मन्त्री

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. नं. पी.जे.एल.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य मर्यादा जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 25. 4 कार्तिक सम्वत् 2042 तदनुसार 20 अक्तूबर 1985 दयानन्द 161 अंक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

जीवात्मा तथा परमात्मा का स्वरूप

ले- —स्व. श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम-ए

(गतांक से आगे)

यद्यपि हमारी दशा दासों से भी बुरी होती है, दास स्वतन्त्रता से सोच सकते है, किन्तु हम वैसा नहीं कर सकते, दासों की थोड़ी बहुत स्वाधीनता होती है, हमें वह भी नहीं होती। हम दूसरे के हाथ में केवल तिनके के समान होते हैं। किसी दूसरे के तार हिलाने पर नाचने वाली कठपुतलियां मात्र। हमने जो यह सामान्य नियम खोज निकाला है, इसका किसी दशा में अपवाद नहीं होता। एक कीड़े को ले लीजिए। इसकी तीन मर्यादाएं हैं, सबसे छोटी मर्यादा में अपने पंख उड़ाने तथा शक्तियों का यथेच्छा उपयोग करने में वह सर्वथा स्वतन्त्र है, दूसरी मर्यादा में यद्यपि वह स्वामी तो है तथापि उसे अपना स्वामित्व दूसरों से मनवाना पड़ता है, तीसरी मर्यादा अन्य अनेकों के साथ समान है।

इस तीसरी मर्यादा से आगे वह नहीं आ सकता। यहां इसकी स्वतन्त्रता की समाप्ति है। राम-कृष्ण जैसे बड़े-बड़े शूरवीरों को या सिकन्दर और शार्लमेन जैसे महान् विजेताओं को या मुसोलिनी और हिटलर जैसे सर्वाधिकारियों (डिक्टेटरों) को ले लीजिए। इनकी वह तीन मर्यादाएं हैं, सबसे छोटी, बिचली और सबसे बड़ी। उनकी भी कठपुतलियां. उनके ही अधीनस्थ और उन के भी समान हैं। उनके आगे वह कीड़े के समान हैं तृणवत हैं। इसमें सीमा का भेद भले हो, प्रकार का नहीं।

इन मर्यादाओं के सम्बन्ध में भ्रम ही स्वतन्त्रेच्छावादियों और दैववादियों के विवाद का मूल है। जो अवस्था एक सीमा की है, भ्रम से उसे किसी दूसरी की समझ लिया जाता है। उदाहरणार्थ प्रत्येक दैववादी जानता है कि एक विशेष सीमा तक वह स्वतन्त्र, पूर्णतया स्वतन्त्र और सर्वथा स्वाधीन है। किन्तु वह उस से आगे पग धरने का साहस कर बैठता है और अपने आपको प्रतिबद्ध पाता ?, रुका हुआ अनुभव करता है। वह अनुभव करने लगता है कि वह स्वतन्त्र नहीं है, और कि स्वतन्त्रेच्छावाद एक धोखा है। वह एक सीमा तक स्वतन्त्र था उससे परे वह स्वतन्त्र नहीं था। वह उस सीमा को न देख सका और ऐसा अन्धाधुन्ध निश्चय करने की भूल कर बैठा। ऐसी ही अवस्था स्वतन्त्रेच्छावादी की है। उस ने अपने आपको एक विशेष सीमा के अन्दर स्वतन्त्र अनुभव किया और उसने यह परिणाम निकाला कि वह सर्वत्र स्वतन्त्र है। सम्राट् यज्ञदत्त सुस्तिक्ष देश में पूर्ण सम्राट् है और सुफाल देश में जहां भी सम्राट् जिनदत्त उसके साथ सख्यभाव रखता है वह एक सहयोगी शासक है, किन्तु विकाल देश में वह कुछ भी नहीं है, जहां न उसे कोई जानता और न कोई पूछता है। यह कहना कि वह कहीं का भी सम्राट् नहीं भूल है और यह मानना कि वह सर्वत्र सम्राट् है, एक और भूल है। सच्चाई कहीं इन दोनों के बीच में है, इस कहीं का निर्णय या निश्चय करना ही तो कठिन है। आप एक कार्य स्वतन्त्रता और सरलता से कर सकते हो एक दूसरा काम भी कर सकते हो, किन्तु कठिनता से। और एक तीसरा कार्य तो सर्वथा कर ही नहीं सकते: मुसलमानों के चौथे खलीफा हू. अली ने इसे एक साधारण दृष्टान्त से खूब समझाया है। कहते हैं कि एक दिन एक अदब हू. अली के पास आया और इस विकट प्रश्न पर हू. अली का मत जानना चाहा। हू. अली ने उस अदब से कहा, कि अपनी टांग ऊपर को उठाओ। अदब ने आसानी से अपनी टांग ऊपर को कर दी। तब हू. अली ने उसे दूसरी टांग भी ऊपर उठाने को कहा। अदब वैसा न कर सका, क्योंकि यह असम्भव था। हू. अली ने कहा, देखो सत्य यह है। तुम अपनी किसी एक टांग को ऊपर उठाने में स्वतन्त्र थे, जब तुमने एक को उठा लिया तब तुम दुसरी को उठाने में अपने आपको असमर्थ पाते हो। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हम स्वतन्त्र हैं, किन्तु एक विशेष सीमा तक उसके परे सर्वथा स्वतन्त्र नहीं हैं।

एक दूसरा साधारण उदाहरण मौत का दृश्य देखिए। एक मरणासन्न मनुष्य की कल्पना कीजिए। उसके सम्बन्धी उसकी खाट के चारों ओर बैठे हैं। वह अपनी असमर्थता का अनुभव करता है किन्तु जीने के लिए फिर भी उद्योग करता है। आत्मा जो इस देह को छोड़ना नहीं चाहता और एक दूसरी अदृश्य शक्ति, जो इसे मरने पर विवश कर रही है के बीच मानो संग्राम चल रहा है। दोनों शक्तियों का भेद अत्यन्त स्पष्ट और सन्देह रहित है। एक अल्प सामर्थ्यवाला है और दुसरा सर्वतोमहान् शक्तिमान् है। अल्प शक्ति वाला महान् शक्तिमान् के अधीन होता हुआ भी स्वतन्त्र है, कम से कम जीने की इच्छा करने में तो स्वतन्त्र है। वह इस अंश में छोटा है कि वह अपनी इच्छा पूरी नहीं कर पाता। किन्तु वह एक शक्ति तो है ऐसी शक्ति जो उद्योग कर सकती है, चाहे असफल ही रहे। यह आत्मा भी एक स्वतन्त्र आत्मा है, जो मृत्यु को समीप देखकर अपने आप को भाग्य के या उस महान् शक्तिमान् की इच्छा के हवाले कर देता है और प्रसन्नता से शरीर छोड़ देता है क्योंकि वह विरोध का फल न देखकर स्वेच्छा से आत्म समर्पण कर देता है। जीवात्माओं और परमात्मा का द्वैत या भेद इतना स्पष्ट और असन्दिग्ध है कि अनेक दार्शनिकों ने इसी स्पष्टता के कारण ही सन्देह किया है। वे कहना चाहते हैं कि 'सत्य कैसे ऐसा उथला हो सकता है। मोती समुद्र पर तैरा नहीं करता और जो तैरता है, वह मोती नही है।

आज हम कहाँ खड़े हैं

ले.—श्री सत्यदेव जी वेदालंकार म. नं. 145, गली नं. 4
सैंट्रल टाऊन जालन्धर

(6 अक्तूबर से आगे)

आर्य समाज के दो प्रमुख आन्दोलन डी. ए. वी. आन्दोलन तथा गुरुकुल आन्दोलन के विकसित रूप पर कुछ विचार होना चाहिए।

डी. ए. वी. आन्दोलन का एक नया महत्वाकांक्षी रूप, जिसके प्रसार के लिए खूब प्रयत्न किया जा रहा है, पब्लिक स्कूल या मौडल स्कूल है। लेख के प्रारम्भ में ही डी. ए. वी. प्रबन्धकर्तृ सभा दिल्ली की ओर से एक विज्ञापन उद्धृत किया गया है जिसमें डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल की तीन विशेषताओं का उल्लेख है। एक शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होना, दूसरा बालक और बालिकाओं का इकट्ठा पढ़ना और तीसरा भारतीय संस्कृति की पृष्ठ भूमि।

इस विषय मे आगे बढ़ने से पहले मैं प्रसिद्ध पत्रकार श्री खुशवन्तसिंह के विचार पब्लिक स्कूलों के विषय में 2 मार्च 1985 के पंजाब केसरी से संक्षेप में उद्धृत करना चाहूंगा। उनका कहना है—

1. पब्लिक स्कूल सरकारी अनुदान पर नहीं रहता। पब्लिक स्कूल नाम एक धमाकेदार नाम है जैसे भगवा कपड़ा। यह डालकर कोई भी आदमी सन्त, सन्यासी, गुरु या महात्मा की पदवी पा सकता है।

2. पब्लिक स्कूलों का सिद्धान्त इंगलैंड से लिया गया है। वहां केवल दर्जन भर अच्छे पब्लिक स्कूल हैं। उनकी दो विशेषताएं हैं, वे बहुत महंगे है, केवल धनाढ्यों के लिए सुरक्षित हैं। साधारण लोगों के लड़कों को बड़ी हिचकिचाहट के साथ लिया जाता है और उन्हें नीची निगाहों से देखा जाता है।

3. अंग्रेजों ने भारत में इनकी शृंखला चलाई जैसे मेयो कालेज (अजमेर) सिंधिया कालेज ग्वालियर) लायस कालेज (इन्दौर) आदि। इनमे प्रवेश के लिए केवल पैसा ही नहीं, शाही खानदान का होना भी जरूरी था। जब शाही खानदान समाप्त हुए तो अमीरजादों के लिए बने और स्कूलों ने भी यह नाम अपनाए, जैसे सैंटपाज (दार्जीलिंग) इन की विशेषताएं अधिक खर्च कम से कम 1000) मासिक. अधिक सुविधाएं, स्कूली विशेष वर्दी तथा महत्वपूर्ण व्यक्तियों के आगे सलामी करने के ढंग आदि।

4 इनकी प्रमुख विशेषता सनोबरी बड़े होने का मिथ्याभिमान, सामान्य जनता से अलगाव अनुभव करना।

खर्च की दृष्टि से तो हमारे पब्लिक स्कूल साधारण लोगो की पहुंच से बहुत बाहर हैं। मैं एक अच्छे जालन्धर के के पब्लिक स्कूल के प्रोस्पेक्टस से कुछ तथ्य दे रहा हू। एल के जी. श्रेणी जो साढे तीन साढे चार वर्ष के बच्चे के लिए है। उसमे प्रवेश के समय लगभग 640) देना होगा। 50-70 रुपए मासिक फीस के अतिरिक्त वर्दी 35) यथा लटर-पटर खर्चों का कोई अन्त नही।

एक बोर्डिंग हाउस मे प्रवेश पाने वाले लड़के का 9000) वार्षिक तो स्कूल लेगा, जो वर्दी आदि सामान आवश्यक हैं वह भी तीन-चार हजार से कम का क्या होगा।

प्रवेश के संघर्ष के समय जो दान-दक्षिणा है उसका ब्यौरा अलग है। मुझे बच्चो के सरक्षको ने बतलाया है कि स्थानीय डी ए. वी. पब्लिक स्कूल मे प्रारम्भ में 1200) मांगा जाता है इसमे 500) आवश्यक दान सम्मिलित है।

ऐसी सस्था मे यदि नन्द के लला भगवान् कृष्ण आए तो उनको भी स्थान कठिनता से मिलेगा, सुदामा का सत्कार तो वर्दी वाले चपरासी के धक्के से होगा।

यह समझना बहुत कठिन है कि इस शिक्षा सस्था का स्थान राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में अथवा ऋषि दयानन्द अथवा म. हंसराज जी की चलाई शिक्षा प्रणाली मे कहा है?

मैं इन सस्थाओं के संचालकों की कठिनता को समझता हूं। हमारे देश में जो आर्थिक ढांचा स्वाधीनता के बाद विकसित हुआ है। उसमें जन-जीवन से बहुत परिवर्तन आ गया है। ग्राम उजड़ गए हैं और उजड़ रहे है। शहरों में नए उद्योगपतियों, भ्रष्टाचार के विविध रूपों तथा राजनीतिक पार्टियों के द्वारा अमीर बनने वाले लोगों के कारण एक नया अहम् मन्य तथा विलासी धनिक वर्ग बन गया है। उदाहरण के लिए पंजाब में 1981 की आर्थिक जांच के अनुसार 10 प्रतिशत परिवारों के पास 76 प्रतिशत ग्रामीण सम्पदा भूमि आदि है। और निचले स्तर के 70 प्रतिशत परिवारों के पास केवल 6.94 प्रतिशत। इस वर्ग के लोग भी अपने को पुराने शाहजादों या रामजादों से कम नही समझते। साधारण जनता से उन्हे घृणा है। इनके लिए इन के बच्चों के लिए अहम् भावना उत्पन्न करने वाली शिक्षा संस्थाओ की आवश्यकता है। पब्लिक स्कूल या माडल स्कूल इसी बढती हुई मांग का परिणाम है। इस मांग का सभी धर्मों और शिक्षा सस्थाओ ने लाभ उठाया है। सभी ने पब्लिक स्कूल खोले है जोकि एक आय का अच्छा साधन है, प्रबन्धकर्ताओं के लिए तथा अध्यापक वर्ग के लिए पढने वाले विद्यार्थी पैसा देते हैं तो उन्हें अहमन्यता प्राप्त होती है चाहे झूठी ही क्यो न हो।

कुछ भी क्यो न कहा जाए पर दयानन्द और हंसराज के नाम के साथ सस्था मे युवक और युवतियो की इकट्ठी पढाई तथा अंग्रेजी का माध्यम होना और वेश-भूषा मे अंग्रेजी की नकल इन बातो का होना शोभा नही देता।

डी. ए. वी. प्रबन्धक समिति केवल पब्लिक स्कूल ही नहीं चलाती, उसका कार्यक्षेत्र तो बहुत विस्तृत है। विभिन्न स्तर के बीसियों कालेज, आयुर्वेद कालेज टेक्नीकल सस्थाएं, उपदेशक विद्यालय आदि सैकड़ो संस्थाएं हैं। इनके द्वारा लाखो विद्यार्थी डी ए. वी. आन्दोलन के सम्पर्क में आते हैं। शिक्षा के अनेक रूपो को ग्रहण करने के अतिरिक्त ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज की विचार-धारा के साथ इन लाखों युवक और युवतियों का थोड़ा बहुत सम्पर्क अवश्य होना होगा।

इस सम्पर्क द्वारा यदि प्रबन्धक तथा अध्यापक वर्ग में आर्य समाज, वैदिक धर्म अथवा हिन्दू संस्कृति की भावना है तो उसका अवश्य प्रभाव होता होगा, होना चाहिए।

पर क्या इस प्रभाव का प्रत्यक्ष रूप कोई दिखाई देता है।

मैं सम्भवत: 5-‘-85 का विक्रमपुरा आर्य समाज, जो प्रादेशिक सभा की जालन्धर में प्रमुख समाज है, मैं सत्संग के लिए गया। सभा के पुराने उपदेशक पं. बुधीराम जी का व्याख्यान था। एक सार्थक बात पण्डित जी ने कही कि इस समाज के सत्संगों में पं. मेहरचन्द जी के समय हाल तो भर ही जाता था। बाहर आंगन में भी बैंचों पर लोग बैठते थे। आज के सत्संग में सब मिलाकर 14 व्यक्ति थे। संस्था के संस्थापक प्रथम प्रिंसिपल म. हंसराजजी के जन्म दिवस पर 50-55 व्यक्ति थे। जालन्धर की डी. ए. वी. संस्थाओं के अध्यापकों-प्राध्यापकों की संख्या ही एक हजार से ऊपर होगी और विद्यार्थी तो बीस हजार से ऊपर होंगे।

पिछले तीन वर्षों से पंजाब में हिन्दू नरक में से गुजर रहे हैं। अकाली पार्टी का नौजवान ग्रुप जब चाहे जिसको गोली से उड़ा दे। लगभग दो हजार व्यक्तियों पर गोलियां चल चुकी हैं और पांच सौ के लगभग व्यक्ति मारे भी जा चुके हैं। पर सब आर्य सस्थाएं तरंग रहित समुद्र के समान शान्त हैं। उनके लिए यह सब न जाने सुदूर किस देश में हो रहा है। कबूतरों के ढेर के समान, अपने अपने घर मे घुसकर सब चुपचाप बैठे हैं।

यह बात केवल डी. ए. वी. संस्थाओं मे ही नही, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित संस्थाओ मे भी लगभग ऐसा ही है। म. मुन्शीराम जी तथा ला. देवराज जी द्वारा सस्थापित अथवा होशियारपुर समाज मे भी—जिसके सत्संगो मे, मैं प्राय, जाता रहता हू अवस्था लगभग ऐसी ही है। उनसे सम्बद्ध विद्यालयों तथा महाविद्यालयो मे सहस्रो की संख्या मे अध्यापक और विद्यार्थी हैं। पर आर्य समाज के सत्संगो में 5-7 अध्यापक और विद्यार्थी प्राय: नही देखे गए।

सरकार के उदार अनुदानों से आर्य संस्थाओं के कलेवर तो बहुत बढ़ गए हैं पर वे सफलता की दोनो कसौटियों, आदर्शों के अनुरूप होना तथा समाज के जीवन से सम्बद्ध होना प्रभावी होने से बहुत परे हट गई हैं। स्वामी ... प्रकाश जी ने 12-5-85 के आर्य जगत् में लेख लिखा है, महात्मा हंसराज और डी. ए. वी. संस्थाएं—उसमें उन्होंने लिखा है—

आर्य समाज आज युवकों को आकर्षित करने मे असमर्थ है। यदि आर्य समाज से युवकों का सम्बन्ध न रहा तो डी. ए. वी. संस्थाओ मे आर्य परिवार के अध्यापक भी नहीं मिलेंगे। शनैः शनैः वह दिन आवेगा कि डी. ए. वी. संस्थाएं तो रहेंगी पर दयानन्द और वैदिक ये दोनों शब्द इन संस्थाओं के प्रसंग में निरर्थक हो जाएंगे।

(क्रमश:)

सम्पादकीय—

आर्य समाज पर भ्रष्टाचार की छाया—4

मेरी इस लेख माला पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों को आपत्ति है। वह समझते हैं कि इन लेखों के कारण आर्य समाज बदनाम होगा। इसमें सन्देह नहीं कि कुछ व्यक्ति इन लेखों को पढ़कर चिन्तित अवश्य होंगे और वह सोचेंगे कि आर्य समाज में क्या हो रहा है। मैं इस समस्या को एक दूसरे दृष्टिकोण से देखता हूं। जब एक मनुष्य के शरीर पर एक छोटी सी फुन्सी हो जाए उसका समय पर इलाज न किया जाए तो वह धीरे 2 एक बड़ा फोड़ा बन जाता है, फिर उसका आपरेशन कराना पड़ता है और कई बार वही आपरेशन घातक बन जाता है। मेरी यह धारणा है कि भ्रष्टाचार की फुन्सी अब एक फोड़ा का रूप धारण कर रही है। मैं पिछले पांच सात वर्षों से यह पुकार रहा हूं कि इसे रोको, लेकिन मेरी कोई सुनवाई नहीं हुई। जो इसे रोक सकते थे वही इसे प्रोत्साहन देते हैं और यही प्रश्न बार 2 मेरे दिल में उठता है कि उन महानुभावों का क्या स्वार्थ है? जिसके कारण वह भ्रष्टाचार का समर्थन और उसे प्रोत्साहन दे रहे हैं? मेरी एक और कठिनाई भी है मेरा पालन-पोषण एक ऐसे परिवार में हुआ है जहां मैंने आर्य समाज के बड़े-2 नेताओं को बहुत समीप से देखा है उनमें से कई वह थे जिन्होंने अपना सर्वस्व आर्य समाज के लिए दे दिया था और अपने लिए आर्य समाज से एक कौड़ी भी नहीं ली थी। मैंने आचार्य रामदेव जी जैसे आर्य समाज के उन निष्काम सेवकों को भी देखा है जो सारा दिन भुने हुए चने खाकर अपना गुजारा कर लेते थे और साथ ही आर्यसमाज का काम भी करते थे। पण्डित विश्वम्भरनाथ अपनी वकालत को छोड़कर पांच वर्ष गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता रहे थे उन्होंने कभी गुरुकुल से एक पैसा भी न लिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल के लिए जो त्याग किया था वह हमारे इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय बन गया है और भी आर्य समाज के कई सेवक थे जो अपने पास से उसे देते थे, लेते कुछ न थे। ऐसे भी थे जो दे नहीं सकते थे। इसलिए वह कुछ लेते भी न थे। मेरे कहने का अभिप्राय: यह कि मैंने आर्य समाज का वह युग देखा है जहां तप और त्याग की कीमत पड़ा करती थी। आज वह युग आ गया है जहां लूट खसूट करने वालों को सम्मानित किया जाता है। हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी है। पिछले कई वर्षों से वहां कुछ घपला हो रहा है वह भी हजारों का नहीं, लाखों का। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के नाते मैंने बार 2 कहा कि जो व्यक्ति इसके लिए उत्तरदायी है उनके विरुद्ध कार्यवाही होनी चाहिए। परन्तु मेरी एक भी नहीं चलने दी गई और जो इसके लिए जिम्मेवार थे उनकी पदोन्नति कर दी गई। यह सब कुछ करने वाले वह व्यक्ति थे जिनसे आशा की जाती थी कि वह आर्य समाज के लिए प्रकाश स्तम्भ बनकर आर्य जनता का मार्ग प्रदर्शन करेंगे। लेकिन उन्होंने ही इस सारी धांधली पर पर्दा डालने की कोशिश की। क्यों की? इसका मुझे उत्तर नहीं मिल रहा। इसलिए आर्य जनता के दरबार में अपना मुकद्मा रखने लगा हूं। मैं समझता हूं कि आर्य जनता के साथ यह बहुत बड़ा अन्याय है कि एक फुन्सी अन्दर ही अन्दर फोड़ा बन जाए उसमें पीप भी भर जाए फिर भी कोई उसका इलाज करने को तैयार नहीं है, इसका परिणाम अन्त में यही होगा कि यह पीप सारे शरीर में फैल जाएगा। ऐसी स्थिति में उन लोगों पर जिनके हाथ में आर्य समाज की बागडोर है वह सार्वदेशिक स्तर पर हों या प्रान्तीय स्तर पर हो, उनका यह कर्तव्य हो जाता है कि वह इस धांधली को समाप्त करने के लिए कोई उचित पग उठाएं। मैंने केवल गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के ही विषय में कुछ लिखा है यदि सारी कहानी लिखने लगूं तो एक पुस्तक बन जाएगी और लोग पढ़कर आश्चर्य करेंगे कि क्या यही वह आर्य समाज है जिसके लिए स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हंसराज जैसे तपस्वी, त्यागी, महात्माओं ने अपना सर्वस्व प्रदान किया था। आज भी हमारे बीच में ऐसे वीतराग संन्यासी है जिन पर हम गर्व कर सकते हैं और जो अपना सब कुछ छोड़ कर आर्य समाज की सेवा कर रहे हैं। उनकी तरफ किसी का ध्यान नहीं जाता। हमारी सभाओं में जो उपदेशक और भजनीक हैं। उन्हें हम इतना वेतन भी नहीं दे सकते कि वह सम्मान और आदर के साथ अपना और अपने बाल-बच्चों का पेट भर सकें। क्या आर्य जनता यह विश्वास करेगी कि उसकी एक संस्था में एक व्यक्ति पर लगभग नौ हजार रुपया मासिक व्यय होता रहा है और जब कहा जाता था कि यह बन्द होना चाहिए तो बड़े 2 नेता कहते थे कि नहीं यह आवश्यक है उसे चलने दो।

यह और इस तरह के कई प्रश्न सामने आ रहे हैं। आज तक उन पर पर्दा पड़ा रहा है केवल इसलिए कि आर्य समाज की बदनामी न हो। अब केवल बदनामी का सवाल नहीं रहा, आर्य समाज को बचाने का प्रश्न हो गया। मैंने तो अभी एक ही उदाहरण दिया है और भी बहुत कुछ आर्य जनता के सामने रख सकता हूं परन्तु डरता हूं कि वह उसे पढ़कर कांप उठेंगे। लेकिन अब चुप रहना भी महापाप होगा। इसलिए बोलने लगा हूं कि जो महानुभाव आज तक मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हुए, सम्भवत: वह अब सुन लें और आर्य समाज को नष्ट होने से बचा लें। यह बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है जिस पर विचार करने की आवश्यकता है। इसके विषय में कुछ और आगामी अंक में निवेदन करूंगा।

—वीरेन्द्र

करतारपुर में स्वामी विरजानन्द स्मारक सम्मेलन

पिछले वर्षों की भान्ति इस बार भी करतारपुर में दण्डी स्वामी श्री गुरु विरजानन्द जी महाराज की स्मृति में सम्मेलन हुआ। उसी समय गुरु विरजानन्द संस्कृत विद्यालय का वार्षिक उत्सव भी हुआ है। इस बार यह दोनों उत्सव बहुत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। पंजाब की परिस्थितियों के कारण पिछले वर्षों में वहां कुछ कम लोग आए थे इस बार बहुत अच्छी संख्या आए हैं और जो आये उन्होंने दिल खोलकर दान भी दिया। इस अवसर पर आर्य समाज के विख्यात संन्यासी श्री अमर स्वामी जी महाराज को भी सम्मानित किया गया। उनके अतिरिक्त महात्मा आर्य भिक्षु जी के प्रवचन भी हुए जो सदा ही आर्य जनता के लिए विशेष आकर्षण का विषय बनते हैं। ऋषिकेश से श्री स्वामी मुक्तानन्द जी भी आये थे और उन्होंने योगाभ्यास के प्रत्येक पक्ष पर विस्तारपूर्वक अपने विचार रखे थे। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री सत्यकाम वर्मा भी आये थे और उन्होंने एक प्रभावशाली व्याख्यान से जनता को मोहित कर दिया था। श्री श्याम सुन्दर जी स्नातक ने सात दिन तक सामवेद पारायण यज्ञ कराया और श्री सत्यपाल पथिक समय 2 पर अपने मधुर संगीत के द्वारा जनता को लाभान्वित करते रहे। हिमाचल आर्य समाज की प्रमुख कार्य कर्त्री श्रीमती चान्दरानी की अध्यक्षता में एक महिला सम्मेलन भी हुआ था। इस प्रकार इस बार यह सम्मेलन बहुत सफल रहा है इसके लिए मैं इस स्मारक समिति के प्रधान श्री शिवचन्द जी, महामन्त्री, श्री चतुर्भुज जी मित्तल और अधिष्ठाता श्री ऋषिपाल-सिंह जी को बधाई देता हूं। विशेषकर इस विद्यालय के आचार्य श्री नरेश जी और सह-अधिष्ठाता श्री सुखदेव जी और उनके सहयोगियों को भी बधाई देता हूं जिनके परिश्रम से यह उत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ है।

—वीरेन्द्र

एषणातीत साधक का स्वरूप

ले.—श्री पं. जगदीश राम आर्य रत्न मिलरगंज लुधियाना

हमारे वैदिक साहित्य में मान्य ऋषियों मुनियों और शास्त्रकारों ने मानव की इन तीनो एषणाओं को ही मानव जीवन के समूचे दुखों का मूलाधार माना है। अर्थात् वित्तेषणा, पुत्रेषणा और लोकेषणा एषणा का अर्थ है इच्छा उपरोक्त तीनो एषणाओं का स्वरूप इस प्रकार शास्त्रकारों ने माना है।

वित्तेषणा का अर्थ है। धन की लालसा, तीव्र इच्छा और धन के साथ परिबद्धता। धन उन सभी वस्तुओं के समूह को कहते हैं। जो हमारे जीवन के लिए अत्यावश्यक और अनिवार्य मानी जाती है।

पुत्रेषणा का अर्थ यह है। सन्तान सम्बन्धी लालसा व तीव्र इच्छा अथवा सन्तान के साथ आसक्ति पूर्ण परिबद्धता।

लोकेषणा का अभिप्राय है। समाज के अन्य मनुष्यों द्वारा अपनी प्रशंसा व सम्मान की तीव्र आकांक्षा से परिबद्ध होना।

यदि इन तीनों इच्छाओं का प्रयोग हम शास्त्र मर्यादाओं के अन्तर्गत करते हैं। तो यही तीनों एषणाएं हमारे लिए पूर्ण रूपेण सुखदाई सिद्ध हो जाती हैं। जिस प्रकार हमारी भोजन करने की इच्छा हमारे लिए अनिवार्य है। और भोजन के बिना हम कदापि जीवत नहीं रह सकते। पर यदि हम भोजन भी शास्त्र मर्यादा के विपरीत ही करते हैं। तो वही भोजन हमारे शारीरिक दुःखों का कारण बन जाता है। यथा भगवद्-गीता के अनुसार युक्ताहार ही हमारे लिए पूर्ण सुखदाई बन सकता है। साराश यही है कि यदि हम अपनी तीनो एषणाओं को शास्त्र मर्यादा के अन्तर्गत नहीं रखते तो यही एषणायें हमारे जीवन में पूर्ण दुःखदाई बन जाती हैं।

अब इन तीनों एषणाओं पर विस्तार से और गम्भीरता पूर्वक विचार करते हैं।

"वित्तेषणा" धनोपार्जन की इच्छा ऐसी नहीं है जिसकी हम उपेक्षा कर सकें। इसके अभाव मे हमारा जीवन निर्वाह कदापि नही चल सकता। यदि हम धन की आकांक्षा अपने जीवन की रक्षा तथा अपने कर्त्तव्यो का पालन करने के लिए ही करते हैं और धन को केवल मात्र धर्मानुसार मार्यादित रीति से ही अर्जित करते हैं। तो हमारी यह वित्तेषणा हमारे शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास के लिए और सभी प्रकार के सुखो के लिए उनका दृढ़तम आधार बन सकती है। किन्तु जब हमारे धनोपार्जन का उद्देश्य केवल हमारे भोग्य जीवन को ही समुन्नत करता है और जब हम अर्जित धन को भी शास्त्र मर्यादाओं का अतिक्रमण करके ही इसका उपार्जन करते हैं। तभी हमारी यह वितेषणा दूषित होकर हमारे दुःखों कौर कलेशों का कारण बन जाती है।

अर्थोपलब्धि हमारे आर्थिक जीवन का एक अभिन्न अंग है। यदि हम धनोपार्जन अर्थशास्त्र के विशुद्ध सिद्धान्तों के अनुसार ही करते हैं तो हमारा यह धन का उपार्जन एक विशुद्ध यज्ञ का रूप ही होगा। और हमारे इस यज्ञ से सभी सम्बन्धित पक्षों का कल्याण ही होगा। कल्पना कीजिए कि हम किसी ऐसी वस्तु का निर्माण कार्य करते हैं। और अपनी निर्मित वस्तु की उपयोगिता का पूरा-2 ध्यान रखते हैं और उसमें अर्थ शास्त्र के आदेशानुसार सत्यम्, शिवम्, और सुन्दरम् गुणों का पूरा-2 समावेश करते हैं। तो तभी हमारा यह निर्माण कार्य याज्ञिक कर्म बन सकता है और ऐसी स्थिति में हमारी निर्मित वस्तु के उपभोगताओं की तुष्टि भी उत्तरोत्तर बढ़ती जावेगी और सभी उपभोगता उस वस्तु से लाभान्वित होते रहेंगे: ऐसी स्थिति में हमारी यह वित्तेषणा हमारे दुःख की अपेक्षा सुख का कारण ही बनेगी। पर जब हम अपने निर्माण कार्य को केवल धनोपार्जन की भावना से ही करेंगे। तथा वस्तु की उपयोगिता का ध्यान नहीं रखेंगे। और उसमें सत्यम्, शिवम्, सुदरम् का समावेश नहीं करेंगे और इसके परिणाम स्वरूप उपभोगताओं की तुष्टि न होकर उसकी खप्त और मांग में कमी होने पर वह कार्य समाप्त भी हो सकता है जो हमारी और उपभोगताओं की आर्थिक हानि का कारण भी बन सकता है। प्रत्येक निर्माण कार्य में सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के गुणों का समावेश अत्यावश्यक हुआ करता है। अर्थात् हमारी निर्मित वस्तु हमारी अभिव्यक्तियों और घोषणाओं के ही अनुरूप हो तथा वह वस्तु उपभोगताओं के लिए पूर्ण उपयोगी और हितकर हो। तथा लाभप्रद भी हो। हमारी निर्मित वस्तु मे उसके गुणों और उसकी उपयोगिता के आधार पर आकर्षण भी हो। तभी उस वस्तु में सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् की विद्यमानता मानी जावेगी।

स्पष्ट है कि अपने आर्थिक जीवन में धनोपार्जन के कार्य में यदि हमारी मुख्य भावना अपनी निर्मित और विक्रय वस्तुओं के उपभोगताओं के हितों और उनकी सुविधाओं की अपेक्षा और अवहेलना करके केवल अपने अर्थ-लाभ को ही अधिमान देते हैं तो ऐसी स्थिति में हमारी यह वित्तेषणा विकृत और दोषपूर्ण मानी जावेगी। और हमारा ऐसा व्यवहार हमारी आर्थिक लोलुप्ता का ही परिचायक माना जावेगी। जो हमारे दुःखों-कलेशों का ही कारण बनेगा। यह वित्तेषणा का अजित और विशिद्ध स्वरूप है। इसी से बचना हमरा परम कर्त्तव्य है।

वित्तेषणा के संदर्भ में एक विचारणीय प्रश्न यह है। कि हमारे आर्थिक जीवन में हमारे उपार्जित धन का प्रयोग हमारे उत्तराधिकारियों के द्वारा कैसा होता है। अर्थात् यह धन भोग्य जीवन में अथवा याज्ञिक कर्मों में प्रयुक्त होता है।

धन का सर्व श्रेष्ठ प्रयोग यही माना जाता है कि इसका प्रयोग अपने याज्ञिक कार्यों और विकास के लिए ही किया जावे शास्त्र वचन भी यही है। "धन: धर्मम् तथा सुखम" अर्थात् धन का प्रयोग धर्म में ही सुखदाई हुआ करता है। भोगों का आवश्यम्भावी परिणाम रोगों के रूप में मिलता है।

"पुत्रेषणा" इसका अर्थ यही है। सन्तान की लालसा तथा तीव्र इच्छा से बद्ध होना। यही पुत्रेषणा का स्वरूप है।

प्रत्येक गृहस्थी का अपने पितृ ऋण से उऋणी होना उसका एक अनिवार्य कर्त्तव्य माना गया है। अत: सन्तानोत्पत्ती गृहस्थी का एक धार्मिक और अनिवार्य कृत्य माना जाता है। पर इस सदर्भ मे यही विचारणीय और महत्वपूर्ण बात भी है कि गृहस्थी जैसी भी अच्छी या बुरी सन्तान उत्पन्न करे। वह इस को पितृ ऋण से उऋणी बना देगी? और क्या इसका ऐसा कृत्य धर्मानुसार और प्रशंसनीय होगा? इसका स्पष्ट उत्तर यही है कि गृहस्थी को शिष्ट और सर्व गुण सम्पन्न सन्तान का निर्माण करना है उसका प्रसंशनीय व श्रेष्ठ कृत्य माना जा सकता है। क्योंकि शिष्ट और सदाचारी तथा सर्व गुण सम्पन्न सन्तान ही समूचे मानव समाज और उसके अपने लिये कल्याणकारक तथा उपयोगी सिद्ध हो सकती है। निर्गुण और दुराचारी, अशिष्ट सन्तान कदापि किसी के लिए भी सुखदाई और कल्याणप्रद सिद्ध नहीं हुआ करती। इसके लिए वेद वचन भी यही आज्ञा देता है। "अस्माम प्रज्या पशुभि: ब्रह्म वर्चसी" अर्थात हमारी सन्तान और हमारे पशु महान् तेजस्वी और गुण सम्पन्न हों। इसी संदर्भ में एक संस्कृत के कवि का यह वचन अत्यन्त सार्थक सिद्ध होता है। यथा......माता शत्रु, पिता वैरी येन बालो न पाठिता। न शोभते मध्य सभा हंस मध्य बको यथा। अर्थात् वह माता-पिता अपनी सन्तान के शत्रु और वैरी होते हैं। जो अपनी सन्तान को विद्या के माध्यम से सर्व गुण सम्पन्न नहीं बनाते। उनकी सन्तान शिक्षित और शिष्ट समाज में शोभा और सम्मान को प्राप्त नहीं कर सकती। जिस प्रकार हंसों की पंक्ति में कौआ शोभित नहीं हो सकता। अत: प्रत्येक गृहस्थी का यही धर्म है कि वह अपनी सन्तानों को यथा सामर्थ यथा सम्भव अधिकाधिक सुशिक्षित और गुण सम्पन्न बनावे। यही उसकी पुत्रेषणा का विशुद्ध स्वरूप है। सुशिक्षा का अर्थ केवल अक्षर बोध कदापि नही है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ अपने कर्तव्यों का पूर्ण ज्ञान और उनकी पूर्ति में दक्षता सम्पन्न होना ही है।

किन्तु यदि किसी गृहस्थी की सन्तान दुर्गुण सम्पन्न और दुराचारी है तो उसका यह कृत्य अधार्मिक और अशोभनीय माना जावेगा। जो गृहस्थी अपनी सन्तान को मोह और ममता क वशीभूत होकर शिष्टाचारी और यथेष्ठ गुण सम्पन्न नहीं बनाता तो उसका ऐसा कृत्य उसकी पुत्रेषणा के विकृत स्वरूप को ही सिद्ध करने वाला होगा। और जो गृहस्थी मोह (अज्ञान) के वशीभूत होकर अपनी सन्तानों की भोग्य कामनाओं की पूर्ति में तो उदारता पूर्वक तत्परता से सहायक बने रहते हैं। परन्तु उन्हे शिष्टाचारी और गुण सम्पन्न बनाने में पूरी तत्परता से अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करते। वह गृहस्थी भी अपनी पुत्रेषणा का दुरोपयोग रूपी पाप कर्म ही करते हैं।

"लोकेषणा" इसका अर्थ है कि दूसरों के द्वारा अपनी प्रसंशा और सन्मान की आकांक्षा रखना। साधारण अवस्था में किसी व्यक्ति का यह इच्छा रखना आपत्तिजनक प्रतीत नहीं होता। क्योंकि जब कोई व्यक्ति अपने सामाजिक जीवन में शास्त्रीय मर्यादाओं के अनुरूप शुभ कर्मों को करता है। तो समाज में उस की कीर्ति में वृद्धि का होना प्राय: अनिवार्य ही होता है। यदि शुभ कर्मों के करने वाला व्यक्ति अपने शुभ कर्मों

(शेष पृष्ठ 5 पर)

वैदिक धर्म-सनातन संस्कृति

ले.— श्री डाक्टर आनन्द सुमन जी (वैदिक प्रवक्ता)

अनेक युग बीत चुके हैं, अनेकों मजहब, मत बने बिगड़े हैं, अनेकों राष्ट्रों का तख्ता पलटा है। बहुतों का कायाकल्प हो गया है किन्तु दो अरब वर्ष से वैदिक धर्म अपने सत्य जनकल्याणकारी स्वरूप को निरन्तर सूर्य की भान्ति प्रकाशित किए हुए है। इसी भावना को मुस्लिम कवि, इकबाल ने इस प्रकार व्यक्त किया है—

यूनान मिस्र रोमां,
सब मिट गए जहां से
बाकी अभी तलक है,
नामों निशां हमारा।
कोई बात है कि हस्ती,
मिटती नहीं हमारी॥
एक वक्त से है दुश्मन,
दौरे जहां हमारा॥

इकबाल की यह पंक्तियां वैदिक धर्म के सत्य स्वरूप, मानवीय सन्देश एवं स्वतः प्रमाण होने की पुष्टि करती हैं। इकबाल की यह विचार धारा भी बदल गई थी: यह भी पाकिस्तान के विभाजन के समय सम्प्रदाय की भावनाओं में बह गए थे। किन्तु तब भी वैदिक धर्म की सत्यता पर कोई चिन्ह नहीं लगा, वास्तव में एक विशेषता है हमारी संस्कृति की, कि हम आज तक नहीं मिटे निरन्तर आने वाले परिवर्तनों से हमारी सांस्कृति धरोहर वेद में कोई परिवर्तन नहीं आया. नहीं बदला हमारा वैदिक परिवेश।

वैदिक धर्म ही एक मात्र धर्म है जो सारे संसार को सत्य, मानवता, विज्ञान एवं विवेक के पथ की ओर प्रोत्साहित करता है, यह बात केवल लिखने कहने पढ़ लेने की नहीं, संसार की हर कसौटी पर परखने के बाद ही यह लिखा जा रहा है। स्वयं मैंने इस्लामी वातावरण में आंखें खोलीं। जवानी की दहलीज पर आते-आते मैं कट्टर जूनून वादी इस्लामी बन गया। यह थी इस्लामी सम्प्रदाय की महान्धता—किन्तु जब मेरे सामने सत्य उजागर हुआ मुझे प्रकाश मिला तब मुझे मजबूर होकर वैदिक धर्म में आना पड़ा। मैंने अनुभव किया कि वैदिक धर्म में हमें पूरी स्वतन्त्रता है कि हम किसी भी प्रश्न को बुद्धि व विवेक से खोजें, केवल यह कहना कि यह कुरान में है क्योंकि मैं कह रहा हूं इसलिए यह सत्य है, यह बात नहीं वैदिक धर्म की महत्ता यही है कि हम अपनी बुद्धि लगाकर परखें जाएं समझें इसी प्रेरणा का आधार है वेद-अर्थात् ज्ञान।

सृष्टि की उत्पत्ति के पश्चात् जिसे पहले मानव ने धरती पर पग रखा उसके मस्तिष्क में जो पहला सत्य विचार आया वहीं से आरम्भ होता है वेद का सन्देश श्रुति के माध्यम से वेद का सन्देश चहुं ओर प्रसारित हुआ—डार्विन का सिद्धान्त फेल हो गया कि पहले मानव नहीं था वह तो बन्दर की सन्तानों में से है। वेद ने सारा रहस्य समझाया उसे जिसने समझने का प्रयास किया। वेद ज्ञान फैला सूर्य की भान्ति सारी सृष्टि को अपने प्रकाश से प्रकाशित कर दिया, कुछ विसंगतियों ने जन्म लिया वेद के विचार सीमित हो गए जन्माधिकार वाद को मानने वाले घमण्डी बन बैठे, सामाजिक परिवेश भ्रष्ट हो गया। मानव समाज मिथ्या में धंस गया, एक व्यूह जो वेद ज्ञान को नहीं समझता था वह धीरे-धीरे छा गया, शंकराचार्य ने भी वेद की ओर जाने का साहस नहीं दिखाया ब्रह्मा से जैमिनी पर्यन्त ही लक्षमण रेखा बना दी गई अनेक ऋषि मुनि हुए किन्तु किसी ने भी प्रस्थान त्रयी को छोड़कर वेद त्रयी की ओर बढ़ने का साहस नहीं दिखाया वेदान्त तक ही सीमित रह गया। समाज में 18 वीं शताब्दी आई, अंग्रेजों का सूर्य उदय था। उनकी आज्ञा के बिना कोई चूं तक न करता था। किन्तु एक दीवाने ने साहस दिखाया उसने ज्ञान के अथाह सागर में गोते लगाये पुराने पत्थरों को छोड़कर वह मणि खोज लाया वेद। दयानन्द को वेद क्या मिला समझो सारा संसार ही मिल गया ब्रह्मा से जैमिनी पर्यन्त की श्रृंखला टूट गई आज बड़े गर्व से हम कहते हैं ब्रह्मा से दयानन्द व दयानन्द से आर्य समाज पर्यन्त वेद की विचारधारा संसार का मार्ग दर्शन करती रहेगी।

वेद के प्रकाश से हमें जो मिला वह सब कुछ है सर्वस्व है, उसी में सबका हित है मानवता विज्ञान व विवेक का त्रिसूत्र, समाज ने अंगड़ाई ली वेद ज्ञान फैला अब आवश्यकता है कि हम सब मिलकर "वेद ज्ञान को समझें दयानन्द ने कहा "वेद का सत्य विद्याओं का पुस्तक है" इस विचार को सारे संसार में फैलाना है—सत्य विद्याओं के मूल वेद को समझना है, तब ही मानव समाज निर्भय रह सकेगा तभी होगी विश्व शान्ति मानव एकता, नारे लगाने से सम्मेलन करने से विश्व शान्ति नहीं रह सकेगा। वेद के मर्म को स्वयं समझना तदनुरूप आचरण में लाना व अन्यों तक भी वेद सन्देश पहुंचाना होगा. सारे संसार में वेद की पताका ही फहराओ तभी होगा मानवता का कल्याण, तभी बुद्धि पर छाई कालिमा मिटेगी जो भयावह वातावरण सबको शंका में डाले है, भयभीत किये है उस कुरीति को ताड़ना होगा ज्ञान की खोज ही मानव जीवन का मुख्य ध्येय है, हमें सब ओर यह सन्देश प्रसारित करना है 'क अन्धकार मय मार्ग पर न चलकर हम सब प्रकाश युक्त बुद्धि को प्रशस्त करने वाले वेद मार्ग को ही अपनायें मानवों तक वेद का सन्देश पहुंचाना आज के आर्य सभासदों का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। बिना विचार के कहीं हम प्रस्थान त्रयी में फंस जायें—कहीं फिर हमें अन्धकार की गुफा में धंस जाना पड़े।

जागो, उठो समझो समझाओ, वेद का सन्देश जन जन तक पहुंचाओ आज संसार को वैदिक धर्म की आवश्यकता है। वैदिक जीवन पद्धति के बिना सब अधूरा ही रह जायेगा। अतः कर्मशील बनो। यही आर्य समाज का सन्देश है।

—

(4 पृष्ठ का शेष)

और लोकोपकारक कार्यों को करता हुआ यह समझ लेता है कि इन कर्मों के करने से समाज में सम्मान व प्रतिष्ठा पाने के लिए ही समाज सेवा तथा लोकोपकार के कार्यों को करना ही लोकैषणा का विकृत रूप है। ऐसा भी सम्भव हुआ करता है कि कभी-2 कर्ता की मान प्रतिष्ठा उसकी आशा के अनुरूप उसे नहीं मिलती। और उसके समाज सेवा के कार्य दोष पूर्ण होने से उनकी आलोचना भी हुआ करती है। और ऐसी स्थिति में कर्ता को हताश व निराश होना पड़ता है। और उसके सामाजिक सेवा के कार्यों के करने की गति भी मन्द हो जाती है। ऐसी स्थिति में कभी-2 कर्ता सामाजिक सेवा के कार्यों को करना ही छोड़ देता है।

इसी आधार पर हमारे ऋषियों मुनियों ने इस लोकैषणा की भावना को त्यागने योग्य मानकर इसे अपने सामाजिक जीवन में मुख्याधार बनाना निषिद्ध माना है। यदि व्यक्ति अपने इस सामाजिक जीवन में अपनी सुकृतियों और लोकोपकारक कार्यों को करने के लिए अपनी कर्तव्य निष्ठा की भावना को ही सदा मुख्याधार बनाकर ही अपने सामाजिक जीवन में कार्यरत होता है तो ऐसी स्थिति तुष्टि दृढ़ व अडिग और स्थिर बनी रहती है। और उसके कार्य करने की गति और उसकी कार्य क्षमता में कभी भी कोई कमी और शिथिलता नहीं आ सकती।

वैसे ही लोक सेवा के कार्यकर्ताओं की समाज में मान प्रतिष्ठा तो सदैव बढ़ती ही रहती है। भले ही वह अपनी इस मान प्रतिष्ठा की आकांक्षा अपने मन में रखें अथवा न रखें। उनकी तुष्टि व मानसिक शान्ति स्थिर बनी रहती है। दूसरों से प्रशंसा व सम्मान के आकांक्षी पुरुष धीरे धीरे जब अपने सामाजिक कृत्यों का मुख्याधार इस लोकैषणा को बना लेते हैं। तो फिर उनका लक्ष्य यही बनता जाता है कि सामाजिक क्षेत्र में ऐसे ही कार्य किये जावें: जिन्हें लोग पसन्द करते हों और जो लोगों की रुचि के अनुकूल हों। कार्यों के औचित्य या अनौचित्य की भावना गौण बनती जाती है और प्रायः शास्त्र मर्यादाओं की भी उपेक्षा व अवहेलना होनी आरम्भ हो जाती है। जब समाज सेवकों की मानसिक भावनायें लोगों की रुचि अभिरुचि को ही अपनी सभी कृतियों का मुख्याधार बना लेती हैं। तब समाज सेवकों के कार्यों में सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् धीरे-धीरे समाप्त होना आरम्भ हो जाता है और ऐसी स्थिति के बन जाने पर प्रायः सर्वसाधारण वर्ग के लोगों के हितों की भी उपेक्षा आरम्भ हो जाती है!

लोकैषणा से विरक्त उन लोगों की स्थिति अत्यन्त गम्भीर और शोचनीय बन जाया करती है। जो अपने जीवन निर्वाह के लिए समाज पर ही निर्भर हुआ करते हैं। यदि वह दूसरों की शास्त्र विरुद्ध आकांक्षाओं की उपेक्षा करके अपने लोकोपकार के कार्यों में ही रत रहते हैं तो फिर उन्हें अपने जीवन निर्वाह के लिए मिलने वाली सहायता में कमी आ जाया करती है। अथवा वह सहायता मिलनी बन्द हो जाया करती है। तब ऐसी स्थिति में समाज सेवकों को समाज के कर्णधारों की उचित अनुचित सभी आकांक्षाओं की पूर्ति को प्राथमिकता देने के लिए बाध्य होना पड़ता है। इसी से उभय पक्षों का अर्थात् समूचे समाज और समाज सेवकों का उपकार होना आरम्भ हो जाया करता है।

लोकैषणा पर संयम करना साधकों के लिए वित्तैषणा और पुत्रैषणा से अपेक्षाकृत अधिक कठिन हुआ करता है। किन्तु समूचे समाज और समाज सेवकों का हित इसी में ही है क्योंकि इन तीनों एषणाओं का सर्वथा पूर्ण त्याग किया जावे। क्योंकि मानव जीवन के प्रायः सभी दुःखों का मूल कारण यही तीनों एषणायें ही मानी गई हैं।

—

धर्म का वास्तविक स्वरूप

ले.—श्री आचार्य सत्यव्रत जी शास्त्री विद्या भास्कर धामपुर

(6 अक्तूबर से आगे)

उन नियमों को जिनके सम्बन्ध में समय समय पर धर्म शास्त्रो ने प्राचीन तप पूत ऋषि-महर्षि मुनियो ने मानव के कर्त्तव्य रूप कर्मो के आधार पर बिना किसी भेदभाव के या हठ एव दुराग्रहो के सर्व साधारण मनुष्य मात्र के लिए किया है।

तप निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एकाग्रता से मन को समाहित करके जो द्वन्द्व, सुख दुःख, हानि-लाभ, मानापमान जय पराजय, शीतोष्णा आदि सहन किया जाता है उसे तप कहते हैं। सर्वांगीण इन्द्रिय सयम जितेन्द्रियता ही तप है।

1 मनसृश्चेन्द्रियाणा च एकाग्र्य परम तप।

तज्ज्याय सर्व धर्मेभ्य स हि धर्म पर स्मृत।

मन और इन्द्रियो की एकाग्रता ही परम तप है वह तप सब धर्मों मे श्रेष्ठ है और परम धर्म रूप है।

मनुष्य का कर्त्तव्य है।

2 दिवसन तत्कुर्यात येन रात्री सुख वसन।

अष्टमासन तत्कुर्यात् येन वर्षा सुख वसेत। 19

3 पूर्वे वयास तत्कुर्यात येन वृद्ध सुख वसत

यावज्जीवेन तत् कुर्यात येनामुत्र सुख वसत।

दिन भर मे वे काय करे जिससे रात्री मे सुख पूवक रह सके। आठ मास मे वह कार्य करे जिसस वर्षा ऋतु मे सुखपूर्वक रह। यौवनावस्था मे वे कार्य करे जिनके करने स वृद्धावस्था सुख पूर्वक व्यतीत हो सके कोई कष्ट न हो और जीवन पर्यन्त उन कर्त्तव्य कर्मों को करे जिससे पारलौकिक जीवन अगला जन्म सफल हो सके। ये सब तप तपस्या कर्त्तव्य पालन धर्म का ही विस्तार है।

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित

तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतोऽवधीत। मनु 9।5

अतिक्रमण किया हुआ उल्लघन किया हुआ धर्म मनुष्य के इष्टानिष्ट का नाश कर देता है अत धर्म कार्यों का उल्लघन नहीं करना चाहिए जो व्यक्ति धर्म का अपने कर्त्तव्य कर्मो का त्याग नहीं करता उनका उल्लघन नही करता, उनका पालन करता है। उनकी रक्षा करता है तब धर्म उसकी रक्षा करता है उसे पाप कर्मों से बचाता है। अत मनुष्य को धर्म का उल्लघन त्याग अर्थात् उसका हनन नहीं करना चाहिए क्योकि अतिक्रमण किया हुआ धर्म अर्थात् न किए हुए धर्माचरण कर्त्तव्य कर्म कभी हमारा भी नाश न कर दें। धर्म को वृष कहा है वृष का अर्थ है कामनाओ की इच्छाओ की वर्षा करने वाला, उनको पूर्ण करने वाला। यह शब्द उसका वरण करता है।

जो धर्म का वारण करता है उसको देवो ने विद्वान पुरुषो ने वृषल कहा है अत धर्म का अपने विहित कर्त्तव्य कर्मों का कदापि उल्लघन त्याग नही करना चाहिए =

वृषो हि भगवान धर्मस्तस्य य कुरुत ह्यलम।

वृषल त विदुर्देवा स्तस्याद्धर्म न लोपयेन। 1-8-16

धर्म ही एक मनुष्य का मित्र है जो मृत्यु के पश्चात भी उसके साथ अभीष्ट फल देने के लिए जाता है और सब साधन सामग्री उपकरण परिवार सम्पत्ति शरीर के साथ ही नष्ट हो जाती है अत इन सबकी अपेक्षा धर्माचरण ही मनुष्य के लिए नितान्त उपयोगी एव आवश्यक अनिवार्य कर्त्तव्य है।

एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयान्ति य।

शरीरेणसम नाश सर्वमन्यद्धिगच्छति

1-17 मनु

'धर्म के आठ अग नीति शास्त्र व समस्त शास्त्रो का सार'

प्राणाघाताान्निवृति —किसी के प्राणो का हनन न करें हत्या न करें।

2. पर धन हरणे सयमा दूसरे की धन सम्पत्ति का हरण करने मे सयम रखे।

3 सत्य वाक्यम् —सदा सत्य भाषण करें।

4 काले शक्त्या दानम्। समय पर यथा शक्ति दान दे। असहयों की सहायता करे।

5 युवति जन कथासु मूक भाव परेषाम्।

पराई बहु-बेटियो की कथाओं में सर्वथा मौन रहना उनकी आलोचना चर्चा न करना।

6 तृष्णा स्रोतो विभाग—तृष्णा की बढती परम्पराए नष्ट करना।

7 गुरुषुच विनय —अपनो से ज्येष्ठ माता पिता गुरु, आचार्य साधु सन्त, महात्मा पूज्य व्यक्तियों के प्रति नम्रता विनय रखना।

8 सर्व भूतानुकम्पा-समस्त प्राणी मात्र पर दया रखना सक्षेप में—आत्मना प्रति कूलानि परेषां न समाचरेत्।

जो व्यवहार अपने प्रतिकूल हो उसका दूसरों के प्रति आचरण न करें।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

5 तस्माज्जागरितेऽपि वैतथ्य स्मृतम् इति निगमनम (गौडपादकारिका पर शाकर भाष्य 2-4)

इस वास्ते जागरित दशा में भी दृश्यमान् भाव मिथ्या हैं (यह निगमन है)

शकराचार्य जी जागरित अवस्था के समस्त दृश्यो को मिथ्या सिद्ध करना चाहते हैं उन्होंने अपना पक्ष सिद्ध करने के लिए अरस्तु के तीन तर्क अवयवो के स्थान मे भारतीय तर्क शास्त्र के पचावयव अनुमान का आश्रय लिया है। दृश्यों का मिथ्यात्व सिद्ध करने क लिए उनका मुख्य हेतु दृश्यत्व हैं, मानो दृश्य स्वप्नावस्था मे अवश्य मिथ्या होते हैं अथवा दृश्यत्व और यथार्थत्व का ऐसा विरोध है कि वे एक अधिकरण मे रह नही सकते। जो दृश्य है वह अवश्य मिथ्या है अथवा जो यथार्थ है वह दृश्य नहीं हो सकता। इतना ही नहीं शकराचार्य जी एक पग आगे जाते प्रतीत होते हैं उनका भाव यह है कि जो दृश्य है वह केवल मिथ्या ही नहीं है वरन वह यथार्थ का भास भी नही करा सकता। दृश्यो के मिथ्यात्व की भावना हमे उनके विषय मे अत्यन्त सन्दिग्ध कर देती है वे अविश्वसनीय हैं और अतएव व्यर्थ समझकर छोड दिए जाने चाहिए।

इस तर्क के आधार पर शकराचार्य जी अपना सिद्धान्त स्थापित करते हैं। कि जीवात्मा जीवात्मा नही, वे ब्रह्म हैं। वे अनेक नाना नहीं, वरन् वह, एक, अद्वितीय हैं। वे नाना प्रतीत होते हैं और प्रतीति उनकी नानात्वप्रतीति के मिथ्यात्व का प्रमाण है। हमे दो आत्माओं में जो भेद प्रतीत होता है। वह काल्पनिक-मायिक है गुरुशिष्य, स्वामी सेवक, पिता-पुत्र, माता दुहिता, राजा प्रजा, पूर्ण-पूरक एक और अभिन्न है, अद्वितीय है। संसार के अन्य पदार्थों की भान्ति मैं और तू भी मिथ्या है। मैं तू, तू और तू, मैं है। उद्देश्य विधेय है, और विधेय उद्देश्य है।

ऐसे पौरस्त्य और पाश्चात्य अनेक दार्शनिक हैं जो शंकराचार्य जी के इस तर्क की तो प्रशसा करते हैं। किन्तु उन के सिद्धान्त से पूर्णतया सहमत नहीं हैं। द्वैत की गुत्थी को अनेक विचारकों ने अनेक प्रकार से और कुछ कुछ सफलता से सुलझाने का यत्न किया है। यह प्रश्न सरल नहीं है, इसने श्रेष्ठ मस्तिष्कों को कई बार भ्रमित किया है। केवल इस भेद का ही समाधान नहीं करना, वरन आत्मा के अन्तस्तल में परमात्मा के प्रति उठने वाली भक्ति भावनाओं को भी देखना है। विस्तार से कहें, तो निम्न-लिखित वाद इस विषय में प्रस्तुत किए जाते हैं—

1 आत्माओ को परमात्मा अपने में से उत्पन्न करता है।

2 परमात्मा आत्माओ को अभाव से उत्पन्न करता है।

3. आत्मा परमात्मा का अश है, जिस प्रकार जलबिन्दु समुद्र का अश है।

4 आत्मा अग्नि से चटकने वाली चिनारियो के समान है मूल में वे परमात्मा और आत्मा एक है।

5. आत्मा उस अनन्त आत्मा के सान्त परिणाम है, जिस प्रकार बुलबुलों समुद्र का।

6 आत्मा स्वप्न दृश्यो या इन्द्रजाल की भान्ति सर्वथा मायिक है।

—

आर्य समाज समाना का उत्सव

गत वर्षों की तरह इस बार भी आर्य समाज मन्दिर समाना का वार्षिक उत्सव बड़े हर्षोल्लास से 2-10-85 से 6-10-85 तक सम्पन्न हुआ। विशेष सामग्री द्वारा रोग निवारणार्थ आयोजित किए गए। यज्ञ की अध्यक्षता श्रद्धेय प वीरसेन जी वेदश्रमी इन्दौर (मध्य प्रदेश) ने की। और वेद प्रचार महात्मा प्रेमप्रकाश जी वानप्रस्थी पूरी की अध्यक्षता में हुआ,

श्रद्धेय डा, रामप्रकाश जी वेदालंकार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, पं. [illegible] शास्त्री एवं श्रद्धेय वीरेन्द्र जी वीर [illegible] के [illegible] एवं [illegible] ने [illegible] एवं आर्य समाज के प्रति श्रद्धा उत्पन्न कर दी। उपस्थिति बहुत ही सन्तोषजनक कामयाबी रही। विद्वानों की सेवा के इलावा आर्य समाज समाना द्वारा वेद प्रचारार्थ 500 रुपये की धन राशि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, जालन्धर को भेजी गई।

—[illegible] शर्मा

—

आर्य समाज के इतिहास में नया मोड़

आर्य समाज में गुरुकुल पार्टी और कालेज पार्टी का चिरकालीन विवाद अब समाप्त प्रायः समझना चाहिए। आर्य समाज (अनारकली) में आर्य प्रादेशिक सभा और डी. ए. वी. कालेज कमेटी की ओर से आयोजित गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के नव नियुक्त कुलाधिपति और कुलपति का भावपूर्ण अभिनन्दन इसी ऐतिहासिक मोड़ का संकेत है। समस्त आर्य जनता में इस अभिनन्दन समारोह ने नई आशा और नये उत्साह का संचार कर दिया है।

इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर सत्यकेतु विद्यालंकार के गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति बनने पर और वैदिक वाङ्मय के प्रसिद्ध विद्वान् डा. सत्यकाम वर्मा के कुलपति बनने पर यह अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया था गुरुकुल के पदाधिकारियों का कालेज पार्टी के द्वारा किया गया स्वागत सभी को चकित करने वाला था। आर्य समाज के सभी वर्ग परिस्थितियों के अनुसार अपने आपसी मतभेदों को भुलाकर एकजुट हो सकते हैं, यह इस बात की निशानी है। आर्य समाज जैसी प्रगतिशील संस्था से यह आशा करनी ही चाहिए।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सोमनाथ मरवाह ने गुरुकुल सम्बन्धी विवादों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 12 वर्ष पूर्व जो विवाद प्रारम्भ हुआ था, वह अब समाप्त हो रहा है। हमें खुशी है जिनका घर था, उन्हें उसका अधिकार मिल गया है।

मुख्य अतिथि सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने नये कुलाधिपति और कुलपति को चेतावनी देते हुए कहा कि आज पुष्प मालाओं से आपका स्वागत किया गया है, परन्तु इससे आपके मार्ग की बाधाएं कम नहीं होंगी। बहुत बड़ी जिम्मेवारी आप दोनो पर आ पड़ी है।

निवर्तमान कुलपति श्री बलभद्रकुमार हूजा ने यह आशा प्रकट की कि इन दोनों महानुभावों के आ जाने से अब सत्य का केतु फहरेगा और सत्य की कामना पूरी होगी। प्रो रत्नसिंह ने कहा कि गुरुकुल हमारी श्रद्धा का पात्र रहा है और समस्त आर्य जनता उसकी ओर बड़ी आशा भरी दृष्टि से देखती रही है। परन्तु पिछले कुछ वर्षों में गुरुकुल की जो दुर्दशा हुई है, उससे समस्त आर्य जनता अन्दर ही अन्दर खून के आंसू पी रही थी। हमे आशा करनी चाहिए कि गुरुकुल अब पुन: अपने प्राचीन वैभव को प्राप्त करेगा। प्रो. वेदव्रत ने गुरुकुल के सभी स्नातकों की ओर से नव-निर्वाचित पदाधिकारियों को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

अब यह आशा की जा रही है वैदिक वाङ्मय और प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनुसन्धान में गुरुकुल कांगडी और डी, ए वी. कालेज कमेटी परस्पर सहयोग से काम करेंगे। अन्य अनेक दिशाओं में भी परस्पर सहयोग की सम्भावना है। डी. ए, वी. के साधनों की बहुलता और गुरुकुलीय विद्वानों की लग्न के मिल जाने से आर्य जनता उत्साहित हो उठी है।

इसी समारोह में संस्कृत के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् और राष्ट्रपति से पुरस्कृत डा. सत्यव्रत शास्त्री का भी अभिनन्दन किया गया।

—रामनाथ सहगल मन्त्री

...

आर्य समाज समालखा मण्डी का उत्सव धूमधाम से सम्पन्न

आर्य समाज समालखा मण्डी जिला करनाल का उत्सव 5-6 अक्तूबर को धूमधाम से गुड़ मण्डी में मनाया गया। 5 अक्तूबर शनिवार को प्रात: 8 बजे यज्ञ के साथ उत्सव का समारम्भ हुआ। बाद दोपहर 2 बजे ध्वजारोहण हुआ तथा इस अवसर उपस्थित विशाल जन-समुदाय ने तीन वर्षों बाद इस आयोजन को सम्पन्नता तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले आर्य समाज समालखा मण्डी के प्रधान श्री रामेश्वर दयाल (काठ मण्डी वाले) का पुष्प मालाओ से लादकर हार्दिक अभिनन्दन किया। इसके बाद शोभा यात्रा आरम्भ हुई जिसका नेतृत्व ऊंट पर ओम् का ध्वज लिए आर्य वीर कर रहा था। उसके पीछे चार घोडियां पर चार आर्य वीर केसरिया पगड़ी बांधे तथा ओम् का झण्डा लिए चल रहे थे।

कन्या गुरुकुल मोरमाजरा गुरुकुल डिकाडला तथा निकटस्थ सभी ग्रामों के आर्यजन अपने अपने ट्रैक्टर लेकर महर्षि तथा वैदिक धर्म का नाद गुंजाते हुए इस शोभा यात्रा की शोभा बढ़ा रहे थे।

उत्सव में श्रद्धेय स्वामी रामेश्वरानन्द जी. डा, रामप्रकाश जी, आचार्य हरिकेशदत्त जी साहित्यरत्नकार, पं. रणवीर जी शास्त्री एम. ए, विद्या वाचस्पति आचार्य देवव्रत जी शास्त्री एम. ए. तथा आचार्य प्रद्युमन कुमार जी नैष्ठिक प्रभृति विद्वानों तथा चौ, नत्थासिंह, पं, ताराचन्द जी वैदिक तोप, महाशय चिरंजीलाल एव महाशय मुन्शीलाल एव बहन कलावती जी ने सत्य सनातन वैदिक धर्म के विभिन्न पहलुओं को अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा उपस्थित जन-समुदाय के सम्मुख स्पष्ट किया।

—

पटियाला में वेद प्रचार

इस वर्ष आर्य समाज चौक पटियाला की ओर से वेद सप्ताह 16 से 22 सितम्बर 85 तक श्रीमती कौशल्या बहिन जी के घर पर बड़ समारोह से मनाया गया। प्रातः-साय श्री पं. निरञ्जनदेवजी एव श्री ब्रह्मानन्द वेदालकार ने यजुर्वेद पारायण यज्ञ में प्रेम और निष्ठा से पूर्ण सहयोग दिया। यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति सैंकडो नर-नारियों की उपस्थिति में सुचारू रूप से सम्पन्न हुई। तदनन्तर श्री पं. निरञ्जनदेव जी ने इसी परिवार के यजमान बने दम्पत्तितों को स्नेह से आशीर्वाद दिया और उनकी सर्वतोमुखी उन्नति के लिए प्रभु से कामना की।

यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् परिवार की ओर से आयोजित ऋषि लगर में हजारों उपस्थित नर-नारियों ने सप्रेम भोजन किया।

रात्रि को प्रतिदिन 8 से 10 तक श्रीराम जी के सुमधुर भजनों और श्री पं. निरञ्जनदेव जी के सुमनोहर एवं शिक्षाप्रद प्रवचनों ने श्रोताओं को लाभान्वित किया। इस शुभावसर पर आर्य समाज चौक पटियाला की ओर से [illegible]00) रुपये वेद प्रचारार्थ दिए गए।

—मन्त्री आर्य समाज चौक पटियाला

—

दिन ढल जाएगा

ले.—श्री रमाकान्त दीक्षित भिवानी

पल, छिन में दिन ढल जाएगा।
मौसम भी आके छल जाएगा।
यदि तेरे मन से न फितरत गई,
ये प्राण यों ही निकल जाएगा।
दगा से हरदम छला जाएगा,
दहकती चिता में जल जाएगा।
यहां कोई तेरा होगा नहीं
हाथ दोस्ती का बदल जाएगा।
चलेगा अगर तू सही राह पर,
धीरे-धीरे सम्भल जाएगा।

बरनाला में वेद प्रचार

आर्य समाज कालेज रोड द्वारा गत दिनों बरनाला तथा भदलबड़ मे वेद प्रचार का आयोजन किया गया। प्रात: भदलबढ तथा सायं काल बरनाला में पारिवारिक सत्सग होते रहे। भदलबड़ में बस्ती के सभी नागरिकों ने इस प्रचार कार्य में बढ़-चढ़कर भाग लिया। एक दिन का उत्सव भी किया गया जिसमे श्री पं, रामनाथ जी शास्त्री सि, वि, भजनोपदेशक, कुमारी विमला छाबड़ा, डा.जगन्नाथ जोरी ने आर्य समाज के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर वहां लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला की ओर से राष्ट्रीय सेवा योजना समिति का एक दिन का कैम्प भी लगाया गया। बाद में प्रीति भोज का आयोजन किया गया। —राजकुमार

लुधियाना का पारिवारिक सत्संग

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना के तत्वावधान में 5-10-85 को श्रीमती सरोज नैय्यर (पिण्डी स्ट्रीट लुधियाना के निवास स्थान पर पारिवारिक सत्सग हुआ। इस अवसर पर आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल लुधियाना की अध्यापिका श्रीमति फूलां जी गुप्ता ने सत्सग की महिमा पर प्रभावशाली उपदेश दिया तथा श्रीमति सुदर्शना जी शर्मा तथा श्रीमती राजेश्वरी जी वर्मा के प्रभावशाली शास्त्री भजन हुए सत्संग का आस-पास की बहनों पर बड़ा अच्छा प्रभाव रहा।

आर्यसमाज फील्ड गज लुधियानामें वेद सप्ताह

आर्य समाज फील्ड गज लुधियाना मे गत दिनो वेद सप्ताह का बडी धूमधाम से प्रत एव साथ आयोजन हुआ श्री राम स्वरूप विज जी ने गीता पाठ द्वारा जनता को योगीराज श्री कृष्ण जी के बताए माग पर चलने की प्र रणा दी। माता कौशल्या जी ने ऋग्वेद के म त्रो की व्याख्या करते हु बताया कि मनु य को वेद माग पर चलते हुए अपना जीवन यापन करना चाहिए।

श्री प रामकुमार आय यज्ञ के ब्रह्मा थे उत्सव की कायवाही प्रधान श्री ओम प्रकाश कमालिया की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुई जिसमे आ य समाज फील्ड गज द्वारा सवश्री रामधन जी, डा सत्य भूषण वागिया, श्रीमती कमला आर्या महामन्त्री आय प्रतिनिधि सभा पजाब।

श्रीमती क ला रानी तथा श्री रामस्वरूप विज विग व दम्पति को उनकी आय समाज के प्रति सेवाओं के लिए स मानित किया गया।

—मन्त्री आय समाज फील्ड गज
लुधिय ना

दिल्ली में सत्यवती स्मारक भवन का उद्घाटन

आ य समाज मन्दिर ब्लाक सरोजिन नग नई दिल्ली में रतनचन्द आय प ब्लिक स्कल के सत्यवती स्मारक भवन का उ घाटन

दिनाक अक्तूबर 1985 को बड स म रो पूवक प्रत 8 बजे म म 12 बज तक सम्प न हुआ। कायवाही प्रात 8 बजे विशेष यज्ञ से आरम्भ हुई उसके पश्च त प्रात 10 से 11 बजे तक रतनचन्द आय प ब्लिक स्कल के छोटे छोट बच्चो ने बहुत आकषक वैदिक विचार ध रा मे ओत प्रोत सास्कृतिक कायक्रम प्रस्तत किया। इस अवसर पर ल ला रामगोपाल जी शालवाले प्रधान सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा, श्री धमदत्त जी प्रशासक नई दिल्ली नगर पालिका (मख्य अतिथि के रूम मे) श्री रतनचन्द जी सूद श्री रामलाल मलिक श्री हरबससिह जी खर प्रधान दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल डा धमपाल जी महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री रामनाथ सहगल मन्त्री आर्य सार्वदेशिक सभा, श्री राजेन्द्र दुर्गा मन्त्री आय केन्द्रीय सभा तथा दिल्ली की बहुत आर्य समाजों के अधिकारी एव सदस्य व श्री रतनचन्द जी सूद के परिवार के सभी लोग उपस्थित थे। सत्यवती स्मारक भवन का उदघाटन श्री जे आर सूद (सुपुत्र श्री रतनचन्द जी सूद) जी ने किया। इस भवन के 1 कमरो का निर्माण लगभग 5 लाख रुपये की लागत से श्री रतनचन्द जी सूद ने अपनी स्वर्गीय धम पत्नी श्रीमती सत्यवती जी सूद की स्मृति में कराया है।

—रोशनलाल गुप्त

जालन्धर में वेद प्रचार

आर्य समाज शास्त्री नगर जालन्धर मे 7 से 10 अक्तूबर को वेद प्रचार का आयोजन किया गया। जिसमें ब्रह्मचारी आय नरेश जी क प्रभावशाली प्रवचन हुए और श्री हरिश्चन्द्र जी, श्री महेन्द्र पाल जी, श्री रामनाथ जी शर्मा के मनोहर भजन होते रहे। इस कायक्रम का जनता पर बहुत प्रभाव पडा।

आय समाज मे विगत दिनो से प्रौढ स्त्री शिक्षा आरम्भ की गई है जिसमें लगभग 25 महिलाए पढ़ने आती हैं। श्रीमती कौशल्या जी बहुत अच्छे ढग से पढा रही हैं। इस कार्य में श्री आर्य बन्धुओं का सहयोग मिल रहा है।

29-30 नवम्बर तथा प्रथम दिसम्बर 1985 को आर्य समाज का वार्षिकोत्सव होना निश्चित हुआ है।

—रामकृपाल मन्त्री

शोक प्रस्ताव

आय समाज राणा प्रताप बाग दिल्ली के प्रधान श्री बसन्तराय जी शाही की धर्म पत्नी श्रीमती पुष्पा शाही का स्वर्गवास 29-9 85 को हो गया।

श्रीमती पुष्पा शाही आय समाज की एक सक्रिय एव कमठ कायकर्त्री थी। उनके असामयिक निधन से आय समाज राणा प्रताप बाग दिल्ली अपने एक निष्ठावान् एव योग्य सदस्य से वचित हो गया है।

आय समाज राणा प्रताप बाग, दिल्ली की कायकारिणी एव सदस्यगण इस दुखद अवसर पर परम पिता से दिवगत आत्मा की शान्ति एव सद्गति तथा शोक सन्तप्त परिवार को साहस प्रदान करने की प्राथना करते हैं।

सम्पादक ... मुद्रक प्रकाशक ... जालन्धर से मुद्रित ... सभा ... कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर

टेलीफोन 74250 रजि. नं. पी.जे.एल.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 26. 11 कार्तिक सम्वत् 2042 तदनुसार 27 अक्तूबर 1985 दयानन्द 161 अंक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

जीवात्मा तथा परमात्मा का स्वरूप

ले- —स्व. श्री गंगाप्रसाद जो उपाध्याय एम-ए

(गतांक से आगे)

'आत्माओं की उत्पत्ति' का वाद

साधारण बातचीत मे परमात्मा-परमेश्वर को जगत् का सृष्टा कहा जाता है। वेदान्त दर्शन का आरम्भ इस सूत्र से होता है।

अथातो ब्रह्मजिज्ञासा

(वे. 1।1।1)

अब यहां से ब्रह्म के जानने की इच्छा होती है और फिर ब्रह्म का यह लक्षण किया है—

जन्माद्यस्य यत:

(वे. 1।1।2)

ब्रह्म वह है जिससे जगत् की उत्पत्ति आदि कार्य होते हैं।

आद्य—आदि शब्द से स्थिति और संहृति—नाश—प्रलय का भी ग्रहण होता है। इस का तात्पर्य यह है कि ब्रह्म केवल सृष्टि ही नही करता, स्थिति और प्रलय का करने वाला भी वही है।

साधारण रीति से यहा ऐसी तर्कना किया करते हैं कि ब्रह्म समस्त ससार को रचने वाला है, अत. वह समस्त भाव पदार्थों का भी रचयिता है और चूंकि जीव या आत्मा भी संसार में है अत यह स्वाभाविक और तर्कनीति से सिद्ध होता है कि आत्माओं को भी ब्रह्म उत्पन्न करता है,। दार्शनिकों को छोड दीजिए, उनमें कदाचित मतभेद हो सब मजहबी (मतवादी) लोग इस विषय में एकमत हैं।। ब्रह्म के प्रति हमारी श्रद्धा-भक्ति हमें ऐसा विश्वास करने को बाधित करती है। कैसे एक सच्चा भक्त इसके विपरीत सोच सकता है? मजहब के रास्ते में ब्रह्म को अपना कर्ता न मानना नास्तिकता है। क्या उसने मेरी आंखें नहीं बनाई? हा बनाई हैं। क्या मेरे कान उसने निर्माण नही किए? हा किए हैं। क्या उसने मेरा दिमाग नही बनाया? हां बनाया है। तो इसी भान्ति क्या उसने मेरे आत्मा का निर्माण नहीं किया है? तुरन्त 'हा' में उत्तर देने का लोभ होता है। परन्तु ठहरो ठहरो !! इस विषय मे कुछ और भी सोचना है।

परमेश्वर निस्सन्देह सृष्टि का बनाने वाला है। क्या वह धारक पालक भी है। निस्सन्देह। क्योंकि स्थिति—पालन—धारण का अर्थ इसके सिवा और कुछ नहीं, कि जो उत्पन्न किया जाये, उसे जारी रखा जाए। क्या वह प्रलय भी करता है? प्रलय का अर्थ है 'मृत्यु' इस का अर्थ है विनाश। दूसरे शब्दों मे 'क्या ब्रह्म मारता भी है? जब हम ऐसा कहते हैं, हम पर एक प्रकार का भय सवार हो जाता है। 'ब्रह्म मारता है, ऐसा कहने मे हमें प्रसन्नता नहीं होती जैसा यह कहने में कि ब्रह्म सृष्टिकर्ता है।' सृष्टि करना अच्छा कार्य है। ब्रह्म अच्छा है। अत वह हमारा सृष्टिकर्ता—निर्माता है। मारना बुरा कार्य है। परमेश्वर और मारना! यह समस्या है। किन्तु जब सर्वशक्तिमान भगवान् सृष्टि की उत्पत्ति और पालना करते हैं, तब उसकी इच्छा का विघात या विरोध करने का बल किसमे है? या जिसे उसने पैदा किया है, उसे मारने की सामर्थ्य किसमें हैं? निर्दय तर्क हमें इस विश्वास के लिए बेबस कर देता है कि परमेश्वर ही मारता है: वह केवल सृष्टा—उत्पन्न करने वाला, पैदा करने वाला ही नहीं, मारने वाला भी है। जहा दूसरे मतवादियों का सिद्धान्त इस विषय में स्पष्ट नहीं है, वहां वेदान्तदर्शनकार व्यास जी ने आरम्भ में इस सिद्धान्त का स्पष्ट समर्थन किया है।

अस्तु! ब्रह्म संहर्त्ता—प्रलयकर्त्ता भी है, और समस्त ससार का। क्या वह मेरी आखों का नाश नहीं करता? हा करता है। क्या वह मेरे कानों का नाश नही करता? अवश्य करता है। तो क्या इसी भान्ति वह मेरे आत्मा का नाश नही करता? शरीर के अन्दर कपकपी की लहर दौड़ जाती है। मुझे 'हा' कहने मे सकोच होता है। समाधान इतना आसान नहीं, जितना कि उसके निर्मातृत्व—कर्तृत्व—सृष्टृत्व के सम्बन्ध में था। आत्माओ के अमर होने के सम्बन्ध में, प्राय: प्रत्येक मत के ग्रन्थो में. इतना लिखा गया है, और इसके समर्थन मे इतनी युक्तिया दी गई हैं कि 'आत्मा का मरना' स्वीकार करना बहुत कठिन है—

"तू मिट्टी से ही आया तू मिट्टी मे समाएगा"

ये वचन आत्मा के सम्बन्ध मे नहीं।

यदि आत्मा अमर है अर्थात् यह मरता नहीं, तो परमात्मा आत्मा का संहर्त्ता—मारने वाला न हुआ। वह किसी अन्य वस्तु को भले मार सकता हो, किन्तु आत्मा को नही मार सकता। जब हम परमेश्वर को ससार का सहर्त्ता—नाश करने वाला कहते हैं तो आत्मा या आत्माओ को ससार की परिभाषा से बाहर कर देना चाहिए परमेश्वर हमें नहीं मार सकता। कम से कम मारेगा नही वह इतना दयालु है कि वह हमे मारा जाता हुआ या मरता हुआ नही देख सकता। कम से कम वह हमें मारा जाता हुआ या मरता हुआ देखना नहीं चाहता। क्यों? वह बहुत दयालु और बहुत शक्तिमान् है। तब हम नहीं मरते, हम अमर हैं। हमारे उपकरण मरते हैं। हमारा शरीर मरता है। हम अपने भी बचे रहते हैं, जीते रहते हैं। हम तब भी बचे रहते हैं, जब वह सब जिसे हम अपना कहते हैं, नहीं रहता है।

तो, जहा तक आत्माओं का सम्बन्ध है, परमात्मा संहर्त्ता नही है। तो क्या वह आत्माओं का बनाने वाला है? कैसे और क्यो? अमर आत्मा अवश्य अजन्मा होने चाहिए। यह प्रकृति का नियम है कि जिसका आदि है, उस का अन्त भी होना चाहिए। जिसका आदि है, वह अनन्त—अमर नहीं हो सकता। और जो अमर है, उसका आदि नहीं हो सकता। सब अमर अनादि भी हैं। अमरता अनादिता का एक पक्ष है। यदि मैं अमर हूं, तो मैं अनादि भी अवश्य हूं जिसका अर्थ यह है कि मैं कभी उत्पन्न नही किया गया—। यह तो केवल शरीर है, जो उत्पन्न किया गया। केवल मेरा शरीर ही मरेगा। मैं न कभी उत्पन्न हुआ और न मरूंगा। मेरे जन्म का अर्थ अभाव से भाव मे आना नही, वरन् पूर्व से विद्यमान मेरे आत्मा का शरीर मे प्रवेश करना है, जो शरीर पहले नहीं था, और अब बनाया गया है। इसी तरह मेरी मृत्यु का अर्थ भी मेरा सर्वथा विनाश या अभाव नहीं, वरन् मेरे कभी न मरने वाले आत्मा का विनश्वर शरीर से वियोग है। जब मैं कहता हू कि परमेश्वर मेरा सृष्टा या बनाने वाला है तो इसका अर्थ केवल इतना ही है कि वह मेरे शरीर का रचयिता—निर्माता है।

जो लोग परमात्मा को आत्माओ का रचने वाला मानते हैं, उनका अभिप्राय निम्नलिखित मे से कोई एक हो सकता है ..

1 परमेश्वर [illegible] मे से आत्माओं को पैदा करता है।

2 परमेश्वर अभाव में से आत्माओं को पैदा करता है। पहली अवस्था में परमेश्वर [illegible] का निमित्त और उपादान [illegible] कारण है अर्थात् अभि-[illegible] है। दूसरी दशा मे वह [illegible] कारण है।

आज हम कहाँ खड़े हैं

ले—श्री सत्यदेव जी वेदालंकार म. नं. 145, गली न 4
सेंट्रल टाऊन जालन्धर

(20 अक्तूबर से आगे)

इस ही लेख में आगे डाक्टर साहिब ने अफसरों मिनिस्टरों और धनिक कुलो पतियो की दृष्टि मे हिन्दी माध्यम के स्कूलों के प्रति हेय दृष्टि का उल्लेख कर डी, ए वी प्रबन्ध कर्त्री सभा द्वारा अग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलो के खोलन की प्रवृत्ति और उनकी सफलता पर आनन्द प्रगट किया है। पर मूल प्रश्न फिर वही है। अग्रेजी माध्यम तथा सह-शिक्षा पर आधारित डी ए वी पब्लिक स्कूलो के साथ लगा डी ए वी शब्द कितना सार्थक है। इनमे दयानन्द और वैदिक शब्दो की क्या सार्थकता है। राष्ट्रीय या धार्मिक परम्पराओ के साथ इन सस्थाओ का क्या सम्बध है।

सक्षेप मे इतना ही कहा जा सकता है कि डी ए वी सस्थाओ के महत्व प्रभाव और विस्तार से कोई इनकार नही कर सकता। ये सस्थाए आर्य समाज की अमूल्य सम्पत्ति है। पर इनके द्वारा राष्ट्र के शिक्षा क्षत्र मे आर्य समाज का कोई मौलिक योगदान हो ऐसा नही सिद्ध होता।

वस्तुत भारत मे भिन्न 2 सम्प्रदायो द्वारा जो स्कूल और कालिज चलाए जा रहे हैं, उनमे लगभग एक ही ढाचे की शिक्षा दी जा रही है। इतना अन्तर अवश्य है कि प्रत्येक सम्प्रदाय अपनी 2 सस्था मे कुछ अपना धार्मिक वातावरण उत्पन्न करने का प्रयत्न करता है। मूल शिक्षा की पद्धति मे कोई विशेष परिवर्तन नही होता।

गुरुकुल आन्दोलन आर्य समाज के शिक्षा सम्बन्धी कार्य मे बडी धूम धाम से आया। ऐसा समझा जाता था कि गुरुकुलो मे एक मौलिक शिक्षा पद्धति का विकास होने जा रहा है जिसका आधार प्राचीन भारतीय वैदिक परम्पराए होगा। कुछ गुरुकुल ऐसे अवश्य हैं जिन्होने मुख्य रूप से प्राचीन शास्त्रो का अध्ययन ही अपना लक्ष्य बनाया है।

मुख्य रूप मे गुरुकुल की सस्थाए थी जिन्होने समन्वित शिक्षा पद्धति की स्थापना अर्थात भारतीय शास्त्र परम्परा के साथ योरपीय ज्ञान परम्परा का मिश्रण कर समन्वित शिक्षा के विकास का प्रयत्न किया। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ वेद, उपनिषद, दर्शन सस्कृत के साथ-साथ अग्रेजी, गणित इतिहास, भूगोल, विज्ञान तथा अन्य पाश्चात्य ज्ञान की शाखाओ को मिला कर अध्ययन का क्रम बनाया गया। इसके साथ जो गुरु शिष्य-तथा कुल की प्राचीन भारतीय भावना थी उसका व्यावहारिक रूप में प्रयोग किया गया।

इसके साथ कुछ आवान्तर परिवर्तन और किए गए। शिक्षा का माध्यम हिन्दी तथा प्रान्तीय भाषाओ को माना गया। बालको तथा बालिकाओं के लिए अलग अलग शिक्षा केन्द्र बनाए गए। शिक्षा केन्द्र का स्थान नगरो के वातावरण से दूर प्राकृतिक सम्पदा से पूर्ण स्थान चुने गए। अध्यापको तथा विद्यार्थियो के रहन सहन वस्त्र, दिनचर्या आदि सब को नियमित किया गया।

जैसा कि इस लेख के प्रारम्भ मे श्री माननीय सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार के लख के उदाहरण से स्पष्ट किया गया है कि इस सारी शिक्षा पद्धति की मूल-आत्मा गुरुकुलीय जीवन गुरु शिष्य तथा कुल इनकी भावना मे निहित थी।

इस दृष्टि से गुरुकुलो का प्रारम्भ एक क्रान्तिकारी मौलिक परीक्षण था। इसको महात्मा मुन्शीराम जैसे सशक्त प्राणवान आदर्शनिष्ठ तथा अनन्य ऋषि भक्त ही चला सकते थे। इसके साथ ही वर्तमान सदी के प्रारम्भ मे जो आर्य समाज का ऋषि दयानन्द तथा ऋषि के मार्ग के प्रति जो पूर्णतया समर्पित जीवन थे उनके कारण ही इन सस्थाओ का प्रारम्भ और विस्तार सम्भव हुआ।

गुरुकुल शिक्षा पद्धति के परीक्षण ने देश विदेश मे सर्वत्र शिक्षा सम्बन्धी विचारो को प्रभावित किया। आर्य समाज के अनुकरण मे अन्य धर्मों के लोगो ने भी अपनी सस्थाए प्रारम्भ की जो अब भी चल रही हैं। इस पद्धति के पक्ष विपक्ष मे अब विचार मन्थन हुआ।

अब भी जैसा कि माननीय प सत्यव्रत जी का विचार है शिक्षा का क्रम कोई भी हो गुरुकुल की मूल भावना का व्यापक रूप से प्रचार हो सकता है।

गुरुकुल कागड़ी जो कि गुरुकुलो का आदर्श था उसमे मूल गुरुकुल के रूप से जो आज गुरुकुल विश्वविद्यालय सरकार मान्य गुरुकुल यूनिवर्सिटी का रूप है। इसमे जमीन आसमान का अन्तर है। सरकार के लाखो रुपए के अनुदान ने गुरुकुल का कलेवर खूब समृद्ध करा दिया है, पर मूल भावना नष्ट प्राय हो गई है।

1985 मे गुरुकुल समारोह मे दो भाषण विस्तृत और विशेष हुए। एक भाषण दीक्षान्त समारोह पर स्वागत भाषण था गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा जी द्वारा दिया गया। दीक्षान्त भाषण पं सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार जी ने दिया। श्री हूजा जी ने भाषण में विश्वविद्यालय के वर्तमान समृद्ध रूप तथा उस के महत्वपूर्ण कार्यों का बहुत अच्छा परिचय दिया गया। उन्होने अपने स्वागत भाषण मे 1977 से 1985 के काल की भयकर अव्यवस्था का उल्लेख किया अपने पिछले 9 वर्ष के कार्य का वर्णन करते हुए इन वर्षों की महत्वपूर्ण प्रगतियों को स्पष्ट किया। शासन की ओर से राष्ट्रीय शिक्षा के निर्धारित नए मूल्यो का उल्लेख, गुरुकुल विश्वविद्यालय मे भारतीयता तथा आध्यात्मिकता लाने के प्रयत्न, अनुसधान कार्य गुरुकुल का पुरातत्व सग्रहालय, तथा इस सस्था द्वारा किए गए सेवा कार्य अध्यापक वर्ग की सुविधा तथा प्रगति के लिए किए गए प्रयत्न इत्यादि विश्वविद्यालय के जीवन के सभी अगो पर उन्होने अच्छा प्रकाश डाला।

गुरुकुल विश्वविद्यालय देश के अन्य विश्वविद्यालयो के सामने अभी प्रारम्भिक अवस्था मे है। उन विश्वविद्यालयो मे जो कार्य पद्धति विकसित हो चुकी है उस ही का अनुकरण मुख्य रूप से यहा किया जा रहा है कुछ अवान्तर क्रिया कलापो से जिनका उल्लेख श्री हूजा जी ने किया, मूल रूप मे अन्तर नही आता। जहा तक विश्वविद्यालय का सम्बन्ध है गुरुकुलीय आश्रम व्यवस्था नही है, गुरु शिष्य सम्पर्क का गुरुकुलीय रूप नही। श्री हूजा जी ने इसके सम्बध मे कुछ ब्यौरा नही दिया।

दीक्षान्त भाषण मान्य श्री सत्यदेव भारद्वाज विद्यालकार जी ने दिया। उसमे अधिकतर पुरानी भावनाओ पुराने आदर्शों का आकर्षण तथा भावपूर्ण वर्णन है। गुरुकुल विश्वविद्यालय के वर्तमान रूप के सम्बन्ध मे कोई चर्चा नही। उन्होने अपने भाषण मे राजा रघु की कवि कालिदास द्वारा वर्णित से विजय यात्रा का वर्णन किया। इसके द्वारा एक महान भारत विशाल रूप का चित्रण किया। पर वह सब वर्णन तो कवि कल्पना निर्मित है। कवि कालिदास के समय का भारत लगभग 2 सहस्र वर्ष पुराना और राजा रघु तो श्री रामचन्द्र जी के भी पूर्वज। हिन्दू गणना के अनुसार लाखो वर्ष का अन्तर, श्री रामचन्द्र के समय तो अयोध्या के राजा का राज्य बहुत छोटा था दक्षिण के देश भाग का तो परिचय भी बहुत कम था।

गुरुकुल शिक्षा के मूल रूप, गुरुकुल जीवन के मूल रूप तथा गुरुकुलीय आदर्शों का तो समय उल्लेखनीय स्वाभिमान किया जाता है। अभी-अभी श्री सत्यदेव भारद्वाज विद्यालकार जी के अतिरिक्त श्री प्रियव्रत विद्यावाचस्पति जी के लेख भी प्रकाशित हुए हैं। 14 4-85 के आर्य मर्यादा में ऋषि दयानन्द का शिक्षा दर्शन लेख आया है। इसमे गुरु-शिष्य सम्बन्ध से लेकर ब्रह्मचर्य की विस्तृत पाठ विधि तक सबका उल्लेख है, इस शिक्षा से उत्पन्न बालक-बालिकाओं के उज्ज्वल जीवन का सुन्दर रूप भी है। मान्य विद्यावाचस्पति जी ने भारत के शिक्षा मन्त्री श्री के सी पन्त जी को भी भारत की नई शिक्षा नीति के सम्बन्ध मे अपने सुझाव भेजे हैं। आर्य मर्यादा 26-3 85 इसमें गुरुकुलीय जीवन से आदर्श, सह-शिक्षा का विरोध सस्कृत का शिक्षा सम्बन्धी महत्व आदि बहुत उपयोगी विचार है। ऐसे ही प्राय प्रतिदिन आर्य विद्वान प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा तथा शास्त्रीय पठन पाठन पद्धति पर अपने विचार देते रहते हैं।

अब वास्तविक स्थिति देखिए। 1985 के गुरुकुल उत्सव पर श्री सत्यदेव भारद्वाज विद्यालकार जी के दीक्षान्त भाषण के बाद नए स्नातको का पुराने से परिचय कराने का अवसर आया तो पता लगा कि नव स्नातको में से कोई भी गुरुकुल मे नियमित रूप से नही रहा, विश्वविद्यालय की कक्षाओ में भी वह प्राय उपस्थित नही रहे। अत नव-स्नातको की गुरुकुल और गुरुकुल के स्नातकों में कोई रुचि नही। तब यह कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया।

वस्तुत गुरुकुल विद्यालय नाम से प्रसिद्ध पुरानी सस्था अब चार खण्डो में विभाजित है। गुरुकुल विश्वविद्यालय आयुर्वेद महाविद्यालय तथा फार्मेसी। इनमे से केवल गुरुकुल ही लगभग 250 विद्यार्थियो की सस्था थोड़ा बहुत पुराने ढाचे पर है। लाखो रुपए के सरकारी अनुदान से प्रज्ज्वलित अन्य सस्थाओ का गुरुकुल जीवन से कोई सम्बन्ध नही।

एक और विचारणीय बात यह है कि जब आर्य समाज ही गुरुकुल परीक्षण से पृथक हो गया और इतना ही नहीं अग्रेजी माध्यम से सह शिक्षा रूप सस्थाओ को सोत्साह चला रहा है तो आर्य समाज के विद्वान प्रचारक प्राचीन गुरुकुलीय आदर्शों की बात बार-बार याद कराए तो क्या यह उपयुक्त होगा।

आर्य समाज के शिक्षा शास्त्रियों तथा विद्वानो मे भी, प्रारम्भ मे भी और अब भी शिक्षा पद्धति के सम्बन्ध में बहुत मतभेद रहा। एक ओर गुरुकुल ज्वालापुर, गुरुकुल चित्तौड तथा स्वामी ओमानन्द जी आदि के हरियाणा के गुरुकुल थे। इनमे संस्कृत शिक्षा का प्राधान्य था, दूसरी ओर कांगडी के गुरुकुल से लेकर सूपा (गुजरात) तथा वृन्दावन (उत्तर प्रदेश) के गुरुकुल थे।

(क्रमश)

सम्पादकीय—

आर्य समाज पर भ्रष्टाचार की छाया—5

मैं जिस स्थिति पर पिछले चार-पांच वर्षों से पर्दा डालता रहा हूं, अब स्वयं ही उस पर्दे को उठाने लगा हूं। मैं समझता था कि जिनके दरबार में, मैं समय 2 पर अपनी याचिका लेकर जाता था वह उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे और आर्य समाज में जो भ्रष्टाचार प्रारम्भ हुआ है उसे रोकने के लिए कुछ न कुछ अवश्य करेंगे। परन्तु हुआ इससे बिल्कुल उलट। जिनसे यह आशा की जाती थी कि वह आर्य समाज के पवित्र नाम को बट्टा नहीं लगने देंगे। उन्होंने ही मेरे और मेरे सहयोगियों के विरुद्ध एक अभियान प्रारम्भ कर दिया जो चाहते थे कि आर्य समाज में यह बीमारी न फैले। मैंने इस विषय में इस समय तक किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं लिया था, केवल इशारा कर रहा था, इस विश्वास से कि एक न एक दिन मेरी सुनी जाएगी और आर्य समाज के कर्णधार जिस राह पर चल रहे हैं उसे बदल लेंगे अपने और आर्य समाज दोनों के यश पर कोई धब्बा न लगने देंगे। परन्तु अब ऊपर से ही एक ऐसा अभियान शुरू हुआ है जिसने मुझे विवश कर दिया कि मैं भी अपनी जुबान खोल दूं। एक बात मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मेरा किसी भी व्यक्ति से व्यक्तिगत झगड़ा नहीं, मैं तो इस उद्देश्य से यह सब कुछ लिख रहा हूं कि आर्य समाज की पवित्रता और स्वच्छता पर कोई आंच न आने पाए। आज बड़े दुख के साथ मुझे यह कहना पड़ रहा है कि —

'जी चाहता है तोड़ दूं शीशा फरेब का" ?

मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री का आभारी हूं कि उन्होंने मुझे यह अवसर प्रदान किया है कि जिस पर्दे को हटाने का अभी मेरे में सामर्थ्य नहीं था वह उन्होंने मुझे दे दिया है। इससे हम यह भी अनुमान लगा सकते हैं कि सार्वदेशिक सभा किस स्तर पर आ गई है।

श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री पिछले दिनों बीमार होकर इलाज के लिए हरिद्वार गए थे। गुरुकुल कांगड़ी के पास ही एक श्रद्धानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय बनाया गया है। शास्त्री जी का वहां इलाज होता रहा है और वहां से वापिस आकर उन्होंने उस चिकित्सालय के विषय में एक लेख भी लिखा है जिसे मैं झूठ का पुलिन्दा कहता हूं और मुझे इस बात का अत्यन्त दुख है कि सार्वदेशिक सभा का मन्त्री एक ढिंढोरची का काम कर रहा है। वह यदि यह कहते कि वह बहुत अच्छा अस्पताल है वहां के डाक्टर बड़े योग्य हैं और पूरी नम्रता से रोगियों का इलाज करते हैं तो इस पर किसी को आपत्ति न होती अपितु हमें प्रसन्नता होती कि हमारी एक संस्था में इतना अच्छा काम हो रहा है। परन्तु शास्त्री जी ने अपने लेख में एक व्यक्ति के चमत्कार का वर्णन ही नहीं किया है और साथ ही एक बहुत बड़ा झूठ बोला है जो उन्हें शोभा नहीं देता। जब यह अस्पताल तैयार हो गया तो प्रश्न किया गया कि इसका उद्घाटन कौन करे शास्त्री जी लिखते हैं कि किसी ने कहा कि कोई नेता ढूंढा जाए या कोई मिनिस्टर ढूंढा जाए। लेकिन डाक्टर हरिप्रकाश ने कहा कि इसके लिए किसी मन्त्री या नेता की आवश्यकता नहीं। स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसा फक्कड़ और त्यागी आर्य समाज का नेता ही इसका उद्घाटन करेगा। उनकी दृष्टि लाला रामगोपाल जी शालवाले पर पड़ी।

आर्य समाज में आज कौन 2 नेता फक्कड़ हैं कौन नहीं, अभी मैं इस विवाद में पड़ना नहीं चाहता परन्तु जो कुछ श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने लिखा है उसके विषय में वास्तविक स्थिति क्या थी यह आर्य जनता को बताना चाहता हूं। जब अस्पताल तैयार हो गया और यह प्रश्न पैदा हुआ कि इसका उद्घाटन कौन करे तो राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी से प्रार्थना की गई कि वह इसका उद्घाटन करें। वह मान भी गए थे। निमन्त्रण पत्र जिन लोगों को भेजे गए थे, उनमें यही लिखा गया था कि श्री ज्ञानी जैलसिंह जी इसका उद्घाटन करेंगे। ज्वालापुर और सारे हरिद्वार में बड़े 2 इश्तहार भी लगा दिए गए कि राष्ट्रपति इसका उद्घाटन करेंगे। परन्तु अन्तिम समय में उन्होंने इन्कार कर दिया, उस समय तक उन्हें पता चल चुका था कि यह अस्पताल कैसे बना है। इस पर आर्य समाज के सर्वोच्च नेता को उद्घाटन के लिए बुलाया गया और उन्होंने कहा, घोषणा की कि उन्होंने इस अस्पताल के विषय में सारी जानकारी कर ली है। इसमें एक पैसे का भी घपला नहीं है। लेकिन गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी की एक नहीं चार आडिट रिपोर्ट यह कह रही हैं कि इस अस्पताल में गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी का 15 लाख रुपया लगा है और उसका कोई हिसाब-किताब नहीं मिल रहा। श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने लिखा कि 'लोग चर्चा ही करते रहे कि श्री हरिप्रकाश ने लाखों रुपया खा लिया।

मैं शास्त्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि लोगों ने नहीं कहा, चार आडिटर महानुभावों की रिपोर्टें कह रही हैं। भारत सरकार के आडिटर जनरल की रिपोर्ट कह रही है। मैं पिछले तीन वर्षों से इनकी तरफ आर्य समाज के नेताओं का ध्यान दिलाता रहा हूं कि जरा इन रिपोर्टों को पढ़ कर देख लो कि इन में क्या लिखा है लेकिन कोई उसके लिए तैयार नहीं हुआ और अब सार्वदेशिक सभा के मन्त्री महोदय ने एक बहुत बड़ा प्रमाण पत्र दे दिया है। सार्वदेशिक सभा के नेता जिस प्रकार से उन व्यक्तियों का पक्ष ले रहे हैं जो इस भ्रष्टाचार में सिर से पैर तक फंसे हुए हैं। तो यह सब कुछ क्या हो रहा है। इसके पीछे क्या है ? यह एक अत्यन्त ही निराशाजनक और दुखद नाटक है जिसका पटाक्षेप करने से मैं अब भी रुक रहा हूं। यदि सार्वदेशिक सभा के अधिकारी इस सारी घटना को किसी निष्पक्ष व्यक्ति के सामने रख कर उसका निर्णय लेने को तैयार हों और जो व्यक्ति इस भ्रष्टाचार के लिए जिम्मेदार हों और उनके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करने को तैयार हों तो मैं यह कहानी यहीं समाप्त कर दूंगा नहीं तो मैंने आर्य जनता के दरबार में अपनी अपील पेश कर दी है। इसके बाद दो ही रास्ते रह जाते हैं। या तो मुझे दोषी ठहराया जाए कि मैं अकारण ही कुछ व्यक्तियों को बदनाम कर रहा हूं और मुझे उसकी सजा दी जाए या उन व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाही की जाए। जिन्होंने गुरुकुल और गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के रुपये में घपला किया है।

आर्य समाज की एक 2 कौड़ी जनता के गाढ़े पसीने की कमाई से आती है। आर्य समाज को जनता में जो मान और प्रतिष्ठा मिली थी वह केवल इसलिए कि यहां किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार को सहन नहीं किया जाता। आज आर्य समाज की सारी कमाई पर मिट्टी डाली जा रही है। यह नहीं होने दिया जाएगा आशा है कि सार्वदेशिक सभा के अधिकारी भविष्य में कोई वक्तव्य देने से पहले सारी स्थिति पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर लिया करेंगे। मेरा उद्देश्य केवल यह है कि आज जबकि हमारे प्रधानमन्त्री जी भी यह कह रहे हैं कि देश में भ्रष्टाचार समाप्त होना चाहिए। आर्य समाज में इसे फिर क्यों पनपने दिया जाए।

मैंने ऊपर जो प्रस्ताव रखा है यदि सार्वदेशिक सभा के अधिकारी इसे स्वीकार करने को तैयार हों और गुरुकुल में तथा गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में पिछले चार पांच वर्षों में जो कुछ हुआ है किसी निष्पक्ष व्यक्ति द्वारा उसकी जांच कराने को तैयार हों तो मैं इस विषय में अपनी लेखनी यहीं बन्द कर दूंगा और यदि मुझे इसका कोई सन्तोषजनक उत्तर न मिला तो सारी कहानी आर्य जनता के सामने रख दूंगा और यदि वह निराधार और असत्य प्रमाणित हो जाए तो मुझे जो भी सजा दी जाएगी मैं सहर्ष उसे स्वीकार करूंगा।

—वीरेन्द्र

आर्य मर्यादा के ऋषि निर्वाण अंक के लिए आर्डर भेजें

दीपावली के अवसर पर आर्य मर्यादा का ऋषि निर्वाण अंक प्रकाशित हो रहा है। जिसकी तैयारी आरम्भ हो गई है। हमने पहले भी आर्य बन्धुओं से प्रार्थना की थी कि इस अंक के लिए इस पत्रिका की सहायता के लिए विज्ञापन भेजें। विज्ञापन व्यावसायिक भी भेजे जा सकते हैं तथा अपने किसी दिवंगत आत्मीय की स्मृति में भी भेजे जा सकते हैं। इसलिए आप बन्धु शीघ्र से शीघ्र विज्ञापन भेज कर तथा अधिक से अधिक इस अंक के आर्डर भेज कर सभा को अपना सहयोग दें।

लेखक महानुभाव अपनी कविता तथा लेख भेज कर हमें अपना सहयोग दें। पिछले अंकों की तरह यह अंक भी बड़ा प्रभावशाली होगा।

—कमला आर्या सभा महामन्त्री

साम्प्रदायिक दंगे क्यों होते हैं

ले.—श्री विशन स्वरूप गोयल

हमारे देश मे प्राय साम्प्रदायिक दगों के नाम पर जो मुस्लिम हिन्दू दगे होते है उन्हें रोकने के लिए स्वतन्त्रता के बाद के इन 30 सालो मे हमारी सरकार तथा देश के अन्य राजनीतिक नेताओ ने बहुत प्रयास किए हैं मगर इन्हें आज तक नही रोका जा सका है। यदि हमारे सत्ताधारी नेता एव विपक्षी दलों के नेताओ ने इन दगो की गहराई मे जाने का प्रयत्न किया होता तो सम्भवत उन्हें इन दगो के होने के कारणो की जानकारी मिल जाती कि इन दगो के पीछे कौन भावना काम कर रही है। जब किसी रोग या समस्या के कारणो का पता लग जाता है तो उसका समाधान भी सरलता से प्राप्त किया जा सकता है।

किन्तु यह हमारे देश का दुर्भाग्य ही रहा है कि 1947 के बटवारे की शासन के बाद जो स्वतन्त्रता हमे मिली उसकी सत्ता की बागडोर जिन लोगो ने सम्भाली उन्होने आज तक इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उनका ध्यान तो मात्र किसी न किसी प्रकार चुनाव जीत कर सत्ता की कुर्सी पर कब्जा करने की ओर ही है। इन सत्ताधारी लोगो की देखा-देखी अन्य विपक्षी दलो के तथा नेताओ ने भी इसी कुर्सी की दौड मे शामिल होना आरम्भ कर दिया और इन दगो की उपेक्षा होती रही। इस प्रकार देश के मुस्लिम हिन्दू दगो की ओर किसी देश के उत्तरदायी व्यक्ति ने यह ध्यान नही दिया कि ये दगे अब आजादी के बाद क्यो होते हैं। अग्रेजो के शासनकाल मे तो हम सभी विदेशी शासको को दोषी ठहराते थे कि अग्रेज ही मुसलमानो और हिन्दुओ मे दगे इसलिए कराते हैं कि उनका शासन ठीक ढग से चलता रहे और मुस्लिम हिन्दू समठित न हो सकें किन्तु अब तो हमारी अपनी सरकार है अब ऐसा क्यो होता है। यह तो ठीक है कि सरकार की नीतिया भी इन दगो के लिए उत्तरदायी हैं किन्तु इसके पीछे एक मनोवृत्ति जो काम कर रही है हम इस लेख मे उसी पर विचार करेंगे।

इतिहास इस बात का गवाह है कि जब इस्लाम का अभ्युदय नही हुआ था उस समय परस्पर लोगो मे सम्पत्ति तथा राज आदि के मामलो को लेकर तो झगडे होते रहते थे किन्तु मजहबी आधार पर दगे या मार काट नही होती थी। इन मजहबी दगो की शुरूआत तो इस्लाम धर्म का जब संस्थापक हजरत मुहम्मद ने मक्का मे किया और कुरान शरीफ जिसे मुसलमान उतरी हुई मानते है लिखी गयी और सभी इस्लाम के अनुयाईयो को उसके आदेशो पर चलने को कहा गया तब इन मुस्लिम हिन्दू अथवा मुस्लिम तथा गैर मुस्लिम जगत् मे मजहब के आधार पर दगे होने आरम्भ हो गए। इसी आधार पर मुस्लिम लीग के बडे नेता और पाकिस्तान के सस्थापक श्री मुहम्मद अली जिन्हा ने एक बार लन्दन मे यह स्वीकार करते हुए कहा था कि जब तक दुनिया मे कुरान रहेगी तब तक दुनिया मे शान्ति स्थापित होना सम्भव नहीं है। इसका मतलब यह हुआ कि उन्होने कुरान मे ऐसी बातें देखीं या पढ़ी थीं जिनसे इन्हें यह आभास हुआ। इस तरह कुरान शरीफ ही शायद इन मजहबी दगो के लिए अधिक जिम्मेदार है।

अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर कुरान शरीफ मे ऐसी क्या बातें लिखी गयी हैं जिनके कारण कुरान शरीफ लिखे जाने के बाद ही इन दगो का आरम्भ हुआ। ऐसा कुरान मे क्या लिखा गया है जिससे कुरान के मानने वाले इस्लाम के लोग आक्रान्ता होकर दगे पैदा करते हैं। वास्तव मे बात यह है कि कुरान शरीफ का अध्ययन करने से यह पता लगता है कि कुरान मे कुल 114 सूरा और 30 पारे हैं तथा उसमे 6071 आयतें हैं। इन आयतो मे से लगभग 60 प्रतिशत आयतें ऐसी हैं जिनमे मुसलमानो को शिक्षा दी गयी है कि वे समस्त विश्व के गैर मुस्लिम जगत् को या तो मुसलमान बनाकर अथवा उन्हे समाप्त कर सारी दुनिया को दारूल इस्लाम मे बदल दो अर्थात् समस्त विश्व मे इस्लामी हुकूमत हो और समस्त विश्व मुसलमान ही हो। अन्य कोई मजहब सम्प्रदाय या जाति दुनिया मे न रहे। कुरान शरीफ मे यह स्पष्ट लिखा गया है कि जो अल्लाह कुरान और अन्तिम दिन अर्थात् क्यामत के दिन पर ईमान नही लाते और इन्कार की नीति अपनाते हैं उन्हे तब तक मारो जब तक वे अल्लाह और कुरान पर ईमान न ले आए यदि वे ऐसा न करें और इन्कार की नीति अपनाएं तो उन्हें समाप्त कर दो। उनको कत्ल कर दो, फांसी पर चढ़ा दो, हाथ-पैर विपरीत दिशाओं से काट दो। गरदने काटो अथवा उसे देश से निकाला दो। यही नहीं कुरान शरीफ मे इससे भी आगे यह लिखा है कि जो अल्लाह कुरान और अन्तिम दिन पर ईमान लाने पर इन्कार करने की नीति अपनाते हैं वे कुफ्र करते हैं अरबी के कुफ्र शब्द का अर्थ इन्कार करना ही है और कुफ्र करने वाले को काफिर कहा गया है काफिरो के लिए अल्लाह की फिटकार है और उन्हे जहन्नुम अर्थात् नरक की भडकती आग में झोक देने की सजा का उल्लेख किया गया है। कुरान मे यह भी लिखा गया है कि यदि तुम्हारे बाप और भाई भी कुफ्र की नीति अपनाते हैं तो तुम अर्थात् ईमान लाने वाले मुसलमानो उन्हे अपना साथी या मित्र कदापि न बनाओ। यदि तुम मे से कोई भी उन्हें अपना साथी या मित्र बनाएगा तो उसकी गिनती भी काफिरो मे ही की जाएगी।

मध्य प्रदेश के बेतिया शहर के इमाम श्री खुर्शीद आलम खा जो अब हिन्दू बन गए हैं उनके शब्दो मे इस प्रकार कहा गया है, हजरत मुहम्मद ने कहा था कि हे ईमान लाने वालो अगर तुम जन्नत अर्थात् स्वर्ग और जन्नत की हूरें प्राप्त करना चाहते हो तो सब से पहले हिन्दुस्तान को विजय करो तुम्हारा सब से पहला काम यही है और यही पुण्य का काम है।

ऊपर जो कुरान शरीफ की आयतो के बारे मे उल्लेख किया गया है कि गैर मुस्लिम जगत् को मुसलमान बनाने के लिए हर तरह का मार्ग अपनाओ उसकी पुष्टि के लिए नमूने के तौर पर कुरान की कुछ आयतो को यहा हवाले के रूप मे प्रस्तुत करना आवश्यक प्रतीत होता है। जिस कुरान शरीफ मे से आयतो का निम्न हिन्दी अनुवाद किया गया है उसका उर्दू अनुवाद सैय्यद अबुल आला मौदूदी और हिन्दी अनुवाद श्रीमान् फारूख खा ने किया है और यह कुरान शरीफ मर्कजी मक्तबा इस्लाम, 1353 बाजार चितली कब्र द्वारा प्रकाशित की गयी है। कुरान शरीफ की नमूने के तौर पर कुछ आयतो का हिन्दी का अनुवाद निम्न प्रकार है—

सूरा-2 अलबकरा पारा 1 आयत सख्या 98 जो लोग अल्लाह और उसके फरिश्तो, उसके रसूलो, जिबरील और मिकाइल के दुश्मन हैं, अल्लाह उन काफिरो का दुश्मन है।

इसी सूरा और पारा की आयत 190-191-192, तुम अल्लाह के मार्ग में उन से लड़ो जो तुम से लडते हैं। जहा भी तुम्हारी मुठभेड उनसे हो उनसे लड़ो। उन्हें निकालो वहा से जहां से उन्होंने तुम्हें निकाला है। यदि वे तुमसे मस्जिद के पास भी लड़ते हुए आयें न आयें तो तुम भी उनसे लड़ो और उन्हें जिस जगह मिलें मारो ऐसे काफिरों की यही सजा है। तुम इनसे लड़ते रहो यहां तक कि वे शेष न रहें या वे अल्लाह के आदेश को मानें अर्थात् जब तक वे मुसलमान बनने को राजी न हो जायें।

इसी सूरे की आयत 221 तुम मुशरिक अर्थात् मूर्तिपूजक औरतों से तब तक शादी न करना जब तक वे ईमान न ले आयें अर्थात् मुसलमान न बन जायें। क्योंकि ईमान लाने वाली दासी भी मुशरिक अर्थात् मूर्तिपूजक कुलीन औरत से उत्तम हैं। और अपनी स्त्रियो का विवाह मुशरिको से कदापि न करना जब तक वे ईमान न ले आए क्योंकि एक आस्थावान अर्थात् ईमान लाने वाला मुसलमान गुलाम भी किसी मुशरिक भद्र पुरुष से उत्तम है। ये लोग तुम्हे आग की ओर बुलाते हैं।

सूरा आले-इमरान पारा 3 आयत 10-11-12 जिन लोगो ने कुफ्र अर्थात् इन्कार की नीति अपनाई है, उन्हे अल्लाह के मुकाबले मे न उनका धन कुछ काम देगा, न सन्तान। वे नरक का ईंधन बन कर रहेंगे। उनका परिणाम वैसा ही होगा जैसा फिरऔन के साथियो और उन से पहले के अवज्ञाकारियो अर्थात इनकार करने वालो का हो चुका है कि अल्लाह की निशानियो को उन्होने झुठलाया है। परिणाम यह है कि अल्लाह ने उन के गुनाहो पर उन्हे पकड लिया और सत्य यह है कि अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है। अत हे नबी, जिन लोगो ने तुम्हारे आमन्त्रण अर्थात् मुसलमान बनने के आमन्त्रण को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया है, उनसे कह दो, कि निकट है वह समय जब तुम नीचा होकर रहोगे और जहन्नुम अर्थात नरक की ओर हाके जाओगे जो बहुत ही बुरा ठिकाना है।

इसी सूरा की आयत सख्या 19 अल्लाह के निकट धर्म से हट कर जो विभिन्न मार्ग उन लोगो ने ग्रहण किये हैं जिन्हें किताब दी गई थी। उनको इस कार्य-नीति का कोई कारण इसके सिवाय नही था कि उन्होने ज्ञान आ जाने के पश्चात आपस मे एक दूसरे पर ज्यादती करने के लिए ऐसा किया और जो कोई अल्लाह के आदेश और मार्गदर्शन के अनुपालन से इनकार इनकार कर दे, अल्लाह को उससे हिसाब लेते कुछ देर नहीं लगती।

(क्रमश)

व्याख्यान माला—

धर्म से ही सुख को पाया जाता है

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स अधिष्ठाता गुरुकुल करतारपुर

(15 सितम्बर से आगे)

धर्मं सर्व सुखकरो हितकरो धर्मं बुधाश्चिन्वते,
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुख धर्माय तस्मै नमः।
धर्मान्नास्त्यपर सुहृद्भवभृतां धर्मोहि द्रव्य सता धर्मे,
चित्तमह दधे प्रतिदिन हे धर्मं मा पालय ।54।

जो धर्म सब प्रकार से सुखकर तथा हितकर है विद्वान लोग जिस धर्म को एकत्र करते हैं, मगलकारी सुख जिस धम से ही प्राप्त होता है ऐसे धम को नमस्कार है। क्योकि धम को छोडकर ससार मे मनुष्यो का और कोई मित्र नही धम ही सज्जनो का धन है इसलिए हे धम ? मैं नित्य तुझे ही अपने चित्त से धारण करता हू। अत तू मेरी रक्षा कर।

सक्षेपात्कथ्यते धर्मोजना कि विस्तारण व ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ।55।

हे मनुष्यो ! तुम्हारे हिताथ सक्षप से धम का उपदेश किया जाता है । अधिक विस्तार से क्या लाभ ? यदि पुण्य चाहते हो तो उसके लिए परोपकार करना योग्य है तथा पाप सञ्चय के लिए तो दूसरे प्राणियो को पीडा देना मात्र ही पर्याप्त है।

आरम्भो न्याय युक्तो य स हि धम इति स्मृत
अनाचारस्त्व धर्मेति हृदेतच्छिष्टानुशासम् ।56।

न्याय युक्त काय जो भी होता है वह ही धम माना गया है अनाचार अधर्म है यही सज्जनो (महात्माओ) का उपदेश है।

इज्याऽध्ययनदानानि तप सत्य क्षमादम ।
अलोभ इति मार्गोऽय धमस्याष्ट विध स्मृत ।57।

यज्ञ, अध्ययन दान तप सत्य क्षमा इन्द्रिय दमन और लोभ न करना धम का यह आठ प्रकार का मार्ग कहा गया है।

श्रूयता धमसवस्व श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मन प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत् ।58।

धर्म का सवस्व सुनिए और सुनकर धारण कीजिए जो यह पद है कि अपने प्रतिकूल व्यवहार दूसरो से न करें। अर्थात जो व्यवहार आप अपने साथ कराने को तैयार नहीं वह दूसरो के साथ भी मत कर।

यथा यथा हि पुरुष कल्याणेकुरुते मन ।
तथा तथास्य सर्वार्था सिध्यन्ते नात्र सशय ।59।

जैसे जैसे ही पुरुष अपने मन को कल्याण में लगाता है वैसे वैसे ही इसके सब मनोरथ सिद्ध होते हैं इसमें सशय नही।

सर्वेषा य सुहृन्नित्य सर्वेषाम्यहिते रत ।
कर्मणा मनसा वाचा स धर्मं वेद नेतर ।60।

जो मनुष्य सदा सब मे मित्र भाव रखता है तथा मन, वचन और कर्म से जो सदा सब के हित में लगा रहता है वही धर्म को जानता है अन्य नहीं।

अद्रोह सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा ।
अनुग्रहश्च दानञ्च सता धर्मं सनातन ।61।

[illegible] मन, कर्म और वाणी से किसी प्राणी से द्रोह बुद्धि न रखना सब पर अनुग्रह रखना और नित्य दान देना यही सज्जनो का प्राचीन धर्म है।

चक्षुर्दद्यान्मनो दद्याद्वाच दद्यात्सुभाषितम् ।
उत्थाय चासनन्दद्यादेष धम सनातन 62।

सब प्रथम अभ्यागत अतिथि के सत्कार में मनुष्य आख मन वाणीतथा सुन्दर वचन अर्पित करे तदनन्तर अपने स्थान से उठकर आसन देवे यह पुरातन धर्म है।

अहिसा सत्यमक्रोधो दानमेतच्चतुष्टयम ।
अजातशत्रो सेवस्व धर्म एष सनातन ।63।

हे युधिष्ठिर ? हिंसा न करना सत्य बोलना, क्रोध न करना इन चारो वस्तुओ का तू सेवन कर, यह प्राचीन धम है।

सत्य ब्रूयात्प्रिय ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यमप्रियम ।
प्रियञ्च नानृत ब्रूयादेष धर्म सनातन ।64।

मनुष्य को सत्य बोलना चाहिए, प्रिय वचन बोलना चाहिए परन्तु ऐसा सत्य जो दूसरो को प्रिय न हो उसे कदापि नहीं बोलना चाहिए और न ही दूसरो की प्रीति के लिए असत्य बोलना चाहिए यह पुरातन धम है।

गृहस्थ पालयेद्दारान्विद्यामभ्यासयेत्सुतान ।
गोपयेत्स्तजना बन्धूनेष धर्म सनातन ।65।

गृहस्थी मनुष्य स्त्रियो की पालना कर, पुत्रो को विद्या पढाए तथा अपने सम्बन्धियो तथा बन्धुओ की रक्षा करे यह पुरातन धम है।

बृहमचर्यं तथा सत्यमनुक्रोसो धृति क्षमा।
सनातनस्य धर्मस्य मूलमेतत्सनातनम ।66।

ब्रह्मचय सत्य अनुक्रोश दया, धैर्य और क्षमा ये सब पुरातन धम के मूलाधार हैं।

अकृत्य नैव कर्त्तव्य प्राणत्यागेऽप्युपस्थिते ।
न च कृत्य परित्याज्यमेष धर्म सनातन ।67।

मृत्यु उपस्थित होने पर भी न करने योग्य कम नही करने चाहिए और न ही करने योग्य कम का त्याग करना चाहिए यही पुरातन धम है।

दम नि श्रेयसे प्राहुर्वृद्धा निश्चितदर्शिन ।
बृहमणस्य विशेषेण दमो धर्म सनातन ।68।

निश्चित त व का दर्शन करने वाले वृद्ध पुरुषो ने इन्द्रिय निग्रह को कल्याण का हेतु कहा है विशेषकर ब्राह्मण के लिए तो इन्द्रिय दमन पुरातन धम है।

यथा पत्याश्रयो धम स्त्रीणा लोके सनातन ।
अपवर्गमतिर्नित्यो मति धर्म सनातन ।69।

ससार मे जैसे स्त्रियो का धम पालन धम है उसी प्रकार मोक्ष प्राप्ति मे ही नित्य मति रखना अर्थात मोक्ष के लिए प्रयत्नशील रहना ही धम है

भरत पालयेद्राज्य शुश्रूषञ्च पितुर्यथा।
तथा भवत्या कर्त्तव्य स ही धर्म सनातन ।70।

भगवान राम माता कौशल्या से कहते हैं कि जैसे भरत राज्य की पालना करे तथा पिता की सेवा कर उसी प्रकार आपको भी करना योग्य है यही पुरातन धम है।

त्वया मया च वैदेह्या लक्ष्मणेन सुमित्रया ।
पितुर्नियोगे स्थातव्यमेष धर्म सनातन ।71।

तदनन्तर भगवान राम कहते हैं कि तुम मुझ और वैसे ही सीता को लक्ष्मण और सुमित्रा को पिता की आज्ञा मे ही रहना चाहिए, यही पुराना धम है।

(क्रमश)

आर्य समाज के महान् शिक्षा-शास्त्री आचार्य राम देव

ले.—श्री डा. भवानी लाल भारतीय, चण्डीगढ़

आर्य समाज के अपूर्व वक्ता, शिक्षा शास्त्री तथा साहित्यकार आचार्य राम देव का जन्म 31 जुलाई 1881 को अमृतसर जिले मे लाला चन्दू लाल के घर पर हुआ। पिता अध्यापक थे, अत उन्होने अपने पुत्र की शिक्षा की व्यवस्था सुचारू रूप से की। 15 वर्ष की आयु मे रामदेव जी ने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की पश्चात डी. ए वी कालेज लाहौर मे अध्ययनार्थ प्रविष्ट हुए। वहा इनकी शिक्षा एफ ए, तक हुई, उन दिनो कालेज दल तथा गुरुकुल दल के मतभेद पराकाष्ठा पर पहुचे हुए थे। रामदेव जी की सहानुभूति गुरुकुल दल की ओर होने के कारण उन्हे कालेज से पृथक कर दिया गया। इस समय लाला मुन्शीराम ने रामदेव को सहारा दिया। उन्हे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की साप्ताहिक पत्रिका आर्य पत्रिका का उप सम्पादक बना दिया। पुन वे विक्टर हाई स्कूल जालन्धर छावनी के मुख्याध्यापक बन गए। यहा रह कर उन्होने 1904 म बी ए की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1905 मे सैन्ट्रल कालेज लाहौर से बी टी किया। जींद राज्य मे जब कि आपका विद्यालयो के निरीक्षक के पद पर नियुक्त किया जा रहा था, महात्मा मुन्शीराम का आदेश गुरुकुल कागडी पहुचने के लिये मिला। तदनुसार रामदेव जी गुरुकुल के लिए चल पड़े।

महात्मा मुन्शीराम ने रामदेव जी को गुरुकुल का सचालन करने मे अपना प्रमुख सहायक बनाया। अब तक गुरुकुल कागडी मस्कृत की साधारण पाठशाला के रूप मे चल रहा था। रामदेव जी को गुरुकुल का मुख्याध्यापक नियुक्त किया गया। शिक्षा शास्त्र के मर्मज्ञ आचार्य रामदेव ने गुरुकुल की व्यवस्था पाठ्य पद्धति तथा शिक्षण प्रणाली में अनेक सुधार किये। विभिन्न विषयो का पढाई नियत समय विभाग चक्र तथा कक्षा विभाजन के अनुसार कराई जाने लगी। सस्कृत और वेद तथा अन्य आर्ष ग्रन्थो के साथ साथ अर्थशास्त्र इतिहास, राजनीति विज्ञान, गणित, अग्रेजी तथा विज्ञान भी पाठ्यक्रम मे प्रविष्ट किए गए। इन परिवर्तनो के कारण कागडी ने एक विश्वविद्यालय का रूप ले लिया। महात्मा मुन्शीराम का वरद हस्त पाकर आचार्य रामदेव सम्पूर्ण दायित्व के साथ गुरुकुल का सचालन करने लगे। महात्मा जी के सन्यास लेकर देश के सार्वजनिक राजनीतिक जीवन में उतरने के पश्चात् तो गुरुकुल के सचालन का समग्र भार रामदेव जी पर ही आ गया। अब वे गुरुकुल के आचार्य मुख्याधिष्ठाता बन कर काम करने लगे। 1924 मे अतिवृष्टि तथा झझावातो के कारण गगा पार बने गुरुकुल के पुराने भवन नष्ट हो गए। अब नये भवन बनाने की आवश्यकता हुई। आचार्य जी ने गुरुकुल के पुनर्निर्माण हेतु लाखो रुपये एकत्रित किये तथा 1930 मे नवीन भूमि पर गुरुकुल को प्रतिष्ठित किया गया। भवन निर्माण हेतु धन सग्रहार्थ आचार्य रामदेव दक्षिण अफ्रीका गये और वहा से एक लाख रुप्या प्राप्त किया। 1926 मे कन्या गुरुकुल देहरादून का अधिष्ठाता पद भी रामदेव जी ने सभाल लिया। इस प्रकार 1932 तक आचार्य रामदेव जी ने गुरुकुल कागडी का सचालन किया।

रामदेव जी 1932 में देश के स्वाधीनता सग्राम मे कूद पड़े। महात्मा गाधी के अनुशासित सिपाही के रूप मे आपने सत्याग्रह किया पजाब मे काग्रेस आन्दोलन के सर्वाधिकारी रहे तथा कारावास भोगा। 1935 मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान रहे। 1936 मे लदन मे होने वाली कान्फ्रेंस आफ लिविंग रिलीजन मे सम्मिलित होने का निमत्रण प्राप्त कर आप उसमे जाने के लिए तैयार हुए परन्तु पक्षाघात का आक्रमण हो जाने के कारण यात्रा रुक गई। 9 दिसम्बर 1939 को लगभग तीन वर्ष की अस्वस्थता के पश्चात् आर्य समाज के इस मनीषी विद्वान् का देहरादून मे निधन हुआ।

आचार्य रामदेव का अध्ययन अत्यन्त विशाल था। वे उच्चकोटि के विचारक तथा वक्ता थे। उनकी स्मरण शक्ति अद्भुत थी। उनके भाषणो मे विभिन्न ग्रन्थो के प्रमाणों और उद्धरणों की इतनी भरमार रहती थी कि श्रोता उनके अपरिमित ज्ञान तथा प्रस्तुतीकरण के अभिनव कौशल को देखकर चकित हो जाते थे। लगातार कई घण्टों तक धाराप्रवाही व्याख्यान देना आपके लिए एक साधारण बात थी। इतिहास, राजनीति, तुलनात्मक धर्म, अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियां आदि आप के व्याख्यान के प्रिय विषय थे।

लेखक के रूप में आचार्य रामदेव का योगदान निर्विवाद है। वे गुरुकुल कांगड़ी के मुख पत्र वैदिक मैगजीन के वर्षों तक सम्पादक रहे। उनके सपादनकाल में पत्र ने अभूतपूर्व उन्नति की रूस के प्रसिद्ध साहित्यकार काउन्ट लियो टाल्सटाय से उनका पत्र-व्यवहार इतिहास की एक अमर घटना बन गया है। रामदेव जी रचित ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है—

भारतवर्ष का इतिहास वैदिक और आर्ष ग्रन्थ-प्रथम सस्करण 1967 वि. द्वितीय संस्करण 1967 वि. गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित।

पुराण मत पर्यालोचन है, जोकि पं. धर्मदेव सिद्धान्तालकार के सहयोग से तैयार किया गया। पुराणालोचन विषय महत्वपूर्ण ग्रन्थ। गुरुकुल समाचार कांगड़ी 1919 ई. (आर्य समाज और डेटराक्टर, ए विन्डीकेशन) राजनैतिक कारणों से पटियाला षडयन्त्र अभियोग में आर्यसमाज को लपेटने के प्रयास का सतर्क प्रतिवाद रामदेव ने लाला मुन्शीराम के सहयोग में इस ग्रन्थ के द्वारा किया।

—

केन्द्रीय आर्य युवक सभा दिल्ली के ६१वें वार्षिकोत्सव पर महासम्मेलन

रविवार 25 नवम्बर 1985
दोपहर 2 बजे।

जिसमे देश के विभिन्न आर्य युवक सगठनो के प्रतिनिधि व विद्वान राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओ पर आर्य युवकों को कार्यक्रम देंगे। युवा वर्ष पर आर्य युवक सगठनो का एक राष्ट्र व्यापी कार्यक्रम बनाने तथा राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी भूमिका निभाने के उद्देश्य से शनिवार 23 नवम्बर को समस्त मण्डल व प्रान्तीय अधिकारियो की अपराह्न 2 बजे से बैठक भी होगी जिसमे भावी कार्यक्रम बनाया जाएगा। जिसकी घोषणा मुख्य अधिवेशन में की जाएगी।

सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे युवा हृदय सम्राट् ब्रह्मचारी आर्य नरेश।

सभी आर्य युवक तैयारी प्रारम्भ कर दें व अपने आने की सूचना शीघ्र भेजें। दिल्ली के बाहर से आने वाले युवकों के आवास व भोजन का प्रबन्ध समाज की ओर से रहेगा। (विस्तृत कार्यक्रम शीघ्र)

—रामनाथ सहगल मन्त्री

आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल का इकतीसवां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज जवाहर नगर पलवल का इकतीसवा वार्षिकोत्सव 1 से 3 नवम्बर 85 को बड़े उत्साह से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के सन्यासी, महात्मा तथा विद्वान् पधार रहे हैं। निम्नलिखित विद्वानो ने पधारना स्वीकार कर लिया है।

1 स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज रजस्थान।
2 प्रो. रत्नसिंह जी एम ए यू पी.
3 डा प्रशान्त वेदालकार देहली।
4 प. हरिदेव जी सिद्धान्त भूषण।
5 प. लक्ष्मणसिंह जी बेमोल भजनोपदेशक।

दिनाक 27-10-85 तक स्वामी दर्शनानन्द जी द्वारा वेद कथा होगी।

—आनन्द स्वरूप मन्त्री



हे मातृ भक्ति

रचयिता—कविवर 'प्रणव' शास्त्री एम. ए. महोपदेशक
शास्त्रीसदन रामनगर (कटरा) आगरा (उ. प्र.)

धन्य-धन्य हे मातृ भूमि हे, तुझको बारम्बार प्रणाम।
दया दिव्य वात्सल्य मूर्ति हे सृष्टि सजन की सुन्दर धाम 1।
तेरी उच्च महता सम्मुख हिमगिरी भी शरमाता है।
गुण-गौरव गाम्भीर्य सलिल की सागर थाह न पाता है।
तेरी मान महता पर तो नभ मण्डल झुक जाता है।
तू प्रकाश की पावनता की स्वर्णिम ऊषा सी अभिराम।2।
तू गृह लक्ष्मी धनधान्य की धारा धैर्य जुटाती है।
तू सरस्वती बर विवेक के अतुलित कोष लुटाती है।
तू दुर्गा असिधार वृतों के उज्ज्वल केतु उठाती है।
त्रिपथ गामिनी भुवन भामनी गङ्गा सी बहती अविराम।3,
परम पुरुष की प्रकृति प्रेयसी सी जननी अभिरूपाता।
पालन पोषण प्रजा पालिका क्रम की सुधा स्वरूपा तू।
रस शृंगार हास्य, करुणान्वित कविता कला अनूपा तू।
तू ही क्रान्ति शान्ति धन-धारिणी तेरा यश न निरानिष्काम।4।
तू ऋषि मनि योगी-जनो को परम्परा उपजाती है।
बाल्मीकी कवि वेद व्यास, गुरु गौतम कपिल बनाती है।
राम और घनश्याम पवनसुत दयानन्द प्रगटाती है।
तू वैज्ञानिक वरद विद्या की अदभुत लीला ललित ललाम।5।
ईडा भारती अही रूप मे तू प्रयाग सी प्रकटी है।
तू ब्राह्मी लिपि धार धरा मे शब्द ब्रह्म से लिपटी है।
निर्माण दिशा मे सचमुच वासन्ती सी छिटकी है।
तेरे आगन गाती रहती सतत ऋचाए श्याम साम।6।
तेरे ऋण से उऋण हुआ ऐसा माई का लाल नही।
तेरे बिन ससार सार की गल सकती है दाल नही।
तेरे उपर कर सकता है शासन भी यह काल नही।
प्रणव काव्य की कड़िया भजती रहे निरन्तर तेरा नाम 7।

दक्षिण अफ्रीका में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

डरबन (दक्षिण अफ्रीका) मे अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक कान्फ्रेंस और विश्व आर्य सम्मेलन मे भाग लेने और वहा कार्यक्रमो का आयोजन करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पडित ब्रह्मदत्त स्नातक (67 वर्ष) शीघ्र ही इस मास मे भारत से रवाना हो रहे हैं। वे वे वहा दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा के आमन्त्रण पर सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पहुच रहे हैं।

श्री स्नातक जी वैदिक साहित्य के विद्वान एव सुप्रसिद्ध पत्रकार हैं। भारतीय सूचना सेवा से रिटायर्ड होने के बाद अ इस सभा मे सम्प्रति ऋग्वेद के अंग्रेजी अनुवाद के सम्पादन कार्य और प्रकाशन मे लगे हुए हैं जिसके दो खण्ड तैयार हो चुके हैं। इससे पूर्व भी श्री स्नातक मलेशिया सिगापुर फीजी द्वीप समूह बैकाक और टोक्यो मे भारतीय सस्कृति एव वैदिक धर्म के प्रसार के लिए गए थे। वे तीन मास के लिए इस सम्मेलन मे कार्य करेगे। आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की हीरक जयन्ती के विभिन्न कार्यक्रम इस वर्ष शिवरात्रि से देश के विभिन्न स्थानो मे बराबर चल रहे हैं।

इसके अतिरिक्त शर्तबन्द कुली प्रथा के अन्तर्गत दक्षिण अफ्रीका मे गए भारतवासियो को 125 वर्ष पूरे हो रहे हैं। उसका भी समारोह वहा इस वर्ष विशेष उत्साह से मनाया जा रहा है। डरबन नगर की स्थापना के 150 साल पूरे होने पर प्रदर्शनी तथा अनेक कार्यक्रम वहा पर इन दिनो आयोजित होगे। अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन 14 से 17 दिसम्बर 85 मे देश विदेश के प्रतिनिधि की भारी सख्या मे पहुचने के समाचार मिल रहे हैं, इस सम्बन्ध मे डरबन के कार्यकर्ताओ ने सभा को सूचित किया है कि सम्मेलन के कार्यक्रमो मे किसी प्रकार का दगा-फिसाद या अशान्ति होने की सम्भावना तनिक भी नही है।

इस सम्मेलन की अध्यक्षता प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती करेंगे जो वहा शीघ्र ही पहुच रहे हैं सभा के मन्त्री श्री ओम प्रकाश जी त्यागी बाद मे वहा भाग लेने पहुचेंगे।

—हरपालसिंह

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वेदान्त सूत्रो पर भाष्य करते हुए कई स्थलो पर शकराचार्य जी पहले पक्ष अर्थात अभिन्ननिमित्तोपादान कारण का समर्थन करते प्रतीत होते हैं+। जैसे सोने से रुचक कुण्डल या स्वस्तिक आदि बनते है या जैसे मिटटी से घट, बर्तन प्याला आदि बनते है, इसी प्रकार परमेश्वर मे सजीव निर्जीव, चेतन अचेतन पदार्थ उत्पन्न होते है। और इस प्रकार ये रुचक कुण्डल स्वस्तिक आदि पुन अपने मूल सुवर्ण मे लीन हो जाते हैं, या घट और प्याला आदि फिर मिटटी हो जाते हैं, इसी प्रकार ये सजीव निर्जीव पदार्थ अपने विनाश के पश्चात परमेश्वर मे लीन हो जाते है, या पुन परमेश्वर हो जाते हैं। अरबी की कहावत है। सब पदार्थ अपने मूल मे लीन हो जाते हैं।

यह पक्ष यद्यपि आपातत सुन्दर प्रतीत होता है तथापि निस्सार है, और तर्क की कसौटी पर पूरा नही उतरता। छान्दोग्योपनिषत् में निर्दिष्ट मिटटी और मिटटी के विकारो का दृष्टान्त कदाचित परमेश्वर को जगत का उपादान कारण सिद्ध करने के लिए नहीं दिया गया है। वह तो केवल कार्य-कारणभाव का स्पष्ट कराने के लिए ही दिया गया है। उपादानकारण सदा परिवर्तनशील—विकारी होता है। यदि मिटटी मे विकार—परिवर्तन न हो तो उसमे से कोई घट या प्याला नही बन सकता। यदि सुवर्ण विकारी न हो तो आप उस मे कगण नही बना सकते। फिर और देखिए कगण का प्रत्येक कण सुवर्ण है घट का प्रत्येक घटक मिटटी है यदि कुण्डल विशुद्ध सोने के है और उसमे किसी भी प्रकार का कोई मिलावट नही तो ककण का गुरुत्व वजन या दूसरे गुण ठीक विशुद्ध सुवर्ण के ही होगे इसी प्रकार सबसे पहले यही समझ मे नही आता कि निर्विकार ब्रह्म कैसे सान्त आत्माओ के रूप मे विकृत होगा। दूसरे सारे दोष त्रुटिया अपराध और पाप जो आत्माओ मे माने जाते हैं परमात्मा मे मानने पडेगे यदि वह ससार का उपादान कारण माने।

एक और बात भी है। सोने के सारे भूषण जो सोने से बनाए जाते हैं, सुवर्णकार या ग्राहको की आवश्यकताओ के अनुसार बनाए जाते हैं। परमेश्वर एक अद्वितीय सत है, वह पूर्ण और निर्विकार है उसे न कोई आवश्यकता थी अत सत असत से उत्पन्न होता है। किन्तु उसने कहा- भाग्य। यह कैसे हो सकता है? असत से सत कैसे उत्पन्न हो सकता है?

क्रमश

आर्य समाज घलौड़ीगेट पटियाला में वेद सप्ताह

आर्य समाज घिलौडी गेट पटियाला मे वेद सप्ताह 27 सितम्बर से 30 सितम्बर 85 तक बडी धूमधाम से मनाया गया। प्रतिदिन हवन और यज्ञ होता रहा और मनोहर और सुन्दर भजन सुनने मे आए।

इस अवसर पर डा जयदेव जी गुरुकुल कांगड़ी वाले स्वामी सत्यानन्द जी मोहन आश्रम हरिद्वार वाले, बहन धीरायती जी ज्वालापुर वाली श्री द्वारका दास जी मुजफ्फर नगर वाले तथा इतिहास केसरी श्री निरञ्जनदेव जी जैसे महान भावो ने सम्मिलित होकर अपने मनोहर और प्रभावशाली व्याख्यानो द्वारा सुनने वालो के दिलो को मोह लिया,

30 सितम्बर को 12 बजे दोपहर प्रीति भोजन हुआ जिसमे सभी ने बडे प्रेम से इकटठे भोजन किया। इस प्रकार यह वेद सप्ताह बडी सफलता पूर्वक समाप्त हुआ।

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर की शताब्दी

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर श्रद्धानन्द बाजार जालन्धर की प्रबन्धकर्तृ सभा बड़े हर्ष से आप को यह सूचना देती है कि इस समाज को आपकी सेवा करते हुए एक सौ वर्ष हो चुका है। अतः इस की प्रथम शताब्दी 27 28,29 दिसम्बर 1985 को बड़े समारोह से मनाई जाएगी।

1 इस कार्यक्रम की सफलता के लिए सारे भारत से बड़े 2 विद्वानों वानप्रस्थी तथा सन्यासियो को उनके प्रवचन सुनने तथा उनको सम्मानित करने के लिए बुलाया जाएगा। जो इस समाज के पूर्व अधिकारियो या उनके उत्तराधिकारी को भी सम्मानित किया जाएगा

2 27 दिसम्बर 1985 को जालन्धर में एक बहुत विशाल इतिहासिक शोभा यात्रा निकाली जायेगी, जिस मे सारे पंजाब की धार्मिक संस्थाए भाग लेगी।

3 आर्य समाज मन्दिर में एक मास पूर्व ही कथा आरम्भ होगी तथा सामवेद पारायण महायज्ञ होगा जो नगर के भिन्न भिन्न चौको में भी किया जायेगा।

4, इस कार्य की स्मृति के लिए एक शताब्दी स्मारिका छापी जाएगी। इसमे इस समाज का इतिहास तथा अन्य विद्वानो के लेख होगे।

5 इस सारे कार्यक्रम की सफलता के लिए इस समाज के अधिकारी सारे पंजाब में घूमकर एक लाख रुपये एकत्रित करने का यत्न करेंगे।

मेरी सारे पंजाब की धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओ तथा उनके प्रबन्धको से प्रार्थना है कि वह इस कार्य की सफलता के लिए हमे पूर्ण सहयोग दें।

इस समाज के पूर्व के अधिकारियो के पास या उनके उत्तराधिकारियो के पास कोई उनका चित्र हो, या कोई सामूहिक चित्र हो या कोई पत्र हो या कोई अन्य घटना उनकी स्मृति मे हो तो कृपा भेजन का कष्ट करें। यह सब शताब्दी स्मारिका मे छापा जायेगा भूतपूर्व अधिकारियो या उनके उत्तराधिकारियो को सम्मानित किया जाएगा।

—योगेन्द्रपाल सेठ प्रधान

1985 का भव्य ऋषि मेला

सहर्ष सूचित किया जाता है कि गत के समान इस वर्ष ऋषि मेला दिनांक 16 से 18 नवम्बर 85 को ऋषि उद्यान पुष्कर रोड अजमेर में सोल्लास मनाया जाएगा।

दिनांक 15 से यजुर्वेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ होगा। यज्ञ का समय प्रातः 7 बजे से 9 बजे तथा सायं 4 बजे से 6 बजे तक रहेगा। इस बीच मे आगन्तुक विद्वान महानुभावो तथा प्रतिष्ठित भजनोपदेशको के प्रवचन तथा भजनोपदेश होंगे यज्ञ की पूर्णाहुति दिनांक 18 को प्रातः 10 बजे सम्पन्न होगी।

दिनांक 16 से 18 नवम्बर तक श्रोताओं को आकर्षक प्रचुर सामग्री मिले ऐसा कार्यक्रम बनाया गया है। यहां मेले में आने वालों को आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती तथा प्रसिद्ध विद्वान् ... शास्त्री हिसार ... की भारतीय ... आदि तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ... जी 6 भजनोपदेशक सुनने को मिलेंगे यहां दिनांक 18 को मध्याह्न 2 से 5 बजे सरस्वती भवन में अन्तर्राष्ट्रीय वेद विमर्श महासम्मेलन मे भावी और कार्यक्रम की रूपरेखा भी बनाई जायेगी जिसमें सभी आर्य जगत के चिन्तक, मनीषी जन आमन्त्रित है। अतः आप ऋषि मेले में सपरिवार पधारें। निवास व भोजन की निःशुल्क व्यवस्था ऋषि उद्यान मे रहेगी।

अपनी समाज से अधिक से अधिक संख्या मे पधारें।

आपके शुभागमन की सूचना परोपकारिणी सभा कार्यालय में देवें।

—श्रीकरण शारदा

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जर्नालिस्ट प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

दूरभाष 74250 ' रजि न पी जे एल 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 27. 18 कार्तिक सम्वत् 2042 तदनुसार 3 नवम्बर 1985 दयानन्द 161 अक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

जीवात्मा तथा परमात्मा का स्वरूप

ले- —स्व श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम-ए

(गतांक से आगे)

यह कथन उपादानकारण के सम्बन्ध मे भी वैसा ही लागू है। गीता भी इस सिद्धान्त का निम्नलिखित शब्दो में प्रतिपादन करती है।

—नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सत

(गीता 2।16)

अभाव से भाव नहीं होता और न ही भाव का अभाव होता है।

यह विचार प्रकार अत्यन्त वैज्ञानिक है, क्योंकि समस्त विज्ञानिको का उद्देश्य कार्य का कारण खोजना है। यदि भाव की उत्पत्ति अभाव से हो सकती है, तो प्रयोगशालाओं मे इतने परिश्रम तथा विश्व की पहेली के समाधान करने के लिए इतनी शक्ति व्यय करने की क्या आवश्यकता है? और न ही विकृत होने की योग्यता उस में है। विकार या तो भीतर से होता है या बाहर से। यदि विकार अन्दर से हो तो कोई इच्छा, कमी, त्रुटि, या विकार के लिए कोई आवश्यकता पूरा करने के लिए कोई रिक्त स्थान अवश्य चाहिए। यदि विकार बाहर से हो तो विकार करने वाला कोई दूसरा अवश्य होना चाहिए। यदि ब्रह्म एक और अद्वितीय है, और सृष्टि-उत्पत्ति से पूर्व ब्रह्म के अतिरिक्त और कोई पदार्थ नहीं था तो बाहर से विकार बेकार है क्योंकि सर्वव्यापक परमात्मा की सत्ता में उसके अतिरिक्त बाहर की कोई वस्तु है ही नहीं। इसके अतिरिक्त परमेश्वर निर्दोष और पूर्ण है। इसी वास्ते वह अपने आप भी दूसरे के कहने से करेगा, और न ही दूसरे की इच्छा के अधीन करेगा।

यदि परमेश्वर संसार का उपादानकारण नहीं वरन् केवल निमित्त-कारण ही है, अर्थात् अभाव से जगत् की सृष्टि करता है तब भी, उसकी ऐसी ... ही नहीं होती। ... पदार्थ का अभाव से उत्पन्न होना मानना बेहूदा है। छान्दोग्योपनिषद मे कितनी सुन्दरता से इस भाव को समझाया गया है—

'हे सोम्य! सृष्टि से पूर्व एक अद्वितीय सत पदार्थ था कई लोग कहते हैं, सृष्टि से पूर्व एक अद्वितीय असत। श्री शंकराचार्य ने बहुत विस्तार से और रोचक शब्दो मे इस वाद की विवेचना की है—

"अभाव से भाव की उत्पत्ति का दृष्टान्त देते हैं नानुपमृद्यप्रादुर्भावात (न्या द 4।1।14) बीज के नष्ट होने पर ही अंकुर उत्पन्न होता है। और इसी प्रकार नष्ठ हुए दूध से दधि और मिट्टी के पिण्ड से घड़ा पैदा होता है। कूटस्थ अविकारी कारण से यदि कार्य की उत्पत्ति हो, तो इस समानता के कारण सब की सब से उत्पत्ति होनी चाहिए। इस वास्ते अभावग्रस्त बीजादिको से अंकुरों की उत्पत्ति होने के कारण अभावोत्पत्ति मानते हैं।

श्री शंकराचार्य जी इस आक्षेप का समाधान इस प्रकार करते हैं—

"अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं हो सकती, यदि अभाव से भाव की उत्पत्ति हो सकती तो कारण को मानना तथा खोजना व्यर्थ है। उपमृदित बीजादि का जो अभाव है उस अभाव और शशश्रृङ्ग मे स्वभावशून्य होने के कारण अभावता की दृष्टि से कोई भेद नहीं है। बीज से ही अङ्कुर पैदा होने दूध से ही दधि पैदा होने की कारण व्यवस्था सार्थक हो सके। निर्विशेष अभाव को कारण मानने पर शशश्रृङ्ग आदि से अंकुर आदि की उत्पत्ति हुआ करे, किन्तु होती दीखती नहीं।

'जिस तरह उत्पल (एक प्रकार का कमल) आदि मे नीलापन आदि कुछ विशेष भेद होता है, उसी भांति यदि अभावो मे भी भेद मानते हो तो उत्पल आदि की भांति अभाव भी भाव हो जाएगा, अभाव नहीं रहेगा।

'अभाव से भाव की उत्पत्ति मानने पर सभी कार्य पदार्थ अभावमय मानने पड़ेंगे, किन्तु ऐसा दिखाई नहीं देता सभी पदार्थ अपने अपने स्वरूप से समन्वित भावात्मक ही प्रतीत होते हैं।

'जिन बीजादिको मे भी स्वरूपो मद (स्वरूपनाश) दीखता है उन मे भी विनश्यमान (विनष्ट होती हुई) पूर्व अवस्था अगली अवस्था का कारण नहीं मानी जाती। बीजादिको के अविनश्यमान अनुगत अवयवो को अंकुरादिक का कारण माना जाता है।

'उदासीनानामपि चैवं सिद्धि

(वेदान्त 2 2 27)

यदि अभाव की उत्पत्ति मानी जाए तो पुरुषार्थ न करने वाले उदासीन लोगो की भी अभीष्ट सिद्धि हो जाया करे, क्योंकि अभाव सुलभ है। खेती के काम में यत्न न करने वाले किसान की भी फसल तैयार हो जाया करे। मिट्टी के संस्कार आदि मे किसी प्रकार भी यत्न न करने वाले कुम्हार के पास घट बन जाया करें। बुनाई का कार्य न करने वाले बुनकर के वस्त्र बुनाई मे यत्न करने वाले की भांति तैयार हो जाया करें

इस सारे शास्त्रार्थ का सार और भाव यह है कि अभाव से भाव की उत्पत्ति समझ मे ही नहीं आ सकती यदि आप प्रभु की सृष्टि पर गम्भीर दृष्टि डालिएगा, तो इस वाद की पुष्टि मे आप को भी एक उदाहरण नहीं मिलेगा। शंकराचार्य जी ने बहुत योग्यता से इस युक्ति का खण्डन कर दिया है कि बीज से अंकुर तभी पैदा होता है जब बीज सर्वथा नष्ट हो चुकता है। (बीज के अंकुरोत्पत्ति का) दृष्टान्त दृष्टान्ताभास है। बीज के अवशिष्ट तत्त्व से अंकुर की उत्पत्ति होती है, न कि बीज के ऊपर चढ़े व्यर्थ कोष से जो कि गल सड़ गया है। यदि कुछ नहीं—अभाव कुछ—भाव का कारण हुआ करता तो अभीष्ट पदार्थ की सिद्धि के लिए कौन सामान जुटाने का प्रयत्न करता। मुझे रोटी की आवश्यकता है और यदि रोटी अभाव से पैदा हो सकती है, तो मैं क्यों गेहूं बोऊं और क्यों गेहूं का आटा पिसवाऊं। मुझे घर की आवश्यकता है और घर यदि अभाव से बन सकता है तो ईंटें पकाने तथा मकान के लिए उपयोगी दूसरा सामान जुटाने की क्या आवश्यकता है? असत से सत या अभाव से भाव की उत्पत्ति जादू के खेलो मे हुआ करती है, वास्तविक घटनाओ की विवेचना वाले इस ग्रन्थ मे जादू का क्या काम? अलादीन का चिराग कहानी सुनाने के लिए उपयोगी हो सकता है बच्चों को उस से रस भी आ सकता है, किन्तु अभी ऐसा अल्लादीन का दीपक न आविष्कृत हुआ है, और न आगे आविष्कृत हो सकेगा, जिसके द्वारा भूखे के लिए रोटी का टुकड़ा या प्यासे के लिए जल की एक बूंद मिल सके। कारण की भावना ने हमारे स्वभाव मे इतना घर कर रखा है कि अप्सराओ की कहानियो में भी कारण की खोज होती है। चाहे वे कैसा ही ... क्यों न हो। अल्लादीन के चिराग का क्या प्रयोजन है? वह ... कारण ही है।

आज हम कहाँ खड़े हैं

ले—श्री सत्यदेव जी वेदालंकार म न 145 गली न 4
सेंट्रल टाऊन जालन्धर

(27 अक्तूबर से आगे)

इसके समन्वयात्मक पद्धति भी संस्कृत विषय की और पाश्चात्य विषय की। तीसरी ओर थे आर्य समाज के स्कूल और कालेज थे, जिनमें संस्कृत विषयों का महत्व बहुत कम रहा नवीन ज्ञान विज्ञान का ही मुख्य स्थान रहा और अब माडल स्कूलो का नया परीक्षण है। यह भी आर्य समाज का ही शिक्षा कार्य है। इसमें अधिक से अधिक पाश्चात्य शिक्षा का अनुकरण है।

आर्य समाज के विद्वानो मे भी मतभेद हैं। 18 5 85 के आर्य जगत में प्रसिद्ध आर्य विद्वान स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती का एक लेख है— महात्मा हसराज और डी ए वी संस्थाए समय की लहर और उसके नए तकाजे। इसमें स्पष्ट रूप से डी ए वी आन्दोलन की प्रशंसा के साथ नये माडल स्कूलो के कार्य की भी खूब सराहना की गई है। मान्य पंडित सत्यकाम जी सिद्धान्तालकार ने अपने अनेक लेखो में गुरुकुलीय आश्रम व्यवस्था के महत्व को बहुत स्पष्ट किया है—पर साथ ही यह भी स्वीकार किया है कि विश्वविद्यालयों मे शिक्षा क्रम सरकारी ही स्वीकार किया जाना चाहिए।

श्री प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति ने 14 4 85 तथा 26 5 85 के आर्य मर्यादा मे जो लेख दिए हैं उनमे गुरुकुलीय आश्रम व्यवस्था के साथ साथ ऋषि दयानन्द की शिक्षा पद्धति के महत्व को प्रगट किया है। महात्मा आर्य भिक्षु जी, श्री प सत्यदेव भारद्वाज विद्यालकार आदि बहुत से और भी विद्वान् हैं। जिन्होने इस विषय पर अपने विचार दिए हैं। वस्तुत शिक्षा पद्धति आर्य समाज में प्रारम्भ से अब तक विचार मंथन का एक प्रमुख विषय रहा है।

आर्य समाज के शिक्षा कार्य का समूचे रूप से जो चित्र उभर रहा है उस के विषय में कुछ बात स्पष्ट हो गई हैं—

1 अब यह विचार लगभग छोड़ दिया गया है कि आर्य समाज की अपनी एक मौलिक शिक्षा पद्धति है। प्रचलित शिक्षा पद्धति को ही आर्य संस्थाओ ने थोड़े से परिवर्तन के साथ स्वीकार कर लिया है। आर्य समाज से सामान्य स्कूलो से लेकर विश्वविद्यालय तक को इस ही श्रेणी मे सम्मिलित किया जा सकता है।

2 आर्य समाज द्वारा संचालित आयुर्वेद कालेज मैडीकल कालेज, ट्रेनिंग कालेज टेकनीकल संस्थान इन सबका सम्बन्ध विशुद्ध सरकारी शिक्षण पद्धति से है आर्य समाज की शिक्षण पद्धति से नहीं।

3 संस्कृत विद्यालय जो बनारस या अन्य विश्वविद्यालयो से मान्यता प्राप्त परीक्षाएं दिलाते हैं उनका भी आर्य समाज की अपनी शिक्षण पद्धति से सम्बन्ध नहीं, उन्हें सरकार निर्दिष्ट पद्धति का ही सरकार निर्दिष्ट ग्रन्थ समूह का ही नियम स्वीकार करना होता है।

4 आर्य समाज के उपदेशक विद्यालय अथवा कुछ ब्रह्मचर्याश्रम ऐसे अवश्य हैं जिनमे आर्य समाज की दृष्टि से ही पठन पाठन की स्वतन्त्रता है पर उनका क्षेत्र और स्तर बहुत सीमित है

शिक्षा के क्षेत्र मे आर्य समाज ने आश्रम व्यवस्था का जो प्रभाव डालने का प्रयत्न किया है उस का बहुत अधिक महत्व है। इस बात की ओर माननीय प सत्यव्रत सिद्धान्तालकार जी ने अपने लेखो मे स्पष्ट किया है। कुल की भावना विद्यार्थियों का परस्पर मिलकर पूरे शिक्षा काल में एक स्थान पर अच्छे वातावरण में रहना तथा गुरु और शिष्य की समीपता यह आदर्श आर्य समाज ही नही प्राचीन भारतीय समाज का मौलिक शिक्षा सम्बन्धी आदर्श है। इसको व्यापक रूप मे स्वीकार किया जा सकता है। भारतीयता का शिक्षा क्षेत्र में यह एक मौलिक योगदान होगा।

पर इस सम्बन्ध में कुछ कठिन प्रश्न सामने आते हैं जिन पर अब विचार नहीं किया गया।

(क) भारत की विशाल जन संख्या और आर्थिक स्तर को देखते हुए क्या ऐसे आश्रमों की स्थापना व्यवहारिक है। आज कल की महगाई को ध्यान में रखते हुए आश्रम में एक बालक का भोजन वर्ष ही 200) से अधिक आएगा अन्य सब खर्च अलग। क्या यह सब सम्भव है। कोष से चुने हुए विद्यार्थियों के लिए ऐसा आश्रम बनाना अलग बात है। राष्ट्रीय व्यवस्था में यह सम्भव नहीं।

(ख) ब्रह्मचर्य शब्द को दुहराया तो बहुत जाता है पर प्राचीन और आधुनिक आयुर्विज्ञान के आधार पर इसका विवेचन प्राप्त नहीं होता। बालकों में किशोरावस्था कब प्रकट होती है युवा अवस्था का शिरोबिन्दु क्या इसके संबंध में बालक जान सकेंगे या नहीं, बालकों में परस्पर अप्राकृतिक व्यवहारों को कैसे रोका जा सकता है या रोका भी जा सकता है या नहीं अथवा रोका जाना स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव डालता है। इन सब विषयों पर गहरा और व्यापक विचार होना चाहिए। जहा तक मेरा सीमित ज्ञान है ऐसा विचार अभी तक नहीं हुआ।

यह विषय विस्तृत है यहाँ इस पर पूरा या अधूरा स्पष्टीकरण सम्भव नहीं।

4 मैं समझता हू कि आर्य समाज ने शिक्षा कार्य का प्रारम्भ आदर्शों की प्रबल प्रेरणा से किया गया। ऋषि दयानन्द ने जो वैदिक सिद्धान्त और जीवन का भव्य रूप समस्त ससार के सामने रखा। उसकी प्रेरणा से यह कार्य प्रारम्भ हुआ। मूल भावना थी कि शिक्षा द्वारा उन आदर्शों को जीवन में लाया जा सके। उन आदर्शों के अनुकूल भावनाओं को लेकर महात्मा हसराज तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने डी ए वी संस्थाए तथा गुरुकुल खोले। आर्य समाज ने अपनी पूर्ण शक्ति से इसमे योगदान दिया।

पर व्यवहारिकता की चट्टान की टक्कर ने इन प्रयत्नों को शिथिल कर दिया। विशाल भारत को अपरिमित बाल समाज की सबसे पहली समस्या भूख है। पेट की भूख आदर्शों की भूख नही। आदर्श पीछे आते हैं प्रारम्भिक आवश्यकताए सबसे पहले। यह भूख लगातार बढ रही है। आर्य समाज में ही नहीं भारत की बदलती हुई सरकारों के बदलते शिक्षा परीक्षण अभी तक इस भूख की आर्थिक परिस्थिति का मुकाबला नहीं कर सके। यही भारतीय शिक्षा परीक्षणो की सबसे बड़ी त्रासदी है।

भारतीय संस्कृति का विकास बालको का पूर्ण विकास आदर्श नागरिक बनाना शिक्षित मनुष्य बनाना आदि न जाने शिक्षा के कितने उद्देश्य बताए जाते हैं। भिन्न 2 शिक्षा शास्त्री इन का महत्व भी प्रगट करते हैं। पर किसी देश में शिक्षा का ढाचा मुख्यतः उस देश के धार्मिक या सास्कृतिक आदर्शों पर ही आश्रित नहीं होता उस देश की आर्थिक परिस्थिति का विचार एक मुख्य घटक होना चाहिए भारत की वर्तमान आर्थिक परिस्थिति में बालकों और बालिकाओं को इस योग्य बनाना कि शिक्षा के 10, 12 या 14 वर्षों के बाद व अपनी भौतिक आवश्यकताओं को सरलता से पूरा कर सकें, यह सबसे प्रथम और सबसे महत्व की बात है और सब आदर्श गौण हैं—आवश्यक नहीं।

आर्य समाज के शिक्षा सम्बन्धी कार्य पर देश की आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ा है। इसी आधार पर हमारी संस्थाओं के विभिन्न 2 अंग हैं अत्यन्त निर्धन पूँजी कुलों के लिए उपदेशक विद्यालय अनाथालय तथा निःशुल्क संस्कृत विद्यालय हैं। सामान्य छात्रों के लिए स्कूल हैं, कालेज हैं और गुरुकुल हैं। समृद्ध छात्रों के लिए माडल स्कूल हैं, पब्लिक स्कूल हैं जहा प्रति बालक व्यय प्रति वर्ष हजारों रुपये होता है। ऐसे छात्रों के लिए भी जो योग्य तो नहीं पर अति समृद्ध हैं ऐसी व्यवहारिक संस्थाए हैं। जहा विशिष्ट प्रवेश शुल्क पन्द्रह बीस हजार से लेकर चालीस-पच्चास हजार तक भी है।

पर इस सारे ढाचे का नाम कोई समन्वित शिक्षा प्रणाली नहीं रखा जा सकता। मै कोई नही कहना चाहता और न ही कह सकता है कि आर्य समाज के महान शिक्षा कार्य का कोई लाभ नही अथवा इस कार्य को बन्द कर देना चाहिए, आर्य समाज की शिक्षा संस्थाए आर्य समाज की अमूल्य सम्पत्ति हैं लगभग एक शताब्दी के महान बलिदानो और अपार व्यय का परिणाम हैं। इन संस्थाओ ने अपरिमित विद्वान्, लेखक, राजनीतिज्ञ शिक्षा शास्त्री स्वतन्त्रता सग्रामी सन्त और साधक उत्पन्न किए हैं। भारतवर्ष के सामूहिक शिक्षा कार्य मे आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान है। देश के लाखों नवयुवको के जीवनो को आर्य समाज की शिक्षा संस्थाओं ने सवारा और बनाया है।

वस्तुत भारत एक महान देश है। भिन्न 2 धर्मों भाषाओ संस्कृतियो तथा मान्यताओं के स्रोतो से मिला जुला एक देश जिसमे एकता का सूत्र बहुत प्रबल नही। इस देश की सभी समस्याए अत्यन्त जटिल हैं। यही बात शिक्षा के सम्बन्ध में भी है। अनन्त परस्पर विरोधी विचारों और मान्यताओं वाले जनसमूह से करोड़ो बच्चो के लिए किसी एक शिक्षा पद्धति का चयन बड़ा कठिन कार्य है। भारत मे अपार दरिद्रता है। इसलिए शिक्षा पद्धति का प्राथमिक लक्ष्य इन करोड़ो बच्चों को अपना पेट भरने योग्य बनाना है। दस बारह वर्ष शिक्षा संस्थाओं में अपने समय और धन का व्यय कर बालक तथा बालिका आजीविका नहीं प्राप्त कर सकते तो यह शिक्षा व्यर्थ हो जाता है। प्रत्येक देश की अपनी आर्थिक सांस्कृतिक और भौगोलिक परिस्थिति होती है। शिक्षा का विकास उसके अनुकूल ही हो सकता है। मैं समझता हू कि आर्य समाज ने पिछले एक सौ वर्ष से अत्यन्त भी शिक्षा के क्षेत्र में कार्य किया

(शेष पृष्ठ 8 पर)

सम्पादकीय—

आर्य समाज पर भ्रष्टाचार की छाया—6

इसी लेख माला के पिछले लेख में, मैंने लिखा था कि यदि सार्वदेशिक सभा गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में जो घपला हुआ है उसकी निष्पक्ष जांच कराने को तैयार हो तो मैं इस विषय को यहीं समाप्त कर दूंगा। वह लेख लिखने के पश्चात् मैंने साप्ताहिक सार्वदेशिक दिनांक 20 अक्तूबर 85 का वह अंक पुनः देखा जिसमें श्रद्धानन्द चिकित्सालय के विषय में कुछ लिखा गया था। इसके विषय में पिछले लेख में भी मैंने कुछ लिखा था, परन्तु वह सारा पढ़ने के पश्चात् मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि यह एक झूठ का पुलिन्दा है और इस लेख ने यह प्रश्न भी हमारे सामने लाकर खड़ा कर दिया कि क्या सार्वदेशिक सभा के अधिकारी किसी व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए इस स्तर पर आ सकते हैं कि आर्य जनता की आंखों में धूल झोंकने का प्रयास करें? इस लेख में सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष माननीय श्री सोमनाथ जी मरवाह के विषय में भी यह लिखा है कि वह कहते हैं कि श्रद्धानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय के रूप में जो चमत्कार हुआ है वह कैसे हुआ। जहां तक मैं जानता हूं श्री सोमनाथ जी मरवाह की सम्मति इस विषय में इसके पूर्णतया विपरीत है। वह भी चाहते हैं कि घपला की जांच होनी चाहिए परन्तु सार्वदेशिक सभा के मन्त्री ने श्री सोमनाथ जी मरवाह के कन्धे पर रख कर बन्दूक चलाने का प्रयास किया है। इस लेख ने जो नया प्रश्न हमारे सामने खड़ा किया है वह यह कि क्या सार्वदेशिक सभा के कुछ अधिकारी आर्थिक भ्रष्टाचार और नैतिक भ्रष्टाचार दोनों के शिकार हो रहे हैं? सार्वदेशिक सभा आर्य समाज की सर्वोच्च संस्था है उसके प्रत्येक अधिकारी का आचरण दूसरों के लिए एक दृष्टान्त होना चाहिए परन्तु यदि वह लोग किसी स्वार्थ वश दूसरे के भ्रष्टाचार पर पर्दा डालें और कुछ व्यक्तियों की चमचागिरी शुरू कर दें तो सार्वदेशिक सभा की मान प्रतिष्ठा कहां रहेगी। इसी भ्रष्टाचार के विषय में और भी बहुत कुछ लिखा जा सकता है। मैंने तो अभी तक केवल गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के विषय में ही लिखा है परन्तु दिल्ली में भी बहुत कुछ हुआ है जो आपत्तिजनक है।

यह सारी कहानी अत्यन्त निराशाजनक, दुखद और लज्जाजनक है ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ व्यक्तियों ने अपने स्वार्थ के लिए आर्य समाज के भविष्य को दाव पर लगा दिया है। मेरी अब भी यह हार्दिक इच्छा है कि आर्य समाज के गणमान्य नेता बैठ कर गम्भीरतापूर्वक इस सारी स्थिति पर विचार करें मुझे यह भी डर है कि यदि इसका कोई समाधान न ढूंढा गया तो यह सारा विषय किसी न किसी रूप में न्यायालय के सामने चला जाएगा। उसके पश्चात आर्य समाज के नेताओं की ख्याति न केवल मिट्टी में मिल जाएगी आर्य समाज का भविष्य भी धूमिल हो जाएगा। अभी तक तो बहुत सी घटनाओं पर पर्दा पड़ा हुआ है जब वह पर्दा उठेगा तो कई व्यक्ति ऐसे रूप में सामने आएंगे जो आर्य समाज की एक विस्फोट बन कर इसे झंझोड़ देगा। इसलिए मैं अपने पहले सुझाव को सार्वदेशिक सभा के नेताओं व अधिकारियों के विचारार्थ पेश करता हूं कि जो कुछ गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी और दूसरी संस्थाओं में हुआ है उसकी निष्पक्ष जांच कराई जाए। सुप्रीमकोर्ट या हाई कोर्ट के ऐसे अवकाश प्राप्त न्यायाधीश मिल सकते हैं जो यह काम कर सकते हैं। यदि वह इस विषय की जांच करके अपना कोई फैसला दे दें तो जो विवाद इस समय चल रहा है वह समाप्त हो जाएगा। मैंने एक बात पिछली बार भी लिखी थी उसे फिर दोहराता हूं कि यदि जांच करने वाले व्यक्ति यह कह दें कि मैं जो कुछ कह रहा हूं वह निराधार है तो उसके पश्चात मुझे जो भी सजा दी जाएगी उसे मैं सहर्ष स्वीकार करूंगा। परन्तु कोई व्यक्ति यह समझें कि मुझे डराकर या धमका कर मेरी आवाज बन्द कर सकता है तो यह उसकी भ्रान्ति है। मेरा भी आर्य समाज से बहुत पुराना सम्बन्ध है मैंने अपने जीवन के लगभग चालीस वर्ष इसकी सेवा में व्यतीत किए हैं। इसे कई विरोधी तत्त्वों से बचाने के लिए यत्न भी किया है वह यह सब इस लिए नहीं किया गया था कि आर्य समाज की जड़ें काटने के लिए कुछ और लोग आगे आ जाएं और हम उनका समर्थन करते रहें क्योंकि कभी वह हमारे साथी थे। इसलिए स्थिति अत्यन्त गम्भीर है अभी भी इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर लिया जाए तो समस्या का कोई समाधान निकल सकता है यदि न किया गया तो आर्य समाज के उच्च नेताओं की सेवा में कहना चाहता हूं।

न तुम ही बचोगे न साथी तुम्हारे।
यह डूबेगी किश्ती तो डूबोगे सारे।

पिछले पांच वर्षों से मैं लगातार यह कहता चला आ रहा हूं कि इस बढ़ते हुए भ्रष्टाचार को रोको किसी ने मेरी नहीं सुनी अब मैं आर्य जनता के दरबार में आया हूं इस आशा के साथ कि शायद यहां सुनवाई हो जाए।

—वीरेन्द्र

हैदराबाद सत्याग्रह के सत्याग्रही

1938-39 में आर्य समाज ने हैदराबाद में अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए सत्याग्रह किया था। उस समय किसी को यह पता नहीं था कि 1947 में हमारा देश स्वतन्त्र हो जाएगा। निजाम हैदराबाद तो उस समय भी अपने आपको हैदराबाद का सर्वेसर्वा समझता था। अंग्रेज भी उसकी पीठ पर था। इसलिए वह जो करना चाहता था कर सकता था और करता भी था। चूंकि वह स्वयं एक कट्टर मुसलमान था, इसलिए यह सहन नहीं कर सकता था कि उसकी रियासत में आर्य समाज का प्रचार हो। इसलिए उसने कई तरह के प्रतिबन्ध लगा दिए। आर्य समाज ने इसे अपने लिए एक चुनौती समझा और वहां सत्याग्रह शुरू कर दिया। निजाम ने भी यह समझा कि यदि उसने उस समय आर्य समाज को न दबाया तो आर्य समाज उसे दबा देगा। इसलिए उसने सत्याग्रह को दबाने के लिए हर सम्भव प्रयास किया। सारे देश से आर्य समाज के जत्थे वहां पहुंचने लगे। पंजाब से भी श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी जो उस समय लाला खुशहाल चन्द थे और श्री महाशय कृष्ण जी के नेतृत्व में दो बड़े जत्थे वहां गए थे। श्री महात्मा नारायण स्वामी जी और स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी हैदराबाद में इस सत्याग्रह की देखरेख कर रहे थे। निजाम की सरकार ने सत्याग्रहियों पर लाठियां भी चलाईं और गोलियां भी चलाईं, कई जेल में ही शहीद हो गए और उसे देखते हुए गांधी जी ने कहा था कि ऐसा शान्तिपूर्ण सत्याग्रह मैंने पहले नहीं देखा। उसका एक परिणाम यह भी हुआ कि गांधी जी और कांग्रेस के दूसरे नेताओं को उस सत्याग्रह में दिलचस्पी पैदा हो गई और उन्होंने निजाम पर यह दबाव डालना शुरू किया कि वह आर्य समाज के साथ समझौता कर ले और वह अन्ततः हो गया आर्य समाज की सभी मांगें स्वीकार कर ली गईं और जो लोग जेलों में बन्द थे उन्हें रिहा कर दिया गया।

आज से कुछ वर्ष पूर्व जब भारत सरकार ने यह निर्णय किया कि जिन लोगों ने स्वाधीनता संघर्ष में कोई भाग लिया था उन्हें पैंशन दी जाए। तो आर्य समाज ने यह मांग भी की थी कि हैदराबाद सत्याग्रह के सत्याग्रहियों को भी इस में शामिल किया जाए। उन्होंने जो संघर्ष किया था वह केवल अपने अधिकारों की रक्षा करने के लिए नहीं बल्कि धर्म की रक्षा करने के लिए किया था और चूंकि उस समय निजाम हैदराबाद और अंग्रेज के बीच समझौता हुआ था इसलिए यह लड़ाई एक तरह से धर्म और देश दोनों के लिए समझी गई थी। यही कारण था कि गांधी जी तथा देश के अन्य नेताओं ने उस सत्याग्रह में इतनी दिलचस्पी ली थी।

भारत सरकार पहले इस मांग को स्वीकार करने को तैयार नहीं थी अब उसने मान ली है। और हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेने वालों को भी स्वतन्त्रता सेनानियों में शामिल करने का निर्णय किया है। उन्हें भी प्रथम जून 1985 से उसी तरह 500 रुपए मासिक की पैंशन दी जाएगी जिस तरह कि उन लोगों को दी जाती है जिन्होंने स्वाधीनता संघर्ष में भाग लिया था। यह घटना पचास वर्ष पुरानी है। पता नहीं उस सत्याग्रह में भाग लेने वालों में से अब कितने शेष जीवित हैं। जो हैं उन्हें यह पैंशन मिल जाएगी या उन विधवाओं को मिलेगी, जिनके पतियों ने हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लिया था। इसके अतिरिक्त और किसी को नहीं मिलेगी। इसलिए जो अभी इस पैंशन के अधिकारी हैं उन्हें अपनी-अपनी सरकार के मुख्य सचिव को तुरन्त लिख देना चाहिए कि वे इस पैंशन के अधिकारी हैं और उन्हें यह मिलनी चाहिए। इस सम्बन्ध में यदि कोई और जानकारी प्राप्त करनी हो तो वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से अथवा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन आसफ अली रोड नई दिल्ली से मिल सकेगी।

—वीरेन्द्र

लुधियाना में दीपावली पर्व

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में ऋषि निर्वाणोत्सव 10 नवम्बर से 17 नवम्बर तक समारोह से मनाया जाएगा।

12 नवम्बर को ऋषि निर्वाणोत्सव सम्बन्धी रात्रि 10 बजे तक समारोह होगा, जिसमें उच्चकोटि के विद्वान् तथा भजनोपदेशक भाग लेंगे।

17 नवम्बर रविवार को पंजाब स्तरीय भजन व संगीत प्रतियोगिता होगी, जिसमें सभी कालेजों व स्कूलों की टीमें भाग लेंगी।

साम्प्रदायिक दंगे क्यों होते हैं

ले.—श्री विशन स्वरूप गोयल

(गताक मे आगे)

सूरा—4 अन-इनसा आयत सख्या 150-151-152 पारा-5 'जो लोग अल्लाह और उसके रसूलो के साथ इन्कार की नीति अपनाते हैं, और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलो के बीच अन्तर करे और कहते हैं हम किसी को मानेंगे और किसी को न मानेंगे और इन्कार और ईमान के बीच से राह निकालना चाहते हैं, वे सब पक्के काफिर है और ऐसे काफिरो के लिए हमने यह यातना तैयार कर रखी है जो उन्हें अपमानित कर देने वाली होगी-इसके विपरीत जो लोग अल्लाह और उसके सभी रसूलो को माने, और उनके बीच अन्तर न करें उनको हम उनकी मजदूरिया देंगे।'

सूरा—5 अल-माइदा पारा-6 आयत सख्या 33 34 'जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लडते हैं और धरती मे दौड धूप इसलिये करते फिरते हैं कि बिगाड पैदा करे उनका दण्ड यह है कि उनका वध किया जाए या सूली पर चढाए जाये या उनके हाथ पैर विपरीत दिशाओ से कट डाले जाये, या उन्हे देश निकाला दे दिया जाए। यह अपमान और तिरस्कार तो उनके लिये इस दुनिया मे है और परलोक मे उनके लिए इससे बडा दण्ड है।'

यहा हिन्दी अनुवादक ने अपने फुट नोट 27 मे कहा है कि धरती से अभिप्रेत यहा वे देश है या अधिक्षेत्र हैं जिन मे शांति और प्रबन्ध की व्यवस्था करने का दायित्व इस्लामी हकूमत ने स्वीकार कर लिया हो अर्थात जहा इस्लामी हकूमत हो और अल्लाह और उसके रसूल से लडने का अर्थ उस स्वस्थ प्रणाली के विरुद्ध युद्ध करना है जो इस्लामी हकूमत ने देश मे स्थापित कर रखी है।'

इस सूरा और पारा की आयत 51 'हे लोगो जो ईमान लाए हो अर्थात मुसलमान हो यहूदियो और ईसाईयो को अपना साथी और मित्र न बनाओ ये आपस मे एक दूसरे के मित्र हैं अगर तुम मे से कोई इनको अपना दोस्त बनाता है तो उसकी गिनती भी इन्ही काफिरो मे होगी। निस्सन्देह अल्लाह अत्याचारियों को सीधे रास्ते से वचित कर देता है।'

सुरा—8 अल अनफाल पारा 9 आयत सख्या-38-39 हे लोगो जो ईमान लाए हो इन काफिरो से युद्ध करो यहा तक कि फितना बाकी न रहे और धर्म पूरा का पूरा अल्लाह के लिए हो जाए अर्थात सभी लोगो मुसलमान बना डालो। फिर अगर वे फितना से रुक जायें तो उनके कर्मों को देखने वाला अल्लाह है, और अगर वे न मानें तो जान रखो कि अल्लाह तुम्हारा सरक्षक है और वह सबसे अच्छा सरक्षक और सहायक है।'

इसी सूरा और पारा की आयत सख्या 65—हे नबी, ईमान वाला अर्थात मुसलमानो को लडाई के लिए उभारो अगर तुम मे से 20 आदमी धैर्यवान हो तो दो सौ पर विजयी होंगे और अगर सौ आदमी ऐसे हो तो सत्य को इन्कार करने वाले हजार आदमियो पर भारी रहेंगे क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो समझ नही रखते। सूरा 47 मुहम्मद पारा 26-आयत सख्या 3 अत जब इन्कार करने वालो अर्थात मुसलमान बनने से इन्कार करने वालो से तुम्हारी मुठभेड हो तो पहला काम गरदनें मारना है यहा तक कि जब तुम उनको अच्छी तरह कुचल दो तब कैदियो को मजबूत बाधो। इस के बाद तुम्हे अधिकार है एहसास करो या फिर दया अर्थात अर्थ दण्ड का मामला करो, यहां तक कि लडाई अपने हथियार डाल दे। यह है तुम्हारे करने का काम।

इस प्रकार की कुरान मे अधिकाश आयतें हैं। यहा तो केवल 19 आयतें नमूने के तौर पर ही प्रस्तुत की गयी हैं ताकि पाठको को जानकारी मिल सके। इन आयतो को यहा प्रस्तुत करने से कुरान और इस्लाम का विरोध करना हमारा लक्ष्य नही है यह तो मात्र जानकारी दिलाने के लिए ही ऐसा किया गया है। क्योंकि वास्तव मे कुरान को न तो सभी मुसलमान पढते हैं और न ही अन्य मजहब वाले। मुसलमान भी जो इसे पढते है वे सभी केवल इसे इसलिए पढते हैं कि यह कलामे पाक है और उसके पढने से अल्लाह की इबादत होती है। बहुत कम मुसलमान ऐसे हैं जो कुरान शरीफ की अरबी आयतो का अर्थ समझते हैं और उन पर गहराई से विचार करते हैं। इस्लाम के अनुयायियो की इसी नादानकारी का लाभ कट्टरपन्थी मुल्ला और मौलवी पूरी तरह उठा कर इस्लाम कुरान और शरीयत के नाम पर कुछ पेशेवर शातिर बदमाशों को मजहबी जनून मे रग कर दगा कराने के लिए भडका देते हैं जिनके परिणाम स्वरूप लाखों की सम्पत्ति ही नष्ट होती ही है साथ ही हजारो बेगुनाह लोगो और मासूम बच्चो को भी अपनी जान से हाथ धोने पडते हैं।

वास्तव में इस्लाम के अनुयायियों को कुरान की उन्हीं आयतों पर अमल करना चाहिए जो अल्लाह की इबादत के लिए है। शेष आयतें जो अन्य सम्प्रदाय वालो के प्रति नफरत पैदा करती हैं उन पर ध्यान नहीं देना चाहिए। क्योंकि कुरान अब से 1500 साल पहले मक्का और मदीना मे उतारी गई आयतें हैं। उस समय जब हजरत मुहम्मद ने इन आयतों को लिखवाया होगा उस समय वहां के हालात के अनुसार ऐसा लिखवाना आवश्यक प्रतीत होता होगा और वह भी केवल अरब में। कुरान केवल अरब के लोगो के लिए ही लिखी गयी थी इसीलिए वह अरबी भाषा मे ही लिखी गयी।

किन्तु उस समय के वातावरण के अनुसार जो आयतें अरब के लोगो के लिए लिखी गयी थीं उन्हें अब यहा हिन्दुस्तान में मान कर चलना उचित नही है क्योंकि प्रत्येक देश मे सभी कानून और नियम उस देश की सभ्यता, सस्कृति और वातावरण के अनुसार बनाये जाते हैं न कि अन्य विदेशी सस्कृति के आधार पर। क्योंकि कुरान अरब के लोगो के लिए है इसलिए उसके आदेशो या शिक्षाओ को यहा लागू करने का कोई औचित्य नही है। यहा एक बात और भी उल्लेखनीय है कि कुरान के अनुसार ही सारी दुनिया अल्लाह ने ही बनायी है और वही सब का पालन करने वाला है फिर जो इन्सान अल्लाह ने ही पैदा किए हैं उन्हे मारने या काटने का क्या हक है वह तो अल्लाह के बनाए हुए हैं चाहिए तो यह कि अल्लाह की पैदा की हुई चीज की रक्षा करे। यदि मुसलमान दोस्त कुरान की आयतो के अनुसार गैर मुस्लिमो के साथ मार काट करते है तो वह तो कुरान के अनुसार अल्लाह का ही विरोध करना है।

अभी हाल में ही एक मुस्लिम खातून शाहबानो जिसे उसके पति ने बुढापे में तलाक देकर घर से निकाल दिया था। जब उसने अपने पति से अपने बुढापे के लिए खर्चा मांगा तो उसने कुरान का वास्ता देकर उसे खर्चा देने से इन्कार कर दिया इस पर बेचारी को जब कोई रास्ता न मिला तो उसने सुप्रीम कोर्ट मे अपने गुजारे के खर्चे के लिए याचिका दायर कर दी। सुप्रीमकोर्ट ने उस खातून को उसके पति से खर्चा दिए जाने के पक्ष में फैसला दिया है। इस पर बहुत सारे कट्टरपन्थी मुल्लाओं और मौलवियों ने हा-हुल्ला मचा दिया है कि यह तो मुस्लिम परसनल-ला मे हस्तक्षेप है। समझ में नहीं आता कि ये कट्टरपन्थी लोग अरब में रहते हैं या हिन्दुस्तान में। कुरान, शरीअत और मुस्लिम परसनल-ला के अनुसार तो केवल अरब वासियों के लिए बनाये गये थे न कि हिन्दुस्तान वासियों के लिए। पता नहीं यहा के ये कट्टरपन्थी यह क्यो भूल गए हैं कि ये स्वतन्त्र हिन्दुस्तान जहां लोकतन्त्र की सरकार है यहा रहते हैं यहां किसी मजहब या इस्लाम की सरकार नहीं है। यहा तो सभी के लिए समान कानून का हक है और हर उस आदमी को जिसे कोई तकलीफ है अदालत में जाने का हक है इसके अलावा इन्सानियत का भी यही तकाजा है कि जब एक औरत तुम्हारे पास 30-32 साल तक तुम्हारे बच्चों की मां रही और तुम्हारी वासना की पूर्ति करती रही तो वह बुढापे में कहां जाए और अपने गुजारे के लिए दर-दर की भीख मांगती फिरे क्या इस बात को जिसमें जरा सी इन्सानियत है कोई स्वीकार कर सकता है या इसे उचित मान सकता है। शाहबानों के पति को चाहिए तो यह था कि वह इसे बिना अदालत में आए ही उसके गुजारे के लिए खर्चा देता।

यहा एक बात और भी कहना उचित ही होगा कि जब यहा के कट्टरपन्थी मुसलमान यहां इस हिन्दुस्तान देश में अरब के लिए बने कानूनो को लागू करना चाहते हैं जो अनुचित है क्योंकि दुनिया के किसी भी देश मे ऐसा नही जहा विदेशी सभ्यता के आधार पर कानून बने हों। यदि यहा उन कट्टरपन्थी मुसलमान दोस्तो से यह कहा जाए कि क्या वे पाकिस्तान में रहने वाले हिन्दुओ के लिए कोई हिन्दू परसनल-ला बनवाने के लिए भी आन्दोलन करेंगे तो उनके पास क्या जवाब होगा यही कि नही। क्यों इसलिए पाकिस्तान एक इस्लामी देश है और वहा कानून इस्लाम के अनुसार ही है। इसी प्रकार हिन्दुस्तान हिन्दू राष्ट्र है यहां हिन्दू कानून चलेंगे न कि मुस्लिम कानून। ब्रिटेन में जो मुसलमान रहते हैं क्या वहा उन्हें कोई मुस्लिम परसनल-ला जैसी छूट मिली है। बिल्कुल नहीं। तो फिर यहा ही ऐसा क्यो वावेला है।

इसी सुप्रीमकोर्ट के फैसले को लेकर एक आजमगढ के कट्टरपन्थी इमाम जिन्होंने अपने राजस्थान के पाली नगर में खिलाफत में भाषण देते समय जो जहर उगला है उसके लिए हमारी सरकार को चाहिए कि इस प्रकार के लोग जो देश में खून की नदियां बहाने तक की बात करते हैं और एक सम्प्रदाय के प्रति नफरत पैदा कर देश में अराजकता फैलाते हैं उन्हें गिरफ्तार कर उन पर मुकद्दमा चलाए इन इमाम साहेब जिनका नाम ओबेदुल्लाह खां है ने कहा है, मुस्लिम

(शेष पृष्ठ 7 पर)

व्याख्यान माला—

धर्म से ही सुख को पाया जाता है

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर पंजाब

ओ३म्

(15 सितम्बर से आगे)

स मां पिता यथा शास्ति सत्यधर्मपथे स्थितः ।
तथा वर्तितुमिच्छामि स हि. धर्मः सनातन ॥ 72 ॥

सत्य धर्म पर स्थित पूज्य तात चरण जैसे मुझे अनुशासित करते हैं मैं वैसा ही करना चाहता हू यही पुराना धर्म है ।

वेदोक्त: परमो धर्म: स्मृतिशास्त्रगतोऽपर:
शिष्टाचीर्णोऽपर प्रोक्तस्त्रयो धर्मा: सनातन ॥73॥

वेदो द्वारा प्रतिपादित वचन परम धर्म है । स्मृतियो और शास्त्रों मे होने वाले वचन दूसरे स्थान पर हैं तथा उसके पश्चात् शिष्टजनो द्वारा आचरित धर्म भी पुरष धर्म है ये तीनों पुरातन धर्म हैं ।

नित्य. स्वाध्यायितो धर्मो धर्मो यज्ञ सनातनः ।
दान प्रशास्यते चास्य यथाशक्ति यथा विधि ॥74॥

नित्य स्वाध्याय करना धर्म है, नित्य यज्ञ करना भी पुरातन धर्म है, तथा विधि अनुसार यथा शक्ति दान देना भी प्रशस्य होता है और यह भी मनुष्य का पुराना (सनातन) धर्म है ।

प्रातरुत्थाय चाचम्य भोजने नोपमन्त्र्य च ।
सत्कृत्यानुव्रजेद्यस्तु तस्य धर्मः सनातन ॥ 75 ॥

श्रेष्ठ मनुष्य को योग्य है कि वह प्रातः उठकर आचमन करके भोजन के लिए अतिथि को निमन्त्रण देकर सत्कार करके उसे पहुचाने के लिए भी कुछ दूर उसके पीछे जाए यह पुराना धर्म है ।

अभक्ष्यपरिहारश्च ससर्गश्चाप्यनिन्दितै: ।
स्वधर्मे च व्यवस्थान शौचमित्यभिधीयते ॥76॥

न खाने योग्य वस्तु का त्याग करना अनिन्दित—प्रशसनीय, सज्जनो का सग करना और अपने कर्तव्य पर स्थिर रहना ही शौच (पवित्रता) कहलाता है ।

नास्तिक्यं वेदनिन्दान्च देवतानान्च कुत्सनम् ।
द्वेष दम्भञ्च मानञ्च क्रोध तैक्ष्ण्यञ्च वर्जयेत् ॥77॥

नास्तिकता ईश्वर की सत्ता को स्वीकार न करना वेद निन्दा करना देवताओ की निन्दा, द्वेष करना, दिखावा करना, व्यर्थ मे अभिमान करना, क्रोध करना तथा कठोर स्वभाव इन सब को त्याग देना चाहिए ।

परापवाद न ब्रूयात् न अप्रियञ्च कदाचन ।
न मन्यु. कश्चित् उत्पाद्य. पुरुषेण सुखार्थिना ॥78॥

सुख चाहने वाले सज्जन को दूसरे की निन्दा न ही करनी चाहिए, न ही कभी अप्रिय वचन ही बोले तथा किसी मे क्रोध भी पैदा न करे ।

यावत्स्वस्थमिदं देहं यावन्मृत्युश्च दूरत: ।
तावदात्महित कुर्यात्प्रणान्ते किं करिष्यति ॥79॥

जब तक यह शरीर स्वस्थ है जब तक मृत्यु दूर है, तब तक अपने आत्मा को जो धर्म कल्याणकारी हैं सत्कर्म करने चाहिए प्राण चले जाने पर क्या करेगा ।

आयु क्षणलवमात्र न लभ्यते हेमकोटिभि· क्वापि ।
तच्चेद्गच्छति सर्वं मृषा तत· काऽधिका हानि ।80।

आयु के क्षण का कतरा करोडो सोने की मोहरो से भी नही मिलता फिर यदि सारी आयु ही व्यर्थ अर्थात् श्रेष्ठ कर्मों से रहित गुजर जाती है तो इससे बढकर और हानि क्या हो सकती है ।

अध्रुवेण शरीरेण प्रतिक्षण विनाशिना ।
ध्रुव यो नार्ज्जयेद्धर्म स शोच्यो मूढचेतन ।81।

क्षण क्षण मे विनाश होने वाले इस अस्थिर शरीर से जो मनुष्य स्थिर धर्म को इकठ्ठ नही करता वह मूढचेता शोक करने योग्य है ।

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः ।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मोहतोऽवधीत् ।82।

मारा हुआ धर्म ही मार डालता है और रक्षित किया हुआ धर्म रक्षा करता है इसलिए धर्म को न मारना चाहिए क्योकि कही अरक्षित धर्म हमे ही न मार देवे ।

यत्र धर्मो ह्यधर्मेण सत्य यत्रानृतेन च ।
हन्यते प्रेक्षमाणाना हतास्तत्र सभासद: ।83।

जहा अधर्म के द्वारा धर्म मारा जाता है और झूठ के द्वारा सत्य मारा जाता है, वहा देखने वाले सभासद मरे हुए समझो ।

धर्मस्य तस्य लिङ्गानि दया क्षान्तिरहिसनम् ।
तपो दानश्च शीलश्च सत्यं शौच वितृष्णता ।84।

दया, सहनशीलता, अहिसा, तप दान, शील सत्य, शौच (पवित्र) रहना और सन्तोष ये धर्म के दस चिन्ह हैं ।

सत्यादुत्पद्यते धर्मो दया दानाद्विवर्धते ।
क्षमया तिष्ठते धर्म क्रोधाद्धर्मो विनश्यति ।85।

सत्य से धर्म पैदा होता है, दान से दया बढती है, क्षमा से धर्म स्थिर रहता है, क्रोध से धर्म नष्ट होता है ।

अहिसा सत्यमस्तेय शौचामिन्द्रियनिग्रह ।
एत सामासिक धर्म चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनु ।86।

अहिसा सत्य, अस्तेय (चोरी न करना) शौच (पवित्रता) इन्द्रिय निग्रह यह चारो वर्णों मे मनु भगवान ने सबके लिए सामान्य धर्म कहा है ।

आर्जव धर्म मित्याहुरधर्मो जिह्ना उच्यते ।
आर्जवेनेह सयुक्तो नरो धर्मेण युज्यते ।87।

महान पुरुष सरलता को धर्म कहते हैं और कुटिलता को अधम कहते हैं क्योकि इस ससार मे सरलता से युक्त मनुष्य ही धम युक्त कार्यो मे युक्त होता है ।

सर्ववेदेषु वा स्नानं सर्वभूतेषु चार्जवम् ।
उभे एते समे स्यातामार्जव वा विशिष्यते ।88।

चारो वेदो का घोर अध्ययन तथा सब प्राणियो मे सरलता से व्यवहार करना ये दोनो बराबर हैं किन्तु फिर भी इन दोनो मे सरलता का व्यवहार ही विशेषता रखता है ।

ऋषि यज्ञ देव यज्ञ भूतयज्ञञ्च सर्वदा ।
नृ यज्ञ पितृ यज्ञञ्च यथाशक्ति न हापयेत् ।89।

ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ पितृ यज्ञ अतिथि यज्ञ, बलिवैश्व देव यज्ञ, ये पाच यज्ञ कभी नही छोडने चाहिए, इन्हे सदैव यथा शक्ति करते रहना चाहिए ।

(क्रमश)

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती व्यक्तित्व और कार्य

ले.—डा. भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ़

आर्य समाज के अद्वितीय विद्वान् ! लेखक शास्त्रार्थ महारथी और वक्ता स्वामी दर्शनानन्द का जन्म माघ कृष्ण दशमी 1918 विक्रमी को लुधियाना जिले के जगरावा नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम पण्डित रामप्रताप शर्मा था जो मोदगल्य गोत्र के सारस्वत ब्राह्मण थे। माता का नाम हीरादेवी था पुरानी प्रथा के अनुसार इनका नाम नैतराम रखा गया किन्तु शीघ्र ही इसे बदल कर इन्हें कृपाराम के नाम से पुकारा जाने लगा। कृपाराम की प्रारम्भिक शिक्षा पिता के निकट ही हुई तथा उन्होंने फारसी ग्रन्थ 'गुलिस्तां' तथा बोस्ता' पढ़े। साथ ही संस्कृत व्याकरण के ज्ञान के लिए सिद्धान्त कौमुदी पढ़ना आरम्भ किया। तत्कालीन प्रथा के अनुसार इनका विवाह वैशाख कृष्ण पचमी 1929 वि. को मात्र 11 वर्ष की आयु मे पार्वतीदेवी नामक कन्या से कर दिया गया।

कृपाराम के पिता अपने ग्राम के एक अच्छे व्यवसायी और धनाढ्य व्यक्ति थे उनकी हार्दिक इच्छा थी कि कृपाराम भी एक निपुण व्यापारी बनकर धनोपार्जन करे, परन्तु कृपाराम को व्यापार व्यव-साय से सहज विरक्ति थी। स्वतन्त्र प्रकृति के होने के कारण एक दिन अचानक वे गृह त्याग कर संन्यासी बन गए। सन्यासी बनकर वे पंजाब के विभिन्न नगरो मे घूमते रहे। इसी अवधि मे उन्हे स्वामी दयानन्द के 37 व्याख्यान सुनने का अवसर मिला। अब तक उन पर नवीन वेदान्त की विचार धारा का प्रबल प्रभाव था। इस समय उन्होंने जगे आजादी नामक 28 पृष्ठों की एक पुस्तक लिखी जो उर्दू पद्य में थी। जब दीनानगर (पंजाब) में वे एक पादरी से बहस कर रहे थे। उनके चाचा जयराम ने उन्हें जा पकड़ा और घर चलने के लिए विवश किया।

कृपाराम घर चलने के लिए तैयार तो हुए परन्तु तीन शर्तों के साथ 1 गेरुवे वस्त्रों नहीं उतारेंगे। 2, घर में न रहकर बैठक खाने में रहेंगे3. स्वामी दयानन्द के समस्त ग्रन्थ क्रय करेंगे। शर्तें स्वीकार होने पर ये पुनः घर लौट आए।

प. कृपाराम के पिता प. दौलतराम अपने जीवन के अन्तिम भाग में काशी रहने लगे थे। वहां उन्होंने एक क्षेत्र चलाया जिसके माध्यम से संस्कृत पढ़ने के इच्छुक छात्रों के भोजन आदि की व्यवस्था होती थी। पितामह के दिवंगत होने पर प. कृपाराम को काशी रहकर उनकी सम्पत्ति आदि की व्यवस्था करने के लिए कहा गया। यहां उन्होंने तिमिर नाशक प्रेस की स्थापना 10 दिसम्बर 1889 को की, तथा इस प्रेस के माध्यम से वे संस्कृत शास्त्र ग्रन्थों का प्रकाशन कर उन्हें सस्ते मूल्य पर छात्रों के देने लगे। यहां रहकर ही उन्होने स्वामी मनीषानन्द नामक विख्यात विद्वान् का शिष्यत्व ग्रहण किया तथा उनसे दर्शन शास्त्र का निगूढ़ अध्ययन किया। अब वे दृढ़ आर्य समाजी विचारों के बन चुके थे। काशी में रहकर विद्याध्ययन करने वाले आर्य समाजी छात्रों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। प. कृपाराम ने इसे अनुभव किया और उन्होंने एक पाठ-शाला स्थापित की जिसमें आर्य समाजी विचारधारा के छात्रों के पढ़ने की सुचारू व्यवस्था थी। पण्डित काशी-नाथ शास्त्री इस पाठशाला के अध्यापक थे तथा प. गंगादत्त शास्त्री एवं पं. भीम-सेन शर्मा (आगरा आदि उन दिनों विद्यार्थी थे।

धीरे-धीरे प. कृपाराम का क्षेत्र अधिक व्यापक होता गया। अब वे वैदिक धर्म के प्रचारक बनकर पंजाब तथा संयुक्त प्रान्त में भ्रमण करने लगे। 1893 से 1896 तक का काल उक्त दोनों प्रान्तो में व्यय किया। 1897 से 1900 तक वह मुरादाबाद दिल्ली, आगरा आदि नगरों में रहे। नियमित रूप से शास्त्रार्थ करना व्याख्यान देना एक ट्रैक्ट रोज लिखना, शंका समाधान करना आदि उनकी दिनचर्या के अंग थे। सं. 1901 में प. कृपाराम ने संन्यास की दीक्षा स्वामी अनुभवानन्द से ली और दर्शनानन्द नाम स्वीकार किया। अब वे सर्वतन्त्र परिव्राजक होकर तिर्द्वन्द भाव से विचरण करने लगे। स्वामी दर्शना-नन्द की प्रवृत्तियां निम्न प्रकार से वर्णित की जा सकती है—

1. अग्निहोत्री सर्वावलम्बियों से शास्त्रार्थ। उन्होंने पौराणिक जैन, ईसाई इस्लाम मतों के आचार्यों से सैकड़ों शास्त्रार्थ किए।

2. गुरुकुलों की स्थापना—सिकन्दरा-बाद (उत्तर प्रदेश) बदायूं तथा ज्वाला-पुर गुरुकुलों की स्थापना का श्रेय उन्हें ही है।

3. विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन एवं प्रकाशन अपने जीवनकाल में उन्होंने कोई एक दर्जन पत्र प्रकाशित किए।

4. लेखन कार्य स्वामी जी ने 1896 से एक ट्रैक्ट प्रतिदिन लिखने का नियम बना लिया था। इस प्रकार उनकी लेखनी से सैकड़ों ट्रैक्ट निकले। उन्होंने अनेक दर्शनों का भाष्य किया, उपनिषदों पर टीका लिखी तथा कहानियों के माध्यम से धार्मिक सिद्धान्तों का विवेचन करना उनके साहित्य लेखन की एक अन्य विशिष्टता थी। 11 मई 1913 को ज्वालापुर में उनका निधन हुआ।

—

आर्य वीर दल ही क्यों ?

ले. श्री डा. आनन्द प्रकाश जी

सार्वदेशिक सभा ने आर्य वीर दल संगठन का प्रत्येक आर्य समाज तक विस्तार करने और शक्तिशाली बनाने का आवाहन किया है। देखने में आ रहा है कि पिछले दो तीन वर्षों में आर्य वीर दल के कार्य में विशेष प्रगति हुई है, अनेक स्थानों पर शिविर लगे और दल के प्रति युवकों का आकर्षण बढ़ा। कुछ आर्य प्रतिनिधि सभाएं भी दल के कार्य को प्रोत्साहित कर रही हैं। आर्य वीर दल के प्रधान संचालक माननीय बाल दिवाकर हंस जी के नेतृत्व कौशल का ही यह परिणाम है कि आर्य वीर दल का कार्य निरन्तर प्रगति करता जा रहा है। आर्य समाज से सम्बन्धित युवा वर्ग ने अनेक अन्य नामों से भी संगठन बना रखे हैं। कुछ संगठन ऐसे भी हैं जो अपने नाम में आर्य शब्द का तो प्रयोग नहीं करते पर उनके कार्यक्रम आर्य समाज के अनुकूल है। ऐसे कार्यक्रम बहुधा समाज-वादी और क्रान्तिकारी शब्दों द्वारा परि-भाषित किये गये हैं। मैं समझता हूं कि यह सभी आर्य युवक संगठन अपनी-अपनी दृष्टि से आर्य समाज के कार्यक्रमों को लागू कर रहे हैं। परन्तु मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि आर्य वीर दल की अपनी विशेषता है इसका कोई विकल्प नहीं है। इस दल की उत्पत्ति ही आर्य समाज की रक्षा के लिए हुई। शारीरिक बौद्धिक एवं आत्मिक विकास कार्य पूरा कार्यक्रम केवल मात्र दल के पास ही है। विदेशों में भी जहां-जहां पर आर्य समाज पहुंचा है, उनमें से अधिकांश स्थानों पर आर्य वीर दल की भी स्थापना हो चुकी है। अतः आर्य प्रतिनिधि सभाओं तथा अन्य आर्य संस्थाओं एवं आर्य समाजों को आर्य वीर दल नाम से ही युवकों का संगठन बनाना चाहिए।

ज्ञातव्य है कि सार्वदेशिक सभा द्वारा सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक की नियुक्ति की जाती है जो प्रान्तीय संचालकों की नियुक्ति करता है यह समस्त प्रान्तीय संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल समिति के सदस्य होते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभाएं अपने प्रान्त में आर्य वीर दल अधिष्ठाता की नियुक्ति करती हैं, जो प्रान्तीय आर्य वीर दल समिति का प्रधान होता है। आर्य प्रति-निधि सभा के मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष, प्रान्तीय आर्य वीर दल समिति के पदेन सदस्य होते हैं। प्रान्त में आर्य वीर दल के कार्य को संचालित करने का उत्तर दायित्व संयुक्त रूप से अधिष्ठाता और संचालक का होता है। इसी प्रकार मंडल (जिला) और नगर स्तर पर भी आर्य वीर दल समितियों का गठन होता है जिनमें आर्य समाज के अधिकारियों का प्रतिनिधित्व रहता है। इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि आर्य वीर दल ही एक मात्र मान्यता प्राप्त युवा संगठन है। और इसकी समितियों में प्रत्येक स्तर पर आर्य समाज का प्रतिनिधित्व ही नहीं, इसका नियन्त्रण भी है।

आर्य वीर दल की शक्ति पर ही आर्य समाज का भविष्य निर्भर करता है, युवा शक्ति की क्षमता का सही उपयोग करने पर ही भावी पीढ़ी का निर्माण होगा। उसके लिए यह आवश्यक है कि उनकी आकांक्षाओं का उचित मूल्यांकन किया जाए। दल की ओर से जो सामा-जिक उत्थान के कार्यक्रम भी निर्धारित किए जाएं। वे मुख्य रूप से जाति भेद समाप्ती, अस्पृश्यता निवारण, प्रौढ़ शिक्षा, दहेज उन्मूलन, नैतिक उत्थान तथा बेकारी व दरिद्रता उन्मूलन से सम्बन्धित होने चाहिए। पर इनकी विशेषता यह होगी कि उनमें जीवन के श्रेष्ठ कर्तव्य ... वैदिक आदर्श-दिव्य ... तथा ... उपयोगिता ... साहित्य का भी परिचय दिया जायेगा।

—

अन्तर्वेदना

ले,...कविवर 'प्रणव' शास्त्री एम- ए, महोपदेशक
शास्त्री सदन राम नगर (कटरा) आगरा (उ. प्र.)

अभी विजय की देवी का सम्न।
अभिनन्दन हम कर न सके हैं।

अभी उषा की किरण कहाँ ?. सूर्योदय में देर अभी है।
प्रजातन्त्र की पदपद्धति में छाया अति अन्धेर अभी है।
कृषि प्रकाश के पुत्रों का प्रिय पद वन्दन हम कर न सके हैं।1।

सहमी-सहमी मानवता है, दानवता का नृत्य हो रहा है।
आततायी दल बल छल से कृत्यो में कृत-कृत्य हो रहा।
स्वत्व सुरक्षा कन्याओं का कम क्रन्दन हम कर न सके हैं।2।

मृग-मारीच कुलायें भरते खर-दूषण को डर न कहीं हैं।
सुरसा वृत्ति, ताड़िका मादिनी जनता में ही नाच रही है
अभी राम के चरितों का चिर अनुवन्दन हम कर न सके हैं।3।

भ्रष्टाचार भुजङ्ग भयानक नहीं किसी से नथ है पाया।
महगाई का झण्डा देखो उच्च गगन मे फहराया।
सत्य भक्ति के शक्ति शिखर का जयवन्दन हम कर न सके हैं।4।

राष्ट्रीय निष्ठा की नौका मे कितने ही छेद हुए हैं।
मानो चाहे मत मानो मतभेदों से ही भेद हुए हैं।
ऐक्य धार से हरा भरा यह जिजनन्दन हम कर न सके हैं।5।

छोटा सा यह चाद गगन मे सूरज को है आख दिखाता।
आश्चर्य है पिटा पिटाया जीते को है दांव सिखाता।
निर्भय प्रगति पन्थ में अपना कहीं स्पन्दन हम कर न सके हैं।6।

—

ऐसी हो सर्व कल्याणकारी शिक्षा नीति

जिसमें—

1. पाखण्ड झूठे चमत्कार एव भाग्यवाद के स्थान पर सत्यमेव जयते के उद्घोष से युक्त सदा सत्कार्यों में संलग्न और आत्म निर्भर बनाने हेतु सत्य ज्ञान व विज्ञान की साधना हो।

2, आलस्य, अहकार तथा स्वार्थ से उत्पन्न हुए राष्ट्रद्रोह के स्थान पर परोपकार एव पुरुषार्थ पूर्वक वैदिक ऋषियो व राष्ट्रीय शहीदो के ऋण उतारने हेतु भक्ति के सच्चे गौरवमय वेद शास्त्र तथा इतिहास के अध्ययन सहित भारतीय भाषा, भूषा-भैषज एव भजन की भावना हो।

3. [illegible], [illegible] एव [illegible] से उत्पन्न हुई आतंक एवं हिंसा आदि पाप वृद्धि के स्थान पर सम्पूर्ण शक्ति [illegible] भाव तथा सर्व कल्याण हेतु निराकार सर्व व्यापक सृष्टि रचयिता [illegible] परमात्मा की आराधना हो।

4 स्वतन्त्रता, इन्द्रिय लोलुपता एव दुराचार व्यभिचार, भय एव अनेक शारीरिक रोगो के स्थान पर आत्म सयम स्व-अनुशासन निर्भीक वातावरण व राष्ट्र के बल वर्धन हेतु ब्रह्मचर्य की उपासना हो।

विद्यार्थियों को लाभ—

1 विद्या एकत्रित करोगे तो और एकत्रित न करना होगा।

2 माता-पिता गुरु एव देश बलिदानियों के समक्ष झुकने वालो को किसी और के सामने झुकना न होगा।

3 यदि ईश्वर से भय करोगे तो किसी और से कभी भयभीत न होना होगा।

4 अपने चरित्र को सुन्दर रखोगे तो अधिक सुन्दरता के लिये बाहरी शृगार का गुलाम न होना होगा।

—रिछपालसिंह आर्य (चण्डीगढ)

—

बम्बई में आर्य ध्यान योग केन्द्र का उद्घाटन

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई के 41वें स्थापना दिवस पर नव-निर्मित वातानुकूलित ध्वनि शून्य भारत वर्ष की आर्य समाजो मे सर्व प्रथम योग केन्द्र का उद्घाटन पूज्य स्वामी सत्यपति जी के कर कमलो द्वारा किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए स्वामी जी महाराज ने कहा,कि आर्य समाज ने यह कार्य करके अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया है इसकी बहुत बड़ी आवश्यकता थी जो पूरी हो रही है। मुझे आशा है कि इस ध्यान योग केन्द्र से बम्बई को जनता अधिक से अधिक लाभान्वित होगी। इसे देखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है। यहा आकर वास्तविक शान्ति मिलती है यहा आकर ध्यान लगाया जा सकता है। ऐसे ध्यान केन्द्र का निर्माण प्रत्येक नगर मे होना चाहिए। परमात्मा यहा के कार्यकर्ताओ को शक्ति प्रदान करें, जिससे ऋषि के अधूरे कार्यों को पूरा करते रहे।

अन्त मे सहामन्त्री कैप्टन देवरत्न आर्य ने बताया कि इस ध्यान योग केन्द्र के लिए श्री राजेन्द्र बाहरी जी ने 20000 रुपये की वातानुकूलित मशीन तथा श्री केवल कृष्ण जी मेहरा ने ऊनी कालीन भेंट किया है। इनके सहयोग से हम इसे पूरा कर पाए हैं।

समारोह का सयोजन आर्य समाज सान्ताक्रुज ट्रस्ट बम्बई के तत्वावधान मे किया गया। स्थापना दिवस पर बम्बई की समस्त आर्य समाजो ने बड़े उत्साह पूर्वक भाग लिया। प्रीति भोज के साथ यह समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह का सयोजन आर्य समाज सान्ताक्रुज ट्रस्ट के ट्रस्टी कैप्टन आर्य ने की।

—

(4 पृष्ठ का शेष)

किसी कोर्ट के पाबन्द नहीं हैं, वे किसी कोर्ट मे सफाई देने नही जाए गे लेकिन कुरान या परसनल ला के खिलाफ कोर्ट मे जाने वालो का सफाया कर दिया जाएगा। यदि परसनल-ला बदलने की कोशिश हुई तो राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के सरसघ चालक बाला साहेब देवरस भाजपा के अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी और देश के प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी को भी कलमा पढने के लिए मजबूर होना पड सकता है। इस प्रकार के कट्टरपन्थी लोग ही एक इन्सान को दूसरे इन्सान की जान लेने के लिए भडकाते है जबकि अल्लाह के लिए सभी इन्सान बराबर हैं और उसके ही पैदा किए हुए है। ओबेदुल्लाह खा को समझ लेना चाहिए कि वह हिन्दुस्तान मे रहते हैं अरब या पाकिस्तान मे नही। कुरान तो केवल अरब वालो के लिए ही है हिन्दुस्तान वालो के लिए नहीं। यहा तो यहा की संस्कृति और सभ्यता के अनुसार ही कानून चल सकता है। यदि उन्हे ऐसा ही करना है तो अच्छा हो कि वह अरब चले जाए। ऐसे लोगो को यहा के लोकतन्त्रीय देश में रहने का कोई अधिकार ही नही है।

यहा का बहुसख्यक समाज जो हिन्दू है वह किसी भी अन्य सम्प्रदाय से न घृणा करता है और न किसी को मारने-काटने की बात करता है। इसीलिए कहा गया है वसुधैव कुटुम्बकम्' सारी दुनिया एक परिवार है। यहा तो जियो और जीने दो की नीति है। सबपन्थ समभाव है न किसी अन्य सम्प्रदाय को समाप्त करने की। यहा बलय में कुरान या परसनल-ला की बात करना अनुचित और अव्यवहारिक ही है। यहा के प्रबुद्ध मुसलमान दोस्तों को चाहिए कि वे यहा के लोगो और अन्य सम्प्रदायो के साथ प्रेम व्यवहार करे। इस देश को अपनी मातृ भूमि माने। क्योकि उनके पूर्वज भी हिन्दू ही थे। उन्हे नही भूलना चाहिए कि उनके पूर्वजो को इन्ही कट्टरपन्थी लोगो ने तलवार के बल पर कठोर यातनाए देकर मुसलमान बना लिया था इसलिए हमारे मुस्लिम दोस्तो को अपने पूर्वजो पर हुए अत्याचारो को नहीं भूलना चाहिए और इस देश की मुख्य धारा में शामिल हो जाना चाहिए भले ही उनकी पूजा विधि कोई हो।

अब समय आ गया है जब हमारी सरकार को भी कुरान की इन आयतों को समझना होगा जिनके आधार पर मुसलमान दगा करते है क्योकि उनकी कुरान ही दगा करने की शिक्षा देती है। इसलिए अब अल्पसख्यक और बहुसख्यक के भेदभाव समाप्त कर सभी के लिए एक समान लिखित कानून बनाया जाए। इसी के साथ आज कश्मीर घाटी एक मिनी पाकिस्तान बन चुकी है इसके लिए सविधान की धारा 370 ही उत्तरदायी है इसलिए इस धारा को भी तुरन्त समाप्त कर देना चाहिए ताकि देश की अखण्डता और एकता तथा सुरक्षा बनी रहे। यदि ऐसा न किया गया तो ये कट्टरपन्थी लोग जब तक यहा कुरान की आयतो पर अमल करते रहेगे, तब तक इस देश के मुस्लिम-हिन्दू दगो को समाप्त करना असम्भव है।

अन्त मे हमारे मुस्लिम दोस्तो को भी अब सोच लेना चाहिए कि वे देश की मुख्य धारा में शामिल होकर देश के अन्य सभी सम्प्रदायों के साथ भाईचारा बरतें और देश की अखण्डता, एकता तथा तथा सुरक्षा के लिए कन्धे से कन्धा मिला कर काम करें। तभी उनकी वफादारी प्रमाणित हो सकेगी।

—

आर्य समाज धूरी में वेद प्रचार

आय समाज धूरी मे वेद प्रचार 16 अक्तूबर से 20 अक्तूबर तक महात्मा प्रेम प्रकाश वानप्रस्थी जी (प्रधान जिला आय सभा संगरूर की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रचार काय में स्वामी मनीषानन्द जी गुरुकुल एटा प शिवराज जी शास्त्री एम, ए मौलवी फाजिल श्री सीताराम जी श्री श्रीरामजी, प अमरसिंह जी कुरुक्षेत्र प जगनराम भजनोपदेशक कुरुक्षेत्र साथ मे हरियाणा की प्रसिद्ध भजन मण्डली ने भाग लिया।

13 अक्तूबर से 15 अक्तूबर 85 तक दयानन्द स्पोर्टस क्लब धूरी मुख्यक आय समाज धूरी की ओर से ओपन बैडमिन्टन व टेबल टेनिस के टूर्नामैन्ट करवाए गए। जिसमे पंजाब भर के खिलाडियो ने भाग लिये।

16 अक्तूबर 85 को विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। जिसमे आय समाज के सदस्यो के अलावा आर्य कालेज अ र हु गर सैकण्डरी स्कूल व एम चौधरी आय माडल स्कूल धूरी के छात्र छात्राओ व अध्यापक वर्ग ने भाग लिया। इस शोभा यात्रा का नगर निवासियो पर बहुत अच्छा प्रभाव रहा।

17 अक्तूबर 85 से 20 अक्तूबर 85 तक सुबह व रात्रि दोनों समय वेद प्रचार का कार्यक्रम बड़ी सुन्दरता के साथ चला। 20 अक्तूबर 85 को पूर्णाहुति डाली गई और विजेता खिलाड़ियो को पुरस्कार बांटे गए। —सतीश आय

आर्य युवक समाज बरनाला का गठन

बरनाला के आय युवको को गति व दिशा प्रदान करने के लिए आर्य युवक समाज का विधिवत गठन किया गया। श्री रामशरण दास गोयल को सवसम्मति से अध्यक्ष चुन लिया गया। श्री सतीश गुप्त सचिव व अश कुमार वधवा कोषाध्यक्ष चुने गये सभी उत्साही कर्मठ लगनशील व आय सिद्धान्तो के प्रति निष्ठावान युवको का समाज म श मिल होने का निमन्त्रण दिया गया नव नियुक्त प्रधान श्री रामशरण दास गोयल ने कहा कि हम आय समाज के प्रचार व प्रचार क लिए तथा समाज मे फैली सामाजिक बुराईयो व कुरीतियो को दूर करने के लिए कृत सकल्प है तथा इसके लिए निरन्तर सघषरत है। —सतीश गुप्त मन्त्री

(2 पृष्ठ का शेष)

है उसी के पुनर्मूल्यांकन का समय आ गया है। जैसा चल रहा है उसको न नियन्त्रण किया गया है तो आर्य समाज का शिक्षा कार्य मार्ग भ्रष्ट होकर बिखर जाएगा समाप्त हो जाएगा।

आय समाज के साधन सीमित हैं सम्पूर्ण देश के लिए एक शिक्षा का ढांचा बनाना बहुत बड़ा कार्य है। अपनी दृष्टि से आय समाज कुछ मौलिक विचार दे सकता है जिन्हे इस ढांचे में ढालना आवश्यक है। इन्हे इस प्रकार रखा जा सकता है।

1 आश्रम व्यवस्था विद्यार्थियो का एक विशेष वातावरण मे रहना, गुरु-शिष्य का अधिक से अधिक सम्पर्क। पर इस व्यवस्था को बहुत लचकीला बनाना होगा क्योकि शिक्षा संस्थाओ के न जाने कितने भिन्न 2 रूप होंगे। एक सरल उदाहरण दे सकते हैं। घोडा गाडी हाथी गाडी, खच्चर-गाडी कुत्ता-गाडी बकरा-गाडी, अनेक प्रकार की गाडिया होती हैं। पशु के अनुकूल गाडी होनी चाहिए। संस्कृत विद्यालय के साथ जो आश्रम व्यवस्था है वह और होगी, पब्लिक स्कूल की मैडीकल कालेज की, इन्जीनियरिंग कालेज तथा विश्वविद्यालय की इन सब आश्रम व्यवस्थाओं का अन्तर अवश्य होगा।

2 शिक्षा का माध्यम हिन्दी तथा प्रान्तीय भाषाओं को स्वीकार करना। इसमे भी सस्था या प्रदेश के अनुसार कुछ कुछ अन्तर होगा।

3 हिन्दी द्वारा देश भर की शिक्षा संस्थाओं में परस्पर सम्बन्ध लाना।

4 प्राचीन भारतीय विद्याओ को नवीन परिस्थितियो के अनुकूल नया रूप देना।

5 भारतीय विज्ञान और भारतीय संस्कृति को शिक्षा पद्धति में उचित स्थान देना।

और भी कुछ बातें हो सकती है, यहा दिग्दर्शन मात्र है। पर भारतीय शिक्षा पद्धति का पूरा ढांचा तो सम्पूर्ण देश की परिस्थितियो तथा देश के भिन्न-भिन्न घटको को देखकर प्रशासन ही विकसित कर सकता है देश का कोई एक प्रान्त या अंग नहीं। आय समाज अपने आदर्शों और अनुभवो के आधार पर कहां तक राष्ट्रीय शिक्षा को प्रभावित कर सकेगा, यह आने वाला समय ही बतलाएगा।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख पत्र अंक 28-29 नवम्बर 17 1985

साप्ताहिक आर्य मर्यादा जालन्धर

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली) विशेषांक



दक्षिण अफ्रीका के आर्य समाजियों की ओर से

श्री वीरेन्द्र जी को दीपावली पर

बधाई सन्देश

आपके लिए, आपके परिवार के लिए और आर्य समाज के सदस्यों तथा अधिकारियों के लिए कामना करते हैं कि दीपावली मंगलमय हो और नया वर्ष समृद्धिदायक हो।



12-NOV-1985

BHAGWANDAS VITHAL
P.O. BOX 84
2? . .NOR? ROAD
LA .YSMITH, NATAL
3370 SOUTH AFRICA
PHONES: RES. 24?? BUS. 23791.

Wishing you, your family and all officials and member of yout ARYA-SAMAJ a very Happy DEEPAVALI and prosperous NEW YEAR

AUM TAMASORMA Jyotir GAMAYA
SARVE BHAVANTU SUKHINAH

With sincere good and Gods Wishes Blessings

FROM

MR & MRS
B. Vithal & Son.

LADYSMITH
Natal
SOUTH AFRICA





तमसो मा ज्योतिर्गमय

●

सर्वे भवन्तु सुखिनः।

●

परम पिता परमात्मा का आशीर्वाद आप सबको मिलता रहे, अपनी इन शुभ कामनाओं के साथ।

श्री और श्रीमती बी, विठल—लेडी स्मिथ नेटाल (दक्षिण अफ्रीका)

सम्पादकीय—

जय बोलो ऋषि दयानन्द की

ऋषि दयानन्द जी की जय तो इस देश की जनता पिछले डेढ़ सौ वर्ष से बुलाती आ रही है। हम यह भी देख चुके हैं कि महर्षि ने जो रास्ता हमें दिखाया था उस पर चलते हुए हम कहां से कहां पहुंच गए हैं। भारत तो आजाद हो गया। उसके बाद कई सुधार यहां ऐसे भी हुए जो महर्षि ने हमें बताए थे। देश के नव-निर्माण में महर्षि दयानन्द का और उसके पश्चात् आर्य समाज का बहुत योगदान रहा है परन्तु हम कई बार अपने महापुरुषों की दी हुई शिक्षा को भूल जाते हैं और फिर कोई ऐसी घटना सामने आती है। जो हमें यह अनुभव करा देती है कि हम सच्चे मार्ग से भटक रहे हैं। हम से मेरा अभिप्राय केवल आर्य समाज से नहीं है। हम आर्य समाजी भी कई बार ऐसी बातें करने लगते हैं जिन्हें देख कर हम स्वयं ही अनुभव करते हैं कि हम भटक गए हैं। परन्तु हम से भी ज्यादा वह लोग भटक रहे हैं जो आर्य समाज से कुछ दूर रहते हैं और जिन पर महर्षि के विचारों का अधिक प्रभाव नहीं पड़ा। हम जहां भी भटके हैं. महर्षि दयानन्द के बताये हुए मार्ग को छोड़ने के बाद ही भटके हैं।

एक नई घटना पिछले दिनों हमारे सामने आई। रजनीश नाम का एक व्यक्ति अपने आप को भगवान् कहता है। हमारे देश में भगवान् तो कई बन जाते हैं और बन गए हैं। हर चौथे दिन एक नया भगवान् खड़ा हो जाता है। भोली-भाली जनता की आंखों में धूल झोंक कर वह लोग रुपया भी इक्कठा कर लेते हैं और अपना एक छोटा-सा साम्राज्यभी बना लेते हैं। उसमें धर्म के नाम पर कई प्रकार के कुकर्म और कुरीतियां चलती हैं। फिर भी वह लोग भगवान् ही रहते हैं। रजनीश ने कोई नया मत नहीं चलाया था पहले चल रहे मतों में मानव पर जो थोड़ा बहुत प्रति-बन्ध रखा था। रजनीश ने उसे भी हटा दिया और यहां तक कह दिया कि विवाह प्रणाली की कोई आवश्यकता नहीं है स्त्री और पुरुष जैसे भी रहना चाहें मिल कर रह सकते हैं, उनके लिए कोई नियम नहीं, कोई अनुशासन नहीं। आज के युग में जबकि विज्ञान की प्रगति के कारण लोगों के विचारों में परिवर्तन आ रहा है। यदि कोई यह कह दे कि पुराने सब रीति रिवाज समाप्त कर देने चाहिए तो लोग उसकी बात तुरन्त सुनने को तैयार हो जाते हैं और कहा जाता है कि यह प्रगतिशील है। जिस का कोई धर्म न हो, कोई सिद्धान्त न हो, कोई नियम-उप-नियम न हो। वह प्रगतिशील बन जाता है। ऐसा ही प्रगतिशील यह रजनीश भी बन गया था।

इसने अमेरिका में जाकर एक चमत्कार दिखाने का प्रयत्न किया था। वहां लोग इसके झांसे में आ गए। इसके कई चेले चेलियां वहां जमा हो गए और इसने अपने नाम से वहां एक छोटा सा नगर भी बसा लिया, कहते हैं कि काठ की हड्डियां बार बार आग पर नहीं चढाई जा सकती। जो कुछ रजनीश वहां कर रहा था उसने पहले तो लोगों को चकाचौंध कर दिया फिर धीरे-धीरे वास्तविक स्थिति उनके सामने आने लगी और उन्होंने समझ लिया यह तो धोखेबाज । वहां

जो लोग पहले उसको पूजा करते थे फिर उसकी हत्या की योजना बनाने लगे। इस डर से उसने वहां से भागने की कोशिश की, परन्तु पुलिस ने उसे पकड़ लिया और आज वह जेल में बन्द है ; कहते हैं कि उसके विरुद्ध जो आरोप हैं उनमें उसे 125 वर्ष की सजा मिल सकती है।

यह घटना मैंने इसलिए पाठकों के सामने रखी है कि यह महर्षि दयानन्द की विचारधारा की सम्पुष्टि करती है। जब तक महर्षि जीवित रहे यही कहते रहे कि कोई व्यक्ति जो भगवान् का रूप धारण करके आता है। वह भोली-भाली जनता को ठगने के लिए ही आता है। भगवान् तो सब मे हैं। वह सबको एक जैसे समझते हैं। महर्षि दयानन्द तो इस देश के श्रीराम व श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों को भी भगवान न मानते थे। भगवान शब्द को यदि हम उत्तम पुरुष या आदर्श पुरुष रूप में लें तब तो कई भगवान बन सकते हैं परन्तु जब हम किसी मनुष्य को वह चाहे कितना उच्च आचार विचार वाला क्यों न हो परमात्मा का एक दूसरा रूप समझने लगते हैं और फिर जब यह पता चलता है कि हम धोखा खा गए हैं तो फिर पछताते हैं। महर्षि दयानन्द ने हमें उस धोखे से बचने का रास्ता दिखाया था। इसीलिए वह मूर्ति पूजा के भी विरुद्ध थे। वह कहते थे कि श्रीरामचन्द्र व श्रीकृष्ण जी की मूर्ति की पूजा करते हो, क्यों नहीं उनके चरित्र की पूजा करते, उनके गुणों की पूजा करते ? और उनके पद् चिन्हों पर चलने का प्रयास करते।

दीपावली की रात को हम अन्धेरे में उजाला करने का प्रयास करते हैं। महर्षि आज के ही दिन अपने तपोमय जीवन से एक उजाला करके चले गए, हम उन्हें भूल रहे थे। रजनीश काण्ड ने हमें याद दिला दिया कि महर्षि दयानन्द जो कहते थे वह ठीक था। आज जबकि हमारे देश में जगह-जगह भगवान पैदा हो रहे हैं हमारा कर्त्तव्य और भी बढ़ जाता है कि हम अपने देश वासियों को फिर याद दिलायें कि जो कुछ महर्षि दयानन्द जी कह गए हैं उसी पर चलने में हमारा कल्याण है। अगर हम उस रास्ते को छोड़ देते हैं तो इस आज के भौतिक संसार में न जाने कितने रजनीश पैदा हो जाएंगे। ससार का भविष्य बहुत धूमिल है उसे बचाने का एक ही रास्ता है कि महर्षि दयानन्द के बताए हुए रास्ते पर चलें और वेद का ज्ञान घर घर पहुंचाएं। आज के अन्धकार में वेद का ज्ञान ही हमारे लिए एक प्रकाश स्तम्भ बन सकता है यही महर्षि दयानन्द का सन्देश था।

—वीरेन्द्र

महान् दार्शनिक ऋषि दयानन्द

लेखक—श्री मनोहर जी विद्यालंकार

स्वामी दयानन्द इस युग के सच्चे अर्थों में महर्षि अर्थात् क्रान्त दृष्टा थे। उन्होंने अन्य महापुरुषों की तरह भारत के दु:खों को अनुभव किया था, वे भी दूसरों की तरह अपने देश की पराधीनता से परेशान थे। किन्तु अन्य महापुरुषों की अपेक्षा उनमें यह भेद था कि वे अपनी अनुभूति और परेशानी को क्रियान्वित करना चाहते थे।

महापुरुष और महर्षि में यही भेद है। महापुरुष पर दु:ख कातर होता है, बड़ी सद्भावना रखता है, सबका कल्याण चाहता है। उसका मन निर्मल और निर्वैर होता है, किन्तु वह व्यवहार में निष्क्रिय रहता है। वह अपनी अनुभूति को क्रिया में परिणत करने की हिम्मत नहीं रखता दूसरों को नाराज करने का साहस नहीं रखता। अपने प्राप्त सुखों का त्याग करने को उद्यत नहीं होता। किन्तु इसके विपरीत महर्षि अपना सर्वस्व त्याग कर दूसरों के दु:खों को दूर करने के लिए प्राणपण से प्रयत्न करता है। वह किसी सामान्यजन की तो बात ही क्या बड़े से बड़े सम्राट से भी नहीं डरता, किसी भी मूल्य पर अपने मन के सत्य को अवश्य प्रकट करता है।

इसी सहज भेद के कारण महर्षि दयानन्द किसी भी क्षेत्र में मौन या निष्क्रिय नहीं रह सके। वह जहां गए वहां की बुराईयों को देखा, उनका स्पष्ट रूप से खण्डन किया। जिससे बात की, उसे सुधारने का प्रयत्न किया।

उनका काल भय से आक्रान्त था। लोग सत्य प्रकट करने का साहस नहीं कर सकते थे। कुछ लोग राजाओं से, अन्य लोग ब्रिटिश सरकार के कर्मचारियों से बात करने में भी घबराते थे।

महर्षि दयानन्द ने अनुभव किया कि भारत की जनता में भय ने घर कर लिया है। आत्मविश्वास उठ चुका है। आत्मभिमान समाप्त हो गया है, परिणामत: राजनीतिक पराधीनता के साथ-साथ उनके मन तथा आत्मा भी परवश व दास बनते जा रहे हैं।

मुझे तो ऐसा लगता है कि उनका सारा जीवन उनके सब कार्य इसी अनुभूति को क्रिया में परिणत करने का परिणाम थे।

वे अनुभव करते थे जब तक हमारे देशवासी निर्भय नही बनते, उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न नहीं होता, आत्माभिमान जागृत नहीं होता, तब तक देश का कल्याण नहीं हो सकता।

यद्यपि वे धर्म सुधारक के रूप में याद किये जाते हैं लेकिन सम्भवत: भविष्य के इतिहासकार उन्हें, स्वाधीनता प्राप्ति के लिए आवश्यक आत्माभिमान की भावना का जन्मदाता स्वीकार करेंगे।

उनका प्रत्येक कार्य, चाहे वह धार्मिक था या दार्श-

निक, पारिवारिक या सामाजिक, आर्थिक था या राजनीतिक देश में आत्मविश्वास और आत्माभिमान की चेतना को उत्पन्न करने के लिए था।

दार्शनिक दयानन्द

उनके दार्शनिक सिद्धान्तों की मुख्य बातें थी—

1—आत्मा अमर है। आत्मा परमात्मा से पृथक अनादि कार्य करने में स्वतन्त्र तथा फल भोगने में परतन्त्र है।

2—परिणामत: पुनर्जन्म अनिवार्य है, अपने कर्मानुसार जीव अच्छी या बुरी योनियों में जन्म ग्रहण करता है।

3—अत्यन्त उत्तम कर्मों का फल मोक्ष है। किन्तु वह शान्त है। इन पर विवेचन करना यहां अभिमत नहीं किन्तु इनके अभिप्राय यदि आप जरा भी विचारेंगे तो आपको स्पष्ट हो जाएगा कि ये सिद्धान्त केवल मात्र मनुष्य को निर्भर बनाकर आत्मविश्वास व आत्माभिमानी बनाने के लिए स्वीकार किए गए हैं।

एक प्रकार के लोग सत्य कहने में डरते हैं, दण्ड से, बड़ों की अकृपा से, राज्य के कोप से, अपनी प्राप्त सुविधाओं के व्याघात से। दूसरे लोग इस प्रकार के हैं, जो देश को स्वाधीन बनाने के प्रयत्नों के प्रति उपेक्षा-भाव रख कर एकान्त साधना द्वारा मोक्ष प्राप्त में रत रहते हैं।

सबसे मुख्य बात यह थी कि वे अपने देश के लोगों के मन में यह भावना जगा देना चाहते थे कि हम न केवल किसी से हीन नहीं हैं अपितु हमारा अतीत सबसे अधिक उज्ज्वल था। यदि प्रयत्न करें तो हम फिर उसी अवस्था को प्राप्त कर सकते हैं।

महर्षि दयानन्द ने अपनी पराधीनता को बड़ी तीव्रता के साथ अनुभव किया था। और उसको दूर करने के उपायों को क्रान्त दृष्टि से अपनाया था। वे जानते थे कि विदेशी लोग स्पष्ट रूप में राजनीतिक चेतना के प्रसार को कभी भी सहन नहीं करेंगे। और साथ ही केवल राजनीतिक चेतना बिना नींव की दीवार के समान शीघ्र ही लुप्त हो जाएगी। इसलिए उन्होंने पृष्ठ भूमि या नींव में आत्मविश्वास या आत्माभिमान की चेतना को जागृत किया।

धार्मिक दृष्टि से उन्होंने अपने धर्म ग्रन्थों को विश्व के सबसे पुरातन तथा श्रेष्ठ ग्रन्थ प्रतिपादित किया। दार्शनिक दृष्टि से उन्होंने अपने पुराने सिद्धान्तों व ग्रन्थों को नये रूप में पेश किया। सांस्कृतिक दृष्टि से अपनी संस्कृति को सबसे प्राचीन तथा उत्कृष्ट बताया। आर्थिक दृष्टि से अपने देश को विश्व का सबसे समृद्ध देश बताया, और अपने भूतकाल की महिमा बताई। सामाजिक दृष्टि से सबमें समानता प्रतिपादित करके संगठित करने का प्रयत्न किया। अपने वेश अपनी भाषा तथा अपने खान-पान का महत्व प्रदर्शित किया।

विदेशियों की नकल में प्रचलित मांसाहार तथा मद्य-सेवन को अनैतिक तथा हानिकर बता कर छुड़ाया।

किसी भी दृष्टि से देखें, महर्षि दयानन्द ने देश में आत्मविश्वास आत्माभिमान तथा निर्भयता की भावना को जागृत कर के देश को स्वाधीन बनाने के योग्य बनाया।

अत: आज आवश्यकता है कि हम सत्य को प्रकट करने में किसी से न डरें, और न दबें।

देश के हित को सर्वोपरि मान कर, अपने वैयक्तिक लाभ या सुख के लिए पथ भ्रष्ट न हों। यदि हम पर कष्ट आये तो भी आत्मा की अमरता और पुनर्जन्म के सिद्धान्तों से अनुप्राणित हो कर अपने कर्त्तव्य से विमुख न हों।

सदा आत्म विश्वासी, स्वाभिमानी, निर्भय तथा न्यायाचरण करने वाले बनें।

—

योगीराज ऋषि दयानन्द

लेखक—श्री भगवत दयालु जी सिद्धान्त वाचस्पति

कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि क्या दयानन्द महाराज योगी व ऋषि अथवा देव थे तो कैसे? मुझे भी यह जिज्ञासा बहुत दिनों रही कि देव बड़ा या ऋषि। स्वाध्याय करते हुए बोधायन गृह्य सूत्र और यास्क आदि के आधार पर ज्ञात हुआ कि 'चतुर वेदाद् ऋषि:' 'ऋषि दर्शनात्' 'साक्षात् कृत धर्माण ऋषय:' जिसने वेदमन्त्रों के अर्थों को जाना हो या जिसने धर्म या सत्य का साक्षात्कार या स्वयं अनुभव किया हो वह ऋषि है। देव शब्द दिव् धातु से बना है जिसके अर्थ हैं 'दानाद्वा दीपनाद्वा. अर्थात् जो देता हो, प्रकाशित हो और प्रकाशित करे वह देव है। बोधायन गृह्यसूत्र के अनुसार 'चतुर-वेदादि ऋषय:' चार वेदों के जान लेने से ऋषि: होता है और उसके उपरान्त लिखा है 'अत ऊर्ध्व देव:' इससे ऊपर देव। इसकी व्याख्या करते हुए पूज्य स्वामी वेदानन्द जी ने लिखा है कि चारों वेदों के जान लेने के बाद उसका अनुष्ठान ही हो सकता है अतः चारों वेदों के अर्थों के ज्ञाता होने के कारण तथा उसके अनुसार अनुष्ठान करने के कारण वेदानुसार अपना जीवन-यापन करने के कारण वे देव तथा ऋषि दोनों पदों के अधिकारी थे। कुछ अध्यात्मवादी लोग सन्देह करते हैं कि वे केवल समाज-सुधारक थे योगी नहीं। परन्तु उनका जीवन चरित्र अध्ययन करने से कई स्थलों पर उनके योगी होने के प्रबल प्रमाण मिलते हैं। जिन्होंने उनकी दिनचर्या देखी है, वे वर्णन करते हैं कि वे योगसाधना भी करते थे और अठारह-अठारह घण्टे की समाधि भी लगाते थे। उन्होंने कई योगियों से योग की क्रियाओं को भी सीखा था परन्तु उन्होंने योग से प्राप्त सिद्धियों का प्रदर्शन करना अच्छा नहीं समझा। बचपन में जब उनमें सच्चे शिव की प्राप्ति की तथा चाचा की मृत्यु को देखकर मृत्युञ्जय बनने की इच्छा प्रबल हुई तब उन्हें ज्ञात हुआ कि योगाभ्यास ही इसकी विधि है। अत: खोज करते हुए चाणोद कर्नाली में श्री ज्वालानन्दपुरी और श्री शिवानन्द गिरी के दर्शन हुए। उन्होने उन्हें योगाभ्यास कराया। स्वामी जी लिखते हैं कि उन्होंने मुझे निहाल कर दिया। उनके योग करने तथा योगसिद्धियां प्राप्त होने के निम्न प्रमाण हैं—

1—उदयपुर वास के दिनों में एक दिन उद्यान से बहुत अन्तर पर सहजानन्द जी ने देखा कि महाराज जल पर पद्मासन लगाये थे। योगमुद्रा में कमलदल की भान्ति विराजमान थे।

2—आगरा निवास के समय स्वामी जी दोनों समय योगारूढ़ हुआ करते थे। लोगों ने उनको 18-18 घण्टे की समाधि लगाते देखा था।

3—एक दिन मथुरा में श्री विरजानन्द गुरु ने उन्हें पाठ विस्मृत हो जाने के कारण भर्त्सना दी और कहा जमना जी में निमग्न हो जाना यदि यह पाठ न सुना सको इसी प्रतिज्ञा के साथ उन्होंने 12 घण्टे रात्रि तक समाधि लगाई और उस समाधि में ही वह सूत्र उनके समक्ष प्रकाशित हो गया।

4—एक बार एक सज्जन ने स्वामी जी से कहा कि अभ्यास में मेरा मन नहीं टिकता—तो स्वामी जी ने व्यंगय करते हुए कहा कि मन नहीं टिकता तो भङ्ग भवानी का एक लोटा और चढ़ा लिया करो। यद्यपि उन्होंने किसी से सुना नहीं था कि वह भांग पीता था।

5—एक बार उन्होंने उदयपुर में राणा सज्जनसिंह व सहजानन्द से कहा कि पं. सुन्दरलाल जी बैलगाड़ी में बैठें हुए आ रहे हैं उसका एक बैल शुक्लवर्ण है और दूसरा लाल धवल वाला, वे कल यहां पहुंच जावेंगे। ऐसा ही अगले दिन हुआ।

6—स्वामी दयानन्द वेदभाष्य लिखाते समय जब कठिनाई अनुभव करते थे तो उठकर अन्दर चले जाते थे और समाधि लगा कर वेद रहस्य को जानते तब फिर जा कर लिखाते थे। लोग प्रश्न किया करते हैं कि वे समाधि के आनन्द को छोड़ कर सांसारिक पचड़ें में क्यों पड़ गए ? उत्तर स्पष्ट है "परोपकाराय सतां विभूतय:" परोपकार के लिए सज्जन महान आत्मायें संसार में आया करती हैं। उनके गुरु स्वामी विरजानन्द ने दक्षिणा में उनका सारा जीवन वेदों के सत्यार्थ (ऋषि कृत ग्रन्थों के आधार पर) करने के लिए ले लिया था। एक कवि ने उनके आशय को निम्न प्रकार प्रकट किया है—

मन को मारे हुए, आंखो के बिना बैठा था।
तुमको लाठी की जगह हाथ में आना होगा ॥
ऋण गुरु जी का दयानन्द चुकाना होगा।
दक्षिणा दे के ही अब आप को जाना होगा ॥

गुरु विरजानन्द स्वयं योगी थे जैसाकि उनके प्राप्त चित्रों को देखने से भी विदित होता है। क्या इतने प्रबल प्रमाणों के होते हुए भी अब शंका रह सकेगी कि वे योगी नहीं थे।

शुभ दीपावली

लेखक—श्री रणवीर जी भाटिया, लुधियाना

दीप प्रदीप्त करता अनेक दीपों को,
दीपावली सन्देश देती है, जन-जन को।
फिर मानव रहता है क्यों, बुझा बुझा,
जब मनाता प्रति वर्ष है, दीपावली को ॥
ज्ञान की ज्योति समेटे हृदय के पट में,
जुआ खेलता जलाता फुल झड़ियों को।
लक्ष्मी पूजन में दीपावली गुजर जाती है,
भीख है मंगवाता क्यों गृह लक्ष्मी को ॥
काली रात चमक उठती है दीपों से,
मानव दूर करता नहीं कालिमा को।
कई जन्मों से श्रृंखला क्यों नहीं टूटी,
आओ बैठ सोचें इस शुभ दीपावली को ॥

—

स्वामी दयानन्द और हिन्दी

ले.—श्री विष्णु प्रभाकर जी

कार्तिक की सघनतम अमावस्या को सत्य की खोज में जिन महा-पुरुषों ने अपने प्राणों की बाती जलाई, उनमें स्वामी दयानन्द भी थे। वह वर्तमान युग के सबसे गलत समझे जाने वाले व्यक्ति थे। महान् बनना ही गलत समझा जाना है यदि इमर्सन के इन शब्दों में विश्वास करें तो उनकी महानता स्वयं सिद्ध थी, लेकिन कुछ भी क्यों न हो, बहुत से दूसरे क्षेत्रों में भले ही उनसे किसी का मतभेद हो, पर यह निर्विवाद है कि वह आधुनिक भारत के निर्माताओं में से एक थे।

हमारे राष्ट्रीय जीवन के अनेक पहलुओं पर स्वामी दयानन्द का प्रभाव अक्षुण्ण है। आज हिन्दी के राज्य भाषा बन जाने पर उस पर चारों ओर से साम्राज्यवाद का दोष लगाया जा रहा है। आज की राजनीति ने हमें ऐसे अनेक शब्द सिखा दिए हैं, जिन का अर्थ समझे बिना हम उनका हर कहीं प्रयोग करते रहते हैं। यह साम्राज्यवाद भी एक ऐसा ही हौवा है, लेकिन यदि इस शब्द की भावना का हिन्दी वालों पर तनिक भी प्रभाव है तो उसके लिए वे दोषी नहीं हैं। दोषी है स्वयं अहिन्दी भाषी। उन्हीं लोगों ने सबसे पहले घोषणा की कि अगर इस देश की कोई एक भाषा हो सकती है तो वह हिन्दी है। गुजराती दयानन्द उन्हीं में अग्रणी थे और उन्हें इस ओर प्रेरित करने वाले थे बंगाली।

केशव बाबू की प्रेरणा

अपने जीवन के लगभग 35 वर्ष स्वामी दयानन्द ने ज्ञान की खोज में इधर-उधर भटक कर बिता दिए थे। सन् 1835 में जब स्वामी विरजानन्द जी से उन्होंने विदा ली, तब वह लगभग 41 वर्ष के थे। उसके सात वर्ष बाद सन् 1872 में वेदों का प्रचार करते हुए उन्होंने बंगभूमि में प्रवेश किया। हिन्दी-साहित्य के इतिहास में यह एक अमर घटना है। महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर और उनके भक्तिभाजन केशव चन्द्र सेन की मित्रतापूर्ण प्रेरणा का फल था कि दयानन्द ने हिन्दी को अपनाया। उस समय उनकी आयु 48 वर्ष की थी। वह संस्कृत के धुरंधर विद्वान् थे। वह जन्म से गुजराती ब्राह्मण थे। एक बंगाली की आग्रहपूर्ण प्रेरणा से उन्होंने हिन्दी सीखी। क्या हिन्दी के पक्ष में ये सब अकाट्य युक्तियां नहीं हैं? केशब बाबू ने स्वयं हिन्दी क्यों नहीं सीखी? इस प्रश्न का उत्तर इतिहास में नहीं मिलता। परन्तु निश्चय ही उन्होंने स्वामी दयानन्द में एक ज्योति देखी थी, और कहीं यह ज्योति उनके अपने काम के समान कुछ हो दायरे को रोशन क के बुझ न जाए, इस विचार से उन्होंने स्वामी जी को हिन्दी जानने का परामर्श दिया। कर्ता से अधिक प्रेरक होता है, क्योंकि वह कर्ता की शक्ति है। स्वामी दयानन्द के साथ-ही-

केशव बाबू भी हम हिन्दी वालों के कृतज्ञता के अधिकारी हैं।

मथुरा से जाने के बाद और बंगाल में आने से पहले जो सात साल दयानन्द ने इधर-उधर प्रचार में बिताए, उनमें उन्होंने समझ लिया था कि यद्यपि संस्कृत देववाणी है. तथापि उसमें सर्वसाधारण की भाषा बनने की योग्यता नहीं रह गई है। अंग्रेजी विदेशी भाषा थी। भाषा संस्कृति और सभ्यता का कोश है। किसी भी सभ्यता के अपने गुण होते हैं और भाषा उन गुणों की वाहक है। भाषा के बदल जाने पर सभ्यता और संस्कृति में उथल-पुथल मच जाने की पूरी सम्भावना होती है,- ऐसा वह मानते थे। तब जिस भाषा की रूप रेखा, भाव-व्यंजना बिल्कुल ही हमारी संस्कृति से मेल नहीं खाती, वह आर्य-सभ्यता के पुनरुद्धारक को कैसे स्वीकार हो सकती जी। लेकिन स्वामी दयानन्द को दूसरी भाषाओं से द्वेष नहीं था। 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय समुल्लास में उन्होंने स्पष्ट लिखा है—"जब पांच-पांच वर्ष के लड़का-लड़की हों, तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास कराएं, अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी।"

जनभाषा का प्रयोग

स्पष्ट है, हिन्दी को अपनाते समय दयानन्द का यही विचार रहा होगा कि लाखों-करोड़ों आदमियों तक अपनी आवाज पहुंचाने के लिए जनसाधारण की भाषा का प्रयोग ठीक है। फिर वह समूचे राष्ट्र को एक सूत्र में बांधना चाहते थे और इसी भावना को लेकर मानसिक उन्नति का जो कार्य उन्होंने उठाया: वह लोकप्रचलित भाषा के माध्यम द्वारा ही हो सकता है, पर यह निश्चित जान पड़ता है, वह सारे देश को एक राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे। एक भाषा, एक धर्म और संस्कृति का प्रचार इसी मत की पुष्टि करता है। वह व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्वार्थ से सर्वथा मुक्त थे, परन्तु उनकी अन्तर्राष्ट्रीयता वेद का सहारा लेकर खड़ी होती थी और इसी कारण वह कभी-कभी इतने संकुचित जान पड़ते हैं कि अचरज होता है। तब वह उग्र राष्ट्रवादी से मालूम पड़ते हैं। वेद को अलग करते ही दयानन्द शून्य हैं। वैसे अब इस बात के प्रमाण भी मिलते हैं कि राष्ट्र-हित की भावना से ही उन्होंने वेद का सहारा लिया था और उसी कारण अपनी-संध्या में उस सहारे को वह ढीला करने को तैयार हो गए थे।

अकबर के बाद वही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने विभिन्न धर्मावलम्बियों का एक एकता सम्मेलन बुलाया था। अनेक ईसाई और मुस्लिम उनके परम मित्र थे। पर कुछ भी हो, स्वामी जी हिन्दी को लेकर हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा बनाने नहीं चले थे, परन्तु राष्ट्रभाषा की जरूरत अनुभव करते-करते हिन्दी तक आ पहुंचे थे। उनके द्वारा हिन्दी के अपनाए जाने का एक और भी कारण हो सकता है। हिन्दी की लिपि-देवनागरी थी। यही संस्कृत भाषा की भी लिपि है। वह संस्कृत के अनन्य प्रेमी थे। इसी से हिन्दी के प्रति भी उन्हें प्रेम रहा होगा, पर यह मुख्य कारण तो नहीं कहा जा सकता, काल्पनिक तर्क मात्र है। उन्होंने स्वयं लिखा है—

दयानन्द के नेत्र वह दिन देखना चाहते हैं, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक और अटक से कटक तक नागरी अक्षरों का प्रचार होगा। मैंने आर्यावर्त भर में भाषा का ऐक्य-सम्पादन करने के लिए ही अपने सकल ग्रन्थ आर्यभाषा में लिखे और प्रकाशित किए हैं।

जिस दिन से उन्होंने हिन्दी के महत्त्व को समझा, उसी दिन से वह उनका प्रयोग करने लगे, केशव बाबू की उस ऐतिहासिक प्रेरणा के लगभग दो वर्ष बाद स्वामी दयानन्द का अद्भुत ग्रन्थ 'सत्यार्थ-प्रकाश' प्रकाशित हुआ। तब वह पचास वर्ष के थे। यद्यपि उस ग्रन्थ की भाषा पर संस्कृत और गुजराती का प्रभाव स्पष्ट है, तो भी अचरज होता है कि दो वर्ष के इस अल्पकाल में कैसे वह हिन्दी भाषा पर इतना अधिकार प्राप्त कर सके थे। ऐसा मालूम होता है, 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रथम संस्करण की भाषा बहुत शुद्ध नहीं बन पाई थी। बाद के संस्करण की भूमिका में उन्होंने स्वीकार किया है कि संस्कृत बोलने तथा

(शेष पृष्ठ 42 पर)

'देव दयानन्द'

ले.—श्री धर्मवीर जी विद्यावाचस्पति'

महर्षि यास्क ने अपने ग्रन्थ निरुक्त में देव शब्द की परिभाषा इस प्रकार की है ।

'देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा द्युस्थानो भवतीतिवा''

अर्थात् जो दान करे, उत्तम पदार्थ प्रदान करे, जो स्वयं प्रकाशक हो. दूसरों को प्रकाशित करे तथा जो द्यु स्थान में विराजमान हो यह देव' कहलाता है ।

अब हम क्रमश: ऊपर की परिभाषा को देव दयानन्द पर चरितार्थ करके देखते हैं ।

सर्वप्रथम देव की परिभाषा की गई है—''देवो दानाद्वा'' जो दान करे वह देव होता है । आर्य समाज जड़ पाषाण प्रतिमा का केवल इस लिए विरोधी है कि वह हमें जो कुछ हम मांगते हैं नही देती प्रत्युत उपासकों से ग्रहण कर लेती है । उसे देवता न कह कर हम लेवता कह देते हैं । इसके साथ परमात्मा को सच्चा देव बतलाते हैं क्योंकि उसने समस्त संसार की उपभोग्य वस्तुएं हमें प्रदान की है ।

जहां देव शब्द परमात्मा के लिए प्रयुक्त होता है वहां श्रेष्ठ दा शील मानव के लिए भी देव शब्द क प्रयोग इसलिए किया जाता है कि उत्तम मानव अन्य मानवों के लिए कुछ देता ही है ।

देव दयानन्द भी उन्हीं दानशील महापुरुषों की कोटि में आते हैं । आप कहेंगे कि उन्होंने क्या दान किया जिससे वे दानशील होकर देव कहाये ? सुनिए दयानन्द से बड़ा दान तो किसी भी महापुरुष ने नहीं किया । हमारे व्यक्तिगत जीवन के लिए, सामाजिक जीवन के लिए तथा समूचे राष्ट्र ही नहीं समस्त विश्व के लिए जो देन दी है वह किसी भी प्रकार छिपाई नही जा सकती ।

महर्षि दयानन्द ने हमें वेद के सच्चे अर्थों का ज्ञान दिया, अनाथों को अभय प्रदान कर अनाथालय का सुझाव दिया, गोशालाओं का निर्माण करने को कहा जीवन के सच्चे रास्ते का ज्ञान दिया, सच्चे योग का ज्ञान दिया । स्त्री जाति को भी समान अधिकार का दर्जा दिलाया ''सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते'' के अनुसार इस ईश्वर भक्त दयानन्द ने हमें सच्चे ब्रह्म का ज्ञान दिया अत: क्योंकि स्वामी दयानन्द ने हमें सब कुछ दिया इसलिए हम उनको 'देवो दानाद्वा की परिभाषा पर पूरा उतरता हुआ पाते हैं, वह अत. देव कहलाने के अधिकारी हैं ।

''दीपनाद्वा' यह दूसरी परिभाषा है देव शब्द की अर्थात् जो दीपनकर्त्ता हो जिसने स्वयं अपने जीवन को चमकाया हुआ हो वह देव कहाता है । स्वामी दयानन्द ने भी अपने जीवन को चमकाया हुआ था । उनकी शारीरिक चमक उनकी मानसिक चमक एव उनकी आत्मिक विकास की चमक ने ही तो संसार पर अपना जादू डालकर चमत्कृत किया । उनके जीवन में अद्भुत गुण थे जो साधारण मनुष्य में नही पाये जा सकते । वे ब्रह्मचर्य के धनी थे, वे ईश्वर साधना के साधक थे, वेद के सच्चे उपासक थे कौन सा गुण था जो उनमें देखने को नही मिलता—विदुर जी महाराज ने एक स्थान पर लिखा है—

अष्टौ गुणा पुरुषं दीपयन्ति —

प्रज्ञा च कौल्यं दम: श्रुतं च।
पराक्रमश्चाबहु भाषिता च।
दानं यथा शक्ति कृतज्ञता च ॥

अर्थात् आठ गुण मानव को चमका देते हैं, यश के प्रसारक बनते हैं, (1) विशेष बुद्धि का होना (2) कुलीनता (3) दमन करना (4) शास्त्र ज्ञान (5) सब प्रकार का पराक्रम (6) मित भाषिता (7) दान तथा (8) किये गये उपकार को मानना।

महर्षि दयानन्द में उपर्युक्त सभी गुण विद्यमान थे, वे प्रभावान थे यह सभी जानते हैं तभी तो उन्होंने, वेदों का भाष्य किया। कुलीन थे, दमनशील थे, सभी प्रकार के पराक्रम अर्थात् शारीरिक मानसिक आत्मिक उन्नति किये हुए थे तभी बैलगाड़ी को खींच कर कीचड़ से बाहर निकाल कर अपनी शारीरिक शक्ति का परिचय दिया। कम बोलते थे व्यर्थ की बातों में उनका समय व्यतीत नहीं होता था। 'कालो-गच्छति धीमताम्' के अनुसार अपना समयशास्त्र चर्चा में ही व्यतीत करते थे व्यर्थ की बकवास में नहीं यथा-शक्ति दान भी हमें दिया और वह भी ब्रह्म, वेद का सच्चा ज्ञान। किए गए उपकार को वे माना करते थे, स्वयं चमके हुए होने से देव थे।

'द्योतनाद् वा" जो प्रकाशित करे वह देव कहलाता है। भला जो स्वयं प्रकाशित हो रहा हो वह दूसरों को क्यों न प्रकाशित करेगा? अवश्य करेगा। जिसके जीवन में स्वयमेव प्रकाश नहीं वह दूसरों के जीवन को क्या रास्ता दिखाएगा।

आज इस दीपावली के पुनीत अवसर पर एक महान् देव ने सच्चा दीपक बन कर अनेक बहुत से चिरागो में रोशनी डाली थी। जिस रोशनी को पाकर स्वामी श्रद्धानन्द पं. लेखराम आदि दीपकों ने संसार को अपनी रोशनी से प्रकाशित किया। इस दीपावली वाले दिन बूढ़ा मां' सच्ची बहिन, छोटा सा हृदय रखने वाला बालक जब अपने हाथों में दीपक की पंक्तियों को सजाने के लिए ले जाता है और अन्धेरे स्थानों में रखता है तो ऐसा लगता है मानों वह बूढ़ा मां आदि सभी उस सच्चे पहले दीपक जलाने वाले दयानन्द को खोज रहे हैं परन्तु मां याद रख तेरा दयानन्द मरा नहीं। वह तो अमर हो गया उसने तो निर्वाण पद की प्राप्ति करली उसके ग्रन्थ ही अब दयानन्द बन कर तुम्हारा और हमारा मार्ग दर्शन करेंगे।

"द्युस्थानो भवतीति वा" द्युस्थान में रहने के कारण देव को देव की संज्ञा दी गई है। द्युलोक का अर्थ है प्रकाशित लोक स्वामी दयानन्द प्रकाशित लोक अर्थात् महा पुरुषोंके ज्ञान से प्रकाशित ऋषि देवों की समाज के सदस्य माने जा सकते हैं, उनके समाधिस्थ कार्यों को देखकर यह ज्ञान स्वाभाविक ही जाता है कि मुक्त अवस्था जो प्रकाश की अवस्था है ऐसे ही पुरुषो के लिए है। 'द्युस्थानों भवतीति' का दूसरा अर्थ यह भी हो सकता कि जो सर्वोच्च पद को प्राप्त है वही देव कहला सकता है ऐसा अर्थ करने पर भी दयानन्द स्वामी ही सर्वोत्कृष्ट सर्वोपरि, समझे जा सकते है। क्योंकि ऋषियों देवों ने जो कार्य किए हैं उनके एकांकी कार्य कहे जा सकते हैं परन्तु देव दयानन्द के सामने तो अनेक कार्य थे जिनका समाधान आदि उन्होंने किया इसी लिए किसी कवि ने कहा कि-'ऋषियों को वार डालूं ऋषि दयानन्द पे' अत: वे सर्वोत्कृष्ट होने के कारण देव है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में देव' की परिभाषा यह की है कि—'विद्वांसो हि देवा:' विद्वानों को ही देव कहते हैं। इस परिभाषा के अनुसार भी दयानन्द देवत्व की कोटि में आते हैं वे विद्वान् थे। तभी तो शास्त्रार्थ आदि करके विपक्षी दलों को परास्त किया। 'विद्या ददाति विनय' के अनुसार वे विनयशील भी थे। उन्होने कहा था —यदि मैं ऋषियों के युग में होता तो मेरी साधारण मनुष्यों में भी गणना न होती।

अत: हम स्वामी दयानन्द को भी देव दयानन्द के रूप में उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर पाते हैं जो कि शाश्वत सत्य है।

जब सूर्य अस्त होने लगता है तो अन्य अपने जलाए दीपकों से यह आशा रखता है कि अन्य दीपक मेरे जाने के बाद संसार को रोशनी देते रहेंगे आओ हमें भी उस महान चमकने वाले प्रकाशित कर देने वाले देव दयानन्द के मार्ग पर चलना चाहिए।

महर्षि का महान ऋषित्व

ले.—श्री प्रा. भद्रसेन जी दर्शनाचार्य
होशियारपुर

यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि वेद संसार के पुस्तकालय की प्राचीनतम पुस्तकें हैं और वेद ही भारतीय साहित्य, धर्म, संस्कृति, सभ्यता, इतिहास और परम्परा रूपी महान वटवृक्ष के मूल हैं। आज से एक सौ वर्ष पूर्व के भारतीय साहित्य के सारे के सारे ग्रन्थ एक स्वर से वेद कि चर्चा तथा महत्व स्वीकार करते हैं। वेद के आधार पर ही भारतीयता का यह महान वटवृक्ष अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ हैं। किसी वृक्ष का हरा-भरापन मूल के स्वस्थ होने और उसके साथ जुड़े रहने पर ही होता है अन्यथा 'नष्टे मूले नैव पत्रं न पुष्पम्' ही होता हैं। अतएव भारतीयता के मूलभूत आधार वेद के महत्व को अनुभव करते हुए सैंकड़ों भारतीयों और वेद प्रेमियों ने वेद के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए महान कार्य किया है और उनमें से अनेकों ने ऋषि पदवी प्राप्त की है।

वैदिक साहित्य के अनुसार ऋषि शब्द का अर्थ है, वेद मन्त्र का दर्शन करना। ऋषि दर्शनात्स्तोमान् ददर्श निरुक्त 2-11, अर्थात् जो किसी वेद मन्त्र के बाह्य (शब्द) तथा आन्तरिक स्वरूप (भाव) को स्पष्ट करता है, वह ऋषि कहलाता है। वैदिक परम्परा में प्राचीन काल से ही यही भावना चली आ रही है और जहां कहीं मन्त्रकार के रूप में चर्चा आई है, वहां सुवर्णकार, लोहकार, मालाकार, चर्मकार की तरह उसका भाव यही है, कि पूर्व से प्राप्त धातु, वस्तु को नया रूप देना, न कि सोने आदि को बनाना। आचार्य सायण ने भी ऐसी जगह कृ धातु (कार) का अर्थ दर्शन ही माना है। एक और विशेष बात यह है कि अनेक ऋषि ऐसे भी हैं, जिन्होंने जिन मन्त्रों का दर्शन किया है, वे मन्त्र उन से पूर्व विद्यमान थे। निःसन्देह मन्त्ररचयिता के रूप में भी कुछ ऋषि का अर्थ मानते हैं, पर यह मान्यता सारे प्रकरणों और परम्परा से मेल नहीं खाती। हां कुछ मन्त्र और स्थल इस पक्ष की पुष्टि में प्रस्तुत किए जाते हैं। अतः इस पक्ष को एकदम कोसने की अपेक्षा, उस पर गम्भीरता से हमें विचार करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की वेदों के प्रति प्रगाढ़ विश्वास की भावना और अत्यधिक श्रद्धा थी। उन की रचनाओं में स्थान-स्थान पर वेदों के सम्बन्ध में जो उद्‌गार प्राप्त होते हैं, वे देखते ही बनते हैं। महर्षि की दृष्टि से 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है' इसीलिए महर्षि ने सभी सम्प्रदायों की समीक्षा करते हुए सभी को वेद को स्वीकार करने का आमन्त्रण दिया है। जैसे कि ब्राह्म समाज के प्रकरण में महर्षि लिखते हैं—'इसलिए सर्वज्ञ परमात्मा के वचन का सहाय हम अल्पज्ञों को अवश्य होना चाहिए। जैसाकि वेद के व्याख्यान में लिख आए हैं, वैसा तुम को अवश्य ही मानना चाहिए। नहीं तो यतो भ्रष्टस्ततो नष्टः हो जाता है। जब सर्व सत्य वेदों से प्राप्त होता है, जिन में असत्य कुछ भी नहीं तो उनका ग्रहण करने में शंका करनी अपनी और पराई हानिमात्र कर लेनी है।' एकादश समुल्लास।

जब कोई वेदप्रेमी श्रद्धा से भरकर वेद का अध्ययन करता हैं, तो वह कई बार उलझन में उलझ जाता है, कि वेदों में कहीं अग्नि को, तो कहीं इन्द्र को लक्ष्य में रखकर सैंकड़ों मन्त्र आते हैं। किसी प्रकरण में सोम को, कहीं वरुण को सम्बोधित करके वर्णन है, अर्थात् वेदों में अग्नि

इन्द्र, वरूण आदि की स्तुति और वर्णन है : इनको देवता कहते हैं। इसी दृष्टि से यजुर्वेद का अग्नि देवता वातो-देवता सूर्यो देवता 14-2 मन्त्र बहुत प्रसिद्ध है। निरुक्त में तिस्र एव देवता: 7-2-1 का प्रसंग आता है। इतिहास की पुस्तकों में प्राय: पढ़ाया जाता है कि आर्य अनेक देवी देवताओं को मानते थे और वेदों में अग्नि, इन्द्र आदि की स्तुति भक्ति भरी पड़ी है।

इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट रूप में लिखा है—'(प्रश्न) वेदों में जो अनेक देवता लिखे हैं, उनका क्या अभिप्राय: है ? (उत्तर) देवता दिव्य गुणों से युक्त होने के कारण कहाते हैं। जैसे कि पृथिवी, परन्तु इसको कहीं ईश्वर वा उपासनीय नहीं माना है। देखो ! यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः ऋ. 1-164-39। इस मन्त्र में कि 'जिस में सब देवता स्थित हैं वह जानने और उपासना करने योग्य ईश्वर है।' उनकी भूल है जो देवता शब्द से ईश्वर का ग्रहण करते हैं।' —सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास।

नि:सन्देह वेदों में देव शब्द बहुवचन में अनेक बार आता है और अग्नि, इन्द्र, वरुण आदि उनके अनेक नाम भी हैं। पर महर्षि की दृष्टि से अनेक देवतावाद की भावना इस रूप में गलत है और 'बिना समझे ऐसा झगड़ा मचाया है, जैसे—

एक किसी वैरागी के दो चेले थे। वे प्रतिदिन गुरु के पग दाबा करते थे। एक ने दहिने पग और दूसरे ने बायें पग की सेवा करनी बांट ली थी। एक दिन ऐसा हुआ कि एक चेला कहीं बाजार हाट को चला गया और दूसरा अपने सेव्य पग की सेवा कर रहा था। इतने में गुरु जी ने करवट फेरा तो उसके पग पर दूसरे गुरुभाई का सेव्य पग पड़ा। उसने दण्डा पग पर धर मारा। गुरु ने कहा कि अरे दुष्ट ! तू ने यह क्या किया ? चेला बोला कि मेरे सेव्य पग के ऊपर यह पग क्यों आ चढ़ा ? इतने में दूसरा चेला जोकि बाजार हाट को गया था, आ पहुंचा, वह भी अपने सेव्य पग की सेवा करने लगा। देखा तो पग सूजा पड़ा है। बोला कि गुरु जी यह मेरे सेव्य पग में क्या हुआ ? गुरु जी ने सब वृतान्त सुना दिया। वह भी मूर्ख न बोला न चाला। चुपचाप दण्डा उठा के बड़े बल से गुरु के दूसरे पग में मारा। तो गुरु ने उच्च स्वर से पुकार मचाई। तब दोनों दण्डा ले के पड़े और गुरु के पगों को पीटने लगे। तब बड़ा कोलाहल मचा और लोग सुनकर आए। कहने लगे कि साधु जी क्या हुआ ? उन में से किसी बुद्धिमान पुरुष ने साधु को छुड़ाने के पश्चात् उन मूर्ख चेलों को उपदेश दिया कि देखो ये दोनों पग तुम्हारे गुरू के हैं। उन दोनों की सेवा करने से उसी को सुख पहुंचता और दु:ख देने से भी उसी एक को दु:ख होता है।

जैसे एक गुरु की सेवा में चेलों ने लीला की, इसी प्रकार जो एक अखण्ड सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा के विष्णु, रुद्रादि अनेक नाम हैं, इन नामों का अर्थ जैसे प्रथम समुल्लास में प्रकाश कर आए हैं, उस सत्यार्थ को न जान कर शैव, शाक्त, वैष्णवादि सम्प्रदायी लोग परस्पर एक दूसरे के नाम की निन्दा करते है। मन्दमति तनिक भी अपनी बुद्धि को फैला कर नही विचारते हैं कि यह सब विष्णु, रुद्र, शिव आदि नाम एक अद्वितीय, सर्वनियन्ता सर्वान्तर्यामी जगदीश्वर के अनेक गुण, कर्म स्वभावयुक्त होने से उसी के वाचक हैं।' एकादश समुल्लास।

महर्षि ने इस दृष्टान्त द्वारा स्पष्ट रूप से समझाया है कि गुण कर्म के भेद से परमात्मा के अनेक नाम हैं, पर मन्दमतियों ने चेलों की तरह सच्चाई को न समझ कर अनेक नामों के कारण अलग-अलग इष्टदेवों की कल्पना कर ली गई है। अतएव उनकी अलग-अलग मूर्त्तियां, मन्दिर, पूजापद्धतियों चला दी गई हैं।

ऐसी स्थिति में स्वाभाविक रूप से एक प्रश्न उभरता है, कि क्या अग्नि आदि केवल परमात्मा के ही वाचक हैं या अन्य के भी ? यदि ये अन्य पदार्थ के भी वाचक हैं तो फिर ये कहां किस के वाचक हैं, इसका आधार क्या है ? इस सारी स्थिति को स्पष्ट करते हुए महर्षि ने सत्यार्थ-प्रकाश में लिखा है—

"(प्रश्न) परमेश्वर से भिन्न अर्थों के वाचक विराट् आदि नाम क्यों नहीं ? ब्रह्माण्ड, पृथिवी आदि भूत, इन्द्रादि देवता और वैद्यक शास्त्र में शुण्ठ्यादि औषधियों के भी ये नाम हैं वा नहीं ?

(उत्तर) हैं, परन्तु परमात्मा के भी हैं ?

प्रश्न— केवल देवों का ग्रहण इन नामों से करते हो वा नहीं ?

उत्तर— आप के ग्रहण करने में क्या प्रमाण हैं ?

प्रश्न— देव सब प्रसिद्ध और वे उत्तम भी हैं इस से मैं उनका ग्रहण करता हूं ?

उत्तर— क्या परमेश्वर अप्रसिद्ध और उससे कोई उत्तम भी है ? पुन: ये नाम परमेश्वर के भी क्यों नहीं मानते ? जब परमेश्वर अप्रसिद्ध नहीं और उसके तुल्य भी कोई भी नहीं तो उससे उत्तम कोई क्यों कर ही सकेगा ?

1— 'ओ३म्' यह केवल परमात्मा का ही नाम है और अग्नि आदि नामों से परमेश्वर के ग्रहण में प्रकरण और विशेषण नियमकारक हैं। इससे क्या सिद्ध हुआ कि जहां जहां स्तुति, प्रार्थना, उपासना, सर्वज्ञ, व्यापक, शुद्ध सनातन और सृष्टिकर्त्ता आदि विशेषण लिखे हैं वहीं 2 इन नामों से परमेश्वर का ग्रहण होता है। और जहां 2 ऐसें प्रकरण हैं कि 2— (यजु. 31-50-9-12 तै, उप, 1-1) ऐसे प्रमाणों में विराट्, पुरुष, देव, आकाश, वायु अग्नि, जल, भूमि आदि नाम लौकिक पदार्थों के होते हैं। क्योंकि जहां उत्पति, स्थिति, प्रलय, अल्पज्ञ, जड़, दृश्य आदि विशेषण भी लिखे हों वहां 2 परमेश्वर का ग्रहण नहीं होता। वह उत्पत्ति आदि व्यवहारों से पृथक है और उपरोक्त मन्त्रों में उत्पति आदि व्यवहार हैं। इसी से यहां विराट् आदि नामों से परमात्मा का ग्रहण न होके संसारी पदार्थों का ग्रहण होता है।

3— और जहां 2 इच्छा, द्वेष, प्रयत्न सुख-दुख और अल्पज्ञादि विशेषणों हों वहां 2 जीव का ग्रहण होता है। ऐसा सर्वत्र समझना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर का जन्म मरण कभी नहीं होता।" प्रथम समुल्लास

इस प्रकार वेद को समझने के लिए महर्षि ने तीन सिद्धान्त दिए हैं। यह विवेचन जहां वेद को समझने में कुंजी का कार्य करता है, वहा यह विवेचन महर्षि दयानन्द सरस्वती को महान् ऋषि भी सिद्ध करता है। महर्षि ने प्रथम समुल्लास में जहां इन तीनों सिद्धान्तों का निर्देश किया है, वहां इसको स्पष्ट करने के लिए एक सौ ईश्वर-वाचक नामों की व्याकरण, निरुक्त के आधार वर विवेचना भी की है कि ये नाम इस प्रकार ईश्वर के वाचक हैं। जहां अग्नि आदि इस प्रकार का भाव व्यक्त नहीं करते वहां वे अन्य के वाचक हैं इसीलिए ही प्रथम समुल्लास में वेद की कुंजी दी है। इससे वेद का बहुत अधिक भाग स्पष्ट हो जाता है और शेष के लिए हमें विशेष प्रयास करना चाहिए। इस सारे विवेचन से स्वत: यह स्पष्ट हो जाना है कि महर्षि ने वेद को समझने समझाने के लिए महान कार्य किया है और इसीलिए वे सच्चे अर्थों में महर्षि पदवी के अधिकारी हैं।

अद्वितीय देशभक्त महर्षि दयानन्द

1193 ई, से भारत गुलाम चला आ रहा था, इस काल में अनेक महापुरुष पैदा हुए, पर परतन्त्रता पर जैसा दु:ख ऋषि ने प्रकट किया उसका उदाहरण नहीं मिलता, फरवरी 1873 में महर्षि की भेंट तत्कालीन वायसराय लार्ड नार्थ ब्रुक से हुई। वायसराय ने बाडी गार्ड देना चाहा, ऋषि ने कहा मेरा अंग रक्षक (ईश्वर) सदा मेरे साथ है। फिर कहा, कि भारत भर में घूमने के लिए आपको प्रथम श्रेणी का फ्री रेल पास दे दिया जाए ? महर्षि ने यह भी अस्वीकार किया। वायसराय ने कहा कि आप हमें आशीर्वाद दीजिएगा कि रहती दुनिया तक हमारा राज्य भारत पर कायम रहे। इस पर इस फकीर-बेनजीर ने कड़क कर कहा कि दयानाद तो सदा ईश्वर से यही प्रार्थना करता है कि प्रात: सूर्योदय से पूर्व ही विदेशी शासन क बिस्तरा गोल हो जाए, और मेरा देश स्वतन्त्र हो।

—निरञ्जनदेव महोपदेशक

दयानन्द दया सागर

ले.—श्री नरेश कुमार शास्त्री आचार्य गुरु विरजानन्द
संस्कृत महाविद्यालय, करतारपुर (पंजाब)

शंकर ने शंकर दिया, शंकर शं का मूल ।
मूल मूल तो मूल है, शंकर मूल अमूल ॥
शंकर मूल अमूल ने सब को तारा ।
करके वेद-प्रकाश किया जग में उजियारा ॥
कह 'नरेश' कविराय, न तेरी उपमा कोई ।
तूने भारत-भू गरिमा दिलवाई खोई ॥

पैरों की जूती बनी बनी विषय व्यापार ।
इस नारी उद्धार में तन-मन दिया विसार ॥
तन मन दिया विसार सार में जीत मिली है ।
नारी के उज्ज्वल जीवन की कली खिली है ॥
कह 'नरेश' कविराय सबल नारी उद्धारक ।
है शिक्षा अधिकार सुझाया वेद-प्रचारक ॥

लम्बी जटा रखाय कर पाते थे सम्मान ।
मूरख वर्ग सहाय से बन बैठे भगवान् ॥
बन बैठे भगवान् पन्थ भी नया चलाया ।
लेकर धर्म की आड़ पाप में नेह लगाया ॥
कह 'नरेश' कविराय विश्व के नये उजाले ।
धर्म-खोल में छिपे पोल सब खोल निकाले ॥

भक्षक ने विष दे दिया रक्षक ने प्राणदान ।
दाता पर जो कुछ वही देता लोक प्रमाण ॥
देता लोक प्रमाण दान की रीति निराली ।
सूख रही भारत बगिया के अनुपम माली ॥
कह 'नरेश' कविराय वेद उद्धारक तुम हो ।
दयानन्द आनन्द दया के सागर तुम हो ॥

ऋषि दयानन्द की विद्या-शिक्षा प्रणाली

ले.—पं. मदन मोहन जी विद्यासागर वेदालंकार

समाज शास्त्रियों ने मनुष्य देहधारी जीव को सामाजिक प्राणी सोशल एनिमल कहा है। हमारी दृष्टि में वह सीखने-सिखाने की योग्यता रखने वाला विशेष प्राणी है।

आर्य मनीषियों ने 'पंच वै पशवः' अर्थात् चराचर जगत् में मनुष्य, पशु, पक्षी कृमि कीटादि और वृक्ष-वनस्पति इस प्रकार से प्राणियों के पांच विभाग किए हैं। इन में मनुष्य नाम का पशु-प्राणी इन सब में श्रेष्ठ माना जाता है। अन्य प्राणियों से मनुष्य के श्रेष्ठ होने का कारण ज्ञान और धर्म माने गए हैं। धर्म के कारण उसमें सामाजिकता का विकास और ज्ञान के कारण उसकी चिन्तन शक्ति का विकास होता है।

पांचों प्रकार के प्राणियों में सृष्टि के पदार्थों से अपने अनुकूल शक्ति-तत्वों के ग्रहण और शरीर में से प्रतिकूल के विसर्जन की सहज प्रवृति होती है। यह क्रिया मुख्यतः भौतिक या शारीरिक होती है। उसके साथ मनुष्य पशु पक्षी कृमि कीटादि इन में एक बुद्धि भी होती है। जिससे वे अपने अनुकूल-प्रतिकूल का ग्रहण परित्याग करते रहते हैं। मात्रा भेद से यह किसी में कम और किसी में ज्यादा भी होती है।

इन पांचों में जो मनुष्य है, उस में दो प्रकार के ज्ञान की शक्ति होती है, स्वाभाविक और नैमित्तिक। स्वाभाविक ज्ञान से उसकी आहार निद्रा-भय-मैथुन की क्रियायें सहज ढंग से चल सकती हैं। परन्तु मनुष्य इतने में सन्तुष्ट नहीं रहता, क्योंकि उसके अन्दर धर्म और ज्ञान दोनों की प्रवृति छिपी है। इसलिए वह अपने ज्ञान का विस्तार चाहता है। यह अपने ज्ञान के विस्तार की इच्छा ही उसे कुछ सीखने सिखाने में सदा प्रवृत करती है। आज की परिभाषा में इसका नाम विद्याविधान या शिक्षा प्रणाली है, जिस में सिखने सिखाने की परम्परा निरन्तर चलती रहती है। मनुष्य किसी के द्वारा सिखाए बिना कुछ जान नहीं सकता और सीखने पर दूसरे को सिखाए बिना रह नहीं सकता।

इस सीखने-सीखाने की प्रक्रिया का वैज्ञानिक आधुनिक नाम शिक्षा प्रणाली है।

ऋषि दयानन्द परम वैज्ञानिक अन्तर्द्रष्टा युगान्तरकारी पुरुष थे। वे मानव जाति को त्रस्त करने वाले एवं अज्ञानगर्त में ढकेलने वाले मतमतान्तरों को मिटाकर एक मानव धर्म की स्थापना करना चाहते थे। अविद्या का नाश कर विद्या की अभिवृद्धि करना, ऐसा नियम उन्होंने बनाया है। इसलिए उन्होंने नए सिरे से मानव के निर्माण की एक बुद्धि समस्त योजना बनाई। उस योजना में शिक्षा प्रणाली पर भी उत्तम विचार किए हैं। उन पर क्रमशः विचार करते हैं:—

1— पहला सिद्धान्त है, इसमें विद्या और शिक्षा दो भेद करना। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में 2 और 3 समुल्लासों में इन पर पृथक 2 विचार किया है। उनके विचार में शिक्षा से मनुष्य धर्मात्मा और विद्या से विद्वान् बनता है। मनुष्य को अपने पूर्ण विकास के लिए धर्मात्मा और विद्वान् दोनों ही होना चाहिए।

द्वितीय समुल्लास में शिक्षा के विषय में ऋषि ने विचार किया है। इससे ऋषि का अभिप्राय: सदाचार नीति के सिखाने से है। यह पठन-पाठन के बिना भी कुछ सीमा तक दी जा सकती है।

ऋषि लिखते हैं— वस्तुत: जब तीन उत्तम शिक्षा अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे. तभी मनुष्य (पूर्णत: सच्चा) ज्ञानवान होता है। वह कुल धन्य। वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्। जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हो। (द्वितीय समुल्लास)

इसमें भी जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है, उतना किसी से नहीं। (द्वितीय समुल्लास) ऐसा ऋषि ने बताया है। बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करे। जिससे सन्तान सभ्य हो और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावे। जब (शिशु) बोलने लगे। तब उसकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सके। वैसा उपाय करें...। जब वह कुछ बोलने और समझने लगे, तब सुन्दर वाणी और बड़े छोटे, मान्य, माता-पिता, राजा विद्वान् आदि से भाषण करना, (वैसा) उनसे वर्तमान (कैसे वर्तना चाहिए वैसा विचार) और उनके पास बैठने आदि की भी शिक्षा करें। जिससे कहीं उन (सन्तानों) का अयोग्य व्यवहार न होवे। सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करे। जैसे सन्तान जितेन्द्रिय विद्या प्रिय और सत्संग में रुचि करें। वैसा प्रयत्न करते रहें। व्यर्थ क्रीड़ा, रोदन, हास्य, लड़ाई, हर्ष शोक, किसी पदार्थ में लोलुपता, ईर्ष्या द्वेषादि न करें। सदा सत्य भाषण शौर्य धैर्य प्रसन्न वदन आदि गुणों की प्राप्ति जिस प्रकार हो, (वैसा) करावें। (द्वितीय समु.)

जैसी (ऊपर) अन्य विषयों की शिक्षा की है, वैसी चोरी जारी आलस्य प्रमाद मादक द्रव्य मिथ्या भाषण हिंसा क्रूरता ईर्ष्या द्वेष मोह आदि दोषों के छोड़ने और सत्याचार के ग्रहण करने की शिक्षा भी करें। (द्वितीय समुल्लास)

ऊपर लिखी बातें सिखाने से प्रत्येक बालक आचारवान बन सकेगा। उसमें उच्च उदात्त मानवीय गुणों का विकास होगा। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में माता-पिता बालक को, कुछ नीति की बात सिखावें, न इसका इसमें स्थान है और न इस बात की गुंजाईश ही है कि उनके अन्दर उत्तम गुणों का विकास कराया जावे। 3-4-5 वर्ष की उमर में बच्चों को स्कूल में भेजने की व्यवस्था तो जरुर है। जहां भेजने का मुख्य उद्देश्य बच्चों का मन पढ़ाई में लगने का अभ्यास कराने का होता है या फिर उनको सम्भालने के श्रम से बचना होता है। परिणामत: सन्तानों में उत्तम माननीय गुणों का विकास नही हो पाता।

ऋषि दयानन्द के विचार में यह आधार शिला है जिनके ऊपर विद्या की दृढ़ दीवार उठती है। विद्या में मुख्यत: पठन-पाठन व अध्ययन अध्यापन का विषय आता है, जिसका वर्णन तृतीय समुल्लास में तथा अन्य ग्रन्थों में भी ऋषि ने स्पष्ट व विस्तार से किया है। इस अध्ययन अध्यापन प्रणाली में भी कौन से विषय पढ़ाए जावें। कौन से नहीं, इसका दिग्दर्शन भी अत्युत्तमता से ऋषि ने इस का उद्देश्य भी बालकों में सदाचार ही बताया है। ऐसे ग्रन्थ नहीं पढ़ाए जाने चाहिए। जिनसे मनोविकार पैदा हों। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इस ओर न के समान ध्यान है।

2— दूसरा सिद्धान्त है ज्ञान की परम्परा को अनादि अनन्त मानना वर्तमान शिक्षाविद ज्ञान व विद्या की वृद्धि परम्परा से होती है। ऐसा तो मानते हैं, परन्तु इस का विकास मनुष्य ने स्वयं किया होगा ऐसा प्रतिपादन करते हैं। ऋषि दयानन्द का विचार है—जो परमेश्वर है, वह सनातन जीव रूप प्रजा के कल्याणार्थ यथावत रीतिपूर्वक वेद द्वारा सब विद्याओं का उपदेश (सृष्टि के आदि) में करता है। (सप्तम् समुल्लास) अर्थात् जीवस्थ स्वरूप से जीवात्मा में प्रकाशित कर देता है (सप्तम् समु.)

क्रमश: ज्ञान बढ़ाते जाकर पश्चात् पुस्तक भी बना लेंगे (सप्तम् समुल्लास) अर्थात् नाना विद्याओं का विकास कर लेंगे इसका खण्डन करते हुए ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि—जैसे जंगली मनुष्य सृष्टि को देखकर भी विद्वान् नहीं होते जब उनको कोई शिक्षक मिल जाए, तो (उससे विद्या प्राप्त कर) विद्वान् हो जाते हैं और अब भी किसी से पढ़े बिना कोई भी विद्वान् नहीं होता। इस प्रकार जो (यदि) परमात्मा उन आदि सृष्टि के ऋषियों को वेद विद्या न पढ़ाता और वे अन्य को न पढ़ाते, तो सब लोग अविद्वान् ही रह जाते। जैसे कोई ने बालक को जन्म से

एकान्त देश में अविद्वानों व पशुओं के संग में रख देवें। तो वह जैसा संग है, वैसा ही हो जावेगा। उसका दृष्टान्त जंगली भील आदि (लोग) हैं। जब तक आर्यावर्त देश से शिक्षा (व ज्ञान की ज्योति) नहीं गई थी। तब तक मिश्र यूनान और यूरोप देश आदिस्थ मनुष्यों में कुछ भी विद्या विकसित नही हुई थी और इंग्लैंड के कुलम्बस आदि पुरुष अमेरिका में जब तक नहीं गए थे, तब तक वे (वे अमेरिका वासी) भी सहस्रों लाखों करोड़ों वर्षों से मूर्ख अर्थात् विद्याहीन थे। पुन: सुशिक्षा के पाने से विद्वान् हो गए हैं, वैसे ही परमात्मा से सृष्टि के आदि मे विद्या शिक्षा की प्राप्ति से उत्तरोतर काल मे विद्वान होते आए है। जैसे बर्तमान समय में हम लोग अध्यापको से पढ के ही विद्वान् होते हैं वैसे परमेश्वर सृष्टि के आरम्भ मे उत्पन्न हुए अग्नि आदि ऋषियों का गुरु अर्थात पढ़ाने हारा है। (सप्तम् समुल्लास)।

ऋषि दयानन्द के विचार में सृष्टि के आदि से चली यह ज्ञान परम्परा महाभारत काल तक बहुत कुछ चलती रही। फिर आर्यों के प्रमाद व स्वार्थ से नष्ट हो गई। (स-10वां-11वां समुल्लास)।

3— वर्तमान काल में शिक्षण या विद्या के क्षेत्र में केवल अध्यापक का ही महत्व है। परन्तु ऋषि की दृष्टि में वस्तुत: जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता और दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है सप्तम् समुल्लास। सन्तानों को उतम विद्या शिक्षा गुण कर्म और स्वभाव रूप आभूषणो का धारण कराना माता पिता आचार्य और सम्बन्धियो का मुख्य कर्त्तव्य है (तृतीय समुल्लास) साथ ही माता पिता आचार्य अपने सन्तान और शिष्यों को सदा सत्य उपदेश करें और यह भी कहें कि जो हमारे धर्मयुक्त कर्म है, उनका ग्रहण करें और जो जो दुष्टकर्म हों उनका त्याग कर दिया करो जो जो सत्य जाने उन उन का प्रकाश और प्रचार करें। और जिस जिस उत्तम कर्म के लिए माता पिता और आचार्य आज्ञा देवें, इस उसका ही पालन करें। (द्वितीय समुल्लास)

इसी प्रकार यथायोग्य सब अक्षरों का (सही) उच्चारण भी माता पिता आचार्य सिखलावे (2 समु.) अध्यापक गुरु के साथ माता पिता का भी शिक्षा व्यवस्था में महत्त्व बताना यह ऋषि की देन वर्तमान शिक्षा प्रणाली को है। ऋषि लिखते हैं — वह माता और पिता अपने सन्तानो के पूण वैरी है, जिन्होंने उनको विद्या की प्राप्ति न कराई... यही माता पिता का कर्त्तव्य कर्म परम धर्म और कीति का काम है। जो अपने सन्तानों को तन, मन धन से विद्या, धर्म सभ्यता और उत्तम शिक्षा युक्त करना (2-समुल्लास)।

4— शिक्षा विद्या का प्रारम्भ किस वय से हो उस समय का निर्देश भी ऋषि ने कर दिया है। अर्थात् जन्म से 5 वर्ष तक बालको को माता 6वें वर्ष के आरम्भ से आचार्य कुल मे गुरुकुल में भेजे (2 स,) अर्थात् पांच वर्ष के हो, तभी लडकों को लड़कों की और लड़कियों को लडकियों की पाठशाला मे भेज देवें (3-स.) वहां समावर्तन सस्कार अर्थात् शिक्षा प्रणाली पूर्ण होने तक रहे।

5— पाचवां सिद्धान्त ऋषि का शिक्षा के प्रारम्भ काल के सम्बन्ध मे है। वर्तमान शिक्षा शास्त्री 3-4 वर्ष की आयु से ही बालक की शिक्षा का प्रारम्भ मानते है। परन्तु ऋषि दयानन्द गर्भावस्था से मनुष्य का शिक्षणकाल मानते हैं। ऋषि लिखते हैं— धन्य वह माता है जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे (2-स.)

माता और पिता को अति उचित है कि गर्भाधान के पूर्व, मध्य और पश्चात् मादक द्रव्य मद्य दुर्गन्ध रुक्ष बुद्धिनाशक पदार्थों को छोड़ के जो शान्ति आरोग्य बल बुद्धि पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करे (करावे) वैसे घृत दुग्ध मिष्ट अन्न पान आदि श्रेष्ठ पदार्थो का सेवन करे कि जिससे रजवीर्य भी दोषो से रहित होकर अत्युत्तम गुणयुक्त हो (2-स)

इस प्रकार जो स्त्री व पुरुष करेगे उनके सब सन्तान उत्तम बल पराक्रम युक्त दीर्घायु धार्मिक होते रहेगे। (2-स-)

6— इस प्रकार के सस्कारी बालक गर्भ में आने से पूर्व जिनके माता पिता सदाचार सम्पन्न होते हैं, और

पांच वर्ष तक जिनको विशेषत: उनकी माता सामान्यत: माता पिता दोनों ने मानवीय गुणों का विकास करने वाली अच्छी अच्छी बातों की शिक्षा दी है, उनका विद्याभ्यास किस भाषा में हो यह प्रश्न है। भारत देश के बुद्धिमानों को छोड़ सब का एक मत से यह सिद्धान्त है कि मातृ भाषा में शिक्षण प्रारम्भ होना चाहिए।

इस विषय में ऋषि दयानन्द का मत है कि— जब पांच वर्ष के लड़का लड़की हों, तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों को भी सिखावें (2-स.)

ऐसा ऋषि ने क्यों लिखा ? इसका कारण यह है कि ऋषि दयानन्द की दृष्टि में मानव जाति एक है। इसलिए मानवों की मातृ भाषा से बच्चों का शिक्षण आरम्भ होना चाहिए। वह सब की मातृ भाषा संस्कृत ही है। जिस की लिपि देवनागरी है। ऋषि स्पष्ट लिखते हैं—

प्रश्न—किसी देश की भाषा में वेदों का प्रकाश न करके (परमात्मा ने) संस्कृत में क्यों किया ?

उत्तर—जो किसी देश भाषा में करता, तो ईश्वर पक्षपाती हो जाता इसलिए संस्कृत में ही प्रकाश किया, जो किसी देश (जाति व वर्ग विशेष) की भाषा नहीं। और वेद भाषा (अर्थात यह संस्कृत भाषा) सब भाषाओं का कारण है। जैसे ईश्वर की पृथिवी आदि सृष्टि सब देश और देश वालों के लिए एक सी है, वैसे परमेश्वर की विद्या की भाषा भी मानव मात्र के लिए) एक सी होनी चाहिए कि सब देश वालों को पढ़ने पढ़ाने में तुल्य परिश्रम होने से ईश्वर पक्षपाती नहीं होता। और सब भाषाओं का मूल कारण भी यही संस्कृत भाषा है। (7-समुल्लास)

यदि विश्व के सब शिक्षा शास्त्री इस यथार्थ को निष्पक्ष हो स्वीकार कर लें और तदनुसार अपने देश के बालकों को, उनकी मातृभाषा संस्कृत पढ़ाने के निमित्त देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करायें तो विश्व के राष्ट्रों की एकता हो जावे।

देवनागरी लिपि ही क्यों ? इसलिए की यही सब लिपियों में अधिक वैज्ञानिक और सब ध्वनियों की प्रकाशक है।

इतना करके फिर अपने अपने देशों में प्रचलित जो अन्य भाषायें हैं, उनके अक्षरों का अभ्यास भी करावें। यह ऋषि का द्विभाषा का फार्मूला विश्व में एकता लाने का अचूक सुझाव है।

साथ ही उसके पश्चात् अच्छी शिक्षा विद्या धर्म परमेश्वर माता, पिता आचार्य विद्वान अतिथि राजा प्रजा कुटम्ब बन्धु भगिनी भृत्य आदि से कैसे 2 वर्तना, इन बातों के मन्त्र श्लोक सूत्र गद्य पद्य भी अर्थ सहित कंठस्थ करावें (2-स.)

विश्व भर के माता पिता अपने मत सम्प्रदाय के ग्रन्थों को पढ़ाने के बजाए यदि इस प्रकार का प्रारम्भिक शिक्षण अपने अपने सन्तानों को करें, तो निसन्देह विश्व नागरिकता का आसानी से विकास हो जावे।

साथ ही सबसे पूर्व पिता माता व अध्यापक अपने लड़के लड़कियों (व शिष्यों) को अर्थ सहित गायत्री मन्त्र का उपदेश कर दें (3-स.) यह मन्त्र बुद्धि की प्रार्थना का मन्त्र है। इसका उपदेश सब को होना ही चाहिए। यह हिन्दुओं का ही पवित्र मन्त्र है. ऐसा समझना ठीक नहीं।

इस प्रकार शिक्षण होने से सम्प्रदायों व मत मतान्तारों का स्वत: ही लोप हो जावेगा, जोकि मानव जाति की उन्नति व एकता में सब से बड़े बाधक बने हुए हैं।

साथ ही शुद्ध उच्चारण का अभ्यास भी बालकों को कराया जाना चाहिए (2-स,) व द्र. वर्णोच्चारण शिक्षा पद्धति वर्तमान शिक्षण प्रणाली में शुद्धोच्चारण तथा शुद्ध सुलेखन की ओर ध्यान नहीं दिया जाता।

7— वर्तमान शिक्षण प्रणाली में शारीरिक दण्ड या ताड़न का निषेध है। परन्तु ऋषि दयानन्द ताड़न का महत्व मानते हैं। ऋषि लिखते हैं। उन्हीं की सन्तान विद्वान् सभ्य और सुशिक्षित होते हैं, जो पढ़ाने में सन्तानों का लाड कभी नहीं करते, किन्तु ताड़ना करते हैं। जो माता-पिता आचार्य सन्तान और शिष्यों को (विद्याभ्यास के समय) ताड़ना करते हैं वे जानों अपने सन्तान और शिष्यों को अपने हाथ से अमृत पिला रहे हैं और जो सन्तानों व शिष्यों का लाड़न नहींकरते हैं वह अपनी सन्तान व शिष्यों को (मानो) विष पिला के भ्रष्ट कर देते हैं।

क्योंकि लाड़न से सन्तान और शिष्य दोष युक्त तथा ताड़ना से गुणयुक्त होते हैं, और सन्तान और शिष्य लोग भी ताड़ना से प्रसन्न लाड़न से अप्रसन्न सदा रहा करें। परन्तु माता पिता तथा अध्यापक लोग ईर्ष्या द्वेष (व क्रोध) से ताड़न कभी न करें। किन्तु ऊपर से भय प्रदान और भीतर से कृपा दृष्टि रखें। (2-स.)

8— आठवां ऋषि का सिद्धान्त है कि सहशिक्षण उचित नहीं। इससे दुराचार असंयम की पूर्ण वृद्धि होने से सन्तान विद्या युक्त व धार्मिक नहीं बन सकेंगे। ऋषि लिखते हैं—नौवें वर्ष के आरम्भ में द्विज (अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य) अपनी सन्तानों को उपनयन करा के आचार्य कुल में अर्थात् जहां पूर्ण विद्वान और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्या दान करने वाली हों, वहां लड़के और लड़कियों को भेज दें। (द्वितीय तथा तृतीय स.) लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोस एक दूसरे से दूर होनी चाहिये। जो वहां आध्यापिका और अध्यापक पुरुष भृत्य अनुसार हों वे कन्याओं की पाठशाला में सब स्त्री पुरुषों की पाठशाला में पुरुष रहें। स्त्रियों की पाठशाला में पांच वर्ष का लड़का और पुरुषों की पाठशाला में पांच वर्ष की लड़की भी न जाने पावें (3-स.)

9— नवम् सिद्धान्त गुरुकुल शिक्षण पद्धति का है। जिसके अनुसार प्रथम विद्या पढ़ने का स्थान एकान्त देश में होना चाहिए। अर्थात् पाठशालाओं से एक योजन अर्थात चार कोस दूर ग्राम व नगर रहे। (3-स.)

दूसरे जहां पूर्ण विद्वान् और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्या दान करने वाली हों। वहां विद्याभ्यास के लिए (सब वर्णो वाले अपने अपने सन्तान को) गुरुकुल में भेज दें। (2-स.) जो अध्यापक पुरुष व स्त्री दुष्टाचारी हों, उनसे शिक्षा न दिलावें। किन्तु जो पूर्ण विद्या युक्त धार्मिक हों, वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने योग्य (होते) हैं। (तृतीय समु.)

वर्तमान विद्या विधान में अध्यापकों की नियुक्ति का मापदण्ड उनकी विद्या सम्बन्धी प्राप्त की उपलब्धियां मात्र हैं। उनके व्यक्तिगत जीवन की तरफ सर्वथा उपेक्षा है। इसीलिए संस्थाओं में सिगरेट बाज मांसाहारी मद्यपी जनों की भरमार है। चरित्र बने, तो कैसे बने ?

महर्षि-स्तवन

लेखक:— स्तोता स्व. श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज

विद्या-भानु प्रकाशित करके, जिसने तम का नाश किया।
मूढ़-प्रजा का मोह मिटा कर, फिर उन्नति-विश्वास दिया ॥
जिसने सुख को स्वप्न समझ कर, जनता का उपकार किया।
गुरु के ऋण को जीवन देकर, शिर से अन्त उतार दिया ॥

जिसने वेदों के दिनमणि को, सम्प्रदाय घन-मुक्त किया।
वेद-रत्न को खोज धरा से, अथवा शोभा-युक्त किया ॥
जिसने सारी सुप्त प्रजा को, दे उपदेश प्रबुद्ध किया।
स्वार्थी, हठी, दुराचारों से, डट कर सतत युद्ध किया ॥

जिसने मातृ-भूमि की लज्जा, मन में अपने अनुभव की।
पराधीनता रोग छुड़ाने की, औषधि सच्ची थी, दी ॥
आओ उस के पद-चिन्हों पर, चल कर सुयश बढ़ा देवें।
ऋषि दयानन्द की उस बेल को, ऊपर और चढ़ा देवें ॥

ऋषिवर प्यारा

(ले.—श्री वीरेन्द्र-कुलदीप शर्मा)

बतर्ज :—एक डाल पर तोता बोले...........।

आर्य समाज बनाके ऋषि ने, दूर किया अंधियारा।
क्या गायें हम ऋषि की महिमा, देव गुरु वो प्यारा।।
सबका प्यारा, ऋषिवर प्यारा.........।

मथुरा नगरी में वेदों का, मूल ने ज्ञान था पाया।
गुरु विरजानन्द के चरणों में, अपना शीश निवाया।।
अपना शीश निवाया, योगी बन दिखलाया।
वेदों के प्रचार की खातिर, घूमा भारत सारा।
सब का प्यारा, ऋषिवर प्यारा...........।

भारत में था पाखंडियों ने, भारी जाल बिछाया।
दूर किया भ्रमजाल ऋषि ने, सब को समान बनाया।
सब को समान बनाया, वैदिक ध्वज लहराया।
पाखंडियों के पोल खोल कर, दिया ओ३म् का नारा।
सब का प्यारा, ऋषिवर प्यारा..............।

ईंटें पत्थर खाए ऋषि ने, फिर भी न घबराया।
आप जहर का पान किया पर, अमृत हमें पिलाया।
अमृत पिलाया, सच्चा राह दिखलाया।
आया था उपकार ही करने देव गुरु वह प्यारा
सब का प्यारा, ऋषिवर प्यारा......।

केवल इक ही दीपक ने थे, लाखों दीप जलाए
धर्म जाति और देश की खातिर, अपने प्राण गंवाए।
अपने प्राण गंवाए, हम बलिहारी जाएं।
दुनिया भर का सच्चा 'साथी' देव गुरु था प्यारा।
सब का प्यारा, ऋषिवर प्यारा........।

महर्षि दयानन्द और स्वदेश भक्ति

उन्हीं के अपने शब्दों में–

1. स्वदेशी राज्य ही सर्वोत्तम ?

कोई कितना ही यत्न करे, जो स्वदेशीय राज्य होता है; वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रह से रहित, अपने-पराये के पक्षपात से शून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा करने वाला, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं। (सत्यार्थ प्रकाश, 8वां समुल्लास)

2. भारत की पराधीनता का चित्रण

अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य से, प्रमाद से, परस्पर के विरोध से अन्य देशों में राज्य करने की कथा तो क्या कही जाए, आर्यों का तो इस समय आर्यावर्त्त में भी अखण्ड, स्वाधीन और निर्भय राज्य नहीं है। जो कुछ है भी, तो वह भी विदेशियों के पदाक्रान्त हो रहा है। जब दुर्दिन आता है, तब देशवासियों को अनेक प्रकार के दुःख भोगने पड़ते हैं। (सत्यार्थ प्रकाश 8वां समुल्लास)

3. राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता

परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक्-पृथक् शिक्षा, अलग-अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इनके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है। इसलिए जो कुछ वेदादि शास्त्रों में व्यवस्था वा इतिहास लिखे हैं, उसी को मान्य करना भद्र पुरुषों का काम है।

(सत्यार्थ प्रकाश 8वां समुल्लास)

4. आर्यावर्त्त ही सर्वोत्तम देश है

यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है! इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है। क्योंकि यही सुवर्ण आदि रत्नों को उत्पन्न करती है। जितने भुगोल में देश हैं ये सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है। वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त्त सच्चा पारसमणि है कि जिससे लोहे-रूपी दरिद्र विदेशी छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।

(सत्यार्थ प्रकाश 11 वां समुल्लास)

5' चक्रवर्ती राज्य की स्थापना

हे ईश्वर! हमारी सहायता कीजिए, जिससे सुनीतियुक्त होकर हमारा स्वराज्य बहुत ही बढ़ जाए। घोड़े आदि श्रेष्ठ पशुओं से और चक्रवर्ती राज्य के ऐश्वर्य से हमारे काम को पूर्ण कीजिए। हमें चक्रवर्ती राज्य और साम्राज्य धन सुख प्रदान कीजिए। हम अन्योऽन्य की प्रीति से परम बल और पराक्रम से निष्कण्टक चक्रवर्ती राज्य भोगें। (आर्याभिविनय)

स्वदेश भक्ति सर्वोपरि है

(ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाज के प्रति) जो कुछ ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाजियों ने ईसाई मत में मिलने से थोड़े मनुष्यों को बचाया और कुछ-कुछ पाषाणादि मूर्ति पूजा को हटाया, अन्य जाल ग्रन्थों के फन्दे से भी कुछ बचाया इत्यादि अच्छी बातें हैं। परन्तु इन लोगों में स्वदेश भक्ति बहुत न्यून है। ईसाईयों के आचरण बहुत से लिए हैं। खान-पान, विवाह आदि के नियम भी बदल दिए हैं। अपने देश की प्रशंसा वा पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही, उसकी पेट भर निन्दा करते हैं व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भर-पेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियों का नाम भी नहीं लेते। प्रत्युत ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई भी विद्वान् नहीं हुआ; आर्यावर्त्तीय लोग सदा से मूर्ख चले आए हैं, इनकी उन्नति कभी नहीं हुई।

(सत्यार्थ प्रकाश 11 वां समुल्लास)

संकल्प-शील बनते जायें !

लेखक— श्री मोहन लाल शर्मा "रश्मि" दाहोद (गुजरात)

पर निन्दा हम सुने कभी न, भद्र बात सुनते जायें !
कर सत्संग अच्छे लोगों का, संकल्प-शील बनते जायें ।।

कपोल कल्पित बातों को, न हमको सुनना पढ़ना ।
हो पैदा दुर्भाव हृदय में, ऐसे पथ पर क्या चढ़ना ।।

हो न व्यवहार अशिष्ट हमारा, कुसंस्कार न जन्मे ।
अभद्र-दर्शन, अश्लील बातें, कभी न आवें मन में ।।

रहें दूर दुर्गुणों से हम सदा, यश भाव भरते जायें ।
कर सत्संग अच्छे लोगों का, संकल्प शील बनते जायें ।:

हो जीवन में सदा हमारे, संचार दीव्यता का भाई ।
भद्र श्रवण दर्शन से ही तो, मन में खुशियां हैं आई ।।

दीर्घायुष्य की करें कामना, हम ईश्वर से हर दम ।
इस जीवन में भोगों को हम, करते रहें सदा कम ।।

दीव्य ईश्वरीय कार्यों को पूर्ण, 'रश्मि' करते जायें ।
कर सत्संग अच्छे लोगों का, संकल्प शील बनते जायें ।।

—

महर्षि दयानन्द और स्त्री जाति

लेखक—श्री सुखदेव जी शास्त्री गुरुकुल करतारपुर

महर्षि दयानन्द जब कार्य क्षेत्र में उतरे तो उन्होंने समाज के सब पहलुओं पर दृष्टिपात किया। अच्छूतों, अनाथों, विधवाओं व विशेषकर स्त्री जाति पर जब उनकी दृष्टि पड़ी तो उन्होने देखा कि इस मानव की निर्मात्री मातृ शक्ति को समाज में बहुत हीन समझा जा रहा है। महर्षि से पूर्व जितने भी आचार्य हुए थे तथा जो उस समय के मत थे। उन सब के विचार स्त्री जाति के प्रति बड़े संकुचित थे।

श्री शंकराचार्य जो महर्षि से पूर्व हुए उनके विचार में स्त्री जाति बहुत हीन थी। उन्होंने स्वरचित प्रश्नोत्तरी में लिखा है:—

प्रश्न— विश्वासपात्रं न किमस्ति ? कौन है। जिस पर कभी विश्वास न करना चाहिए ?

उत्तर— नारी

प्रश्न— किम् तद्विषं भाति सुधोपमम् ? वह कौन सा विष है जो अमृत के समान प्रतीत होता है ?

उत्तर—नारी

प्रश्न—विज्ञान्महा विज्ञतमोऽस्ति को वा ? कौन सब से बड़ा ज्ञानी है ?

उत्तर-— नार्यापिशाच्या न च वञ्चितो यः ? जिसे स्त्री रूपी पिशाचनी या राक्षसी ने नहीं ठगा।

इस प्रकार जगत् गुरु शंकराचार्य ने जो कुछ लिखा है उससे उनकी भावना का स्पष्ट पता चल जाता है। इतना बड़ा विद्वान् होकर भी उन्हें उस स्त्री में कोई गुण नजर नहीं आया जो उसे जन्म देने वाली भी थी।

महाकवि तुलसी दास जी को रामचरित मानस लिखने पर बहुत मान दिया जाता है। उन्हें लोक नायक कहा जाता है। उन्होंने परिस्थितियों के अनुकूल हिन्दू धर्म की रक्षा करने का बहुत प्रयत्न किया है। कहा जाता है कि एक साधारण से व्यक्ति तुलसी दास को महाकवि तुलसी बनाने वाली उनकी धर्म पत्नी (एक स्त्री) थी। परन्तु फिर भी उन्होंने स्त्री जाति के प्रति अच्छे विचार नहीं दिए। वह रामचरित मानस में लिखते हैं:—

ढोल गंवार शूद्र पशु नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी॥

तुलसी ने स्त्री की गणना ढ़ोल, गंवार, शूद्र और पशुओं में की। वह स्त्री को ताड़ने का अधिकारी मानते हैं।

इसी प्रकार ईसाई मत में माना जाता है कि स्त्रियों का स्वतन्त्र व्यक्तित्व नहीं है। उनमें आत्मा ही नहीं है। अतः पुरुष उन से जैसा चाहे वैसा व्यवहार कर सकता है।

इस्लाम मत के अनुसार भी स्त्रियों में कोई रूह नहीं होती। उनमें सोचने और समझने की शक्ति नही होती घर में जैसे गाय भैंस आदि होती है वैसे ही स्त्रियां होती है। पुरुष उन्हें जब चाहे तीन बार तलाल-तलाक कह कर छोड़ सकता है। वह पुरुष से कोई खर्चा भी नहीं मांग सकती।

कोई स्त्री को पैर की जूती कहता था, कोई कहता था कि इसे वेद सुनने का व पढ़ने का अधिकार नहीं है। स्त्रियां अक्सर अनपढ़ ही रहती थी क्योंकि उनको पाठशालाओं में पढ़ाया नहीं जाता था। वह चार दीवारी में बन्द थी। पर्दे में ढकी हुई वह घर में ही बैठी रहती थी,

उसे घर से बाहर जाने का अधिकार नहीं दिया जाता था। उसको चाहे जैसेपुरुषके साथ बांध दिया जाता था। 10 वर्ष की कन्या को 70 साल के बूढ़े से बान्ध दिया जाता पर वह ऊफ नहीं करती थी यदि वह विधवा हो गई तो फिर वह जीवन भर तिल-तिल कर मर जाती थी। उसका पुन: विवाह नहीं हो सकता था चाहे वह बाल-विधवा ही क्यों न हो।

महर्षि दयानन्द से पूर्व सभी मत और उनके बड़े 2 आचार्य स्त्री जाति का अपमान करके अपने सिर पर पाप की गठड़ी धरे फिरते थे। महर्षि दयानन्द नारी जाति के प्रति इस अत्याचार को न सह सके। उन्होंने सिंह गर्जना की कि स्त्री पुरुष की अर्धाङ्गिनी है। जितना अधिकार पुरुष को है उतना ही स्त्री को भी है

महर्षि दयानन्द जी ने इस दिशा में एक नया क्रान्ति-कारी दृष्टिकोण दिया जो आगे चल कर नारी जाति के उत्थान में महान् सहायक सिद्ध हुआ। स्वामी जी उस युग के उन महान् पुरुषों में से थे जिन्होंने एक मन्दिरके चबूतरे पर खेलती हुई 6 वर्ष की बालिका को देखकर अपना मस्तक झुका लिया था। देखने वाले ने यह प्रश्न किया कि वैसे आप मूर्ति पूजा का खण्डन करते हैं किन्तु मूर्ति का यह प्रभाव है कि आपका मस्तक अपने आप झुक गया। ऋषि ने उत्तर दिया मैंने अपना माथा मूर्ति को नहीं झुकाया अपितु उस छोटी सी बालिका को झुकाया है जो मन्दिर के चबूतरे पर खेल रही है। मैं बालिका का अभि-नन्दन करके मातृ शक्ति का अभिवादन कर रहा हूं।

सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में प्रश्न किया गया कि—क्या स्त्री लोग भी वेद पढ़ें? ऋषि ने उत्तर दिया अवश्य पढ़ें। जिस प्रकार ब्रह्मचर्य आदि धारण कर के लड़के विद्या का अध्ययन करते हैं उसी प्रकार कन्या भी ब्रह्मचर्य सेवन से वेदादि सत्य शास्त्रों को पढ़ पूर्ण विद्या और उत्तम शिक्षा को प्राप्त करे। ऋषिवर ने नारी जाति की शिक्षा के विरोधियों को झंझोड़ते हुए कहा—

भारत वर्ष की स्त्रियों में भूषण स्वरूप गार्गी आदि वेदादि शास्त्रों को पढ़ के पूर्ण विदुषी हुई थी। यह शत-पथ ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है। भला जो पुरुष विद्वान और स्त्री अविदुषी हो तो नित्य प्रति देवासुर संग्राम घर में मचा रहे फिर सुख कहां। इससे जो स्त्री न पढ़ें तो कन्याओं की पाठशाला में अध्यापिका क्यों कर हो सके। आगे स्वामी जी लिखते हैं—

'देखो! आर्यावर्त के राजपुरुषों की स्त्रियां धनुर्वेद, अर्थात् युद्ध विद्या भी अच्छी प्रकार जानती थी। क्योंकि जो न जानती होती तो कैकेयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्यों कर जा सकती और युद्ध कर सकती। इसलिए ब्राह्मणी को सब विद्या, क्षत्रिया को सब विद्या और युद्ध विद्या तथा राज विद्या विशेष, वैश्या को व्यवहार विद्या और शूद्रा को पाकादि सेवा की विद्या अवश्य पढ़नी चाहिए। जैसा पुरुष को व्याकरण धर्म और अपने व्यवहार की विद्या न्यून से न्यून अवश्य पढ़नी चाहिए। वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण धर्म वैद्यक गणित शिल्प विद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिए। क्योंकि इसे सीखें बिना सत्यासत्य का निर्णय पति आदि के अनुकूल वर्ताव यथायोग्य सन्तानोत्पति उनका पालन वर्द्धन और सुशिक्षा करना घर के सब कार्यों को जैसा चाहिए वैसा करना, कराना वैद्यक आदि से औषधवत् अन्न-पान बनाना और बनवाना नहीं कर सकती। जिससे घर में रोग कभी न आवे और सब लोग सदा आनन्दित रहे।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द जी ने नारी जाति को समाज मे उस समय वही स्थान दिया था जो पुरुष को प्राप्त था। वह स्त्री शिक्षा को पुरुष शिक्षा से भी अधिक महत्व देते थे। इसीलिए तो वह एक छ: वर्ष की बच्ची के सामने भी अपना मस्तक झुका देते हैं। विरोधियों द्वारा षड्यन्त्र रचा कर भेजी गई एक वेश्या को भी वह माता कह कर पुकारते हैं। वह महर्षि के मुख से माता शब्द सुनकर ऋषि के चरणों में गिर पड़ी। एक विधवा को अपने बेटे का शव गंगा में बहा कर कफन वापिस ले जाते देख कर ऋषि ने पूछ लिया था। माता तू ने यह कफन क्यों उतार लिया। विधवा की करुण कहानी सुन ऋषि तड़प उठे और रात भर सो नहीं सके।

इस प्रकार ऋषि दयानन्द एक ऐसे महापुरुष थे, जिन्होंने अपने काल के सारे समाज को बाधित कर दिया कि जब तक स्त्री जाति को शिक्षित नहीं किया जाएगा तब तक समाज उन्नत नहीं हो सकेगा। यदि समाज को

(शेष पृष्ठ 29 पर)

जीवनभर प्रकाशित प्रचण्ड ज्योति पुंज के अंतिम वचन–

प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो

ले.—श्री धर्मवीर विद्यालंकार आचार्य उपदेशक महाविद्यालय टंकारा

प्रसिद्ध है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् 1883 की दावली के सांध्यावेला में अपने प्राणों का स्वेच्छा से उत्सर्ग करने से पूर्व उपरिलिखित वाक्य बोला था। प्रकाण्ड विद्वान् और परम नास्तिक गुरुदत्त विद्यार्थी, महर्षि के भव्य भाल पर दिव्य ज्योति को अनुभव कर दृढ़ आस्थावान् आस्तिक बन गया था।

संसार का प्रत्येक प्राणी शैशव से मृत्यु पर्यन्त अपने लिए सुख-समृद्धि की कामना की पूर्ति में सतत प्रयत्नशील है। साथ ही अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति मे परम पिता परमात्मा की कृपा के लिए प्रार्थना करता है।

शैशव में सुन्दर खिलौने, चमकीले वस्त्र और स्वादिष्ट भोजन के लिए अपने माता-पिता से मचलना है, युवावस्था में नये, खर्चीले, निरर्थक शौक पूरा करने के लिए आग्रह करता है। और बडा होने पर नौकरी पाने की मिल जाने पर उसमें निरन्तर उन्नत होने की इच्छा करता है। अथवा व्यापारी बन व्यापार को स्थिर करने, तदुपरान्त उससे प्रचुर लाभ पाने की कामना करता है। मार्ग में उत्पन्न हुई बाधाओं पर विजय पाने की आकांक्षा करता है। सफलता पर प्रसन्न होता है। असफलता पर भगवान् से सफल होने की प्रार्थना करता है। उन्नत हो जाने पर, अन्य इच्छाओं की पूर्ति में व्यस्त हो जाता है। और अगर वह आस्तिक और धर्म परायण है,तो सदा कदम-कदम पर भगवान् का धन्यवाद करता है।

जन्म, शिक्षा, विवाह, सन्तान, पारिवारिक सुख-सुविधा के छोटे बड़े सभी उपकरण,यश, सम्मान, पद, सभी कुछ पा लेने की इच्छा करता है। फिर साथ ही परम-पिता-परमात्मा से प्रार्थना करता है—"प्रभु मेरी इच्छा पूर्ण हो।" यज्ञ अनुष्ठान के आनन्तर पुरोहित जन आर्शीवाद देता है—"सफला सन्तु यजमानस्य कामा:, तब वह हृदय में अपार आनन्द अनुभव करता है।

ऐसा कभी नहीं सुना कि किसी ने कहा हो—प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो।'

देव दयानन्द के प्रभु ने कौन-सी अपनी इच्छा को पूर्ण किया है?

दन्त कथाओं में सुनते हैं कि देवताओं द्वारा मनुष्यों की इच्छाएं पूर्ण की जाती हैं। यहां पर, लोक व्यवहार से सर्वथा विपरीत कार्य महर्षि दयानन्द कर रहे है। अर्थात् प्रभु की इच्छा पूर्ण होने की बात कह रहे है। प्रभु की वह इच्छा क्या थी, यह गम्भीरता से विचारणीय है।

सर्व शक्तिमान परमैश्वर्यशाली, प्रभु संसार के समस्त प्राणियो को अनन्त सुख प्रदान कर रहे हैं, उनकी इच्छाओं को पूर्ण कर रहे हैं, उस प्रभु को महर्षि कह रहे हैं। —"प्रभु तेरी इच्छा पूण हो।" कितने गहरे आश्चर्य की बात है।

(प्रभु तेरी———)

महर्षि दयानन्द के अन्तिम दिनों की अवस्था का स्मरण करता हूं। वे विगत दो मासों से बीमार हैं।

शैय्या पर शान्त, धीर, गम्भीर मुद्रा में लेटे हैं। चक्रवर्ती अंग्रेजी राज्य के सर्वोत्तम निरीक्षण में श्रेष्ठतम चिकित्सक—सिविल सर्जन—द्वारा ही सतत उपचार हुआ है। चिकित्सा के साथ-साथ शरीर पर फोड़े-फुंसियां ऐसे निकल आए हैं, जैसे निर्मल आकाश में, अमावस्या की रात्रि मे, नक्षत्र समूह दिखाई देने लगता है। तीव्र पेचिश से शरीर एकदम शिथिल हो चुका है। पीड़ा की तीव्रता की तनिक सी झलक महर्षि के चेहरे पर नहीं है। अर्धमूर्च्छित सी अवस्था है। चेतना होने पर अथवा निद्रा टूटने पर मात्र वेद-मन्त्रों का उच्चारण और प्रभु के 'ओ३म्'' नाम का जप सुनाई देता है। जोधपुर से आबू और आबू से अजमेर के परिवर्तित, स्वास्थ्यवर्धक जलवायु और अन्त में परम भक्त शिष्य डाक्टर...के उपचार का स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव परिलक्षित नहीं हुआ है।

महर्षि को अनेकों बार धोखे से विष दिया गया। उन्होंने यौगिक क्रियाओं से अपना उपचार स्वय ही कर लिया। विष को शरीर से बाहिर फैंक, शरीर को शुद्ध और स्वस्थ कर लिया। आज दो मास से यौगिक क्रियाओं का तथा भारतीय औषधियो का कुछ भी लाभ नहीं हो रहा। सिविल सर्जन महोदय की ही एक-मात्र चिकित्सा से लाभ तो नही हुआ, रोग बढ़ता गया यह विशेष चिन्ता का विषय है।

प्रश्न है, उस समय—जब मर्ज बढ़ता जा रहा था—उनका चिकित्सक क्यो बदला न गया? जब ला-इलाज हो गए, तभी सिविल सर्जन महोदय ने अपना उपचार छोड़ा। दैनिक जीवन मे हम देखते हैं कि साधारण लोग भी, एक चिकित्सक के उपचार से लाभ न होने पर कितने ही चिकित्सक बदल लेते हैं। फिर महर्षि का चिकित्सक क्यों न बदला गया। राजस्थान के अनेको भक्त महाराजाओं के पास यशस्वी चिकित्सको का अभाव न था। इसके अतिरिक्त अनेकों समृद्ध, वैभवशाली सेठ साहूकार भी महर्षि के भक्त थे। उनके परीक्षित वैद्य विशारदों को महर्षि की चिकित्सा करने का अवसर क्यों न दिया गया। महर्षि की भक्त श्रेणी में अनेकों उच्चकोटि के चिकित्सक थे। उन में से एक भी महर्षि की चिकित्सा क्यों न कर पाया। वह कौन-सी शक्ति थी, जिसके सामने सभी सामर्थ्यवान, शक्तिशाली मनुष्य कुछ उपचार न कर पाये और मात्र मूक-दर्शक बने रहे।

इतिहास चुप है उस समय के महापुरुष, राज-पुरुष, राजवंशी, श्रेष्ठी, भक्त, धर्मात्मा, मित्र, शत्रु सभी चुप हैं। तब महर्षि क्या अनुभव करते होंगे? उनके अन्त:करण में उस प्रत्येक व्यक्ति का चित्र उभर आया होगा—जिन वीरों को उन्होंने मातृ-भूमि की रक्षा के लिए तैयार किया था, जिन धर्मात्माओं को सच्चे वैदिक धर्म के प्रतिपादन-प्रचार-प्रसार के लिए तैयार किया था, जिन कर्म वीरों को गौ-वेद-रक्षार्थ आत्म बलिदान के लिए सन्नद्ध किया था, जिन विद्वानों को संसार से अज्ञानान्धकार मिटाने के लिए जगाया था, जिन पतितो दलितो को उठाकर उनके जीवन में प्राण फूंके थे, जिनको नारी शिक्षा के प्रसार और समाज की अन्ध कुरीतियों को दूर करने का प्रण कराया था, वे सब आज तक असमर्थ रहे हैं, निस्तेज और मूक हैं अब उनके हृदयो में जागृत देश-धर्म-संस्कृति पर मर मिटने का दृढ़ व्रत का लेश भी दिखाई नहीं दे रहा।

ऐसे समय में महर्षि दयानन्द प्रभु से कह रहे हैं—"प्रभु, मेरी अपनी तो कोई इच्छा नहीं। शरीर से, मन से, प्राण से आत्मा से भरपूर परिश्रम कर एकमात्र आपकी आज्ञाओं का पालन ही किया है। अज्ञानियों को सच्चा ज्ञान दे रहा हूं, भटको को सत्यमार्ग दिखा रहा हूं, निर्बलो को सत्य-बल प्रदान कर सबल बना रहा हूं, निर्धनो को सच्चे धन का अधिपति बना रहा हूं। प्रभु, तेरी ही तो इच्छा पूरी कर रहा हूं। अपने लिए नहीं, तेरी प्रजा के लिए जी रहा हूं। अभी भी गाय रक्षा के लिए पुकार रही है, अभी वेदों का पूर्ण ज्ञान जन-जन में प्रसारित प्रकाशित नहीं हुआ है, अभी भारत का अधिकांश मानस कुरीतियों-रूढ़ियों से छूटा नहीं, भारत स्वतन्त्र नहीं हुआ, माताएं घोर यातनाएं सह रही हैं। इरानियों और कुरानियों की दुरभि-

संधियां दिनों-दिन बढ़ रही हैं। कितना अधिक काम शेष पड़ा है। फिर भी आप मुझे बुला रहे हैं? ये मेरे भक्त हत-प्रभ एवं मूक क्यों हैं?

"अस्तु, मैं यहां से चलता हूं। मुझ से इतना ही काम अपने इतने समय में कराना था। मैंने भारत वासियों को जगाया है। विश्व के मानव भी अंगड़ाई लेकर उठने लगे हैं। सब जाग चुके हैं। ये भारत-वासी मचले बने पड़े हैं। मैं उन्हें और अधिक सन्मार्ग पर लाऊं, अब आपकी ऐसी इच्छा नहीं है।"

तब महर्षि ने भूमि पर गोबर का लेप कराया। उस शुद्ध भूमि पर लेटें। मन्त्रों द्वारा प्रभु का आह्वान किया समय, दिन, पक्ष पूछा। सस्वर वेद पाठ किया फिर धीर—गम्भीर—शान्त स्वर में बोले—"प्रभु, तेरी इच्छा पूर्ण हो।'

क्या यही वह प्रभु की इच्छा थी जिसे पूरा करने में महर्षि ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण बिताया और जिसके अनुसार ही उन्होंने यह संसार छोड़ा।

इस घटना ने, इस एक छोटे से वाक्य ने अनेकों प्रश्न उभार दिए हैं। आइए भक्त-जन, विद्वज्जन, महा-मनीषी आइए धर्म परायण, अर्थ-परायण कर्म-परायण, जरा विचारिये और हम श्रद्धालुओं को समझाइए।

—

(26 पृष्ठ का शेष)

सुखी बनाने के लिए नारी के तिरस्कार के स्थान पर उस की पूजा की जाएगी तो समाज में खुशहाली छा जाएगी। मनु जी महाराज ने ठीक ही लिखा है:—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया: ॥

जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है उस घर में विद्यायुक्त पुरुष होके देव संज्ञा को प्राप्त होते हैं अर्थात् उस घर के लोग दिव्य भावनाओं को धारण करके घर में एक दूसरे का आदर करते हुए आनन्द से रहते हैं और जहां स्त्रियों का सत्कार नहीं होता वहां सब क्रिया निष्फल हो जाती है।

ऋषि ने स्त्री जाति को ऊंचा उठाने के लिए बाल-विवाह बहु-विवाह तथा सती प्रथा के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द की विधवा विवाह और स्त्री शिक्षा के पक्ष में आवाज उठाई। नारी ने भी अंगड़ाई ली वह उठी और पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने लगी।

आज स्त्री जाति जो इतनी उन्नत है इसका सारा श्रेय महर्षि दयानन्द को ही आता है। परतन्त्रता के उन दिनों में जब महर्षि कार्य क्षेत्र उतरे थे तो सारा समाज इसाईयत और इस्लाम से बहुत प्रभावित था इन दोनों में भी स्त्री को कोई सम्मानजनक पद नहीं दिया गया था यह भी इसे हीन ही समझते थे, पौराणिक मतावलम्बी तो इस विषय में इनसे भी आगे पहुंच चुके थे, ऐसे समय में यदि महर्षि दयानन्द न आते तो स्त्री जाति का महान् पतन हो जाता।

इसलिए स्त्री जाति महर्षि दयानन्द की ऋणि है। इसे उस ऋण से उऋण होने के लिए प्रयास करना चाहिए आर्य समाज को सहयोग देकर इन्हें अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

भारत के महान् पुरुषों की महर्षि को श्रद्धांजलियां

भारत के महान् नेताओं और महापुरुषों की दृष्टि में महर्षि दयानन्द क्या थे और उन्होंने अपनी भाव-भिनी श्रद्धांजलि किन शब्दों में उस महान् जगत् गुरु को दी थी। उन्हीं के शब्दों में पढ़ें। महर्षि दयानन्द कितने महान् थे।

—सम्पादक

मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरु दयानन्द को जिसकी दृष्टि ने भारत के आध्यात्मिक इतिहास में सत्य और एकता को देखा और जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अंगों को प्रदीप्त कर दिया। जिस गुरु का उद्देश्य भारतवर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति में लाना था। उसे मेरा बार-बार प्रणाम हो।

मैं आधुनिक भारत के मार्ग दर्शक उस दयानन्द को आदर पूर्वक श्रद्धांजलि देता हूं। जिसने देश की पतित अवस्था में हिन्दुओं को प्रभू की भक्ति और मानव समाज की सेवा के सीधे व सच्चे मार्ग का दिग्दर्शन कराया।

—विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर

ऋषि दयानन्द जाज्वल्यमान नक्षत्र थे। जो भारतीय आकाश पर अपनी आलौकिक आभा से चमके और उन्होंने गहरी निद्रा में सोए हुए भारत को जागृत किया। "स्वराज्य" के वे सर्वप्रथम सन्देशवाहक तथा मानवता के उपासक थे।

—लोकमान्य तिलक

'स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं संसार में मैंने सिर्फ उन्हें अपना गुरु माना है और आर्य समाज मेरी माता है। इन दोनों की गोद में मैं खेला हूं। मेरा हृदय और मस्तिष्क इन दोनों ने घड़ा है। मेरे गुरु एक महान स्वतन्त्र मनुष्य थे। इस का मुझे अभिमान है। उन्होंने मुझे स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करना बोलना तथा कर्त्तव्य पालन करना सिखाया है। मेरे जीवन में जो हिस्सा खराब है मेरा अपना है। वह या तो मुझ को विरासत में मिला है या मेरे पूर्व जन्म के संस्कारों का फल है। लेकिन मेरे जीवन का जो-जो हिस्सा अच्छा और लोगों में प्रशंसा योग्य है, वह सब आर्य समाज की बदौलत है। आर्य समाज ने मुझे वैदिक धर्म से प्यार करना सिखलाया है। आर्य समाज ने प्राचीन आर्यों से मेरा सम्बन्ध जोड़ा है और मुझे उनका सेवक बनाया। आर्य समाज ने मुझे जाति से प्यार करना सिखाया। आर्य समाज ने मुझे कुर्बानी का मार्ग दिखाया। आर्य समाज ने मेरे अन्दर सत्य धर्म और स्वतन्त्रता की रूह फूंकी। आर्य समाज ने मुझे संगठन का पाठ पढ़ाया। आर्य समाज ने शिक्षा दी कि समाज देश और धर्म की सेवा करनी चाहिए और उनकी सेवा में जो मनुष्य बलिदान करता है। और दुःख उठाता है और उसे स्वर्ग का राज्य मिलता है।

मैंने सार्वजनिक सेवा के तमाम सबक आर्य समाज में रहते हुए आर्य समाज से सीखे। आर्य समाज के क्षेत्र में मैंने अपने प्यारे मित्र बनाए। आर्य समाज के क्षेत्र में ही मैंने सार्वजनिक जीवन की पवित्रता के नमूने देखे।

आर्य समाज के उपकार मेरे ऊपर अनगिनत और असीम हैं। अगर मेरा बाल-बाल भी आर्य समाज पर निछावर हो जाए तो भी में उन उपकारों से उऋण नहीं हो सकता। यदि मैं आर्य समाज में दाखिल न होता तो ईश्वर ही जाने क्या होता, मगर यह सच है कि मैं आज जो कुछ हूं वह न होता।"

—अमर शहीद लाला लाजपतराय

महर्षि दयानन्द तपोमूर्ति थे उन्होंने भारत में दिव्य ज्योति प्रकाशित की थी। उन्होंने हिन्दू समाज को पुनर्जन्म देने के सब प्रयत्न किए थे। वे भारत को स्वतन्त्र तथा दिव्य देखना चाहते थे। आर्षकाल को पुन: लाने के लिए वे प्रयत्नशील रहे। उन्होंने मृत प्राय: हिन्दू जाति में पुन: प्राण संचार किया। वे हिन्दू संस्कृति की अप्रतिम प्रतिमा तथा भारत माता के अक्षय पात्र थे।

—महामना मदनमोहन मालवीय जी

महर्षि दयानन्द के विषय में मेरा मन्तव्य यह है कि वह हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों में, सुधारकों में श्रेष्ठ पुरुषों में से एक थे, उनका ब्रह्मचर्य, विचार, स्वतन्त्रता, सबके प्रति प्रेम कार्य कुशलता आदि गुण लोगों को मुग्ध करते थे। उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत ही पड़ा है। मैं जैसे 2 प्रगति करता हूं वैसे-वैसे मुझे महर्षि जी का बताया मार्ग दिखाई देता है। ब्रिटिश राज्य स्थापित होने के पश्चात् जनता में साथ सीधा सम्पर्क रखने का मार्ग महर्षि दयानन्द ने खोज निकाला। इस का यश महर्षि दयानन्द एवं उनकी आर्य समाज को प्राप्त है। महर्षि दयानन्द तथा उनकी आर्य समाज ने प्रजा में नवचेतना पैदा की है। हिन्दू समाज की कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न किया है। राष्ट्र शिक्षण, स्त्री शिक्षण तथा दलितोद्धार आदि न भुलाई जा सकने जैसी राष्ट्र की महान सेवा की है। मुझे आर्य समाज बहुत ही प्रिय है। मुझ से महर्षि दयानन्द के इस पवित्र देशोपकारी कार्य का कभी भी अपमान होगा तो मैं उसको महापाप समझूंगा।

—राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

महर्षि दयानन्द स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा, हिन्दू जाति रक्षक थे। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने राष्ट्र की महान् सेवा की है और कर रही है। आजादी की लड़ाई में आर्य समाजियों का बड़ा हाथ रहा। महर्षि जी का लिखा अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' हिन्दू जाति की रगों में रक्त का संचार करने वाला ग्रन्थ है। 'सत्यार्थ प्रकाश' की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सका :

—स्वतन्त्र्य वीर सावरकर

महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे, जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया और जो उसके आचार सम्बन्धी पुनरुत्थान तथा धार्मिक पुनरूद्धार के उत्तरदाता हैं। हिन्दू समाज का उद्धार करने में आर्य समाज का बहुत बड़ा हाथ है। रामकृष्ण मिशन ने बंगाल में जो कुछ किया, उससे कहीं अधिक आर्य समाज ने पंजाब और उत्तर प्रदेश में किया है। यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण न होगा कि पंजाब का प्रत्येक नेता आर्य समाजी है। स्वामी दयानन्द को मैं एक धार्मिक और सामाजिक सुधारक तथा कर्मयोगी मानता हूं। संगठन कार्यों में सामर्थ्य और प्रसार की दृष्टि से आर्य समाज अनुपम संस्था है।

संगठन कार्य दृढ़ता, उत्साह और समन्वयात्मकता की दृष्टि से आर्य समाज की समता कोई समाज नहीं कर सकता।

—स्वतन्त्रता सेनानी सुभाषचन्द्र बोस

मैं स्वामी दयानन्द जी को साम्प्रदायिक नहीं मानता। मेरे विचार में वे महान् थे। उनका धर्म विस्तृत था मैं उनको राजनैतिक पुरुष भी मानता हूं।

—राजऋषि पुरुषोत्तमदास टण्डन

जब देश पर संकट के बादल छाए हों तब हमें शत्रु की चुनौती को स्वीकार करके उस शिक्षा को याद करना है जो स्वामी दयानन्द ने हमें दी।

स्वामी दयानन्द एक महान् सुधारक और प्रखर क्रान्तिवादी महापुरुष तो थे साथ ही साथ उनके हृदय में सामाजिक अन्यायों को उखाड़ फेंकने की प्रचण्ड अग्नि भी विद्यमान थी। उनकी शिक्षाओं का हम सबके लिए भारी महत्व है, क्योंकि आज भी हमारे समाज में बहुत सी विभेदकारी बातें विद्यमान हैं। हम अपनी फूट के कारण ही अतीत में पराधीनता के पाश से जकड़े गए थे। हमारे पारस्परिक भेद और असहिष्णुता ही हमारे पतन का कारण बनी थी। हमें अतीत की भूलों से शिक्षा ग्रहण करनी ही होगी। तभी हमारा भविष्य उज्जवल और गौरव-शाली हो सकेगा। आज की स्थिति का सामना महर्षि दयानन्द के बताए मार्ग पर चल कर ही किया जा सकता है। जब आध्यात्मिक अव्यवस्था, सामाजिक कुरीतियां तथा राजनैतिक दासता देश को जकड़े हुए थी, जब महर्षि दयानन्द ने राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक उद्धार का बीडा उठाया। सत्य, सामाजिक एकता और एक ईश्वर की आराधना का संदेश उन्होंने शिक्षा व ईश्वर पूजा की स्वतन्त्रता सभी के लिए उपलब्ध करने पर बल दिया था। भारत के संविधान में सामाजिक क्षेत्र के लिए अनेक व्यवस्थाएं महर्षि दयानन्द के उपदेशों से प्रेरणा लेकर ही की थी।

स्वामी जी ने स्वराज्य का जो सबसे पहले सन्देश हमें दिया था, उनकी आज हमें रक्षा करनी है। उन के उपदेश सूर्य के समान प्रभावशाली है।

उन्होंने हमें यह भी महान सन्देश दिया था कि हक सत्य की कसौटी पर कस कर ही किसी बात को स्वीकार करे।

— सर्वपलि डा. राधा कृष्णन

"स्वामी दयानन्द जी के राष्ट्र प्रेम के लिए उनके द्वारा उठाए गए बलो. उनकी हिम्मत. ब्रह्मचारी जीवन और अन्य कई गुणों के लिए मुझे उनके प्रति मान है। अपनी समाज में उस समय जो भी त्रुटियां थी, खराबियां कुरीतियां अज्ञानता बहेम और बुराईयां भी उनको स्वामी जी ने दूर करने के लिए बलवा पुकारा। यदि स्वामी जी न होते तो हिन्दू समाज की क्या हालत होती इसकी कल्पना करना भी कठिन था। आज देश में जो भी कार्य चल रहा है। उनका मार्ग स्वामी जी वर्षों पूर्व बता गए हैं। शताब्दियों से ऐसे महापुरुष बिरले मिलते हैं। समाज में जब बुराईयां घर कर जाती हैं. तब ईश्वर ऐसी विभूतियों को भेजता है। ऐसे महापुरुष कभी मरते नहीं हैं। वे अमर होते हैं। उनका जीवन हमारे लिए आदर्श बन जाता है।

—सरदार बल्लभ भाई पटेल

पंजाब में आर्य समाज के उदयकी पृष्ठ-भूमि

लेखक—श्री शिवराज शास्त्री
एम, ए, मौलवी फाजिल

उन्नीसवीं शताब्दी से मध्य तक पंजाब की हिन्दू व बौद्ध जनसंख्या इस्लाम के तीव्र प्रभाव में आ चुकी थी। पंजाब की लगभग आधी आबादी मुसलमान जनसंख्या के रूप में परिवर्तित हो चुकी थी। इस्लाम की विचारधारा का प्रवाह अधिकतर अफगानिस्तान से हुआ। जिसने आधे पश्चिमी प्रान्त को अपने प्रवाह में ले लिया था। केवल पहाड़ी भाग जिसमें हिन्दू राजाओं का राज्य था। रावी नदी का पूर्वी भाग जहां हिन्दू जनसंख्या 94 प्रतिशत थी बचा हुआ था। वहां हिन्दू राजे व ब्राह्मण अपनी परम्परागत सभ्यता की रक्षा कर पा रहे थे। 8 सौ वर्ष से पंजाब के मैदानी भागों में जब तक 1799 तक राजा रणजीत सिंह गद्दी पर बैठे मुसलमानों ने दुर्दान्त शासन किया। सारा राजनैतिक वातावरण इस्लामी विचारधारा से प्रभावित था।

गवर्नमैंट आफ इण्डिया की 1891 की जनसंख्या रिर्पोट दी पंजाब एन्ड फ्यूडीलेटरीज पार्ट—1 दि रिपोर्ट आफ सैन्सेस लेखक ई0 डी0 मैकलागन प्रकाशक गवर्नमेंट आफ इण्डिया कलकत्ता 1892 राजपूतों व ब्राह्मणों का राजनीतिक प्रभाव कम होने से मुस्लिम व सिखों ने ब्राह्मणों की धार्मिक महता को घटा दिया। कुछ व्यापारी समुदाय ही ब्राह्मणों के द्वारा अपने कर्म काण्ड कराता था। (सोशल चैन्जेज इन मार्डन इण्डिया लेखक एम-एन श्री निवास प्रकाशक बर्कले: यूनीवर्सिटी आफ कैलीफोर्निया प्रेस 1966 पृष्ट 9-480 पंजाबी सैन्चुरी 1857 द्वारा प्रकाश टण्डन प्रकाशक चैटो एन्ड विडस लन्डन 1961) पृष्ट 76. 77)

पंजाब की शेष जातियों के सम्बन्ध में डैंजिल इबटसन की पुस्तक पंजाब कास्ट्स जिसका प्रकाशन लाहौर से पंजाब गवर्नमैंट द्वारा 1916 में हुआ विशेष पठनीय है।

इस्लाम के दुर्दान्त प्रभाव का फल यह है कि पंजाब केसरी लालालाजपतराय के दादा तोश्वेताम्बर जैन थे। परन्तु उनके पिता लाला राधा किशन लगभग मुसलमान ही हो गए थे। 1865 में फिरोजपुर के धुडीके गांव में अग्रवाल परिवार में लाला लाजपतराय का जन्म हुआ था। उनके पिता पर इस्लाम का इतना प्रभाव था कि वे 5 समय नमाज पढ़ते थे और नियमित रूप से रोजा रखते थे। मुसलमान वद्वानों व मौलवियों से उनका विशेष सम्पर्क था। राधा किशन जी उस समय के महान मुसलमान सुधारक श्री सर सैयद अहमद के परम भक्त बन गए थे। लाजपतराय जी की माता कट्टर वैष्णव थी। वे अपने पति के विचारों से अत्यन्त रूष्ट व खिन्न रहती थी। वे अपने पति की धर्म विमुखता पर घण्टों रोती थी। पति, पत्नी में इतना तनाव था कि लाजपतराय जी को साथ लेकर मायके चले जाने की धमकियों पर ही दोनों रुके हुए थे अन्यथा राधा किशन निश्चय ही मुसलमान बन जाते। (लाला लाजपतराय की आत्मकथा दिल्ली यूनीवर्सिटी प्रकाशन) लाजपतराय जी का लाहौर में पं. गुरुदत्त व महात्मा हंसराज जी से कालेज शिक्षा के समय सम्पर्क उनके लिए अत्यन्त प्रेरणादायक बना।

पंजाब में शिक्षा के प्रसार के लिए बंगाली प्रोफेसर पंजाब में 1850 में आए। लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति को क्रियान्वित करने के लिए अंग्रेजी माध्यम के मिशनरी स्कूल ईसाईयों ने स्थापित किए थे। जिन्हें अंग्रेजी भाषा के पढ़ाने लिए बंगाल से ब्राह्मणों से ईसाई बने प्रोफेसर बुलाए गए। उनके नाम हिन्दु ही थे ताकि भारतियों को भ्रम में डालकर ईसाइयत का प्रचार किया जा सके। वे अपने साथ राजा राममोहन राय के ब्रह्म समाज के विचार भी लाए और लाहौर में उन्होंने नियमित रूप से ब्रह्म समाज की स्थापना कर दी। ब्रह्म समाज अंग्रेजी नवीन सभ्यता से अत्यन्त प्रभावित रहा था। फलत: ब्रह्म समाज का दृष्टिकोण ईसाइयत के प्रति सहानुभूति पूर्ण था। ब्राह्मणवाद के घोर अंधकारमय रीति रिवाज का वह कट्टर विरोधी था। बंगाल के ब्राह्मण अध्यापक जो ईसाइ बन चुके थे। उन्होंने पंजाब में नव स्थापित मिशन स्कूलों का कार्यभार सम्भाला। उनमें कालीनाथ चटर्जी मुख्य थे। जिन्होंने 1862 में जालन्धर मिशन स्कूल का मुख्याध्यापक पद का भार सम्भाला। (ए प्रिंस आफ चर्च इन इण्डिया लेखक सी-आर-इविंग पृष्ठ 42)

देहली के बाद ईसाईयों का पहला मिश्नरी केन्द्र पंजाब बना 1834 में एक अमेरिकन पादरी जोन सीलारी ने लुधियाना में मिशन स्थापित किया जो शीघ्र ही शिक्षा का केन्द्र बन गया। 1835 में ही उस ने लुधियाना मिशन का प्रेस स्थापित कर लिया जिस में ईसाईयत के प्रचार के लिए पंजाबी हिन्दी उर्दू फारसी व काश्मीरी भाषा में अनेक प्रकार का प्रचार साहित्य प्रकाशित करना प्रारम्भ कर दिया। प्रथम 3 वर्ष में ही 68000 ग्रन्थ प्रकाशित किए गए। यद्यपि 1845 में सिखों ने व 1857 में क्रान्तिकारियों ने उस साहित्य को जलाया परन्तु शान्ति स्थापित होते ही शीघ्र ही ईसाईओं ने अपना प्रचार क्षेत्र पंजाब के पहाड़ो मुलतान अटक तक बढ़ा लिया। अम्बाला लाहौर पेशावर डेरा गाजी खां में जिला स्तर व कहीं कहीं तहसील स्तर पर उनके चर्च स्थापित हो चुके थे। काश्मीर भी उनकी गतिविधियों का केन्द्र बन चुका था, जनाना मिशनों के द्वारा वे महिलाओं में भी प्रचार कार्य करने लगे, हिन्दुओं में अछुत कहे जाने वाले व ढिलमिल विचारों वाले हजारों पंजाबी ईसाई बनने लगे। हिन्दुओं में धर्म परिवर्तन करने वाले हिन्दुओं को जाति च्युत की सजा दी जाती थी ऐसे जाति च्यूत लोगों के लिए ईसाईओं व लाहौर की चर्च मिशन सोसायटी ने 1868 में एक कालोनी 1935 एकड़ भूमि पट्टे पर लेकर लाहौर के पास चूनियों तहसील में स्थापित की जहां रोबर्ट क्लाक की अध्यक्षता में एक आदर्श ग्राम का निर्माण किया गया. 1881 तक पंजाब में 3912 ईसाई बन चुके थे जो 1911 तक 163994 हो गए। ईसाई मिशन व अंग्रेजी राज्य को इस ईसाईकरण में भरपूर सहयोग दिया जाता था।

पंजाब के इस प्रकार विदेशी विधर्मी प्रभाव में आ जाने से पंजाब के सम्भ्रान्त नागरिकों में अत्यन्त भय व आतंक छा गया और जब महर्षिदयानन्द जनवरी 1877 में दिल्ली दरबार में भाग लेने आए तो पंजाब के कुछ प्रमुख नागरिकों ने पंजाब की इस दुर्दशा पर महर्षि से चर्चा की तथा उन्हें पजाब आने का निमन्त्रण दिया तदनुसार महर्षि दयानन्द 19अप्रैल 1877 को ही लाहौर पधार गए। वे 17 जुलाई 1877 तक पंजाब में रहे। पंजाब प्रवास में ही उन्हें देश पर छा रहे ईसाई व मुसलमानों के घोर घातक प्रभाव का आभास हुआ और देश में प्रथम बार किसी हिन्दु धर्माचार्य ने इन विदेशी पंथों से टक्कर लेने का संकल्प किया। महर्षि से पूर्व हिन्दू धर्म के तथाकथित धर्माचार्य विदेशी धर्म प्रचारकों के विरुद्ध कुछ भी कहने से न केवल जान बचाते रहे अपितु कुछ क्षुद्राशय अर्थ लोभी पण्डितों ने तो यवनों के हित में साहित्य रचनायें भी की। उन के अन्दर अपने देश जाति व धर्म के प्रति कोई निष्ठा श्रद्धा व भक्ति की भावनायें नहीं थी। तथाकथित पौराणिक साहित्य जिसे आज भी हिन्दू सनातन धर्म के नाम से पहचानते हैं। उसकी रचना यवन काल में

ही हुई है। इन देशद्रोही धर्मद्रोही पण्डितों को देश के भविष्य की कोई चिन्ता नहीं थी। उन्होंने भारतीय इतिहास को कलंकित करने में कोई कसर नहीं उठा रखी थी। तभी तो देव दयानन्द ने भागवत के रचयिता के प्रति अत्यन्त कठोर शब्दों का प्रयोग किया। है।

महर्षि देश की दुर्दशा पर महान पीड़ा का अनुभव करते थे। फलत: उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के दस समुल्लासों में जहां वैदिक धर्म के महान् सिद्धान्तों का निरुपण किया वहां देश को हानि पहुंचाने वाले सभी अवैदिक पुरानी किरानी सम्प्रदायों का गहन गम्भीर अन्वेषण कर उनकी खासी खबर ली है।

पंजाब में महर्षि के भाषणों से एक नवयुग का निर्माण हुआ। सारा पजाब प्रकाश की इस नई किरण से लाभान्वित हो गया। स्थान स्थान पर आर्यसमाजों के संगठित होने के सुखद समाचार आने लगे। देश महर्षि के वैदिक नाद से जाग्रत हो ही चुका था। महर्षि के निर्वाण से प्रेरणा पाकर पंजाब के एक युवक व प्रतिभाशाली विद्वान पं. गुरुदत्त ने पंजाब में युग परिवर्तन का शंख फूंक दिया। पण्डित जी के ही सहयोगी त्याग मूर्ति महात्मा हंसराज महात्मा मुन्शीराम जी व पजाब केसरी लाला लाजपतराय सारे देश की नूतन आशाओं के केन्द्र बन गए।

देश में तेजी से बढ़ रहे इस्लामीकरण व ईसाईकरण आन्दोलनों को नियन्त्रित करने व पुन: हिन्दूकरण की विशाल योजनायें बनी जिसमें अमर शहीद प. लेखराम व मुन्शी इन्द्रमणी जी के नाम सुनहरी अक्षरों मे लिखे जाने योग्य हैं।

आज देश के धार्मिक क्षेत्र में आर्यसमाज का विशाल सगठन देव दयानन्द के उसी भागीरथ प्रयत्न का प्रतिफल है जिसका लक्ष्य देश के सर्वांगीण विकास उन्नति व सुरक्षा को महर्षि ने घोषित किया था।

महर्षि द्वारा पंजाबियों की प्रशंसा एवं आशीर्वाद

जब स्वामी जी पंजाब पधारे थे, उस समय दिल्ली से पेशावर तक का इलाका पजाब कहलाता था। स्वामी जी यहां अत्यन्त सफल रहे। पजाब से जाते समय आपने पंजाबियों की निम्न शब्दों में प्रशसा की एवं आशीर्वाद दिया :—

'इस प्रांत के लोग उत्साह और साहस वाले है। श्रद्धालु और वीर हैं, मुझे इन पर बड़ी आशा है। मैंने अपने सकल सामर्थ्य से भूमि को स्वच्छ बनाकर उद्यान लगाया है। खाद भी इसमें पड़ गया है जल भी सीचा जा चुका है अब इसके मुरझाने और कुम्महलाने की कुछ भी चिन्ता नहीं है। यह सब कुछ होते हुए भी, ऐसे सब कार्य भगवन भरोसे ही किए जाते हैं। इसलिए आर्य समाज का भी वही रक्षक है, जो चन्द्र और सूर्य को बनाता और उनकी रक्षा करता है'।

प्रभु कृपा तथा ऋषि के आशीर्वाद से वह नन्हा सा पौधा 'आर्य समाज' आज विशाल वृक्ष बन चुका है आर्यों की सख्या एक करोड़ से कुछ ऊपर ही होगी। करोडों व्यक्ति ऋषि के विचारो से प्रभावित हैं। आज विश्वभर में 'ओ३म्' नमस्ते, और गायत्री का प्रचार जारी है। वेदों पर लोगों की निष्ठा बढ़ी है। हिन्दी राज भाषा मानी गई है। बाल-विवाह, बहु विवाह एव वृद्ध विवाह समाप्त हो गए है। देवियों को पुरुषो के समान अधिकार प्राप्त हैं। छुआछूत का भूत भाग गया है। ऊंच-नीच का प्रश्न समाप्त हो गया है। शुद्धि के विरोधी स्वय समाप्त हो गए है। मुसलमान, ईसाई आदि मत-मतान्तर ऋषि की प्रबल युक्तियों के आगे घुटने टेक कर अपने धर्म ग्रन्थों की नवीन व्याख्या कर रहे हैं। करोड़ों व्यक्ति आर्य समाज का साहित्य पढ़ते और ऋषि पर आस्था रखते हैं। महात्मा गांधी सर सैय्यद अहमद खां, योगी अरविन्द, मैक्स मूलर, कर्नल अलकाट और सुभाष चन्द्र बोस से लेकर इन्दिरा गांधी तक जिसे भी देखो, मुक्त कण्ठ से ऋषि की महिमा गा रहा है। सच भी यह है कि—

आज दुनिया सारी जय बोले —दयानन्द की।

—पं. निरञ्जनदेव महोपदेशक

साधना के दीप जलते

ले.—श्री रमाकान्त जी दीक्षित भिवानी

हृदय-मंदिर में युगों से, साधना के दीप जलते।
ओ, अनोखी रीत वाले, नयन मेरे स्वप्न पलते ॥

बढ़ा निराशा का नयन में, तिमिर नित बढ़ता रहेगा,
स्नेह बाती पर भला फिर, किस तरह चढ़ता रहेगा,

प्रीत का अर्घ्य चढ़ाने, अश्रु ढल ढल कर ही गलते।
हृदय मंदिर में युगों से, साधना के दीप जलते ॥

भार जगती का उठाने, खोजता है प्राण सम्बल,
दयामय, मेरे लिये, देवता तुम एक केवल ॥

मैं जला करता विरह में, वेदना के शूल खलते।
हृदय मंदिर में युगों से, साधना के दीप जलते ॥

प्रियवर, अब तो तुम्हारी, मुझे दर्शन लालसा है,
दर्शनों की लालसा में, उठता हर-स्वर ताल सा है।

खुल रहे अपलक नयन ये, आज नीचे को न ढलते,
हृदय, मंदिर में युगों से, साधना के दीप जलते ॥

विफल युग-संचित न होगी, आज तो साध मेरी,
रही तुम में युग युगों से, श्रद्धा अमित, अगाध मेरी

स्वप्न में आकर सदा तुम, मुझे अनुदित रहे छलते।
हृदय मंदिर में युगों से, साधना के दीप जलते ॥

महाप्रतिभा मंडित महापुरुष दयानन्द

लेखक—महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी

उन्नीसवीं सदी का परार्द्ध भारत के इतिहास का अपर स्वर्ण प्रभात है। कई पावन चरित्र महापुरुष अलग-अलग उत्तरदायित्व लेकर इस समय इस पुण्य भूमि में अवतीर्ण होते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती भी इन्हीं में एक महा प्रतिभा-मंडित महा पुरुष हैं।

···शासन बदला, अंग्रेज आए, संसार की सभ्यता एक नए प्रवाह से बही, बड़े 2 पण्डित, विश्व-साहित्य विश्व ज्ञान विश्व मैत्री की आवाज उठाने लगे। पर भारत उसी प्रकार पौराणिक रूप के माया जाल में भूला रहा। इस समय ज्ञान स्पर्धा के लिए समय को फिर आवश्यकता हुई। और महर्षि दयानन्द का यही अपराजित प्रकाश है! वह अपार वैदिक ज्ञान राशि के आधार स्तम्भ स्वरूप अकेले बड़े 2 पण्डितों का सामना करते हैं। एक ही आधार से इतनी बड़ी शक्ति का स्फुरण होता है कि आज भारत के युगान्तर साहित्य में इसी साहित्य में इसी की सत्ता प्रथम है, यही जनसंख्या में बढ़ी हुई हैं।

चरित्र, स्वास्थ्य, त्याग, ज्ञान और शिष्टता आदि में जो आदर्श महर्षि दयानन्द जी महाराज में प्राप्त होते हैं। उनका लेशमात्र भी अभारतीय पश्चिमी शिक्षा-संभूत नहीं, पुन: ऐसे आर्य में ज्ञान तथा कर्म का कितना प्रसार रह सकता है, वह स्वयं इस के उदाहरण हैं। मतलब यह है कि जो लोग कहते हैं कि वैदिक अथवा प्राचीन शिक्षा द्वारा मनुष्य उतना उन्नत-मना नहीं हो सकता। जितना अंग्रेजी शिक्षा द्वारा होता है। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती इसके प्रत्यक्ष खन्डन हैं। महर्षि दयानन्द जी से बढ़ कर भी मनुष्य होता है। इसका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता, यही ...क ज्ञान की मनुष्य के उत्कर्ष में प्रत्यक्ष उपलब्धि होती है। यही आदर्श आर्य हमें देखने को मिलता है। ......हमें अपने सुधार के लिए क्या क्या करना चाहिए हमारे सामाजिक उन्नयन में कहां कहां और क्या क्या रुकावटें हैं। हमें मुक्ति के लिए कौन-सा मार्ग ग्रहण करना चाहिए। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने बहुत अच्छी तरह समझाया है। आर्य समाज की प्रतिष्ठा उसकी प्रगति एक दिव्य शक्ति की स्फूर्ति है। देश में महिलाओं पतितों तथा ब्रह्मणेतर जातियों के अधिकार के लिए महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज से बढ़ कर इस नवीन विचारों के युग में किसी भी समाज ने कार्य नहीं किया। आज जो जागरण भारत में देख पड़ता है। इसका प्राय: सम्पूर्ण श्रेय आर्य समाज को है। स्वधर्म में दीक्षित करने का यहां इसी समाज से श्री गणेश हुआ है। भिन्न जाति वाले बन्धुओं को उठाने तथा ब्राह्मण-क्षत्रियों के प्रहारों से बचाने का उद्यम आर्य समाज ही करता रहा है। शहर-शहर, जिले-2 कस्बे-कस्बे में इसी उदारता के कारण, आर्य समाज की स्थापना हो गई। राष्ट्र-भाषा हिन्दी के भी स्वामी जी एक प्रवर्तक हैं, और आर्य समाज के प्रचार की तो यह भाषा ही रही है।———शिक्षण के लिए गुरुकुल जैसी सस्थाएं निर्मित हो गई। एक नया ही जीवन देश में लहराने लगा। हमें ऋषियों की सन्तान होने का सौभाग्य प्राप्त है और इसके लिए हम गर्व करते हैं, तो कहना होगा कि ऋषि दयानन्द से बढ़ कर हमारा उपकार इधर किसी भी दूसरे महापुरुष ने नहीं किया, जिन्होंने स्वयं कुछ भी न लेकर हमें अपार ज्ञान-राशि वेदों से परिचित कर दिया।

—

निर्भीक ईश्वर विश्वासी मृत्युञ्जय दयानन्द

लेखक—श्री यशपाल जी आर्य बन्धु

निर्भीकता महर्षि दयानन्द के चरित्र की एक अन्य उल्लेखनीय विशेषता है। महर्षि जैसा निर्भीक व्यक्ति इतिहास के पन्नों में खोजने से नहीं मिलता। सत्य को प्रकट करना किसी निर्भीक व्यक्ति के ही बस का कार्य है। महर्षि की यह विशेषता है कि उन्हें जो भी बात कहनी होती थी बिना घुमाए फिराये सीधे-सादे स्पष्ट शब्दों में कह दिया करते थे। फिर चाहे वह किसी के विरुद्ध क्यों न पड़े। बरेली में महर्षि ने ईसाई मत के विरुद्ध कुछ कह दिया और वह भी अंग्रेज कलक्टर कुछ क्रुद्ध हो उठा। उसने मन्त्री से कहा कि अपने पण्डित से कह दो कि नरमी से काम ले। वह मन्त्री स्वामी जी से गिड़गिड़ा कर बोला कि आप कुछ नरमी से बोला करें। स्वामी जी भांप गए कि क्या बात है। रात्रि को सिंह गर्जना करते हुए बोले—लोग कहते हैं कि सत्य को प्रकट न करो कलक्टर क्रोधित होगा। अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे! चक्रवर्ती राजा भी क्यों न अप्रसन्न हो, हम तो सत्य कहेंगे। फिर गरजते हुए अति निर्भीकता पूर्वक बोले कि—यह शरीर तो अनित्य हैं। इसकी रक्षा में प्रवृत हो कर अधर्म करना व्यर्थ है। इसे जिस मनुष्य का जी चाहे नाश कर दे। किन्तु वह शूरवीर पुरुष मुझे दिखाओ जो मेरे आत्मा का नाश करने का दावा करे। जब तक ऐसा वीर संसार में दिखाई नहीं देता, तब तक मैं यह सोचने के लिए भी तैयार नहीं कि मैं सत्य को दबाऊंगा वा नहीं। (देखें—कल्याण मार्ग का पथिक पृष्ठ 53) जोधपुराधीश को वेश्या के सम्मुख फटकार लगाना उसी महामानव का ही काम था। काशी में उद्दण्ड भीड़ के सम्मुख अकेले डटना निर्भीकता का प्रबल प्रमाण है। राव करण सिंह के हाथ से तलवार झपट कर दो टुकड़े कर देना किसी निर्भीक व्यक्ति का ही काम हो सकता है। तात्पर्य यह कि महर्षि दयानन्द में अद्भुत निर्भीकता थी। ऐसी जो बिरले महा पुरुषों में देखने को मिलती है।

सच्चे ईश्वर विश्वासी

महामानव दयानन्द सच्चे ईश्वर विश्वासी एवं परम आस्तिक थे। वे सही अर्थों में आस्तिक थे न कि आस्तिकता का भुलावा देने वाले तथाकथित आस्तिक अथवा छद्म आस्तिक आज संसार में नास्तिकता जो तीव्र गति से पनप रही है इसका मुख्य कारण आस्तिकता का ढोंग करना ही है। सम्पूर्ण संसार में सच्चे आस्तिक सर्वथा नगण्य है। प्राय: अपने को आस्तिक कहने वाले हम सब छद्म आस्तिक ही हैं। अथवा यूं कहिए कि प्रच्छन्न नास्तिक हैं। ईश्वर को सर्वव्यापी एवं कर्मफल दाता जानते एवं मानते हुए भी हम जब पाप कर बैठते हैं। तो फिर ईश्वर को मानने न मानने का क्या अर्थ? जब हमारा उसकी न्याय व्यवस्था में विश्वास ही नहीं तो

फिर हम आस्तिक काहे के ? जब हम उसके अनादि ज्ञान वेद के अनुसार जीवन-यापन नहीं करते तो फिर हम आस्तिक क्यों कर हो सकते । अतः हम सब छद्म आस्तिक ही हैं एवं आस्तिकता का ढोंग कर रहे हैं, किन्तु महर्षि दयानन्द के चरित्र की यह विशेषता थी कि वे ढोंगी या छद्म आस्तिक नहीं थे। अपितु एक सच्चे एवं आदर्श आस्तिक थे। बड़े 2 संकट आने पर भी उन का ईश्वर विश्वास कभी नही डगमगाया था। वे दृढ़ ईश्वर-विश्वासी और सच्चे आस्तिक थे। ईश्वर का जो यथार्थ स्वरूप एवं उसकी उपासना की जो यथार्थ विधि वे दर्शा गए हैं, वह सर्वथा अनुपम है। आस्तिकता के बल पर एक अकेले महर्षि ने ऐसे-ऐसे अद्भुत साहस भरे कार्य कर दिखाये जो सम्पूर्ण मानवता मिल कर भी न कर पायी थी।

दिग्विजयी

महर्षि दयानन्द एक दिग्विजयी वीर विजेता थे। इतिहास साक्षी है कि जिस किसी भी दिशा में उन्होंने अपना कदम बढ़ाया, दिशायें नमती चली गई और वह विजय दुन्दुभि बजाते, विजय पताका फहराते आगे ही आगे बढ़ते चले गए। तभी कोई उन्हे नेपोलियन की उपमा देने लगा तो कोई सिकन्दर की, कोई अर्जुन की, कोई अभिमन्यु की, पर वे इन सबसे महान् थे, ऐसे अनुपम योद्धा एव दिग्विजयी वीर विजेता की जिसकी उपमा इतिहास के पन्नों में नहीं मिलती। खदीजा बेगम ठीक ही लिखती हैं कि नेपोलियन और सिकन्दर जैसे अनेक सम्राट एवं विजेता संसार में हो चुके हैं, परन्तु स्वामी दयानन्द उन सबसे बढ़ कर थे। वस्तुतः वह अपने काम में और शान में निराले थे।

मृत्युञ्जय

प्राणी जन्म लेकर मृत्यु को अवश्य प्राप्त होना है। यह एक शाश्वत सत्य है। अतः इस दृष्टि से सभी शरीरधारी मरणधर्मा है। मौत से कोई नहीं बचा। प्राणीमात्र मौत के साए तले जी रहे है। मृत्यु अवश्यम्भावी है। तो क्या महर्षि दयानन्द की मृत्यु नहीं हुई थी ? यदि हुई थी तो फिर उन्हें मृत्युञ्जय कहने का क्या प्रयोजन ? यह तो कोई कह ही नहीं सकता कि महर्षि की मृत्यु नहीं हुई थी। एक शती पूर्व दीपावली की शाम को उ की आत्मा पार्थिव शरीर को छोड़ कर प्रस्थान कर गई थी। शरीर से आत्मा के वियोग का नाम ही तो मृत्यु है। फिर भी महर्षि दयानन्द मृत्युञ्जय ही थे। यह इसलिए की उन्होंने मृत्यु से कभी हार नहीं मानी अपितु सदैव मृत्यु को चुनौती देते रहे। मृत्यु उन्हें बलिदान के पथ से डिगा नहीं सकी। अपितु वे ही जीवन भर मृत्यु को ठोकरें मारते रहे। मानों उनका कथन हो कि:—

अपने हर इक गाम पर मन्जिल को ठुकराता हूं मैं।

और यूं कहती है दुनियां ठोकरें खाता हूं मैं॥

अपनी बहन की मृत्यु पर बालक मूलशंकर अत्यधिक भयभीत हो उठा था। भयातिरेक के कारण वह अवसन्न होकर रह गया था। यहां तक कि मृत्यु के भय से वह इतना भयभीत हो गया कि उसकी आंखें तक पत्थरा गई थी। पारिवारिक जनों ने उसकी अश्रु विहीन शुष्क आंखों को देखकर उसे निष्ठुर तथा निर्मोही तक कह डाला, पर मूल शंकर की अन्तर्वेदना को कोई उस समय समझ नहीं सका। मृत्यु के उस दृश्य को देख कर मूल शंकर ऐसा भयभीत हुआ कि जिसका बर्णन करना कठिन है। इस दृश्य को देखकर वह यही सोचने लगा कि क्या मुझे भी एक दिन ऐसे ही मृत्यु का शिकार होना पड़ेगा। इसी विचार ने उसे भयभीत कर दिया था। वह मृत्यु से बचने के उपाय सोचने लगा और अमरत्व की प्राप्ति के लिए उसने न जाने कहां-कहां, कैसी-कैसी और कितनी ठोकरें खाई। मूलशंकर तब उस समय मृत्यु से भले ही न मरा हो पर मृत्यु के भय ने उसे मार ही डाला था। तब वह अबोध मूल शंकर था किन्तु वही जब प्रबुद्ध वेदवेत्ता महर्षि दयानन्द सरस्वती के रूप में सम्मुख आया तो वह मृत्यु को लताड़ता और पछाड़ता हुआ उसके मुंह में घुसता-सा चला गया। अब न उसे कोई भय था न

कोई शंका अपितु उसकी ललकार थी कि मृत्यु से डरना मूर्खों का काम है। उस महामानव का सम्पूर्ण जीवन संकटों से भरा हुआ था। सम्पूर्ण जीवन उसे यातनाएं एवं कष्ट दिए गए किन्तु वह सदैव मुस्करा कर उन्हें झेलता रहा। मस्ती में झूमता हुआ वह कह उठता था कि—

रंजो-गम को जो गम समझते हैं,
बड़े नासमझ हैं वो कम समझते हैं।
जिन्दगी इसमें हमने गुजारी है,
क्या लज्जत है इसमें यह हम समझते हैं॥

वस्तुत:

दुनिया को जब्ते गम के सलीके सिखा दिये,
हद से बढ़ा मलाल तो तुम मुस्करा दिए।

दिग्विजयी-वीर-विजेता दयानन्द जीवन भर विजय दुन्दुभि बजाता रहा। जिस ओर निकला विजयश्री ने उसका भव्य स्वागत किया। वही वीर आज मृत्यु को जीतने चला था। यद्यपि शरीर विष के आघातों से जर्जर हो चुका था, पर उसकी आत्मा अत्यन्त बलवान थी। वह हंसते हंसते मृत्यु का वरण करता है। उसे न कोई भय था न कोई शोक। शरीर के रोम-रोम से काल कूट विष फूट-फूट कर निकल रहा है। अंग-प्रत्यंग में पस और पीप पड़ गई थी। यहां तक कि आंखों की पुतलियों में भी छाले पड़ गए थे। करवट लेना तो दूर सांस तक भी नहीं लिया जा रहा था। पर ऋषि था कि जैसे कोई विशेष बात ही न हुई हो। उसे न कोई मोह था न भय। भय को उसने मार भगाया था। वस्तुत: मृत्यु-भय पर विजय पाना ही मृत्यु पर विजय पाना है। जिस ने मृत्युभय पर विजय पा ली तो फिर वह मृत्युञ्जय क्यों नहीं ?

दीपावली की शाम को जिस समय महर्षि दयानन्द ने आह्लादपूर्वक शरीर त्यागा तो लोग आश्चर्य में पड़ गये। आहा! प्रभु तैंने अच्छी लीला की। तेरी इच्छा पूर्ण हो। कहते हुए जब प्राणों को छोड़ा तो लगता था कि जैसे कोई अपने प्रियतम से मिलने के लिए जा रहा हो। मानो—

मरने वाले के होंठो पर तबस्सुम की झलक,
मौत ने वस्ल का पैगाम दिया हो जैसे।
पता नहीं वह मौत थी या यार का पैगाम था ?

सत्य है—

दिल को सकूं रूह को आराम आ गया,
मौत आ गई कि दोस्त का पैगाम आ गया ?

ऋषि स्वयं तो हंसते हुए संसार से विदा हो गया पर संसार को रुला गया। वस्तुत:—

उसी का नाम रौशन है, उसी का नाम बाकी है।
कि जिसकी मौत पर दुनिया का हर इन्सान
रोता है॥

और अब—

तू नहीं पैगाम तेरा हर किसी के दिल पे है,
बुझ गई कब की शमां पर रोशनी महफिल में है।

सत्य है—

शमां-ए-उम्मीद बुझ गई लेकिन,
रोशनी है कि कम नहीं होती।

फिर भी कुछ ऐसा लगता था कि जाते जाते वह महा-मानव यूं कह रहा हो कि—

हमारे बाद अंधेरा रहेगा महफिल में,
बहुत चिराग जलाओगे रौशनी के लिए।

और सचमुच जमाना चिराग जला जला कर रौशनी करने लगा। तभी दीपावली की रात को दिये जलाये जाते हैं कि अंधेरा कहीं न रहे। किन्तु कविवर नीरज का कथन है कि—

जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना,
अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाये।

जबकि स्थिति यह है कि—

चौखट-चौखट दीप जला कर, बस्ती-बस्ती देख लिया।
आंगन-आंगन घोर अंधेरा, दीवाली की रातों में॥

वह ऋषि आजीवन अंधेरा से जूझता रहा था जिसका आज निर्वाण दिवस मनाया जा रहा है। आइये! इस अवसर पर हम भी प्रतिज्ञा करें कि हम भी अन्धकार को समाप्त करके ही दम लेंगे। प्रभु हमारा सहायक हो।

रौशनी दे दूसरों को दीपवत जलते रहें।
दो हमें आशीश कि हम उम्र भर चलते रहें॥

फिर दीवाली आ गई

ले.—श्री पंडित सत्यपाल जी पथिक अमृतसर

यह आ गई है आ गई लो फिर दीवाली आ गई।
दिल पर ऋषि की याद फिर बनकर घटा सी छा गई।
जिस दिन हुए संसार में दर्शन ऋषि के आखरी,
सुन लो कथा उस दिन की जो पत्थर को भी पिघला गई।
अजमेर की भूमि थी वह और वक्त था वह शाम का,
इक जोत जब बुझने लगी हर जिन्दगी घबरा गई।
पिए दूध में कांचो-ज़हर पूरा महीना हो गया,
सारा जिसम ज़ख्मी हुआ नस-नस चुभन तड़पा गई।
अन्दर से जिसकी नाड़ियां उस कांच ने थी काट दी,
और ज़हर की तासीर भी अपना असर दिखला गई।
वेदों में जितने मन्त्र हैं उतने ही छाले देह पर,
प्यारे ऋषि की यह दशा भक्तों के दिल दहला गई।
सारे बदन में दर्द था दुःखता था चाहे रोम-रोम,
पर मुस्कराहट अन्त तक चेहरे का साथ निभा गई।
यह तो वही काया है जो रखती थी ताकत शेर की,
पर अब पड़ी मजबूर है गुल की तरह कुम्हला गई।
उसने कहा अब खोल दो दरवाजे, और सब खिड़कियां.
यह बात ही अब कूच का बस वक्त है समझा गई।
और फिर कहा आकर मेरे पीछे खड़े होवो सभी.
खुद ली समाधी की दशा जो अपूर्व दृश्य बना गई।
मन्त्रों का उच्चारण किया और प्रेम से सन्ध्या करी,
फिर लेट गए आराम से जिह्वा यह बोल सुना गई।
अच्छी करी लीला प्रभु इच्छा तुम्हारी पूर्ण हो,
यह कह के आंखें मूंद लीं बिजली सी इक लहरा गई।
फिर श्वास खींचा जोर से और तन से बाहर कर दिया,
बस यह हवा आती हुई परलोक में पहुंचा गई।
लो देखते ही देखते पिंजरे का पंछी उड़ गया,
हर दिल की धड़कन रुक गई हर इक नजर पथरा गई।

(10 पृष्ठ का शेष)

जन्म की भाषा गुजराती होने के कारण पहले मुझे इस भाषा का ठीक-ठीक परिज्ञान न था, जिससे भाषा अशुद्ध बन गई थी। 'सत्यार्थ प्रकाश' के अतिरिक्त 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' आदि अनेक पुस्तकें उन्होंने हिन्दी में ही लिखी हैं। हिन्दी में वेदों की टीका एक अपूर्व देन है। वेदों को विद्वानों की पंचायत से निकाल कर सर्व साधारण की चीज बनाने का श्रेय स्वामी दयानन्द को ही है। किसी भी मत की धर्म पुस्तकें जिस भाषा में होती हैं, वह भाषा अनन्त गौरवमयी है। गुजराती होकर भी स्वामी दयानन्द ने यह गौरव हिन्दी को दिया। यहीं तक नहीं, उन्होंने अपने स्थापित किए हुए आर्य समाज का यह नियम बना दिया कि प्रत्येक आर्य तथा आर्य सभासद् को आर्य भाषा और संस्कृत जाननी चाहिए। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रत्येक आर्य समाजी और आर्य समाज से किसी भी रूप में सम्बन्ध रखने वाले को आर्य भाषा (हिन्दी) सीखना लाजिमी हो गया। तब हम यदि यह कह दें कि व्यापक रूप में हिन्दी का प्रचार करने वालों में स्वामी दयानन्द का स्थान सबसे पहला है तो अत्युक्ति न होगी।

'आर्य भाषा' क्यों ?

पर यह आर्य भाषा क्यों? स्वामी दयानन्द का विचार था कि हम विदेश के सहारे न जीएं: वैदिक युग में हम अपने को 'आर्य' कहते थे। हमारे देश का नाम 'आर्यावर्त्त' था, तब भाषा भी 'आर्य भाषा' क्यों न हो? वह हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान को विदेशियों के दिए नाम कहते थे। अपने स्थापित समाज का नाम भी उन्होंने 'आर्य समाज' रखा। उनकी बात ठीक थी। अंग्रेज हमें 'इण्डियन' कहते हैं। हम भी अपने को ऐसे ही कहने लगें तो हंसी के ही पात्र होंगे। कुछ विद्वानों का विचार है कि इस भाषा का प्रयोग उसी युग में होने लगा था, जब देश आर्यावर्त कहलाया था। यह विवादास्पद प्रश्न है और फिर अब आर्य भाषा और हिन्दी के बीच कुछ झगड़ा भी नहीं है। 'हिन्दी' शब्द के साथ बहुत काल से जो भावनाएं सम्बन्ध रखती चली आई हैं, उनका विचार करके उनके अनुयायियों ने भी इस हिन्दी नाम को स्वीकार कर लिया है।

स्वामी दयानन्द मात्र हिन्दी प्रकार के लिए नहीं थे। उनका जो महान् उद्देश्य था, उसकी पूर्ति में वह सहायक थी, शायद अनिवार्य भी। तभी उन्होंने उसे अपनाया। इसी प्रकार वह साहित्यिक भी नहीं थे। जब उन्होंने हिन्दी में लिखना पड़ा, तब उनका लिखा हुआ भी साहित्य में गिना जाने लगा। यही नहीं, अनजाने में ही उनके द्वारा हिन्दी पर कई स्थायी प्रभाव पड़े। उनके आस-पास के युग में गद्य का विकास हुआ और पद्य कम लिखा गया। किसी भी भाषा में प्रारम्भिक साहित्य पद्य में ही मिलता है। हिन्दी में भी यही बात थी। व्यवहारवाद, राष्ट्रीयता का विकास आदि ऐसे कारण हैं, जिनसे गद्य की उपज हुई फिर उस युग में धार्मिक उथल-पुथल जो मची थी, उसमें भी गद्य की आवश्यकता हुई। वाद-विवादमय प्रचार के लिए पद्य ठीक नहीं है, उसके लिए सरल, जोरदार और बोल-चाल की भाषा—गद्य की जरूरत है। संस्कृतज्ञ और गुजराती होते हुए भी उनकी भाषा में कितना जोर है—

जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य ही नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश करे, किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है।

यह लिखते समय उनका मुख्य रुझान यही रहता था कि वह लोगों के दिल पर असर करे। फिर उन्हें शास्त्रार्थ करने होते थे, उनके लिए तीव्र व्यंग्यमयी भाषा उन्हें बोलनी और लिखनी पड़ती थी।



श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. नं. पी.जे.एल.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 30, 9 मार्गशीर्ष सम्वत् 2042 तदनुसार 24 नवम्बर 1985 दयानन्द 161 अंक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

प्रस्थानत्रयी और त्रैतवाद

ले.—श्री अमर स्वामी जी शास्त्रार्थ महारथी

ईश्वर, जीव, प्रकृति तीनों, पृथक् 2 पदार्थ हैं और तीनों अनादि हैं यह वैदिक सिद्धान्त है ऋषि दयानन्द जी महाराज ने प्रबल युक्तियों और प्रमाणों से इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। इस सिद्धान्त का ऋषि दयानन्द जी महाराज ने ऐसे समय में प्रबल प्रचार किया जिस समय में लाखों संन्यासी अद्वैतवाद का सर्वत्र प्रचार करते थे और प्राय: सभी संस्कृतज्ञ पण्डित शंकराचार्य जी के अद्वैतवाद को नतमस्तक होकर स्वीकार कर चुके थे। अद्वैतवादियों ने अपने अद्वैतवाद का नाम वेदान्त रख लिया था और यह घोषणा कर रखी थी कि—

श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि,
यदुक्तं ग्रन्थ कोटिभि: '
ब्रह्मसत्य जगन्मिथ्या,
जीवो ब्रह्मैव नापर: ।

अर्थात् मैं आधे श्लोक द्वारा वह कहता हूं जो करोड़ों ग्रन्थों द्वारा कही गई है वह यह कि ब्रह्म सत्य है जगत् मिथ्या है ईश्वर और जीव पृथक् 2 नही, एक ही हैं।

साथ ही अद्वैतवादी कहते हैं कि अन्य शास्त्र रूपी गीदड़ तब तक ही वन में गर्जते हैं जब तक वेदान्त केसरी नहीं गर्जता है। वेदान्त केसरी के गर्जते ही सारे पूंछ दबा कर भाग जाते हैं।

ऋषि दयानन्द जी ने जब त्रैतवाद की घोषणा की और गर्ज कर कहा कि ईश्वर, जीव, प्रकृति ये तीनों पदार्थ अपनी पृथक् 2 सत्ता रखने वाले तीन अनादि पदार्थ हैं, तब उनके सामने कोई अद्वैतवादी न जम सका।

शंकराचार्य जी ने अद्वैतवाद रूप नया मत बनाया था जिस को अब वेदान्त कहा जाता और अद्वैतवादियों को वेदान्ती कहा जाने लगा, ऋषि दयानन्द जी ने उनको नवीन वेदान्ती कहा।

कहा जाता है कि शंकराचार्य जी के इस मत का आधार प्रस्थानत्रयी है। प्रस्थानत्रयी उपनिषद्, वेदान्त दर्शन और गीता को कहा जाता है। यह निश्चय ही है कि शंकराचार्य जी ने किसी वेद का भाष्य नहीं किया। ग्यारह उपनिषदों पर उनका भाष्य है। वह हैं 1, ईश, 2, केन 3. कठ, 4. प्रश्न, 5. मुण्डक, 6. माण्डूक्य 7. ऐतरेय, 8, तैत्तिरीय, 9. छान्दोग्य, 10. बृहदारण्यक. 11. श्वेताश्वतर इन उपनिषदों का भाष्य शंकराचार्य जी ने ऐसा किया जिससे उनके अद्वैतमत का पोषण हो। ऐसा ही भाष्य उन्होंने वेदान्त दर्शन का किया और ऐसा ही गीता का।

पौराणिक सन्यासी मण्डल इन्ही ग्रन्थों को पढ़ता और इन्ही के प्रमाण शंकराचार्य जी द्वारा बनाए भाष्य के साथ देता रहा।

ऋषि दयानन्द जी महाराज ने हम को वेदों द्वारा दिव्य दृष्टि दी उससे हमने उन ग्रन्थो के मूल वाक्यो को पढ़ा तो पता लगा कि शंकराचार्य जी का अर्थ न केवल वेद विरुद्ध ही है, अपितु मूल वाक्यों से दूर बनावटी अर्थ है। 11 उपनिषद् वेदान्त दर्शन और गीता तीनों में त्रैतवाद है अद्वैतवाद नही।

मैंने इस विषय पर एक पुस्तक लिखी हुई है सम्भव है कभी छप जाए। इस समय मैं प्रस्थानत्रयी में से थोड़े से प्रमाण यहां लिखता हूं पाठक पढ़ें और विचार करें।

1. श्वेताश्वेतर उपनिषद् (4-5) से है।

अजामेकां लोहितां शुक्ल कृष्णाम्
बह्वी: प्रजा: सृजमानां सरूपा: ।

अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते, जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्य: ।

सत्व, रज, तम तीन गुणो से एक प्रजा है अजा—प्रकृति जो अनादि जिस का जन्म कभी नहीं हुआ। एक अज—अनादि अनुत्पन्न जीव है जो उसका सेवन करता है, दूसरा अज—अजन्मा परमेश्वर है जो उस प्रकृति के भोगो को कभी नहीं भोगता है।

इस उपनिषद् वचन में ईश्वर जीव और प्रकृति तीन कहे हैं और तीनों को अनादि बताया है।

(2) द्वासुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्ष परिषस्वजाते।

तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।

यह मन्त्र वेद का है पर उपनिषद् में भी आया है इसमें कहा है कि चेतन सत्ताएं अनादि हैं ईश्वर और जीव, एक ऐसा ही अनादि वृक्ष हैं 'प्रकृति एक चेतन सत्ता जीव उस प्रकृति के फलों को भोगने वाला है दूसरी चेतन सता परमात्मा है वह इसके फलों को नहीं भोगता है केवल शासन करता है यह मन्त्र उपनिषद् में आया है इसीलिए यहां दिया है।

(3) यथोर्णनाभि सृजते गृह्णते च, मुण्डक उपनिषद् (1-1-7)।

इसमें कहा है कि मकड़ी जैसे अपने अन्दर से ही जाला निकाल 2 कर फैलाती है और कभी कभी अपने अन्दर ही समेट लेती हैं वैसे ही परमेश्वर अपने अन्दर से ही सारी सृष्टि को बनाते और अपने अन्दर ही समेट लेते हैं। इस प्रमाण को अद्वैतवादी लोग ईश्वर को अभिन्न निमित्तोपादान सिद्ध करने के लिए देते हैं और कहते हैं कि एक ब्रह्म ही ब्रह्म है और दूसरा कुछ नहीं है. न जीव है न प्रकृति।

यह उपनिषद् वचन उनके पक्ष का पोषक नहीं है। इसमें मकड़ो का उदाहरण है मकड़ो का पार्थिव शरीर है उस में चेतन जीव है मकड़ी प्राकृतिक शरीर में से प्राकृतिक जाला निकालती है। जाला मकड़ी के जीव में से नहीं निकलता है शरीर में से निकलता है मकड़ो मे प्राकृति और जीव दो हैं तीसरा इनका संयोग और वियोग कराने वाला परमात्मा है। इसमें तीन हैं। मेरी पुस्तक में उपनिषदों के भी बहुत प्रमाण हैं।

वेदान्त दर्शन में—

गुहा प्रविष्टावात्मानौ हि तद्-
दर्शनात् 1-2-11

हृदय गुहा में दो आत्मा प्रविष्ट हैं एक जीव दूसरा ब्रह्म। वेदान्त दर्शन के भी बहुत से सूत्र मैंने अपनी पुस्तक में दिए हैं। यहां एक ही देता हूं।

गीता में त्रैतवाद

प्रकृति पुरुषं चैव विद्ध्यनादी
उभावपि। गीता 13-19 प्रकृति और पुरुष दोनों को अनादि जानो।

गीता—अ. 15 श्लोक 16 और 17

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षर: सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते।
उत्तम: पुरुषस्त्वन्य: परमात्मेत्युदाहृत:।
यो लोकत्रयमाविश्य, बिभर्त्यव्यय ईश्वर: ॥

यहां ईश्वर जीव प्रकृति तीनो को पुरुष नाम से ग्रहण किया है—दो पुरुष तो लोक में प्रकृति और जीव हैं तीसरा उत्तम है इनसे वह परमात्मा है वह अविनाशी तीनों लोकों में प्रविष्ट होकर सबका भरण पोषण करता है।

प्रस्थानत्रयी-उपनिषद् वेदान्त दर्शन और गीता के बहुत पुष्ट प्रमाणों से युक्त मैंने पुस्तक लिखी है और लगभग 40 वर्षों से मैंने यह घोषणा कर रखी है कि शंकराचार्य जी का और उनके अनुयायियों का अद्वैतवाद वेद विरुद्ध तो है ही प्रस्थानत्रयी के भी विरुद्ध है हमारा त्रैतवाद सर्वथा वेदानुकूल और युक्तियुक्त तो है ही उन ग्रन्थो से भी प्रमाणित है जिनका सहारा नवीन वेदान्त अद्वैतवाद ने लिया हुआ है।

—

आर्य समाज के साहित्यकार

पं. शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ

लेखक—डाक्टर भवानीलाल जी भारतीय

आर्य समाज के प्रारम्भिक काल के जिन साहित्यकारो ने अपनी विद्वत्तापूर्ण कृतियों से आर्य समाज के साहित्यिक भण्डार की अभिवृद्धि की उनमें शिवशकर शर्मा जी का नाम प्रमुख है। शर्मा जी का जन्म भारत के उस भू-भाग में हुआ। जो महान विद्वानो, शास्त्रज्ञों और मनीषियों की जन्म-भूमि (रहा है)। हमारा अभिप्राय मिथिला से है। बिहार के इसी उत्तरवर्ती मिथिला प्रदेश के दरभंगा जिले के चिहुंटा नामक ग्राम में पण्डित शिवशकर जी का जन्म हुआ। इनका संस्कृत शिक्षण सुप्रसिद्ध सनातनी विद्वान् तथा शिवराज विजय जैसे लब्धप्रतिष्ठ गद्य ग्रन्थ के लेखक पं अम्बिका दत्त व्यास के सान्निध्य मे हुआ। शर्मा जी ने अपने अन्य संस्कृत गुरुओं में प. रामभिक्षु शास्त्री तथा पण्डित गगाधर शास्त्री के नामो का भी उल्लेख किया है।

शीघ्र ही शर्मा जो का परिचय आर्य समाज के सिद्धान्तों से हुआ तथा उन्होने स्वामी दयानन्द रचित ग्रन्थों का विशद अध्ययन आरम्भ कर दिया। इस प्रकार सर्वशास्त्र निष्णान्त होकर शिवशकर शर्मा आर्य समाज के उपदेशक के रूप में कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण हुए। मिथिला जैसे पुराण पन्थी प्रदेश में शिवशकर शर्मा के उदार एवं प्रगतिशील विचारों का विरोध होना स्वाभाविक ही था। अत: उन्होने दक्षिण बिहार को अपना कार्य-क्षेत्र बनाया 1898 से लेकर 1900 तक शर्मा जी रांची मे रहे तथा सुप्रसिद्ध आर्य नेता बाबू बालकृष्ण सहाय के सहयोग से धर्म प्रचार किया। इसी अवधि में उन्होने प्रसिद्ध आर्य पत्र आर्यावर्त मे अनेक महत्व पूर्ण सैद्धान्तिक लेख लिखें।

बिहार से चल कर पण्डित जी अजमेर आए तथा 1900 से 1906 तक निवास किया। यहा वे परोपकारिणी सभा के निर्देशन में धर्म प्रचार तथा तथा ग्रन्थ लेखन का कार्य करते रहे। इसी समय उन्होने छान्दोग्य तथा बृहदारण्यक उपनिषदो पर बृहद संस्कृत हिन्दी भाष्य लिखें। अगस्त 1906 मे शर्माजी पजाब गए और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तर्गत उपदेशक बन गए। इसी समय उन्होने सभा की प्रेरणा से कुछ उत्कृष्ट शोध ग्रन्थ लिखे तथा ऋग्वेद के उस अंश का भाष्य लेखन आरम्भ किया जो स्वामी दयानन्द भाष्य में समाविष्ट नहीं हो सका था। ग्रन्थ रचना के साथ साथ उन्होंने पौराणिक विद्वानों से अनेक शास्त्रार्थ किए और आर्य समाज को विजय दिलाई। पजाब सभा के उपदेशक पद को त्याग कर शर्मा जी गुरुकुल कागडी में वेदोपाध्याय के पद पर 1910 में नियुक्त हुए तथा वेद का अध्यापन कार्य किया।

शिवशकर शर्मा द्वारा लिखित ग्रन्थो का विवरण इस प्रकार है :—

1. ओंकार निर्णय प्रथम संस्करण 1906 मे प्रकाशित हुआ। इसमे वेद उपनिषद ब्राह्मण आदि ग्रन्थों के आधार पर ओंकार की महिमा का विवेचन किया गया है। गोविन्दराम हासानन्द ने इसे पुन प्रकाशित किया।

2, जातिनिर्णय - गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था का विवेचन इस ग्रन्थ का विषय है। वेदतत्व प्रकाश सख्या 3 के अन्तर्गत इस ग्रन्थ को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने 1964 वि. (1907) में प्रकाशित किया। राजपाल एण्ड सन्ज लाहौर ने द्वितीय संस्करण 1926 में प्रकाशित किया।

3. त्रिदेव निर्णय यह लेखक की एक ऊहा प्रधान रचना है, जिसमें ब्रह्मा, विष्णु और शिव की दैव त्रयी का मूल वेदो में तलाशा गया है। लेखक के मतानुसार तीनो देवता तथा पुराण वर्णित उनके परिवारों तथा अन्य परिवारों का आलकारिक वर्णन वेदों मे मूलत उपलब्ध हो जाता है। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से यह ग्रन्थ 1913 ई, (1970 वि.) मे प्रकाशित हुआ। इसका द्वितीय सस्करण यूनियन प्रेस दरभगा से 1918 ई. में प्रकाशित हुआ।

वैदिक इतिहासार्थ निर्णय—इसका प्रथम भाग 1909 में आर्य प्रतिनिधिसभा पजाब ने प्रकाशित किया। व्यक्तिवाचक नामों के दिखलाई पड़ने से वेदों में लौकिक इतिहास का अस्तित्व अनेक विद्वानों ने माना है। इन्हीं विद्वानों की मान्यताओं का खण्डन करने की दृष्टि से यह ग्रन्थ लिखा गया है। इसमें शुन शेप और नरमेध कूप पतित त्रित ऋषि च्यवन को यौवन दान दधीचि की अस्थियों से वृत्र का बध आदि प्रसिद्ध पौराणिक गाथाओं का मूल वेद में खोजने वालों के विचारों का समाधान किया गया है। इसी प्रकार घोषा रोमशा एवं लोपामुद्रा की कथायें, यम यमी संवाद तथा पुरुरवा उर्वशी उपाख्यान आदि भी भी यौगिक दृष्टि से संगति लगा कर वेदों में किसी प्रकार के अनित्य इतिहास का खण्डन किया गया है। लेखक ने इस प्रसंग में कहीं-कहीं महर्षि यास्क और उनके निरुक्त की भी आलोचना की है। वैदिक पुस्तकालय वाराणसी से इसका द्वितीय संस्करण 1965 ई. में प्रकाशित हुआ।

5. श्राद्ध निर्णय—मृतक श्राद्ध का खण्डन परक ग्रन्थ।

उपर्युक्त निर्णय शीर्षक ग्रन्थ माला के अतिरिक्त शर्मा जी ने निम्न ग्रन्थों के भाष्य लिखे—

1. ऋग्वेद भाष्य—मण्डल 8 अध्याय 6 अष्टक 2 वर्ग 36 के 10 वें मन्त्र से यह भाष्य प्रारम्भ होता है। प्रकाशन काल 1987 वि0।

2. छान्दोग्य उपनिषद भाष्य।

3. बृहदारण्यक उपनिषद भाष्य।

अन्य ग्रन्थ—

1. वैदिक रहस्य भाग 1-3।

2, वसिष्ठ नन्दिनी (वैदिक रहस्य भाग 2) 1968 वि. में प्रकाशित।

3. वैज्ञानिक सिद्धान्त

4. वैदिक विज्ञान—वैदिक पुस्तकालय वाराणसी से 1962 ई. में प्रकाशित

5, वैदिक विज्ञान 1968 वि. में प्रकाशित।

6. चतुर्दश भुवन।

7. अलौकिक माला।

वैदिक यति मण्डल का स्वरूप

वैदिक यति मण्डल की स्थापना उन विरक्तो-सन्यासियो वानप्रस्थियों व नैष्ठिक ब्रह्मचारियों ने की जो वेद के सिद्धान्त जिन्हें युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने वेदों व आर्ष ग्रन्थों के आधार पर सत्यार्थ प्रकाश तथा आर्य समाज के नियमों में प्रतिपादित किया है. उन पर अटूट विश्वास करते हैं!

ऐसे लोगो को शिक्षित-संगठित व अनुशासित करके उनको लोक कल्याण व धर्म कार्यों मे लगाना तथा यति मण्डल के उद्देश्यो का प्रचार करना।

उद्देश्य—

1, पुराने अलभ्य वैदिक साहित्य जिसके अभाव के कारण अज्ञानता, पाखण्ड पनप रहे हैं उसे पुन: शीघ्र प्रकाशित करना देश के कोने-2 में पहुंचाना।

2. ऐसे तपस्वी प्रचारक तैयार करना जो कि देश के पिछड़े क्षेत्रों में जाकर वैदिक सस्कृति का प्रचार कर सकें।

3. आर्य जाति के अन्दर आई कुरीतियों को दूर करना।

4. रोगियों में आयुर्वेदिक औषधियो को निशुल्क बाटना।

5. पात्र व योग्य नैष्टिक ब्रह्मचारी विद्यार्थियों को जिन्हें अर्थ अभाव बाधा पड़ती हो उनकी सहायता छात्रवृत्ति इत्यादि द्वारा प्रबन्ध करना।

6, यति वर्ग जिन का सेवा कार्य में शरीर हार जाए और कार्य के अयोग्य हो गए हों, उन के लिए उचित आवास, चिकित्सा व भोजन की व्यवस्था करना।

7, समय-पर राष्ट्र के किसी क्षेत्र में यदि संकट की स्थिति उपजे तो वैदिक यति मण्डल के सदस्यों द्वारा वहाँ की जनता की हर प्रकार से सेवा व सहायता करना।

.8. जनता में फैली कुरीतियों को दूर करके शुद्ध आचार-व्यवहार का प्रचार करना, जिस से जनता सुखी रहे।

9. जात-पात के कारण उत्पन्न घृणा का निवारण करके आपस में परस्पर प्रेम व सगठन का प्रचार करना।

10 गोरक्षा-गोपालन तथा गो दुग्ध का प्रचार करना।

11. ग्रामो व नगरों में सफाई तथा स्वास्थ्य रक्षा का प्रचार करना।

12. माता पिता तथा आध्यापकों में बच्चों को योग्य सदाचारी, देशभक्त तथा मनुष्य मात्र के हितकारी बनाने का प्रचार करना।

13, स्कूल-कालिज के छात्रों को तोड़ फोड़ व राजनैतिक झगड़ों से पृथक रह कर शिक्षा से योग्य बन कर देश व मनुष्य मात्र की सेवा करने का प्रचार करना।

14 जनता को नशीली वस्तुओं से होने वाली हानियां बता कर उनका परित्याग करना तथा शुद्ध खान-पान का प्रचार करना।

15. अपने सभी कार्यों में देश हित तथा प्राणी मात्र के हितों का पूरा पालन करने का प्रचार करना।

16. जात पात तोड़ कर विवाह की प्रेरणा देना तथा दाज-दहेज से होने वाली हानियों से जनता को सावधान करना।

कार्यकारी प्रधान
महात्मा दयानन्द
यति मण्डल

सम्पादकीय—

कुछ आर्य विद्या सभा के विषय में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधीन चल रही शिक्षा संस्थाओं का प्रबन्ध दो सभाओं के अधीन आज तक रहा है। स्कूलों और कालेजों का प्रबन्ध आर्य शिक्षा परिषद करती रही है। और गुरुकुलों का प्रबन्ध आर्य विद्या सभा करती है। 1975 में जब पंजाब सभा का विभाजन हुआ तो देहली और हरियाणा ने अपनी अपनी शिक्षा परिषद् बना ली और पंजाब सभा की शिक्षा परिषद् जो पहले से चल रही थी वहीं चलती रही। केवल उसके संविधान में कुछ संशोधन कर दिया गया। परन्तु जहां तक भिन्न भिन्न स्कूलों के प्रबन्ध का सम्बन्ध था। आज तक वही विद्या सभा देखती रही है जो विभाजन से पहले बनी हुई थी अर्थात् आर्य प्रतिनिधिसभा की विद्या सभा ही गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय और उससे सम्बन्धित सब संस्थाओं, कन्या गुरुकुल देहरादून, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, इन सबका प्रबन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की विद्या सभा करती थी। गुरुकुल इन्द्र प्रस्थ यद्यपि विभाजन के पश्चात् हरियाणा में चला गया था उसके आचार्य और प्रबन्धक श्री स्वामी शक्ति वेश जी ने भी हमें लिख दिया कि वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की विद्या सभा के अधीन ही रहना चाहते हैं। कन्या गुरुकुल देहरादून की प्रधानाचार्य ने भी कहा कि वह पहली विद्या सभा से अपना सम्बन्ध तोड़ना नहीं चाहती। इस पर भी पिछले कुछ समय से यह प्रयत्न किया जा रहा था कि एक समानान्तर विद्या सभा और बनाई जाए। इसके लिए 30 अक्तूबर को हरियाणा और देहली की प्रतिनिधि सभाओं के कुछ अधिकारी और उनके अतिरिक्त कुछ और व्यक्ति जिनको इसमें हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं था हरिद्वार में इकट्ठे हुए और उन्होंने एक नई विद्या सभा बना ली है जिसके अध्यक्ष प्रो. शेरसिंह बनाए गए हैं और कोषाध्यक्ष डा. हरिप्रकाश बनाए गए हैं। इन दो महानुभावों के नामों से ही पता चल जाएगा कि यह नई विद्या सभा क्यों बनाई गई है। मुझे इसका उप प्रधान बनाया गया है यद्यपि मैंने पहले कह दिया था कि मेरा इस सभा के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। इसमें आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के प्रधान और मन्त्री भी रखे गए हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की विद्या सभा एक पंजीकृत संस्था है और जालन्धर के एक न्यायाधीश के निर्णय के अनुसार यही एक विद्या सभा है जिसे सब गुरुकुलों के प्रबन्ध करने का अधिकार है। ऐसी स्थिति में कोई नई विद्या नहीं बन सकती परन्तु कुछ महानुभावों ने बना दी है। इसका एक परिणाम यह भी होगा कि गुरुकुल की सारी सम्पत्ति विवादस्पद बन जाएगी। यह सम्पत्ति इस वक्त तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नाम है वही इसका प्रबन्ध कर सकती है। वही इसे बेच सकती है। किसी दूसरी सभा को उसमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं। भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार के साथ भी जब कोई बात होती है तो इसी आधार पर कि यह सम्पत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की है। इसका प्रमाण इससे भी मिल जाता है कि गुरुकुल कांगड़ी के पुराने भवनों में और नए जितने भवन बने हैं उन सबमें जितने दानियों के नाम के पत्थर लगे हुए हैं वह 90 प्रतिशत पंजाबियों के हैं। पंजाब के आर्य नेताओं ने ही इन संस्थाओं को खड़ा किया था उन्होंने ही इनकी सेवा की थी। उन्होंने ही इन्हें अपना संरक्षण दिया था। कहने का अभिप्राय यह है कि यह संस्थाएं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के परिश्रम का परिणाम है।

अब कुछ महानुभाव इन पर कब्जा करना चाहते हैं। इसके लिए एक नई विद्या सभा बनाई गई है परन्तु वह सफल न हो सकेंगे क्योंकि उनका कोई कानूनी अधिकार नहीं। जिस प्रकार कुछ व्यक्तियों ने गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी को लूटा है उसी प्रकार से अब गुरुकुल की सम्पत्ति को लूटा जाएगा और यह विवाद खड़ा कर दिया जाएगा कि कौन सी सभा गुरुकुल की स्वामिनी है। इसका क्या परिणाम निकल सकता है इसका अनुमान लगाना आर्य जनता के लिए कठिन न होना चाहिए।

मैंने यह सब कुछ केवल इसलिए लिखा है कि एक नई विद्या सभा के नाम पर कुछ भ्रान्ति पैदा करने का प्रयास हो रहा है। एक नई समानान्तर विद्या सभा बनाने के कारण यदि कल को गुरुकुल कांगड़ी या उससे सम्बन्धित संस्थाओं की सम्पत्ति आर्य समाज के हाथ से निकल जाए तो उसका दायित्व उन लोगों पर होगा जिन्होंने यह समानान्तर सभा खड़ी कर दी है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को यह गर्व है कि इतनी दूर जाकर भी यह संस्थाएं खड़ी कर दी हैं। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज आचार्य रामदेव जी पं विशम्भर नाथ जी, महाशय कृष्ण जी, पं. ठाकुर दत्त जी शर्मा, ला, नारायणदास जी ठेकेदार, श्री पं चमूपति जी और दूसरे वह महानुभाव जिन्होंने अपने परिश्रम और त्याग से इन संस्थाओं को खड़ा किया था उन सब का सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से था। आज वह लोग इस पर कब्जा करने की कोशिश कर रहे हैं जिन्होंने इसके लिए किसी प्रकार का कोई काम नहीं किया, उनमें वह भी हैं जिन्होंने पहले फार्मेसी को लूटा है और अब गुरुकुल को लूटना चाहते हैं।

मैंने सारी स्थिति इस लिए आर्य जनता के सामने रख दी है कि यदि अब गुरुकुल के लिए कोई नया संकट पैदा हो जाए तो उसका दायित्व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पर न होगा उन लोगों पर होगा जिन्होंने एक पंजीकृत और विधिवत बनाई गई विद्या सभा के होते हुए एक समानान्तर विद्या सभा बना ली है।

—वीरेन्द्र

रजनीशवाद अब खत्म होना चाहिए

हमारा इतिहास साक्षी है कि समय समय पर हमारे देश में ऐसे लोग पैदा होते रहते हैं। जो कई तरह के परीक्षण करते रहते है। लेकिन उनमें से कई परीक्षण बाद में व्यर्थ सिद्ध होते हैं। हमारे देश की जनता में एक विशेषता है। वह प्रत्येक परीक्षण का अच्छी तरह देख लती है और फिर उन्हे उन मापदण्डों के अनुसार नापने का प्रयास करती है जो प्राचीनकाल से हमें प्रभावित करते चले आ रहे हैं। जो नए परीक्षण हमारे उन प्राचीन मापदण्डों के अनुरूप होते हैं उन्हे लोग स्वीकार कर लेते है जो उनके अनुरूप नहीं होते उन्हे वह उठाकर फेंक देते हैं। आजकल भी कई प्रकार के परीक्षण हो रहे हैं। उन में रजनीशवाद भी एक है। रजनीश नाम के एक व्यक्ति ने एक नई विचारधारा दी जहां तक हो सके हमें स्वतन्त्र रूप से सोचने और स्वतन्त्र रूप से मूर्तरूप देने का प्रयास करना चाहिए। हमारे मन-मस्तिष्क पर जितना कम बोझ होगा उतना ही हम अपने जीवन को अधिक प्रभावशाली बना सकते हैं। इसी विचारधारा को आगे ले जाते हुए रजनीशवाद यह भी कहता है कि स्त्री पुरुष के पारस्परिक सम्बन्धों पर जो प्रतिबन्ध है वे भी समाप्त होने चाहियें। हमारे शास्त्रों के अनुसार सन्यासी का स्थान हमारे समाज में सबसे ऊंचा है। वैसे तो गृहस्थाश्रम के महत्व से भी इन्कार नहीं किया जा सकता लेकिन सन्यास आश्रम एक ऐसा स्थान है जब एक मनुष्य सांसारिक जरुरतों से बहुत ऊपर उठकर अपने आपको मानम मात्र की सेवा के लिए समर्पित कर देता है फिर उसे सुख-दुख या ऐश-ऐश्वर्य की चिन्ता नहीं रहती। वास्तविकता तो यह है कि एक सन्यासी अपना कुछ नहीं समझता यहां तक कि वह अपना शरीर भी अपना मन मस्तिष्क और सब कुछ दूसरों को अर्पित कर देता है। यही कारण है कि हमारे समाज में एक सन्यासी को सबसे अधिक सम्मान और आदर से देखा जाता है।

रजनीश भी अपने आपको एक सन्यासी समझता है। और उसके जो चेले-चेलियां हैं उन्हे भी सन्यासी कहता है। साथ ही उन्हे हर तरह की स्वतन्त्रता दे रखी है। अपने आपको भी हर तरह से स्वतन्त्र समझता है ऐश्वर्य पूर्ण जीवन व्यतीत करता है और दूसरों को भी इसके लिए कहता है यही कारण है कि लोग उसकी ओर खिंचे आते हैं। हमारे समाज में सन्यासी बनना सबसे कठिन है। उस के लिए जो तप और त्याग करना पड़ता है वह प्रत्येक मनुष्य नहीं कर सकता। जो कुछ रजनीश देता है वह सबको मिल सकता है। केवल पैसे की जरूरत होनी चाहिए। रजनीश सबसे बड़ा सन्यासी समझा जाता है इनकी अपनी कारें और विमान हैं। बंगले हैं। हीरे जवाहारात की माला उपने गले में डालकर रखना है

(शेष पृष्ठ 5 पर)

जन्म-मरण की उलझन (3)

ले.—श्री प्रा. भद्रसेनजी वेद-दर्शनाचार्य, होशियारपुर

जन्म-मरण की पहेली को समझने के लिए पहली बैठक से भी अधिक श्रोता आज बड़ी उत्सुकता से आए हैं। मधुरवर्षी ने एक मधुर भजन से सब को मन्त्र मुग्ध किया। तब महात्मा जी मंच पर विराजमान हुए और कहा—सज्जनो! हमने पहली बैठक में जन्म-मरण की पहेली को समझने के लिए कठोपनिषद् के संकेत के अनुसार कृषि की प्रक्रिया के आधार पर कुछ विचार किया था। आजके सत्सग मे जन्म-मरण शब्द पर सब से पहले विचार करते हैं। जिससे किसी की मृत्यु पर अकस्मात् हतप्रभ होने वालों के मन में उभरने वाली आशंकाओं, उलझनों को सुलझाया जा सके।

जन्म-मरण का परिभाषा

जन्म शब्द जनि (प्रादुर्भाव) धातु से बनता है, जिस का अर्थ है पैदा होना, जब कोई चीज पैदा होती है या बनती है, तो उसका बनाने वाला कुछ वस्तुओं को लेकर, अपने औजारों की सहायता से उसको बनाता है। जैसे हलवाई बर्फी बनाने के लिए दूध को आग पर रखता है, दूध उबल-उबल कर गाढ़ा हो जाता है, फिर वह उस में यथा समय मीठा डालता है। इस प्रकार दूध बाह्य रूप मे कई परिवर्तनों के बाद बर्फी के रूप मे सामने आता है। इसीलिए यास्काचार्य ने निरुक्त में लिखा है—'जायते, अस्ति, विपरिणमते, वर्धते, अपक्षीयते, विनश्यति 1,1,2' कि कोई चीज पहले पैदा होती है, इसके बाद वह अस्तित्व में आती है और फिर उस में कई प्रकार के परिवर्तन आने हैं और वह बढ़ती है तथा फिर उस में किसी प्रकार की क्षीणता भी आती है। और अन्त में वह चीज किसी समय किसी न किसी प्रकार से नष्ट हो जाती है, अर्थात् आंखों से ओझल हो जाती है। इस प्रकार प्रत्येक पैदा होने वाली वस्तु इतनी क्रियाओं से निकलती है।

पैदा होने वाली को कार्य और जिन के मेल से वह बनती है, उनको कारण कहते हैं। कारण के गुणों का कार्य पर प्रभाव होता है, यथा रोटी रूपी कार्य के आटा, पानी, आग कारण होते हैं और जैसा नमकीन, मीठा, कनक, मीसा आदि का आटा होता है, वैसी ही रोटी बनती है। दूसरी पैदा होने वाली चीजों में जैसे कईयों का मेल होता है, ऐसे ही हमारे जन्म जीवन के रूप में आत्मा, मन और इन्द्रियों शरीर का मेल होता है। शरीर शब्द सारे धड़ के लिए आता है, शरीर मे ऊपर से लेकर नीचे तक आख, कान, नाक त्वक जिह्वा के रूप में पाच ज्ञान इन्द्रियां हैं। जो रूप, शब्द गन्ध, स्पर्श और रस का ज्ञान ग्रहण कराती हैं। वाणी, हाथ, पैर, मल, मूत्र इन्द्रियां कर्मेन्द्रियां हैं, जो बोलने, पकड़ने-छोड़ने, चलने आदि का कर्म करती हैं।

इसीलिए न्याय दर्शन के प्रणेता गौतम मुनि ने कहा है—'चेष्टेन्द्रियार्थाश्रय शरीरम् 1,1=शरीर से होने वाली सारी क्रियाओं, आंख, कान आदि इन्द्रियों और उन के अर्थों रूप, शब्द आदि का आश्रय, आधार शरीर है अर्थात् ये सारे कार्य, इन्द्रियों से होने वाले व्यवहार जिस स्थान पर होते हैं उसे शरीर कहते हैं। जैसे किसी भवन में रहने वाले वहा रह कर सोते-जागते, उठते-बैठते, खाते-पीते, हंसते-खेलते, पढ़ते-लिखते हैं। वहा सभी तरह का अपना व्यवहार करते है, मकान उन के व्यवहार का आधार अधिष्ठान होता है। वैसे ही शरीर से होने वाली चेष्टाओं और शरीर मे रह कर कार्य करने वाली इन्द्रियों का अधिष्ठान शरीर है। तभी तो कहते हैं कि 'भोगायतनम् शरीरम् अर्थात् लाल-पीले आदि रूपों, मधुर,कटु-तीखे रसों का अनुभव, भोग जिस स्थल में होता है, वह शरीर कहलाता है।

हमारे शरीर मे सांस लेने, छोड़ने, शरीर धारण का कार्य प्राण करते हैं। प्राणवायु शरीर के अन्दर विचरता हुआ शरीर की रस, रक्त आदि धातुओं को धारण करता और मल को प्रेरणा देने का कारण बनता है। शरीर में भिन्न-भिन्न स्थान पर रह कर अलग-अलग कार्य करने के कारण प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान के नाम भेद से पाच प्रकार का कहलाता है। वस्तुत: जीवन का मूल या पहचान प्राण ही है, क्योंकि जब तक सास तब तक आस।

जैसे हम आख से बाहर के दृश्यों को देखते हैं, वैसे ही हमारे अन्दर भी सोचने, निर्णय करने, पिछली यादें याद करने मे और मेरेपन की भावना जिनके द्वारा होती है, उन को अन्त:करण (अन्दर की इन्द्रिय) कहते हैं और ये मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार के नाम से चार हैं।

यह प्राण, शरीर और उसकी बाहर-अन्दर की इन्द्रियां जिस की चेतना, प्रेरणा से कार्य करती हैं, वह आत्मा है, यह अजर-अमर ही शरीर का अधिष्ठाता तथा संचालक है।

जैसे हम जब कोई चीज खाते हैं, तो खाते ही स्वाद से पता चल जाता है, कि इस में इस-इस चीज का स्वाद या मेल है। यथा रसगुल्ला खाते समय पनीर मीठे और बनाने की कला का पता चल जाता है या चटनी चखने पर पोदीने, प्याज, अनारदाना या खट्टास (इमली, अम्बी), नमक, मिर्च का अनुभव होता है। ऐसे ही जब हम अपने जीवन व्यवहार पर विचार करते हैं, तो विचार से स्पष्ट होता है, कि हमारे इस व्यवहार में यह अब या यह कार्य शरीर द्वारा होता है, यह इस-इस बाह्य इन्द्रिय के द्वारा हो रहा है और यह अन्त:करण के के माध्यम से होता है। जैसे कि जाग्रत-अवस्था में सारी इन्द्रियां मन से जुड़ कर अपना-अपना कार्य करती हैं। स्वप्न अवस्था में बाहर की इन्द्रियां सो जाती हैं, तब मन कार्य करता है और सुषुप्ति गाढ़ नींद में मन भी सो जाता है. तब केवल आत्मा और प्राण जागते हैं। उदाहरण के लिए जब हमारे सामने कोई चीज होती है, तो आंख उसके हरे-नीले रूप को तथा आकार को बताती है, त्वचा उस के नर्म, कठोर, उष्ण-शीत स्पर्श का अनुभव कराती है, नासिका से उस के गन्ध का बोध होता है, चखने पर रसना से उस के स्वाद का पता चलता है और मन उस के सम्बन्ध में अनेक तरह की ऊहा-पोह करता है, बुद्धि निर्णय करती है, यदि वैसी चीज पहले भी बरती होती है तो चित्त उन यादों को याद कराता है। यह मेरी है या किसी और की इस सम्बन्ध का अनुभव अहंकार करता है। ये सारी इन्द्रियां अपना-अपना कार्य आत्मा की चेतना से ही करती हैं।

अत: जीवित अवस्था हम जो व्यवहार करते हैं, उस स्थिति में हमारा रूप आत्मा, मन और इन्द्रियों के मेल के रूप में ही होता है। जब इन तीनों का मेल होता है, तभी हमारे दुनियावी व्यवहार होते हैं मन, इन्द्रियों के बिना अकेला आत्मा कोई भी दुनियावी व्यवहार नहीं कर सकता। इसलिए कठ उपनिषद् के ऋषि ने कहा है—आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्ते—त्याहुर्मनीषिण: 1,3,4, विचारशीलों का विचार है कि दुनिया की चीजों को अपने व्यवहार में बर्त कर सुख-दुःख का अनुभव करने वाला, भोक्ता प्रत्येक भोग आत्मा, इन्द्रियों और मन के मेल के होने पर ही करने में समर्थ होता है इसी बात की पुष्टि करते हुए वरककार ने कहा है—शरीरेन्द्रियसत्व (मन:) आत्म संयोग: ... 1, 42। इस सारे प्रकरण को स्पष्ट करते हुए न्यायदर्शन के भाष्यकार वात्स्यायन मुनि 1, 1, 19 मे लिखा है—किसी के पैदा होने का अर्थ है शरीर, इन्द्रियों, मन, वेदना आदि से जुड़ना। इस प्रकार किसी प्राणी के पैदा होने का अभिप्राय: होता है शरीर, इन्द्रिय और मन का आत्मा से मेल। अत: दुनिया की दूसरी बनने वाली चीजों की तरह किसी प्राणी के जन्म का अर्थ है इन का मेल जन्म शब्द के बाद अब कुछ मरण शब्द पर विचार करते हैं। मरण शब्द जन्म से विपरीत अर्थ को रखता है अत: इसका सीधा सा भाव हुआ कि किसी की बनावट, उत्पत्ति का आंखों से ओझल हो जाना। किसी का न रहना ही उसका मरण, उसकी मौत या मृत्यु कहलाती है कुछ के मेल से बनी हुई चीज के जोड़ जब किसी भी कारण से अलग-अलग हो जाते हैं, तो उस का यह बिखराव ही, उसका मरण कहा जा सकता है। जैसे एक मकान बहुत सारी चीजों के मेल से बनता है, समय के साथ एक दिन उसका ताल-मेल ढीला पड़ जाता है। कई बार समय से पहले ही किसी प्रकार की टक्कर, भूचाल, आग या बनावट की गड़-बड़ के कारण वह ताल-मेल बिखर जाता है। तब वह भवन सर्दी-वर्षा से बचाव और आवास का अपना कार्य नहीं करता, यही उसकी मौत है।

कुछ चीजें पहले की तरह ही बनी रहती हैं, उसके हिस्सों का ताल-मेल पहले की तरह ही दीखता है, पर वे अपना कार्य करना बिल्कुल बन्द कर देती है, बार-बार यत्न करने पर भी वे अपना कार्य नहीं करतीं, किसी विशेष कारण से या समय के साथ नकारा हो जाने से उन की मशीनरी कार्य नहीं करती। मशीनों के बारे में प्राय: ऐसा देखा जाता है। कई बार टक्कर या आग से भी यन्त्र एवं यान नकारा हो जाते हैं। ऐसी स्थिति के लिए यम शब्द अधिक उपयुक्त है, क्योंकि यमु (उपरमे) धातु से यम शब्द बनता है, जिस का भाव है कि अपने कार्य से उपराम होना, अलग हो जाना, नकारा हो जाना। इसीलिए मौत एवं मौत के नियामक के लिए यम शब्द आता है। अत: स्पष्ट रूप से बनी हुई जड़ चीजों की मौत के सम्बन्ध में हम प्राय ऐसा ही देखते और अनुभव करते हैं। इसके आधार पर प्राणियों की मौत के विषय में सरलता से समझा जा सकता है। हां इस बारे में अब अगली बैठक में चर्चा करेंगे।

क्रमश:

व्याख्यान माला—

धर्म से ही सुख को पाया जाता है

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर पंजाब

(3 नवम्बर से आगे)

अध्यापनं ब्रह्म यज्ञः पितृ यज्ञस्तु तर्पणम् ।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथि पूजनम् ।19।

अध्यापन को ब्रह्म यज्ञ, तर्पण करने अर्थात् (माता-पिता) को प्रसन्न रखना पितृ यज्ञ, हवन करने को देव यज्ञ, बलि देने को भूत यज्ञ, अथवा बलि वैश्व देव यज्ञ (बलि देने का अर्थ पशु मार बलि नहीं बल्कि भोजन से पूर्व कुत्ते, कौवे आदि के लिए कुछ भोजन अलग रख देने का अर्थ बलि है) और अतिथि के पूजन सेवा सत्कार करने को अतिथि यज्ञ कहते हैं।

पञ्च यज्ञास्तु यो मोहान्न करोति गृहयाश्रमे ।
तस्य नायं न च परो लोको भवति धर्मत: 19।

जो मनुष्य गृहस्थ आश्रम में मोह के मारे धर्मानुसार ये पूर्वोक्त यज्ञ नहीं करता उसका न यह लोक सुधरता है न परलोक सुधरता है।

बालो वा यदि वा वृद्धो युवा वा गृहमागतः ।
तस्य पूजा विधातव्या सर्वस्याभ्यागतो गुरुः ।92।

बालक अथवा वृद्ध या युवा मनुष्य जो भी घर मे आ जाए उसकी यथा-योग्य पूजा करनी चाहिए क्योंकि अतिथि सबका गुरु होता है।

उत्तम स्यापि वर्णस्य नीचोऽपि गृहमागतः ।
पूजनीयो यथायोग्यं सर्वस्याभ्यागतो गुरुः ।93।

उत्तम वर्ण वाले पुरुष के घर में अगर नीच भी आ जाए उसकी भी यथा-योग्य पूजा करनी चाहिए क्योंकि अतिथि सब का गुरु होता है।

राज्यञ्च सम्पदाभोगाः कुले जन्म सुरूपता ।
पाण्डित्यमायुरारोग्यं धर्मस्यैतत्फलं विदुः ।94।

राज्य सम्पत्ति, भोग, अच्छे कुल में जन्म, सुन्दर रूप, पाण्डित्य, आयु, आरोग्यता, ये धर्म का ही फल समझा गया है।

सुकुलजन्म विभूतिरनेकधा प्रियसमागमसौख्यपरम्परा ।
नृपकुले गुरुता विमलं यशोभवति पुण्यतरोः फलमीदृशम् ।95।

अच्छे कुल में जन्म मिलना, अनन्त सम्पत्ति का प्राप्त होना, प्रिय समागम से निरन्तर सुख मिलना, राज कुल में उच्च पद प्राप्त होना, निर्मल यश मिलना ये सब पुण्य रूपी वृक्ष के फल हैं।

प्रिय वचनवादी प्रियो भवति विमृशि तकार्यकरोऽधिकं जयति ।
बहुमित्रकरः सुखं वसते यश्च धर्मरतः स गति लभते ।96।

प्रिय वचन बोलने वाला ही प्यारा होता है, विचार करके कर्म करने वाला ही अधिक विजय पाता है, बहुत मित्र बनाने वाला ही सुख पूर्वक रहता है और जो धर्म में लीन रहने वाला है वही गति अर्थात् मोक्ष को प्राप्त होता है।

न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्धर्मं जह्याज्जीवितस्यापि हेतोः ।
नित्यो धर्मः सुखदुःखेत्वनित्ये जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः ।97।

कामवश, लोभवश, भयवश, अथवा जीवन के लिए भी धर्म का परित्याग नहीं करना चाहिए क्योंकि धर्म नित्य है सुख-दुख अनित्य हैं, जीव नित्य है पर इसका कारण अनित्य है।

न सीदन्नपि धर्मेण मनोऽधर्मे निवेशयेत् ।
अधार्मिकाणां पापानामाशु पश्यन्विपर्ययम् ।98।

पाप में रहने वाले अधार्मिक जनों की शीघ्र ही विपर्यय अवस्था देखता हुआ मनुष्य धर्म से दुःखी होता हुआ भी मनुष्य अपना मन अधर्म में न लगावे।

अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः ।
नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्त्तव्यो धर्म संग्रहः ।99।

शरीर अनित्य है धन सदा रहने वाला नहीं और मृत्यु नित्य ही निकट है। अतः धर्म संग्रह करना चाहिए।

नही दृशाः सन्त्यपरे पृथिव्यां ये योधका धार्तराष्ट्रेण लब्धाः
धर्मस्तु नित्यो मम धर्म एव महाबलः शत्रु निवर्हणाय ।100।

जो योद्धा कौरवों को प्राप्त हुए ऐसे दूसरे योद्धा पृथ्वी पर है ही नहीं किन्तु मेरा धर्म तो नित्य है जो शत्रुओं को मारने में अतुल सामर्थ्य वाला है।

धर्म प्रसंगादपि नाचरन्ति पापं प्रयत्नेन समाचरन्ति ।
आश्चर्यमेतद्धि मनुष्यलोकेऽमृतं परित्यज्य विषं पिबन्ति ।101।

प्रसंग आने पर भी लोग धर्म का आचरण नहीं करते परन्तु पाप का आचरण प्रयत्न से करते हैं संसार में बड़ा आश्चर्य है कि लोग अमृत का त्याग करके विष पीते हैं।

आहारनिद्राभय मैथुनञ्च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम् ।
धर्मोहि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभि समानः ।102।

खाना, निद्रा, भय, मैथुन ये सब मनुष्यों मे पशुओं के समान साधारण कर्म है, मनुष्य में धर्म ही अधिक और विशेष है इस प्रकार धर्म से हीन मनुष्य पशुओं के ही समान है।

—

(3 पृष्ठ का शेष)

और फिर भी यह संन्यासी है।

सारांश यह कि रजनीश की विचारधारा हमारे प्राचीन धर्म और संस्कृति के सर्वथा विपरीत है। हमारे भी कुछ मापदण्ड हैं जिनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य पर कुछ न कुछ प्रतिबन्ध अवश्य होता है। रजनीश हमारे सभी पुराने मापदण्डों की जड़ें काटता है। अपना एक अलग सम्प्रदाय चलाना चाहता है। चूंकि वहाँ ऐश्वर्य के अतिरिक्त कुछ नहीं है, इसलिए बहुत से भटके हुए लोग उसकी ओर खिंचे आते हैं। मेरे विचार में अब समय आ गया है जबकि इस रजनीशवाद के विरुद्ध विधिवत् रूप से संघर्ष किया जाए। हाल ही मे रजनीश ने जो कुछ अमेरिका में किया है उसके कारण हमारा देश बदनाम हुआ है। हमारे प्राचीन धर्म और संस्कृति के बारे में पश्चिमी देशों में आम लोगों की जो राय थी वह उन्हें बदलनी पड़ी। यही कारण है कि उन्होंने रजनीश को वहां से भगा दिया। वह समझते हैं कि यदि रजनीश को स्वतन्त्र रूप से अपने विचारों की अनुमति दी गई तो न केवल उनका चरित्र गिर जाएगा उनकी सारी सामाजिक व्यवस्था ही अस्त-व्यस्त हो जाएगी।

क्या ऐसे व्यक्ति को हम अपने देश में स्वतन्त्र रूप से अपने विचारों के प्रचार की आजादी दे सकते हैं कुछ लोगों ने विचार अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के आधार पर हर प्रकार के अपराधपूर्ण विचारों के प्रचार की आजादी देना चाहते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम विश्व की महानतम संस्कृति के उत्तराधिकारी हैं। इसीलिए हम आज दुनिया में जीवित हैं। इकबाल ने जब कहा— 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी' तो उस का अभिप्राय भी यही था कि वह समझता था और उचित रूप से कि इस देश की महानता का रहस्य उसकी प्राचीन संस्कृति है। रजनीशवाद उसे खत्म करना चाहता है। उससे पहले कि वह इसमें सफल हो रजनीशवाद को ही खत्म कर देना चाहिए।

—वीरेन्द्र

आओ कृण्वन्तो विश्वमार्यम की ओर पग बढ़ावें

ले.—श्री भोलानाथ दिलावरी, प्रधान केन्द्रीय
आर्य सभा अमृतसर

आश्चर्य घोर आश्चर्य। संसार भर में भारत ही एक ऐसा देश है जहां बहुमत के अधिकारों को अल्पमत वालों को छीनने की खुली छुट्टी है। अधिकार ही नहीं वह इनकी मान्यताओं की हर दृष्टि से अवहेलना करते चले आ रहे हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के 38 वर्ष व्यतीत हो जाने के पश्चात् भी अभी तक गोवध-बन्दी नहीं किया जा सका। भारी मात्रा में गोमास अरब देशों को निर्यात हो रहा है। हमारे इष्टदेव भगवान् श्रीराम-श्रीकृष्ण जिनके इर्द-गिर्द आर्य संस्कृति, सभ्यता घूमती है के जन्म स्थानों को अभी तक स्वतन्त्र न कराया जा सका। हमारे ही कमजोर वर्ग को यह अल्पमत वाले लोग लालच दे एवं डरा धमका कर विधर्मी बनाए चले जा रहे हैं। अभी तक मस्जिदो की सीढियों में हमारे देवी-देवताओं की मूर्तिया लगी हों। जिन पर यह नित्य पाव रख कर चढ़ते उतरते हो। हिन्दू विधि विधान में तो परिवर्तन किए जायें परन्तु इन अल्पमतों के विधि-विधान में कोई उचित परिवर्तन भी न किया जा सके। यहा तक की सर्व भारत वासियों के लिए, इन्हीं अल्पमतो के भय से कोई समान व्यापक विधि-विधान न बनाया जा सके। यह बात यहां तक ही समाप्त नही हो रही, देश के और बटवारे के इनके प्रयत्न निरन्तर जारी हैं। आगे इसी मनोवृत्ति के फलस्वरूप पाकिस्तान बना। देश के पूर्वी भाग नागलैण्ड में इसाईयिस्तान के प्रयत्न चल रहे हैं। उत्तर प्रदेश में मिनी पाकिस्तान के स्वप्न लिए जा रहे हैं। कश्मीर में भी ऐसी स्थिति है। इधर पंजाब में भी खालिस्तान के प्रयत्न हमारे समक्ष चल रहे हैं इस प्रकार इस तथा कथित धर्म-निर्पेक्ष देश में स्वतन्त्रता के बाद निरन्तर साम्प्रदायिकता बढ़ती चली जा रही है।

निश्चय ही उपरोक्त स्थिति के लिए हम 'हिन्दू' ही जिम्मेदार हैं। यह स्थिति कभी न होती यदि हम बहुसंख्यक जितने 55 करोड़ की आर्य चेतना, जीवित जागृत होती और हम अनार्य मतमतान्तरों के झाड़—जगल में उलझ कर अपनी गौरवमयी आर्य संस्कृति, सभ्यता इतिहास को भुला न बैठे होते।

काश कि पहले विभाजन, पाकिस्तान बनने के, समय ही हमारी हिन्दू चेतना जीवित जागृत होती है। और हम शेष भारत को उसी समय हिन्दू राष्ट्र घोषित कर देते। तो आज और भारत विभाजन के प्रयत्न एवं अन्य समस्याएं जिनका उपर सक्षेप में उल्लेख किया गया है उत्पन्न ही न होती। और यह देश की विघटनात्मक प्रवृत्तियां स्वयंमेव समूल नष्ट हो जाती।

स्थाई इलाज—वर्तमान इन गम्भीर समस्याओं का एक मात्र स्थाई इलाज भावी पीढ़ी में आर्य, हिन्दू चेतना का जागृत करना एवं उनमें अपने धर्म और संस्कृति के प्रति उग्रतम श्रद्धा प्यार उत्पन्न करने में ही है।

साधन—यह एक अकाट्य तथ्य है कि किसी भी जाती अथवा देश को जागृत अथवा काया-कल्प करने एव उच्च शिखर पर पहुचाने हेतु शिक्षा विशेष ही केवल मात्र एक सर्वोत्तम साधन है। अत. हम सबका विशेष कर हमारी समस्त हिन्दू शैक्षणिक संस्थाओं का इस ओर अविलम्ब पुरुषार्थ करना कर्त्तव्य बनता है। इसी लक्ष्य को सम्मुख रखते हुए हमारी केन्द्रीय आर्य सभा जो अमृतसर जिला भर की आर्य समाजों का सगठन है, ने भावी सन्तानों में आर्य चेतना, धर्म एव संस्कृति के प्रति श्रद्धा प्यार एवं सच्ची राष्ट्र भक्ति लाने के लिए इस ओर विशेष रूप से उद्योग करने का निर्णय ले लिया है।

शिक्षा-क्रम—बहुत विचार विमर्श एवं मनन के पश्चात् हमारी सभा इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि बच्चों में शिक्षा क्रम ऐसा होना चाहिए जो रुचिकर होने के साथ साथ सरल भी हो। उनमें नया जीवन डालने की क्षमता रखता हो। आर्य धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा, प्यार उत्पन्न कर इस पर सर मिटने की भावना भी उत्पन्न करने वाला हो। आर्य सत्-शास्त्रों, वेद वेदांगों, उपनिषदों गीता आदि के गूढ़ जटिल तत्वो को ग्रहण करने की रुची (भूख) भी उत्पन्न करे। इन सब बातों को दृष्टि में रखते हुए सर्व प्रथम हमने अमर "बलिदानी वीर हकीकतराय' की जीवनी का चयन किया है और योजना बनाई है, इसके अध्यापन की, बच्चों में कहानी सुनने की विशेष रुची होती है। और जब यह उन जैसे बच्चे की गाथा हो तो, उसका विशेष प्रभाव होता है। छोटी आयु में ही किस प्रकार धर्म पर मर मिटने की वीर हकीकत राय की प्रबल भावना उसके भीतर प्रज्वलित थी। उसकी जीवनी से सुस्पष्ट है। निश्चय ही इसका प्रभाव हमारे बच्चों में आर्य धर्म, संस्कृति सभ्यता के प्रति उत्कृष्ट अनुराग, प्यार श्रद्धा उत्पन्न करेगा। साथ ही उनमें आर्य धर्म के सच्चे स्वरूप को प्राप्त करने की प्रबल इच्छा का प्रादुर्भाव भी होगा। अत: हमारा सुझाव है कि इस जीवन गाथा को उनमें दृढ भूमि करने के उपरान्त ही अथवा सुविधानुसार हमारी प्राचीन आर्य परम्परा को अटूट धारा के उज्ज्वल वीर दानी, तत्वज्ञानी, ऋषि मुनियों की जीवनियों का भी अध्यापन कराया जाया करे, साथ सरस वेदमन्त्र उपनिषद मनु स्मृति गीता रामायण महाभारत के श्लोकादि से भी अवगत कराये जावें। इस सम्बन्ध में डी-ए-वी शिक्षा संस्थाओं की धर्म शिक्षा की पुस्तकों अथवा अन्य ऐसे साहित्य से कार्य लिया जा सकता है। एवं प्रश्नोत्तरी (क्विज) तथा नाटकों के कार्यक्रमों का आयोजन भी करने कराने चाहिए।

प्रचार-प्रसार-योजना—हमारी उत्कट इच्छा है कि इस शिक्षाक्रम को भारत भर की हिन्दू आर्य पाठशालाओं में शीघ्रातिशीघ्र चालू किया जावे। इस अभिप्राय के लिए हमारी सभा ने एक संस्था वीर हकीकत राय स्मारक समिति के नाम से बना दी है। कार्य महान् है। अभी हम इसे काफी परिश्रम से पंजाब तक ही कर पाएंगे। यदि कोई संस्था भारत में अथवा बाहिर किसी स्थान पर इस जातीय चेतना के उच्चतम कार्य को चालु करना चाहे तो हम इसका स्वागत करेंगे। और हर प्रकार की सहायता भी करेंगे।

—

ये न पूछो अब हमें !

ले.—मोहन लाल शर्मा 'रश्मि' 107।ए,
फ्रीलेण्ड गज दाहोद (गुजरात)

किसने लूटा घर हमारा, ये न पूछो अब हमें।
कैसे गुलशन फूका सारा, ये न पूछो अब हमें॥

हैं हरे जख्म दिल के, छेड़ों न हमको आज तुम।
क्यों कर बने बे सहारा, ये न पूछो अब हमें॥

हिल मिल के रहते थे यहां प्रेम से हम साथ में।
ये कैसे टूटा भाईचारा, ये न पूछो अब हमें।

वक्त पड़ने पर ही हम को, मुश्किलों की राह में।
किसने संकट से उबारा, ये न पूछो अब हमें।

बीती बातों को भुला दो आज तो "रश्मि" तमाम।
है कौन न्यारा कौन प्यारा, ये न पूछो अब हमें॥

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की सहायता करें

जनवरी 1986 में ईसाई के धर्म गुरु पोप भारत आ रहे हैं उनके स्वागत के उपलक्ष्य में ईसाई पूरे उत्साह से भारत को यीशु की भेड़ों में शामिल करने में लगे हुए हैं। वैसे तो आजादी के पीछे उत्तरोत्तर जिस गति से ईसाई मुसलमान इस देश को विदेशीकरण में लगे हुए हैं उससे सारा प्रबुद्ध वर्ग चिन्तित हो उठा है परन्तु अन्य लोग चिन्ता प्रकट करके ही चुप हो जाते हैं किन्तु महर्षि दयानन्द का उत्तराधिकारी आर्य समाज कैसे चुपचाप बैठ सकता है जिसका उत्थान पतन देश के उत्थान पतन के साथ बन्धा हुआ है।

क्योंकि उड़ीसा में भी ईसाई मुसलमान की अकल्पनीय वृद्धि चिन्तनीय बन गई है अत. यहा भी जब तक नागालैंड, मिजोरम, आसाम जैसे विषम स्थिति बने उससे पहले ही इस पर नियन्त्रण करना जरूरी है और यह कार्य आर्य समाज ही कर सकता है इसलिए उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा ने उड़ीसा मे आर्थिक दृष्टि से कमजोर और ईसाईयत से प्रभावित क्षेत्रो में विशाल रूप में शुद्धि एव वेद प्रचार कार्य शुरू किया है जहा शुद्धि की जाती है वहा आर्य समाज की स्थापना कर दी जाती है। आगे के कार्यक्रम की विस्तृत योजना बनाई जा चुकी है। इस वर्ष शुद्धि का पहला आयोजन बएगड़ के पास मार्च में दूसरा 25 अक्तूबर को कुमुण्डे जि, बलांगीर में सम्पन्न हो चुका है अभी तो हजारो व्यक्ति शुद्धि के लिए तैयार हैं एतदर्थ तीसरा विशाल कार्यक्रम जनवरी 86 के अन्त में रखा गया है।

उसमे एक हजार से अधिक परिवार शुद्ध हो ऐसी योजना है। हमारी ओर से यही पोप के स्वागत का उत्तर होगा, अनेक वर्षों तक कार्य करने के बाद ईसाईयो की आन्तरिक प्रचार प्रणाली एव उनके प्रचारक अब हमारे हस्तगत होते जा रहे हैं। अब उनको उपयोग करने की आवश्यकता है। परन्तु यह परिश्रम एव व्यय साध्य है। जिन इलाको के ग्रामो में 50 प्रतिशत से अधिक ईसाई है यहा ब्लाक स्तर पर स्थानीय प्रचारको की नियुक्ति, सभी पाठशालाओं का सचालन गिरजों के बदले यज्ञशालाओं का निर्माण करना होगा। अनेक स्थान पर शुद्धि हुए व्यक्ति यज्ञशाला बनाने की माग कर रहे हैं। सार्वदेशिक सभा का आशीर्वाद भी हमें मिल रहा है उसके सहयोग से एक ग्राम में यज्ञशाला का निर्माण भी हो गया है। हमें दो प्रचारक भी सार्वदेशिक सभा की तरफ से मिले हुए हैं सभा के प्रतिनिधि सभा के सभी अधिकारी भी उत्साही लगनशील एव परिश्रमी हैं।

हमें जहां इंजी. प्रियव्रत दास जैसे सूझ-बूझ वाले प्रभावशाली वक्ता मन्त्री के रूप में मिले हुए है, वहा लेखराम जैसे लेखक एव भ्रमणशील श्री विशिकेशन शास्त्री सह, मन्त्री तथा कर्मठ श्रद्धावान नवयुवक श्री गोपालदास जैसे उत्साही कोषाध्यक्ष मिले हुए हैं इसी प्रकार अब ओजस्वी वक्ता तड़पने हृदय वाले उड़िया भाषी नवयुवक सन्यासी जो अनेक वर्षों से अन्य प्रान्तों में घूम रहे थे। स्वामी विश्वमित्रानन्द जी भी प्रचार कार्य सम्भालने के लिए उड़ीसा मे आ गये हैं।

इस प्रकार उड़ीसा मे कार्यकर्त्ताओं का एक संगठन संगठित रूप में कार्य करने का ढग बन गया है। अब आवश्यकता है साधन जुटाकर इनसे कार्य लिया जाए इनको साधन जुटाने मे लगाया जाएगा जो शुद्धि कार्य गति पकड़ता जा रहा है वह रुक जाएगा। हम चाहते हैं आगामी कुछ वर्षों में उड़ीसा के एक बड़े भाग को यीशु मसीह की भेड़ो से मुक्त करा लिया जाए। यदि भारतीय संस्कृति प्रेमी देश भक्त सज्जन उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा को उदात्त हृदय से दान देकर आर्थिक रूप से निश्चित कर दें तो हम पादरियो की फौज को भगाकर ही दम लेंगे।

अतः सभी वेद प्रेमी देश भक्तो से मेरा नम्र निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर भारतीय संस्कृति एवं देश राष्ट्र रक्षा का पुण्य लाभ लें।

नये मोटे वस्त्र साड़ी एव धोती भी प्रचार के साधन माईक सैट टेपरिकार्ड आदि सामान भी श्रद्धापूर्वक स्वीकार किए जाएंगे।

—धर्मानन्द सरस्वती गुरुकुल आमसेना खड़ियार रोड़ कालाहाडी (उड़ीसा)

—

आर्यसमाज बंगा में योग शिविर

आर्य समाज बंगा में गत दिनों योग शिविर का आयोजन किया गया। यह तीसरा योग शिविर था। श्री डा, गौतम जी श्रीमाली की अध्यक्षता में लगाया गया जो योग साधना के अच्छे मर्मज्ञ हैं। युवको ने बढ़ चढ़कर इसमें भाग लिया अनेको प्रकार की बीमारियो को योगासनों द्वारा दूर करने की विधिया सिखाई गई। कार्यक्रम बड़ा प्रभावशाली रहा।

—शादीलाल मन्त्री

—

अग्रनगर लुधियाना में दीपावली पर्व

आर्य समाज अग्रनगर लुधियाना में दीपावली का पर्व बड़े उत्साह से मनाया गया : सारा कार्यक्रम आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की महामन्त्री श्रीमती कमला आर्या की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

यज्ञ के यजमान निम्न प्रकार थे. श्री मदन मोहन जी अग्रवाल तथा उनकी धर्म पत्नी श्रीमती इन्दु जी।

2, श्री राधा कृष्ण जी तथा उनकी धर्म पत्नी श्रीमती अमरनी जी। 3. श्री आनन्द कुमार जी कपिल तथा उनकी धर्म पत्नी श्रीमती पुष्पा जी। 4 देवेन्द्रकुमार जी तथा उनकी धर्म पत्नी श्रीमती शारदा जी। चारो युगल यजमानों ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ किया। इस अवसर पर ध्वजारोहण सभा महामन्त्री कमला आर्या ने कियातथा प्रभावशाली उपदेश देते हुए महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि भेंट की। टगोर पब्लिक स्कूल तथा डी ए. वी. स्कूल के बच्चों ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बड़े मीठे स्वर मे भजन सुनाए। आर्य भजन मण्डली के भी भजन हुए।

इस समाज के प्रधान श्री मदनमोहन जी अग्रवाल बधाई के पात्र हैं जिनकी चौथी पीढ़ी आर्य समाज में आ रही है। उनके बाबा पिता जी और अब वह तथा उनके सुपुत्र आगे आर्य समाज का कार्य बढ चढकर कर रहे हैं। इस समाज के प्रधानमन्त्री तथा अन्य सारे सदस्य बहुत कर्मठ हैं जो मिलकर निरन्तर इस समाज को उन्नत कर रहे हैं।

—सम्वाददाता

महर्षि दयानन्द अन्त: स्कूल भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य युवक समाज बरनाला ने अपने गठन के केवल एक मास बाद ही कई महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। 2 नवम्बर को युवक समाज की ओर से महर्षि दयानन्द अन्त- स्कूल भाषण प्रतियोगिता का आयोजन गाधी आर्य हाई स्कूल मे किया गया। जिसमे पटियाला, धूरी तपा व बरनाला की लगभग 9 टीमो ने भाग लिया। श्री जीवन कुमार मित्तल स्मारक 'चल-विजयोपहार' आर्य हायर सैकेण्डरी पटियाला के दल ने प्राप्त किया। पटियाला के श्री देवेन्द्र प्रथम, धूरी की कुमारी गीता सोढी द्वितीय व दयानन्द केन्द्रीय विद्यालय बरनाला की कुमारी अनुपम तृतीय घोषित की गई। आर्य समाज के ...म विषय पर धूरी स्कूल के तीसरी ...णी के छात्र श्री अमृत शर्मा ने विशेष पुरस्कार जीता कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री महात्मा प्रेम जी वानप्रस्थी ने की। श्री मगत राय सिंगला, प्रधान रोटरी क्लब बरनाला मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे। श्री सतीश सिधवानी ने कार्यक्रम का शानदार सचालन किया।

—सतीश गुप्ता
मन्त्री

आर्य समाज फरीदकोट में वेद प्रचार

आर्य समाज फरीदकोट में तिथि 19-10-85 को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर से श्री प. रामनाथ जी "सि, विशारद" महोपदेशक पधारे। लगातार आठ दिन फरीदकोट मे ज्ञान की गङ्गा बहती रही। इसी बीच आर्य घरों में पारिवारिक सत्सग हुए जिनमें उपस्थिति सैकड़ो में होती रही। जिसका बहुत ही उत्तम प्रभाव पड़ा तीन दिन डी ए.वी कन्या विद्यालय में भी श्री प, जी के प्रभावशाली उपदेश हुए। इन सत्सगो में सभी विचार के लोगो ने बड़ी श्रद्धा से भाग लिया। इसके पश्चात् कोटकपूरा (पजाब) मे दि. 22-10-85 से दि, 28-10-85 तक वैदिक सत्संग पारिवारिक होते रहे। जिसमे नित्य सैंकड़ो आर्यजनो ने वेदामृत पान किया। और प, जी की भूरि-भूरि प्रशसा की।

—आर्य भूषण पिपल

आवश्यकता है

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में एक कार्यालयाध्यक्ष की आवश्यकता है। अनुभवी योग्य तथा वैदिक सस्कार कराने मे समर्थता रखने वाले को प्राथमिकता दी जाएगी। वेतन योग्यता के अनुसार। मिलें या पूर्ण विवरण के साथ लिखें।

—बलदेव राज सेठी मन्त्री आर्य समाज
स्वामी दयानन्द बाजार, दाल बाजार
लुधियाना

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में वार्षिक वेद कथा

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना मे गत दिनो वार्षिक वेद कथा का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया गया। जिसमे प्रति दिन प्रात श्री शिवराज सिंह जी श्री ब लक्ष्मण जी पुरोहित ने यजुर्वेद पारायण यज्ञ करवाया। रात्री को पूज्य शास्त्री जी के बहुत प्रभावशाली प्रवचन हुए। श्री सीताराम—श्रीराम भजन मण्डली ने दोनो समय मधुर 2 भजन सुनाकर आय जनता को आनन्दित किया।

रविवार 27 अक्तूबर को प्रात यज्ञ की पूर्णाहुति डाली गई जिसके पश्चात सभी यजमानो को आशीर्वाद दिया गया। समापन समारोह मे लुधियाना की सभी आर्य समाजो के सदस्यों ने भाग लिया। सारा कार्यक्रम बड़ी श्रद्धा प्रेम व सफलता से सम्पन्न हुआ।

—विजय सरीन मन्त्री

आर्य समाज अबोहर के समाचार

आर्य समाज अबोहर में श्री स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती मोहन आश्रम हरिद्वार से हमारे अनुग्रह पर पधारे और 6 10 85 से 14 10 85 तक आर्य समाज मन्दिर मे सुबह शाम दोनो समय वेद प्रचार बड़ी उत्तम मधुर वाणी से करते रहे। भिन्न भिन्न परिवारो मे पारिवारिक सत्संग होते रहे। आर्य पुत्री पाठशाला और श्री बी एल वैदिक मल्टी हाई स्कूल मे भी उनका प्रवचन हुआ। सभी श्रोताओ ने इनसे प्रवचन को बहुत सराहा। और बड़ी प्रेम व श्रद्धा से स्वामी जी के प्रवचनो को सुनकर लाभ उठाया। आर्य समाज अबोहर श्री स्वामी जी की बहुत बहुत आभारी है।

—रामशरण दास मन्त्री

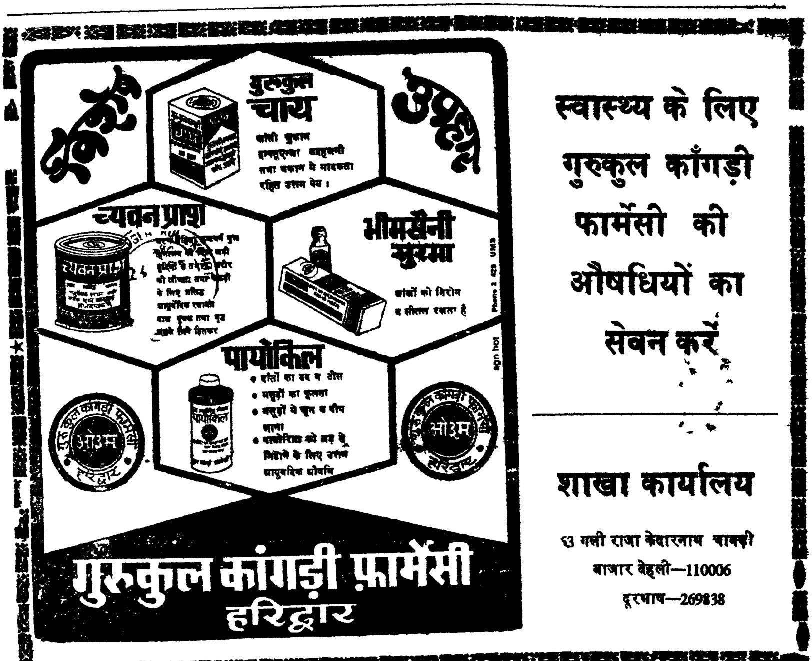
लुधियाना में विशाल पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना के सहयोग से आर्य युवक सभा की ओर से गत दिनो श्री रामकृष्ण जी यादव के निवास स्थान पर पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया तथा उनका मनोहर प्रवचन हुआ। वेद प्रचार भजन मण्डली लुधियाना की ओर से श्री किरपारामजी आर्य तथा श्री यशपाल जी आर्य ने भजनो का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्री ज्ञान प्रकाश जी वर्मा ने अपनी रुबाईयों से तथा श्रीमती राजेश्वरी जी ने भजन के द्वारा जनता का मन मोह लिया। अन्त में श्री ज्ञानी गुरबख्श सिंह जी आर्य व आर्य समाज की ओर से सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। इस सारे समारोह की अध्यक्षता श्री नवनीतलाल जी ढींगरा प्रधान आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार ... अन्त में यावत एक ... और मनमोहक विचार किए। बहुत बड़ी संख्या में सज्जन प्रेमियों ने इस सत्संग में भाग लेकर लाभ उठाया।

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार में वाल्मीकि प्रगट दिवस

लुधियाना—आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में महर्षि वाल्मीकि जी का प्रगट उत्सव बड़े उत्साह तथा धूमधाम से मनाया गया। आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री रणबीर भाटिया जी ने अपने सुन्दर के उदगार महर्षि वाल्मीकि जी की जीवन गाथा कविता में सुनाकर प्रकट किये। ... सभी लोगों के ... प्रोफैसर ... जी विद्यालंकार एम ए आर्य कालेज ने महर्षि जी को एक महान् कवि बतलाया।

—... मन्त्री



श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस मेहरु गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250

रजि. नं. पी.जे.एल.55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 31. 16 मार्गशीर्ष सम्वत् 2042 तदनुसार 1 दिसम्बर 1985 दयानन्द 161 अंक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

परमात्मा अनन्त शक्ति का स्रोत है

लेखक—श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार

"विश्व में सुख और शान्ति लाने का सर्वोत्कृष्ट उपाय यही है कि हम अपना मुंह अनन्त की ओर करें। जितने दर्जे तक हम अपनी एकता, अपना सम्बन्ध उस अनन्त प्रभु से करेंगे, जितने दर्जे तक हम उस ब्रह्मधारा को अपने मन में स्थान देंगे, उतने ही दर्जे तक हम उस महान् शक्तिशाली, सर्वोत्कृष्ट और सौन्दर्य की मूर्ति के साथ सम्बन्ध कर शान्ति लाभ करेंगे।

सचमुच यह कथन बहुत अधिक सत्य है। हम अनन्त से आ रहे हैं। अनन्त में हमारा निवास है और अनन्त की ओर हम जा रहे हैं। इसलिए हे भद्र पुरुषो! सत्यज्ञान के रत्नों का संचय करो। क्योंकि वही तुम्हारी सच्ची निधि है, जिसे तुम्हारे साथ जाना है। स्वामी सत्यदेव परि[illegible]जक ने 'अखण्ड शान्ति की अनुभूति' शीर्षक लेख में ठीक ही लिखा है—

"यह पवित्र विश्वात्मा आनन्द शान्ति का स्रोत है। ज्यों ही हम इसके साथ एकता स्थापित कर लेते हैं त्यों ही शान्ति और एकत्व की धारा का रसास्वादन हमें मिलने लगता है, क्योंकि शान्ति के अर्थ हैं एकत्व की स्थापना। एक गम्भीर आन्तरिक अभिप्राय इस सत्य सिद्धान्त की जड़ मे काम कर रहा है। इस तथ्य को पहचानना कि हम आत्मा हैं और इसी विचार मे निमग्न रहना कि हमें अध्यात्मवाद की ओर मुंह करना है और इस प्रकार एकता और शान्ति का वातावरण पैदा करना है। हमारे इर्द-गिर्द लाखों स्त्री-पुरुष चिन्ता के मारे दुखी और अशान्त दिखाई पड़ते हैं जो इधर-उधर शान्ति के लिए भटक रहे हैं, और जिनके शरीर और आत्मा थकावट से चूर हैं। वे शान्ति की तलाश में दूसरे देशों की यात्रा करते हैं, पृथ्वी की प्रदक्षिणा करते है, तीर्थों की हवा खाते हैं, हरिद्वार में जाकर गंगा जी में डुबकियां लगाते हैं, मुक्ति की तलाश में काशी या प्रयाग की धूल फांकते हैं। किन्तु शोक। उन्हें कही भी शान्ति नहीं मिलती। निस्सन्देह उन्हें शान्ति नहीं मिलती और न मिलेगी क्योंकि वे अभागे उन स्थानों में जाकर शान्ति की तलाश करते हैं जहां शान्ति की छाया तक नहीं उन्हें चाहिए तो यह कि वे अन्दर शान्ति की खोज करें, किन्तु अज्ञानवश करते हैं उसकी खोज बाह्य जगत में शान्ति केवल अन्दर ही मिल सकती है और जब तक मनुष्य उसे अपने अन्तस्थल में नहीं पाएगा वह उसे कहीं नहीं मिल सकती। इसीलिए कठोपनिषद् में मृत्यु ने नचिकेता को सुख और शान्ति के लिए इसी परमेश्वर के 'ओ३म्' नाम का गुण कीर्तन करने और समझने का उपदेश देते हुए कहा है—

सर्वे वेदा यत्पद मामनन्ति तपांसि
सर्वाणि च यद्वदन्ति
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते
पद संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्।
(क. 1।2।15)

"जिस पद का प्रतिपादन सारे वेद करते हैं, जिस पद-प्राप्ति का साधन सारी तपस्यायें हैं और जिसकी प्राप्ति के लिए ब्रह्मचर्य का पालन किया जाता है, मैं संक्षेप में वही पद कहता हूं। वह है ओंकार।"

'ओ३म्' ईश्वर का निज नाम है और उसका प्रतीक है। श्रुति का यही मत है। योगी याज्ञवल्क्य ने कहा है—

"वाच्यः स ईश्वरः प्रोक्तो वाचकः प्रणवः स्मृतः'—'प्रणव' या ओंकार' परमात्मा का प्रतिपादक है। ठीक यही बात योगदर्शन में पतञ्जलि ऋषि ने भी कही है—

"तस्य वाचकः प्रणवः।'

उस परमेश्वर का वाचक 'ओंकार' है। वेदों के अनुसार ईश्वर एक है—

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो
विश्वतो बाहुरुतविश्वतस्पात्।
संबाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी
जनयन देव एकः॥
(ऋ, 10।81।3)

जिसकी आंख सर्वत्र है और जिसके सर्वत्र मुख हैं, जिसके बाहु सर्वत्र कार्य कर रहे हैं और सर्वत्र पाव है। वह पुण्य पापरूप बाहु के द्वारा उत्पन्न प्रापणीय फलो से जीवों को गति देता है वही एक दिव्य गुणयुक्त प्रभु द्युलोक और पृथ्वी को उत्पन्न करता है।

एक ही प्रभु सब जगत् का स्वामी है—

य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे।
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग॥
(ऋ, 1।84।7)

दाता मनुष्य के लिए, जो अकेला ही धन देता है वह (अप्रतिष्कुतः) अद्वितीय शक्तिशाली (ईशान) ईश्वर (इन्द्र) परमैश्वर्यवान प्रभु ही (अङ्ग) निश्चय से है।

एक ही देव इस सब विश्व को उत्पन्न करता है और चलाता है। उस की सम्पूर्ण शक्तियां सर्वत्र एक जैसी हैं। सबको वह कर्मानुसार फल देता है।

य एक इच्चर्षणीना वसूनामिरज्यति
इन्द्र पञ्च क्षितीनाम्। ऋ. 1।7।9

(यः) जो (एक) एक ही (इन्द्र) प्रभु (क्षितीनां) पृथ्वी पर रहने वाले (पंच चर्षणीना) पांच प्रकार के मनुष्यो का तथा (वसूनां) सब धनो का (इरज्यति) स्वामी है, वही उपास्य है।

सम्पूर्ण जगत् का अधिष्ठाता एक परमात्मा ही है। वही नमस्कार करने और प्रशंसा करने योग्य है। वेद-ज्ञान द्वारा उसको प्राप्त करके 'मोक्षानन्द भोग करना चाहिए। लिखा है—

दिव्यो गन्धर्वो भुवनस्य यस्पतिरेक
एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः।
तं त्वा यौमि ब्रह्मणा दिव्य देव
नमस्ते अस्तु दिवि ते सधस्थम्॥
(अथर्व, 2।2।1)

(यः) जो (दिव्यः गन्धर्वः) दिव्य गन्धर्व अर्थात् अद्भुत भुवनों का धारणकर्त्ता है जो (भुवनस्य एकः पतिः) संसार का एकमात्र स्वामी है वही (विक्षु) प्रजाओं में (नमस्यः) नमस्कार करने योग्य और (ईड्यः) प्रशंसा करने योग्य है। हे (दिव्य देव) अद्भुत देव। (तं त्वा) उस तुझको मैं (ब्रह्मणा) वेद द्वारा (यौमि) प्राप्त होता हूं। (ते नमः अस्तु) तुझे नमस्कार हो। (ते) तेरा (सधस्थ) वास (दिवि) तेरे अपने स्वरूप में है।

उस परमेश्वर के विषय में कहा गया है—

समेत विश्वे वचसा पतिं दिव एको
विभूरतिथिर्जनानाम्।
स पूर्व्यो नूतनमाविवासत् तं वर्त-
निरनु वावृत एकमित् पुरु॥
(अ, 7।21।1)

(विश्वे) सब लोक (वचसा) शुद्ध वाणी से (दिवः पतिं) द्युलोक के स्वामी ईश्वर के पास (सं एत) एक होकर जाएं। क्योंकि (विभूः) सर्वत्र व्यापक होने से वह (एकः) एक ईश्वर (जनानां अतिथि) सब लोगों से नमस्कार करने योग्य है वह (पूर्व्यः) प्राचीन होता हुआ (नूतनं) इस नवीन जगत् को (आविवासत्) बसाता है। (वर्तनिः) संसार (पुरु) पूर्ण रीति से (तम्+एकम्+इत्) उस एक के ही (अनुवावृत) अनुसार चल रहा है।

ईश्वर एक है इस पर जोर देते हुए कहा गया है—

तमिदं निगत सह स एष एक एक-
वृदेक एव। (अ, 13।4(1) 12)

(इदं सहः) यह सामर्थ्य (तं निगतं) उस परमात्मा को प्राप्त है (स एष एक) वह एक ही है (एकवृत्) अकेला वर्तमान (एक एव) एक ही है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

व्याख्यान माला—

जीवन में सत्य को धारण करें

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर पंजाब

(24 नवम्बर से आगे)

श्री स्वामी अच्युतानन्द जी द्वारा लिखित व्याख्यान माला के श्लोको का अर्थ श्री प सुखदेव जी शास्त्री स अधिष्ठाता गुरुकुल करतार ने किया है। आर्य मर्यादा मे यह लगातार प्रकाशित किया जा रहा है ताकि स्वाध्यायशील पाठक इससे लाभ उठा सक। पहले धम की महिमा का प्रकरण चल रहा था। अब इससे आगे सत्य की महिमा पढ।

—सह-सम्पादक

ओ३म अग्ने व्रतपत व्रत चरिष्यामितच्छकेय तन्मे
राध्यताम् इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि ।।1।।

हे व्रतो के स्वामी अग्नि स्वरूप परमात्मन ! मैं सत्य व्रत का आचरण करना चाहता हू वह मेरा सत्य व्रत अनुष्ठान सिद्ध हो सके तदर्थ जिससे मैं असत्य से दूर रह कर सत्य को प्राप्त होऊ।

नास्ति सत्यसमो धर्मो न सत्याद्विद्यते परम ।
नहि तीव्रतर किञ्चिदनृतादिह विद्यते ।2।

सत्य के समान कोई धम नही और सत्य से बढ कर कोई श्रेष्ठ पदार्थ नहीं और इस स सार मे झूठ से बढ क कोई कडवा पदार्थ भी नहीं।

अश्वमेधसहस्रञ्च सत्यञ्च तुलया धृतम् ।
अश्वमेधसहस्राद्धि सत्यमेव विशिष्यत ।3।

हजारो अश्वमेध यज्ञ और सत्य को तुला पर तोला जाए तो हजारो अश्वमेध यज्ञो से सत्य ही विशेषता प्राप्त करेगा।

सत्य मृदु प्रिय वाक्य धीरो हितकर वदेत ।
आत्मोत्कर्ष तथा निन्दा परेषा परिवर्जयेत् ।4।

धैर्यशाली विद्वान सदैव स य कोमल हितकर तथा प्रिय वचन बोले। परन्तु अपनी स्तुति तथा दूसरे की निन्दा छोड देवे।

सत्यमेव व्रत यस्य दया दीनेषु सर्वदा ।
कामक्रोधौ वशौ यस्य स साधु कथयते बुधै ।5।

जिसका सत्य ही व्रत है और सदा दीनो पर जो दयालु रहता है तथा जिसके काम क्रोध वश मे रहते हैं बुद्धिमान लोग उसे साधु कहते हैं।

ये वदन्तीह सत्यानि प्राणत्यागेऽप्युपस्थित ।
प्रमाण भूता भूताना दुर्गाण्यतितरन्ति ते ।6।

प्राण त्याग— मृत्यु उपस्थित होने पर भी इस ससार में जो मनुष्य सत्य बोलते हैं वे सब मनुष्यो मे प्रमाण स्वरूप बने हुए कठिनाईयो को पार कर जाते हैं।

सत्य वाचनिको धर्मो यथादृष्टाय वेदनम् ।
उक्तायतश्चाचलनीमदमुक्त मन षिभि ।7।

जैसा देखा वैसा जानना तथा सत्य भाषण करना धर्म है तथा कही गई बात पर अटल रहना भी मनीषियों ने धर्म बताया है।

यथार्थकथन यच्च सर्वलोक सुखप्रदम् ।
तत्सत्यमिति विज्ञेयमसत्य तद्विपर्ययम् ।8।

जो यथार्थ कथन है वह सारे ससार को सुख देने वाला है उसे ही सत्य जानना चाहिए इसके विपरीत असत्य समझना चाहिए।

सत्यस्य वचन श्रेय सत्यादपि हित वदेत् ।
यद्भूतहितमत्यन्त तत्सत्यमिति कथ्यते ।9।

सत्य कहना श्रेष्ठ है सत्य से हितकर कहना भी श्रेष्ठ है क्योंकि अतिशय से जो वचन प्राणियो के लिए हितकारी होता है उसे ही सत्य कहा जाता है।

असत्प्रलाप प्रारूष्य पैशुन्यमनृत तथा ।
चत्वारी वाचा राजेन्द्र न जल्पेन्ननानुचिन्तयेत् ।10।

हे राजन जो असत्य प्रलाप कठोरता, पैशुन्य—चुगली खोरी तथा झूठ है इन चारो को न तो वाणी से कहे और न ही इन पर विचार करे।

सत्यहीना वृथा पूजा सत्यहीनो वृथा जप ।
सत्यहीन तपो मूर्यभूषरे वपन यथा ।11।

सत्य से रहित पूजा व्यर्थ है सत्य से रहित जप भी व्यर्थ है, सत्य से रहित तप भी उसी प्रकार व्यर्थ है जैसे ऊसर—बजर जमीन में बीज बोना होता है।

समूल एष शुष्येत् स लोकद्वयफल बिना
अनृत यो वेदत्क्वापि पुरुष परिमोहित ।12।

जो मनुष्य मोह मे पडकर कही झूठ बोल देवे वह मनुष्य दोनो लोको में बिना फल प्राप्त किये ही वश सहित नष्ट हो जावे।

नासत्यवादिन सौख्य न पुण्य न यशो भुवि ।
दृश्यते नापि कल्याण कालकूटमिवाश्नत ।13।

विष खाने वाले मनुष्य की तरह झूठ बोलने वाले को इस पृथ्वी पर न तो कही सुख मिलता है और न पुण्य और न ही यश अथवा कल्याण प्राप्त होता है।

मानाद्वा यदि वा लोभात्क्रोधाद्वा यदि वा भयात् ।
योऽन्यायादन्यथा ब्रूते स नर पापमाप्नुयात् ।14।

अभिमान वश लोभ वश, क्रोध वश अथवा भय के कारण या अन्याय से जो मनुष्य झूठ बोलता है वह मनुष्य पाप को प्राप्त होता है।

योऽन्यथा सन्तमात्मानमन्यथा प्रतिपद्यते ।
किन्तेन न कृत पाप चौरेणात्माऽपहारिणा ।15।

जो और तरह का होते हुए अपने आत्मा को कुछ और तरह का बताता है आत्मा का अपहरण करने वाले उस चोर ने कौन सा पाप नही किया ? अर्थात उसने सभी पाप कर लिये।

वाच्यर्था नियता सर्वे वाङ्मूला वाग्विनि सृता ।
तान्तु य स्तेनयेद्वाच स सर्वस्तेयकृन्नर ।16।

वाणी मे होने वाले सब अर्थ नियत हैं क्योकि वे सब वाणी से निकले हुए वाणी के मूल हैं उस वाणी को जो चुराता है अर्थात् झूठ बोलता है वह सब तरह की चोरी करने वाला मनुष्य है।

नग्नो मुण्ड कपालेन भिक्षार्थी क्षुत्पिपासित ।
अन्ध शत्रुकुल गच्छेद्य साक्ष्यमनृत वदेत् ।17।

जो साक्षी बना हुआ झूठ बोलता है वह नग्न हुआ हाथ में कपाल पकडे हुए मुण्ड सिर वाला होकर भिक्षा चाहने वाला भूखा प्यासा और अन्धा होता हुआ शत्रु ... प्त हो जाता है।

क्रमश

सम्पादकीय—

आर्य समाज के प्रचार का सरल उपाय

धार्मिक सस्थाए तो और भी कई हैं और प्रत्येक का अपना-अपना प्रचार का ढग है। जो सस्थाए किसी गुरु के व्यक्तित्व पर चलती हैं उनके लिए प्रचार का साधन ढूढना कठिन नही होता। वहा तो जो कुछ गुरु कहते वही ईश्वरीय वाक्य समझ कर उसके अनुयायी अपने आप को उस ढाचा मे ढाल लेते हैं और वह यह भी नहीं पूछते कि जो कुछ कहा गया है उसका अर्थ क्या है और अभिप्राय क्या है ? उनमें एक विशेषता अवश्य होती है वह यह कि श्रद्धा के आधार पर उनका सारा कार्यक्रम चलता है। जहा केवल श्रद्धा किसी सामाजिक व्यवस्था का आधार हो वहां तर्क काम नहीं करता और जहा तर्क के बिना काम न चलता हो वहां केवल श्रद्धा किसी भी समस्या का कोई समाधान नहीं निकाल सकती। आज एक बात की सबसे अधिक आवश्यकता है वह यह कि श्रद्धा और तर्क इन दोनो के समन्वय से कोई ऐसा मार्ग ढूढा जाए जिस पर चलते हुए धर्म का प्रचार आसान हो जाए।

आर्य समाज एक ऐसी सस्था है जो तर्क और श्रद्धा इन दोनो का समन्वय कर सकती है परन्तु आज उस में श्रद्धा इतनी नही जितना तर्क चलता है। आर्य समाज के विषय में प्राय बहुत से लोग कहते हैं कि यहा जरा सी बात पर वाद विवाद शुरू हो जाता है यह कुछ हद तक है भी ठीक। इसका एक कारण यह भी है कि आर्य समाज अन्ध-विश्वास के आधार पर नही चलता। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के लिए जो दस नियम बनाए उनमे एक यह भी है कि 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' जब हमने यह सोचना हो कि सत्य क्या है और असत्य क्या है तो वह तर्क की कसौटी पर ही परख कर पता चल सकता है। श्रद्धा का जहा एक उज्ज्वल पक्ष यह है कि वह मनुष्य मे बौद्धिक शक्ति को उभारती है वहा उसका धूमिल पक्ष यह भी है कि वह कई बार उसी बौद्धिक शक्ति पर पर्दा डाल देती है और मनुष्य सोचना छोड देता है। आर्य समाज श्रद्धा और तर्क इन दोनो के सहारे आज तक चलता आया है। यही कारण है कि जन साधारण आर्य समाज की ओर इतना आकर्षित नही हुआ जितना की शिक्षित वर्ग। परन्तु शिक्षित वर्ग कभी भी उतना सक्रिय नहीं होता जितने की वह लोग जो श्रद्धा' की भावना से प्रेरित होते हैं। हम जब कभी इस विषय पर विचार करते हैं कि आर्य समाज क्यों पिछड रहा है, तो उसका एक उत्तर यह भी मिलता है कि अब यह एक जन आन्दोलन नही रहा। जब यह एक जन आन्दोलन था तो साधारण व्यक्ति भी इसकी तरफ झुक जाते थे। आर्य समाज की एक कमी यह भी है कि उसके पास अब न तो उस उच्च स्तर के वक्ता ही हैं न व्याख्यानदाता है और न अच्छे भजनीक हैं जैसे कि पहले इसके पास हुआ करते थे। हम प्राय, देखते है कि कई धार्मिक सस्थाओ में सगीत को एक विशेष स्थान प्राप्त है। हमारे सिख भाई तो अपने रागियों को विशेष प्रकार की शिक्षा देते हैं। आर्य समाज की सबसे बडी कमजोरी यह है कि उसके पास केवल एक दो ऐसी सस्थाए हैं जहां उपदेशक तैयार किए जाते हैं। एक भजनीक के लिए केवल हरमोनियम बजा लेना ही पर्याप्त नहीं उसे संगीत शास्त्र का ज्ञान भी होना चाहिए जैसा कि सिख रागियों को होता है। आर्य समाज का यह दुर्भाग्य है कि उसके नेताओ का ध्यान इस ओर नहीं जा रहा कि नए उपदेशक और भजनोपदेशक कैसे तैयार करने हैं। इस लिए अब केवल वह व्यक्ति आगे आते हैं जिनके पास और कोई काम नहीं होता। दो चार सन्यासियो को छोड कर और और दो चार गायकों को छोड कर आर्य समाज के पास अब ऐसे भजनोपदेशक व उपदेशक नहीं है जो जन-साधारण पर अपना प्रभाव डाल सकें। इसका यह परिणाम है कि श्रद्धा और तर्क दोनों ही आर्य समाज में समाप्त हो रहे हैं। आर्य समाज की स्थिति आज एक ऐसी नैया की तरह है जो दरिया की उठती हुई लहरो के जोर पर चल रही हो, परन्तु जिसका कोई खेवैया न हो, जिसको यह पता नही हो कि इस नैया को किस किनारे जाकर लगाना है।

ऐसी स्थिति मे सबसे बडा प्रश्न हमारे सामने यही उठता है कि अब आर्य समाज का प्रचार कैसे किया जाए ? तर्क और श्रद्धा दोनो की कमी के कारण लोग अब दूसरी सस्थाओ की तरफ अधिक जाते हैं। आज आत्म निरीक्षण का समय है। यह सोचने की आवश्यकता है कि धर्म के नाम पर जो नई 2 सस्थाएं खडी हो रही हैं, लोग उनकी तरफ क्यो अधिक जा रहे हैं ? आर्य समाज की तरफ क्यो नही आ रहे ? किसी समय में स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का आर्य समाज मे एक विशेष स्थान था। उनकी कथा सुनने के लिए हजारो लोग आया करते थे। किसी कारण से स्वामी जी ने आर्य समाज को छोड दिया। फिर उन्होने केवल राम नाम का प्रचार शुरू किया। और राम शरण नाम की एक सस्था स्थापित कर दी। उसमे तर्क की कोई आवश्यकता नही केवल श्रद्धा चलती है। आज प्रत्येक शहर मे 'राम शरण के नाम से कई मन्दिर चल रहे हैं। इसी प्रकार की कुछ और सस्थाए भी खडी हो रही हैं।

क्या अब समय नहीं आ गया जबकि आर्य समाज समस्या के इस पक्ष पर भी विचार करे कि हम क्यो पिछड रहे हैं और यह नई 2 समस्याए क्यो आगे बढ रही हैं ? कठिनाई यह है कि आर्य समाज का नेतृत्व सो रहा है। उसके पास आर्य समाज की समस्याओ पर विचार करने के लिए समय ही नहीं है। सब से बडी समस्या यह है कि आर्य समाज का प्रचार अब जनसाधारण मे कैसे किया जाए ? केवल शिक्षित और बौद्धिक व्यक्तियों के सहारे आर्य समाज प्रगति नहीं कर सकता। उसे जन साधारण को साथ लेकर चलना पडेगा। वह हम कैसे कर सकते हैं इस पर विचार करने की आवश्यकता है। इस सम्बन्ध मे अपने विचार आगामी अक म पाठको के सामने रखूगा।

—वीरेन्द्र

लेखक महानुभावों की सेवा में

हमारी सभी लेखक महानुभावो से प्रार्थना है कि वह अपनी अमूल्य रचनाए व लेख समय पर सभा कार्यालय मे भेजने की कृपा किया करें। कोई भी विशेषाक जब निकलना होता है वह 20-25 दिन पहले छपना आरम्भ हो जाता है। यदि लेखक महानुभाव पहले ही उस विषय पर लेख भेज दें तो हमे उसे उचित स्थान पर प्रकाशित करने मे आसानी रहती है। देखा गया है कि कई बार लेखक अपने लेख केवल एक सप्ताह पहले भेजते हैं तब तक जितना मैटर हमें प्रकाशित करना होता है वह पुरा हो जाता है, उस अवस्था में जो हमारे पास पहले लेख होते हैं चाहे वह साधारण लेखको के ही क्यो न हो वह तो प्रकाशित हो जाते हैं परन्तु देरी से आने वाले प्रसिद्ध लेखको के लेख कई बार प्रकाशित नहीं हो पाते।

अब दीपावली के पश्चात् आर्य मर्यादा का ऋषि बोध (शिवरात्रि) विशेषाक मार्च 86 में प्रकाशित होगा। जिसकी अभी से तैयारी आरम्भ कर दी गई है। क्योकि हम यह विशेषाक गत वर्ष से भी अधिक प्रभावशाली प्रकाशित करना चाहते है। आकार में भी यह विशेषाक बडा होगा। इससे पहले 23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर भी साधारण अक मे स्वामी जी के जीवन सम्बन्धी तथा उन के कार्यों सम्बन्धी सामग्री आर्य मर्यादा के 22 दिसम्बर के अक में प्रकाशित होगी।

इस लिए लेखक महानुभाव स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्बन्ध मे तथा मार्च 86 के (शिवरात्रि) ऋषिबोध विशेषाक के लिए अपनी अमूल्य रचनाए शीघ्र भेजने का कष्ट करें। साधारण अको के लिए भी सारगर्भित धार्मिक, सामाजिक तथा स्त्री शिक्षा सम्बन्धी लेख भेजते रहे। इसके लिए हम सभी लेखकों के आभारी होंगे।

सह-सम्पादक

जन्म-मरण की उलझन

ले—श्री प्रा भद्रसेन जी वेद-दर्शनाचार्य होशियारपुर

(गताक से आगे)

मृत्यु का मर्म

महात्मा जी ने कहा—सत्संगी बन्धुओ एक विशेष घटना के कारण कमलेश के पिता की मौत को लेकर हमने यह चर्चा आरम्भ की है। पजाब मे तीन वष लगातार आतक और भय का वातावरण रहा जिससे इस प्रकार की अनेक मौतें हुई। इसी प्रसग मे जन्म मरण शब्द पर विचार करते हुए पिछली बैठक में जड चीजो के नाश की बात थी। आज जान वाले प्राणियो की मौत पर पहले कुछ विचार करते हैं। जब कोई आदमी मर जाता है, तो आम भाषा मे मौत के लिए कहा जाता है कि पछी उड गया प्राण-पखेरु उड गए, खेल खत्म हो गया इस का शरीर ठण्डा पड गया है। इन शब्दो मे मौत की क्रिया और परिणाम की ओर सकेत किया गया है। प्रारम्भिक तीन शब्दो से स्पष्ट होता है कि जब किसी के देह से प्राण निकल जाते हैं तो उस को किसी की मौत कहते है। जैसे फुटबाल, वालीबाल या पहिये की ट्यूब से हवा निकल जाती है तो वह पहले जैसा कार्य नही करता। ऐसे ही जीवन का प्राण एक मख्य तत्व है और जीवन शब्द जीव (प्राण धारण) से बनता है किसी भी कारण से उसके निकलने को मृत्यु कहते हैं। मृत्यु मृत मरण शब्द मड (प्राण त्यागे) धातु मे बनते है जिसका भाव है प्राणो का छूटना। खेल खत्म होने का भाव है कि जीवित स्थिति मे जो विविध काय हो रह थ वे अब नही होते। जीवित शरीर म कुछ न कुछ गर्मी होती है, इसी लिए तापमान देखा जाता है आत्मादि के सम्पक से शरीर मे जो चेतना गर्मी थी वह आपस के सम्बन्ध के टूट जाने से निकल गइ।

सामान्य रूप से हमारा शरीर पृथिवी जल अग्नि वायु और आकाश इन पाच भूतो का पुतला है इन मे से पथिवी का अश मुख्य होने स इसे पार्थिव भी कहते हैं। जैसे पृथिवी से बनी हुई दूसरी चीज शस्त्र से कट जाती है आग से जल जाती है, जल मे गल जाती हैं और वायु से सूख जाती है। ऐसे ही हमारा यह पार्थिव शरीर किसी न किसी प्रकार के शस्त्र का शिकार हो जाता है। अनेकविध अग्नियो में से किसी भी प्रकार की आग से जल उठता है, जल इसे गलाता है और वायु सूखा देती है। तभी तो यजुर्वेद में कहा है—भस्मान्त शरीरम 40, 15 अर्थात् इस शरीर का अन्त, परिणाम राख मिटटी ही है। वैसे तो इसका शरीर नाम भी इसीलिए ही है कि—

शरीरम शृणाते शम्नातेर्वा निरुक्त 3 5 शृ (हिंसायाम—मारना काटना) धातु से शरीर शब्द बनता है। जिसका भाव है कि यह शरीर विनाशकाल है, जब कभी जहा कहीं से कट जाता है तथा शमु (उपशमे—ठण्डा होना) अर्थात न जाने किस घटना के कारण अब यह ठण्डा हो जाए।

यही भाव मत्यु शब्द का भी है क्यो कि मृड प्राणत्यागे—प्राणो का छूटना, निकलना धातु से यह शब्द बनता है। जिसका अभिप्राय है कि किसी चेतन आत्मा का अपने कर्मो के अनुसार परमात्मा की व्यस्था से प्राप्त किए हुए पहले शरीर इन्द्रिय और मन से अलग होना। जैसे सीप से मोती निकल जाने के बाद वह सीप के कीमत की हो कर रह जाती है वैसे ही इस नित्य आत्मा के शरीर से निकलते ही यह शरीर मिटटी का ढर ही हो कर रह जाता है और तब यह शीघ ही सडना शुरू हो जाता है।

मत्यु शब्द पर विचार करते हुए शब्दो के छिपे हुए रहस्य को खोलने मे कुशल निरुक्तकार महर्षि यास्क ने लिखा है 'मारयतीति सत 11 6 मारती है अर्थात पहले से प्राप्त शरीर, इन्द्रिय और मन से नित्य आत्मा को अलग करती है और इसके साथ ही मृत च्यावयति 11 6 अर्थात पूव प्राप्त शरीरादि से अलग हुए इस अजर अमर आत्मा को ले जाती है और तब उसे अपने कम के अनुसार एक नए शरीर को धारण का अवसर प्राप्त कराती है, क्योकि तभी यह आत्मा जीण शीण विविध विकारग्रस्त कलेवर से मुक्त हो कर लाड चावो से भरे नए निश्चिन्त बाल जीवन को प्राप्त करने मे सक्षम होता है। तभी तो गीता कार ने कहा है—

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णानि
अन्यानि सयाति-नवानि देही॥
2-22॥

जैसे कोई फटे-पुराने कपडो को उतार कर धुली-धुली दूसरे अच्छे वस्त्रो को धारण करता है। उसी प्रकार यह अजर अमर आत्मा जीवन यात्रा करते-करते थके-हारे अक्षम देह को जो कि अब अपने शारीरिक कर्तव्य-कर्मों को करने मे सवथा असमर्थ हो जाता है ऐसे जर जर देह को छोड कर आशा भरे नए कलेवर को धारण करता है।

इसी भाव को अग्रेजी भाषा के कवि लाग फैलो ने इस रूप मे व्यक्त किया है—मृत्यु—मृत्यु—सर्वनाश नहीं है, जैसी कि हमे दीखती है। यह तो जीवन का एक परिवर्तन है थोडे दिनों का हमारा यह जीवन उस दिव्य जीवन का एक बाह्य भाग है। जिस के प्रवेश द्वार को हम मृत्यु कहते हैं।' अत चोला बदलने का नाम या अन्तराल ही मृत्यु है। तभी तो कहा है—

निर्भय स्वागत करो मृत्यु का
मृत्यु एक है विश्राम स्थल।
जीव जहा से चलता है
धारण कर नव जीवन सम्बल।
मृत्यु एक सरिता है जिस मे
श्रम से कातर जीव नहा कर।
फिर नूतन धारण करता है
काया पूर्व बहा कर।

आज जिस जीवन को हम बिता रहे हैं उसमे सफल होने के लिए उस के रहस्य को समझना बहुत जरूरी है। क्योकि हमारा जीवन जन्म से प्रारम्भ होता है। जो कि पहली सास से अंतिम सास तक चलता है। इस मे यथा समय जरूरत के अनुसार खान पान रहन-सहन वस्त्र धारण, अन्य व्यवहाय वस्तुओं का बर्ताव शिक्षा चिकित्सा यथा योग्य यथापेक्षित रिश्ते नाते मित्रो और कारोबारियो के साथ जो व्यवहार चलता है, उसे हम जीवन कहते हैं। अत जीवन का अच्छा बनाने के लिए जहा खान पान रहन सहन परस्पर बर्ताव बोल चाल के राज को जानना बहुत जरूरी है वहा स्वाभाविक (बड़ों की) मृत्यु के साथ अकस्मात घटने वाली वाली मृत्यु की घटना और उसकी विवेचना को जानना भी अत्यावश्यक है। अन्यथा गौतम बुद्ध या बालक मूल शकर की तरह रहस्य स्पष्ट न होने से एक दम पासा पलट सकता है तभी तो अनेक लोग घबरा कर अपनी मौत आप बुला बैठते हैं। क्योकि मनुष्य परस्परापेक्षी सामाजिक प्राणी है अत कई बार परिवार के किसी एक विशेष सदस्य के उठ जाने से सारा परिवार एक दम उजड जाता है। क्योकि—

आज विज्ञान ने जहा अपनी अनेक उपलब्धियो से मानव समाज का जीवन सुख सुविधाओं स भर दिया है, वहा भौतिक विज्ञान द्वारा बनाए गए यन्त्रों और शस्त्रों की आए दिन होने वाली दुर्घटनाओं से मौत खिलौना बन कर रह गई है। तभी तो आकाशवाणी और दूरदर्शन एव समाचार पत्रो में आए दिन इस के समाचार सामने आ रहे हैं। इसके साथ वैदिक शरीर, युद्ध, पारस्परिक क्लेश द्वेष स्वार्थ और बदले की भावना के कारण भी अनेक मौतें होती रहती हैं। जिस का ताजा उदाहरण पजाब, बम्बई भिवण्डी आदि हैं। अत हमारे आस-पास केवल किसी की जवानी की व्यवस्था के अनुसार स्वाभाविक मृत्यु ही नही होती अपितु अनेक अकस्मात घटना जन्य भी होती हैं। ये मौतें अपनी या दूसरो की गलतियों के कारण भी हो जाती हैं। अत केवल भाग्य का दोष समझ करके ही आज दिन को सन्तोष देना बिल्ली को देख कर कबूतर के आख बन्द करने के ही समान है। इस लिए मृत्यु और तज्जन्य वियोग के सम्बन्ध मे कुछ विचारना एव जानना बहुत जरूरी हो जाता है।

किसी की मृत्यु के अवसर पर वियोग बिछोह शब्द का भी प्रयोग होता है जैसे कि स्पष्ट रूप से यह बात सामने आती है, कि किसी परिवार मित्र मण्डली, सम्बन्धियों में से कोई जुदा हो जाता है। बाह्य रूप की तरह सूक्ष्म रूप से भी आत्मा अपने पूर्व प्राप्त शरीर इन्द्रिय और मन से वियुक्त हो जाता है। तभी तो कहते हैं—

अपने गृह को छोड चला यह
नाते रिश्ते तोड चला यह,
सब से मुख मोड चला यह।

इस सारे विवेचन का यह निष्कर्ष है, कि जो वस्तु जिस रूप में बनती है उस के उस रूप का बिखराव ही उसकी मौत कही जा सकती है।

सभी भारतीय शास्त्रो मे आत्मा को अजर अमर और नित्य माना गया है। यह न कभी पैदा होती है न मरती है यह सदा एक रस रहती है और न जाने कितने अनन्त समय से यह चली आ रही है। शरीर के नष्ट होने पर भी यह नष्ट नहीं होती। श्वेताश्वतर उपनिषद मे स्पष्ट रूप से लिखा है—

बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पि-
तस्य च।
भागो जीव स विज्ञेय स चान-
न्त्याय कल्पते॥5॥

जीव अत्यन्त सूक्ष्म और सदा रहने वाला है। इस बात को उदाहरण के साथ स्पष्ट करते हुए ऋषि कहते हैं, कि किसी बाल (केश) का अगला हिस्सा लो उस के कम से कम कल्पना से ही सौ टुकडे करो और उस एक टुकडे के फिर सौ टुकडे करो अर्थात वह बाल इतना सूक्ष्म होगा जो कि कल्पना मे ही केवल कल्पित किया जा सकता है।

क्रमशः

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की ओर से प्रचार का विशेष आयोजन

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) में इस वर्ष महर्षि निर्वाण दिवस के उपलक्ष में आर्य समाज मन्दिर से बाहिर परिवारों में, दुकानो में, फैक्ट्रियों मे हवन कराए गए। 10 नवम्बर से 16 नवम्बर तक प्रतिदिन प्रात समाज में चारों वेदों के सूक्तो का यज्ञ होता रहा। प निरञ्जन देव जी महोउपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के मनोहर तथा जीवन उपयोगी उपदेश होते रहे। भजनोपदेशक श्री सीता राम जी ने महर्षि दयानन्द के जीवन सम्बन्धी भजन सुना कर महर्षि का गुण-गान किया। लुधियाना की विख्यात वेद प्रचार भजन मण्डली ने भी अपने भजनो द्वारा महर्षि को श्रद्धाजलि अर्पित की। प सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री ने प्रतिदिन वेद मन्त्रो की सुन्दर व्याख्या करके लोगो को धर्म लाभ पहुचाया। प, जगदीश चन्द्र वसु महोपदेशक प्रादेशिक सभा हरियाणा ने अपने प्रवचनो द्वारा लोगों को महर्षि के बतलाए हुए मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा दी— दीपावली के शुभ पर्व पर कई परिवार धन तथा व्यापार की वृद्धि के लिए पूजा कराते हैं हम ने लगभग तीस परिवारो में यज्ञ व वेद मन्त्रो द्वारा वैदिक सस्कारो के अनुसार आयोजनो का प्रबन्ध किया इस शुभ कार्य के लिए हमारी विशेष प्रार्थना पर हमारे भूत-पूर्व पुरोहित श्री राम कुमार जी बी ए पानीपत से आये उन्होंने तथा प सुरेन्द्र कुमार शास्त्री तथा प जगदीश चन्द्र वसु से मिल कर यह सारे यज्ञ सम्पन्न कराए। रात्रि को परिवारो मे सत्सग किए गए। जिन मे श्री कृष्ण कुमार गुप्ता श्री कृपा राम जी आर्य तथा श्री पवन कुमार मलहोत्रा आदि के परिवारो मे प निरञ्जन देव जी के प्रवचन काफी सराहनीय तथा लाभदायक रहे। 12 11-85 मगलवार निर्वाण दिवस प्रात 7 बजे से 10 बजे तक बडे उत्साह से मनाया गया। जिस मे आए हुए विद्वानो ने भाव-भीनी महर्षि देव दयानन्द को श्रद्धाजलिया अर्पित की। 17-11-85 को युवको के लिए एक विशेष कार्यक्रम बनाया गया जिस मे पजाब प्रान्तीय तथा चण्डीगढ भाषण एव सगीत प्रतियोगिता का एक विशाल आयोजन किया गया। जिस में 52 टीमो ने भाग लिया तथा लगभग 11 प्रतियोगियों ने भाषण तथा गीत सम्मिलित गीतो मे अपना-अपना कार्यक्रम दिया। इस आयोजन की सभी ने भूरी भूरी प्रशसा की। इस कार्यक्रम से जहा युवको में उत्साह बढा वहा स्कूल व कालेज के विद्यार्थियो मे, आर्य समाज के प्रति जानकारी का प्रसार हुआ। विद्यार्थियों को लगभग एक हजार ट्रैक्ट जो कि आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित हुए थे, फ्री बाटे गए। आयोजन काफी सफल रहा। बच्चो के मुख से महर्षि जीवन की चर्चा जो कि बडे सुन्दर प्रभावशाली आकर्षित ढग से की गई थी का लोगो पर बहुत प्रभाव पडा।

प्रतियोगियो को प्रोत्साहन देने के लिए सभी का उपहार दिए गए। 13 प्रतियोगता पुरस्कार भी वितरण किए गए। जिन मे प्रथम पुरस्कारो के लिए चार सौ रुपए नकद द्वितीय पुरस्कारो के लिए तीन सौ रुपया तथा तृतीय पुरस्कारों के लिए दो सौ रुपया था। इस के अतिरिक्त स्वामी दयानन्द जी के फ्रेम किए हुए चित्र-वैदिक पुस्तके भी दी गई। बच्चो का पुरस्कार हमारी समाज के वरिष्ठ उप प्रधान श्री गुरदियाल सिंह जी आर्य ने अपने कर कमलो से वितरण किए तथा उन्होने आर्य समाज को पाच सौ रुपया भी दिया।

इस सारे आयोजन से वेद प्रचार को काफी बढावा मिला साथ साथ नवयुवको कालेजो तथा स्कूलो के विद्यार्थियो मे आर्य समाज के प्रति आकर्षण उत्पन्न हुआ। इस सारे आयोजन की सफलता के लिए मैं सभी का आभारी हू। जिन्होने इस मे अपना अपना योगदान दिया विशेष रूप मे प्रधान नवनीत लाल जी गुरदियाल सिह आर्य श्रवण कुमार आर्य युवक सभा वेद प्रचार भजन मण्डली आदि आदि। अन्त मे मै यदि दो नामो का उल्लेख न करूगा तो मैं समझता हू कि मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा नही किया। वह हैं श्री रणवीर जी भाटिया तथा श्री नरेन्द्र सिंह भल्ला जिनके घोर परिश्रम तथा सुझावो के कारण यह प्रान्तीय सम्मेलन पूर्ण सफल रहा। महर्षि लगर के साथ इस सफल आयोजन की समाप्ति की गई।

—बलदेव राज सेठी
मन्त्री आर्य समाज

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर की ओर से वेद प्रचार

श्री सीताराम भजन मण्डली तथा प, रामनाथ जी ने प्रतिदिन भिन्न भिन्न बगला बस्ती, हिन्दुस्तानी बस्ती, इन्दिरा नगर, नवाकोट हरिपुरा आदि बस्तिओ तथा हिन्दु सभा स्कूल, बी बी के डी ए वी स्कूल, वैदिक गर्ल्ज हायर सैकण्डरी स्कूल श्रद्धानन्द महिला विद्यालय, आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल आदि स्थानो मे अपने मनोहर गीतो भजनो एव प्रवचनो द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार किया। सभी स्थानो पर अबाल वृद्ध वनिताओ की उपस्थिति तीन चार सौ तक होती रही। श्रोताओ मे जिज्ञासा तथा तृष्णा बनी रही। शका समाधान भी हुए। आर्य समाज के पदाधिकारी भी सदैव उपस्थित रहे। जिन मे श्री सुभाष भाटिया प्रधान श्री ओकार नाथ बहल, प्रिंसिपल सन्तोष शर्मा तथा डाक्टर सुमन शर्मा प्रमुख थे। सदैव सदा दिन रात अनथक प्रयास करके वेद प्रचार सप्ताह का सम्पूर्ण कार्य भार मेरे सहयोगी मन्त्री श्री राजा राम शर्मा ने वहन किया इसके लिए हम कृतज्ञ हैं।

10 11 85 रविवार को समाज मन्दिर मे बाल्मीकि दिवस मनाया गया। प्रिंसिपल डी ए वी कालेज श्री धर्मवीर जी पसरीचा ने अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि श्री सम्पूर्ण गिरि जी महाराज थे। श्री निहाल चन्द चीदा, श्री राजपाल सेठ प्रिंसिपल डी ए-वी स्कूल श्री ओम-प्रकाश कालिया आदि ने श्रद्धाजलि अर्पित की।

वैदिक गर्ल्ज स्कूल तथा श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय की छात्राओ ने तथा अन्य सगीत पार्टियो ने गीत सगीत प्रस्तुत किया। कविता पाठ भी किया गया।

श्री नन्द किशोर जी मन्त्री केन्द्रीय आर्य सभा, श्री राजपाल जी सेठ श्रीराज कुमार गिल श्री हरबन्स लाल जी भगत श्री निहाल चन्द जी चीदा सम्पादक बाल्मीकि सन्देश आदि प्रमुख वक्ता थे। सरोपे भेंट किए गए तथा ओ३म की शील्ड प्रदान की गई। श्री सुभाष भाटिया प्रधान आर्य समाज श्रद्धानन्द ने सभा का धन्यवाद किया। मच सचालन प्रिंसिपल सन्तोष शर्मा एम ए एम एड ने किया, शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित हुई। ऋषि लगर वितरित किया गया। इस प्रीती भोज मे हजारो व्यक्तियो ने भाग लिया।

वीरेन्द्र देवगण
मन्त्री

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना के तत्वावधान में सक्रान्ति का मासिक सत्सग 16 11 85 को कु निर्मलमाला सूद 3 नेहरू नगर माडल टाऊन लुधियाना मे हुआ।

सारा परिवार बडी श्रद्धा से यज्ञ पर बैठा श्रीमती कमला आर्या महामन्त्री आर्य प्रतिनिधिसभा पजाब ने यज्ञ कराया और यज्ञोपरान्त प्रभावशाली उपदेश देते हुए कहा कि धन और ज्ञान पा कर भी अहकार न होना यही जीवन की सबसे बडी विशेषता है।

सत्सग हर दृष्टि से प्रभावशाली रहा भारी सख्या मे बहनो ने इस मे भाग लिया और यज्ञ पर अपने समाज के लिए दिल खोल कर दान दिया। सूद परिवार की ओर से सभी सत्सगियो का जल पान द्वारा स्वागत किया गया।

—निर्मला बरी
मन्त्राणी

पोपपाल के भारत आगमन पर छोटा-नागपुर में गरीब हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन की घोषणा से जनता में असन्तोष

स्वतन्त्र भारत मे ईसाईकरण के षड्यन्त्र को सहन नही किया जाएगा। हजारी बाग मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान की सिंह गर्जना

हजारी बाग (बिहार) 10 नवम्बर। आज आर्य वीरदल शिविर का दीक्षान्त समारोह दयानन्द उच्चतर विद्यालय हजारी बाग के प्रांगण मे बडे उत्साह के साथ सम्पन्न किया गया। हजारी बाग तथा राची के अनेक गणमान्य महानुभाव इस अवसर पर उपस्थित थे। छोटानागपुर क्षत्र से उराव मुंडा जाति के आदिवासी इस समारोह मे भारी सख्या मे शामिल हुए।

आर्य वीरदल शिविर का समापन समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा के अध्यक्ष श्री रामगोपाल शालवाले के सभापतित्व मे बडे उत्साह मे सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य वीरो को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान ने कहा कि देश धर्म तथा समाज की रक्षा के लिए आर्य वीर दल की स्थापना की गई है—

श्री शालवाले ने छोटानागपुर क्षेत्र मे विदशी ईसाई मिशनरियो की भारत विरोधी गतिविधियो की चर्चा करते हुए भारत सरकार से माग की कि विदेशी धन के बल पर गरीब जनता का धर्म-परिवर्तन बन्द होना चाहिए। सरकार विदेशी पादरियो की गतिविधियों पर अकुश लगाए।

श्री शालवाले ने कहा कि इस क्षेत्र में आने के पश्चात् उन्हे यह बताया गया है कि आगामी मास पोपपाल के भारत आगमन पर छोटा नागपुर के विदेशी पादरी 1 लाख हिन्दुओ का धर्म परिवर्तन करके उन्हे इसाई बनाकर पोपा साहब का स्वागत करेंगे।

श्री शालवाले ने कहा यदि यह सत्य है तो देश के लिए इस प्रकार का धर्म-परिवतन बडा घातक होगा। इसस जनता मे कटुता एव साम्प्रदायिक विद्वेष प्रज्वलित होगा।

श्री शालवाले ने भारत सरकार से अपील करत हुए कहा कि गरीब हिन्दुओं पर इस आतकपूर्ण अन्याय को रोका जाय अन्यथा देशभर में इसकी व्यापक प्रतिक्रिया होगी

—सच्चिदानन्द शास्त्री

लुधियाना में महर्षि निर्वाण दिवस

12-11-85 मगलवार प्रात 8 बजे से 12 बजे तक जिला आर्य सभा लुधियाना के तत्वाधान मे आर्य समाज साबुन बाजार मे बडे समारोह से मनाया गया जिस की प्रधानता श्री एम, एल, आनन्द प्रिंसीपल आर्य कालेज ने की यज्ञ के मुख्य यजमान श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा प्रधान जिला आर्य सभा तथा श्री विजय पाल जी सपरिवार थे बहिन कमला जी आर्यामहामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब तथा बहिन शान्ता जी गौड वानप्रस्थ के प्रभु भक्ति के गीतों ने खूब समय बान्धा—आचार्य भद्रसेन जी, ला सरदारी लाल कपूर, प्रो बालकृष्ण शर्मा, श्री वैद्य कुन्दन लाल, श्री बोधराज सहगल, श्री राजाराम ने महर्षि को श्रद्धाञ्जलिया भेन्ट की—आर्य गर्ल्ज स्कूल की छात्राओं ने अपने सुन्दर भजनो से ऋषि के चरणो मे श्रद्धान्जली भेन्ट की लुधियाना की सब आर्य समाजो स्त्री आर्य समाजो विशेष रूप से आर्य गर्ल्ज हायर सैकण्डरी स्कूल ने पूरा-पूरा सहयोग दिया। अन्त में श्री एम-एल- आनन्द ने अपने ओजस्वी भाषण मे महर्षि को श्रद्धा के पुष्प भेन्ट किए। श्री ओम प्रकाश जी पासी प्रधान आर्य समाज साबुन बाजार तथा डा सुभ चन्द भारद्वाज मन्त्री जिला आर्य सभा का प्रबन्ध अति उत्तम था—यज्ञ शेष विसर्जन तथा शान्ति पाठ के पश्चात् कार्यवाही समाप्त हुई।

—सत्यानन्द आर्य
महामन्त्री

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

परमात्मा अनन्त शक्ति का स्रोत है

वह परमेश्वर है इस पर और भी जोर देने के लिए कहा गया है।

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते। न पञ्चमो न षष्ठ सप्तमो नाप्युच्यते। नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते। य एतदेवमेकवृत वेद।

(अ, 13।4(2) 16-18

यह परमात्मा न ही द्वितीय, न ही तृतीय, न ही चतुर्थ न ही पञ्चम, न ही षष्ठ, न ही सप्तम्, न ही अष्टम, न ही नवम, न ही दशम कहा जाता है। जो इस देव को एक मानता है, उसको वह प्राप्त होता है। अर्थात वह अकेला एक ही वर्तमान है।

स्वामी दयानन्द ने तो सत्यार्थ प्रकाश मे ईश्वर को एक माना ही है और अग्नि इत्यादि को उस परमेश्वर के विभिन्न नाम माना है। सन्त कवियो ने भी एक ईश्वर की उपासना की है। कबीर ने लिखा है

दुइ जगदीस कहा से आया कहु
कवने भरमाया ?
अल्लाह राम करीमा केसो हरि
हजरत नाम धराया।

'आनन्दघन' ने लिखा है—

राम कहो रहमान कहो, कान्ह कहो
महादेव रे।
पारसनाथ कहो कोउ ब्रह्मा, सकल
ब्रह्म स्वयमेव रे।

'दादूदयाल' ने गाया है—

बाबा नाहीं दूजा कोई।

एक अनेकन नाम तुम्हारे मो पै
और न होई,
अलग इलाही एक तू, तू ही राम
रहीम।
तू ही मालिक मोहना केसो नाम
करीम।
साईं सरजनहार तू, तू पावन,
तू पाक।
तू कायम करतार तू, तू हरि
हाजिर आप।
अविगत अल्लह एक तू, गनी गुसाई
एक।
अकल अनूपम आप है 'दादू' नाम
अनेक।

ऋग्वेद 2।1।6 में कहा गया है—

त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्वं
शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे।
त्वं वातैररुणैर्यासि शङ्गयस्त्वं पूषा
विधत पासि नु त्मना॥

हे ज्ञानस्वरूप ईश्वर! तू द्युलोक का बडा प्राणदाता रुद्र है, तू मरुतों का बल है और अन्न का स्वामी भी तू ही है, तू सुखमय प्रेरक शक्तियो के साथ प्राप्त होता है। तू पूषा अपनी शक्ति से ही उपासकों का पालन करता है।

ईश्वर के द्रविणोदा, अग्नि, नृपति, भग, सविता, देव, आयु आदि नाम भी हैं।

अगले मन्त्र में कहा है—

इन्द्र मित्र वरुणमग्निमाहुरथो दिव्य,
स सुपर्णो गरुत्मान्।
एक सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्नि यम
मातरिश्वानमाहु॥

अर्थात एक ही परमेश्वर को इन्द्र मित्र वरुण, अग्नि, दिव्य, सुपर्ण, यम, मातरिश्वा आदि नाम दिया जाता है। यजुर्वेद 32।1 मन्त्र मे लिखा है—

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमा।
तदेव शुक्र तद् ब्रह्म ता आप स
प्रजापति॥

वही पूर्ण पुरुष अग्निस्वरूप, वही अखण्डनीय वही गति देने वाला, निश्चय करके वही सुख देने वाला, वही पवित्र, वही सबसे बडा, वही सर्वव्यापक और वही सब जगत् का पालने वाला, है। इसलिए हम उस परमेश्वर की उपासना करें जो—

स न पिता जनिता स उत बन्धु-
र्धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यो देवाना नामध एक एव त सं
प्रश्न भुवना यन्ति सर्वा॥
(अ, 2।1।3)

वही परब्रह्म परमात्मा हम सबका पिता, जनक और भाई है। वही सब पदार्थों, सब स्थानो तथा सब ज्ञातव्य को यथावत् जानता है, उसी की शक्ति सब देवो में रहती है, इसीलिए सम्पूर्ण अन्य देवो के सब नाम उसके लिए प्रयुक्त किये जाते हैं वे नाम उसी के हैं। सम्पूर्ण पदार्थ उसी मे जाकर एक रूप हो जाते हैं।

कैसे तुमको ध्याऊ ?
शब्दो की सीमा मे कैसे मैं असीम को बाऊ,
कभी प्यार से 'पिता' पुकारू, स्नेही बन्धु नाम उच्चारू
कभी सखा कह तन मन वारू
पिता, बन्धु, स्नेही कह कर भी वनवर कूल न पाऊ,
कैसे तुमको ध्याऊ' ?

—

राष्ट्र की अखण्डता को चुनौती देने वाले तत्वों को सख्ती से कुचल दिया जाए

आर्य समाज लाजपत नगर दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में विशाल जन समूह को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने देश की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए आतंकवादी तत्वों को सख्ती से कुचलने की सरकार से मांग की। आपने कहा कि पाकिस्तान द्वारा हथियारों के अम्बार को एकत्र करने व पंजाब के अलगाववादी तत्वों को सहयोग देने, इसाई मिशनरियों के व्यापक जाल फैला कर धर्मान्तरण करने उर्दू व शरीयत के नाम से उत्तेजना फैलाते मुस्लिम नेताओ की सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय की अवमानना करने व साम्प्रदायिकता को हवा देने आदि को राष्ट्र मे—आन्तरिक सकट की चेतावनी देते हुए राष्ट्रवासियों को सजग होने का आह्वान किया। लाला जी ने सरकार को चेतावनी दी यदि पोप धर्मान्तरण की नीयत से भारत में आए तो आर्य समाज उनका कड़ा विरोध करेगा और धर्मान्तरण का उत्तर धर्मान्तरण से देगा।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए श्री शिव कुमार शास्त्री भू. पू. सांसद ने धर्म निरपेक्षता व चुनाव की गलत पद्धति, राष्ट्रीय चरित्र के अभाव का उल्लेख करते हुए राजनीति मे वैदिक दृष्टिकोण की व्याख्या करते हुए सिद्धान्तों पर चलने की चर्चा की। सम्मेलन को सर्वश्री सूर्य देव प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली। डा. धर्मपाल, महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री देवराज शास्त्री, प यशपाल सुधांशु, प्रधान आर्य पुरोहित सभा, प, मेघश्याम वेदालंकार, श्री नरेन्द्र अवस्थी, प वेद प्रकाश शास्त्री आदि ने सम्बोधित किया प्रि पुरुषोत्तम लाल शास्त्री जी ने सम्मेलन का मंच सचालन किया। सम्मेलन में निम्नलिखित प्रस्ताव पारित हुए।

समान नागरिक कानून प्रस्ताव

यह सम्मेलन देश की भावात्मक एकता व अखण्डता के लिए सरकार से मांग करता है कि मुस्लिम 'पर्सनल ला' अल्पसंख्यक आयोग से जो समता की भावना में बाधक है। उन्हें समाप्त कर के समान नागरिक कानून लागू किया जाए। जम्मू-कश्मीर में धारा 70 के अन्तर्गत दिया गया अलग दर्जा भी समाप्त किया जाए। सम्मेलन इसे राष्ट्र की अखण्डता के लिए अत्यावश्यक मानता है।

पोप पाल के आगमन पर धर्मान्तिरण न हो

सम्मेलन सरकार से माग करता है कि इसाईयो के सर्वोच्च धार्मिक नेता के भारत आगमन पर यदि धर्मान्तिरण का षड्यन्त्र विदेशी धन के प्रलोभन से करने का प्रयास किया गया तो आर्य समाज इसका कड़ा विरोध करेगा। सम्मेलन यह खतरा महसूस करता है कि पूर्व इतिहास न दोहराया जाए—स्मरण रहे कि पोप पाल जब पहले भारत आए थे तो धर्मान्तिरण हुआ व इसाई मिशनरियो की राष्ट्र विरोधी गतिविधिया बढ़ी। उसके आने का आशय स्पष्ट किया जाए, विदेशी धन से धर्मान्तिरण जो राष्ट्र हस्तान्तरण है उसे रोका जाए।

राष्ट्र विरोधी संस्थाओं को प्रोत्साहन न मिले

सम्मेलन सरकार से माग करता है कि प्रान्तीयता, क्षेत्रीयता, जातियता साम्प्रदायिक सकीर्णता के आधार पर राष्ट्र को विघटन करने वाले सगठनो को प्रतिबन्धित किया जाए और राष्ट्रीय एकता, मानवाधिकारों, समाज सुधार, समता की भावना को सुदृढ़ करने वाले सगठनों को हर सम्भव ढग से सहयोग व प्रोत्साहित किया जाए।

—मेघश्याम वेदालंकार एम. ए.

—

पूज्य श्री स्वामी सर्वानन्द जी का अभिनन्दन किया जाएगा

जो जाति व राष्ट्र अपने कार्यकर्त्ताओं, नेताओं का अभिनन्दन नहीं करती वह प्रगति नहीं कर सकती। पंजाब प्रान्त में सन् 1925 में गुरुदत्त भवन लाहौर में उपदेशक विद्यालय की स्थापना हुई जिसके आचार्य श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज बने थे, उस विद्यालय के स्नातक 77 वर्षीय वयोवृद्ध सन्यासी श्री स्वामी सर्वानन्द जी (पूर्व नाम प रामचन्द्र जी) दयानन्द मठ दीनानगर के संचालक हैं। अपने पूज्य गुरु श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के पद् चिन्हों पर चलते हुए कार्य भार सम्भाले हुए हैं। दयानन्द संस्कृत विद्यालय से निकले हुए सैंकड़ों विद्यार्थी शास्त्री परीक्षा पास करके उपदेशक, पुरोहित व सरकारी बड़े बड़े पदों पर कार्य रत हैं। सबका विचार है कि अपने पूज्य गुरु श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का अभिनन्दन किया जावे। सारे देश में उनकी बड़ी ख्याती है, अत: उनके सन्यास ग्रहण करने की वर्ष गाठ 1-6-86 को उनकी सेवा में ग्यारह लाख रुपये की राशि भेंट की जावे, जिससे वे यति मण्डल द्वारा किए जा रहे वेद प्रचार व अन्य कार्यक्रमो को तीव्र गति दे सकें। जिसके लिए धन एकत्रित करने का अभियान आरम्भ कर दिया गया है। यदि एक हजार दानी महानुभाव ग्यारह 2 सौ रुपया की राशि दें तो यह धन शीघ्र एकत्रित किया जा सकता है। पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, जम्मू, राजस्थान, दिल्ली तथा बम्बई आदि अनेक स्थानो पर श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के अनेको श्रद्धालु व शिष्य विद्यमान हैं, अत. यह उपरोक्त राशि एकत्रित करनी कोई मुश्किल नहीं है, यदि आप श्रद्धालुओं का सहयोग मिल जावे तो यह कार्य आसान हो सकता है। दयानन्द मठ दीनानगर में 24-25 अगस्त 1985 को हुई यति मण्डल की बैठक मे श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज (आचार्य गुरुकुल झज्जर हरियाणा) ने सब उपस्थित सज्जनों को अपील की कि वे सब मिल-जुलकर तन मन-धन से इस कार्य मे जुट जावें। जिन महानुभावो का श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से सम्पर्क रहा है जो उनके जीवन के बारे मे उन्हें निजी अनुभव हुआ हो वह सयोजक श्री स्वामी सर्वानन्द अभिनन्दन समिति दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब) के पते पर शीघ्र सूचित करें।

कार्यकर्ता प्रधान—महात्मा दयानन्द तपोवन देहरादून; सयोजक –देव शर्मा (वानप्रस्थ)

500 इसाई परिवार वैदिक धर्म में दीक्षित

आर्य समाज कुमुण्डे (बलागीर) की विशाल यज्ञशाला में 25 अक्तूबर को 500 से अधिक ईसाई परिवार पुन अपने प्राचीन हिन्दू धर्म मे दीक्षित हुए। शुद्धि संस्कार उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त मन्त्री श्री प विशिकेसन साहित्याचार्य एव श्री अखिलेश आचार्य गुरुकुल आम सेना ने कराया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री पृथ्वी राज जी शास्त्री शुद्ध होने वाले बन्धुओ को आर्शीवाद देने के लिए विशेष रूप से उपस्थित थे।

सभी दीक्षित होने वाले सज्जनों को नये वस्त्र पहना कर यज्ञशाला में बैठाया जाता था। फिर विधिवत वेद मन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञोपवीत और गायत्री मन्त्र दिया जाता था। भक्त और विधर्मी माने जाने वाले हजारों व्यक्तियों के मुख से वेद मन्त्रोच्चारण सुनकर सभी का मन गद-गद हो जाता था यह सारा कार्यक्रम उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती गुरुकुल आम सेना के प्रेरणा एव परिश्रम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक आर्य बन्धुओ के साथ कन्या गुरुकुल आम सेना की आचार्या बहन कौशल्या देवी गुरुकुल आम सेना के मुख्याध्यापक डा. वामदेव जी एव अनेक विद्वान उपस्थित थे शुद्धि संस्कार के बाद एक विशाल भोज का भी आयोजन हुआ।

—विशिकेसन शास्त्री
संयुक्त मन्त्री

श्री शिवराज जी शास्त्री सभा की सेवा से मुक्त

श्री शिवराज जी शास्त्री मौलवी फाजिल को सभा की सेवा से 1-11-85 को मुक्त कर दिया गया है। वह यहां से चले गए हैं और अब वह सभा की सेवा में नहीं है। इसलिए सभी आर्य बन्धुओं व आर्य समाजों से निवेदन है कि सभा के नाम पर अब उनसे कोई लेन-देन न किया जाए।

—सभा महामन्त्री

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा जिला राजकोट (सौराष्ट्र) भारत सरकार द्वारा अकाल ग्रस्त क्षेत्र घोषित

आर्य जनता की सूचनार्थ निवदन है कि कृम प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी की जन्म भूमि टकारा आज अकाल के कराल गालों में आ रहा है। भारत सरकार ने टकारा (जिला राजकोट) सहित समस्त सौराष्ट्र को अकाल ग्रस्त घोषित कर दिया है।

टंकारा में इस समय उपदेशक विद्यालय, गौशाला आदि कार्य महर्षि दयानन्द-स्मारक ट्रस्ट टकारा द्वारा चलाए जा रहे हैं। इसके कारण टकारा ट्रस्ट को काफी आर्थिक सकट का सामना करना पड रहा है। वहा पर पानी बिल्कुल सूख गया है, जिससे काफी सकट उत्पन्न हो गया है।

मेरी समस्त आर्य समाजो स्त्री आर्य समाजो एव अन्य आर्य सस्थाओ से तथा सभी आर्य जनो से भी प्रार्थना है कि इस सकट की घड़ी में हमारी आर्थिक सहायता करने की कृपा करें। इस के लिए हम आपके आभारी रहेंगे। यह सहायता की राशि आप बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा—363650, (सौराष्ट्र) गुजरात अथवा इसके उप कार्यालय महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-1 के पते पर भिजवा सकते हैं। बूंद बूंद करके घड़ा भरता है, यदि आप इस उपलक्ष्य में थोड़ी-थोड़ी भी सहायता करेंगे तो वहा हम इस आर्थिक सकट से उभरने मे समर्थ हो सकेंगे वहा आप सब भी पुण्य के भागी बनेंगे।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री ट्रस्ट

—

फरीदकोट में ऋषि निर्वाण एवं दीपावली पर्व

दि 12-11-1985 को प्रात साढ़े 9 बजे से मध्याह्न 11 बजे तक बड़ी धूम धाम से ऋषि निर्वाण दिवस एव दीपावली पर्व मनाया गया। इस अवसर पर प धर्मवीर आर्य ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर एवं उनके आर्य जगत पर उपकारो को भली भांति प्रकाशित किया और उनको मारने के षड्यन्त्र मे ब्रिटिश सरकार का हाथ बताया। जिसका श्रोताओ पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। साथ ही कु सुवर्णा पिपल पार्टी की बच्चियो ने मधुर स्वर में ऋषि के गीत गाए। भारत का कर गया बेड़ा पार वो मस्ताना योगी धन्य है तुमको ऐ महर्षि तूने हमें जगा दिया और प, आर्य भूषण पिपल सगीत विशारद ने दो गीत गाए।

—दर्शनलाल वर्मा

—

[illegible]

आर्य [illegible] पारिवारिक [illegible] [illegible] का [illegible]।

—मन्त्री

[illegible]

आर्य समाज [illegible] में 12 [illegible] को बड़े उत्साह से स्वामी दयानन्द [illegible] दिवस मनाया गया। आर्य [illegible] प्रधान श्री [illegible] की [illegible] पूर्व गीता की कथा करते रहे।

—[illegible] कुमार [illegible]
मन्त्री

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 32 23 मार्गशीर्ष सम्वत् 2042 तदनुसार 8 दिसम्बर 1985 दयानन्द 161 अक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

प्रभो ! हम अमरत्व को प्राप्त करें

लेखक—श्री प रामप्रसाद जी वेदालकार आचार्य एव उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

ओ३म् यस्त्वा हृदा कीरिणा मन्यमानोऽमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि ।
जातवेदो यशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम ॥

ऋ 5 41 10 ॥

अन्वय—य मर्त्य वा अमर्त्य म य मान कीरिणा हृदा जोहवीमि । जातवेद प्रजाभि अस्मासु यश धेहि । अग्ने । अमृतत्वमश्याम ।

अन्वयार्थ—(य मर्त्य त्वा अमर्त्य मन्यमान) जो मैं मरणधर्मा मनुष्य तुझ को अमरणधर्मी मानता हुआ (कीरिणा हृदा जोहवीमि) स्तुतिमय हृदय से पुन पुन पुकारता हू । (जातवेद ! प्रजाभि अस्मासु यश धेहि) हे सर्वज्ञ ! हे वेदो त्पादक ! हे कण कण मे विद्यमान रहने वाले भगवन ! प्रजाओ के द्वारा हमें यश प्रदान कर (अग्ने ! अमृतत्वम अश्याम) हे प्रकाश स्वरूप ज्ञान स्वरूप प्रभो ! हम अमृतत्व—मोक्ष को प्राप्त होवें ।

मनुष्य मर्त्य है मरणधर्मा है नश्वर है अनित्य है और भगवान अमर्त्य है, अमरणधर्मा भी है, अविनाशी है अविनश्वर है नित्य है । यह सत्य है यह तथ्य जब मनुष्य को ज्ञात हो जाता है तो वह अपनी वास्तविक स्थिति को समझने लगता है । और फिर कहने लगता है कि 'वास्तव मे मैं मर्त्य हू मरणधर्मा हू विनाशी हू नश्वर हू अनित्य हू । उस को तब यह स्पष्ट भासने लगता है कि क्या उसकी एक सी स्थिति न रही है और न रहेगी । कभी वह बच्चा था, कभी जवान था कभी प्रौढ था और अब बूढ़ा है । अब बचपन नहीं रहा जवानी नहीं रही प्रौढ अवस्था नही रही तो यह बुढ़ापा भी अब क्या रहेगा । अत एक दिन इसका भी अन्त होगा जो मेरा [illegible] होगा ।

मनुष्य को जब अपनी इस अस्थिर अवस्था का इस नश्वरावस्था का इस अनित्यावस्था का सही रूप से बोध होने लगता है तो फिर यह मर्त्य किसी अमर्त्य का यह मरणधर्मा किसी अमरणधर्मा का यह विनाशी का यह अस्थिर किसी स्थिर का यह विनश्वर किसी अविनश्वर का आश्रय लेना चाहता है किसी अचल का पल्ला पकड़ना चाहता है किसी निश्चल का सहारा लेना चाहता है ।

ऐसी अवस्था मे जब वह अपने चहु ओर देखता है तो उसे अपने सहित सारे के सारे ही मर्त्य दिखाई देते हैं अस्थिर और नश्वर दिखाई देते हैं । उसे एक एक कर के नित्य प्रति सब के सब यमराज के मुख का ग्रास बनते हुए दिखाई देते है । तब वह इस चलाचली के ससार में किसी अचल को ढूढता है इस गमनागमन के ससार मे किसी निश्चल सत्ता को जानना चाहता है इस अस्थिर लोक मे किसी स्थिर सत्ता को तलाश करना है । इस अनित्य ससार मे किसी नित्य तत्व को खोजना चाहता है । जहा भी जरा उस को इस अविनाशी तत्व का थोड़ा ज्ञान होने लगता है वहा वह उस तत्व के सम्बन्ध में और अधिक से अधिक स्वाध्याय करने लगता है और अधिक से अधिक श्रवण करने लगता है और अधिक से अधिक मनन चिन्तन और निदिध्यासन करने लगता है । निदिध्यासन करता हुआ वह उसकी भक्ति से स्तुति प्रार्थना उपासना करता है । उस को बड़ उत्साह और उमग से वह स्मरण करता है पुकारता है । वेद के शब्दो मे यो कहने लगता है—'य मर्त्य त्वा अमर्त्यं मन्यमान कीरिणा हृदा जोहवीमि—मै अस्थिर विनाशी तुझ को स्थिर—अविनाशी परम परमेश्वर मानता हुआ अनुरागपूर्ण हृदय से स्तुतिपूर्ण हृदय से पुन पुन अतिशय करके पुकारता हू । केवल पुकारता ही नही हू वरन तुझ से कुछ मागता भी हू । वह क्या ? वह यह कि—

जातवेद ! प्रजाभि अस्मासु यश धेहि —हे सर्वज्ञ ! हे वेदो को ससार के कल्याण के लिए उत्पन्न करने वाले हे कण कण मे विद्यमान रहने वाले प्यारे प्रभो तू हमे यश प्रदान कर तू हमे प्रजाओ के द्वारा भी यश प्रदान कर

मरणधर्मा भक्त प्रभु से यह प्रार्थना करता है कि वह कण कण मे विराजमान प्रभु हमे ससार मे यश प्रदान कर केवल हमे अपने गुण कर्म स्वभावो से ही नही वरन अपनी प्रजाओ पुत्र पौत्रो के माध्यम से भी यश प्रदान करें शिष्यो के माध्यम से भी यश प्रदान कर ।

ससार मे यश कीर्ति वा स्नेह—सहानुभूति मान सम्मान आदि ऐसी प्रिय चीज हैं जिनको पाकर मनुष्य ससार मे हर प्रकार से प्रसन्न रहता है और सहज स्वभाव से स्वस्थ सुखी रहता है भले ही फिर उसका भोजन वस्त्र स्थान आदि सामान्य ही क्यो न हो पर इसके विपरीत भोजन आच्छादन स्थान आदि कितने भी सुन्दर क्यो न हो पर पग पग पर अवहेलना अपमान तिरस्कार आदि होता रहे तो मनुष्य कुम्हलाने लगता है दुखी रहने लगता है तन मन तन मन आदि से खिन्न होने लगता है यहा तक कि वह सब ओर से आधि व्याधियो से घिरने लगता है । इसलिए हर प्राणी के लिए यश प्यार मान, सम्मान आदि बड़ी आवश्यक वस्तुए है क्योकि यह उसको सदा मनो ताजा हरा भरा रखती हैं । परन्तु हम मर्त्य मनुष्य, यदि उस अमर्त्य अविनाशी परमेश्वर से यश कीर्ति आदि के लिए केवल प्रार्थना करने लगे और उसके लिए कुछ कर्तव्य का पालन न करे तो प्रभु भला कैसे हमे यश दे देगा इसमे कोई सन्देह नही कि हमे यश मिलेगा, सहानुभूति मिलेगी स्नेह मिलेगा सम्मान मिलेगा कीर्ति मिलेगी, पर कब ? जबकि हम उस अमर्त्य अविनाशी परम पिता परमेश्वर की प्रेरणाओ का वेदगत आज्ञाओ का श्रद्धा भक्ति से उत्साह पूर्वक पालन करेंगे । हम वेदानुसार जब अपने कर्तव्यो का अपने उत्तरदायित्वो का अपनी सन्तान आदि के प्रति मन वचन कर्म से पालन करेंगे तब जहा वह अमर्त्य प्रभु हमे पग पग पर कदम कदम पर उसके माध्यम से यश देगा स्नेह देगा सहयोग देगा मान सम्मान देगा वह अपनी ही इन सन्तानो के माध्यम से अपनी ही इन शिष्य प्रशिष्य रूप परम्पराओ के माध्यम से भी वह हमे यश प्यार मान सम्मान आदि प्रदान करेगा ।

इस प्रकार यह निश्चित है कि प्रभु वेदाज्ञा के अनुरूप एव हृदयस्थ प्रभु प्रेरणा के आधार पर जीवन मे आचरण करने पर सर्वत्र हमे स्नेह सम्मान यश एव आवभगत मिले सर्वत्र हमे सब सिर पर उठाए उठाए फिरें और हम भी यश कीर्ति मान सम्मान सेवा सत्कार और वाह वाही मे ऐसे मग्न हो जाए ऐसे डूब जाए कि अपने वास्तविक लक्ष्य को ही हम भूल जाए इसलिए यह मर्त्य यह भक्त मनुष्य अपने को मरणधर्मा मानकर अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक हो कर प्रार्थना करता है—

अग्ने अमृतत्वमश्याम —हे प्रकाश प्रभो हे ज्ञान के अद्वितीय स्रोत भगवन हम इस जगत मे उत्पन्न होने वाले यश आदि मे कभी इतने मग्न न हो जाए, कभी इतने डूब न जाए कि हमे इसके अतिरिक्त कुछ और दिखाई ही न देने लगे वरन हम तो उस यशोमय सरोवर मे कमल की भाति जल मे रह कर सदा जल के ऊपर तरते हुए तेरे पावन प्रकाश मे वर्तमान रहते हुए सदा खिले रहे आनन्द मे विभोर रहें सब प्रकार से परितृप्त रहे और अन्त मे हम यो विचार और आचरण करें—

(शेष पृष्ठ 6 पर)

जन्म-मरण की उलझन

ले.—श्री प्रा भद्रसेन जी वेद-दर्शनाचार्य, होशियारपुर

(गताक से आगे)

वैसे ही यह आत्मा भी सूक्ष्म है। यह सूक्ष्म आत्मा न स्त्री के रूप मे है और न ही पुरुष या नपुसक, वह जैसे शरीर को धारण करता है, वह वैसा ही कहलाने लगता है अर्थात् स्त्री पुरुष शरीर के ही भेद हैं। इसीलिए श्वेताश्वतर उपनिषद् मे कहा है—

नैव स्त्री न पुमानेष न चैवाय नपुसक ।
यच्छरीरमादत्ते तेन तेन स रक्ष्यते ॥5,10॥

आगे लिखा है, कि—

कर्मानुगान्यनुक्रमेण देही । स्थानेषु रूपाण्यभिसम्प्रपद्यते ॥11॥
स्थूलानि सूक्ष्माणि बहूनिचैव । रूपाणि देही स्वगुणैर्वृणोति ॥12॥

अर्थात् यह आत्मा अपने कर्मों के अनुरूप परमात्मा की व्यवस्था से अनेक प्रकार के स्थूल सूक्ष्म शरीरो को अनेक योनियो मे धारण करता है। जैसे कोई कभी सूती कभी ऊनी और कभी टेरीकाट पलिस्टर आदि के रग-बिरगे मोटे बारीक अनेक आकारो के वस्त्र धारण करता है।

महात्मा जी न इस गम्भीर रहस्य को समझाते हुए कहा—आत्मा को अजर अमर मानने से ही कर्मफल की व्यवस्था बन सकती है। जैसे कि कपडो की अपेक्षा अधिक समय तक रहने वाला शरीर कभी कोई वस्त्र पहनता है और कभी कोई। तभी वह पहले पहने हुए को याद करके नयो के साथ उन की तुलना करता है इस से सिद्ध होता है कि वह दोनो स्थितियो मे रहता है, तभी तो वह उनकी आपस म तुलना करता है। ऐसे ही स्थानी शरीर वाला अनेक तरह के स्वाद वाले अनेक प्रकार के पदार्थों को खाता है। ठीक इसी प्रकार यह नित्य आत्मा ही अपने पहले शरीरो मे किए गए कर्मों के फल भोगने मे समर्थ होता है। क्योंकि इस जन्म मे किए हुए सभी कर्मों का फल इसी जन्म मे प्राप्त होता हुआ दिखाई नही देता अत यहा किए गए कर्मों के फल भोगने के लिए इस जन्म के साथ आगामी जन्म की व्यवस्था को मानना आवश्यक हो जाता है तथा इस समय विविध योनियो मे अनेक तरह की सासारिक विषमताओ को देखने से कहा जा सकता है कि इस समय के विविध भेद केवल सामयिक परिश्रम के कारण ही नहीं है, अपितु पिछले जन्मो के कर्मों के परिणामस्वरूप भी होते हैं।

भिन्न आत्मा की विद्यमानता से ही शरीर अपने व्यापार पूर्ण करने मे समर्थ होता है तथा इसी आत्मा की सत्ता या असत्ता से जीवित और मृतक मे भेद होता है। तभी तो छान्दोग्य उपनिषद में कहा है जीवापेत वाव किलेद म्रियते न जीवो म्रियते 6 11 3 और इस का समर्थन करते हुए बृहदारण्यक मे आता है 'स वा अय पुरुषो जायमान शरीरमभिसपद्यमान स उत्क्रामन म्रियमाण 4,3,8 जब जीव शरीर से युक्त होता है तब वह जन्मा हुआ कहा जाता है और जब शरीर से अलग होता है, तब मरा हुआ कहलाता है। और किसी की मृत्यु के बाद उसका जब पच भौतिक देह नष्ट हो जाता है, तब जीवात्मा नाम का अविनाशी तत्व ही स्व कर्मों के अनुसार दूसरे शरीर को यथा समय धारण करता है। इसी का ही नाम आवागमन, पुनर्जन्म है जो कि भारतीय सस्कृति का एक मौलिक सिद्धान्त है और इसी के आधार पर कर्मफल व्यवस्था टिकी हुई है क्योंकि इस जन्म मे किए गए सभी कर्मों का फल यहीं साथ के साथ मिलता हुआ अनुभव न होने पर भी पुनर्जन्म के विश्वास पर एक विचारशील एव धार्मिक शुभ कर्मों मे जुटा रहता है तथा अशुभ कर्मों के करने से दूर रहता है। अपने चारो ओर अनेक तरह की विषमताओ को एक विचारशील जब देखता है, तो अनेकधा इन का कोई सामयिक कारण न मिलने पर अन्त मे शास्त्रीय विवेचन के आधार पर यही बात उसकी समझ में आती है कि सामयिक विषमताओ का आधार गत जन्म के कर्म ही हैं। आए दिन ऐसी घटनाए सामने आती रहती हैं जिन मे यह बताया जाता है कि यह बालक गत जन्म में यहा इस रूप मे था, वह पहले के स्थानो और सम्बन्धियो को पहचानता है। यह ठीक है कि ऐसी बातें कुछ दिन ही याद रहती हैं सदा नहीं। सारा का सारा भारतीय साहित्य पुनर्जन्म के पोषक प्रमाणो से भरा पडा है। अत विचारने पर यह सिद्धान्त सर्वथा सगत और व्यवस्था का व्यवस्थापक सिद्ध होता है।

जब महात्मा जी ने इन शब्दो के के साथ आज के प्रवचन को पूर्ण किया, तो सुधीर बात कहने की अनुमति लेते हुए हुए सुधीर ने उठ कर कहा, महात्मा जी मैं कल एक लेख पढ रहा था, जिस में यह प्रश्न उभारा गया था, कि जब हम भारतीय पूर्ण विश्वास के साथ आत्मा को अजर-अमर मानते हैं, तो किसी की मृत्यु पर इतना अधिक शोक, करुण क्रन्दन क्यों करते हैं ? क्योंकि आत्मा की अमरता और मृत्यु का आपस में कोई मेल नहीं है ? आत्मा को नित्य मानने पर रोने का क्या प्रसंग ? अर्थात् जब आत्मा अमर है तो उस की मृत्यु नही हो सकती और जब अमर आत्मा की मृत्यु नहीं हो सकती और जब अमर आत्मा की मृत्यु नहीं होती, तो उस के लिए रोने की बात मेल नहीं खाती। भारतीयों की इस स्थिति को देख कर एक अन्य विचारक ने लिखा है कि किसी की मृत्यु पर बिलख-बिलख कर रोते हुए भारतीयों को देख कर मुझे बडा आश्चर्य होता है, क्योंकि भारतीय जितना अधिक आत्मा की अमरता पर विश्वास करते हैं, उतना ही अधिक वे किसी की मौत पर एक लम्बे समय तक शोक प्रकट करते हैं ? एक और तो आत्मा को अजर अमर, दूसरी और किसी की मृत्यु के समय उस के प्रति विशेष प्रकार का करुण क्रन्दन ? दोनों का मेल कुछ अद्भुत सी बात है। कहा अमरता और कहां उस के लिए विशेष मृत्यु शोक ? अत मेरी प्रार्थना है कि अग्रिम चर्चा में पहले इसी विषय पर प्रकाश डाल जाए। क्रमश

आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वीय अफ्रीका कीनिया, नैरोबी की

गतिविधियां एवं निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वीय अफ्रीका अपने स्थापना काल से ही पूर्वी अफ्रीका ही नहीं अपितु भारत से दूर सभी पारदेशीय क्षेत्रों में वैदिक मन्तव्यों और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा सस्थापित आर्य समाज के सिद्धान्तो के प्रचार-प्रसार मे लीन रहा है। आज भी यह सभा पूर्व मर्यादाओ को सुरक्षित रखती हुई आगे ही आगे बढती जा रही है। इस वर्ष सभा का निर्वाचन गत दिनो सवसम्मति से दो वर्ष के लिए अर्थात 1986 ई तक अतीव प्रसन्नता एव सद् भावनाओं से परिपूर्ण वातावरण मे हुआ, निर्वाचन के पश्चात सभा प्रधान श्रीहरबस राय जी साही ने अपने साथियों को साथ लेकर यूगाण्डा, त जानिया और कीनिया के सभी प्रदेशो की आर्य समाजो का दौरा किया और आर्य बन्धुओ को मिल कर उत्साह प्रदान किया। इस दौरे का बडा ही सफल प्रभाव रहा।

इस वर्ष की गतिविधियो मे उल्लेखनीय काय कीनिया राष्ट्र में ईसाई और इस्लाम धर्म के साथ साथ हिन्दू धर्म की शिक्षा को भी अनिवार्य रूप से लागू करने का भरसक यत्न है। इस राष्ट्र की सरकार ने धर्म शिक्षा सभी शिक्षण सस्थाओ मे इसी सत्र से पाठ्यक्रम मे निर्देशित कर अनिवार्य कर दी थी, किन्तु इसमे केवल इस्लाम और ईसाई धर्म को ही लिया गया था। हिन्दू धर्म का कही भी नाम नहीं था। सभा के अधिकारियो और डा वेदीराम जी शर्मा के अथक प्रयत्नो से इस सरकार ने हिन्दू धर्म को भी पाठ्यक्रम मे सम्मिलित करना स्वीकार कर लिया। किन्तु हिन्दू धर्म का मार्ग अन्य धर्मों के समान सरल नहीं था। फिर भी डा शर्मा जी ने हिन्दू धर्म का पाठ्यक्रम तैयार किया और सरकार के शिक्षा मन्त्रालय को मेरे माध्यम से भेजा। किन्तु हमारे ही कई अन्य विचारो वाले सज्जनो ने अपने आप को हिन्दू धर्म के शीर्षक से युक्त पाठ्यक्रम को स्वीकार करने मे कुछ बाधाए उपस्थित की। इन सभी बाधाओ को भी डा वेदी राम जी ने बडी ही सूझ बूझ से राज्य सरकार को पूरी तरह सन्तुष्ट करके और दूसरे भाईयों को भी समझा कर शान्त किया और परमात्मा की कृपा से हिन्दू धर्म को भी इस राष्ट्र के बच्चे पढने का अवसर प्राप्त कर सकेंगे। डा. साहिब की शिक्षा नीति के पैनल पर एक वरिष्ठ सदस्य के रूप में मनोनीत हैं और इससे आर्य समाज का मान और शान को सर्वोपरि प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। डा साहब आजकल धर्म शिक्षा के अध्यापको को तैयार कर रहे हैं और स्वय सभी मुस्लिम, जैन, सिख ईसाई विद्यालयों में जाकर हिन्दू धर्म पर अपने भाषण देते हैं। इस प्रकार सभा वैदिक धर्म के प्रचार मे दत्तचित है।

सभा का वार्षिक चुनाव 85-86 के लिए निम्न प्रकार हुआ—

श्री हरबस राय जी साही—सभा प्रधान

श्री महेन्द्र जी भल्ला—वरिष्ठ उपप्रधान

श्री शील कान्त जी शर्मा—उपप्रधान-मम्बासा (समुद्र तटीय क्षेत्रार्थ)

श्री राजेन्द्र पाल जी चड्डा—उपप्रधान किसुमू (पश्चिमी क्षेत्रार्थ)

श्री बलबीर जी डाबा—महामन्त्री

श्री मधु कुमार जी भल्ला—उपमन्त्री-एडवोकेट।

श्री वीरेन्द्र कुमार जी शर्मा—उपमन्त्री

श्री गिरधारी लाल जी सेठी—कोषाध्यक्ष।

श्री धर्मेन्द्र जी कपिला—सह कोषाध्यक्ष

श्री अमरनाथ जी फक्के—वेद प्रचार अधिष्ठाता।

श्रीमती निर्मला वशिष्ठ—पुस्तकाध्यक्ष

1 इन्ही के साथ चौदह सदस्य अन्तरग सभा के लिए तथा निर्वाचित हुए,

2 श्रद्धानन्द नर्सरी स्कूल के लिए

(क) श्री नवल किशोर भल्ला, निर्देशक और। (ख) श्रीमती पुष्पा नवाब मैनेजर निर्वाचित हुए।

—हरबंस राय साही —प्रधान

सम्पादकीय—

आर्य समाज के प्रचार का सरल उपाय–2

आर्य समाज का प्रचार कैसे हो ? यह आर्य समाज के सामने सबसे बड़ी समस्या है। हम कई बार भूल जाते हैं कि परिस्थितियां बदल रही हैं और उनके अनुसार हमें भी अपनी प्रचार प्रणाली में कुछ परिवर्तन करना चाहिए। दो बातों की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है एक यह कि अब हमारे पास उस उच्चकोटि के व्याख्याता नहीं जैसे पहले हुआ करते थे। पच्चास वर्ष पहले आर्य समाज के पास जीवनदानी उच्चकोटि के विद्वान निष्काम और निःशुल्क सेवा करने वाले कई व्यक्ति हुआ करते थे आज ढूढने से भी कोई नही मिलता यह नहीं कि आर्य समाज मे आज ऐसे व्यक्ति नहीं हैं, आर्य समाज की विचार-धारा ही ऐसी है जो बुद्धिजीवियो को अपनी ओर खींच लेती है। परन्तु आज हमारे सामने आर्थिक और सामाजिक समस्याएं पहले से अधिक और गम्भीर हैं। कई बार यह प्रश्न भी किया जाता है कि अब आर्य समाज को उपदेशक क्यो नही मिलते। इसके भी दो कारण हैं एक यह कि अब जो उपदेशक स्वतन्त्र रूप से काम करते हैं वह अधिक कमा लेते हैं और दूसरा यह कि हम उपदेशको का वह आदर और सम्मान नही करते जो हमें करना चाहिए। मैं किसी और की बात क्या करू मुझे कुछ सन्यासियो का भी पता है कि जिन्हें यह शिकायत रहती है कि जब वह किसी आर्य समाज में जाते हैं तो उनका वह सम्मान नही होता जो होना चाहिए। सिखो और आर्य समाजियो मे एक और अन्तर भी है। सिखो के गुरुद्वारे दिन-रात लोगो के लिए खुले रहते हैं। कोई व्यक्ति वहां किसी समय चला जाए उसकी सेवा होती है। खाने को मिलता है और कई गुरुद्वारों में सस्ता और निःशुल्क साहित्य भी मिलता है। हमारे मंदिर प्राय बन्द रहते हैं। उनमे ताले लगे रहते हैं। एक सप्ताह के पश्चात् दो घण्टे के लिए वह रविवार को खुलते हैं और फिर सारा सप्ताह बन्द रहते हैं।

ऐसे मन्दिर मे कोई जा कर करे भी क्या। कई आर्य समाजो के अधिकारी आर्य समाज मन्दिरो को अपनी निजि सम्पत्ति समझते हैं। इसीलिए किसी दूसरे को उसके पास तक नही फटकने देते।

यह और इस प्रकार के कई और कारण हैं। जिनसे आर्य समाज मे अब वह उत्साह पैदा नही हो रहा जो पहले हुआ करता था। इसी लिए मैंने लिखा है कि आर्य समाज के सामने सब से बड़ी समस्या आज प्रचार की है। हमे यह भी न भूलना चाहिए कि यह विज्ञान का युग है। नए नए ऐसे यन्त्र बन रहे हैं जिनके द्वारा प्रचार हो सकता है। हम अपने सिख भाईयो को देखें तो उनके प्रत्येक गुरुद्वारा में लाऊड स्पीकर लगा होता है और प्रात चार बजे वह गुरु वाणी का कैसेट लगा देते हैं और उनकी वह गुरुवाणी उसके उस क्षेत्र के सब व्यक्तियों को जगा देती है।

जहां मस्जिद होती है वहां से कई बार अजान दी जाती है। जिसके द्वारा दूर-2 तक लोगो को पता चल जाता है कि अब नमाज का वक्त हो गया है। ईसाईयों के गिरजाघरों में भी कई बार घण्टे बजते हैं। लेकिन एक आर्य समाज है जिसने इस ओर अभी तक ध्यान नहीं दिया कि विज्ञानिक युग को बदलती हुई परिस्थितियों में अब हमें क्या करना चाहिए।

मेरे विरुद्ध आर्य समाज के नेताओ को यह शिकायत रहती है कि मैं समय-2 पर कुछ ऐसी बातें लिखता रहता हू जो उन्हे कड़वी लगती हैं परन्तु जब बीमारी गम्भीर रूप धारण कर ले तो कड़वी दवाई भी देनी पड़ती है। कई बार एक व्यक्ति को बचाने के लिए उसका आप्रेशन भी करना पड़ता है। इसलिए कोई बुरा माने या अच्छा माने मैंने जो कुछ करना है मैं करता जाऊंगा। कभी न कभी तो कोई सुनेगा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विरुद्ध मेरी यह शिकायत है कि इस दिशा में वह अपना कर्त्तव्य पालन नहीं कर रही। 1975 में आर्य समाज की स्थापना शताब्दी मनाई गई थी इसे पूरे दस वर्ष होने लगे हैं। इसी बीच हम महर्षि की निर्वाण शताब्दी भी मना चुके हैं। आर्य समाज की स्थापना शताब्दी पर सार्वदेशिक सभा का यह काम था कि वह आर्य जनता के सामने नई प्रचार प्रणाली देती और बताती कि नई परिस्थितियो में हमे क्या करना चाहिए। परन्तु उस समय उसने कुछ न किया अब दस वर्ष और व्यतीत हो गए। इसके बाद भी कुछ नही किया। यदि आर्य समाज की शिरोमणि सभा को भी इसकी चिन्ता नहीं और वह आर्य जनता का नेतृत्व नहीं कर सकती तो और कौन करेगा ?

लेकिन आर्य समाज का काम तो चलना है वह रुक नही सकता। जिन महापुरुषो ने विशेष कर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसके पौधे को अपने खून-से सींचा हुआ है। यह मुर्झा तो सकता है पर मिट नहीं सकता। आज यह मुर्झा गया है इसमे नया जीवन कैसे डाला जा सकता है इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। इस विषय मे मेरे जो सुझाव हैं वह मैं आगामी अंक में पाठको के सामने रखूंगा।

—वीरेन्द्र

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

हम आर्य मर्यादा को उन्नत करन के लिए पूरा प्रयास कर रहे हैं। हम इस मे लेख भी बहुत सैद्धान्तिक और जीवनोपयोगी देने का प्रयास करते हैं तथा इसके विशेषांक भी आकर्षक प्रकाशित करने का प्रयास कर रहे हैं। परन्तु ग्राहक महानुभावो से हमे पूरा सहयोग नही मिल रहा। प्रत्येक ग्राहक को पता होता है कि उसका शुल्क कब समाप्त हो रहा है परन्तु वह तब तक शुल्क नहीं भेजता जब तक उसे दो-तीन बार न लिखा जाए। कई ग्राहक तो पत्र मिलने पर शुल्क नहीं भेजते। ऐसी स्थिति मे कई बार चिन्ता होती है कि यदि ग्राहको का हमे सहयोग नही मिलेगा तो हम इस पत्रिका को उन्नत कैसे कर सकेंगे।

इस पत्रिका का वार्षिक शुल्क बीस रुपया और आजीवन सदस्यता शुल्क केवल 250 रुपया है। यदि ग्राहक महानुभाव जो एक बार भेजने मे समर्थ हैं, 250 रुपये एक बार भेज दें तो न तो सभा को बार 2 उन्हे लिखना पड़ेगा और न उन्हें बार 2 शुल्क भेजने का कष्ट होगा। मैं देखता हू बहुत सारे सदस्य ऐसे हैं जो 250 रुपया आसानी से भेज सकते हैं परन्तु फिर भी नही भेजते हमारी सभी ग्राहक महानुभावो से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क शीघ्र अति शीघ्र भेजने की कृपा करें और आजीवन सदस्य बनकर सभा को अपना सहयोग दें।

—सह-सम्पादक

राजस्थान पत्रिका जोधपुर दिनांक 5-10-85 से साभार

वेद ही शिक्षा नीति का आधार हो

लेखक—श्री क च कुलिश जी

क्या कहें अहबाब क्या कारेनुमाया कर गए बी ए हुए नौकर हुए, पिन्शन मिली और मर गये।

हमारी शिक्षा प्रणाली पर महान व्यंग्यकार अकबर इलाहाबादी का उक्त शेर सोलहों आना सही बैठता है बल्कि इससे अच्छी टीका कहीं देखने में नहीं आई। अकबर इलाहाबादी का यह शेर आज से कोई पचास साल पहले का लिखा हुआ है। गम्भीर तत्व की बात अकबर ने जितने सरल रूप में कही है आश्चर्यजनक है। अकबर का इशारा साफ है, वे कहना चाहते हैं कि शिक्षा को पेट से बांध दिया गया है उसका उद्देश्य केवल खाना-कमाना और मर जाना रह गया है।

देश के स्वाधीन होने के बाद से अब तक जितने भी राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री हुए हैं शिक्षा प्रणाली की आलोचना करते रहे हैं, परन्तु परिणाम वही ढाक के तीन पात। बहुउद्देशीय शिक्षा प्रणाली दस जमा दो इत्यादि प्रयोग भी किए जा चुके हैं। उनकी परिणति जो होनी थी वही हुई। शिक्षा को लेकर इन दिनों जो नवीनतम विचार चल रहा है, वह रोजगार मूलक शिक्षा पर आधारित है।

हम वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए लार्ड मैकाले को कोसते हुए अघाते नहीं हैं परन्तु पिछले 38 वर्षों में हमने क्या किया इसकी जवाबदारी उठाने को कोई तैयार नहीं है। मैकाले को भी सिर्फ इसलिए दोष देते हैं कि हमें कोई जवाबदारी न उठानी पड़े। केवल मैकाले को दोष देना कोई माने नहीं रखता। मैकाले ने वही शिक्षा प्रणाली हमारे देश में लागू की जो उनके देश ब्रिटेन में उस समय थी। अन्तर केवल राष्ट्रीय परिस्थितियों का और आर्थिक उतार चढ़ाव का ही है। अलबत्ता भाषा उसकी अंग्रेजी है। क्या भाषा के लिए भी मैकाले को दोष देना होगा? यह तो ऐसी चीज है कि बदली जा सकती है। हां देशवासी ही अंग्रेजी न छोड़ना चाहें या शासकों में ही संकल्प न हो तो फिर मैकाले को कोसना ही एक मात्र उपाय है। खिसियानी बिल्ली खम्भा ही नोचती है।

हम तो अभी तक भी तय नहीं कर पाए कि शिक्षा का उद्देश्य क्या है। क्या शिक्षा का प्रयोजन मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण करना है? क्या शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की अभिव्यक्ति को बल देना है। क्या शिक्षा का लक्ष्य मनुष्य का संस्कार करना है? क्या इसका अभिप्राय पेट भरना है? जब कभी शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन का विचार नौकरशाह करने लगते हैं और देश का दुर्भाग्य है कि यह काम नौकरशाही से ही चलता है कभी यह तय नहीं किया जाता कि शिक्षा का उद्देश्य क्या है। जब कुछ नहीं सूझता या कुछ नहीं सोचा जाता तो देश में चारों ओर पनप रही बेकार शिक्षितों की भीड़ कचोटने लगती है और शिक्षा को रोजगार मूलक बनाने का 'विचार चल पड़ा है। विचार की परिभाषा बदल जाती है।

शिक्षा का उद्देश्य क्या है?

प्रश्न यह है कि क्या शिक्षा का उद्देश्य रोजगार देना है? यदि ऐसा ही है तो फिर शिक्षा की आवश्यकता क्या रह जाती है। रोजगार तो शिक्षा विहीन लोग भी करते हैं और अच्छा करते हैं। दूसरा प्रश्न है कि रोजगार का मतलब नौकरी ही क्यों। यह सच है कि जीविका उपलब्ध होना आवश्यक है। जीविका का प्रबन्ध हुए बिना सभी बड़ी बड़ी बातें फीकी लगती हैं, सुहाती नहीं। फिर प्रश्न उठता है कि जीविका का मापदण्ड क्या हो। क्या वह रोटी कपड़ा मकान तक सीमित है। एक प्रश्न यह भी है कि रोटी कपड़ा और मकान का ही यदि प्रश्न है तो वह केवल शिक्षितों के ही सामने नहीं है। अशिक्षित लोग भी रोटी कपड़ा और मकान के अधिकारी हैं। कुल मिलाकर देखें तो यह मुद्दा आर्थिक है शैक्षणिक कदापि नहीं है। भला इसी में है कि शिक्षा नीति को पेट से बाहर निकाला जाए और अर्थनीति को पेट से जोड़ दिया जाए। शिक्षा नीति को लेकर अब तक जो भी भूलभुलैया बनी हुई है, उसका समाधान तब तक नहीं होगा जब तक कि उसे पेट से बांधे रखेंगे। एक पीढ़ी तक एक युवक को शिक्षा देने की व्यवस्था सरकार करे और उसके बाद उसका पेट भरने का जुगाड़ भी सरकार करे अर्थात् नौकरी दे तो यह कुचक्र कभी बन्द ही नहीं होगा। अभी यही तो हो रहा है। हाई स्कूल तक यदि किसी किसान के लड़के ने पढ़ाई कर ली तो हल को हाथ लगाना छोड़ दिया, खाती का लड़का बढ़ई को भूल गया और सुथार के लड़के ने रोहे से मुंह फेर लिया। उसको नौकरी चाहिए। नौकरी मिल भी गई तो वह कैसी होगी और उसकी जिन्दगी की जो तस्वीर बनेगी वह कैसी होगी, कहने की आवश्यकता नहीं। हाई स्कूल पढ़ा लिखा नौकर क्या कभी अपने या अपने परिवार का भरण पोषण कर सकेगा। अलबत्ता वह अपना पारिवारिक धन्धा छोड़ बैठेगा हो सकता है घर भी छोड़ दे और शहरों में जाकर गन्दी बस्तियों की आबादी बढ़ाए। यही तो हो रहा है प्रतिदिन कोई भी रोजगार मूलक शिक्षा देश को इस दुर्गति से छुटकारा नहीं दिला सकती।

अब फिर मैं मैकाले पर विचार करना चाहूंगा। हमारे यहां जो शिक्षा प्रणाली मैकाले ने प्रारम्भ की मैं उसमें छल नहीं देखता अपितु अज्ञान का पुट देखता हूं। इस शिक्षा पद्धति में आमूल चूल रिक्तता है। अतः उसे प्राप्त करके जो स्नातक तैयार होता है वह भी अपने को रिक्त अनुभव करता है। उसके व्यक्तित्व में जो कुछ ठोस या रचनात्मक होता है वह घरेलू संस्कारों या भारत के समष्टि जीवन का प्रभाव होता है। हमारे शिक्षा क्रम में व्यक्तित्व निर्माण के गुणों का नितान्त अभाव है जिन तत्वों से व्यक्तित्व की नींव मजबूत होती है उनका शिक्षा पद्धति में समावेश नहीं है।

भाषा का सवाल

शिक्षा पद्धति का एक पक्ष भाषा है। इस देश में संस्कृत जैसी देववाणी और देवनागरी जैसी वैज्ञानिक लिपि होते हुए भी हम उनका समुचित ज्ञान अपने बालक को नहीं करवाते। हम भाषा पढ़ाते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि वर्ण क्या है कैसे उत्पन्न होते हैं। शब्द क्या है उस की शक्ति क्या है उसकी रचना कैसे होती है। उसका अर्थ किस प्रकार किया जाता है। देवनागरी लिपि पढ़ने लिखने में सरलतम है और संस्कृत (भाषा) अभिव्यक्ति के लिए सबलतम माध्यम है। इस भाषा में नए-नए शब्दों की रचना का भी अजस्र स्रोत है और वह ज्ञान कोष भी विद्यमान है जो मानव सृष्टि का आदि ज्ञान है। हम बार बार विज्ञान मूलक दृष्टिकोण की बात करते हैं परन्तु शिक्षा पद्धति से उन सब वैज्ञानिक तत्वों को बहिष्कृत कर रखा है जिनकी सहायता से हमारी शिक्षा ही वैज्ञानिक बन सकती है। भाषा के अतिरिक्त शिक्षा का दूसरा पक्ष है आचार एवं विषय वस्तु। इस मामले में हमारी शिक्षा पद्धति पूर्णतः निस्सार है। बालक को हम आचार शास्त्र या नीति शास्त्र से सर्वथा विमुख रखते हैं। विषय वस्तु के नाम पर हम प्रारम्भ से ही बालक को पुस्तकों के भार से लाद देते हैं। जिससे प्रसन्न बचपन वाला बालक कुंठा ग्रस्त हो जाता है। हम यह भूल जाते हैं कि बालक को शिक्षा देने की श्रेष्ठतम विधि साहित्यपूर्ण होती है। अभिप्राय से शिक्षा का श्रेष्ठतम माध्यम हमारे देश में वेद रामायण पंचतन्त्र, हितोपदेशादि ही रहे हैं और इस का भी श्रुति के माध्यम से हो। मानव का आदि ज्ञान ही श्रुति के रूप में प्रकट हुआ है और व्यक्ति का आदि ज्ञान श्रुति से क्यों नहीं उपार्जित हो जिसे प्राप्त करके बालक प्रफुल्ल हो। यही श्रेष्ठतम शिक्षा तथा कहानी से बढ़कर कोई चीज नहीं है जो बालक को उत्फुल्ल कर सके। यह कार्य उतना ही रुचिकर है जितना कि खेलकूद।

श्रुति के माध्यम से दस वर्ष तक की आयु के बालक का सम्पूर्ण ज्ञान हो सकता है और तीन या चार भाषाएं सिखाई जा सकती हैं। इस के सहारे इतिहास, भूगोल साहित्य नीति इत्यादि विषयों के समझने की क्षमता भी बालक में उत्पन्न हो जाएगी। आज तो हमारे पाठ्यक्रम का हाल यह है कि शहरी स्कूलों के बच्चे टिवकल टिवकल लिटिल स्टार जैसी दर्जनों कविताएं रटे हुए होते हैं। परन्तु किसी बालक या शिक्षक को देवनागरी के आठ अक्षरों वाला गायत्री मन्त्र नहीं आता। जिसके उच्चारण से एक सांस में विश्व ब्रह्माण्ड के सातों भुवनों के नाम याद हो जाते हैं। इसी दौरान उसे तीन या चार भाषाएं भी पढ़ाई जा सकती हैं और साधारण गणित भी। भाषा शिक्षा को हम तीन भागों में बांट सकते हैं। (1) मातृ भाषा शास्त्र भाषा और राष्ट्र भाषा। मातृ भाषा हर बालक को मां के दूध के साथ ही मिलती है। शास्त्र भाषा के रूप में संस्कृत पढ़ाई जाए और राष्ट्र भाषा हिन्दी है ही। जो लोग हिन्दी को राष्ट्र भाषा मानने को तैयार नहीं हैं उनके भाग्य पर दया करना ही उचित है। वे चाहें तो हिब्रू भी पढ़ सकते हैं।

राष्ट्र भाषा का सवाल

अंग्रेजी के पक्ष में जो लोग यह तर्क देते हैं कि अंग्रेजी में विज्ञान विषय की पुस्तकें हैं और यह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है अतः उसका देश में प्रचलित रहना अनिवार्य है। जहां तक भाषा सीखने का प्रश्न है कोई भी भाषा हो, उसे सीखना एक श्रेष्ठ कार्य है। परन्तु यह कहना कि अंग्रेजी विज्ञान का माध्यम है।

(क्रमशः)

क्या हमारा देश फिर बंटेगा ?

लेखक—श्री बिशन स्वरूप जी गोयल दिल्ली

1947 में बटवारे की लागत के साथ मिली आजादी के बाद देश एक के बाद एक समस्याओं के घेरे में घिरता चला जा रहा है। जो समस्या एक बार पैदा हो जाती है वह हल नहीं हो पाती। जब कि उस समस्या को हल करने के लिए की जाने वाली कार्यवाही से एक और नई समस्या पैदा हो जाती है। इस प्रकार एक के बाद एक समस्या बढ़ती चली जा रही है। यहा वह कहावत चरितार्थ होती है, रोग बढ़ता गया ज्यू ज्य दवा की। इस प्रकार इन समस्याओ के रूप मे अब हमारे सामने उनका एक विशाल ज्वाला-मुखी बनकर खड़ा हो गया है जिसमे कभी भी कोई विस्फोट होने से आने वाले भूचाल की लपेट मे आकर देश टुकड़ो में बट जायेगा।

वैसे तो सभी वर्तमान समस्यायें जटिल हैं और विनाशकारी हैं, किन्तु इन में सब से अधिक गम्भीर और खतरनाक समस्या हमारे देश के अल्पसख्यक सम्प्रदायो द्वारा देश को टुकड़ो मे विभाजित करने के लिए उनकी अलगाववादी मनोवृत्ति का निरन्तर बलवती होना है जो देश के लिए एक भयावह स्थिति है।

देश के बटवारे के बाद से ही हमारे राजनेताओ ने अल्पसख्यक सम्प्रदायो के वोट प्राप्त करने के लिए उनके हितो का सरक्षण करने के लिए जो उनकी तुष्टीकरण की नीति अपनाई है। वह सब से अधिक घातक सिद्ध हुई है। इस तुष्टीकरण की नीति के कारण सरकार की निरन्तर भेदभाव की नीति से अल्पसख्यक सम्प्रदायो और बहुसख्यक सम्प्रदाय के बीच की खाई निरन्तर चौड़ी होती चली जा रही है। जिसके कारण देश की एकता तो टूट ही रही है साथ ही देश की अखण्डता और सुरक्षा को भी सकट पैदा हो गया है।

अल्पसख्यक सम्प्रदायों के हितो के सरक्षण के नाम पर उनके लिए विशेष कानूनो का भी निर्माण हमारी सरकार द्वारा किया गया है। उनके लिए हर सरकारी विभाग में नौकरियों तथा चुनाव आदि में आरक्षण भी प्रदान किया गया है। उदाहरण के लिए मुस्लिम अल्पसंख्यक सम्प्रदाय के हितो को सरक्षण प्रदान करने के लिए उन्हे सिविल कानून की परिधि मे आने से बचाने के लिए उनका अलग मुस्लिम परसनल-ला बना दिया गया है जिसका लाभ उठा कर मुसलमान चार-चार बीबिया रख कर अधिक बच्चे पैदा करने मे लगे हुए हैं ताकि उनकी जनसख्या मे वृद्धि हो सके। अल्पसख्यक सम्प्रदायों के पूजा स्थलों मे सरकार कोई हस्तक्षेप नही करती। उन के लिए अलग से वक्फ बोर्ड गठित है। सिख सम्प्रदाय को कृपाण के नाम पर तीन फुट लम्बी तलवार रखने की छूट दे रखी है। इन अल्पसख्यक सम्प्रदायो को इस प्रकार की सुविधाए उपलब्ध कराई गई हैं जिनके कारण ये तथा कथित अल्पसख्यक सम्प्रदाय मुसलमान, ईसाई अब आखें दिखाने लगे हैं और पुन इस देश का बटवारा करने के लिए योजनाए बना रहे हैं।

पजाब मे तो कुछ उग्रवादियो ने खालिस्तान लेने के लिए आतक और उग्रवाद का सहारा ले रखा है। इसी उग्रवादी मनोवृत्ति के तत्वो ने गत तीन साल मे पजाब तथा पजाब से बाहर देश की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी, प्रमुख पत्रकार लाला जगत नारायण, श्री रमेश चन्द्र, चण्डीगढ के सासद श्री तिवारी, दिल्ली के सासद श्री ललित माकन, सासद अर्जुन दास तथा अकाली दल के अध्यक्ष सन्त हरचन्द सिंह लोगोवाल सहित हजारो बेगुनाह लोगो की हत्याए की हैं। अभी भी आए दिन किसी न किसी को इन उग्रवाद तत्वो का शिकार होना पड़ता है।

इसी प्रकार ईसाई भी नागालैंड तथा मिजोरम को ईसाई होम लैण्ड बनाने के लिए उग्रवादी रूप धारण करते जा रहे हैं जिसके प्रमुख विद्रोही नेता लालडेंगा अपने अन्य साथियो सहित सक्रिय हैं। ये उग्रवादी ईसाई भी अपना होमलैंड प्राप्त करने के लिए आतक का वातावरण निर्माण करने मे लगे हैं। ईसाई मिशनरिया प्रलोभन तथा भय से हिन्दू समाज के गरीब तथा अनपढ़ लोगो का मत परिवर्तन करने मे जोर शोर से कार्यरत हैं।

हमारे देश मे रह रहे अल्पसख्यक मुस्लिम सम्प्रदाय ने 1947 मे एक बार अपना हिस्सा बाट कर पाकिस्तान ले लिया है। किन्तु अब वह पुन जनसख्या बढ़ा कर एक बार पुन देश को बांटने का स्वप्न देख रहे हैं किन्तु उन्होने इस मार्ग की अपनी पूर्ति के लिए उग्रवादी रवैया न अपना कर दूसरा मार्ग अपनाया हुआ है। जिसके अन्तर्गत जैसा ऊपर बताया जा चुका है कि मुस्लिम परसनल ला के अन्तर्गत अपनी जनसंख्या बढ़ा रहा है। देश के दूर-दराज इलाको मे गरीब हिन्दुओं को प्रलोभन तथा भय दिखा कर उन्हे मुसलमान बना रहे हैं। इसके अतिरिक्त बगला देश तथा पाकिस्तान से मुसलमानो द्वारा घुस पैठ के परिणामस्वरूप ही आसाम समस्या का जन्म हुआ था। मुस्लिम अल्पसख्यक सम्प्रदाय का इरादा 1947 से पहले जैसा हाल पुन बना कर इस देश के बटवारे की भूमिका बतायी जा रही है इस के लिए खाड़ी के देशो से जिनमे लीबिया सब से प्रमुख है बहुत बड़ी मात्रा मे पैट्रो-डालर के रूप मे दे रहे हैं। ताकि देश का अल्पसख्यक मुस्लिम सम्प्रदाय एक बार पुन इस्लामिस्तान की माग कर सके।

1947 मे तो हमारा देश केवल दो भागो मे ही विभाजित हुआ था किन्तु इस बार तो ऐसा लग रहा है जसे यह देश चार टुकड़ो मे विभाजित होगा जिसके लिए गम्भीरतम कुचक्र चलाया जा रहा है। जिस मे केशधारी अपने लिए खालिस्तान ईसाई होम लैण्ड तथा मुसलमान अपने लिए इस्लामिस्तान या मुस्लिम इण्डिया के रूप मे इसे चार भागो मे विभाजित करने के मन्सूबे बान्ध रहे हैं। इस कटु सत्य से हमारी सरकार जानते हुए भी इस प्रकार आंखे बन्द किए हुए जिस प्रकार कबूतर बिल्ली को आते हुए देख कर यह सोच कर अपनी आखे बन्द कर लेता है। इसी प्रकार हमारे सत्ताधारी राजनेता तथा सत्ता को चलाने वाले नीति निर्धारक आखे बन्द किये बैठे है। क्योकि हमारे इन नेताओ को देश की अखण्डता को चुनौती दी जाने वाली घन्टी की आवाज तो आ गई है किन्तु उसे अनसुनी करके टाल देना चाहते हैं। इसी जानकारी के आधार पर प्रधान मन्त्री श्री राजीव गान्धी ने अपने कार्यकाल के आरम्भ मे ही देश की एकता और अखण्डता बनाए रखने का नारा दिया है किन्तु वह वास्तव मे इस खतरे की ओर से आखें बन्द कर उसे नारे से ही टाल देना चाहते है। शायद वह यह नही जानते हैं कि यह सकट नारो से नही टाला जा सकेगा इसे टालने या समाप्त करने के लिए सरकार को अपनी उन नीतियो को बदलना होगा जो इस सकट की जनक हैं।

इस सकट को समाप्त करने के लिए इसका सही हाल तो जिस प्रकार इस देश की सरकार का गठन बहुमत के आधार पर होता है उसी प्रकार के राज्य को बहुमत अर्थात् हिन्दू राज्य घोषित किया जाना है। ऐसा होने से सभी अल्पसख्यक सम्प्रदाय स्वत ही अपनी अलगाववादी मनोवृत्ति को परित्याग कर देश की मध्य धारा से जुड़ जाएगे। अल्पसख्यक सम्प्रदायो और बहुसख्यक सम्प्रदाय के बीच की खाई को भी बहुत कुछ पाटा जा सकेगा जिससे देश की एक एकता सुदृढ होगी।

यह दुर्भाग्य की बात है कि विभाजन के बाद से ही इस देश की सत्ता जिन महानुभावो के हाथ मे आयी है उन्हे आज तक हिन्दू शब्द से ही एलर्जी हैं। इसी कारण इस देश को आज तक हिन्दू राज्य घोषित नहीं किया गया जब कि मुसलमानो ने इसमे प्राप्त किये भाग को 1947 मे मुस्लिम स्टेट या इस्लामी राज्य घोषित कर दिया था इसके विपरीत हमारे इन कर्णधारो ने इस देश को सैक्युलर राज्य घोषित कर दिया जिसकी आड मे अल्पसख्यक सम्प्रदायों के हितो के सरक्षण और बहुसख्यक सम्प्रदाय हिन्दू हितो की उपेक्षा करने की नीति अपना ली ताकि अल्पसख्यक सम्प्रदायो के वोट सत्ताधारी दल की बपौती बन जाए। और इन राजनेताओ की गद्दी सुरक्षित रहे।

यदि देश के पुन बटवारे को सरकार ईमानदारी से रोकना चाहती है और इस की अखण्डता और एकता को बचाना है, तो सरकार को इस देश को हिन्दू राज्य घोषित कर देना चाहिए जो देश की सभी समस्याओ का एक मात्र हल है। यदि सरकार अपनी एलर्जी के कारण ऐसा करने मे असमर्थ है तो कम से कम सरकार को देश के सभी नागरिको को समान स्तर पर लाने के लिए अल्पसख्यक और बहुसख्यक के भेदभाव को पूरी तरह समाप्त करने के लिए आवश्यक कदम उठाने होगे। इसके लिए देश के प्रत्येक नागरिक के लिए एक जैसा समान सिविल कानून बनाया जाए। वैसे भी किसी सैक्यूलर राज्य मे सरकार को किसी भी सम्प्रदाय विशेष की सुविधाओ के लिए अथवा किसी सम्प्रदाय विशेष पर पाबन्दी लगाने का कोई नैतिक अधिकार नही है। इसलिए मुसलमानो के लिए बनाए गए मुस्लिम परसनल ला को समाप्त कर दिया जाए और इसी प्रकार बहुसख्यक हिन्दू समाज के लिए बनाए गए हिन्दू विवाह तथा विरासत, कानूनो को भी समाप्त कर दिया जाए और सभी के लिए एक जैसा समान सिविल कानून लागू किया जाय ताकि कोई भी मत स्वय को न तो किसी से छोटा समझे और न बड़ा ही समझ सके। इसी प्रकार जिस प्रकार अल्पसख्यको के पूजा स्थानो के लिए उन की अपनी समितिया ही उनकी देखरेख या रखरखाव का काम करती हैं उसी प्रकार की छूट हिन्दुओ को भी अपने पूजा स्थानो की देखरेख करने की दी जावे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

हिन्दुओ जागो

स्वय को पहचानो अपने धर्म को जानो अपनी गौरवमयी सस्कृति एव अतीत की ओर ध्यान दो ।

निम्न कुछ एक गौरवमय तथ्यो को स्वय हृदयगम करो, अपनी सन्तानो को कराओ, ताकि 'हिन्दू होने एव कहलाने के गौरव की भावना जाग्रत हो ।

1, हम आर्य (हिन्दू) ही वास्तव में भगवान की आदि सन्तान हैं । भगवान ने इसी नाते आदि काल में वेद ज्ञान हमे ही दिया । मनु महाराज व श्रीकृष्ण के वंशज होने का गर्व भी हमे ही प्राप्त है ।

2 हमारी आर्य सस्कृति ससार मे प्राचीनतम है । हमारे ज्योतिष पचाङ्गों में इसकी आयु (1972949085) करीब 2 अरब वर्ष है ।

3 आदि काल मे (करीब दो अरब वर्ष पूर्व) हम आर्यों को ही "वेद ज्ञान स्वय भगवान ने चार ऋषियो के द्वारा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद के रूप मे हमारे मार्ग दर्शन के लिए प्रदान किया ।

4 हम आर्यों ने ही ससार को सभ्यता सिखाई धर्म मर्यादा सिखाई । स्वच्छन्द जगली जीवन छुड़ा विवाहदि की प्रथा चलाई ।

5 हम आर्यों का सारी सृष्टि पर, महाभारत काल तक अविछिन्न चक्रवर्ती राज्य रहा । महाभारत अनुसार 5000 वर्ष पूर्व अर्जुन ने अमरीका के राजा की पुत्री उलपी से विवाह किया था । उसी उलपी के गर्भ से अर्जुन का प्रतापी प्रसिद्ध वीर पुत्र बब्रुवाहन हुआ ।

6 गणित विद्या हम आर्यों ने ही ससार भर को सिखलाई । इसी कारण अरबो (मुसलमानो) ने इसे "हिन्दसे अर्थात हिन्दोस्तान से आए का नाम दिया ।

7 चिकित्सा औषध आयु सम्बन्धी ज्ञान भी हम आर्यों की ही देन है । हमारा आयुर्वेद वेदो का ही उपयोग है । अत यह ही इस ज्ञान विज्ञान का आदि स्रोत है ।

8 हम आर्यों ने ही ससार को वनस्पतियो अनाजों दालो आदि का बोजना सिखाया । आग जलानी भी सिखाई ।

9 रामायण ससार भर मे गृहस्थ एव सामाजिक मर्यादाओ की उच्चतम क्रियात्मक रूप मे शिक्षा, उपदेश देने वाला केवल मात्र एक ही ग्रन्थ है । किसी अन्य के पास ऐसा महान ग्रन्थ नही है ।

10 भगवत गीता भगवान कृष्ण द्वारा प्रतिपादित, क्रियात्मक परम सुख उपजाने वाला ज्ञान और कर्म का तत्व दर्शाने वाला ग्रन्थ गीता हम आर्यों ने ससार को दिया है । दार्शनिक दृष्टि से ससार भर में इसके साथ का कोई अन्य ग्रन्थ नही ।

11 हम आर्यों की सभ्यता से पूर्व योरूप अमरीका, एशिया आदि भू भागो मे लोग जगली थे । कच्चा मास खाते गुफाओ मे रहते थे । फलत अब भी आज तक अधिक मास भक्षण आर्यावर्त (भारत वर्ष) को छोड कर अन्य सब भू-खण्डो मे व्याप्त है । भारत मे मूलत लोग इसी कारण निरामिष भोजी हैं कारण कि यहा आर्यत्व का प्रचलन रहा है ।

12 ससार की सब प्रथम ईश्वर प्रदत्त भाषा सस्कृत है यही कारण है कि केवल यह भाषा ही हर दृष्टि से सर्वदोष रहितपूर्ण है । जबकि अन्य सब भाषाए दोष युक्त एव अपूर्ण है । इसे देव-भाषा का नाम इसी लिए दिया गया है कि यह मनुष्य कृत नही अपितु ईश्वर प्रदत है ।

13 ससार भर के भाषा वैज्ञानिको ने अब सिद्ध कर दिया है कि संसार की सब भाषाए इसी सस्कृत का अपभ्रश रूप हैं । इस नाते इसी की सन्तान है ।

14 ससार के कुछ एक प्रसिद्ध धर्म और उनकी आयु —

1 आर्य	आयु	करीब दो अरब वर्ष
2 यहूदी	—	तीन हजार वर्ष
3 ईसाई	—	दो हजार वर्ष (1985)
4, मुसलमान	—	केवल 1400 वर्ष ।

सावधान—

हिन्दुओ, आप भले ही किसी भी राजसी सगठन से सम्बन्धित हों कोई भी व्यवसाय दुकानदारी अथवा नौकरी करते हो "हिन्दू हितों मान एव गौरव को बराबर ध्यान मे रख कर ही कोई कार्य करें ।

(केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर)

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रभो ! हम अमरत्व को प्राप्त करें

जगत में हम जब तक रहें अपने को मर्त्य समझते रहें, सदा यह सोचते-विचारते रहे कि 'एक न एक दिन हमें यहां से जाना है, ऐसी दशा में फिर यह हमारा शरीर भी हमारा नहीं रहेगा, ये हमारी इन्द्रियां भी तो फिर हमारी नहीं रहेगी, इस जमीन-जायदाद, धन दौलत, कार-कोठी, पुत्र-कलत्र की तो बात ही क्या कहानी । ऐसी अवस्था मे हम मर्त्यों को चाहिए कि हम अपने को मर्त्य जानकर किसी अमर्त्य का पल्ला पकड़ें । जब हम मर्त्यों को उस अमर्त्य का उस अक्षर का उस अविनाशी का कुछ ज्ञान हो जाए तो उसे मानते हुए, बुद्धि से स्वीकार करते हुए उस का हृदय से श्रद्धा और विश्वास करते हुए उस परम प्रभु को हार्दिक टीस के साथ धारण करने के भाव से उसकी स्तुति प्रार्थना-उपासना करते हुए उसे पुन पुन अतिशय करके खूब पुकार हृदय की तड़प के साथ उसका स्मरण करें उसका आह्वान करें, ऐसे कि जैसे उसके बिना हमारा रहना सम्भव नही हो रहा हो ! किस लिए ? इसलिए कि वह प्रभु देव हमें प्रजाओ के साथ साथ (यशो वै अन्नम्) अन्नादि साधन अर्थात खाद्य एव पेय पदार्थ प्रदान करे । फिर हम उन सन्तानो का उस प्रभु के नेतृत्व में ऐसा उत्तम पालन-पोषण शिक्षण प्रशिक्षण करें और उनको जगत् मे ऐसा उत्तम बनाकर खड़ा करें कि जिससे हमें स्थान स्थान पर यश मिले, प्रशसा मिले । अथवा वह जातवेद सभी प्रकार के सब धन अन्नादि प्रदान करने वाला ज्ञान-ध्यान का प्रकाश करने वाला कण कण में वर्तमान रहने वाला सर्वव्यापक प्रभु देव हमे प्रजाओ द्वारा भी यश प्रदान करे । अर्थात हम उस प्रभु प्रदत्त धन-अन्न आदि का वेदानुसार या हृदयस्थ प्रभु की प्रेरणानुसार ऐसा सदुपयोग करें कि हमे परिणाम में सबसे स्नेह सम्मान, यश कीर्ति मिले । बड़ों से हमे साधुवाद मिले आशीर्वाद मिले प्यार मिले छोटों से मान मिले आदि परन्तु अपने कार्यों के आधार पर मिलने वाले इन मान-सम्मानों मे, इन स्वागत—सत्कारो में, इन सेवा शुश्रूषाओं मे, इन भेंट-पुरस्कारों में फसकर कभी हम अपने अन्तिम उद्देश्य को अपने लक्ष्य को भूल न जाए । अर्थात् इस यश-कीर्ति आदि में कहीं हम ऐसे डूब न जाए कि हमारा चरम लक्ष्य ही हम से ओझल हो जाए । हम तो इन सब यश कीर्ति मान-सम्मान आदि को प्राप्त करते हुए भी अपने लक्ष्य के प्रति सदा जागरूक बने रहें, और आपकी शरण मे आकर पुरुषार्थ पूर्वक यह प्रार्थना करें— अग्ने अमृतत्वमश्याम हे प्रकाश स्वरूप परमात्मन ! हम तुझ को अपना सच्चा नेता मान कर तेरे पावन नेतृत्व में इस ससार मे जहा यश पावें वहां मोक्ष को भी प्राप्त कर सकें ऐसी हमें शक्ति और भक्ति प्रदान करो ।

जो भी जन ससार के इस मान-सम्मान मे न फस कर इस सेवा सत्कार मे डूब कर अपने जीवन के चरम लक्ष्य के प्रति सदा सजग रहता है, उसे फिर भगवान् वह प्रसाद देता है वह तृप्ति देता है वह आनन्द देता है कि जिस के सम्मुख यह सब कुछ तुच्छ भासता है, नगण्य लगता है । अत अन्तिम उद्देश्य के प्रति भक्त का सदा सजग रहना चाहिए ।

———

बटाला के श्री पं वैसाखी राम जी का निधन

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल की कार्य-कारिणी के सदस्य तथा आर्य समाज बटाला के एक अच्छे कार्यकर्ता श्री प वैसाखी राम जी का निधन गत दिनों हो गया उनके चले जाने से आर्य समाज को बहुत क्षति हुई है जिस की पूर्ति होनी कठिन है ।

आर्य समाज बटाला के सभी सदस्य उनकी आत्मा के लिए सद्गति की और शान्ति की प्रार्थना करते हैं । परमात्मा उनके परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे ।

—विजय कुमार
प्रधान

—

श्री मास्टर राम प्रसाद जी को भारी सदमा

लुधियाना जिला आर्य सभा के प्रचार मन्त्री तथा आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता स्वतन्त्रता सेनानी श्री मा राम प्रसाद जी सपत्र के पुत्र स्वर्गीय श्री बलराम का इकलौता पुत्र जिसकी आयु 18 वर्ष थी और बिजली बोर्ड में क्लर्क था का 20 नवम्बर को सवेरे साढ़े पांच बजे पी जी. आई चण्डीगढ़ मे स्वर्गवास हो गया । श्री मास्टर जी को गत दो वर्षों में यह दूसरा भारी सदमा पहुंचा है जब कि उनका पुत्र बलराम जो इस लड़के का पिता था 16 दिसम्बर 1983 को स्वर्ग सिधार गया था । परमात्मा दिवंगतात्मा को सद्गति प्रदान करे ।

—ओम् प्रकाश शास्त्री

भारत के सूचना एवं प्रसारण मन्त्री के नाम सार्वदेशिक सभा का पत्र

माननीय श्री भाडगिल जी,

सादर नमस्ते।

स्थानीय समाचार पत्रों में सातवें विश्व काम विज्ञान सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए यौन शिक्षा पर राष्ट्र व्यापी मुहिम शुरू करने के लिए आपकी अपील का समाचार पढ़ा। आपके कथनानुसार जनसंख्या वृद्धि की गम्भीर समस्या को उचित यौन शिक्षा से ही नियोजित किया जा सकता है। इससे परिवार नियोजन कार्यक्रमों को प्रभावी बनाने में काफी सहायता मिलेगी। उचित यौन, शिक्षा के बगैर बच्चों का सही मानसिक विकास भी नहीं हो सकता।

आपका यह वक्तव्य पढ़कर मुझे हैरानी हुई और साथ ही कुछ चिन्ता भी। क्या मैं जान सकता हूं कि सरकार स्कूल और कालेज में किस प्रकार की यौन शिक्षा का प्रबन्ध करने का विचार कर रही है। इसकी रूपरेखा क्या होगी? इस प्रस्तावित यौन शिक्षा का युवक समाज द्वारा दुरुपयोग भी हो सकता है। क्या सरकार ने इस पहलू पर भी विचार किया है? आप शायद जानते ही होंगे कि आज का पढ़ा लिखा युवा वर्ग काम विज्ञान से अनभिज्ञ नहीं है। व्यावसायिक सिनेमा सस्ते और अश्लील सड़क छाप साहित्य और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से वह पहले से ही इस विज्ञान में शिक्षित एवं दीक्षित हो चुका है। इसके प्रयोगात्मक परीक्षण की सुविधाओं की कमी हमारी सहशिक्षा संस्थाओं ने पूरी कर दी है। इन संस्थाओं में फैले हुए यौन भ्रष्टाचार से तो शायद आप अपरिचित नहीं होंगे। यह मान कर चलना कि ऐसा कोई भ्रष्टाचार हमारी सह शिक्षण संस्थाओं में नहीं है, अथवा बहुत कम मात्रा में है, स्वयं को जान-बूझ कर अन्धेरे में रखने के समान होगा यौन शिक्षा के इस प्रकार के संवैधानिक प्रचार एवं प्रसार से आजकल के युवक और युवतियां उसका सदुपयोग करेंगे। अथवा दुरुपयोग यह निश्चित रूप से कौन कह सकता है। आशंका यही है कि इस का दुरुपयोग ही होगा और समाज में फैले हुए यौन भ्रष्टाचार को और प्रोत्साहन ही मिलेगा। क्या सरकार यह खतरा मोल लेने के लिए तैयार है?

आप तो जानते ही होंगे कि प्राचीन काल में वर्णाश्रम प्रणाली के अन्तर्गत युवक 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करते हुए अपना सारा समय विद्याध्ययन और चरित्र निर्माण में ही अपने गुरु की छत्रछाया में व्यतीत करते थे। गुरुकुल के निवास काल में उनके गुरुओं ने कभी उन्हें यौन-शिक्षा देने की आवश्यकता नहीं समझी। ब्रह्मचर्य आश्रम से निकलने के बाद गृहस्थाश्रम में क्या उन्होंने एक स्वस्थ समाज का निर्माण नहीं किया वास्तव में स्वस्थ समाज का निर्माण तभी हो सकता है जबकि हमारा युवा वर्ग मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ होगा। आवश्यकता इस बात की है कि हमारी शिक्षा संस्थाओं में यौन शिक्षा की जगह चरित्र निर्माण की शिक्षा की ओर ध्यान दिया जाए। अन्यथा हमारे देश भावी कर्णधार बलहीन तेजहीन और बुद्धि हीन बनकर केवल निर्वीर्य अशिक्षित समाज का ही निर्माण करेंगे।

इस सम्बन्ध में एक प्रश्न और है—क्या यह प्रस्तावित यौन शिक्षा अल्पसंख्यक समुदाय के स्कूलों में भी दी जाएगी? मुझे सन्देह है कि वह इस नयी शिक्षा योजना को पसन्द करेंगे। उनकी तरफ से इसका विरोध उसी प्रकार होगा जैसा कि अब तक सरकार के निरोध अभियान के विरुद्ध करते आ रहे हैं। उस दशा में सरकार की क्या प्रतिक्रिया होगी? क्या सरकार एक नया वितंडावाद खड़ा करना चाहती है?

एक खतरा और है। यह यौन-शिक्षा हमारे समाज मे एक नये रजनीशवाद को जन्म दे सकती है। जिसका प्रिय नारा है संभोग से समाधि, तथाकथित रजनीश को इस भोगवाद ने कहा से कहा पहुचा दिया। यह आज सब लोग जानते हैं। स्वच्छन्द यौनाचार के सम्भावित खतरों के निराकरण की शिक्षा लेकर आज के युवा वर्ग मे कितने रजनीश पैदा होंगे और कितने इन्द्रियालित सद्गु हस्य यह कौन कह सकता है।

अत: आपसे और आपके द्वारा भारत सरकार से अनुरोध है कि इस मसले पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने के बाद ही कोई अंतिम निर्णय लिया जाय। कहीं ऐसा न हो कि जिसे हम औषधि मानकर अपने युवा वर्ग को उन के स्वास्थ्य की कामना से देना चाहते हैं, वही उनके लिए विष सिद्ध हो जाए।

शुभ कामनाओं सहित,

भवदीय

रामगोपाल शालवाले

प्रधान

भू. पू. संसद सदस्य

आर्य समाज लोहगढ़ अमृतसर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज लोहगढ़, अमृतसर का 108 वां वार्षिकोत्सव 27-10-85 से 3-11-85 तक बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। प्रो. द्वारिका दत्त जी शर्मा (अध्यक्ष हिन्दी विभाग) डी. ए. वी. कालेज, अमृतसर प्रतिदिन प्रात:काल वेद कथा करते रहे। स्थानीय समाजों के सभासद् तथा आर्य शिक्षा संस्थाओं के छात्र-छात्राएं और शिक्षक वर्ग बड़ी संख्या में उपस्थित होकर वेदामृत पान करते रहे।

2-11-85 सायं 2 से 5 बजे तक आर्य महिला सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। माता ज्ञानवती जी मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज के अनथक परिश्रम से यह सम्मेलन सफल हुआ।

3-11-85 रविवार प्रात: हवन-यज्ञ के उपरान्त महोत्सव का कार्यक्रम आरम्भ हुआ जिसकी डा. कृष्ण लाल शर्मा (अध्यक्ष संस्कृत विभाग) गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय अमृतसर ने की। उच्चकोटि के विद्वानो के ओजस्वी भाषण हुए।

अन्त में आर्य समाज लोहगढ़, अमृतसर के निष्ठावान एवं कर्मठ नेत्र-हीन भजनोपदेशक श्री रत्न चन्द केसर का भाव-भीना अभिनन्दन किया गया जो लगभग 50 वर्षों से प्रचार कार्य में संलग्न हैं। महोत्सव के पश्चात् विशाल ऋषि लंगर का आयोजन भी किया गया जिसमें सभी उपस्थित आर्य बहिन-भाइयों ने प्रसाद ग्रहण किया।

इस उत्सव की सफलता का सारा श्रेय आर्य समाज लोहगढ़ के प्रधान प्रिंसीपल धर्मवीर पसरीचा जी को जाता है। उनके अनथक प्रयास से ही यह महोत्सव परिपूर्ण हुआ। समाज के कर्मठ मन्त्री प्रो. एम एल. तनेजा जी ने दिन रात पूरी लगन से प्रबन्ध व्यवस्था की तथा कार्यक्रम को हर दृष्टि से सफल बनाया।

—भूषण कुमार आर्य
प्रचार मन्त्री

अखिल भारतीय ओरियण्टल कान्फ्रेंस में आर्य विद्वानों ने भाग लिया

अखिल भारतीय ओरियण्टल कान्फ्रेंस के 32 वें अहमदाबाद अधिवेशन में आर्य जगत् के अनेक विद्वान् सम्मिलित हुए। यह सम्मेलन 6-8 नवम्बर तक गुजरात विश्वविद्यालय के परिसर में सम्पन्न हुआ था तथा गुजरात के राज्यपाल श्री बी के. नेहरू ने इसका उद्घाटन किया था। भाग लेने वाले आर्य विद्वानो में सर्व श्री प, युधिष्ठिर मीमांसक, डा. सुधीर कुमार गुप्त, डा. भवानी लाल भारतीय डा, जयदत्त शास्त्री, डा. वेदपाल वर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। उपर्युक्त विद्वानों ने सम्मेलन की विभिन्न गोष्ठियों में अपने विद्वतापूर्ण शोध पत्र भी पढे।

संवाददाता

(5 पृष्ट का शेष)

कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाली सविधान की धारा 370 को तुरन्त समाप्त कर उसे अन्य राज्यों के समान स्तर पर लाया जाये। इसी धारा के कारण कश्मीर घाटी आज छोटा पाकिस्तान बन चुका है। इस धारा को समाप्त कर कश्मीर घाटी का मुस्लिम बहुमत कम किया जा सके इस के लिए देश के अन्य भागो से गैर मुस्लिम सम्प्रदायो को रहने के लिए प्रोत्साहन दिया जाए।

देश के हिन्दू समाज के प्रलोभन तथा भय आदि किसी भी दबाव से मत परिवर्तन को कानूनी अपराध घोषित कर दिया जाए। मुसलमानो और ईसाईयो को इस मत परिवर्तन के कार्य के लिए आने वाले विदेशी मुद्रा पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लगा दिया जाए। ईसाई मिशनरियों द्वारा चलाए जाने वाले स्कूलों तथा अन्य संस्थानों का राष्ट्रीयकरण कर केन्द्र सरकार अपने हाथ में ले लें।

अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय का मुस्लिम स्वरूप समाप्त कर उसे भी सरकार अपने हाथ में ले ले। इस प्रकार की नीतियों को अपनाने से ही इस देश की एकता, सुरक्षा तथा अखण्डता को बचाया जा सकता है अन्यथा अब देश के टुकडे होने में अधिक समय नही है। आगामी एक या दो दशक में ही यह देश पुन: खण्डो में बट जायेगा और फिर यहा न कांग्रेस दल और उसके कर्णधारो का शासन रहेगा और जो राजनेता चाहते हैं कि देश कांग्रेस के ही हाथ में रहे वह सपना भी अधूरा ही रह जायेगा। यदि कांग्रेस के राजनेता यह चाहते हैं कि कि इस देश की सत्ता पर कांग्रेस ही रहे तो उन्हें हिन्दू हितो को अपनाना होगा तभी उनकी यह इच्छा पूरी हो सकती है। वरना तो देश के किसी भाग पर सिखो का खालिस्तान होगा, किसी पर ईसाइयों का होम लैंड तथा किसी भाग पर मुसलमानो का इस्लामिस्तान या मुस्लिम इण्डिया होगा और कांग्रेस के य नेता देखते ही रह जाएंगे। इसके बाद फिर यहां राजीव और मुरारी अथवा सजय कोई नहीं बचेगा कोई स्टीफन बन जाएगा और कोई रहीम। फिर यहा न गीता बचेगी न रामायण। इसलिए इस देश की अखण्डता को बचाने के लिए उपरोक्त कार्यवाही की जानी अति आवश्यक है।

—

स्त्री आर्य समाज लाजपत नगर नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

स्त्री आर्य समाज लाजपत नगर का वार्षिकोत्सव श्रीमती विद्यावती विशारदा जी की अध्यक्षता मे बड़ समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमे सरला महता, प्रेम शीला सुशीला वेद प्रिया, ऊषा शास्त्री और गीता शास्त्री ने अपने भाषणो मे देश की ज्वलन्त समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए नारी के कर्त्तव्यो का बोध कराया। अन्त मे सम्मेलन की संयोजिका शकुन्तला आर्या ने कहा कि देश की तूफानी समस्याओ को नारी भली प्रकार सुलझा सकती है। नारी ही अपनी कार्यकुशलता एव क्षमता के आधार पर गृहस्थ के काटो भरे कलेवर को मोतिया के ताज रूप में परिणत कर सकती है।

इस अवसर पर श्रीमती रामप्यारी जी श्रीमती विद्यावती जी, सरस्वती जी एव गीता शास्त्री जी का अभिनन्दन स्त्री आर्य समाज की ओर किया गया।

—सरस्वती आर्या
मन्त्राणी

आर्य समाज गुरदासपुर में ऋषि निर्वाणोत्सव

आर्य समाज (गु वि) गुरदासपुर मे बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। प्रात 8 से 9 बजे तक हवन यज्ञ हुआ। तत्पश्चात् ईश्वर-भक्ति एव देश भक्ति पर मनोहर भजन हुए। श्री राम निवास प्रि अश्विनी कुमार, श्री प्रेम चन्द पारस, श्री देवराज पुष्प गोसा और स्वा प्रकाशानन्द जी ने दीपावली और ऋषि दयानन्द के बहुमुखी कार्यों पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर डी ए वी गर्ल्ज स्कूल, शकरगढ डी ए वी गर्ल्ज स्कूल, विवेकानन्द स्कूल के बच्चो ने भाषण-प्रतियोगिता एव गायन प्रतियोगिता मे भाग लिया। प्रि श्रीमती पुष्पा महाजन ने बच्चो मे पारितोषिक वितरण किये। बच्चो के भाषणो की बहुत सराहना हुई।

—केदारनाथ सल्होत्रा
प्रचार मन्त्री

छुटमलपुर में बालक सदन की स्थापना

मानव सेवा आश्रम रुड़की रोड छुटमलपुर (सहारनपुर) में मानव सेवा के अन्य कार्यों के साथ 2 अब बालक सदन (अनाथालय) की विधिवत स्थापना कर दी गई है। पाच वर्ष से 14 वर्ष तक के निर्धन असहाय तथा अनाथ बच्चों का प्रवेश आरम्भ है आश्रम की ओर से निशुल्क भोजन तथा शिक्षा आदि की उत्तम व्यवस्था है। यह स्थान सहारनपुर से हरिद्वार मार्ग पर स्थित है जो अति उत्तम स्थान है। इच्छुक महानुभाव अनाथ बच्चो को प्रवेश कराने के लिए प्रमाण सहित पत्राचार करें या स्वय मिलें।

नोट—बालिकाओ गूगे, बहरे तथा नेत्र हीन बच्चो आदि को भी इस आश्रम की ओर से यथा स्थान (जहा उनकी उचित व्यवस्था खान-पान आदि की, की जाती है) भेज दिया जाता है।

पूर्ण जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

—श्रीराम पथिक संस्थापक,
संचालक, बालक सदन छुटमलपुर

सम्पादक के नाम पत्र—

दीपावली—विशेषांक बेहद अच्छा

आदरणीय वीरेन्द्र जी,

सादर नमस्ते!

"आर्य मर्यादा" का दीपावली-विशेषांक मिला। विशेषांक वास्तव में सुन्दर एव आकर्षक था। सभी लेख शिक्षा प्रद एव प्रेरणादायक थे। सम्पादकीय लेख का तो अपना अलग ही महत्व रहा। "आर्य मर्यादा" के विशेषांकों की श्रृंखला मे यह भी एक नई कड़ी है।

इस पत्र के विशेषांकों की बड़ी धूम रहती है। इसके साथ-साथ यह पत्र आर्य संस्कृति का भी एक सजग प्रहरी है। विशेषांक की सफलता हेतु बधाई।

— राम कुमार आर्य
आर्य समाज कुम्हारान
गोहाना (सोनीपत)

—

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस नेहरु गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. नं. पी.जे.एल. 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 33, 1 पौष सम्वत् 2042 तदनुसार 15 दिसम्बर 1985 दयानन्द 161 अंक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

दक्षिणी अफ्रीका में आर्य समाज का वेद मन्दिर जहां 13 दिसम्बर से 22 दिसम्बर तक अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन हो रहा है



यह वेद मन्दिर डरबन मे है। इस मन्दिर के हाल मे 400 व्यक्तियों के बैठने का प्रबन्ध है। इसकी आधारशिला सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के भू.पू. मन्त्री श्री पं.गंगा प्रसाद जी उपाध्याय के दक्षिणी अफ्रीका आने पर 25-2-50 को रखी गई थी अनेक कठिनाईयां आने पर कार्य में विलम्ब होता गया। आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिणी अफ्रीका के भागीरथ प्रयत्न से अन्त मे यह कार्य सम्पन्न हुआ। 15 अक्तूबर 1975 को "आचार्य कृष्ण जी तथा आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री द्वारा इसकी सम्पन्नता का संस्कार किया गया इस मन्दिर के निर्माण पर 80 हजार रुपया व्यय हुआ था।

आर्य समाज का मुख्य सिद्धान्त वैदिक— त्रैतवाद

लेखक:—पं. जगदीश चन्द्र वसु भारद्वाज, 55 [illegible] कालोनी पानीपत हरियाणा

महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व अद्वैतवाद अर्थात ब्रह्मसत्य जगन्मिथ्या का नारा लगाया जा रहा है। अर्थात ब्रह्मसत्य है। और जगत् मिथ्या है। जीव ब्रह्म एक ही है। यह संसार झूठा है। मिथ्या है। स्वप्न के समान है। अनेक साधु सन्यासी, महन्त तथा गद्दीधारी मठाधीश तथा वेदान्त सम्मेलन आदि इस मिथ्या विचार धारा के प्रचार प्रसार मे लगे हुए हैं। इस सिद्धान्त आदि प्रवर्तक गौड़पाद आचार्य थे। तत्पश्चात आद्य शंकराचार्य जी महाराज ने इस अवैदिक विचार धारा का खूब प्रचार प्रसार किया। शंकराचार्य के प्रचार से जैन और बौद्ध मत का तो जड मूल से मिटा दिया परन्तु अद्वैतवाद अथवा मिथ्यावाद की जड़ जम गई। गौडपादाचार्य व शंकराचार्य का यह मत वैदिक धर्म संस्कृति दर्शन और उपनिषदों के सर्वथा विपरीत है। वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने वेदों के आधार पर अद्वैतवाद का जोरदार शब्दों में खण्डन किया है। और त्रैतवाद के सिद्धान्त की स्थापना की है। देखिए—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते। ऋग्वेद 1-164-20
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥

(द्वा सुपर्णा) दो सुन्दर पक्षी (सयुजा) जो सहयोगी है (सखाया) और परस्पर मित्र है (समान वृक्ष) एक ही वृक्ष के ऊपर (परिषस्वजाते) एक दूसरे से लिपटे हुए स्थित है (तयो) इन दोनो मे (अन्य) एक (पिप्पल) इस वृक्ष के फल को (स्वादु अत्ति) मजे से खाता है (अन्य) और दूसरा पक्षी (अन-अश्नन) न खाता हुआ (अभिचाकशीति) अध्यक्षता का काम करता है।

जीवात्मा और परमात्मा दोनों प्रकृति रूपी एक वृक्ष पर बैठते हैं। जीवात्मा कर्म के फल खाता है। परन्तु परमात्मा कुछ न भोगता हुआ केवल साक्षी मात्र है। ये दोनों परस्पर मित्र हैं। विशेष कर परमात्मा जीवात्मा की उत्तम सहायता करने के कारण उसका सच्चा मित्र है। इसी को बन्धु, सखा पिता, माता आदि नामो से वेद मे कहा गया है। उपरोक्त वेद मन्त्र मे ईश्वर जीव और प्रकृति तीन अनादि सत्ताओ का प्रतिपादन किया है। गौड़पादाचार्य का यह कहना है कि ब्रह्मसत्य जगन्मिथ्या अर्थात ब्रह्म सत्य है, और जगत मिथ्या है। यह सिद्धान्त नितान्त असत्य है। आईये अब हम ईश्वर जीव, प्रकृति इन तीन सत्ताओ के अलग-अलग स्वरूप के सम्बन्धों में विचार करेंगे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास मे जीवात्मा के स्वरूप का वर्णन करते हुए लिखा है कि—जीवात्मा क्रियावान्, गुणवान द्रव्य है अनेक हैं। अनादि नित्य चेतन अमर है। यह जड़ तत्वों से नहीं बनता इसे परमात्मा नहीं बनाता यह गुण कर्म स्वभाव में ईश्वर से भिन्न है। (न्याय में इच्छा आदि 6 और वैशेषिक मे 18 गुण बताये है।) जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र तथा कर्म का फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्थानुसार परतन्त्र है। कर्मानुसार विभिन्न योनियों में जन्म लेता है। जीवों के पाप ईश्वर कभी क्षमा नहीं करता। वृक्ष भी योनी है। हरित शाक खाने से जीव को पीड़ा नहीं होती, क्योंकि वह उस योनी में अत्यन्त अन्धकार महासुषुप्ति और महातमसा में होता है। जीवात्मा जगत् का साधारण निमित्त कारण है। वह परिच्छिन्न है। विभु नहीं वह सब योनियो में एक सा रहता है। जीवात्मा की 24 प्रकार की शक्तियां हैं।

33 देवताओं में 11 रुद्रों में एक जीवात्मा भी है। वह प्रकृति के वश में हो जाने से दोष युक्त हो जाता है। विद्या और तप से शुद्धि होती है। ओ३म् के जप और प्राणायाम से, ब्रह्मचर्य और योगाभ्यास से सुषुम्ना में योग करने से जीव शुद्ध होता है। (सीतावित्ते, भूमि का ब्रह्म प्रामाण्या,) जीवात्मा को मोक्ष तथा कर्म फल देने के लिए जगत् का उत्पत्ति होती है।

मुक्ति के चार साधन है—1, विवेक 2, वैराग्य 3. षट् सम्पत्ति (शम, दम, उपरति तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान) 4, मुमुक्षत्व (सत्यभाषण, परोपकार, धर्म विद्या,) स्तुति प्रार्थना उपासना भी मुक्ति के साधन हैं। शरीर के अभौतिक सूक्ष्म शरीर (संकल्प शक्ति) से [illegible] आनन्द भोगता है।

मुक्ति की अवधि परान्तकाल (36 हजार बार सृष्टि की उत्पत्ति प्रलय) अर्थात 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्ष की होती है।

जीवात्मा के 3 शरीर—स्थूल सूक्ष्म कारण और फिर तुरीय चौथा भी है। 3 अवस्थाएं (जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति)

आर्य समाज का यह मुख्य सिद्धान्त है कि ईश्वर जीव और प्रकृति यह तीनों सत्तायें अनादि हैं। यह तीनों पदार्थ सत है। अर्थात् इनकी सत्ता है। जो नित्य है। अछिद्र है। यह पैदा नहीं किये जाते, ये है अजन्मा हैं। परन्तु आगे चलकर इन तीनो पदार्थों में एक विशेष अन्तर आ जाता है। प्रकृति सत है। अर्थात जड है जीव सत चित है। अर्थात चेतन है। परमेश्वर सत्चित और आनन्द स्वरूप है, प्रकृति जड है। इसीलिए गतिशील नहीं है। स्वयं गति [illegible] उसे चेतन सत्तायें, [illegible] है। परमेश्वर और जीवात्मा में भी बड़ा अन्तर है। ये दोनों सत्तायें [illegible] है। गतिशील हैं। परन्तु जीवात्मा की शक्ति सीमित है। अल्पज्ञ है। परमेश्वर की शक्ति अनन्त है। अपार है। आनन्द स्वरूप जीव और प्रकृति में आनन्द नहीं परमेश्वर में आनन्द है [illegible] कहिए कि प्रकृति में सत है। जीवात्मा सत्चित है और परमात्मा सतचित और आनन्द स्वरूप है। जीवात्मा यदि आनन्द प्राप्त कर सकता है। तो वह केवल परमात्मा के सानिध्य में ही आकर कर सकता है। परमेश्वर ने सृष्टि बनाई। सृष्टि जीवात्मा के लिए बनाई। परमेश्वर निमित्त कारण है। प्रकृति उपादान कारण है। अब हम तीनों तत्वों को अलग अलग करके एक एक पर विचार करते हैं।

ईश्वर—महर्षि दयानन्द जी ने अपने आर्य समाज के दूसरे नियम में ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का वर्णन किया है। वह लिखते हैं कि ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि अनुपम, सर्वाधार सर्वेश्वर सर्व व्यापक सर्वान्तर्यामी अजर अमर अभय, नित्य पवित्र और सृष्टि कर्ता है। उसी की उपासना करनी चाहिए।

इस नियम से यह स्पष्ट है कि ईश्वर का अवतार नहीं होता तथा जीव को पाप-पुण्यो का यथावत फल देने वाला होने के कारण इन्हीं के कल्याण के लिए सृष्टि की रचना रक्षा एवं प्रलयादि की व्यवस्था करता है।

जीव—दूसरा अनादि तत्व है जीव। जो चेतन, अल्पज्ञ इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख-दुःख और ज्ञान गुण वाला तथा नित्य है। यह जीव कहलाता है। जीवात्मा ज्ञानवान चेतन तत्व है। शरीर इन्द्रियां मन, से पृथक तथा [illegible] स्वरूप पृथक है। [illegible] प्राप्त होता है। जीवात्मा [illegible] भोक्ता है। [illegible] है। [illegible] परन्तु [illegible] कर्म का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। [illegible] है। और उसी के अनुसार [illegible] भोगने हेतु नाना प्रकार की योनियों में जन्म लेना पड़ता है।

पांच कोष—

आनन्दमय, विज्ञानमय, मनोमय, प्राणमय, अन्नमय, हैं। जीवात्मा पाप से नरक दुःख विशेष और उसके साधन को और पुण्य से स्वर्ग सुख विशेष और उस के साधनों को प्राप्त करता है।

जीवात्मा का शरीर मे स्थान कण्ठ के नीचे दोनों स्तनो के बीच में और उदर के ऊपर जो हृदय देश है। जिसको ब्रह्मपुर अर्थात् परमेश्वर का धाम कहते हैं। उस के बीच में जो गर्त है। उसमें कमल के आकार वेश्म अर्थात अवकाश रूप एक स्थान है।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका उपासना प्रकरण।

महर्षि ने इस प्रकार जीवात्मा के स्वरूप का वर्णन किया है। अब हम प्रकृति के सम्बन्ध कुछ वर्णन करते हैं।

प्रकृति—

तीसरा अनादि तत्व प्रकृति है। यह जगत् का उपादान कारण है। यह तीन अवस्थाओं में रहती है। कारणावस्था सत्व रज, और तम: की साम्यावस्था को कारणावस्था या प्रकृति कहते हैं। यह अनादि है। 2. सूक्ष्म भूत:—महत्व अहंकार पञ्च तन्मात्रा मन और दश इन्द्रियां 3- स्थूल भूत आकाश, वायु, अग्नि, जल, और पृथ्वी ये चौबिस तत्व और पच्चीसवां ईश्वर इनसे ही दृश्य जगत सृष्टि का निर्माण होता है। प्रलय दशा में सृष्टि के समस्ततत्व अपने कारण प्रकृति में लीन रहते है।

यदि जीव प्रकृति का सदुपयोग करता है। तो वह अन्तत: मुक्त हो जाता है। अन्यथा जन्म-मरण के चक्कर में घूमता ही रहता है। चेतन होने के कारण जीव को इसे स्वतन्त्रता है। इस स्वतन्त्रता का दुरुपयोग कर अपने लिए कांटे बोता है। और दु:ख पाता है। प्रकृति से नाता जोड़ लेता है। और उसमें [illegible] जाता है। प्रकृति जड़ होने के कारण जीव की बुद्धि में अपने जड़त्व का प्रवेश कर देती है। परमेश्वर हर समय जीवात्मा को प्रेरणा करता रहता है। शुभ कर्म करने की उसके हृदय में प्रसन्नता उत्साह, निर्भयता और स्फूर्ति के चिन्ह पैदा करता है। और

(शेष पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय—

दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज का प्रचार

भारत से दूर किसी देश में वैदिक धर्म का प्रचार हो, तो उसे देख कर प्रसन्नता होती है और हम गर्व भी अनुभव करते हैं। आज तो सारे संसार में परिस्थितियां बदल रही हैं। विज्ञान ने जो प्रगति की है, उसके कारण प्रचार के नए-नए साधन निकल रहे हैं। परन्तु आज से पचास वर्ष पहले स्थिति कुछ और थी। महात्मा गांधी ने भी अपना सत्याग्रह और अहिंसा का प्रचार भी वहीं से प्रारम्भ किया था। इसलिए यदि पचास वर्ष पहले वहां रहने वाले भारतवासियों ने वहां आर्य समाज स्थापित की थी, तो वह एक ऐतिहासिक घटना थी। उस समय जो बीज बोया गया था, वह आज एक बहुत बड़ा वृक्ष बन गया है और उस की शाखाएं भिन्न भिन्न क्षेत्रों में जनता की सेवा कर रही हैं।

इस मास के अन्त में आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका अपनी स्वर्ण जयन्ती मनाने जा रही है। जिन्होंने पचास वर्ष पहले दक्षिण अफ्रीका के आर्य समाज की आधारशिला रखी थी, उनमें से तो आज वहां कोई नहीं होगा। परन्तु जो कुछ उन्होंने उस समय किया था, उसका परिणाम आज दक्षिण अफ्रीका में पचास स्थानों में आर्य समाज की ज्योति जग रही है। उसके आधीन कई शिक्षण संस्थाएं चल रही हैं। अनाथालय और वृद्धाश्रम चल रहे हैं। डर्बन मे एक बहुत सुन्दर भवन बना हुआ है, यहां समय समय पर यज्ञ होता रहता है। दक्षिण अफ्रीका में वेद मन्त्रों के पाठ को सुन कर किसे प्रसन्नता न होगी। हम लोग भारत में रहते हुए भी कई बार अपने इस कर्त्तव्य को पूरा नही करते परन्तु हमारे जो भाई बहिन जो दक्षिण अफ्रीका में रहते हैं, वह यज्ञ के द्वारा वेदो का सन्देश उन लोगो तक पहुंचाने का प्रयास करते हैं, जिन्होंने अभी तक वेदवाणी नहीं सुनी। दक्षिण अफ्रीका में यह समारोह होना ही इस बात का स्वत: प्रमाण है कि वहां के आर्य समाजियों में अपने धर्म के प्रति कितनी श्रद्धा है। हम यह तो नहीं कह सकते कि उनकी संस्कृति भी वही है, जो हमारी है, जो हम चाहते हैं परन्तु इस में कोई सन्देह नहीं कि उस वातावरण में रहते हुए भी उन्होंने अपनी प्राचीन संस्कृति की ज्योति बुझने नहीं दी।

दिसम्बर 1975 में जब दिल्ली में आर्य समाज की स्थापना शताब्दी मनाई गई थी, तो उस समय भी एक बहुत बड़ी संख्या में दक्षिण अफ्रीका से हमारे भाई-बहिन यहां आए थे। उन मे से कई पंजाब में भी आए थे और उन के दर्शन करने का भी मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उन्हें अपने धर्म के लिए कितनी श्रद्धा है। इसका अनुमान हम इसी से लगा सकते हैं कि वह सब हजारो रुपए खर्च करके महर्षि दयानन्द को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए दिल्ली आए थे। आज परिस्थितियां ऐसी नहीं हैं कि भारत के बहुत से आर्य समाजी दक्षिण अफ्रीका जा सकें। कुछ राजनीतिक कारणों से कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगा रखे हैं। इसलिए वहां पहुंचना तो कठिन है किन्तु फिर भी मैंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के अधिकारियों, सदस्यों और सभी दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले अपने भाई बहिनो को इस शुभावसर पर अपनी बधाई व शुभ कामना भेज रहा हूं। यह हम सब के लिए अत्यन्त निराशाजनक स्थिति है कि हमें दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज की स्थापना और उसकी प्रगति के विषय में अधिक जानकारी नहीं। आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की स्वर्ण जयन्ती एक ऐसी ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण घटना है जिसके विषय में हमारी आर्य जनता को यह पता होना चाहिए कि दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज ने क्या कुछ किया है? किन्तु आर्य समाज के जिन नेताओ को इस ओर ध्यान देना चाहिए, उनके पास समय नहीं है। परन्तु मैं इस ऐतिहासिक समारोह के महत्व की अवहेलना नहीं कर सकता। इस लिए हमने अपनी सभा के साप्ताहिक पत्र आर्य मर्यादा का यह विशेषांक निकाला है। इसके द्वारा हम अपने आर्य जगत को जो हम से बहुत दूर बैठे हैं अपने आर्य बन्धुओं की गतिविधियों के विषय मे कुछ जानकारी दे सकेंगे।

मैं अपना यह भी कर्त्तव्य समझता हूं कि उन दिवंगत आत्माओ को भी श्रद्धांजलि भेन्ट करूं, जिन्होने दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज की स्थापना की थी और बाद में उसका प्रचार किया था। विशेष कर त्यागमूर्ति भाई परमानन्द जी, श्री स्वामी शंकरानन्द जी, श्री स्वामी मंगलानन्द जी, प. ईश्वरदत्त जी विद्यालंकार, डा. भगतराम जी और पंडित भवानी दयाल जी। आज मुझे दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री चुटाई भी याद आ रहे हैं। आज वह इस असार ससार मे नहीं हैं। 1975 में आर्य समाज की स्थापना शताब्दी के अवसर पर वह सपरिवार भारत आए थे। उनके साथ श्री नरदेव जी विद्यालंकार भी थे, जो आज भी दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज के प्राण हैं। जो कुछ वह आर्यसमाज के लिए कर रहे हैं, बहुत कम व्यक्तियो ने किया होगा। उन्हें और उनके सहयोगियो को इस शुभ अवसर पर बधाई देता हूं। परम-पिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि हमारे यह बन्धु जो इतनी दूर बैठे हुए भी वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं, उनका यह सन्देश दूर-दूर पहुचे और जो ज्योति उन्होंने दक्षिण अफ्रीका मे प्रज्ज्वलित की है, उसका प्रकाश सारे अफ्रीका में फैले।

—वीरेन्द्र

श्री आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद भी चले गए

आर्य जनता को अत्यन्त दुःख के साथ यह समाचार दे रहा हू कि आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद नहीं रहे, बहुत समय से वे बीमार चले आ रहे थे। फिर भी आर्य समाज के लिए उनके दिल में जो श्रद्धा थी इस में कोई कमी न आई थी। अपनी बिमारी में भी वह कुछ न कुछ लिखने लिखाने का काम करते रहते थे। हमने उन के जिम्मे सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद पंजाबी में कराने का सौंपा था और वह कई बार कहा करते थे कि वे अपने जीवन में इसे अवश्य पूरा करेंगे परन्तु वहीं होता है, जो परमात्मा को स्वीकार होता है। आजाद जी यह काम अधूरा छोड़ कर चले गए। उन्होंने अपने को देश और धर्म के लिए समर्पित कर रखा था। जब भी उन्हें कोई सेवा के अवसर मिलते उसे अपने हाथ से न जाने देते।

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे और आर्य समाज के निष्काम सेवक थे। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के चरणों में बैठ कर बहुत कुछ सीखा था। उच्चकोटि के विचारक और प्रभावशाली वक्ता थे। देश आजाद हुआ तो उन्हें पंजाब सरकार के मन्त्री मण्डल में ले लिया। उन्होने कई पुस्तकें भी लिखी थी। उनके जाने से आर्य समाज को जो क्षति हुई है, वह आसानी से पूरी नहीं हो सकेगी। परन्तु हमें वह भी न भूलना चाहिए कि एक दिन सभी ने जाना है धीरे-धीरे सब की बारी आएगी। इसलिए अपने जीवन को इस प्रकार से ढालने का प्रयास करें कि अपने देश और धर्म की अधिक से अधिक जितनी सेवा कर सकते हैं, करें। श्री पृथ्वी सिंह आजाद हमें एक रास्ता दिखा गए हैं, यदि हम वैसे ही उस पर चलते रहें, तो यही उनके चरणो में हमारी श्रद्धांजलि होगी।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज का दक्षिण अफ्रीका पर प्रभाव

लेखक—श्री प सत्यदेव जी विद्यालकार जालन्धर

12 अप्रैल 1975 का आय समाज ने भारत भर मे अपनी स्थापना का शताब्दी उत्सव मनाया। आय समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती थे। व ज्ञान और कम दोनो के अद्वितीय धनी थे। वे वदशास्त्र के पारगत विद्वान तथा अध्यात्मय विद्या के साधक नाथ ही न थे पर साथ ही महान सुधारक तथा धार्मिक नेता भी थ। उन्होने वेद शास्त्रो के गम्भीर अध्ययन के द्वारा हिदू धम का तक सगत नथा नवीन रूपाकार उपस्थित कर दिया।

महर्षि द्वारा स्थापित आय समाज ने अपन जीवन के पिछने शत वर्षो मे करोडा लोगो के विचारो मे क्रान्ति उत्पन्न का दी है। सामाजिक बुराइयो नथा धार्मिक अनाचारो का उन्मूलन कर हिन्द धम का पुरिष्कृत रूप विश्व के सामने प्रदर्शित किया और इस प्रकार हिन्दू धम को विश्व के धर्मों मे अग्रणी वा गौरवमय स्थान दिया। आय समाज ने ही भारत मे पिछड वर्गो की अवस्था को बदन दिया तथा शिक्षा के क्षत्र मे नए माग प्रशस्त किए।

आय समाज ने अछूतपन को दूर करने का प्रबल आन्दोलन किया और इसके मूल कारण जन्ममूलक वण व्यवस्था का विराध वचन और कम द्वारा सदा किया। इस प्रकार एक राष्टीयना का निर्माण करने के साथ 2 राष्ट भावना और देश भक्ति के सब आन्दोलनो मे यह अग्रणी रहा।

आय समाज व्यक्तियो तथा राष्टो के जीवन म नैतिक आदर्शो का समथक है। व्यक्तिगत जीवन का महत्व और प्रजातन्त्र का सिद्धान्त इसके आदश है।

आर्य समाज स्त्री जाति की स्वतन्त्रता मे विश्वास रखता है। पर उन के अभारतीय आदर्शों के पीछे भागने तथा नैतिक पतन का घोर विरोधी है। इसकी धारणा है कि अपने गृहस्थ धर्मों के पालन के साथ साथ नारी समाज मे ऊचा स्थान प्राप्त कर सकती है।

सक्षपत आय समाज चाहता है कि व्यक्ति तथा समाज अपनी मूल सास्कृनिक भाषा को न गवान हुए बदलती हुई परिस्थितियो के अनुसार बदलते हुए एक वैज्ञानिक युक्ति युक्त तथा प्रकाशमय जीवन पद्धति को स्वीकार करे।

दक्षिण अफ्रीका पर प्रभाव

दक्षिण अफ्रीका के हिन्दू समाज के पूवज सन 1860 के लगभग कुली प्रथा की शर्तों के अनुसार दासता प्राय जीवन बिताने के लिए भारत से लाए गए थे। शर्तों का समय समाप्त होने पर अशिक्षित प्राय उन्ही भारतीयो ने अपने परिश्रम से कुछ शिक्षा कार्यों का प्रारम्भ किया। उस समय शिक्षा का माध्यम श्वेत शासको के कारण अग्रजी था। इस के ही प्रभाव स पढ लिख नव युवको ने पाश्चात्य जीवन स्वीकार किया तथा पाश्चात्य लोगो की नकल मे ही अपने उत्सव और सामाजिक कार्य मनाने प्रारम्भ कर दिए।



स्वर्गीय भाई परमानन्द

इस सास्कृतिक अन्धकार के युग मे भारत से जिन लोगो ने आकर इस हिन्दू समाज के अग मे जागृति उत्पन्न की उन मे प्रथम भाई परमानन्द थे जो 5 अगस्त 1905 मे वहा आए। उन्हें लाहौर के डी ए वी कालिज ने भेजा था। उनका उद्देश्य धार्मिक और सास्कृतिक रूप से पिछड वर्गों की अवस्था का सुधार करना था। भाई परमानन्द विद्वान थे तथा उच्चकोटि के व्याख्याता थे। उन्होने यहा के हिन्दुओ को न केवल उन के धर्म और सभ्यता का ही ज्ञान कराया पर साथ ही उनमे आत्म सम्मान की भावना भी पैदा की। भारतीयो के भिन्न भिन्न भाषाई समुदायो को इकटठा करने के लिए उन्होंने हिन्दू-युवक समाज (एच आई एम ए) की स्थापना की।



स्वर्गीय-प भवानी दयाल

भाई परमानन्द के कुछ वष बाद एक महान व्यक्तित्व के स्वामी शकरानन्द आए। हिन्दू धम तथा दशन पर उनके प्रभावी व्याख्यानो ने भारतीय तथा योरोपियन दानो को आकर्षित किया उन्होने एकेश्वरवाद, वदो का अध्ययन हिन्दी भाषा प्रचार, सस्कारो का करना तथा दीवाली, रामनवमी तथा कृष्ण जन्माष्टमी जैसे पर्वों का मनाना प्रचलित किया 31 मई 1912 को दक्षिण अफीका मे हिन्दू महा सभा की स्थापना की गई। हिन्दूओ का एक सगठन बना। आगे चल कर इसी सभा को आय प्रतिनिधि सभा के रूप मे पुन जीवित तथा प्राणावान बनाया आय प्रतिनिधि सभा ने ही आगे चल कर प्राथना सभाओ का आयोजन, मात भाषा मे शिक्षा तथा अनेक धार्मिक सस्थाओ की स्थापना आदि कार्यों का क्रम चलाया। सरकारी सहायता से अग्रजी माध्यम के भी स्कूल भारतियो के लिए चलाए गए। हिन्दी शिक्षा सघ नाम से एक स्वायत्त शिक्षा सस्थान का निर्माण भी आय प्रतिनिधि सभा ने किया, जिसके तत्वावधान मे राष्टभाषा प्रचार समिति वर्धा (भारत) की परीक्षाए दिलाने का आयोजन किया गया तथा एम एल सुल्तान टेक्निकल कालिज मे भी हिन्दी कक्षाए चलाई गई।



प नरदेव वेदालकार

इसके साथ ही भारतियो के अपने समाचार पत्र भी प्रकाशित किए। आर जी भल्ला द्वारा धर्मवीर स्वामी भवानी दयाल की हिन्दी तथा श्री राम स्नेही की पत्रिका का इन्ही दिनो प्रचार हुआ।

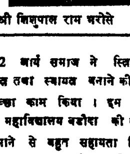
आर्य समाज की ओर से भाई परमानन्द के बाद प्रमुख विद्वानो के बुलाने का सिलसिला चलता रहा। प्रो रलाराम प कर्मचन्द, प आनन्द प्रिय प गगाप्रसाद उपाध्याय तथा स्वामी सत्य प्रकाश जी आदि विद्वानों ने आकर वैदिक प्रसार का क्रम आगे बढाया।

आर्य समाज के काय ने दक्षिण अफीका के जीवन को अनेक रूपो से प्रभावित किया—



एच एन नरेन प्रधान

1 आय प्रतिनिधि सभा के आधीन चलाए गए वेद-निकेतन द्वारा धार्मिक शिक्षा प्राप्त पुरोहितो ने सस्कारो का नियन्त्रण किया। विवाहादि नियम से कराए गए प्रमाण पत्र दिए गए। सरकार तक ने इन विशिष्ट वेश भूषा भूषित पुरोहितो को सरकारी जेलो मे भी धार्मिक शिक्षा के लिए भेजना स्वीकार किया।



श्री शिशुपाल राम भरोसे

2 आर्य समाज ने स्त्रियों को स्वतन्त्र तथा स्वायत्त बनाने की शिक्षा में अच्छा काम किया। इस कार्य मे कन्या महाविद्यालय बडौदा की कन्याओं के आने से बहुत सहायता मिली। डा भयरराम सहगल ने सपत्नीक आकर भी अच्छा योगदान दिया।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

पंजाब की जनता संगठित होकर उग्रवादी तत्वों का विरोध करे, नए पंजाब के निर्माण में आर्य समाज अपना योगदान देगा।

पंजाब राजार्य सभा की घोषणा

पंजाब में जो परिस्थितियां पिछले चार वर्षों से पैदा हुई हैं, वह अत्यन्त ही शोचनीय दुखद और विघटनकारी रही हैं। उनके कारण न केवल पंजाब सारे संसार में बदनाम हुआ है, अपितु इस प्रान्त में रहने वाले भिन्न-2सम्प्रदायों में भी भेद-भाव और कुछ वैमनस्य भी पैदा हुआ है। हिन्दू और सिक्ख पिछली कई शताब्दियों से भाई भाई की तरह रहे हैं। उन में कभी भी किसी प्रकार का मतभेद पैदा न हुआ था। परन्तु कुछ व्यक्तियों ने यह कह कर कि हिन्दू और सिक्ख दो भिन्न भिन्न कौमें हैं। वही वातावरण पैदा कर दिया, जो 1947 से पहले हुए पाकिस्तान बनने के समय तैदा हुआ था। इसी के साथ कुछ व्यक्तियों ने खालिस्तान का आन्दोलन भी प्रारम्भ कर दिया। इन सब गतिविधियों का परिणाम यह हुआ कि पंजाब में और पंजाब से बाहर उग्रवादी तत्व सक्रिय हो गए और कई व्यक्तियों की हत्या कर दी गई। धर्म और पंथ के नाम पर युवकों को कितना भड़काया गया, इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि जहां पहले हमारी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या की गई, फिर सन्त लौंगोवाल की हत्या की गई और दरबार साहिब के हैडग्रन्थी ज्ञानी साहिब सिंह की हत्या करने का प्रयास किया गया। यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जिम्मेदार अकालियों ने भड़कीले और गैरजिम्मेदाराना भाषण दे कर युवकों को उकसाया है और यह स्थिति पंजाब में चल रही है।

पंजाब राजार्य सभा का यह निश्चित मत है कि जब तक पंजाब की जनता संगठित होकर उन सब तत्वों का विरोध न करेगी, जो राष्ट्रीयता, और एकता के लिए एक बहुत बड़ा संकट पैदा कर रहे हैं, उस समय तक पंजाब में शान्ति नहीं हो सकती। सब से अधिक आवश्यकता इस बात की है कि अकाली नेता यह स्पष्ट करें कि वह देश के विधान उसकी एकता, संगठन, स्वाधीनता और प्रभुसत्ता में पूर्ण विश्वास रखते हैं या नहीं? और इसकी रक्षा के लिए संघर्ष करने को तैयार हैं या नहीं? उग्रवाद केवल ब्यानबाजी से समाप्त न होगा। उसके लिए मिल कर संघर्ष करना पड़ेगा। पंजाब राजार्य सभा देश की एकता स्वाधीनता और प्रभु सत्ता में पूर्ण विश्वास रखती हुई यह घोषणा करना चाहती है कि वह साम्प्रदायिक एकता को सब से अधिक महत्व देती है। उसके विचार में हिन्दू और सिख में कोई भेद नहीं है। दोनों भारत माता की सन्तान हैं। दोनों का हित इसी में ही है कि वह अपने सब भेदभाव समाप्त करके मिल-जुल कर पंजाब में रहें। आर्य समाज ने पहले भी हर संकट के समय अपने सिख भाईयों का साथ दिया है। पहले गुरु के बाग मोर्चा में और फिर शहीद गंज मुकद्दमा में आर्य समाज के महान नेताओं, श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज और राय-बहादुर दीवान बदरी दास जी ने, सिखों की जो सहायता की थी और उनके लिए जो त्याग किया था, उसे इतिहास के पन्नों से मिटाया नहीं जा सकता। इसलिए पंजाब राजार्य सभा आज भी अपने सिख भाइयों को यह विश्वास दिलाना चाहती है कि वह उनके कदम से कदम मिला कर पंजाब की उन्नति, प्रगति और उज्ज्वल भविष्य के लिए काम करना चाहती है। यह उसी स्थिति में सम्भव हो सकता है, यदि हम अपने सब भेदभाव मिटा कर सच्चे भारतीय बन कर अपने देश की स्वाधीनता, एकता और प्रभुसत्ता के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने को तैयार रहें। आर्य समाज इस क्षेत्र में अपनी पुरानी परम्पराओं के अनुसार किसी से भी पीछे न रहेगा। और एक नए पंजाब के निर्माण में वह जो भी योगदान दे सकेगा, देता रहेगा।

वीरेन्द्र
प्रधान
पंजाब राजार्य सभा

अमृतलाल बजाज
एडवोकेट
संयोजक पंजाब राजार्य सभा

आर्य सत्याग्रह हैदराबाद पैंशन का मामला

जिन लोगों ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह 1938-39 में सार्वदेशिक सभा द्वारा सचालित निजाम हैदराबाद के विरुद्ध आन्दोलन में भाग लिया था और जिन्हें जेल की सजा हुई थी। उन सब सत्याग्रहियों से निवेदन है कि अपना प्रार्थना-पत्र अपने नाम, पिता का नाम, स्थान जहां से सत्याग्रह के लिए गए थे और जहां गिरफ्तार हुए, तिथि, जेल का नाम जहां प्रारम्भ में भेजे गए और जहां से छूटे तथा छूटने की तिथि के विवरण सहित अधिकतम 20 दिसम्बर 1985 तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली 2 के पते पर भिजवा दें ताकि उनका मामला केन्द्रीय सरकार के सामने पैंशन हेतु स्वीकृत कराया जा सके इसके उपरान्त यदि कोई व्यक्ति छूट गया तो सार्वदेशिक सभा उनके मामले में किसी भी प्रकार के सहयोग के लिए उत्तरदायी नहीं होगी।

राम गोपाल शालवाले
प्रधान सार्वदेशिक सभा

आर्य समाज अजमेर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज अजमेर जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन काल में 13 जनवरी 1881 में हुई थी। जिस का 104वां वार्षिक महोत्सव दि. 24 नवम्बर 85 से 26 नवम्बर 85 तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस उत्सव में आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान पं. शिवकुमार शास्त्री (भू. पू. सांसद) श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय, प. देवराज जी मेरठ, श्री ओम्प्रकाश जी वर्मा रेडियो सिंगर यमुनानगर, ओजस्वी वक्ता श्री स्वामी कर्त्तव्यानन्द जी राज. आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्र सिंह जी, हिमाचल प्रदेश के ब्रह्मचारी आर्य नरेश आदि की तीन दिन तक व्याख्यान, प्रवचन, उपदेश भजन आदि की अमृतवर्षा होती रही जिसका अजमेर के हजारों धर्म प्रेमी नर नारियों ने लाभ उठाया।

—रासा सिंह मन्त्री

(2 पृष्ठ का शेष)

अशुभ कर्म करे तो भय शंका, लज्जा आदि के भाव पैदा करता है। परन्तु यह झूठ आलस्य, और प्रमाद से घिरा हुआ प्रेरणा के विपरीत ही काम करता है। तभी वह दुःख उठाता है। परन्तु वह दयालु—कृपालु भगवान इस अल्प जीव के लिए अपना अनादि और लक्ष्य ज्ञान हर सृष्टि के आदि में देता रहता है।

यह प्रकृति जड और ज्ञान रहित है। संसार में जो कुछ भी चल-अचल दिखाई देता है। वह सब प्रकृति से ही बना है। परन्तु वह स्वयं प्रकृति नहीं है प्रकृति का विकृत रूप है। जो हमें दिखाई देता है। स्थूल जगत् मूल स्रोत का नाम स्वधा है। इन सूक्ष्मतम तत्वों के मिश्रण का नाम जगत् और अलग होने का नाम और वियोग का नाम मृत्यु है। इस क्रम का बार-बार होना आवागमन कहलाता है। मनुष्य का वर्तमान जन्म न पहला है। और न आखिरी कर्मानुसार देह बदलता रहता है।

आवागमन का यह सिद्धान्त जीव को बार-बार उच्चतम श्रेणी की योनी प्राप्त करने को प्रेरित करता है। जीव कर्मों का फल भोगने के लिए तदनुसार विभिन्न योनियों में जन्म लेता है। संसार में सुखी, दुःखी मूर्ख, विद्वान् लूले, लंगडे आदि का अन्तर अपने-अपने कर्मों का परिणाम है।

अतः अद्वैतवादियों की यह ब्रह्मसत्य जगत् मिथ्या आदि विचार धारा अवैदिक है। इस विचारधारा से देश को बडी हानी उठानी पडी है। देश की पराधीनता के जहां और कारण हैं वहां यह भी विचार धारा थी यह मनुष्य को अपने कर्त्तव्य से विमुख बनाती है। मनुष्य में झूठा वैराग्य उत्पन्न कर चरित्र हीनता, व व्यभिचार को बढ़ावा देती है। मनुष्य कायर व भीरु डरपोक बनता है। आत्मिक बल से विहीन हो जाता है। इस विचारधारा को सर्वथा तिलाञ्जलि देकर सच्चे वैदिक-धर्म की विचारधारा को अपनाकर देश, जाति, धर्म संस्कृति एवं सनातन परम्पराओं की रक्षा कर सकते हैं।

(4 पृष्ठ का शेष)

आर्य समाज का दक्षिण अफ्रीका पर प्रभाव

स्त्रियों के सम्बन्ध में भी वैदिक विवाह संस्कारों का बहुत प्रभाव पड़ा। पर्दा न होने पर भी शालीनता, जय माला प्रथा, विवाह की प्रक्रियाओं की व्याख्या, और इनके द्वारा उत्पन्न पवित्रता और आनन्द का वातावरण सबके लिए आकर्षक रहा। विवाह के अतिरिक्त वाग्दान, नामकरण यहां तक कि अन्त्येष्टि संस्कार में भी अच्छा वातावरण रखने का बहुत प्रभाव पड़ा।

3. आर्य समाज योग के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य करता है। श्री ईश्वर दत्त विद्यालङ्कार तथा योगी यशपाल ने 1921 तथा 1937 में आकर अपने यौगिक तथा धनुषबाण के प्रदर्शनों से सहस्रों लोगों को प्रभावित और आकृष्ट किया।

4. कथा तथा संगीत के क्षेत्र में भी आर्य समाज ने अपना प्रभाव दिखाया आर्य संगीत मण्डल, आर्य भजन-मण्डल तथा आर्य यूनाथी नाटक मण्डल ने भारतीय संगीत, काव्य तथा अभिनय को लोक-प्रिय बनाया। श्री प्रवीण सिंह भजनीक ने भी 1922 में आकर इस दिशा में अच्छा कार्य किया।

5. आर्य समाज के नवम् नियम में अपने हित के साथ जो परहित को मिलाने की भावना कही गई है। उसके अनुसार ही आर्य समाज ने अनाथ आश्रमों तथा डरबन और पीटरमेरित्जबर्ग में स्थापित ए. वी. हाउस द्वारा जन समाज की खूब सेवा की। दक्षिण अफ्रीका में ओम् तथा नमस्ते का प्रचार. जय जगदीश हरे, इस आरती का मायती मन्त्र तथा शान्ति पाठ का कार्यों के प्रारम्भ और अन्त में प्रचलन आर्य समाज की ही देन है।

6. दक्षिण अफ्रीका के जीवन में अनेक प्रभाव दिखाई देते हैं। पाश्चात्य जीवन का अनुकरण, नए-नए जीवन मूल्यों का आकर्षण, तथा अन्य मतों और विचार-धाराओं के प्रभाव की उपेक्षा नहीं की जा सकती। इसलिए आर्य समाज को भी इस वातावरण में लचकीला रवैया रखना पड़ता है। फिर भी इन कठिन परिस्थितियों में भी, आर्य समाज हिन्दुत्व के प्रभाव को उजागर करने में समर्थ हुआ है। आर्य समाज ने एक ओर अन्धश्रद्धा से, निरर्थक रीतिरिवाजों से, पशु हिंसा से तथा जात-पात के बखेड़े से अपने आप को परे रखा। वहां शाकाहार(अभिसाहार) का विरोध तथा मृतकों के अग्नि संस्कार आदि द्वारा समाज के ऊंचे आदर्श, ऊंची सभ्यता तथा ऊंचे व्यवहार, इन सब के प्रसार में प्रभावी कार्य किया।

(दक्षिणी अफ्रीका की रिपोर्ट से साभार)

—

दक्षिणी अफ्रीका में अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन 13 से 22 दिसम्बर तक

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिणी अफ्रीका की ओर से हीरक जयन्ती के शुभावसर पर अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन 13 दिसम्बर से 22 दिसम्बर 1985 तक डरबन में मनाया जा रहा है जिसमें दक्षिणी अफ्रीका के अतिरिक्त भारत तथा अन्य देशों से आर्य बन्धु भाग लेंगे।

13 दिसम्बर 1985 को ध्वजारोहण श्री पं. मोहन लाल मोहित मौरिशस करेंगे और यजुर्वेद परायण यज्ञ दोपहर बाद अढ़ाई बजे आरम्भ होगा। 14, 15, 16, 17 तथा 21, 22 दिसम्बर को कई सम्मेलन व सभाएं होंगी जिनमें वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार संस्कृत भाषा की उन्नति तथा अन्य विषयों पर विचार किया जाएगा। सम्मेलनों की अध्यक्षता भिन्न-भिन्न आर्य नेता करेंगे।

—

मास्टर राम प्रसाद जी सग्गड़ फ्रीडम फाइटर (लुधियाना) को भारी सदमा

यह समाचार अत्यन्त दुःख के साथ पढ़ा जाएगा कि मास्टर राम प्रसाद जी सग्गड़ प्रचार मन्त्री जिला आर्य सभा और डिस्टिक फरीडम फाइटर्स यूनियन लुधियाना का एक लड़का श्री बलराम सग्गड़ एस. डी. ओ. बिजली का दिनांक 11-12-84 को स्वर्गवास हो गया था। अब उस का लड़का इकलौता बेटा अर्थात् मास्टर रामप्रसाद का पोता (श्री शाम सुन्दर आयु 18 वर्ष क्लर्क बिजली बोर्ड बटाला 4 दिन की अचेतावस्था के बाद दिनांक 20 नवम्बर 1985 को प्रातः पी. जी. आई. चण्डीगढ़ में बिलखते हुए परिवार को छोड़ कर परलोक गमन कर गया। इसके निधन के साथ वंश ही समाप्त हो गया। दो साल के भीतर पहले पुत्र तथा अब पोत्र की दो मौतें हो जाने से मास्टर जी की कमर टूट गई है। मास्टर जी की विधवा पुत्र वधु श्रीमती राजरानी का तो वह एक ही सहारा था, जो जाता रहा। जिससे वह अत्यन्त व्याकुल है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारी महानुभाव तथा समस्त कार्यकर्ता श्री मास्टर रामप्रसाद जी तथा उनकी विधवा पुत्रवधु श्रीमती राजरानी के साथ गहरी सहानुभूति प्रकट करते हैं। और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनको इस असहनीय दुःख के सहन करने की शक्ति प्रदान करें और दिवंगत आत्मा को सद्गति प्राप्त हो।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा दिनांक 1 दिसम्बर 1985 की बैठक में मास्टर जी के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए शोक प्रस्ताव स्वीकार किया गया है।

जिला आर्य सभा लुधियाना और लुधियाना की स्थानीय आर्य समाजों ने भी इस दुःखद समाचार पर शोक प्रस्ताव स्वीकार किये हैं।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य समाज किशन गंज मिल एरिया दिल्ली के प्रधान श्री सोहनलाल जी का निधन

श्रद्धेय प्रधान श्री सोहन लाल जी तुली जिनका आकस्मिक निधन 10-11-85 को हुआ और क्रिया रस्म बुधवार दिनांक 20-11-85 को हुई उसमें आर्य समाज किशन गंज (मिल एरिया) की ओर से निम्नलिखित श्रद्धांजलि प्रस्तुत की गई।

श्रद्धेय श्री सोहन लाल जी तुली आर्य समाज किशन गंज (मिल एरिया) दिल्ली के जन्म देने वाले उन महापुरुषों में से एक महान् पुरुष थे जो कि आगे चल कर वे एक आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में उभरे और वर्षों तक इस आर्य समाज के प्रधान पद को सुशोभित करते रहे। उनके अथक परिश्रम, त्याग, निस्वार्थ सेवा तथा उन की निष्ठावान शुभ भावनाओं का ही यह फल है कि इस क्षेत्र में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ इस आर्य समाज का अपना एक महत्वपूर्ण ऊंचा स्थान है। इन शब्दों के साथ दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इसके अतिरिक्त इस आर्य समाज के वर्तमान प्रधान डा. एस. एस. कामरा एवं कविराज श्री बी. सी. जोशी, प्रधान बाजार कमेटी किशन गंज दिल्ली—6 के अतिरिक्त आर्य समाज के एक प्रमुख नेता मलिक रामलाल जी, श्री मोद प्रकाश शास्त्री, श्रीमती कौशल्या मलिक भूतपूर्व काम्सलर श्री बलबीर सिंह आनन्द और श्री कामेश्वर शास्त्री ने भी अपनी श्रद्धांजलि दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए भेंट की। इस शोक सभा में 15000 से भी अधिक बहिन और भाई उपस्थित थे।

—जे. पी, पाठक
मन्त्री
आर्य समाज

राजस्थान पत्रिका जोधपुर दिनांक 5-10-85 से साभार

वेद ही शिक्षा नीति का आधार हो

लेखक—श्री क. च. कुलिश जी

गतांक से आगे

संसार की अन्य भाषाओं का अपमान है। यदि अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के नाम पर ही अंग्रेजी का व्यवहार अनिवार्य माना जाता होता तो संयुक्त राष्ट्र संघ से बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय मंच कहा है। यदि यह कहा जाता कि अंग्रेजी व्यवसाय की भाषा है तो भी बात समझ मे आ जाता। हमारा व्यवसायी वर्ग एक सीमा तक अंग्रेजी में कारोबार करता है। व्यवसाय में शासन तन्त्र इत्यादि को भी शामिल किया जा सकता है। ये सब व्यवसाय के ही रूप में वर्णित हैं। व्यवसायों का स्थान भी कालान्तर मे स्वदेशी भाषाए ले सकती हैं।

अब मैं विज्ञान की बात पर फिर आना चाहूंगा। जो लोग अंग्रेजी को विज्ञान का माध्यम मानते हैं उन्हें अपना भ्रम शीघ्रति शीघ्र दूर करना देना चाहिए। अंग्रेजी ही नहीं अपितु पश्चिम में जिस किसी भाषा में भी भौतिक विज्ञान का उदय हुआ है उसे विज्ञान कहना विज्ञान शब्द का दुरुपयोग कहा जाएगा। विज्ञान के नाम पर ये लोग अज्ञान का प्रसार कर रहे हैं या व्यवसाय कर रहे हैं। बेचारे गैलीलियो की अटकल (अनुसंधान) लगाते-लगाते यह जानकारी हाथ आई कि धरती गोल है। उस बेचारे ने इस बात को प्रकट कर दिया। चूंकि बाइबल मे धरती को सपाट लिखा था। गैलीलियो को जेल मे रहना पड़ा। एक अरसे के बाद इन लोगों ने मानना शुरू किया कि धरती गोल है। अब वे यह मानते हैं कि धरती घूमती है परन्तु सूर्य स्थिर है यह गैलीलियो की देन है। सूर्य के आगे भी कुछ है वे अब कुछ-कुछ मानने लगे हैं। आज भी पश्चिम के वैज्ञानिक मानते हैं कि सूर्य [illegible] उत्पन्न होता है। आम धारणा [illegible] है परन्तु वैज्ञानिक नहीं है। [illegible] भ्रान्तियों को पाले हुए वे लोग विज्ञान के नाम पर प्रयोग पर प्रयोग करते जा रहे हैं। इस दौर मे एक और व्यवसाय पनप रहा है, दूसरी ओर [illegible] असंयत और विनाशकारी शस्त्र [illegible] रहा है।

सृष्टि का आदि ज्ञान

इसके विपरीत इस देश में वह ज्ञान विज्ञान विद्यमान है जो सृष्टि का आदि ज्ञान है। यहा से सम्पूर्ण ज्ञान के विज्ञान का प्रसार हुआ। इसी से देश का दुर्भाग्य और अध पतन हुआ कि जिस वेद को ज्ञान का उद्गम माना जाता है उसी को भुला दिया गया। हमारी दुर्गति भी इसीलिए हुई कि हमने अपने स्वरूप को ही भुला दिया और नाना प्रकार के क्षुद्र मत मतान्तर, पंथ, सम्प्रदाय आदि में ज्ञान को विच्छृंखल कर दिया। शिक्षा से तो उसे समूल विच्छिन्न कर दिया।

सृष्टि के समय विज्ञान की पूंजी एक मात्र वेद है और वह आज भी विद्यमान है। जीव क्या है, जगत् क्या है भूत और प्राण क्या है। ऋतु परिवर्तन, प्रकाश अन्धकार, दिशा और काल, जीवन और मृत्यु, वर्ण, अक्षर, क्षर आदि कोई ज्ञान ऐसा नहीं जो वेद मे नहीं है। इसीलिए वेद महर्षि को विदित वेदितव्या: कहा गया है। अर्थात् जानने योग्य जो कुछ है वह बता दिया गया। वेदों ने मानव सृष्टि के आदि मे यह भी बताया कि धरती घूमती है और गोल है। और सूर्य भी परिक्रमा करती है स्थिर नही है। प्रकृति का कोई अग और उपकरण स्थिर और अपरिवर्तनीय नहीं है। पश्चिमी वैज्ञानिक यह नही जानते थे कि सूर्य या सौर मडल के परे भी कुछ है परन्तु हम जानते हैं कि सूर्य भी परमेष्टि की परिक्रमा करता है। और परमेष्ठि भी स्वयम् की परिक्रमा करता है अर्थात् सम्पूर्ण विश्व ब्रह्माण्ड ही गतिशील है इसमें कुछ भी स्थिर या अचल नहीं है।

हमारा दुर्भाग्य है कि वेद जैसे आदि ज्ञान की श्रेष्ठ को और सम्पूर्ण विज्ञान के आधार को एक रहस्यमय और बुद्धि से बाहर की वस्तु बनाकर हौवा बना दिया है। जो सभी रहस्यों गुत्थियों के खोलने वाला विज्ञान है उसी को हमने अबूझ बना दिया। हमारी दुर्गति इस लिए हुई कि हम वेद को भूल गए। हमारा उद्धार वेद विज्ञान से ही होगा। विडम्बना से आज मशीन ही विज्ञान का प्रतीक बनी हुई है। आवश्यकता है इस भ्राति को दूर करने की। विडम्बना है कि हम वेद को कर्म काड और रहस्य की वस्तु मानने लग गए। आवश्यकता है इस भ्रांति को तुरन्त मिटाने की।

हमारी शिक्षा नीति का आधार ही वेद होना चाहिए और यही एक विद्या है जो मानव के लिए कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। वही एक विद्या है जिसका किसी धर्म सम्प्रदाय मत, पन्थ जाति, वर्ण इत्यादि पर कोई आग्रह नहीं, बल्कि इसी से मनुष्य को सही दिशा और ज्ञान प्राप्त हो सकता है। वेद ही वह ज्ञान है जो भूत और प्राण आत्मा और शरीर ब्रह्म और जगत सभी को सत्य मानता है। जगन्मिथ्या वाला घोष वेद नही मानता और वेद यह भी नही मानता कि आत्मा ही सत्य है शरीर नही। भौतिक उन्नति से वेद का कोई विरोध नही। सरस्वती और लक्ष्मी के बीच वैर होने की भ्राति भी वेद नही मानता। वेद जीवन का विज्ञान है। और हमारी सम्पूर्ण दिनचर्या का कोई पक्ष या अश ऐसा नहीं जिसकी जानकारी वेद में नहीं है।

मैं पुन जोर देकर कहना चाहूगा कि देश में जो शिक्षा प्रणाली चालू की जाए उसका आधार वेद को ही बनाना होगा। इस देश की शिक्षा को मैकाले ने कोई नुकसान नहीं पहुचाया बल्कि उन लोगों ने पहुचाया जिन्होंने वेद को ज्ञान धारा से अलग कर दिया और पारलौकिक रहस्यो की वस्तु बना दिया। यदि दस वर्ष की आयु के बाद सूत्र रूप में वेद की शिक्षा (अन्य विषयों के साथ) हमारे किशोर तरुणो को मिलने लगी तो देश की एक पीढ़ी में ही मनोदशा बदल जाएगी। यह शिक्षा पाकर जो युवक जीवन क्षेत्र में प्रवृत होगा वह शकर और विवेकानन्द ही होगा। रोजगार के लिए तो वह दीनात्मा बन कर किसी के सामने हाथ नही पसारेगा।

वेद एक विद्या है, उत्कृष्ट कोटि का विज्ञान है। ज्ञान और विज्ञान को जिसमें इस प्रकार परिभाषित किया गया है। एक ज्ञान-ज्ञानम् विविध ज्ञानं विज्ञानम्।

एक को जानना ज्ञान है और एक को आधार मानकर विविध को जानना ही विज्ञान है। ज्ञान को ही दूसरे शब्दो में ब्रह्म कहा गया है और विज्ञान को ही यज्ञ कहा गया है। ब्रह्म और यज्ञ के बारे मे जो धारणाएं हमारे यहां बन गई है उन्ही के कारण वेद के विषय मे भी भ्रातिया बनी हुई हैं। इस तरह की भ्रातियां पुराणो के बारे में बनी हुई हैं परन्तु हमारे पुराण वेद को जानने की ही कुंजी हैं। कपोल कल्पना नही। दोनों का समन्वय ही अंग-अग के मर्म के जानना है। ज्ञान और विज्ञान दोनो का अजस्र स्रोत वेद ही है। इसकी शिक्षा प्राप्त कर लेने पर अन्य सभी विषयों में मनुष्य की गति सहज ही हो जाएगी। आधुनिकतम विज्ञान को भी सही दिशा के लिए वेद की ही शरण में आना होगा।

—

आर्य समाज तलवाडा टाऊनशिप का चुनाव

गत दिनों आर्य समाज तलवाडा टाऊनशिप मे सदस्यो की बैठक प रमानन्द जी की अध्यक्षता मे हुई जिस मे निम्नलिखित अधिकारी सब सम्मति से चुन गए।

प्रधान—श्री आनन्द स्वरूप जी, वरिष्ठ उपप्रधान—सुरेन्द्र मोहन जी शर्मा उप प्रधान—श्री कलाश मोहन जी सूद उपप्रधान—श्री गिरधारी लाल जी शर्मा मन्त्री—श्री मनोहर लाल जी आर्य उप मन्त्री—श्री अमरनाथ जी उपमन्त्री श्री हरिकृष्ण जी शर्मा कोषाध्यक्ष—श्री दिला राम जी प्रचार मन्त्री—श्री रतनलाल जी कैलाश चन्द्र जी लेखा निरीक्षक—श्री प्रेम प्रकाश जी पुस्तकालय अध्यक्ष—श्री बलदेव जी

प्रतिनिधि—(1) श्री मनोहर लाल जी (2) अमरनाथ जी (3) श्री हरिकृष्ण जी शर्मा।

अन्तरग सदस्य—(1) मदन लाल जी श्री नामपाल जी श्री किशोरी लाल जी श्री दयानन्द हुआ श्री मिलखी राम जी श्री हरीश चन्द्र चावला।

आर्य समाज तलवाडा मन्त्री

आर्य समाज कलकत्ता का शताब्दी समारोह

21 दिसम्बर से 29 दिसम्बर 1985 तक

समारोह स्थल—कलकत्ता मैदान ब्रिगेड परेड ग्राउड जिसला तारामण्डल के निकट—

आर्य समाज कलकत्ता का शताब्दी समारोह 21 दिसम्बर से 29 दिसम्बर 1985 तक कलकत्ता मे मनाया जाएगा जिसमे आर्य जगत के महान विद्वान सन्यासी उपदेशक एवम भजनोपदेशक भाग लेगे और कई महत्वपूर्ण सम्मेलन एव विद्वानो की विचार गोष्ठिया आयोजित की जाएगी। शताब्दी समारोह स्थल पर महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ग्रन्थो वेद एव अन्य ग्रन्थो की सुन्दर प्रदर्शनी का आयोजन भी किया जाएगा।

—पूनम चन्द आर्य
मन्त्री

—

पोप को राष्ट्र अध्यक्ष मान कर स्वागत न किया जाए : दिल्ली आर्य केन्द्रीयसभा की मांग

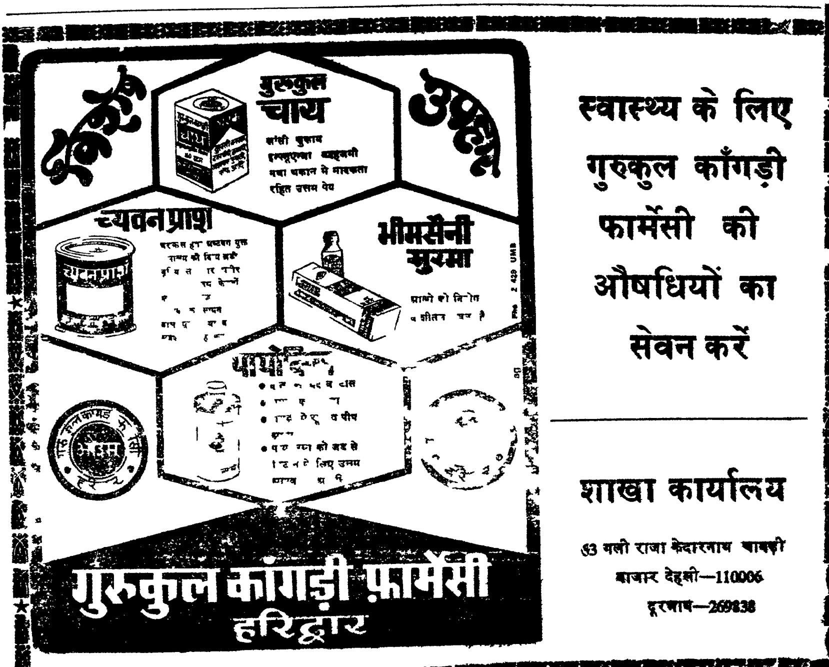
आज दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री तथा दिल्ली के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री ओम प्रकाश आर्य ने ईसाईयो के धर्म गुरु पोप जो कि भारत सरकार के निमन्त्रण पर भारत आ रहे हैं भारत सरकार उनको राष्ट्र अध्यक्ष मानकर उनका स्वागत करने जा रही है और उनके स्वागत की भारत मे बड़े पैमाने पर तैयारिया हो रही हैं जोकि एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र के लिए एक कलंक है। श्री आर्य ने अपने वक्तव्य मे उनको राष्ट्र अध्यक्ष मानकर स्वागत करने पर कड़ी आपत्ति की है कि यह एक भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष राज्य मे कभी सहन नहीं किया जायेगा। आपने वक्तव्य में आगे कहा है कि मेरी जानकारी के अनुसार छोटा नागपुर और मध्य प्रदेश के कई स्थानों पर भारत सरकार के कुछ अफसरो की मिली भुगत से एक लाख के करीब छोटी जाति के हिन्दुओं को ईसाई बनाने की तैयारियां हो रही हैं ताकि पोप साहब को उनके आने पर यह तोहफा दिया जा सके।

पहले ही विदेशी पादरियो की मेहरबानी के परिणाम मिजोरम और नागालैण्ड मे भारत क्या भुगत रहा है। आज भी सारा पश्चिमी उत्तर पूर्वी भारत पोप साहब के अनुयायियों की मेहरबानी से खतरे मे पड़ा हुआ है।

श्री आर्य ने भारत सरकार को चेतावनी दी है, कि यदि एक भी हिन्दू इस अवसर पर ईसाई बनाया गया तो उसका कड़ा विरोध किया जाएगा और इसके परिणामस्वरूप जो आन्दोलन छिड़ेगा उसकी सारी जिम्मेवारी भारत सरकार पर होगी।

—प्रचार मन्त्री

—



श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस मेहर पार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. न. पी.जे.एल. 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य मर्यादा जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 34. 8 पौष सम्वत् 2042 तदनुसार 22 दिसम्बर 1985 दयानन्द 161 अक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर

श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने—

लेखक—प्रा. श्री भद्रसेन जी (होशियारपुर)



स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन इस बात का साक्षी है कि यदि व्यक्ति दृढ़ निश्चय करके किसी उद्देश्य के लिए जुट जाए, तो वह अवश्य ही सफल होता है, आर्य समाज के इतिहास मे मु शीराम (श्रद्धानन्द) जी की सर्व प्रथम चर्चा तब आती है। जब महर्षि दयानन्द सरस्वती अपनी प्रचार यात्रा करते हुए बरेली पधारे। महर्षि की सभा की देखभाल का कार्य सरकार की ओर से श्रद्धानन्द जी के पिता नानक चन्द जी को सौंपा गया। वे उन दिनों पुलिस अधिकारी के रूप में बरेली मे कार्य करते थे। इसी सयोग से नानक चन्द जी महर्षि के विचार सुनकर बहुत प्रभावित हुए और अपने युवा पुत्र को महर्षि का परिचय दिया। पिता जी के बार-बार प्रेरित करने पर युवक मु शीराम व्याख्यान सुनने के लिए पहुचा और वहा उच्च अधिकारियो और शिक्षितो को ध्यान पूर्वक विचार सुनते देख कर बहुत हैरान हुआ। युवक मु शीराम का विचार था, कि सस्कृत पढा हुआ और वह भी साधु ऐसा व्यक्ति कोई दिमाग की बात थोडी करेगा, पर एक साधु के मुख से तर्कपूर्ण प्रगतिशील विचार सुन कर वह बहुत आश्चर्य-चकित हुआ। एक दिन व्याख्यान के पश्चात मु शीराम महर्षि के पास गया और ईश्वर की सत्ता के सम्बन्ध मे कुछ प्रश्न पूछे। यहा से उनके जीवन की चर्चा आरम्भ हो जाती है।

मु शी राम जी ने वकील बन कर अपनी जन्मभूमि 'तलवन' के निकट जालन्धर में कार्य आरम्भ किया। सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय मे मु शीराम जी के विचारो और जीवन मे परिवर्तन आने लगा। पर इस मे सब से अधिक कार्य उन की धर्म पत्नी शिवदेवी ने किया। जब भटके हुए दिनो मे मु शी राम मद-होश होकर रात को देर से घर पहुचते तो शिवदेवी रातो जाग कर उन को सम्भालती। पत्नी की सतत सेवा और धार्मिकता ने मु शी राम के जीवन का काटा ही बदल दिया।

सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय और शिवदेवी की कर्त्तव्य निष्ठा से प्रभावित होकर मु शीराम ने हर प्रकार के व्यसन को त्याग कर जीवन को हर प्रकार से पवित्र बनाना प्रारम्भ कर दिया। यहा तक कि झूठे मुकद्दमें बिल्कुल लेने बन्द कर दिए चाहे इस से कमाई कम हो गई। एक बार उन के मु शी ने आप की पूर्व स्वीकृति के बिना न्यायालय मे एक मुकद्दमा प्रस्तुत किया, मु शीराम जी ने उस व्यक्ति को पहचानते ही न्यायाधीश के सामने ही मुकद्दमा लडने से मना कर दिया। चन्द्रमा की कलाओ की तरह धीरे-धीरे समाज सुधार और लोकोपार के कार्यों मे भाग लेना प्रारम्भ कर दिया और तब एक दिन अग्नि के रूप मे सर्वत्र दिखाई देने लगे।

मु शीराम जी की पुत्री ईसाई स्कूल मे पढती थी, एक दिन स्कूल से आकर वह अपनी धुन मे गुन गुना रही थी 'ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया, ईसा ईसा बोल क्या लगे तेरा मोल। गीत के इस बोल से मु शी राम जी चौके, इसी प्रकार ईसाई स्कूल की भारतीय सस्कृति विरोधी गतिविधियो को अनुभव करके कन्या महा विद्यालय स्थापित करने का निश्चय किया। उन दिनो कन्याओ को पढाना तो दूर, इस सम्बन्ध मे सोचना और बात करना भी पाप माना जाता था, तब श्री देवराज जी के साथ मिल कर कन्या विद्यालय का सूत्रपात किया। जो आज जालन्धर मे कन्या महाविद्यालय के नाम से वटवृक्ष के रूप में अपनी यश पताका फहरा रहा है। इसके लिए केवल अपनो का विरोध ही नही बहिष्कार भी सहर्ष सहा।

निर्मूल, घृणाश्रित, अन्यायपूर्ण जात पात के रोग को दूर करने के लिए केवल मौखिक प्रचार ही नहीं किया, अपितु जिन दिनो इस प्रकार की बात करना भी एक साहसिक कार्य माना जाता था, उन दिनो तथा कथित बिरादरी से बाहिर अपनी पुत्री का विवाह किया और इस प्रकार एक क्रियात्मिक रूप प्रस्तुत किया। अपने हर व्यवहार मे जात-पात की निर्मूल भावना को कभी भी स्थान नही दिया।

अपनी श्रद्धा और क्रियाशीलता से सामाजिक कार्यों मे सक्रिय भाग लेते हुए जल्दी ही विशाल पजाब की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी बने और पूर्ण निष्ठा से इसका कार्य किया। महर्षि की भावना के अनुरूप गुरुकुल स्थापना के सम्बन्ध मे सभा की कार्यकारिणी मे विचार आया, महात्मा मु शीराम जी ने इस असम्भव समझी जाने वाली योजना को मूर्तरूप देने के लिए प्रतिज्ञा की। जब तक निश्चित राशि एकत्रित नही हो गई, तब तक घर मे प्रवेश नही किया। धन-सग्रह के लिए भारत के अनेक नगरो का भ्रमण किया। आज की दृष्टि से चाहे वह राशि अधिक नही उतनी राशि देने वाला चाहे आज एक ही व्यक्ति सरलता से मिल सकता है पर उन दिनो इस राशि को महात्मा जी ने बड़े अनथक प्रयत्न से इकटठा किया।

ससार के सामने एक आश्चर्य की तरह गुरुकुल की स्थापना की और सर्व-प्रथम अपने दोनो पुत्रो को वहा प्रविष्ट किया। यह पहला विद्यालय और महा-विद्यालय था, जहा हर विषय का उच्च स्तर तक अध्ययन हिन्दी भाषा के माध्यम से होता था। लोगो ने गुरुकुल के स्नातको की भावी आजीविका की शका के साथ महात्मा मु शीराम जी

(शेष पृष्ठ 5 पर)

स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान

ले.—श्री अमरनाथ आर्य क्वाटर नं. 2268

से.—4 तलवाड़ा टाऊनशिप

अपने महापुरुषों के जन्म दिवस मनाने की परम्परा भारत में बहुत पुरानी है। जो आदर्श गुरु की भांति प्रेरित कर, समाज को नव-चेतना और सही दिशाबोध की सम्पत्ति प्रदान करती है।

परन्तु आत्मा को अजर अमर मानने वाली भारतीय संस्कृति, उनके अवसान दिवस न मना कर केवल बलिदान दिवस ही मनाती है। क्यों कि बलिदान साधारण मृत्यु न हो कर, सोद्देश्य-उत्सर्ग होता है, जिसकी कल्याण-कामना का सम्बन्ध-छोर मानव-उत्थान से जुड़ा होता है। अत: प्रति वर्ष बलिदान दिवस मनाने से आत्मोत्थान की चेतना या समाज हीन भावों के घेरे से मुक्त रहता है। जिससे जड़ता, उदासीनता व दिग्भ्रान्तता की जकड़ ढीली पड़ती है और सामाजिक जीवन नवोत्साह से जगमगा उठता है। और स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस भी इसी श्रृंखला की कड़ी है।

भारत, ऋषियों, मुनियों का देश है। यहां समय-समय पर ऐसी विभूतियां पैदा होती रहती हैं, जो सद्भाव व भ्रातृभाव से मानव-पथ आलोकित करती हैं।

अत: महर्षि दयानन्द ने, निज साधना स्वरूप जिस क्रान्तिकारी संस्था आर्य समाज का सृजन किया तथा समय पा कर, उससे भारत-वाटिका में जो क्रान्तिकारियों की एक पुष्पराजि विकसित हुई उसमें प्रमुख-प्रसून हैं स्वामी श्रद्धानन्द जिनके जीवन-कुसुम की अनूठी रंगत व कार्य सुगन्धि भारत-उद्यान को चिरकाल तक सुवासित करती रही।

ऐसे युग-पुरुष का अवतरण, आर्य समाज-मंच पर जब नाटकीय ढंग से हुआ, तब तक स्वामी श्रद्धानन्द जी अपने स्वच्छन्द-बचपन की दहलीज लांघ कर, 1879 में जादूगर सन्यासी दयानन्द के संक्षिप्त साक्षात्कार से प्रभावित हो— रईस बाप के खर्चीले व मनस्वी लाडले की मनमौजी भूमिका को पार कर, लापरवाह व उदण्ड पति के असन्तुष्ट रूप को पीछे छोड़, स्वाभिमानी पर ईमानदार तहसीलदार के पद को ठुकरा, सत्यदर्शी-ग्रन्थ, सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन स्वरूप, लाहौर में सार्वजनीन जीवनोत्थान की ओर झुकते दिखाई देते हैं।

फिर विपरीत परिस्थितियों के घटाटोप में, अगले-जीवन-दृश्य में हम उन्हें विलासी व स्वाभिमानी पर सत्यनिष्ठ वकील के रंगीन-परिवेश को त्यागते, वर्ण-व्यवस्था व नारी-शिक्षा विरुद्ध-पौराणिक मान्यता—'स्त्रीशूद्रो न धीयताम'। की पक्षपाती व्यवस्था को ललकारते, देशवासियों को कूप-मण्डूकता से उबारते, व स्वतन्त्र दृष्टि प्रदान हेतु एक और 'सद्धर्म-प्रचारक' पत्र निकालते और दूसरी ओर, सत्य-मण्डनार्थ, शास्त्रार्थों की धूम मचाते देखते हैं।

अब तक स्वामी जी, विविध स्तरीय जीवन स्थितियों को पीछे धकेलते और नवोत्थानादर्श स्थापित करते हुए-मुन्शी राम एडवोकेट से मुन्शी राम जिज्ञासु बन चुके थे।

किसी भवन को, दूर से देखने से, उसकी भूमिगत नींव नहीं दिखायी देती। उसी भान्ति साधारण पाठक को भी, श्रद्धानन्द जीवन प्रासाद की नींव भी नहीं दिखायी देती। जिसमें उनके नटखट-बचपन, उदण्ड यौवन व स्वच्छन्द जवानी की अनघड़ी शिलाएं तो नजर नहीं आती पर उन पर अवस्थित, वेदज्ञानालोकित भव्य जीवन-भवन अवश्य दिखाई देता है।

फिर भी इनका प्रेरक जीवन-पृष्ठ, आर्य-जगत् के सामने तब खुलता है-जब स्वामी जी अनुभव करते हैं कि वेदोद्भवस्थल—भारत ही वेदवाणी को भूल चुका है तो इसे यह स्मरण दिलाने हित, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अपेक्षित है। अत अपना सर्वस्व समाज को दान कर स्वय वेद धर्म प्रचारार्थ, शिक्षा-क्षेत्र में उतरे और महात्मा हंसराज व लाला लाजपतराय समर्पित नागर—परिवेश—पोषित डी ए. वी. शिक्षा प्रणाली के समानान्तर, ऋषि अनुमोदित, कानन-केन्द्रित गुरुकुल शिक्षा पद्धति का डंका बजाया। और इसके प्रस्थापनार्थ उस कानन-केसरी ने अपना कार्य क्षेत्र, दूषित नगरांचल से दूर प्रकृति-क्रोड स्थित, बीहड़ वन में चुना और परिणामत: 1898 में तपोभूमि-गंगा पर—ऋषि-स्वप्न—संसार—ज्योतिपुंज गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार साकार में आया।

समय पाकर उस तपस्वी की तपस्या रंग लायी और उनकी लग्न व दूरदर्शी-कार्य पटुता से वह 'शिक्षा-उद्यान' लहलहाने लगा। जिसके सजग-प्रहरी उस निज ध्येय-निरत, तेजपुंज आचार्य-मुन्शी राम को हम नीरव-तमिस्रान्धकार में सबल हाथों में सुदृढ़ लाठी थामें, गुरुकुलीय छात्रावास के बाहर हिंसक-पशुओं का पहरा देते देखते हैं। जिनके कोमल वक्षस्थल में ममतामय मातृ-हृदय और स्नेहिल पितृ-दिल धड़क रहा होता।

उनकी सात्विक दिन-चर्या से मालूम होता, कि उनका मस्तिष्क सत्यान्वेषक साधक का हृदय दयालु शिक्षक, का रूप कलाकार के और पैर दार्शनिक के हैं। ऐसे योग्य आचार्य के विद्यार्थी, भला अयोग्य कैसे हो सकते थे। वे भी उन्हें—'त्वमेव माता च पिता त्वमेव' समझते थे।

इस भान्ति, उनकी अथाह साधना-स्वरूप, वह दिन भी आया, जब इस गुरुकुल-प्रसिद्धि की गूंज, इंग्लैंड की पारलियामेंट में भी गूंजी। क्योंकि क्रान्तिकारी विचारों के कारण यह संस्थान—अंग्रेज की दृष्टि में कट्टर-राजद्रोही और गुप्त षड्यन्त्रकारी संस्था समझी जाने लगी थी। अत. वहां से एक शिष्ट-मण्डल इस छानबीन हेतु हरिद्वार पहुंचा और तथाकथित बम्बों की इस फैक्ट्री को देखने की अनुमति चाही। आचार्य मुन्शी राम जी उन्हें, छोटे-छोटे ब्रह्मचारियों की कक्षा में ले गए और कहा 'आप इनमें से किसी भी छात्र के सिर पर हाथ धर कर देख लें। वह स्वयं बता देगा कि वह किस किस्म का बम्ब है।

वह शिष्टमण्डलाध्यक्ष, स्वामी जी के सुप्रबन्ध, स्नेहिल व्यक्तित्व, अथाह ज्ञान-लग्न, विद्यार्थियों की योग्यता व शालीनता और वहां के विद्योपयोगी शांत वातावरण से इतना प्रभावित हुआ कि इंग्लैंड जा कर संसद को अपनी रिपोर्ट देते हुए उसने कहा—'यदि मैं खुद बच्चा होता तो उस गुरुकुल में पढ़ना पसंद करता और अगर मेरी कोई सन्तान होती तो मैं उसे वहीं पढ़ाता।

अपनी बहु-आगामी जीवन-यात्रा के अगले चरण में पन्द्रह वर्षों तक-कीर्ति-स्तम्भ गुरुकुल कांगड़ी का संचालन कर देश को सहस्रों वैदिक-विद्वान्, क्रान्तिकारी नेता, उच्चकोटि लेखक, कुशल पत्रकार व सम्पादक, दक्ष वैज्ञानिक और प्रगतिशील स्नातक प्रदान कर, 1918 में आप गुरुकुल त्याग व सन्यास ग्रहण करते हुए आचार्य मुन्शी राम के कर्मठ रूप से स्वामी श्रद्धानन्द के प्रभावी रूप में दिखायी देते हैं।

अब स्वामी जी का कार्य-क्षेत्र, गुरुकुल की सीमाओं से भी विस्तृत हो जाता है। और आप स्वातन्त्र्य-यज्ञ में आहुति डालते हुए स्वतन्त्रता सेनानी मोती लाल नेहरू, मदन मोहन मालवीय और महात्मा गांधी के साथ, सक्रिय राजनीति में भाग लेते व 1919 में, हिन्दी प्रचारक बन कर, अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के रूप में सर्व-कार्यवाही में, पहली बार हिन्दी में भाषण देते दिखायी देते हैं। उसी समय, रोलट-ऐक्ट के विरुद्ध सत्याग्रहियों का नेतृत्व करते हुए, उस उन्नत-भाल नर-पुंगव सन्यासी को हम—अंग्रेज की रक्त-पिपासु संगीनों के आगे चुनौती भरी छाती खोल कर खड़ा देखते हैं—और देखते हैं, कि उसकी तेजस्वी-मूर्ति के आगे—अपने साम्राज्य में सूर्य न डूबने की डींग हांकने वाली ब्रिटिश सरकार की क्रूर संगीनें अपने आप झुक जाती हैं।

उस रोमांचित घटना के चार दिन बाद उस लोकप्रिय नेता को, जमामा—जामा-मस्जिद के मुम्बर से इतिहास में पहली बार अपना भाषण हिन्दी में वेद ऋचा से आरम्भ करते और ओ३म् शान्ति: शान्ति:, से समाप्त करते सुनता है।

तदनन्तर, सर्व-कल्याणार्थ, धर्म व राजनीति को साथ ले कर चलने वाले वह महा मानव—असहयोग आन्दोलन, हिन्दू-संगठन-गठन और शुद्धि आदि अनेक आन्दोलनों की चुनौती पूर्ण सीढ़ियां पार करते दिखायी देते हैं।

इस भान्ति, सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक क्षेत्रों में एक साथ प्राय: अर्ध शताब्दी तक कार्य करते, व स्वतन्त्रता संग्राम में जूझते उस महापुरुष को यदि गुरुकुल के लिए जिया तो अन्त में शुद्धि-आन्दोलन हित 23 दिसम्बर 1926 को संकीर्ण साम्प्रदायिकता-स्वरूप, सीने पर तीन गोलियां खाकर देश उन्हें न्यौछावर होते देखता है। जिससे सारा देश कांप उठा था।

फिर जैसे होता ही है—उस आजन्म-योद्धा की श्रद्धांजलियों का एक सिलसिला शुरू हुआ और उसके अनुरूप ही 'दिनकर' ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि इन शब्दों में अर्पित की—

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय—

पंजाब में आर्य समाज के लिए एक नई चुनौती

23 दिसम्बर को श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस है, उस दिन उन्हें अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट करते हुए हम याद करेंगे कि उन्होंने अपने धर्म, समाज और देश के लिए क्या कुछ किया था। इसी सन्दर्भ में जो समस्याएं आजकल हमारे सामने आ रही हैं उन पर भी विचार करेंगे कि क्या स्वामी जी महाराज उनके विषय में हमारा मार्ग दर्शन कर गए हैं या नहीं ?

समस्याएं तो कई हैं परन्तु आज मैं एक विशेष समस्या की ओर आर्य जनता का ध्यान दिलाना चाहता हूं पिछले चार मास में पंजाब में दो चुनाव हो चुके हैं एक सितम्बर में हुआ था और एक इसी सप्ताह में हुआ है। इन चुनावों में राजनैतिक स्तर पर बहुजन समाज नाम का एक नया संगठन सामने आया है। इसमें अधिकतर हरिजन भाई सम्मिलित हैं। और वह अपना एक पृथक राजनैतिक संगठन बना रहे हैं। कोई भी समुदाय यदि अपना एक पृथक् राजनैतिक संगठन बनाना चाहता है तो उस पर किसी को आपत्ति नहीं होगी। परन्तु जिस संगठन का मैंने ऊपर जिकर किया है यह अपने आपको हिन्दू विरोधी कहते हैं और इन्हें अकालियों का पूरा समर्थन प्राप्त है। ऐसा प्रतीत होता है कि एक सोची समझी योजना के अनुसार हरिजनों को हिन्दुओं से अलग करने और उन्हें हिन्दुओं के विरुद्ध भड़काने की एक योजना बनाई गई है। यह लोग अपने अधिकारों की रक्षा के लिए एक ऐसा संघर्ष कर रहे हैं जिसका वास्तविक उद्देश्य हमारे उन भाईयों को जिन्हें हरिजन कहा जाता है हिन्दुओं से अलग करना है। अकाली इसमें जो रुचि ले रहे हैं, उसी से हम अनुमान लगा सकते हैं कि इसके पीछे क्या है ? 1932 में भारत सरकार ने अपना एक कम्युनल अवार्ड दिया था उसके द्वारा भी हरिजनों को हिन्दुओं से अलग करने का एक षड्यन्त्र रचा गया था। इस पर गान्धी जी ने सरकार से कहा था कि यदि हरिजनों को हिन्दुओं से अलग किया गया तो वह आमरण अनशन करेंगे। परन्तु किसी भी स्थिति में ब्रीटिश सरकार को यह अनुमति नहीं देंगे कि वह हिन्दू समाज में इस प्रकार का विभाजन कर दें। गान्धी जी के इस निर्णय का यह परिणाम हुआ कि सरकार को अपना फैसला बदलना पड़ा।

आज हमारे बीच कोई और गान्धी नहीं है। ऐसे समय में हमें स्वामी श्रद्धानन्द याद आते हैं उन्होंने गान्धी जी से बहुत पहले दलितोद्धार के लिए जो कुछ किया था उसका यह परिणाम था कि हमारे दलित भाईयों में यह भावना पैदा हो गई थी कि हिन्दुओं से अलग होकर उन्हें कोई लाभ न होगा, परन्तु उनके लिए कई नई-नई समस्याएं खड़ी हो जाएंगी। कुछ ऐसी स्थिति आज फिर पैदा हो रही है। मैं इसे आर्य समाज के लिए एक चुनौती समझता हूं। हिन्दुओं में आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जिसने छूत-छात को समाप्त करने के लिए सक्रिय रूप से काम किया है। आर्य समाज की यह धारणा है कि कोई भी व्यक्ति अपने जन्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नहीं बनता, अपने कर्म से बनता है। यदि एक बार इस सिद्धान्त को मान लिया जाए तो छूत-छात अपने आप समाप्त हो जाती है। यह केवल आर्य समाज ही कर सकता है कोई दूसरी संस्था नहीं।

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान दिवस पर यदि हमने उन्हें अपने दिल से श्रद्धांजलि भेंट करनी है तो आर्य समाज को सक्रिय रूप से एक अभियान चलाना पड़ेगा कि जन्म के आधार पर छूत-छात समाप्त होनी चाहिए। यदि हम महर्षि बाल्मीकि और भगत शिरोमणी गुरु रविदास को अपने महापुरुष समझते हैं तो फिर हम जन्म के आधार पर किसी को अछूत या हरिजन कैसे समझ सकते हैं। इसी के साथ हरिजनों में भी यह भावना पैदा करने की आवश्यकता है कि वह भी अपने दिमाग से यह ख्याल निकाल दें कि उन्होने किसी ऐसे परिवार में जन्म लिया है जिसे हरिजन परिवार कहा जाता है तो वह हमेशा के लिए अछूत हो गए। यह धारणा सर्वथा सारे हिन्दू समाज के लिए घातक सिद्ध होगी। इस लिए आर्य समाज का यह कर्त्तव्य है कि वह इन नई परिस्थितियों में सक्रिय रूप से यह आन्दोलन चलाए कि जन्म के आधार पर नहीं अपितु कर्म के आधार पर ही कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र बन सकता है। यदि यह धारणा प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में आ जाए तो हिन्दू समाज बच सकता है नहीं तो इसके इतने टुकड़े होंगे कि इसका कहीं नामों-निशान नजर न आएगा और उसमें सबसे अधिक हानि हमारे हरिजन भाईयों की ही होगी। इसी लिए उनके भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए भी यह आवश्यक है कि आर्य समाज सामने आये और हिन्दू समाज के विरुद्ध जो यह षड्यन्त्र रचाया गया है इसे विफल किया जाए। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के चरणों में हमारी यही सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी।

—वीरेन्द्र

सभा से सम्बद्ध आर्य समाज के अधिकारी महानुभावों की सेवा में आवश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक 8 फरवरी 86 को होना निश्चित हुआ है। उसकी नियमित सूचना सब सदस्यों (प्रतिनिधि महानुभावों) को यथा समय नियमानुसार भेज दी जाएगी।

सभा के नियम संख्या 9 के अनुसार सभा से सम्बद्ध प्रत्येक आर्य समाज के लिए प्रति वर्ष 30 अप्रैल तक नियत फार्म पर उन सभासदों की सूची सभा को भेजनी होती है जो उस समाज की अन्तरंग सभा द्वारा वर्ष के लिए घोषित हो तथा नियम संख्या 12 (क) के अनुसार प्रत्येक आर्य समाज के सदस्यों और सभासदों द्वारा दिए गए चन्दा, सम्पत्ति का किराया तथा किसी भी अन्य माध्यम से प्राप्त वर्ष भर की आय का दसवां भाग (दशांश) प्रति वर्ष सभा को देना और नियम संख्या 12 (ख) के अनुसार प्रत्येक आर्य समाज यह दशांश अपने घोषित सदस्यों व सभासदों की सूची तथा आय के पूर्ण विवरण के साथ सभा को प्रति वर्ष 30 अप्रैल तक भेजा करेंगी।

तथा धारा 12(क)तथा(ख)के अनुसार यह कार्य न करने वाली आर्य समाज के विरुद्ध सभा की अन्तरंग सभा को उचित कार्यवाही करने का अधिकार होगा। सभा के उपरोक्त नियमो की ओर दो बार पृथक विज्ञप्ति द्वारा आर्य मर्यादा के द्वारा भी आर्य समाजो का ध्यान आकर्षित किया जा चुका है किन्तु आर्य समाजों की ओर से इस पर कोई कार्यवाही नहीं हुई और एक आर्य समाज के अतिरिक्त किसी से उत्तर तक प्राप्त नहीं हुआ।

अब अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार दशांश की राशि तथा आर्य मर्यादा का शुल्क और आर्य समाजो के नाम साधारण सभा द्वारा लगाई गई वेद प्रचार की राशि 15 जनवरी 86 तक सभा कार्यालय मे प्राप्त हो जाना अत्यावश्यक है। उसके अभाव में उन समाजो के प्रतिनिधि महानुभाव सभा के साधारण वार्षिक अधिवेशन में भाग न ले सकेंगे। मुझे आशा है कि आर्य समाजों के अधिकारी महानुभाव सभा के नियमो के अनुसार किए गए मेरे इस निवेदन पर अवश्य ध्यान देकर यथा समय कार्यवाही करने की कृपा करेंगे।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

15 दिसम्बर 1985 रविवार को संक्रान्ति पर्व के उपलक्ष में स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना के तत्वावधान में श्रीमती कमला आर्या जी के निवास स्थान म. न 350 गली शती सूदां (लुधियाना) मे पारिवारिक सत्संग हुआ। जिसमें लुधियाना नगर की अन्य दूरस्थ [illegible], सराभा नगर आदि के अतिरिक्त समीपस्थ स्थानो से भारी संख्या मे बहने सम्मिलित हुई।

इस अवसर पर श्रीमती फूला गुप्ता अध्यापिका आर्य गर्ल्ज हा. सै. स्कूल तथा सदस्य स्त्री आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार का मनोहर और सार गर्भित प्रवचन हुआ जिसमें उन्होने सत्यार्थ प्रकाश के कुछ अंशों के सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुए यह बताया कि शिक्षा की विधि कैसी होनी चाहिए। शुभ और अशुभ कर्मों की पहचान पर प्रकाश डालते हुए महर्षि दयानन्द द्वारा बनाए गए विचार बहनों के सामने रखे और शुभ कर्म करने पर बल दिया।

इस सत्संग का आस-पास की बहनों पर बहुत विशेष प्रभाव पड़ा। सत्संग हर प्रकार से सफल रहा।

—निर्मला बेरी
मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस हम क्यों मनाएं

लेखक—श्री पं. सत्यदेव जी वेदालंकार जालन्धर

किसी भी महापुरुष का बलिदान दिवस एक महान् प्रेरणा का स्रोत होता है। राष्ट्र, धर्म या जाति किसी का भी विकास बिना बलिदान के नहीं होता। बलिदान दिवस मनाना ही चाहिए। बलिदान ही जातियों को जीवन देते हैं, राज्य देते हैं, स्वतन्त्रता देते हैं और ऐश्वर्य देते हैं। इतिहास इन उदाहरणों से भरा पड़ा है। हमारे पंजाब मे गुरु अर्जुन देव जी से लेकर गुरु गोबिन्द सिंह जी के अभूत पूर्व बलिदानों ने ही वस्तुत: सिख धर्म को राज्य की बख्शीश दी। वे सम्भाल नहीं पाए यह और बात है। पर बलिदान की भावना इस पन्थ का अटूट अंग बन गई। सन् 1947 की भयंकर मार-काट में इस भावना के अनेक उदाहरण मिले।

महात्मा गांधी के बलिदान ने कांग्रेस को तीस वर्ष के लगभग राज्य का उपहार दिया और अब श्रीमती इन्दिरा गांधी के बलिदान ने उस उपहार में अनेक वर्षों की वृद्धि कर दी। जब पंजाब के हिन्दू—'त्राहि माम्—त्राहि माम्'' की पुकार लगा रहे थे, उस पुकार के सुनने की शक्ति किसी में दिखाई नहीं देती थी, भारत की इस शक्ति शालिनी देवी ने शेर की गुफा में घुस कर अन्याय हिंसा-अत्याचार की शक्तियों का उन्मूलन किया। उसे पता था कि ये शक्ति का अवश्य प्रहार करेंगी। कांग्रेस की अभूत पूर्व विजय उस ही बलिदान का परिणाम है।

बलिदान कभी निरर्थक नहीं जाते। देश की स्वतन्त्रता के लिए दिए गए बलिदानों की कथा अपने आप मे एक अलग पवित्र प्रसंग है। ऋषि दयानन्द के विचारों का प्रचार प्रसार भी बलिदानो की मांग करता रहा। तन-मन-धन के बलिदानों का तो अन्त ही नहीं रहा। पर प्राणों के बलिदान भी थोड़े नहीं हुए। एक गौरवपूर्ण परम्परा स्थापित हुई। प. लेखराम, स्वा. श्रद्धानन्द, महाशय राजपाल—यह परम्परा बहुत लम्बी है। किसका नाम लिया जाए, किसका छोड़ा जाए। आज भी उस ही भावना से अनुप्राणित होते हुए गोलियों और धमकियों की बौछाड़ मे भी पंजाब में, लाला जगत नारायण और उनके सुपुत्र श्री रमेश चन्द्र ने अपनी बात कहने का साहस किया। लाला जगत नारायण का परिवार तथा श्री वीरेन्द्र जी भी अनुपम साहस से, यह जानते हुए भी कि उग्रवादियों की गोलियां अभी तक ठण्डी नहीं पड़ीं, कटु यथार्थ को लगातार प्रगट करते रही हैं।

स्वा. श्रद्धानन्द का बलिदान एक अद्भुत बलिदान था। वह बलिदान राज्य के लिए, शान्ति के लिए, धरती के लिए, और धन के लिए नहीं था। वह बलिदान धर्म के अन्धविश्वास अन्धी श्रद्धा द्वारा लगाई आग में एक आहुति था। धर्म के अनेक रूप हैं। एक रूप बड़ा प्यारा है, बड़ा मीठा है, बड़ा सुन्दर है। पर जब अन्धी श्रद्धा से धर्म एक खूंखार शेर का रूप धारण कर लेता है तो उसकी खून की प्यास बुझती ही नहीं। वर्तमान युग मे ईरान का खोमैनी—एक सन्त—इस भयंकर प्यास का ज्वलन्त उदाहरण है। ईराक-ईरान के लाखों बच्चों को खाकर भी यह भूख-प्यास नही मिटी।

ऋषि दयानन्द ने सारी आयु विश्व के सम्पूर्ण धर्मों की अन्ध श्रद्धा के विरुद्ध प्रचण्ड संघर्ष किया। वे किसी धर्म के विरुद्ध नहीं थे, न हिन्दू धर्म के, न इस्लाम के, न ईसाईयत के, वे केवल तर्क और विज्ञान की कसौटी से सब को परखने का प्रयास करते थे। मनुष्य जाति को यही सिखाना चाहते थे कि अपने और पराए सब धर्मों को तर्क और विज्ञान की कसौटी पर परखने—खोटा खरा स्वयं पता लग जाएगा। यही विरासत वह आर्य समाज को दे गए हैं। इसी कठिन मार्ग में उन्होंने अपना भी बलिदान दिया और आर्य समाज के लिए भी बलिदान का मार्ग प्रशस्त किया।

आज हम स्वा. श्रद्धानन्द के बलिदान का पवित्र स्मरण करते हैं। पर उनके कार्य और संदेश के विषय में क्यों मौन हैं।

महापुरुषों का जीवन बहुपक्षी होता है। महान् आदर्शों की प्रेरणा से वे समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करते हैं। स्वा. श्रद्धानन्द ने भी वैदिक धर्म प्रचार, शिक्षा, अछूतोद्धार, शुद्धि, स्वतन्त्रता आन्दोलन आदि अनेक प्रवृत्तियों में प्रमुख नेता के रूप में पूरे तन और मन से सम्पूर्ण भाग लिया। यद्यपि इन सब कार्यों का बड़ा महत्व है तथापि शिक्षा गुरुकुल का महान् परीक्षण है, जिसमें उनके जीवन की बलि दी गई तथा शुद्धि आन्दोलन जिसने उनके जीवन की बलि ले ली, दो ऐसे कार्य थे, जिन्होंने स्वा. श्रद्धानन्द को मूर्धन्य नेताओं की श्रेणी से लाकर खड़ा कर दिया।

4 मार्च 1902 को जब हरिद्वार में गाड़ी से उतर कर 24 ब्रह्मचारियों तथा कुछ साथियों के साथ हाथ में ओ३म् का ध्वज लिए महात्मा मुन्शीराम जी गुरुकुल की स्थापना को चले तो उनके क्या-स्वप्न होंगे। कनखल के पास से गंगा की रेती में उतर कर फिर बेर और बेरी के जंगलों में पगडण्डियों द्वारा चल कर, जंगल के बीच थोड़ी-सी साफ की भूमि पर बने छप्परों में सबने परिवार रूप में निवास प्रारम्भ किया तो एक नए युग का सूत्र पात हुआ। आर्य समाज में अमित उत्साह था। देखते-देखते भारत-भर में गुरुकुल खुले और धूम मच गई।

गुरुकुल का जीवन विकसित होता गया। शास्त्र प्रधान शिक्षा, हिन्दी माध्यम, ब्रह्मचर्य का सादा और कठोर जीवन, गुरु शिष्य सहवास: यह सब क्रान्तिकारी परिवर्तन समझे गए। परिवर्तन भी क्रमश: होते गए। पहले गुरुकुल सरकारी सम्बन्ध से स्वतन्त्र थे। स्वतन्त्रता के बाद सरकार से स्वीकृति और धन दोनों मिले। अब तो लाखों रुपया वर्ष में खर्च करने वाला विश्वविद्यालय बन गया। विश्वविद्यालय तो सरकारी पद्धति से चलेगा। न गुरुकुलीय जीवन रहा न शिक्षा सिद्धान्त। एक छोटा सा 250 के लगभग विद्यार्थियों का विद्यालय अवश्य गुरुकुलीय प्रणाली का बहुत कुछ पालन कर रहा है। इसमें प्राय: संस्कृत प्रधान विषयों के गरीब विद्यार्थी ही रहते हैं। अच्छे धनी परिवारों के बच्चे तो विश्वविद्यालय में ही हैं।

सरकारी सहायता से विकसित संस्था होने पर झगड़े भी प्रारम्भ हो गए प्रत्येक पके फलों का अभिलाषी है। गुरुकुल का प्रारम्भ और विकास पंजाब के लोगों ने किया। अब वहां न पंजाबी विद्यार्थी है न पंजाबी अध्यापक एक तरह से पंजाब अब इस सारे परीक्षण से बाहर निकल गया है।

आर्य समाज का तो स्वप्न था कि गुरुकुल आर्य समाज का कवच होगा। आर्य समाज पर किए गए सब विधर्मी और विज्ञान के क्षेत्र के प्रहारों का उत्तर गुरुकुल से प्राप्त होगा। पर अब ऐसा कुछ नहीं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का दूसरा महान् कार्य शुद्धि था जिससे हिन्दू जाति ह्रास से बच जाती। इसमें सन्देह नहीं कि आर्य समाज की अनेक संस्थाएं यह कार्य चला रही हैं। अखबारों में भी उत्साह वर्धक समाचार आते रहते हैं। पर परिणाम तो निराशाजनक ही मिलते हैं।

पंजाब के आर्य समाज के प्रबल प्रचार के होते हुए भी जनसंख्या की दृष्टि से लगातार कमी आ रही है। पिछले पचास वर्षों में पंजाब की ग्रामीण जनता प्राय; सिख मतावलम्बिनी हो गई है। नीचे कुछ आंकड़े इस बात को स्पष्ट करते हैं :—

सन् 1981 की जनगणना से यह कुछ तथ्य सामने आए हैं।

पंजाब की जन-संख्या—13,55 मिलियन से बढ़ कर 16.78 मिलियन हो गई। वृद्धि 23189 प्रतिशत।

सिख—8.15 मिलियन से बढ़ कर 10.78 मिलियन हो गए। वृद्धि 24,8 प्रतिशत।

हिन्दू—5,08 मिलियन से बढ़ कर 6.20 मिलियन हो गए। वृद्धि-21-88 प्रतिशत।

हिन्दू पहले पंजाब में 37.54 प्रतिशत थे। अब 36-93 प्रतिशत रह गए है।

हिन्दुओं ने ग्रामीण जनता की अपेक्षा की। प्रचार नहीं किया। परिणाम यह है कि—

सिक्ख गावों में—8.65 मिलियन
शहरों में—1.54 मिलियन
हिन्दू गावों में=2.98 मिलियन
शहरों में—3.21 मिलियन

ऊपर दिए गए तथ्य इन्डियन एक्सप्रेस पत्रिका के 23-7-85 के अंक से लिए गए हैं। इन तथ्यों से पता लगता है कि हिन्दू जनसंख्या का लगातार ह्रास हो रहा है।

यह जानना भी रुचिकर होगा कि पंजाब में मुसलमान जनसंख्या-1.18 मिलियन से बढ़ कर 1, 6 मिलियन हो गई है। वृद्धि 46,87 की हुई।

इस समय स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा हंसराज के पंजाब में कोई प्रमुख सर्व मान्य हिन्दू नेता नहीं, प्रशासन तथा जन-जीवन में हिन्दुओं का महत्व लगातार कम हो रहा है। वह दिन दूर नहीं जब पंजाब का हिन्दू द्वितीय श्रेणी का नागरिक बन कर रह जाएगा।

हम किस हौंसले से स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाएं।

स्वामी श्रद्धानन्द जीवन गाथा

लेखक—श्री रणवीर भाटिया लुधियाना

सुनो सुनो ऐ आर्य बन्धुओ सुनाता हू तुम को अमर कहानी ।
अमर कहानी है महा पुरुष की—पाया न हमने जिसका सानी ॥
नानक चन्द था बहादुर अफसर श्री कन्हैया लाल का बेटा,
मशहूर डाकू सग्राम सिंह ने, जिस के आगे था माथा टेका ।
उसकी बहादुरी के कारनामे सुने हमने लोगो की जबानी ॥
सुनो सुनो——

उसके हा हुआ बाद सा बेटा, मुन्शी राम रखा जिसका नाम ।
बचपन बीता लाड प्यार मे, रईसीपन ने बिगाडी जवानी ॥
शराब मीट के थे वह आदी पढाई मे भी न था लगता दिल ।
ऐसी हालत देख उनकी—बढ गई पिता की बेहद परेशानी ॥
सुनो सुनो

1877 मे शादी हो गई, बनी धर्म परायण पत्नी शिव देवी ।
उसके भाई देवराज थे, कन्या महा विद्यालय के थे बानी ॥
विवाह के बाद कुछ मोड आया, छोडा मीट और शराब ।
पढाई मे लगाया मन पूरा, 1888 मे बने वकील दिवानी ॥
सुनो सुनो——

मुन्शी राम थे मूर्ति पूजक रामायण की कथा के थे वह प्रेमी ।
एक दिन मन्दिर जाने न दिया, दर्शन कर रही थी रेवा की रानी,
भगवान के घर भेदभाव देख, नास्तिक बन गए मुन्शी राम ।
रूचि हो गई अग्रेजी सभ्यता की ओर, ईसाई बनने की थी ठानी ॥
सुनो सुनो——

महर्षि दयानन्द अपने मिशन पर आये हुए थे बरेली मे ।
मुन्शी राम गए दर्शन करने बदली फिर मानस पटल की कहानी ॥
मान गया हू प्रभु सत्ता को, फिर भी होता नही विश्वास ।
धीरज रखो मन मे, तुम मानोगे जब होगी कृपा रोहानी ॥
सुनो सुनो ....

फिर आर्य समाज मे प्रवेश किया, किये बडे अद्भुत काम ।
बने प्रधान ऐ, पी, सभा के समाज सेवा मे बीती जिन्दगानी ॥
1901 खोला आर्य गुरुकुल वेद मर्यादा के अनुसार ।
एक ओर गगा बहती शर-ओर दूसरी तरफ नील गिरि रानी ॥
सुनो सुनो——

शीघ्र हो गया मशहूर कागडी, बना फिर विश्वविद्यालय ।
हिन्दी सस्कृत का बना केन्द्र वेद मन्त्र बोले वहा जबानी ॥
पन्द्रह वर्ष तक की निष्काम सेवा, लिया सन्यास 1917 मे ।
श्रद्धानन्द रखा नाम श्रद्धा से, तप और त्याग की बने निशानी ॥
सुनो सुनो——

देहरादून मे कन्या गुरुकुल, दयानन्द जन्म शताब्दी मथरा मे ।
उनके परिश्रम का ही फल है, होती है सबको देख हैरानी ॥
पहुची खबर योरप मे, गुरुकुल है अड्डा, क्रान्तिकारियो का ।
भेजा कमीशन वहा जाच के लिए करने गुरुकुल की निगरानी ॥
सुनो सुनो——

भेजी रिपोर्ट कमीशन ने, श्रद्धानन्द को महा पुरुष बतलाया ।
दर्शन करना चाहते हो ईसा क, करलो दर्शन श्रद्धानन्द महानी ॥
1919 में पहुचे दिल्ली मे, मचा हुआ था जहा हाहाकार ।
था आर्डर गोली मारो, करे जो जलूस निकालने की नादानी ॥
सुनो सुनो......

वह डग न मिदड भभकियो से चलाओ गोली मैंने छाती तानी ।
हुआ न साहस कमाण्डर को न रोक सके जलूस की रवानी ॥
गुरु के बाग सत्याग्रह मे, सिखो की, की उन्होने रहनुमाही ।
पहले ही जत्थे में जेल चले गए, ऐसे थे श्रद्धानन्द सेनानी ॥
सुनो सुनो

हिन्दू-मुसलमान एकता मे, रखते थे, श्रद्धानन्द अटल विश्वास ।
जामा मस्जिद मे पहले हिन्दू थे, उच्चारी जिन्होने वेद वाणी ॥
हिन्दू धर्म के थे शौदाई, हिन्दुत्व पर चोट स्वीकार नहीं ।
हजारो की शुद्धि की उन्होने हिन्दू धर्म मे वापस लानी ।
सुनो सुनो——

अबदुल रसीद था जनूनी मुसलमान उसे यह सब कुछ न भाया ।
धोखा देकर मारी गोली, समाप्त कर दी पवित्र कहानी ॥
शहीदो की नही होती मौत, मर कर भी वह अमर होते हैं ।
अर्थी उठाई लाखो सिरो ने, भाटिया भूलेगी नही कुरबानी ॥

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

द्वारा अपने पुत्रो के लिए विशेष की गई योजना के सम्बन्ध मे प्रचार किया । यदा-कदा उठाई जाने वाली इन आशकाओ को निर्मूल करने के लिए महात्मा जी ने अपनी जालन्धर वाली कोठी और प्रैस आदि भी दान दे दिए ।

गुरुकुल कागडी का इतिहास इस बात का जीता जागता उदाहरण है कि एक सच्चे आचार्य की तरह महात्मा मुशीराम जी ने विद्यार्थियो की देखभाल ही नही की, अपितु हर प्रकार से योगदान दिया । प्रविष्ट विद्यार्थियो के चरित्र बृद्धि और विद्या का सर्वांगीण विकास कर के भारत को योग्य स्नातक दिए । अपने अन्तेवासियो को केवल आचार्य का स्नेह ही नहीं दिया, इसके साथ माता-पिता जैसा प्यार भी किया । बाद मे उन जैसे निष्ठावान आचार्य अध्यापक न मिलने के कारण ही गुरुकुल योजना पूर्ण सफल न हो सकी । अपने विद्यार्थियो को राष्ट्रीयता और भारतीयता का पाठ पढा कर सच्चा नागरिक बनाया । गुरुकुल के जीवन को समाजवाद का एक अच्छा रूप दिया । और उसे क्रियात्मिक सिद्ध करके दिखाया । अपने विद्यार्थियो से परिश्रम करा कर दक्षिण अफ्रीका के आन्दोलन के लिए गाधी जी के पास धन भेजा । जिस से गाधी जी बहुत प्रभावित हुए और भारत लौटने पर वे गुरुकुल कागडी आए, वहा की जीवन पद्धति से प्रभावित हो कर उन्होने उसके आधार पर अपने आश्रम की स्थापना की । महात्मा मुशीराम जी ने ही तब बाबू गाधी को महात्मा गाधी की उपाधि से विभूषित किया ।

महात्मा मुशीराम जी श्रद्धा की साक्षात मूर्ति थे तभी तो महर्षि के विचारो को स्वीकार करने के पश्चात उन को अपने जीवन मे पूर्ण रूप से हर पग पर तथा प्रत्येक क्षेत्र म निभाया । कहा वकालत का व्यवसाय और कहा स्वाध्याय के बल पर अपने शास्त्रो का गहरा ज्ञान उन के 'धर्मोपदेश जहा जीवन के साकार रूप थे वहा स्वय प्राप्त शास्त्र योग्यता को भी स्पष्ट करते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उर्दू, हिन्दी, अग्रेजी मे अनेक पुस्तकें लिखी । हर अवसर पर सत्य को अपना कर श्रद्धा को साकार किया और अपने सन्यास आश्रम के श्रद्धानन्द नाम को सर्वथा चरितार्थ किया ।

भारतीय स्वाधीनता सग्राम को सबल करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने केवल अपने विद्यार्थियो को ही तैयार नही किया, इस के साथ गुरुकुल का कार्य आचार्य रामदेव जी आदि को सौंप कर स्वय समाज सुधार और स्वाधीनता सग्राम मे जुट गए । मार्च 1919 मे दिल्ली के अन्दर जो अभूतपूर्व जलूस निकला, उस मे सगीनो के सामने छाती तान कर आपने अपनी निर्भीकता और अपने राष्ट्रीय रूप को भी प्रस्तुत किया । जामा मस्जिद मे उन के गौरव और अभूत-पूर्वता को उजागर करता है । 13 अप्रैल 1919 को जलियावाला बाग, अमृतसर मे भारतीय स्वाधीनता सग्राम की अमर घटना घटी और अग्रेजो ने दमन चक्र से सब को त्रस्त करने मे कोई कसर न छोडी । तब उस समय मे उस महान वीर ने अमृतसर मे ही काग्रेस का सफल अधिवेशन करके स्वाधीनता सग्राम की स्थिति को और भी अधिक सुदृढ किया । भारतीय काग्रेस के इतिहास मे प्रथम बार एक स्वागताध्यक्ष के रूप मे अपना भाषण हिन्दी भाषा मे देकर जहा जनता के दिल की बात जनता की भाषा मे रखी, वहा राष्ट्र भाषा को उस का सही स्थान दिया । इतना ही नही अपितु घाटा सह कर भी अपने उर्दू के पत्र सद्धर्म को हिन्दी माध्यम मे बदल दिया । इसी प्रकार गुरु के बाग के आन्दोलन मे भाग लेकर अपनी निडरता, सन्यास स्थिति और अन्याय के प्रति टक्कर लेने की अदम्य भावना को चरितार्थ किया ।

एक बार डाकुओ ने गुरुकुल को लूटने की पहले से ही चेतावनी दे दी, पुनरपि वह निर्भीक सन्यासी अकेला ही उस समय गुरुकुल की परिक्रमा करता रहा । इस प्रकार स्वा श्रद्धानन्द जी के जीवन मे पग-पग पर हम देखते हैं कि उन्होने महर्षि दयानन्द की भावनाओ को मूर्त रूप देने के लिए अपने गुरु के गुणो का अनुकरण एक सच्चे शिष्य की तरह किया । श्रद्धा से सत्य को धारण करना । अर्थ का पूर्णत चरितार्थ करके दिखाया । उन का महान् बलिदान इस का प्रमाण है कि सकीर्णता की भावनाए क्या-क्या परिणाम उपस्थित करती है ? कहा तो दिल्ली के उस जलूस मे बिना भेदभाव के मुसलमानो ने भी भाग लिया । और जामा मस्जिद मे उन का भाषण कराया तथा श्रद्धा से सुना और कहा उसी महान् आत्मा की हत्या का षडयन्त्र ? स्वामी श्रद्धानन्द जी का सारा जीवन श्रद्धा का प्रत्यक्ष प्रमाण है, हर व्यक्ति के लिए महान् बनने की प्रेरणा का स्रोत है । उन के इन गुणो को धारण करना ही उन के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि है ।

हम कहां हैं ?

लेखक—श्री योगेन्द्रपाल जी सेठ,
उप-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

महर्षि दयानन्द ने 1875 में बम्बई मे प्रथम आर्य समाज की स्थापना इस विचार से की थी कि मेरे पश्चात् मेरे मन्तव्यों का प्रचार यह संस्था नियमानुसार करती रहेगी । आर्य समाज कोई नया पन्थ, सम्प्रदाय अथवा धर्म नहीं है, यही बात महर्षि ने अपने स्वमन्तव्या—मन्तव्य प्रकाश मे लिखी है, "मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हू, जो तीन काल में सब को एक-सा मानने योग्य है । मेरा कोई नवीन मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है... ....."

आर्य समाज के लिए कार्य क्षेत्र बहुत विशाल है । आर्य समाज का कार्य कोई छिपा हुआ नहीं है । प्रत्येक आर्य समाज की दिवारो पर इस द्वारा प्रकाशित पुस्तको तथा विज्ञापनो के ऊपर लिखा हुआ होता है । "कृण्वन्तो विश्वमार्यम अर्थात हम सकल जगत को आर्य-श्रेष्ठ-मनुष्य बनाए ।

महर्षि दयानन्द जी का जो लक्ष्य था वह था 'सार्वभौम उन्नति' केवल हिन्दू या हिन्दुस्तान नही था । उस का आधार था "सत्य तथा यह ससार का नैसर्गिक नियम भी है कि, "सत्यमेव जायते नानृतम् अर्थात् सत्य की ही सदा विजय होती है झूठ की नही । आर्य समाज की आधारशिला भी 'वेद रूपी सत्य ज्ञान पर ही है । इसके लिए 'सत्यार्थ प्रकाश रूपी प्रकाश-स्तम्भ आर्य समाज को दिया गया ।

'वेद की ओर चलो' महर्षि ने आर्य समाज को एक मार्ग दिखलाया जो सारे ससार मे फैले मत-मतान्तरो तक पहुचने का एक सरल मार्ग है । आर्य समाज की नियमावली मे यही तृतीय नियम है ।

'वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।

परन्तु ऐसा दिखाई देता है कि आर्य समाज के अनुयायी अपने मार्ग से भटक गए हैं । आज यदि समस्त भारत की आर्य समाजो या प्रतिनिधि सभाओ की कार्यकारिणीयो के कार्य का निरीक्षण किया जाए तो ऐसा प्रतीत होगा कि 90 प्रतिशत से भी अधिक समय प्रबन्धकों के आपसी झगड़ो या सम्पत्ति के झगड़ो पर लगा होगा । किसी व्यक्ति को आर्य समाज मे लाने के लिए एक व्यक्ति को कितनी प्रेरणा तथा यत्न करना पड़ता है परन्तु जो गुट या अधिकारी का किसी कारण वश आपसी मतभेद हो जाना है या अपने अधिकारपत्य से वंचित हो जाता है तो वह समाज से अपने सम्बध ही मानो तोड़ लेता है । वह समाज मे आना ही बन्द कर देता है ।

कई बार उसने वेद के इस मन्त्र की व्याख्या सुनी होती है, और कईयों ने तो स्वय इस पर भाषण भी दिए हैं ।

'मधुमन्मे निक्रमण मधुमन्मे परायणम्')अथर्व, 1-34-3)

भाव यह कि जब हमारी मित्रता होती है तब हम मिठे वचनो का तो प्रयोग करते ही हैं परन्तु जब हमारी यह मित्रता किसी स्वार्थ वश टूटती है तो हम कड़वे शब्दों का प्रयोग करते हैं तथा मेल-मिलाप भी बन्द कर देते हैं परन्तु वेद कहता है ऐसा नही तुम जब किसी से सम्बन्ध विच्छेद करते हो तब भी अपनी भावनाओ को मिठी वाणी से व्यक्त करो, ताकि पुन तुम्हारी भूलो का सुधार हो सके ।

आर्य समाज के नियम तथा मन्तव्य तो बहुत ऊचे हैं परन्तु आधुनिक आर्य समाजियो का आर्यत्व बहुत शिथिल हो गया है क्योकि इसकी सम्पत्ति को देख कर लोकेषणा के लोभ मे ऐसे लोग इस मे घुस आए हैं जिन्हे सध्या हवन के मन्त्र भी नही आते परन्तु किन्ही कारणवश प्रबन्ध के बड़े ऊचे-2 स्थानो पर स्थित हो जाते हैं । जिस के कारण आर्य समाज का जो मुख्य कार्य वेद प्रचार तथा अन्ध-विश्वासो के विरुद्ध जो मुख्य शस्त्र 'तर्क' है उस का प्रचार रुक जाता है । इसी कारणवश हम सिद्धान्तो मे बहुत नीचे गिर रहे हैं ।

हम केवल अपने धर्म मन्दिरो तक ही सीमित हो गए हैं पंजाब में कोई भी ऐसी आर्य समाज नहीं है, जो अपना प्रचार का कार्य आर्य समाज मन्दिर के बाहर किसी चौक या चौराहे मे करता हो । इस ओर प्रान्तीय सभाए भी ध्यान नहीं देती । आर्य समाज आज भी प्रचार के माध्यम से दूसरो से बहुत पिछड़ा हुआ है । उस ने आधुनिक यन्त्रो का प्रचार के लिए प्रयोग आरम्भ नहीं किया ।

मानव की परिभाषा करते हुए, महर्षि दयानन्द जी ने इस प्रकार लिखा है, कि 'मनुष्य वही है, जो मननशील हो तथा स्वात्मवत् दूसरों के सुख दु.ख तथा हानि लाभ को समझें' परन्तु आर्य समाज में यह प्रथा धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है । सत्सग में आने पर ही किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में पता चलता है, कि वह तो गत दो सप्ताह से बीमार था । परन्तु हम तो उस का घर भी नहीं जानते, उस के घर के अन्य लोगों के साथ हमारा कोई सम्पर्क नही है क्योंकि हम अपने परिवार के अन्य सदस्यो को तो कभी साथ लाए ही नहीं अपने घर मे कभी सत्सग करवाया ही नहीं । तो समाज के अन्य सदस्यो को आप के रोगी होने का कैसे पता चलेगा । मुझ कई ऐसे लोगो का पता है जो बड़े कट्टर आर्य समाजी थे, स्थानीय तथा प्रान्तीय स्तर पर बड़े अधिकारी भी आर्य समाज के रहे परन्तु जब उन्होंने अपनी आंखें बन्द की तो उस परिवार से आर्य समाज का नाम ही मिट गया । उनके आर्य समाज के मित्रों को, उनकी मृत्यु के पश्चात् अफसोस प्रकट करने में बड़ी कठिनाई आती है, क्योंकि उस के परिवार के साथ आर्य समाज का कोई सम्पर्क नहीं होता । परन्तु उस व्यक्ति ने सारा जीवन भर वेद की इस सूक्ति 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' को कई बार बोला होता है, लिखा होता है, भाषण दिए होते हैं परन्तु 'चराग तले अन्धेरे वाली' बात होती है, वह अपने परिवार को आर्य नहीं बना सका होता । जिस के परिणाम स्वरूप उस के अन्तिम सस्कार भी वैदिक रीति से नहीं हो पाते ।

(क्रमश)

स्वामी श्रद्धानन्द

लेखक—श्री कवि कस्तूर चन्द 'घनसार'
कवि कुटीर पीपाड़ शहर (राज)

श्रद्धा के सदन, श्रद्धा-पुञ्ज थे श्रद्धालु देव,
श्रद्धा भर चले स्वामी, श्रद्धा के अभ्यासी थे ।
बता गए श्रद्धा को है, श्रद्धा की प्रतिमा एक,
डटे श्रद्धा-क्षत्र मे जो श्रद्धा के प्रकाशी थे ॥
अभयोपदेशक थे, वैदिक प्रचार किए,
भव्य-सत्य-भावना के परम विकासी थे ।
सीना तान गोलियो को, सही सीने पर स्वामी ।
वही एक आर्य सु श्रद्धानन्द सन्यासी थे ॥
वीतराग-सन्यासी विवेचक सत्य के थे,
खोल-खोल समक्ष बताये धर्म सही को ।
ईसाई, मुस्लिम, पन्थवादी-भ्रम जालियो को,
वैदिक निनाद से, जगाए नींद गहीको ॥
शेर-सी दहाड़ कर सामने रहते डटे,
खोलते पोपों की पोलें, देखते थे मही को ।
होके बलिदान इसी श्रद्धा के मैदान बिच,
पूर्ति कर गये स्वामी, समस्या शेष रही को ।
उत्कृष्ट स्फूर्ति का स्रोत ये बहाये एक,
उत्साह और साहस के श्रद्धामय स्वामी थे ।
निर्भीकता, सचेत बल-वीरता के पुञ्ज बड़े
भारत का नव पथ प्रदर्शक—स्वामी थे ।
सामाजिक धार्मिक सुधारक दिव्य देव,
राष्ट्र निर्माता भव्य-भावके सुकामी थे ।
कर्मवीर धर्मवीर, स्वतन्त्रता के उपासक
इसी पे हुए थे बलिदान, सत्य गामी थे ॥
समस्त संसार को जो-देखना चाहते आर्य ।
नि स्वार्थ उत्थान कर देश में दिखाये थे ।
जीवन को आदर्श बनाना लक्ष भावना थी ।
सर्वोत्कृष्ट मार्ग को करके ही बताये थे ॥
असीम साहस सत्य की थी प्रतिमा एक,
कहाए सन्यासी वही प्रकाश बहाए थे ।
गुरुकुल कांगड़ी के गौरव दिखाए चले,
अमर शहीद 'घनसार' यश गाए थे ॥

चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा

प्रकाशित एवं प्रचारित साहित्य

आर्य प्रतिनिधि सभा का चमूपति साहित्य विभाग है जो सुचारु रूप से चल रहा है। बहुत सी पुस्तकें सभा के पास छपी पड़ी हैं मैं चाहती हू कि यह साहित्य घर-घर पहुचे परन्तु यह कार्य आर्य समाजों के सहयोग के बिना नहीं हो सकता। सभी आर्य समाजें यह साहित्य मगवाए और जनता में बाटे अथवा सस्ते मूल्य पर दें। सभा भी इस सारे साहित्य पर विशेष छूट अर्थात् कमीशन देगी। अपना आर्डर शीघ्र भेजें। निम्न पुस्तकें सभा के रिकार्ड में विद्यमान हैं। जिनकी सूचि नीचे दी जा रही है।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

नाम पुस्तक	मूल्य
1. आर्य कीर्तन भजन माला (हिन्दी)	1—00
2. ग्लिम्पसेस फ्राम सत्यार्थ प्रकाश (अग्रेजी)	3—00
3. पंजाब राज्य आर्य सम्मेलन भजनावली	0—50
4. स्वामी श्रद्धानन्द (अग्रेजी)	5—00
5. भारत की हरिजन समस्या और आर्य समाज का दृष्टिकोण (हिन्दी)	0—50
6, आधुनिक हरिजन समस्या (हिन्दी)	0—75
7 नीहारिकावाद और उपनिषद् (हिन्दी)	0—25
8, सिख गुरु अते आर्य समाज (पंजाबी)	2—50
9, ग्रन्थ साखी (पजाबी)	2—00
10 पोलिटीकल टेस्टामेंट आफ स्वामी श्रद्धानन्द (अग्रेजी)	1—00
11. आर्य समाज स्थापना शताब्दी 1975 (हिन्दी)	1 - 25
12 वीतराग स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज (हन्दी)	1—00
13. श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी और उनका दिव्य सन्देश (हिन्दी)	0—25
14 आर्य समाज का दिग्दर्शन (पजाबी)	2—00
15 वेद और उसका प्रादुर्भाव	0—60
16 (आचार्य रामदेव जी) मेरी आत्मकथा के कुछ पृष्ठ	1—00
17 हमारी मातृभाषा केवल हिन्दी (पजाबी)	0—20
18 आर्य समाज का दिग्दर्शन (पजाबी)	2—00
19 यजुर्वेद अध्याय 32 का स्वाध्याय आर्य मर्यादा	1—00
20, आर्य मर्यादा का श्रावणी विशेषांक	2—00
21 भागवत—खण्डनम	1—00
22 आर्य ज्योति साप्ताहिक का ऋषि निर्वाण अंक	2—00
23 सोशल रिकान्स्ट्रक्शन बुद्धा एण्ड दयानन्द (अग्रेजी)	2—25
24 आर्य मर्यादा साप्ताहिक (स्वतन्त्रानन्द संस्मरणांक)	1—00
25, आर्य प्रकाशन ट्रैक्ट माला	2—00
26, शान्ति का सच्चा रास्ता	0 - 25
27 पजाब का आर्य समाज	4—00
28 श्री स्वामी श्रद्धानन्द उपदेश माला (ट्रैक्ट)	0—25
29, सूर्य आधी (हिन्दी)	0—75
30. सूर्य आधी (उर्दू)	0—75

प. चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के महानुभावों की सेवा में

जैसा कि आप जानते हैं कि पजाब की वर्तमान परिस्थितियो में हमे वह उपदेशक नहीं मिल रहे, जिनकी हमें आवश्यकता है। इसलिए हमारे प्रचार में कुछ शिथिलता आ रही है, परन्तु आपको यह सूचित करते हुए हमें हर्ष हो रहा है कि आर्य समाज के पुराने सेवक श्री मथुरादास जी जो अब श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती हैं, उन्होंने अपनी सेवाए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को दे दी हैं। वह प्रत्येक आर्य समाज में जाकर प्रचार करने को तैयार हैं, जो उन्हे बुलाए। इसलिए जो जो आर्य समाजें प्रचार कराना चाहती हैं, वह भी स्वामी जी महाराज से पत्र व्यवहार करें। उनका पता निम्न प्रकार है—

श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती
2399 गली न 5 नवाकोट, अमृतसर

जो आर्य समाजें उन्हे बुलाए वह सभा के कार्यालय को भी सूचित कर दें। इसी के साथ यह भी निवेदन है कि स्वामी जी महाराज जहा भी जाए, उनका पूरा सम्मान होना चाहिए। और उनके निवास का सन्तोषजनक प्रबन्ध होना चाहिए। प्राय देखा गया है कि आर्य समाजें अपने सन्यासियो और उपदेशको का वह सम्मान नहीं करती, जो करना चाहिए। इसलिए वह कई बार निराश हो जाते हैं। इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

शुद्धि समाचार

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा पटना के द्वारा चलाए गए धर्म रक्षा महाभियान के अन्तर्गत आर्य समाज मठ-गुलनी (नवादा) के तत्वावधान में दिनाक 3-11-85 को 16 (सोलह) ईसाई बन्धुओ ने स्वेच्छा से पुन हिन्दू धर्म को अगीकार कर लिया है लगभग 45 वर्ष पूर्व इन लोगो ने आर्थिक एव सामाजिक कष्ट के चलते ईसाई धर्म को स्वीकार कर लिए था, श्री सत्यदेव आर्य मरुत ने पौरोहित्य का कार्य सम्पन्न किया। शुद्धिशुदा बन्धुओ को नवीन वस्त्रादि दिए गए इस अवसर पर आर्य समाज कौआकोल, पकडी वरावा नेमदारगज, अकबरपुर, नवादा आर्य समाज के सैकडो आर्यों ने शुद्धि महोत्सव मे भाग लिया, लगभग दो हजार लोग इस शुद्धि कार्य को देखने के लिए उमड पडे थे, श्री सत्यनारायण ब्रह्मचारी श्री भिखारी पासवान आर्य, श्री मोती साव आदि लोगो की कर्मठता के चलते यह कार्य सम्पादित हुआ।

—यमुना प्रसाद
मन्त्री

आर्य समाज फतेहाबाद अमृतसर में पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज फतेहाबाद (पजाब) के तत्वाधान म भव्य पारिवारिक सत्सग का आयोजन हुआ जिस म युवको स्त्रियो, बच्चो, बूढ़ो हिन्दू तथा सिखो सभी ने बडी श्रद्धा व प्रेम से भाग लिया। आर्य युवक परिषद् पजाब के प्रधान श्री ओम् प्रकाश आर्य ने अपने प्रवचन मे लोगो को आर्य बनने एवम् वेद मन्त्र याद करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर पच्चास व्यक्तियो ने ईश्वर स्तुति के वेद मन्त्र जबानी याद करने एवम रोजाना उसका पाठ करने का व्रत लिया।

—बृज मोहन श्रृगारी
मन्त्री

—

(८ पृष्ठ का शेष)

आवरण गिरा जगती की सीमा
शेष हुई।
अब पहुच नही तुम तक इन
हाहाकारों की ॥
नीचे की महफिल उजड गई,
ऊपर कल से।
कुछ और चमक उठेगी सभा
सितारो की ॥

70 वर्षों तक, अपने साथी सितारो से दूर रह कर, मानव-सेवा-सलग्न और अज्ञानान्धकार को मिटाने वाला वह सत सूरमा-नक्षत्र अब भौतिक रूप से विलीन हो चुका था। वह ऐसा सन्त जिनके विषय मे सन्त तुलसी दास ने कहा है— सत हृदय नवनीत समाना ! किहेतु कवनि पर कहि न जाना ॥ निज परिताप द्रवै नवनीता पर पर तापन पुनीता। धन्य है उस प्रकाश पुञ्ज का धन्य है उस परम सत को।

डी. ए. वी. शताब्दी समारोह
शोभा यात्रा

आर्य जनता को सूचित किया जा रहा है कि डी ए वी शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में एक विशाल शोभा-यात्रा का शनिवार 15 फरवरी 1986 को भारत की राजधानी दिल्ली मे आयोजन किया गया है। यह शोभा यात्रा प्रात 11 बजे लालकिला मैदान से आरम्भ हो कर चादनी चौक, घण्टाघर, नई सड़क, चावड़ी बाजार, काफी हाउस, अजमेरीगेट, मिन्टो रोड, कनाट सरकस रीगल बिल्डिंग, पार्लियामेंट स्ट्रीट सरदार पटेल चौक, गोलडाकखाना, बिड़ला मन्दिर से होती हुई साय 5 बजे आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर माग नई दिल्ली मे समाप्त होगी।

भारत की समस्त आर्य समाजों, डी ए वी संस्थाओ, स्त्री आर्य समाजो व अन्य आर्य संस्थाओ से प्रार्थना है कि वे अभी से इस आयोजन मे पधारने का निश्चय कर के उस दिन अपने-अपने 'मोटो' एव ओ३म के झण्डे लेकर इस शोभा यात्रा मे अवश्य सम्मिलित हो। यात्रा का विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया जा रहा है। दिल्ली भारत की राजधानी होने से हमें आर्य संस्थाओ एव डी ए वी संस्थाओ की शक्ति का प्रदर्शन करना है।

दिल्ली से बाहर से आने वाले संस्थाओ के प्रतिनिधियो के निवास एव भोजन का प्रबन्ध डी, ए वी शताब्दी समारोह समिति की ओर से किया जाएगा।

भारत की ऐसी कोई भी आर्य संस्था नहीं होनी चाहिए जो कि इस शोभा यात्रा में प्रतिनिधित्व न करे। इस उपलक्ष्य मे किसी भी जानकारी के लिए—श्री दरबारी लाल श्री आर्गेनाइजिंग सैक्रेटरी डी ए वी, कालेज मैनेजिंग कमेटी, चित्र-गुप्त रोड, नई दिल्ली-55 एव जनरल सैक्रेटरी-आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—1 से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

—रामनाथ सहगल

आर्य समाज फगवाड़ा में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

फगवाड़ा, 9 दिसम्बर—स्थानीय आर्य समाज गौशाला रोड के प्रधान महाशय अमृतलाल मुलाटी ने एक भेंट में बताया कि स्थानीय आर्य समाज की ओर से 22-12-85 रविवार को आर्य माडल हाई स्कूल में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द दिवस मनाया जाएगा जिसकी अध्यक्षता स्थानीय शान्ति कमेटी के प्रधान डा देसराज जी करेंगे। इस अवसर पर भारत वर्ष के प्रसिद्ध विद्वान् डा. [illegible] जी शास्त्री एम, ए. पी एच डी धर्म देव जी शास्त्री वेद प्रचार अधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधि सभा, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर अपने विचार रखेंगे। इसी अवसर पर स्थानीय आर्य समाज की ओर से गरीब लोगों को कम्बल बांटे जाएंगे।

—अमृतलाल
प्रधान

दोआबा आर्य हा. सै. स्कूल नवांशहर विजयी

जिला जालन्धर की खो-खो ओपन चैम्पियनशिप के मुकाबले हंसराज स्टेडियम जालन्धर में 10-12-85 को सम्पन्न हुए। जिनमे दोआबा आर्य हा सै स्कूल नवांशहर की टीम ने सन्तपूराम दोआबा हा सै स्कूल जालन्धर की टीम को हरा कर जिला भर मे प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस विजय का श्रेय टीम के कोच श्री वीरेन्द्र सूरी और प्रिंसीपल हरबंश लाल तनेजा को जाता है।

—प्रबन्धक मैनेजर
स्कूल



श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. न. पी.जे.एल. 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 35. 15 पौष सम्वत् 2042 तदनुसार 29 दिसम्बर 1985 दयानन्द 161 अंक प्रति 40 पैसे(वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

तीन प्रकार के बन्धन

लेखक—श्री स्वामी वेदमुनि जी, परिव्राजक
वैदिक सस्थान : नजीबाबाद

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमं श्रथाय ।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ॥

ऋग्वेद 1।24।15।

ऋग्वेद के इस मन्त्र मे तीन प्रकार के बन्धन बताए गए हैं। प्रत्येक मनुष्य इन बन्धनों में बन्धा हुआ है। यदि मनुष्य इन बन्धनों को तोड दे तो मानव-जीवन सफल हो जाए। मानव के जीवन की सफलता का यह एक मात्र रहस्य है।

सभी लोग इस बात को जानते हैं कि बन्धन दुख का कारण होते हैं। मनुष्य ही नही, पशु-पक्षी भी मुक्त विहार करना चाहते हैं वह भी स्वतन्त्र और स्वच्छन्द भ्रमण करना चाहते हैं। इस का प्रमाण यदि आप देखना चाहे तो गाय-भैस, घोडे आदि को देखिए वह खूंटे पर बन्धे हुए बार-बार रस्से को झटका देकर तोड डालने का प्रयत्न करते रहते हैं। कटघर मे बन्द सिंह, बन्दर आदि पशु भी उसमे से निकलने का प्रयत्न करते पाये जाते हैं। और तो और साधारण सा और अत्यन्त क्षुद्र प्राणी चूहा—जब चूहेदान मे बन्द हो जाता है तो उससे निकलने के लिए अथक प्रयत्न करता है। इधर से उधर सम्पूर्ण चूहेदान में भाग दौड मचाता है। काबुक मे बन्द कबूतर और पिंजरे मे बन्द तोता भी कम प्रयत्न नहीं करते। वह भी अनन्त आकाश मे स्वच्छन्द विहार के लिए अत्यन्त लालायित होकर तड़पते और फड़फड़ाते रहते हैं। जब कभी उन्हें निकलने का अवसर मिलता है, उन के पिंजरे और काबुक का मुंह खुलता है तो वह तुरन्त निकल कर उड़ान भरने का प्रयत्न करते हैं।

यह चर्चा यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि बन्धन में कोई भी प्राणी नही रहना चाहता। यदि बन्धन में फस जाता है तो मुक्त होने के लिए 'आपाद् मस्तक' सर से पाव तक प्रयत्न करता है।

किन्तु एक नही तीन-तीन बन्धनो मे और वह भी आपाद् मस्तक, सर से पाव तक जकड़ा हुआ यह मानव प्राणी जिसे ससार का सर्वोत्तम प्राणी कहा जाता है यदि इन बन्धनों से मुक्त होने के लिए प्रयत्न करे तो इससे बड़ा आश्चर्य और क्या हो सकता है? वास्तविकता तो यह है कि मनुष्य जीवन है ही मुक्त होने के लिए। यह तो मुक्ति का द्वार है। परन्तु यदि कोई अभागा द्वार पर आकर भी असफल हो जाए तो इस में दैव का क्या दोष?

इसे तो परम-पिता परमात्मा ने बुद्धि जैसा तत्व प्रदान किया है, जो अन्य किसी प्राणी को प्राप्त नही। यदि यह उसका उपयोग और वह भी सदुपयोग करे तो एक दो नहीं—तीनो ही बन्धनो से छुटकारा पाकर परम धाम की प्राप्ति का अधिकारी हो सकता है। किन्तु इस अभागे के तो समस्त प्रयत्न उल्टे ही, विपरीत दिशा में ही होते है। यह बुद्धि का उपयोग भी सदा-सर्वदा उस दिशा में ही करता है, जो उसके विनाश का कारण बनती है। जिस मे जाकर उबरने के अवसर कभी कभार ही उपलब्ध होते हैं। हो भी जाए तो भी उभरना सरल नही होता।

विचार कीजिये, जो व्यक्ति राज-मार्ग पर खड़ा होकर अपने उद्देश्य की ओर नही बढ सकता, उससे भटकर खोह, गुफा में जा गिरने के पश्चात् उद्देश्य प्राप्ति की ओर बढ़ जाने की क्या आशा की जा सकती है? यदि इतने पर भी उद्देश्य की ओर बढ़ जाये तो आश्चर्य ही समझिए, महान् आश्चर्य। जो व्यक्ति मुक्त रहते हुए स्वय अपने ही प्रयत्नो से बन्धन में आ पड़े—वह बन्धन मे पड जाने पर मुक्त हो सकेगा यह समझ से दूर की बात प्रतीत होती है, किन्तु मनुष्य बन्धन के रहस्य को समझ ले, बन्धन की हानियो से परिचित हो जाए तो चाहे उसे कितना भी प्रयत्न करना पड़े फिर वह उस स्थिति मे पड़ा रहना लेश भी नही चाहेगा और बन्धन से मुक्त होने, उसे काट फैंकने के लिए सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ जुट जाएगा। किन्तु समस्या तो बन्धन को समझने की है, बन्धन को बन्धन मानने की है। यह समस्या साधारण समस्या नहीं है। सामान्यतया लोग बन्धन को बन्धन मानते ही नहीं, उसे बन्धन समझते ही नही। उन्हे तो उसमे आनन्द प्रतीत होता है। परन्तु सत्यता यह है कि वह आनन्द नहीं—सुख होता है।

सुख और आनन्द मे बहुत बड़ा अन्तर है। आनन्द तो आत्मा का विषय है और सुख है इन्द्रियो का विषय। सु=सुगम, अच्छा, सुन्दर, उत्तम और ख-इन्द्रिय। इन्द्रिय जिसमे सुगमता, अच्छाई, सुन्दरता आदि की अनुभति करें, वह सुख कहलाता है। ससार के सभी विषय—भोग इन्द्रियो को सुगमता, सुन्दरता, उत्तमता की अनुभूति कराते है, इसलिए इन्हे सुख कहते है। इन्द्रियो से नही भीतर से, अन्तरात्मा मे से जो उत्तमता की अनुभूति होती है जिस से मानसिक सन्तोष होता है वह आनन्द कहलाता है।

सुख जितने भी हैं, वह एक सीमा तक तो जीवन के लिए उपयोगी होते हैं। किन्तु उनका चस्का, उन का नात्र मानव को इन्द्रियो का दास बना देता है। इन्द्रियो की दासता भयकर बन्धन है, एक दम कठोर बन्धन। यदि प्रारम्भ में ही मानव सावधान हो जाए, वह इन्द्रिय लोलुप न बने अपितु इन्द्रियो का उपयोग बुद्धि पूर्वक जीवन को ठीक मार्ग पर ले चलने के लिए करे—हमारा अभिप्राय है कि इन्द्रियो की जीवन के लिए जितनी उपयोगिता है, उतना ही प्रयोग करें तो वह बन्धनों में जकड़ नहीं सकता—सरलता से बन्धन टूट सकते हैं।

उपर्युक्त मन्त्र मे जो तीन प्रकार के बन्धन बताये गये हैं, उन के लिए 'उत्तम मध्यम और अधम' शब्दों का प्रयोग किया गया है। मन्त्र मे यह तीनों शब्द विशिष्ट अर्थो मे प्रयुक्त हुए हैं। यहा इनका अर्थ सामारिक अर्थों की भाति उत्तम—उच्चकोटि का, अच्छा मध्यम – मध्य श्रेणी का और अधम—निम्नकोटि का, निकृष्टतम, नीच आदि नही हैं। मन्त्र मे इन तीनो शब्दो के अर्थ उत्तम (उत् तम्)—सबसे ऊपर का, मध्यम—मध्य का, अधम—नीचे का है।

'सब से ऊपर का' अर्थ है—बौद्धिक बुद्धि का, ज्ञान सम्बन्धी 'मध्य का' का अर्थ है मानसिक, विचारो का सकुचितता सकीर्णता, कृपणता और सग्रहवाद का। 'नीचे का का अर्थ है काम वासना का, भोगवाद का।

मन्त्र के शब्द निम्न प्रकार हैं—

वरुण—हे वरण करने योग्य, सुन्दरतम् देव!

अस्मद्—हमारे•

पाशम्—पाश, बन्धन को (यदि वह)

उत्तमम्—ऊपर का है (तो)

उत्—ऊपर (को ही)

मध्यमम्—मध्य का (तो)

वि—विलग, अलग, दूर (कर के)

अधमम—नीचे का है (तो)

अव—नीचे (को ही) गिरा कर

श्रथाय—शिथिल कर दे, समाप्त कर दे।

आदित्य—हे अखण्डित, विनाश रहित!

अथ आ वयम्—जिससे हम विधिवत्

तव—तेरे

अदितये व्रते—अखण्डित व्रत मे, अखण्ड नियम मे

अनागस पाप रहित निष्पाप

स्याम—हो जायें रहे।

(क्रमश)

जन्म-मरण की उलझन

ले.—श्री प्रा. भद्रसेन जी वेद-दर्शनाचार्य, होशियारपुर

(गतांक से आगे)

वियोग और शोक—

आज की बैठक में श्रोता अत्यधिक उत्सुकता भरे दृष्टिगोचर हो रहे हैं। रविवार से अगले दिन भी विशेष पर्व होने से वहां श्रोताओं की चहल-पहल है, वहां पास में ही कुछ दूरी पर पर्यटन स्थल होने से वहां मनोरंजनार्थ आए बहुत सारे पर्यटक इस बात को सुन कर आश्रम में आ गए। संगीत प्रिय जी ने संसार की बनावट और परिवर्तनशीलता को सामने रख कर दो भजन प्रस्तुत किए। बड़े विभोर हो कर सभी ने उन का श्रवण किया। इस के पश्चात् सर्व प्रिय जी मंच पर विराजमान हुए और चारों ओर दृष्टि डालते हुए, उन्होंने कहा—प्रिय श्रोताओ! आप को स्मरण ही है कि पिछली बैठक की समाप्ति पर सुधीर ने एक जिज्ञासा प्रकट की थी। अर्थात् जब हम आत्मा को अमर मानते हैं तो फिर किसी की मौत कैसे कही जाती है तथा अमर आत्मा के साथ मृत्यु और शोक का क्या मेल? आज पहले शोक के सम्बन्ध में विचार करें, और फिर कभी आत्मा की अमरता पर चर्चा होगी।

वैसे तो संसार में किसी से थोड़ी देर बाद भी बिछुड़ना प्रायः सभी को अच्छा नहीं लगता। फिर जिस के साथ वर्षों मिल-जुल कर कार्य किया हो और एक लम्बे समय तक की मीठी यादें जुड़ी हुई हों। ऐसे वियोग में दिल भर आना, भारी हो जाना तो एक साधारण बात है। अतः अपने प्रिय परिजनों के बिछोह पर हृदय में शोक, दुःख उमड़ना एक स्वाभाविक बात है।

वियोग और संयोग का क्रम संसार के साथ प्रारम्भ से ही जुड़ा हुआ है। मानव हृदय की भावनाओं की समानता के कारण हमारे पूर्वजों ने भी वियोग वेदना का अनुभव किया, जिस का काव्यात्मक चित्रण हमें अनेकशः प्राप्त होता है। राजा अज अपनी प्रिया इन्दुमती के मृत्यु का ग्रास हो जाने पर अपनी स्वाभाविक धीरता को छोड़ कर बहुत विलाप करता है। इस स्थिति का चित्रण करते हुए कवि कुल गुरु कालिदास ने अपने महाकाव्य रघुवंश में लिखा है—जब कठोर लोहा अग्नि से तप कर कोमल हो जाता है तब वियोग की वेदना रूपी आग से तड़पते हुए भावना भरे दिल अपने स्वाभाविक धैर्य को कैसे सम्भाले रख सकते हैं।1।

1 विललाप स बाष्प गद्गदं सहजामपहाय धीरताम्।
अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु ॥8,44॥

अर्थात् अपने प्रिय के बिछोह में विचारशीलों के दिल दिमाग भी अपने धैर्य और विवेक को हाथ से गवा बैठते हैं, साधारण जनों की तो बात ही क्या?

करुणा रहित क्रूर काल ने मुझ से मेरी प्रिया छीन कर मेरा तो सब कुछ ही छीन लिया है, क्योंकि वही मेरी गृहिणी, सलाहकार, एकान्त का गहरा मित्र और कला सीखने में जो प्रिय शिष्या थी।1।

1 गृहिणी सचिवः सखी मिथः
प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ।
करुणाविमुखेन मृत्युना हरता त्वां
वद किं न मे हृतम् ॥
रघुवंश 8, 68

हमारा जीवन बहुत अंशों में सामाजिक सम्बन्धों तथा उन से प्राप्त होने वाले सहयोग पर आधारित है। इन सामाजिक रिश्तों और सहयोग के बिना जीवन की कल्पना करना भी कठिन है। इस लिए परिवार में से किसी विशेष के अकस्मात् बिछुड़ जाने पर आश्रितों का जीवन भी अन्धकारमय एवं धूमिल हो जाता है। यह वियोग केवल तड़पाने वाला ही नहीं, अपितु अनेकबार असह्य भी हो जाता है। इसी भावना का कुछ अंश सती प्रथा के प्रचलित होने में एक कारण कहा जा सकता है। यतो हि भारतीय भावना के अनुसार पत्नी के लिए पति ही सर्वस्व तथा जीवन का आधार होता है। यदि किसी कारण से पति की पत्नी से पहले मृत्यु हो जाए तो पत्नी की दुनिया भी उसी के साथ उजड़ जाती है। विधवाओं के साथ धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में जो दुर्व्यवहार पहले होता था, वह इस का जीता जागता प्रमाण कहा जा सकता है। पुराने विचारों वालों के यहां आज भी कभी कभार इस के उदाहरण सामने आ जाते हैं। कुछ अंशों में वैधव्य जीवन के अपमान और दुःखों का स्मरण करके पत्नी को जीने की अपेक्षा मरना अधिक सरल अनुभव होता है। इस स्थिति को स्पष्ट करने वाले अनेक उदाहरण भारतीय इतिहास में मिलते हैं।

भारतीय समाज में इस अवसर पर प्रचलित रोने के विशेष रिवाज तथा इस अवसर पर वृद्ध अवस्था में भी पत्नी को दिए जाने वाले ताने, अन्य विशेष चिन्तनीय बातें हैं। कई जगह ऐसा रिवाज है कि किसी के पति की मृत्यु पर विशेष रूप से नाईन बुलाई जाती है। चाहे पत्नी की कितनी ही अधिक आयु क्यों न हो, पर उस के पति के उससे पहले मर जाने पर वह दुर्भाग्यशालिनी मानी जाती है। उसको तालाब आदि में खड़ा करके अन्य महिलाएं किनारे पर खड़ी हो जाती हैं और नाईन उस को कोस-कोस कर जितना अधिक रुलाती है, उतना ही अधिक नाईन को पैसा मिलता है। कई स्थानों पर महिलाएं महीनों फर्श पर बैठती हैं और वास करती हैं तथा नित्य प्रति नियमित रुदन करती हैं। कई जगह ऐसा रिवाज है कि महिलाएं विशेष वस्त्र धारण कर के आमने-सामने खड़ी हो कर माथा, छाती और पटों को तीन ताल के रूप में हाथों से पीटती हैं।

जून 1984 के प्रथम सप्ताह कांगड़ा के समीपवर्ती एक ग्राम में जाने अवसर प्राप्त हुआ। प्रातः पांच बजे से पूर्व जब आंख खुली तो पास से ज़ोर-ज़ोर से रोने की आवाज़ सुनाई दी। प्रातःकाल का समय उस पहाड़ी प्रदेश में कम से कम तीस मिनट तक यह करुण क्रन्दन गूंजता रहा। इस सम्बन्ध में अपने जिज्ञासुओं से पता चला, कि दो दिन बाद इस के पति की मृत्यु को हुए एक वर्ष हो जाएगा। प्रतिदिन यह क्रम चलता है, महिला की आयु 60 वर्ष के लगभग थी। इस अवसर पर रोने के कुछ विचित्र रूप को लिए हुए रिवाज का परिणाम अनेक रूपों में हमारे सामने आता है। स्वामी सत्यदेव परिव्राजक ने भी अपनी आंखों की कमजोरी का कारण इसी रिवाज को बताया है, क्योंकि जब वे गर्भ में थे तो उन की माता जी को एक ऐसे ही रिवाज में सम्मिलित होना पड़ा। रोने के रिवाज का यह विशेष बढ़ा हुआ रूप पारिवारिक जीवन और बच्चों के पालन-पोषण की दृष्टि से विशेष सोचने वाली बात है। वियोग की वेदना से दुःख और शोक के कारण रोना एक स्वाभाविक बात है तथा इस से दिल हलका भी हो जाता है, पर रिवाज का विशेष रूप विशेष चिन्तनीय है। पुनरपि ऐसी विषम परिस्थितियों में भी कुछ भारतीय वीरांगनाओं ने जिस बुद्धिमत्ता और धैर्य का परिचय दिया, वह वस्तुतः इतिहास में अंकित करने योग्य है। ऐसी ही एक स्मरणीय घटना यहां प्रस्तुत करना अत्यन्त उपयुक्त होगा।

मेरे पिता श्रीराम तीर्थ जी, ने एक बार बताया, कि मैं कम से कम सौ व्यक्तियों के दर्शन और साक्षात्कार करना चाहता हूं। जिन्होंने सौ वर्ष की आयु पूर्ण कर ली हो। ऐसे दीर्घ जीवियों के दर्शन करके यह जानना चाहता हूं, कि उन की दृष्टि से सफल जीवन और लम्बी उम्र का क्या रहस्य है? तथा विषम से विषम परिस्थितियों में से उन्होंने अपनी जीवन नौका को कैसे पार लगाया।

अभी तक वे जितने भी व्यक्तियों से मिले हैं, उन सब के जीवन में सादा जीवन, शुद्ध आहार-विहार और शारीरिक श्रम का विशेष स्थान था और है। दीर्घजीवियों में से जिस के सब से प्रथम दर्शन करने का अवसर उन को मिला, वह एक 105 वर्ष की कर्मठ महिला थी।

अपनी जिज्ञासा की निवृत्ति के लिए पिता जी ने इस महिला से कुछ प्रश्न पूछे। जिन में से एक यह भी था, कि आप के इस लम्बे जीवन में कोई विशेष दुःखद घटना तो नहीं घटी? उस महान् महिला ने अपनी करुण कहानी को बताते हुए कहा, कि मेरे जीवन में जो विशेष दुर्घटनाएं घटी हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि वैसी किसी के भी जीवन में न घटें।

क्योंकि अभी मेरी आयु तीस वर्ष के आस-पास ही हुई थी, कि मुझ पर एकदम पहाड़ आ गिरा और मेरा सुहाग मुझ से छिन गया। भारतीय नारी के लिए इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है? और वह भी युवावस्था में। जब मेरी सारी दुनिया लुट गई, तो मैं दिन भर दहाड़ें मार-मार कर छाती-सिर पीट-पीट कर रोई, क्योंकि मुझे तब चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दीख रहा था। उस पर इधर-उधर से आने वाली आवाजें जलती आग पर घी का काम कर रही थीं। मैं जैसे कैसे अपनी जिन्दा लाश ढो रही थी। और बार-बार भगवान से मौत मांग रही थी।

(क्रमशः)

सम्पादकीय——

जिला आर्य सभा लुधियाना का सराहनीय कार्य

प्रत्येक जिला में जिला आर्य सभाए बनी हुई हैं। कुछ जिला सभाए तो अच्छा कार्य कर रही हैं परन्तु कुछ ऐसी भी हैं जो इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रही कि आर्य समाज का प्रचार कार्य कैसे बढे। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने जिला सभाओ का निर्माण इस लिए किया था कि वह अपने जिले मे वेद प्रचार के कार्य को सुचारु रूप मे चला कर घर-घर वेद का सन्देश पहुचाए और जिला की सभी आर्य समाजें मिल कर कार्य करें। सभी आर्य समाजो का आपसी संगठन हो वह अपने बडे-बडे पर्व भी आर्य समाजो मे न मना कर सम्मिलित रूप से किसी सार्वजनिक स्थान पर मनाए ताकि वहा वह लोग भी समारोह में भाग ले सकें जो आर्य समाजी नहीं हैं। आर्य समाजो मे अब वही लोग आते हैं जो आर्य समाजी हैं जन-साधारण नही आता। अब अपनी बात सुनाने के लिए हमे उनके पास पहुचना चाहिए और यह तभी हो सकेगा जब हम अपनी आर्य समाज की चार दीवारी से बाहिर निकल कर अपने उत्सवो, यज्ञो व समारोहों का आयोजन करेंगे।

जिला आर्य सभा लुधियाना इस दिशा मे एक प्रशसनीय कार्य कर रही है। वह प्रत्येक पर्व को सार्वजनिक स्थान पर मनाती हैं और अब उन्होने अपने कार्य का क्षेत्र वह स्थान चुना है जहा कोई और जाना पसन्द नही करता। लुधियाना के इण्डस्ट्रीयल एरिया में झूगी-झोपडियो के नाम से एक स्थान बना हुआ है जहा बहुत निर्धन, गरीब लोग रहते हैं। वहा पर अधिकतर मजदूर ही निवास करते हैं। इस जिला सभा ने इस क्षेत्र मे गत वर्षों से कार्य आरम्भ कर दिया है यह सभा धनी-मानी लोगो के माध्यम से इस बस्ती के गरीब लोगो की सहायता भी कर रही है और वेद का प्रचार, प्रसार और महर्षि दयानन्द का सन्देश भी घर-घर पहुचा रही है।

इस सभा के प्रधान श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा, मन्त्री श्री आशानन्द जी आर्य और कोषाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश जी पुरी हैं। यह तीनो बहुत कर्मठ व्यक्ति हैं और इस सभा के अन्य अधिकारी भी बहुत लगनशील हैं। सभी अधिकारी अपनी सभा को उन्नत करने के लिए निरन्तर प्रयास कर रहे हैं। इस सभा के सभी समारोहो मे लुधियाना की सभी आर्य समाजो के अधिकारी व सदस्य सम्मिलित होते हैं। यह सब का सहयोग लेकर चल रहे हैं। लुधियाना के प्रतिष्ठित उद्योगपति श्री सत्यनन्द जी मुञ्जाल मालिक हीरो साईकल और श्री दीवान राजेन्द्र कुमार, श्री खुशवक्तराय सूद, श्री आयोध्या प्रसाद, श्री नवनीत लाल जी, श्री मूलचन्द भारद्वाज तथा अन्य नगर के प्रतिष्ठित सज्जन इन समारोहो मे बढ-चढ कर भाग ले रहे हैं।

22 दिसम्बर को इस सभा ने अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस लुधियाना मे झूगी-झोपडियो मे मनाया जिसमे वहा जिला लुधियाना की सभी आर्य समाजो के अधिकारियो, सदस्यो व सभी स्त्री आर्य समाजो की बहनों ने भाग लिया वहा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी महामन्त्री श्रीमती कमला आर्या, कोषाध्यक्ष श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया था वह भी वहा पधारे थे। लुधियाना पहुचने पर सभा के सभी अधिकारियो का स्वागत आर्य हा सै. स्कूल के बच्चो ने बैण्ड बजाकर किया। इसके साथ ही नगर के प्रतिष्ठित लोगो ने पुष्प मालाओ के साथ सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी का भव्य स्वागत किया। इस अवसर पर श्री वीरेन्द्र जी को सभा भवन निर्माण के लिए जिला आर्य सभा के प्रधान श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा की धर्म पत्नी श्रीमती इन्दिरा मोहिनी ने ग्यारह हजार (11000 रु) की थैली भेंट की, श्री सत्यानन्द जी मुञ्जाल मालिक हीरो साईकल ने भी ग्यारह हजार रुपया (11000 रु) देने की घोषणा की, श्रीमती वेदवती जी (इग्लैंड वाली) ने एक हजार (1000 रु.) और श्री महेन्द्र पाल जी स्याल ने 500 रुपया दिया। इस प्रकार 23500 रुपया लुधियाना से सभा को प्राप्त हुआ।

यह सभा वहा लुधियाना में निर्धन लोगो की सेवा का कार्य तथा ही उनके बच्चों की पढाई आदि का भी प्रबन्ध कर रही है वहा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को भवन निर्माणार्थ यह राशि भेंट करा कर एक महान् कार्य किया है। यदि अन्य जिला सभाए भी इसी प्रकार से अपने जिला मे कार्य करें और दानी महानुभावो को उत्साहित करके निर्धन असहाय लोगों की सहायता करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के भवन निर्माण के लिए सभा को अपना सहयोग दें तो सभा का भवन जो अधूरा पडा है बहुत जल्दी बनकर तैयार हो जाए। दानी महानुभावो को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि सभा को अब आयकर आयुक्त जालन्धर की ओर से आदेश पत्र न 11806 (दिनाक 11-12-85) मिल गया है जिसके अनुसार दानी महानुभावो को उस धन पर आयकर की छूट होगी जो वह सभा के लिए देंगे। हमे आशा है कि अन्य जिला सभाए व आर्य समाजें-लुधियाना के भाईयो का अनुकरण करेंगी और सभा को अपना पूरा सहयोग देंगी।

—धर्मदेवार्य
सह-सम्पादक

सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारियों की सेवा में

1985 समाप्त हो रहा है। आगामी वर्ष के लिए पजाब मे आर्य समाज का कार्यक्रम क्या हो, इस विषय पर सभा की अन्तरग सभा ने अपनी बैठक दिनाक प्रथम दिसम्बर 1985 को विचार किया था और सर्व सम्मति से यह निश्चय किया गया था कि निम्नलिखित कार्यक्रम सब आर्य समाजो को दे दिया जाए ताकि वे इसके अनुसार आने वाले वर्ष मे अपना कार्यक्रम बनाए। इसमे थोडा बहुत परिवर्तन या सशोधन आप कर सकते हैं, परन्तु प्रयास यही होना चाहिए कि जो कार्यक्रम सभा की ओर से आपको दिया जा रहा है, उसे पूरा कर लिया जाए। यह कोई बहुत बडा कार्यक्रम नही। पजाब मे आर्य समाज की गतिविधियो को जारी रखने के लिए यह आवश्यक है। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि निम्नलिखित कार्यक्रम के अनुसार अगले साल के लिए अपनी आर्य समाज की योजना बनाए

1 सब आर्य समाजें 1986 मे अपने वार्षिकोत्सव अवश्य करें। जो आर्य समाजें चाहे कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब उनके वार्षिकोत्सव का प्रबन्ध करें, वे दो मास पहले सभा को सूचित कर दिया करें।

2, जो आर्य समाजें किसी कारण से वार्षिकोत्सव न कर सके, वे एक-एक सप्ताह का यज्ञ अवश्य करें। यदि आर्य समाजें कहेंगी सभा यज्ञ का प्रबन्ध करवा देगी।

3 वर्ष भर में प्रत्येक नगर मे सब आर्य समाजें सयुक्त रूप से निम्नलिखित पाच पर्व अवश्य मनाए —(क) श्रद्धानन्द बलिदान दिवस (ख) शिवरात्रि (ग) स्वाधीनता दिवस (घ) ऋषि निर्वाण दिवस (ड) आर्य समाज स्थापना दिवस।

4 प्रत्येक आर्य समाज जालन्धर मे सभा के भवन निर्माण के लिए कम से कम एक कमरा बनवाने का भार अवश्य उठाए।

5 आर्य मर्यादा के दो विशेषाक एक शिवरात्री पर और दूसरा ऋषि निर्वाण पर अवश्य प्रकाशित किए जाए। प्रत्येक आर्य समाज अधिक से अधिक सख्या मे वे विशेषाक मगवाए और उनके द्वारा प्रचार करे और प्रत्येक अक के लिए कुछ न कुछ विज्ञापन अवश्य दें।

6 पजाब मे हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए सक्रिय होने की आवश्यकता है। एक हिन्दी प्रचार समिति बनाई जाएगी। उसकी शाखाए प्रत्येक नगर मे खोली जाए आर्य समाजें अपना सब काम काज हिन्दी मे करें।

7 एक वर्ष मे प्रतिनिधि सभा कम से कम 12 छोटे छोटे ट्रैक्ट हिन्दी और पजाबी मे प्रकाशित करवायेगी। यह ट्रैक्ट ही अब प्रचार का साधन होने चाहिए।

8 दूसरे प्रान्तो से प्रसिद्ध विद्वानो को बुलवा कर आर्य समाजो मे उनके उपदेश करवाए जाए।

9 पजाब की वर्तमान परिस्थितियो को देखते हुए हमें हिन्दुओ को विशेष कर हरिजन भाईयो को अपने साथ लेकर चलने का प्रयास करना चाहिए।

10 आर्य समाजें हिन्दू जगत् के नेता के रूप मे सामने आए। जहा-जहा भी कोई ऐसा काम हो, जिसमे पजाब के हिन्दुओ को सगठित करने और उनके अधिकारो की रक्षा करने का काम आवश्यक हो वहा आर्य समाजियो को सक्रिय भाग अवश्य लेना चाहिए।

आशा है आप इसके अनुसार अपना 1986 का कार्यक्रम बनाएगे। अपनी आर्य समाज की गतिविधियो के विषय मे समय समय पर हमे सूचित करते रहें, और आर्य मर्यादा मे अपनी आर्य समाज के समाचार प्रकाशनार्थ भेजते रहें।

वीरेन्द्र	ब्रह्मदत्त शर्मा	—कमला आर्या
सभा प्रधान	सभा कोषाध्यक्ष	सभा महामन्त्री

आर्य समाज को ठीक से समझा जाए

लेखक—श्री यशपाल आर्य बन्धु आर्योपदेशक
आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद

उन्नीसवी शताब्दी के सर्वाधिक प्रगतिशील बौद्धिक आन्दोलन आर्य समाज के कार्यों प्रवृत्तियो एव लक्ष्य को लेकर न केवल जनसाधारण मे अपितु पठित समुदाय में भी विभिन्न प्रकार की भ्रातिया व्याप्त हैं। पौराणिक समुदाय तो आर्य समाज को सदैव अपना शत्रु मानता रहा है, ईसाई और मुसलमान भी इसे इसी दृष्टि से देखते हैं। ब्रिटिश शासको को आर्य समाज एक ऐसी षड्-यन्त्रकारी सस्था के रूप में दिखाई देती थी जो मानो अग्रेजी राजसत्ता का मूलोच्छेद करने के लिए ही कृत सकल्प हो। कुछ लोग आर्य समाज को एक सुधार-वादी आन्दोलन के रूप देखते हैं तो कोई हिन्दू पुनरुत्थानवादी आन्दोलन की सज्ञा देते हैं। तात्पर्य यह कि काई आर्य समाज को किसी रूप मे देखता है तो कोई किसी रूप मे। इसी प्रसग मे जब हम पण्डित जवाहर लाल नेहरू की प्रतिक्रिया जानने का यत्न करते हैं तो हम पाते हैं कि वे इसे ईसाइयत एव इस्लाम की प्रसारवादी गतिविधियो का नियन्त्रण करने हेतु जन्मी सस्था के रूप मे स्मरण करते हैं। पर वास्तविकता यह है कि आर्य समाज न तो इसाई और मुसलमानो का ही विरोधी है और न ही हिन्दुओ का। वह तो विशुद्ध मानवतावादी सार्वभौम आन्दोलन है। वस्तुत आर्य समाज का आन्दोलन किसी देश, जाति सम्प्रदाय अथवा वर्ग तक सीमित न रह कर मानव मात्र का कल्याण करने हेत दृढ सकल्प रखने वाले लोगो का सगठन है। इसी लिये इसके नियमो का निर्धारण करते समय ससार का उपकार करने को ही इस समाज का मुख्य उद्देश्य बताया गया है। आर्य समाज की नीतिया और प्रवृत्तिया सर्वजनोपयोग सार्वभौम तथा सर्वकालीन हैं तथापि जिस भारत देश में आर्य सभ्यता का जन्म और अभ्युदय हुआ, वैदिक शिक्षाओ के प्रचार-प्रसार मे जिस देश ने अपना सर्वाधिक योगदान किया, उस देश के प्रति भी उसका दायित्व किसी प्रकार कम नही है। अत इस दृष्टि से आर्य समाज आन्दोलन को समझने की आवश्यकता है।

आर्य समाज की भी यही चाहना है कि उसे ठीक से समझा जाए। वह चाहता है कि लोग यह भलि भान्ति हृदयगम कर लें कि आर्य समाज कोई मत, मजहब, या सम्प्रदाय नही अपितु मतो, पन्थो आदि से मुक्ति दिलाने वाला विशुद्ध मानवतावादी आन्दोलन है। यह वह आन्दोलन है कि जो बुद्धिवाद का समर्थन करता हुआ वेद की ओर लौट चलने का आह्वान करता है। आर्य समाज चाहता है कि उसे समझने मे कोई भूल न करें। इसके सस्थापक ने सुस्पष्ट उद्घोष किया था कि—'मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना मन वाना और जो असत्य है उसको छोडना छुडवाना मुझ को अभीष्ट है।' सत्य तो यह है कि ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि पर्यन्त ऋषि-महर्षि जिस वेद-प्रतिपादित सत्य सनातन धर्म को मानते-मनवाते चले आए हैं, ऋषि दयानन्द ने उसी धर्म की ही व्यवस्था दी है, एवम उसी के प्रचार-प्रसार के लिए ही आर्य समाज की स्थापना की है। इस प्रकार आर्य समाज की स्थापना कर महर्षि दयानन्द ने लुप्त-प्राय वैदिक धर्म को ही पुन प्रतिष्ठित करने का सत्प्रयास किया है। महर्षि ऐसे सर्वमान्य सिद्धान्त एव सार्वजनिक धर्म को सत्य सनातन धर्म की सज्ञा देते हैं एवम् उसी के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होने आर्य समाज को गठित किया था। वस्तुत उन्होने कोई गुरु गद्दी या मठ नही बनाया था। इतिहास साक्षी है कि आर्य समाज लाहौर के श्री शारदा प्रसाद ने यह प्रस्ताव रखा था कि स्वामी दयानन्द सरस्वती को आर्य समाज के सस्थापक की पदवी से विभूषित किया जाए तो महर्षि ने यह कर उक्त प्रस्ताव ठुकरा दिया कि मैंने कोई नया पथ चला कर गुरु गद्दी या मठ नही बनाया है। मैं तो मत वादियों को मठो से स्वतन्त्र करना चाहता हू। ऐसी पदवियों से अन्त में हानिया हुआ करती हैं। यहां तक कि आर्य समाज लाहौर की कार्यकारिणी को अपने प्रभाव से मुक्त रखने के लिए उन्होंने कोई सम्मति केवल इसी आधार पर देनी स्वीकार नहीं की थी कि वे उसके सभा-सद नही थे। सभासद् न होते हुए भी उनकी बात कोई टाल नहीं सकता था किन्तु वे स्वय ही एक उदाहरण प्रस्तुत कर उसे सर्वथा लोकतात्रिक आदर्श देना चाहते थे। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो धार्मिक जगत मे लोकतात्रिक आदर्शों की सस्थापना का यह प्रथम अवसर था। पाठक विचारें कि कितना ऊचा आदर्श है कि सस्थापक धर्म सम्बन्धी व्यवस्था तो देता है किन्तु सचालन—व्यवस्था सम्बन्धी किसी भी विषय पर अपनी सम्मति देने से सर्वथा इन्कार कर देता है। वह सगठन को पूर्ण स्वतन्त्र रखना चाहता है। वह चाहता है कि निर्वाचित सदस्यों को कार्य करने का पूर्ण एव स्वतन्त्र अवसर प्राप्त हो सके अत वह उसमे कोई हस्तक्षेप उचित नही समझता यही बात यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि महर्षि कोई नवीन कल्पना या मतमतान्तर चलाना नही चाहते थे। वे वेदमत के ही उद्धारक एव प्रचारक थे। तभी उन्होने आर्यों के लिए वेदों को पढ़ना-पढाना और सुनना-सुनाना अनिवार्य किया था।

आर्य समाज का उद्देश्य भी भूली बिसरी वेद-विद्या का प्रचार है। बम्बई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना के समय पजीकर्त्ता रजिस्ट्रार को जो घोषणा पत्र दिया गया था वह इस में प्रमाण है। उसमे आर्य समाज का उद्देश्य ससार मे वेद विद्या का प्रचार-प्रसार ही बताया गया था। और वेद किसी जाति विशेष अथवा देश विशेष के लिए नहीं हैं। न ही यह किसी काल विशेष के लिए ही है। तात्पर्य यह कि वेद देश, जाति और काल आदि के बधनो से मुक्त हैं। यही एकमात्र ईश्वरीय ज्ञान और समस्त ज्ञान विज्ञान का और भाषा का आदि मूल है। जब वेद सार्वभौम हैं तो वेदो का प्रचारक आर्य समाज भी सार्वभौम आन्दोलन हुआ। वेद की शिक्षाए भी मानव मात्र के लिए हैं, अत वेद का प्रचारक आर्य समाज भी मानव-मात्र के लिए है। वेद का उद्घोष श्रेष्ठ मानव अर्थात आर्य बनाना है, आर्य समाज का उद्देश्य भी यही है। अत आर्य समाज किसी सकुचित एव सीमित क्षेत्र से आबद्ध नहीं। ससार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। अत आर्य समाज का आन्दोलन सम्पूर्ण ससार के लिए है। उसे एक देशीय अथवा किसी जाति अथवा वर्ग विशेष के लिए कहना उसके प्रति घोर अन्याय होगा। आवश्यकता इस बात की है कि इस सार्वभौम आन्दोलन को ठीक से समझा जाए और फिर इसे सहयोग देकर ससार के उपकार का महत कार्य मे भागीदार बना जाए।

—

सरकार से चार सूत्री मांगें

नई दिल्ली गत दिनो केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अखिल भारतीय अधिवेशन मे देश के विभिन्न भागो से पधारे युवा विद्वान् व प्रतिनिधियो ने भारत सरकार को चार सूत्री कार्यक्रम दिया है, जिससे युवा वर्ग को देश मे बढते हुए भ्रष्टाचार से बचाया जा सकता है।

1 शिक्षा को रोजगार मूलक बनाने के साथ नैतिक धर्म एव देश के शहीदो के जीवन चरित्र के साथ जोडा जाए। सस्ते शुल्क से आम आदमी को शिक्षा उपलब्ध हो।

2 आकाशवाणी (रेडियो), दूरदर्शन, फिल्मो मे अश्लीलता व अश्लील साहित्य पर प्रतिबन्ध लगे। नारियो के नग्न प्रदर्शन पर कानूनी प्रतिबन्ध हो।

3 दहेज के अभिशाप को समाप्त करने के लिए जाति बन्धन तोड-दहेज छोड कर शादी करने वाले युवक-युवतियों की सरकारी सेवा में प्राथमिकता दी जाए।

4, अराष्ट्रीय व साम्प्रदायिक तत्वों पर प्रतिबन्ध लगा, मताधिकार से वचित कर भारत से उनकी नागरिकता समाप्त की जाए।

—मनमोहन आर्य

यात्रा वेद प्रचार वाहन

15 नवम्बर से 12 दिसम्बर तक ब्रह्मचारी आर्य नरेश द्वारा करनाल पानीपत, माडल टाउन, फरीदाबाद, मथुरा, भरतपुर अजमेर, जयपुर, नारनौल, रेवाडी, गुडगाव तथा दिल्ली के शिवाजी एनक्लेव, रोजपुर, लाजपत नगर, जवाहर नगर, रोशनारा रोड, अशोक विहार तथा सफदरजग एनक्लेव आदि स्थानों पर यज्ञ, वैदिक शका समाधान, वेद प्रवचन तथा पुस्तकों का वितरण किया।

—रिसाल सिंह आर्य

निर्धन ईसाइयों को पोप-कोष में धन देने को मजबूर किया जा रहा है

पता नहीं, बम्बई के आर्कबिशप महोदय श्री साइमन पिमेन्ता को इस बात की जानकारी है या नहीं कि उनके अधीनस्थ पादरी अपने इलाकों के निर्धन ईसाइयों को मजबूर कर रहे हैं कि वे पोप-कोष में विशाल धनराशि दान करें। आज के महंगाई के जमाने में जब एक निर्धन ईसाई के लिए अपने परिवार का भरणपोषण भी एक समस्या बना रहता है, उस पर एक बेरहम महाजन की भांति पैसा निकालो का दबाव डालना क्या उस ईसा मसीह के धार्मिक सिद्धान्तों के अनुरूप है, जिन्होंने अपने जीवन-काल में लोभी महाजनों को पवित्र पूजा स्थल के बाहर खदेड़ दिया था। और कहा था, "ऊंट का सूई के सुराख में से गुजर जाना शक्य है, लेकिन धनी व्यक्ति का स्वर्ग में प्रवेश करना कदापि शक्य नहीं है।"

यह देख कर मन ग्लानि और शर्म से भर आता है कि जिस महा-मानव ने आजीवन धन और धर्म को व्यावसायिक बनाने की प्रवृत्ति का विरोध किया, उसी के अनुयायी उसके नाम पर वही कर रहे हैं, जिसका वह प्रबल विरोधी था। हमें पूर्ण विश्वास है कि जब पोप महोदय को यह पता चलेगा कि उनके भारत-आगमन पर उन्हें जो बड़ी थैली भेंट की जाने वाली है, उसके लिए असंख्य ईसाईयों पर तरह-तरह के अनुचित दबाव डाले जा रहे हैं, तो वे भी काफी अप्रसन्न होंगे, और ऐसा करने वालों की भर्त्सना ही करेंगे।

पोप महोदय एक ऐसे महान धर्म के प्रमुख प्रवक्ता है, जिसका सस्थापक ईसा मसीह-सदा गरीबों का मित्र और हितैषी रहा। इससे पूर्व कि उन्हें ईसा मसीह के नाम पर उसके गरीब अनुयायियों के आर्थिक शोषण का पता चले, हम आशा करते है कि आर्कबिशप साइमन पिमेन्ता उन पादरियों को, जो जबरन चन्दा वसूल कर रहे हैं, ऐसा न करने का आदेश देकर, उस धार्मिक सिद्धान्त की रक्षा करेंगे, जो ईसा मसीह को बड़ा प्रिय था। निर्धनों के साथ प्रेम और सहानुभूति से पूर्ण व्यवहार।

—सदाजीवत लाल चन्दूलाल
महामन्त्री
धर्म स्वतन्त्र समर्थन समिति, बम्बई

श्रद्धानन्द

लेखक—श्री कविवर "प्रणव" शास्त्री एम. ए. महोपदेशक

जो न मृत्यु से मन में डरता।
वही अमर पद पाता है ॥

प्रण के लिए, प्राण रक्षा की नहीं मनाता कभी मनोती।
करता है, स्वीकार हर्ष मे सघर्षों की काल चुनौती।
जो न स्वार्थ के रथ में बैठे कर वही देव कहलाता है ॥1॥

बाधाओं के बड़े बवण्डर पथ से विचलित कर न सकें हैं।
लक्ष्य प्राप्ति में लक्ष प्रलोभन जिसके मन को भरमा न सके हैं।
सतत साधना से साधक साध्य निकट आ जाता है ॥2॥

पर-उपकार प्रथा में जिसने तन, मन, धन, सर्वस्व लुटाया।
निम्न धरा से उच्च शिखर पर चढ़ने का पाथेय जुटाया।
वही व्रती बलिदान भवन में गौरव गाथा गाता है ॥3॥

क्षण-क्षण में भू के कण-कण को जीने का सङ्गीत सुनावे।
"सर्वा आशा मममित्र" कह जन-जन को जो मीत बनावे
वही यशोधन बना भगीरथ यश की गंगा लाता है ॥4॥

राष्ट्र-धर्म के नन्दन वन को रक्त-धार से सींच चुका हो।
लाखों के हित-साधन में जो निज आंखों को मीच चुका हो।
भले न दीखे, वह लाखों की आंखों में बस जाता है ॥5॥

घिरे अमावस के पूतों से बन सूर्य जो टकरा जावे।
श्रद्धामय आनन्द भाव से 'प्रणव' प्राण जो बिखरा जावे।
वही विजेता नेता प्यारा श्रद्धानन्द कहाता है ॥6॥

वैदिक यतिमण्डल को सशक्त बनाएं

वैदिक यतिमण्डल की स्थापना उन विरक्तों-संन्यासियों—वान प्रस्थियों व नैष्ठिक ब्रह्मचारियों द्वारा की गई है जो वेदों व आर्ष ग्रन्थों, सत्यार्थ प्रकाश, आर्य समाज के नियमों व महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों पर अटूट विश्वास करते हों इस मण्डल के उद्देश्य पुराने आलभ्य साहित्य का प्रकाशन तपस्वी प्रचारक तैयार करना, समाज से कुरीतियां दूर करना, रोगियों को निशुल्क औषधियां बांटना, विद्यार्थियों की सहायता करना वृद्धों को सहायता करना, राष्ट्र संकट पर मानव मात्र की मदद जात-पात उन्मूलन, गौ रक्षा, ग्राम सुधार, माता-पिता अध्यापकों द्वारा सदाचारी सन्तान बनाना, छात्रों में अनुशासन लाना, जनता से मादक द्रव्यों का सेवन छुड़ाना, प्राणी मात्र की सेवा अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन देना, दहेज निषेध प्रचार करना, वेद प्रचार व आर्य समाज का प्रचार करना होगा। यति मण्डल देश के महान तपस्वी, त्यागी संत पूज्य पाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अधिष्ठाता दयानन्द मठ दीनानगर जो 1925 से समाज सेवा कर रहे हैं कि अपने शिष्यों व श्रद्धालुओं द्वारा अभिनन्दन 11 लाख की थैली भेन्ट करके 1-5-86 को कर रहा है ताकि मण्डल के कार्यक्रम को और प्रगति मिल सकें यदि 1000 दानी 1100 ग्यारह सौ देने वाले आगे आ जावें तो यह राशि शीघ्र इकत्र हो सकती है हिमाचल से 1 लाख पजाब दो लाख हरियाणा 3 लाख राजस्थान 2 लाख बम्बई 2 लाख दिल्ली मे 9 लाख इकत्र हो जावें तो कार्य हल हो सकता है। धन इकत्र करने का अभियान जारी हो चुका है सभी हिताभिलाषी तन-मन-धन से जुट जावें।

—सुमेधानन्द व सुबोधानन्द
भू. पू. प्रधान हिमाचल
आ. प्र. नि. सभा

आर्य समाज नया गुगरां (पठानकोट) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज नया गुगरा का वार्षिकोत्सव 13. 14, 15 दिसम्बर 1985 को पूज्य स्वा. सर्वानन्द जी महाराज सचालक दयानन्द मठ दीनानगर की अध्यक्षता में बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प. रामनाथ जी यात्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, वेद व्रत जी शास्त्री पुरोहित आर्य समाज माडल टाऊन पठानकोट, प. हजारी लाल जी तथा पं. विजय कुमार जी शास्त्री आदि विद्वान् प्रतिदिन प्रात: साय तथा रात्रि को उपदेशज्ञानामृत की वर्षा करते रहे। इस क्षेत्र के विधायक श्री जयमुनि जी तथा श्री रघुनाथ सहाय पुगी जी ने आर्य समाज के सेवा कार्यों के प्रति जनता को अवगत कराया। पठानकोट, दीनानगर, सुजानपुर तथा कठुआ की आर्य समाजो के अतितिक्त स्थानीय लोगों ने इस उत्सव को सफल बनाने मे भरपूर सहयोग दिया। —पं. धर्मपाल वैद्य

दिल्ली में विशाल शोभा यात्रा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने आगामी 15 फरवरी 1986 को डी. ए. वी. शताब्दी समारोह पर निकलने वाली विशाल शोभा यात्रा में सम्मिलित होने के लिए सभी आर्य समाजों व कार्यकर्ताओं से विशेष कर दिल्ली की समस्त आर्य जनता से अपील की है कि इस दिन सभी लोग अन्य कार्यक्रमों को छोड़ कर इस शोभा यात्रा में अवश्य सम्मिलित होने की कृपा करें।

यह शोभा यात्रा प्रात. 11-00 बजे लालकिला मैदान से प्रारम्भ होगी और चादनी चौक, घण्टाघर, नई सड़क, चावड़ी बाजार, हौजकाजी, अजमेरी गेट, मिण्टो रोड, कनाट प्लैस, रीगल बिल्डिंग पार्लियामैंट स्ट्रीट, सरदार पटेल चौक, गोल डाकखाना, बिड़ला मन्दिर से होती हुई सायं 5-00 बजे आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में समाप्त होगी। —प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा दिल्ली

देश के समस्त हिन्दुत्ववादी

राष्ट्रवादी संगठनों से अपील

लेखक—श्री विशन स्वरूप गोयल दिल्ली

किसी भी प्रजातन्त्र देश मे सुदृढ विरोध पक्ष का होना अत्यन्त आवश्यक होना है ताकि सत्ता पक्ष को मनमानी करने से रोका जा सके। किन्तु सुदृढ विरोध पक्ष का यह अर्थ कदापि नहीं है कि वह विभिन्न राजनीतिक दलो में बट जाए। इसका तो सीधा सा यह अर्थ होगा कि सत्ताधारी दल के विकल्प के रूप में मात्र एक दल हो ताकि विरोधी वोट बट न सकें। हमारा देश भी एक प्रजातन्त्रीय देश ही है। यहा भी ऐसे ही एक सुदृढ विरोधी राजनीतिक दल की ही आवश्यकता थी। इसी कारण यहा विरोध पक्ष का जन्म हुआ। किन्तु दुर्भाग्यवश तथा व्यक्तिगत एव दलगत स्वार्थ के कारण यहा का विरोध पक्ष विभिन्न राजनीतिक दलो मे बटा हुआ है। इसी कारण विरोध पक्ष बहुमत प्राप्त करते हुए भी अल्पमत मे ही रहता है और कांग्रेस जिसको 1984 के चुनाव के अतिरिक्त कभी भी 40 प्रतिशत से अधिक मत नहीं मिले किन्तु सत्ता उसी के हाथ मे रही और बहुमत की सरकार होने का दावा करती रही।

विरोध पक्ष के आपस में बटे होने के कारणो मे यहा उनके नेताओ के व्यक्तिगत स्वार्थ पद लोलुप्ता तथा दलगत स्वार्थ ने विशेष भूमिका निभाई है वहा कांग्रेस दल तथा उसकी सरकार भी यही चाहती रही कि विरोध पक्ष बटा रहे और वह सत्ता पर आसानी से अधिकार करते रहे। आज हमारे देश मे यही सब हो रहा है। इस बात को हमारे विरोध पक्ष के नेता भली भान्ति जानते तो हैं, किन्तु इन्ही व्यक्तिगत तथा दलगत स्वार्थों के कारण स्वीकार करने को तैयार नही है। हर बार आने वाले चुनावो के अवसर पर काफी जोड तोड की जाती है किन्तु वह सब विफल हो जाती है और ढाक के तीन पात वाली बात रह जाती है कि विरोध पक्ष बटा ही रहता है और विरोधी मत आपस मे बट जाता है। इन विरोधी नेताओ को इसकी भी परवाह नही कि भले ही देश टूट जाये किन्तु उनके स्वार्थ नही टूटने चाहिए। शायद वे यह नही जानते कि यदि देश टूट गया तो उनका अपना अस्तित्व भी समाप्त हो जाएगा। एक बार विरोध पक्ष बाबू जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व सगठित हुआ जब जनता पार्टी बनी थी। इसका लाभ भी उन्हे सत्ता प्राप्ति के रूप मे मिला किन्तु सत्ता मे आने के बाद पुन उनके व्यक्तिगत तथा दलगत स्वार्थ उभर कर सामने आ गए और व पुन बिखर गये।

वास्तव में देश मे स्वतन्त्रता प्राप्ति के तुरन्त बाद ही कांग्रेस के विकल्प के रूप मे केवल एक ही हिन्दुत्ववादी विरोधी राष्टीय राजनीतिक दल होना चाहिए था जिससे हिन्दु तथा देश के हितो की रक्षा होती। किन्तु ऐसा नही हो सका और विरोध पक्ष विभिन्न राजनीतिक दलों मे बट कर रह गया। जबकि इस देश के 2 प्रतिशत सिखो की अपनी राजनीतिक पहचान के रूप में अकाली दल तथा मुसलमानो की राजनीतिक पहचान के रूप मे मुस्लिम लीग विद्यमान हैं। किन्तु देश के मूल निवासी तथा 80 प्रतिशत हिन्दू की इस देश मे अपनी कोई राजनीति के मच पर उसकी न तो कोई बात सुनी गयी और न ही मानी गयी है। इसके विपरीत हिन्दू हितो की उपेक्षा कर उन पर कुठाराघात किया जा रहा है। आज देश की अखण्डता को पुन 1947 की भान्ति चुनौती देने के स्वप्न सजोये जा रहे हैं और इस देश का राष्ट्रवादी हिन्दू इसे मूक दर्शक की भान्ति देख रहा है।

आज आवश्यकता है कि देश को बचाने के लिए इस देश मे हिन्दू की राजनीतिक पहचान स्थापित की जाये क्योकि इस देश की अखण्डता को मात्र हिन्दू ही बचा सकता है। अन्य तो विदेशी मजहब है उन्हे इस की अखण्डता से कोई सरोकार नहीं है उनके लिए तो यह देश एक सराय या धर्मशाला से अधिक नही है जब तक मन चाहे इस मे रह और यदि अवसर मिले तो इस पर अपना अधिकार कर ल। इस लिए इस देश की अखण्डता, एकता तथा सरक्षा को उत्पन्न हुए खतरे का मुकाबला करने के लिए हिन्दू की राजनीतिक पहचान का होना अत्यन्त आवश्यक है तभी यह सम्भव हो सकेगा। यदि ऐसा न किया गया तो वह दिन दूर नहीं है जब हिन्दू की ही नहीं इस देश की पहचान भी समाप्त हो जाएगी। इस के लिए आवश्यक है कि आर्य समाज, सनातन धर्म सभा, राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद, हिन्दू महा सभा जैसे सभी हिन्दुत्ववादी राष्ट्रीय संगठन अपने व्यक्तिगत तथा दलगत स्वार्थों से ऊपर उठ कर देश हित को सर्वोपरि मानते हुए आपसी भेद भावों को भुला कर एक राजनीतिक मंच पर सगठित रूप से खडे हो जाए और नारा दें कि हम एक हैं, यह देश हमारा है इस की तरफ को किसी को उगली नहीं उठने देंगे। इससे कांग्रेस को भी एक राष्ट्रवादी विकल्प प्रस्तुत किया जा सकेगा। स्वामी दयानन्द जी ने भी कहा था कि यदि आवश्यकता पडे तो राजार्य सभा का गठन किया जा सकता है। इसी तरह अन्य भी महापुरुषो ने समय को देखते हुए राजनीतिक मंच पर आने की बातें कही हैं। वह आवश्यकता आज पड रही है क्यो कि देश का मूल निवासी हिन्दू आज अपने ही देश में अनाथ बना दिया गया है जिसके कारण हिन्दू तथा हिन्दुस्तान दोनों ही सकट मे फस गए हैं। यदि अब भी उपरोक्त संगठन इस बात को न समझे और एक राजनीतिक मच अपना स्थापित न किया तो आने वाले दो दशकों में ही इस देश का पुन विभाजन होगा और फिर उस समय न आर्य समाज बचेगी न सनातन धर्म सभा और न ही रा स्व सघ और विश्व हिन्दू परिषद ही बचेंगी। फिर यहा हिन्दू का नाम लेने वाला भी कोई नहीं रहेगा। फिर पछताना पडेगा और इतिहास हमारी इस भूल के लिए हमें कभी क्षमा नहीं करेगा।

अन्त में एक देश का हित चिन्तक होने के नाते मैं इन सभी उपरोक्त सगठनों के नेताओ से विनम्र अपील करता हू कि बचाओ इस देश के मूल निवासी हिन्दू समाज को। और स्थापित करें, हिन्दू की राजनीतिक पहचान। भूल जाओ अपने व्यक्तिगत तथा दलगत स्वार्थों और भेदभाव को। एक राजनीतिक मंच पर एकत्रित होकर हिन्दुत्ववादी राजनीतिक पहचान स्थापित करो ताकि इस देश की एकता, सुरक्षा तथा अखण्डता की रक्षा की जा सके और इस देश के हिन्दू को बचाया जा सके। यदि अब भी हम इससे चूक गए तो वह कहावत चरितार्थ होगी, "अब चिड़ियाँ ने चुग खेत लिया तो फिर पछताने से क्या होता है" और फिर आने वाली सन्तानें हमें कभी माफ नहीं करेंगी और न ही इस देश तथा हिन्दू का कहीं नाम निशान रहेगा। इस लिए अभी समय है कुछ नहीं बिगड़ा है, अभी सब कुछ ठीक किया जा सकता है किन्तु वह तभी सम्भव होगा जब हम सब मिलकर हिन्दुत्ववादी राजनीतिक दल का गठन कर इस देश की राजनीति में अपना दखल स्थापित करें इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है।

—

अध्यापन सम्बन्धी विशेष सूचना

ऋषि शैली में छ दर्शनाध्यापन व गहन क्रियात्मक वैदिक योग प्रशिक्षण का निःशुल्क व निरन्तर द्विवर्षीय कार्यक्रम आर्य समाज स्थापना दिवस चैत्र शुक्ला प्रतिपदा विक्रमी सवत् 2043, 10 अप्रैल 1986 से आर्य वन विकास फार्म ट्रस्ट (अम्बासर) जि, साबरकांठा—गुजरात मे आयोजित है। अन्तिम प्रवेश तिथि अश्विन पूर्णिमा वि, सं 2042 तक इसमे सात प्रतिभाशाली ब्रह्मचारी प्रवेश कर लिए गए हैं। अन्य अभिलाषी ब्रह्मचारियों हेतु प्रवेश तिथि फाल्गुन मास अमावस्या वि सं 2042 (10 मार्च 1986) तक बढ़ाई गई है। कृपया निम्न पते पर सम्पर्क कर लें।

—स्वामी सत्य पति परिव्राजक

2-कृष्ण कृपाल नगर, दिल्ली-7

—

महर्षि दयानन्द को विष दिया गया—धर्म युग में

प्रकाशित लेख की समीक्षा—

लेखक—श्री डा. भवानी लाल भारतीय

धर्मयुग के दीपावली विशेषांक में प्रकाशित सावित्री परमार का लेख क्या महर्षि दयानन्द की मृत्यु में नन्हीजान का हाथ था ? मुख्यतया जसवन्तगढ़ के कुंवर सवाई सिंह तथा जोधपुर स्थित रसिक बिहारी जी के मंदिर के पुजारी के वक्तव्यों पर ही आधारित है। अधिक अच्छा होता यदि लेखिका अपने प्रतिपाद्य को अधिक प्रामाणिक बनाने के लिए स्वामी दयानन्द के कुछ जीवन चरितों के प्रासंगिक स्थलों को भी देख लेती। वस्तुतः महर्षि दयानन्द जिस समय जोधपुर आए उस समय महाराजा जसवन्तसिंह का सम्पर्क जिस रखैल से था वह नैनी भगतन एक हिन्दू वेश्या थी जो वैष्णव मत की अनुयायी थी। मुसलमान वेश्या नन्हीजान इससे भिन्न थी। इस सम्बन्ध में राजस्थान के प्रख्यात इतिहास लेखक स्व. जगदीशसिंह गहलोत ने समुचित जानकारी प्राप्त कराई है। लेखिका को भी इस बात से बड़ी हैरानी हुई कि नन्हीजान रही मुसलमान, उसके द्वारा इन मन्दिरों का निर्माण कैसे वस्तुतः हिन्दू वेश्या ने ही स्वामी दयानन्द को विष दिलाने के षड्यन्त्र में प्रमुख भूमिका निभाई थी। इस तथ्य की साक्षी देते हैं—राजस्थान के इतिहासकार महा महोपाध्याय प. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, प. झाबरमल शर्मा (?) मुंशी देवी प्रसाद मुंसिफ आदि वे प्रामाणिक लेखक जिनकी इस विषय से सम्बन्धित रचनायें दयानन्द स्मृति ग्रन्थ, चांद के मारवाड़ी अंक तथा सरस्वती पत्रिका के 1929 के नवम्बर मास के अंक में प्रकाशित हुई थीं।

सावित्री जी के लेख में तथ्य विषयक कुछ अन्य भूलें भी हैं। यथा वे लिखती हैं कि तख्तसिंह के दो राजकुमार थे। सत्य यह है कि महाराजा जसवन्तसिंह तथा प्रतापसिंह के अतिरिक्त महाराज किशोर सिंह भी तखत सिंह के ही और सुपुत्र थे जिनके महल जोधपुर से मण्डोर जाने वाली सड़क पर आज भी मौजूद हैं। यह कहना भी उचित नहीं है कि स्वामी दयानन्द ने राजस्थान की रियासतों में पैदल घूम घूम कर धर्म प्रचार किया था। वस्तुतः स्वामी दयानन्द की राजस्थान में चार बार यात्राएं हुई थीं। इनमें से प्रथम 1865 ई की यात्रा में वे अवश्य ही पैदल भ्रमण करते रहे, किन्तु उनके अवशिष्ट भ्रमण रेल तथा अन्य साधनों से ही हुए थे। स्वामी जी को जोधपुर के जिस बाग में ठहराया गया था वह प. शिवदान का बाग नहीं अपितु मियां फैजुल्ला खां का बाग था। इसके बीच की कोठी में ही स्वामी जी ने लगभग चार मास तक निवास किया था। यहां यह ज्ञातव्य है कि जोधपुर राज्य की हकीकत बही में स्वामी जी के जोधपुर आगमन का जो उल्लेख हुआ है उसमें स्पष्ट लिखा है कि जब स्वामी दयानन्द जोधपुर आए तो मियां फैजुल्ला खां के बाग में उनका डेरा किया गया। 4 जून 1883 के मारवाड़ गजट के अंक में भी इस तथ्य का उल्लेख हुआ है। यह भी स्मरणीय है कि इन्हीं मियां फैजुल्ला खां के वंशज मियां बरकतुल्लाखां के राजस्थान के मुख्य मन्त्रित्व काल में यह कोठी और उसका परिसर स्वामी दयानन्द के निवास की स्मृति के रूप में एक स्मारक बनाने के लिए आर्य समाज को प्रदान किया गया था।

स्वामी जी के जोधपुर के राजमहल में जाने तथा वहां वेश्या नन्ही की पालकी उठाने वाले महाराजा की भर्त्सना करने वाला प्रसंग यद्यपि पर्याप्त चर्चित है, किन्तु स्वामी दयानन्द के प्रामाणिक बंगला जीवन चरित लेखक देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय इससे सहमत नहीं हैं। राजाओं के निवासों या विलास गृहों की व्यवस्था इतनी शिथिल नहीं होती कि एकाएक बिना सूचना दिए कोई भी व्यक्ति वहां अनायास प्रविष्ट हो जाए। यदि मान भी लिया जाए कि स्वामी जी का राजमहल में आकस्मिक आगमन हुआ था तब भी उन्हें राजा के आने तक प्रतीक्षा गृह में बैठाया जा सकता था। यह कथन भी पुष्टि की अपेक्षा रखता है कि स्वामी जी के महाराजा के नाम लिखे गए पत्रों को नन्ही ने उन तक पहुंचने नहीं दिया। प. भगवद्दत्त द्वारा सम्पादित ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन में संकलित पत्र संख्या 502 द्रष्टव्य है जिसमें स्वामी जी ने गुप्त समाचार सूचक से महाराजा को नन्ही का सम्पर्क त्यागने की प्रेरणा की है और लिखा है—'एक वेश्या से जो कि नन्ही कहाती है उससे प्रेम उसका अधिक संग और अनेक विवाहिता) पत्नियों से न्यून प्रेम रखना आप जैसे महाराजाओं को सर्वथा अयोग्य है।

जिस रसोइये ने 29 सितम्बर 1883 की रात्रि को स्वामी जी को दूध में विष (संखिया) दिया वह शाहपुरा निवासी था और उसका नाम जगन्नाथ न होकर धूड़ मिश्र था। यह सत्य है कि लोक में विषदाता रसोइये का नाम जगन्नाथ ही प्रसिद्ध है किन्तु स्वामी दयानन्द के जीवन चरित लेखक प. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय किसी जगन्नाथ नामधारी रसोइये का संकेत नहीं करते। धूड़ मिश्र को स्वामी जी की रसोई बनाने के लिए शाहपुरा नरेश नाहरसिंह ने भेजा था और उसी ने नन्ही तथा अन्य षड्यन्त्रकारियों के बहकावे में आकर 29 सितम्बर की रात्रि को स्वामी जी को विष दे दिया। सूरजमल के पश्चात जिस डाक्टर को स्वामी जी की चिकित्सा का कार्य सौंपा वह अलीमुद्दीन नहीं किन्तु डा. अलीमर्दान खां था जो मूलतः एटा जिले का निवासी था।

नन्ही भगतन द्वारा जोधपुर के उदय मन्दिर मुहल्ले में निर्मित मन्दिर के पुजारी का सावित्री परमार को दिया गया यह बयान तो निश्चय ही गलत है कि आर्य समाजियों ने स्वामी जी को चिर अमर करने के लिए उन्हें विष देने की कथा गढ़ ली है। स्वामी जी की मृत्यु को स्वाभाविक तथा जिगर एवं तिल्ली आदि से बिगड़ने के कारण होने वाली बताने वाले अन्य लेखकों यथा डा. बी. के. सिंह जो श्रीराम शर्मा तथा श्री ओंकार सिंह के कथनों का प्रतिवाद समय-समय पर इन्हीं पंक्तियों के लेखक द्वारा किया जा चुका है। इस प्रकरण की विस्तृत एवं तर्क पूर्ण समीक्षा इस लेखक ने अपने शोधपूर्ण ग्रन्थ नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती में एक पृथक अध्याय लिख कर की है।

—

स्वास्थ्य एवं दीर्घायु के लिए बीस–सूत्री नियम

1 परमात्मा पर विश्वास रखें।
2 शरीर की सफाई और सेहत का ध्यान रखें।
3, दूषित वातावरण, भीड़ तथा दूषित वायु से दूर रहें। उन व्यक्तियों से दूर रहें जिनमें रोग और छूत के कीटाणु हों। रासायनिक तथा रेडियम का प्रभाव डालने वाले तत्वों से बचें।
4 दुर्घटनाओं से बचें।
5 छूत की बीमारियों की रोकथाम के नियमों का पालन करें। अच्छी तरह से पकाया हुआ और शुद्ध भोजन करें। साफ पानी पियें। मक्खियों, मच्छरों तथा दूसरे कीटों से बचें।
6 सतुलित भोजन करें। मसालेदार तथा तली हुई वस्तुओं से दूर रहें। ताजे फल सब्जियां तथा दूध आदि का प्रयोग करें।
7 नित्य-प्रति व्यायाम करें और आलस्य को त्यागें।
8 शक्ति से अधिक भार न उठायें।
9 धूम्रपान से बचें और नशीली वस्तुओं का सेवन न करें।
10 आराम और नींद की ओर समुचित ध्यान दें। पर यह भी याद रखें कि कठिन परिश्रम शरीर और मन को शक्तिशाली बनाता है।
11 शौच स्नान इत्यादि दैनिक कार्यक्रम बनाएं।
12 बार-बार गर्भाधान से बचें और शारीरिक परीक्षण किसी अच्छे डाक्टर से करवाएं
13 यदि आपके माता-पिता या अपने घर में किसी को शक्कर या दिल की बीमारी हो तो बीस वर्ष की आयु या इससे भी पहले किसी अच्छे डाक्टर से निरीक्षण करवाते रहें।
14 सामान्य स्वास्थ्य में जब भी अतिक्रमण आये तो डाक्टर का द्वार अवश्य खटखटायें।
15 डाक्टर की सलाह को पूरी तरह अपनायें।
16 स्वयं ही कोई दवाई न लें।
17 शान्त और स्वस्थ स्वभाव को अपनाएं। मन वचन और कर्म में शुद्धता को अपनायें। अपने स्वजनों एवं परिजनों से प्यार करें।
18 अपना कर्तव्य ठीक ढंग से निभायें और अपने कार्य से सन्तुष्ट रहें।
19 अच्छी आदतें दैनिक कार्यक्रम बनाएं। इसमें किसी प्रकार के बाधक या पिछलग्गू (?) न बनें।
20 अपने घर, समाज और देश की सेवा अन्तिम श्वास तक करते रहें।

'परमात्मा पर विश्वास रखें और उचित काम करें।

श्रीमद्दयानन्द धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय

करतारपुर (जिला जालन्धर)—144301

—कृष्ण शरण गुप्ता
प्रधान

महात्मा हंसराज दिवस 20 अप्रैल 1986 को

हर वर्ष की भांति अगले वर्ष भी (1986 में) महात्मा हंसराज दिवस 20 अप्रैल रविवार को तालकटोरा गार्डन के 'इन्डोर स्टेडियम' में मनाया जाएगा। अत समस्त आर्य समाजों, स्त्री समाजों, स्त्री आर्य समाजों डी ए.वी संस्थाओं एव अन्य आर्य संस्थाओं से प्रार्थना है कि वे उक्त तिथि को होने वाली सभा में अवश्य सम्मिलित होने की कृपा करें विस्तृत कार्यक्रम बनाया जा रहा है जिसकी सूचना यथा समय भिजवा दी जाएगी।

—रामनाथ सहगल

मंत्री—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

ऋषि निर्वाणोत्सव

आर्य समाज मन्दिर बंगा में तिथि 17-11-85 को ऋषि निर्वाणोत्सव मनाया गया। जिस में श्री प्रो भद्रसेन होशियारपुर का बड़ा प्रभावशाली प्रवचन हुआ। प्रोग्राम बड़ा ही सफल रहा।

मन्त्री

शोक प्रस्ताव

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों और कर्मचारियों की सभा में सुयोग्य विद्वान् कर्मठ कार्यकर्ता, आर्य समाज के मूर्धन्य नेता, पंजाब के भूतपूर्व मन्त्री श्री पृथ्वी सिंह आजाद के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गयी कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा शोक विह्वल परिजनों तथा आर्यजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति दे। श्री आजाद ने सारा जीवन राष्ट्र के उत्थान तथा आर्य समाज के कार्यों को समर्पित किया। वे पंजाब सभा, सार्वदेशिक सभा, गुरुकुल कांगड़ी तथा अन्य अनेक धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के सदस्य तथा अधिकारी थे। सूचना मिलते ही दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यालय बन्द कर दिया गया।

—डा. धर्मपाल

महामन्त्री

आर्य समाज मन्दिर मेन बाजार, पठानकोट में विशेष यज्ञ (पंजाब)

आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट में रविवार 8.12.85 को औषधालय के रोगियों के स्वास्थ्य के लिए विशेष यज्ञ का आयोजन किया। जिसमें रोगियों को तथा स्कूल के निर्धन बच्चों को स्वैटर तथा जूते वितरण किए गए। हाजरी भी अच्छी थी। यज्ञ पुरोहित जी के साथ प. विजय कुमार शास्त्री प्रादेशिक सभा तथा प. हजारी लाल जी भजनोपदेशक ने प्रभावशाली यज्ञ कराया। कार्यक्रम बड़ा प्रभावशाली था। सत्संग के पश्चात् दूसरे का यज्ञ शेष वितरित किया गया।

—बालकृष्ण

प्रधान

आडम्बर रहित आदर्श विवाह सम्पन्न

आर्य समाज अजमेर के तत्वावधान में विगत दिवस श्री प्रो देव शर्मा वेदालंकार के पौरोहित्य में दयानन्द कालेज अजमेर के प्राध्यापक नरेन्द्र कुमार पचारी कोटा निवासी का शुभ विवाह उदयपुर निवासिनी श्री चन्द्रकला धनोतरा के साथ सामाजिक कुरीतियों एव सब प्रकार के बाह्य आडम्बरों तथा दहेज आदि से रहित दोनों की पारस्परिक सहमति से वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज के पदाधिकारियों ने वर वधू के सुखी दाम्पत्य जीवन की कामना करते हुए आशीर्वाद दिया।

—दत्तसिंह

मन्त्री

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. नं. पी.जे.एल. 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 36. 22 पौष सम्वत् 2042 तदनुसार 5 जनवरी 1986 दयानन्द 161 अंक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

गायत्री मन्त्र और उसका महत्व

लेखक—श्री विजय लक्ष्मी वर्मा, मुड़गांवा

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

जीवन में मृत्यु का अवलोकन करके मृत्यु पर विजय प्राप्त करना क्या सम्भव है ? अगर हां, तो कैसे ? आत्मा स्वभावतः निर्मल, स्वतन्त्र और अमृतपुत्र है । जब हम आत्मा के विरुद्ध कर्म करते हैं, तो मृत्यु के निकट चलते चले जाते हैं और स्वतन्त्र आत्मा बन्धन में, पतन के चक्र-व्यूह में खो जाती है ।

जो मनुष्य जीवन में कभी भी आत्म हनन नही करते और सेवा-सहायता-त्याग-पूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं । वे ही वास्तव में जीवन काल में मृत्यु का अवलोकन करके उस पर विजय प्राप्त करते हैं । उनके लिए कुछ भी असम्भव नहीं ।

पतित पावनी गायत्री माता अपनी पावन गोद मे बिठा कर किस प्रकार हमारे बन्धन शिथिल करती है । हम इस ओर आज विचार करेंगे, ताकि हम भी ऋषियो के बताए उस मार्ग पर चलें, जिस ओर वे चले थे । उनको सुख-शान्ति और आनन्द अनायास तो प्राप्त न हुआ था । त्यागमय जीवन प्राप्त करके ही वे आनन्दधाम के अधिकारी बने थे ।

हमारे प्रभु देव अपनी अपार कृपा से रक्षा का हाथ हम पर सदा रखते हैं, इसलिए उनका 'ओ३म्' नाम सर्वत्र व्यापक है । वे सर्वव्यापक हैं । हमारी बुद्धियों को सदा सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते हैं । दुखों से छुड़ा कर सुखों की ओर ले चलते हैं । जरा से दुःख अथवा कष्ट से हम विचलित होकर रोने लगते हैं और स्वयं को निर्दोषी तथा प्रभु को ही दोषी ठहराते हैं । हमारा धैर्य भी जवाब देने लग जाता है । माता एक नन्हें से शिशु के कटोरे को लेकर मांजने के लिए ले लेती है, इतने में ही बालक अधीर हो जाता है, और माता पर क्रोध करने लगता है । उसको यह अन्याय सा लगता है, प्रतीत होता है ।

प्रभु देव भी यही करते हैं । हमारे आत्मारूपी मैले पात्र को फिर शुद्ध कर के सद्गुणो से भरने की चेष्टा करते हैं । फिर हम क्यो अधीर हो ? वे तो न्याय ही करते हैं । हमारा विश्वास-श्रद्धा कभी शिथिल न हो ।

भूः—ओ३म् हो हमारा प्राणदाता है, वह प्राणो का भी प्राण है । हम भी धरती पर बोझ न बनें, इस लिए प्रभु के प्रिय पात्र बनने के लिए उससे प्राण-रक्षा का अधिकार प्राप्त करने के लिए इस योग्य बनें कि किसी की रक्षा कर सकें । अपने सामर्थ्यानुसार जब भी अवसर मिले, संकट-ग्रस्त प्राणी की रक्षा-प्राण तक देकर रक्षा करें । सत्य-स्वरूप ईश्वर, अपनी अपार अनुकम्पा से, भू. शक्ति से हमारी आत्मा में नव जीवन संचार करेंगे, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं ।

भुवः—दुःखनिवारक प्रभुदेव अपने प्रिय पात्र के दुखों को, कष्टों को दूर कर देते हैं, जो स्वयं को कष्ट देकर भी दूसरों के कष्टों को हरते हैं । सेवा और सहायता के बल पर, जब और जहा तक हो सके आगे-ही-आगे उन्नति करनी चाहिए । दूसरो को कर्तव्य का मार्ग दिखा कर स्वयं पीछे हट जाना कायरता है ।

स्वः—सर्व शक्तिमान्, दयालु पिता, अपनी महान् दयादृष्टि से प्राणिमात्र को आनन्द की ओर प्रेरित करते हैं । कर्मानुसार धन-ऐश्वर्य प्रदान कर के वह उसे केवल संग्रह करने की प्रेरणा नही देते, वरन् यथा शक्ति सत्कर्मों मे, श्रेष्ठतम कर्मों मे व्यय करने की आज्ञा देते है । ताकि सविता देव की निर्मित सृष्टि मे यज्ञ, दान तथा संगति करण रूपी यज्ञ निरन्तर प्रवाहित होता रहे । वेद माता का ही तो आदेश है—तेनत्यक्तेन भुञ्जीथा, मा गृधः, कस्य स्विद्धनम् ॥

सविता—देव जगत् का निर्माण कर के, इसको नियमानुसार गति प्रदान करते हैं । हम भी उस के सत्य नियमो का पालन करें । अग्नि-जल-वायु-आकाश व पृथ्वी इन देवो से जो हम निरन्तर लाभ प्राप्त कर रहे हैं, उनका आदर करें । जिस प्रकार फटे वस्त्र को सी कर पहनते हैं और भद्र समाज मे सम्मान के भागी बनते हैं । उसी प्रकार अग्निहोत्र-दान संगतिकरण जैसे श्रेष्ठ कर्म करके हम भी देवो मे सम्मानित होते हैं । हमारा भी तेज बढ़ता है । समस्त वायुमण्डल शुद्ध होकर वर्षा के द्वारा हमें नाना प्रकार से स्वादिष्ट पदार्थ प्राप्त होते हैं ।

वरेण्यम्—एकमात्र प्रभु ही हमारा उपास्य है । किसी दूसरे की उपासना करना मूर्खता है । वह प्राणो का प्राण, महान् शक्तियों का उत्पादक, जिसके संकेत मात्र से समस्त लोक-लोकान्तर नियमबद्ध होकर गमन करते हैं, वही स्वप्रकाश स्वरूप स्वामी हमारा पालन-पोषण करता है । जिसने अपनी आत्मा को उसके अर्पण कर दिया तो फिर वह आनन्द स्वरूप देव क्यो न उसको मृत्यु के पाश से छुड़ा कर अमृत की ओर ले जाए गे ।

भर्गः—भ्रम, भय, शंका और प्रमाद के आवरण आत्मा से हट जाते हैं और परम देव बुद्धि को अपने तेज से प्रकाशित कर देते हैं तो तीनो प्रकार के ताप मानव के लिए विघ्न पैदा नहीं करते । अथवा यू कहें कि कष्ट की अवधि वरदान बन कर आत्मिक बल को दृढ़ कर देती है । यह सब कैसे होता है ? वेदाध्ययन के द्वारा । स्वाध्याय से ही भ्रम मिटते हैं और बुद्धि से तमस् का अन्धकार हट कर सत्य के दर्शन होते हैं ।

देवस्य—उस देवाधिदेव, दिव्य-गुण-युक्त परमेश्वर को न्यायकारी जान और मान कर जब हम उस की दिव्य ज्योति को बुद्धि मे प्रकाशित करते हैं, तो वह अन्तर्यामी हमारी समस्त मलिनता को छिन्न-भिन्न कर देता है । इसलिए प्रभु देव के दिव्य गुणो को सदा धारण करें ।

हम ऐसा क्यो चाहते है ? क्योकि हम मृत्यु से अमृत की ओर जाना चाहते है । जब तक हमें प्रभु देव सत्प्रेरणा न देंगे, बुद्धि से मलिनता दूर न होगी, तब तक हमारी आत्मा गहन अन्धकार में गोते खाती रहेगी । प्रभु देव के तेजस्वी और पाप-नाशक स्वरूप को हम सदा वरण करें और हृदय मे धारण करें । क्योकि धियो यो नः प्रचोदयात्—वह हमारी बुद्धियो को निर्मल करके सन्मार्ग की ओर प्रेरित करें ।

ऐसी हमारी कामना है । जब हम मन वचन व कर्म से एक मत होकर वेद-अध्ययन द्वारा और गायत्री माता के सार गर्भित अर्थों को विचार करके अपनी त्रुटियो को दूर करेंगे तो परमेश्वर की अपार अनुकम्पा से हम सन्मार्ग-पथ के गामी होंगे और वेद माता के वरद रत्न, आयु प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, द्रविण और ब्रह्म-तेज हमें निःसन्देह प्राप्त होगा ।

यही है जीवन को शुद्ध करके मृत्यु पर विजय प्राप्त करना । प्रभु को सर्वज्ञ जानकर पाप से पृथक् रहना और मोक्ष गामी होना ही उचित है ।

(वेद [illegible] से साभार)

तीन प्रकार के बन्धन

लेखक—श्री स्वामी वेदमुनि जी, परिव्राजक
वैदिक सस्थान : नजीबाबाद

(गतांक से आगे)

वरुण शब्द 'वृ' वरणे धातु से बना है, वरण किए जाने के योग्य। वरण करना अर्थात् चुनना पसन्द करना। वरण किया जाता है, सुन्दर को, उत्तम को। परमात्मा न केवल सुन्दर ही है अपितु वह सुन्दरतम् है, परम् सुन्दर। उससे बढ कर कोई सुन्दर हो नही सकता। यदि वह सुन्दर न होता तो ससार मे सौन्दर्य कहा से छिटकता। वह ससार साधारण सुन्दर नही है। असीम सुन्दर है, अदभुत सुन्दर। यदि यह सुन्दर न होता, इस संसार में सौन्दर्य न होता तो मनुष्य इसमे फसता क्यो ? इस सौदर्य से प्रभावित होकर ही तो यह इस मे फस बैठता है।

प्रश्न यह है कि यह सौदय इस ससार मे आया कहा से ? जो ससार के सर्वोत्तम प्राणी मनुष्य को आकर्षित कर लेता, उसे अपने सौंदर्य जाल में फसा लेता सौंदर्य के बन्धन मे बाध लेता है। क्या आप यह समझते हैं कि यह सौदर्य प्रकृति का है ? नहीं ऐसा नही है, प्रकृति मे कोई सौंदर्य नही है। एक उदाहरण से समझने मे सुविधा होगी।

किसी भवन पर अथवा नाम-पटट पर जो सौंदर्य छिटकता है—क्या आप के विचार मे वह उन रगो का है जिन से उसे लिखा सजाया सवारा गया है ? नहीं—यह विचार भ्रान्त है। रग किसी वस्तु को रगदार बना सकते हैं सुन्दर नही। सुन्दर तो चितेरा बनाता है रग भरने वाला बनाता है। कही—किसी मेज पर, खम्ब पर अथवा फर्श पर रग गिरने से कोई सुन्दरता आती है क्या सुन्दरता तो विधिपूर्वक, विशेष विधि से उचित स्थानो पर समुचित विधि से समुचित मात्रा में ही रग भरने से आता है। परन्तु यह चितेरे की तूलिका, उसकी कूची मे भी नही है अपितु वह सुन्दरता उसके विचारो और विचारो के पुञ्ज चितेरे के मन मे है। ठीक इसी प्रकार इस ससार मे जो सौंदर्य जो आकर्षण है, वह इस का अपना नही, प्रकृति का नहीं अपितु उस परम-पिता परमात्मा का ही है। वही है सौदय की खान। उसी परम चितेरे ने यह सौंदर्य छिटकाया है—अपनी निराकार तूलिका से। वरुण का दूसरा अर्थ हो सकता है—उत्तम तथा उत्तमतम वह परमात्मा न केवल उत्तम है अपितु उत्तमतम है, सर्वोत्तम है। ससार में जितनी उत्तमतायें हैं वह सब उसी की देन है। अनुत्तमतायें, निकृष्टतायें सामाजिक झझटो में फस कर, ससार के आकर्षणों से यह मानव स्वय रच लेता है और उन्हीं से इस के स्वाभाविक बन्धन जिनमे यह बधा है—और जकड जाते हैं। परन्तु, परमात्मा इन सब से परे है, उस पर न निकृष्टताओ का प्रभाव होता है और न असौदर्य का। वह तो उत्तमतम और सुन्दरतम है। यही कारण है कि साधक उस परम देव को उत्तमतम और सुन्दरतम वरुण कह कर पुकारता है।

साधक का कहना है—हे वरुण हमारे बन्धन को शिथिल कर दे। साधक जब प्रयत्न करते—करते थक जाये, जब उससे बन्धन न टूटे तब—तब उसके पास इसके अतिरिक्त क्या उपाय हो सकता है कि वह उत्तमताओ के भण्डार परमात्मा से माग करे कि वह अनुत्तमताओ कर उसके बन्धन काटे। तीनो प्रकार की अनुत्तमताओ के बन्धन कटवा रहा है वह।

उसका कहना है कि ऊपर के बन्धन को ऊपर को मध्य के बन्धन को (मध्य से ही) अलग करके तथा नीचे के बन्धन को नीचे गिरा कर शिथिल कर दे इन तीनो प्रकार के बन्धनो पर भी थोडा विचार कर लिया जाए। इन का दिग्दर्शन कर लेना भी आवश्यक है।

ऊपर हम लिख आय हैं कि 'उत्तमम्' ऊपर का बन्धन बौद्धिक है, ज्ञान सम्बन्धी अर्थात् अज्ञानता का है। ज्ञान की भ्रान्ति के कारण अर्थात् ठीक ज्ञान न होने पर जो बुरे कर्म किए जाते हैं, वह ऊपर वाले बन्धन को जकड देते हैं। परिणाम-स्वरूप मानवात्मा मानव-जीवन के लक्ष्य से भटक कर आवागमन के पथ पर पड जाता है।

बौद्धिक का अर्थ है, बुद्धि से सोच-विचार कर योजना बनाकर किया गया कार्य। बुद्धि से सोच विचार कर, निश्चित कर अयोजना बना कर किया हुआ दुष्कर्म (अनुत्तम कर्म) भयंकर पाप है। पाप तो वह भी है, जो ना समझी से दुष्कर्म हो, किन्तु जो दुष्कर्म सोच-विचार पूर्वक निश्चय करके योजनाबद्ध रूप से किया जा रहा है, वह तो और भी भीषण है अपितु भीषणतम। भूल और अज्ञानता से किया गया दुष्कर्म यदि बन्धन को जकड देता है तो जान-बूझकर किया गया दुष्कर्म (पाप) कितने भीषण परिणाम भुगायगा—इस पर साधकगण ध्यान दें। कहना यह चाहिए कि यदि भूल से किये हुए कर्म का फल भोगने के लिए मनुष्य अथवा मनुष्येतर किसी प्राणी का एक बार जन्म लेना पड़े तो जान—बूझ कर किए हुए पाप का फल भोगने के लिए तो पता नहीं कितनी लम्बी और दीर्घकालीन जन्म—जन्मान्तरों की पंक्ति को पार करना होगा ? यही कारण है कि साधक प्रार्थना कर रहा है कि हे वरुण ! ऐसी कृपा करो कि मैं न जान-बूझ कर और न भूल से ही कोई दुष्कर्म कर पाऊ। साथ ही साधक की यह भी कामना है कि वह बुद्धि सम्बन्धी पाप और उन के विचार किसी भी प्रकार मेरे जीवन को प्रभावित न कर पाए। इन्हे उत्—ऊपर (को ही ले जा कर) श्रथाय—शिथिल कर दे।

फिर कहता है 'मध्यम वि श्रथाय मध्य के मानसिक विचारो के, सकुचितता-सकीर्णता और सग्रहवाद अर्थात् परिग्रह के (पाश को) पृथक् कर के शिथिल कर। मानसिक पाश है, मन में निकृष्ट कोटि की कल्पनायें यह मनुष्य के पतन का प्रबल कारण होती हैं। मन एव मनुष्याणा कारण बन्धमोक्षयो' मन ही मनुष्यो के बन्धन और मोक्ष का कारण है। यजुर्वेद के शब्दो मे 'ज्योतिषा ज्योतिरेक तन्मे मन शिवसकल्पमस्तु' ज्योतियो का एकमात्र ज्योति अर्थात् विषयों का ज्ञान कराने वाली इन्द्रिया जिसके कारण कार्य करता है, वह मेरा मन शुभ सकल्प वाला हो। यदि मन मे शुभ के स्थान पर अशुभ सकल्प हो तो इन्द्रिया अशुभ कर्मों, पाप मे ही प्रवृत्त होंगी और परिणाम स्वरूप मानस शरीर मे स्थित जीवात्मा पापों के परिणाम भोगने के लिए जन्म-जन्मान्तरों मे ही भ्रमण करेगा। मोक्ष इसे प्राप्त न हो सकेगा। अशुभ सकल्पो में फसा हुआ व्यक्ति अशुभ विचारों की ही अभिव्यक्ति करता है। इस का परिणाम यह होता है कि जो लोग किसी कारणवश ऐसे व्यक्ति के प्रभाव मे होते हैं, वह उससे प्रभावित होने के कारण उस के विचारों को ग्रहण कर भ्रष्ट मार्ग पर पड जाते और पाप कर्मों में लिप्त हो जाते हैं। इस प्रकार लोगों को भ्रष्ट करने समता है। इस कारण दुर्विचारों की दुष्कर्मों में प्रेरित करने का पाप भी उसे अभिव्यक्ति से भी बचते रहना चाहिए।

सकुचित और सकीर्ण मनोवृत्ति से अपने और पराये का भेद-भाव बढ़ता है। इससे समाज में दुराव, मन-मुटाव और विघटन होता है। विघटन के कारण लड़ाई, झगड़े बढ़ते हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी सकीर्णता से किसी अन्य की हानि न भी हो तो भी वह व्यक्ति स्वयं तो भगवान से दूर हो ही जाता है। परमात्मा तो सर्व व्यापक है, प्रत्येक व्यक्ति में ओत-प्रोत है और यह सकीर्णता के कारण दूसरो को पराया समझता है तो वह भगवान का प्यारा कैसे हो सकता है ? कोई समझदार पिता किसी अपने ऐसे बेटे को कदापि प्यार नही करता, जो अपने दूसरे भाईयो को सकीर्णता की दृष्टि से देखे उन्हे पराया समझे। परमात्मा हम सब का पिता है। वह भी किसी ऐसे व्यक्ति को प्यार नहीं करता, जो दूसरे लोगो से प्यार न करता हो, उन्हे पराया समझता हो। परमात्मा को सकीर्ण नही उदार-चेता प्यारे होते हैं।

अय निजो परैवेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदार चरितानान्तु वसुधैव
कुटुम्बकम ॥

यह अपना है और यह पराया—ऐसी गणना तो छोटे मन वाले लोग किया करते हैं। उदार चरित्र वालो के लिए तो समस्त ससार ही कुटुम्ब है और समस्त ससार को अपना परिवार मानने वाले ही वास्तविक अर्थों में भगवान के भक्त हैं।

कृपणता भी मध्यम पाश है। कारण कि यह भी बन्धन को जकडती और मध्यम स्थान अर्थात् हृदय में रहती है। कृपण व्यक्ति धन को जोडने मे लगा रहता है। दान करना तो अलग रहा वह तो न अच्छा भोजन खाता है, न अच्छा वस्त्र पहनता है। यहा तक कि घर की सुघराई और स्वच्छता की ओर ध्यान नही देता। क्योंकि उसे धन व्यय होने की चिन्ता बनी रहती है। कुछ कृपण तो ऐसे भी होते हैं जो रुग्ण हो जाने पर औषधि तक पर व्यय नही करना चाहते। घर के रोगियो को भगवान भरोसे छोड कर मृत्यु का ग्रास बनाने का पाप करते और इस प्रकार हत्यारो की पंक्ति मे सम्मिलित होते हैं। भला इस प्रकार के लोग कभी मोक्षाधिकारी बन सकते हैं ? वह तो मानवेतर योनियों मे दीर्घकाल तक भटकते हैं।

(क्रमश)

सम्पादकीय—

दानियों के लिए एक स्वर्णिम अवसर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का नव भवन बन रहा है केवल तीन कमरे और कुछ दुकाने तैयार हुई हैं। यज्ञशाला अभी अधूरी पड़ी है जिस पर बहुत-सा व्यय होने वाला है। कार्यालय के लिए कमरे, पुस्तकालय तथा एक बड़ा हाल व एक तरफ की दुकाने बनने वाली हैं। जिसके लिए सभा को कई लाख रुपए की आवश्यकता है।

हमने दानी महानुभावों से समय-समय पर इस कार्य के लिए धन देने की अपील की है, कुछ भाई-बहनों ने हमारी प्रेरणा पर हमें धन दिया भी है और उसी धन से यह अतिथि भवन और दुकानें आदि तैयार हुई हैं। हम जब भी दान के लिए अपील करते थे तो कई दानी महानुभाव यह कहते थे कि यदि सभा को दिए जाने वाले धन पर उन्हें इन्कम टैक्स की छूट हो तो वह अधिक धन दे सकते हैं। धनी मानी लोगों को अब यह जान कर प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को जालन्धर के आयकर आयुक्त अधिकारी ने (ए. टी. जी. सर्टीफिकेट) इन्कम टैक्स विमुक्ति अर्थात् दानियों को सभा को दिए जाने वाले धन पर इन्कम टैक्स की छूट दे दी है। यह आदेश पत्र सभा को 11-12-85 से मिल गया है जिसका नं. 11806 है।

इस प्रकार अब जो दानी महानुभाव सभा भवन निर्माण के लिए धन देंगे उस पर उन्हें इन्कम टैक्स की छूट होगी। मेरी सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि वह सभा भवन निर्माण के लिए दिल खोल कर दान दें।

हम चाहते हैं कि लाहौर में जिस प्रकार सभा का मुख्य कार्यालय गुरुदत्त भवन सारे भारत में प्रसिद्ध और दर्शनीय था। उसी प्रकार अब जालन्धर में भी सभा का मुख्य कार्यालय गुरुदत्त भवन अपना विशेष स्थान रखने वाला हो, परन्तु यह तभी हो सकेगा जब दानी महानुभाव इस ओर ध्यान देंगे। मुझे विश्वास है है आर्य समाज में दानियों की कमी नहीं है। हमारे पास बड़े-बड़े दानी हैं परन्तु आवश्यकता उनके इस ओर ध्यान देने की है।

यह सभी दानियों के लिए स्वर्णिम अवसर है अब वह दिल खोल कर सभा की सहायता कर सकते हैं। इसलिए मेरी सभी आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों व कार्यकर्ताओं से प्रार्थना है कि वह स्वयं भी धन भेजें और दूसरे सज्जनों को भी प्रेरणा देकर सभा को धन भिजवा कर पुण्य के भागी बनें।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

शिवरात्रि विशेषांक के लिए विज्ञापन भेजें

आर्य मर्यादा के पिछले विशेषांको की पाठकों ने बहुत सराहना की है। गत वर्ष का शिवरात्रि विशेषांक और उसके बाद कृष्ण जन्माष्टमी विशेषांक तथा दीपावली विशेषांक बड़े प्रभावशाली थे। हमारा यह प्रयत्न रहा है कि हम आर्य मर्यादा के विशेषांकों को बहुत प्रभावशाली बनाएं। हम इस पत्रिका को और भी अधिक उन्नत करना चाहते हैं। परन्तु यह कार्य आर्य शिक्षण संस्थाओं, आर्य समाजों और स्कूल, कालेजों आर्य तथा पाठकों के सहयोग के बिना नहीं हो सकता। अब हम 8 मार्च 1986 को शिवरात्रि के अवसर पर फिर ऋषि बोध विशेषांक गत वर्ष की भान्ति प्रकाशित कर रहे हैं। इसके लिए जहां सभी आर्य बन्धु अभी से आर्डर भेजें, वहां विज्ञापन भी शीघ्र अति शीघ्र भेजने का कष्ट करें। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित प्रत्येक स्कूल, कालेज के अधिकारियों से मेरी प्रार्थना की कम से कम एक-एक पृष्ठ का सभी विज्ञापन अवश्य भेजें। सभी समाजों के अधिकारी व सदस्य भी एक-एक पृष्ठ का विज्ञापन स्वयं भी भेजें और अन्य भाई-बहिनों से भी भिजवाएं। हमारी उद्योगपतियों से भी प्रार्थना है कि वह भी अपने उद्योग सम्बन्धी विज्ञापन भेज कर हमें अपना सहयोग दें। विज्ञापन किसी दिवंगतात्मा की स्मृति में भी भेजे जा सकते हैं। मैगजीन साईज के पूर्ण पृष्ठ का विज्ञापन शुल्क केवल 400 रुपये रखा गया है। आधे पृष्ठ का 200 होगा। टाईटल पृष्ठ के विज्ञापन का शुल्क 1000 रुपया होगा।

विशेषांक की तैयारी अभी से आरम्भ कर दी गई है। क्योंकि इतना बड़ा विशेषांक प्रकाशित करने में समय लगता है। इसलिए मेरी सभी आर्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि वह अपने स्कूल, कालेज, दुकान, उद्योग और पुण्य स्मृति सम्बन्धी विज्ञापन शीघ्र अति शीघ्र सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें। साथ ही अपनी-अपनी संस्थाओं की ओर अधिक से अधिक अंकों का आर्डर भी भिजवाएं ताकि भारी सख्या में यह विशेषाक प्रकाशित किया जा सके। प्रत्येक स्कूल, कालेज तथा आर्य समाज कम से कम 100 प्रतियों का आर्डर अवश्य भेजें तथा इससे भी अधिक मंगवा कर प्रचारार्थ वितरण करें, ताकि आर्य समाज का सन्देश तथा वेद का सन्देश घर-घर पहुंच सके। मुझे विश्वास है कि मेरी प्रार्थना पर आर्य बन्धु व बहनें विशेष ध्यान देंगी।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

वर्ष 1986 का शुभारम्भ

सन् 1985 समाप्त होकर प्रथम जनवरी से सन् 1986 आरम्भ हो गया है। आर्य मर्यादा अपने सभी पाठको के लिए इस अवसर पर मगल कामना करता कि यह वर्ष सभी के लिए शुभ हो। हम अपना नव वर्ष तो वैसे चैत्र शुद्धि प्रतिपदा नव सम्वत् से आरम्भ मानते हैं। परन्तु बहुत से भाई प्रथम जनवरी से भी नव वर्ष मानते हैं।

गत वर्ष 1985 में हमने जो कार्य आरम्भ किए थे और जो 31 दिसम्बर 1985 तक पूर्ण नहीं हो सके। उन्हें पूर्ण करने का हम इस वर्ष निश्चय करते हैं। ताकि हमारा कोई भी कार्य अधूरा न रहे। नया वर्ष नई उमंगें लेकर आता है। नया उत्साह पैदा करता है। जीवनों मे ताजगी भरता है मानो एक अध्याय समाप्त करके हम जीवन में दूसरा अध्याय आरम्भ करते हैं। हमारे जीवन में बचपन एक नया सवेरा लेकर आता है। जवानी एक नई उमंग लेकर आती है। बुढ़ापा एक नई शान्तिदायक सन्ध्या लेकर आता है। घड़ी की टिक-टिक के साथ-साथ जीवन का एक-एक क्षण बीतता चला जा रहा है। दिन, सप्ताह, पक्ष, मास और फिर वर्ष तथा वर्ष के बाद फिर वर्ष बीतता चला जा रहा है। हम इसकी ओर कभी ध्यान नहीं देते, केवल अपने साथियों को, मित्रों को, नव वर्ष की बधाईयां भेज कर नव वर्ष का स्वागत तो करते हैं परन्तु अपने जीवन में कोई नवीनता लाने का कभी यत्न नहीं करते। जीवन किस डगर पर चल रहा है इसकी ओर भी ध्यान नहीं देते। आज पुराने रीति-रिवाज कुछ समाप्त हो रहे हैं। पुरानी सभ्यता भी समाप्त हो रही है। परन्तु नवीनता तो भी कहीं दृष्टिगोचर नहीं होती। आज तो नवीनता के नाम पर विलासिता बढ़ती जा रही है। लोग अपने कर्त्तव्य, कर्म, धर्म से विचलित हो रहे हैं। जीवन में प्रकाश के स्थान पर अन्धकार बढ़ता चला जा रहा है।

आज फिर अन्धकार की इस तमाच्छादित रात्रि मे प्रकाश की एक किरण की आवश्यकता है। एक छोटा सा दीपक भी अन्धकार का डट कर मुकाबला करता है। हम इस वर्ष में ज्ञान का प्रकाश पाकर आगे बढ़ें, आर्य समाज और वेद का प्रचार और प्रसार करने के लिए निश्चय करें। हमारा जीवन तो बढ रहा है, परन्तु जीवन में कोई नवीनता नहीं आती। आओ आज मिल कर निश्चय करें की हम अपने जीवन को नवीनताओं से भर देंगे।

—धर्मदेवार्य
सह-सम्पादक

जन्म-मरण की उलझन

ले.—श्री प्रा. भद्रसेन जी वेद-दर्शनाचार्य, होशियारपुर

(गताक से आगे)

एक रात को थोडी देर बाद अचानक मेरी नींद खुल गई और विचार उभरा, अब रोने से वे लौट कर नहीं आवेंगे।1। फिर रो-रो कर तू अपने आप को बेहाल क्यो कर रही है ? कुछ धैर्य कर, इस तरह अपने आप को अव्यवस्थित कर लेने से और धैर्य छोड देने से इन बच्चो का क्या होगा ? जिन की अब सारी जिम्मेवारी तुझ अकेली के कन्धो पर ही आ गई है। अब तो तुझ अकेली को ही इनके प्रति दोनों के कर्तव्य पूर्ण करने होगे क्या उनकी याद में बेचैन होकर उनकी इस अनमोल धरोहर के प्रति अधिक सजग होने की अपेक्षा केवल अपने आप को ही प्रमुखता देगी ? तुझे अब इन के लिए जीना है, इनके प्रति दोनों के के कर्तव्यो को एक साथ निभाना है। इन विचारो ने मेरे सामने जीवन का एक नया रूप ला दिया। प्रात उठी, रात को अकस्मात् उभरे विचारो ने मेरे लिए कर्तव्य पथ निश्चित कर दिया था। जग दिखाई के लिए रिवाज को हर स्थिति में पूर्ण करना था। पर दिमाग बार-बार सचेत कर रहा था, कि कहीं अपने कर्त्तव्य को भूल न जाना। समय बीतता गया और जैसे-कैसे मेहनत करके धरोहर के प्रति कर्तव्य निभाने के लिए मैं जुट गई। इस कर्तव्य परायणता तथा समय ने धीरे-धीरे उस घाव को कुछ भर दिया। पर भविष्य को पूरी तरह से किस ने जाना है ?

बडा बेटा अब कुछ पढ कर मेरा हाथ बटाने के योग्य हुआ और मैंने सोचा चलो इतनी साधना के बाद ही जैसे कैसे मेरे काले बादल कुछ तो दूर हुए। मेरी आशाओ का सहारा, आखों का तारा, हृदय कमल का वह सूर्य भी अकस्मात् एक दिन मुझे छोड गया। उस के मृत देह को देख कर मैं अपने रहे सहे धैर्य को खो बैठी । अब तो मुझ पूरी तरह से चारो ओर अन्धरा ही अन्धेरा दिखाई देने लगा। यह (दूसरी) मार अब न सही जाती थी। वह एक और एक दो न बन कर अपितु 11 (ग्यारह) बन कर बेचैन करने लगी। इस विह्वलता की स्थिति मे रो-रो कर मैंने अपना बेहाल कर लिया। सब मुझे रोने से रोकते, धैर्य देते, पर मुझे दुनिया के सारे आश्वासन तथा सारी बातें बिल्कुल बेकार प्रतीत होने लगी। मैं बार-बार भगवान से सिर पीट-पीट कर मौत मागने लगी। इस बेचैनी के साथ पहली याद पुन अत्यधिक रूप मे ताजा हो गई और मुझ अब सब कुछ नि सार लगने लगा।

इस विह्वलता मे पहली दो रात तो थोडी सी ही नीद आई पर अगली रात रोदन के श्रम, थकावट और पिछली रातों मे नीद न आने के कारण शरीर चूर चूर हो गया और मुझ एकदम नींद आ गई। आधी रात को अकस्मात मेरी नींद खुली तब फिर मेरे मन मे विचार उभरा तूने तो पूरी तरह से धैर्य खो दिया। क्या तरे इस रोने-धोने से वह लौट आएगा। अभी तो तेरे पास अपने प्रियतम की दो और भी अमानतें हैं। क्या इन के लिए तेरा कोई कर्तव्य नहीं है ? क्या इस तरह तू इन को इस दुनिया मे ऐसे ही बेसहारा छोड जाएगी ? ये किस के सहारे पनपेंगे ? अपने लिए नही तो कम से कम इन के लिए तुझे जैसे कैसे जीना चाहिए।

इन विचारो ने एक दम पासा ही पलट दिया। रिवाजो का पूरा करते हुए जैसे कैसे उन विधियो को पूर्ण किया। मन मे बार बार कौंधने वाले विचारो से प्रेरित हो कर पुन धैर्य जुटा, मैं जी जान से धरोहर के विकास के लिए जुट गई। ये पहाड जैसी परीक्षाए, दुख के बादल जैसे कैसे मैंने पार किए। इन बच्चो के विकास को देख कर आज मुझे अपनी पूर्व स्थिति पर कुछ सन्तोष होता है। यह ठीक है कि मैं आज भी उन घावो को अपने हृदय मे समेटे हुए हू। किसी भी प्रकार उन को भुलाना कठिन है पुनरपि परिवार की यह प्रगति अब मुझे उतना बेचैन नही करती। कभी होठ बुद-बुदा उठते हैं —

तू नही लेकिन तेरी उलफत अभी
तक दिल मे।
बुझ चुकी है शमा, फिर भी रोशनी
महफिल में है ॥

वस्तुत धैर्य और कर्तव्य की भावना ने मरे जीवन को यहा तक पहुचाने मे पूरा सहयोग दिया है।

अपने प्रियजनो के वियोग पर शोक होना स्वाभाविक है, क्योकि हमारा जीवन आपस के सम्बन्धो और सद्भाव, सहयोग पर निर्भर होता है, तथा इसके साथ आपस की मधुर स्मृतिया जुडी हुई होती हैं। जो भुलाए नहीं भूलतीं, तभी तो कहा जाता है—

दामन तो तेरा हाथ से जाता रहा।
मगर एक रिश्ता ख्याल है, जो
टूटता नही ॥

ये स्मृतिया चाहे कितनी भी प्रचण्ड हों, फिर भी इन परिस्थितियो में भी धैर्य ही एक सहारा होता है।

1—व्यतीता कुल एव सा पुनर्भवता मानुभूतापि लभ्यते।
परलोकजुषा स्वकर्म निर्मतयो भिन्न
पथा हि देहिनाम् ॥
रघुवश 8, 86

मरने वाले के पीछे मर कर भी कोई उसे प्राप्त नही कर सकता रो-धो कर प्राप्त करने की तो बात ही क्या क्योकि मरने वाला अपने कर्मों के अनुसार न जाने अपनी किस राह पर होगा और दूसरा अपनी राह पर।

1—अधीरता मे अस्त-व्यस्त हुओ को आश्वस्त करते हुए ही सम्भवत किसी कवि ने कहा है—मृत्यो बिभेषि किं बाल ! न स भीत विमुञ्चति। अद्य अब्दशतान्ते वा मृत्यु वै प्राणिना ध्रुव ॥ हे थोडा सोचने वाले ! मृत्यु से क्यो डरता है, यह तो डरने वाले को भी नही छोडती, आज या सौ (कुछ) वर्ष बाद निश्चित रूप से हर प्राणी मृत्यु का ग्रास अवश्य ही बनेगा। क्योकि 'जातस्य ध्रुवो मृत्यु ध्रुव जन्म मृतस्य च, गीता।

गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ का उत्सव

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) डा भोलाझाल मेरठ का वार्षिकोत्सव दि 14-1-86 मगलवार को प्रात 8 बजे से गुरुकुल भूमि मे समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। जिसमे आर्य जगत के सन्यासी विद्वान् और महात्मा पधार रहे हैं। इस अवसर पर प्रात 8 बजे बुढाना गेट एव थापर नगर से गुरुकुल के लिए बसें चलायी जायेंगी। वार्षिकोत्सव मे सम्मिलित होने वाले समस्त बन्धु इन दोनो स्थानों पर पहुचे।

मन्त्री

आर्ष गुरुकुल बड्लूर कामारेड्डी योग साधना शिविर

प्रति वर्ष के अनुसार इस वर्ष पुष्य कृ 7 शुक्रवार से माघ कृ 1 2042 वि रविवार तक दस दिन गुरुकुल में श्री स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता मे योग साधना शिविर लगेगा। अन्तिम दिन सार्वजनिक उत्सव होगा। आप परिवार एव इष्ट मित्रों सहित इस कार्यक्रम में भाग लेकर इस स्वर्ण अवसर से लाभ उठायें।

सूचना—

(1) शिविर में साधकों की सख्या सीमित है। अत शिविरार्थी 200 रुपए धरोहर भेजकर 20 दिन पूर्व ही स्वीकृति प्राप्त कर लें।

(2) ये रुपए शिविर में आद्योपान्त भाग लेने पर लौटाए जाएगे। आद्योपान्त भाग न लेने पर नहीं लौटाये जाएगे।

(3) भोजनादि का प्रबन्ध नि शुल्क रहेगा।

(4) महिलाए भी शिविर मे भाग ले सकेंगी। बच्चो को स्वीकृति नहीं मिलेगी

(5) शिविरार्थी अपनी आयु, शिक्षा की योग्यता, व्यवसाय (कार्य) एव धार्मिक ग्रन्थो का परिचय आदि विवरण लिखें।

(6) मद्य, मांस धूम्रपानादि व्यसनों से रोगो से रहित व्यक्ति ही साधकों के रूप में भाग ले सकेंगे।

(7) इच्छुक व्यक्ति दर्शक के रूप में एक दो दिन के लिए भाग ले सकते हैं।

(8) शिविर मे सम्मिलित होने के लिए स्वीकृति न मिलने पर इच्छुक व्यक्ति अपने आवास एव भोजनादि की व्यवस्था कामारेड्डी में कर के शिविर में आद्योपान्त भाग ले सकेगे।

(9) साधक गुरुवार सायकाल गुरुकुल अवश्य पहुच जावें। वे अपने साथ, धोती, कुर्ता आदि श्वेत वस्त्रों के अतिरिक्त बुशर्ट, पैंट आदि अन्य वस्त्र, रगीन वस्त्र, आभूषण न लावें। लगोट, आसन, बिस्तर, थाली, कटोरा, ग्लास, चम्मच, दो लीटर का लोटा, करदीप (टार्च), सचिका, लेखिनी, सत्यार्थ प्रकाश, योग दर्शन, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, व्यवहार भानु, वैदिक सन्ध्याग्निहोत्र विधि आर्योद्देश्य रत्नमाला साथ लावें।

मार्ग दिल्ली से आने वाले सिकिन्दराबाद उतर कर रेल अथवा बस(हैदराबाद) से कामारेड्डी आवें। कामारेड्डी से लगभग दो किलोमीटर पर पचमुखी हनुमान मन्दिर से आगे गुरुकुल सडक से लगा हुआ है। अजमेर की ओर से आने वाले कामारेड्डी उतरें।

योग साधना शिविर समिति

आर्य समाज के शास्त्रार्थ महा-रथी—पं. कालीचरण शर्मा

लेखक—श्री डा. भवानी लाल भारतीय

अरबी, फारसी के अद्वितीय विद्वान् तथा इस्लाम के मर्मज्ञ पं. कालीचरण शर्मा का जन्म 1878 ई. में बदायूं जिले में हुआ। उनका अध्ययन आगरे के प्रसिद्ध मुसाफिर विद्यालय में हुआ जिसे प. भोजदत्त शर्मा ने पं. लेखराम की स्मृति में स्थापित किया था। इसी विद्यालय में पं. महेश प्रसाद मौलवी, केदारनाथ पाण्डे (राहुल सांकृत्यायन), ठाकुर अमर सिंह (अमर स्वामी), पं. राम सहाय शर्मा, (राजस्थान के ओम् भक्त परिव्राजक) जैसे जाने-माने विद्वानों ने शिक्षा प्राप्त की थी। प. कालीचरण शर्मा ने इस्लाम और ईसाइयत का विस्तृत अध्ययन किया था। उन्होंने अपने जीवनकाल में विपक्षियों से सैंकड़ों शास्त्रार्थ किये तथा आर्य समाज को विजयी बनाया।

वे लगभग 18 वर्षों तक डी, ए. वी. कालेज, कानपुर में धार्मिक-शिक्षा के प्राध्यापक पद पर कार्य करते रहे। कानपुर में उन्होंने आर्य तर्क मण्डल की स्थापना की जिसके माध्यम से वैदिक धर्म पर किए जाने वाले आक्षेपों को उत्तर तर्क पूर्ण शैली में दिया जाता था। शर्मा जी ने अनेक पुस्तकें लिखीं, कुरान का हिन्दी अनुवाद किया तथा पैगम्बर मुहम्मद का जीवन चरित्र भी लिखा। कालेज से अवकाश ग्रहण करने के उपरान्त आपने राजस्थान को अपना कार्य क्षेत्र बनाया जहां इनके पुत्र रेल कर्मचारी हैं। राजस्थान में विभिन्न स्थानों पर भ्रमण करते हुए आप अत्यन्त वृद्धावस्था में भी प्रचार कार्य में निरन्तर रहे। 13 सितम्बर 1968 में बदीकुई में आपका निधन हुआ। उस समय आपकी आयु 90 वर्ष की थी। पं. कालीचरण शर्मा द्वारा रचित साहित्य।

1, कुराने मजीद प्रथम भाग (कुरान का हिन्दी अनुवाद) आर्य मुसाफिर आगरा से प्रकाशित।

2. विचित्र जीवन—पैगम्बर मुहम्मद की जीवनी।

इस्लाम के खण्डन में लिखित पुस्तकें—

1. अल्लाहमियां का हुलिया—प्रेम पुस्तकालय आगरा से प्रकाशित 1980 वि.

2. अल्लाहमिया की सुन्नत—आर्य मुसाफिर बुक डिपो आगरा सं. ट्रैक्ट 2

3. अल्लाहमियां की फोटो—आर्य मुसाफिर बुक डिपो आगरा—1826 ई. में प्रकाशित ट्रैक्ट 4

4. इस्लामी पर्दे—आर्य मुसाफिर बुक डिपो आगरा। ट्रैक्ट सं 5

5. काठ का उल्लू—आर्य मुसाफिर बुक डिपो आगरा—1926 में प्रकाशित ट्रैक्ट सं. 6

6. मुसलमानी बुर्का—आर्य मुसाफिर बुक डिपो आगरा— ट्रैक्ट सं. 7

7. कुरान और उसकी शिक्षा—आर्य मुसाफिर बुक डिपो आगरा—ट्रैक्ट स. 8

अल्लाहमियां की चालों का नमूना-ये सभी पुस्तकें उर्दू में लिखी गई। इन के अनुवादक थे—कु. राम मनोहरसिंह लखीमपुरी।

अन्य ग्रन्थ—

हास्य रत्न माला आर्य मुसाफिर बुक डिपो कानपुर से प्रकाशित।

ईश्वर धर्म ज्ञान (नास्तिक मत खण्डन)

वेद स्वाध्याय (वेद मन्त्रों की व्याख्या)

वैदिक रूसी साम्यवाद (कम्युनिज्म मत दर्पण)

पशु बध निषेध (मांस खाना पाप है)

जैन और बौद्ध एक हैं।

ईसाई मत की आलोचना के ग्रन्थ-ईसाई मत दर्पण, बाइबिल मत परीक्षा, (वैदिक यज्ञ में मसीहो मत की आहुति)

सत्यार्थ प्रकाश का अरबी अनुवाद

ईशोपनिषद् का उर्दू व अरबी अनुवाद।

सवानह ऊमरी आरिफ दयानन्द सरस्वती (स्वामी दयानन्द की आत्म कथा का फारसी तर्जुमा)

आर्यों का प्राचीन गौरव है। आर्य मुसाफिर बुक डिपो आगरा 1931 ई.

तलवन में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी की जन्म भूमि तलवन ग्राम मे है जो जालन्धर से लगभग 32 किलोमीटर दूर नूर महल से थोड़ा आगे है। इस बार आर्य समाज जालन्धर छावनी के आर्य बन्धुओं ने 23 दिसम्बर को तलवन में जाकर वृहद यज्ञ किया और स्वामी जी को उनके जन्म स्थान पर जाकर श्रद्धाञ्जलियां भेन्ट की। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सहायक वेद प्रचार अधिष्ठाता पं. धर्म देव जी शास्त्री, श्री प. सीता राम, श्रीराम तथा श्री रामनाथ जी शास्त्री भजनोपदेशक ने भी वहां पधार कर स्वामी जी को अपनी श्रद्धाञ्जलिया भेन्ट की।

इस आयोजन का सारा श्रेय श्री इन्द्रसेन मलिक को जाता है जिन्होंने दौड़ धूप करके यहां दोपहर के भोजन और यज्ञ शेष का भी प्रबन्ध कराया। जालन्धर छावनी समाज के सभी सदस्यों का उन्हें पूरा-2 सहयोग रहा।

इस आयोजन मे तलवन निवासियो ने भी सहयोग दिया। हम चाहते हैं कि तलवन ग्राम (स्वामी श्रद्धानन्द जी के जन्म स्थान) में प्रति वर्ष उनका बलिदान दिवस मनाया जाए और उनका पैतृक भवन जो अब खण्डहर बना पड़ा है। उस पर स्वामी जी का स्मारक बनाना चाहिए। पंजाब की सभी आर्य समाजो को इस ओर ध्यान देना चाहिए और आगामी वर्ष के लिए अभी से कोई योजना बना लेनी चाहिए।

—काशी राम अग्रवाल
मन्त्री

अध्यापक की आवश्यकता

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर मे एक सस्कृत अध्यापक की आवश्यकता है जो शास्त्री तक की कक्षाओ को सस्कृत माध्यम से पढाने में समर्थ हो। कम से कम योग्यता संस्कृत साहित्य या व्याकरण विषय से किसी अन्य विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण अवश्य होना चाहिए।

मासिक वेतन 600 रुपये के अतिरिक्त भोजन एव आवास की सुविधा उपलब्ध होगी। उक्त योग्यता वाले इच्छुक व्यक्ति पत्र व्यवहार करे अथवा मिले।

प्राचार्य
नरेश कुमार शास्त्री
श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महा
विद्यालय करतारपुर (जिला जालन्धर) पंजाब

प्रान्तीय भाषण प्रतियोगिता

आर्य विद्या परिषद पंजाब के तत्वावधान मे 18 जनवरी 1986 को प्रात 11 बजे आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ, जालन्धर शहर मे प्रान्तीय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में सभा सम्बन्धित स्कूलो के अतिरिक्त विशेष आमन्त्रित स्कूल भी भाग ले सकेंगे। इस प्रतियोगिता मे चल विजयोपहार के अतिरिक्त तीन व्यक्तिगत पुरस्कार भी दिए जाएंगे। शामिल होने वाली टीमो के सदस्यों के नाम आने की अन्तिम तिथि 5 जनवरी 1986 है।

—वीरेन्द्र शर्मा
व्यवस्थापक

लुधियाना में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को 23500 रु. भेंट

जिला आर्य सभा लुधियाना की ओर से 22-12-85 रविवार प्रातः 8 बजे से 12-30 तक गरीबों की झुंगी-झोंपड़ियो इण्डस्ट्रियल एरिया में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़े समारोह से मनाया गया। यज्ञ पं. बालकृष्ण जी शास्त्री पुरोहित आर्य समाज जवाहर नगर ने कराया मुख्य यजमान जिला आर्य सभा के प्रधान श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा तथा उनकी धर्म पत्नी श्रीमती इन्दिरा मोहिनी जी, श्री नन्दलाल जी मन्त्री आर्य समाज फील्ड गंज तथा उन की धर्म पत्नी तीसरे यजमान झुंगी-झोंपड़ियों के श्री राम कुमार तथा उनका परिवार था, यज्ञ की समाप्ति के पश्चात् समारोह की कार्यवाही आरम्भ हुई। स्टेज का संचालन जिला आर्य सभा के महामन्त्री श्री आशानन्द जी आर्य कर रहे थे। सबसे पहले श्री भवन कुमार जी बत्रा कोषाध्यक्ष आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी पर एक अति उत्तम गीत गा कर जनता का मन मोह लिया, उस के पश्चात् आर्य युवक सभा की भजनमण्डली ने सुन्दर गीत गाए। इस समय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के माननीय प्रधान श्री वीरेन्द्र जी पधारे।

उनके साथ सभा की महामन्त्री कमला आर्या तथा कोषाध्यक्ष श्री ब्रह्मदत्त शर्मा थे। मुख्य द्वार पर सभा प्रधान जी का आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल के बैण्ड ने बैण्ड बजा कर भव्य स्वागत किया स्टेज पर पधारने पर जिला आर्य सभा के अधिकारियों ने नगर की आर्य समाजों स्त्री आर्य समाजों के अधिकारियों तथा श्री सत्यानन्द जी मुञ्जाल उप-प्रधान सार्वदेशिक सभा ने पुष्प मालाओं द्वारा और समारोह में बैठे हजारों नर-नारियों ने जय घोष बुलाकर श्री प्रधान जी का हार्दिक स्वागत किया। सबसे पहले जिला आर्य सभा की ओर से सार्वदेशिक सभा के उप-प्रधान श्री सत्यानन्द जी मुञ्जाल का सार्वदेशिक सभा के उप-प्रधान बनने पर श्री दीवान राजेन्द्र कुमार जी मालिक रीजेन्ट होजरी ने अभिनन्दन किया श्री महेन्द्र पाल वर्मा प्रधान, श्री ओम् प्रकाश पासी कोषाध्यक्ष, लुधियाना के प्रसिद्ध एम. एल. ए. श्री ओम् प्रकाश गुप्ता, श्री बुधवन्तराय जी सूद डा. मूलचन्द जी भारद्वाज, श्री अयोध्या प्रसाद जी श्री नवनीत लाल जी, प्रधान आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार तथा दूसरी आर्य समाजों के अधिकारियों ने पुष्प मालाएं पहना कर उनका अभिनन्दन किया, सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने उन्हें शाल द्वारा सम्मानित किया। इस के पश्चात् जिला आर्य सभा के प्रधान श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा की धर्म-पत्नी श्रीमती इन्दिरा मोहिनी जी ने सभा के भवन निर्माण के लिए श्री सभा प्रधान को 11000 रुपए की थैली भेन्ट की। श्री सत्यानन्द जी मुञ्जाल मालिक हीरो साईकल ने अपनी ओर से 11000 रुपए श्रीमती वेदवती शर्मा इंगलैंड वाली ने 1100 रुपए श्री महेन्द्र पाल स्याल जी ने 500 रुपए सभा भवन निर्माण के लिए दिये उसके पश्चात् सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, श्री सत्यानन्द मुञ्जाल श्री ओम् प्रकाश गुप्ता एम. एल. ए. ने स्वा. जी को श्रद्धाञ्जलि भेन्ट की और विश्वास दिलाया कि इन गरीब लोगों की उन्नति के लिए हम हर सम्भव सहायता करेंगे। श्री ओम् प्रकाश जी पासी ने सभा का आज तक का हिसाब सुनाया, टी. वी, का अति उत्तम प्रबन्ध था इसके लिए मेरे भाई डा, मूल चन्द भारद्वाज, श्री ओम् प्रकाश पासी, सभा मन्त्री, श्री सरदारी लाल आर्य रत्न, डा, विद्या प्रकाश का मैं आभारी हूं। इस समारोह की सफलता के लिए मैं श्री नवनीत लाल प्रधान आर्य समाज दाल बाजार, श्रीमती कान्ता गौड़ प्रधान स्त्री आर्य समाज, श्री ओम् प्रकाश पासी प्रधान आर्य समाज साबुन बाजार, श्रीमती कमला आर्य, प्रधाना स्त्री आर्य समाज, श्रीमती कौशल्या देवी प्रधान आर्य समाज फील्ड गंज, श्री यशपाल भक्त प्रधान आर्य समाज हबीबगंज, डा. मूलचन्द भारद्वाज प्रधान आर्य समाज बाग बजानवाला, श्री महेन्द्र पाल, स्याल उप-प्रधान आर्य समाज माडल टाऊन श्रीमती पुष्पा मुञ्जाल प्रधाना स्त्री आर्य समाज, श्री चरण सिंह प्रधान आर्य समाज किदवाई नगर आर. बी. स्कूल हबीबगंज, श्री सोहन लाल बोबराय प्रधान आर्य समाज सराबा नगर, ओम् प्रकाश महाजन, प्रधान आर्य समाज जवाहर नगर, श्री शिवलाल प्रधान आर्य समाज फोकस पुआईन्ट, श्री भीम सैन जी प्रधान आर्य समाज रायकोट, श्री मनोहर लाल मन्त्री आर्य समाज अहमदगढ़ तथा उनके सदस्यों का धन्यवाद करता हूं। इस के अलावा श्री हंसराज जी उप-प्रधान आर्य समाज किदवाई नगर, मा. राम प्रसाद जी, प्रचार मन्त्री, पाठशाला के अध्यापक का भी आभारी हूं कि वह समय-समय पर भवन निर्माण तथा पाठशाला को देखते रहते हैं। श्री अयोध्या प्रकाश जी मलहोत्रा ने 1100 रुपए खर्च कर के इस बस्ती में एक नलका लगवाया है। इस के साथ में डॉ. राजेन्द्र कुमार, श्री महेन्द्र पाल वर्मा श्री बुधवन्तराय सूद, श्री अयोध्या प्रकाश मलहोत्रा का आभारी हूं कि जिला सभा के लिए जितने धन की जरूरत होती है वह स्वयं या इकट्ठा करके दे देते हैं, सभा के माननीय महोपदेशक पं निरञ्जन देव जी, श्री सीता राम जी, पं. वेद प्रकाश शास्त्री, पं, बालकृष्ण शर्मा का बहुत-बहुत धन्यवाद, शान्ति पाठ-मन्त्र शेष के पश्चात् कार्यवाही समाप्त हुई।

—महामन्त्री

तुलसी उगाइए, स्वस्थ रहिए

आज के युग में ज्यादातर आधुनिक लोग अपनी वाटिका में घर के आंगन में तुलसी का पौधा लगाना पसन्द नहीं करता एक जमाना था जब हर घर में तुलसी का पौधा साधारण होते हुए भी असाधारण गुणों का भण्डार है, यह औषधि की तरह हर किसी के लिए लाभदायक है, जहां तुलसी उगी होती है उसके समीपवर्ती वातावरण में रोगों को दूर करने वाले तत्व विराजमान होते हैं, यह किसी भी महीने में लगाई जा सकती है, लेकिन सितम्बर-अक्तूबर में ज्यादा फलती-फूलती है।

तुलसी के पत्तों से अनेक प्रकार के घरेलू उपचार किए जा सकते हैं—

(1) दस्त लगने पर तुलसी के पत्ते 10, भूना जीरा 1 मासा मिलाकर शहद के साथ दिन में तीन बार चाटना चाहिए।

(2) सभी प्रकार के बुखार में बीस तुलसी के पत्ते और दस काली मिर्च को पानी में उबाल कर, उस पानी को पिलाना चाहिए।

(3) मोतीझारा ज्वर में तुलसी के पत्ते 10, जावित्री 1 मासा पानी में पीस कर शहद के साथ दिन में चार बार देनी चाहिए।

(4) बिच्छू, बरें, ततैया आदि के काटने पर तुलसी के पत्ते सेंधा नमक के साथ पीसकर लेप करना चाहिए।

(5) जख्म और फोड़ों पर तुलसी के पत्ते को पीसकर लगाना चाहिए।

(6) सिर दर्द में तुलसी के पत्तों का रस, कपूर मिलाकर सिर पर लेप करना चाहिए।

(7) दाद, खाज पर तुलसी का पंचांग (जड़, पत्ते, डंठल, फूल, बीज समान मात्रा में पीसकर) नीबू के रस में मिलाकर लेप करना चाहिए।

(8) उल्टी होने पर तुलसी पत्ते और छोटी इलायची के बीज अदरक के रस में मिलाकर दो-दो घण्टे बाद लेना चाहिए।

(9) चेहरे के मुहासे में तुलसी के पत्ते और संतरे का रस मिलाकर लेप करना चाहिए।

(10) जुकाम होने पर तुलसी का पंचांग और अदरक समान मात्रा में मिलाकर काढ़ा बनाकर दिन में तीन बार लेना चाहिए।

(11) पसली के दर्द में तुलसी का पंचांग हल्दी मिलाकर लेप करना चाहिए।

(12) सांस फूलने पर तुलसी के पत्ते काले नमक के साथ लेकर चूसने चाहिए।

(13) जोड़ों के दर्द में तुलसी का पंचांग चार मासे की मात्रा में लेकर बकरी के दूध और गुड़ के साथ सवेरे और शाम को लेना चाहिए।

(14) पेशाब में जलन होने पर तुलसी का रस तीन मासे, पान का रस तीन मासे मिलाकर दिन में तीन बार लेना चाहिए।

(15) उठते हुए फोड़े पर तुलसी के पत्ते और अजवायन की टिकियां बांध देने से फोड़ा जल्दी फूट जाता है।

गुणों की खान तुलसी को यदि संजीवनी बूटी कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी, तो क्यों न हर कोई अपने घर में तुलसी का पौधा लगाये?

हां, एक बात ध्यान में रखें ऊपर बतायी गई औषधियां बनाते समय बच्चों को बड़ों की तुलना में आधी मात्रा दें।

—मंजु आर्य
(आर्य विजय)

पोप पाल की आगामी हिन्दुस्तान यात्रा का एक घिनौना षड्यन्त्र

लेखक—श्री विमल स्वरूप गोयल दिल्ली

इस ओर तो हमारी तथाकथित धर्म निरपेक्ष सरकार एक विदेशी ईसाई मत के मताध्यक्ष पोप पाल को सरकारी महमान के नाते यहां बुला कर उसका स्वागत करने की तैयारी कर रही है। वहीं दूसरी ओर हमारे देश में पहले से ही विद्यमान ईसाई मिशनरियां छोटा नागपुर के एक लाख गरीब हिन्दू आदि-वासियों का धर्म परिवर्तन कर उन्हें ईसाई बना कर पोप पाल के स्वागत मे पेश करने की तैयारी कर रहे हैं।

यह हमारी स्वतन्त्रता के इतिहास में पहली ही घटना है जब हमारी देश की इस तथा कथित धर्म निरपेक्ष सर-कार ने किसी विदेशी मत के मताध्यक्ष को सरकारी महमान के तौर पर बुला कर उसका स्वागत करने का निश्चय किया है। ऐसी स्थिति मे हमारी सर-कार की धर्म निरपेक्ष नीति शायद बफ में लगा दी गयी है। क्योकि इस प्रकार किसी मत विशेष के अध्यक्ष का हमारे देश में सरकारी तौर पर पहली बार ही स्वागत किया जा रहा है जबकि हमारी सरकार ने आज तक अपने ही देश के किसी भी मत के या धर्म के मताध्यक्ष या धर्माध्यक्ष का सरकारी तौर पर स्वा-गत नहीं किया है क्योंकि इसके लिए उसकी धर्म निरपेक्ष नीति आज्ञा नहीं देती किन्तु अल्पसख्यकों के इस प्रकार विदेशी अध्यक्षो का बुला कर उसका स्वागत करने मे उसकी यह धर्म निरपेक्ष नीति बाधक नही मानी जाती। इससे यह बात साफ दिखाई दे रही है कि हमारी सरकार इस प्रकार ईसाईमत समर्थक सरकार होने की ही भूमिका निभाने का प्रयास कर रही है जिससे यहां के ईसाई हिन्दू धर्म के गरीब लोगों के धर्म परिवर्तन के काम को प्रोत्साहन दे रही है।

इसी प्रकार हमारी सरकार ने मदर टैरेसा को मानवता की सेवा का प्रतीक मान कर उसे यहां पर अनाथ और गरीब बच्चों के पालन पोषण तथा शिक्षा दीक्षा के लिए [illegible] [illegible] ि शिक्षा देने और पालन करने के नाम पर अनाथालय चला रहे उनमे ईसाई मत का प्रचार करने की खुली छूट दे रखी है जिस के कारण इन अनाथा-लयों में पलने और पढ़ने वाले विद्यार्थी [illegible] मत की [illegible] पूरी [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] हो कर वे अपने आपको ईसाई मत का ही अनुयायी मान लें। इस तरह ये अनाथालय एक प्रकार से ईसाई मत के प्रचार के केन्द्रो के रूप मे ही काम कर रहे हैं।

इससे भी अलग अभी हाल ही मे इसी मदर टैरेसा ने भ्रूण हत्या को एक प्रकार से पाप बता कर ईसाइयो को यह संकेत दे दिया है कि वे लोग परि-वार नियोजन और गर्भपात का विरोध करें ताकि वे अपनी जनसख्या मे वृद्धि कर नागालैंड, मिजोरम तथा अब छोटा नागपुर को ईसाई होम लैण्ड के रूप मे बदल सकें।

अब प्रश्न यह उठता है कि आज तक किसी भी बाहर के देश ने किसी भी अन्य देश के मताध्यक्ष को इस प्रकार सरकारी महमान बना कर बुलाने और उसका स्वागत करने का विचार तक नहीं किया है जबकि हमारी तथाकथित धर्म निरपेक्ष सरकार अपनी नीति की अवहेलना करके भी इस कार्य को सम्पन्न करने जा रही है। इसका अर्थ यह समझा जा सकता है कि धर्म-निरपेक्ष नीति केवल हिन्दू हितो की उपेक्षा करने के लिए ही है अन्य किसी मत पन्थ या मजहब के लिए नहीं है। इगलैण्ड की सरकार कभी हमारे देश के धर्माचार्यों को इस प्रकार कभी भी अपना महमान बना कर बुलाने और उसका स्वागत करने की योजना नही बना सकती जैसा कि यह हमारी सर-कार करने जा रही है। अब यह सोचना है कि हमारी सरकार अपनी नीति के विरुद्ध भी ऐसा क्यो कर रही है इस के पीछे मात्र सरकार की अल्पसंख्यक सम्प्रदायो की तुष्टिकरण कर उन्हें प्रसन्न करने की नीति ही कहा जा सकता है।

अब यह पोप पाल की यात्रा हमारे देश के हिन्दू समाज के सभी ठेकेदारो तथा हिन्दुत्ववादी नेताओं के लिए एक चुनौती बन कर खड़ी हो गयी है। उन्हें यह सोचना होगा कि हमारी सर-कार द्वारा इस प्रकार की नीति अप-नाने के पीछे क्या रहस्य हो सकता है। इसके लिए पोप पाल की यात्रा का प्रभावी ढग से विरोध किया जाना अत्यन्त आवश्यक है जिससे हमारी सर-कार और ईसाइयो को यह पता लग जाए कि यहा का हिन्दू जागरूक है और वह अपने धर्म पर होने वाली चोट के विरुद्ध खड़ा हो सकता है। इसके लिए हमारे विश्व हिन्दू परिषद आर्य समाज तथा रा स्व सघ जैसे हिन्दुत्ववादी सगठनो को इस देश के हिन्दू जनमानस को शिक्षित कर इसके विरुद्ध एक व्यापक आन्दोलन चलाना होगा। इसी प्रकार मदर टैरेसा के मानवता की सेवा के प्रतीक के पीछे छिपे ईसाई चेहरे को भी बेनकाब करना होगा ताकि उसके द्वारा चलाए जा रहे ये अनाथालय सरकार अपने हाथ म लेने के लिए बाध्य हो जाए तभी हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन को रोका जा सकेगा।

—

श्री प्रिय रत्न आर्य का निधन

आर्य समाज सान्ताक्रुज के महामन्त्री कैप्टन देवरत्न आर्य के अनुज भ्राता व स्वर्गीय आचार्य भद्रसेन जी के छटे पुत्र प्रिय रत्न आर्य का नासिक मे 27 वर्ष की अल्पायु में आकस्मिक निधन हो गया।

प्रिय रत्न फिल्मी दुनिया से सगीत निर्देशक के रूप मे जुड़ हुए थे। राज-स्थानी फिल्म पिया मिलन री आस सहित कई अन्य फिल्मो मे उन्होने सगीत दिया था।

गत वर्ष महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर आपने अपने पूज्य पिता श्री की स्मृति मे 'श्रद्धा कैसिट' तैयार किया था। जिसका विमोचन अजमेर में निर्वाण शताब्दी के अवसर पर किया गया था। जिसकी काफी सराहना की गई थी

शुक्रवार दिनाक 15 11 85 को साय 5 बजे उनकी आत्मा की शान्ति के लिए आर्य समाज मन्दिर सान्ताक्रुज मे शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमे बम्बई महानगरी की समस्त आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई द्वारा स्वर्गीय प्रिय रत्न आर्य के कार्यों का स्मरण करते हुए उनके छोटी सी आयु मे चले जाने पर हार्दिक शोक प्रकट किया और अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। —प्र प्रकाश चन्द्र शास्त्री

श्री आजाद के निधन पर शोक

सुप्रसिद्ध आर्य समाजी नेता एव स्वाधीनता सेनानी, दलितो के हमदर्द पजाब के भ पू मन्त्री श्री पृथ्वी सिंह आजाद के निधन पर आर्य समाज अजमेर की रविवारीय सत्सग के पश्चात शोक सभा सम्पन्न हुई जिसमे उन्हे हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित की गयी। उनके निधन को आर्य जगत की अपूरणीय क्षति बताते हुए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की वह दिवगत आत्मा को चिरशाति एव सदगति प्रदान करें तथा उनके समस्त शोक सतप्त परिजनो को इस दु ख को सहन करने की शाति धैर्य एव सात्वना प्रदान करें।

—रासासिंह मन्त्री



पंचपुरी गढ़वाल में श्री प्रेम जी का ७२ वां जन्म दिवस

12 दिसम्बर 85 को आर्य समाज पचपुरी गढवाल ने आर्य समाज के कमठ सेवक स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी श्री शान्ति प्रकाश जी प्रेम का 72 वा जन्म दिवस "जन-सेवक सम्मेलन के रूप मे आ स मन्दिर पचपुरी मे समारोह पूवक मनाया सम्मेलन की अध्यक्षता जन सेवक श्री बुद्धिसिंह जी आर्य ने की। इस शुभ अवसर पर श्री प्रेम जी और श्रीमती प्रेम जी ने श्री दयानन्द भारतीय स्मारक आ स मन्दिर पचपुरी के नव निर्माण हेतु पाच हजार रुपए का सात्विक दान दिया। सम्मेलन मे वक्ताओ ने श्री प्रेम जी की सेवाओ का वर्णन करते हुए उनकी दीर्घ जीवन की कामना की। मन्दिर निर्माण के लिए धन सग्रह अभियान चलाने का निश्चय किया गया।

—वासुदेव मन्त्री
आ स पचपुरी गढवाल

शोक प्रस्ताव

अत्यन्त दुःख के साथ यह समाचार सुना गया कि श्री आचार्य पृथ्वी सिंह जी आजाद अब इस संसार में नहीं रहे।

आर्य समाज समरूर के सभी सदस्यों ने अपने साप्ताहिक सत्सग मे अतीव दुःख प्रकट किया तथा दो मिन्ट का मौन रख कर दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे एव सन्तप्त परिवार जनो को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त निर्भीक नेता और सच्चे सेवक के चले जाने से वास्तव में काफी क्षति हुई है और सत्यार्थ प्रकाश का पंजाबी अनुवाद भी अधूरा रह गया।

लाजपत राय आर्य कन्या महा विद्यालय मे समाचार सुनते ही छुट्टी कर दी गई।

—अशोक आर्य
मन्त्री

श्री आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद के निधन पर अत्यन्त शोक

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (लाल बाजार) लुधियाना में आचार्य पृथ्वी सिंह आजाद की मृत्यु पर दुःख व्यक्त करने के लिए 15-12-85 रविवार को एक शोक सभा की गई। जिस में आर्य समाज के भूतपूर्व प्रधान श्री रणवीर जी भाटिया ने आचार्य जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे आर्य समाज के क्षेत्र में एक कुशल व निपुण खिलाड़ी थे। वे प्रमुख साहित्यकार, महान समाज सुधारक, कर्मठ कार्यकर्ता व लोकप्रिय आर्य नेता थे। इस क्षेत्र मे मेरा उनके साथ काफी नजदीकी सम्बन्ध रहा है। उन्होने जो पिछले वर्ष मे कार्य किया वह एक महान् देन है। आचार्य जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान व आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी रहे। श्री मगल सेन जी बधवा ने कहा कि वे एक कुशल राजनैतिक नेता भी थे। वे पंजाब सरकार मे मन्त्री भी रहे। स्वामी गुरदियालसिंह आर्य ने कहा कि मैंने उनके साथ कार्य किया है वह एक सहयोगी नेता थे। श्री शम्भुनाथ शर्मा ने कहा कि उनके अधूरे कार्य को पूरा करना उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि है। आर्य समाज के पुरोहित श्री सुरेन्द्र कुमार शास्त्री व श्री अमरनाथ जी ने भी अपनी भावभीनी श्रद्धाञ्जलियां अर्पित की। उपस्थित आर्य बन्धुओं ने शोक प्रस्ताव पारित किया तथा परम-पिता परमात्मा से उनकी आत्मा को शान्ति के लिए प्रार्थना की।

—बलदेव राज सेठी
मन्त्री

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय
गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 रजि. न पी.जे.एल. 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य मर्यादा जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वष 17 अक 37. 29 पोष सम्वत् 2042 तदनुसार 12 जनवरा 1986 दयानन्द 161 अक प्रात 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका से—

ईश्वर स्तुति प्रथना याचना समर्पण विषय

यो भूतं च भव्य च सर्व यश्चाधितिष्ठति ।
स्वर्यस्य च केवल तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नम ॥

—अथव 10।8।1

जो परमेश्वर भूत वर्तमान और भविष्यत्—तीनो कालो के सब व्यवहारो को यथावत जानता है, जो सब जगत को अपने विज्ञान से ही जानना रचना पालन और लय करता है तथा ससार के सभी पदार्थों का स्वामी है, जो सुख-स्वरूप है जो मोक्ष और व्यवहार सुख का भी देने वाला है उस महान, सब सामर्थ्य से युक्त परब्रह्म परमात्मा को अत्यन्त प्रेम से हमारा नमस्कार हो।

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि वीर्यमसि वीर्य मयि धेहि बल-
मसि बल मयि धेह्योजोऽस्योजो मयि धेहि मन्युरसि मन्यु
मयि धेहि सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥

—यजु 19।9

हे परमेश्वर ! आप प्रकाश रूप है मेरे हृदय मे भी कृपा से विज्ञान का प्रकाश कीजिए । हे जगदीश्वर ! आप अनन्त पराक्रम वाले हैं मुझे भी पूर्ण पराक्रम दीजिए । हे अनन्त बल वाले महेश्वर ! आप अपने अनुग्रह से मुझ को शरीर और आत्मा में पूर्ण बल दीजिए। हे सर्व शक्तिमन ! आप सब सामर्थ्य के निवास स्थान हैं, अपनी करुणा से यथोचित सामर्थ्य का निवास स्थान मुझ को भी कीजिए। हे दुष्टो पर क्रोध करने हारे ! आप दुष्ट कामों और दुष्ट जीवो पर क्रोध करने का स्वभाव मुझ मे भी रखिए। हे सब के सहन करने-हारे ईश्वर ! आप जैसे पृथिवी आदि लोको के धारण और नास्तिको के दुष्ट व्यवहारो को सहते हैं वैसे ही सुख-दुःख, हानि लाभ, सरदी-गरमी भूख प्यास और युद्ध आदि का सहन वाला मुझ भी कीजिए। सब शुभ गुण मुझे देकर अशुभ गुणों से सदा अलग रखिए।

या मेधां देवगणा पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविन
कुरु स्वाहा ॥

—यजु. 32।14

हे परमात्मन् ! आप अपनी कृपा से हमें अत्यन्त उत्तम सत्यविद्या आदि शुभ गुणो को धारण करने के योग्य बुद्धि से युक्त कीजिए कि जिसके प्रताप से हम सोम देव अर्थात विद्वान और पितर अर्थात ज्ञानी होके आपकी उपासना सदा करते रहें।

निरुक्तकार यास्क मुनि के अनुसार स्वाह के निम्न अर्थ हैं—

1 'सु आहेति वा—सब मनुष्यो को अच्छा, मीठा कल्याण करने वाला और प्रियवचन सदा बोलना चाहिए।

2 'स्वा वागाहेति वा—मनुष्यो को यह निश्चय करके जानना चाहिए कि जैसी बात उनके ज्ञान के बीच मे वर्तमान हो जीभ से भी सदा वैसा ही बोल उस से विपरीत नहीं।

3 स्व आहेति वा—सब मनुष्य अपने ही पदार्थ को अपना कहे दूसरे के पदार्थ को कभी अपना न कहे अर्थात जितना-जितना धर्म युक्त पुरुषार्थ से मनुष्य को पदार्थ प्राप्त हो उतने ही मे सदा सन्तोष करें।

4 'स्वाहुत हविर्जुहोतीति वा—सदा अच्छे प्रकार सुगन्धादि द्रव्यो का संस्कार करके सब जगत् का उपकार करने वाले होम को किया करें।

5 स्वाहा शब्द का यह भी अर्थ है कि सब दिन मिथ्यावाद को छोड़कर सत्य ही बोलना चाहिए।

स्थिरा व सन्त्वायुधा पराणुदे वीलू
उत प्रतिष्कभे ।
युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा
मर्त्यस्य मायिन ॥

ऋ 1।39।2

परमात्मा का आशीर्वाद—हे मनुष्यो तुम लोग सदा उत्तम बल वाले होओ। तुम्हारे आग्नेयादि अस्त्र और शतघ्नी—तोप भुशुण्डी—बन्दूक, धनुषबाण और शस्त्र सब स्थिर हो। तुम्हारे अस्त्र और शस्त्र सब दुष्ट शत्रुओ के पराजय करने के योग्य होवें। तुम्हारी सेना अत्यन्त प्रशंसा के योग्य हो जिससे तुम्हारा अखण्डित बल और चक्रवर्तिराज्य स्थिर होकर दुष्ट शत्रुओ की सदा पराजय होती रहे। परन्तु मेरा यह आशीर्वाद केवल धर्मात्मा, न्यायकारी और श्रेष्ठ मनुष्यो के लिए है जो छली, कपटी अन्यायकारी और दुष्ट मनुष्य हैं उनके लिए नहीं।

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैव तदु
सुप्तस्य तथैवति ।
दूरगम ज्योतिषा ज्योतिरेक तन्मे
मन शिवसकल्पमस्तु ॥

—यजु 34।1

हे सर्वव्यापक जगदीश्वर ! जैसे जाग्रत अवस्था मे मेरा मन दूर दूर घूमने वाला, सब इन्द्रियों का स्वामी तथा ज्ञानादि दिव्य गुणवाला और प्रकाश-स्वरूप रहता है वैसे ही निद्रा अवस्था मे भी शुद्ध और आनन्दपूर्वक रहे। जो प्रकाश का भी प्रकाश करने वाला और एक है, हे परमेश्वर ! ऐसा जो मेरा मन है वह आपकी कृपा से कल्याण करने वाला और शुद्ध स्वभाव युक्त हो, जिससे अधर्म कामो मे कभी प्रवृत्त न हो।

यजुर्वेद का सम्पूर्ण अठारहवा अध्याय ईश्वर के अर्थ सर्वस्व समर्पण करने के ही विधान मे है, अर्थात् सबसे उत्तम मोक्षसुख से लेके अन्न जल पर्यन्त सब पदार्थों की याचना मनुष्यो को केवल ईश्वर से ही करनी चाहिए।

आयुर्यज्ञेन कल्पता प्राणो यज्ञेन कल्पता चक्षुर्यज्ञेन कल्पता श्रोत्र यज्ञेन कल्पता वाग्यज्ञेन कल्पता मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पता ब्रह्मा यज्ञेन कल्पता ज्योतिर्यज्ञेन कल्पता स्वर्यज्ञेन कल्पता पृष्ठ यज्ञेन कल्पता यज्ञो यज्ञेन कल्पताम । स्तोमश्च यजुश्च, ऋक् च साम च बृहच्च रथन्तर च स्वर्देवा अगन्मामृता अभूम प्रजापते प्रजा अभूम वेट स्वाहा ॥

—यजु 18।29

यज्ञ नाम विष्णु का है, जो सब जगत मे व्यापक हो रहा है, उसी सर्वव्यापक परमेश्वर के निमित्त सब वस्तुए समर्पित कर देनी चाहिए। मन्त्र मे उपदेश है कि—सब मनुष्य अपनी आयु को ईश्वर की सेवा और उसकी आज्ञा पालन मे समर्पित करें। अपना प्राण भी ईश्वर के अर्थ अर्पित कर देवे। जो प्रत्यक्ष प्रमाण और आप्त, जो श्रवण विद्या और शब्द प्रमाणादि, वाणी मन और विज्ञान, जीव, चारो वेदो को पढ़ के जो पुरुषार्थ किया है, प्रकाश न्याय सब सुख, उत्तम कर्मों का फल अश्वमेधादि अथवा शिल्प-क्रियामय यज्ञ—ये सब ईश्वर की प्रसन्नता के लिए समर्पित कर देना चाहिए। स्तुति का समूह, सब क्रियाओ की विद्या ऋग्वेद अर्थात स्तुति स्तोत्र सब गान करने की विद्या अथर्ववेद, बड़े-बड़े सब पदार्थ और शिल्प विद्या आदि के फलो मे जो जो फल अपने अधीन हो वे सब परमेश्वर को समर्पित कर देवें क्योंकि सब वस्तु ईश्वर की ही बनाई हुई है।

जो मनुष्य अपनी सब वस्तुए परमेश्वर के अर्थ समर्पित कर देता है उसके लिए परमकारुणिक परमात्मा सब सुख देता है इसमे तनिक भी सन्देह नहीं। परमात्मा की कृपा की लहर और परम प्रकाश रूप विज्ञान प्राप्ति मे शुद्ध होके तथा ससार मे कीर्तिमान होके हम लोग परमानन्दस्वरूप मोक्षसुख को

(शेष पृष्ठ 2 पर)

तीन प्रकार के बन्धन

लेखक—श्री स्वामी वेदमुनि जी, परिव्राजक
वैदिक सस्थान नजीबाबाद

(गताक से आगे)

एक होते है सग्रहवादी इन्हे ही परिग्रही कहते हैं। परिग्रह बड़ा भारी पाप है। परिग्रही लोग न केवल अपनी सुख-सुविधा और हास विलास के लिए ही अपितु अपने चाव पूरे करने के लिए भी अपनी आवश्यकता से अत्यधिक बढकर वस्त्र आभूषण तथा शोभा-प्रदर्शन के सामान जुटा डालते हैं। कितना भी प्रयत्न और निर्माण हो, कि तुम सबको बराबर बराबर जुटा देने योग्य प्रत्येक वस्तु कभी भी उपलब्ध नही करायी जा सकती। जो कुछ निर्माण होता है उसे भी कुछ लोग अपना चाव पूरा करने और शोभा प्रदर्शन के लिए अपनी आवश्यकताओ से अधिक जुटा ले तो अन्य लोगो की आवश्यकता पूर्ति भी भी नही हो पाती। इससे जिन की आवश्यकता पूर्ति भी नही हो पाती—एक तो उनके दुखी होने और दुखी रहने के पाप के भागी परिग्रही वादी बनते हैं, दूसरे आवश्यकता से अधिक वस्तुए क्रय करके—चाहे वह भविष्य मे काम आते रहने के लिए क्रय की गई हो अथवा चाव पूरा करने और शोभा प्रदर्शन की दृष्टि से—बाजार मे वस्तुओ की कमी का कारण बनते है और इससे माग अधिक तथा वस्तु के अभाव की व्यापारिक दृष्टि मे महगाई बढाने का पाप करते है। फिर एक ओर चाव पूरा करने के और शोभा के साधन जुटे हो और भविष्य की आवश्यकताओ के लिए अत्यधिक वस्तुए क्रय कर ली गई हो और दूसरी ओर समय की आवश्यकता की पूर्ति के साधन भी उपलब्ध न हो तो इससे समाज मे असतोष व्यापक हो जाता है। इसी के परिणामस्वरूप चोरी डकैती होती है और कम्युनिज्म जैसी विचार धाराए उत्पन्न होती और पनपती हैं।

मध्यम पाप के समस्त सूत्र—मनन व विचार अभिव्यक्ति, सकुचितता सकीर्णता कृपणता और सग्रहवाद (परिग्रह) अदान-शीलता को प्रोत्साहित करते और दान शीलता को रोकते है। दानशीलता के रुकने से धीरे-धीरे दान की प्रवृत्ति ही समाप्त हो जाती है। इससे एक ओर तो और अधिक सग्रह होना है और दूसरी ओर दान के वास्तविक अधिकारी विद्वानो और सन्त—महात्माओ से सम्पर्क टूट जाता है। धन की गति के तीन प्रकार हैं-दान भोग और नाश दान ही नही भोग से अर्थात आवश्यकताओ से अधिक एकत्र हो तो उस की तृतीया गतिमवति तीसरी गति अर्थात विनाश ही होती है। विनाश के अनेक मार्ग हैं। चोरी हो जाय रोग लग जाय अग्नि काड हो जाय मुकद्दमा लग जाए अन्यथा सरकार छीन ले। हिन्दी के एक गीतकार ने कहा भी है—

> जो है मजर धन-रक्षा तो धनवानो बनो दानी।
> कुए से जल न निकलेगा तो सड जाएगा सब पानी ॥

दान किया नही भोगो से बचा कर रखा, विनाश को प्राप्त हुआ—तो दुख के अतिरिक्त और क्या होगा ? इस प्रकार दुखो को स्वय आमन्त्रित करना बुद्धिमानी नही अपितु नासमझी है।

विद्वानो सन्त महात्माओ से सम्पर्क टूट जाने पर विद्या ज्ञान और उच्च सस्कारो की प्राप्ति का मार्ग बन्द हो जाता है। इससे न स्वय का वास्तविक मार्ग दर्शन हो पाता है और न सन्तानो का। इसका परिणाम यह होता है कि स्वय तो मनुष्य भ्रष्ट होता ही है परिवार के भ्रष्ट होने की सम्भावनाए भी बढ जाती है। जिस प्रकार गन्धी की दुकान पर बैठ कर आप चाहे गध मोल न लो, किन्तु तब भी उसकी दुकान मे रखी गध मन प्रसन्न कर देती है और लुहार या कोयले की दुकान पर बैठ कर चाहे आप कोयले आदि को स्पर्श भी न करो तो भी कालिख का अश आपके हाथ पैर मुह तथा वस्त्रो पर आ ही जाता है। इसी प्रकार सन्तो और विद्वानो के सम्पर्क मे रहकर चाहे आप सन्त और विद्वान न भी बन पाये तब भी विद्या और अध्यात्मवाद की ओर को आप का खिचाव बना ही रहता है और यह खिचाव आपको बुराईयो से बचाने का कार्य करता ही रहता है। इन सब 'मध्यम पाशो' को 'वि' अर्थात विनष्ट करके शिथिल करने की माग का भाव यह है कि कि इनका प्रभाव भी शरीर प्रभावित न करे मन से ही पृथक हो जाए अर्थात विचारों से आगे कार्य रूप मे परिणित न होने पाए।

तीसरी प्रकार के पाश—जिन्हे इस मन्त्र में अधमम् कहा गया है, वह नीचे के पाश हैं। यद्यपि सम्बन्ध उनका भी मनोविचारो से ही है, किन्तु परिणति शरीर के निम्न भाग म ही होती है, इस लिए वह नीचे के ही पाश हैं और हैं भी भयकरतम। इन मे जकडे हुए मनुष्य का छुटकारा सरलता से नहीं है। स्वास्थ्य भी नष्ट हो जाता है और धन भी समाप्ति की ओर तीव्रता से अग्रसर होने लगता है।

कामुकता इतनी भयकर वस्तु है कि इस का विष जब मानव मे व्याप जाता है तो सहजतया और सरलता से दूर नही होता। कामुक व्यक्ति की भोगेच्छा जितनी बढती जाती है वह उतना ही अधिक प्रयत्न इसकी तृप्ति के लिए करता है। यह प्रयत्न कुछ दिनो म ही घर से बाहर पडोस गली मौहल्ले मे होने लगते हैं। इस पर धन और स्वास्थ्य दोनो की तो विनष्टि होते ही हैं। समाज मे मान प्रतिष्ठा भी समाप्त हो जाती है। इस प्रकार अपने विनाश और समाज की विकृति का पाप तो ऐसा व्यक्ति करता ही है, आवागमन के चक्र मे घूमते रहने के साधन भी जुटा लेता है। इस प्रकार के भोगवादी कुसस्कारो के परिणामो को भोगने के लिए जन्म जन्मान्तरो मे जाना आवश्यक हो जाता अत जन्म धारण करने ही पडते हैं। परिणाम यह होता है—मानव जीवन के लक्ष्य से भ्रष्ट हो जाता है। जिस मोक्षानन्द परमपिता परमात्मा के परमानन्द की प्राप्ति के लिए यह जीवन मिलता है उसे प्राप्त न कर अपना महान विनाश कर लेता है। यदि इतना भ्रष्ट न भी हो तो भी कामुकता की अधिकता सयम न कर पाने के कारण—सन्तान अधिक उत्पन्न कर लेता है। सन्तानो की अधिकता के परिणामस्वरूप उनकी आवश्यकताओ के साधन जुटाने के लिए बुरे से बुरे कर्म चोरी डकैती, चोर बाजारी, मिलावट आदि—कर के पाप का भागी बनता है और इस प्रकार कर्म फल—भोग के लिए जन्म धारण करना है। परिणाम वही आवागमन हुआ है जीवन लक्ष्य प्राप्त नहीं होता।

इस पाश को अब श्रधाय नीचे ही काट गिराने की माग साधक करता है। वह नही चाहता कि इस का विष मनोविचारो मे जड जमाए। एतदर्थमेव उसे भी ऊपर जाने देने को वह तैयार नही।

प्रश्न यह है कि परमात्मा से इन के शिथिल करने की माग क्यों करता है, स्वय ही इन पाशो को क्यो नही काट गिराता ? क्यो नही इन बुराइयो का त्याग करता ? करना चाहता तो है यथा सम्भव प्रयत्न भी करता है, किन्तु अल्प शक्तियो, सीमित शक्तियो वाला होने के कारण सफल नहीं हो पाता। उस सर्व शक्तिमान् परमात्मा से माग करने का अभिप्राय अपनी असफलताओ को स्वीकार करना और उस परम देव से सहायता चाहना है और मनो-वैज्ञानिक रूप से अपने मन मे इन के विरुद्ध शुद्ध व उत्तम विचारों तथा सस्कारों का जमाव करना है। इससे इन पाशो को काटने के लिए मनोबल भी बढता है और प्रवृत्ति लोकाभिमुख न होकर परमेश्वराभिमुख होने लगती है।

मन्त्र के द्वितीय पाद मे प्रथम पाद का परिणाम बताया है। कहा है यह तीनो प्रकार के पाश कट जाने से, इन बन्धनो से छूट जाने से हम तेरे अखण्डित नियम मे पाप रहित होकर विधिवत आचरण करेंगे।

परमात्मा के नियम टूटते नही हैं। हम उनका उल्लघन ही कर सकते हैं उनके विपरीत आचरण ही कर सकते हैं, उन्हे तोड नही सकते। यदि उन मे हम रहे तो पाप न हो। फिर तो शीघ्र मोक्षानन्द का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। वह मार्ग मोक्षानन्द की मुक्ति की प्राप्ति का राजमार्ग है, उसे काटना सम्भव नही—हा हम उस पथ से पृथक अन्य पथ अपना सकते हैं किन्तु वह सब पथ तो पाप पथ हैं मोक्ष से दूर अतिदूर, जन्म जन्मान्तरो मे भटकाने वाले है।

हे वरुण !	विनष्ट कर दे।
हमारे	हे आदित्य !
बौद्धिक मानसिक और	जिसमे हम —
वासनात्मक—	विधिवत
पाश (समूह) को	तेरे अटूट—
क्रमश	नियम मे
ऊपर, नीचे और मध्य	निष्पाप—
मे ही—	
पृथक कर के	होकर रहें

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्राप्त हो,। हम सब मनुष्यो को उचित है कि किसी एक मनुष्य को अपना राजा न मानें क्योंकि ऐसा कौन अभागा मनुष्य है कि जो सवज्ञ न्यायकारी, सबके पिता एक परमेश्वर को छोड के दूसरे की उपासना करे और राजा माने। हम लोग सवज्ञ, सत्य स्वरूप, सत्य-मान्य करने वाले परमेश्वर राजा की अपने सत्यभाव से प्रजा होके यथावत् सत्य मानने, सत्य बोलने और सत्य करने मे समर्थ होवें। सब मनुष्यो को परमेश्वर से इस प्रकार की आशा करनी उचित है कि हे कृपानिधे ! आपकी आज्ञा और भक्ति से हम लोग परस्पर विरोधी कभी न हो किन्तु आप और सब के साथ सदा पिता-पुत्र के समान प्रेम से वर्तें।

सम्पादकीय—

आर्य समाज कलकत्ता का शताब्दी स्थापना समारोह

हम प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं "जीवेम शरद: शतम्" प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा यही होती है कि वह एक सौ वर्ष जीवित रह कर इस संसार के सब सुख प्राप्त कर सके, परन्तु वह रह सके या न, इसका निर्णय करना परमात्मा के हाथ में है। वह ही मनुष्य को संसार में लाते हैं और वही जब चाहें उसे ले जाते हैं। परन्तु संस्थाओं की स्थिति कुछ और होती है। कोई संस्था कब तक और कैसे चल सकती है यह बहुत कुछ उन व्यक्तियों के हाथ में होता है जो समय-समय पर उसके कर्णधार बन कर उसे चलाते हैं। वह संस्था कितनी सौभाग्यशाली हो सकती है जो अपने संघर्ष मय जीवन के एक सौ वर्ष समाप्त कर सके। इन में से कुछ ऐसी संस्थाएं भी होती हैं जिनके साथ एक बहुत गौरव-मय इतिहास बन्धा होता है और यह इतिहास ही आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाता है। हमारे देश में कई ऐसी आर्य समाजें हैं जिन्होंने अपने जीवन की एक शताब्दी समाप्त कर ली है। उन में एक आर्य समाज कलकत्ता भी है। पिछले दिनों उसकी स्थापना शताब्दी मनाई गई। इस अवसर पर मुझे भी वहां जाने और उस आर्य समाज की गतिविधियों के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिला। जो कुछ मैंने वहां देखा और जो कुछ सुना उसे आर्य मर्यादा के द्वारा आर्य जनता तक पहुचाना चाहता हू। विशेष-कर पंजाब की आर्य जनता के सामने रखना चाहता हू। हम पंजाब निवासी आजकल जिन विषय परिस्थितियों में यहां रह रहे हैं, उन्हें देख कर कई बार यह प्रश्न भी उठता है कि क्या पंजाब में आर्य समाज का अस्तीत्व रह भी सकेगा या नही ? आर्य समाजी ही न रहें तो आर्य समाज कहां रहेगा। जिन व्यक्तियों के हाथ में अब राज्य सत्ता आ रही है वह आर्य समाज को अपना सबसे बड़ा विरोधी समझते हैं। मैं इसे आर्य समाज का सौभाग्य समझता हू। क्योंकि समय-समय पर उसके सामने कोई न कोई परीक्षा आ खड़ी होती है। कभी हैदराबाद में धर्म रक्षा के रूप में आई, कभी सिन्ध में सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा के रूप में आई। इस प्रकार और भी कई संघर्ष समय-समय पर आर्य समाज के सामने आए हैं और उसने पूरी शक्ति से उनका मुकाबला किया है। ऐसे प्रतीत होता है कि पंजाब में एक बार फिर आर्य समाज की अग्नि परीक्षा होगी। इसलिए मैं भी यह चाहता हूं कि पंजाब के आर्य समाजियों को यह पता होना चाहिए कि दूसरे प्रान्तों में आर्य समाज की स्थिति क्या है ? यह जानना इस लिए भी आवश्यक है कि यदि हमें यह पता हो कि हम अकेले नहीं हैं और सारा आर्य जगत् हमारे साथ है तो हम बड़े से बड़े सकट में भी खड़े रह सकते हैं। आर्य समाज कलकत्ता की शताब्दी स्थापना समारोह पर मैंने जो कुछ देखा उससे मैं एक नई आशा और नया उत्साह लेकर आया हू। जब मैं पंजाब के आर्य भाईयो और बहनों से यह कहता हूं कि वह अकेले नहीं है और सारा आर्य जगत् उनके साथ है तो इसका भी कारण है। सब से बड़ा यह कि आर्य समाज एक शक्तिशाली संगठन है और प्रत्येक आर्य समाजी दूसरे आर्य समाजी को अपना ही एक अंग समझता है। अंग्रेजी में कहते हैं—ONE FOR ALL AND—ALL FOR ONE 'यानी सब एक के लिए और एक सब के लिए' यही स्थिति आर्य समाज की है। हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उस में कुछ शिथिलता आ रही है अगर आर्य समाज संगठित होकर सक्रिय हो जाए तो वह बड़े से बड़े सकट का मुकाबला कर सकता है। सारे देश में कोई दूसरी ऐसी धार्मिक संस्था नहीं है, जिसने अपने जीवन में इतने उतार चढ़ाव देखे हों जितने की आर्य समाज ने देखे हैं। यही कारण है कि उसने अपने देश में एक ऐसी वैचारिक क्रान्ति पैदा की है जिसने देश के धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक तीनों क्षेत्रों पर अपना प्रभाव डाला। महर्षि दयानन्द अकेले थे उनके विरोधियों की संख्या भी कुछ कम न थी फिर भी वह एक शेर की तरह आगे बढ़ते गए और अपने विरोधियों को परामर्श करते हुए हर जगह अपने झण्डे गाड़ते गए वही स्थिति आर्य समाज की भी रही है। आज हम कुछ भटक रहे हैं। इस लिए कि हमारे सामने कोई नया लक्ष्य नहीं, जो समस्याएं देश के सामने आ रही हैं उनका आर्य समाज के दृष्टिकोण से क्या समाधान होना चाहिए इस पर हम कभी विचार नहीं करते, परन्तु जो ज्योति महर्षि दयानन्द जला गए हैं उसी के सहारे हम इस अन्धकार मे चल रहे हैं। उस ज्योति का कुछ प्रकाश मुझे आर्य समाज कलकता में भी देखने को मिला। इसी लिए मैंने लिखा है कि मैं वहां से एक नई आशा और नया उत्साह लेकर आया हूं। मैं चाहता हूं कि पंजाब की आर्य जनता यह समझे कि वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज को सक्रिय रूप में संगठित रखना कितना आवश्यक है। मैं जानता हूं कि पंजाब बंगाल नहीं है और पंजाब में कलकता जैसा कोई शहर नही है, परन्तु पंजाब के आर्य समाजी कलकता के आर्य भाईयो और बहनो से बहुत कुछ सीख सकते हैं। वही मैं उन्हे बताना चाहता हू। कलकता की आर्य समाज के साथ महर्षि दयानन्द का भी सम्बन्ध रहा है। हम यह भी कह सकते हैं कि अपने जीवन के जो चार मास उन्होंने बंगाल में गुजारे थे वह ही कलकता में आर्य समाज के आधार बने थे। आर्य समाज के प्रसिद्ध साहित्यकार डा. सत्यकेतु विद्यालकार ने आर्य समाज का जो इतिहास लिखा है उसमें उन्होने उन चार मास का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया है जो महर्षि ने बंगाल मे गुजारे थे और जिसका प्रभाव वहा की जनता पर पड़ा था और वह प्रभाव आर्य समाज कलकता के रूप मे बंगाल की जनता के सामने आया है। यह सारा एक महत्वपूर्ण विवरण है। मैं उसे पंजाब की आर्य जनता के सामने रखना चाहता हू, उसके द्वारा उन्हें एक सौ वर्ष पहले महर्षि की गति-विधियो और आर्य समाज के इतिहास का कुछ पता चल जाएगा। आर्य समाज कलकता की स्थापना कब और कैसे हुई इसके विषय मे आगामी अंक मे अपने विचार आर्य मर्यादा के पाठको के सामने रखूंगा।

—वीरेन्द्र

श्री विपिन शर्मा को पितृ शोक

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के टीपक श्री विपिन शर्मा जी के पिता श्री प. जगतराम जी शर्मा का देहावसान 31-12-85 को गुलाब देवी हस्पताल में हो गया। श्री शर्मा जी गत एक सप्ताह से रुग्ण थे। गम्भीर स्थिति को देखते हुए उन्हे गुलाब देवी हस्पताल जालन्धर मे दाखिल कराया गया था। जहा अनथक प्रयत्न करने पर उन्हें बचाया न जा सका। इस दुखद समाचार के सुनते ही सभा कार्यालय तुरन्त बन्द कर दिया गया और सभा के सभी कार्यकर्ता उनके निवास स्थान बस्ती गुजा में पहुच कर उनकी अन्त्येष्टि संस्कार मे सम्मिलित हुए। श्री शर्मा जी एक बहुत मिलनसार-मेहनती और धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उन का परमात्मा पर अटल विश्वास था। उन्होने अपना सादा जीवन व्यतीत करते हुए अपनी बस्ती मे यश और कीर्ति को प्राप्त किया था। वह अपनी धुन के पक्के थे जो निश्चय कर लेते थे उसे करके ही रहते थे। वह सभी से प्रेम करने वाले थे। उनकी कथनी और करनी एक थी। ऐसे व्यक्ति विरले ही होते हैं जिनका कोई विरोधी न हो ऐसे श्री शर्मा जी थे। उनके चले जाने का सभी लोगो का बहुत दुख हुआ। उनकी शव यात्रा मे जालन्धर नगर तथा बस्ती गुजा के स्त्री पुरुषो ने भारी संख्या मे भाग लिया। परम पिता परमात्मा से उनकी सद्गति के लिए तथा श्री विपिन शर्मा व सारे परिवार को इस असहाय दु.ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए प्रार्थना की।

12-1-85 रविवार को उनका अन्तिम शोक दिवस पंचवटी मन्दिर बस्ती गुजा जालन्धर में दोपहर दो बजे मनाया जाएगा।

—सह-सम्पादक

व्याख्यान माला–

जीवन में सत्य को धारण करें

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर पंजाब

(1 दिसम्बर से आगे)

एकमेवाद्वितीय यद्राजन्नावबुध्यसे ।
सत्यं स्वर्गस्य सोपान पारावारस्य नौरिव ॥20॥

हे राजन ? क्या तुम नही जानते कि समुद्र की नौका की तरह एक और अद्वितीय सत्य ही स्वर्ग की सीढी है ।

सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्याऽभ्यासेन रक्ष्यते ।
मृज्यया रक्ष्यते रूप कुल वृत्तेन रक्ष्यते ॥21॥

धर्म की सत्य से रक्षा होती है अभ्यास से विद्या की रक्षा होती है, स्वच्छता वा शुद्धि से रूप की रक्षा होती है, आचार से कुल की रक्षा होती है ।

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभि सत्यवादिभि ।
अलुब्धैर्दानशूरैश्च सप्तभिर्धार्यते मही ॥22॥

गौवो, ब्राह्मणो वेदो, पतिव्रता स्त्रिया, सत्यवादियो, लोभ रहित पुरुषो, शूरवीरो तथा दान वीर पुरुषो इन सात के द्वारा ही यह पृथ्वी धारण की जाती है ।

त्रीण्येव तु पदान्याहु पुरुषस्योत्तम व्रतम् ।
न द्रुह्योच्चैव दद्याच्च सत्यं चैव पर वदेत् ॥23॥

पुरुष के तीन ही पद उत्तम व्रत कहे गए हैं किसी से द्रोह न करना, दान देना और सत्य बोलना ।

भूमिः कीर्तिर्यशो लक्ष्मी पुरुषं प्रार्थयन्ति हि ।
सत्य समनुवर्तन्ते सत्यमेव भजेत्तत ॥24॥

भूमि कीर्ति यश और लक्ष्मी यह तीनो उस पुरुष की प्रार्थना करती हैं जो सत्य की अनुवर्तन करता है और सत्य का ही सेवन करता है ।

सत्यस्य वचन साधु न सत्याद्विद्यते परम् ।
सत्येन विधृत सर्वं-सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥25॥

सत्य वचन ही श्रेष्ठ है सत्य से परे कुछ भी श्रेष्ठ नही है क्योकि सारा ससार सत्य द्वारा धारण किया गया है और सब कुछ सत्य मे ही प्रतिष्ठित (स्थित) है ।

सत्यार्जव पर धर्ममाहुधर्मविदो जनाः ।
दुर्ज्ञेय शाश्वतो धर्म स च सत्ये प्रतिष्ठितः ॥26॥

धर्मज्ञ जनो ने सत्य और सरलता इन दोनो को परम धर्म कहा है । सदा रहने वाला धर्म कठिनता से जानने योग्य है जो कि सत्य पर ही स्थित है ।

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम् ।
अन्त शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषा. ॥27॥

जो ज्योतिर्मय ब्रह्म सबके शरीरो मे सदैव विद्यमान रहता है तथा जिसका साक्षात्कार क्षीण दोष—दोष रहित यति जन करते हैं । ऐसा यह परमात्मा सम्यक् ज्ञान, ब्रह्मचर्य, सत्य तथा तप के द्वारा ही प्राप्य है ।

सत्यमेव जयते नानृत सत्येन पन्था विततो देवयान ।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम् ॥28॥

सदा सत्य की ही विजय होती है असत्य की कभी भी नहीं सत्य के द्वारा ही देवयान— देवताओ द्वारा गमन करने योग्य मार्ग प्रकाशित होता है इसी कारण आप्त काम ऋषि उस देवयान मार्ग से वहा पहुचते हैं जहा उस सत्य की श्रेष्ठ निधि विद्यमान है अर्थात् सत्य द्वारा प्रकाशित देवयान मार्ग का आश्रय लेकर आप्त काम ऋषि सत्य के परम निधान पर ब्रह्म परमेश्वर का साक्षात्कार करते है ।

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम् ।
धर्मो न वै यत्र च नास्ति सत्य सत्य न तद्यच्छलेनानुविद्धम् ॥29

वह सभा, सभा नही कहलाती जिसमे वृद्ध पुरुष न हो । वे वृद्ध, वृद्ध नही कहलाता जो धर्म युक्त बात नही बोलते । वह धर्म भी धर्म नही कहलाता जो धर्म सत्य से रहित हो और वह सत्य भी सत्य नही जिसमे छल का समावेश हो अर्थात् वह सत्य ही नही जो छल से युक्त हो ।

एकोऽहमस्मीति च मन्यसे त्व न हृच्छय वेत्सि मुनि पुराणम् ।
यो वेदिता कर्मण पापकस्य तस्यान्तिके त्व वृजिन करोषि ॥30॥

हे मनुष्य जो तू ऐसा मानता है कि एक मैं ही हू और मेरे अतिरिक्त कुछ नही और उस हृदय मे स्थित पुरातन पुरुष को नही जानता जो कि तेरे पाप कर्मो का जानने वाला है फिर भी आश्चर्य है कि तू उसी के समीप (निकट) रहता हुआ पाप करता है ।

जो जागत है वही पाता है

यो जागार तमृच कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति ।
यो जागार तमय सोम आह, तवाहमस्मि सख्ये न्योका. ॥
ऋक् 5-44-14

ऋषि—अवत्सार काश्यप । देवता—विश्वेदेवा । विराट् त्रिष्टुप् ।

(यो) जो (जागार) जागता है—जागरूक रहता है, (तम्) उसकी (ऋच) स्तुति करने वाले लोग (ऋच कामयन्ते) स्तुतिया करते है । (यो जागार) जो जागरूक है (तमु) उसे ही (सामानि) शान्ति के प्रयोग व वचन (यन्ति) प्राप्त होते हैं ।

(यो जागार) जो जागरूक रहता है (अय सोम) यह शान्ति की स्थापना करने वाला शान्त नेता तम् आह) उससे अभिमुख होकर कहता है कि (अह) मैं (तव सख्ये) तेरी मित्रता मे (न्योका) निश्चिन्त स्थान रखने वाला (अस्मि) हू ।

निष्कर्ष –

जागरूक व्यक्ति के ही गुण गाए जाते हैं । लापरवाह अपने कर्त्तव्य की अपेक्षा करने वाले के कोई गुण नहीं गाता । जागरूक व्यक्ति ही शान्ति स्थापित कर सकता है और फिर स्वय शान्त होकर बैठ सकता है ।

जागने पर ही गुणगान किया जाता है, अथवा सोने से पहले स्तुति की जाती है । जाग्रत अवस्था मे ही शान्ति की अधिक जरूरत होती है । स्वप्नावस्था मे सबको अपेक्षाकृत अधिक शान्ति होती है ।

जागरूक व्यक्ति की ही परमात्मा सहायता करता है, उसका वह मित्र बनता है । उसके घर मे बसेरा करता है ।

जागरूक वही रह सकता है जो (अवत् सार) अपने सारभाग वीर्य की रक्षा करता है, जितेन्द्रिय है तथा चारो तरफ देखता है, सब पर दृष्टि रखता है— काश्यप है ।

ओक का अर्थ है घर । ओकु—ओषण-अल-अर्थयो—से बनाए तो अलकृत करने वाला भी हो सकता है । इस प्रकार जागरूक ही अलकृत हो सकता है ।

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर का प्रथम शताब्दी समारोह

हम बड़े हर्ष से यह शुभ सूचना आप को देते हैं कि इस समाज को लोक सेवा करते हुए एक सौ वर्ष हो चुके हैं इस संदर्भ में हम 30,31 जनवरी से 2 फरवरी 86 को "प्रथम शताब्दी समारोह" मना रहे हैं, जिसके उपलक्ष में में हम एक "शताब्दी स्मारिका" जो एक विशाल पुस्तक के रूप में होगी, जिसमें अनेकों विद्वानों के विचार, कविताएं, लेख तथा भारत के महापुरुषो के अनेकों चित्र तथा संदेश होंगे। इस 'स्मारिका' जो एक बड़ी पुस्तक के रूप में होगी इसे लाखों लोगों ने पढ़ना है तथा अनेकों वर्षों तक लोगो के घरों तथा पुस्तकालय में सुरक्षित रहेगी। मेरी आप से प्रार्थना है आप इस 'स्मारिक' मे अपने कारोबार का, अपनी कोई विशेष स्मृतियो का विज्ञापन देकर सहयोग दें। इस व्यय पर आप को "आय कर" से भी छूट मिलेगी। मैं आशा करता हू। आप मेरी प्रार्थना को सहर्ष स्वीकार करेंगे। ध्यान रहे कि यह पत्रिका सारे ससार के भिन्न-2 भागो मे नि शुल्क भेजी जाएगी।

इस आर्य समाज के गत कार्य

1. गत एक सौ वर्षों से लोगो को "वेद—तथा—यज्ञ" में पूर्ण आस्था लाने की प्रेरणा कर रहे हैं।

2. भिन्न-2 शिक्षा सस्थाएं आरम्भ करके लोगो मे शिक्षा का प्रचार किया जा रहा है।

(क) इस समाज के भूतपूर्व प्रधान लाला मुन्शीराम जी वकील (स्वामी श्रद्धानन्द जी) ने हि सर्व प्रथम "गुरुकुल कांगड़ी" की स्थापना की थी, जो आज एक यूनिवर्सिटी के रूप मे ज्ञान—विज्ञान का प्रचार शिक्षा द्वारा कर रही है।

(ख) इसी समाज के भूतपूर्व मन्त्री ला. देवराज जी ने हि सर्व प्रथम 'कन्या पाठशाला" की स्थापना की थी, जब लोग अपनी लड़कियों को पढ़ाना पाप समझते थे, आज वही 'कन्या पाठशाला' एक महान् शिक्षा संस्था. "कन्या महाविद्यालय" के रूप मे सब धर्मों तथा विचार के लोगों की सेवा कर रही है। विदेशों से भी शिक्षा के लिए इस विद्यालय में लड़किया पढ़ने को आती हैं।

(ग) इस समाज के एक भूतपूर्व अधिकारी लाला लब्भू राम जी सब्बरवाल ने लड़कों को पढ़ाने के लिए "दोआबा स्कूल" खोला था और जीवन भर अवैतनिक पढ़ाते रहे, उसी स्कूल का नाम आज लब्भूराम दोआबा हायर सैकेण्डरी स्कूल है जिस की आज चार शाखायें भी शिक्षा प्रचार का कार्य कर रही हैं।

(घ) इसी समाज की कार्यकारणी के सदस्यों (सर्व श्री बिन्द्रावन सोन्धी, सेठ खेम राज, सेठ सत्यपाल, लाला जगन्नाथ मित्तल, प्यारे लाल कपूर एडवोकेट) जैसे महा-पुरुषों ने ही दोआबा कालेज की स्थापना की थी।

3. (क) आर्य समाज मन्दिर के सौ वर्ष पुराने भवन का गत तीन चार वर्षों में नव निर्माण कर दिया गया है। एक विशाल कम्यूनिटीहाल बना दिया है, जिसे आम लोग अपने भिन्न-2 उत्सवो पर नियमानुसार अपने प्रयोग मे लाते हैं।

(ख) मन्दिर के रूप में एक विशाल "यज्ञशाला" सत्सगो के लिए बना दी गई है, जहा दैनिक, सध्या, प्रार्थना अग्निहोत्र, वेद पाठ, रामायण|या अन्य धार्मिक ग्रन्थों का पाठ तथा वेदोपदेश होता है, जिसकी आवाज ध्वनी यन्त्र द्वारा लगभग दो हजार व्यक्तियो तक पहुचती है।

इसी प्रकार रविवार को 8-30 से 11 बजे तक सप्ताहिक सत्सग होता है।

प्रत्येक बुधवार को 3 से 5 बजे तक 'स्त्री-सत्संग होता है।

(ग) इस में पूर्व यात्रियो के ठहरने के लिए चार कमरे हैं, अब एक 60'+20' का हाल "यात्री भवन" के रूप मे बनाया गया है। जहा पर आजकल निशुल्क "आर्य महिला सिलाई स्कूल" चल रहा है।

(घ) शिक्षा-प्रचार के लिए प्राईमरी स्कूल भवन के ऊपर की मन्जिल पर दो विशाल नये कमरे बनाये गए हैं।

इस आर्य समाज की कुछ विचाराधीन योजनाए

1. आजकल के "दहेज" के झगडो को ध्यान में रखते हुए, हम शीघ्र लड़कियो के लिए नि.शुल्क—"व्यवसायिक शिक्षा" देने के अधिक केन्द्र खोलेंगे, जैसे 'टाइप शार्टहैण्ड' इलैक्ट्रानिक मकैनिक, फोटोग्राफी, बुक बाईंडिग, घरेलु बिजली इत्यादि।

2, आर्य समाज मन्दिर के सामने आर्य समाज का एक भवन है, (जिस में कभी स्वामी श्रद्धानन्द जी रहा करते थे) उस भवन को नव निर्माण करके, निचली मंजिल किराय पर दी जाएगी तथा, उस के ऊपर की मंजिल पर एक नि.शुल्क 'दस बैड' का हस्पताल खोला जाएगा।

आशा है, आपके आर्थिक सहयोग से हम इन नई योजनाओं को अवश्य ही क्रियात्मिक रूप देने में सफल होंगे।

कार्यक्रम इस प्रकार होगा—

1. "सामवेद पारायण यज्ञ" रविवार 22 दिसम्बर 1985 से प्रात साढे 7 बजे से साढ़े 8 बजे तक तथा साय 7 से 8 बजे तक दैनिक हो रहा है। रविवार 2 फरवरी 1986 प्रात साढे 10 बजे पूर्णाहुति डाली जाएगी।

2, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 22 दिसम्बर 1985 रविवार प्रात साढे 8 बजे तक मनाया गया। जिस मे आर्य समाज के बड़े-बड़े विद्वान नेता विदूषी ने बहनो उस महान त्यागी तपस्वी को श्रद्धान्जली भेंट की।

3. बृहद सामूहिक यज्ञ—रविवार 26 जनवरी 1986 प्रात 9 बजे से साढे 10 बजे तक होगा, जिस में एक सौ एक युवक दम्पति यजमान यज्ञ करेंगे।

4. रविवार 26 जनवरी 1986 से 2 फरवरी 1985 तक दैनिक प्रात वृहद यज्ञ तथा साय 8 बजे से साढ़े 9 बजे तक वेद कथा तथा भजन हुआ करेगे। श्री स्वामी सम्बुद्धानन्द जी सरस्वती, तपोवन, देहरादून वाले यज्ञ तथा वेद कथा करेंगे।

5 31 जनवरी शुक्रवार बाद दोपहर एक बजे ओ३म्-ध्वज पताका फहराई जाएगी तथा 2 से 5 बजे तक विद्यार्थी सम्मेलन होगा, तथा रात्रि 8 से 10 बजे तक कवि दरबार होगा।

6 1 फरवरी 1986 शनिवार प्रात 10 से 12 बजे तक तथा बाद दोपहर 2 से 4 बजे तक पजाब प्रान्तीय स्त्री सम्मेलन होगा। "शोभा यात्रा" 4 से 6 बजे तक नगर-कीर्तन निकाला जाएगा रात्री 8 से 9 बजे तक एक ड्रामा होगा।

7. 2 फरवरी, रविवार प्रात साढे 10 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति होगी तथा बाद दोपहर 2 से 5 बजे राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन होगा विषय—पजाब—भूत—वर्तमान—भविष्य।

8 स्वामी सम्बुद्धानन्द जी सरस्वती प्रतिदिन 26 जनवरी से 2 फरवरी तक, साय 5 बजे से 6 बजे तक। योगाभ्यास के प्रत्येक पक्ष पर विस्तार से प्रशिक्षण देंगे।

अन्त मेरी सब धर्म प्रेमी सज्जनो से प्रार्थना है कि वह सब अपने इष्ट मित्रो तथा परिवार सहित इस कार्यक्रम मे सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा को बढाए।

इसके उपलक्ष मे शताब्दी स्मारिका भी छपवाई जा रही है। आप अपने कारोबार के विज्ञापन देकर इसको सफल बनाये। अपने पूर्वजो के चित्र इस मे छपवा कर स्मृति कायम करें, इस स्मारिका को लाखो लोगो ने पढना है तथा आने वाले 100 वर्ष तक यह इतिहास स्मारिका, आर्य समाजो के पुस्तकालय मे रहेगी। यह ससार की सब आर्य समाजो के पुस्तकालयो के लिए नि शुल्क भेजी जाएगी।

—योगेन्द्रपाल सेठ
प्रधान

अमृतसर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

दिनाक 23-12-85 को वृहद यज्ञ के पश्चात "श्रद्धानन्द बलिदान दिवस" एकता व अखण्डता दिवस के रूप मे आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर मे समारोह पूर्वक मनाया गया। जिसमे गणमान्य व्यक्तियो और भिन्न-भिन्न स्कूल व कालेज की छात्राओ ने भाग लिया। इसकी अध्यक्षता प ओम् प्रकाश जी कालिया, प्रधान श्री ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा, पजाब ने की। श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय, शान्ति विद्या निकेतन विक्रम विद्यालय व अजीत विद्यालय की छात्राओ ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को श्रद्धाजलिया तथा देश भक्ति के गीत सगीत की धुन पर पेश किए। डा, राजाराम जी शर्मा मन्त्री, विशन सस्कृत प्रतिष्ठान, पजाब, सुश्री सतोष शर्मा, प्रिंसीपल, श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय सूबेदार मेजर शाम लाल, वैद्य बाबूराम जी शर्मा ने सभा को सम्बोधित किया। अध्यक्ष महोदय ने इस अवसर पर सभी हिन्दुओ को आर्य समाज के झण्डे तले इकट्ठे होने और देश की अखण्डता के लिए अपनी आखरी खून की बून्द तक बहाने की अपील की।

—वीरेन्द्र देवगण
महामन्त्री

आर्य समाज भठिण्डा में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज भटिण्डा की ओर से 22-12-85 रविवार को प्रात 8 बजे से लेकर 10बजे तक अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द दिवस महाशय निहालचन्द जी की अध्यक्षता में मनाया गया। इस अवसर पर श्री ओम् प्रकाश जी, श्री धर्म देव जी और पडित अजीत कुमार जी ने उन के जीवन पर अपने विचार रखे।

इसी अवसर पर आर्य समाज के कुछ सदस्यो ने आचार्य श्री पृथ्वी सिंह आजाद जी को भी श्रद्धाञ्जलि प्रदान की।

—रोशन लाल

लोहड़ी तथा मकर संक्रान्ति

13 और 14 जनवरी को दो मुख्य पर्व मनाए जा रहे हैं। एक लोहड़ी और दूसरा मकर संक्रान्ति। यह दोनो पर्व बड़े महत्वपूर्ण हैं। परन्तु लोहड़ी का पर्व मुख्य रूप से पंजाब में अधिक उत्साह से मनाया जाता है और मकर संक्रान्ति का पर्व सारे भारत देश मे मनाया जाता है।

लोहड़ी का पर्व मुख्य रूप से उन परिवारो में अधिक उत्साह से मनाया जाता है जिन परिवारो मे नव शिशुओ ने जन्म लिया हो उन बच्चो की पहली लोहड़ी मनाई जाती है और दूसरे उन परिवारो मे मनाया जाता है जिन मे गत दिनो मे नव विवाह हुए हो अर्थात जिनका विवाह इस पर्व से पूर्व हुआ होता है उनकी भी इस अवसर पर पहली लोहड़ी मनाई जाती है। सायं काल के समय अग्नि जलाई जाती है। इस अवसर पर सभी मित्र प्यारो रिश्तेदारो को आमन्त्रित किया जाता है। अग्नि मे तिल की रेवड़ी मूंगफली आदि की आहुतियां भी दी जाती हैं और यही रेवड़िया आदि तथा फल सभी मित्रो मे बांटे जाते हैं।

यह पर्व इन दो परिवारो मे विशेष रूप से क्यो मनाया जाता है इसमे भी रहस्य की बात मालूम पड़ती है। वास्तविकता यह है कि नव शिशु और नव विवाहित युगल को सर्दी से विशेष रूप से बचाना और बचना चाहिए। क्योंकि यह पर्व शरद ऋतु के मध्य मे आते हैं। अग्नि का तापना शरद ऋतु मे बहुत लाभदायक है। इसलिए अग्नि जलाई जाती है। गर्म वस्तु का खाना भी आवश्यक है इस लिए गुड़ रेवड़ी तिल मूंगफली तथा अन्य गर्म पदार्थ खाए जाते हैं। बांटे इसलिए जाते है कि सभी इस रहस्य को समझ कर सर्दी से बचाव रखें। पहली सर्दी जब किसी बच्चे के जीवन मे आती है उससे उसको बचाना बहुत जरूरी है यदि पहली बार किसी बच्चे को सर्दी लग जाए निमूनिया आदि हो जाए तो जीवन भर उसका प्रभाव रहता है। ऐसे ही नव विवाह ब्रह्मचर्य से गृहस्थ मे आते हैं स्वाभाविक रूप मे शरीर मे वह गर्मी नही रहती जो विवाह से पूर्व होती है। शारीरिक गर्मी को कायम रखने के लिए अग्नि आदि तापना और गर्म पदार्थ सेवन करना लाभकारी है।

मकर संक्रान्ति का पर्व लोहड़ी से अगले दिन सभी परिवारो और सभी प्रान्तो मे मनाया जाता है। वैसे तो प्रत्येक संक्रान्ति को कई लोग बड़े उत्साह से मनाते हैं परन्तु मकर संक्रान्ति अपना विशेष स्थान रखती है।

जितने समय मे यह पृथिवी सूर्य के चारो ओर एक परिक्रमा पूरी करती है उसको एक सौर वर्ष कहा जाता है। उस की परिधि को क्रान्ति वृत कहते हैं। ज्योतिषियो ने इस क्रान्ति वृत के 12 कल्पित भाग किए हुए हैं उन भागो के नाम उन स्थानो पर आकाशस्थ नक्षत्र पुंजो से मिल कर बनी हुई कुछ मिलती जुलती आकृति वाले पदार्थों के नाम पर रख दिए हैं। यथा मेष वृष मिथुन कर्क तथा मकर कुम्भ मीन आदि। जब पृथिवी एक राशि से दूसरी राशि मे संक्रमण करती है तो उसको संक्रान्ति कहते हैं।

छः मास तक सूर्य क्रान्ति वृत से उत्तर की ओर उदय होता है और छः मास दक्षिण की ओर निकलता है। प्रत्येक छः मास की अवधि का नाम अयन है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय होने का उत्तरायण और दक्षिण की ओर उदय होने का दक्षिणायन कहते हैं। उत्तरायण मे दिन बढ़ते हैं रात घटती हैं और दक्षिणायन मे रातें बढ़ती हैं दिन घटते हैं। क्योंकि उत्तरायण मे प्रकाश बढ़ता है और अन्धकार घटता है इस लिए इसे बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। मकर संक्रान्ति से उत्तरायण आरम्भ होता है। इस अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है। चारो ओर शीत का साम्राज्य छाया रहता है। इस लिए इस पर्व को मनाते हुए भी हम तिल गुड़ आदि स्वयं भी खाते हैं और बांटते भी हैं। तिल का उबटन तिल का दान तिल का हवन तिल का भोजन करना पुण्य समझा जाता है। इसलिए हम तिल गुड़ खाण्ड के लड्डू बना कर बांटते हैं और स्वयं भी खाते हैं तथा गर्म वस्त्र धन आदि भी दान करते हैं। इस प्रकार उत्तरायण का स्वागत किया जाता है। आजीवन ब्रह्मचारी भीष्म पितामह ने इसी उत्तरायण के आगमन तक शर शैय्या पर शयन किया था। इस शयन को देवयान भी कहा जाता है इस प्रकार लोग शरीर त्याग तक की अभिलाषा भी इसी उत्तरायण में रखते हैं। उनके विचारानुसार इस समय देह त्यागने से उनकी आत्मा सूर्य लोक मे प्रवेश होकर प्रकाश माग से प्रयाण करेगी। इस प्रकार प्रकाश की कामना की जाती है और अन्धकार को अपने जीवन से दूर करने की परमात्मा से प्रार्थना की जाती है।

—धर्म देवार्य
सह-सम्पादक

आर्य समाज शास्त्री नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

गत दिनो आर्य समाज मन्दिर शास्त्री नगर (बस्ती गुजां) का दूसरा वार्षिक उत्सव बड़े समारोह से मनाया गया। श्री ओम प्रकाश जी आर्य महोपदेशक की अध्यक्षता मे प्रातः प्रतिदिन हवन यज्ञ तथा प्रवचन होते रहे रात्रि को श्री पं सीताराम जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सुन्दर भजन तथा आर्य जी के ओजस्वी उपदेश होते रहे।

श्री वीरेन्द्र जी एम ए प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का स्वागत किया गया उन्हें समाज के अधिकारियो तथा सदस्यो ने फूलो की मालाओ से लाद दिया। तत्पश्चात श्री वीरेन्द्र जी ने अपने कर कमलो द्वारा ओम ध्वजा फहराई। उस समय ओम का जय घोष का नारा लगाया गया। आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ की कन्याओ द्वारा ओम ध्वज का गीत तथा स्वागत गीत गाए गए।

इस के पश्चात आर्य समाज मन्दिर से शोभा यात्रा प्रारम्भ हुई सारे नगर से होते हुए आर्य समाज मन्दिर मे समाप्त हुई। शोभा यात्रा मे भिन्न भिन्न स्कूलो के बैंड तथा आर्य कन्या हाई स्कूल की सभी छात्राएं तथा अध्यापक वर्ग आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजां के सभी छात्र तथा अध्यापक, मिलटन माडल स्कूल बस्ती गुजां व लार्ड माडल स्कूल के सभी बच्चे तथा अध्यापक वर्ग ने भाग लिया। सब से आगे 7 घोड़ तथा झांकियां थी। सारा नगर दुल्हन की भांति सजाया हुआ था। सारे मार्ग पर जल तथा लाऊड स्पीकर लगे हुए थे भजनोपदेशक रास्ते में भजन गीत तथा प्रचार करते जा रहे थे। मार्ग में बहुत से द्वार बने हुए थे।

इस अवसर पर कवि दरबार सम्मेलन भी हुआ जिस मे उच्चकोटि के कवियो ने भाग लिया। बहुत से कविजन हरियाणा से आए हुए थे। जैसे नाज जी गन्नौर जी दीवान जी आए हुए थे। श्री आदर्श कुमार जी दर्शी दसूहा वालों ने भी भाग लिया। कवि दरबार सराहनीय था।

इनके अतिरिक्त उत्सव में उच्च कोटि के महोपदेश आर्य जगत के विद्वान श्री श्याम सुन्दर जी स्नातक देहली वाले, पं निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी महोपदेश पं ओम प्रकाश जी आर्य महोपदेश तथा श्री सालिगराम जी पराशर आदि के प्रवचन होते रहे साथ ही पं सीताराम जी भजनोपदेश तथा पं सत्यपाल जी पथिक श्री वीरेन्द्र कुलदीप भजन मण्डली पं धनी राम जी के भजन होते रहे।

स्कूल के बच्चो की भाषण प्रतियोगिता भी हुई अन्त मे ऋषि लंगर भी हुआ।

—राम लुभाया नन्दा प्रधान
लाल चन्द नन्दा मन्त्री

—

बलाचौर जिला होशियारपुर में वेद प्रचार सप्ताह

3-12-85 सोमवार से 19-12-85 रविवार तक वेद प्रचार सप्ताह (वैदिक सत्संग श्री गुरुदेव सिंह श्रीमान तथा सहयोगियों द्वारा बड़ी धूम-धाम और हर्षोल्लास से मनाया गया जिस में श्री पं रामनाथ जी सिद्धान्त शिरोमणि तथा महोपदेशक के वैदिक उपदेशो और श्री रामनाथ जी शास्त्री, श्री राम जी भजनोपदेशक के वैदिक भजन उपदेशों से बलाचौर के नागरिक बहुत प्रभावित हुए और भविष्य में भी ऐसे ही वेद प्रचार सुनने की कामना की है।

मन्त्री

आर्य समाज किस ओर

लेखक—श्री पं हरिओम् सिद्धान्ताचार्य

आर्य समाज का नाम लेते ही मानस पटल पर एक प्रगतिशील, समसामयिक विज्ञानवादी और मानव जीवन की परिभाषा और उपयोगिता को सम्यक रूपेण समझने और समझाने वाली संस्था का एक खासा चित्र उभर आता है। जिसके पास वेद जैसे अमोघ अस्त्र और ब्रह्मा से लेकर अर्वाचीन वैदिक ऋषियों की विद्वता, त्याग, तपस्या बलिदान जैसी थाती है। जिससे मानव धर्म अपने को धन्य समझता है। परन्तु दुर्भाग्यवश आज के तथाकथित आर्य समाजियों की कार्य पद्धति और कथन देख सुनकर कभी-कभी ऐसा लगता है कि हम केवल "हाथी के दिखाने वाले दांत" बन रहे हैं। न इनका आचार शुद्ध, न भाषा शुद्ध न कर्त्तव्य, विद्वानो की अवमानना और अवहेलना, समारोह पूर्वक दूसरे के घर पर संस्कार करवाना। (न कि करना) यज्ञादि को आडम्बर सहित प्रस्तुत करना ही जिनका मुख्य कर्त्तव्य हो गया है। यदि आर्य क्षमा करें तो अब तो यह भी डर सामने आने लगा है कि दुर्भाग्यवशात् कहीं हमारे आलस्य प्रमाद के कारण आगामी सौ वर्ष में ऋषि और आर्य समाज को ही न विस्मृत कर जायें।

कहते हैं कि जहा अच्छे विद्वान् का अभाव होता है वहां पर अन्ध परम्पराएं ही पनपती हैं। आज दुर्दैववशात् डाक्टर तो अपने पुत्र को डाक्टर बनाना चाहता है, परन्तु एक गुरुकुल का स्नातक और वेदों का विद्वान् अपने पुत्र को गुरुकुल में पढ़ाना और वेद पढ़ाना नहीं चाहता। क्या यह हमारी अवनति का कारण नहीं है?

कुछ दिन पूर्व एक कवि का स्वर आर्य जगत् में गूंजा था कि 'परिवर्तन का कार्यक्रम कहीं क्रम न बन जाये'। मुझे उन महोदय की बात का तुरन्त ही प्रतिवाद करना पड़ा कि "परिवर्तन ही जीवन है।" जिस दिन परिवर्तन का क्रम बन्द हो जाएगा उस दिन सृष्टि चक्र रुक जाएगा। बौद्ध और सांख्य दर्शन तो अपने क्षणिकवाद, और परिणामवाद के लिए ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। जब गर्भस्थ भ्रूण अपने आकार का परिवर्तन करता है तो और सबकी कथा ही क्या? जब तक नदी का पानी प्रवहमान रहता है तब तक वह निर्मल और पुष्टिकारक होता है, परन्तु जब उसे बांध देते हैं तब वह अनुपयोगी हो कर पर्यावरण को दूषित करता है।

इस लेख कार्य का मूल उद्देश्य [illegible] समाज में परिवर्तन को चाहना है। आज हम केवल [illegible] संस्कारो, यज्ञों, व्याख्यानों तक ही सीमित रह गये हैं। इन [illegible] को बढ़ाने और इसमे शोध कार्य करने के हेतु वैदिक बुद्धिजीवियों की सेवा में कुछ निवेदन प्रेषित है।

निवेदन आर्य विद्वानों से—

आज जब हमने दान, तपस्या, त्याग, [illegible] सब प्रकार के कर्मों की परिभाषाओं में परिवर्तन कर दिया है तो [illegible] आज हम अपने सांस्कृतिक संस्थाओं, व्याख्यानो, प्रवचनो भजनादि के विषयो में परिवर्तन क्यो नही लाते। आज 21 वीं सदी में जहां एस. डी, आई अर्थात् स्टारवार्स जैसी परियोजना हो वहां पर केवल उपासना और स्तुति पर वेदों का अर्थ करना कहां तक सगत है? आज हमे तो प्रक्षेपास्त्र विध्वंसक लेसर किरणों के समानान्तर कोई अन्य प्रचण्ड विज्ञान शक्ति की खोजपूरक और प्रतिपादक वेदो का भाष्य करना चाहिए। जब हम यह कहते हैं कि वेदों में सर्व सत्य विद्या है, या सब सत्य विद्याओं की एक मात्र निर्देशिका वेद है तो फिर तो हमें आधुनिक विज्ञान का मूल्य वेदो मे खोजना चाहिए। और दुनिया के समक्ष वह बात रखनी चाहिए कि जिस से दुनिया की आस्था वेदों के प्रति हो।

इसके लिए हमे वेदो के विद्वान् वैज्ञानिक और उनके योग्य प्रयोगशालाए तैयार करनी पड़ेगी। जहां ऐसे शोध कार्य हो तभी आधुनिक बुद्धिजीवियो का ऋषि और आर्य समाज से गाढ़ प्रेम और परिचय हो सकेगा।

निवेदन वक्ताओं से—

आज हमें अपने व्याख्यानों और लेखो मे परिवर्तन करने की अनिवार्यतम् आवश्यकता है। दान दया स्तुति प्रार्थनादि इनकी परिभाषा हमे नये सिरे से करनी पड़ेगी। 21 वीं सदी का मानव दुनिया से भीख मांगने पर विश्वास नही करता वह अपने आपको सबल करके व्यवस्थित जीवन जीना चाहता है। वास्तव मे उसी की उन्नति भी होती है। अत. वक्ताओं को अपने व्याख्यानो में नई आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक पारिवारिक समस्याओं को श्रोताओं के समक्ष रखकर उनके निराकरण का अमोघ विश्वासनीय मार्ग बतलाना चाहिए। इन के अभाव में उन्हीं पुराने पारिभाषिक और जर्जरित विषयों के कारण आज हम में केवल सुनने-सुनाने और फिर पल्ला झाड़ कर चल देने की आदत सी हो गयी है। जिसे व्याख्याता एवं श्रोता वर्ग अच्छी तरह से जानता है। जैसा कि कहावत है कि—

'मेरे दिल में न सही तेरे दिल में ही सही।
आग जहा भी हो तो जलनी ही चाहिए॥

निवेदन आर्य पुरोहितों से—

"अग्नि होत्र जुहुयात् स्वर्ग काम." इस शास्त्र वाक्य में भी आये हुए अग्निहोत्र का अर्थ हमे नये सिरे से सोचना पड़ेगा। आज देश में अग्निहोत्रो की प्रचुरता के साथ ही साथ भुखमरी महामारी अनावृष्टि, अति वृष्टि की भी भरमार है। इसको देख कर सोचना पड़ता है कि यदि दवा करने से मरीज की बीमारी प्रति समय बढती है तो या दवा करना बन्द कर देते हैं या डाक्टर ही बदल देते हैं। अत: हमे यज्ञ की प्रक्रियाओ का शोध करके लाभ कराकर और सस्ती प्रक्रिया का जनहितार्थ और यज्ञ मे श्रद्धा के लिए दुनिया के सामने रखनी पड़ेगी।

आज भोपाल गैस काण्ड हुए एक वर्ष व्यतीत हो चुका है। कई हजार व्यक्तियो की मृत्यु के बाद भी आज तक वहा के लोग उसके प्रभाव से तरह-तरह से रोगी हो रहे हैं। और पता नहीं ये कब तक कुप्रभाव चले? दुख तो इस बात का है कि विश्व कल्याण का नारा लगाने वाले (इस सस्था के) किसी भी प्रतिनिधि ने आज तक मिथाइल आइसो सायनाइड एम आई. सी. जैसी जहरीली गैस के कुप्रभाव को रोकने के लिए किसी भी प्रकार की यज्ञ सामग्री या यज्ञ प्रक्रिया का विस्तार और प्रचार नही किया होना तो यह चाहिए या हम अपने विद्वानो से इस मुद्दे पर शोध कराते और उसका प्रयोग करके भोपाल वासियो को छुटकारा दिलाते। तथा अनावृष्टि को नष्ट करने के लिए सरल और सस्ती यज्ञ प्रक्रियाओ और सामग्रियो का शोध करा कर उनका विस्तार कराते हैं। जिस से लोगो की श्रद्धा इनकी तरफ होती, परन्तु ऐसा नही हुआ हजारो रुपए व्यय करने के बाद भी पानी नहीं बरसता। कुछ दिन पूर्व एक विद्वान् एक प्रान्त से आकर इस क्षेत्र में वर्षा यज्ञ कर गए थे जिस के प्रभाव से कुछ बूंदा-बांदी तो हुई परन्तु उसके बाद उससे ज्यादा कुछ भी नहीं हुआ। सौराष्ट्र के लोग पानी की एक-एक बूंद को तरसते हैं। यह शोध कार्य सार्वदेशिक, प्रादेशिक स्तर पर उन्हीं प्रतिनिधि सभाओं के होने चाहिए थे, परन्तु जो नहीं करना चाहिए वह आज हम कर रहे हैं। विद्वानो का सम्मान करना उन्हें पारितोषिक देना तो जैसे हमने सीखा ही नहीं उन्हें तो "पीर बवर्ची भिश्ती खर ही चाहिए।" जो कि समयानुसार उनका सब कार्य कर सके। आज सिख समाज ग्रन्थियो और ज्ञानियो, मुस्लिम समाज मुल्लाओ और मौलवियो पौराणिक समाज पण्डितो और पार्षों, बौद्ध समाज लामाओ, और जैन समाज भिक्षुओं का आदर ही नही उन्हे अपना सर्वस्व मानता है। और वे भी उनकी हर सम्भव सफलता सोचते और करते हैं। परन्तु आर्य समाज आर्य विद्वानों, गुरुकुल के स्नातको, प्रचारकों, पुरोहितो की सस्था न हो कर केवल धन पतियो का ही समाज बनकर रह गया है जो उनसे केवल अपेक्षा ही खूब रखते हैं। इसका परिणाम हमारे सामने ही है कि कोई भी आर्य विद्वान् अपने पुत्र को अपनी जैसी शिक्षा दिलाना उसके भविष्य से खिलवाड़ करना समझता है। हम आर्य समाज भवनो में परिवर्तन कर के पैसा एकत्रित करने के लिए "बारात घर" तो बना रहे हैं। परन्तु विद्वानो को ठहरने के लिए लगभग अधिकाश समाजो मे स्थान का सर्वथा अभाव है। समय रहते आर्य समाजी अधिकारी न चेते तो फिर अवश्य ही पछताना पड़ेगा। अत हमें अभी से ही सावधान हो जाना चाहिए।

शुद्धि संरक्षिणी समिति का गठन

दिनाक 17 12-85 आर्य समाज बड़गाव गोडा के उत्सव पर स्वामी सेवानन्द महामन्त्री हिन्दू शुद्धि संरक्षिणी समिति हरियाणा की अध्यक्षता मे दिन के 2 बजे शुद्धि सम्मेलन हुआ। इस अवसर पर जो निर्धन हरिजन पैसे या किसी दबाव के कारण अपना धर्म छोडने पर बाध्य हो गए थे। उनको फिर से हिन्दू धर्म मे लाने और आगे के लिए हरिजन हिन्दू धर्म न छोडें इसके लिए एक समिति का गठन किया गया। सर्वसम्मति से सिगरवामऊ जि. जोनपुर के भू. पू राजा को प्रधान व श्री बलराम गोविन्द को महामन्त्री चुना गया। आर्य समाज सम्मेलन श्री राम प्रकाश वर्मा, श्री जुगल किशोर व श्री बलराम गोविन्द के प्रयत्नो से सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

—ओमप्रकाश

टंकारा में ऋषि मेला—7, 8, 9 मार्च १९८६ को

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के ट्रस्टियों एवं प्रतिष्ठित सदस्यों की एक बैठक 6 अक्तूबर को श्री रामचन्द्र जी सूद प्रधान की अध्यक्षता में हुई। जिसमें निश्चय हुआ कि हर वर्ष की भांति 7 8 9 मार्च 1986 को ऋषि मेला टंकारा में समारोह पूर्वक मनाया जाए।

अतः भारत भर की समस्त आर्य समाजों स्त्री आर्य समाजों डी ए वी संस्थाओं गुरुकुलों, आर्य संस्थाओं से एवं आर्य जनता से प्रार्थना है कि वे यह तिथियां अभी से अंकित कर लेवें। और टंकारा अवश्य पहुंचें। विस्तृत कार्यक्रम बनाया जा रहा है। जिसकी सूचना पत्रों में दे दी जाएगी।

आर्य जनता से निवेदन है कि अपने अपने नगरों में आर्य समाजों की बैठक बुला कर टंकारा के लिए स्पैशल बस ले जाने की व्यवस्था करें। इससे भारत भर से आने वाले ऋषि भक्तों को सुविधा रहती है। दिल्ली से भी बसें चलाने की योजना बनाई जा रही है। जिसकी सूचना बाद में दी जाएगी। जो लोग दिल्ली से टंकारा तथा टंकारा से दिल्ली वापस सीधे रेल द्वारा यात्रा करना चाहें उनके रेल में 'स्लीपिंग बर्थ' आरक्षण की व्यवस्था की जा रही है। जो रेल से सीट बुक कराना चाहें उनसे प्रार्थना है कि एक मास पहले अपना नाम पता तथा जाने आने की तिथि एवं किराया 250 रुपए भिजवा देवें। उनके लिए दिल्ली से राजकोट और राजकोट से दिल्ली तक की सीट आरक्षित करवा दी जाएगी। राजकोट से टंकारा 40 किलोमीटर तथा मोरवी से 20 किलोमीटर है। दोनों स्थानों से बसों की व्यवस्था रहती है। विस्तृत जानकारी के लिए ट्रस्ट के उप कार्यालय आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली 1 के पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री

आर्य जगत् के स्वाध्यायशील वेदों के विद्वान् श्री स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती अस्वस्थ

आर्य सिद्धान्तों के सजग प्रहरी व अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकों के लेखक एवं प्रकाशक, निर्भीक स्पष्ट वक्ता ऋषि दयानन्द के ईमानदार कर्मठ सिपाही जो कई वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक रहे एवं अपने जीवन के लगभग 35 वर्ष वैदिक धर्म के प्रचार में व्यतीत किये वे श्री पूर्ण चन्द्र शास्त्री (वर्तमान में श्री स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती) आर्य समाज की नींव के पत्थर बन कर रहे हैं। निजाम के अत्याचारों के विरुद्ध हैदराबाद के सत्याग्रह के सत्याग्रही व प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी रहे हैं। 86 वर्षीय वयोवृद्ध सन्यासी गत कुछ समय से अति रुग्णावस्था में चल रहे हैं। श्री यशोवर्धन शास्त्री आर्य नगर नहर रोड-बड़ौत (मेरठ) श्री स्वामी जी की सेवा सुश्रुषा भली भांति कर रहे हैं। जीवन की सन्ध्या वेला में भी स्वाध्याय मग्न रहते हुए। कई विषयों पर पुस्तकें लिख कर स्वामी जी ने आर्य जगत की महती सेवा की है। [illegible] स्वाध्याय प्रेमी [illegible] आर्य [illegible] परमात्मा से ऐसे [illegible] वैदिक सिद्धान्तों के [illegible] विद्वान के स्वास्थ्य लाभ [illegible] शीघ्र ठीक होने की प्रार्थना करते हैं।

—पं० रामकुमार आर्य [illegible]
आर्य समाज बड़ा बाजार [illegible]

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं



श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस ... जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय
गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलीफोन 74250 20/1/86 रजि. न. पी जे.एल. 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 38. 6 माघ सम्वत् 2042 तदनुसार 19 जनवरी 1986 दयानन्द 161 एक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब : गुरुकुल कांगड़ी को बूचड़खाना नहीं बनने देगी

सभा की कार्यकारिणी का प्रस्ताव

प्रस्ताव-जो आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की कार्यकारिणी समिति ने अपनी बैठक दिनाक 5 1-1986 मे पारित किया।

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

अमर बलिदानी श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना वैदिक सिद्धान्तो आदर्शों और मान्यताओ के प्रचार व प्रसार के लिए की थी। पहले उन्होने अपने निजी जीवन से और उसके पश्चात उन के उत्तराधिकारियों ने गुरुकुल के आदर्शों को सुरक्षित रखने का सदा ही प्रयास किया है। यही कारण है कि इस सस्था ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। आर्य समाज को इस पर गर्व रहा है और हम सदा ही यही कहते रहे हैं कि इस सस्था के द्वारा हम उन आदर्शों को जनता के सामने रखना चाहते हैं। जिन के आधार पर हमारे धर्म और संस्कृति का निर्माण हुआ है। गुरुकुल कांगड़ी के पिछले 85 वर्षों मे कभी यह सुनने को न आया था कि यहा के किसी अधिकारी ने [illegible] मंगवा कर पकवाया हो। [illegible] और कुलाधि-[illegible] उत्तरदायित्व [illegible] कि वे देखें कि यहा कोई ऐसी कार्यवाही न हो, जिसके कारण इस सस्था की [illegible] और उसकी परम्पराओं पर किसी प्रकार [illegible] न आये।

[illegible]

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की कार्यकारिणी के लिए यह स्थिति अत्यन्त ही दुखद और चिन्ताजनक है कि पिछले दिनो गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलपति निवास मे मास पकाया गया है। इस विषय मे जो जाच हुई है उसने भी इस की सम्पुष्टि कर दी है। इसके अतिरिक्त वर्तमान कुलपति का रहन सहन का ढग और उनका पारिवारिक जीवन भी ऐसा है जो उन आदर्शों और मान्यताओं के सर्वथा विपरीत है जो गुरुकुल जैसी सस्था का आधार समझी जाती हैं आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब किसी भी स्थिति में गुरुकुल की पवित्रता को भग करने की अनुमति नहीं दे सकती। न ही इस सस्था को एक बूचडखाना का रूप दिया जा सकता है। यहा जो कुछ हो रहा है, उस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने के पश्चात यह सभा इस निर्णय पर पहुची है कि वर्तमान कुलपति को तुरन्त त्याग पत्र दे देना चाहिए और उन के स्थान पर किसी ऐसे व्यक्ति को नियुक्त करना चाहिए जो उन आदर्शों और सिद्धान्तो का प्रतिपालन कर सके जिनके लिए यह सस्था स्थापित की गई थी। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और परिदृष्टा का इस में विशेष दायित्व है। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के प्रबन्ध को सुचारु रूप से चलाने और उस पर नियन्त्रण रखने का दायित्व भी उन पर ही आता है। यदि इस विषय मे कोई कार्यवाही न की गई तो आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को कोई ऐसा सक्रिय पग उठाना पड़ेगा जिसका परिणाम गम्भीर हो सकता है। उसका उत्तरदायित्व उन महानुभावो पर होगा जो इस विषय मे अपने कर्तव्य को पूरा नही कर रहे।

इस सभा को यह सुनकर भी आश्चर्य हुआ है कि गुरुकुल कागडी के वर्तमान मुख्याधिष्ठाता इस समय 34 सौ रुपया मासिक वेतन ले रहे हैं। गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता सदैव ही अवैतनिक रहे हैं। पहली बार गुरुकुल पर इतना भारी बोझ डाल दिया गया है। यह स्थिति इसलिए भी शोचनीय है कि वर्तमान मुख्याधिष्ठाता की नियुक्ति गुरुकुल के विधान के प्रतिकूल है। यदि मुख्याधिष्ठाता इतना अधिक वेतन ले सकता है, तो गुरुकुल के दूसरे कर्मचारियो को उसी के अनुसार वेतन क्यो न दिया जाए? गुरुकुल किसी व्यक्ति विशेष की सम्पत्ति नहीं कि वह वहा जो चाहे करे। यह सभा यह मांग करती है कि गुरुकुल की परम्पराओ को समक्ष रखते हुए मुख्याधिष्ठाता का वेतन तुरन्त बन्द कर दिया जाए। नही तो किसी ऐसे व्यक्ति को गुरुकुल का मुख्याधिष्ठाता बनाया जाए, जो पिछली परम्पराओ के अनुसार अवैतनिक काम करने को तैयार हो।

यह स्थिति इसलिए पैदा हुई है कि पिछले दिनो आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की आर्य विद्या सभा के मुकाबले मे एक सामानान्तर विद्या सभा बना दी गई। जिस मे न केवल गुरुकुल के कुलपति के विरुद्ध कोई कार्यवाही नही की साथ ही गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता डा हरिप्रकाश का 34 सौ रु प्रति मास का वेतन भी निश्चित कर दिया है जो आज तक गुरुकुल के इतिहास मे कभी नही हुआ। इससे पहले जब डा हरिप्रकाश गुरुकुल कागडी फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष थे तो उन पर लगभग 9 हजार रुपये मासिक व्यय होता था।

अब वह गुरुकुल मे 34 सौ रुपए मासिक ले रहे हैं। नए कुलपति लगभग साढे पांच हजार ले रहे हैं। गुरुकुल के जो आचार्य बनाये गए, हैं। वह भी 2 हजार ले रहे हैं। यह तीनों महानुभाव गुरुकुल के स्नातक हैं। गुरुकुल की जो निष्काम सेवा ये कर रहे हैं उस का कुछ अनुमान उस वेतन से लगाया जा सकता है जो अब यह तीनो ले रहे हैं। जो नई विद्या सभा बनाई गई है उसने इस की सम्पुष्टि कर दी है। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुकुल के लिए अपना विशेष दायित्व समझती है। इस लिए उसे यह प्रस्ताव पारित करना पड़ा।

आर्य समाज : तब अब और आगे

लेखक—श्री स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक
अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उत्तर प्रदेश)

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म और कार्य क्षेत्र मे अवतरण उन्नीसवी शताब्दी की युग प्रवर्तक घटना है। वह ऐसा पतन का काल था कि जिस पर विचार करते हुए रोमाच हो जाता है। आर्य जाति के पतन की पराकाष्ठा का वह युग न केवल भारत अपितु विश्व मानवता के लिए अभिशाप बना हुआ था। विश्व-मानवता का अभिशाप इसलिए कि विश्व-मानवता को प्रत्येक विषय और प्रत्येक क्षेत्र मे शिक्षित करने का युग युग से दायित्व वहन करने वाला भारत स्वय प्रत्येक क्षेत्र मे न केवल पिछड गया था अपितु पथ-भ्रष्ट हो चुका था।

महर्षि से पहले—

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती से पहले भी राजा राममोहन राय प्रभृति विचारको ने सुधार के लिए कुछ प्रयत्न किये किन्तु वह सब एकागी प्रयत्न थे। उसका प्रभाव भी सीमित क्षेत्रो तक ही रहा। इसका कारण यह है कि इन विचारको के पास कोई ठोस आधार नहीं था। उन्होने कुछ सामयिक समस्याओ पर ही विचार किया और उन्ही के विषय मे प्रयत्न किये थे। यही कारण है कि उनके कार्य-कलाप उन्ही समस्याओ तक सीमित रहे।

महर्षि दयानन्द का आधार व्यापक था :

महर्षि दयानन्द घर से निकले थे सच्चे शिव और मृत्यु से बचने के उपाय की खोज के लिए। इस कार्य मे सफलता के लिए उन्होने अनेक वर्षों तक महान कष्ट झल कर यह परिणाम निकाला कि सद्विवेक के बिना यह सम्भव नही अत उन्होने योग्य गुरु की खोज की जो उन्हे राजर्षि विरजानन्द दण्डी के रूप मे मथुरा मे मिले।

दण्डी स्वामी विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त कर स्वामी दयानन्द ने देशाटन प्रारम्भ किया। सत्यान्वेषी दयानन्द की बुद्धि इतनी प्रखर थी कि अपने देशाटन-काल मे विविध विचारो के लोगो से भेन्ट वार्तालाप और अध्ययन करते-करते उन्होने धर्म-तत्व को पहचान लिया और वेद का अध्ययन तथा समाधि अवस्था मे वेद के रहस्यो का साक्षात दर्शन कर उस के प्रचार-प्रसार से विश्व-मानवता के हित-साधनार्थ आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज के छठ नियम मे उन्होने यह उदघोषणा की कि "ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इस नियम मे शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को ससार के उपकार का साधन बताया गया है।

उपर्युक्त तीनो साधन ही आर्य समाज के कार्य कलापो के मूलाधार है। इन्ही आधारो को लेकर आर्य समाज के द्वारा किये जा रहे विभिन्न कार्यों का ससार के उपकार की दृष्टि से मूल्याकन किया जा सकता है।

आर्य समाज का शिक्षा-कार्य—

आर्य समाज ने अपने स्थापना काल से ही सब से अधिक कार्य शिक्षा के क्षेत्र मे किया है। इस समय भारत मे सरकार के पश्चात शिक्षा के क्षेत्र मे दूसरा स्थान आर्य समाज का रहा। इसने न केवल स्कूल-कालेज ही खोले अपितु गुरुकुलो की स्थापना कर प्राचीन शिक्षा-पद्धति को भी नवजीवन प्रदान किया।

शिक्षा क्षेत्र मे आर्य समाज ने एकागी कार्य किया हो ऐसी बात भी नही है। उसने नारी शिक्षा की ओर भी न केवल ध्यान ही दिया अपितु उसे प्राथमिकता प्रदान की। सबसे पहले पजाब के जालन्धर नगर मे कन्याओ के लिए विद्यालय स्थापित किया जो अब कन्या महाविद्यालय के रूप में उत्तर भारत के के प्रमुख कालिजों में गिना जाता है।

कालिजो की ही भाति कन्याओ के लिए गुरुकुल भी स्थापित किये। इन कन्या गुरुकुलो से शिक्षा प्राप्त सैकडो की सख्या मे शिक्षिकायें भारत के विभिन्न विद्यालयो में शिक्षा-कार्य मे सलग्न हैं।

आर्य समाज का शिक्षा कार्य भारत तक ही सीमित रहा हो, ऐसी बात भी नही है अपितु भारत से बाहर जहां भी जिस देश मे भी आर्य समाज की विचार-धारा पहुची, वहीं आर्य विद्यालयों की स्थापना हुई—फिर चाहे वह मारीशस हो, केनिया हो अथवा कोई अन्य देश।

नारी उत्थान

जहां तक नारी-जाति के उत्थान का प्रश्न है इसके लिए आर्य समाज ने पहला कार्य तो पाठशालायें खोल कर नारी-शिक्षा का किया और दूसरा किया सभा-सम्मेलनों में नारी को महनीय स्थान देकर सार्वजनिक रूप से सामाजिक मान और महत्व देने का। इसके लिए प्राचीन ऋषियों के आदर्शों को मनु के शब्दो में सामाजिक रूप से यह कह कर उद्घाटित किया कि—

> यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।
> यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफला क्रिया ॥
> (मनुस्मृति)

भारत मे नारी जाति की सर्वत्र न केवल अवहेलना होती थी अपितु घोर तिरस्कार भी था। उसे पैरो की जूती समझा जाता था वेदादि सच्छास्त्र पढाना तो क्या, साधारण अक्षर ज्ञान भी उसके लिए वर्जित था। भारत से बाहर विश्व के किसी अन्य देश मे भी नारी को पुरुष के समान सम्मान प्राप्त नही था। पश्चिम के देशो मे जहा एकमात्र ईसाइयत छायी हुई थी और अब भी है, वहा बाईबिल के अनुसार नारी को आत्मा-रहित पाषाण वत जड माना जाता था और मध्य पूर्व के इस्लामी देशो में कुरान के अनुसार उन्हे पुरुषो की खेती समझा जाता था।

यद्यपि आज भी कोई विशेष परिवर्तन ईसाइयत और इस्लाम की उक्त मान्यताओ मे नही आया है तथापि न्यूनाधिक नारी जागरण की लहर सब देशो और सब जातियो मे चल पडी है। पता नही कब से—कम से कम महाभारत काल से भी सहस्रों वर्षों पहले से तो निश्चित ही—नारी को हेय समझने का दृष्टिकोण बनने लगा था। इतने दीर्घकालिक दृष्टिकोण में विक्षोभ उत्पन्न करने का श्रेय इस शताब्दी में आर्य समाज के प्रयत्नो को ही जाता है।

सामाजिक क्षेत्र मे

सामाजिक क्षेत्र मे आर्य समाज ने सबसे पहला कार्य दलितोद्धार का किया। जो वैदिक धर्मी ईसाई और मुसलमान बन चुके थे इसने उन्हे वैदिक धर्म में वापस लाना प्रारम्भ किया तथा दलितो के साथ सहभोज (उनके साथ एक पक्ति मे बैठकर भोजन करना) के आयोजन करके छुआ-छूत को दूर करने का स्तुत्य प्रयत्न किया।

इसने दलितों के बच्चों में शिक्षा-प्रसार के लिए उन्हीं की बस्तियों में प्राथमिक शालाएं खोलीं। यही तक नहीं अपितु रात्रिकालीन निशुल्क पाठशालायें चलाकर दलितों के बच्चों और प्रौढ़ों—सभी को साक्षर बनाने का प्रयत्न किया। गुरुकुलों के माध्यम से वेदादि शास्त्रो की शिक्षा देकर दलितों के बालकों को योग्यतम विद्वान् ब्राह्मण, पुरोहित और उपदेशक बनाया। अनेक कुम्हार, चमार आदि परिवारो में जन्म लेकर धर्म-प्रचार के क्षेत्र में उपदेशक, पुरोहित ही नहीं बने अपितु सन्यासी बनकर भी इस क्षेत्र में उतरे। पाठकों को आश्चर्य होगा कि वेश्या पुत्रो तक को आर्य समाज ने धर्म-प्रचारक बनाया, आगे चल कर जिन्होंने विरक्त (वानप्रस्थ-सन्यासी) हो कर समाज-सुधार के कार्य किए।

दलितोद्धार कार्य मे बाधा

आर्य समाज द्वारा किये जा रहे दलितोद्धार के कार्य मे बाधा खड़ी हो गयी गांधी जी के 'हरिजन सेवक सघ' द्वारा। आर्य समाज ने जिस प्रकार इस समस्या पर ध्यान दिया था और जिस प्रकार तथा जिस गति से कार्य प्रारम्भ किया था, यदि गांधी जी का 'हरिजन सेवक सघ इसमे बाधा न बना होता तो 'हरिजन' नाम से जो नयी समस्या राष्ट्र मे उत्पन्न हुई, वह न होती और न मध्य पूर्व के मुस्लिम राष्ट्रो का धन भारत के मुस्लिमीकरण के लिए अभिशाप बनता।

हुआ यह है कि गांधी जी ने 'आरक्षण के नाम पर हरिजन' नाम से हिन्दुओ में एक पृथक् समाज बना दिया। ऊपर से देखने मे लोगों को यह अच्छा लगा किन्तु इसके परिणाम अब हिन्दू समाज और भारत राष्ट्र को भोगने पड रहे हैं। आर्य समाज के सहभोजो और पाठशालाओ के प्रभाव से आर्य सस्कृति का प्रचार हो रहा था, जिससे पारस्परिक छुआछूत दूर होता था छूत अछूत की भावना मिटती थी, भेद भाव दूर होता था व अपनत्व, स्नेह सौहार्द की वृद्धि होती थी और अन्तत परिणामस्वरूप समस्त हिन्दू समाज एकता के सूत्र में बधता था। परन्तु गांधी जी के इस राजनीतिक हरिजनवाद ने एकत्र होते हुए भी वास्तविक भारतीय समाज को हरिजन और अहरिजन-वाद के भेद-भाव की एक और भीषण दरार डालकर पारस्परिक वैमनस्य तथा फूट का शिकार बनाया और आपस में ही टकरा दिया। अभी भी तथाकथित हरिजन जितनी जल्दी इस रहस्य को समझ लें और सवर्ण आर्य सोच लें, उतना ही अच्छा होगा।

(क्रमश)

सम्पादकीय—

आर्य समाज कलकत्ता का शताब्दी स्थापना समारोह

आर्य समाज कलकता का जो शताब्दी समारोह दिसम्बर 1985 के अन्त में हुआ था उसके विषय में अपने पिछले लेख में मैंने लिखा था कि कलकता में आर्य समाज का एक बहुत विशाल समाज है। इसलिए शताब्दी समारोह भी एक विशाल सम्मेलन के रूप में मनाया गया था परन्तु इस सम्मेलन के पीछे कलकता में आर्य समाज का एक सौ वर्ष का इतिहास है मैं चाहता हूं कि आर्य मर्यादा के पाठकों को उसके विषय में भी कुछ बताऊं। क्योंकि उससे हमे यह भी पता चल जाएगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बंगाल मे किन परिस्थितियों में आर्य समाज का बीज बोया था और किस प्रकार आज वह एक वट वृक्ष के रूप मे हम कलकता में देख रहे हैं। जनसख्या के आधार पर कलकता हमारे देश का सब से बड़ा नगर है। इसकी जनसख्या अब लगभग एक करोड़ हो गई है। इस समय कलकता मे 22 आर्य समाजें हैं सबसे बड़ी आर्य समाज जिसकी शताब्दी मनाई गई है वह विधान सरणी में है और उनके साथ की ऐसे महानुभाव सम्बन्धित है जिनका सारा जीवन ही आर्य समाज की सेवा में व्यतीत हुआ है। उनके विषय में कुछ लिखने से पहले आर्य समाज कलकता का इतिहास पाठकों के सामने रखना चाहता हू। वह केवल आर्य समाज कलकता का ही इतिहास नहीं बल्कि आर्य समाज के इतिहास का प्रारम्भ वहां से होता है। इस लिए भी यह आवश्यक है कि हमें यह पता हो कि महर्षि ने बगाल में किन परिस्थितियों में आर्य समाज का प्रचार शुरू किया था।

अप्रैल 1872 में स्वामी जी महाराज ने काशी से पूर्व की ओर प्रस्थान किया और मुगलसराय डुमराव, आरा, पटना, मुंगेर और भागलपुर होते हुए दिसम्बर 1872 में कलकता पहुंच गए और वह चार मास बंगाल में रहे। यह वह युग था जब बंगाल में अंग्रेजों द्वारा प्रचारित नवीन शिक्षा तथा राजाराम मोहनराय द्वारा प्रारम्भ किए जन जागरण व समाज सुधार का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था। सन् 1828 में राजाराम मोहनराय ने कलकता में ब्रह्म समाज की स्थापना की थी उसमें वह सब लोग सम्मिलित हो सकते थे जो ईश्वर में विश्वास रखते हों और मूर्ति पूजा के भी विरोधी हों। ब्रह्म समाज पर्दा प्रथा के विरुद्ध थी और स्त्री शिक्षा के पक्ष में थी। इस लिए जब 1872 मे स्वामी जी महाराज बंगाल में पहुचे उस समय तक ब्रह्म समाज का एक विस्तृत और प्रभावशाली संगठन बन चुका था। ऐसी परिस्थियो मे वहां आर्य समाज को प्रारम्भ करना आसान न था। परन्तु स्वामी जी महाराज के वहा पहुचने से पहले ही उनकी ख्याती वहां पहुच चुकी थी। राजाराम मोहनराय और ब्रह्म समाज के दूसरे नेताओं को यह पता चल चुका था कि इस देश में नव जागरण के अग्रदूत के रूप में महर्षि दयानन्द सरस्वती जनता के सामने आ चुके हैं। वहा बगाल में जहां समाज सुधार का आन्दोलन चल रहा था वहां साथ उस समय की अंग्रेज सरकार के संरक्षण में ईसाई धर्म का प्रचार भी जोरों पर था क्योंकि स्वामी जी महाराज अत्यन्त निर्भीकता से ईसाईयत का भी खण्डन करते थे। इस लिए जब वह कलकता पहुचे तो कई लोगो ने उनका इस लिए स्वागत किया कि एक ऐसे महान् नेता आ गए हैं जो ईसाईयत के बढ़ते हुए प्रचार को रोक सकते हैं। उन दिनों "इण्डियन मिरर" नाम का एक समाचार पत्र निकला करता था। उसने स्वामी महाराज के कलकता आगमन का समाचार प्रकाशित करते हुए लिखा था:—

"मूर्ति पूजा के महान् विरोधी पं. दयानन्द सरस्वती जिन्होंने कि कुछ समय पूर्व काशी के विद्वान् पण्डितों को शास्त्रार्थ उद्घोष से परास्त कर दिया था और जो वैसे भी सम्पूर्ण उत्तर भारत में ख्याती प्राप्त कर चुके हैं अब कलकता पधारे हुए हैं। उन्होंने सस्कृत, हिन्दी बंगला और अंग्रेजी भाषाओं मे इस आशय का एक विज्ञापन भी प्रकाशित किया है कि जिज्ञासु तथा अन्य लोग उनके पास आकर धार्मिक विषयो पर विचार विमर्श करें।"

इस विज्ञापन को पढ़ कर बहुत से जिज्ञासु और विद्वान् स्वामी जी से मिलने के लिए आने लगे, ब्रह्म समाज के प्रसिद्ध नेता बाबू केशव चन्द्र सेन भी उसी समय स्वामी जी के सम्पर्क में आये थे। इन दोनों महान् नेताओं की भेन्ट के विषय में भी एक विशेष घटना का जिकर कई बार आता है। कहते हैं कि जब सबसे पहले श्री केशव चन्द्र सेन स्वामी जी से मिलने आए तो उन्होंने अपना परिचय न ही दिया। विचार विनिमय के पश्चात श्री सेन ने स्वामी जी से पूछा क्या आप कभी केशव चन्द्र सेन से मिले हैं। स्वामी जी के हा कहने पर श्री सेन ने प्रश्न किया आप उनसे कब मिले हैं? स्वामी जी का उत्तर था अभी, आप ही तो केशव चन्द्र सेन हैं। यह सुन कर श्री सेन आश्चर्य चकित रह गए और उन्होंने पूछा कि आपने मुझे कैसे पहचाना? इस पर स्वामी जी ने कहा जैसी बातचीत आप से हुई है वैसी किसी अन्य से नहीं हो सकती।

श्री सेन और स्वामी जी में मतभेद होते हुए भी अनेक बातो पर उन मे एक मत भी था। दोनो ही समाज सुधार के समान रूप से पक्षपाती थे उन में मुख्य मतभेद वेदो के ईश्वरीय ज्ञान व स्वत. प्रमाण होने के प्रश्न पर था। श्री सेन का कहना था कि सभी धर्मों के अनुयायी अपने-2 मान्य धर्म ग्रन्थों को ईश्वर-कृत या ईश्वर द्वारा प्रेरित व प्रमाण स्वरूप मानते हैं ऐसी स्थिति में केवल वेदो को ही ईश्वरकृत कैसे माना जा सकता है। पर स्वामी जी कहते थे कि वेद पूर्णतया निर्दोष व निभ्रान्त हैं जबकि कुरान व बाईबल आदि में अनेक त्रुटियां हैं। मतभेद रहते हुए भी श्री केशव चन्द्र सेन स्वामी जी की विद्वत्ता से इतने अधिक प्रभावित थे कि एक दिन उन्होंने कहा "खेद है कि वेदों का यह अद्वितीय विद्वान अंग्रेजी नहीं जानता अन्यथा इंग्लैंड की यात्रा में यह मेरा अभिलाषित साथी होता" यह सुन कर स्वामी जी ने तुरन्त उत्तर दिया कि "मुझे अत्यधिक खेद है कि ब्रह्म समाज का नेता सस्कृत नहीं जानता और एक ऐसी भाषा मे भाषण देता है जिसे बहुसख्यक भारतीय समझ नहीं पाते।"

कलकता में रहते हुए स्वामी जी महाराज ईश्वर चन्द्र विद्यासागर और कुछ दूसरे विद्वानों से भी मिले थे। उसका उस समय की परिस्थितियों पर क्या प्रभाव पड़ा था इसके विषय में आगामी अक में सारी जानकारी दूंगा।

—वीरेन्द्र

शास्त्रार्थ महारथी पं. बिहारी लाल जी शास्त्री का देहावसान

आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वान् धीरे-धीरे जा रहे हैं और उन का स्थान लेने वाले नहीं आ रहे। यह समाचार आर्य जगत् मे बड़े दु.ख के साथ पढ़ा जाएगा कि वेदो के प्रकाण्ड पण्डित शास्त्रार्थ महारथी आर्य जगत् के गौरव प. बिहारी लाल जी शास्त्री का 3-1-86 को दिन के दो बजे बरेली मे देहावसान हो गया। श्री पण्डित जी ने अपने जीवन का बहुमूल्य समय आर्य समाज की सेवा में गुजारा है। उनकी विद्वता से सारा आर्य जगत् परिचित है। वह आर्य समाज के इने-गिने विद्वानो में से एक थे उनकी आयु 96 वर्ष की हो गई थी और वह कुछ समय से रुग्ण चल रहे थे। परन्तु विधाता के आगे किसी का वश नही चलता। प्रयत्न करने पर भी उन्हें बचाया न जा सका। उनकी बीमारी को आर्य जगत् में बड़ी चिन्ता से देखा जा रहा था। आखिर 3-1-86 को वह हमें छोड कर सदा के लिए चले गए। उन जैसा विद्वान अब आर्य समाज को मिलना कठिन है। उनके चले जाने से जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी पूर्ति नहीं हो सकेगी।

पण्डित जी की मृत्यु का समाचार सुन कर उनके अन्तिम दर्शनो के लिए लोगों का तांता बन्ध गया। उनका अन्तिम संस्कार 4-1-86 को भागीरथी के तट पर कर दिया गया।

सह-सम्पादक

आज हम कहां खड़े है—२

आर्य समाज की राजनीति

लेखक—श्री प सत्यदेव जी वेदालकार जालन्धर

प्रस्तत शीर्षक के अन्तर्गत जो लेख श्र खला आर्य मर्यादा के 8-10-85, मे 20 10 85 तथा 3-11 85 मे प्रकाशित हुई, उसमे आर्य समाज के शिक्षा-कार्य का पर्यालोचन किया गया।

मैंने यह प्रगट करने का प्रयत्न किया है कि आर्य समाज का पिछले लगभग 80-85 वर्ष का शिक्षा कार्य बहुत महत्व का है। सम्पूर्ण भारत मे आर्य समाज के शिक्षा सस्थान हैं। लाखो बच्चे इनमे शिक्षा ग्रहण करते है। सहस्रो आर्य जनो का इनमे कार्य मिलता है। सम्पूण देश के शिक्षा कार्य मे आर्य समाज का योग-दान बहुत महत्व का है।

पर ऋषि दयानन्द ने जो एक मौलिक शिक्षा पद्धति भारत मे प्रचलित करनी चाही थी उसका प्रचलन न हो सका। और न ही स्वामी श्रद्धान द तथा मा ह सराज ने जो स्वप्न देखा था न वह पूर्ण हुआ। आय समाज आज देशभर मे प्रचलित उसी शिक्षा पद्धात को अपनाए हुए है जिसका मूल और आदर्श इ गलैड तथा अमरीका आदि देशो मे है। हम अभी तक पाश्चात्य शिक्षा पद्धति से और उसके परिणामो से अपने को अलग नही कर पाए।

नई प्रस्तुत लख परम्परा मे आय समाज के राजनीतिक विचार और कार्य का किया जाएगा।

आय समाज क लिए राजनीति का क्षत्र नया नही। प्रारम्भ मे ही आय समाज मे इसका महत्व समझा गया है। आय समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द ने इस क्षत्र को जीवन का महत्वपूण अग समझ कर सत्याथ प्रकाश का अष्ट समुल्लास इस के विचार मे अर्पण किया। मनुस्मृति के आधार पर इसका विस्तत विवचन किया। उन्होने शासन सेना युद्ध, न्याय पालिका तथा अन्य सामाजिक राज-नैतिक व्यवहार से जो आदश उपस्थित किए उनका आज भी वैसा ही महत्व है। एक विचित्र उदाहरण देखिए। सेना और पुलिस का आदर्श उजागर करते हुए मनु कहते हैं—

यत्र श्यामो लाहिताक्षो दण्डश्चरति पाप हा
प्रजास्तत्र च न मुह्यन्ति ने ता चेत्साधु पश्यति।

जहा काले रग का, लाल आखो वाला दण्ड (पुलीस सेना) व्यवहार मे आता है। जो केवल पाप का, दुष्ट का नाशक है, वहा प्रजाओ को मोह विवेक का अभाव कभी नही होता। शर्त यह है कि दण्ड का प्रयोग करने वाला स्वय विवेकी हो— भ्रष्ट न हो।

पुलिस का कठोर होना पर केवल उस के लिए ही पुलिस अधिकारी का—प्रवर्तक का शुद्ध दृष्टि वाला होना क्या आम लोगो में व्यवस्था बनाने मे सफलता की गारन्टी नही। क्या एसे राज्य मे प्रजा सुख स न सोएगी? यह एक छोटा सा अ दश है। सारा समुल्लास राजनीतिक जीवन के आदर्शों से भरा हुआ है।

ऋषिवर ने जीवन भर भारत की स्वतन्त्रता का स्वप्न देखा पर अपने जीवन के लगभग 2-अढाई वर्ष मई 1881 से सितम्बर 1883 तक राजस्थान के रजवाडो क अर्पण किए। अपने प्रचार के प्रारम्भ म भी स्वामी जी धौलपुर तथा जयपुर गए थे तथा सम्वत 1977 मे दिल्ली दरबार के अवसर पर भी कुछ प्रयत्न राजाओ का ध्यान खीचने का किया गया, पर मुख्य रूप से स्वामी जी के जीवन क पिछले वष राजस्थान की रियासतो विशेष कर उदयपुर, शाहपुर तथा जोधपुर मे राजाओ के जीवन मे सुधार लाने के प्रयत्न मे व्यतीत हुए। यह एक प्रकार का राजनीतिक काय ही था। ऋषिवर का विचार था कि राजाओ के विचार बदलने का प्रजा पर अत्यधिक प्रभाव पडता है। जिन छोटी बडी रियासतो के अधीशो ने स्वामी जी के प्रभाव को विशेष ग्रहण किया, उनमें मसूदा के राव बहादुर सिंह रायपुर के ठाकुर हरिसिंह बनेडा के राजा साहिब, उदयपुराधीश महाराणा सज्जन सिंह, शाहपुराधीश राजा नाहर सिंह, जोधपुराधीश महाराजा यशवन्त सिंह और उनकी ही रियासत के कर्नल प्रतापसिंह तथा श्री राव राजा तेज सिंह आदि के नाम उल्लेखनीय है।

यदि ऋषिवर के जीवन ने साथ दिया होता तो ये रियासतें आर्य समाज के कार्य का राजनीतिक आधार बन सकती थी।

ऋषि दयानन्द के स्वच्छ तप पूत हृदय में भारतीय राजनीति का आदर्श तथा उसकी प्राप्ति के साधन दोनो का स्पष्ट रूप था। वे देश के लिए गणराज्य का कोई रूप चाहते थे चुनाव चाहते थे, मन्त्रि परिषद के द्वारा प्रबन्ध के समर्थक थे। वे स्वच्छ, दृढ तथा निष्पक्ष शासन की नीति को मानत थे। सत्यार्थ प्रकाश का अष्ट समुल्लास विस्तार से उनके विचारो को प्रकट करता है।

उन्हे अहिंसा के प्रति कोई विशेष आग्रह नही था—विशेष कर राजनीति के क्षत्र मे वे स्वय सन्यासी थे अत निजी जीवन मे परम अहिंसक थे। उन्होने कभी किसी कष्ट देने वाले या विष देने वाले के विरुद्ध कठोर शब्द तक नहीं कहा। काशी शास्त्रार्थ के बाद जूते पत्थर तथा ईटे बरसाने वालो पर भी मानसिक क्रोध का प्रदर्शन तक भी न किया। पर क्षात्र धर्म मे राजनीति म वे आततायियो और दुष्टो के विरुद्ध हिंसा के कठार दण्ड के परम समथक थे।

देश के भावी स्वरूप के विषय मे उनके विचार स्पष्ट थे। अष्टम समुल्लास का यह उदहरण बहुत स्पष्ट है —

'आर्यावर्त मे भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नही है जो कुछ भी है सो भी विदेशियो से पदाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियो को अनेक प्रकार का दुख भोगना पडता है कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराए का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूण सुख-दायक नहीं है।

यह उदाहरण विशेष महत्त्व का है। इस उदाहरण मे जो विदेशियो का उल्लेख है वह केवल अग्रजो के लिए ही नहीं। आर्यों के अखण्ड,स्वतन्त्र राज्य को जिन विदेशियो ने पदाक्रान्त किया उनमें पश्चिमोत्तर सीमा से खैबर और बोलान के दर्रों से आने वाले सिकन्दर से बाबर तक सब विदेशी थे। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो के अध्ययन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि मुगल राज्य को भी विदेशी राज्य मानते थे।

इस सम्बन्ध में एक बात विचार-णीय है। सन् सत्तावन का गदर या स्वतन्त्रता-सग्राम स्पष्ट रूप में अग्रेजी राज्य को समाप्त कर दिल्ली के मुगल-शाह के नेतृत्व में स्वतन्त्रता प्राप्त करने का प्रयत्न था। इस सम्पूर्ण आन्दोलन का केन्द्र दिल्ली था। ऐसी अवस्था में जो लोग अस्पष्ट तथ्यो के आधार पर यह निर्णय लेना चाहते हैं कि स्वामी दयानन्द ने मथुरा जाने से पहले इस आन्दोलन में भाग लिया वे कुछ सही मार्ग पर दिखाई नहीं देते।

इस उदाहरण मे स्वामी जी के इन शब्दो का —'मत-मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराए का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य स्पष्ट निर्देश अग्रेजी राज्य, अथवा विक्टोरिया के घोषणा पत्र की ओर प्रतीत होता है। मुगल राज्य के विषय मे तो ये शब्द प्रयुक्त नहीं किए जा सकते। ऐसा प्रतीत होता है कि ऋषि वर अग्रेजी राज्य की कुछ विशेष-ताए मानत थे। अपने भाषणो मे उन्होने कही अग्रेजी राज्य की प्रशसा भी की है। अग्रजो की कुछ आदतो को अच्छा भी कहा है। ऐसी उनकी भावना मुगल राज्य के प्रति कही भी नही। आर्यों का स्वातन्त्र्य तो उनका लक्ष्य था ही।

ऋषिवर की भावनाए उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज मे तथा उन के अनुयायियो मे स्वाभाविक रूप से आ गई। सब से प्रथम उनके शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा ने इस भावना से प्रेरित हो स्वातन्त्र्य आन्दोलन का प्रारम्भ किया। वे संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् मोनियर विलियम्स की प्रेरणा और सहा-यता मे इगलैड शिक्षा के लिए गए। ऋषिवर ने उनको अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त विदेश मे वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार तथा पाश्चात्य लोगो की भौतिक उन्नति से परिचय प्राप्त करने को भी कहा। अध्ययन के बाद वे भारत आए, बारह वर्ष देसी रियासतों में कार्य किया। पर उन्हे अपने कार्य से सन्तोष न हुआ। वे फिर वापस योरुप गए। मन में विचार धन कमाने तथा स्वाधीनता के लिए काम करना था। उस पर हर्बर्ट स्पेन्सर जैसे उदार विचारकों का भी प्रभाव था। लगभग 48 वष की आयु में 1905 में उन्होने राजनीतिक कार्य प्रारम्भ किया।

(क्रमश)

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका से–

वेदोक्त धर्म विषय

अब वेदों की रीति से धर्म के लक्षणो का वर्णन किया जाता है। परमेश्वर हम सबके लिए धर्म का उपदेश करता है—

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥

—ऋ 10।191।1

हे मनुष्यो ! तुम लोग जो पक्षपात रहित न्याय, सत्याचरण से युक्त धर्म है उसी का ग्रहण करो, उससे विपरीत कभी मत चलो। विरोध को छोड कर परस्पर सम्मति मे रहो जिससे तुम्हारा उत्तम सुख सदा बढता जाए और किसी प्रकार का दुख न हो। तुम लोग विरुद्धवाद को छोडकर परस्पर प्रीति के साथ पढना पढाना, प्रश्न उत्तर सहित सवाद करो जिससे तुम्हारी सत्य विद्या निरन्तर बढती रहे। तुम लोग अपने यथार्थ ज्ञान को नित्य बढाते रहो जिससे तुम्हारा मन प्रकाशयुक्त होकर पुरुषार्थ को नित्य बढावे, जिससे तुम लोग ज्ञानी होकर नित्य आनन्द मे बने रहो। जैसे पक्षपात रहित धर्मात्मा विद्वान लोग वेदरीति से सत्यधर्म का आचरण करते है। उसी प्रकार से तुम भी करो।

समानो मन्त्र समिति समानी समान
मन सह चित्तमेषाम ।
समान मन्त्रमभि मन्त्रये व समानेन
वो हविषा जुहोमि ॥
ऋ 10।191।3

हे मनुष्यो ! तुम्हारा विचार समान हो, उसमे किसी प्रकार का विरोध न हो। तुम्हारी सभा एक प्रकार की हो जिससे तुम्हारे सब श्रेष्ठ काम सिद्ध होते जाए। तुम्हारा मन भी आपस में विरोध रहित अर्थात सब प्राणियो के दुख के नाश और सुख की वृद्धि के लिए अपनी आत्मा के समतुल्य पुरुषार्थ वाला हो। तुम्हारा मन और चित्त सब मनुष्य के सुख के लिए ही प्रयत्न मे रहे। जो मनुष्य सबका उपकार करने और सुख देने वाले होते है मैं उन्ही पर सदा कृपा करता हू। जब जब कोई पदार्थ किसी को देना अथवा उससे ग्रहण करना चाहो तब-तब श्रम से युक्त ही करो, धर्म से विरुद्ध व्यवहार मत करो।

समानि व आकूति समाना
हृदयानि व ।
समानमस्तु वो मनो यथा व
सुसहासति ॥
ऋ 10।191।4

हे मनुष्यो ! तुम्हारा सब सामर्थ्य निश्चय उत्साह और पुरुषार्थ सदा सब जीवो के सुख के लिए हो। तुम्हारे हृदय अर्थात मन के सब व्यवहार परस्पर सदा प्रेम सहित और विरोध से अलग रहे। अपने मनो को सब प्रकार से सबके सुख के लिए युक्त किया करो। जिस प्रकार पूर्वोक्त धर्म के सेवन से तुम्हारे उत्तम सुखो की वृद्धि हो और जिस श्रेष्ठ सहाय से आपस मे एक दूसरे का सुख बढे ऐसा काम सब दिन करते रहो किसी को दुखी देख के अपने मन मे सुख मत मानो किन्तु सब को सुखी करके अपने आत्मा को सुखी जानो।

दृष्टवा रूप व्याकरोत्सत्यानृते
प्रजापति ।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धां सत्ये
प्रजापति ॥
—यजु 19।77

जगत के अध्यक्ष परमेश्वर ने सत्य जो धर्म और असत्य जो अधर्म है उन को अपनी सर्वज्ञ विद्या से जानकर सत्य और झूठ का अलग अलग किया है अत हे मनुष्यो ! तुम सदा अनृत—झूठ अन्याय के करने मे अश्रद्धा अर्थात प्रीति कभी मत करो वैसे ही सत्य अर्थात जो वेद शास्त्रो और प्रत्यक्षादि प्रमाणो से परीक्षित पक्षपातरहित न्यायरूप धर्म है उसके आचरण मे सदा प्रीति रखो।

दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा
सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम ।
मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि भूतानि
समीक्षे ।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥
—यजु 36।18

हे सर्व दुख विनाशक परमेश्वर ! आप हम पर कृपा कीजिए कि जिससे हम लोग आपस में वैर को छोड कर एक दूसरे के साथ प्रेम भाव से वर्तें और सब प्राणी मुझ अपना मित्र जानकर बन्धु के समान वर्तें। हम लोगो को सत्य सुख और शुभ गुणो से सदा बढाइए। मैं भी सब मनुष्यादि प्राणियो को अपना मित्र जानू और हानि लाभ सुख दुख मे अपने आत्मा के समतुल्य ही सब जीवो को मानू। सब लोग आपस मे मिल कर सदा मित्रभाव रख और सत्य धर्म के आचरण से सत्यसुखो को नित्य बढाए

अग्ने व्रतपते व्रत चरिष्यामि तच्छ
केयं तन्मे राध्यताम ।
इदमहमनृतात सत्यमुपैमि ॥
—यजु 1।5

हे सत्यपते परमेश्वर ! मैं जिस सत्य धर्म का अनुष्ठान करना चाहता हू, उसकी सिद्धि आपकी कृपा से ही हो सकती है। जो लोग सत्य का आचरण करते है वे देव कहाते हैं, अतः मै सत्यव्रत का आचरण करना चाहता हूं। मुझ पर ऐसी कृपा कीजिए जिससे मैं सत्यधर्म का अनुष्ठान पूरा कर सकू। उस अनुष्ठान की सिद्धि करने वाले एक आप ही हैं अत कृपा करके सत्यरूप धर्म के अनुष्ठान को सदा के लिए सिद्ध कीजिए। मै सब असत्य कामो से छूट कर सत्य के आचरण करने मे सदा दृढ रहू।

परन्तु मनुष्य मे जितना सामर्थ्य है, उतना पुरुषार्थ अवश्य करे। जो मनुष्य सत्यस्वभाव पुरुषार्थ से धर्माचरण करना चाहता है ईश्वर भी उसी पर कृपा करता है अन्य पर नही।

धर्म के लक्षण

ओजश्च तेजश्च सहश्च बलञ्च वाक
चेन्द्रियं च श्रीश्च धर्मश्च ।
—अथर्व 12।5 (2) 7

1 ओज—धर्म के पालन से युक्त पराक्रम।

2 तेज—प्रगल्भता अर्थात भय रहित होके दीनता से दूर रहना।

3 सह—सुख दुख, हानि-लाभ आदि की प्राप्ति मे भी हर्ष शोकादि छोड के सत्य धर्म मे दृढ रहना दुख का निवारण और सहन करना।

4 बलम—ब्रह्मचर्य आदि अच्छे नियमो से शरीर का आरोग्य, बुद्धि का चातुर्य आदि बलो को बढाना।

5 वाक्—सत्यविद्या की शिक्षा, सत्य मधुर अर्थात कोमल प्रिय-भाषण का करना।

6 इन्द्रियम—मन पाच ज्ञानेन्द्रियो और पाच कर्मेन्द्रियो को पाप कर्मो से रोक कर सदा सत्य पुरुषार्थ मे प्रवृत्त करना।

7 श्री—चक्रवर्तिराज्य की सामग्री को सिद्ध करना।

8 धर्म—वेदोक्त न्याय से युक्त होके पक्षपात को छोड सत्य का ही सदा आचरण और असत्य का त्याग करना तथा जो सबका उपकार करने वाला और जिसका फल इस जन्म और परजन्म मे आनन्द हो उसी का 'धर्म' और उससे उलटा करने का अधर्म कहते हैं।

सत्य भाषण और सत्याचरण से उत्तम धर्म का लक्षण कोई भी नही है क्योकि सत्पुरुषो मे भी सत्य ही से परुषपन है। सत्य मे ही मनुष्यो का व्यवहार और मुक्ति का उत्तम मार्ग मिलता है अत सब मनुष्यो को सत्य मे ही रमण करना चाहिए।

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा
सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम ।
अन्त शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो
यं पश्यन्ति यतय क्षीणदोषा ।
—मुण्डकोपनिषद 3।1।5

जो सत्यवचन धर्म का अनुष्ठान ठीक ठीक विज्ञान और ब्रह्मचर्य करते हैं इन्ही तपस्वियो से सब का आत्मा परमेश्वर जाना जाता है। सब निर्दोष अर्थात धर्मात्मा ज्ञानी संन्यासी लोग ही देखते हैं। जो सब के आत्माओ के भी आत्मा प्रकाशस्वरूप और नित्य शुद्ध है। सब मनुष्यो को उसी की आज्ञा पालन करनी चाहिए।

सत्यमेव जयते नानृतम ।
—मुण्डक 1।6

जो सत्य का आचरण करता है वही मनुष्य सदा विजय और सुख को प्राप्त होता है और जो मिथ्या आचरण तथा झूठ कामो का करने वाला है वह सदा पराजय और दुख को प्राप्त होता है। अत सत्य धर्म का आचरण और असत्य का त्याग करना सब मनुष्यो को उचित है।

यतोऽभ्युदय नि श्रेयससिद्धि स धर्म ॥
—वैशेषिक 1।1।2

जिसके आचरण करने मे ससार मे उत्तम सुख और नि श्रेयस अर्थात मोक्ष की प्राप्ति होती है उसी का नाम धर्म है।

यह वेद और ऋषि मुनियो की साक्षी से धर्म का उपदेश किया है। सब मनुष्यो के लिए धर्म और अधर्म एक ही है दो नही। जो कोई इनमे भेद करे तो उसे अज्ञानी और मिथ्यावादी ही समझना चाहिए।

———

वैदिक पर्व : वसन्त पंचमी

लेखक—श्री अमरनाथ जी आर्य एम ए
तलवाडा टाऊनशिप

ओम् ऋत च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत तत समुद्रो अर्णव ॥

अर्थात—'परमेश्वर के सामर्थ्य से वेद विद्या और काय रूप प्रकृति उत्पन्न हुई । जल भण्डार सागर प्रकट हुए । ऋतु और स य जगत क आधार बनें । फिर रात दिन सप्ताह और मासादि का क्रम चला । जिससे वर्ष शताब्दियां और कल्प निर्मित हुए, और ऋतुए बनी ।

आर्य वर्त पर प्रकृति कुछ अधिक ही प्रसन्न थी । अत उसे सर्वाधिक यानी छ ऋतुए मिली । जिन मे प्रथम है—ऋतु राज बसन्त, जो शिशिर के बाद आता है । एसी महान ऋतु का अग्रदूत है—बसन्त पचमी का यह वैदिक पर्व ।

पर्व क्यो मनाये जाते है ? इसका उत्तर निरुक्त य देता है— कोई दिन या वस्त पर्व इस लिए कहलाते हैं कि ये हमे पर्वतो की भान्ति उन्नत पूर्ण, सुदृढ और रसमय बनते हैं । अथवा प्रसन्न करते व किसी स मेल कराते हैं ।

क्योकि सुख दुखादि सम्वेदनाए शाश्वत हैं । मानव ने जब से पृथ्वी पर आख खोली, अपने चतुर्दिक प्रकृतिया को सोल्लास हसते पाया । वह तभी से सुख दुख, हर्ष विषाद व आशा निराशा के झूलने पर झूलता आया है । तब से आज तक करोडो वर्ष बीत गए पर उसकी इस समाजिक वृत्ति मे कोई अन्तर नही आया । जिसका प्रतिनिधित्व, हमारे ये पर्व और त्यौहार करते हैं । और इसका आधार है—भारतीय जनमानस जो—

ईशावास्यमिद सर्वंय कचिज्जगत्या जगतानुसार—जग के कण कण मे उस परम सत्ता का दर्शन करते हुए—प्रकृति के अणु अणु और जीवनधारा के पल पल से आनन्द ग्रहण करता है जो वैदिक संस्कृति क मूल मन्त्र है । जिसके अनुसार यह वीर भोग्य ससार भागने के लिए नही बल्कि भोगने के लिए है । इसी लिए वह हर परिवतन को वरदान और हर ऋतु को अपना हितैषी समझता है । सम्भवत इसी लिए प्रकृति को हर शक्ति को अपने लिए कल्याणमय बनाने हित वेद मे एक अनूठि प्रार्थना की गई है—

श नो वात पवता श नस्तपतु
सूर्य ।
श न कनिक्रदद्देव पर्जन्यो
अभिवर्षतु ॥

अर्थात्—वायु हमारे लिए सुखकारी हो । सूय हमारे लिए सुख देता हुआ तपे और गर्जन वाला दिव्य मेघ, हमारे लिए सवत्र सुख की वर्षा करे ।

अत भीषण ग्रीष्मोपरान्त सावन के श्यामल मेघो को निहार उसका मन मयूर यदि झूम उठता है तो शिशिर की कडाके की सर्दी के बाद—ऊष्ण बसन्त को आता देख वह आज भी उतना ही भाव विभोर हो उठता है, जितना कि असख्य वर्ष पूर्व हुआ करता था ।

इस भान्ति यह पर्व माघ शुक्ला पचमी का मनाया जाएगा काल निहारिका का हटा कर यह पता पाना तो कठिन है कि इसके साथ शुक्ला पचमी को कब और क्यो जोडा गया पर अक विज्ञानुसार पाच अक को महत्वपूर्ण माना गया है । अत यह पर्व मानव समता सौहार्द, भाई चारे और आपसी मेल मिलाप के रूप मे मनाया जाता है । अत इससे जुडा शुक्ल-पक्ष-आशा, उत्साह और समृद्धि का द्योतक है । जो हमे तम से प्रकाश की ओर ले चलता है । सम्भवत इसकी भी वृद्धि हेतु ही इसके साथ शुक्ला पचमी को इतिहास की आदि सीमा से भी पूर्व जोड दिया होगा ।

वैदिक मतानुसार सृष्टि निर्माण भी इसी ऋतु स हुआ था । इस मे सरसो आदि की जो पुष्पराशि खिलती है वह अधिकाशत बासन्ती रग की होती है । जो इसके नाम को सार्थकता प्रदान करती है । तथा इस मौसम के सतरादि फल और वनस्पतियो की अरूणामय आंगले प्रकृति रानी को बासन्ती अढने ओढाती है । इसी मनदृश्य पर इस समय पीले-वस्त्र पहनने पीला भोजन करने और बच्चो द्वारा पीले पतग उडान का प्रचलन भी है । जिसे सुख-समृद्धि व मगल का चिन्ह माना जाता है ।

यह पर्व वसन्त ऋतु से कुछ पहले आता है जबकि पृथ्वी कठिन शीत से आतकित हो उत्तर की ओर घूमती हुई क्रमश सूय के समीप सरकती जाती है । अत इसकी प्रशसा के गीत गाते हुए प्राचीन साहित्य मे इसे मदनोत्सव के नाम स स्मरण किया गया है । योगीराज—कृष्ण ने भी इसे ऋतुनाम कुसुमा कर कहा है । और कवि मन यौवन को बसन्त बहार से उपमित करने है । तथा अतीव सौन्दय को साकार करने हित नवयौवना को कविता मे सोलह बसन्त पार किये हुए कहा जाता है ।

आयुर्वेदानुसार इस ऋतु मे शरीर मे नव विद्युतकणमय नया खून बनता है । जिससे प्रकृति मे मादकता और वातावरण मे हर्षोल्लासमय वीर भाव पैदा होता है । साहित्यानुसार मानव जीवन पर इसका सुखद प्रभाव पडता है । साहित्य मे दस रस माने गए हैं । जिनमें पाचवा है वीर रस जिसका देवता है इन्द्र । जो वीरता का प्रतीक है और कवि समयानुसार इसका रग है कुन्दन या बासन्ती । इसी तरह आठवा रस है अदभुत जिसका देवता ब्रह्मा है । जो उदात्तता का प्रतीक है और इसका रग पीला माना गया है । अत ये दोनो रस, बसन्त ऋतु मे अपने रगो के माध्यम से एक अनोखे मदमाते वातावरण का सृजन करते हैं । क्योकि बासन्ती रग की वीरता का चिन्ह माना गया है । इस लिए हमारे तिरगे झण्डे का एक रग केसरिया भी है । रग क्योकि मानवीय भावो को भी दर्शाते हैं, अत वीर भाव पोषित, देश प्रेम का एक गीत भी है ।

रग था बना बसन्ती भगत सिंह । रग
अमन का वीर जवाहर है ।

इस भान्ति समय-सरिता ज्यों-ज्यो सम्वतसरो के मैदान मारती गई, इस पर्व के साथ अन्याय बलिदानी गौरव गाथाए जुड, महान से महानतर बनती गई । ऐसी ही एक मार्मिक घटना, शहीद शिरोमणि वीर हकीकत के अपूर्व बलिदानी की भी है । क्योकि 1641 को जिस दिन बाल हकीकत को धर्म के नाम पर शहीद किया गया सयोग स बसन्त-पचमी ही थी । जिससे यह पर्व जन सम्वेदना के और भी समीप आ गया ।

फिर, इतिहास विधाता का अजेय रथ, हमारे स्वतन्त्रता सग्राम मे प्रविष्ट हुआ । जब समयानुकूल ऋषि दयानन्द स प्र णा प, हमारा शिक्षित वग आर्य समाज से प्रभावित हो जब स्वतन्त्रता प्राप्ति हित सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक रूप में प्र णपन से जुटा था तो यह पर्व—देश नुराग की भावना से मनाया जाने लगा । तथा इसके माध्यम से देश मे प्रच्छन्न रूप से देश-प्रेम का मन्त्र फूका जाने लगा । जिससे धूर्त फिरगी सतर्क हो गया और उसने एक अध्यादेश जारी करते हुए इस पर्व के मनाने पर पाबन्दी लगा दी । इस हस्त क्षेप से जनमानस मे रोष की लहर दौड गई और देश एक मुठ हो गया । जोशीले युवको ने इसके विरुद्ध आवाज उठाई और युवा प्रतिदिन कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान से पूछा कि देश अब बसन्त कैसे मनाए ? उत्तेजित युवा वृन्द को सयत करते हुए उनकी वीर लेखनी मचल उठी और इसका उत्तर उन्होने वीर रस अप्लावित अपनी एक कविता द्वारा दिया कि सकटकाल मे भारत—बसन्त कैसे मनाता आया है —

आ रही हिमालय से पुकार ।
है उदधि गरजता बार बार ॥
प्राची पश्चिम भू नभ अपार ।
सब पूछ रहे हैं दिगदिगन्त ॥
वीरो का कैसा हो बसन्त ?
कह दे अतीत अब मौन त्याग ।
लके ! तुझ में क्यो लगी आग ?
ऐ कुरुक्षेत्र ! अब जाग जाग ।
बतला अपने अनुभव का अनन्त ॥
वीरो का कैसा हो बसन्त ?
हल्दीघाटी के शिला खण्ड ।
ऐ दुर्ग ! सिंहगढ के प्रचण्ड ॥
वीरो का कैसा हो बसन्त ?
हल्दी घाटी के शिलाखण्ड ।
ऐ दुर्ग ! सिंहगढ के प्रचण्ड ॥
राणा ताना का कर घमण्ड ।
दो जगा आज स्मृतिया ज्वलन्त ॥
वीरो का कैसा हो बसन्त ?

इस फडकती हुई कविता मे, इतिहास के झरोखे मे जो कुछ बताया गया उससे अनुप्राणित हो, उस वर्ष जो बसन्त मनाया गया उससे एक बारगी तो अंग्रेजी साम्राज्य की जडे हिल गई और वे समझ गए कि अब भारत मे उनके दिन गिने चुने ही हैं ।

इस भान्ति वीर भावना सम्पन्न यह पर्व समाज पर एक गहरी छाप छोडता है, जो हमे कर्मशील बन कर नित आगे बढने का सन्देश देता हुआ नूतन परिवर्तन के माध्यम से हमारे जीवन को पन्ने की पोरी सदृश्य—सरस और सबल बनाता हुआ शस्य सम्पन्न बैसाखी को बुलाने आगे निकल जाता है ।

परन्तु आज के सन्दर्भ में भी यह पर्व, हम देश भक्त नौजवानों से देश की अखण्डता और स्वायतता के प्रति सजग रहने की माग करता है । मैं, क्या अपने युवा भाईयो से यह पूछ सकता हू कि क्या हम इस परीक्षा की घडी मे, इस कसौटी पर खरे उतरेगे ?

आवश्यकता है हिन्दुत्व की सर्वमान्य परिभाषा की

लेखक—श्री पृथ्वीराज जी जिज्ञासु दीनानगर

29 दिसम्बर के आर्य मर्यादा के अंक में श्री विजन स्वरूप गोयल जी ने देश के समस्त हिन्दुत्ववादी संगठनो से अपील शीर्षक के अन्तर्गत अपने विचार व्यक्त किए थे। वास्तव मे आज देश खण्डित हो रहा है। विधर्मी लोग इस देश की प्रगति में अनेको प्रकार की बाधाए उपस्थित कर रहे हैं। देश की एकता का केवल मात्र एक ही सूत्र है कि हिन्दू सगठित हो जाए। यह देश उनका है। उन्होंने ही इस देश मे जीना है तथा मरना है। अत उन्हे अपना एक राजनीतिक मंच अवश्य बना लेना चाहिए। आज 85 प्रतिशत होते हुए भी हम पददलित हो रहे हैं। इसका एक मात्र कारण है कि हमारा अपना कोई राजनीतिक मंच नही जहा से हम अपनी आवाज बुलन्द कर सकें। परन्तु इससे भी अधिक आवश्यकता है कि हिन्दू शब्द की सर्वमान्य परिभाषा दी जाए ताकि हम अपने अलग अलग धार्मिक स्वरूपो को कायम रखते हुए भी एक मंच पर आ सकें। आज हिन्दुओ मे यह हीन भावना भरी जा रही है कि इनका कोई साझा देवता नही तथा नहीं इनकी कोई साझी पूजनीया देवी है। यदि हिन्दू शब्द की वैज्ञानिक परिभाषा मिल जाए तो यह हीन भावना भरने वाला दुष्प्रचार समाप्त हो जाएगा तथा हिन्दू अवश्यमेव ऐक्य के सूत्र मे बन्ध जाएगा। हिन्दू शब्द की परिभाषा मेरे विचार मे वीर सावरकर द्वारा प्रदत्त निम्न परिभाषा ही हो सकती है—

आसिन्धो सिन्धु पर्यन्ताम,
यस्य भारत भूमिक
पितृ भू पुण्य भूमिश्च
स वै हिन्दुरिति स्मृत।

जो व्यक्ति इस भारत वसुन्धरा को पितृ भू एवम पुण्य भू मानता है, इस देश के इतिहास एवम सस्कृति को अपने पूर्वजो की धरोहर समझता है तथा कृषि प्रधान देश की केन्द्र बिन्दु गौ को माता समझ कर उसकी पूजा करता है वह हिन्दू है। उसकी उपासना पद्धति चाहे कुछ भी हो वह हिन्दू है। इस परिभाषा से हमे सगठित होने के लिए साझा देवालय अर्थात भारत वर्ष मिल जाता है तथा साझा पूजनीया देवी गौ माता भी हमे मिल जाती है। हमे हिन्दू शब्द की इस परिभाषा को सवैधानिक मान्यता भी दिलवा लेनी चाहिए तथा इसी के आधार पर हिन्दुत्व का प्रचार घर घर मे जाकर करना चाहिए। तब कोई कारण नही कि हिन्दू सगठित न होगा और हिन्दुओ का अपना राजनीतिक मंच तैयार नही होगा।

गौ की रक्षा और भारत की अखण्डता ही हमारा मूल मन्त्र होना चाहिए। यदि हिन्दू शब्द का किसी सकीर्ण धार्मिक परिवेश मे बन्द रखेगे तो हिन्दू खण्डित होता जाएगा। हम शब्द की यह परिभाषा कोई नई नही। धर्म के रूप मे हिन्दू शब्द का प्रयोग कभी भी नही हुआ। हिन्दू इस देश की भौगोलिक सज्ञा है तथा सास्कृतिक प्रतीक है। हिन्दू और भारत एक दूसरे के पूरक हैं।

आओ समय की पुकार को सुनें देश की एकता और अखण्डता के लिए तथा कृषि प्रधान देश की पूजनीया देवी गौ की रक्षा के लिए सगठित होकर एक हिन्दू नामधारी राजनीति मंच तैयार करे। तभी देश बचेगा अन्यथा —

न सम्भलोगे तो मिट जाओगे
ऐ हिन्दोस्तान वालो।
तुम्हारी दासता तक न होगी
दास्तानो मे॥

—

आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

23 दिसम्बर 1985 रविवार को 8 30 से 9 30 तक विशेष वेद मन्त्रो से यज्ञ किया गया। तत्पश्चात 11 बजे तक स्वा श्रद्धानन्द जी की जीवन झाकी पर पुरोहित जी का प्रभावशाली भाषण हुआ, तथा अन्य महानुभावो की ओर से भी स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाञ्जलिया भेंट की गई।

प्रोग्राम बड़ा ही रोचक और प्रभावशाली था।

—लालचन्द
प्रधान

आर्य समाज माडल टाऊन पठानकोट में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

22-23 दिसम्बर 1985 को आर्य समाज माडल टाऊन पठानकोट मे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर प वर्द्धन ना शास्त्री न स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते उनके महान सेवा कार्यों पर प्रकाश डाला। सब ने राष्ट्र की सेवा करने का सकल्प लिया।

—योगेन्द्र नाथ
मन्त्री

जालन्धर मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज वेद मन्दिर बस्ती दानसम दा मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 1 दिसम्बर से 22 दिसम्बर तक मनाया गया। प्रतिदिन रात्रि को कथा सभा के सहायक वेद प्रचार अधिष्ठाता प धर्म देव जी आर्य करते रहे और श्री सीताराम श्रीराम तथा श्री प रामनाथ यात्री के भजन होते रहे। 22 दिसम्बर को श्रद्धाञ्जलि सम्मेलन श्री ससारच द जी की अध्यक्षता मे हुआ श्री के पी एम एल ए श्री सरदारी लाल श्री डा श नच द जी श्री फकीर च द तथा अन्य कई सज्जनो ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाञ्जलियां भेंट की। अन्त मे वृहद ऋषि लगर हुआ जिसमे आए हुए सभी बन्धुओ ने प्रीति भोज किया। उत्सव हर प्रकार मे सफल रहा। प्रतिदिन प्रोग्राम समाप्ति पर भिन्न भिन्न व्यक्तियो द्वारा जल-पान का प्रबन्ध किया गया। —प मनोहर लाल

शोक संवेदना के लिए धन्यवाद

मैं उन सब सज्जनो और सभा सोसाइटियो का, जिन्होने मेरे पोते अजीज श्याम सुन्दर सुपुत्र श्री बलराम सागर एम डी ओ बिजली स्वर्गवासी की असमय और दुखद मृत्यु पर सहानुभूति प्रकट की है और इस आशय के प्रस्ताव पास किए हैं। मैं हार्दिक धन्यवाद करता हू। अत्यधिक सख्या मे प्राप्त शोक समवेदना सूचक पत्रो का पृथक पृथक और व्यक्तिगत उत्तर देना मेरे लिए कठिन होने के कारण मैं उनके प्रति आर्य मर्यादा द्वारा अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हू।

—मा राम प्रसाद सगड लुधियाना



आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-काश्मीर का चुनाव

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर का द्विवार्षिक चुनाव 29-12 85 को सम्पन्न हुआ। डा योगेन्द्र कुमार शास्त्री जी को सर्व सम्मति से पुन दो वर्ष के लिए सभा प्रधान चुना गया। शेष कार्यकारिणी के निर्माण का अधिकार भी सर्वसम्मति से उन्हें ही दिया गया।

—योगेन्द्र कुमार
प्रधान

आर्य समाज बैंकफील्डगंज लुधियाना का वार्षिक चुनाव

आय समज बकफीड गज का व र्षिक चनाव ीचद्र प्रकाश आन द जी की अध्यक्षता मे सव सम्मति से सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी चने गए

प्रधान—श्रीमती कौश या जी उप प्रधान—श्रीमती सावित्री जी महामन्त्री श्री सतपाल सूद—मन्त्री रामस्वरूप उपम ा—शाति जी प्रचार मन्त्री—ि नाद बाला जी कोषाध्यक्ष—श्री मूलसराज सहगल यज्ञ इन्चाज—जानकी देवी जी अ तरग सम्य—मव श्री अग न धपु ी च द्र प्रकाश आनन्द लक्ष्मी देवी सुदशना देवी मूर सुदशना गाधी कोशन देव लीलावती।

—सतपाल सूद

श्री जय देव कुन्द्रा का निधन

आय समाज फतेहगढ चढ़िया प्रधान श्री जय देव क द्रा का 31 12 85 को देहावसान हो गया। क द्रा जी कई वष आय समाज क अधिकारी रहे और आय समाज की सेवा करते रहे उ के चले जाने से आय सम ज म जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी पूति सम्भव है

परम पिता परमा मा से प्राथना है कि वह उ हे सदगति प्रदान करे और उसके सारे परिव को इस दु ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—मन्त्री आर्य समाज

आर्य युवक समाज बरनाला का सराहनीय कार्य

बरनाला—

गत दिनो आर्य युवक समाज बरनाला द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष में राष्ट्रीय एकता कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमे श्री वीरेन्द्र प्रधान आय प्र नि सभा पजाब का एक सदेश पढ़ कर सुनाया जिसमे उन्होंने राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता पर बल देते हुए आय युवक समाज बरनाला के इस काय की प्रशसा की। इस प्रतियोगिता में लगभग 10 दल शामिल हुए। केन्द्रीय विद्यालय एयर फोस स्टेशन बरनाला के दल ने चल विजयोपहार जीता जबकि रम्पियन माडल स्कल बरनाला की नन्ही बच्ची मोनिका जिन्दल ने प्रथम पुरस्कार जीता। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुशील कुमार मौदगिल कायकारी नगर पालिका बरनाला ने की जबकि श्री दीपक राय गम तहसीलदार बरनाला मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुये। आय प्रतिनिधि सभा पंजाब के आज वीर दल अधिष्ठाता श्री यशपाल आरिया व जिला संचालक आर्य सभा की महामन्त्री कुमारी विमला शावला इस समारोह में विशेष रूप से पधारे। प्रिंसीपल कुमारी विमला शावला ने सतीश सिन्धवानी के शानदार मंच संचालन से प्रभावित हो कर 31 रुपए का पुरस्कार उन्हें एक पुस्तक के रूप मे देने की घोषणा की। यह उल्लेखनीय है कि श्री रामसरन दास गोगल के सफल व कुशल नेतृ व मे आर्य युवक समाज बरनाला निरंतर सामाजिक व धार्मिक कार्यों में सलग्न है।

—सतीश गुप्ता
महामन्त्री

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस मेहरु गार्डन रोड़ जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74036   रजि. न. पी.जे.एल. 55

ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 39. 15 माघ सम्वत् 2042 तदनुसार 26 जनवरी 1986 दयानन्द 161 अंक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये

गणतन्त्र दिवस २६ जनवरी पर विशेष–

अमर शहीद पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

लेखक—श्री डा भवानी लाल जी भारतीय चण्डीगढ़

महान् राष्ट्र भक्त तथा आर्य समाज के अद्वितीय नेता श्री लाला लाजपतराय का जन्म 28 जनवरी 1865 को लुधियाना जिले के ढुडीके ग्राम में हुआ था। वे जाति के अग्रवाल वैश्य थे। पिता मुन्शी राधा कृष्ण अग्रवाल थे अध्यापक थे। अरबी फारसी पढ़ने तथा अपने गांव के मदरसे के एक मौलवी से अत्यधिक प्रभावित होने के कारण मुन्शी राधाकृष्ण पर इस्लाम का बड़ा प्रभाव था। वे मुसलमानों की ही भांति दिन में पांच बार नमाज पढ़ते थे और रमजान के महीने में रोजे रखते थे। उन्होंने कई बार कुरान पढ़ा था। आचार विचार, रहन-सहन खान पान सभी प्रकार से मुसलमानों के अधिक निकट थे। लाला जी की माता का नाम गुलाब देवी था जो अत्यन्त सरल स्वभाव की धर्मशील महिला थी।

सरकारी शिक्षा विभाग में अध्यापक के रूप में काम करने के कारण मुन्शी राधाकृष्ण को भिन्न-भिन्न स्थानो पर रहना पड़ा। अम्बाला और लुधियाना के मिडिल स्कूलों में लाला लाजपतराय की शिक्षा हुई। तेरह वर्ष की आयु में उन्होंने मिडल की परीक्षा पास की इसी समय उनका विवाह श्री राधा नामक बालिका से हो गया। 1878 में मिडल की [illegible] लिए उन्हे लाहौर आना पड़ा। [illegible] बाद मैट्रिक में सम्मिलित होने के पूर्व लाहौर आये। दोनों बार वे गवर्नमेंट कालेज में ठहरे। कालेज के छात्रावास में रहने पर उनका परिचय हंसराज और गुरुदत्त नामक आर्यसमाजी युवकों से हुआ। शीघ्र ही वे आर्य समाज के प्रभाव में आ गए और 1882 में आर्य समाज लाहौर के प्रथम मन्त्री लाला साईंदास की प्रेरणा से वे आर्य समाज के सदस्य बन गये।

जब 1883 में स्वामी दयानन्द का निधन हो गया तो उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए डी ए वी कालेज की स्थापना का निश्चय हुआ। इस कालेज का आचार्य पद हसराज ने स्वीकार किया, परन्तु लाला लाजपतराय कालेज की स्थापना हेतु धन सग्रह करने के लिए निकल पड़े। उनके ओजस्वी भाषणों को सुनकर जनता ने दिल खोलकर कालेज के लिए धन दिया। हसराज, लाला लाजपतराय तथा गुरुदत्त की यह युवा मण्डली उस युग की आर्य समाजी प्रवृत्तियो पर छाई हुई थी। यह निश्चय हुआ कि दि रिजेनेरेटर आफ आर्यावर्त नामक एक अग्रेजी पत्रिका निकाला जावे। हसराज और गुरुदत्त ने इस पत्र का सम्पादन भार अपने कन्धो पर लिया तो लाजपतराय ने देशोपकारक नामक एक उर्दू पत्र निकाला।

जीवन यापन के लिए लाजपतराय ने 1881 मे मुख्तारी की परीक्षा पास की तथा अपने निकास के कस्बे जगराव में मुख्तारी करने लगे। शीघ्र ही उन्होने वकालत की परीक्षा भी पास कर ली और हिसार मे 1886 से 1891 तक इस व्यवसाय को परिश्रम पूर्वक करते रहे। हिसार से ही उनका सार्वजनिक जीवन का आरम्भ माना जा सकता है। 1892 में वे लाहौर की चीफ कोर्ट मे वकालत करने के लिए चले आये। इन्ही दिनो आर्य समाज मे कालेज शिक्षा और प्राचीन पद्धति की शिक्षा प्रणाली को लेकर पर्याप्त मतभेद उभर चुके थे। लाला जी डी ए वी कालेज के प्रिंसीपल लाला हंसराज के साथ रहे और उन्होंने शिक्षा के सम्बन्ध में केवल प्राचीन शिक्षा सिद्धान्तो का अनुसरण करने की अपेक्षा पाश्चात्य वैज्ञानिक शिक्षा के तत्वो को भी स्वीकार करने पर बल दिया।

लाला लाजपतराय का राजनीति मे प्रवेश काग्रेस के माध्यम से ही हुआ। उन्होने सर सैयद अहमद खा के उन लेखो की आलोचना मे एक लेखमाला उर्दू पत्रो मे लिखी, जिनमे काग्रेस के आदर्शों की आलोचना करते हुए भारत के मुसलमानो को इस सस्था से पृथक रहने के लिए कहा गया था। काग्रेस के सस्थापक श्री ह्यूम को जब लाला लाजपतराय द्वारा लिखे गये सर सैयद के विचारो के प्रतिवादात्मक लेखो का पता चला तो वे बड़े प्रसन्न हुए और उन्होने लाला जी के लेखो का अग्रेजी मे अनुवाद कर प्रकाशित कराया। 1888 मे वे पहली बार इलाहाबाद अधिवेशन मे सम्मिलित हुए। उसके बाद 1889 की बम्बई काग्रेस मे भी उत्साहपूर्वक भाग लिया।

राजनीतिक गतिविधियो मे भाग लेने के साथ साथ लाला जी आर्य समाज के माध्यम से सामाजिक रचनात्मक प्रवृत्तियो मे भी रूचि लेते रहे। डी ए वी कालेज को उन्नति और प्रगति मे उनकी रूचि यथापूर्व बनी रही। 1897 के राजस्थान मे पड़े भयकर दुष्काल तथा 1905 मे कागड़ा प्रदेश मे आये भूकम्प के समय उन्होने विपत्ति ग्रस्त लोगो की सेवा जी जान से की। 1905 के बग भग हुआ जिससे इस देश की राजनीति मे एक निर्णायक मोड़ आया। काग्रेस मे गर्म दल की स्थापना हुई और लाला लाजपतराय के ही समान विचारो वाले बाल गगाधर तिलक तथा विपिन चन्द्र पाल की ओर लोगो का प्रबल आकर्षण हुआ। लाल, बाल पाल की मण्डली जनता के हृदयों पर शासन करने लगी। उधर जब पजाब मे जब किसान समुदाय मे अपने असन्तोष को व्यक्त किया और लायलपुर की सभा मे सरदार अजीतसिंह का विद्रोही स्वर लिए हुए भाषण हुआ तो अग्रेजी हकूमत ने दमन का सहारा लिया। लाला लाजपतराय और सरदार अजीतसिंह को देश निकाले का दण्ड मिला। फलत वे लगभग 6 मास तक बर्मा के माडले नगर मे निर्वासित की सजा भोगते रहे। 18 नवम्बर 1907 को वे पुन लाहौर पहुचे और 1907 के दिसम्बर मास मे सम्पन्न हुई सूरत कांग्रेस मे भाग लिया। सूरत का ऐतिहासिक अधिवेशन नरम और गरम दल की पारस्परिक फूट का ज्वलन्त परिचायक सिद्ध हुआ।

राजनीति की अस्थिरता तथा राजनीतिज्ञो के सिद्धान्तहीन आचरण को देखकर लाला जी को राजनीति से विरक्ति हो गई। 1908 मे वे इगलैड चले गये। वहा रह कर उन्होने उस देश के विभिन्न विचारो वाले राजनीतिक नेताओ मे भेन्ट की तथा पारस्परिक विचारो का आदान प्रदान किया। उनकी दूसरी विदेश यात्रा 1913 मे हुई जब वे काग्रेस के एक शिष्ट मण्डल मे सम्मिलित होकर इगलैंड गए। इगलैंड प्रवास के समय ही उन्होने आर्य समाज के सम्बन्ध मे अपनी प्रसिद्ध पुस्तक लिखी जिसकी भूमिका प्रसिद्ध साम्यवादी सिडनीवेब ने लिखी थी। 4 नवम्बर 1914 को लाला जी ने इगलैंड से सयुक्त राज्य अमेरिका के लिए प्रस्थान किया। कुछ समय वहा बिताकर वे जापान चले गये। इस लम्बे प्रवास के पश्चात जब फरवरी 1920 मे लाला जी स्वदेश लौटे तो देश की राजनीतिक परिस्थितियो मे महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा था। इसी वर्ष अगस्त मे लोकमान्य तिलक का निधन हो गया।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

आर्य समाज कलकत्ता १९ विधान सरणी का स्थापना शताब्दी समारोह पर आर्य कन्या महाविद्यालय कलकत्ता के पुरोधम के मुख्य अतिथि

श्री सत्यनारायण लाहोटी का भाषण

आर्य समाज कलकत्ता के एक निष्ठावान व आदरणीय कार्यकर्ता श्री सत्यनारायण लाहोटी ने पिछले दिनो आर्य समाज कलकत्ता के शताब्दी समारोह पर कन्या महाविद्यालय कलकत्ता एक समारोह की अध्यक्षता करते हुए स्त्री शिक्षा पर जो सार गर्भित भाषण दिया। उसे पाठको की जानकारी के लिए इस अक मे प्रकाशित किया जा रहा है।

—सम्पादक

श्रीमान अध्यक्ष महोदय पूजनीय सन्यासीगण प्रतिष्ठित विद्वानो तथा बहिनो और भाइयो!

आय समाज कलकत्ता स्थापना शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित आय कन्या महाविद्यालय के इस पुरोधम के प्रसग मे आपने मुझ मुख्य अतिथि के रूप मे निमत्रित कर जो सम्मान प्रदान किया है, मैं उसके लिए आपको हार्दिक धन्यवाद देता हू।

आर्य समाज द्वारा स्त्री शिक्षा के लिए जो महत्वपूर्ण कार्य किया गया है, यह आय कन्या महाविद्यालय उसका ठोस प्रमाण है। उन्नीसवी सदी के मध्य भाग मे जब महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कार्य क्षेत्र मे पदार्पण किया था, भारत मे स्त्रियो की शिक्षा के लिए जो भी विद्यालय विद्यमान थे सब ईसाई मिशनरियो द्वारा सचालित थे। उनका वातावरण क्रिश्चियन था, और उनमे पढने वाली बालिकाए ईसाई धर्म तथा विदेशी सस्कृति के प्रभाव मे आ जाती थी। इस कारण हिन्दू लोग अपनी बालिकाओ को उनमे पढने के लिए नही भेजते थे। साथ ही, उस समय हिन्दू परिवारो मे स्त्री शिक्षा को अनुचित माना जाता था। 'स्त्री शूद्रोनाधीयाताम' स्त्रियो और शूद्रो को शिक्षा नही दी जानी चाहिए, यह विचार हिन्दुओ मे बद्धमूल था। ऐसे समय महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जनता का ध्यान स्त्री शिक्षा की उपयोगिता की ओर आकृष्ट किया और यह प्रतिपादित किया कि समाज मे स्त्रियो की स्थिति पुरुषो के समकक्ष है। उन्हे किसी भी प्रकार हीन नही मानना चाहिए। समाज मे स्त्रियों की स्थिति के सम्बन्ध में महर्षि ने जो विचार प्रकट किए हैं वे अत्यन्त प्रगतिशील हैं। उनके अनुसार बालिकाओं को भी बालकों के समान ही शिक्षा दी जानी चाहिए। महर्षि के शब्दो में 'सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्य मात्र को पढने का अधिकार है।' 'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्' मन्त्र को उद्धृत कर महर्षि ने लिखा है कि 'जैसे लडके ब्रह्मचर्यसेवन से पूर्ण विद्या और सुशिक्षा को प्राप्त होके युवती, विदुषी, अपने अनुकूल प्रियमवद स्त्रियों के साथ विवाह करते हैं वैसे ही कुमारी ब्रह्मचर्य सेवन से वेदादि शास्त्रो को पढ पूर्ण विद्या और उत्तम शिक्षा को प्राप्त युवती होके पूर्ण युवावस्था मे अपने सदृश प्रिय पुरुष को प्राप्त होवे। इसलिए स्त्रियो को भी ब्रह्मचर्य का पालन और विद्या का ग्रहण अवश्य करना चाहिए।

प्राचीन समय मे भारत मे स्त्रिया कैसी सुशिक्षित होती थी, और समाज मे उनकी स्थिति कितनी ऊची मानी जाती थी इसकी ओर भी महर्षि ने ध्यान आकृष्ट किया था। उन्होने लिखा देखो आर्यावर्त के राजपुरुषो की स्त्रिया धनुर्वेद अर्थात युद्ध विद्या भी अच्छी प्रकार जानती थी। क्योकि जो न जानती होती तो कैकयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध मे क्यो कर जा सकती और युद्ध कर सकती। प्राचीन आर्य स्त्रिया कितनी विदुषी होती थी इसके लिए महर्षि ने गार्गी का उदाहरण प्रस्तुत किया। जिसने कि महाराज जनक की सभा मे महर्षि याज्ञवल्क्य के साथ शास्त्र चर्चा की थी। उन्होने यह भी बतलाया कि कितनी ही स्त्रिया वेदमन्त्रो का दर्शन करने के कारण ऋषि का पद प्राप्त करने मे सफल हुई थी और उनके नाम वेदमन्त्रों के साथ जुडे हुए हैं। महर्षि का यह भी मत था कि सर्वोच्च कार्यों में भी स्त्रियों को पुरुषो के समान अधिकार होना चाहिए। उनके मत मे राजपुरुष जिस जिस कार्य मे प्रवृत्त हो, उस-उस कार्य मे अपनी अपनी स्त्रियो का भी स्थापना करें। जो-जो राजपुरुष जिन-जिन पुरुषों का न्याय करें, उस-उस की स्त्री स्त्रियो का न्याय किया करें। महर्षि के मत में स्त्रियो के मामलों का न्याय स्त्री न्यायाधीशों द्वारा ही किया जाना चाहिए। यही नहीं [illegible] के अभाव मे रानी को सेनापति होना चाहिए।" महर्षि ने ये विचार उस समय प्रतिपादित किये थे जब कि यूरोप मे भी स्त्रियो को राजनीतिक अधिकारो से वचित रखा जाता था। यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि बीसवी सदी के प्रारम्भ तक इंग्लैंड मे स्त्रियो को वोट देने तक का अधिकार नहीं था। सन 1913 मे जब ब्रिटिश पार्लियामेंट में स्त्रियो के वोट का अधिकार उन्हे सन 1920 के बाद मिला। यूरोप के अन्य देशो मे तो स्त्रियो को राजनीतिक अधिकार और भी बाद मे प्राप्त हुए।

आज भी स्त्रियो का न्यायाधीश सदृश पद पर नियुक्त होना एक असाधारण बात है, और सैन्य सचालन के लिए तो शायद कहीं भी स्त्री सेनापति नही है। इस दशा में आज से सौ साल से भी अधिक समय पहले महर्षि ने जो स्त्रियो की स्थिति के सम्बन्ध मे विचार प्रतिपादित किए थे, वे कितने प्रगतिशील हैं। आधुनिक काल मे हिन्दुओ मे स्त्री शिक्षा का सूत्रपात आर्य समाज द्वारा ही किया गया था। इस दिशा मे प्रथम प्रयास कन्या महाविद्यालय जालन्धर के रूप मे सन् 1889 में महात्मा मुशीराम और लाला देवराज ने किया। शुरू में इस सस्था का बहुत विरोध हुआ। कोई भी अपनी बालिकाओ को इस मे भेजने के लिए तैयार नही हुआ। और व्यक्तिगत रूप से प्रेरणा दे दे कर कुछ बालिकाए प्राप्त की गई। पर धीरे-धीरे यह विद्यालय एक महान सस्था के रूप में विकसित हो गया। अब मे तो आर्य समाज द्वारा कितने ही कन्या गुरुकुल, बालिका विद्यालय व कालिज स्त्री शिक्षा के लिए स्थापित किये गये। बहुत से स्थानों पर आर्य समाज मन्दिरो में ही पुत्री पाठशालाएं स्थापित हैं। बालिकाओं की शिक्षा को आर्य समाज ने इतना अधिक महत्व दिया कि बहुसख्यक आर्य समाजों ने अपने भवनों का उपयोग कन्या पाठशाला के लिए करना प्रारम्भ और [illegible] और अपनी सब [illegible] के लिए लगा दी। [illegible] कहीं भी आर्य समाज है स्त्री शिक्षा का [illegible] ने ऐसी आर्य युवतियां तैयार हो गयी जो वेद शास्त्रों की पण्डिता हैं और जिन्हें देखकर प्राचीन काल की गार्गी और मैत्रयी सदृश विदुषियो का स्मरण हो आता है। आर्य समाज द्वारा स्त्री शिक्षा के लिए जो सैकडो पाठशाए, विद्यालय, गुरुकुल और स्कूल कालिज स्थापित हैं। आर्य कन्या महाविद्यालय कलकत्ता का उनमे अपना विशेष स्थान है। इसका वातावरण वैदिक धर्म और आर्य सस्कृति के अनुरूप है, और इस द्वारा आर्य समाज के प्रचार कार्य में समुचित सहायता प्राप्त हो रही है। सभी परीक्षाओं का परिणाम प्राय शत प्रतिशत रहता है। मैं इस सस्था के सचालको पदाधिकारियो तथा अध्यापिकाओ को इसके शानदार कार्य के लिए बधाई देता हू और इसके उज्ज्वल भविष्य की परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हू।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

काग्रेस की राजनीति मे महात्मा गाधी की महत्वपूर्ण भूमिका प्रारम्भ हुई। सितम्बर 1920 मे जब कलकत्ते में काग्रेस का विशेष अधिवेशन हुआ तो लाला जी को उसका अध्यक्ष बनाया नागपुर काग्रेस ने जब महात्मा गाधी द्वारा प्रवर्तित असहयोग के कार्यक्रम को स्वीकार कर लिया तो लाला जी को भी इसमे सहमत होना पडा। 1921 मे लाहौर मे एक बैठक आयोजित करने के कारण उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया तथा कारावास में भेज दिया गया। 30 अक्तूबर 1928 को साइमन कमीशन के विरोध में लाला जी ने प्रदर्शन का नेतृत्व किया। अग्रेज सार्जेंट ने उन पर लाठियो का प्रहार किया उसी सायकाल लाला जी ने भरी सभा में गर्जना करते हुए कहा कि मेरी छाती पर बरसाई लाठियां अग्रेजी साम्राज्य के कफन की कील बनेंगी। 19 नवम्बर को शेर केसरी लाजपतराय ने परलोक के लिए प्रस्थान किया। वे आर्य समाज को अपनी माता तथा ऋषि दयानन्द को अपना पिता मानते थे।

सम्पादकीय—

आर्य समाज कलकत्ता का शताब्दी स्थापना समारोह (3)

इस क्रम के पिछले दो लेखो मे मैंने महर्षि दयानन्द सरस्वती के बगाल में चार मास के प्रवास के विषय में लिखा था कि उन दिनो वह वहा किन किन प्रमुख व्यक्तियो स मिले थे। उन दिनो वहा ब्रह्म समाज सक्रिय रूप से काम कर रही थी। इसलिए महर्षि ब्रह्म समाज के नेता श्री केशव चन्द्र सेन से मिलते रहते थे और दोनो आपस मे उस समय की परिस्थितियो पर भी विचार विमर्श किया करते थे और उन्ही दिनो महर्षि श्री ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जी से भी मिले थे। श्री ईश्वर चन्द्र संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे साहित्य निर्माण मे भी उनका महत्वपूर्ण स्थान था। वह स्त्री शिक्षा तथा विधवा विवाह समर्थक थे और बहु-विवाह के विरोधी थे। महर्षि दयानन्द भी संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे। इसलिए इन दोनो मे आपस मे बहुत देर तक विचार विमर्श होता रहा। श्री रमेश चन्द्र दत्त, श्री राजेन्द्र लाल मित्र दो प्रसिद्ध इतिहासकारो का भी उन्ही दिनो मे स्वामी जी से सम्पर्क हुआ। इस प्रकार महर्षि ने कलकत्ता मे रहते हुए वहा ब्रह्म समाज के नेताओ, आधुनिक ज्ञान विज्ञान के विद्वानो, समाज सुधारको बुद्धिजीवियो और प्रगतिशील विचारको से सम्पर्क स्थापित करने तथा उनके मन्तव्यो से अवगत होने के लिए प्रयत्नशील रहे वहा साथ ही उन्होने वैदिक धर्म के सत्य स्वरूप को प्रतिपादित कर के अपने कार्य को भी जारी रखा और उसका क्या परिणाम निकला इसका कुछ आभास उन समाचारो व टिप्पणियो से प्राप्त किया जा सकता है जो उनके कलकत्ता निवास के समय वहा से प्रकाशित होने वाले पत्र पत्रिकाओ मे छपी थी।

'धर्म तत्व' नाम के एक पत्र ने दयानन्द सरस्वती शीर्षक के एक लेख मे लिखा था—'यह एक दिग्गज पण्डित हैं और हिन्दू शास्त्र विशारद है, संस्कृत भाषा मे इनकी अबाधगति है। इनकी संस्कृत इतनी मधुर और सरल है कि संस्कृत से अनभिज्ञ पुरुष भी उसे अनायास बहुत कुछ समझ सकते हैं। पाश्चात्य विज्ञान के आलोक से आलोकित न होने पर भी वह जिस विशुद्ध रूप से उदारता के साथ सारे विषयों को प्रकट करते हैं उसे देख कर अवाक रह जाना पड़ता है।

तत्व बोधिनी पत्रिका में स्वामी जी की कलकत्ता यात्रा के विषय मे यह पंक्तिया लिखी गई थी कि—'थोड़े दिन हुए पण्डितवर श्रीयुत दयानन्द सरस्वती अपने विद्या प्रभाव से कलकत्ता निवासियो को आश्चर्य चकित कर रहे हैं। इस प्रकार दूसरे भी कई पत्र पत्रिकाओं ने महर्षि के विषय मे उन दिनो लिखा था। इस का यह परिणाम भी हुआ कि वहा की जनता पर इतना प्रभाव पड़ा कि लोगो का झुकाव आर्य समाज की तरफ हो गया।

कलकत्ता में निवास करते समय स्वामी जी महाराज के रहन सहन तथा प्रचार की पद्धति मे भी अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। उससे पहले स्वामी जी अपने शरीर पर कौपीन के अतिरिक्त और कुछ भी न पहना करते थे। बाबू केशव चन्द्र सेन ने उन्हे परामर्श दिया कि जन साधारण के सम्मुख नग्न दशा मे व्याख्यान देना उचित नही क्योकि स्त्रिया भी उनके विचारो से लाभ उठाने के लिए आती हैं स्वामी जी को यह बात समझ आ गई और उन्होने वस्त्र धारण करना आरम्भ कर दिया। इसी प्रकार श्री सेन के सुझाव पर ही स्वामी जी ने अपने व्याख्यानो तथा शास्त्र चर्चा में संस्कृत के स्थान पर हिन्दी का प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया। सब साधारण लोगो के लिए संस्कृत की तुलना मे हिन्दी को समझना सुगम था। साथ ही इस बात की भी आशका नही रहती थी कि द्विभाषिया स्वामी जी के मन्तव्य का शुद्ध व वास्तविक रूप से प्रकट न करे। यद्यपि उस समय भी स्वामी जी को हिन्दी भाषा का समुचित ज्ञान नही था और हिन्दी मे भाषण देते हुए वह कभी कभी संस्कृत मे बोलने लग जाते थे। परन्तु केशव चन्द्र सेन के परामर्श का स्वीकार कर वह अपने व्याख्यानो प्रवचनो तथा शास्त्र चर्चा में प्राय हिन्दी का ही प्रयोग करने लगे। इस सन्दर्भ मे यह बात भी महत्वपूर्ण है कि श्री केशव चन्द्र सेन की अपनी भाषा हिन्दी न थी फिर भी उन्होने यह समझा कि हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसके द्वारा जन साधारण तक पहुचा जा सकता है।

स्वामी जी महाराज 1873 मे कलकत्ता पहुचे थे, और 1885 में वहा आर्य समाज की विधिवत स्थापना कर दी गई थी। उसी आर्य समाज की शताब्दी पिछले मास मनाई गई थी। शताब्दी सम्मेलन में क्या कुछ हुआ था इस विषय मे आगामी लेख मे पाठकों को सारी जानकारी दूगा। इस वक्त तो उनका ध्यान केवल इस बात की ओर दिलाना चाहता हू कि अकेले महर्षि ने ही उस समय के बगाल मे एक ऐसा जन-जागरण पैदा किया कि प्रमुख व्यक्ति भी आर्य समाज के महत्व को समझने लगे। एक सौ वर्ष किसी भी संस्था के जीवन मे थोड़ा समय नहीं होता। कोई भी संस्था दिन प्रतिदिन प्रगति करती हुई वहा पहुच जाए जहा आज कलकत्ता मे आर्य समाज पहुच गई है तो इसके इतिहासिक महत्व की अवहेलना नहीं की जा सकती। इसका एक दूसरा महत्व यह भी है कि जिन दिनो आर्य समाज की स्थापना हुई थी उन दिनो ब्रह्म समाज बगाल मे बहुत प्रगति कर चुकी थी। ब्रह्म समाज के होते हुए आर्य समाज की स्थापना कोई मामूली बात न थी महर्षि के प्रभाव से वहा आर्य समाज की स्थापना हो गई और आज स्थिति यह है कि बगाल मे विशेष कर कलकत्ता मे आर्य समाज तो है, ब्रह्म समाज नहीं है। नहीं मेरा अभिप्राय केवल यह है कि आज उसका जन साधारण पर वह प्रभाव नही रहा जो पहले हुआ करता था। आर्य समाज ने यह जो प्रगति की है उसका श्रेय बहुत कुछ उसके कार्यकर्ताओ को मिलना चाहिए, और पिछले एक सौ वर्षों मे उसके सैकड़ो कार्यकर्ता हुए हैं उन सब ने इसके लिए परिश्रम किया, कुछ त्याग किया और उसके परिणामस्वरूप आर्य समाज आज वहा पहुच गया जहा मैं उसे कलकत्ता से देख कर आया हू वह क्या है इस विषय मे आगामी अक मे अपने विचार रखूगा।

—वीरेन्द्र

26 जनवरी फिर आ गई

एक बार फिर गणतन्त्र दिवस आ गया। हमारे दो महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व हैं, 15 अगस्त जिसे हम स्वतन्त्रता दिवस के रूप मे मनाते हैं और दूसरा गणतन्त्र दिवस जिसे हम 26 जनवरी को मनाते हैं। इस दिन सन 1950 मे हमारे देश मे गणतन्त्र की शासन प्रणाली स्थापित हुई थी कई शताब्दियो के पश्चात यह दिन आया था जब देश के शासन की बागडोर देश की जनता के प्रतिनिधियो के हाथ मे दे दी गई थी। हमारे इतिहास का यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण दिवस था। परन्तु मैं आर्य जनता का ध्यान इसके एक और पक्ष की ओर दिलाना चाहता हू। पिछले दिसम्बर मे बम्बई मे अखिल भारतीय कांग्रेस की शताब्दी मनाई गई थी। दिसम्बर 1885 मे बम्बई मे कांग्रेस का पहला अधिवेशन हुआ था परन्तु उससे दस वर्ष पहले 1875 मे आर्य समाज की स्थापना हो चुकी थी और 1875 से पहले केवल एक ऐसी महत्वपूर्ण घटना हुई थी जो उस समय की जनता मे स्वाधीनता की भावना पैदा कर सकती थी, वह 1857 का विद्रोह था। परन्तु इस देश के प्रमुख व्यक्तियो के मन मस्तिष्क पर यह विचार सबसे पहले महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही बैठाया था कि—'दूसरो का राज्य चाहे कितना ही अच्छा क्यो न हो स्वराज्य से अच्छा नही हो सकता।' महर्षि के स्वनाम धन्य शिष्य श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा जब शिक्षा प्राप्त करने के लिए इगलैंड जाने लगे तो महर्षि ने उन्हे दो मन्त्र दिए थे और कहा था इन्हे मत भूलना। एक स्वधर्म और दूसरा था स्वराज्य यानी धर्म और राष्ट्र इन दोनो की सेवा के लिए वहा भी प्रयास करते रहना। अभिप्राय यह कि 1885 मे कांग्रेस की जो स्थापना हुई थी उसके लिए वातावरण बनाने का श्रेय या तो महर्षि दयानन्द को या आर्य समाज को है। महर्षि तो 1883 मे चले गए उनके पश्चात आर्य समाज किसी न किसी रूप मे देश की आजादी के लिए काम करता रहा है। इस लिए यदि आज हम इस योग्य हैं कि गणतन्त्र दिवस मनाए तो इसका श्रेय आर्य समाज को है परन्तु यह एक अत्यन्त निराशाजनक स्थिति है कि आर्य समाजी स्वय नही जानते कि देश को स्वतन्त्र कराने मे उनकी इस महान संस्था ने क्या भूमिका निभाई थी? मैं कई बार लिख चुका हू कि आर्य समाज इस समय नेतृत्वहीन है। जो समस्याए समय समय पर देश के सामने आती हैं। न तो उनकी तरफ हमारा ध्यान जाता है न हम अपने देशवासियो को विश्वास मे लेकर बताते हैं कि हमे क्या करना चाहिए। फिर भी मैं समझता हू कि स्वतन्त्रता दिवस और गणतन्त्र दिवस यह दो ऐसे पर्व है जब आर्य समाज को सक्रिय रूप मे आगे आकर देशवासियो को बताना चाहिए कि स्वतन्त्रता आन्दोलन मे आर्य समाज ने अपना क्या योगदान दिया था। कुछ लोग कहते हैं कि हमे राजनीति मे सक्रिय भाग नहीं लेना चाहिए। यद्यपि हमारे कई नेता लेते हैं समय समय पर वह देश की राजनीतिक समस्याओ के विषय मे अपने वक्तव्य देते रहते हैं। चुनाव के समय राजनैतिक दलो के लिए काम भी करते हैं, परन्तु जो काम हमे अवश्य करना चाहिए, वह यह कि हम जनता को बताए कि आर्य समाज ने देश की आजादी के लिए क्या कुछ किया है। 26 जनवरी को जो गणतन्त्र दिवस है उस मे भी हमे बढ चढ़ कर भाग लेना चाहिए, और सबसाधारण को यह बताना चाहिए कि यदि आज हम इस स्थिति मे हैं कि गणतन्त्र दिवस मना सकें तो इसका श्रेय आर्य समाज को है, यदि 1875 मे आर्य समाज की स्थापना न होती तो शायद 1885 मे कांग्रेस की स्थापना भी न होती और उसके पश्चात् देश की आजादी के लिए जो कुछ हुआ वह भी शायद न होता। इसलिए अपने इतिहास के इस पक्ष को अपने देशवासियो के सामने रखना अत्यन्त आवश्यक है।

—वीरेन्द्र

आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर शहर

आय व्यय विवरण सम्वत् 2041 तथा 2042 (पौष मास तक) एवं बजट 2043

क्र स	निधिया	वास्तविक आय पौष 2041 तक	वास्तविक आय पौष 2042 तक
1	सभा मुख्य कार्यालय	3650 00	4566 70
2	वेद प्रचार विभाग	28613 90	32640 50
3	आर्य मर्यादा साप्ताहिक	16798-20	13407 00
4	आर्य विद्या परिषद	27347 00	20192 35
5	साहित्य विभाग	1938 20	5971 20
6	सस्कृत विद्यालय		
7	विविध आय	64236 60	68008 32
		142584 10	144786 07
	कुल घाटा	18772-51	44865 40
	योग	161356 61	189651 47

निधिया	वास्तविक व्यय पौष 2041 तक	वास्तविक व्यय पौष 2042 तक
सभा मुख्य कार्यालय	43722 79	47647-24
वेद प्रचार विभाग	43705-14	54431-20
आर्य मर्यादा साप्ताहिक	32014-00	35637-23
आर्य विद्या परिषद	18647-05	19751-55
साहित्य विभाग	12736 03	9295 00
सस्कृत विद्यालय दीनानगर	2400-00	. . .
विविध व्यय	8131-60	22889-25
	161356-61	189651-47

निधिया	आय पौष 2041 तक	आय पौष 2042 तक	बजट 2043
सभा मुख्य कार्यालय			
आर्य समाजों से दशाश	2770-00	3447 70	5000-00
दायाद (सम्पति विभाग	743 00	489 00	1000-00
दशाश विशेष	137-00	630 00	5000 00
	3650-00	4566-70	11000 00
घाटा	40072 79	43080-54	60000 00
योग	43722-79	47646-24	71000 00
वेद प्रचार विभाग			
वेद प्रचार दान	9245-00	9410 00	15000 00
वेद प्रचार विशेष	13501 00	21328 00	100000-00
आर्य पर्व निधि	103 00	25 00	500 00
किराया (वेद प्रचार)	5764-90	1877-50	1500 00
	28613 90	32640 50	117000-00
घाटा	15091-24	21790-70	4500-00
योग	43705-14	54431-20	121500 00
आर्य मर्यादा हिन्दी साप्ताहिक			
आर्य मर्यादा दान	632 00	51 00	1000 00
„ शुल्क	3092 20	4598 00	12000 00
„ विशेषाक	1974 00	7878-00	10000 00
„ विज्ञापन	11100-00	880-00	2000 00
	16798-20	13407-00	25000-00
घाटा	15215-80	22230-23	36000-00
योग	32014-00	35637-23	61000 00

निधिया	व्यय पौष 2041 तक	व्यय पौष 2042 तक	बजट 2043
सार्वदेशिक सभा पत्र मास	1500 00		1000-00
वेतन कर्मचारी	28885 65	33286-75	50000-00
आडिट शुल्क	600-00	400-00	400-00
डाक आदि विविध व्यय	5714-49	6936 44	9000-00
अतिथि सत्कार व्यय	645-30	951 60	1200-00
दायाद (सम्पति विभाग)	6377-35	6072 45	9400-00
	43722 79	47647 24	71000-00
उपदेशक वेतन	21012 75	31166-15	90000 00
उपदेशक मार्ग व्यय	1379 20	2425-80	5000-00
वेतन वेद प्रचार कार्यालय	11706 20	13845-05	20000-00
डाक आदि विविध व्यय	3061-99	5264-30	5000-00
सहायता	650 00	1479-90	1500-00
सभा भवन के लिए व्यय	5895-90	250-00	...
	43705-14	54431-20	121500-00
वेतन व्यवस्थापक	7296-00	8358-50	11000-00
डाक एव विविध व्यय	3694 10	3673-33	5000-00
आर्य मर्यादा कागज	7417 40	4629-50	10000 00
आर्य मर्यादा छपाई	13606-50	12230-00	25000 00
रक्षा बन्धन कृष्णाष्टमी अक	———	3204-00	5000-00
दीपावली विशेषांक	———	3541-90	5000-00
	32014-00	35637 23	61000-00

आर्य विद्या परिषद् पंजाब

कालेजों स्कूलों से सहायता	12150 00	4126 00	15000-00	वेतन व्यवस्थापक	6310 30	6887 45	9500 00
धर्मशिक्षा पुस्तकों की बिक्री	8535-50	8247 85	15000-00	धर्म शिक्षा पुस्तकों का क्रय मूल्य	7558 00	6050 00	15000 00
,, परीक्षा शुल्क	6661 50	4831-50	10000 00	पारितोषिक, भाषण प्रतियोगिता	637 20	841-90	1000 00
बाल कल्याण कोष		2987 00	10000 00	उत्तर पत्तिका जाच कराई	325 00		1000 00
				डाक एव स्टेशनरी आदि व्यय	3816-55	5972 20	6500 00
					18647 05	19751-45	33000-00
				लाभ	8699 95	440 80	17000 00
योग	27347 00	20192 35	50000 00		27347 00	20192 35	50000 00

चमूपति साहित्य विभाग

साहित्य बिक्री से आय	1938 20	5971 20	10000 00	वेतन व्यवस्थापक	6029-05	4162-45	9000 00
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय		5250 00		साहित्य क्रय मूल्य	4054-18	3863 60	10000 00
	1938 20	11221-20	10000 00	साहित्य कागज व छपाई	2107 50	958-00	6000 00
घाटा	10797 83		20000-00	डाक आदि विविध व्यय	545 30	290 95	5000 00
योग	12736 03	11221-20	30000 00		12736-03	9295 00	30000 00

संस्कृत विद्यालय दीनानगर

घाटा	2400 00	———	———	वेतन अध्यापक	2400 00		
योग	2400 00				2400 00		

विविध व्यय

टेलीफोन से आय	129 50	57-00	200-00	बाढ पीड़ित सहायता		9100-00	
ब्याज से आय	62907 30	61599 32	80000 00	अभियोग व्यय	1511-75	272 20	2000 00
उपजाऊ भूमियों से आय	600 00	700-00	1000 00	अभियोग गुरुकुल रायकोट	671 55	5024 20	1000 00
राजार्य सभा	600-00	655 00	1000-00	बिजली व्यय	1157 00	1970 00	2000 00
लेखराम स्मारक टंकारा, संस्कृत विद्यालय		75-00		टेलीफोन व्यय	2367 90	1623 80	4000 00
बाढ़ पीड़ित सहायता	..	4922-00		औषधालय अम्बाला	2250 00	2250-00	3000 00
				राजार्य सभा	1~3 40	2649 05	3000 00
					8131 60	22889 25	15000 00
				व्यय से आय अधिक	56105 20	45119 07	67 00 00
योग	64236-80	68008-32	82200 00		64236 80	68008 32	82200 00

वीरेन्द्र	ब्रह्मदत्त शर्मा	कमला आर्या	युगल किशोर	देवदत्त नारंग
सभा प्रधान	सभा कोषाध्यक्ष	सभा महामन्त्री	सभा कार्यालयाध्यक्ष	सभा मुख्यगणक

२६ जनवरी गणतन्त्र दिवस पर विशेष—

वेद-मन्त्रों में वर्णित स्वराज्य का स्वरूप

लेखक—श्री डा कमल जी पु जाणी जामनगर (गुजरात)

26 जनवरी 1986 को हमारा लोकतन्त्र अपनी आयु के पैंतीस वर्ष पूर्ण कर छत्तीसवें वर्ष मे प्रवेश कर रहा है। शास्त्रीय शब्दावली मे कहें तो वह ब्रह्मचर्याश्रम अर्थात अभ्यास-काल के प्रथम दशक पूरा कर गृहस्थाश्रम अर्थात् विकास-काल दूसरे दशक मे प्रवेश कर रहा है। आयु के प्रारम्भिक पैंतीस वर्ष तो परीक्षण निरीक्षण में ही व्यतीत हो गए। वास्तविक विकास के लिए तो अब कटिबद्ध होना है। अत इस स्थिति मे आवश्यक है कि उसके सम्मुख कोई उच्च आदर्श उपस्थित हो जिसको ध्यान मे रख कर वह अपनी विकास यात्रा मे आगे बढ सके।

सामान्यतया ऐसा समझा जाता है कि लोकतन्त्र की भारत मे जो व्यवस्था की गई है वह पश्चिम की देन है किन्तु यह मान्यता वास्तविकता के बिल्कुल विरुद्ध है। वेदो मे स्वराज्य का जो स्वरूप वर्णित किया गया है, उसे देखने से स्पष्ट हो जाता है कि लोकतन्त्र की सर्वाधिक प्राचीन एव पवित्र भूमि भारत वर्ष अथवा आर्यावर्त्त ही है।

हमारे वेद ग्रन्थो मे ज्ञान विज्ञान की समस्त शाखाओ का समावेश हो जाता है। 'ऋग्वेद मे ज्ञान का निरुपण है, 'यजुर्वेद मे कर्म का महत्त्व प्रकट किया गया है सामवेद मे भक्ति की सरिता प्रवाहित है और 'अथर्ववेद मे ब्रह्म के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। इन चारो वेदो मे यत्र तत्र स्वराज्य का स्वरूप भी स्पष्ट किया गया है। यहा हम प्रमुख वेद मन्त्रो में वर्णित स्वराज्य के उसी रूप झाकी प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रजा की सर्वोपरिता

स्वराज्य में प्रजा ही सर्वोपरि है। दूसरे शब्दो मे प्रजा ही राजा है।

इस तथ्य का निरुपण ऋग्वेद (2 54 7) के 'स भन धा राजा " मे हुआ है। अथर्ववेद (4 8 1) का राजा राज्य अनुमन्यता इन्दम मत्र भी इसी तथ्य का अनुमोदन करता है। वैसे तो चारो वेदो में 'राज प्रकरण के अनेक श्लोक मिलते हैं, परन्तु अथर्ववेद के 12 वे काण्ड का प्रथम सूक्त इस सम्बन्ध मे विशेष उल्लेख है।

मनुस्मृति वल्मीकि रामायण, महाभारत अर्थशास्त्र आदि ग्रन्थो मे राजा प्रजा के सम्बन्ध की जो चर्चा मिलती है उसमे भी वेद मन्त्रो की प्रतिध्वनि सुनाई देती है। उदाहरण के लिए अर्थशास्त्र का निम्नाकित श्लोक देखा जा सकता है—

'प्रजा सुखे सुख राज्ञ प्रजाना च
हिते हितम्।
नात्मप्रिय हित राज्ञ प्रजाना त
प्रिय हितम ॥

अर्थात राजा का सुख प्रजा के सुख मे ही समाविष्ट है। प्रजा के हित में ही उसका हित सनिहित है। उसे आत्मप्रिय होकर नही किन्तु प्रजा प्रिय होकर कार्य करना चाहिए।

इस से स्पष्ट है कि स्वराज्य शासन पद्धति में प्रजा को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया है, प्रजा हित की रक्षा करना राजा अथवा शासक का प्राथमिक एव प्रमुख कर्तव्य है।

सहयोग और समानता

सहयोग और समानता वेद-वर्णित स्वराज्य के अभिन्न अग हैं। बिना सहयोग के कोई भी कार्य सुसम्पन्न नहीं होता। स्वराज्य की स्थिरता एव सफलता प्रजा के पारस्परिक सहयोग पर ही निभर है। इसी प्रकार समानता की भावना से भी स्वराज्य सुदृढ एव समृद्ध बनता है। यदि प्रजा के आचार विचार, रीति रिवाज रहन सहन आदि मे समानता नही है तो स्वराज्य उन्नति न कर पायेगा। इसी कारण वैदिक ऋषियो ने अनेक स्थानो पर सहयोग और समानता पर बल दिया है। जैसे,

(1) 'समानी प्रपा सहवो नभाग समाने
योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभि-
मिवाभित ॥"
(अथर्ववेद 3 30-6)

(2) 'सहृदय साम्मनस्यमविद्वेष
कृणोमि व।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्स जात-
मिवाघ्न्या ॥"
(वही, 3-30-7)

(3) "ये समाना समनसो जीवा जीवेषु
मामका।
तेषा श्रीर्मयि कल्पतामस्मिल्लोके
शत समा ॥"
(यजुर्वेद 19 4 6)

इन मन्त्रो में ऋषियो ने सहयोग और समानता का महत्व प्रदर्शित करने के लिए वार्तालाप की शैली का आश्रय लिया है।

प्रथम मन्त्र मे कहा गया है—तुम्हारे जल स्थान एक हो, तुम्हे आपस में बांट कर खाना चाहिए। मैं तुम सब को एक ही परिवार मे बाधना चाहता हू। जिस प्रकार चक्र के आरे अलग अलग होते हुए भी मिल जुल कर काय करते हैं उसी प्रकार तुम भी पारस्परिक सहयोग से काम करो।

दूसरे मन्त्र मे ऋषि कहते हैं—मैं तुम्हारे हृदयो मे समानता भरता हू और मनो को द्वेष रहित करता हू। जिस प्रकार गाय अपने बछड़े से प्यार करती है उसी प्रकार तुम एक दूसरे से प्रेम करते रहो।

तीसरे मन्त्र मे मनसा-वाचा-कर्मणा से समानता को स्वीकार करने वालो के लिए ऋषि सौ वर्ष तक समस्त वैभव का दान करने की तत्परता दिखलाते हैं।

इस प्रकार सहयोग और समानता वैदिक स्वराज्य के अविभाज्य अग हैं। इन दोनों के अभाव में स्वराज्य की सुरक्षा एव सुव्यवस्था खतरे में पड जाती है।

परिश्रम एव कर्त्तव्य कर्म

वैदिक ऋषि परिश्रम के पक्षधर हैं। ऋग्वेद (9 112-3) के एक मन्त्र में ऋषि अपने लिए 'कारुरहं' शब्द का प्रयोग कर कहता है कि— मैं कारु हू।' यह छोटा सा शब्द परिश्रम के बीज मन्त्र सा है। कर्त्तव्य कर्म परिश्रम का ही एक भाग है।

ऋग्वेद के ही एक दूसरे मन्त्र मे कहा गया है कि जो परिश्रम नहीं करता उसके साथ देवता मित्रता नहीं रखते—

"न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवा।'
(ऋग्वेद 4 33-11)

इसी प्रकार यजुर्वेद (40-2) के 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि' वाले प्रसिद्ध मन्त्र मे भी परिश्रम तथा कर्त्तव्य कर्म की महत्ता का ही उदघाटन हुआ है। सक्षेप में परिश्रम एव कर्त्तव्य कर्म के बिना स्वराज्य सु राज्य नही बन सकता।

इसके अतिरिक्त स्वराज्य की अनेक विशेषताए वेद-मन्त्रो मे वर्णित है किन्तु इस छोटे-से लेख मे उन विशेषताओ की चर्चा करना सम्भव नहीं है। इसलिए मुख्य-मुख्य विशेषताओ को ही सोदाहरण स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इन विशेषताओं मे वैदिक स्वराज्य का जो स्वरूप प्रकट होता है वह भारत के आधुनिक प्रजातन्त्र का पथ-प्रदर्शन करने के लिए पर्याप्त समर्थ है।

मकर संक्रान्ति के अवसर पर लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना की ओर से 14 1 86 मकर सक्रान्ति के पर्व पर पारिवारिक सत्सग श्रीमती यशवती जी भल्ला के निवास स्थान सिविल लाईनज मे हुआ।

इस पवित्र पर्व पर उन्होंने अपने नवजात पौत्र का नामकरण सस्कार भी कराया। यह एक सस्कार श्री सुरेन्द्र कुमार जी शास्त्री पुरोहित आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार मे सम्पन्न कराया तथा सुन्दर व्याख्या द्वारा सस्कार का महत्व बताया। शिशु का नाम गौरव रखा गया तथा सब ने हार्दिक आशीर्वाद दिया श्रीमती विद्यावती जी शर्मा तथा श्रीमती कमला जी आर्य के सुन्दर भजन हुए ऐसे आयोजनो का आस पड़ोस पर भी अच्छा प्रभाव पड़ता है। सब पधारी हुई बहिनो को शानदार पार्टी दी गई। यशवती जी भल्ला ने सब बहिनों का एव स्त्री आर्य समाज का धन्यवाद किया। सत्सग प्रत्येक दृष्टि से सफल रहा।

इस आर्य समाज की ओर से प्रति माह सक्रान्ति के दिन किसी न किसी परिवार में पारिवारिक सत्संग होता है यह सत्सग प्रतिमास अलग अलग मोहल्लो मे रखा जाता है। जिसमे सभी मोहल्ले की बहनें सम्मिलित होती है चाहे ही वह आर्य समाजी न हो इससे आर्य समाज का सन्देश बहुत से परिवारो मे पहुच जाता है।

मन्त्री
निर्मला बेरी

अन्धापन निवारण के संदर्भ में—

नेत्र सुरक्षा सम्बन्धी नियम

एवम् उपाय

नेत्रहीन व्यक्तियों के प्रति हमारे सबके मन में दया रहती है किन्तु अन्धापन क्यों है ? इसका प्रत्यक्ष ज्ञान हमें नहीं रहता। कम प्रकाश में काम करने, ऐनक (चश्मे) की जरूरत पड़ने पर भी उसे नहीं लगाना, आंखें थकी हो तब भी उनसे बराबर काम लेना इत्यादि बातों से जान बूझ कर आंखों की उपेक्षा करते हैं। इसी का बुरा परिणाम अन्धेपन की ओर ले जाता है और अन्धेपन की यातनाएं फिर मनुष्य को सहनी पड़ती हैं।

यदि व्यक्ति इस विपत्ति से बचना चाहता है, तो उसे इस विषय में सदा सतर्क रहना चाहिए और आंखों की देखभाल के नियमों को अच्छी तरह से पालन करना चाहिए। इसी विषय को ध्यान में रखते हुए मानव समाज के लिए आंखों की सुरक्षा के कुछ नियम दिए जा रहे हैं —

(1) पढ़ते समय और बारीक काम करते समय रात्रि को प्रकाश का प्रबन्ध अच्छा होना चाहिए। खास तौर से पढ़ते समय प्रकाश सीधा न आकर तिरछी ओर से आना चाहिए।

(2) किताब को टेढ़ी रखकर या गर्दन टेढ़ी करके पढ़ने की आदत नहीं डालनी चाहिए। पढ़ते समय पुस्तक कुछ सवा फुट की दूरी से अधिक नहीं होनी चाहिए।

(3) बहुत बारीक अक्षरों वाली पुस्तक अगर पढ़नी पड़े तो उस पर भरपूर प्रकाश की व्यवस्था होनी चाहिए।

(4) किताब पढ़ते समय गर्दन ऊंची हो या नीची परन्तु किसी भी हालत में पुस्तक लेट कर नहीं पढ़नी चाहिए। पुस्तक को ज्यादा से ज्यादा सीधा रखने का प्रयत्न करना चाहिए। कदापि झुक कर नहीं पढ़ना चाहिए।

(5) चलती गाड़ी में बहुत कम पढ़ना चाहिए यदि बहुत अधिक पढ़ना हो तो काफी समय बीच में आंखों को आराम देना चाहिए।

(6) व्यर्थ में आंखों पर दबाव नहीं डालना चाहिए। सिर दर्द के कारणों में दृष्टि-दोष भी हो सकता है। सिर में दर्द होने पर तुरन्त आंखों का परीक्षण नेत्र रोग के विशेषज्ञ डाक्टर से करना ठीक रहेगा।

(7) जरूरत महसूस होते ही ऐनक (चश्मा) कोताही किये बगैर लगानी चाहिए।

(8) अपने चश्मे के अलावा अन्य किसी व्यक्ति का चश्मा लगाने की कोशिश कभी नहीं करनी चाहिए। जिन कारखानों में—फैक्टरियों में आंख-धातु कण उड़ती हो वहां काम करते समय रक्षक चश्मों का प्रयोग अत्युत्तम है।

(9) रात को सोते समय खासतौर पर बिजली का प्रकाश बन्द करके ही सोना चाहिए। रात में यदि बहुत ही जरूरी हो तो रात्रि बल्ब का (जीरो-पावर) प्रयोग करना चाहिए। यथा सम्भव शयन कक्ष में अन्धेरा ही रहना ठीक है।

(10) सूरज उगने से पहले आकाश के नीले रंग की ओर देखना चाहिए ऐसा करने से आंखों की थकान दूर होती है। खास तौर पर रात्रि के वक्त तारों की तरफ देखने से आंखों में तरावट एवं शान्ति (आराम) मिलती है।

(11) तेज रोशनी या वैल्डिङ्ग की तेज रोशनी के समय तथा अग्नि की प्रचण्ड ज्वाला के समय खुली आंखों से नहीं देखना चाहिए। अगर देखना जरूरी ही हो तो रंगीन चश्मे का प्रयोग करना चाहिए।

(12) सूर्य ग्रहण को नहीं देखना चाहिए क्योंकि इस से आंख के पर्दे पर दाग पड़ जाते हैं तथा सूर्य की तरफ भी नहीं देखना चाहिए इससे निगाह पर बुरा असर पड़ता है।

(13) काजल तथा सुरमे की सलाई हर व्यक्ति की अलग-अलग होनी चाहिए।

(14) तौलिया (अंगोछा) एवं रूमाल हर व्यक्ति की अलग-अलग होनी चाहिए।

(15) जिस व्यक्ति की आंखें दुखनी आजावे या लाल हो जावे उसे अपनी आंखों का बचाव रखना चाहिए और शीघ्र ही आंखों के विशेषज्ञ डाक्टर से जांच करवानी चाहिए।

(16) आंखों में तिरछापन नजर आए तो जल्दी ही आंखों के विशेषज्ञ डाक्टर के पास जांच करवानी जरूरी है नहीं तो अपनी मर्जी से कोई भी दवाई नहीं डालनी चाहिए।

(17) भोजन में कुछ विशेष आहार एवं विटामिन्स की कमी के कारण भी आंख की नजर जाने का डर रहता है खास तौर पर विटामिन ए (A) की। इसमें शुरू शुरू में आंखों का सफेद हिस्सा धुंधला मटमैला-लाल या भूरी वक्त हो जाता है। फिर आंख के सफेद भाग पर सफेद त्रिकोण जैसी झिल्ली बन जाती है। आंखों की पुतली भी कुछ समय बाद प्रभावित हो जाती है। अन्त में आंख खराब हो जाती हैं तथा रोशनी खत्म हो जाती है एवं रात्रि अन्धता (रतौन्धी) अंधेरे में कम सूझना आदि आदि इस बात की चेतावनी है कि आंखें तेजी से खराब हो रही हैं।

(18) बच्चों की रोशनी और रंगों की पहिचान के लिए छोटी उमर में ही जांच हो जानी चाहिए जिससे उसका इलाज हो सके और वह अपने काम के बारे में सचेत हो जाए।

(19) अगर आंखों में कुछ पड़ जाए तो नेत्र रोग विशेषज्ञ को फौरन दिखा कर उसको निकलवा देना चाहिए।

(20) गर्भावस्था में अगर किसी स्त्री को श्वेत प्रदर (धरेना पड़ना) या गुप्त रोग की शिकायत हो तो इसका इलाज डाक्टर से फौरन करवा लेना चाहिए ताकि बच्चे के जन्म पर इसका असर बच्चे की आंखों पर न पड़े।

(21) बच्चे के जन्म के बाद फौरन उसकी आंखों को साफ और भीगी रूई से ढक देना चाहिए। पहले स्नान का नहाते वक्त पानी आंखों में नहीं जाना चाहिए। यदि बच्चे की आंखों से मवाद (रस्सी) या पानी आ रहा हो तो फौरन नेत्र-रोग विशेषज्ञ डाक्टर को जरूर दिखा देना चाहिए।

(22) बीमारी की हालत में या बीमारी से ठीक होने के तुरन्त बाद नहीं पढ़ना चाहिए।

(23) सफेद मोतिया के आप्रेशन के लिए जब आंखों में थोड़ी रोशनी हो तभी नेत्र विशेषज्ञ डाक्टर को दिखला देना अच्छा है। न कि आंख की रोशनी बिल्कुल खत्म हो जाने पर।

(24) अगर किसी मरीज की आंखों में दर्द होता है या ऐनक (चश्मे) जल्दी-जल्दी बदलने पड़ते हैं या रोशनी के चारों ओर रंगीन गोले दिखाई देते हों तो उसे तुरन्त नेत्र विशेषज्ञ से सलाह लेनी ठीक है।

(25) आंखों को साफ रखना उतना ही जरूरी है जितना शरीर को। सोने से पहले आंखों को ताजे पानी से धो लीजिए।

(26) वैसे भी यह न सोच कि पढ़ने से आंख खराब होती है या चश्मा लग जाता है। टेलीविजन से भी नहीं। कोशिश करिए किताब आंखों से एक फुट दूर हो और आप टेलिविजन से 3 मीटर दूर।

(27) आपकी जिन्दगी का उसूल होना चाहिए— 'कोई बीमारी नहीं तो कोई दवा नहीं।'

सत्यनारायण लाहोटी
मैनेजिंग ट्रस्टी
आर्य समाज सुजानगढ़ चेरिटेबल ट्रस्ट
सुजानगढ़ 331507 (राज)

मुरादाबाद के श्रीरामसरन जी वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश

वैदिक सत्संग गांधी नगर मुरादाबाद के संस्थापक श्रीरामसरन जी ने तृतीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर संगरूर (पंजाब) निवासी, श्री स्वामी प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी सदस्य वैदिक यति मण्डल से 24 12 85 को जन समूह के बीच वानप्रस्थ की दीक्षा ली और अपना शेष जीवन समाज सेवा के लिए समर्पित कर दिया तथा जन सेवा का दृढ़ संकल्प लिया है।

—राजेन्द्र कुमार
अध्यक्ष

डा. भवानी लाल जी भारतीय की नव प्रकाशित कृति

आर्य समाज के सम्बन्ध में लिखित तथा प्रकाशित समस्त भाषाओं के ग्रन्थों का विवरण तथा आर्य समाज के नियमों का विदेशों की विभिन्न 25 भाषाओं में अनुवाद मूल्य 25 रु (डाक व्यय सहित) अपनी प्रति आज ही निम्न पते से मंगवायें।

पता—डा भवानीलाल जी भारतीय पंजाब यूनिवर्सिटी—में सैक्टर 14 चण्डीगढ़।

आर्य समाज राजपुरा का समाचार

आर्य समाज राजपुरा पटियाला की ओर से लगभग प्रति मास आंखो का मुफ्त आपरेशन कैम्प गावो मे लगाया जाता है पिछले दो कैम्प बड सफल रहे। अब 18 1 86 स 25 1 86 तक सरकारी हाई स्कूल गाव बसन्तपुरा असुआ (पटियाला)मे लगाया जा रहा है।

आर्य समाज ने गत वर्ष मे चार गरीब (निर्धन) लडकियो की शादिया करवाई जिसकी सभी लोगो ने सराहना की इस कार्य से गरीब-मा-बाप को बहुत राहत मिली।

जिला आर्य सभा पटियाला ने जिला-भर मे प्रचार करने के लिए एक ऐसा भजनोपदेशक रखने का निश्चय अपनी बैठक 8 12-85 में किया जो भजनोपदेशक के साथ साथ आर्य समाज के सभी सस्कार भी करा सकता हो। वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा।

—मुनिचेतन देव

कविराज वैद्य प्रकाश चन्द्र शास्त्री के निधन पर श्रद्धांजलि

प्रसिद्ध आर्य कार्यकर्ता गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक कविराज वैद्य प्रकाशचन्द्र शास्त्री जी का अकस्मात निधन शनिवार 21 दिसम्बर 1985 को हो गया। उनका दाह सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से रविवार 22 दिसम्बर 1985 को निगम बोध घाट पर किया गया जिस में अनेक आर्य नेता उपस्थित थे।

अन्तिम शोक सभा बृहस्पतिवार दिनाक 2 जनवरी 1986 को उनके निवास स्थान ई-27, हौज खास, नई दिल्ली पर हुई। इस सभा का आयोजन आर्य समाज सरोजिनी नगर द्वारा किया गया। इस अवसर पर लाला रामगोपाल शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्रीओम् प्रकाश आयुर्वेदाचार्य, आचार्य विक्रम शास्त्री, श्री राम भज जी, सदस्य महानगर परिषद् और सरोजिनी मार्कीट के भाइयो और दीक्षा चिट फड की ओर से श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। श्री रोशन लाल गुप्ता ने अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति, रतन चन्द आर्य पब्लिक वैदिक अनुसन्धान समिति और आर्य समाज सरोजिनी नगर की ओर से भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

अन्तिम समय तक स्वर्गीय शास्त्री जी का सारा जीवन आर्य समाज की सेवा मे लगा रहा। वह हैदराबाद सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सेनानी थे। बहुत वर्षों तक आर्य समाज सहारनपुर और आर्य समाज शामली के मन्त्री रहे। कई वर्ष तक महाविद्यालय ज्वालापुर के मन्त्री रहे। 1953 से निरन्तर आर्य समाज सरोजिनी नगर की सेवा करते रहे और कई वर्ष तक प्रधान रहे। उन्ही के द्वारा वैदिक अनुसन्धान समिति का निर्माण हुआ। आर्य समाज विनय नगर में रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल, हकीकत राय हाल और यज्ञशाला का निर्माण भी उनके सहयोग से हुआ। वह अन्त तक आर्य समाज सरोजिनी नगर के कार्य मे लगे रहे।

उनके बडे सुपुत्र श्री अरुण भार्गव और सभी सुपुत्रो ने आश्वासन दिया कि वह सामाजिक कार्य मे अपना पूरा सहयोग प्रदान करेंगे और शास्त्री जी की अन्तिम इच्छानुसार आर्य समाज सरोजिनी नगर के मन्दिर का बड़ा द्वार श्री शास्त्री जी की स्मृति मे उनके परिवार द्वारा बनाया जाएगा। उनकी ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को 501 रु आर्य अनाथालय को 250 रु तथा अन्य सस्थाओ को दान दिया गया।

—रोशनलाल गुप्ता
प्रचार मन्त्री, आर्य समाज,
सरोजिनी नगर

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं



श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टैलोफोन 74250

रजि. न. पो.जे.एल. 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 40. 22 माघ सम्वत् 2042 तदनुसार 2 फरवरी 1986 दयानन्द 161 अंक प्रति 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये

विषनाशक हवन यज्ञ—

जादू वह जो सिर पर चढ़ कर बोले

लेखक—श्री यशपाल आर्य बन्धु आर्योपदेशक
आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद

23 दिसम्बर सन् 1984 को भोपाल के यूनियन कार्बाइड कारखाने में घटी उस कुख्यात गैस दुर्घटना से कौन परिचित नहीं होगा? सन् 84 जाते-जाते जो विष घोल गया था, उसके परिणाम अभी तक भोपालवासी भुगत रहे हैं। हजारो जाने गई, वह अलग से 6 दिसम्बर 84 को दूरदर्शन समाचारो मे इस तथ्य को स्वीकारा गया कि एक लाख से भी अधिक व्यक्तियो ने आंखों और फेफडो मे तकलीफ बताई है। इस विषैली गैस के प्रभाव से भोपाल मे एक नये प्रकार के कीडे देखे गए जो काटने पर बहुत दर्द करते हैं और दबाने से मरते भी नहीं। आखो, फेफडो एव अन्य तत्कालिक बीमारियो के अतिरिक्त इस के दूरगामी दुष्प्रभाव भी पडे, जिनकी आशका हमने अपने कई लेखो मे समय-समय पर व्यक्त की थी। वियतनाम युद्ध मे प्रयुक्त विषैली गैसो के दुष्परिणामो की उपलब्ध जानकारी के आधार पर हमने यह आशका व्यक्त की थी कि इस गैस के दुष्प्रभाव से गर्भस्थ शिशुओ तथा भावी गर्भ धारण करने वाली महिलाओ के गर्भस्थ शिशुओ पर विकृति की अत्यधिक सम्भावनाये हैं। हमारी इस आशका की पुष्टि मे समय-समय पर विभिन्न समाचार प्राप्त होते रहे हैं। नवभारत टाइम्स के 8 जनवरी सन् 85 के अंक मे इस तथ्य को स्पष्ट शब्दो में स्वीकारा गया था और बताया गया था कि भोपाल मे गर्भस्थ शिशुओ के सर बढ गए हैं। खून मे जहरीले तत्वो की बहुतायत हो गई है। भोपाल के विभिन्न अस्पतालो मे 4 दिसम्बर सन् 85 को गर्भपात के मामले काफी सख्या मे आए। लखनऊ स्थित औद्योगिक एव विष अनुसधान केन्द्र की डा एस वी चन्द्रा ने आशका व्यक्त की थी कि जिन गर्भवती महिलाओ पर विष का असर हुआ है, उनके बच्चो मे अनेक तरह की खराबिया आ सकती हैं। डा चन्द्र ने कहा था कि विष अनुसन्धान केन्द्र के विज्ञानियो ने इस के हर सम्भव प्रभाव को जाचने के लिए एक साल तक परीक्षण करते रहने की योजना बनाई है। इसमे कई कोणो से अध्ययन किया जाएगा। गर्भवती महिलाओ पर विष का दूरगामी असर होने की सम्भावना का ठीक से पता लगाया जाएगा। तान्त्रिक तन्त्र पर मिक के विषले प्रभाव का बारीक अध्ययन किया जाएगा। त्वचा पर शरीर के कोशिकाओ पर इस गस के दूरगामी प्रभाव का अध्ययन होगा। अभी तक के अध्ययन के आधार पर त्वचा श्वास तन्त्र मे गडबडी जैसे दमा फफडो की कार्य-क्षमता मे कमी, आंखें खराब होना और गर्भस्थ शिशुओ पर खराब असर पडने के आसार हैं। इसके अलावा गैस से प्रभावित लोगो के जिगर व गुर्दे को भी नुकसान पहुचा है। (देखें नवभारत टाइम्स 9-1-85) इसी समाचार पत्र के 2 मार्च 85 के अंक में श्री भारत डोगरा का लेख "जहर मे जूझ रहे लोगो का शहर' शीर्षक से छपा है। उसमे वे लिखते हैं कि—गैस के कारण हजारो लोगो को फेफडो की दीर्घकालीन बीमारिया हो गई है। अन्य कई समस्याओ का उल्लेख करते हुए वे लिखते हैं कि—'ऐसी ही एक विशेष समस्या गर्भवती महिलाओ व उनकी होने वाली सतान पर गैस के सम्भावित दुष्परिणाम की है। गर्भ गिरना, मृत बच्चे का जन्म होना, बच्चो मे विकृति होना, आदि की शिकायतें मिली हैं। यह स्थिति तो उन महिलाओ की है जो गैस दुर्घटना के समय गर्भ धारण की अन्तिम स्थिति मे थी। गैस द्वारा उन महिलाओ को और भी हानि होने की सम्भावना है जो उस समय गर्भ धारण की आरम्भिक अवस्था मे थी। एक तो उन पर व भ्रूण पर गैस का बुरा असर हुआ है तथा दूसरी इनमे से अधिकतर महिलाए सास आदि के कारण विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओ के कारण अनेक दवाइया खाने पर मजबूर हुई। इन दवाइयो का भी भ्रूण पर गलत असर पड सकता है। ऐसी स्थिति मे विकृत बच्चे पैदा होने का खतरा बढ गया है। कुछ महिलाए तो बाध्य होकर गर्भ गिराने की सुविधायें खोजने लगी हैं। एक अन्य समाचार के अनुसार भोपाल मे गत दिसम्बर 84 मे हुई गैस दुर्घटना से यूनियन कार्बाइड के आस-पास रहने वाले 14 वर्ष से अधिक आयु के हर सौ जीवित लोगो म 28 के फेफडे खराब हो चुके हैं।

(देखें नवभारत टाइम्स 4-5 85)

उपरोक्त सभी दुष्परिणामो से बचने के लिए हमने अपने कई लेखो मे इस बात पर बल दिया था कि भोपाल मे विष के प्रभाव को दूर करने के लिए बडे बडे यज्ञ होने चाहिए। क्योंकि घृत विशेषतया गोघृत मे विषनाशन की अद्भुत शक्ति है। और फिर जब 3 दिसम्बर की रात्रि को भी भोपाल के दो आर्य परिवार हवन-यज्ञ के करने से उस विषैले प्रभाव से बच गए तो फिर हवन यज्ञ को अपनाना सर्वथा युक्तिसगत और अनिवार्य है। (देखें हिन्दू 7 अप्रैल 85 तथा वैदिक क्रांति जून 85) आर्य समाज के प्रयत्नो से वहा हवन-यज्ञ होते भी रहे हैं किन्तु कोई बडे पैमाने पर यज्ञ होने की बात सुनने मे नही आई। हर्ष का विषय है कि हवन यज्ञ की वैज्ञानिकता एव महत्ता को समझते हुए सनातन धर्मावलम्बियो ने भोपाल मे एक बृहद यज्ञ का आयोजन प्रारम्भ किया है। 5 जनवरी सन 85 के नवभारत टाईम्स मे एतद विषयक समाचार पढ कर बडी प्रसन्नता हुई कि भोपाल स्थित टी टी नगर (तातिया तोपे नगर) मे एक बृहद यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है जिस मे 24 लाख दस हजार चार सौ 41 आहुतिया दी जायेगी और जिसमे 25 क्विटल घृत एव अन्य सामग्री तथा व्यवस्था, भोजन दक्षिणा आदि में छ लाख रुपये की व्यय की सम्भावना है। जो कार्य आर्य समाज को आगे आ कर करना चाहिए था, वह तथाकथित सनातन धर्म वाले कर रहे हैं। अत साधुवाद के पात्र हैं। बेशक थोडी पौराणिकता तो उसमे होगी ही किन्तु यज्ञ के जो भौतिक लाभ हैं, एव उससे पर्यावरण की जो शुद्धि होगी, वह अपना महत्व रखती है। हमे इस बात का तो सन्तोष है कि जिस बात को सनातनधर्मी मानते नही थे, भोपाल की इस गैस दुर्घटना ने उन्हे उसी को मानने के लिए मजबूर कर दिया है। यह ऋषि का जादू नही तो फिर और क्या है? सत्य है—

ऋषिराज तेज तेरा चहु ओर छा रहा है।
तेरे बताये पथ पर ससार आ रहा है॥

महिला जागरण-समाज सुधार और स्वतन्त्रता

लेखक—आशारानी जी व्होरा दिल्ली

देश की आजादी सचमुच दो सदियों का सपना सच और अब हकीकत पर हकीकत कैसी ?

आज सस्ता रोमानी सैक्स और अपराध से सना साहित्य पढ़ने वाली नई पीढ़ी का बहुसख्यक वर्ग यह जानता तक नही कि हमने इस आजादी के लिए क्या कीमत चुकाई थी ? दासता और दोहन के अन्धेरो को काटने के लिए कहा-कहा कैसी-कैसी मिशालें जलाई थी ?

स्वतन्त्रता सेनानी महिलायें जो साक्षात मिशालें। आइए उनकी याद को एक बार फिर प्रज्जवलित करें कि स्वाभजन्य कायरता विषमता और विखण्डन का वतमान अन्धेरा चीर कर साहस समता और एकता की ज्योति फूट सके।

1857 की क्रान्ति को अग्रेजो ने गदर का नाम दिया था और उसका कारण बताया था सैनिको द्वारा चमड़ वाले कारतूस लेने से इन्कार करना। वर्षों तक भारतीय स्कूलो मे पाठय पुस्तको के माध्यम से बच्चो को स्वतन्त्रता के पहले सग्राम की यही कहानी पढ़ाई जाती रही। लेकिन यह अग्रेज इतिहासकारो की चाल थी कि भारतवासी अपने स्वतन्त्रता सग्राम के वास्तविक इतिहास से अपरिचित रहे। लेकिन अब भ्रम का यह जाल छिन्न भिन्न हो चुका है। कोई भी सजग पाठक आज इस बात से अनभिज्ञ नही होगा कि 1857 की क्रान्ति न तो पहला विद्रोह था, न चमड़ के कारतूसो वाली तात्कालिक घटना की उपज। वह क्रान्ति तो वर्षों की दबी छटपटाहट का एक विस्फोट था हा, उसे पहला बड़ा सगठित विद्रोह अवश्य कह सकते हैं।

1857 के पूर्व भी हम लड़ी थी।

वास्तव मे अग्रेजो के विरुद्ध हमारा सग्राम 1757 मे पालासी के मैदान मे हमारी पहली बड़ी हार के साथ ही शुरू हो गया था। भारत मे अग्रेजी राज्य के पैर जमने शुरू ही हुए थे कि साथ ही शुरू हो गए थे आजादी के लिए हमारे प्रयत्न और विद्रोह। 'जगल महाल का विद्रोह सन्यासी विद्रोह' 'चआड़ विद्रोह वहाबी विद्रोह 'कितूर विद्रोह 'सथाल विद्रोह आदि इसके प्रमाण हैं। यहा तक कि इन विद्रोहों मे महिलाओ ने भी न केवल भाग लिया उनका नतृत्व और सचालन भी किया। मजनू शाह फकीर भवानी पाठक आदि सन्यासी विद्रोह के अन्य नेता वर्षों तक छापामार लड़ाई लड़ने के बाद अन्तत एक-एक करके अग्रजो द्वारा बदी बना लिए गए या मार डाले गए। पर सन्यासी-विद्रोह की महान नेत्री देवी चौधरानी अन्त तक अग्रेजो के हाथ नहीं आयी थी। देवी चौधरानी के पास छापामार बरकदाजो की एक बड़ी सेना थी। उनके दल के सन्यासी योद्धा अग्रेजो की कोठिया लूट कर गरीब किसानो मजदूरो पर उनके अत्याचार का बदला लेते थे और लूट का धन उन्ही गरीबो मे वितरित कर देते थे। अग्रेज इतिहासकारो ने इन्हे चोर लुटेरो की और इनकी नेता देवी चौधरानी को दस्यु रानी' की सज्ञा दी। लेकिन वह दस्यु नही गरीब भारतीयो को विदेशी शासको के घोर जुल्म के चगुल से मुक्त कराने और अग्रेजो को इस भूमि से खदेड़ने के लिए कटिबद्ध स्वतन्त्रता सेनानी थे जिनका लोहा विद्रोही योद्धा और अग्रेज अधिकारी सभी मानते थे।

चआड़ विद्रोह की नेत्री रानी शिरोमणि भी उन गरीब किसानो और स्थानीय सैनिको (पाइको) के हको के लिए लड़ी, जिनकी जमीन अग्रेज अधिकारियो और उनकी मिली भगत मे स्थानीय जमीदारो ने हड़प ली थीं। और जिन्हे सेना की नौकरियो से निकाल दिया गया था। रानी शिरोमणि के नेतृत्व मे लड़ी गयी चुआड़ो और अग्रेजो के बीच इस लड़ाई मे दोनों ओर जन धन की अपार हानि हुई थी। लेकिन रानी के बन्दी बना लिए जाने पर भी चुआड़ो ने हार नहीं मानी थी, तो अन्तत अग्रेजों को रानी से सधि करनी पड़ी थी। रानी कैद से मुक्त हुई और चुआड़ो को उनकी जमीनें और नौकरिया वापस मिली। यह निश्चित ही रानी शिरोमणि की जीत थी।

टीपू सुल्तान की समकालीन शिवगगा स्टेट की रानी वेलुनाचियार और कितूर की वीर रानी चेनम्मा ने दक्षिण में अग्रेजो को नाको चने चबवाये, तो उत्तर मे नेपाल की महारानी साम्राज्य लक्ष्मी देवी और पजाब की महारानी जिन्दा अन्त में हार कर भी आजादी के लिए अग्रेजो के विरुद्ध जी जान से लड़ी थीं।

ये सारी मिशालें 1857 क्रान्ति से पहले की हैं।

क्रान्ति की हीरोइनें

1857 क्रान्ति यद्यपि तत्कालीन राजाओ की आपसी फूट के कारण असफल हो गई थी और इस असफलता ने देश की आजादी को 90 वष आगे धकेल दिया था। पर भारत से ईस्ट इण्डिया कम्पनी के पैर उखाड़ने और सवैधानिक तरीको से किस्तो मे आजादी देने का माग भी इसी से प्रशस्त हुआ। इस क्रान्ति के दौरान तो हजारो महिलाओ ने अपनी और अपने पतियो पुत्रों की बलि दी। अकेले मुजफ्फरनगर के आस पास के गावो की 225 स्त्रियो को गोली से उड़ा दिए जाने का उल्लेख मिलता है। मरठ, मैसूर, नासिक निमाड़ (मध्य भारत) और दिल्ली मे भी गोली खाकर या फासी पर लटकाया जाकर शहीद होने वाली अनेको महिलाओ के नाम मिले हैं अज्ञात न जाने कितने होंगे ?

क्रान्ति का नेतृत्व करने वाले प्रमुख नाम हैं।

झासी की रानी लक्ष्मी बाई। लखनऊ की बेगम हजरत महल। दिल्ली की बेगम जीनत महल। रानी तुलसीपुर रानी रामगढ़ रानी तेजबाई मूकलाई, जमानी बेगम, महारानी तपस्वनी आदि नतकी अजीजन जैसी वेश्याय भी आजादी के लिए लड़ते हुए शहीद हो गई और कुमारी मैना जैसी किशोरिया भी। मैना को तो जिन्दा ही चिता मे भून दिया गया था।

नवजागरण काल

1857 से 1905 तक का काल क्रान्ति काल कहा जाता है। पर 1857 क्रान्ति की असफलता ने इस काल मे भारत मे जनजागरण की जिस लहर को जन्म दिया, उसमे ब्रह्म समाज आर्य समाज प्रार्थना समाज, वेद समाज, रामकृष्ण मिशन थियोसोफिकल सोसायटी, नामधारी सम्प्रदाय जैसी अनेकों सुधारक सस्थायें और इनसे जुड़ी समाज-सेविका सामने आयीं। पण्डिता रमाबाई, रमाबाई रानाडे, आनन्दी जोशी, मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी, अनुसूया बाई काले, बाबा कर्वे अनन्दिका बाई गोखले, सेवी अबला बोस, हुकमी आदि। हुकमी ने 'कूका विद्रोह के समय भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

असहयोग आन्दोलनो मे

इसके बाद 1905 के 'बग भग' आन्दोलन के साथ बंगाल से स्वदेशी आन्दोलन' की जो लहर उठी, उसमें पूना, अहमदाबाद और दक्षिण के स्वदेशी प्रचार तथा विदेशी वस्तु बहिष्कार के इस आन्दोलन में महिलाओं की ही प्रमुख भूमिका रही। बाद में गाधी जी के आह्वान से जब लक्ष-लक्ष महिलाएं स्वतन्त्रता सग्राम से जुड़ी तो 1918 से 1941 के विभिन्न असहयोग आदोलनों और 1942 के 'भारत छोड़ो' उग्र आन्दोलन में भी विदेशी वस्तु बहिष्कार का यह क्रम पूरे जोर शोर के साथ चलता रहा।

लोकमान्य तिलक के गर्म दल से जुड़ी डा ऐनीबेसेंट ने एक ओर 'होमरूल आदोलन' चलाया, दूसरी ओर उनके कांग्रेस अध्यक्षता काल मे सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में महिला मताधिकार की माग भी उठाई गई।

तब महिला जागरण, समाज-सुधार और स्वतन्त्रता के सभी मोर्चों पर महिलाये एक साथ तैनात थी और पढ़ी-बेपढ़ी, अमीर-गरीब ऊच-नीच सभी वर्गों की स्त्रियां घरो से निकल पुरुषो के साथ मिल कर स्वतन्त्रता-सग्राम मे उत्तर आई थी। केवल 1920-32 के आन्दोलन मे ही 17000 स्त्रियो के जेल जाने का रिकार्ड मिलता है। अप्रत्यक्ष भागीदारी का तो कोई हिसाब ही नही।

पारिवारिक व आर्थिक कष्ट उठाने में कही अस्मिता तक की बलि देने मे उनका बलिदान प्रत्यक्ष भागीदारी से कहीं अधिक है। इन सभी ज्ञात-अज्ञात सेनानियो को मूक श्रद्धाजलि देने के साथ यहा कुछ प्रमुख नाम ही गिनाए जा सकते हैं —

क्रमश

सम्पादकीय—

आर्य समाज कलकत्ता का शताब्दी स्थापना समारोह (4)

इस क्रम के पिछले लेखो मे मैंने लगभग एक सौ वर्ष पहले महर्षि दयानन्द सरस्वती के बगाल मे प्रवास के समय जो परिस्थितिया वहा पैदा हुई थी और जिनके कारण आर्य समाज की स्थापना हुई थी उसकी कुछ जानकारी पाठको को दी थी। यह लेख लिखने से मेरा अभिप्राय यह भी था कि आर्य जनता को महर्षि की गतिविधियो के विषय मे कुछ पता चलता रहे। आज न तो आर्य समाज एक विश्व संगठन के रूप में देश देशान्तर मे वैदिक धर्म का प्रचार कर रहा है। इस लिए हम उन कठिनाईयो का अनुमान नहीं लगा सकते जो आज से 125 वर्ष पहले महर्षि दयानन्द के सामने आई थी फिर भी वह अपना काम करते गए और आर्य समाज का एक ऐसा बीज बो गए जो आज एक वट वृक्ष का रूप धारण कर गया है। इस पर हम जितना भी गर्व करें कम है।

आर्य समाज कलकत्ता की स्थापना जिन परिस्थितियो मे हुई वह तो मैंने अपने लेखों मे बता दी परन्तु इस समाज ने पिछले एक सौ वर्ष मे कितनी प्रगति की है, इसका कुछ अनुमान उस इतिहास से लगा सकते हैं जो शताब्दी समारोह के अवसर पर आर्य समाज ने 700 पृष्ठो पर आधारित अपना इतिहास प्रकाशित किया। इसके लेखक प्रसिद्ध विद्वान् प्रो उमाकान्त जी उपाध्याय हैं। उनका और उनके परिवार का सारा जीवन आर्य समाज की सेवा मे ही व्यतीत हुआ है, और वह स्वय वैदिक साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित हैं। इस लिए उन्होने जो इतिहास लिखा है, उसे पढ कर आर्य समाज कलकता की पिछली एक सौ वर्षों की गतिविधियो का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है।

यह शताब्दी समारोह 21 दिसम्बर 1985 से लेकर 29 दिसम्बर 1985 तक हुआ। इसका उद्घाटन बगाल के महामहिम राज्यपाल श्री उमाशकर जी दीक्षित ने किया था। इसमे एक वेद सम्मेलन भी हुआ था जिसकी अध्यक्षता गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डा. सत्यकेतु विद्यालकार ने की थी। एक महिला सम्मेलन हुआ था जिसकी अध्यक्षता श्रीमती प्राचार्य निर्मला मिश्र ने की थी। युवक सम्मेलन की अध्यक्षता श्री प्रो उत्तम चन्द जी शरर ने की थी। राष्ट्रीय एकता सम्मेलन की अध्यक्षता मेरे जिम्मे लगाई गई। शिक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता ज्वालापुर महाविद्यालय के उप कुलपति डा कपिलदेव द्विवेदी ने की। इसके अतिरिक्त श्री अमरस्वामी जी महाराज, श्री महात्मा आर्य भिक्षु जी, श्री डा. वाचस्पति उपाध्याय, श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी, श्री डा विशुद्धानन्द जी शास्त्री और दूसरे कई विद्वानों ने समय-समय पर अपने विचार इन सम्मेलनों मे रखे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले वानप्रस्थ ने भी एक सम्मेलन की अध्यक्षता की। भारत सरकार के दो मन्त्री श्री हरिकृष्ण लाल भगत और श्री सीताराम केसरी भी वहा गए थे। मेरे लिए यह कहना कठिन है कि इस सम्मेलन पर कितना व्यय हुआ होगा, परन्तु मैं समझता हू कई लाख हुआ होगा। इसके दो तीन समारोह अत्यन्त प्रभावशाली और सफल रहे हैं। एक तो इसकी शोभा यात्रा जिसके विषय मे कहा जाता है कि इतना बडा नगर कीर्तन इससे पहले कलकता मे बहुत कम देखा गया है। यजुर्वेद पारायण यज्ञ लगभग एक सप्ताह चलता रहा। कवि दरबार श्री उत्तम चन्द जी शरर की अध्यक्षता में हुआ। जो बहुत उत्साह जनक और प्रभावशाली था। श्री अमरस्वामी जी महाराज की अध्यक्षता मे एक प्रचार गोष्ठी भी हुई, जिसमें आर्य समाज की प्रचार प्रणाली में किसी सशोधन की आवश्यकता है या नही, इस पर भी विचार किया गया।

तात्पर्य यह है कि यह शताब्दी सम्मेलन प्रत्येक दृष्टि से सफल और प्रभावशाली रहा है। इस के लिए मैं उस समाज के प्रधान श्री सीताराम जी आर्य श्री पूनमचन्द्र जी आर्य मन्त्री, श्री गजानन्द आर्य स्वागत मन्त्री, श्री धनश्याम दास जोगस स्वागताध्यक्ष, श्रीराम आर्य सयोजक को बधाई देता हू। इनके अतिरिक्त कुछ और भी आर्य बन्धु हैं जो अभिवादन के पात्र हैं। एक वहा के प्रसिद्ध आर्य समाजी, श्री मुलखराज मल्होत्रा और दूसरे श्री लक्ष्मनारायण लाहोटी हैं।

कलकता समाज की महिलाओ ने भी बढ-चढ कर इस सम्मेलन मे भाग लिया था और इसे सफल बनाने मे उनका विशेष योगदान रहा है। एक और समारोह की ओर मैं विशेष ध्यान दिलाना चाहता हू। इस अवसर पर बगाल के पुराने आर्य समाजियो को सम्मानित किया गया जिन्होने हैदराबाद के सत्याग्रह मे भाग लिया था, उन्हें भी सम्मानित किया गया। और जिन्होने इस सम्मेलन को सफल बनाने मे अपना योगदान दिया था उन्हे भी सम्मानित किया गया। आर्य समाज के सेवको को सम्मानित करने की प्रथा बहुत अच्छी है। प्रत्येक आर्य समाज को अपने सेवको को सम्मानित करना चाहिए। इससे उन्हे भी उत्साह मिलता है और दूसरो को भी प्रेरणा मिलती है।

मैंने इन चार लेखो मे आर्य समाज कलकता की शताब्दी समारोह के विषय मे यह सब कुछ केवल इस लिए लिखा है कि इसे पढ कर दूसरी आर्य समाजो के अधिकारियो को भी प्रेरणा मिले। मैं जानता हू कि आर्य समाज कलकता को न धन की कमी है न कार्यकर्ताओ की। परन्तु केवल धन से काम नही चलता, जब तक कार्यकर्ताओ मे लगन और उत्साह न हो। वह कलकता के आर्य भाईयो मे मुझे बहुत कुछ देखने को मिला। इसलिए उनकी शताब्दी की सफलता पर मैं उन सब को बधाई देता हू, और आशा करता हू कि बगाल मे दिन दुगनी रात चौगुनी आर्य समाज प्रगति करेगी।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज जालन्धर की शताब्दी

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर बहुत पुरानी आर्य समाज है। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, श्री लाला देवराज सोन्धी, श्री रायबहादुर बदरी दास, श्री लाला राम कृष्ण जी और कुछ दूसरे प्रसिद्ध आर्य समाजियो का इस समाज से सम्बन्ध रहा है। इसे स्थापित हुए एक शताब्दी हो गई है और अब यह अपना शताब्दी समारोह मना रही है। हम सब के लिए यह गर्व का विषय है कि हमारी एक समाज ने देश और समाज की सेवा मे एक सौ वर्ष व्यतीत किए हैं। 26 जनवरी से जो यज्ञ प्रारम्भ किया गया है। 2 फरवरी को उसकी पूर्णाहुति डाली जाएगी। उससे एक दिन पहले शनिवार पहली फरवरी को शोभा यात्रा निकालने का प्रबन्ध हो रहा है इस अवसर पर बाहिर से भी कई विद्वान् आ रहे हैं। वैसे तो मेरा पजाब को सब आर्य समाजो से यह निवेदन है कि वह पहली और दो फरवरी को जालन्धर पहुच कर इस शताब्दी समारोह मे सम्मिलित हो। परन्तु जालन्धर जिला की सब आर्य समाजो से मैं विशेष रूप से प्रार्थना करना चाहता हू कि वह इस समाज के शताब्दी समारोह को सफल बनाने मे अपना पूरा-पूरा सहयोग दे। पजाब मे कई और भी आर्य समाजे हैं। जिन्होने अपने जीवन के सौ वर्ष व्यतीत कर लिए है उन सब को भी अपनी शताब्दियां मनानी चाहिए, परन्तु पूरी तैयारी के साथ और सब का सहयोग लेकर। सगठन मे ही शक्ति है। इस लिए हमे अपने सगठन को शक्तिशाली और प्रभावशाली बनाना चाहिए। आगे पीछे जो भी मतभेद हो ऐसे वक्त मे उन सब को भुला कर अपने सगठन और एकता का प्रदर्शन करना चाहिए। इस लिए हमारा कर्त्तव्य हो जाता है कि हम आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर की शताब्दी स्थापना समारोह को सफल बनाने मे अपना पूरा-पूरा सहयोग दें। इस की आवश्यकता पजाब की वर्तमान परिस्थितियो मे और भी अधिक है।

—वीरेन्द्र

आज हम कहां खड़े है–

आर्य समाज और राजनीति

लेखक—श्री प. सत्यदेव जी वेदालकार जालन्धर

(गताक से आगे)

भारत मे बम—विस्फोट के कारण क्रान्ति का वातावरण गर्म हो रहा था। उसका प्रभाव विदेश के भारतीयो पर था। उन्होने "दि इण्डियन होमरूल सोसायटी" की स्थापना की तथा 'इण्डियन सोशियोलौजिस्ट" समाचार पत्र निकाला। इस ही सिल सिले मे उनके प्रभाव से भाई परमानन्द जी तथा ला हरदयाल जी एम, ए, आदि आए जिन्होने आगे चल कर क्रान्ति के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। सर कर्जन वायली की हत्या करने वाले क्रान्तिकारी श्री मदन लाल ढींगरा का भी उन के साथ सम्बन्ध था। 1905 से 1914 तक श्याम जी कृष्ण वर्मा ने इगलैड तथा फ्रास में रह कर राष्टीय आन्दोलन चलाया। 1914 मे प्रथम महायुद्ध प्रारम्भ होने पर अपनी क्रान्तिकारी प्रवृत्तियो को त्याग कर उन्हे स्विटजरलैड जाना पड़ा। वहा 1930 मे उनका स्वर्गवास हुआ।

1883 से 1906 तक का समय आर्य समाज के लिए प्रचार तथा शिक्षा-सस्थाओ के प्रसार का समय था। देश भर मे भी कोई उल्लेखनीय राजनीतिक आन्दोलन नहीं चला। 1905 मे लर्ड कर्जन द्वारा बग-भग ने बगाल की पीडा को सारे देश ने अनुभव किया। पजाब मे इस आन्दोलन को उठाने वाले प्रमुख व्यक्ति लाला लाजपतराय तथा उनके कुछ आर्य साथी थे। लाला जी को इस आन्दोलन के कारण माडले के किले मे बन्द किया गया। इसके साथ ही आर्य समाज की सस्थाओ पर सरकार की सदेह भरी दृष्टि से आपत्ति और कठिनता का युग आ गया। इन्हे अग्रेज विरोधी भावनाओ का केन्द्र समझा गया।

इस सन्देह का पनपाने वालो मे विरोध की प्रबल भावना भी थी जो पजाब के मिशनरियो मे ऋषि दयान द के पजाब आने पर प्रारम्भ हुई थी। ऋषिवर के आने मे पहले ईसाई मिशनरियो की पजाब की भूमि अपने प्रचार के लिए बहुत अनुभव होती थी। आर्य समाज ने न केवल इनसे प्रचार को विफल किया अपितु ईसाई बने हिन्दुओ की शुद्धि का कार्य भी जोर शोर मे करना प्रारम्भ किया।

आर्य समाज क शिक्षा कार्य ने, विशेष कर गुरुकुलो की स्थापना ने भी सरकार के सन्देह को पुष्ट किया। अग्रेजी सरकार के प्रभाव से उन्मुक्त प्रत्येक संस्था देश भक्ति का स्थान समझी जाती थी।

1918-1919 मे प्रथम महायुद्ध की समाप्ति पर रौलट एक्ट या काला कानून बनाने पर महात्मा गाधी न जो देश व्यापी सत्याग्रह प्रारम्भ किया, उस ने हजारो आर्य समाजियो को काग्रेस की ओर आकृष्ट किया। डा सत्यपाल जिन्होंने 1914-1918 के युद्ध मे सरकारी सेवा स्वीकार की थी। इस आन्दोलन मे आ गए और जीवन भर गाधी जी के अनुयायी रहे। उनके साथ प रामभज दत्त आदि अनेक आर्य समाजी सम्मिलित हुए। सत्याग्रह के समाचार ने स्वा श्रद्धानन्द को, जो पहले कुछ मतभेद रखते थे, युद्ध मे खीच लिया उनके साथ ही सहस्रो आर्य लोग सत्याग्रह मे आए। मार्शल-ला के दिनो मे इसी से चिढ कर डी ए वी सस्थाओ के विद्यार्थियों पर अत्याचार किए गए। 1919 मे मार्शल-ला के बाद जो काग्रेस का शानदार अधिवेशन हुआ उसकी सफलता मे स्वामी श्रद्धानन्द के कुशल नेतृत्व मे पजाब की आर्य समाजो का बहुत बडा योगदान था।

1919-1920 मे स्वतन्त्रता आन्दोलन मे भाग लेने से पहले स्वामी श्रद्धानन्द तथा अन्य आर्य नेताओ को काग्रेस को साथ देने मे कुछ हिचक थी। उसके दो मुख्य कारण थे। एक तो आर्य समाज के दृष्टिकोण मे भारत का और भारतीय सस्कृति का जो रूप था वह काग्रेस दृष्टिकोण मे नही था। प्रारम्भ से ही काग्रेस मुसलमानो की उनकी परम्पराओ को, उनके अधिकारो को भारतीय जीवन का एक अनिवार्य आवश्यक अग मानती थी। खिलाफत आन्दोलन के स्वतन्त्रता आन्दोलन के साथ मिलने पर यह बात और भी अधिक स्पष्ट हो गई। केवल इस्लाम ही नहीं हिन्दू धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मों की विचारधाराओ का भी काग्रेस की दृष्टि मे एक समान महत्व था।

दूसरे आर्य समाज का दृष्टिकोण धर्म प्रधान, नैतिकता प्रधान था। राजनीतिक सस्थाओं मे इस दृष्टिकोण का कोई अधिक महत्व नहीं। स्वामी श्रद्धानन्द तथा अन्य आर्य सज्जन काग्रेस मे वह आचरण की पवित्रता की भावना तथा नैतिक विचारो का महत्व नही अनुभव करते थे।

हिन्दू हितों की उपेक्षा भी आर्य समाज के क्षत्र मे काग्रेस के प्रति अपेक्षा अथवा अलगाव की भावना का कारण प्रारम्भ से अब तक रहा है। यह आगे चल कर और स्पष्ट हो जाएगा।

कुछ भी हो 1919 के सत्याग्रह आन्दोलन मे आर्य समाज के सहस्रो लोगो तथा गुरुकुल जैसी आर्य सस्थाओ ने डट कर भाग लिया। डी ए वी सस्थाओ ने ऐसा उत्साह नही दिखाया।

स्वामी श्रद्धानन्द ने 1920 से ही काग्रेस मे अछूतो के उद्धार का प्रश्न उपस्थित किया। प्रारम्भ मे काग्रेस गाधी जी की काग्रेस मे इसका स्वागत किया गया। पर मुसलमानो के विरोध के कारण आगे चल कर इसकी उपेक्षा की गई। परिणामत 1921 के लगभग स्वामी श्रद्धानन्द तथा उनके साथी काग्रेस आन्दोलन से अलग हो गए और अस्पृश्यता निवारण तथा शुद्धि आन्दोलन की ओर चले गए।

यहा यह स्पष्ट समझना चाहिए कि स्वामी श्रद्धानन्द आदि के अलग होने पर भी आर्य भाईयो के सहस्रो की सख्या मे काग्रेस के साथ-साथ राजनीतिक आन्दोलन मे लगे रहे। स्वय श्री इन्द्र जी, स्वामी श्रद्धानन्द के सुपुत्र ने भी काग्रेस का मार्ग नही छोडा। वे शुद्धि आन्दोलन मे सम्मिलित न हुए और अन्त जीवन तक काग्रेस के अनुयायी रहे।

जिन दिनो श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने योरुप मे क्रान्तिकारी दल का गठन किया था। उससे कुछ पहले से ही भारत मे भी सशस्त्र क्रान्ति की भावना उत्पन्न हो चुकी थी। आर्य समाज के क्षत्र मे भी इस सशस्त्र क्रान्ति का समर्थन था। अग्रेजी सरकार को प्रारम्भ से ही सन्देह था कि गुरुकुल कागडी मे भी ऐसे क्रान्तिकारी लोग आते रहते हैं। यह ठीक है कि उत्तर प्रदेश के लार्ड मेस्टन तथा वायसराय चेम्सफोर्ड के गुरुकुल आने पर इस सन्देह का बहुत कुछ निवारण हुआ, पर वस्तुत गुरुकुल में क्रान्तिकारी आते थे, ऐसा वहाँ के रहने वालों का निश्चय था।

सशस्त्र क्रान्ति में जिन आर्य युवकों ने भाग लिया उनमें श्री मदन लाल धींगडा, भाई परमानन्द, भाई बाल मुकुन्द, श्री बलराज, श्रीराम प्रसाद बिस्मिल स भगतसिंह तथा राजस्थान के बारहट परिवार के श्री जोरावर सिंह बारहट तथा श्री प्रताप सिंह बारहट आदि प्रमुख रहे। इनके बलिदान का महत्व किसी दृष्टि मे अन्य बलिदानों से कम नहीं।

आर्य समाज की राजनीतिक चेतना को प्रकट करने वाली घटनाओं मे हैदराबाद का सत्याग्रह आन्दोलन जो अप्रैल 1938 से जुलाई 1939 तक चला एक विशेष महत्वपूर्ण घटना है। यद्यपि यह सत्याग्रह धार्मिक रूप का धार्मिक अधिकारो के लिए लडा गया, पर इसका प्रभाव देश के राजनीतिक जीवन पर अनुभव किया गया। विशेष कर हैदराबाद रियासत जो कि भारत मे मुसलमानो का एक सास्कृतिक और धार्मिक गढ समझा जाता था। उसकी स्थिति बहुत बदल गई। हिन्दुस्तान के मध्य मे होते हुए और प्रजा मे भी हिन्दओ का भारी बहुमत होने हुए भी इसके शासक इसे एक स्वतन्त्र इस्लामी राज्य बनाने का सपना देखते थे। वह स्वप्न समाप्त हो गया।

इस सत्याग्रह के लिए आर्य समाज को बहुत सघर्ष करना पडा। भारत भर के सत्याग्रही इसमे सम्मिलित हुए। जेलो मे तथा शासन के अत्याचारो से लगभग पैतीस युवको को अपनी जान गवानी पडी। सैकडो घायल हुए। हजारो आर्य जनो को जेलो का कष्ट उठाना पडा।

स्वतन्त्रता की प्राप्ति अर्थात 1947 से पहले देश के सामने केवल एक लक्ष्य था। अग्रेजो के साम्राज्य [illegible]। इसके लिए मुख्य रूप से दो मार्ग चुने गए एक सशस्त्र क्रान्ति का तथा दूसरा काग्रेस का म गान्धी जी के नेतृत्व मे अहिंसात्मक सघर्ष। इसलिए जनता के लिए बहुत सी पार्टियो की द्विविधा न थी। आर्य समाज के देश भक्त कार्य कर्ताओ के लिए मार्ग प्रश[illegible] था।

फिर भी आर्य समाज तथा काग्रेस मे तथा क्रान्तिकारियो मे कुछ विचार भेद अवश्य था। क्रान्तिकारियों मे धर्म के प्रति आग्रह लगभग समाप्त हो रहा था। साम्यवाद रूस की विचारधारा उनकों अपनी ओर खींच रही थी।

(क्रमश)

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर का 68 वां वार्षिकोत्सव 19 जनवरी 1986 को सम्पन्न हुआ।

इस उत्सव का प्रारम्भ बृहद यज्ञ से हुआ। इसमें नगर के सभी पुरोहित पण्डित चाहे वह किसी भी आर्य समाज के हों या स्वतन्त्र रूप से वह अपने क्षेत्र में स्वतन्त्र रूप में वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं जो कि लगभग बारह हैं सम्मिलित हुए। यजमानो के तौर पर हमारे युवा प्रधान श्री सुभाष भाटिया महामन्त्री. श्री वीरेन्द्र देवगण, श्री जसवन्त डोगरा, संयोजक आर्य वीर दल, श्री पवन गुप्ता आदि सपत्निक उपस्थित थे। श्री राजकुमार जी शोरी पुस्तकाध्यक्ष इस यज्ञ में अपनी माता जी जो कि सनातनी विचारों की हैं को लेकर आए और यज्ञ की शोभा बढ़ाई। यज्ञ में अन्य सदस्य भी शामिल हुए। बृहद यज्ञ के पश्चात् एक सौ एक युवकों को सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार करवाया गया।

इसके बाद "युवक सम्मेलन" का आयोजन किया गया। इस मे डा. हर भगवान जी आर्य, श्री नन्द किशोर जी, महामन्त्री केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर, प. ओम् प्रकाश जी कालिया प्रधान ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा, अमृतसर ने अपने विचार प्रकट किए। प. ओम्-प्रकाश जी ने कहा कि अमृतसर नगर में केवल एक ही आर्य समाज है जो कि आम लोगो से सम्पर्क बनाए हुए है। यह समाज हर उत्सव मनाती है और इसमें और इसके युवा अधिकारियो में क्षमता है कि यह अमृतसर नगर के लोगों का मार्ग दर्शन कर सकते हैं। श्री नन्द किशोर जी ने अपने भाषण मे कहा कि हिन्दू समाज को कोहड़ (कुष्ट) लग गया है। केवल युवा पीढ़ी ही इसका कोहड़ दूर कर सकती है। युवक सम्मेलन के अध्यक्ष मा. मोहन लाल जी एम. एल. ए. ने कहा कि युवक पजाब के पजाब सरकार की नीतियों से अप्रसन्न हैं। इस सरकार के पास कोई कार्यक्रम नहीं है। केवल एक सम्प्रदाय के लोगों को सरकारी नौकरियां पुनर्वास, कर्जे देकर सरकार ने प्रतिष्ठा गिरा ली है। सरकार को चाहिए कि वह आतंकवाद उग्रवाद को सख्ती से निपटे और यह मत सोचे कि सत्तारूढ़ पार्टी के वोटर नाराज़ होंगे। पजाब एक सम्प्रदाय का नहीं।

इसके पश्चात् "धर्म रक्षा सम्मेलन" हुआ। इसकी अध्यक्षता श्री वीरेन्द्र जी, एम. ए. प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने की। इस मे मुख्य वक्ता प्रिंसीपल श्री धर्मवीर जी पसरीचा, डी. ए. वी. कालज अमृतसर, प. किशोर चन्द जी, प्रधान ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा, पजाब, श्री भोलानाथ जी दिलावरी, प्रधान केन्द्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा, अमृतसर, श्री जुगल किशोर जी गाईनयां श्री अमृतलाल बजाज, एडवोकेट प्रधान राजार्य सभा पजाब, श्रीमती कमला आर्या, महामन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, श्री निहाल चन्द जी चीदा, सम्पादक बाल्मीकि सदेश ने अपने अमूल्य विचार पजाब व आर्य समाजों की वर्तमान स्थिति के बारे मे दिए।

"धर्म रक्षा सम्मेलन" के अध्यक्ष माननीय श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने बड़ा ही ओजस्वी भाषण दिया। समस्त हिन्दू जगत् का मार्ग दर्शन किया। इससे पजाब के हिन्दू का मनोबल बढा है। उन्होंने सरकार को चेतावनी दी कि पंजाब केवल मात्र एक समुदाय का नहीं है। सारा पजाब हमारा है। इसके साथ ही उग्रवाद अलगावाद वाली शक्तियो को सचेत करते हुए कहा कि पजाब मे अल्पसंख्यक हिन्दुओ पर हुए अत्याचार की प्रतिक्रिया सारे भारत में फिर हो सकती है। उन्होंने आह्वान किया कि समस्त हिन्दू आर्य शस्त्रधारी हो। सारे नगर निवासी व उपस्थित हजारो नर-नारियो, नवयुवक व नवयुवतियो ने आर्य वीर श्री वीरेन्द्र जी के जय घोष के नारे लगाए। इसके पश्चात् प्रधान आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर के अध्यक्ष श्री सुभाष भाटिया जी ने प्रार्थना की कि श्री वीरेन्द्र जी अध्यक्ष सम्मेलन व प्रधान प्रतिनिधि सभा अमृतसर नगर की भिन्न-भिन्न आर्य समाजों के सभी पुरोहितो को तथा स्वतन्त्र रूप से वैदिक धर्म के अनुसार पुरोहित्य करने वालों को सम्मानित करें। मान्यवर श्री वीरेन्द्र जी द्वारा लगभग बारह पुरोहितो को सम्मानित करवाया गया। हर एक पुरोहित को वस्त्र व दक्षिणा के रूप मे गुप्त रूप से भेंट दी गई। तदोपरान्त आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर के वरिष्ट सदस्य व दानी श्री हीरा नन्द जी सहपाल को सम्मानित किया गया। श्री वीरेन्द्र जी ने उन्हें सरोपा व एक 'ओ३म्' की आकृति भेंट की। अन्त में प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने अपने ओजस्वी विचार रखे। उन्होने कहा कि सारा पंजाब हमारा है किसी एक वर्ग। समुदाय का नही है। जय घोष के बीच में उन्होंने कहा कि पंजाब का हिन्दू असहाय नहीं है। उन्होंने चेतावनी देते हुए उग्रवादी। अलगाववादी। आतकवादी तत्वों को कहा कि पजाब में हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचार। जुल्म की प्रतिक्रिया पजाब के बाहर भी हो सकती है। उन्होंने सबको सशस्त्र होने की अपील की।

तत्पश्चात् मान्यवर श्री सुभाष भाटिया जी प्रधान आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द, अमृतसर ने श्री वीरेन्द्र जी प्रधान को सरोपा के रूप में एक शाल भेंट की और 5000 रु का चैक वेद प्रचार हेतु भेंट किया। प्रधान जी को आश्वासन दिया कि आगामी समय में समाज सभा को और भी वेद प्रचार हेतु धन प्रदान करेगी। शान्ति पाठ के पश्चात् सम्मेलन की सभा विसर्जित हुई।

इसके बाद ऋषि लगर हुआ जिसमे हजारों नर-नारियों व युवक-युवतियो ने भोज किया।

2-30 बजे "महिला सम्मेलन' शुरू हुआ। इसकी अध्यक्षता प्रो. लक्ष्मी कान्ता चावला एम ए. एल. एल बी ने की। इस सम्मेलन में मुख्य वक्ता प्रो. मजु महता, माता आज्ञावन्ती प्रधाना, केन्द्रीय स्त्री आर्य सभा अमृतसर, डा. सीना शर्मा जी ने बहुत ही सुन्दर विचार प्रकट किए। अध्यक्षता प्रो. लक्ष्मी कान्ता चावला जी ने दहेज, औरत की नग्नता का प्रदर्शन विवाह-शादी पर लड़कियो के नाच आदि और हिन्दू सस्कृति पर अपने स्पष्ट व सीधे विचार रखे। जिस का करतल ध्वनि से उपस्थित समूह ने स्वागत किया।

इन तीनों सम्मेलनों मे एक-एक प्रस्ताव पेश किया।

...वीरेन्द्र देवगण
महामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सभी प्रतिनिधियों की सेवा में आवश्यक निवेदन

सभा का वार्षिक चुनाव 9 फरवरी के स्थान पर 11 मई 1986 को होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरग सभा ने 25-1-86 की अपनी बैठक में यह निश्चय किया है कि सभा का जो वार्षिक साधारण अधिवेशन 9 फरवरी 1986 को होना निश्चित हुआ था। अब उसके स्थान 11 मई 1986 को होगा। सभी प्रतिनिधि महानुभावो से प्रार्थना है कि वह अब 11 मई 1686 की तिथि अंकित कर ले और 9 फरवरी 1986 को सभा के अधिवेशन के लिए जालन्धर पधारने का कष्ट न करें।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

जिला आर्य सभा लुधियाना का चुनाव

19-1-86 को आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में हुआ जिस मे श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा सर्व सम्मति से प्रधान चुने गए और उन्हे शेष अधिकारी तथा अन्तरग सदस्य मनोनीत करने का अधिकार दिया गया उन्होने निम्न अधिकारी चुने—

प्रधान—श्री महेन्द्र पाल वर्मा, उप-प्रधान—मा. राम प्रशाद (रायकोट) श्रीमती शान्ता गौड श्रीमती कौशल्या देवी, श्री अरूण थापर (दुराहा)।

महामन्त्री—आशानन्द आर्य, मन्त्री—डा. मूल चन्द भारद्वाज, श्रवण कुमार बत्रा, विजय कुमार सरीन, रोशन लाल शर्मा, कोषाध्यक्ष—ओम् प्रकाश पासी, सहायक कोषाध्यक्ष—श्रीमती निर्मला बेरी लेखा निरीक्षक—राजेन्द्र कुमार दीवान इन्चार्ज वैदिक पाठशाला सुभक्तराय सूद, अन्तरग सदस्य—श्रीमती कमला आर्य, सर्व श्री नवनीत लाल, अयोध्या प्रसाद मल्होत्रा राम रत्न सौन्धी कुन्दन लाल वैद्य, सत्यपाल सूद, एम एल आनन्द ओम प्रकाश टण्डन, श्रीमती कान्ता सूरी श्रीमती कैलाश रानी खुल्लर, ओम्प्रकाश महाजन, भीम सेन (रायकोट) भारत भूषण (जगराओ) जसवन्तराय साहनी (समराला) रणवीर सूद (दोराहा) डा. राजेश भारद्वाज, ज्ञान चन्द भक्त, रणधीरचन्द शर्मा (माछनेवाल) विशेष आमन्त्रित, वैद्य सत्यपाल (जगराओ) मनीश कुमार (रायकोट) बलबीर चन्द, साधूराम कैला (साहनेवाल) सन्तोष कुमारी (समराला) सर्व श्री हरे कृष्णम सूद, मगलसैन वधवा नन्द लाल आहूजा, आत्म प्रकाश, यशपाल गुप्ता, धर्मपाल भसीन सभा के के लिए प्रतिनिधि श्री अयोध्या प्रसाद मल्होत्रा।

—आशानन्द आर्या
महामन्त्री

आर्य विद्या परिषद् पंजाब के तत्वावधान में

प्रान्तीय भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य विद्या परिषद् पंजाब के तत्वावधान मे 18 जनवरी 1986 को आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ, जालन्धर मे प्रान्तीय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस तृतीय प्रान्तीय भाषण प्रतियोगिता मे पंजाब के विभिन्न आर्य स्कूलो के छात्र एवं छात्राओ ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता की अध्यक्षता श्री हरबंसलाल जी शर्मा उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने की। प्रतियोगिता के निर्णायक पद को श्री डा कैलाशनाथ जी भारद्वाज, प्रो सत्यदेव जी सरल तथा प्रो सत्यपाल जी चड्ढा ने सुशोभित किया।

इस समारोह मे प्रतियोगिता का प्रथम चल विजयोपहार आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजां जालन्धर के छात्रो ने जीता। प्रथम चल विजयोपहार जीतने वाली टीम के दोनो प्रतियोगियो श्री अशीष कुमार तथा श्री उदय कुमार को शील्ड के अतिरिक्त चल विजयोपहार विजेता पुरस्कार व्यक्तिगत रूप मे दिए गए। आर्य गर्ल्ज हा सै स्कूल मोगा की दो छात्राओ कु सजीव तथा कु. रजनी को सात्वना पुरस्कार दिए गए। डबल्यू एल आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल नवांशहर द्वावा की छात्रा कु तजेन्द्रकोर ने प्रथम व्यक्तिगत पुरस्कार जीता। आर्य गर्ल्ज हा सै स्कूल लुधियाना की छात्रा कु पूनम ने द्वितीय व्यक्तिगत पुरस्कार प्राप्त किया। बी सी एम आर्य माडल स्कूल लुधियाना की छात्रा कु गीतिका को तृतीय व्यक्तिगत पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रतियोगिता मे भाग लेने वाले सभी प्रतियोगियो को प्रोत्साहित करने के लिए वैदिक साहित्य तथा प्रमाण पत्र दिए गए। श्री हरबंसलाल जी शर्मा ने सभी प्रतियोगियो को परिषद् की ओर से पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र प्रदान किए। स्थानीय स्कूल के प्रधान श्री कर्म चन्द जी मानी ने श्री हरबंसलाल जी शर्मा को मुख्य अतिथि के रूप मे सम्मानित किया। मैनेजर श्री रामलुभाया नन्दा ने श्री धर्म प्रकाश जी दत्त रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद् पंजाब, सभा महामन्त्री श्रीमती कमला आर्या, सभा कोषाध्यक्ष श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा तथा सभा मन्त्री श्री सरदारी लाल जी आर्य को स्कूल की ओर से सम्मानित किया। श्रीमती कमला आर्या ने आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ, जालन्धर की मुख्याध्यापिका श्रीमती हर्ष अरोड़ा को उत्तम प्रबन्ध के लिए सम्मानित किया। श्री हरबंसलाल जी शर्मा ने आर्य कन्या हाई स्कूल को सात सौ रुपये सिलाई मशीनो के लिए तथा स्कूल की छात्राओ को मिठाई खिलाने के लिए पाच सौ रुपए दिए। श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट सभा मन्त्री (कानून विभाग) ने एक सौ रुपया तथा श्री राम लुभाया नन्दा मैनेजर महोदय ने 50 रुपए अपनी ओर से स्कूल की छात्राओ को मिठाई खिलाने के लिए दिए। समस्त कार्यक्रम मनोरंजक एव उत्साहवर्धक रहा।

आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ जालन्धर की मुख्याध्यापिका श्रीमती हर्ष अरोड़ा, प्रधान श्री कर्मचन्द मानी तथा मैनेजर श्री नन्दा जी ने प्रतियोगिता मे पधारे महानुभावो के लिए अल्प आहार तथा सायकालीन चाय आदि का बहुत ही अच्छा प्रबन्ध किया। स्कूल के स्टाफ ने भी अपना सराहनीय योगदान दिया। सभा महामन्त्री श्रीमती कमला आर्या जी ने प्रतियोगिता की सफलता पर सब को बधाई दी। समारोह के अन्त मे श्री धर्म प्रकाश जी दत्त रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद् पंजाब ने स्कूल की मुख्याध्यापिका श्रीमती हर्ष अरोड़ा पदाधिकारियो, निर्णायक महोदयो तथा स्कूल के स्टाफ का प्रतियोगिता को सफल करने के लिए सराहनीय सहयोग के लिए धन्यवाद किया। [redacted]

जलालाबाद फाजिल्का में ज्ञानी गुरबख्शसिंह डी. ए. वी. कालेज का उद्घाटन

(निजी सवाददाता द्वारा)

देश के समस्त हिन्दू समाज को और विशेष रूप से आर्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि 1986 के नये वर्ष के पहले दिन डी, ए, वी, कालेज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान प्रो वेद व्यास जी ने भारत-पाक सीमा पर स्थित जलालाबाद (फाजिल्का) मे ज्ञानी गुरबख्शसिंह डी, ए, वी, सेंटिनरी कालेज का उद्घाटन किया। इस कालेज के लिए ज्ञानी गुरबख्श सिंह चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से 11 लाख 51 हजार रुपया का चैक प्रो वेद व्यास जी को भेंट किया गया और आगामी दो मास में साढे 3 लाख रुपए और देने का सकल्प किया।

डिप्टी कमिश्नर सरदार इन्द्रजीत सिंह ने उक्त राशि के चैक के अलावा उस भूमि की रजिस्ट्री भी प्रधान जी को प्रदान की जिस भूमि पर कालेज खुलना है। एस, डी एम, श्री कैलाश सिंह और हिन्दू, सिख भारी संख्या में समारोह में उपस्थित थे। इस कदम से सारे पंजाब में हिन्दू-सिख एकता की एक नई लहर चलने की आशा की जा रही है। महन्त ज्ञानी गुरबख्श सिंह ने खालसा कालेज खोलने के बजाय डी, ए, वी कालेज खोलने को प्राथमिकता दी। यह बात शिक्षा के क्षेत्र मे डी, ए, वी, कालेज कमेटी की साख और उसके अद्भुत कीर्तिमान की द्योतक है। हिन्दू-सिख एकता की नई कड़ी के अलावा इस घटना को डी, ए, वी, शताब्दी की अत्यन्त शुभ शुरूआत भी माना जा रहा है। समारोह से पहले डी, ए, वी, कालेज अबोहर के प्रिंसीपल वी, बी मेहरा और आर्य समाज जलालाबाद के प्रधान श्री मोहन लाल ने यज्ञ का आयोजन किया।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री

आर्य समाज ओहरी चौक बटाला की गतिविधियां

- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 23-12-85 को आर्य समाज मे श्रद्धा पूर्वक मनाया गया और इस अवसर पर श्रद्धाञ्जलियां स्वामी जी को अर्पित की गई।
- लोहड़ी का पर्व 13-1-86 को सायं आर्य समाज मे बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिस मे आर्य समाजी और गैर आर्य समाजी स्त्री-पुरुष और बच्चे बड़ी संख्या में आए और हवन यज्ञ के पश्चात् सभी ने लोहड़ी का पर्व मनाया।
- हर महीने के पहले रविवार को आर्य समाज की ओर से समाज के भवन मे बच्चो को पोलियो आदि के टीके मुफ्त लगाये जाते हैं।

—विजय कुमार अग्रवाल
प्रधान



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा द्वारा स्वीकृत और प्रसारित आर्य पर्व सूची (1986)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाजो की सूचना के लिए स्वीकृत आर्य पर्वों की सूची प्रकाशित किया करती है। सन् 1986 की सूची इस प्रकार है :—

सं.	पर्व	सौरतिथि	चन्द्रतिथि	अंग्रेजी तिथि	दिन
1.	मकर संक्रान्ति	1 माघ 2042	पौष सुदि 4, 2042	14-1-1986	मगलवार
2.	बसन्त पञ्चमी	2 फाल्गुन 2042	माघ सुदि 5, 2042	13-2-1986	बृहस्पतिवार
3.	सीताष्टमी	20 फाल्गुन 2042	फाल्गुन बदि 7, 2042	3-3-1986	सोमवार
4.	दयानन्द बोधरात्रि (शिवरात्रि)	26 फाल्गुन 2042	फाल्गुन बदि 14, 2042	9-3-1986	रविवार
5.	वीर लेखराम तृतीया	30 फाल्गुन 2042	फाल्गुन सुदि 3, 2042	13-3-1986	बृहस्पतिवार
6.	नवसस्येष्टि (होली	12 चैत्र 2042	फाल्गुन सुदि 14, 2042	25-3-1986	मगलवार
7.	नव सवत्सरोत्सव (आर्य समाज स्थापना दिवस)	29 चैत्र 2043	चैत्र सुदि 1, 2043	10-4-1986	बृहस्पतिवार
8.	रामनवमी	8 वैशाख 2043	चैत्र सुदि 9, 2043	18-4-1986	शुक्रवार
9.	हरि तृतीया	14 श्रावण 2043	श्रावण बदि 3, 2043	24-7-1986	शुक्रवार
10.	श्रावणी उपाकर्म	8 भाद्रपद 2043	श्रावण सुदि 15, 2043	19-8-1986	मगलवार
11.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	16 भाद्रपद 2043	भाद्रपद बदि 8, 2043	27-8-1986	बुधवार
12.	गुरु विरजानन्द दिवस	17 आश्विन 2043	आश्विन बदि 10, 2043	28-9-1986	रविवार
13.	विजय दशमी	1 कार्तिक 2043	आश्विन सुदि 10, 2043	12-10-1986	रविवार
14.	महर्षि निर्वाण दिवस दीपावलि	22 कार्तिक 2043	कार्तिक बदि 30, 2043	2-11-1986	रविवार
15.	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	13 पौष 2043	पौष बदि 7, 2043	23-12-1986	मंगलवार

(प्रस्तुतकर्त्ता पं. राजपाल शास्त्री)

ओम्प्रकाश त्यागी
मन्त्री-सभा

यतिमण्डल की आगामी बैठक

वैदिक यतिमण्डल का जो अधिवेशन 1-2 दिसम्बर 85 को रोहतक में सम्पन्न हुआ था उस अधिवेशन के निश्चयानुसार यतिमण्डल का आगामी अधिवेशन 1-2 फरवरी 1986 फरवरी को गुरुकुल आश्रम आमसेना कालाहाण्डी (उड़ीसा) में होगा।

मेरा सभी पूज्य सन्यासी वर्ग, वानप्रस्थ तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारियों आदि यतिमण्डल प्रेमियों से अनुरोध है कि अधिकाधिक सख्या में पहुचे। इस अवसर पर एक विशाल शुद्धि समारोह का भी आयोजन है। उन नवदीक्षित बन्धुओ को आपने आशीर्वाद देना है। गुरुकुल पहुचने के लिए दिल्ली से छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस मे बैठकर खड़ीयार रोड उतरे।

—धर्मानन्द सरस्वती आचार्य
गुरुकुल आमसेना (खड़ियार रोड)
कालाहाण्डी (उड़ीसा)

धर्म शिक्षक की नियुक्ति

श्री वेद प्रकाश जी वेदी प्रधान आर्य समाज गढ़शकर, प्रधान डी ए वी. प्रबन्ध कर्तृ सभा गढशकर जिला होशियारपुर (पंजाब) के अनथक एवं शुभ प्रयन्तो से डी. ए वी. प्रबन्ध कर्तृ सभा गढशंकर के अन्तर्गत चलने वाले, परमेश्वरी दास वेदी सीनियर माडल आर्य स्कूल गढ़शकर में एक सुयोग्य धर्म-शिक्षक की व्यवस्था कर दी गई है जिससे उक्त विद्यालय की प्रत्येक श्रेणी में अन्य विषयों की भान्ति नैतिक शिक्षा का भी अध्यापन सुचारू रूप से चल रहा है जो कि यह एक हर्ष की बात है एव यह आर्य समाज व उसके मान्य प्रधान जी का एक सराहनीय कदम है। —मगन विहागी शास्त्री उपमन्त्री

राजस्थान के गिरिजनों में आर्य समाज का प्रचार

दिनांक 24-12-85 को जिला आर्य सभा भठिण्डा (पजाब) के प्रधान श्री वजीरचन्द जी व आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भठिण्डा के सचालक श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी जिला चितौडगढ तहसील छोटी सादडी पो. बसेडा के महीनगर ग्राम में आदिवासी व पिछडे वर्ग के बच्चो के लिए नि शुल्क चलने वाले विद्यालय में पधारे। विद्यालय के मुख्याध्यापक श्री कैलाश चन्द्र आर्य तथा विद्यालय के सहयोगी महोपदेशक पं. हरीशचन्द्र विद्यावाचस्पति एम ए, ने आपका हार्दिक स्वागत किया, आप दोनों महानुभाव शर्द ऋतु में कंटिली, ककरिली व ऊबड खबाड पहाडी भूमि की परवाह किये बिना ही रात्री को 9 बजे तक गिरिजनो की दीपक रहित झोंपडिया देखते रहे, उनके बच्चो तथा महिलाओं से मिलते रहे। इन्हीं झोंपडियों मे रीछमाराकी झोंपडियो में श्री ओम्प्रकाश जी वानप्रस्थी के सदोपदेश से प्रभावित होकर पांच गिरिजनो ने बीडी शराब व मांस का परित्याग कर दिया।

दिनांक 25-12-85 को दोनो महानुभावों ने जीप किराये पर लेकर छोटी सादडी की गणेशपुरा व धोला पानी पचायत के गिरिजनो की झोंपडियों मे व्यक्तियों, महिलाओ तथा बच्चे-बच्चियों की निर्धनता को निकट से देखा व प्रत्येक क्षेत्र की झोंपड़ियों के बच्चो को प्यार से सहला अमरूद आदि फल वितरित कर वात्सल्य उडेला। इनके साथ मे श्री हरिशचन्द्र एम. ए व कैलाश चन्द्र आर्य भी थे।

आप महानुभाव भठिण्डा से पाच बोरी वस्त्र जिन मे बच्चो के वस्त्र व कोट आदि थे। लाये थे इन्ही गिरिजनो में बाटने का निर्देश दे गए हैं। इमसे पूर्व भी आपके प्रयास से आर्य समाज भठिण्डा ने पाच बोरी वस्त्र भेजे थे जो निर्धन परिवारो मे वितरित हो चुके हैं।

आर्य समाज के इतिहास मे चित्तौडगढ़ जिले मे अपने ढग का यह प्रथम प्रयास है जो आर्य समाज भठिण्डा के सहयोग से हुआ। आर्य समाज भठिण्डा की सहायता व उदारता तथा करुण भरे स्नेह को बच्चे व निर्धन गिरिजन स्मरण कर भाव विभोर हो कृतज्ञता प्रकट कर रहे हैं।

—कैलाशचन्द्र आर्य, मुख्याध्यापक
द. ज प्रा. शा. महिनगर,
तहसील छोटी सादड़ी
जिला चित्तौडगढ़ (राजस्थान)

आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भठिण्डा के समाचार

श्री अमरनाथ जी गोयल काला-वाली मण्डी (हरियाणा) ने अपने पूज्य पिता स्वर्गीय श्री चानन राम जी की पहली बरसी के उपलक्ष मे अपने घर पर हवन यज्ञ कराया श्री ओम प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी का प्रवचन हुआ। श्री अमरनाथ जी गोयल ने इस अवसर पर 101 रुपए आर्य समाज काला वाली को, 101 रुपए गोशाला काला-वाली को 51 रुपए आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भठिण्डा को दान दिए सभी सस्थाओ की ओर से श्री अमरनाथ जी का धन्यवाद किया।

—ओम प्रकाश आर्य
वानप्रस्थी

डी. ए. वी. शताब्दी समारोह की शोभा यात्रा शनिवार १५ फरवरी १९८६

को भारत की राजधानी दिल्ली में

यह तो आपको ज्ञात ही है कि वर्ष 1985 86 डी ए. वी शताब्दी का वर्ष है। इस उपलक्ष्य मे भारत की राजधानी दिल्ली मे विभिन्न कार्यक्रमो का आयोजन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त समस्त प्रान्तो मे डी ए वी शताब्दी समारोह की रीजनल कमेटिया बन चुकी है तथा वहा भी सारे कार्यक्रम बनाये जा रहे है।

उपर्युक्त शताब्दी समारोह के उपलक्ष मे एक विशाल शोभा यात्रा शनिवार 15 फरवरी 1986 को भारत की राजधानी दिल्ली मे निकाली जाएगी। यह शोभा यात्रा प्रात 11 बजे लाल-किला मैदान से आरम्भ होगी, जो कि चादनी चौक, घन्टाघर, नई सड़क, चावड़ी-बाजार, हौजकाजी, अजमेरी गेट, मिन्टो रोड, क्नाट प्लेस, रीगल बिल्डिंग, पार्लियामैंट स्ट्रीट, सरदार पटेल चौक गोल डाकखाना, बिड़ला मन्दिर से होती हुई साय 4 बजे आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे समाप्त होगी।

हमारी समस्त आर्य समाजो, डी॰ ए वी सस्थाओ एव अन्य आर्य सस्थाओ से प्रार्थना है कि वे यह तिथि अभी से अंकित कर लेवें तथा उस दिन शोभा यात्रा में अवश्य ही सम्मिलित होने की कृपा करे। इस उपलक्ष्य मे सारे प्रबन्ध किए जा रहे हैं।

बाहर से पधारने वाले महानुभावो के ठहरने एव भोजन का प्रबन्ध डी ए वी शताब्दी समारोह समिति की ओर से किया जाएगा। दिल्ली भारत की राजधानी है हमारी इच्छा है कि इस शोभा यात्रा में सब सस्थाएं अपने-अपने 'बोर्डों' एव ओ३म के झण्डे लेकर अवश्य ही सम्मिलित हो। दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्रो की आर्य समाजें, आर्य सस्थाए एव डी ए. वी सस्थाएं 15 फरवरी को प्रात चलकर साय को अपने-अपने स्थानो पर पहुच सकती हैं।

इस सम्बन्ध में विस्तृत कार्यक्रम बनाया जा रहा है, जिसकी सूचना आप को देते रहेगे। इस उपलक्ष्य में आप कोई अपना सझाव देना चाहे अथवा कोई जानकारी लेना चाहे तो निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं—जनरल सैक्रेट्री-डी, ए वी कालेज मैनेजिंग कमेटी, चित्र गुप्ता रोड, नई दिल्ली—55, अथवा जनरल सैक्रेट्री-आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली 1।

—रामनाथ सहगल
सयोजक शोभा यात्रा

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. न पी.जे एल. 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जलंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 41. 29 माघ सम्वत् 2042 तदनुसार 9 फरवरी 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति को पदच्युत कर दिया गया

कुलपति निवास में मांस पकाने और आर्थिक अनियमितताओं के गम्भीर आरोप

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा के प्रस्ताव की पुष्टि

जालन्धर-2 फरवरी, विशेष प्रतिनिधि द्वारा—

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे पिछले कुछ समय से विस्फोटक स्थिति पैदा हो गई थी। गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलपति डा सत्यकाम वर्मा ने कुलपति निवास मे मास पकाने की व्यवस्था की थी। यह सब गुरुकुल की परम्पराओ और मान्यताओ के विपरीत था। इसी के साथ उन्होने कुछ ऐसी आर्थिक अनियमितताए की थी जिन पर उन के कार्यालय के अधिकारियो ने भी आपत्ति की थी। उस पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा ने यह माग की थी कि श्री सत्यकाम वर्मा को त्याग पत्र दे देना चाहिए, परन्तु वह इसके लिए तैयार न हुए। इस सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने गुरुकुल विश्वविद्यालय के परिदृष्टा पण्डित सत्यव्रत सिद्धान्तालकार और कुलाधिपति डा. सत्यकेतु विद्यालकार का ध्यान इस तरफ दिलाया और कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुकुल मे जो स्थिति पैदा हो रही है उसे सहन करने को तैयार नही है। जो व्यक्ति गुरुकुल का कुलपति बन कर वहा मास पका सकता है उसे इस पद पर रहने का कोई अधिकार नही। जो कुछ वहा हो रहा है वह गुरुकुल की मान्यताओ और परम्पराओ के सर्वथा विपरीत है। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुकुल की स्वामिनी सभा होते हुए किसी भी व्यक्ति को यह अनुमति नही दे सकती कि वह उन सिद्धान्तो और परम्पराओ का उल्लघन करे, जिन के आधार पर और जिनके प्रचार के लिए यह सस्था श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने स्थापित की थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा के प्रस्ताव के आधार पर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के परिदृष्टा और कुलाधिपति ने डा सत्यकाम से कहा कि वह अपने पद से त्याग पत्र दे दे। जब वह इस के लिए तैयार न हुए तो परिदृष्टा ने अपने अधिकारो के आधार पर उन्हे पदच्युत कर दिया और उन के स्थान पर आचार्य रामप्रसाद जी वेदालकार को गुरुकुल का कुलपति नियुक्त कर दिया। श्री आचार्य रामप्रसाद जी वेदो के प्रकाण्ड पण्डित हैं। उच्चकोटि के विद्वान् और प्रभावशाली वक्ता हैं। वैदिक सिद्धान्तो पर उन्होने कई पुस्तक भी लिखी हैं और आर्य जगत् मे उनका बहुत सम्मान किया जाता है।

यह जो कुछ हुआ है उस से विस्फोटक स्थिति भयकर रूप धारण करने से बच गई। परिदृष्टा और कुलाधिपति ने समयानुसार कार्यवाही करके गुरुकुल की और आर्य समाज की लाज बचा ली है। यह अत्यन्त ही शोचनीय और लज्जा जनक स्थिति थी कि गुरुकुल का ही एक स्नातक यह सब कुछ कर रहा था। कुछ और स्नातक भी है जो अपने स्वार्थ के लिए गुरुकुल मे कई प्रकार की कठिनाईया पैदा कर रहे है।

उनके विरुद्ध भी कार्यवाही की जा रही है और आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का यह निश्चित मत है कि गुरुकुल कागडी का वातावरण किसी प्रकार भी दूषित नही होने दिया जाएगा। इसके लिए बडे से बडा सघर्ष भी करना पडे तो किया जाएगा। परन्तु अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के गुरुकुल पर आच नही आने दी जाएगी। यह पहला कदम है जो आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने उठाया है इसके पश्चात् गुरुकुल की पवित्रता और स्वच्छता के लिए जो भी पग उठाने पडेगे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब उठाएगी।

आज हम कहां खड़े हैं—

आर्य समाज और राजनीति-2

लेखक—श्री पं. सत्यदेव जी विद्यालंकार जालन्धर

(गतांक से आगे)

तीन प्रसिद्ध उदाहरण सामने आते हैं, और भी कई होंगे। सरदार भगतसिंह, श्री यशपाल तथा प. किशोरी लाल, सरदार भगतसिंह तथा श्री यशपाल दोनो ही आर्य परिवारो से थे—आर्य सस्थाओं मे इन्होने शिक्षा भी प्राप्त की। सरदार भगतसिंह डी. ए. वी. स्कूल में पढे तथा श्री यशपाल गुरुकुल में 5-6 वर्ष रहे। पर क्रान्तिकारी सम्पर्क में आते ही इनके विचार साम्यवादी हो गए। धर्म के प्रति कोई आस्था न रही। प. किशोरी लाल के पिता पं. रघुवीर चन्द्र जी सनातनी थे, पर उनके भाई चन्द्रकेतु तथा सत्यपाल विद्यालकार आर्य समाजी थे। श्री किशोरी लाल भी क्रमश. सम्यवाद के प्रबल समर्थक हो गए।

जिन आर्य सज्जनों ने महात्मा गाधी जी के नेतृत्व में महत्वपूर्ण भाग लिया वे भी कुछ काल बाद पूर्णत: गान्धी जी के साथ न रह पाए। स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा लाला लाजपतराय जी के उदाहरण अच्छे स्पष्ट हैं। स्वा. श्रद्धानन्द जी शुद्धि आन्दोलन मे चले गए तथा लाला लाजपतराय जी के मतभेद हो गए। इस प्रकार महाशय कृष्ण जी तथा आचार्य रामदेव जी आदि के भी उदाहरण हैं। सामान्यत: कांग्रेस मे कार्य करते हुए भी ये नेता पूर्णत. महात्मा गाधी जी के नेतृत्व मे आस्था न रख सके।

सन् 1947 के बाद तो आर्य समाज और कांग्रेस की राजनीतिक विचारधारा में अन्तर और अधिक स्पष्ट हो गया। पंजाब का हिन्दी आन्दोलन, पजाबी सूबा विरोधी आन्दोलन, गौहत्या विरोध आन्दोलन आदि जितने भी आन्दोलन हुए, आर्य समाज के दृष्टिकोण तथा कांग्रेस के दृष्टिकोण परस्पर बहुत विरोध रहा।

यदि हम आजकल के कुछ प्रमुख नेताओं को लें जो देश भक्ति में किसी से कम नहीं—राजनीतिक क्षेत्र में हैं, तथा आर्य समाज के साथ जिन के दृढ सम्बन्ध हैं तो यह द्विविधा की स्थिति और भी अधिक स्पष्ट हो जाएगी।

पंजाब में पिछले दिनों तीन प्रमुख नेता थे जिनका आर्य समाज से गहरा तथा पारिवारिक सम्बन्ध था। लाला जगतनारायण जी, श्री यश जी तथा वीरेन्द्र जी। लाला जगतनारायण जी के विषय में यह कहना कठिन है कि उनके धार्मिक विचार क्या थे और वे राजनीति मे किस दल के अनुयायी थे। वे कांग्रेस में भी थे और बारह भी, आर्य समाज के उत्सवों में भी जाते थे और अन्य धर्मों के उत्सवों में भी।

श्री यश जी आर्य समाज के अधिकारी हैं, प्रधान भी रह चुके हैं, आर्य संस्थाओं के साथ उनका गहरा सम्बन्ध भी है, पर वे विशुद्ध कांग्रेसी हैं। श्री वीरेन्द्र जी आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं। पजाब के सम्भवत. प्रमुखतम आर्य नेता हैं। वे बहुत वर्ष पहले कांग्रेस में रहे—जेल भी गए—पर आजकल उनके विचार कांग्रेस की अपेक्षा हिन्दू संगठनों के अधिक समीप हैं। वे पंजाब से प्रबल हिन्दू-नेतृत्व भी चाहते हैं। पिछले वर्षों में लगातार अपनी जान को खतरे मे डाल कर भी उन्होने हिन्दुओ की दुर्बल स्थिति को सुधारने का लगातार प्रयत्न किया। पंजाब के हिन्दुओ को ठीक नेतृत्व देने के लिए उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा के आधीन एक राजार्य सभा का भी गठन किया है। उन्होने 18-8-85 को राजार्य सभा का एक प्रान्तीय सम्मेलन भी बुलाया है।

इतना लिखने का अभिप्राय यह स्पष्ट करना है कि आर्य समाज की अपनी कोई अलग विचारधारा नहीं। आर्य समाज के अलग-2 नेताओ पर आश्रित है कि वे आर्य समाज के नाम से क्या कहते हैं।

पंजाब के इन आर्य नेताओं के अतिरिक्त और भी आर्य नेता जो राजनीति मे महत्वपूर्ण भाग लेते रहे उनके विषय में भी निश्चित न हो सका कि वे जो कहते हैं वह व्यक्तिगत भावना पर आश्रित है अथवा आर्य समाज का दृष्टिकोण है। श्री प्रकाश वीर शास्त्री भी आर्य समाज के प्रमुख नेता भी थे तथा महत्वपूर्ण राजनीतिक कार्यकर्ता भी। उनके विषय में निश्चय से यह नहीं कहा जा सका कि उनके राजनीतिक विचार क्या थे। उन्होंने कांग्रेस में भी कार्य किया, जनसंघ में भी तथा अन्य भी किसी दल में सम्भवत: कार्य किया हो। इन सब दलों के विचारों में परस्पर अच्छा खासा विरोध है। स्वामी रामेश्वरानन्द जी तथा सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी जनसंघ में रहे। हरियाणा के नए राजनीतिक संन्यासी श्री अग्निवेश जी, श्री चन्द्रशेखर जी को नेता मानते हैं—जनता दल में हैं। उनके साथी श्री इन्द्रवेश जी लोकदल की किसी पार्टी मे फसे हुए हैं। सम्भवत: भारत की कोई भी राजनीतिक ऐसी पार्टी न होगी अकाली दल, मुस्लिम लीग आदि को छोड कर—जिसमें आर्य समाजी विचारधारा के कार्यकर्ता न हों। पर यह भी तथ्य है कि आर्य समाज की न तो कोई सुनिश्चित राजनीतिक विचारधारा है और न कोई सुसंगठित राजनीतिक दल। सार्वदेशिक सभा के द्वारा या अन्य प्रतिनिधि सभाओं द्वारा अनेक बार चुनावों के समय राजार्य सभाएं बनाई गई पर किसी ऐसी राजार्य सभा द्वारा समर्थित कोई प्रत्याशी कभी सफल हो पाया हो, ऐसा नहीं सुना गया। पजाब की आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा बनाई गई राजार्य सभा ने, जिसका पहले भी उल्लेख हो चुका है, अपनी 18-8-85 की बैठक में दस आर्य सज्जनों की एक समिति बनाई है। इस समिति ने, पंजाब में सितम्बर मे होने वाले चुनावों के सम्बन्ध मे हिन्दुओ के हितों की रक्षा करने वाले प्रत्याशियों का चयन किया और उनके सम्बन्ध में वोट देने के लिए आर्य जनता को प्रेरणा दी थी, सभा का अपना कोई प्रत्याशी न था। प्रत्याशी अन्य राजनीतिक दलों द्वारा खड़े किए गए थे। यह निश्चित किया गया था।

यहां यह स्मरण रखने योग्य है कि हिन्दू हितों के नाम पर कार्य करने वाले कई सगठन हैं। उनमें परस्पर कोई तालमेल नहीं। आर्य समाज में भी आर्यों की दो सभाएं हैं, आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा इन दोनो का भी चुनाव सम्बन्धी कोई एक विचार नही। अतः इस राजार्य सभा का पजाब की राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ेगा, यह तो समय ही बतला सकेगा।

एक बात तो बहुत स्पष्ट है। भारतीय न ही राष्ट्रीय राजनीति में हिन्दुओं के हितों की रक्षा का कोई महत्वपूर्ण मुद्दा नहीं बन सकता। हिन्दू तो जनसंख्या का अस्सी प्रतिशत के लगभग हैं। पर आर्य समाज की राजनीति चाहे वह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्वीकृत हो अथवा किसी प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा द्वारा—का मुख्य मुद्दा हिन्दू रक्षा ही रहता है। पिछले दिनों आर्य समाज शान्ता क्रूज—बम्बई में श्री. श्री बलराज मधोक द्वारा एक हिन्दू-मंच नामक राजनीतिक दल के निर्माण का प्रयत्न किया गया था। उसका उद्देश्य सम्भवत: भारत में हिन्दू राष्ट्र के विचार का समर्थन था।

विचित्र स्थिति यह है कि हिन्दू-हितों की रक्षा के लिए आगे ही अनेक देश व्यापी संगठन कार्य कर रहे हैं। वीर सावरकर तथा भाई परमानन्द जी की हिन्दू सभा बहुत पुरानी है। श्री हेडगेवार, श्री गोलवलकर तथा श्री देवरस जी की अध्यक्षता मे राष्ट्रीय-स्वयंसेवक संघ चल रहा है। श्री कर्ण सिंह आदि के निर्देश में विश्व हिन्दू परिषद भी अच्छी प्रबल और व्यापक है। पंजाब में भी आर्य समाज से अतिरिक्त 5-6 और सगठन होंगे जो हिन्दू हितों की ही रक्षा का प्रयत्न कर रहे हैं। पर इन सब के होते हुए भी पिछले तीन-चार वर्ष से निर्दोष हिन्दुओं की हत्या खुल कर होती रही—और अन्त में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी को खतरे की भयकरता को जानते हुए भी धर्म की आड़ में पनपते उग्रवाद के गढ़ को ध्वंस करना पड़ा। और अब उन्हीं के पुत्र श्री राजीव गान्धी ने सन्त लौंगोवाल जी से समझौता कर पंजाब में शान्ति का वातावरण उत्पन्न करने का प्रयत्न किया। इसके लिए सन्त लौंगोवाल जी को अपने प्राणों की बलि देनी पड़ी।

आर्य समाज की राजनीति में एक विशेषता भी है। कांग्रेस तथा अन्य प्राय: सब राजनीतिक दलों ने भारतीय राष्ट्र के संविधान की मूल भावना धर्म निरपेक्षता तथा समाजवाद को स्वीकार किया है। इस के साथ ही मुसलमान, ईसाई तथा अन्य सम्प्रदायों को भारतीय राष्ट्र का अभिन्न अंग माना। इस के अतिरिक्त भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत वे सब ईसाई, इस्लामी तथा अन्य सस्कृतियों के महत्वपूर्ण भाग को स्वीकार करते हैं।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

आर्य समाजियों के लिए आचार संहिता की आवश्यकता

कांग्रेस के अध्यक्ष श्री राजीव गान्धी, कांग्रेस जनो के लिए एक आचार-संहिता बनाने लगे हैं। वह यह अनुभव कर रहे हैं कि कांग्रेस अब पहली कांग्रेस नहीं रही उस का महत्व कम हो रहा है। इसलिए वह चाहते हैं, कि कांग्रेसियों के लिए एक आचार संहिता बनाई जाए ताकि उनकी पार्टी के सदस्यो का नैतिक स्तर कुछ ऊचा उठा सके और वह पहले की तरह ही एक शक्तिशाली संस्था बन सके, जब वह कांग्रेस के इतिहास पर दृष्टि डालते हैं तो देखते हैं कि गान्धी जी के वक्त कांग्रेस सबसे शक्तिशाली थी। जनता का जितना समर्थन उसे उस वक्त प्राप्त था आज नही है। इसका एक कारण वह समझते है कि यह है कि कांग्रेस जनो का नैतिक स्तर गिर गया है। जब तक फिर से कांग्रेसियो मे त्याग की भावना और नैतिक सिद्धान्तो मे आस्था नही आती उस समय तक कांग्रेस अपनी खोई हुई शक्ति और प्रतिष्ठा को फिर से प्राप्त नही कर सकती। इसलिए उन्होंने कांग्रेस जनो के लिए एक आचार संहिता बनाने का फैसला किया। है उसकी कुछ रूप रेखा तैयार भी हो गई। अभी उस पर कांग्रेस की कार्यकारिणी मे विचार होगा। वहा स्वीकृत हो जाने के बाद उसे लागू कर दिया जाएगा।

कांग्रेस एक राजनैतिक संस्था है यदि आज उसके अध्यक्ष भी यह अनुभव करते हैं कि उसके सदस्यो के लिए आचार संहिता की आवश्यकता है तो एक धार्मिक संस्था के लिए उसकी आवश्यकता कितनी अधिक हो सकती है इसका अनुमान लगाना कठिन होना चाहिए। आर्य समाज केवल एक धार्मिक संस्था ही नहीं, इस मे धर्म प्रचार, समाज सुधार और राजनैतिक उद्देश्य तीनो का समन्वय है और हमारे देश का इतिहास साक्षी है कि आर्य समाज ने इन तीनो क्षत्रो मे अपना गौरवपूर्ण योगदान दिया है। यही कारण है कि जो भी व्यक्ति देश का पिछला डढ सौ वर्ष का इतिहास लिखता है वह आर्य समाज का उल्लेख किए बिना नही रह सकता। प्रत्येक क्षेत्र मे और प्रत्येक दिशा मे आर्य समाज की छाप किसी न किसी रूप मे हमें दिखाई देने लगती है। लेकिन अब स्थिति बदल रही है। हम अपने आपको किसी भ्रान्ति मे रखना चाहे तो और बात है, वास्तविक स्थिति यह है कि आर्य समाज कही भी नही है, यह नही कि उसके कार्यकर्ता काम नही करते। काम तो कई क्षेत्रो मे हो रहा है लेकिन जनता में उसका प्रभाव नहीं पड रहा। आज पुराने स्तर के आर्य समाजी बहुत कम दिखाई देते हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि आर्य समाज आज जो कुछ भी है एक चू-चू का मुरब्बा बनता जा रहा है। वह भी आर्य समाजी है जो मूर्ति पूजा के विरुद्ध है, और वह भी जो मूर्ति पूजा करता है। वह भी आर्य समाजी है जो मास भक्षण करते हैं और वह भी आर्य समाजी हैं जो मास भक्षण का विरोध करते हैं। वह भी आर्य समाजी हैं जो वेदो को ईश्वरीय ज्ञान नही मानते और वह भी आर्य समाजी हैं जो वेदो को अपौरुषेय और ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। सब से अधिक नैतिक गिरावट आर्थिक क्षत्र मे आई है। आर्य समाज की यह ख्याती इस देश में ही नही इस से बाहिर भी जगह-2 फैली हुई थी कि यह एक ऐसी संस्था है जिसमे जनता की कौडी-2 का हिसाब रखा जाता है और आर्य समाज मे कोई व्यक्ति ऐसा सहन नही किया जा सकता जो जनता के द्वारा दिए गए धन का दुरुपयोग करें। यही कारण था कि लोग दिल खोल कर आर्य समाज के लिए धन दिया करते थे। हमारे देश मे जितनी धार्मिक संस्थाए हैं उनमे केवल आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है। जहा आज से पहले चोर बाजारी बेईमानी या किसी प्रकार के घपला करने वाले किसी व्यक्ति को कोई अधिकार न दिया जाता था। यही कारण है कि आर्य समाज आर्थिक रूप से दूसरी कई संस्थाओ से शिथिल रही है, परन्तु काम उसने अधिक किया है। इतिहास पर उसकी छाप बाकी सब संस्थाओ से अधिक रही है। देश की स्वतन्त्रता के लिए लडने और उसका सामाजिक निर्माण करने में आर्य समाज ने अपना जो योगदान दिया है वह किसी और संस्था ने न दिया होगा। फिर भी आज आर्य समाज पिछड रहा है। देश के सामने कई प्रकार की समस्याए हैं। जिनके विषय मे आर्य समाज जनता का मार्ग दर्शन कर सकता है। लेकिन नहीं कर रहा है। इस के पूर्वज अपने तप और त्याग से इसे जिस मार्ग पर चला गए थे आज यह उस पर चलने का प्रयास तो करती है परन्तु अपने लिए कोई नया रास्ता नही ढूढती। यद्यपि देश के सामने कई प्रकार की नई-नई समस्याए खडी हो गई हैं। आजकल पोप जानपाल हमारे देश की यात्रा कर रहे हैं। हमारी सरकार के सब साधन उसके स्वागत मे लगे हुए हैं। क्या कभी सरकार ने आर्य समाज के किसी नेता के लिए भी इतना कुछ किया है? जितना वह ईसाईयो के इस नेता के लिए कर रही है? उसे आर्य समाजियो की केवल उस समय आवश्यकता पडती है जब चुनाव का वक्त आता है, उनका वोट लेने के लिए वह आर्य समाजियो से पूछती है कि वह कहा हैं। ज्यो ही चुनाव समाप्त होते हैं वह आर्य समाज को भूल जाती हैं। इस पर भी हमारे नेता उस के लिए वोटो की भीख मागते फिरते हैं। आज हमारे अन्दर वह स्वाभिमान भी नही रहा जो एक संस्था मे होना चाहिए। यही कारण है कि आज उसे कोई नही पूछता।

मैंने आर्य समाजियो के लिए आचार संहिता की आवश्यकता का विषय उठाया है तो उसके कई कारण हैं। एक तो जो कुछ मैं आर्य समाज मे देख रहा हू। वह अत्यन्त दुर्भाग्य पूर्ण है और मैं समझता हू कि यदि उसे न रोका गया तो कुछ समय के पश्चात आर्य समाज की इस देश की बडी 2 संस्थाओ मे कोई गिनती न होगी। मैं पजाब मे रहता हू और यहा कुछ संस्थाओ के संगठनो को देखता हू और जब आर्य समाज की उनके साथ तुलना करता हू तो निराश होता हू। सिख इस समय चार वर्गों मे बटे हुए हैं। अधिकतर अकाली हैं। कुछ नामधारी हैं, कुछ निरकारी हैं और कुछ राधास्वामी हैं। इनके शक्तिशाली संगठन को देखता हू और फिर आर्य समाज को देखता हू तो निराशा होती है और जब यह सोचता हू कि यह संगठन इतने शक्तिशाली क्यो बन गए? तो एक ही उत्तर मिलता है कि उन मे कोई आचार संहिता है जिस पर उनका प्रत्येक सदस्य चलता है। हमारी कोई आचार संहिता नही है। इसीलिए जो जिधर चलना चाहता है चलता है। यही कारण है कि हमारा संगठन दिन प्रतिदिन शिथिल हो रहा है। मैं चाहूगा कि आर्य जनता इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करे। मैं जानता हू कि कुछ नेता मेरे इन लेखो से बिगडेंगे परन्तु आज आर्य समाज के भविष्य का प्रश्न है अब न सोचेंगे तो कुछ समय के पश्चात सब कुछ हाथ से निकल जाएगा और हम हाथ मलते रह जाएगे। (शेष फिर)

—वीरेन्द्र

सभा से कलैण्डर मंगवाए

सभा ने महर्षि दयानन्द का कलैण्डर 1986 का छपवाया है जिसका मूल्य लागत मात्र 150 रुपया सैंकडा रखा गया है। आर्य समाजो तथा शिक्षण संस्थाओ के अधिकारियो से हमारी प्रार्थना है कि शीघ्र ही अपना आर्डर भेजे। आपको कितने कलैण्डर भेजे जाए शीघ्र भेजें।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा का शिवरात्रि विशेषांक

गत वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी आर्य मर्यादा का शिवरात्रि विशेषांक प्रकाशित हो रहा है। हमारी सभी आर्य समाजो व शिक्षण संस्थाओ के अधिकारियो से प्रार्थना है कि अपनी संस्था की ओर से इस विशेषांक का आर्डर शीघ्र भेजें। कितनी प्रतिया आपको भेजी जाए लिखें साथ ही गत वर्ष की भान्ति अपनी ओर से तथा अपनी संस्था की ओर से विज्ञापन भेजकर सभा को अपना सहयोग दे।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

आर्य समाज : तब अब और आगे

लेखक—श्री स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक
अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उत्तर प्रदेश)

(गताक से आगे)

कुरीति-निवारण

आर्य जाति की मान्यताओं मे गड़बड़ के परिणाम-स्वरूप जो कुरीतियां हिन्दू समाज में घर किए हुए थी और जिनके कारण यह जाति अधिकाधिक पतन के गर्त में चली गई तथा भारत पराधीनता के पाश मे बधा, उनके निवारण के के लिए आर्य समाज ने सभा सम्मेलनो, साहित्य (पत्र-पत्रिकाओ और पुस्तको) के द्वारा प्रबल आन्दोलन किया। इन कुरीतियो का क्षेत्र इतना व्यापक रहा कि चाहे बालक का जन्म हो, चाहे विवाह आदि सस्कार हो, किसी की मृत्यु हो, प्रत्येक विषय मे हिन्दुओ के सभी वर्गों मे पृथक पृथक् तथा प्रान्तगत मान्यतायें घर कर गयी थीं। आर्य समाज ने इन सभी पर प्रबल प्रहार किए। यद्यपि आर्य बन्धों को इसके लिए अत्यधिक कष्ट उठाने पड़े, यहा तक कि अनेक को तो जीवन से भी हाथ धोना पड़ा तथा निरन्तर और अबाध प्रयत्न होते रहे। तथ्य तो यह है कि वर्तमान समय में भी न केवल भारत मे ही अपितु विश्व भर मे कुरीतियों और बुराइयों पर सीधा प्रहार करने वाली आर्य समाज के अतिरिक्त अन्य कोई संस्था नहीं है।

कुरीति-निवारण मे सर्वाधिक प्रहार आर्य समाज ने मूर्तिपूजा और जाति-भेद पर किए हैं। कारण यह है कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के मतानुसार आर्य जाति के पतन के मुख्य कारण ये ही दोनो हैं। इन्ही दोनो कारणो से भारत पराधीन हुआ। मूर्ति-पूजा मे फसी आर्य जाति इस अन्ध-विश्वास के कारण विदेशी आक्रमण-कारियो का सामना भी न कर सकी, क्योकि इस जाति को यह विश्वास था कि बाबा विश्वनाथ और सोमनाथ महा-देव सब म्लेच्छो को मार कर भगायेगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुजरात काठियावाड़ के सोमनाथ मन्दिर और काशी के विश्वनाथ मन्दिर के उदाहरण इस प्रसग मे अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे दिये हैं।

दूसरा प्रमुख कारण उन्होने जाति भेद को माना है, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय सगठित होकर विदेशी आक्र-मणकारियो का प्रतिरोध नही कर सके और एक-एक करके सभी भारतीय राजा विदेशियो के द्वारा पराजित होते रहे। इसके अतिरिक्त भी चाहे मादक द्रव्य-निषेध हो बाल विवाह हो अथवा विधवा विवाह सभी समस्याओ से आर्य समाज ने प्रबल सघर्ष किया।

शुद्धि-कार्य

विधर्मियो को वैदिक धर्म की दीक्षा देकर उन्हे वैदिक धर्मी आर्य बनाने के कार्य को आर्य समाज ने शुद्धि का नाम दिया। इस कार्य से ऋषियो की सन्तानो को विधर्मी बनने की गति भी अवरुद्ध हुई और साथ ही विधर्मी बने भाईयो के स्वधर्म मे वापस आने का क्रम भी प्रारम्भ हो गया। यह क्रम अभी भी चल रहा है। पिछले दिनो मीनाक्षीपुरम (दक्षिण भारत) मे मुसलमानो द्वारा सामूहिक रूप से बलपूर्वक हिन्दुओ के धर्म परिवर्तन काण्ड से तो यह गति और भी तीव्र हो गयी है और इस चोट से आर्य समाज सोते सिंह की भाति जाग उठा है तथा मीनाक्षीपुरम के मुस्लिम बने भाइयो को तो पुन वापस लिया ही साथ ही भारत के विविध क्षेत्रो मे सहस्रो की सख्या मे मुगल युग के तलवार के बल पर मुसलमान बनाये गये लोगो के परिवारो को पुन वैदिक धर्म मे दीक्षित कर लिया है। यहा तक कि कई उच्च कोटि के मुस्लिम विद्वान् (मौलाना इमाम और इस्लाम के प्रचारक) वैदिक धर्म मे दीक्षित होकर आर्य समाज तथा वैदिक धर्म के उपदेष्टा व प्रवक्ता बनकर धर्म प्रचार और शुद्धि कार्य मे लग गए हैं।

वेद प्रचार

वेद प्रचार के लिए आर्य समाज ने गुरुकुलो के माध्यम से तो वेद के विद्वान् तैयार किए ही, उपदेशक विद्यालयो की स्थापना करके भी अनेक वैदिक विद्वान् उपदेशक और पुरोहित तैयार किए हैं। उनमें से कुछ तो पूर्णकालिक रूप से आर्य समाज की सेवा में रहकर उपदेशों, विवाह आदि संस्कारों व सामान्य तथा वृहद यज्ञों द्वारा वेद प्रचार कार्य कर रहे हैं और कुछ अल्पकालिक रूप में आर्य समाजो के उत्सवों आदि के अवसरो पर भाषणों द्वारा।

इसके अतिरिक्त विगत शताब्दी के आर्य समाजी विद्वानों द्वारा पृथक् पृथक् स्वेण संस्थाए स्थापित करके अथवा व्यक्तिगत रूप से तथा प्रादेशीय प्रति-निधि सभाओं, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा विपुल वैदिक साहित्य लिखा और प्रकाशित किया गया है, जो भारत से बाहर विदेशो के अनेक महान् विचारकों और लेखको को अब तक प्रभावित कर चुका है। विश्व के बड़े-बड़े पुस्तकालयों मे भी आर्य संस्थाओ द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य—चाहे स्वल्प मात्रा में ही सही किन्तु उपलब्ध है।

विगत 25-30 वर्षों में तो अनेक विद्वानो ने महर्षि दयानन्द और आर्य समाज से सम्बद्ध विषयों पर ही पी एच डी, की उपाधियां प्राप्त की हैं। इसके अतिरिक्त भी अन्य अनेक निष्पक्ष विद्वान्—जिन्होने भारत मे समाज सुधार राष्ट्रभाषा प्रसार धार्मिक क्रान्ति तथा राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन आदि विषयो पर लेखनी उठायी है—ऋषिवर दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज के कार्यों की मुक्तकण्ठ से प्रशसा किए बिना नहीं रह सके। राष्ट्र-कवि तथा भागलपुर विश्वविद्यालय (बिहार) के भूतपूर्व उपकुलपति स्वर्गीय श्री रामधारी सिंह 'दिनकर ने तो अपने 'संस्कृति के चार अध्याय' नामक ग्रन्थ मे भारत के समाज सुधार आन्दोलन का वर्णन करते हुए सर्वाधिक महत्व महर्षि दयानन्द और आर्य समाज का ही दिया है। ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के कार्यों तथा देश और हिन्दुओ के प्रति उनकी देन का वर्णन करते हुए स्वर्गीय 'दिनकर जी की लेखनी मुखर हो उठी है और जो ओजस्विनी भाषा धारा उनकी लेखनी से उक्त सन्दर्भ में प्रवाहित हुई है, वह उस बृहद्काय ग्रन्थ मे अन्यत्र कहीं भी नहीं हो सकी।

इसके अतिरिक्त भारत के प्रसिद्ध सन्त साधु टी. एल वास्वानी तथा अर-विन्द घोष और पाश्चात्य जगत के फादर ऐण्ड्रूज व सन्त रोम्या रोला आदि ने भी ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के कार्यों का मूल्यांकन किया है और उन के कार्यों की अत्यन्त महत्वपूर्ण शब्दों में प्रशसा की है।

गोरक्षा-आन्दोलन

महर्षि दयानन्द ने भारत में अंग्रेजी राज्य के समय ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया के राज्यकाल उन्नीसवीं शती में ही गौरक्षा आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया था। उन्होंने महारानी विक्टोरिया से पत्र व्यवहार कर के यह स्वीकृति प्राप्त कर ली थी कि भारतीयों द्वारा एक करोड़ हस्ताक्षर युक्त प्रार्थना-पत्र होने पर ब्रिटिश सरकार भारत में कानून द्वारा गो हत्या बन्द कर देगी। भारत का दुर्भाग्य ही कहिये कि महर्षि दयानन्द के असामयिक देहावसान से यह योजना पूरी न हो सकी। उन्हीं दिनो महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एक पुस्तक भी 'गोकरुणानिधि' नाम से लिखी थी, जिस मे गोवश के मानव जाति पर उपकार, उस से आर्थिक लाभ तथा उस के दुग्ध आदि से होने वाले स्वास्थ्य सम्बन्धी लाभ भी विवर्णित किये गए हैं। महर्षि दयानन्द के संसार से विदा होने के पश्चात् भी आर्य समाज गोरक्षा आन्दोलन को किसी—न—किसी रूप में चलाता ही रहा है।

वन्य जातियों में

दुर्गम पार्वत्य तथा वन्य प्रदेशों में भी आर्य समाज अपने केन्द्र खोलकर पाठशालाओ, वाचनालयो तथा औषधि वितरण केन्द्रों के द्वारा निर्धनों की सेवा और उन्हे ईसाई बनने से बचाकर हिन्दू जाति तथा वैदिक धर्म की सेवा और रक्षा करने मे निरन्तर प्रयत्नशील है। स्वल्प साधनो के होते हुए भी आर्य समाज का यह कार्य इन क्षेत्रों मे निरन्तर प्रगति पर है।

हैदराबाद का सत्याग्रह

सन 1939 ई मे जब हैदराबाद में धर्मान्ध मुस्लिम निजामशाही राज्य कर रही थी और नये मन्दिर बनाना तो क्या, पुराने मन्दिरो को टूट-फूट तक ठीक नहीं कराने दी जाती थी। हिन्दू अपने घरो मे न तो हवन कुण्ड निर्मित कर सकते थे और न हवन कर सकते थे। बिना निजामशाही की स्वीकृति के वे विवाह भी नहीं कर सकते थे और मानने पर तीन-तीन वर्षों तक स्वीकृति नही दी जाती थी, दूसरे शब्दो में हिन्दुओं का प्रत्येक प्रकार से जीवन इतना दूभर कर दिया गया था कि वे जीवित रहने के लिए मुसलमान बनने को बाध्य हो जायें।

क्रमश

पोप की भारत यात्रा

लेखक—श्री वीरेन्द्र प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ईसाईयों के रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के सबसे बड़े धर्म गुरु पोप जानपाल आजकल भारत की यात्रा कर रहे हैं। वह राष्ट्रपति के निमन्त्रण पर आए हैं। इस लिए उन के राजकीय स्वागत की तैयारियां हो रही हैं। दूसरी ओर समर्थन सब हिन्दू धार्मिक संस्थाओं की ओर से उनके विरुद्ध प्रदर्शन करने की तैयारियां भी हो रही हैं।

भारत एक स्वतन्त्र देश है और लोकतन्त्री संविधान के अनुसार इसका शासन चल रहा है। इसके दरवाजे सब के लिए खुले हैं। कोई यहां आकर इस देश का दौरा करे तो उसे रोका नहीं जाता। कई बार हमारी सरकार ऐसे पर्यटकों को प्रोत्साहन भी देती है।

लेकिन पोप के आगमन और दस दिन की उनकी यात्रा अलग ही किस्म की है। यही कारण है कि इस का इतना विरोध हो रहा है। इस के विरुद्ध सबसे बड़ी आपत्ति यह है कि भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है। यहां एक विशेष धर्म के धर्म गुरु के राजकीय स्वागत का क्या अभिप्राय ? एक ओर तो हमारी सरकार हिन्दू संगठन पर भी आपत्ति करती है। हिन्दू संस्थाओं को यह कह कर हतोत्साहित किया जाता है कि यह साम्प्रदायिकता है। यही कारण है कि कई राजनीतिक लोग अपने आपको हिन्दू कहलाने में शर्म महसूस करते हैं। दूसरी ओर हमारे राष्ट्रपति एक शुद्ध धार्मिक नेता को भारत आने का निमन्त्रण देते हैं और सरकार उनके स्वागत की तैयारियां करती । यह धर्म निरपेक्षता का स्पष्ट उल्लंघन नहीं तो क्या है। यदि सरकार पोप का स्वागत कर सकती है जबकि वह एक धर्म के मुखिया हैं तो फिर सरकार किसी दूसरे को अपने धर्म का सहारा लेने से कैसे रोक सकती है।

इस का एक और पक्ष भी है। ईसाई धर्म दुनिया का एक बहुत बड़ा धर्म है। इसके अनुयायियों की संख्या भी करोड़ों है। और उनकी पीठ पर बहुत बड़ी राजनीतिक शक्ति है। इसलिए ईसाइयत बहुत देर तक राजनीतिक सत्ता का माध्यम बनी रही है। हमारे देश में विशेष रूप से इस्लाम और ईसाइयत तलवार के जोर से आए थे। अंग्रेज जब तक इस देश में रहे ईसाइयत को सरकार का संरक्षण प्राप्त रहा। आज भी हमारे देश में यदि ईसाइयत के कुछ चिन्ह शेष हैं तो उस संरक्षण के कारण जो उसे अंग्रेज सरकार की ओर से प्राप्त था। यदि आज भी हमारे देश में ईसाइयत का प्रचार होता है तो उस धन के सहारे जो भारत मे ईसाइयत के प्रचार के लिए दूसरे देशों से आता है। पोप जानपाल अब उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अपने धन से गरीबों का धर्म खरीदते हैं। वह समय ईसाई साम्राज्यवाद के सब से बड़े प्रतिनिधि हैं। और हम जानते हैं कि हमारे देश में भी धन के सहारे गरीब लोगों का धर्म खरीदा जाता है। इस लिए उनके यहा आने की हमें कोई खुशी नहीं हो सकती यही कारण है कि सरकार की ओर से उनका स्वागत किया जा रहा है उसका विरोध नहीं हो रहा है।

पोप का आगमन भारत के उन क्षेत्रों में कुछ और कठिनाइयां भी पैदा कर सकता है जहां ईसाइयत के प्रसार से कुछ चिन्ताजनक हालात पैदा हो रहे हैं। इस समय ईसाइयत का अधिक जोर या तो दक्षिण भारत विशेष रूप से केरल में है अथवा पूर्व में है। नागालैंड मिजोरम, मेघालय, अरुणांचल और असम के कुछ इलाके। नागालैंड में तो एक लम्बे समय से यह आंदोलन भी चल रहा है कि इस इलाके को उसी तरह अलग कर दिया जाए जिस तरह इस्लाम के नाम पर पाकिस्तान बनाया गया था। इसमें बचाव केवल यह है कि नागालैंड एक बहुत छोटा राज्य है। यदि यह एक बड़ा राज्य होता और इसकी 90 प्रतिशत जनसंख्या ईसाई होती तो यह भी वही करारत कर सकता था जो [illegible] सिंध और सीमा प्रान्त में हुई थी। पोप के आने से उन लोगों को प्रोत्साहन मिलेगा जो एक अलग ईसाई देश चाहते हैं।

हम यह भी नहीं भूल सकते कि अंग्रेज के समय में अधिकांश ईसाईयों ने देश के पक्ष में नहीं बल्कि विरोध में भूमिका निभाई थी। आज वे उस सीमा तक तो नहीं जा सकते लेकिन एक नया ऐसा आन्दोलन तो शुरू हो सकता है जो आगे चल कर हमारे लिए कठिनाइयां पैदा कर सकता है।

पोप का विरोध इसलिए भी हो रहा है क्योंकि गत दिनों यह समाचार प्रकाशित हुआ था कि पोप के आगमन पर कुछ नए ईसाई उन्हें पेश किए जाएंगे। बाद में इसका खण्डन भी किया गया है लेकिन यह आशंका अब भी बनी हुई है कि पोप के आगमन पर कुछ और भारतीयों को ईसाई बनने के लिए तैयार किया जाएगा। सामान्यतः देखा गया है कि गरीब लोग ही पादरियों के जाल में फंसते हैं और हमारे देश में उनकी कमी नहीं है। जब यह कहा जाएगा कि भारत सरकार पोप का स्वागत कर रही है तो हमारा पिछड़ा हुआ वर्ग और भी प्रभावित होगा।

इस समय ईसाई पादरियों की गतिविधियां गांवों में अधिक तेज हैं। हाल ही में यह भी प्रकाशित हुआ है कि मध्य प्रदेश में ईसाईयों की संख्या बढ़ रही है। हिमाचल में भी ईसाई पादरी काम कर रहे हैं।

जब जब ईसाई पादरी देश के विभिन्न भागों में सक्रिय हैं और ईसाईयों की असली वफादारी मुसलमानों की तरह देश से बाहर है तो फिर सरकार ऐसी कोई कार्यवाही क्यों करे, जिससे ईसाईयत को इस देश में प्रोत्साहन मिले। इसीलिए यह प्रश्न किया जाता है कि धर्म निरपेक्ष सरकार एक धर्म विशेष के मुखिया का इस तरह स्वागत क्यों करे ?

पोप पाल का आगमन और उनका राजकीय स्वागत समूचे हिन्दू जगत के लिए एक चुनौती है। यदि वह अन्य विदेशियों की तरह आते और इस देश की यात्रा करने के बाद वापिस चले जाते तो इस पर किसी को आपत्ति न होती। वह इस देश में प्रमुख ईसाईयों से भी मिल सकते थे। गिरजाघरों में जाकर उपदेश भी दे सकते थे लेकिन राजकीय तौर पर उन का स्वागत क्यों किया जाए वह किसी देश के प्रधानमन्त्री या राष्ट्रपति नहीं हैं। इटली में एक छोटा सा शहर वैटीकनसिटी उनका मुख्यालय है। इन में उनका शासन अवश्य चलता है। यह शहर शायद सारे जालन्धर से भी बड़ा नहीं है। इसका महत्व केवल यह है कि यहां रोमन कैथोलिक लोगों के गुरु रहते हैं इससे अधिक न पोप का कोई महत्व है न वेटीकन का। ऐसी स्थिति में पोप का राजकीय स्वागत क्यों किया जा रहा है। हमारे देश में भी कई महान सन्त महात्मा है। यह जब दूसरे देशों मे जाते हैं तो वहां की सरकारें उनका स्वागत नहीं करती। स्वागत जब भी होता है या तो राष्ट्रपति का या प्रधानमन्त्री का। पोप न तो किसी देश के राष्ट्रपति हैं न प्रधानमन्त्री। ऐसी स्थिति मे यदि उनका स्वागत किया जा रहा है तो क्यों ? क्या यह सरकार की धर्मनिरपेक्ष नीति के विरुद्ध नहीं है ? भारत समूचे विश्व में एक हिन्दू राष्ट्र समझा जाता है क्योंकि यहां की 80 प्रतिशत जनसंख्या हिन्दू है। और ईसाईयों का सबसे बड़ा हमला इस देश के हिन्दूओं पर ही होता है। जिन लोगों को अपना धर्म छोड़ने के लिए तैयार किया जाता है वे अधिकतर हिन्दू ही होते हैं। यह असम्भव है कि पोप को यह पता ही न हो कि भारत में ईसाइयत के प्रचार के लिए क्या कुछ किया जा रहा है। जो धन इस काम के लिए दूसरे देशों से आता है वह अधिकतर वे ईसाई भेजते हैं जो पोप के अनुयायी हैं। ऐसी हालत में हिन्दूओं के इस देश में पोप का स्वागत कैसे हो सकता है लेकिन सरकार धर्म निरपेक्षता की आड़ में एक धर्म निरपेक्षता विरोधी कार्यवाही कर रही है। इस के बाद हम सरकार की धर्म निरपेक्षता को कैसे मान सकते हैं। सरकार कई बार स्वयं ऐसी परिस्थितियां पैदा करती है जब जनता उसके फैसलों का विरोध करने को विवश हो जाती है। भारत सरकार की ओर से पोप का स्वागत एक ऐसा निर्णय है जिस का डट कर विरोध करना इस देश की जनता का कर्तव्य बन जाता है।

गुरु विरजानन्द जी की वंशावली के खोजने वाले आर्य समाज के महान् कर्मठ कार्यकर्ता

महाशय रघुनन्दन लाल जी

लेखक—स. अधिष्ठाता—श्री गुरु विरजानन्द,
वैदिक संस्कृत महाविद्यालय, करतारपुर (जालन्धर)

आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी के सभी कर्मठ कार्यकर्ता नेता तथा श्रद्धालु जिन्होने आर्य समाज के शास्त्रार्थ भरे और संघर्षमय युग में भावना के विवेक रखते हुए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया, धीरे-धीरे एक एक करके काल के क्रमिक चक्र के अर्पित हो रहे हैं। ऐसे ही थे स्व महाशय रघुनन्दन लाल जी, जिन्होंने अपनी युवावस्था से लेकर अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक आर्य समाज की महान् सेवा की।

आज से पाच छः वर्ष पूर्व जब हमे करतारपुर व गुरु विरजानन्द स्मारक की पृष्ठ भूमि के विषय में जानकारी एकत्रित करने का अवसर मिला तो उन में सर्वाधिक सामग्री हमें श्री महाशय जी से ही प्राप्त हुई। महाशय जी की स्मृति इतनी पुष्ट थी कि लगभग 90 वर्ष की आयु में भी उन्हें आर्य समाज के सम्मेलनों, विशेष क्रियाकलापों की तिथियां तथा व्यक्तियो के नाम व स्थान अविकल रूप में याद थे।

आर्य कन्या पाठशाला करतारपुर के निर्माण में उसके चलाने में आपने उस समय भी जबकि लड़कियों का पढ़ाना सांप के सिर से मणि उतारने के समान था, इसके विरोधियों का डट कर सामना किया। पाठशाला के आरम्भ करने के दिनों मे महाशय जी स्वय अपने अन्य सहयोगियों के साथ लोगों के घरों में जाकर लड़कियों को पढ़ाने के लिए लाते तथा वापस छोड़ने जाया करते थे। इतना ही नहीं नगर में कन्या पाठशाला का प्रबल विरोध होने के कारण स्कूल के मुख्य दरवाजे पर उन्हें पूरे दिन प्रहरी भी बनना पड़ता था।

1925 में दयानन्द अर्ध शताब्दी में भी आप आर्य समाज करतारपुर के अन्य सदस्यों के साथ सम्मिलित हुए थे। यहां शाहपुराधीश जी की अध्यक्षता में गुरु विरजानन्द जी के जन्म स्थान की खोज करने बारे विचार हुआ था। बाद में 1929 में करतारपुर आर्य समाज के उत्सव पर महाशय कृष्ण जी के सुझाव पर आर्य समाज करतारपुर ने स्वामी विरजानन्द जी के जन्म स्थान को खोजने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इन दोनों विभूतियों ने करतार के निकट के धीरपुर, डोगरां वाला, कुछोवाल मल्लियां, स्यामी, मानातलवण्डी बहा-



(स्व. श्री रघुनन्दन लाल जी)

दल सकराला मुस्तापुर हमीरा आदि गांवों में घूम-घूम कर वहा के वृद्ध लोगों से स्वामी विरजानन्द जी तथा उनके परिवार बारे जानकारी इकट्ठी की जो कि लिखित रूप में उन्होने ट्रस्ट के भूत-पूर्व संचालक पूज्य स्वामी विज्ञानान्द जी महाराज को बाद में सौंप दी थी और स्वामी जी ने उन बयानों को 'यज्ञयोग ज्योति' (मासिक पत्रिका, रोहतक) में प्रकाशित भी किया था।

परन्तु केवल उन बयानों से उन्हें कुछ निश्चित क्रम न मिल पाने से नवम्बर 1929 में अपने प्रिय सहयोगी बाबू यमुनादास जी को साथ लेकर हरिद्वार गये तथा स्वयं को शारदा ब्राह्मण बतलाकर तीर्थ के पण्डों से कहा कि जो हमारे पूर्वजों का पता देगा उसे हम भारी दक्षिणा देंगे। पण्डों मे होड़ लग गयी तथा अपनी-अपनी बहियों को टटोलने लगे परन्तु एक सप्ताह तक भी कोई सुराग नहीं मिला, एक सप्ताह बाद 60-65 वर्षीय पाण्डे पं, ज्वाला-प्रसाद जी ज्वालापुर निवासी ने विरजानन्द जी के पूर्वजों की क्रमिक जानकारी दी। इस वंशावली को प्राप्त करने में श्री चमूपति जी एम. ए. ने भी महाशय जी को बहुत सहयोग दिया। यह वृत्तान्त 15 नवम्बर 1929 के दैनिक प्रताप जालन्धर में भी प्रकाशित हुआ था। इस प्रकार महाशय जी ने स्वामी के पूर्वजों की वंशावली प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। परन्तु खेद से लिखना पड़ता है कि श्री महाशय द्वारा प्राप्त की गयी वंशावली ही अब तक प्रकाशित स्वामी विरजानन्द जी की जीवनियों में मिलती है, परन्तु किसी भी लेखक ने औपचारिकतावश भी खोज करने वाले (श्री महाशय रघुनन्दन लाल जी तथा बाबू यमुनादास जी करतारपुर) का नाम जीवनी में दर्शाने का कष्ट नहीं किया।

श्री महाशय जी का सम्पूर्ण जीवन इसी प्रकार की निष्ठा तथा विचित्रता से भरा है, अपनी मृत्यु से 2 वर्ष पूर्व भी लगभग 92·93 वर्ष की आयु में महाशय जी गुरुकुल कांगड़ी का उत्सव देखने गये तथा पुराने गुरुकुल कांगड़ी में जाकर भाव विभोर होकर वहा के चप्पे-2की कथा अपने साथ गये परिवार-जनों को सुनायी, कांगड़ी ग्राम के कई वृद्धों से भी भेंट की। यह भी उनकी लगन और आर्य समाज के प्रति श्रद्धा। श्री महाशय जी ने अछूतोद्धार मे भी काफी योगदान दिया। स्मारक तो उन्हें कभी भूलता ही नहीं था।

श्री महाशय जी महर्षि दयानन्द के कट्टर भक्त, निष्काम आर्य समाजी, वाणी के धनी, मृदुभाषी तथा मधुर भाषी थे। आपका जन्म विक्रमाब्द 1948 में श्री मासाराम जी अग्रवाल के घर कस्बा मुलाना जिला अम्बाला तहसील जगाधरी में हुआ था। आपके पिता जी सम्वत् 1949 अर्थात् जन्म के एक वर्ष बाद ही परम पिता को प्यारे हो गये थे और सम्वत् 1951 में आपकी माता जी भी स्वर्ग सिधार गई थी। लगभग 95 वर्ष की आयु में हमारे आदर्श श्री महाशय रघुनन्दन लाल जी भी 10 जनवरी सन् 1986 को हमें सदा सदा के लिए छोड़ कर परलोक सिधार गए।

श्री महाशय जी के कार्य तथा उनका अतिशय प्रेम हमें निरन्तर उन की स्मृति कराता रहेगा। यह प्रसन्नता की बात है कि श्री महाशय जी के तीनों पुत्र व दोनों पुत्रियां भी अपने पूज्य पिता जी के चरण चिन्हों पर चलते हुए आर्य समाज के लिए तन मन व धन के साथ पूरा समय भी देते हैं।

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट तथा श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर श्री महाशय जी के शोकाकुल परिवार के साथ हृदय से सहानुभूति प्रकट करते हैं।

पोपपाल के आने पर धर्मान्तरण की छूट नहीं

प्रधानमन्त्री और गृहमन्त्री का आर्य समाज के शिष्टमण्डल को आश्वासन

पोप पाल के भारत आगमन पर बड़े पैमाने पर आदिवासियों के धर्मान्तर के समाचार से भारतीय जनता में व्याप्त असतोष को देखते हुए श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में आर्य समाज का एक शिष्टमण्डल प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी गृहमन्त्री श्री चव्हाण और आंतरिक सुरक्षा राज्यमन्त्री श्री अरुण नेहरू से मिला और उन्हें एक ज्ञापन दिया जिसके उत्तर में उन सबने यह आश्वासन दिया कि पोपपाल के आगमन पर ऐसे किसी धर्मान्तरण की छूट नहीं दी जाएगी। सरकार इस विषय में पूरी तरह सावधान है। राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह को भी ज्ञापन दिया गया।

गृहमन्त्री ने वायरलैस से बिहार राज्य सरकार को इस विषय में पूरी सावधानी बरतने का आदेश दिया। श्री अरुण नेहरू ने दृढ़ता पूर्वक कहा कि ऐसा कोई तमाशा नहीं होने दिया जाएगा। प्रधानमन्त्री ने कहा कि मैं गृहमन्त्री और आंतरिक सुरक्षा मन्त्री के आश्वासन का पूरी तरह समर्थन करता हूं।

शिष्टमण्डल में हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो. शेरसिंह और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री डा. धर्मपाल आदि भी सम्मिलित थे।

आर्य समाज फतेहगढ़ चूड़ियां का चुनाव

आर्य समाज फतेहगढ़ चूड़ियां गुरदासपुर का चुनाव 26-1-86 को सर्व सम्मति से निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्रीमान् विजय कुमार कुन्द्रा, मन्त्री—श्रीमान सतीश कुमार बब्बर उपमन्त्री—श्रीमान् नरेन्द्र कुमार कुन्द्रा। श्रीमती भारती देवी गांधी। कोषाध्यक्ष-श्रीमान कृष्ण गोपाल शर्मा। सरपरस्त—पं. ब्रज मुकन्द जी।

—सतीश कुमार बब्बर मन्त्री आर्य समाज

महिला जागरण-समाज सुधार और स्वतन्त्रता

लेखक—आशारानी जी व्होरा दिल्ली

(गताक से आगे)

भारतीय राष्टीय ध्वज की निर्माती प्रथम क्रांतिकारी महिला भी काजी कामा कस्तूरबा गा ऐनी बेसेंट, माग्रट कजिन्स वासन्ती देवी पावती देवी बाई अमन, सरला दवी चोधरी, सरोजिनी नायडू, नेलीमेन गप्त ननिबाला देवी, —शो रानी जुत्शी राजकुमारी अमतको, मीरा बेन जानकी देवी बजाज खुर्शीद नौरोजी मृदुला सारा भाई सत्यवती कमला नेहरू, कमला देवी चटटोपाध्याय विजय लक्ष्मी पण्डित दुर्गाबाई (देशमुख) सुचेता कृपलानी अरूणा आसफअली डा सुशीला नैयर, अम्मू स्वामीनाथन, इन्दिरा नेहरू (गा धी, रामेश्वरी नेहरू आदि।

और क्रान्तिकारी महिलाए शहीद प्रीतिलता। बरसती गोलियो मे तीर सी निकल आने वाली सूय सेन की साथिन कल्पना दत्त। गवनर पर गोलिया चलाने वाली छात्राए —वीणा दास शा ि त घोष सुनीति चौधरी, उज्जवला मजूमदार, लीला नाग (राय) सुहासिनी गागुली, हेलेना दत्त, खिरोग्प्रभा विश्वास पारूल मुखर्जी, प्रतिभा भद्र किरण चक्रवर्ती मीरा दत्त गुप्ता वनलता सेन सुशीला मित्रा बेला मित्रा आदि अनेको बगाली युवतिया और शहीद चन्द्र शेखर आजाद व सरदार भगत सिह दल की साथिने—दुर्गा सुशीला दीदी, मृणालिनी देवी देवी श्रीदेवी, नीला कुमारी लज्जावती शन्नो देवी, प्रकाशवती आदि। ख खार क्रान्तिकारी माणाराम मिडाल जिसे सर्वाधिक लम्बी सजा मिली और 1942 की शहीद व वीरागनाए — कनकलता मातगिनी हाजरा बहुरिया रामस्वरूप देवी तारा रानी श्री वास्तव शारदा और सरस्वती सहोदरा राय अ दि नाम प्रमुख रूप से गिनाए जा सकते हैं।

आजाद हिन्द फौज मे

और अग्रेजी राज्य का अन्तिम धक्का लगाने वाली आजाद हि द फौज मे कैप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन (सहगल) के नेतत्व मे 'रानी झासी रैजीमैंट' की समग्र सेनानियो, नौ सेना विद्रोह के समय समथन जलूसो मे शहीद नारियो, सत्ता हस्तातरण के समय भारत विभाजन के दगो मे हर तरह का बलिदान देने वाली स्त्रियो तथा 1947 के बाद हैदराबाद गोआ के मुक्ति सग्रामो मे लडने व शहीद होने वाली वीरागनाओ को भी श्रद्धाञ्जलि दिए बिना भी मेरा यह आलेख अधूरा रहेगा।

भारतीय स्त्रियो का मुक्ति सग्राम

इस सारी पष्ठ भूमि म एक बात विशष ध्यान दने की है कि भारत का मुक्ति-सघष और भारतीय स्त्रियो का मुक्ति आन्दोलन ये दो अलग प्रतिक्रियायें नही थीं। भारत मे कभी भी किसी भी युग मे स्त्रियो को अपने अधिकारो के लिए पुरुषो के विरुद्ध मोर्चा नहीं बाधना पडा। हमारी लडाई सामाजिक रूढियो कुरीतियो के खिलाफ रही हो या देश की गुलामी के विरुद्ध भारतीय स्त्रिया पुरुषो के निर्देशन मे उनके क धे से कन्धा भिडा कर लडी हैं। नवजागरण काल से लेकर स्वतन्त्रता सग्राम की इस पूरी अवधि मे पुरुषो ने ही उन्हें आगे बढाया। उन्होंने ही हर कदम पर पुरुषो को प्रेरणा दी और उनका मनोबल बढाया।

इस दष्टि से भारतीय स्त्रियो के मुक्ति आन्दोलन की धारणा पश्चिमी विमेन लिब की धारणा से एकदम भिन्न रही है। हमारी लडाई एक थी, इसलिए उसमे सहयोग और सहकार को ही स्थान था प्रतिद्वन्द्विता को नहीं एक दूसरे को सहारा देते हुए हम साथ साथ लडे क्योकि हमारा लक्ष्य एक था, हमारी मजिल एक थी। देश की आजादी अपनी-अपनी निजी आजादी नहीं।

काश! आजादी के बाद देश के नवनिर्माण के लिए भी हम अपनी इस गौरवशाली परम्परा, इस सहयोगी और बलिदानी भावना को कायम रख पाते।

जग में वैदिक नाद बजा दो

लेखक—श्री प नन्दलाल निर्भय सिद्धात शास्त्री भजनोपदेशक ग्राम बहीन (फरीदाबाद)

पाखड और अविद्या ने धरती पर डाल लिया था डेरा।
धूर्त स्वार्थी वेद विरोधी ढोगी लगा रहे थे फेरा।
यज्ञो मे नर बलि और पशु बलि नित यहा दी जाती थी
गऊओ की गदन कटती थी, विधवाए यहा चिल्लाती थी ॥1॥

जग जननी नारी जाति पैरो की जूती कहलाती थी।
मा मानवता बिलख रही थी दानवता इतराती थी ॥
वैदिक पथ को भुला था जग गुरडम का अति जोर यहा था।
खाओ, पीओ मौज उडाओ शाम माग का शोर यहा था ॥2॥

दया हुई परमेश्वर की जब, वेदो वाला स्वामी आया।
महर्षि दयानन्द योगी ने सोया कुल ससार जगाया ॥
चेतन की पूजा समझाई जड पूजा का रोग मिटाया।
जन्म जाति के बन्धन तोड, शुभ कर्मो का ज्ञान कराया ॥3॥

विघ्न और बाधाओ मे वह वीर नहीं किंचित दहलाया
विष के प्याले भी पी करके, जग को अमृत पिलाया ॥
बलिदानो का विमल पव है, आय वीरो कदम बढाओ।
भौतिकता की चका चौध से, दुखी जगत की धीर बधाओ ॥4॥

राम कृष्ण के वशज हो तुम, हिम्मत से लो काम आर्यो।
लखराम श्रद्धानन्द बन कर, कर दो जग मे नाम आर्यो ॥
वीर लाजपत भगतसिंह बन दानव दल का वश मिटा दो।
देश 2 मे दुनिया भर मे 'निर्भय' वैदिक नाद बजा दो ॥5॥

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-काश्मीर का निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ

प्रधान—डा योगेन्द्र कुमार जी उपप्रधान—श्री नरेन्द्र जी, श्री कृष्ण लाल जी कार्यालयाध्यक्ष श्री मोहन लाल जी मोति लाल श्रीमती राम प्यारी जी श्री लाल कृष्ण जी महामन्त्री—श्री राजेन्द्र कुमार जी सगठन मन्त्री तथा निरीक्षक श्री हरिश्चन्द्र जी उपमन्त्री—श्री लाहोरीमल जी श्री देवेन्द्र कुमार जी, कोषाध्यक्ष—श्री देवराज सेठी जी सरक्षक—श्री शान्ति प्रकाश जी श्री प्रीतम लाल जी श्री अवतार कृष्ण जी श्री राजकुमार जी काहला प्रस्तोता श्री नित्यानन्द शास्त्री, वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री सूयदेव जी —योगेन्द्र कुमार सभा प्रधान

आर्य समाज शिवाजी नगर गुड़गांव का वार्षिक चुनाव

आर्य समाज शिवाजी नगर गुडगाव हरियाणा का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ हुवा है। प्रधान—महाशय चन्दन सिंह, मन्त्री विद्या भूषण शास्त्री कोषाध्यक्ष—प्रभु दयाल चुगानी।

मन्त्री

तलवाड़ा में आर्य वीर दल की स्थापना

दिनाक 24-1 8६ को आर्य समाज मन्दिर मे नवयुवको की बैठक हुई। जिसमें आय वीर दल की स्थापना की गई यह बैठक प परमानन्द जी की अध्यक्षता मे हुई। जिसमे मनोहर लाल मन्त्री आर्य समाज ने नवयुवको को आय वीर दल के कार्य बारे अच्छी तरह बताया। बैठक के निम्नलिखित आर्य वीर दल के अधिकारी सर्वसम्मति से चुने गए।

प्रधान—श्री भरत भूषण जी भाटिया उप प्रधान—श्री बूटाराम जी, मन्त्री—श्री धीरेन्द्र कुमार जी, उपमन्त्री श्री कमल कुमार जी, उपमन्त्री—श्री अश्वनी कुमार जी, प्रचार मन्त्री—श्री जगन सिंह जी कोषाध्यक्ष—श्री सुखदेव जी,

मन्त्री
आर्य समाज

एक लाख हिन्दुओं को अविलम्ब ईसाई बनाने की योजना—सावधान

ईसाइयों के धर्म गुरु श्री पोप पाल के भारत आगमन पर उन के स्वागत के लिए, एक समाचार के अनुसार, ईसाई पादरियों ने तैयारी शुरू कर दी है कि छोटा नागपुर के इलाके मे लगभग एक लाख आदिवासियो को ईसाई बनाने का काम पूरा कर लें।

हिन्दुस्तान में हिन्दुओं को ईसाई बनाने का व्यापक अभियान तभी से चल रहा है। आपके शहर मे भी आए दिन बडी बडी मोटरो से ईसाई धर्म की पुस्तकें कौडियो के मूल्य बेची या बाटी जाती है आपने देखा सुना होगा।

यदि हिन्दुओ के धर्मान्तरण की यही हालत रही तो हमारी आपकी जिन्दगी मे ही हिन्दुस्तान मे ही हिन्दू अल्पसंख्यक हो जायेंगे और फिर न रहेगी धर्मनिरपेक्षता और न ही रहेगा लोकतन्त्र।

क्या धर्मनिरपेक्ष राज्य के यह अर्थ है कि केवल हिन्दुओं को धर्म छोड़ना पडे।

धन से छल से, बल से प्रलोभन से सेवा अथवा चिकित्सा अथवा शिक्षा संस्थाओं के जाल मे फसा कर ईसाई अथवा मुसलमान बनाने की सुविधाए प्रदान करना क्या धर्मनिरपेक्षता है?

भारत में बसे पादरियो ने एक लाख आदिवासी बन्धुओ को ईसाई बना कर अपने धर्म गुरु पोप पाल का स्वागत करने का निश्चय किया है।

दूसरी तरफ गाव के गांव मुसलमान बनाए जा रहे हैं।

धर्मान्तरण के इस विशाल अभियान के लिए उनके पास धन है, साधन हैं, करोडों रुपया इस काम के लिए योरुप, अमेरिका और अरब देशों से अलग-अलग नामों से इस देश को भेजा जा रहा है।

क्या आप इस प्रकार हिन्दू जाति के अंग प्रत्यंग कटते हुए देखकर भी खामोश रहेंगे?

एक धर्मनिरपेक्ष राज्य इस प्रकार कैसे एक धर्म गुरु को राजकीय मेहमान बनाकर उसका स्वागत कर रहा है? क्या यह शासन इसी प्रकार हिन्दू धर्म गुरुओं और पूज्यपाद शंकराचार्यों का राजकीय स्वागत करेगा?

देखिये कहीं हमारी और आपकी भूलों के परिणाम स्वरूप हमारे आपके देखते-देखते भारतीय संस्कृति-हिन्दू धर्म नष्ट न हो जाए।

सोचिए

विचारिए

कुछ तो करिए!

—नगर आर्य समाज
गंगा प्रसाद रोड, लखनऊ

[••]

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस गोपाल रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. न. पी.जे.एल. 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 43, 11 फाल्गुन सम्वत् 2042 तदनुसार 23 फरवरी 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

ईश्वर की उपासना के बिना मानव कल्याण नहीं

लेखक—श्री किशोरी लाल प्रेम—दगशू (सरमौर)

संसार में बनी हुई जितनी भी चीजें हैं, एक सुई और पिन से लेकर बड़ी-बड़ी रेलगाड़ियों, हवाई जहाजों तक को, किसी न किसी ने अवश्य बनाया है। चाहे बनाने वाले को देखा हो या न देखा हो, आप उन्हें जानते हों या न जानते हों लेकिन इतना तो आप अवश्य मानते हैं कि इन चीजों को बनाने वाला कोई न कोई जरूर है।

अब जरा संसार की रचना पर ध्यान दें। यह पृथ्वी लोक है। इस पर बड़े-बड़े समुद्र नदी नाले, पहाड़ जंगल अनेक प्रकार के पशु, पक्षी, जलचर, थलचर, अनगिनत जीव जन्तु हैं। इसी प्रकार सूर्य लोक, चन्द्र लोक तारागणादि अनेक लोक लोकान्तर हैं। इन सबको किसने बनाया। क्या यह सब अपने आप बन गए। कदापि नहीं। जब एक छोटी सुई भी अपने आप नहीं बन सकती तो फिर यह लोक लोकान्तर अपने आप कैसे बन सकते हैं ? इसलिए यह मानना पड़ता है कि इन सबको बनाने वाली कोई शक्ति अवश्य है। उस शक्ति को ही ईश्वर, ब्रह्मा, शिव, परमात्मा, आदि नामों से पुकारा जाता है।

रेल विभाग के प्रबन्ध को देखें जिसमें बड़े बड़े दिमाग सोच कर समय-सारणी (टाइम-टेबल) बनाते हैं। और उसके अनुसार कितने ही कर्मचारी बड़ी सावधानी से कार्य करते हैं। परन्तु फिर भी कभी कभी गाड़ियों की टक्कर हो ही जाती है। अब भगवान की रचना को देखें हमारे पृथ्वी लोक से हजारों लाखों गुना बड़ा सूर्य लोक है। चन्द्र लोक इस पृथ्वी लोक से छोटा है। इनके अतिरिक्त मंगल, बुध, शनि, बृहस्पति और अनेक लोक हैं जो इनसे बड़े हैं। ये सब आकाश के अन्दर घूम रहे हैं। कोई ग्रह तो अपने स्थान पर घूम रहा है, और कोई दूसरे ग्रह के इर्द-गिर्द घूम रहा है। सूर्य अपने स्थान पर घूमता है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। चांद पृथ्वी के चारों ओर घूमता है। इस प्रकार सब ग्रह तथा उपग्रह अर्थात् लोक लोकान्तर घूम रहे हैं। इनके अन्दर जो गुरुत्व आकर्षण शक्ति है, उसी द्वारा से एक दूसरे के गिर्द आकाश मण्डल में घूम रहे हैं। क्या कभी इनकी परस्पर टक्कर भी हुई ? किसने इनका टाइम टेबल बनाया ? कौन इन्हें इस प्रकार चला रहा है ? कौन इन्हें इस प्रकार चला रहा है। वही सर्वज्ञ सर्व शक्तिमान् परमात्मा है जिसने अपनी अनन्त शक्ति से इस अद्भुत संसार को रचा है।

अब ईश्वरोपासना के विषय में प्रश्नोत्तर के रूप में कुछ कहूंगा।

प्रश्न—ईश्वरोपासना का क्या अर्थ है ?

उत्तर—ईश्वर का अर्थ है सबका स्वामी। उप और आसन, इन दो शब्दों से मिलकर उपासना शब्द बना है। उप का अर्थ है समीप। आसन का अर्थ है बैठना इस प्रकार ईश्वरोपासना का अर्थ हुआ ईश्वर के समीप होना।

प्रश्न—हम किस लिए ईश्वर के समीप होना चाहते हैं ?

उत्तर—आनन्द प्राप्ति के लिए।

प्रश्न—ईश्वर के समीप होकर हमें आनन्द की प्राप्ति हो सकती है ?

उत्तर—संसार में तीन पदार्थ हैं—ईश्वर जीव और प्रकृति। प्रकृति सत है, सत का अर्थ है अविनाशी, जिसका नाश न हो, जो सदा से हो। जीव सत और चित है। चित का अर्थ है चेतना। अर्थात् जीव अविनाशी भी है और चेतन भी ईश्वर सत, चित और आनन्द है। अर्थात् अविनाशी भी है, चेतन स्वरूप भी है और आनन्द स्वरूप भी है। प्रत्येक जीव आनन्द चाहता है। और आनन्द की प्राप्ति आनन्द के भण्डार से ही हो सकती है। प्रकृति स्वयं जड़ है। आनन्द तो इस में है नहीं। इसलिए जीव को प्रकृति से जड़ता की प्राप्ति तो हो सकती है, परन्तु आनन्द की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती। यदि जीव आनन्द के भण्डार आनन्द स्वरूप परमात्मा के समीप जायेगा तो इसे आनन्द की प्राप्ति अवश्य होगी। जैसे सर्दी से व्याकुल मनुष्य जब आग के निकट जाता है तब उसकी सर्दी दूर हो जाती है। इसी प्रकार जब सांसारिक दुःखों से व्याकुल मनुष्य उस परम पिता आनन्द के स्रोत भगवान के नजदीक जाता है तब उसकी व्याकुलता स्वयं ही दूर हो जाती है और वह परम आनन्द को प्राप्त करता है। जैसे माता की गोद में बैठ कर बच्चे को आनन्द आता है, उसी प्रकार भक्त भी भगवान की गोद में बैठ कर आनन्द को प्राप्त करता है।

प्रश्न—जब ईश्वर सर्वव्यापक है, कण कण में विद्यमान है कोई स्थान ऐसा नहीं जहां वह व्यापक न हो फिर ईश्वर तथा हमारी क्या दूरी रही और ईश्वर के नजदीक होने का क्या अर्थ हुआ ?

उत्तर—दूरी तीन प्रकार की होती है। पहली दूरी स्थान की जैसे अम्बाला से दिल्ली एक सौ पचास किलोमीटर है पलन्तु ईश्वर हर स्थान पर है, सर्व व्यापक होने के कारण ऐसा कोई स्थान नहीं जहां ईश्वर न हो। इस लिए चाहे हम कहीं भी हों, ईश्वर हम से दूर नहीं हो सकता। दूसरी दूरी है समय की [illegible] ईश्वर और जीव की यह दूरी भी नहीं हो सकती। ईश्वर और जीव दोनो अनादि हैं। ऐसा कोई समय नहीं हो सकता जब ईश्वर हो और जीव न हो तीसरी दूरी है—अज्ञान की। जब तक ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान न हो तब तक यह दूरी रहती है। जब ईश्वर का यथार्थ सत्य ज्ञान हो जाए तब यह दूरी दूर हो जाती है।

प्रश्न—क्या हम ईश्वर के दर्शन भी कर सकते हैं।

उत्तर—अवश्य परन्तु इन स्थूल आंखों से नहीं, क्योंकि ईश्वर निराकार है उसकी कोई शक्ल-सूरत नहीं कोई साकार शरीर नहीं है, इस लिए इन स्थूल आंखों से ईश्वर का दर्शन असम्भव है। उपनिषदों में लिखा है कि ईश्वर इन्द्रियों का विषय नहीं। इसे आंखें देख नहीं सकती, कान सुन नहीं सकते नासिका सूंघ नहीं सकती, वाणी इनका वर्णन नहीं कर सकती, केवल जीवात्मा जो कि हमारे हृदय आकाश के अन्दर निवास करता है ईश्वर के दर्शन कर सकता है। क्योंकि ईश्वर सर्व व्यापक है, इसीलिए हमारे हृदय के अन्दर भी व्याप्त है। अर्थात् हमारे हृदय के अन्दर जीवात्मा तथा परमात्मा अति समीप है। वही वह स्थान है जहां जीवात्मा ईश्वर के प्रकाशमय आनन्दमय स्वरूप को अनुभव कर सकता है।

प्रश्न—जब जीवात्मा और परमात्मा दोनो का हृदय के अन्दर निवास है और वहीं पर जीव ईश्वर के दर्शन कर सकता है, फिर जीव को हृदय के अन्दर ईश्वर के दर्शन क्यों नहीं होते।

उत्तर—आप अपनी आंख की पुतली को देखना चाहते हैं। आंख की पुतली आंख के निकट आंख में ही है। आपने [illegible] इतने में आपको दर्पण का ख्याल आया। आपने झट शीशा हाथ में लिया और उस में अपनी आंख की पुतली को देख लिया। परन्तु यदि दर्पण [illegible] हुआ हो, या मैल और गर्द जमा हुआ हो, या दर्पण हिलता जुलता हो, तो ऐसी दशा [illegible] अपनी आंख देख सकते हैं। न आंख की पुतली देख सकते हैं। इसी प्रकार हमारा हृदय भी एक [illegible]

(शेष पृष्ठ 6 पर)

व्याख्यानमाला—

वर्णव्यवस्था और उसका महत्व

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स. अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर पंजाब

वर्ण—धर्म

ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य: कृत: ।
उरू तदस्य यद्वैश्य: पदभ्या शूद्राऽअजायत ॥1॥

जो मनुष्य विद्या और उत्तम गुणों में मुख के तुल्य उत्तम होवे वे ब्राह्मण, जो अधिक पराक्रम वाले भुजा के तुल्य कार्यों को सिद्ध करने हारे हों, वे क्षत्रिय, जो व्यवहार विद्या मे प्रवीण हों वे वैश्य और जो सेवा में प्रवीण विद्या हीन पगों के समान मूर्खपन आदि नीच गुण युक्त हैं वे शूद्र कहने और मानने चाहिएं।

ब्राह्मण: केन भवति क्षत्रियो वा द्विजोत्तम: ।
वैश्य: शूद्रश्च विप्रर्षे तद्ब्रूहि वदतांवर ॥2॥

हे बोलने वालो में श्रेष्ठ ब्रह्मर्षे मुझे यह बताओ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र किन कर्मों के द्वारा बनता है।

काम: क्रोधो भय लोभ· शोकश्चिन्ताक्षुधा श्रम:
सर्वेषां न: प्रभवति कस्माद्वर्णो विभज्यते ॥3॥

काम, क्रोध, भय, लोभ, चिन्ता, भूख और थकावट हम सब में होती है फिर किस कारण वर्ण विभक्त किये जाते हैं।

स्वेदमूत्रपुरीषाणि श्लेष्मा पित्तं सुशोणितम् ॥
तनु· क्षरति सर्वेषां कस्माद्वर्णो विभज्यते ॥4॥

पसीना, पेशाब, पुरीष (टट्टी) बलगम, पित्त और खून सब के शरीर से बहता है फिर किस लिये वर्ण विभक्त किये जाते हैं।

न विशेषोऽस्ति वर्णाना सर्वं ब्राह्ममिद जगत् ।
ब्राह्मणा पूर्वसृष्टं हि कर्मभिर्वर्णता गतम् ॥5॥

वर्णों का कोई अन्तर नहीं है यह सारा जगत् ही ब्रह्म से सम्बन्ध रखता है सर्व प्रथम ब्रह्म ने ही इस जगत् को बनाया है जो कि अब कर्मों के द्वारा वर्णों को प्राप्त हो गया।

सत्य दानमथाद्रोह आनृशस्य त्रपा घृणा ।
तपश्च दृश्यते यत्र स ब्राह्मण इति स्मृत· ॥6॥

सत्य, दान, अद्रोह, दया, लज्जा और तप जिसमें यह दिखाई देते हैं वह ब्राह्मण कहलाता है।

येन केनचिदाच्छन्नो येन केनचिदाशित: ।
यत्र कुत्र च शायी स्यात्तन्देवा ब्राह्मण विदु: ॥7॥

वस्त्रों से शरीर ढापने वाले भोजन से तृप्त रहने वाले तथा प्राप्त स्थान पर शयन करने वाले मनुष्य को विद्वान् लोग ब्राह्मण कहते हैं।

क्रोध: शत्रु: शरीरस्थो मनुष्याणां द्विजोत्तम ।
य: क्रोध मोहौ त्यजति तन्देवा ब्राह्मणं विदु: ॥8॥

हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! यह मनुष्य के शरीर में होने वाला क्रोध ही मनुष्य का शत्रु होता है जो क्रोध और मोह को छोड़ देता है उस को लोग विद्वान् ब्राह्मण कहते हैं।

यो वेदविद् सत्यानि दुखं सत्वाविभू च ।
हिंसितश्च न हिंसेत तन्देवा ब्राह्मणं विदु: ॥9॥

जो सत्य बोले, जो दुख को सहन करे किसी से पीड़ित होता हुआ भी जो किसी को पीड़ित न करे उसको विद्वान् लोग ब्राह्मण कहते हैं।

जितेन्द्रियो धर्म पर: स्वाध्यायनिरत: शुचि: ।
काम क्रोधौ वशौ यस्य तन्देवा ब्राह्मण विदु: ॥10॥

जो इन्द्रियों को जीतने वाला है, धर्म परायण है, स्वाध्याय में लगा रहता है। और अन्दर-बाहर से शुद्ध पवित्र है और काम तथा क्रोध जिसके वश में है उसे लोग विद्वान् ब्राह्मण कहते हैं।

योऽध्यापयेदधीयीत यजेद्वा याजयीत वा ।
दद्याद्वाऽपि यथाशक्ति तन्देवा ब्राह्मण विदु: ॥11॥

जो वेद पढ़े और पढ़ाए, जो यज्ञ करे और करावे दान लेवा और देवा उसे विद्वान् लोग ब्राह्मण कहते हैं।

न क्रुध्येन्न प्रहृष्येच्च मानितोऽमानितश्च य ।
सर्वभूतेष्वभयदस्तन्देवा ब्राह्मण विदु: ॥12॥

जो अपमानित होने पर भी क्रोध न करें, और सम्मानित होने पर प्रसन्न न हो जो सब प्राणियों को अभय दान देने वाला हो, उस को विद्वान् लोग ब्राह्मण कहते हैं।

धर्मन्तु ब्राह्मणस्याहु: स्वाध्यायं दममार्जवम् ।
इन्द्रियाणां निग्रहश्च शाश्वत द्विजसत्तम ॥13॥

हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! लगातार स्वाध्याय करना, इन्द्रिय दमन करना और सरलता ये ब्राह्मण के धर्म कहे गए हैं।

स्वाध्यायेन जपैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतै: ।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीय क्रियते तनु: ॥14॥

स्वाध्याय, जप, होम तीनों विद्या, यज्ञ, पुत्र महायज्ञ और साधारण यज्ञ इन के द्वारा ही यह शरीर ब्राह्मीय बनता है अर्थात् ब्राह्मणत्व को प्राप्त होता है।

ब्राह्मणस्य हि देहोऽयं क्षुद्रकामाय नेष्यते ।
कृच्छ्राय तपसे चेह प्रेत्यानन्त सुखाय च ॥15॥

ब्राह्मण का यह शरीर एक क्षुद्र कर्मों के लिए नहीं है अर्थात् यहां रहते हुये यह शरीर कठोर तप के लिए और मरने के बाद अनन्त सुख के लिए मिलता है।

नानृत ब्राह्मणो ब्रूते न हन्ति प्राणिनं द्विज: ।
न सेवा कुरुते विप्रो न द्विज: पापकृद्भवेत् ॥16॥

ब्राह्मण झूठ नहीं बोलता, ब्राह्मण किसी प्राणी को नहीं मारता, ब्राह्मण किसी की नौकरी नहीं करता और न ही ब्राह्मण पाप करने वाला होता है।

शमो दमस्तप: शौच क्षान्तिरार्जवमेव च ।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्य ब्रह्मकर्मंत स्वभावजम् ॥17॥

शान्ति, इन्द्रिय दमन, तप, पवित्रता, क्षमा, सरलता, ज्ञान, विज्ञान, आस्तिकता, ये ब्राह्मण के स्वाभाविक कर्म हैं।

त्रीणि कर्माणि जायीत ब्राह्मणानाञ्च जीविका ।
याजनाध्यापने चोभे शुद्धाच्चापि प्रतिग्रह: ॥18॥

तीन कर्मों से ब्राह्मण की जीविका चल सकती है, यज्ञ कराना, पढ़ाना और शुद्ध व्यक्ति से दान लेना।

(क्रमश:)

सम्पादकीय—

आर्य समाजियों के लिए आचार संहिता की आवश्यकता –3

इस क्रम के पिछले लेख में मैंने पंजाब की तीन संस्थाओं के विषय में लिखा था। नामधारी, निरंकारी और राधास्वामी है, तीनों के धार्मिक विचारों से हमारा मतभेद है। यद्यपि नामधारी विचारधारा वैदिक सिद्धान्तों से बहुत कुछ मिलती-जुलती है परन्तु देखने की बात यह है कि यह तीनों संगठन इतने शक्तिशाली कैसे बन गए? जहां तक मैं समझ सका हूं, इन में दो विशेषताएं हैं एक यह कि इन के जो प्रमुख व्यक्ति हैं जिन्हें यह सब अपना गुरु कहते हैं। उनका इतना मान और प्रतिष्ठा है कि वह जो कुछ भी कहते हैं उन के समुदाय का कोई व्यक्ति इन्कार नहीं कर सकता। इसका विशेष कारण यह है कि इन तीनो महानुभावों पर कोई उंगली नही उठा सकता। वह इस बात का भी ध्यान रखते हैं कि उन की संस्थाओं में जो भी व्यक्ति सेवा करते हैं उनमें कोई भी संस्था के धन मे किसी प्रकार का घपला नहीं कर सकता यदि करे तो वह अपनी संस्था में नहीं रह सकता। इसी के साथ सब व्यक्ति इतने अनुशासन में रहते हैं कि उनका गुरु या बाबा जो कह दें वह सब को करना पड़ता है उनमें कितना संगठन है यह उस समय पता चलता है जब लोक सभा आदि के चुनाव होते हैं। सब पार्टियों के प्रमुख व्यक्ति इनके पास जाते हैं गुरु महाराज जिसका नाम ले दे उसके पक्ष में वोट पड़ जाते हैं। मैंने पिछले लेख मे नामधारियों की इस प्रथा का जिकर किया था कि एक विवाह पर डेढ़ सौ रुपए व्यय होते हैं। डेढ़ सौ या दो सौ जोड़ो के विवाह इकट्ठे कर दिए जाते हैं। इसी प्रकार यदि आर्य समाज में यह प्रथा चले कि सब आर्य समाजी अपने बच्चों के विवाह आर्य समाज मन्दिरो में करें तो उसमें कितना कम व्यय होगा और आर्य समाज के अनुशासन की धाक भी सब पर बैठ जाएगी।

जब मैं यह कहता हूं कि आर्य समाजियों के लिए एक आचार संहिता होनी चाहिए तो मेरा यह भी निश्चित मत है कि यह आचार संहिता सबसे पहले नेताओं के लिए होनी चाहिए। आर्य समाज ने जो प्रगति की है उसका एक कारण उसके नेताओं की स्वच्छता और पवित्रता हुआ करती थी। मैं बार-बार गुरुकुल कांगड़ी के विषय में लिखता रहता हूं। यह इस लिए कि मैंने वहां जो कुछ देखा है उससे मुझे बहुत धक्का लगा है। मेरा पालन पोषण एक आर्य परिवार में हुआ है। इस लिए आर्य समाज के कई बड़े-बड़े नेताओं को बहुत पास से देखने का मुझे अवसर मिलता रहा है। मैंने आर्य समाज के बड़े-बड़े नेताओं को इसलिए आपस मे झगड़ते देखा है कि आर्य समाज के कोष से चार आने या आठ आने क्यो व्यर्थ नष्ट कर दिए गए हैं। वह कहा करते थे कि धर्म प्रचार के लिए जनता हमें जो धन देती है उसका किसी भी प्रकार से दुरुपयोग एक बहुत बड़ा पाप है। श्रद्धेय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, आचार्य रामदेव जी, पण्डित विश्म्भर नाथ जी, श्री महाशय कृष्ण जी, महात्मा हंसराज जी, लाला खुशहाल चन्द जी जो बाद में महात्मा आनन्द स्वामी जी बने थे। यह सब आर्य समाज को कुछ दिया ही करते थे, लेते कुछ न थे।

आज क्या स्थिति है, गुरुकुल कांगड़ी का मुख्याधिष्ठाता साढ़े 3 हजार रुपया लेता है गुरुकुल का आचार्य दो हजार रुपया प्रति मास लेता है। गुरुकुल विश्वविद्यालय मे पढ़ाने वाले प्राध्यापक दो-दो और तीन तीन हजार रुपया मासिक लेते हैं। जो कुलपति अभी पिछले दिनों हटाए गए हैं उन्होने साढ़े पांच हजार रुपया प्रति मास लेना आरम्भ कर दिया था। जिनके लिए सरकार देती है वह यदि ले लें तो उस पर अधिक आपत्ति नहीं हो सकती। यद्यपि मेरी यह सम्मति है कि गुरुकुल में काम करने वालों को कुछ न कुछ त्याग अवश्य करना चाहिए। परन्तु जहां तक गुरुकुल कांगड़ी का सम्बन्ध है उसके लिए तो सरकार हमे कुछ भी नहीं देती वह तो हम जनता से लेते हैं। 25 हजार रुपया मासिक फार्मेसी से लेकर गुजारा करते हैं जो बच्चे गुरुकुल में पढ़ते हैं उनके माता-पिता हमेशा यह आशा रखते हैं कि उनके बच्चो के पालन पोषण का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाएगा और उन्हें अच्छा खाने को अच्छा पीने को अच्छा पहनने को दिया जाए। परन्तु यदि छ हजार रुपया मासिक दो व्यक्तियों ने ही लेना है तो हम बच्चो को क्या खिलाएंगे। इससे भी अधिक धक्का-जनक बात यह है कि गुरुकुल मे जो धांधली मची हुई है उसमें उन्हे आर्य समाज के बड़े-बड़े नेताओं का संरक्षण और समर्थन प्राप्त है।

यह सब इस लिए हो रहा है कि हमारी कोई आचार संहिता नहीं है। क्या कारण है कि आज नव युवक आर्य समाज की ओर नहीं आते? क्या कारण है कि जनता आर्य समाज से दूर जा रही है? हम जब अपने देश का पिछला इतिहास देखते हैं तो उसमे जगह-2 आर्य समाज का जिकर आता है। इस देश का पिछले एक सौ वर्षों का कोई इतिहास लिखा नहीं जा सकता जिसमे आर्य समाज का जिकर न हो, परन्तु आज आर्य समाज को कोई नही पूछता। आर्य समाज के नेता राजनैतिक पार्टियो के दुमछल्ला बन रहे हैं यह कोई अच्छी स्थिति नही है। इस पर विचार करने की आवश्यकता है लेकिन कौन करे? आर्य समाज के नेताओं के पास इसके लिए समय नही है। आर्य समाज की शताब्दी आई और चली गई। महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी आई और चली गई। आर्य समाज कोई नया कार्यक्रम अपने देशवासियो के सामने नही रख सका आज हमारे सामने कई प्रकार की समस्याएं खड़ी हो रही हैं। क्या आर्यसमाज के नेताओं के पास समय है कि वह उन पर विचार करें और देश को कोई नया रास्ता दिखाए। हमारे नेता न तो कोई नया विचार लेने को तैयार हैं न देने को तैयार हैं। वह समझते हैं कि आर्य समाज की नैय्या जैसे चल रही है ऐसे ही चलती रहे। कभी न कभी तो किनारे जा लगेगी परन्तु वह यह भूल रहे हैं कि देश मे कई प्रकार की आन्धियां आ रही हैं, कई संस्थाएं अपने अपने ढंग से उनका मुकाबला करने के लिए तैयारी कर रही हैं परन्तु आर्य समाज देश को कोई नया सन्देश नही दे रहा। यह क्यो इस पर विचार करने की आवश्यकता है परन्तु कौन करेगा? यदि नेता न करेंगे तो जनता को ही करना पड़ेगा। यह स्थिति अब अधिक देर तक नही चल सकती। क्या तो आर्य समाज अपने देश को कोई नई दिशा दिखाएगा या डूब जाएगा। जब मैं कहता हूं कि हमें एक आचार संहिता की आवश्यकता है तो केवल इसलिए कि एक नए रूप मे आर्य समाज सामने आए। यदि उसने जीवित रहना है तो उसे नया रूप धारण करना ही पड़ेगा। केवल हमारे देशवासियो को ही नहीं बाहिर की दुनिया को भी आर्य समाज से बहुत आशाएं हैं। यही कारण है कि मौरीशस, पूर्वी अफ्रीका, दक्षिणी अफ्रीका, सिंगापुर, फिजी लन्दन और कैनेडा जैसे देशो मे आर्य समाजें स्थापित हो गई हैं। पिछले दिनो मुझे अमेरिका के एक बहुत बड़े नगर 'सनफ्रांसिसको" से पत्र आया था कि वहां भी आर्य समाज स्थापित हो गई है और अब न्यूयार्क से पत्र आया है कि वहां भी आर्य समाज प्रारम्भ हो गई है। विदेशो मे जो आर्य समाजें खुल रही हैं वह भारत की आर्य समाज की ओर देखती हैं कि वह उनका मार्ग दर्शन करेगी परन्तु हमारे देश की आर्य समाज तो अपने देशवासियो का मार्ग दर्शन नहीं कर रही वह विदेश मे रहने वालो का क्या करेगी?

—वीरेन्द्र

सभी आर्य समाजें गुरु रविदास जी का जन्मोत्सव मनाएं

भक्त शिरोमणि श्री गुरु रविदास का जन्म उत्सव सोमवार 24 फरवरी 1986 को सारे देश मे मनाया जाएगा। गुरु रविदास का हमारे इतिहास मे एक विशेष स्थान है। वे उन महापुरुषो मे से हैं, जिन्होने हमे भक्ति और मानवता का मार्ग दिखाया है। और आपस के मतभेद समाप्त कराके प्रत्येक प्राणी मात्र के साथ मैत्री और सदभावना का व्यवहार करने का उपदेश दिया था। आज की परिस्थितियो मे जब कि हम छोटी-छोटी सी बातो के लिए लड़ने लगते हैं, श्री गुरु रविदास जी की पवित्र वाणी से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं और जो कुछ वे मानव एकता के लिए लिख गये हैं, यदि उस पर आचरण करने लगें, तो हमारी कई समस्याओं का समाधान निकल सकता है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सब आर्य समाजों से मेरा निवेदन है कि वे रविवार 23 फरवरी को अपने सत्संग के समय गुरु रविदास के जीवन पर प्रकाश डालें और जनता को बताएं कि गुरु रविदास की शिक्षाओ से हम क्या कुछ सीख सकते हैं। 24 फरवरी को जहां भी इस सम्बन्ध में उत्सव हो, उनमे भी अधिक से अधिक आर्य समाजी सम्मिलित होकर देश के इस महान् सपूत को अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट करें।

—वीरेन्द्र

यज्ञ विशुद्ध वैज्ञानिक प्रक्रिया है

लेखक—श्री धर्मचन्द्र जी विद्यालंकार एम ए
उपदेशक महाविद्यालय टंकारा जिला राजकोट

आर्य धर्म शास्त्रो में यज्ञ की महती महिमा है। मूल-ग्रन्थ तो यज्ञों की विशद व्याख्या से भरे पड़े हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों मे यह कहा है कि "यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ कृत्य है। इतना ही नहीं शतपथ ब्राह्मण मे तो यहा तक कह दिया गया कि 'यज्ञो वै कल्पतरू' अर्थात् यज्ञ ही कल्पवृक्ष है। इसी आधार पर आगे चलकर पौराणिको ने यह कल्पना गढी कि स्वर्ग मे एक विशेष प्रकार का वृक्ष है, जिस को कल्पतरू कहते हैं उस वृक्ष के नीचे बैठकर जो भी कामनाए की जाती हैं वे सब पूर्णतया परिपूर्ण हो जाती हैं। अस्तु।

आखिर पुराणों का यह कल्पतरु है क्या ? यदि यह हमारा देवयज्ञ ही है तो इसे कल्पतरु क्यो कहा गया ? किस आधार पर कहा गया ? यह समझने की आवश्यकता है। अलंकार शास्त्र के अनुसार किसी भी वस्तु की दूसरी वस्तु से तुलना गुण-साम्य या आकार-साम्य के आधार पर होती हैं। जिस तरह से वृक्ष छोटे से बीज से पुष्पित पल्लवित होकर कालान्तर मे विशाल काम हो जाता है उसी प्रकार से स्वल्प यज्ञीय द्रव्य यज्ञाग्नि में आहुत होकर सूक्ष्म रूप धारण करके व्योमव्यापी हो जाता है। इसी गुण साम्य के आधार पर यज्ञ की तुलना कल्पवृक्ष से की गयी और फिर यह देव यज्ञ ही बन गया कल्प वृक्ष। सर्व शाप ताप हारी। कल्याणकारी। स्वर्ग-स्थित इस वृक्ष को इस लिए कहा क्योकि सुखकर है एक प्रकार से सुखो की भूमि पर अवस्थित है।

आजकल यह शंका सामान्य है कि यज्ञ मे डाला हुआ पदार्थ तो सब व्यर्थ ही हो जाता है, क्योंकि वह डाला जाता है। इससे तो उस अमूल्य द्रव्य का प्रयोग खाने-पीने मे किया जाए तो श्रेयस्कर है। कम से कम कोई तो पुष्ट बने। इस शंका का उत्तर महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने अपने सत्यार्थ प्रकाश मे दिया है। उनके अनुसार इस द्रव्य के खाने-पीने से जहा पर एक व्यक्ति का भला होता है वही यह यज्ञ मे आहूत होने पर असंख्य प्राणियो का उपकार करता है। क्योंकि यह सूक्ष्म होकर सर्वत्र व्याप्त होकर वायु और आकाश शुद्धि भी करता है।

देव-यज्ञ का स्वरूप क्या है ?

आखिर यज्ञ है क्या ? सब प्रथम तो इस बात को समझने की जरूरत है। वैसे तो यज्ञ यजने धातु के तीन अर्थ-देव पूजा, दान और संगतिकरण होते हैं। जिससे यज्ञ शब्द सिद्ध होता है। लेकिन हम यहा पर यज्ञ के देव पूजा वाले अर्थ का ही ग्रहण करेंगे। यही भौतिक विज्ञान का विषय भी है। पहले देव के अर्थ जानें। देव उसे कहा है जो या तो स्वयं प्रकाशित हो या औरो से प्रकाशित हो अथवा औरों को भी प्रकाशित करें। दिव्य शक्ति युक्त हों। आध्यात्मिक अर्थ मे प्रकाश का अर्थ ज्ञान ज्योति लिया जाता है लेकिन यहा पर उसका अर्थ तम निवारक ही है। अतएव जो प्रकाशक दिव्य शक्ति स्रोत हैं उन्हीं के लिए देव यज्ञ (हवन) किया जाता है पूजा का भाव पूर्ति करना या प्रसन्न करना है। प्रकृति के पदार्थों का हम दिन रात निरन्तर शोषण तो कर रहे हैं लेकिन उन्हे दे कुछ भी नही रहे। इसीलिए आज प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ता जा रहा है। इनकी पूर्ति के लिए ही देव यज्ञ का विधान है। इन दिव्य शक्तियो—सूर्य चन्द्रमा, पृथिवी वायु आकाशादि देवो की पूर्ति यज्ञ द्वारा किस प्रकार से होती है यह हमे आगे देखना है।

इससे पूर्व हम उन लोगों की शंकाओ का उत्तर देना चाहेंगे जो यह कहते हैं या मानते हैं कि यज्ञ तो मात्र एक कोरा धार्मिक कर्मकाण्ड है इसमे डाला हुआ द्रव्य व्यर्थ ही जाता है। और आश्चर्य की बात तो यह है इस तरह की अनगल बातें अपने को वैज्ञानिक—चेतना सम्पन्न मानने वाले लोग करते हैं। ऐसे लोगो का उत्तर विज्ञान के सिद्धान्तो के आलोक में ही दिया जा सकता है। क्योकि आज श्रद्धा का स्थान तर्क ने और शास्त्र का स्थान विज्ञान ने ले लिया है। वैदिक धर्म तो टिका ही विज्ञान की तर्क युक्त भीति पर है।

पदार्थ की अक्षरता का सिद्धान्त—

जो यह मानते हैं कि आग में डालने के बाद सब कुछ नष्ट हो जाता है और यज्ञीय द्रव्य का कुछ भी विशेष अवशेष शेष नहीं रहता, उन लोगों को आधुनिक विज्ञान द्वारा प्रतिपादित 'पदार्थ की अविनाशकरशीलता अथवा इमोरटल्टी आफ दी मैटर या इनडीस्ट्रीटीबिटी आफ दी मैटर के सिद्धान्त पर दृष्टि डालनी चाहिए। उसके अनुसार जलने के बाद भी कोई पदार्थ पूर्णतया नष्ट नहीं होता केवल उसका रूपान्तरण मात्र होता है। उसका बाह्याकार ही बदलता है उसके मूल भूत गुण उसमे तब भी वर्तमान रहते हैं। इसीलिए पदार्थ सर्वथा विनश्वर नहीं है।

उपरोक्त सिद्धान्त को सिद्ध करने के लिए एक प्रयोग भी आता है। एक मोम-बत्ती लो। उसका भार माप लो। इसके ऊपर ऐसा गैस-जार रखो कि कुछ भी बाहर न जाने पाये। अन्त में जब आप इसके जले हुए अवशेष धुआ, राख गैस आदि को तोलेंगे तो पहले भार के बराबर ही पाएंगे। इससे सिद्ध होता है कि जलने के बाद भी मूल भूत पदार्थ वही का वही रहता है, मात्र उसका बाह्य-कलेवर बदलता है। तब कैसे यह कहा जा सकता है कि अग्नि में आहुत द्रव्य विनष्ट हो जाता है ? अब उपरोक्त प्रकार की शंका करनी व्यर्थ है।

केवल इतना ही नहीं कि अग्नि में जलने से पदार्थ का मूल स्वरूप ही बचा रहता है बल्कि उसके गुण और शक्ति में और भी अभि वृद्धि होती है। क्योंकि वह जलकर सूक्ष्मतम हो जाता है। अध्यात्म विज्ञान और पदार्थ विज्ञान दोनों का ही यह निष्कर्ष है कि जो भी वस्तु जितनी ही सूक्ष्म होगी वह उतनी ही व्यापक और सशक्त होगी। उदाहरण के तौर पर विज्ञान में आज का परमाणु किसी भी पदार्थ का इतना छोटा भाग कि जिस के और कण न किये जा सकें। जिसकी शक्ति का आभास आज सभी को हो चुका है। आध्यात्म विज्ञान मे परमात्मा को भी सूक्ष्मतम माना गया है। तभी वह व्यापक हम और सर्वाधिक शक्तिशाली है। अतएव यहा आकर धर्म और विज्ञान पूर्णतया एकमत हो जाते हैं।

यज्ञ के लाभ

उपरोक्त विज्ञान विदित सिद्धान्तों के आलोक में आज यज्ञ से अनेकानेक लाभ उठाये जा रहे हैं और भविष्य मे उठाये जा सकेंगे। यज्ञ के औषधि युक्त द्रव्यो के द्वारा रोगों का निवारण किया जा सकता है। सुगन्धित द्रव्य यज्ञाग्नि में आहुत होकर कृमि-नाशक सिद्ध होते हैं। राजयक्ष्मा और कैंसर जैसे रोगों के उपचार यज्ञ के द्वारा किये जा रहे हैं।

आज वैज्ञानिको के सम्मुख सर्वाधिक दुरन्त समस्या पर्यावरण प्रदूषण की है। जिस का उपाय भी यही है कि यज्ञ मे शोधक द्रव्य डाले जायें, और वातावरण को परिशुद्ध किया जाए। यदि वर्तमान प्रदूषण को दूर न किया गया तो एक दिन भूमि पर जीवन ही असम्भव हो जायेगा। यज्ञ ही इस राक्षस से लड़ने का अमोघास्त्र है।

तूफान और अनावृष्टि तथा अति-वृष्टि से भी यज्ञ हमारी रक्षा कर सकता है। सबसे पहले हम यहां जाने कि तूफान या बवण्डर आते क्यो है ? यह सब तापमान की विषमता से होता है। जब एक स्थान का वायु अधिक ताप से उष्ण होकर हल्का होने की वजह से ऊपर उठ जाता है तो दूसरे स्थान का वायु उसकी जगह भरने के लिए तेजी से आता है यही बवण्डर होता है। यदि बीच में समुद्र पड़ जाए तो भारी तूफान आ देता है। यज्ञ के द्वारा इस स्थान की वायु को सम बनाया जा सकता है और उसे ऊपर उठने से रोका जा सकता है तथा तूफान की सम्भावना से बचाया जा सकता है।

वर्षा के सम्बन्ध मे भी यही सिद्धान्त है। आकाश में वर्षा करने वाले बादल प्राय होते हैं। यज्ञ के द्वारा उस स्थान के वायु को नम बनाकर वर्षा कराई जा सकती है। सघन वन प्रदेशों में अधिक वर्षा उस स्थान की वायु की नमी के कारण ही होती है। यह कार्य यज्ञ द्वारा भी होता है। प्राचीनकाल मे जब अकाल पड़ जाया करते थे तो लोग बड़े बड़े यज्ञ रचाया करते थे और मनचीती सुखद वृष्टि कराकर आनन्दित होते थे। आज भी यह सब कार्य यज्ञ से किये जा सकते हैं। आवश्यकता इस विषय पर गम्भीर चिन्तन-मनन और प्रयोग तथा परीक्षण की है। यज्ञ के द्वारा प्राकृतिक शक्तियो जलवायु, आकाशादि को सन्तु-लित रखकर उन्हे अपने अनुकूल बनाया जा सकता है। रोग शोको से बचा जा सकता है। अकाल और अतिवृष्टि जैसी विपत्तियो से निर्भय रहा जा सकता है सुखद वृष्टि कराकर विश्व वसुधरा को रत्नगर्भा व शस्यश्यामला बनाया जा सकता है। इस प्रकार यज्ञ केवल एक धार्मिक कर्म-काण्ड ही नहीं अपितु अपने आप में पूर्ण विज्ञान भी है।

★
★★

डी.ए.वी. कालेज के सौ वर्ष

लेखक—श्री वीरेन्द्र प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

इसे हम डी. ए. वी. आन्दोलन के सौ वर्ष कहें तो ठीक रहेगा। 19वीं शताब्दी हमारे देश में सुधार युग था विभिन्न राज्यों में नए-नए सुधार आन्दोलन शुरू हुए थे। उन में कई धर्म सुधार के लिए थे, कई समाज सुधार के लिए। सदियों की गुलामी के बाद भारत एक नई करवट ले रहा था। इसलिए कई नए आन्दोलन शुरू हो गए थे। उसी समय आर्य समाज, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज और सिंह सभा जैसे आन्दोलन शुरू हुए थे। बंगाल में ब्रह्म समाज और पंजाब में आर्य समाज ने जनसाधारण के मन मस्तिष्क पर बहुत प्रभाव डाला था और जनता में एक ऐसी जागृति पैदा हो गई थी जो इससे पहले इस देश में देखने को नहीं मिली थी। आर्य समाज के नेता इस नई जागृति को संगठित करना चाहते थे और इसके द्वारा एक ऐसा वातावरण पैदा करना चाहते थे कि देश की नई पीढ़ी के दिल में अपने धर्म और देश के प्रति श्रद्धा पैदा हो? और यदि आवश्यकता हो तो आगे चल कर ये नौजवान देश के लिए हर तरह का बलिदान देने को तैयार रहें।

इस लक्ष्य को सामने रखते हुए तीन ऐसी संस्थाएं शुरू की गई जिन्होंने आगे चल कर देश के नवनिर्माण में एक प्रमुख भूमिका निभाई। 1886 में लाहौर में डी. ए. वी. स्कूल की आधारशिला रखी गई। 1886 में ही जालन्धर में कन्या महाविद्यालय की और 1902 में गुजरांवाला में गुरुकुल की आधारशिला रखी गई। आगे चलकर यही डी, ए. वी, कालेज बन गया। कन्या विद्यालय, कन्या महाविद्यालय बन गया। और गुजरांवाला का गुरुकुल, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय बन गया। इन तीनों संस्थाओं के पीछे तीन ऐसे तपस्वी और त्यागी महानुभाव थे जिन्होंने अपनी इन संस्थाओं के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया। डी. ए. वी, स्कूल और कालेज के पीछे महात्मा हंसराज थे, कन्या महाविद्यालय के पीछे लाला देवराज सौन्धी थे। गुरुकुल कांगड़ी के पीछे महात्मा मुन्शी राम थे जो आगे चलकर स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। यह भी एक सुखद संयोग था कि यह तीनों दोआबा में पैदा हुए थे। स्वामी श्रद्धानन्द जालन्धर के निकट गांव तलवन में, लाला देवराज जालन्धर में और लाला हंसराज होशियारपुर के निकट बजवाड़ा में।

महात्मा हंसराज ने जो पौधा डी. ए. वी. स्कूल के रूप में प्रथम जून 1886 को लगाया था, आज वह इतना बड़ा पेड़ बन गया है कि उसकी शाखाएं सारे देश में फैली हुई हैं। डी. ए. वी. कालेज प्रबन्धक समिति के आधीन इस समय सारे देश में तीन सौ से अधिक स्कूल और कालेज चल रहे हैं। सरकार के बाद यदि कोई संस्था सब से अधिक शिक्षा का प्रचार कर रही है तो वह डी. ए, वी. कालेज प्रबन्ध समिति है। विगत दो वर्षों में उसने एक सौ के लगभग माडल स्कूल खोले हैं अभी और भी खोलने पर विचार कर रही है। इसका श्रेय यदि किसी एक व्यक्ति को मिल सकता है तो वह महात्मा हंसराज जी थे, जिन्होंने 21 वर्ष की आयु में यह घोषणा कर दी थी कि वह अपने आपको डी. ए. वी. स्कूल की निष्काम सेवा के लिए प्रस्तुत करते हैं। एक पैसा भी लिए बिना वह इस की सेवा करेंगे। और उन्होंने सारा जीवन डी. ए. वी, संस्थाओं के लिए समर्पित कर दिया। यही कुछ स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल के लिए और लाला देवराज सौन्धी ने कन्या महाविद्यालय के लिए किया था। सोचता हू कि यह लोग किस मिट्टी के बने हुए थे। आज के नेता तो टके टके के लिए बिकते फिरते हैं और इन तीनो ने अपनी इन तीन संस्थाओं के लिए अपना खून-पसीना एक कर दिया था।

आज, सारे देश में 3 सौ के लगभग डी. ए. वी, सस्थाएं चल रही हैं। जिनके हाथ में इन की बागडोर है उन्हें भी सम्भवतः यह पता नही होगा कि किन परिस्थितियों में और कैसे 1886 में डी, ए. वी, स्कूल शुरू किया गया था। कुछ घटनाएं उन के सामने रखना चाहता हूं। यह न केवल डी, ए, वी, संस्थाओं में पढ़ने वाले प्रत्येक बच्चे को पता होना चाहिए बल्कि प्रत्येक आर्य समाजी को पता होना चाहिए क्योंकि डी, ए, वी आन्दोलन का आधार पंजाब में आर्य समाज ही रहा है। डी ए. वी. स्कूल शुरू करने वाले तीन महापुरुष थे। महात्मा हंसराज, पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी और लाला लाजपतराय। यह तीनो अपनी इस संस्था के लिए चन्दा एकत्रित किया करते थे। यह चन्दा उन्हे हजारों या लाखों में नहीं मिला करता था। कभी-कभी कोई व्यक्ति दो या तीन सौ दे दिया करता था। अधिकतर आठ आने, एक रुपया, दो रुपए या पाच रुपए देने वाले हुआ करते थे और उन में मुसलमान भी थे। शुरू-शुरू मे एक लाला ज्वाला सहाय ने, जो ठेकेदार थे, आठ हजार रुपया दिया था। यह सबसे बड़ी धनराशि थी जो इस स्कूल के लिए दी गई थी। यह वह समय था जब लन्दन में भी आर्य समाज की स्थापना की गई थी और वहा से भी कुछ चन्दा भेजा गया था।

आज तो डी. ए. वी. कालेजों में काम करने वाले हजारो लेते हैं। शुरू-शुरू में डी. ए. वी स्कूल मे काम करने वाले का वेतन 12 रुपए से लेकर 20 रुपए मासिक हुआ करता था। डी. ए, वी. कालेज और उससे सम्बद्ध सस्थाएं कहा से कहा पहुच गई है इसका अनुमान हम इससे लगा सकते हैं कि इस समय डी ए. वी कालेज प्रबन्धक समिति का वार्षिक बजट 13 करोड़ का है। जुलाई 1886 में डी. ए. वी. स्कूल के छात्रों से फीस के रूप में आय 121 रुपए 15 आने और 9 पैसे थी। यह इस से पहले के महीने से दस रुपए और दस आने अधिक थी। उस समय दान देने वाले लोगों की जो सूची प्रकाशित होती थी उस में अधिकतर वे होते थे जो एक या दो रुपए दिया करते थे। इस दृष्टिकोण से डी. ए. वी. आन्दोलन सही अर्थों में एक जन आन्दोलन था जो जनता ने जनता के लिए और जनता के द्वारा ही चलाया गया था।

1886 में 'आर्य पत्रिका' नाम की एक साप्ताहिक पत्रिका अंग्रेजी मे प्रकाशित हुआ करती थी। यह वास्तव में डी. ए. वी. आन्दोलन के प्रचार के लिए शुरू की गई थी लेकिन इसमें उन दिनों की आर्य समाज की गतिविधियों की रिपोर्ट प्रकाशित की जाती थी। इस से हमें अनुमान लग जाता है कि 1886 में आर्य समाज पंजाब में कितनी प्रगति कर गया था। उस समय पंजाब पेशावर और कोयटा तक फैला हुआ था। उस आर्य पत्रिका मे डी, ए. वी. कालेज और आर्य समाज के लिए जो चन्दा एकत्रित होता था उस की पाई-पाई का हिसाब प्रकाशित हुआ करता था। जालन्धर में आर्य समाज मन्दिर बनवाने के लिए जो रुपया एकत्रित किया गया उसका भी सारा हिसाब प्रकाशित किया गया था। उसके लिए लाला देवराज ने एक सौ रुपया और लाला मुंशीराम ने भी एक सौ रुपया दिया था। एक शाह मुहम्मद ने एक रुपया मुंशी बरकत अली ने दो रुपए और मुन्शी अहमद बख्श ने 3 रुपए दिए थे। एक देही जीवनी ने 2 हजार ईंट दी थी।

डी, ए, वी, आन्दोलन और उसके साथ आर्य समाज एक अत्यन्त सौभाग्यशाली सस्था है कि उसे समय-समय पर ऐसे निष्काम सेवक मिलते रहे हैं जिनके बल पर डी, ए, वी, आन्दोलन और आर्य समाज को चार चांद लगते रहे हैं। डी. ए, वी. आन्दोलन को चलाने वाले महात्मा हंसराज, पण्डित गुरुदत्त, लाला लाजपतराय और भाई परमानन्द थे। उनके बाद जिन लोगो ने इस दीपक को बुझने नहीं दिया उन में लाला साईंदास, बख्शी राम रत्न. पण्डित मेहर चन्द लाला सूरजभान, प्रिंसीपल ज्ञान चन्द, डाक्टर गोवर्धन लाल दत्त थे। डी. ए. वी, संस्थाओं का यह भी सौभाग्य रहा है कि देश के चोटी के वकील इस की सेवा करते रहे हैं। बख्शी टेक चन्द, डाक्टर मेहर चन्द महाजन. डा. गोकुल चन्द नारंग, श्री जीवन लाल कपूर, श्री मुकन्दलाल पुरी और आज भी जस्टिस टेक चन्द जैसे प्रसिद्ध और योग्यतम लोगों ने समय-समय पर इन सस्थाओ की सेवा करके इन्हें यहा पहुचा दिया है।

आज डी. ए, वी. आन्दोलन सुप्रीम कोर्ट के विख्यात वकील प्रो, वेद व्यास के हाथ में है। वह स्वयं भी डी. ए. वी. स्कूल और डी. ए वी. कालेज के पुराने विद्यार्थी हैं। वह और उनके साथी डी ए. वी की सस्थाओ की जो सेवा कर रहे हैं वह प्रशंसनीय है। पजाब के लिए यह बात विशेष रूप से गौरवपूर्ण है कि ये सब पंजाबी हैं।

डी, ए. वी. आन्दोलन की इस जन्म शताब्दी पर मैं श्री वेद व्यास और उनके सहयोगियों को हार्दिक बधाई देता हू। डी, ए, वी, सस्थाओ ने अपने देश और धर्म की जो सेवा की है वह इतिहास मे स्वर्ण अक्षरो मे लिखी जाएगी।

विश्व कल्याण कर्ता—यज्ञ

लेखक—श्री प. वीरसेन वेदश्रमी जी
वेदविज्ञानाचार्य इन्दौर

(गताक से आगे)

हव्य पदार्थ जिस जिस विशेष प्रयोजन के लिए यज्ञ मे प्रयुक्त होने से इन कामनाओ की पूर्ति करेंगे। अत यज्ञ द्वारा इच्छित पर्यावरण बनाया जा सकता है। वेद ने अग्नि को ऋत्विज ऋग्वेद के प्रथम मत्र मे बताकर इच्छित ऋतु निर्माता पर्यावरण निर्माता का रहस्य प्रकट किया है। हव्य पदार्थों के गण ज्ञान के आधार पर ही यज्ञ सब कामनाओ की पूर्ति करने में समर्थ बन जाता है। इस लिए यज्ञान्त मे यजमान कहता है 'सर्वान्नि कामान्त्समधय अर्थात यज्ञाग्नि इष्टफल प्रदाता है। अत हमारी सब कामनाओ की पूर्ति करें।

हव्य पदार्थों के बारे मे वेद का निर्देश

हव्य पदार्थों के बारे मे वेद मे अनेक स्थानो पर वर्णन है। अथर्ववेद काण्ड 8 के सूक्त 2 के छटे मन्त्र मे हव्य पदार्थों का निम्न रूप मे वर्णन है।

जीवला नघारिषा जीवन्तीमोषधीमहम।
त्रायमाणा सहमाना सहस्वतीमिह हुवेस्मा अरिष्टतातये।

अर्थात—जीवन देने वाली कभी हानि न करने वाली, स्फुर्ति प्रदाता, जीवन की रक्षा करने वाली, रोगों को दबाने वाली बलवती औषधिया यज्ञ में जीवन की रक्षा और वृद्धि के लिए होम के द्रव्यों के रूप में प्रयुक्त करनी चाहिए। ऐसी औषधियो के हव्य रूप मे प्रयोग करने से यज्ञ सब प्रकार से रक्षा करने वाला सब दोषो का अर्थात् प्रदूषणादि का विनाशक होकर ससार का महोपकारक, जीवनदाता तथा समृद्धि करने वाला हो जाता है।

उक्त तीन पदार्थों के अतिरिक्त यज्ञ के लिए मन्त्र भी आवश्यक हैं

उक्त तीना पदार्थों के अतिरिक्त यज्ञ मे मन्त्रो की आवश्यकता का प्रतिपादन वेद म किया है, जैसा कि निम्न मन्त्र से प्रकट है—उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्र वोचेमाग्नये। आरे शृण्वते।

—यजुर्वेद अध्याय-3, मन्त्र॥

यज्ञ में पहुच कर अग्नि के लिए मन्त्रो का उच्चारण इस प्रकार करें कि जिससे दूरस्थ एव समीपस्थ सभी जन सुन सकें। अत यज्ञ में मन्त्र बोलना आवश्यक है। यज्ञकर्ताओं को मन्त्र तो बोलना ही चाहिए, जोर से बोलना चाहिए परन्तु अन्य जो भी यज्ञ मे भाग लें उपस्थित हो उनको भी मन्त्र बोलना चाहिए, मन्त्र याद न हो तो स्वाहा की ध्वनि उच्च स्वर मे करनी चाहिए। मन्त्र की ध्वनि यज्ञ मे करने से यज्ञ से निर्मित आरोग्य प्रद प्राणों का प्रवेश एव सचार शरीर की नस-नाडियो मे होने लगता है तथा अशुद्धिया निकल जाती है। अत यज्ञ के लिए उपर्युक्त तीन पदार्थों के अतिरिक्त मन्त्रोच्चारण भी आवश्यक है।

यज्ञ सृष्टि का स्वभाव है

यज्ञ कार्य सृष्टि स्वभाव एव नियम के अनुकूल है। नित्य सूर्योदय होता है। दिन होता है। प्रकाश होता है और ताप व्याप्त होता है। ताप से वायु मण्डल में विभिन्न गतियों प्रारम्भ होने लगती हैं। सृष्टि का जीवन, चराचर जगत का प्राण और आत्मा सूर्य ही है। सूय से ही प्राणो का प्रवाह चलता रहता है। वेद में "सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च मन्त्र वाक्य सूर्य के महत्व को प्रकट कर रहा है। उसी प्रकार हमारे लिए यह अग्नि भी महत्वपूर्ण है। इससे भी वही सब कार्य सिद्ध होते हैं तथा सिद्ध किए जा सकते हैं। अग्नि तत्व ही यज्ञ का आधार भूत प्रधान तत्व है तथा प्रधान कार्यकर्ता है। अत वेद ने इसको पुरोहित कहा। यही प्रधान देव तत्व है। सर्व कार्य तत्व साधक है। यह हव्य द्रव्य पदार्थों को दूरस्तर से जाने वाला है। पवित्रकर्ता है। प्रवाहमान होने से व्यापक रूप से गति कर्ता है। पावक है। प्रदूषणादि का शोधक है। सर्वांग साधक है। अग्नि में जब यज्ञ किया जाता है तो उसकी शक्ति एव प्रमाण असीमित होने लगता है। यज्ञ सृष्टि प्रवाह के अनुकूल होने से ही महत्वपूर्ण है तथा हमारी सब कामनाओ की पूर्ति करने वाला हो जाता है।

यज्ञ द्वारा पर्यावरण में शोधन प्रक्रिया—

यज्ञ वायुमण्डल को शुद्ध एव पुष्ट करता है। ससार को जीवन देता है। अग्नि में होमा हुआ पदार्थ वायु मण्डल में शीघ्र व्याप्त हो जाता है। व्याप्त हो जाने से अन्तरिक्षस्थ ताप एव विद्युदादि अग्नियो तथा सूर्य रश्मियों द्वारा ताप की तीव्रता, उग्रता एव ताप की परिवर्तित स्थितियों से, होमा हुआ पदार्थ सूक्ष्मरूप से उत्तरोत्तर ऊपर गति करता है और ताप की न्यूनता से वह नीचे की ओर भी गति करता है। इस प्रकार होमे हुए पदार्थों की गति यज्ञ के द्वारा ऊपर नीचे की ओर क्रमश होने लगती है और एक प्रकार की घर्षण क्रिया प्रारम्भ होने लगती है जिससे प्रदूषणों का निवारण कार्य शीघ्र होने लगता है। परिणामत शन्नो वात पवताम्—सुखकारी वायु चलने लगती है। अत प्रदूषणों के निवारण के लिए यज्ञ अत्यन्त सुगम तथा श्रेष्ठ साधन है तथा इसको वैज्ञानिक कार्य समझकर अगीकार करना चाहिए।

पवित्रता—सृष्टि का स्वभाव है—

सृष्टि के पदार्थों का स्वभाव शुद्धता एव पवित्रता का है। प्रदूषण स्वभाव नहीं है। अपितु यह तो विकार है—अस्वाभाविक है—अत उसका निवारण कार्य भी सहज ही है। होम मे होमे हुए पदार्थ सुगन्धित, रोगनाशक और पुष्टि प्रदाता होने से उनका घर्षण वायु मण्डल में, यज्ञ मे बारम्बार आहुति प्रदान करने से सहज में ही होने लगता है। यज्ञाग्नि मे आहुति देते ही अन्तरिक्षस्थ वायुमण्डल मे घर्षण अर्थात मार्जन, शोधन क्रिया का क्रम स्वत ही विकास होता जाता है। यज्ञ की समाप्ति पर तापक्रम क्रमश घटने से पृथ्वी की ओर घर्षण क्रिया होने लगती है। रात्रि और दिवस के तापमानो से भी यज्ञ की इस क्रिया को स्वभावत सरक्षण और बल प्राप्त होता है तथा प्रदूषणों का विशुद्धिकरण होता जाता है।

यज्ञ से विश्व मे आरोग्यता एवं पुष्टि—

यज्ञ से वायु मण्डल शुद्ध एव पुष्ट होती है—यह ध्रुव सत्य है। वायुमण्डल में ही मेघों का निर्माण होता है। यज्ञ की आहुति से उत्पन्न ऊष्मा, बाष्प एव धूम्र का संयोग का अन्तरिक्षस्थ वायु मण्डल में प्रविष्ट होकर मेघ मण्डल मे स्थित हो जाता है और मेघ मण्डल के जलों को शुद्ध एव सस्कारित कर वृष्टिका हेतु बन जाता है। वायु एव वृष्टि जल की शुद्धता से पृथ्वीस्थ वृक्ष, वनस्पति अन्न फलादि शुद्ध, पुष्ट आरोग्यता प्रदान करने वाले हो जाते हैं। इस प्रकार यज्ञ से विश्व का महोपकार होता है। आज के समय मे प्रदूषण की समस्या उग्र तथा आक्रामक रूप में भी उपस्थित होती जाती। इस की शान्ति भी यज्ञ से ही होगी। प्रदूषणो की समस्या का निराकरण यज्ञ ही है। यज्ञ प्रतिदिन घरो मे होने के साथ साथ औद्योगिक प्रतिष्ठानो में भी अनिवार्य रूप से यज्ञ होने चाहिए—तभी प्रदूषणों का व्यापक रूप से निराकरण होगा। अथर्ववेद काण्ड 8, सूक्त 2 के मन्त्र 28वें में बताया है कि—यज्ञाग्नि विविध कष्टों में पार लगाने वाली है, प्रदूषणों का नाश करने वाली है, घातक तत्वों को नष्ट करने वाली है। पीडाओं को हरने वाली शुद्धिकर्त्री तथा सहायक है। यजुर्वेद अध्याय । के मन्त्र 8वें में अग्नि को—धूरसि—सब दोषों को नष्ट करने वाला सस्नितमम्- शुद्धि का हेतु कहा है। मन्त्र 9वें अपहत रक्ष दुर्गन्धादि दोषों का नाश करने वाला है। उसको वह ऊपर चढा देता है। इस प्रकार अन्तरिक्षस्थ वायु मण्डल शुद्ध हो जाता है।

यज्ञ जीवन है—प्रदूषण जीवन विनाशक है

प्रदूषणों से रोग होते हैं और मृत्यु भी हो जाती है। यह एक सर्वजन विदित सत्य है। यह प्रदूषण वायु में फैलकर जन सहारक हो जाता है। वायु में प्रदूषण व्याप्त हो जाने से वह जल में वृक्ष वनस्पतियो मे तथा पृथ्वी के ऊपरी भाग एव पृथ्वी के भीतर भी प्रविष्ट हो जाता है। इसी प्रकार स्थान स्थान पर यदि यज्ञ होवे तो उसका अश घृत के साथ शक्तिशाली बन कर वायु मण्डल में व्याप्त होगा जिससे प्रदूषणो का निवारण तत्काल होगा और रोगो का शमन भी होगा, प्राणिमात्र को ही नहीं अपितु वृक्ष, वनस्पति आदि तथा पृथ्वी, जल आदि का भी शोधक एवं पुष्टिकारक सिद्ध होगा। इस प्रकार यज्ञ विश्व के जीवन का निर्माता एव विश्व का कल्याण करने वाला सिद्ध हो सकेगा।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दर्पण है। परन्तु इस दर्पण पर अज्ञान का पर्दा पड़ा हुआ है और हमारे पाप कर्मों का मैल चढ़ा हुआ है। और चंचलता के कारण इस में स्थिरता नहीं है। यह डोल रहा है। यही कारण है कि हम चाहते हुए भी अपने हृदय के अन्दर, अति समीप उस परम पिता परमात्मा के दर्शन नहीं कर सकते।

यदि आप के मन में सचमुच प्रभु दर्शन की चाह है, सचमुच आपका हृदय प्रभु दर्शन के लिए तड़प रहा है तो पहले वेद शास्त्रों का स्वाध्याय कीजिए और सच्चे विद्वान त्यागी तपस्वी महात्माओं के उपदेश से तथा सत्संग द्वारा अपने हृदय से अज्ञान को दूर कीजिए। पाप कर्मों से शुभ कर्मों के द्वारा अपने मन के मैल को धो डालिए और प्राणायाम द्वारा अपने मन की चंचलता को दूर करके इसे स्थिर और एकाग्र कीजिए। फिर देखिए किस प्रकार आप को अपने हृदय के अन्दर ही उस परम प्रभु परमात्मा के दर्शन होते है। किस प्रकार आपको उस प्रकाश स्वरूप, परम ज्योति और पूर्ण आनन्द का अनुभव होता है। उस प्रकाश का आनन्द का वर्णन न लेखनी कर सकती है न वाणी कर सकती है। यह तो केवल मात्र आत्मा के अनुभव की वस्तु है।

—

ईश्वर का साक्षात्कार

लेखक— महान् विद्वान् वेद-विज्ञ स्वर्गीय
श्री स्वामी जी आत्मानन्द जी महाराज

ॐ

(गताक से आगे)

अब पृथिवी आदि लोक लोक लोकान्तर भी उस अवस्था में नहीं रहे जिस अवस्था में रचना काल में थे। शनै शनै उनकी भी शक्ति का क्षय हो रहा है। और कोई समय ऐसा आ सकता है जब ये सब सूक्ष्म गर्भ मे विलीन हो जाएंगे।

अब के विज्ञान के इस सिद्धान्त की परीक्षा विशेष कि—'प्रकृति मे य सब परिवर्तन समयानुसार स्वभाव से होते रहते हैं'

हम पहिले लिख आये हैं कि इन लोक लोकान्तरों के गुण कर्म और स्वभाव सब भिन्न हैं। प्रकृति अथवा उपादान कारण से इन सब भेद की सृष्टि कैसे हुई यह ही विचारणीय विषय है।

सूर्य, चन्द्रमा और पृथिवी इन तीनो लोको को हम अपनी आखो के सामने देख रहे हैं। सूर्य और चन्द्रमा के स्वभाव मे उतना ही अन्तर प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है जितना रात और दिन मे। पृथिवी और इन दोनो लोकों के भी कार्यक्रम और स्वरूप मे महान अन्तर है। पृथिवी अपने सारे ही कार्यक्रम मे इन दोनों लोकों की सहायता के बिना सर्वथा असमर्थ है। इसी प्रकार सूर्य की सहायता के बिना चन्द्रमा की सत्ता ही असम्भव हो जाती है। इस प्रकार इन तीनों के स्वभाव और कार्यक्रम मे महान् अन्तर है। जब ये तीनों लोक एक ही उपादान कारण से बने हैं तो इनमें यह इतना बड़ा अन्तर क्यो ?

यह कहा जा सकता है कि उपादान कारण का विश्लेषण आरम्भ मे इसी प्रकार से हुआ कि विभिन्न गुणों की न्यूनता और अधिकता के कारण ये तीनों लोक विभिन्न स्वभाव वाले बन गये। यह हम मान लेते हैं ऐसा ही हुआ होगा परन्तु हमारा प्रश्न इसके सम्बन्ध में नहीं। हमारा प्रश्न तो यह है कि ऐसा हुआ क्यो ? कारण स्वय जड है, उसे यह ज्ञान हो भी नहीं सकता कि देख विश्लेषण करने से मेरे ये तीन रूप बन जायें ... फिर एक ही तत्व में से इन तीन परस्पर भिन्न स्वभाव वाले लोकों को, एक विशेष विश्लेषण के द्वारा पृथक् किसने कर दिया। क्या जड़ को यह ज्ञान था, कि इस प्रकार अनेकों अवस्थाओं में से होता हुआ मैं यही का रूप धारण कर लूं गा। मेरे ऐसे गुण कर्म स्वभाव प्रादुर्भू त हो जायेंगे, मैं मनुष्य जैसे चेतन प्राणी को समय बतलाने समर्थ हो जाऊंगा। यह तो हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि घड़ी के लिये ये सब योजनाएं मानव नामक चेतन प्राणी की थीं, घड़ी की नहीं।

इसी प्रकार न जड़ उपादान कारण प्रकृति को और न इन तीनों लोकों को यह ज्ञान था, कि ऐसे गुण कर्म स्वभावों को प्राप्त कर हम किस प्रकार हो सकेंगे, जिससे कि हम संसार के इतने काम की वस्तु बन जायेंगे। यदि ऐसा नहीं हो सकता तो हम पूछना चाहेंगे कि ज्ञान रहित जड परस्पर विरुद्ध परन्तु एक दूसरे के सहायक इन तीनो लोको का सर्जन कैसे कर सकी।

हम मान लेते हैं कि उपादान कारण रूप कोई आदि तत्व आकाश के गर्भ मे रहा था। और उसी में से ये सब लोक लोकान्तर पृथक् हुए थे। परन्तु समय भेद से गर्मी के न्यून या अधिक हो जाने से इनमे भेद हो गया है।

यह उत्तर भी सन्तोष जनक नहीं है। यदि ये तीनो लोक एक साथ ही अपने उपादान कारण में से पृथक् हुए तो इन तीनो के समान काल मे ही भिन्न-भिन्न स्वभाव कैसे हो गये ? और यदि विभिन्न कालों मे ये अपने उपादान कारण से पृथक् हुए, तो उस काल की व्यवस्था करने वाला कोई चेतन होना चाहिए। जिसे यह ज्ञान हो कि एक लोक के इतने काल के भेद से पृथक् होने पर जगत् के लिये इस प्रकार उपयोगी सिद्ध हो सकेगा।

और फिर इन तीनो लोको मे केवल गर्मी और शीतलता का अन्तर तो है ही नहीं, वर्षा की योजना वृक्ष, लता, अन्न, औषधि पृथिवी के अनेक पदार्थों का उत्पादन परिपालन आदि करना यह सूर्य का काम है, इन सब पदार्थों में अमृत का सिंचन करना चन्द्रमा का काम है। ये सब विभिन्न गुण कर्म स्वभाव केवल शीतलता अथवा गर्मी के कार्य नहीं। अवश्य ही इस विचित्र रचना की पीठ के पीछे किसी सर्व व्यापक शक्ति का हाथ है। बस इसी अनोखी कार्य कारण परम्परा को और इसकी पीठ के पीछे छिपे हुए भगवान के व्यापक ज्ञान रूपी हाथ को योग समाधि के अन्दर प्रत्यक्ष कर महर्षि दयानन्द जैसा विश्वास कर रहे थे और चाहते थे कि यह "ईश्वर का साक्षात्कार" है।

—०—

आज हम कहां खड़े हैं—

आर्य समाज और राजनीति-4

लेखक—श्री प. सत्यदेव जी विद्यालकार जालन्धर

(गताक से आगे)

पर विडम्बना यह है कि भारतीय स्वतन्त्रता सघर्ष के तथा भारतीय राजनीतिक जीवन के पिछले 60-70 वर्षों मे इन विचारो को भारतीय जनता का प्रबल समर्थन कभी नही मिला। क्रान्तिकारी आन्दोलन, नेता सुभाष चन्द्र जी का सघर्ष, काग्रेस का सघर्ष अथवा समाजवादी कम्यूनिष्ट दलो का सघर्ष कहीं भी इस विचार को देश के विकास का आधार नही माना गया। आज भी दस भारत भर की विधान सभाओ मे कुछ भी महत्व के गिने जाते हैं—भाजपा से लेकर मार्क्सिस्ट-कम्युनिस्ट पार्टियो तक उन में से कोई भी इस विचार का समर्थक नहीं। इससे स्पष्ट है कि भारतीय राजनीतिक चिन्तन धार्मिक या साम्प्रदायिक विचारों को देश के राजनीतिक भविष्य का आधार नहीं मानता।

सम्भवत 1941 की दक्षिण भारत आर्य-कान्फ्रेंस के अध्यक्ष श्री सत्यमूर्ति जी ने जो अभिभाषण दिया था, वह आर्य समाज विकसित होते हुए जीवन के भिन्न-भिन्न रूपो को अच्छा प्रकट करता है। राजनीति के विषय मे आर्य समाज के कार्य का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा था—

सामूहिक रूप से जैसा कि मैंने पूर्व कहा है, आर्य समाज अपने को दल गत राजनीति से पृथक् रखता है, परन्तु आर्य समाज अपने सदस्यो को पूर्ण स्वतन्त्रता देता है कि वे जिस राजनीतिक दल से अपना सम्बन्ध चाहे, रखें। आर्य जन भारत की एकता के लिए उत्सुक है और उनकी यह स्पष्ट नीति है कि हमारे देश की राजनीति राष्ट्रीयता द्वारा शासित हो साम्प्रदायिकता के द्वारा नहीं। प्रजातन्त्र पद्धति मे उनकी गहरी आस्था है।"

ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य समाज की राजनीति का अब भी वही रूप है, जो प्रारम्भ मे था। सामूहिक रूप से आर्य समाज का कोई राजनीति दल नहीं है। पर आर्य जन जागरूक और प्रबल देश भक्त लोग हैं। उनकी देश-भक्ति और देश सेवा की भावना दबाई नहीं जा सकती। अत वे विभिन्न राजनीतिक दलो द्वारा अपनी कार्य-कुशलता प्रकट करते रहते हैं।

अकाली दल और मुस्लिम लीग की की तरह आर्य समाज न तो एक क्षेत्रीय संगठन बन सकता है और न ही सकुचित साम्प्रदायिक सगठन। उसके लिए सम्पूर्ण भारत अपना देश है और अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही भारतीय परम्पराएं, भारतीय सस्कृति तथा भारतीय महापुरुष अपने हैं और सरक्षण के योग्य हैं। इसलिए सम्पूर्ण भारतीय जन समाज के साथ उसका अपनापन है।

—०—

आर्य यात्रा टंकारा

महर्षि दयानन्द की जन्म भूमि टंकारा मे हर साल की तरह इस साल भी 6-7-8 मार्च 1986 को शानदार ऋषि मेला लग रहा है ऋषि भक्तों को टंकारा ले जाने के लिए दिल्ली से स्पेशल बसें 23-2-1986 सायं 2 बजे आर्य समाज 15 हनुमान रोड नई दिल्ली फोन 311280 से चलेंगी जो 13-3-86 रात्रि को वापस आएगी। इस यात्रा में यात्री देखेंगे जयपुर अजमेर, उदयपुर, जामनगर, द्वारका ओखा पोरबन्दर, सोमनाथ का मन्दिर बड़ौदा दर्शन, बम्बई चौपाटी दर्शन, महाबलेश्वर अजन्ता एलोरा की गुफाएं, इन्दौर।

आप आज ही 645 रुपए प्रति यात्री इनको देकर अपनी सीटें रिजर्व करा लें। यह केवल मार्ग व्यय है।

सम्पर्क करें—

श्री प्रद्युम्न लाल तलवाड़ आर्य 208 अशोक विहार फेस। दिल्ली-52 फोन 7122217

श्री प्राणनाथ आर्य डी-5 कैलाश नई दिल्ली-48 फोन 6419914

—रामचन्द्र आर्य प्रबन्धक आर्य यात्रा टंकारा
466, भीम नगर गुड़गांव

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना में विशेष आयोजन

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार की विशेषता रही है कि वह अपने साप्ताहिक सत्सगो को रोचक तथा आकर्षक बनाने के लिए प्राय विशेष आयोजनो का प्रबन्ध करता है। जिससे सभी सदस्यो विशेषकर नव युवको को प्रेरणा मिलती है तथा सत्सग की शोभा बढती है सदस्य परिवार समेत सत्सग मे सम्मिलित होते है। 2 2 86 रविवार के साप्ताहिक सत्सग मे इसी प्रकार का रोचक आयोजन किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के उपदेशक प रामनाथ जी हमारी प्रार्थना पर विशेष रूप से पधारे। उन्होने जीवन उपयोगी लाभ दायक उपदेश दिया। प्रवचन के पश्चात श्री महिन्द्रपाल वर्मा को उनके जिला सभा का प्रधान चुने जाने पर सम्मानित किया गया। श्री वर्मा जी ने सभी का धन्यवाद किया तथा कहा कि वह आर्य समाज की प्रगति में हमेशा बढ चढ कर सहयोग देंगे। स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार ने अपने नये कार्यालय का जिस को पिछले दिनों स्त्री समाज ने लगभग पाच हजार रुपया खर्च करके कमरे का जीर्णोद्धार किया था का भव्य समारोह मे उदघाटन श्रीमती माता वेदवती के कर कमलो से कराया। इस कार्यालय के खर्च का सारा रुपया माता वेदवती जी ने दिया। बहिनों ने उनके गले मे फूल मालाय डाल कर विशेष रूप से सम्मानित किया। बहिनें बडी सख्या मे पधारी हुई थीं। इसके पश्चात प्रीति भोज का प्रबन्ध कर वेद मन्त्रो के उच्चारण के पश्चात सभी ने मिल कर भोजन किया। भोजन की अपनी विशेषता थी शुद्ध घी से तैयार किया गया था। सब से बडी खूबी यह थी कि स्त्री समाज तथा पुरुष समाज के सदस्यों ने मिल कर अपने हाथो से भोजन तैयार किया। जिसकी सभी सदस्यो ने सराहना की। इस प्रकार इस सप्ताह यह तीनों आयोजन बडी सफलता पूर्वक सम्पन्न हुये। इन कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार के अधिकारियों आर्य युवक सभा के अधिकारियों ने बढ चढ कर भाग लिया। श्री रणबीर जी भाटिया, श्री नरेन्द्र सिंह जी भल्ला, श्री नवनीत लाल जी डींगरा, श्री पवन कुमार आर्य तथा ज्ञानी गुरविलास सिंह आर्य, मदन मोहन चड्ढा आदि सदस्यो व अधिकारियो ने इन कार्यक्रमों को सम्पन्न करने मे पूर्ण सहयोग दिया। साथ को एक विशेष आयोजन में एक क्रिश्चन लडकी ने अपनी स्वेच्छा से हिन्दू धर्म आर्य समाज की वेदी पर अपनाया तथा उस का विवाह डा दुर्गा प्रसाद पटनायक के साथ पूर्ण वैदिक रीति से आर्य समाज के अधिकारियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ इस प्रकार आर्य समाज का यह साप्ताहिक कार्यक्रम चार बड आयोजनों में बड समारोहों से सम्पन्न हुआ।

—बलदेवराज सेठी
मन्त्री

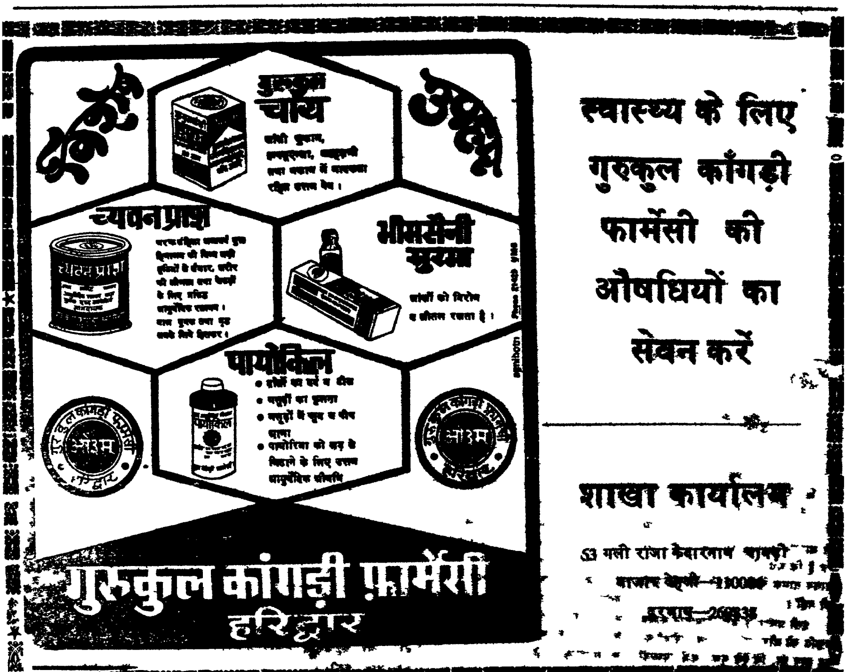
आर्य समाज [illegible]पुरा का चुनाव

आर्य समाज माडल नगर राजपुरा टाउनशिप (पंजाब) का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार से सर्व सम्मति से 2 2 86 को हुआ —

प्रधान—श्री मूलचन्द जी सचदेव आहूजी उपप्रधान—श्री वैद्य प्रकाश जी कपूर एस डी ओ और लाला साधराम जी बतरा केरवाला मर्चेंट, मन्त्री श्री मुनि चेतन देव जी, उपमन्त्री—श्री ज्ञानचन्द जी आवड़ा, प्रचार मन्त्री—श्री चन्द्र किशोर जी आर्य पुस्तकालयाध्यक्ष—डा० घनश्याम ... जी, कोषाध्यक्ष—श्री रामदेव जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री बेलाल जी हर्षी, लेखानिरीक्षक—श्री प्रवक्कुमार रीबाडी, प्रबन्धक (आर्य पाठशाला[illegible]) श्री रामकुमार एम ए बी. डी।

प्रबन्धक—डी एम, सी आर्य माडल स्कूल—श्रीमती सुन्दरी भाटिया।

—चन्द्र किशोर आर्य
प्रचार मन्त्री



श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस गोहरू मार्जन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि न पो जे एल 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अक 46, 4 चैत्र सम्वत् 2042 तदनुसार 16 मार्च 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

सोम पान की तरंग में

लेखक—स्वामी श्री जगदीश्वरानन्द सरस्वती

इति वा इति मे मनो गामश्व सनुयामिति ।
कुवित्सोमस्यापामिति ।।—ऋ 10।119।1

शब्दार्थ—(इति वै) हा हा सच-मुच (मे) मेरा (मन) मन (इति) ऐसा हो रहा है (इति) कि मैं (गाम) गाय और (अश्वम) घोड़ रूपी अपनी सारी सम्पदा को (सनुयाम) बाट दू दान कर दू (इति) क्योकि मैंने (सोमस्य) सोम का, सोमरस का प्रभु भक्ति के आनन्द का (कुवित) डटकर (अपाम) पान कर लिया है ।

व्याख्या—जो सोम का पान कर लेता है, प्रभु भक्ति के आनन्द में सरा बोर हो जाता है उसके जीवन में मस्ती की तरगें और आनन्द की हिलोरें उठने लगती हैं फिर उसे सासारिक वैभव से मोह नहीं रहता। वह ममझ चुका है—

भोगे रोग भयम ।—भर्तृहरि वै 31
भोगो के भोगने मे रोग होने का भय है । और

सर्वेन्द्रियाणा जरयन्ति तेज ।—
कठोपनिषद 1।26

ये भोग सब इन्द्रियो को क्षीण कर देते हैं ।

प्रभु प्रेम की तरगो से तरगित हो कर भक्त कहता है—प्रभो ! आज तो मेरे जी में आ रहा है कि अपनी सारी सम्पदा लुटा डालू । जो भूखे हैं, दीन-दु खी हैं निबल और विकल हैं—अपना सवस्व उन्हें समर्पित कर दू ।

देव ! आपके अमृत-रस का पान कर मैं गाम्=प्रकाश ज्ञान और अश्वम्—कर्मशीलता तथा प्रेरणा का अक्षय (कभी भी क्षीण न होने वाला) कोष बन गया हू। अब तो मेरा मन कर रहा है कि दिव्य वैदिक पथ पर चलते हुए अपना सब कुछ दूसरों के लिए लुटा डालू । मैं मानवों को वेदरूपी ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित कर दू और उन्हे कमशीलता की उत्प्रेरणा करू ।

ससार के लोगो ! यदि सुख शान्ति, आनन्द और कल्याण चाहते हो तो परमात्मा की शरण मे आओ । ब्रह्मानन्द का पान करो डटकर सोम पान करो। वेद के शब्दों मे कामना करो—

वेदाहमेत पुरुष महान्तमादित्यवर्ण
तमस परस्तात ।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्य
पन्था विद्यते ऽयनाय ।।
—यजु 31।18

मैं उस महतो महान परमेश्वर को जानू जो सूय के समान देदीप्यमान है जिसमे अन्धकार का लेश भी नही है। उसी परमेश्वर को जानकर मनुष्य मृत्यु के बन्धन से भी छूट जाता है। प्रभु की प्राप्ति के बिना मोक्ष का और कोई उपाय नही है।

उपनिषद के ऋषि कह गये हैं—

एकोवशी सवभूतान्तरात्मा एक रूप
बहुधा य करोति ।
तमात्मस्थ येऽनु पश्यन्ति धीरास्तेषा
सुख शाश्वत नेतरेषाम ।।
—कठोप 5।12

वह एक मात्र परमेश्वर सबको वश मे रखने वाला, सबके भीतर व्याप्त सर्वान्तर्यामी और एक रूप को अनेक रूप बनाने वाला है। आत्मा के भीतर विद्यमान उस पुरुष को जो देख लेते हैं उन्हे ही मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है दूसरो को नही ।

उसे प्राप्ति का दृढ सकल्प लो—

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं
पथस्तत कवयो वदन्ति ।।
—कठोपनिषद 3।14

अज्ञान निद्रा को त्यागो प्रभु प्राप्ति के लिए कटिबद्ध हो जाओ ज्ञानी योगी पुरुषो के पास पहुचो और ब्रह्म—परमेश्वर को भली भाति जानो । इस मार्ग को तेज किये हुए छुरे की धार के समान लाघना कठिन है । विद्वान लोग कहते हैं कि यह माग दुगम है ।

ब्रह्म अमृत का पान करो। माया की मदिरा पीकर तो जगत उन्मत्त होता है। माया तो मनुष्य को नाना प्रकार के नाच नचाता है । माया की मार से मनुष्य का इहलोक तो बिगडता ही है परलोक भी बिगड जाता है । ओ माया की मदिरा पीने वालो ! माया की मदिरा पीकर तो आपको क्लेश दुख त्रास अशान्ति और भय की ही प्राप्ति होगी। सुनो ! वेद माता कहती है—

मैत प था मनुगा भीम एष ।
अथव 8।1।10

हे मनुष्य ! इस माग पर मत चल, यह माग भयकर है ।

प्रवाता इव दोधत उन्मा पीता
अयसत ।
कुवित्सोमस्यापामिति ।
—ऋ 10।119।2

शब्दार्थ—(पीता) पान किया गया सोम (वाता इव) प्रबल झकोरो झझावातो, तूफानो की भाति (दोधत) झकझोरते हुए (मा) मुझ (प्र) प्रकृष्ट रूप से (उत अयसत) ऊपर उछाल रहे है झुमा रहे हैं (इति) क्योकि मेने (सोमस्य) सोमरस का (कवित अपाम) छककर पान किया है ।

व्याख्या—मैं जी भर कर सोमरस का पान करके मैं अलौकिक शक्तियो से सम्पन्न बन गया हू। मेरे जीवन मे मादकता आ गई है। मेरे जीवन रूप उद्यान मे अनेक सुरभित पुष्प विकसित हो गये हैं। मेरे मानस मन्दिर मे दिव्य सगीत की मधुर झकार उठ रही है, अनहदनाद सुनाई दे रहा है । मेरे रोम पुलकित हो रहे हैं। मेरे जीवन मे ओज तेज स्फूर्ति साहस और पराक्रम का विकास हो गया है। सोम का पान कर मैं शक्ति का पुञ्ज बन गया हू । अब तो मेरी स्थिति ऐसी है—

अभीदमेकमेको अस्मि निष्षाल भी
द्वा किमु त्रय करन्ति ।
खले न पर्षान प्रति हन्मि भूरि
किं मा निन्दन्ति शत्रवो निन्द्रा ।।
—ऋ 10।48।7

मैं शत्रुओ को सवथा पराजित करने वाला हू। मैं एक एक के साथ अकेला लड कर उन्हे परास्त करने मे समथ हू। मेरे साम्मुख्य—मुकाबले मे दो या तीन भी आ जाए तो वे मेरा क्या बिगाड लगे ? जैसे ओखली मे पडे हुए दानो को मूसल कुचल डालता है उसी प्रकार मैं भी शत्रुओ को प्रताडित करने मे समथ हू । ऐश्वयहीन ये शत्रु मेरी व्यथ में निन्दा करते है मै इन सब के लिए अकेला ही पर्याप्त हू।

क्या ठिकाना है मेरी शक्ति का—

अयुतो हमयुतो म आत्मायुत मे
चक्षुरयुत म श्रोत्रमयुतो ।
मे प्राणोऽयुतो मेऽपानोऽयुतो मे
व्यानोऽयुतोऽह सर्व ।।
—अथव 19।51।1

मैं दस सहस मनुष्यो की शक्तियो से युक्त हू ! मेरी आत्मा मे दस हजार मनुष्यो की आत्मा के समान बल है। मेरी आख मे दस हजार आखो की शक्ति है। मेरे कानो मे दस सहस मनुष्यो के समान श्रवण शक्ति है। मेरे प्राण अपान और व्यान मे दस सहस की शक्ति है। मै ऊपर से लेकर नीचे तक सम्पूण दस सहस की शक्तियो से युक्त हू ।

जैसे वायु के बवण्डर वक्षो को उखाडकर उन्हे धराशायी कर देते हैं, उसी प्रकार मै भी ससार मे व्याप्त अनाचार भ्रष्टाचार अन्याय अभाव अवद्या ईर्ष्या, द्वेष घणा और वैमनस्य को समाप्त कर दू । जी मे आता है कि ससार मे जितनी हिसा, छल, कपट, धोखा और बेईमानी व्याप्त है उस सब को निर्मूल कर दू । मन मे ऐसे हिलोर उठ रही हैं कि ससार में क्रान्ति का ऐसा बिगुल बजा दू जिसमे मानव समाज के सारे पाप-ताप और दूषण भस्म हो जाए ।

व्याख्यान माला—

वर्णव्यवस्था और उसका महत्व

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री स अधिष्ठाता
गुरुकुल करतारपुर पजाब

वर्ण—

(23 फरवरी से आगे)

ये शान्तदान्ता श्रुतिपूर्णकर्णा जितेन्द्रिया स्त्रीविषये निवृत्ता ।
प्रतिग्रहे सकुचिताभिहस्तास्ते ब्राह्मणास्तारयितु समर्था ।19।

जो शान्त स्वभाव के तथा दमनशील हैं, जो जितेन्द्रिय हैं जो स्त्रियो के विषय में सर्वथा निवृत्त हैं और जो दान लेने मे सकुचित हाथों वाले नहीं हैं वे ही ब्राह्मण समाज को तारने मे समर्थ होते हैं।

धर्मश्च सत्यश्च तपो दमश्च अमात्सर्य ह्रीस्तितिक्षाऽनसूया ।
दान श्रुत चैव धृति क्षमा च महाव्रता द्वादश ब्राह्मणस्य ।20।

ब्राह्मण के बारह महान व्रत है धर्माचरण सत्य बोलना, तप करना इन्द्रिय दमन किसी की निन्दा चुगली न करना लज्जा सहन शक्ति घृणा न करना दान लेना व देना वेदाध्यन धैर्य और क्षमा।

अध्यापनमध्ययन यजन याजनन्तथा ।
दान प्रतिग्रह चैव ब्राह्मणानामकल्पयत् ।21।

पढना और पढाना यज्ञ करना और कराना, दान देना और लेना ये ब्राह्मण के छ कर्म हैं।

शूद्रे चैतद्भवेल्लक्ष्य द्विजेतच्च न विद्यते ।
न वै शूद्रो भवेच्छूद्रो ब्राह्मणो न च ब्राह्मण 22।

उपर्युक्त बारह लक्षण यदि शूद्र मे हो और ब्राह्मण मे न हो तो वह शूद्र शूद्र नहीं होता और ब्राह्मण ब्राह्मण नही होता अर्थात शूद्र ब्राह्मण हो जाता है और ब्राह्मण शूद्र हो जाता है।

कामभोग प्रियास्तीक्ष्णा क्रोधना प्रिय सुहसा ।
त्यक्तस्वधर्म रक्ताङ्गस्ते द्विजा क्षत्रता गता ।23।

काम और भोग विलास जिन्हे प्रिय है ऐसे द्विज तथा जो कि तीक्ष्ण स्वभाव वाले क्रोधी प्रिय साहसी अर्थात साहसिक प्रवृत्ति वाले हैं, अपने धर्म से च्युत लाल आख वाले हैं वे ब्राह्मणत्व से क्षत्रिय व को प्राप्त हो जाते हैं।

प्रजाना रक्षण दान मिज्याऽध्ययनमेव च ।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासत ।24।

प्रजाओ की रक्षा करना दान देना, यज्ञ करना, अध्ययन करना, विषयो में आसक्ति न रखना यह सक्षप मे क्षत्रियो के लक्षण हैं।

शौर्य तेजो धृतिर्दाक्ष्य युद्धे चाप्यपलायनम् ।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्र कर्म स्वभावजम् ।25।

शूरवीरता तेज, धैर्य चतुरता, युद्ध से न भागना दान देना, और ऐश्वर्य प्राप्त करने की इच्छा करना ये क्षत्रियो के स्वाभाविक कर्म होते हैं।

लोक सरक्षणे दक्ष शूरो दान्त पराक्रमी ।
दुष्टनिग्रहशीलो य स वै क्षत्रिय उच्यते ।26।

जो प्रजा की रक्षा में चतुर, शूरवीर दमनशील पराक्रमी तथा दुष्टों को दबाने वाला हो वह क्षत्रिय कहा जाता है।

गोभ्यो वृत्ति समास्थाय पीता कृष्युपजीविन ।
स्वधर्मन्नानुतिष्ठन्ति ते द्विजा वैश्यता गताः ।27।

जो द्विज गोपालन से वृत्ति स्थापित करके पीले वस्त्र पहनते हैं, खेती से जीविका चलाने वाले तथा अपने धर्म का अनुष्ठान नहीं करते वे क्षत्रिय भी वैश्य बन जाते हैं।

क्रयविक्रय कुशला ये नित्य पुण्य जीविन ।
पशुरक्षा कृषि करास्ते वैश्या कीर्तिता भुवि ।28।

जो द्विज क्रय-विक्रय में चतुर सौदा बेचकर जीने वाले, पशुओ की रक्षा करने वाले नित्य खेती करने वाले जो होते हैं वे पृथ्वी पर वैश्य कहे जाते हैं।

पशुना रक्षण दानमिज्याऽध्ययनमेव च ।
वाणिक्पथ कुसीदञ्च वैश्यस्य कृषिमेव च ।29।

पशुओ की रक्षा करना दान देना, यज्ञ करना, अध्ययन करना ब्याज लेना, बनियो के मार्ग पर चलना खेती करना ये वैश्य के कर्म हैं।

कृषिगोरक्षवाणिज्य वैश्यकर्म स्वभावजम् ।
परिचर्यात्मक कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ।30।

खेती गौरक्षा और व्यापार ये वैश्यो के स्वाभाविक कर्म हैं। और शूद्र का भी सेवात्मक कर्म स्वाभाविक है।

सर्वभक्ष्यरतिर्नित्य सर्वकर्मकरोऽशुचि ।
त्यक्तवेदस्त्वनाचार स वै शूद्र इति स्मृत ।31।

जो सर्व भक्षि है और सब प्रकार के काम करने वाला है और अशुद्ध रहता है जिसने वेद मार्ग त्याग रखा है ऐसा आचारहीन मनुष्य शूद्र कहलाता है।

हिंसाऽनृतप्रिया लुब्धा सर्वकर्मोपजीविन ।
कृष्णा शौचपरिभ्रष्टास्ते द्विजा शूद्रता गता ।32।

हिंसा करने वाले, झूठ बोलने वाले, लोभी सभी कर्मों से जीविका चलाने वाले, काले वर्ण वाले या काले कर्म वाले पवित्रता से भ्रष्ट वा भी द्विज हैं वे शूद्रता को प्राप्त होते हैं,

द्विजसेवाऽर्चनरता शूरा शान्ता जितेन्द्रिया ।
सीरकाष्टतृणवहास्ते नरा शूद्रसज्ञिता ।33।

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तीनो की सेवा करने वाले शूरवीर, शान्त स्वभाव वाले, सीर, हल लकडी तथा तृण चारा आदि ढोने वाले जितेन्द्रिय मनुष्य शूद्र सज्ञक होते हैं।

एकमेव तु शूद्रस्य प्रभु कर्मसमादिशत् ।
एतेषामेव वर्णाना शुश्रूषामनसूयया ।34।

भगवान ने शूद्र का एक ही कर्म कहा है कि इन ब्राह्मण, क्षत्रियों वैश्यों की बिना घृणा से सेवा करें।

त्यक्तस्वधर्माचरणा निर्घृणा परपीडका ।
चण्डाश्च हिंसका नित्य म्लेच्छास्ते ह्यविवेकिन ।35।

स्वधर्म का त्याग कर आचरण करने वाले घृणा रहित दूसरो को पीडा देने वाले, क्रोधी नित्य हिंसा करने वाले अज्ञानी मनुष्य म्लेच्छ कहे जाते हैं।

न जात्या ब्राह्मणश्चात्र क्षत्रियो वैश्य एव न ।
न च शूद्रो न वै म्लेच्छो भेदिता गुणकर्मभि ।36।

इस ससार मे जाति से न कोई ब्राह्मण होता है, न क्षत्रिय होता है, न वैश्य होता है और न शूद्र होता है और न ही कोई म्लेच्छ होता है गुण और कर्मों के कारण ही से भेद बनते हैं।

(क्रमश)

सम्पादकीय—

आर्य समाज के तीन महारथी

आर्य समाज धीरे-धीरे अपनी वह लोकप्रियता क्यो खो रहा है और उसका संगठन क्यों शिथिल हो रहा है ? इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने के प्रयास मे पिछले दिनों मुझे आर्य समाज के इतिहास के कुछ पिछले पन्ने उलटने पड़े। आजकल डी. ए. वी आन्दोलन की शताब्दी मनाई जा रही है ? यह देखने के लिए कि एक सौ वर्ष पहले यह आन्दोलन कैसे प्रारम्भ हुआ और इसके कौन कौन करणाधार थे मुझे पिछले इतिहास को पढने का अवसर मिला। डी ए वी आन्दोलन का प्रारम्भ पंजाब में हुआ था और जिन महानुभावों न इसके लिए अपना जीवनदान दिया था वह भी सब पंजाबी ही थे परन्तु डी ए वी कालेज के इतिहास को देखते हुए तीन वह महारथी मेरे सामने आये जिन्होंने देश की शिक्षा के पुन निर्माण में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह थे महात्मा मुन्शीराम जी जो बाद मे श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी बन गए। दूसरे थे महात्मा हंसराज जी तीसरे थे लाला देवराज सोन्धी। मुन्शीराम जी ने गुरुकुल की स्थापना की। महात्मा हंसराज जी ने डी ए वी कालेज की स्थापना की। लाला देवराज सोन्धी ने कन्या महाविद्यालय जालन्धर की स्थापना की। इन तीनों संस्थाओं ने देश के नव निर्माण मे अपना अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रभावशाली और एतिहासिक योगदान दिया। डी ए वी आन्दोलन आज सारे देश में फैला हुआ है। गुरुकुल कांगड़ी जैसी दूसरी संस्था सारे देश में नहीं है। कन्या महाविद्यालय जालन्धर अपने जीवन के एक सौ वर्ष समाप्त करने लगा है। इसकी स्थापना उस युग में की गई थी जब स्त्री शिक्षा का कोई नाम भी सुनने को तैयार न होता था। इस में शिक्षा प्राप्त करने के लिए दूर-दूर से लड़कियां आया करती थी। कई बार विदेशों से भी आती रही हैं। इस तरह इन तीन संस्थाओ ने शिक्षा के क्षेत्र में जो गौरवमयी भूमिका निभाई है उस पर वह गर्व कर सकती हैं और आर्य समाज इस लिए गर्व कर सकता है कि यह तीनों उसकी ही संस्थाए थी।

प्रश्न किया जाएगा कि क्या कारण है कि अब आर्य समाज मे स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज और लाला देवराज सोन्धी जैसे तपस्वी त्यागी नेता पैदा नहीं होता ? मैंने इन तीनों के जीवन चरित्रों को पढने और उनकी सफलता के रहस्य को जानने का कुछ प्रयास किया है और मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि यह तीनो आर्य समाज के महादीवाने थे जिन्होंने इसके लिए अपना सब कुछ बलिदान कर दिया था परन्तु आर्य समाज से लिया कुछ न था। यह केवल आर्य समाज और उस के द्वारा अपने देश की सेवा के लिए काम करते रहे। उसी के लिए जिये और उसी के लिए काम करते करते इस संसार से विदा हो गए।

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज तो शहीद हो गए। महात्मा हंसराज और लाला देवराज सोन्धी जिन्दा शहीद थे क्योंकि उनके पास जो कुछ भी था उन्होने इन संस्थाओं के लिए दे दिया था। जब मैं आज के नेताओ को देखता हूं कि किस प्रकार वह अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए आर्य समाज के हित को त्याग देते हैं तो फिर पता चलता है कि आज आर्य समाज प्रगति क्यो नही कर रहा। आज के बड़े बड़े नेताओं का भी जनता पर कोई प्रभाव नही है। उनमे से कई अपने आप को शासन के दुमछल्ला बना लेते हैं। जो वह कहे वही करते हैं। उनके पास यह सोचने का समय भी नही है कि देश के सामने क्या समस्याए हैं और उनका समाधान ढूंढने में आर्य समाज अपना क्या योगदान दे सकता है ? दुनिया बड़ी तेजी से चल रही है हालात बदल रहे हैं, एक ओर इस्लाम हमे चुनोती दे रहा है दूसरी ओर इसाईयत मुंह फाड़े खड़ी है। आज हमारे शासकों के पांव भी लड़खड़ाने लगे हैं। मोलवी और मुल्लाओं के डर से वह देश के विधान मे भी परिवर्तन करना चाहते हैं। कहने को तो हमारी सरकार धर्म निरपेक्षता का दम भरती है, परन्तु जब पोप यहां आया तो उसका सबसे ज्यादा स्वागत सरकार ने किया और आज उस मुस्लिम महिला शाहबानो के विषय में उच्चतम न्यायालय ने अपना जो निर्णय दिया है सरकार उसे मिट्टी मे मिलाना चाहती है उसका प्रभाव आगे चल कर क्या पड़ेगा इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है, लेकिन कौन करे ? आर्य समाज के नेताओ के पास इतना समय नहीं कि वह इस पर विचार करें।

इसलिए जब आर्य समाज के अतीत की ओर दृष्टिपात करते हैं और वर्तमान की शिथिलता को देखते हैं तो भविष्य अत्यन्त धूमिल दिखाई देता है। किसी भी नैया को चलाने वाले उसके खेवट ही होते हैं, परन्तु यदि वही सो जाए और अपने चारों तरफ उठते हुए तूफान को न देखे तो उस नैया को डूबने से कौन बचा सकता है।

आज सारे देश के सामने अत्यन्त गम्भीर स्थिति पैदा हो रही है नई-नई समस्याए नित्य प्रति खड़ी हो रही हैं। बाहिर की शक्तियां हमारे देश मे विघटन पैदा करने का पूरा 2 प्रयास कर रही हैं। बाहिर से रुपया भी आ रहा है। शस्त्र भी आ रहे हैं स्थिति यह है कि इतना बड़ा संकट कभी भी हमारे देश के सामने न आया था जैसा आज है। ऐसे समय में क्या आर्य समाज का कोई कर्त्तव्य है या नही इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है केवल प्रधानमन्त्री के पास एक शिष्टमण्डल ले जाने से या उन्हें एक पत्र लिख देने से समस्या समाप्त नहीं हो जाती। इसलिए आर्य समाज को संगठित रूप से बैठ कर इस पर विचार करना चाहिए आज हमारे पास स्वामी श्रद्धानन्द जी नही हैं, महात्मा हंसराज जी नही हैं। लाला देवराज सोन्धी और उन जैसे दूसरे नेता नही हैं, हमारे पास कोई लाला लाजपतराय नहीं है लेकिन यह सब हमें रास्ता दिखा गए हैं, तप और त्याग का, निस्वार्थ भाव से देश और समाज की सेवा का और सब से बड़ा यह कि आर्य समाज को कुछ देना ही है उससे कुछ लेना नही है। यदि हम इन तीनो महारथियो के जीवन से कुछ सीख सकें तो जिस संकट में आज आर्य समाज फंस गया है सम्भव है उसमे से निकल सके। मेरा यह विश्वास है कि आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो इस देश को बचा सकती है। यही एक संस्था है जो पिछले एक सौ वर्षों से निस्वार्थ भावना से देश की सेवा करती चली आ रही है और यह निस्वार्थ भावना सिखाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी महात्मा हंसराज जी, लाला देवराज जी सोन्धी जैसे तपस्वी और त्यागी महामानव थे आज उन जैसा हमारे पास कोई नही है। इस लिए भी हम हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठ सकते कुछ तो करना ही होगा। क्या करें ? यही एक प्रश्न है जिस पर आर्य समाज को गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए।

—वीरेन्द्र

आर्य समाज भार्गव नगर का वार्षिकोत्सव

जालन्धर मे भार्गव नगर मे अधिकतर हमारे मेघ भाई रहते हैं और हमे इस बात पर गर्व है कि वह अधिकतर आर्य समाजी हैं आर्य समाजी भी नकली नहीं बल्कि असली हैं। उनमे आर्य समाज का प्रेम और महर्षि दयानन्द के लिए श्रद्धा कूट-कूट कर भरी हुई है। यही कारण है कि प्रत्येक वर्ष शिवरात्रि के दिन वह अपना उत्सव बड़ी धूम धाम से मनाते हैं। सारे भार्गव नगर को सजाया जाता है प्रभावशाली शोभा यात्रा वहां देखने को मिलती है। अपना लंगर भी लगाते हैं और ऋषि का गुणगान करते हुए अपने अद्वितीय उत्साह का प्रदर्शन करते हैं। पंजाब मे यदि किसी ने आर्य समाज का सक्रिय रूप देखना है तो वह जालंधर के भार्गव नगर मे दिखाई देता है। जो लोग यहां रहते हैं आर्थिक रूप से वह प्राय शिथिल होते हैं। परन्तु उनमे जो श्रद्धा है उसे देख कर हार्दिक प्रसन्नता होती है और उनकी श्रद्धा को देख कर दूसरों के दिल मे भी श्रद्धा पैदा होती है। मैं अपने इन भाइयों को अपनी ओर से और सभा की ओर से बधाई देता हूं कि वह आर्य समाज की ज्योति को सदा ही प्रज्जवलित रखते हैं। इसमे उन्हें कुछ और भी महानुभावो का सहयोग प्राप्त रहता है। विशेष कर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान पं हरवंशलाल जी शर्मा और आर्य समाज के वयोवृद्ध कार्यकर्ता श्री पं किशनचन्द जी श्री सरदारी लाल जी आर्य रत्न और पं मनोहर लाल जी तथा दूसरे महानुभाव ऋषिबोधोत्सव को भव्यशाली बनाने के लिए जो प्रयास करते हैं उसके लिए वह हमारी बधाई और धन्यवाद के पात्र है।

—वीरेन्द्र

जिला आर्य सभा लुधियाना के कार्य का संक्षिप्त विवरण

नवम्बर 1983 मे इस सभा ने अजमेर मे होने वाली महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मे सम्मिलित होने के लिए बसो आदि के प्रबन्ध मे तथा अजमेर जाने मे अपना पूरा-पूरा सहयोग दिया ।

दिसम्बर 1983 मे इस सभा की ओर से आर्य समाज किदवई नगर लुधियाना मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया । जिस मे लुधियाना की सभी समाजो की बहनो और भाईयो ने भाग लिया ।

29 फरवरी 1984 को आर्य हा सै स्कूल लुधियाना मे शिवरात्रि का महोत्सव बडी धूम-धाम से मनाया गया । जिला प्रशासक ने शोभा यात्रा निकालने की अनुमति नही दी परन्तु फिर भी कार्य क्रम बडा सफल रहा । इस कार्यक्रम की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री बीरेन्द्र जी एम ए ने की । लुधियाना की सभी समाजो तथा शिक्षण सस्थाओ के अधिकारियो का पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त रहा ।

19-8-84 को जिला आर्य सभा का वार्षिक निर्वाचन आर्य समाज दयानन्द बाजार (दाल बाजार) मे सम्पन्न हुआ । इसमे सब सम्मति से श्री महेन्द्र पाल वर्मा जी प्रधान निर्वाचित हुए और शेष अधिकारियो के मनोनीत के पूर्ण अधिकार प्रधान जी को सौप दिए गये । प्रधान जी ने प्रदत्त अधिकारो का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित अधिकारी मनोनीत किए ।

उपप्रधान	श्रीमती कमला आर्या
	डा सत्यभूषण बागिया
	श्रीमती कैलाश रानी खुल्लर
महामन्त्री	श्री आशानन्द आर्य
मन्त्री	डा मूलचन्द भारद्वाज
	श्री नन्दलाल आहूजा
प्रचार मत्री	श्रीराम प्रसाद सग्गड
कोषाध्यक्ष	श्री ओमप्रकाश पासी
उपकोषाध्यक्ष	श्री विजय कुमार सरीन

अन्तरङ्ग सदस्य —श्रीमती शान्ता गोड, श्रीमती विद्यावती, श्रीमती निर्मला बेरी श्रीमती कोशल्या दवा, सर्व श्री जगदीश चन्द्र, राजा राम कुन्दन, लाल चैंद, धर्मपाल भसीन, रामधन आर्य सत्यपाल सूद, इन्द्रजीत गुप्ता ओमप्रकाश महाजन, यशपाल, वेद प्रकाश महाजन रामरत्न सोधी, महेन्द्र पाल, ज्ञानचन्द भगत, प्रवीण कुमार, राजेश भारद्वाज ।

निर्धन बस्तियो-झुग्गी झोपडियो मे कार्यारम्भ

5-8-84 को विमुक्त जाति पजाब के प्रधान श्री हरनाम दास जौहर एडवोकेट वर्तमान एम एल. ए ने जिला सभा प्रधान को एक पत्र भेजा जिस मे निर्धन व्यक्तियों में आर्य समाज के सिद्धान्तो के प्रचार एव प्रसार के लिए प्रार्थना की गई थी । जिला सभा ने इसे सहर्ष स्वीकार किया और इन बस्तियो के निरीक्षण हेतु निम्न समिति का गठन किया ।

श्री महेन्द्र पाल वर्मा प्रधान श्री आशानन्द आर्य महामन्त्री, श्री ओमप्रकाश पासी कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार दीवान, डा मूलचन्द भारद्वाज, श्री अयोध्या प्रसाद मल्होत्रा, बहन शान्ता गौड़, श्री खुशवक्त राय सूद, श्री सत्य पाल सूद, श्री विजय कुमार सरीन तथा श्री राम प्रसाद जी सग्गड प्रचार मन्त्री ।

समिति के सदस्यो ने निरीक्षणो पराम्त निर्णय किया कि इन निर्धन बस्तियो में अवश्य कार्य करना चाहिए । श्री राजेन्द्र कुमार दीवान ने सुझाव दिया कि सर्वप्रथम इन लोगो मे चेतना उत्पत्ति हेतु विशाल स्थान पर महान यज्ञ का आयोजन किया जाए और आर्य समाज मन्दिर की स्थापना की जाए । दीवान जी के सुझाव को साकार रूप देने के लिए 23-9-84 को एक विशाल पण्डाल मे बृहत यज्ञ का आयोजन किया गया । जिस मे विमुक्त जातियो के सैकडो नर नारियो बालक बालिकाओ के अतिरिक्त एक भारी सख्या मे नगर के प्रतिष्ठित आर्य भाई बहनो ने सम्मिलित होकर समारोह की शोभा में वृद्धि की और उन विसरित निधनो का मनोबल ऊचा किया ।

इस सफलता से जिला के अधिकारियो को और भी अधिक कार्य करने के लिए प्रेरणा मिली । जिला अधिकारियो ने निश्चय किया कि इस निर्धन बस्ती के बालक तथा बालिकाओ के लिए शिक्षा प्रदान हेतु एक शैड बनवाया जाए और उस मे एक विद्यालय का प्रबन्ध किया जाए । यह के उपरान्त ही विद्यालय की आधार शिला श्री राजेन्द्र कुमार दीवान, मालिक डी सन्ज होजरी द्वारा रखी गई और अध्यापन कार्य आरम्भ करवा दिया गया ।

इसी बस्ती में 23 12 84 को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाने का निश्चय किया गया । विशाल पण्डाल मे यज्ञ का आयोजन किया गया । इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी एम ए. जिन का यह दृढ विश्वास है कि यदि हम आर्य समाज के अधूरे कार्य को पूर्ण रूप देना चाहते हैं तो हमें इन पिछडी जाति के निवासियों को ऊपर उठाने का प्रयास करना होगा । वे भी पधारे और उन दलितों के उत्थान हेतु कार्य के लिए जिला सभा अधिकारियों को बधाई दी । महामन्त्री श्री आशानन्द आर्य ने पाठशाला के लिए धन की अपील की । बहन कमला जी आर्या, महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने सभा की ओर से 1100 रु देने की घोषणा की । जिला सभा के प्रधान श्री महेन्द्र पाल वर्मा, सत्यानन्द मुञ्जाल, श्री राजेन्द्र कुमार जी दीवान ने 500-500 रु दिये । श्रीमती यशवती भल्ला, प्रिंसीपल लाल बहादुर शास्त्री स्कूल ने एक वर्ष के लिए 100 रु प्रति मास देने की घोषणा की, बहन सीता देवी जी आर्य ने 500रु दिलवाया इस के अतिरिक्त श्री महेन्द्र पाल स्याल, श्री सोहन लाल ओबराय, प्रधान आर्य समाज सराभा नगर, श्री स्वरूप नारायण बजाज प्रधान आर्य समाज माडल टाऊन, श्री खुशवक्त राय सूद, श्री अयोध्या प्रसाद मल्होत्रा, ज्ञानी गुरदयाल सिंह आर्य, महाशय चरण सिंह प्रधान आर्य समाज किदवई नगर, श्री हसराज किदवाई नगर, डा मूल चन्द भारद्वाज, श्री ओमप्रकाश पासी, श्री आशानन्द आर्य, मास्टर राम-प्रसाद, श्री शिवलाल दूटेजा, बहन तारावन्ती, बहन विद्यावती आर्य तथा आर्य समाज फील्डगज, जवाहर नगर, स्त्री आर्य समाज-स्वामी दयानन्द बाजार, स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार, स्त्री आर्य समाज माडल टाउन तथा अन्य कई बहन भाइयो ने धन द्वारा भरपूर सहायता की । डा, सत्य भूषण बागिया ने महर्षि दयानन्द के चित्र वाले कलैण्डर झुग्गी झोंपडी के निवासियों को बांटे । आर बी स्कूल आर्य समाज हबीब गंज के विद्यार्थियो ने सुन्दर गीत गाए ।

समारोह के प्रबन्ध मे डा मूल चन्द भारद्वाज धर्म पाल भसीन, अनिल कुमार आर्य महाशय चरणसिंह, श्री हसराज, श्री जगदीश चन्द आर्य आदि ने पूर्ण योगदान किया ।

(क्रमश)

लुधियाना में सीता अष्टमी का पवित्र पर्व

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना मे 3मार्च सोमवार का दोपहर अढाई बजे से 5 बजे तक 'सीता अष्टमी का त्योहार बड़ी धूम-धाम एव उत्साह भरे वातावरण मे मनाया गया । यह कार्यक्रम श्री वेद प्रकाश जी शास्त्री (माडल टाऊन) की देख रेख मे मनाया गया । विशेष यज्ञ मे स्थानीय सभा स्त्री आर्य समाजो की बहिनो ने यजमान पद से अपने आप को सुशोभित किया तथा अन्य बहिनो के साथ बढ चढ कर भाग लिया । निम्नलिखित बहिनें यजमान बनी । श्रीमती सन्तोष जी रहेजा, श्रीमती प्रकाशवती जी बैम्बी माडल टाऊन, श्रीमती सावित्री जी, श्रीमती सुदर्शन जी फील्ड गज, श्रीमती सुदेश जी श्रीमती धन देवी जी जवाहर नगर श्रीमती विद्यावती जी आर्या, श्रीमती सत्या जी सूद श्रीमती शान्ता जी बागिया, म-वि दयानन्द बाजार, श्रीमती विद्यावती जी देवगण, श्रीमती सरोज जी शाजी, स्वामी श्रद्धानन्द बाजार । सभी यजमान बहिनो को स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार की ओर से आशीर्वाद के साथ 2 आर्य साहित्य भी भेंट किया गया । सुदेश जी, सावित्री जी, श्रीमती बाला जी ने समयोचित बहुत सुन्दर भजनो से उपस्थित बहिनो को आनन्दित किया । श्रीमती शान्ता जी गौड प्रधाना महर्षि दयानन्द बाजार का प्रेरणा प्रदप्रवचन हुआ । कार्यक्रम के अन्त में श्री शास्त्री जी का सारगर्भित प्रवचन हुआ । सभी बहिनो ने खूब दान दिया । श्रीमती कमला आर्या प्रधाना समाज ने सब समाजों से पधारी हुई बहिनो का कार्यक्रम मे सहयोग देकर सफल बनाने का हार्दिक धन्यवाद किया । शान्ति पाठ के बाद हलवे के यज्ञ शेष से सब आई हुई बहिनो का सत्कार किया गया ।

—निर्मला बेरी
मन्त्री

नवांशहर में मन्त्रोचारण प्रतियोगिता समारोह

गत दिनो आर्य बाल विद्या मन्दिर नवाशहर मे एक बाल समारोह का आयोजन किया गया । इस प्रतियोगिता समारोह में आर्य बाल विद्या मन्दिर के विद्यार्थियो ने भाग लिया । समारोह के प्रारम्भ में श्री वेद प्रकाश जी सरीन द्वारा यज्ञ का सचालन किया गया तत्पश्चात् भजन व देश भक्ति के गीत भी सुनाये गए स्कूल के कुछ बच्चो ने प्रार्थना मन्त्र, आर्य समाज के नियम, शान्ति पाठ मन्त्र बहुत सुन्दर ढग से सुनाए । प्रतियोगिता के निर्णायक रजिस्ट्रार श्री धर्म प्रकाश जी दत्त तथा श्री वेद प्रकाश जी सरीन को नियुक्त किया गया । प्रतियोगिता में मन्त्र सुनाने वाले छात्र एव छात्राओ को 20-20 रुपये नकद पारितोषिक दिये गये । सभी ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया । श्री जितेन्द्र भल्ला-परिवार ने आर्य बाल विद्या मन्दिर नवाशहर को पन्द्रह हजार रुपये दान के रूप में दिए । सर्वसम्मति से स्कूल का नाम डा. आशानन्द जी की स्मृति में रख दिया गया । समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ ।

भारत सरकार से सांस्कृतिक सम्बन्ध बनाए रखने की मांग

लेखक—श्री ओंकारनाथ आर्य प्रधान

बम्बई, 22 फरवरी डरबन में पिछले दिनों हुए अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन में अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुए। इन में सबसे प्रमुख था कि दक्षिण अफ्रीकी सरकार अपने देश से एपार्थेट यानी अश्वेतों के प्रति भेदभाव तथा अन्य प्रकार के अन्यायों को तुरन्त हटाए। इसके अतिरिक्त भारत सरकार से मांग की गई है कि उसके द्वारा लगाये गए प्रतिबन्धों के कारण भारत वासियों की धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियां रुक गई हैं, उनको तुरन्त जारी करने के लिए कदम उठाए जायें।

डरबन से यहां पहुंचे हुए एक भारतीय प्रतिनिधि श्री ब्रह्मदत्त स्नातक ने इस बात की जानकारी दी। डरबन में हुआ यह विशाल सम्मेलन अत्यन्त अनूठा था और इस में भारत सरकार की अनुमति से 5 प्रतिनिधि तथा मोरिशस तथा अन्य विदेशों से 40 के लगभग प्रतिनिधि वहां पहुंचे हुए थे। इस के अतिरिक्त समूचे दक्षिण अफ्रीका से लगभग दो हजार प्रतिनिधियों ने उक्त सम्मेलन में भाग लिया। इसके अन्तिम दो दिनों का अधिवेशन पीटर मैरिट्ज बर्ग नगर में हुआ। ये दोनों ही नगर महात्मा गान्धी के कर्म क्षेत्र रहे हैं।

द अफ्रीका में सब से प्रथम पहुंचे भारतीय प्रतिनिधि ब्रह्मदत्त स्नातक को वहां के समाचार पत्रों में एक भारतीय स्वाधीनता सेनानी आगमन बता कर दक्षिण अफ्रीका की जनता को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष में जुटने की प्रेरणा दी गई थी। इस सम्मेलन के सभापति प्रयाग के स्वामी सत्यप्रकाश जी थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर एक विशाल सूचना केन्द्र एवं पुस्तकालय का उद्घाटन पत्रकार ब्रह्मदत्त स्नातक ने किया।

डरबन का यह सम्मेलन दिल्ली की सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में हुआ था। महत्वपूर्ण बात यह थी कि इस अवसर पर द. अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा की हीरक जयन्ती भी मनाई गई। इतिहास में पहली बार डरबन में श्वेत मेयर साहब ने सम्मेलन के प्रतिनिधियों को सिटी हाल में बुला कर सार्वजनिक स्वागत किया और प्रीतिभोज दिया। दक्षिण अफ्रीका की सरकार से एपार्थेट को हटाने का प्रस्ताव वहां के प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री विद्युपाल रामबरोस ने प्रस्तुत किया और अनुमोदन श्री त्यागी ने किया। सम्मेलन के अवसर पर ओ३म् ध्वजा फहराने का कार्य मारिशस के वृद्ध आर्य नेता श्री मोहन लाल मोहित के हाथों हुआ, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इससे पूर्व लन्डन, पोर्ट, लुई (मारिशस) और नैरोबी (कीनिया) में हो चुके हैं। इस अवसर पर डरबन की वैस्ट बिल यूनिवर्सिटी में संस्कृत पर एक विचारपूर्ण गोष्ठी हुई जिसका शुभारम्भ प्रो. ग्रेलिंग वाइस चासलर ने किया। दर्शन एवं सस्कृत विभाग के अध्यक्ष जर्मन प्रो जेनन वर्ग तथा प्रो. रामविलास के भाषणों के अतिरिक्त भारत के श्री ब्रह्मदत्त स्नातक ने संस्कृत की आज के संदर्भ में उपयोगिता पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। इस अवसर पर दो मील लम्बा मोटरो का जलूस और झांकियां भी निकाली गई।

दक्षिण अफ्रीका में मुसलमान और ईसाइयों की सांस्कृतिक और धार्मिक अवश्यकताएं जैसे-प्रचारकों और अन्यो शिक्षकों को बुलाना और धार्मिक साहित्य को वहां भेजना हिन्दुस्तान के अतिरिक्त पाकिस्तान और खाड़ी देशों से और अमेरिका से पूरी हो जाती हैं। परन्तु भारत के अलावा और कोई देश दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुओं की सांस्कृतिक और धार्मिक आवश्यकताएं पूरी नहीं कर सकता। स्मरणीय है भारत से बाहर दक्षिण अफ्रीका में सबसे अधिक भारतवासी दस लाख रहते हैं। वहां पर हिन्दी तमिल, गुजराती भाषाओं के शिक्षकों और पाठ्य पुस्तकों की बड़ी कमी महसूस की जा रही है। और भारत द्वारा लगाए गए प्रतिबन्ध उसमें बाधक बने हुए हैं। इन सभी बातों ने इस सम्मेलन में एक स्वर से भारत सरकार से सहायता करने का अनुरोध किया है। मारिशस के मोहनलाल मोहित ने एक प्रस्ताव द्वारा मारिशस के नागरिकों को बिना वीसा की औपचारिकता के उन्हें भारत में प्रवेश की सुविधा देने के लिए अनुरोध किया। इसे सयोग माना जाए अथवा सम्मेलन की आवाज की सफलता मानी जाए कि इन प्रस्तावों के स्वीकृत होने के अगले मास ही दक्षिण अफ्रीका के प्रेसिडेन्ट बोथा ने अपनी राष्ट्रीय पार्लियामेंट के 31 जनवरी को दिए उद्घाटन भाषण में एपार्थेट की असंगतता को पहली बार सार्वजनिक रूप में स्वीकार किया और भेदभाव के कानूनों को निरस्त करने की योजना की घोषणा की है। क्योंकि 30 जनवरी गांधी जी का बलिदान दिवस था और दक्षिण अफ्रीका गांधी जी की पहली कर्मस्थली रही है (1892-1913 तक) हमें ऐसा लगा कि उनकी आत्मा ने बोथा के मुंह से मानो रावण के मुंह से राम कहलवा दिया।

रजिस्ट्रेशन आफ न्यूज पेपर सेंट्रल रूल 1965 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण ब्यौरा— फार्म न. 4 (रूल न, 8)

साप्ताहिक आर्य मर्यादा जालन्धर,

1.	प्रकाशक का स्थान	———जालन्धर
2,	प्रकाशन क्रम	———साप्ताहिक
3.	मुद्रक का नाम	———वीरेन्द्र एम ए
	राष्ट्रीयता	———भारतीय
	पता	———साप्ताहिक आर्य मर्यादा द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर।
4	प्रकाशक का नाम	———वीरेन्द्र एम. ए.
	राष्ट्रीयता	———भारतीय
	पता	———साप्ताहिक आर्य मर्यादा, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब जालन्धर।
	सम्पादक का नाम	———वीरेन्द्र एम, ए.
	राष्ट्रीयता	———भारतीय
	पता	———द्वारा साप्ताहिक आर्य मर्यादा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, जालन्धर।
6.	उन व्यक्तियो के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुर जालन्धर

मैं वीरेन्द्र एम, ए. एतद् द्वारा घोषित करता हू कि मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह —वीरेन्द्र
प्रकाशक
हिन्दी साप्ताहिक आर्य मर्यादा
जालन्धर।

नवांशहर के विद्यार्थी श्री योगरमन सरीन पुरस्कृत

आर्य समाज नवाशहर के प्रधान श्री वेद प्रकाश जी सरीन के पौत्र श्री योगरमन सरीन गत वर्ष की मैट्रिक परीक्षा में समस्त पजाब में सर्व प्रथम रहे थे। मल्होत्रा बुक डिपो ने श्री योगरमन सरीन को अपनी ओर से पुरस्कार के रूप में साईकल प्रदान किया तथा उनके सम्मान में जालन्धर के स्काईलार्क होटल में एक सहभोज दिया गया। इस सम्मान समारोह में श्री प्रि ए. एल. मल्हन, प्रिंसिपल भवन, तथा श्री प्रि. हरबन्सलाल तनेजा ने श्री योगरमन सरीन को आशीर्वाद दिया।

यह कार्यक्रम बड़ा सफल रहा सभी आए हुए सज्जनो ने योगरमन जी की सराहना की।

धर्म शिक्षा परीक्षा परिणाम

आर्य विद्या परिषद् पंजाब के तत्वावधान मे सम्पन्न हुई धर्म शिक्षा परीक्षाओ मे उत्तीर्ण होने वाले परीक्षार्थियो के रोल नम्बर नीचे दिए जा रहे है। इस बार धर्म प्रवेशिका का परिणाम 70.41 प्रतिशत, धर्माधिकारी परीक्षा का परिणाम 63 06 प्रतिशत तथा धर्म ज्ञानी परीक्षा का परिणाम 74 51 प्रतिशत रहा है। तीनो परीक्षाओ मे सर्व प्रथम, द्वितीय एव तृतीय आने वाले परीक्षार्थियों का विवरण निम्न प्रकार है —

धर्म प्रवेशिका परीक्षा

स्थान	रोल न	नाम परीक्षार्थी एव विद्यालय	प्राप्तांक
प्रथम	1073	कु पूनम सुपुत्री श्री जनकराज, आर्य बाल विद्या मन्दिर, नवांशहर	72
द्वितीय	1442	कु मनीषा सुपुत्री श्री नन्दलाल आर्य माडल स्कूल मोगा।	71
तृतीय	1262	शान्ति देवी सुपुत्री श्री शिवनाथ वर्मा आर्य कन्या विद्यालय, खरड़	70

धर्माधिकारी परीक्षा

स्थान	रोल न	नाम परीक्षार्थी एव विद्यालय	प्राप्तांक
प्रथम	2580	अमृतपालसिंह सुपुत्र श्री रणजीतसिंह द्वारा आर्य हा. सै. स्कूल, नवांशहर	116
द्वितीय	2195	कु. कुलविन्दर सुपुत्री श्री गुरदयालसिंह वैदिक गर्ल्ज हाई स्कूल मनीमाजरा	114
तृतीय	2588	कु डिम्पल सुपुत्री श्री विश्वामित्र आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल बटाला	113

धर्मज्ञानी परीक्षा

स्थान	रोल न	नाम परीक्षार्थी एव विद्यालय	प्राप्तांक
प्रथम	3632	गुरजीत सुपुत्री श्री इन्द्र सिंह देवराज गर्ल्ज हा सै स्कूल, जालन्धर	111
द्वितीय	3850	मीनू अग्रवाल, सुपुत्री श्री बी के. अग्रवाल के एल. आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल, जालन्धर छावनी	110
तृतीय	4098	आरती सुपुत्री श्री लौहरीमल आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल बटाला	109

धर्म प्रवेशिका परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी

501 से 506, 8 से 16, 18 से 22, 24, 28 से 33, 35, 37, 38 40 से 57, 59 से 64, 66 68 से 74, 576 से 616, 18 से 22, 24 से 34, 36 से 48, 50 से 53 56 से 70, 672 से 702, 4 से 10, 12, 14 से 28, 30 से 48, 50 से 59, 62, 63, 65, 66, 77, 79 से 97, 99 से 805, 11 से 14, 16, 18 से 25 28 से 34, 37 से 40 42 से 53, 55, से 60, 63 से 65, 67 69 71 से 74, 76 से 78, 882 से 925, 28, 31 से 33, 36 से 41, 44 से 46 49, 51 से 53, 56, 57, 59, 63, 66, 69 से 72, 75, 76, 78, 80 से 84, 86 से 93, 996 से 1004, 6 से 11, 13 से 19, 21 से 23, 25 से 30, 32 से 34, 36 से 41, 43, 44, 46 47, 49 से 52, 54 से 56, 59से 76,78 से 82, 84, 86 से 91, 95, 97 से 99, 1103, 4 6 8 से 12, 15 से 17, 19 से 31, 33, 34, 37 से 39, 42, 46 48 से 51, 54, 55, 58, 59, 61, 62 68 से 70, 72 से 83, 86 से 95, 1197 से 1207, 11, 13, 15 से 18, 21 से 78, 80 से 84, 86 से 95, 97, 98, 1300, 3 से 10, 12 से 17, 19 से 35, 37 से 39, 41 से 43, 45 से 54, 57 से 63, 65 से 73, 92, 1406, 11, 12, 14 से 20, 22 से 25, 27 से 37, 39 से 67, 69, 71, 72, 74, 75, 77 से 80, 82 से 85, 87, 88, 90 से 96, 1499 से 1505, 7 से 20 तक।

धर्माधिकारी परीक्षा मे उत्तीर्ण परीक्षार्थी

2001 से 26, 29 से 44, 46, 47, 49 से 64, 66, 68 से 71, 73 से 79, 81 से 83, 85, 86, 89 से 95 2097 से 2101, 3, 4, 6. 11 से 18, 20 से 44, 46, 48 से 60, 62 से 66, 68 से 76, 80 से 82, 84, 85, 87, 88, 90 से 2252, 56, 58 से 61, 63, 67 से 72, 74, 76 से 78, 82 से 87, 89 से 91, 94, 95, 97 से 2301, 3 से 10, 12, 13, 15, 16, 23 से 26, 28, 29, 32 से 36, 38, 40, 42, 45 से 47, 49 से 52, 56 से 58, 61 से 89, 91, 93, 94, 97, 98, 2400, 1, 3 से 5, 8 से 10, 13, 15, 16, 18, 19, 23, 25, 26, 28, 30, 32, 34 से 38, 40, 42 से 47, 49 से 52, 56, 60 से 64, 66 से 73, 75 से 77, 8 से 82, 84, 86, 88, 95, से 97, 99, 2501, 3 से 7, 9, 10, 12 से 30, 32 से 50, 52, 53, 55, 59 से 61, 63, 66, 67, 69 से 71, 74 से 93, 95 से 2607, 9 से 22, 25 से 30, 32 से 38, 41, 43, 44, 49, 50, 55 से 60, 62 से 64, 66 से 71, 74 से 78, 80, 82 से 84, 86, 87, 89, 92 से 95, 2709, 34, 39, 50, 54 से 56, 68, 83, 2876 से 2904, 6 से 9, 19 से 21, 23 से 25, 27 से 30 तक।

धर्मज्ञानी परीक्षा मे उत्तीर्ण परीक्षार्थी

3501 से 7, 9 से 18, 21 से 28, 30 से 55, 58 से 62, 64 से 69, 71 से 73, 93 से 3627, 29 से 60, 62 से 81, 83 से 85, 87 से 96, 98 से 3709, 11, 12, 14, 16 से 21, 23 से 29, 31, 32, 36 से 40, 48, 49, 53, 55, 57 से 66, 68 से 79, 81 से 85, 87 से 3831, 33 से 80, 82, 83, 85 से 90, 92 से 96, 98 से 3913, 17, 19 से 39, 41 से 43, 45, 46, 49 से 54, 57 से 73, 77, 80 से 85, 87 से 4006, 8, 10 से 13, 15 से 21, 23 से 33 35 से 45, 47 से 65, 68 से 94, 96 से 4107, 13 से 15, 22 से 24, 46, 47, 62, 65, 67, 73, 74, 82, 83, 87, 90, 92, 4214, 17, 18, 21, 23, 24, 26, 29 से 31, 34, 36, 39 से 46, 50 से 54, 60 से 64, 67, 68।

समस्त परीक्षाओं मे सर्व प्रथम, द्वितीय व तृतीय आए परीक्षार्थियो को माता शामा देवी स्थिर पारितोषिक निधि से नकद पारितोषिक दिया जाएगा।

—धर्मप्रकाश दत्त (रजिस्ट्रार)
आर्य विद्या परिषद् पंजाब, (रजि.)

नवांशहर में वार्षिक खेल-कूद समारोह

27-28 फरवरी 86 को बी एस. एम. गर्ल्ज कालेज नवांशहर में वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के प्रारम्भ में श्री वेद प्रकाश जी सरीन द्वारा यज्ञ का संचालन किया गया। श्री प. देवेन्द्र कुमार जी ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री वेद प्रकाश जी सरीन ने परेड की सलामी ली। रजिस्ट्रार श्री धर्म प्रकाश दत्त ने समारोह में अपने ओजस्वी विचार प्रदान किए। जिला खाद्य एव आपूर्ति अधिकारी श्री गुजराल जी मुख्य अतिथि के रूप में समारोह में शामिल हुए, श्री गुजराल जी ने अपनी ओर से कालेज को 2100 रुपये दान के रूप में प्रदान किए। प्रबन्ध समिति के अधिकारियों तथा प्रिंसिपल श्रीमती नीलम गोयल ने मुख्य अतिथि का हार्दिक धन्यवाद किया।

मनुस्मृति पर एक दृष्टि

लेखक—प्रा. श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य होशियारपुर

भारतीय साहित्य में स्मृति शास्त्र अपना विशेष स्थान रखता है। स्मृतियों में अपने समय की सामाजिक व्यवस्था का सुन्दर चित्रण है। इस दृष्टि से स्मृति ग्रन्थों को समाज शास्त्र या अपने समय के संविधान कहना अधिक उचित होगा, क्योंकि इन में व्यक्ति के वैयक्तिक जीवन (ब्रह्मचर्य-गृहस्थ-वानप्रस्थ-संन्यास आश्रम) और सामाजिक जीवन (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र वर्णों) के विविध पहलुओं का सर्वांगीण कार्यक्रम दर्शाया गया है। अत: मनु को प्रथम राजा के साथ प्रथम समाज शास्त्री कहना भी उतना ही उचित होगा। वैसे राजा का मुख्य कार्य समाज की व्यवस्था को सुव्यवस्थित रूप देना है।

स्मृतियों में प्राचीनता और वेदों के अधिक निकट होने के कारण भारतीय साहित्य में मनुस्मृति सर्वमान्य एवं प्रामाण्य है। मनुस्मृति के अनेक स्थलों से स्वत: स्पष्ट होता है कि मनु के मूल उपदेश को सम्पादित करके भृगु ने मनुस्मृति के रूप में प्रस्तुत किया है।

मनुस्मृति के बारह अध्यायो में 2695 श्लोक हैं। जिस के पहले अध्याय में संसार की उत्पत्ति का क्रम दूसरे में धर्म, संस्कार और ब्रह्मचारी की दिनचर्या एवं जीवन चर्या है। तीसरे में विवाह उस के प्रकार पञ्चमहायज्ञ और श्राद्ध का वर्णन है। चतुर्थ में आजीविका (विप्र) स्नातक की दिनचर्या, पचम में भक्ष्य-अभक्ष्य पदार्थ विचार, पवित्रता की व्यवस्था, व्यवहार्थ पदार्थों की शुद्धि के ढग और स्त्रियों के कर्तव्य बताए हैं। षष्ठ में वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम का वर्णन है। सप्तम में कार्यपालिका की दृष्टि से राज्य प्रशासन का, अष्टम में न्यायपालिका की दृष्टि से अठारह प्रकार के झगड़ो के निपटारों, गवाहों की स्थिति और नवम मे पति-पत्नी, सम्पत्ति के बंटवारे के विवाद उत्तराधिकार, जुए और राज्य प्रबन्ध के के बाधक तत्वों को ठिकाने लगाने का विचार है। दशम में वैश्य-शूद्र के व्यवहारों, आपत्संकटों की व्यवस्था तथा सब के आपद धर्मों का निर्देश है। ग्यारहवें में पश्चातापों और बारहवें में तीन प्रकार के कर्मों तथा उन से प्राप्त मृत्यु के बाद की स्थिति, मोक्ष और कर्मों के गुण-दोषों का विचार है। इस प्रकार मनुस्मृति के बारह अध्यायो में मानव जीवन के ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमों तथा ब्राह्मण-क्षत्रिय वैश्य शूद्र एव वर्णसंकर (सामाजिक वर्गों) सदृश विविध पहलुओ और पक्षों के कर्तव्यो, स्वरूपो तथा तत्सम्बद्ध विषयो का विस्तार से वर्णन हैं। विशेषता राज (क्षत्रिय) धर्म के कार्यपालिका (7 अ.) और न्यायपालिका (8-9 अ) विभागो का प्रतिपादन है।

स्मृतियो की अनेकता और उनके वस्तु वर्णन से स्पष्ट होता है कि इन मे स्व. युगानुरूप सामाजिक व्यवस्थाओ तथा रीति रिवाजो का चित्रण किया गया है। उस समय की स्थिति के ज्ञानार्थ इन का महत्व होते हुए भी कई अंशों मे आधुनिक जीवन की दृष्टि मे युग बाह्य है। कई स्थानों मे तो बहुत ही अन्यायपूर्ण तथा अनुपयुक्त सामाजिक वर्णन प्राप्त होता है। पुनरपि मानवता और जीवन विकास की भावना की समानता के कारण इन में मानव जीवन के अनेक शाश्वत मूल्यों का सात्विक वर्णन प्राप्त होता है। जो कि सार्वकालिक एव सार्वभौम होने से हर युग के के लिए सजीव है।

ग्राम—पुल सुधार (लुधियाना) में आर्य समाज की स्थापना

गत दिनों आर्य समाज रायकोट की अध्यक्षता में स्वामी प्रेम भिक्षु जी जगीर वाले ने ग्राम पुल सुधार में श्री महेन्द्रसिंह जी के निवास स्थान पर "आर्य समाज' पुल सुधार की स्थापना की। जिसके सदस्य निम्नलिखित हैं।

प्रधान—श्री धर्मचन्द बांसल, उपप्रधान—श्री तरसेम लाल जी, मन्त्री—श्री महेन्द्र सिंह जी, उपमन्त्री—श्रीमती रानी देवी, कोषाध्यक्ष—श्री ओ३म् प्रकाश जी, उपकोषाध्यक्ष—श्री जयसिंह जी, सलाहकार—श्री सुरजीत सिंह जी, मैम्बर—श्री शान्ति स्वरूप जी, श्री बूलाराम जी, श्री सुरेन्द्र सिंह जी, श्री उत्तमसिंह जी, श्रीमती गुड्डी देवी जी, श्रीमती शकुन्तला देवी जी, श्रीमती मुन्ना देवी जी, श्रीमती बीना देवी जी, श्रीमती उषा देवी जी, श्री कुन्दनमायक जी।

कुछ किए बिना जज-जय कार नहीं होती

संकलनकर्ता—श्री सत्यनारायण लाहौटी सुजानगढ़,

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दिवारो पर, सौ बार फिसलती है।

मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।

आखिर उसकी मेहनत बेकार नही होती,
कोशिश करने वालो की हार नही होती,

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है।
जा जाकर खाली हाथ लौट कर आता है।

मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में।
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी मे।

मुठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नही होती।

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो,
क्या कमी रह गयी,देखो और सुधार करो।

जब तक न सफल हो, नींद चैन की त्यागो तुम,
सघर्षों का मैदान छोड, मत भागो तुम।

कुछ किये बिना ही जय जयकार नही होती,
कोशिश करने वालो की हार नहीं होती।

पूज्य माता श्यामा देवी जी का स्वर्गवास

पूज्य माता श्यामा देवी जी जिन की प्रेरणा से और दान से आर्य समाज मन्दिर जगाधरी वर्कशाप(जिला अम्बाला)का निर्माण हुआ उनका गत दिनों स्वर्गवास हो गया है। सारा जीवन वेदानुकूल व्यतीत करते हुए अपनी पवित्र कमाई मे से सभी वैदिक धर्म शिक्षा सस्थाओ और अनाथालयो को दान करती रही हैं। आर्य समाज और वैदिक धर्म के प्रचार मे जीवन भर तन-मन और धन से सेवा करती रही हैं। उनका जीवन सारे आर्य जगत् के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। उनकी मृत्यु से जो स्थान रिक्त हुआ उसका पूरा होना असम्भव प्रतीत होता है। उनकी अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से प. यज्ञदत्त जी शास्त्री वैदिक साधन आश्रम यमुना नगर एवम् प. देव व्रत जी शास्त्री आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने 14-1-86 को कराया। उनकी शव यात्रा मे जगाधरी वर्कशाप यमुना नगर, जगाधरी के नर-नारियो ने सैंकडो की गिनती मे भाग लिया जो कि उनके स्नेह और मिलवर्तन का जीता जागता उदाहरण है। अपनी चल और अचल सम्पत्ति के लिए श्यामा देवी धार्मिक एवम् धर्मार्थ ट्रस्ट बना कर छोड़ गई हैं। जिसके द्वारा विधवा अनाथो की सहायता और वेद प्रचार का कार्य चलता रहेगा। उनके इस पवित्र कार्य से उनका नाम अमर रहेगा।

—केशोराम—मन्त्री
आर्य समाज जगाधरी वर्कशाप

स्त्री आर्य समाज गोविन्द गढ़ जालन्धर का उत्सव सम्पन्न

स्त्री आयसमाज गोविन्दगढ का वार्षिको त्सव 3फरवरी86 से9फरवरी तक मनाया गया। 'सामवद शतक' यज्ञ 3 फरवरी से प्रारम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा श्री अज नदेव, सरवन सिह जी (दीनानगर) ने यज्ञ बड अच्छे ढग से स प न कराय। 8 फरवरी शनिवार का हिला सम्मलन बहन श्रीमती कमला जी आर्या, सभा महामन्त्री जी की अध्यक्षता म सम्पन्न हुआ। इस मे प्रा लक्ष्मी कान्ता चावला (अमृतसर) मान्य सुषमा जी यति सन्या सिन (जम्मू) प आमप्रकाश जी ठाय प सालिगराम जी पराशर मा श्रीकान्त जी आप्टे (आदर्श नगर) श्री नरेश कुमार जी शास्त्री (करतारपुर) मा श्री सोहन लाल जी कालरा श्रीमती श [illegible] गौड लुधियाना ने भाग लिया। भजन श्री श्रीराम सभा भजन पदेशक जाल धर एव विजयानन्द पार्टी (फीरोजपुर) के हुए 9 फरवरी रविवार प्रात 10 बजे पर्णाहुति के पश्चात यजमानो को आशी-र्वाद स्वामी सत्यानन्द जी दयानन्द मठ ढन मुहल्ला द्वारा दिया गया। ध्वजा-रोहण प श्री हरबस लाल जी शर्मा प्रसिद्ध उद्योगपति दानवीर के कर-कमलो द्वारा किया गया। आर्य समाज मन्दिर मुहल्ला गोबिन्द गढ मे नि शुल्क सिलाई स्कूल का उदघाटन शर्मा जी ने ही किया। ऋषि लगर का प्रबन्ध भी प हरबस लाल जी ने ही किया। ध्वज गीत गोबिन्द गढ हाई स्कूल के बच्चो द्वारा हुआ। श्री बूटाराम जी एव गुरु विरजानन्द स्मारक करतारपुर के छात्रो का कार्यक्रम सुपर्णायति जी प्रो राम अवतार जी एव अन्य विद्वानों के प्रवचन हुए। मध्यान्ह राष्ट एकता सम्मेलन बहन श्रीमती कमला जी आर्या सभा महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

उपस्थिति आशाजनक रही। उत्सव प्रत्येक प्रकार से सफल रहा। इस के पश्चात बसन्त पचमी 13 फरवरी का आर्य समाज मु, गोबिन्द गढ मे बड उत्साह पूवक मनाई गई।

—कृष्णा कोछड़
मन्त्री

शोक समाचार

आय समाज मन्दिर सैजपुर (अहमदाबाद) के सुयोग्य पुरोहित वेदो के विद्वान् और पुराने उपदेशक श्री प विजय कुमार जी त्यागी का दिनाक 16-2 86 (रविवार) को देहावसान हो गया। उनकी अन्त्येष्ठि पूर्ण वैदिक रीति से भारी सख्या मे उपस्थित आर्यों के द्वारा सम्पन्न हुई। शोक सभा दिनाक 23-2 86 को रखी गई जिसमे अनेक आर्यों ने श्रद्धाजलि अर्पित की।

—हरिलाल मन्त्री

विश्व वेद परिषद् चण्डीगढ़ का चुनाव

विश्व वद परिषद चण्डीगढ का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हो गया। पजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ मे महर्षि दयानन्द चेयर के मुख्य अधिष्ठाता डा भवानी लाल भारतीय को सर्व सम्मति से पुन प्रधान निर्वाचित कर दिया गया। उन को शेष पद अधिकारी तथा अन्तरग सदस्य मनोनीत करने का अधिकार दिया गया। इस अवसर पर वेदो के विद्वान प आशुराम आर्य ने वेद प्रचार, राष्ट्रीय एकता तथा साम्प्रदायिक एकता बनाए रखने मे मिल जुल कर काय करने की आवश्यकता पर बल दिया।

—ओमप्रकाश महिन्द्रू मोरिण्डा



श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा नवहिन्द प्रिंटिंग प्रैस नेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. न. पो.जे.एल. 5

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जलंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 47, 10 चैत्र सम्वत् 2042 तदनुसार 23 मार्च 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

मैंने ब्रह्म रूपी सोमरस का पान किया है

लेखक—स्वामी श्री जगदीश्वरानन्द सरस्वती

उन्मा पीता अयंसत रथमश्वा इवाशवः।
कुवित्सोमस्यापामिति ॥—ऋ. 10।119।3

शब्दार्थ (पीताः) मेरे द्वारा पान किये गये ये सोमबिन्दु, सोमकण (मा) मुझे (उत् अयंसत) ऊपर उठाये, उड़ाये लिए जा रहे हैं, (इव) जैसे (आशवः) शीघ्रगामी (अश्वाः) घोड़े (रथम्) रथ को तेजी से ले जाते हैं (इति) क्योंकि मैंने (सोमस्य) सोमरस का (कुवित् अपाम्) बारम्बार, प्रचुर मात्रा में पान किया है।

व्याख्या-मैंने ब्रह्मरूपी सोम का पान किया है, बारम्बार पान किया है। जैसे गोताखोर समुद्र में डुबकी लगाता है, फिर ऊपर आ जाता है, फिर डुबकी लगाता है, इसी प्रकार मैंने भी बारम्बार ब्रह्म के आनन्द सरोवर में डुबकियां लगाई हैं। मैंने अपने हृदय रूपी प्याले में इस सोम का इतना पान किया है कि मेरे जीवन का कण-कण, रक्त की एक-एक बिन्दु सोम से सराबोर हो गई है। इस सोमपान से मेरे जीवन में एक अद्भुत मस्ती और मादकता समा गई है। इस सोम के पान करके मैं शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक शक्तियों से समलङ्कृत हो गया हूं।

हमारा शरीर एक रथ है। उपनिषद् के ऋषि ने कहा—

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ॥
इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥ —कठोप. 3।3।4

मानव शरीर एक रथ है। आत्मा इस रथ का अधिपति (सवार) है। बुद्धि इस शरीररूपी रथ को चलाने वाला सारथि है और मन रास—रस्सी अथवा लगाम है। इस शरीररूप रथ मे इन्द्रियों को घोड़े कहते हैं, इन्द्रियों के विषय रूप रस, गन्धादि वे मार्ग हैं जिन पर इन्द्रिय रूपी घोड़े दौड़ते हैं। मनीषी लोगों का कथन है कि आत्मा, इन्द्रिय और मन—ये तीन मिलकर जब कोई कार्य करते हैं, तब मनुष्य भोक्ता कहलाता है।

भोगों में पड़कर मेरा जीवन रथ संसार की दौड में पीछे पड़ गया था। अब मेरे द्वारा पीये गये सोमकण मेरे जीवन रथ को उसी प्रकार आगे और आगे उड़ाये लिए जा रहे हैं जैसे रथ में जुते हुए शीघ्रगामी घोडे रथ को उड़ाये लिये चले जाते हैं।

उप मा मतिरस्थित वाश्रा पुत्रमिव प्रियम्।
कुवित्सोमस्यापामिति।—10।119।4

शब्दार्थ—जैसे (वाश्रा) ममतामयी माता (प्रियम्, पुत्रम् इव) अपने प्रिय पुत्र को प्राप्त होती है, उसे दौड कर गोद में उठा लेती है अथवा जैसे रम्भाती हुई गौएं अपने बछड़े के पास पहुंच जाती हैं, उसी प्रकार अब (मा) मुझे (मतिः) बुद्धि, प्रज्ञालोक (उप+अस्थित) प्राप्त हो गया है (इति) क्योंकि मैंने (सोमस्य) सोमरस का (कुवित् अपाम्) डटकर पान किया है।

व्याख्या—बुद्धि की महिमा महान् है। 'बुद्धिर्यस्य बलं तस्य'—जिसके पास बुद्धि है, उसके पास बल है। बुद्धि के द्वारा मनुष्य अद्भुत कार्य कर डालता है। विषय के स्पष्टीकरण के लिए एक घटना का उल्लेख करता हूं। अकबर बीरबल को बहुत प्रेम करता था। क्यों? उसकी बुद्धि के कारण। एक दिन अकबर ने बीरबल को कहीं जाने का आदेश दिया। बीरबल अपने स्थान से उठ गये। थोड़ी देर में अकबर की दृष्टि गई तो उन्होंने देखा बीरबल अभी गया नहीं दरबार में ही है। उसने कहा तुम जाते क्यों नहीं? क्या समस्या है? बीरबल बोला—"महाराज! मेरे जूते नहीं मिल रहे हैं।" अकबर ने कहा—"इन्हें हमारी ओर से दो जूते दे दो।" यह सुनकर दरबारी तो हंस पड़े और बीरबल तो लज्जित हो गए। नौकर ने जूते लाकर उन्हें पहना दिये। जूते पहनकर बीरबल ने कहा—"महाराज! इन दो जूतो के बदले भगवान आपको स्वर्ग में हजारों जूते प्रदान करे।" यह सुन कर महाराज और सारे दरबारी लज्जित हो गये।

संसार के विषय-भोगो में फंसकर मेरी बुद्धि मारी गई थी। बुद्धि के अभाव में मैं खोटे रास्ते पर चल कर नाना प्रकार के दुःख उठाता था, परन्तु जब मैंने सोमपान किया तब योगदर्शन के शब्दों में—

ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा।—यो. 1।48

सोम पान से मेरी बुद्धि ऋतम्भरा बन गई है। कुबुद्धि, बुद्धि और सुबुद्धि से भी ऊंचा उठकर मैं ऋतम्भरा का स्वामी बन गया हूं।

जैसे ममतामयी माता अपने बच्चे के रोने, गिरने या चिल्लाने की आवाज सुन कर दौडती हुई बच्चे के पास पहुंच जाती है और उसे गोद में उठा लेती है अथवा जैसे रम्भाती हुई गौ जगल से दौड कर आती हुई अपने बछड़े के समीप पहुंच जाती है, उसी प्रकार अब मेरा तृतीय नेत्र (ज्ञाननेत्र) खुल गया है। मुझे बुद्धि प्राप्त हो गई है। इस प्रज्ञालोक में मैं ऐसे अद्भुत कार्य करूंगा कि मानव समाज चमत्कृत हो जाएगा। इस बुद्धि के द्वारा मैं द्वेष का दमन करूंगा और मानव समाज के चरित्र का उत्थान कर उसे उन्नति के शिखर पर पहुंचाऊंगा। मानव कल्याण के नये-नये आविष्कार करूंगा। मैं बुद्धि के द्वारा दानवों को मानवों को देव बना दूंगा।

अहं तष्टेव वन्धुरं पर्यचामि हृदा मतिम्।
कुवित्सोमस्यापामिति ॥
ऋ. 10।119।5

शब्दार्थ—(इव) जैसे (तष्टा) बढ़ई, कुशल कारीगर टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ियों को छील-छील कर (वन्धुरम्) उन्हें सुन्दर रूप प्रदान करता है, वैसे ही (अहम्) मैं (हृदा) हृदय से, पूर्ण मनोयोग के साथ (मतिम्) अपनी बुद्धि को, उससे बुराइयों को छील-छील कर (परि अचामि) सुन्दर बनाता हूं (इति) क्योंकि मैंने सोमस्य ब्रह्म सोम का, प्रभु भक्ति के आनन्द का (कुवित्) बहुत अधिक (अपाम्) पान कर लिया है।

व्याख्या—कुशल बढ़ई, तरखान टेढ़ी-मेढ़ी और कुबडी-कुबडी लकड़ियों पर रंदा लगा-लगाकर, उन्हें छीलकर, उन पर पालिश करके उन्हें सुन्दर रूप प्रदान करता है। जिस लकडी को लेने को तो क्या कोई देखने को भी तैयार नहीं था, कुशल कारीगर ने अपनी कला से उन्हें खिलौनो का ऐसा सुन्दर रूप दिया, ऐसे-ऐसे खिलौने बनाये कि बच्चे ही क्या बूढ़ों का मन भी मुग्ध हो गया।

मैंने भी सोमपान किया है और डट कर सोमपान किया है, अतः अब मैं भी मैं अत्यन्त मनोयोग के साथ अपनी बुद्धि को उसकी बुराइयो को छील-छीलकर उसे सुन्दर बना रहा हूं। मैं अमति, कुमति, विमति और दुर्गति को दूर कर उसे सुमति बनाने का प्रयत्न कर रहा हूं। मैं अपनी बुद्धि में कालुष्य नहीं रहने दूंगा। जब दूषित विचार, कुभावनाएं और कुवासनाएं मेरी मति (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) में आने लगते हैं तो मैं उन्हें ललकार कर कहता हूं—

(शेष पृष्ठ 5 पर)

जन्म-मरण की उलझन—5

पारस्परिक सम्बन्धों का आधार

लेखक—प्रा. श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य (होशियारपुर)

विद्यार्थियों की परीक्षायें पूर्ण हो गई हैं और वे परिणाम की प्रतीक्षा में अवकाश का आनन्द ले रहे हैं। पिछले दिनों की थकावट दूर करते हुए पिछली नींद पूरी करने में लगे हुए हैं। इन से भी अधिक माता-पिता प्रसन्न हैं, चलो, बच्चो का सारा साल तो बच गया, केवल दो मास का ही विलम्ब हुआ है। कई बार सुधार के लिए कष्ट सहन और कुछ बलिदान करना आवश्यक हो जाता है। जैसे कि किसी गली में नाली और सड़क बनाई जाती है, तो पहले खुदाई के कारण गढ़े पड जाते हैं, अत: आने-जाने में कुछ कष्ट होता ही है। गन्दगी हटाने के बाद ही सफाई होती है। इस प्रसन्नता के वातावरण में युवक-युवतियों के झुण्ड भी आज आश्रम में आए हुए हैं।

विशाल और विकास अपनी मित्र मण्डली के साथ भ्रमण के लिए चले, जब एक बाजार में अभी थोड़ी दूर ही गए थे, तब अनुराग ने कहा बाजारों में तो हम रोज घूमते ही रहते हैं। आज कहीं निराली जगह चलना चाहिए तभी अनुरोध ने अनुरोध किया, तो फिर बाई-पास की ओर चलो। बातें करती-करती मित्र मण्डली सेवा आश्रम में प्रविष्ट हुई। कुछ देर आश्रम में घूमने के बाद मनुदेव ने कहा—यहा सफाई और व्यवस्था बहुत सुन्दर है। यहा के प्रबन्धक सामाजिक व्यक्ति प्रतीत होते हैं, अन्यथा अध्यात्म के नाम पर ऐसो की हर बात ही अव्य-वस्थित होती है। इतने में अनुशासन ने साथियो से अनुरोध किया चलो आज पहले यहां के प्रबन्धक से मिलते हैं। सर्व प्रिय जी के कमरे मे पहुच कर परस्पर परिचय और वार्तालाप प्रारम्भ हुआ, थोड़ी देर बाद सर्व प्रिय जी ने कहा, सयोग की बात है कि तुम मे से अधिक-तम साथी सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थी हैं और आज के सत्सग मे इसी विषय से जुड़े हुए—

'पारस्परिक सम्बन्धों के आधार'

पर चर्चा होगी, उसका समय हो गया है, अत: अब प्रागण में चलते हैं।

सगीत प्रिय जी ने प्रथम भजन मे ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि के साथ पारि-वारिक रिश्तो का सुखद चित्रण किया और दूसरे भजन में सामाजिक सम्बन्धों के परिप्रेक्ष्य में विशेषत· मैत्री की मधुर स्मृतियो को उजागर किया। सर्वप्रिय जी ने प्रवचन को प्रारम्भ करते हुए कहा, ससार में कोई विरला ही ऐसा परिवार होगा, जिस को कभी वियोग वेदना अनुभव न करनी पड़ी हो। वियोग वेदना की अनुभूति प्रत्येक अपने-अपने ढग से करता है, इस में जहां रूचि और स्वभाव का भेद कारण होता है, वहां सब से बड़ी बात अपनेपन की अनुभूति की होती है। जो व्यक्ति जिस के साथ जितना और जैसा अपनापन अनुभव करता है, वह परस्पर की सहानुभूति के आधार पर दु ख एवं क्लेश में उतनी ही वेदना अनु-भव करता है।

हमारे पारस्परिक सम्बन्ध सर्वप्रथम पारिवारिक रूप मे जुडते हैं और फिर एक दूसरे के साथ रिश्ते-नाते के रूप में जाल का एक सुन्दर ताना-बाना प्रस्तुत करते हैं। इस के साथ फिर मित्रों का क्षेत्र फैलने लगता है, कुछ के साथ शिक्षा के समय तो कुछ खेल के मैदान में या घर के अडोस-पडोस मे मित्रता प्रारम्भ हो जाती है और कुछ मित्रो के मित्र के रूप मे अपने मित्र बनते हैं, तो कुछ के साथ धार्मिक, राजनीतिक समानता के आधार पर शनै. शनै. मैत्री पक्की हो जाती है। हमारा आपस में तीसरा सम्बन्ध कारोबारी के रूप में जुडता है। कोई व्यक्ति जिस कार्यालय, कारखाने, उद्योग, व्यापार मे कार्य करता है. वहा के सहयोगियो में सामान्य परिचय धीरे-धीरे प्रगाढ होने लगता है। इसके साथ हम अपनी जरूरत की चीजें जिन से खरीदते हैं। इस के साथ हम अपनी जरूरत की चीजे जिन से खरीदते हैं जिन पड़ोसियो के आस-पास रहते हैं और जिन के साथ धार्मिक, राजनीतिक, शैक्ष-णिक आदि क्षेत्रों में परस्पर मिलते-जुलते हैं। उन से हमारा सामान्य या विशेष पारस्परिक सम्बन्ध होता है। ये ही हमारे अपने होते हैं। जिन से अनेक रूपों मे हम अपनापन अनुभव करते हैं।

पारस्परिक सम्बन्धों की रूपरेखा स्पष्ट हो जाने पर अब विशेष रूप से विचारणीय बात यह है, कि हमारे ये सासारिक सम्बन्ध क्या आत्मा से है या विनाशशील शरीर से है? यदि ये सम्बन्ध आत्मा से हैं तो फिर आत्माओं के नित्य होने से पारस्परिक सम्बन्ध भी नित्य ही होने चाहिए। यदि शरीर से हैं तो उस के नाशवान होने से स्वत: अनित्य सिद्ध हो जाते हैं। इस दृष्टि से जब हम इस समस्या पर विचार करते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है, कि हमारे पार-स्परिक सम्बन्ध नित्य आत्मा से नहीं हैं। यदि ये सम्बन्ध आत्मा से होते, तो फिर सदा नित्य ही होते क्योंकि आत्मा अमर है। तब तो जिस का जिस से जैसा जो भी सम्बन्ध है, वह उसके साथ सदा उसी रूप में वैसा ही रहना चाहिए। उस में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन कभी भी नहीं आना चाहिए; फिर तो किसी परिवार और रिश्तों की सख्या समान ही चलनी चाहिए। तब परिवार नियो-जन की प्रक्रिया का किसी रूप में प्रभाव नहीं होना चाहिए। परन्तु शास्त्रों के प्रमाणों और पूर्व जन्म की सामने आने वाली घटनाओं से यह अवगत होता है, कि ये पारस्परिक सम्बन्ध सदा बदलते रहते हैं। तभी तो निरुक्तकार ने लिखा है—न जाने मैंने विविध योनियो में कितने माता-पिताओं के दर्शन किए हैं।।

> मृतश्चाहं पुनर्जातो जातश्चाहं पुनर्मृत।
> नाना योनिसहस्राणि मयोषितानि यानि वै॥
> आहारा विविधा भुक्ता पीता नानाविधा: स्तना:।
> मातरो विविधा दृष्टा. पितर सुहृदस्तथा ॥13,1॥

मर कर मैं फिर पैदा हुआ और पैदा होकर फिर मरा, इस प्रकार हजारो योनियो में भटका हू। इन मे अनेक तरह के पदार्थ खाए और अनेक तरह के स्तनो का पान किया। इन जन्मो में अनेक माता-पिता और मित्र बनाए। गर्भो-पनिषद मे भी ऐसा ही वर्णन है—नाना योनिसहस्राणि दृष्ट्वा चैव ततो मया। आहारा विविधा भुक्ता पीताश्च विविधा स्तना॥ परस्पर नित्य सम्बन्ध मानने पर तो किसी का कभी भी मोक्ष सिद्ध ही न हो सकेगा, क्योंकि संसार में रहते हुए ही कोई पारस्परिक सम्बन्धों को निभा सकता है। तीसरी बात यह भी है कि नित्य सम्बन्ध मानने पर जीव के स्वतन्त्र कर्तृत्व पर भी आंच आती है, क्योंकि तब वह फिर किसी से मैत्री, विवाह सम्बन्ध को स्वेच्छा से नहीं कर सकता। ऐसा मानने पर तब ऋ. 10, 27, 12 जैसे वाक्यों में प्रतिपादित स्वयं वरण का अवसर सिद्ध न हो सकेगा 2। "भद्रा वधू र्भवति स्वयं सा वनुते जने चित्"—वही अच्छी वधू होती है, जो जन समूह में से स्वयं वर का वरण करती है। स्वयंवरण से उसकी स्वतन्त्रता कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं य: समर्थ: स: स्वतन्त्र सिद्ध होती है। इस से यह भी सिद्ध होता है कि पति-पत्नी का जन्मा-न्तर या नित्य सम्बन्ध नहीं तथा विधुर विधवा विवाह का निषेध ठीक नहीं। इस सम्बन्ध में विचारणीय चौथी बात यह भी है कि यदि एक आत्मा का दूसरी आत्मा के साथ आत्मिक सम्बन्ध है, तो सभी आत्माओं के एक जैसा होने से एक की मृत्यु पर सभी एक समान वियोग का दु:ख अनुभव करें, परन्तु स्थिति ऐसी है नहीं। वियोग दु:ख की अनुभूति का प्रभाव केवल पारिवारिकों और परिचितों तक ही देखा जाता है और वह भी क्रमश: निकटता तथा अनुभूति के आधार से। हम प्रतिदिन दुनिया में देखते हैं, कि एक कुछ वियोग के दु:ख में असह्य वेदना अनुभव कर रहे होते हैं, तो कुछ उसी समय खुशी मना रहे होते हैं। इस से यही सिद्ध होता है, कि हमारे ये सम्बन्ध आत्मा से नहीं हैं।

हमारे ये पारस्परिक सम्बन्ध तो क्या फिर शरीर से हैं? जब हम इस पहलू पर विचार करते हैं, तो यह दृष्टि-कोण भी अधूरा ही प्रतीत होता है क्योंकि यदि शरीरों के कारण से ही पारस्परिक सम्बन्ध होते, तो फिर उन को इस सम्बन्ध के कारण अधिक से अधिक दिन तक जैसे कैसे सम्भाल कर रखने की ही दौड़धूप रहती। मरने पर मृतक देह को जैसे-तैसे सम्भाल कर रखने पर भी उस से हमारा पारस्परिक सम्बन्ध का कोई भी व्यवहार सिद्ध न होने से भी, यही सिद्ध होता है, कि शरीर से हमारा सम्बन्ध नहीं है। मृतक देह की सम्भाल के अनु-पयोगी होने के कारण ही निकट से निकट के सम्बन्धी भी कहने के लिए विवश हो जाते हैं, जल्दी करो, अब तो यह सड़ने लग पड़ा है। इसीलिए शास्त्र मृतक देह को जलाने का विधान करते हैं और इस को पुण्य का कार्य बताते हैं। भौतिक विज्ञान की कार्य पद्धति से यह प्रमाणित हो चुका है, कि दबाने की अपेक्षा शवों को जलाना अधिक उपयुक्त है। जन-सख्या की वृद्धि के कारण भूमि की कमी की समस्या भी उभर रही है। अत: अन्न और आवास के लिए भूमि की बढ़ती हुई मांग को सामने रखते हुए बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता की अपेक्षा है, कि दबाने के स्थान पर जलाने को प्रत्येक प्रकार से प्राथमिकता दी जाए। सर्दी के मौसम में ठण्डे देशों में शवों को प्रतीक्षा के रूप मे पक्ति बद्ध होना पड़ता है, क्योंकि एक तो भूमि की कमी उस पर खुदाई में कठिनाई। अत एव अब वहां इस में भी मंजिलों का सहारा लेना पड़ रहा है।

(क्रमश:)

सम्पादकीय—

अमर शहीदों की याद

23 मार्च 1931 का वह दिन भारत के लोग कभी न भुला सकेंगे। जब इसके तीन सपूत, राजगुरु, सुखदेव और भगत सिंह को लाहौर की सैंट्रल जेल में फांसी दे दी गई थी। आज हमारा देश आजाद है हम आजादी का आनन्द भोग रहे हैं परन्तु इस आजादी के पीछे बलिदानों की एक लम्बी पंक्ति खड़ी है। सैकड़ों नौजवानों ने देश जाति और समाज की रक्षा के लिए अपने जीवन का हंसते-हंसते बलिदान दे दिया था। कोई देश, जाति और समाज जब आगे बढ़ता है तो उसके पीछे त्याग, तप और बलिदान की भावना कार्य करती हुई प्रत्यक्ष दिखाई पड़ती है। आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द ने 1875 में की थी, क्योंकि वह एक महान् देश भक्त थे इसलिए वह चाहते थे कि आर्य समाज के माध्यम से देश की गुलामी की जंजीरों को काट कर देश को आजाद कराया जाए। महर्षि दयानन्द और आर्य बन्धुओं ने स्थान-2 पर घूम-घूम कर भारतीय जनता को देश प्रेम का पाठ पढ़ाया जिससे आर्य समाज की प्रेरणा से अनेकों युवक देश, जाति और समाज की सेवा के लिए मैदान में कूद पड़े। देश के लिए यदि उन्हें अपना बलिदान भी देना पड़ा तो वह पीछे न हटे। सभी क्रान्तिकारी युवक जो उस समय कार्य कर रहे थे चाहे वह किसी भी प्रदेश के रहने वाले क्यों न हों आर्य समाज से प्रभावित थे। महान् क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल कट्टर आर्य समाजी थे। सरदार भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु और दूसरे कई और भी नव युवक आर्य समाजी थे। आजादी की लड़ाई में आर्य समाज ने जो महान् योगदान दिया है वह भुलाया नहीं जा सकता।

इन तीनों शहीदों को हम से बिछुड़े हुए एक अर्ध शताब्दी बीत गई है। 23 मार्च 1931 को इनका बलिदान हुआ था अब 1986 चल रहा है। परन्तु लगता है हम इन शहीदों को भूलते जा रहे हैं। जिस आजादी को उन्होंने अपना सभी कुछ न्योछावर करके प्राप्त किया था। आज फिर कुछ स्वार्थी लोग उसे मलियामेट कर देना चाहते हैं।

आज देश की आजादी को बहुत बड़ा खतरा पैदा हो गया है। विघटनकारी तत्व और देशद्रोही लोग फिर सिर उठाने लगे हैं। अपने तुच्छ स्वार्थ के लिए कई बड़े-बड़े अधिकारी व जिम्मेदार व्यक्ति अपने देश के साथ गद्दारी करते दिखाई पड़ रहे हैं। देश में कहीं धर्म के नाम पर, कहीं मजहब, सम्प्रदाय और जाति के नाम पर विघटन पैदा किया जा रहा है। उग्रवाद चारों तरफ अपना मुंह फैलाए खड़ा है। कहने का भाव यह है आज फिर आजादी को खतरा पैदा हो गया है परन्तु विदेशियों से नहीं अपनों से।

आओ 23 मार्च को इन शहीदों का बलिदान दिवस मनाते हुए निश्चय करें कि जिस आजादी के पौधे को महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और इन अमर शहीदों ने अपने खून से सींचा था हम उसे मुरझाने न देंगे। भले ही हमें भी इसके लिए अपना तन-मन-धन सभी कुछ क्यों न लुटाना पड़े।

सह-सम्पादक

होली का पावन पर्व

हमारे देश में कई पर्व मनाए जाते हैं, परन्तु होली, दशहरा (विजय दसमी) दीपावली यह तीनो पर्व सारे भारत में बड़े उत्साह से मनाए जाते हैं। भारत एक कृषि प्रधान देश है। इस समय हमारी एक फसल खेतों में लहलाई होती है। कणक, चने और दूसरी फसलों में इस समय दाना पड़ जाता है। सर्दी लगभग समाप्त हो जाती है और धीरे-धीरे गर्मी का साम्राज्य छा जाता है। लहलहाते हुए खेतों को देख कर किसान प्रसन्नता में झूम उठते हैं। लकड़ी तथा फूस आदि के बड़े बड़े ढेर इकट्ठे करके उनमें अग्नि प्रदीप्त की जाती है। गांव के सभी लोग उसके चारों ओर एकत्रित हो जाते हैं, चनों के पौधे और गेहू की बालें उस अग्नि में भूनते हैं और बड़े प्यार से खाते हैं। साथ ही खेलकूद करते हुए तथा नाचते गाते हुए बच्चे अपने उल्लास को प्रकट करते हैं। कई गन्ने को उस अग्नि में तपा कर उसके पटाखे भी बजाते हैं। भाव यह है कि इस पर्व पर लोग नव अन्न को भून कर खाते हैं और प्रसन्नता से झूम उठते हैं। इससे अगले दिन रंग, गुलाल लगाया जाता है एक दूसरे को छाती से लगाया जाता है। टोलियां बना कर लोग घूमते हैं।

यह पर्व भी अन्य पर्वों की भान्ति बहुत प्राचीन पर्व है यह कब से मनाया जाना आरम्भ हुआ यह ठीक से तो निश्चय नहीं किया जा सकता। परन्तु यह सत्य है कि यह पर्व है बहुत पुराना है। कालान्तर में जैसे अन्य पर्वों के साथ इतिहास की घटनाएं जुड़ गई हैं इसी प्रकार इस पर्व के साथ भी भक्त प्रह्लाद की कथा जुड़ गई कि प्रह्लाद को अग्नि ने नहीं जलाया और होलिका को जला दिया जो उसे समाप्त कर देना चाहती थी। यह एक राक्षसो पर देवताओं की विजय है। बुराई पर अच्छाई की विजय है। असत्य पर सत्य की विजय है कुछ भी हो यह पर्व एक महान् प्रेरणा देने वाला है। हर्ष और उल्लास को पैदा करने वाला है। इस दिन अपने सब मतभेद भुला कर भाई-भाई के गले लगते हैं। अपनी भूलों पर पश्चाताप करते हैं। जिससे पुन: स्नेह और प्यार बढ़ जाता है।

आज हम इस पर्व को मनाते हुए विचार करें कि वृक्षों पर फूल, पौधो पर तो हरियाली छाई हुई है। क्या यह हरियाली हमारे जीवन में भी है या नहीं? पल्लवों में तो कोमलता आ गई है क्या हमारी वाणी मे या जीवन में भी कोमलता सरसता आई है या नहीं? बढ़ते हुए वैमनस्य, घृणा द्वेष का दावानल शान्त करने के लिए हमने कोई प्रयास किया है या नहीं?

सह-सम्पादक

विज्ञापनदाताओं का धन्यवाद

आर्य मर्यादा के ऋषि बोध (शिवरात्रि) विशेषांक के लिए हमें कई सज्जनों ने अपनी ओर से और कई हमारे स्कूल व कालेज के अधिकारियों ने अपनी सस्थाओं की ओर से विज्ञापन भेजे हैं। इस प्रकार विज्ञापन भेज कर इस पत्रिका की जो सहायता शिक्षण सस्थाओं के अधिकारियों और अन्य सज्जनों ने की है मैं सभा की ओर से उन सब की आभारी हूं। यदि हमें इसी प्रकार हमारी अन्य शिक्षण संस्थाएं भी विज्ञापन भेज दें तो इस पत्रिका के बहुत कुछ घाटे को पूरा किया जा सकता है। मुझे आशा है कि आगे के लिए हमें अन्य शिक्षण संस्थाएं भी अवश्य अपनी ओर से विज्ञापन भेजेंगी। जो भी आगामी विशेषांक होगा उस से पूर्व सभी संस्थाओं और विज्ञापन दाताओं को सूचित कर दिया जाएगा। सभा को जो भी धन प्राप्त होता है उस पर इन्कम टैक्स की छूट होती है। यह भी दानी महानुभावों के लिए एक सुअवसर है जबकि वह सभा तथा उसकी पत्रिका की सहायता करके पुण्य के भागी बन सकते हैं। मैं पुन. सभी विज्ञापन दाताओं का धन्यवाद करती हूं।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

पंजाबी साहित्य के लिए लिखें

सभा ने जहां हिन्दी का साहित्य प्रकाशित कराया है वहां पंजाबी का साहित्य भी आर्य बन्धुओं के सुझावानुसार प्रकाशित कराया गया है। परन्तु उतना पंजाबी साहित्य नहीं निकल रहा जितना निकलना चाहिए था। एक दो सज्जनों ने पंजाबी में और साहित्य छपवाने के लिए लिखा है परन्तु जब तक पहली पुस्तकें नहीं निकलती तब तक और पुस्तकें छपवाना कठिन है। हमारे पास पंजाबी में तीन पुस्तकें हैं। जन्मसाखी, आर्य समाज दा दिग्दर्शन, सिख गुरु अते आर्य सिद्धान्त, यह अच्छी मात्रा में सभा के पास हैं। हमारी इच्छा है कि जिन स्थानों पर केवल पंजाबी ही पढ़ने वाले हों उन स्थानों पर यह पुस्तकें आर्य समाज की ओर से बांटी जाएं। जो आर्य समाजें यह पुस्तकें सभा से खरीद कर बांट सकती हैं उन्हे हम बहुत थोड़े मूल्य पर यह पुस्तकें दे देंगे और जो आर्य समाजें ऐसी हैं जिनके पास इन पुस्तकों को खरीदने की समर्थ न हो यदि वह भी बांटना चाहें और उनके पास पंजाबी जानने वाले सज्जन हैं। उन्हें हम यह पुस्तकें प्रचारार्थ भी भेज सकते हैं। इस लिए मेरी पंजाब की आर्य समाजों के अधिकारियों से प्रार्थना है कि शीघ्र लिखें यह पुस्तकें कितनी-2 आपको भेज दी जाए।

—कमला आर्या
सभा महामन्त्री

जिला आर्य सभा लुधियाना के कार्य का संक्षिप्त विवरण

लेखक—श्री आशानन्द जी आर्य, महामन्त्री जिला सभा

(गतांक से आगे)

आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री का स्वागत समारोह

9-9-84 को जिला आर्य सभा की ओर से नवनिर्वाचित सभा की महामन्त्री बहन कमला आर्या (जो कि सौभाग्य से लुधियाना की हैं) का स्वागत समारोह आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार में आयोजित किया गया। जिला आर्य सभा की ओर से श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा प्रधान जिला आर्य सभा ने 5100 रुपये की थैली सभा भवन निर्माणार्थ भेंट की। इस अवसर पर वीर प्रताप के फोटोग्राफर डा राजेश भारद्वाज ने फोटो खींची और इस कार्य को नि स्वार्थ भाव से किया।

डा, सत्यकेतु तथा डा सत्यव्रत वेदालंकार सम्मानित

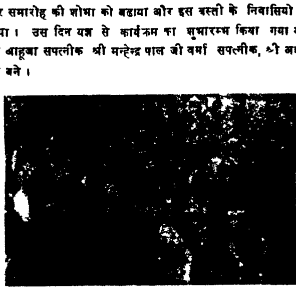
17 3-85 को गुरुकुल कांगडी की बैठक आर्य गर्ल्ज कालेज लुधियाना मे होनी निश्चित हुई थी। जिला आर्य सभा के अधिकारियो ने विचार किया कि इस समय पर डा सत्य केतु तथा डा. सत्यव्रत वेदालकार को सम्मानित करने के लिए इस अवसर का लाभ उठाया जाये। अत प्रात यज्ञोपरान्त उक्त दोनो महानुभावो का सम्मानित करने हेतु एक समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी एम ए ने डा सत्यकेतु तथा डा, सत्यव्रत की आर्य जगत में ख्याति का उल्लेख करते हुए उन की आर्य समाज के प्रति अगाध श्रद्धा तथा अवर्णनीय सेवाओ का वर्णन करते हुए उन्हें शालें ओढा कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् प्रिंसिपल एम एल आनन्द ने जल पान का अत्युत्तम प्रबन्ध किया हुआ था जिस के लिये जिला आर्य सभा के प्रधान श्री महेन्द्र पाल वर्मा ने जिला आर्य सभा की ओर से आभार प्रकट किया और समारोह की सफलता के लिए कालेज स्टाफ का धन्यवाद किया और 2000 रुपए की धन राशि आर्य कालेज को दी। 1000 रुपए श्री हरबंसलाल जी शर्मा (जालन्धर) ने दान के रूप मे दिए।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

झुग्गी झोपडियो मे निरन्तर साप्ताहिक सत्संग चल रहा है और एक पाठशाला भी चल रही है जिसमे विद्यार्थियो की सख्या 40 हो गई है। वहा श्री अयोध्याप्रसाद मल्होत्रा ने 1300 रुपये खर्च कर एक हैंड पम्प भी लगवा दिया है।

22 12-85 को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सब आर्य समाजो, तथा आर्य शिक्षण सस्थाओ द्वारा सम्मिलित रूप मे जिला आर्य सभा के तत्वावधान मे झुग्गी झोपडियों के विशाल मैदान मे मनाया गया। नगर के प्रतिष्ठित आर्य प्रेमियो ने टालियो, टागो कारो साईकलो, स्कूटरो द्वारा इस बस्ती मे पहुच कर समारोह की शोभा को बढाया और इस बस्ती के निवासियो को प्रोत्साहित किया। उस दिन यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया यजमान श्री नन्दलाल आहूजा सपत्नीक श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा सपत्नीक, श्री अशोक कुमार सपत्नीक बने।



श्री महेन्द्र पाल वर्मा सपत्नीक व झुग्गी झोपडियो के वासी हवन यज्ञ करते हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी एम. ए. इस समारोह की अध्यक्षता करने के लिए पधारे। आर्य प्रतिनिधि सभा की महामन्त्री बहन कमला आर्या तथा कोषाध्यक्ष श्री बहादुरदत्त जी शर्मा भी सभा प्रधान जी के साथ थे। श्री सभा प्रधान जी के समारोह में पधारने पर नगर श्री तथा ...... रायकोट की सब आर्य समाजों के प्रधान तथा मन्त्रियों और अन्य प्रतिष्ठित नागरिकों ने सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी का पुष्प मालाओं द्वारा भव्य स्वागत किया।



श्री वीरेन्द्र जी अध्यक्षीय भाषण देते हुए।

श्रीमती इन्दिरा मोहिनी धर्म पत्नी श्री महेन्द्र पाल वर्मा, प्रधान जिला आर्य सभा ने 11000 रुपये की राशि सभा के प्रधान को दी, सभा भवन निर्माणार्थ भेंट की। श्री सत्यानन्द मुञ्जाल मालिक हीरो साईकिल ने 11000 रुपये, सिंगापुर से आई बहन से ...... ने 1100 रुपये और श्री महेन्द्रपाल स्याल ने 500 रुपये दिये। इस अवसर पर 23600 रुपय की राशि सभा प्रधान जी को भेंट की।



—स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर जन समूह का एक दृश्य

इस अवसर पर सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के मान्य उपप्रधान श्री सत्यानन्द जी मुञ्जाल निदेशक हीरो साईकल का जिला सभा की ओर से स्वागत किया गया। समारोह के अध्यक्ष मान्य श्री वीरेन्द्र जी एम ए प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने श्री सत्यानन्द जी मुञ्जाल को एक शाल द्वारा सम्मानित किया और अयोध्या प्रसाद जी ने अभिनन्दन पत्र भेंट किया।



श्री अयोध्या प्रसाद मल्होत्रा श्री सत्यानन्द जी मुञ्जाल को अभिनन्दन पत्र समर्पण करते हुए साथ में श्री आशानन्द जी खड़े हैं।

अन्त में जिला आर्य सभा प्रधान श्री महेन्द्रपाल वर्मा ने आर्य सभा से सम्बन्धित सब आर्य समाजो स्त्री समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, आर्य समाज दयानन्द बाजार की युवा वेद प्रचार मण्डली, तथा उपस्थित आर्य प्रेमियों का धन्यवाद किया जिन्होने जिला आर्य सभा के तत्वावधान में आयोजित इस समारोह में अपना पूर्ण सहयोग देकर इसे सफल बनाया।

आर्य धर्म संस्कृति का सच्चा महान् त्यागी

आचार्य देव प्रकाश जी

लेखक—श्री भोलानाथ जी बिलावरी,अमृतसर

इस महापुरुष के सम्बन्ध मे लेखनी उठाने से पूर्व इस तेजोमय जीवन के आगे सर्व प्रथम अपना मस्तक नमन करता हू ।

आप सच्चे अर्थों में आर्य समाज के आन्दोलन की एक विभूति थे। तप, त्याग मे अद्वितीय नि स्वार्थ इतने कि अपने परिवार की सुध बुध न अपने खान-पान आराम का तनिक भी ध्यान । स्वभाव से मौन। चुपचाप रूप से रचनात्मक कार्यों मे सदा लगे रहते थे । अपनी प्रशसा सुनने ढोंग आडम्बर रचाने अथवा किसी प्रकार दिखावे मे उनको घृणा थी । सवेदनशील इतने कि मास खाने वालो से सख्त घृणा थी । कहीं भी किसी प्रकार की विपत्ति तथा कोई महामारी, प्लेग हैजा, अकाल, भूख, भूकम्प से विनाश पड़े तो तत्काल सेवा के लिए तैयार रहते थे। अपनी विद्वता इस्लाम और आर्य संस्कृति की जो भारी परिश्रम से उपार्जन की थी, को भी आर्य धर्म के प्रचार और प्रसार और असत्य मतों की समीक्षा खण्डन में नि स्वार्थ भाव से प्रयाग किया ।

आर्य जगत में आप सचमुच एक आचार्य के रूप मे उभरे । जन्म तो आपने एक मौलाना खानदान में लिया और मरण पर्यन्त आर्य धर्म एव सस्कृत के प्रचार एव प्रसार मे गुजार दिया । यदि मैं यह कहू कि आप शुद्धि के देवता थे तो अत्युक्ति न होगी । जहा कहा पता चलता कि आर्य सन्तान को मुसलमान या ईसाई बनाया जा रहा है, तुरन्त वहा पहुच जाते । वहा ऐसी तन्मयता और बुद्धिमता का चक्कर चलाते कि पादरी,मौलवी सब दग खड़े होते और धर्मच्युत भोली भाली आर्य सन्तान को वापिस ले आते । इस सम्बन्ध मे इनका मध्य प्रदेश के भील क्षेत्रो मे किया काम सदा याद किया जायेगा । किस प्रकार विधर्मियो के गढ़ों पर विजय प्राप्त कर वहा स्कूलों छात्रावासो आश्रमो की स्थापना करते । आप के कार्य करने का ढग ही ऐसा निराला था फिर किसी का इन क्षेत्रो मे समक्ष आने का साहस न रहता था । इसी प्रकार आपने रतलाम में दयानन्द उपदेशक विद्यालय की स्थापना 1960-61 मे की । प काली चरण शास्त्रार्थ महारथी इसके कुलपति नियुक्त हुए। झाबुआ अकेले मध्य प्रदेश मे आचार्य जी के परिश्रम से 2-3 लाख भीलो को वापिस ही नही वरन सदा के लिए विधर्मी होने से बचा लिया गया । आज भी यह भील लोग आचार्य जी को बड़ी श्रद्धा से अपने दादा गुरु के रूप में स्मरण करते हैं।

आगरा में 'भारतीय शुद्धि सभा' का ऐसे परिश्रम एव बुद्धिमता से सचालन किया कि उसके साथ करीब दो लाख मलकाने राजपूत मुसलमान वापिस पैतृक धर्म में आ गए । इस कार्य में आपने महाराजा नाहर सिंह एव अन्य कई राजपूत राजे महाराजों को भी सहमत कर लिया कि शुद्ध हुए मलकाने राजपूतो से हुक्का-पानी,रोटी-बेटी का व्यवहार करने लगे ।

आप केवल एक कुशल प्रबन्धक अथवा शुद्धिकर्ता ही न थे वरन एक अद्वितीय अरबी,फारसी, सस्कृत के विद्वान थे । इस्लामी साहित्य कुरआन हदीमादि' पर तो इनका पूरा अधिकार था । इस बात का प्रमाण आपके बृहद् ग्रन्थ (3 भागों) मे से परिचय मिलता है । जो 1500 पृष्ठो पर आधारित हैं। इसके अतिरिक्त आपने बहाई मिर्जाई मुसलमानी मतो एव ईसाई मत पर कई समीक्षात्मक ग्रन्थो की रचना की है। आप वैदिक मत-मतान्तरो के सम्बन्ध मे भी पूरा ज्ञान रखते थे । यही कारण था कि आप अनेक वर्षों तक श्री मदयानन्द अरबी सस्कृत विद्यालय के आचाय पद पर सुशोभित रहे । अनेक प्रसिद्ध 2 शास्त्रार्थ महारथी एव प्रचारक आपके शिष्यो मे थे और हैं । आप स्वय भी शास्त्रार्थ महारथी थे ।

आपने अनेको शास्त्रार्थ बहाई मिजाई तथा मुसलमानो ईसाइयो एव पौराणियो से किये । और आय धम का सिर ऊचा बनाए रखा । प्रारम्भिक युवावस्था मे आपके क्रियाकलापो ने अमृतसर की युवा पीढ़ी मे एक नया जीवन ला दिया था । उन दिनो ऐसा प्रतीत होने लगा था कि मानो समस्त अमृतसर आर्य समाजमय' हो गया हो ।

उन्ही दिनो हिन्दू मुस्लिम दगो की शुरुआत हो चुकी थी । आप मुसलमान गुडो से मुकाबला करने के लिए आर्य युवको को सदा तैयार रखते थे । मुलतान और मालाबार के मुसलमानो ने हिन्दुओ पर बहुत कठोर जुल्म किये हत्याए की मकान, दुकानें लूटी, आग लगाई, मदिर गुरुद्वारो को तोड़ा । इन सब अवसरो पर सर्व हिन्दुओ मे जागृति ला दगा पीड़ितो को सहायता पहुचाने का प्रबन्ध करते कराते रहे । स्वय भी जाते ।

अपने जीवन के अन्तिम चरण करीब 85-86 वर्ष की आयु मे हमारे बुलाने पर अमृतसर पधार कर 1975-76 मे धर्म प्रचार समिति की नीव रखी । सारे पजाब विशेष अमृतसर जिले मे शुद्धि का बिगुल बजा दिया और ईसाइयो के किये कराए पर पानी फर दिया । अन्तिम समय तक आपका यह शुद्धि चक्र चलता रहा । आपके परिश्रम से दिसम्बर 1980 तक 51000 से ऊपर पतित हुई आर्य सन्तान को फिर से अपने पैतृक धर्म मे वापिस लाया गया । आज भी आपकी यह शुद्धि सस्था कार्यरत है । अब तो इसे पजाब सरकार से फर्मज एण्ड सोसाइटी एक्ट के अन्तर्गत पञ्जीकृत भी करा लिया गया है ।

आज यह महा पुरुष हमारे मध्य नहीं रहे परन्तु इनके गौरवमय कृत्य हमारे समक्ष हैं । जिसका विवेचन विस्तृत परन्तु सक्षेप मे उनके उनके जीवन सम्बन्धी शीघ्र छप रही पुस्तिका द्वारा आप पढ सकेंगे ।

हमारे आचार्य देव प्रकाश जी सच्चे सन्त और त्याग की मूर्ति थ । आपका सादा जीवन इतना कि पहिनने खाने पर कोई विशेष ध्यान न देते थे । आपके पास पुस्तको की बिक्री आदि से 16000 हजार रुपये जमा हो गये थ अब आपकी आयु 87-88 वष की हो चुकी थी । प्रश्न उठा कि इस धन का क्या किया जावे । क्या आपकी इकलौती सन्तान पुत्री सत्य बाला को अन्य साधारण गृहस्थो की तरह दे दिया जाये ? आपने बड़ी दृढता से यह निणय लिया कि यह मेरी आय समाज रूपी माता का अधि बनता है । फलत यह राशि उन्होने लाला बृजलाल आहूजा (घी वाले) के पास जमा करा दी और निर्देश किया कि जो ब्याज इससे प्राप्त हो सदा शुद्धि के काय पर खच किया जाया करे । तनिक देखिए इस महान आत्मा ने जन्म लिया मुसलमान मौलाना के घर और सारा जीवन मुसलमान ईसाईयो को आय धम मे लाने मे गुजार दिया। जो धन बचा वह भी इसी काय पर लगा दिया ।

प्रभु हमे शक्ति दे ताकि हम भी आचाय देव प्रकाश जी के पद चिन्हो पर चलें, सच्चे आय बनें अपने धर्म जाति की रक्षा मे सदा तत्पर रहे। आर्य धर्म के प्रचारक रूप सच्चे सन्त मिशनरी बनें ।

———

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

परोऽपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शससि ।
परेहि न त्वा कामये वृक्षान् वनानि स चर गृहेषु गोषु मे मन ।।
—अथर्व 6।45।1

ओ मेरे मन के पाप ! दूर भाग, क्यो मुझ दूषित परामश (खोटी और गन्दी सलाह दे रहा क्यो मुझे कुमार्ग पर घसीट रहा है। परे भाग दूर हट जा । मे तुझ नही चाहता । तू वृक्षो मे जाकर विचर, वन में जाकर विचर। मेरा मन तो शरीर रूप घर और इन्द्रियो की देख-भाल मे लगा हुआ है। मैंने अपनी इन्द्रियो पर प्रहरी—पहरेदार बैठा रखे हैं अब किसी भी इन्द्रिय से किसी भी बुराई को अपने अन्दर नही आने दू गा ।

—=—

आर्य समाज भठिण्डा में शिवरात्रि उत्सव

2 3 86 से 9 3 86 तक आर्य समाज भठिण्डा मे चारो वेदो के शतको द्वारा एव गायत्री मन्त्री द्वारा दोनो समय प्रतिदिन बृहद यज्ञ एव श्री प अजीत कमार जी पुरोहित तथा ओम प्रकाश आय वानप्रस्थी क उपदश होते र । श्री पुरुषोत्तम दास जी एडवोकेट ने ओ३म ध्वज लहराया और श्री वद प्रकाश जी गग एडवोकेट की प्रधानता म महर्षि दयानन्द बोध उत्सव मनाया गया । 6 हवन कुण्डो मे 23 यजमानो द्वारा इकटठा यज्ञ करके 9 3 86 को पूण आहुति की गई इस के पश्चात् लगभग चार सौ स्त्री पुरुषो एव बच्चो ने इकटठा सह भोज किया ।

यह कायक्रम बड़ा सफल रहा सभी आय बधुओ ने बढ-चढ कर इस म भाग लिया ।

—मन्त्री आय समाज

हमारे देश का नाम क्या है ?

एक दिन एक नवयुवक ने मुझ से प्रश्न पूछा 'हमारे देश का नाम क्या है ? मैंने कहा, हमारे देश का नाम भारत है। हमारे देश के संविधान ने भारत नाम ही स्वीकार किया है। नवयुवक ने मुस्कराते हुए जो कुछ कहा उसका आशय था कि संविधान ने तो दो नाम स्वीकार किए हैं, भारत और इंडिया। अंग्रेजी मे तो इंडिया ही लिखते और बोलते हैं पर हिन्दी मे भारत का प्रयोग कम और 'हिन्दुस्तान' का प्रयोग अधिक होता है। और हिन्दी में अनावश्यक रूप से अंग्रेजी शब्दो का प्रयोग करने वाले शौकीन महानुभाव इंडिया और इंडियन शब्दो के प्रयोग बड़ तपाक से करते हैं। यही नहीं, हमारे देश के विधायक, संसद सदस्य और मन्त्री, जो पद ग्रहण करते समय संविधान का पालन करने की शपथ लेते हैं वे भी भाषणो वक्तव्यो और चर्चाओं मे हिन्दुस्तान' शब्द का भी प्रयोग करते हैं। 26 जनवरी के लिए कार्यक्रमो के आयोजन के लिए हिन्दी है, हम वतन है हिन्दुस्तान हमारा की पंक्ति का कई दिनो तक अभ्यास करवाया गया जिसका दिल्ली मे टी वी पर नियमित रूप से प्रदर्शन होता रहा। आन्ध्र के मुख्यमन्त्री श्री एन टी रामाराव हिन्दी बोलने का उत्साह दर्शाने के लिए इस पंक्ति का बड़े जोश के साथ उच्चारण करते हैं। संविधान में जब देश का नाम 'भारत' मान्य हो गया है, तो "हिन्दुस्तान नाम का प्रयोग क्या संविधान की अवहेलना नहीं है ? क्या संसार में ऐसा भी कोई देश है जिसके तीन तीन नाम हैं और उस देश के निवासी उन तीनो नामो का प्रयोग करते हैं ? यह विलक्षणता हमारे देश मे ही है। सच तो यह है कि संविधान में आवश्यक परिवर्तन करके देश का नाम केवल "भारत ही रखा जाए "इंडिया नाम से भी छुटकारा पाया जाए। जिस दिन देश का बटवारा हुआ और हमारे संविधान ने 'भारत नाम को मान्य किया हमारा देश 'भारत' ही रह गया 'हिन्दुस्तान" नाम समाप्त हो गया। जनता में इस विचार का अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिए।

इस सदर्भ मे एक बात का उल्लेख अप्रासंगिक नहीं होगा कि "हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दुस्तान हमारा। सारे जहा से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा। ये पंक्तियां सर मोहम्मद इकबाल की हैं और जो 1919 मे लिखी गयी थीं। 1930 मे सबसे पहले पाकिस्तान की माग करने वाले यही सर मोहम्मद इकबाल हैं, जिन्होने लिखा है —कौम मजहब से है मजहब जो नहीं तो हम भी नहीं। और 'मुस्लिम हैं हम वतन है सारा जहा हमारा। देश से गद्दारी करने वाले व्यक्ति के उस गीत को जो संविधान के विपरीत है, हम झूम-झूम कर गाते हैं। इसे हम क्या कहें ?

—कृष्णदत्त 1-8-700/6 पदमानगर,
नल्लाकुंटा, हैदराबाद—44

कर भीषण नाद

रचयित्री—डा पुष्पावती पी, एच. डी. दर्शनाचार्या
विद्यावारिधि प्राचार्या-मातृ मंदिर कन्या गुरुकुल, वाराणसी

मेरे स्वर्णिम स्वप्नों का एक सहारा।
उसी आर्य समाज का डूब रहा अब तारा॥
दोहराई भी जिसने ऋषि की बलिदान कहानी।
कर न सकता सम्मुख जिसके दस्यु मनमानी।
स्वप्न था जिसका भारत मां बने जग की रानी।
जो जग का नहीं कर्तव्य का था अभिमानी।
जो था कभी ऋषि दयानन्द का सबसे प्यारा।
हा ! कष्टों कर रही उसे अब अबला की धारा।

निर्बल जनों को नैया जिसने पार लगाई।
अरमानन हो दीन दुःखी जिसकी देते दुहाई।
नव जीवन देती असहायों को जिसकी परछाई।
उमड़ पड़ता, जिधर भी दुःखी पुकार सुनाई।
हाय डोल रहा वही अब पड़ा बीच मझधारा।
छूट रही उसके कर से बेड़ा आम पतवारा॥

सिंहनाद जिसका दस्यु का दिल दहलाता।
जिसकी दहाड़ सुन ब्रिटिश भी भागा जाता।
जिसके सम्मुख आज में विधर्मी कतराता।
देश-द्रोही पातकी हृदय था जिससे थर्राता।
वही आज अपनी रक्षा हेतु बना बना-सा बेचारा।
कर पा न रहा ठोकर से चूर, बस दुर्ग किनारा॥

उठ-उठ ओ सोये वीर निद्रा तुम्हें न सुहाए।
देश-देश घर घर बस साज सजाए।
मां के बच्चे मुक्ता लुटते सब बस हर्ष मनाए।
कैसे सहन कर रहा बोल मेरी मां के जाए।
कर भीषण नाद बने बस दानवता का हरकारा।
तेरे जयघोषों से गूंज उठे भूमण्डल सारा॥
कभी डूब न पाए फिर आर्य समाज का तारा।
मेरे स्वर्णिम स्वप्नों का एक सहारा॥

आर्य समाज नवांशहर में ऋषिबोधोत्सव बड़े उत्साह से मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर नवांशहर दोआबा मे ऋषिबोधोत्सव का पर्व बड़े समारोह से मनाया गया। 8 मार्च 86 शनिवार को प्रातः प्रभात फेरी निकाली गई जो आर्य समाज मन्दिर से शुरू होकर नगर के भिन्न भिन्न मुहल्ले व बाजारों मे होती हुई आर्य समाज मे सम्पन्न हुई। बाद मे प्रातः साढ़े 8 बजे हवन यज्ञ के पश्चात आर्य शिक्षण संस्थाओ के विद्यार्थियों का कार्यक्रम हुआ। और बच्चों को उत्साहित करने के लिए उन्हें बढ़िया बढ़िया पुरस्कार दिये गये यह पुरस्कार स्थानीय आर्य समाज के संरक्षक आदरणीय प देवेन्द्र कुमार जी के कर कमलों से दिलवाये गये।

महर्षि की शिक्षाओं व जीवन पर प्रकाश डाला गया शिक्षण संस्थाओ के सभी मुखियों का और विशेषकर श्री हरबंसलाल सनेजा जी का योगदान सराहनीय था।

—वेद प्रकाश सरीन

पठानकोट में ऋषिबोधोत्सव

आर्य समाज मेन बाजार मे ऋषिबोध उत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया गया। जिस में शहर के सभी गण मान्य महानुभावों ने भाग लिया। श्री प ओम प्रकाश जी आर्य के प्रवचन और श्री प्र भी जी के भजन होते रहे।

इस अवसर पर आर्य समाज मे चल रहे दयानन्द धर्मार्थ औषधालय के साथ नेत्र चिकित्सा के नये प्लाट का उद्घाटन श्री राजकिशन महाजन जिला सभा ने किया। तथा स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने आशीर्वाद देते हुए आर्य समाज मेन बाजार के इन जन कल्याणी कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

शान्ति पाठ के पश्चात् सभी आर्य जनों ने आर्य समाज में सामूहिक भोजन किया।

—ओं स्वतन्त्र कुमार
महामन्त्री

आर्य समाज के साहित्यकार—

मास्टर लक्ष्मण आर्योपदेशक

लेखक—डा भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ

आर्य समाज के जिन विद्वानो ने इस्लाम का गम्भीर अध्ययन कर उसकी समालोचना में उच्चकोटि के साहित्य का प्रणयन किया उनमे मास्टर लक्ष्मण का नाम उल्लेखनीय है। खेद है कि इनके जीवन तथा क्रिया कलापो का विस्तृत विवरण उपलब्ध नही है। लक्ष्मण जी जिला गुजरांवाला (पाकिस्तान) के रामनगर नामक ग्राम के निवासी थे। लाहौर मे इन्होंने भारत पुस्तकालय की स्थापना की जिस में विभिन्न मतमतान्तरो के सम्बन्ध मे विशाल साहित्य था। लाहौर मे ही [illegible] मन्दिर के निकट इन्होने एक आर्य होटल चला रखा था। जिस मे लाहौर आने वाले आर्यों के लिए सात्विक भोजन की सुन्दर व्यवस्था थी। कालान्तर मे ये दिल्ली चले आए और नई सडक पर आर्य प्रेस स्थापित किया। आय समाज बावडी बाजार को अपनी गतिविधियो का केन्द्र बना कर मास्टर जी ने प्रारम्भ मे अपना लेखन तथा ग्रन्थ प्रकाशन का काय जारी रखा किन्तु थोड समय पश्चात वहा के अधिकारियों से मतभेद हो जाने के कारण वे अपने पुस्तकालय को आय समाज बिडलालाइन्ज ले गए। यहा वैदिक पुस्तकालय के रूप में उनके द्वारा संग्रहीत पुस्तको तथा विक्रयार्थ ग्रन्थो का स्टाक रहता था। अपनी वसीयत मे इन्होने अपना सम्पूण पुस्तकालय तथा दस हजार रुपया नकद आय प्रतिनिधि सभा पजाब को दान के रूप मे दिया। मास्टर लक्ष्मण द्वारा रचित साहित्य का विवरण इस प्रकार है —

खात मुसाफीर या कुरान का वैदिक भाष्य यह कुरान का विशाल काय उर्दू भाष्य है। पुस्तक के विज्ञापन में लिखा गया है कि यह भाष्य भिन्न-भिन्न अनुवादको तथा भाष्यकारो की सिद्धान्त ज्ञान शून्यता के कारण कुरान और मुहम्मद साहब के विषय म फैली हुई भ्रान्तियो का निराकरण ही नहीं करेगा अपितु वेद और वैदिक धम के प्रति तथा एक रस सवनन्द सिद्धान्तो के चमत्कार भी दिखाएगा और साम्प्रदायिक वैमनस्य क स्थान म सावजनिक एक्य को स्थापित करेगा। वेद और कुरान या वैदिक धम और इस्लाम की पारस्परिक अनुकूलता का साक्षात्दशन कराने के अतिरिक्त समस्त भूगोल के विचारको को दृढ निश्चय करायेगा कि हजरत मुहम्मद साहब का सारा प्रयास वैदिक धम की ही रक्षा करने के लिए था, जिसकी साक्षी कुरान की प्रत्येक आयत दे रही है और हजरत का उद्देश्य सर्वथा वही था जो महर्षि दयानन्द का था, चार हजार से अधिक पृष्ठो मे लिखा ठोस मसाला जनता के सामने आयेगा कि किसी भी आवश्यक धार्मिक विषय की यथाथता को समझने के लिए वह पर्याप्त होगा।

अहमदिया सम्प्रदाय की आलोचना के ग्रन्थ

1-तहजीबुला मिर्जा, 2 मिरजाई पामे फरेब, 3 चोर और चार चतुर, 4 कादियानी मसीह का चिटठा।

इस्लाम विषयक अन्य ग्रन्थ

1 इस्लाम मे जलवए वेद 2 मकर तोड 3 दाइय इस्लाम 4 बुरा ही बल आय 5 कुरान मजीद आवागमन 6 कुरान ईश्वरीय ज्ञान नही 7 कफ तोड का भाण्डा फाड 7 इस्लामी बहिश्त 9 खबरे जालिम (सरवरे आलम तथा बदूर चन्द्र वसवेश्वर का खण्डन, 10 नकली चन्द्र वसवश्वर दक्षिण मे मिट्टी कदान दार न मक एक मुसलमान ने अपने आप को लिंगायत सम्प्रदाय के आदि आचाय वसवेश्वर का अवतार घोषित किया था। प्रस्तत पस्तक मे इसी घोषणा का खण्डन किया गया है। 11 मुस्लिम आय मिलाप 12 वैदिक धम और दीन इस्लाम 13 अफशाय राज 14 बाबा नानक और दीन इस्लाम 15 धमपाल और दीन इस्लाम 16 दीन इस्लाम और उसका प्रचार 17 हकीकतुल कुरान भाग 1

आगा खानी मत के खण्डनात्मक ग्रन्थ

1 आगाखानी दा फरेब 2 आगा खानी ढोल की पोल 3 आगाखानी इल्मियत।

अन्य समालोचनात्मक ग्रन्थ

1 ईसाईमत मे जलवये वेद

2 बाइबिल का कच्चा चिटठा भाग—1

3 राधास्वामी मत और वैदिक धम

4 यथाय प्रकाश की समीक्षा का उत्तर।

5 राधास्व मी हवाई महल

6 बुद्ध जैन वैदिक धर्मी है?

7 आय खालसा मिलाप—इस पस्तक मे सिख गुरुओ की शिक्षा को वैदिक धम के अनुकूल सिद्ध किया गया है।

8 गुरुमुख या मनमुख

पौराणिक मत खण्डन विषयक ग्रन्थ

1 भविष्य पुराण की आलोचना
2 मूर्तिपूजा खण्डन
3 अखिलानन्द की शरारत
4 नियोग फिलासफी (उर्दू)

महर्षि दयानन्द विषयक ग्रन्थ

1 मुकम्मल जीवन चरित्र महर्षि दयानन्द 1200 से अधिक पृष्ठो मे समाप्त यह जीवन चरित्र प लेखराम रचित स्वामी दयान द की उर्दू जीवनी का आधार लेकर लिखा गया है। यूनियन प्रेस लाहौर मुद्रित। वैदिक मैगजीन ने अपने मार्च 1917 के अक म इस पुस्तक की प्रशसा पूण समालोचना लिखी थी।

2—ऋषि जीवन कथा भारत पुस्तकालय ग्र थ माला 1 लाहौर से 1974 विक्रमी म प्रकाशित।

3—दयान द शकर मत (शकराचाय तथा स्व मी दयान द का तुलनात्मक अध्ययन)।

अन्य स्फुट ग्रन्थ

1- ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (उर्दू अनवाद)
2 वैदिकसध्या उर्दू
3- वैदिक सिद्धान्तो की व्यापकता।
4 यजवद प्रथम अध्याय
5- सावजनिक धम
6 शिवलिंग पूजा
7 विद्या तथा निर्भ्रान्त ज्ञान
8 ईश्वर की हस्ती आदि।

आया होली का त्योहार

लेखक—श्री राधश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ प्र)

कण कण मे उल्लास जगा है,
आशाओ का सूय उगा है,
रूप देख कर पुण्य प्रकृति का
अब प्रमाद का दनुज भगा है

मनुज मनज के उर आगन मे—
छाया आज असीमित प्यार।
आया होली का त्योहार॥

खेत बाग वन बने सुरम्य,
लगती वसुन्धरा अब रम्य,
प्रेम दया ममता समरसता—
के मृदु भाव प्रभूति प्रकम्प

प्रकृति वधू की सुन्दरता पर—
होने कोटिक मन बलिहार।
आया होली का त्योहार॥

पिकी पपीहे का मधु गुजन
करता है जन मन अनुरजन
मृदुल बयार बना है निमम—
तूफानो का महा प्रभजन,

नव्य ऊषा की सौम्य रश्मिया—
बिखराती सुख सौरख्य अपार।
आया होली का त्योहार।

श्री पं. निरंजनदेव जी को भ्रातृ शोक

सभा के महोपदेशक श्री प निरंजन देव जी इतिहास केसरी के बड भाई श्री बाबूराम जी का ग्राम चकगजरा (होशियारपर) मे गत दिनो देहावसान हो गया। उनकी आयु 82 वष की थी और स्वस्थ बहुत अच्छा था। अचानक दो दिन रुग्ण रहकर बिना किसी का कष्ट दिए शरीर छोड कर सदा के लिए चले गए वह अपने पीछे भरा परिवार छोड गए है।

सभा कार्यालय के सभी कमचारियो ने उनके मरे परिवार के साथ सहानुभूति प्रकट करते हुए दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्राथना की।

शहीदी मेला सम्पन्न

6 मार्च को अमर शहीद प लेखराम जी आर्य मुसाफिर की याद मे हर साल की तरह इस साल भी शहीदी मेला मनाया गया जिस मे पूज्य स्वामी सच्चिदानन्द जी (अमृतसरी) पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी दयानन्द मठ दीनानगर, श्रीराम किशन जी वानप्रस्थ प्रधान जिला आर्य सभा तथा उप प्रधान अ ले र स्मारक मण्डल श्री जयचन्द जी आहूरी दीनानगर, श्री देसराज जी तथा वैद्य इन्दु जी फगवाड़ा ने भाग लिया तथा श्री सतीश जी बटाला से देवियो तथा पुरुषो सहित एक स्पैशल बस लेकर पहुचे। मनोहर लाल जी शर्मा श्री धमराल जी शर्मा श्री देवदत्त जी शास्त्री न भावभीनी श्रद्धाञ्जलिया अर्पित की तथा श्री बनवारी लाल रत्ती, अमर चन्द जी प्रीत, सेवासिंह जी बागी, गाथा सिंह जी बहमी उजागर सिंह जी निरमान और हरबस जी गुलशन की कविताओ म रग बाध दिया। अन्त मे खुला ऋषि लगर लगाया गया। उत्सव बड़ा ही प्रभावशाली रहा। पहली मार्च से 6 मार्च तक यज्ञ तथा स्वामी सच्चिदानन्द जी की कथा होती रही।

—रोशनलाल-मन्त्री
आर्य समाज कादिया (गुरदासपुर)

कालांवाली मण्डी में शिवरात्रि उत्सव

शिवरात्रि के उपलक्ष मे 7 8 9 मार्च को नित्य प्रति प्रभातफेरी की गई दयानन्द महिला कालिज मे प्रात उत्सव मनाया गया और 9-3 86 की रात्रि को नई मण्डी मे श्री चमनराम अमर नाथ की दुकान पर हवन यज्ञ के पश्चात् महर्षि दयानन्द के आर्य जाति पर उपकारो पर श्री हरिश्चन्द्र जी शास्त्री एव ओम प्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी बठिण्डा के प्रवचन हुए।

बस्ती गुजां जालन्धर में ऋषिबोधोत्सव

आर्य समाज बस्ती गुजा में ऋषिबोधोत्सव इस बार बड़े उत्साह स 3 मार्च से 8 मार्च तक मनाया गया। 8 मार्च को प्रात 10 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। यज्ञ श्री प, धर्मदेव जी म-अधिष्ठाता वेद प्रचार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। 10 बजे से 12 बजे तक उच्चकोटि के विद्वान स्वामी सच्चिदानन्द जी श्री प, धर्मदेव जी, श्री सोहनलाल जी कालड़ा, श्री ओमप्रकाश जी पराशर, ब्र नरेन्द्र जी आर्य और अन्य कई विद्वानो ने महर्षि के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बोध शब्द का महत्व बताया।

अन्त मे बृहद् ऋषि लगर हुआ जिस में सैकड़ो स्त्री पुरुषों ने प्रेम और प्रीति से बैठ कर भोजन किया। सारा कायक्रम बड़ा सफल रहा।

—सुदेश
मन्त्री

जालन्धर छावनी में ऋषिबोधोत्सव

आर्य समाज जालन्धर छावनी में ऋषिबोधोत्सव बड़े समारोह से मनाया गया। 8 मार्च को प्रात 8-30 से 12 बजे तक कार्य क्रम चलता रहा जिसमें भजन, कविता और उपदेश होते रहे अन्त में प्रीतिभोज हुआ। सैकड़ों स्त्री पुरुषों ने मिलकर भोजन किया। दानी महानुभावो ने दिल खोल कर दान भी दिया। श्री उग्रसेन जी भसिन ने दानियों की सूचि पढ़ कर सुनाई और श्री काशीराम जी मन्त्री ने अपने विचार रखे।

आर्य मर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं



श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस मेहक गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

टेलीफोन 74250 रजि. न. पी.जे.एल. 55

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालंधर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष 17 अंक 48, 17 चैत्र सम्वत् 2042 तदनुसार 30 मार्च 1986 दयानन्दाब्द 161 प्रति अंक 40 पैसे (वार्षिक शुल्क 20 रुपये)

पंजाब को तुरन्त सेना के आधीन कर दिया जाए

जम्मू कशमीर में धारा 370 को समाप्त किया जाए

देश में समान नागरिक न्याय संहिता लागू की जाए

पंजाब-हरियाणा–हिमाचल व जम्मू कशमीर को मिलाकर एक बृहद् राज्य बनाया जाए

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की भारत सरकार से मांग

(विशेष संवाददाता द्वारा)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने अधिवेशन दिनांक 15-16 मार्च 1986 को निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया है।

1 एक प्राप्त सूचना के अनुसार अमेरिका का छठा जमी बेड़ा अपने 4500 नौसैनिको के साथ कराची (पाकिस्तान) बन्दरगाह पर पहुंच गया है। कहने के लिए उसका उद्देश्य नौ-सैनिको को विश्राम और मनबहलाव का अवसर देना है, किन्तु इसी जमी बेड़ के कराची पहुचने के साथ साथ पाकिस्तानी सेना का भारत की सीमा पर विशेषकर जम्मू-कश्मीर के पुछ और राजौरी क्षत्रो से लगती हुई सीमा पर भारी जमाव हमारे देश के लिए चिन्ता का विषय है।

2, दुर्भाग्य से हमारे देश के अन्दर कुछ धार्मिक कट्टरपन्थी धर्म के आधार पर अपने आपको एक पृथक जाति घोषित करते हुए अपने लिए अलग राज्य की मांग कर रहे हैं। हमारे अन्दर ही कुछ ऐसे तत्व भी हैं जो क्षेत्रियता के आधार पर स्वयं को अपनी मातृभूमि से अलग करने की आवाज उठाने लगे हैं। दोनों ही प्रकार के तत्वों से हमारे देश की सुरक्षा और अखण्डता को खतरा पैदा हो गया है। सार्वदेशिक सभा देश की सरकार और जनता से अनुरोध करती है कि वे इस प्रकार के विघटनवादी तत्वो से सावधान रहे क्योकि वे कुछ विदेशी ताकतों के इशारो पर नाच रहे हैं। जिनका एक मात्र उद्देश्य देश मे अस्थिरता पैदा करना तथा उसे इस प्रकार विभजित करना है कि उसकी प्रगति अवरुद्ध हो जाए और वह अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे कोई प्रमुख भूमिका निभाने के योग्य न रहे।

इस सभा की यह मान्यता है कि देश की सुरक्षा के लिए देश वासियो मे एकता का होना एक प्रमुख आवश्यकता है। इसके लिए यह सभा निम्न मागें प्रस्तुत करती है।

(क) भारत सरकार धर्म भाषा और क्षेत्रीय आधार पर उठाई गई पृथक राज्य की माग को दण्डनीय अपराध घोषित करे। इस विषय मे यह सभा सरकार से अनुरोध करती है कि इस दिशा मे उठाए गए प्रभावी कदम के रूप मे सविधान की उन धाराओ को निरस्त कर दिया जाए जिनके द्वारा देश की जनता को धर्म भाषा और सस्कृति के आधार पर बहुसख्यक अथवा अल्पसख्यक मानकर विभाजित किया जाता है।

(ख) सविधान की धारा के अन्तर्गत दिए गए निर्देशों के अनुसार अब यह आवश्यक हो गया है कि देश मे एक समान नागरिक न्याय सहिता लागू की जाए। इस समय ससद मे मुस्लिम कट्टरपथियो के तुष्टीकरण के लिए जो विधयक पेश किया गया है वह तुरन्त वापिस लिया जाए क्योकि इसके पारित होने पर भारतीय दण्ड विधान की धारा 125 के अन्तगत मुस्लिम महिलाओ को अपने अधिकारो की लडाई से वचित कर दिया जाएगा।

(ग) भारतीय सविधान की धारा 1, मे परिवर्तन करके देश को राज्यो का सघ न मान कर प्रशासनिक इकाइयो का सघ माना जाए।

(3) यह सभा यह भी अनुरोध करती है कि पजाब मे हिंसा और तोड-फोड की कार्यवाही रोकने के लिए उसे उस समय तक सेना के सुपुर्द कर दिया जाए जब तक वहा पूर्ण शाति स्थापित न हो जाए और वहा से पथ मार्गियों का सफाया न हो जाए। सभा का सुझाव है कि देश की उत्तर पश्चिम सीमा से लगने वाले जम्मू-कश्मीर, पजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश को मिलाकर एक बृहद राज्य बनाया जाए। इस प्रकार सगठित राज्य वर्तमान परिस्थितियो मे देश की आतरिक तथा बाह्य सुरक्षा के लिए प्रभावी सिद्ध होगा।

(4) सभा की घोषणा है कि जम्मू कशमीर मे शाह सरकार को बर्खास्त करके भारत सरकार ने एक अभिनन्दनीय कार्य किया है। सभा की यह भी माग है कि सविधान की धारा 370 को समाप्त कर दिया जिसके अन्तर्गत जम्मू कशमीर को एक विशिष्ट राज्य का दर्जा प्राप्त है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देश की सब आर्य प्रतिनिधि सभाओ और उनसे सम्बन्धित आर्य समाजो को आदेश देती है कि वह सब राष्ट्रवादी हिन्दू सस्थाओ को साथ लेकर 30 मार्च रविवार को पजाब कशमीर दिवस मनाए और एक तार द्वारा भारत सरकार से कहें कि पजाब को सेना के आधीन कर दिया जाए।

व्याख्यान माला

वर्णव्यवस्था और उसका महत्व

अनुवादक—श्री सुखदेव राज शास्त्री [illegible]
गुरुकुल [illegible]

(16 मार्च से आगे)

ब्राह्मणस्त्वनधीयानस्तृणाग्निरिव शाम्यति ।
तस्मै हव्य न दातव्य नहि भस्मनि हूयते ।37।

अध्ययन न करने वाला ब्राह्मण घास की आग के समान नष्ट हो जाता है उसे द्रव्य (दान) नहीं देना चाहिए क्योंकि भस्म (राख) मे कोई हवन नहीं करता।

श्रुतिस्मृति उभे नेत्रे विप्राणा परिकीर्तिते ।
एकेन विकल. काणो द्वाभ्यामन्ध प्रकीर्तित: ।38।

श्रुति और स्मृति ये दोनो ब्राह्मणों की आंखें कही गई हैं। जो एक से रहित है वह काना है, जो दोनो से रहित है वह अन्धा है।

ब्राह्मणस्य तपो ज्ञान तप: क्षत्रस्य रक्षणम् ।
वैश्यस्य तपो वार्ता तप शूद्रस्य सेवनम् ।39।

ब्राह्मण का तप ज्ञान है, क्षत्रिय का तप रक्षा करना है, वैश्य का तप बातचीत (व्यापार) करना है, शूद्र का तप सेवा करना है।

न च वेदादृते किञ्चिच्छास्त्र ब्रह्मविधायकम् ।
योऽन्यत्र रमते सोऽसौ न सम्भाष्यो द्विजातिभि. ।40।

वेद के अतिरिक्त कोई शास्त्र ब्रह्म का प्रतिपादन करने वाला नही अत जो मनुष्य वेदो को त्याग कर अन्य शास्त्रो में प्रवृत होता है उस मनुष्य के साथ द्विजातियो को बात नहीं करनी चाहिए।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम् ।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च ।41।

अपने गुण कर्म एव स्वभाव के अनुसार शूद्र ब्राह्मणता को, ब्राह्मण शूद्रता को क्षत्रिय वैश्य भाव को तथा वैश्य क्षत्रियत्व को प्राप्त हो जाता है।

अतपास्त्वनधीयान: प्रतिग्रहरुचिर्द्विज ।
अम्भस्यश्मप्लवेनेव सह तनैव मज्जति ।42।

जिस प्रकार जल मे पत्थर की नौका के साथ नाविक भी डूब जाता है उसी प्रकार तप न करने वाला, अध्ययन न करने वाला तथा दान लेने मात्र मे रुचि रखने वाला ब्राह्मण भी ब्राह्मणत्व से पतित हो कर ससार सागर मे डूब जाता है।

सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव ।
अमृतस्येव चाऽऽकाङ्क्षेदवमानस्य सर्वदा ।43।

ब्राह्मण सम्मान को विष तुल्य समझ कर उससे घृणा करे तथा अपमान को अमृत तुल्य जान कर उसकी इच्छा करे अर्थात् ब्राह्मण वही है जो मान और अपमान मे कभी विचलित न हो।

तस्मादविद्वान्बिभियाद् यस्मात्तस्मात् प्रतिग्रहात् ।
स्वल्पकेनाप्यविद्वान्हि पङ्के गौरिव सीदति ।44।

अपठित या अविद्वान् ब्राह्मण जिस किसी भी प्रकार के हो दान लेने से डरे क्योंकि अपठित ब्राह्मण यदि थोड़ा सा भी दान लेता है तो कीचड़ में फसी गऊ के समान दुख को प्राप्त होता है अर्थात् दान लेना ब्राह्मण के लिए तभी उचित है जबकि वह विद्यावान हो क्योंकि विद्यावान मनुष्य ही ब्राह्मण होता है और ब्राह्मण ही दान का पात्र होता है।

यथा प्लवेनौपलेन [illegible] ।
तथा निमज्जतोऽधस्तादज्ञौ दातृप्रतीच्छकौ ।45।

जैसे पत्थर की नाव से पार होता हुआ मनुष्य [illegible] [illegible] से [illegible] पतन [illegible]

न [illegible] प्रय[illegible] [illegible] ।
न [illegible]
[illegible] ।
[illegible]

धर्मज्ञ पुरुष बिडाल जैसी धूर्त वृत्ति वाले, बगुले जैसे छली या अवसरवादी वेद ज्ञान से हीन ब्राह्मण को पानी तक भी न दें अर्थात् ऐसी कुटिल वृत्ति रखने वाले बगुला भगत लोग श्रद्धा रखने योग्य नहीं होते अपितु दूर से ही त्यागने योग्य होते हैं। इन तीनो को [illegible] [illegible] किया [illegible] यदि दिया जाता है तो देने वाले के लिए अनर्थ का कारण होता है तथा परलोक में दान लेने वाले के लिए भी अकल्याण कर होता है।

धर्मध्वजी सदा लुब्धश्छाद्मिको लोकदम्भक ।
बैडालवृतिको ज्ञेयो हिंस्र: सर्वाभिसन्धक: ।48।

धर्म का ढोंग रचाने वाला, लालची, छली, लोकदम्भी, हिंसक तथा सब को ठगने वाले ब्राह्मण को बिडालवृत्ति वाला जानना चाहिए।

अधोदृष्टिर्नैष्कृतिक: स्वार्थसाधनतत्पर: ।
शठो मिथ्याविनीतश्च बकव्रतचरो द्विज ।49।

नीचे दृष्टि रखने वाला, कृतघ्न, कपटी, स्वार्थ साधन मे लगा रहने वाला, शठ और विनम्रता का मिथ्याडम्बर करने वाला ब्राह्मण बक वृत्ति वाला होता है।

ये बकव्रतिनो विप्रा ये च मार्जारलिङ्गिन: ।
ते पतन्त्यन्धतामिस्रे तेन पापेन कर्मणा ।50।

जो बक वृति तथा मार्जार=बिडाल वृति वाले ब्राह्मण होते हैं वे अपने उन वृत्तियो से होने वाले पाप कर्म के द्वारा अन्धतामिस्र नामक नरक मे पड़ते हैं हैं अर्थात् दुर्दशा को प्राप्त करते हैं।

यस्य यल्लक्षण प्रोक्तं पुंसो वर्णाभिव्यञ्जकम् ।
यद्यन्यत्रापि दृश्येत तत्तेनैव विनिर्दिशेत् ।51।

जिस पुरुष का जो वर्ण व्यक्त करने वाला लक्षण कहा है यदि वह लक्षण वर्णान्तर मे भी दिखाई देवे तो उस व्यक्ति को भी उसी लक्षण के द्वारा निर्दिष्ट करें।

गणिकागर्भसभूतो वसिष्ठश्च महामुनि ।
तपसा ब्राह्मणो जात: सस्कारस्तत्र कारणम् ।52।

गणिका के गर्भ से पैदा हुआ महा मुनी वसिष्ठ तप से ब्राह्मण बन गया। इस मे ब्राह्मणत्व का सस्कार ही कारण है कि वह शूद्र से भी ब्राह्मण हो गया।

जातो व्यासस्तु कैवर्त्या श्वपाक्यास्तु पराशर ।
बहवोऽन्येपि विप्रत्व प्राप्ता ये पूर्वमद्विजा ।53।

व्यास ऋषि (मच्छेरन) से पैदा हुआ और पाराशर ऋषि चाण्डालनी से पैदा हुआ इन के अतिरिक्त भी अन्य बहुत से ऐसे अब्राह्मण हुए हैं जो सस्कार वश ब्राह्मणत्व को प्राप्त हुए हैं।

विश्वामित्रो वसिष्ठश्च मतङ्गो नारदादय ।
तपोविशेषै संप्राप्ता उत्तमत्व न जातित: ।54।

विश्वामित्र, वसिष्ठ, मतंग तथा नारद आदि ऋषि विशेष तप द्वारा ही उत्तमता को प्राप्त हुये हैं न कि जन्म विशेष होने से।

(क्रमश)

सम्पादकीय—

पंजाब-कशमीर दिवस मनाओ

15, 16 मार्च 1986 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन दिल्ली में हुआ था। उसमें देश की वर्तमान परिस्थितियों पर विचार किया गया और माननीय श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव जी ने एक प्रस्ताव पेश किया जो सर्व सम्मति से पारित किया गया। वह प्रस्ताव आर्य मर्यादा के इस अंक में प्रकाशित किया जा रहा है।

इस प्रस्ताव में जहा दूसरी कई समस्याओ की ओर आर्य जनता का ध्यान दिलाया गया है। वहां पजाब और जम्मू कशमीर में जो स्थिति पैदा हो गई है, उसकी ओर विशेष तौर पर अपने देशवासियो का ध्यान दिलाया गया। आजकल हमारे देश मे वह तत्व बहुत अधिक सक्रिय हो गए हैं जो कुछ विदेशी शक्तियों के इशारे पर एक बार फिर विघटनकारी परिस्थिति पैदा करना चाहते हैं। मुसलमानो की निजी व्यवस्था और राम जन्म भूमि से ताला खुलने के प्रश्न पर मुसलमानो को भडकाया जा रहा है। कई कट्टरपन्थी मुसलमान मस्जिदो मे यह प्रचार कर रहे हैं कि वह इस देश में सुरक्षित नहीं है। ऐसे व्यक्तियो को विदेशों से धन भी प्राप्त हो रहा है। समय समय पर इस्लामी देशों से कुछ व्यक्ति हमारे देश में आते हैं और वहां कुछ प्रमुख मुसलमानों से मिल कर कोई न कोई ऐसी योजना बनाने का प्रयास करते हैं जिसके द्वारा हमारे देश में कोई नया विघटनकारी आन्दोलन प्रारम्भ हो सके। देश के पूर्वी प्रदेशो मे एक ऐसा क्षेत्र बन रहा है जहा ईसाईयों का प्रभुत्व है। कुछ विदेशी पादरी भी वहा आकर रहते हैं। उन्हे भी बाहिर से रुपया मिलता है। पजाब मे जो कुछ हो रहा है वह किसी से छुपा नहीं। कशमीर मे भी कुछ पाकिस्तान समर्थक परिस्थितियो को बिगाडने का प्रयास कर रहे है। इस तरह सारे देश मे ही एक ऐसा वातावरण पैदा किया जा रहा है कि देश की एकता और संगठन के लिए एक बहुत बडा सकट पैदा हो जाए।

सार्वदेशिक सभा के अधिवेशन में इस सारी स्थिति पर विचार किया गया और एक प्रस्ताव पारित किया गया जो सब प्रान्तीय सभाओं को भेजा गया है। और उनसे कहा गया है कि वह अपने आधीन आर्य समाजों से कहे कि वह रविवार 30 मार्च को पजाब-कशमीर दिवस मनाए और न केवल इस प्रस्ताव को वहा पारित करें अपितु आज देश में जो परिस्थितिया पैदा हो रही हैं उन्हे जनता के सामने रखें और अपने सगठन को शक्तिशाली बनाने का प्रयास करें ताकि आने वाली परिस्थितियो का मुकाबला किया जा सके।

जहा तक पजाब की आर्य समाजो का सम्बन्ध है उन्हे बताने की आवश्यकता नहीं कि हम किस घोर सकट मे से गुजर रहे हैं। पजाब को खालिस्तान बनाने की एक योजना के अनुसार यह सब कुछ किया जा रहा है। ऐसे समय मे आर्य समाज का एक विशेष दायित्व है। हमारे देश का इतिहास साक्षी है कि जब कभी देश पर कोई सकट आया है आर्य समाज सबसे पहले देश की सुरक्षा के लिए आगे आती रही है। आज भी जो कुछ पजाब मे हो रहा है यह आर्य समाज के लिए भी एक चुनौती है। हमे हाथ पर हाथ रख कर नही बैठना, बल्कि अपने सगठन को शक्तिशाली बना कर उन तत्वो के विरुद्ध सघर्ष करना है जो देश मे विघटन पैदा करना चाहते हैं। एक बात का विशेष रूप से हमें ख्याल रखना चाहिए कि आर्य समाज केवल आर्य समाजियों की ही सस्था नहीं, यह सारे हिन्दु जाति की संस्था है। धार्मिक विचारों में हमारा चाहे कुछ मतभेद हो फिर भी यह समय है जब कि हमें सब हिन्दूओ को अपने साथ लेकर चलना है। इसलिए 30 मार्च रविवार को जो पजाब कशमीर दिवस मनाया जाए वह केवल आर्य समाजियो तक ही सीमित न रहना चाहिए। उस दिन प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर मे सार्वजनिक सभा करके सार्वदेशिक सभा ने जो प्रस्ताव पारित किया है वहा पढ कर सुनाया जाए और देश में जो परिस्थितिया पैदा हो रही हैं। उनकी ओर जनता का ध्यान दिलाया जाए। मैं पजाब की आर्य समाजो के अधिकारियो से विशेष रूप से कहना चाहता हू कि अब कुछ सक्रिय होने की आवश्यकता है। आर्य समाज एक ऐसी सस्था है जो सब को साथ ले कर चल सकती है। यदि मैं यह कहू कि आज पजाब के सारे हिन्दू बहुत बडे सकट मे हैं, हम बच सकते हैं तो केवल उसी हालत में यदि हम सब मिलकर चलें। इसलिए पजाब के सब आर्य समाजियो से मेरा नम्र निवेदन है कि वह अब अपने सब मतभेद भुलाकर सगठित हो जाए और आर्य समाजो के मन्दिर हिन्दूओ के सगठनो के केन्द्र बन जाए और वहा समय समय पर गोष्ठिया कर के वर्तमान परिस्थितियों पर विचार विमर्श किया जाए। आशा है कि 30 मार्च रविवार का यह दिन पजाब के हिन्दूओ मे एक नई जागृति और नए सगठन की भावना पैदा करेगा। यह दिन सारे देश मे मनाया जाना है और पजाब और कशमीर के लिए विशेष रूप से मनाया जाना है। इसलिए हमारा कर्तव्य हो जाता है कि इस दिशा मे हम जो कुछ कर सकते हैं करें। आर्य समाओ के अधिकारियो को अभी से उस दिन को सफलतापूर्वक मनाने की तैयारी प्रारम्भ कर देनी चाहिए।

—वीरेन्द्र

आर्य मर्यादा के ग्राहकों की सेवा में

सभी ग्राहको और पाठको की सेवा मे निवेदन है कि अपना आर्य मर्यादा का शुल्क शीघ्र अतिशीघ्र सभा कार्यालय मे भेजें। सभा का वर्ष 30 अप्रैल को समाप्त हो रहा है। हिसाब तैयार किया जा रहा है। 30 अप्रैल तक कोई भी ऐसा ग्राहक नही रहना चाहिए जो अपना शुल्क न भेज दें ताकि हिसाब किताब ठीक बनाया जा सके। कई ग्राहको को कई 2 बार पत्र लिखने पडते हैं। फिर भी शुल्क नहीं भेजते, न ही उत्तर देते हैं। ऐसी अवस्था मे विवश हो कर हमे अखबार बन्द करना पडता है। कुछ ग्राहक ऐसे भी हैं जो बिना लिखे ही प्रति वर्ष अपना शुल्क भेज देते हैं। वह प्रशसा के योग्य हैं परन्तु अधिकतर ग्राहक कई बार लिखने पर भी शुल्क भेजने मे देरी करते हैं। कुछ एक ग्राहक तो ऐसे हैं जिनको शुल्क 20 रुपय भेजने को लिखा जाता है परन्तु वह बीस के स्थान पर 15 रुपय भेज देते हैं। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क 20 रुपये है। इसलिए पूरा शुल्क ही भेजें।

सभी ग्राहको से हमारी पुन प्रार्थना है कि उन्हे पता होता है कि उनका शुल्क कब समाप्त हो रहा है। क्योंकि पूर्व शुल्क उन्होने कब से कब तक दिया है यह हम रसीद पर लिख देते हैं। इसलिए भले ही उन्हे पत्र लिखा जाए या न लिखा जाए उन्हे समय पर अपना शुल्क भेज देना चाहिए जैसे कई अन्य बन्धु भेजते भी हैं। उससे जहा हमे लाभ होता है वहा ग्राहक को इकटठा दो या तीन वर्ष का शुल्क नहीं भेजना पडता। आशा है ग्राहक व पाठक बन्धु मेरी प्रार्थना पर ध्यान देगें।

—व्यवस्थापक

अध्यात्म चर्चा—

ईश्वर सर्वव्यापक है

लेखक—श्री प रविदत्त जी शर्मा एम ए पी एच डी. अबोहर

ईशावास्यमिद सर्वं यत् किञ्च जगत्या जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध कस्यस्विद् धनम् ॥1॥

ईशावास्योपनिषद् का यह मन्त्र मानव को सकेत करता है कि ईश्वर सर्वव्यापक है ससार का त्याग पूर्वक भोग करो और लालच को छोड दो और क्यो कि यह धन किसी का भी नही है। मानव स्वभाव की कुछ दुर्बलता अथवा विकृति होती है जो बिना सिखाये ही आ जाती है। कष्ट पा कर भी मनुष्य अपने को सुखी अनुभव करता है और अवगुणो की उपेक्षा नही कर पाता फिर भी जो शास्त्रीय व्यवस्था है उस को भी नही नकारा जा सकता। वैदिक सिद्धान्त है कि ईश्वर कण-कण मे रमा हुआ है। वेद वाक्य एव साधको का अनुभव इस मे प्रमाण है। पुरुष सूक्त का अवलोकन करन पर यह विचार-धारा पुष्ट होती है कि सृष्टि का प्रत्येक पदार्थ परमेश्वर की धराहर है क्यो कि वहा स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि जगत की रचना पुरुष परमेश्वर के द्वारा हुई। यह भी निर्विवाद सिद्ध है कि सृष्टि से पूर्व केवल परमेश्वर की सत्ता थी—हिरण्यगर्भ समवर्तताग्रे भूतस्य जात पतिरेक आसीत । सृष्टि यज्ञ का एकमात्र साक्षी परमेश्वर है वही रच यिता धर्ता, व्यवस्थापक सर्वज्ञ तथा सब का बन्धु है—'सनो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानिविश्वा' परमात्मा सभी धामो तथा भुवनो को भलीभाति जानता है, श्रुति द्वारा ईश्वर की सर्वज्ञता प्रमाणित है। ज्ञान एव व्याप्ति का अटट सम्बन्ध है, अत सर्वज्ञ होने के कारण कोई भी पदार्थ उससे ओझल नहीं अस्तु सर्वव्यापक भी है। इस विषय में 'स्थूल दृष्टि वालों को आपत्ति हो सकती है परन्तु सूक्ष्मदृष्टि से सब कुछ समझ मे आ जाता है।

परमात्मा अपनी शक्ति द्वारा प्रगट होता है जिस का प्रत्यक्ष दर्शन सर्वथा असम्भव है। इस को जानने से पहले भौतिक शक्तियो का अध्ययन करना उचित होगा । बिजली एक शक्ति है, यह करन्ट भी मारती है और बडी-बडी मशीनें भी उस से चलायी जाती है। खम्भे पर लग तार तो दिखाई देते है परन्तु विद्युत की धारा खोजने पर भी नही मिलती। दो पत्थरो के टकराने पर चिन्गारी निकलती है परन्तु पत्थरो मे कही अग्नि नही दिखायी पडती। वन मे बासो की रगड से आग लग जाती है लेकिन बासो मे कही आग नहीं मिलती। बाल सूखे हो तो कन्घा फेरने पर बाल कन्घ को पकडते हैं। परन्तु उस आकर्षण शक्ति को आखो से देखना सुलभ नही। यदि भौतिक शक्तिया ही आखो से नही दिखायी देती है तो दिव्य शक्ति की तो बात ही विचित्र है कोई भी दार्शनिक उस परमशक्ति को प्रत्यक्ष रूप से नही देख सका तभी वेदान्त वालो ने उसे 'अव्यक्त नारी परमेश शक्ति कह दिया। पुराण वालो ने उसे परमेश्वर की माया बताया है। भावुक भक्तो ने तो वेद की मर्यादा को ही भुला दिया और ईश्वर को स्वय बना कर पूजना आरम्भ कर दिया।

वैज्ञानिक भले ही ईश्वर की सत्ता मे विश्वास नही रखते परन्तु वे इस खोज मे हैं ससार की व्यवस्था किस के द्वारा सचालित है ? इस का नियन्त्रण कौन कर रहा है ? जिस का साक्षात्कार सम्भव नही उस की कल्पना भी आयासमात्र है। नेत्रादि इन्द्रिया इस विषय मे असमर्थ है केवल मनन चिन्तन आदि से अनुभव किया जा सकता है। व्यर्थ का उपक्रम छोड कर वेदवाणी पर विश्वास कर लिया जाए तो समस्या का हल मिल जाता है। अथर्ववेद का मन्त्र इस को सुलझा देता है—'यो भूत च भव्य च सर्वं यश्चाधि तिष्ठति'। पुरुष सूक्त का प्रथम मन्त्र ईश्वर की सर्व व्यापकता को सिद्ध करता है—

सहस्रशीर्षा पुरुष सहस्राक्ष
सहस्रपात् ।
स भूमि सर्वतो स्पृत्वा अत्यतिष्ठद्
दशाङ्गुलम् ॥

पुरुषनाम परमेश्वर का है, पुर ब्रह्माण्ड का द्योतक है पुर (ब्रह्माण्ड) में जो व्याप्त है वही पुरुष है। सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी दयानन्द ने पुरुष शब्द का व्याख्यान किया है 'स स्वव्याप्त्या चराचरं जगत् पृणाति पूरयति वा स पुरुष जो सब जगत मे पूर्ण हो रहा है उस परमेश्वर का नाम पुरुष है। व्यापक होने का भाव पुरुष शब्द मे निहित है। इसी प्रकार विष्णु शब्द का अर्थ भी व्यापक होने वाला है। स्वामी जी ने इस शब्द की व्याख्या की है "वेवेष्टि व्याप्नोति चराचर जगत् स विष्णु जो जडजगमात्मक सम्पूर्ण जगत् मे व्याप्त हो वह विष्णु है।

ईश्वर की सर्व व्यापकता से अभि प्राय है कि यह ससार परमेश्वर का ही है मनुष्य इसे अपना न समझ ले। मनुष्य तो उस की प्रजा है और वह प्रजापति है। अत मन्त्र मे त्यागपूर्वक भोग करने की बात कही गयी है। जिस पर अपना पूर्ण अधिकार नही उस को मनमाने ढग से नही प्रयोग कर सकते। रेलगाडी मे बहुत आदमियो की खपत होती है। परन्तु अपने लिए पूरी गाडी नही, अपने लिए तो एक सीट है और वह भी वहा तक जहा तक का टिकट लिया है। इसलिए निश्चित स्थान गाडी छोडते समय दुख नही खुशी होनी चाहिए। अपने हक को प्राप्त करना शेष दूसरो के लिये छोड देना ही त्यागपूर्वक भोग कहलाता है। यह नही देखना चाहिए कि भोग्य वस्तु कितनी है अपितु यह विचारना चाहिए हम कितने से तृप्त होगे ? अधिक को देख कर लालच हो जाना ही लिप्त होना है फिर मनुष्य दूसरो के अधिकार को भी हडप लेता है। लोभ ही पाप की जड है। मन्त्र के अन्तिम अश में लोभ का निषेध किया गया है। मन्त्र के अन्तिम अश मे लोभ का निषेध किया गया है कि किसी के धन को देख कर लालच मे मत पडो। नेकी की कमाई खाओ बदनियत मत बनो। लोभ की अवस्था मे ही दुर्योधन ने कहा था—'सूच्यग्र नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव' परन्तु जब वह युद्ध मे निष्प्राण हो कर धराशायी हो गया तो सुई की नोक के बराबर भूमि भी साथ न ले गया। इसी लिए श्रुति ने सावधान किया है 'मा गृध कस्यस्विद् धनम्'। लोभ का नाश केवल त्याग भावना से ही किया जा सकता है। अपना कर्तव्य कर्म करते रहो और इष्ट भोगों को भोगो।

'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समा ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे' ॥

मनुष्य के लिए कर्म का विधान किया गया है, न्यूनतम आयु सौ वर्ष की की बतायी गयी है। इतना तो कम से कम जीने की इच्छा रहे। जितनी अधिक करने की लगन होती है, उतना ही उद्योग भी आवश्यक है। बहुत कोशिश के बाद भी हो सकता है कुछ कम रह जाए, परन्तु तैयारी सौ वर्ष की करनी चाहिए। जीने का उपाय भी मन्त्र मे ही बताया गया है कुर्वन्नेवेह कर्माणि अर्थात् उत्तम कर्म करते हुए जियो। शास्त्रीय व्यवस्था मनुष्य को निकम्मा नही बनाना चाहती। प्रत्येक व्यक्ति उचित कर्म करने के उपरान्त ही सृष्टि के ऐश्वर्य को भोगने का अधिकारी है। यह एक उत्तम समाजवादी व्यवस्था है। समाज मे सभी व्यक्ति काम में लगे रहेंगे तो सभी अपने हक का खायेंगे। उत्पीडन एव अत्याचार तभी पनपते हैं, जब कि कोई दूसरे की कमाई खा रहा हो। शास्त्र का आदेश सभी के लिए पालनीय है जो सुख का सम्पादक है। मन्त्र मे स्पष्ट कहा गया है कि बिना कर्म के गुजारा नही, इस के अतिरिक्त अन्य उपाय भी नही। कर्म के सम्बन्ध में एक सावधानी बतायी गयी है कि कर्म तो करो परन्तु लिप्त न हो। ससार में रहते हुए भी कर्म बन्धन मे मत बन्धो। उत्तम कर्म करने से कर्म बन्धन नही होता। इस सम्बन्ध मे कमल का उदाहरण प्रेरणा प्रद है। कमल पानी मे रहता है परन्तु डूबता नहीं। अथाह जल मे भी मुस्कराता रहता है, और दूसरो को भी प्रसन्न करता है। वह सन्देश देता है कि दुनिया वालो यह ससार एक सागर है, इस मे लिप्त होना ठीक नहीं। लिप्सा दुख की जननी है, इस से इतना ही सम्बन्ध रखो कि अपने अस्तित्व को बचा सको अन्यथा डूब कर नष्ट-भ्रष्ट हो जाओगे और कुछ भी हाथ न लगेगा। यह भी कठिनाई की बात है कि गुड खाना जरूरी है परन्तु उस में चिपकना नही है। ससार का ऐश्वर्य भोगना है तो निर्लिप्त हो कर ही अच्छी तरह भोगा जा सकता है। जब शीरे में मक्खी फस जाती है तो छट-पटा कर प्राण गवा देती है और कुछ भी आनन्द नहीं ले पाती। लहरियो के थपेडे से बचते हुए जो तैरता है वही तैरने का आनन्द ले सकता है और पार भी हो सकता है। लिप्सा विनाश की ओर ले जाती है। कर्म लोभ चक्र ससार का एक ऐसा जाल है जिस में उलझ कर प्राणी विवश हो जाता है। कर्म से लोभ और लोभ से कर्म पूर्णत प्रभावित होते है।

क्रमश

जापान की उन्नति का आधार कुछ वैदिक सिद्धान्त

लेखक—आचार्य श्री ब्र आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता
ज्ञानसदन, माडल बस्ती दिल्ली

आज सम्पूर्ण भारत का आबाल वृद्ध जापान की वस्तुओ आसन व जूडो कराटें आदि खेलो के लिए बुरी तरह से लालाइत है। भारत नही अपितु सम्पूर्ण विश्व पर जापान छाया हुआ है। पूरी दुनिया के देश जापान के व्यापार के नीचे दबे हुए हैं। और इससे पूर्व अपनी राष्ट्र भक्ति मे सब जगह प्रशसित है। दूसरे विश्व युद्ध मे भयकर बम विस्फोटो से बरबाद होने पर भी आज वह अनेकों देशो से अधिक खुशहाल हैं।

जैसे कभी प्राचीनकाल मे समूचे विश्व मे भारत सर्वश्रेष्ठ चर्चा का विषय था, ठीक ऐसी स्थिति आज जापान की है। क्या कभी जापान की वस्तुओं से प्रेम करने वाले भारतीयो ने सोचा कि आखिर वे कौन से सिद्धान्त है, जिन को लेकर जापान अपने बालक अपने विद्यार्थी, अपने युवक एव अपनी महिलाओ तथा अपने नागरिको के कारण विश्व का आदर्श बना हुआ है। तथा दूसरी ओर हम भारत वासियो मे वे कौन से दोष आ गये हैं, जिनके कारण सोने की चिड़िया आज साबुत मिट्टी को भी नही बची।

यह है वे वैदिक सूत्र जिनके कारण जापान की ख्याति दिनो दिन बढ रही है। देश व धर्म हेतु बलिदान की भावना, महिलाओ का सम्पूर्ण आदर महिलाओ द्वारा बच्चो का गम्भीरता से पालन, गुरु भक्ति, माता-पिता की पूजा, गौओ का पालन तथा गो दूध का सेवन अपनी जापानी भाषा से प्यार, कठोर दण्ड उन्नति का सबसे बड़ा कारण है पुरुषार्थ मय व्यस्त जीवन। वयम् तुभ्यम् बलहृत स्याम—वेद की सूक्ति के अनुसार वहा के नागरिक छोटे हो या बड़े, स्त्री हो या पुरुष राष्ट्र के जिस कार्य को करने का सकल्प लेते है उसे दिलो जान से पूरा करते है। वे राष्ट्र के किसी भी कार्य को छोटा नहीं समझते। एक बड़े से बड़ा अधिकारी भी अपने कार्यालय की धूलि झाड़ने के कार्य को धर्म का पवित्र कार्य समझता है किसी भी कीमत पर वह अपने देश की निन्दा नहीं सुन सकता। जापान में भारत से आए हुए एक व्यक्ति ने जब वहां कुछ फल खरीदे तो फल लेने के पश्चात् एक छोटे से बालक ने उस व्यक्ति को कहा कृपया वे अपने फल उसकी कीमत लेकर मुझे दीजिए। बहुत बहस के पश्चात उस व्यक्ति ने जब यह कहा कि तुम भी उस व्यक्ति से ले लो तो हाथ जोड़ कर वह बालक बोला मैं आप वाले फल इसलिए लेना चाहता हू क्यो कि इस दुकानदार से एक फल गलती से खराब आ गया है। जब आप इसको प्रयोग मे लाए गे तो निश्चित रूप से यह समझेंगे कि जापान के व्यक्ति ने धोखा दिया। बस मैं यह नही चाहता कि आप मेरे देश के प्रति ऐसा विचारे इतना ही नही यदि कोई जापानी अपने किसी कार्य का प्रतिज्ञा करने के पश्चात् पूर्ण नही कर पाता तो वह प्रायश्चित के रूप मे अपना बलिदान कर लेता है।

2—जापान के पढे लिखे बालक उच्च शिक्षा ग्रहण करने पर भी अपने धर्म की सेवा के लिए अपना जीवन पुरोहित के रूप मे दान कर देते हैं। सिर पर भारतीय ढग की शिखा (चोटी) रखता है। धर्म स्थान मे सेवा करने से पूर्व 'ब्रह्मचर्येण तपसा वेद के इस मन्त्र के अनुसार कई दिनो तक किसी पहाडी पर जाकर कठोर 'ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ केवल जगली फलो पर जीवन व्यतीत करता है। एक ऐसे ही युवक से पूछे जाने पर बड़े गर्व से कहा मुझे धर्म की सेवा करने का अभिमान है। और मैंने यह तप स्वेच्छा से प्रसन्नता पूर्वक किया है। ताकि मैं अपने कार्य मे अधिक प्रभावशाली होकर धर्म की अधिक सेवा कर सकू।

वहा के बच्चो युवको तथा अन्य नागरिको के महान होने का कारण है जापान में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते इस वैदिक उद्घोष के अनुसार महिलाओं की पूजा। तीन वर्ष तक जापान मे हिन्दी का शिक्षण लेकर लौटी आर्य कुल श्रीमती बुढिराजा से यह सुनकर मैं आश्चर्य चकित रह गया कि जापान मे स्त्रियों को बहुत आदर दिया जाता है। बस हो या सड़क ग्राम हो या नगर, कार्यालय हो या विद्यालय कोई भी व्यक्ति छेड़ छाड़ तो दूर अपितु आख उठाकर भी बुरी निगाह से देखता तक नही है। जापान की इस आदर्श पूर्ण बात का सुन कर मेरी आखो मे आसू आ गये और मुझे राम का जमाना याद आ गया।

जापान की महिलाओ का ऐसा आदर व सत्कार उनके गुणो के कारण ही होता है। वहा की प्रत्येक महिला गृहस्थ मे जीवन का सबसे बडा उद्देश्य सतान को देश भक्त विद्वान तथा महान बनाना ही समझती है। यदि किसी महिला का दो तीन वर्ष का बालक भी छोटी गलती कर ले या कहना न माने तो उन को रात भर नीद नही आती। इतना ही नही अपितु वहा की मातायें अपने बच्चो को महान बनाने के लिए जहा उसे पूर्ण ज्ञान देती हैं। वहा उसे वैदिक अवस्था के अनुसार कठोर दण्ड भी देती है।

एक बार एक बालक बस मे सफर करता हुआ बिना टिकट पकडा गया, अधिकारियो ने उसे दो घण्टे खड़े रहने की सजा दी, तथा उसके घर का पता पूछा फोन करके उसकी माता को बुलाया गया। अधिकारियो की सब बातें सुन कर अपने पुत्र की ओर इशारा करते हुए कहा आप इसे दो घण्टे नहीं बल्कि चार घण्टे खड़े रहने की सजा दीजिए। भारतीयों जब तक भारत में पूर्ण ज्ञान और दण्ड शासति प्रजा, इस वैदिक सूक्ति के अनुसार कठोर दण्ड का पालन होता रहा तब तक भारत भी महान रहा।

(क्रमश)

लुधियाना में महर्षि स्वामी दयानन्द ऋषिबोधोत्सव सम्पन्न

इस बार लुधियाना मे महर्षि दयानन्द बोधोत्सव जिला आर्य सभा के तत्वाधान मे 8, 9 मार्च शनिवार और रविवार को मनाया गया। 8 मार्च शनिवार को नगर के 75 मुहल्लो मे यज्ञ तथा समारोह किए गए। जिनमे महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया। रात्रि को सब आर्य परिवारो के घरो दुकानो आर्य समाज मन्दिरो, आर्य शिक्षण सस्थाओ पर दीपमाला की गई। 9 मार्च रविवार को प्रात रामलीला मैदान (दरेसी) मे एक सजे हुए विशाल पण्डाल मे 8 बजे से अढाई बजे बाद दोपहर तक महर्षि बोधोत्सव मनाया गया। 8 बजे प्रात यज्ञ आरम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा श्री बाल कृष्ण जी शास्त्री तथा ब्रह्मचारी चेतनदेव जी, यजमान श्री अरुण कुमार सूद सपरिवार, श्री ओम्प्रकाश महाजन सपरिवार श्रीमती धर्मदेवी, श्रीमती सुदर्शना जी शर्मा थी। यज्ञ का सारा सचालन दीवान राजेन्द्र कुमार जी ने किया था।

10 बजे उत्सव की कार्यवाही श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा प्रधान जिला आर्य सभा की प्रधानता मे आरम्भ हुई। श्री रामप्यारे आर्य श्री श्रवण कुमार बत्रा, श्री कृपा राम आर्य, श्री राजेश चन्द्र किदवई नगर ने सुन्दर भजन गाए। प बालकृष्ण जी शास्त्री, ब्रह्मचारी चेतन प्रकाश ने यज्ञ के सम्बन्ध मे प्रकाश डाला, उसके पश्चात सगीत प्रतियोगिता आरम्भ हुई। इसके जज आदरणीय बहिन यज्ञ-वीत भल्ला तथा बहिन स्वर्ण बाला जी थी। जिला आर्य सभा ने जहा प्रथम आने वाली टीम के लिए चल शील्ड तथा दूसरे तीसरे नम्बर पर आने वाली टीमो के लिए कप रखे हुए थे। वहा प्रथम आने वाले व्यक्ति के लिए एक सुन्दर जग श्री खुशवक्त राय सूद माधोपुरी ने रखा हुआ था। शील्ड आर्य गन्ज हायर सै स्कूल की टीम ने जीती। दूसरे नम्बर पर आर्य हायर सै स्कूल और तीसरे स्थान पर आर-बी स्कूल तथा आर्य स्कूल किदवई नगर रहे। प्रथम पुरस्कार डाक्टर स्वदेश जी ने जीता।

इसके पश्चात दीवान राजेन्द्र कुमार जी सैकेन्ट्री आर्य कालेज लुधियाना ने ओ३म का ध्वज फहराया। सारी आर्य समाजो के अधिकारियो जिला आर्य सभा के अधिकारियो, शिक्षण सस्थाओ के आचार्यों तथा नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने हारो से उन्हे लाद दिया। आर्य स्कूल के बैंड ने सुन्दर धुन बजाई। इस के पश्चात समारोह के मुख्य अतिथि डाक्टर राम प्रसाद जी वेदालकार कुलपति गुरुकुल कागडी विश्व विद्यालय पण्डाल मे पधारे। जनता ने जयघोष करके तथा हार पहना कर उनका हार्दिक स्वागत किया। श्री एम एल आनन्द जी ने कुलपति जी का सक्षिप्त परिचय दिया और आचार्य रामप्रसाद जी वेदालकार ने अपने ओजस्वी भाषण मे महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कहने को सारी दुनिया जाग रही है, परन्तु सारी दुनिया सो रही है। जिस शिव को महर्षि ने देखा उसी शिव की हम को भी तलाश करनी चाहिए और महर्षि जी के अधूरे कार्य को हमे पूरा करना चाहिए।

पारितोषिक वितरण था महेन्द्रपाल जी प्रधान जिला आर्य सभा के धन्यवाद के पश्चात ऋषि लगर मे सब ने भोजन किया। इस समारोह को सफल बनाये मे आर्य स्कूल के प्रिंसिपल श्री ओम्प्रकाश टण्डन उनका स्टाफ, दीवान राजेन्द्रकुमार जी, श्री खुशवक्त राय सूद, डा मूल-चन्द भारद्वाज, श्री ओम्प्रकाश पासी, मा चरणसिह ज्ञानी, श्री आयोध्याप्रसाद मलहोत्रा, श्री विजय कुमार सरीन, श्री रोशन लाल शर्मा, ज्ञानी गुरदियाल सिंह आर्य, श्रीमती कौशल्या देवी, श्रीमती शान्ता गौड, श्रीमती निर्मला बेरी तथा सब आर्य समाजो तथा स्त्री आर्य समाजो शिक्षण सस्थाओ ने पूरा-पूरा सहयोग दिया।

—आशानन्द आर्य
सभा महामन्त्री

जन्म-मरण की उलझन—६

पारस्परिक सम्बन्धों का आधार

लेखक—प्रा. श्री भद्रसेन जी दर्शनाचार्य (होशियारपुर)

(गतांक से आगे)

अत दबाने की अपेक्षा जलाना अधिक सरल और उपयुक्त है। पहले जलाने का एक ही प्रकार था, लकड़ियो का प्रयोग। पर अब रसोई में भी लकड़ियो के साथ कोयला, मिट्टी का तेल, गैस और बिजली का प्रयोग होने लगा है। शास्त्रो में लकड़ी विद्युत और सूर्य तीनो के लिए अग्नि शब्द का प्रयोग हुआ है और तीनो से अग्नि का काय सिद्ध होता हैं। अत शरीर की भस्म लकड़ी की तरह बिजली से भी बन सकती है। लकड़ी की बढ़ती कीमतें और उस की कमी तथा उसके अन्यत्र होने वाले प्रयोग भी यह संकेत करते हैं, कि शवदाह के लिए बिजली का प्रयोग बिना झिझक करना चाहिए। दैनिक वीर प्रताप 25 6-84 मे प्रकाशित हुआ है कि विद्युत शवदाह गृह दिल्ली मे लकड़ी की अपेक्षा बिजली का बिल बहुत कम आता है।

महात्मा जी ने सभी श्रोताओ का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा—इस विवेचन से जब यह स्पष्ट होता है कि हमारा पारस्परिक सम्बन्ध न तो आत्मा से और न ही शरीर से है। तब एक विवेकशील प्राणी होने के कारण यह और भी अधिक गहराई से सोचना आवश्यक हो जाता है कि वस्तुत हमारे पारस्परिक सम्बन्धो का आधार क्या है।

(एतद्वै परम तपो य प्रेतमरण्य हरन्ति। एतद्वै परम तपो य प्रेताग्नावभ्यादधति। बृहदारण्यक उप 5, 12, 1 भस्मान्त शरीरम् यजु 40 15 शरीर का अन्त राख ही हैं। अत जिस किसी भी आग से शव को भस्म करना चाहिए।)

जब हम खुले मन से इस पर विचार करते हैं, तो अन्त मे इस परिणाम पर पहुचते हैं कि इस रहस्य को समझने के लिए जन्म और मृत्यु के रूप पर ध्यान देना होगा, क्योकि किसी के जन्म के साथ उस के पारस्परिक सम्बन्ध प्रकाश मे आते हैं। न्याय दर्शन के प्राचीनतम भाष्यकार महर्षि वात्स्यायन ने 1-1 19 सूत्र का भाष्य करते हुए स्पष्ट संकेत किया है (पुनरुत्पत्ति प्रेत्यभाव, उत्पन्नस्य क्वचित्सत्त्वनिकाये मृत्वा या पुनरुत्पत्ति स प्रेत्यभाव। उत्पन्नस्य सम्बद्धस्य। सम्बन्धस्तु देहेन्द्रिय बुद्धिवेदनाभि पुनरुत्पत्ति पुनर्देहादिभि, सम्बन्ध। पुनरित्यभ्यासाभिधान यत्र क्वचित प्राणभृन्निकाये वर्तमान पूर्वोपात्तान् देहादीन् जहाति तत्प्रैति। यत्र तत्रान्यत्र वा देहादीनन्यानुपादत्ते तद् भवति। प्रेत्यभावो मृत्वा पुनर्जन्म, सोऽयं जन्म मरण प्रबन्धाभ्यासोऽनादिरपवर्गान्त प्रत्यभावो वेदितव्य। 1,1,2 सूत्र भाष्य में भी इस की कुछ चर्चा है।

कि नित्य आत्मा के किसी शरीर, इन्द्रिय, बुद्धि आदि से जुड़ने का नाम जन्म और अमर आत्मा का पूर्व प्राप्त शरीर आदि से अलग होना ही मृत्यु है अर्थात् आत्मा और शरीर आदि के पारस्परिक सम्बन्ध असम्बन्ध का नाम ही जन्म और मृत्यु है, इसी जन्म-मरण की पहेली और शरीर तथा आत्मा के सम्बन्ध को समझाने का प्रयास कठ उपनिषद के तृतीय प्रश्न या वर में किया गया है। इसी लिए आचार्य यम नचिकेता को वहां बार-बार "एतद्वै तत—" शब्दों द्वारा इसी समस्या का समाधान सुझाते हुए प्रतीत होते हैं।

(इसके विस्तार के लिए 'परिषद पत्रिका' पटना के अप्रैल 1975 के अंक मे 'कठोपनिषद् का एक अध्ययन, देखिए।

वस्तुत आत्मा और शरीर आदि के सम्बन्ध से ही (आज जिस स्थिति में हम हैं उस में हम अपनी इन्द्रियो से चीजो को व्यवहार मे लाते हैं, भोगते हैं। अत हमारा स्वरूप भोक्ता के रूप मे है। इस के विस्तार के लिए 'सुखी कैसे रहें, का 'मैं कौन हूं' ।) प्रकरण देखिए।

हमारे पारस्परिक सम्बन्ध हैं, क्योंकि जब तक शरीर तथा आत्मा का सम्बन्ध रहता है। तभी तक उस सम्बन्ध से हमारे दे-हे सम्बन्ध जुड़े रहते हैं। इन का जब आपसी सम्बन्ध टूट जाता है और उस सम्बन्ध के टूट जाने पर उस सम्बन्ध से जुड़े हुए सम्बन्धियों के सम्बन्ध भी तब स्वत: टूट जाते हैं। अत हमारे पारस्परिक विविध सम्बन्धों का न तो केवल शरीर से सम्बन्ध है, और न ही आत्मा से, अपितु इन दोनों के सम्बन्ध से ही हमारा सम्बन्ध है और इन दोनों के सम्बन्ध के टूट जाने पर सारे सम्बन्ध भी तब स्वत टूट जाते हैं।

सम्भवत इसी रहस्य को समझाने के लिए कभी यह रिवाज चला होगा, चाहे इस की मूल भावना आज विस्मृत हो गई है। अधिकतर लोग जब किसी मृतक देह को श्मशान (शरीर जिस में सोते हैं) भूमि मे ले जाते हैं, तो ज्येष्ठ पुत्र स्वय या घर के निकटवर्ती रिश्तेदार द्वारा लाए गए जल से भरे घड़े को लेकर मृतक के चारों ओर जल को एक या तीन बार छिड़क कर मृतक के सिर के पास जोर से घट को पटक देता है। सम्भवत इस का अभिप्राय यही है कि जब तक घट के हिस्से आपस में जुड़े हुए थे, तभी तक घट अपने सारे व्यवहार करता था। चाहे उस में जल डालो या तेल, घी आदि कुछ भी डालो, वह उस उस को सम्भालता था पर घट के टुकड़े-टुकड़े होते ही घट से कोई भी व्यवहार नहीं हो सकता।

ठीक ऐसे ही जब तक शरीर और आत्मा का सम्बन्ध रहता है, तभी तक सारे सम्बन्ध जुड़े रहते हैं और उस सम्बन्ध के टूटते ही सभी सांसारिक सम्बन्ध तब टूट जाते हैं। इसीलिए ही कुछ श्मशान भूमि से लौटते हुए एक स्थान पर बैठ कर भूमि से तिनके लेते हैं और तब खड़े होकर उन तिनकों को तोड़ कर अपने पीछे फेंक देते हैं। जिस का भाव यही है कि इस आत्मा और शरीर से हमारा जो सम्बन्ध जुड़ा हुआ था। वह अब टूट गया है।

—

स्त्री आर्य समाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार (साबुन बाजार) लुधियाना में पारिवारिक सत्संग

गत सात वर्षों से स्त्री आर्य समाज के अन्तर्गत मासिक पारिवारिक सत्संग प्रति मास की सक्रान्ती को होता है। इस बार का सत्संग 14 मार्च शुक्रवार को श्रीमती फूला जी गुप्ता के गृह रूपा मिस्त्री की गली मे हुआ। उनके परिवार ने पूरी श्रद्धा के साथ यज्ञ में भाग लिया। पति-पत्नी ने यजमान पद ग्रहण करके बड़ी यज्ञीय भावना सहित यज्ञ को पूर्ण किया। सभी उपस्थित बहिनो ने इस विशेष यज्ञ में बड़ी श्रद्धा एव उत्साह से पूर्णाहुति डाली। समाज की प्रधान श्रीमती कमला जी आर्या ने प्रवचन दिया। विषय यह था कि यज्ञ की भावना को जीवन में धारण करके इदनमम का पाठ सदैव स्मरण रखें। श्रीमती राजेश्वरी जी वर्मा, श्रीमती पुष्पा जी पुरी तथा श्रीमती कमला आर्या के प्रेरणाप्रद भजनों का भी सभी ने आनन्द उठाया। श्रीमती फूला जी गुप्ता आर्य गर्ल्ज हायर सैकण्डरी स्कूल मे पढ़ाती हैं बच्चियों को व्यवहारिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा देने में भी सदैव अग्रसर रहती हैं। सब आई हुई बहिनों का मिठाई एवं चाय से सत्कार किया गया। पूर्ववत् परिवार को समाज की ओर से आर्य समाज के नियमों का कलैण्डर तथा आर्य साहित्य भेंट किया गया। सत्संग सब के सहयोग से पूर्ण सफलता से सम्पन्न हुआ। यह सत्संग परिवारों से सम्पर्क एव प्रचार का एक सुन्दर साधन है।

—मन्त्री
निर्मला बेरी

आर्यसमाज शास्त्री नगर में ऋषिबोधोत्सव

आर्य समाज मन्दिर शास्त्री नगर बस्ती गुजा मे रविवार 9 3-86 को शिवरात्रि का उत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया जिस की अध्यक्षता वैद्य ओमप्रकाश दत्त जी एम एस ए. ने की। 9 मार्च 1986 को प्रात 8 बजे हवन यज्ञ के पश्चात श्रीमती हर्ष अरोड़ा प्रिंसिपल आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती नौ, श्री रामकुमार नन्दा प्रधान आर्य समाज तथा और भी बहुत से विद्वानों ने महर्षि के जीवन पर उपदेश दिये। श्री महिन्द्र पाल जी ने भजनों द्वारा सब को मुग्ध किया। अन्त में वैद्य ओम् प्रकाश दत्त ने प्रभावशाली उपदेश दिया। सारी कार्यवाई के पश्चात् प्रीति भोजन हुआ। सात-आठ सौ बहनों तथा भाईयों ने इकट्ठे बैठ कर भोजन किया। कार्यक्रम बहुत सफल रहा।

—रामकुमार नन्दा

हिन्दुत्व की सर्वमान्य परिभाषा असम्भव है

लेखक—श्री भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ

आर्य मर्यादा के 19 जनवरी के अंक में श्री पृथ्वीराज जिज्ञासु का एक लेख छपा है जिस मे उन्होंने लिखा है कि हिन्दुत्व की सर्वमान्य परिभाषा करना आवश्यक है। मेरा निवेदन है कि हिन्दुत्व की कोई सर्वमान्य परिभाषा हो ही नहीं सकती। वस्तुत हिन्दू शब्द ही विदेशी भाषा का विदेशियों का दिया हुआ है जिसके साथ हमारी पराधीनता परवशता दीनता, क्लीवता तथा पतन का इतिहास जुडा हुआ है। जो लोग दीवारो पर यह नारा लिखते हैं कि हम अपने को हिन्दू समझने मे गर्व करें उनसे भी मेरा यही कहना है कि हिन्दू का तो इतिहास ही पतन का इतिहास है उसके साथ गौरव के भावो को जोडा ही नही जा सकता। गौरव अनुभव तो आर्य कहलाने मे है क्योकि भारत का वही इतिहास, वे ही महापुरुष तथा वे ही घटनाए गौरवास्पद हैं जो आर्य नाम और आर्य परम्परा से जुडी हुई हैं।

यहा स्वामी दयानन्द की बात को पुन स्मरण रखना होगा कि बिना एक धर्म एक ही प्रकार की पूजा, उपासना और उपास्य देव, एक ही भाषा तथा एक ही सस्कृति को अपनाये इस देश का कल्याण त्रिकाल मे भी सम्भव नहीं है। हिन्दू धर्म के अन्तर्गत तो आस्तिक और नास्तिक मासाहारी और निरामिष भोजी, मजारों, नदियो और वृक्षों को परमात्मा के नाम पर पूजने वाले तथा निराकार एक ईश्वर को मानने वाले सभी आ जाते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द ने तो इस पौराणिक हिन्दू धर्म को चू—चू का मुरब्बा कहा था। जहा तक गाय की पूजा का सवाल है स्वामी दयानन्द की सम्मति में वह न तो देवता है और गाय तो एक उपयोगी पशु है और वह पूजनीय न होकर रक्षणीय है। स्वामी जी ने अपने ग्रन्थो में सर्वत्र गाय को मानव जाति (केवल हिन्दू या भारतीयो के लिये ही नहीं) के लिए अत्यन्त उपयोगी फलत रक्षणीय और अवध्य कहा है पूजा का पात्र नहीं। भारतीय सस्कृति में भी यदि गाय को महत्ता मिली है तो इसीलिए कि वह हमारे लिए दुग्धादि पदार्थ प्रदान करती है। उसका दर्जा उससे अधिक नही है। फिर हम यह क्यों भूल जाते हैं कि गाय के वध को रोकने में तो हमे देश में रहने वाले ईसाईयों और मुसलमानो का भी सहयोग लेना होगा और वह तभी सम्भव होगा जब हम गाय की आर्थिक उपयोगिता पर जोर देंगे। सम्प्रदाय निरपेक्ष देश में मात्र हिन्दू के नाम पर राजनैतिक मच का निर्माण होना कठिन है।

टंकारा में ऋषिबोधोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

महात्मा दयानन्द जी के ब्राह्मत्व मे 2 3 86 को यजुर्वेद पारायण यज्ञ से ऋषि बोधोत्सव का शुभारम्भ हुआ। यज्ञ की पूर्णाहुति 8 3 86 को प्रात 8 बजे हुई। इस यज्ञ मे अनेक ऋषि भक्तो ने आहुतिया डाली। यज्ञ के उपरान्त प्रति दिन महात्मा दयानन्द जी के वेद मन्त्रो पर व्याख्यान होते रहे।

7 3 86 को मध्याह्न म उपदेशक महाविद्यालय टकारा गुरुकुल सोनगढ आर्य युवक दल धागधा तथा पोरबन्दर के युवको ने व्यायाम के प्रदशन किए। उसी दिन रात्रि को ब्रह्मचारी आर्य नरेश की अध्यक्षता मे युवक सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

8 3 86 को प्रात 5 बजे प्रभात-फेरी मे गाये जाने वाले मधुर भजनो से सारा टकारा ग्राम गुञ्जरित हुआ। 10 बजे श्री गजानन्द के कर कमलो द्वारा ध्वजारोहण हुआ। श्री गजानन्द जी ने इस अवसर पर ट्रस्ट को 5 हजार रुपए की राशि दान में दी। 11 को शोभा यात्रा आरम्भ हुई। स्थान स्थान पर टकारा के निवासियो ने इसका स्वागत किया।

ऋषि दयानन्द के जन्म गृह की गली की दशा दयनीय थी, जिसे टकारा ट्रस्ट ने पक्का बनवाया। 9 3 86 को गुजरात के स्वास्थ्य मन्त्री श्री वल्लभ भाई पटेल ने इसका उदघाटन कर इस गली का नाम— महर्षि दयानन्द वीथि रखा। मन्त्री महोदय ने यहा पर महर्षि आयुर्वेदिक चिकित्सालय खलवाने का भी आश्वासन दिया।

इस अवसर पर टकारा सहायक समिति पानीपत के प्रधान ला जगन्नाथ जी रग वाले जिन्होने जन्म स्थली को विश्व दर्शनीय बनाने हेतु 75 हजार रुपया व्यय करके स्वय अढाई मास टकारा मे रह कर यह कार्य सम्पन्न किया।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री

तीन के बिना जीवन व्यर्थ है

१. बिना दया के जीवन व्यर्थ है

२. बिना परोपकार के जीवन व्यर्थ है

३. बिना उदारता के जीवन व्यर्थ है

हिन्दू शुद्धि संरक्षणी समिति हरियाणा का कार्य

गत दिनो हिन्दू शुद्धि सरक्षणी समिति समालखा करनाल) ने ग्राम पारा गाव राजिम (म प्र) मे हरिजन बस्ती मे समिति के महामन्त्री श्री स्वामी सेवानन्द जी की अध्यक्षता व समिति के कोषाध्यक्ष श्री भरतसिह आर्य की उपस्थिति मे हवन यज्ञ तथा धर्म प्रचार का कार्यक्रम किया गया। इस बस्ती के समीप ईसाई लोगो ने अपना गिरजाघर बनाने के लिए कुछ जमीन खरीदी हुई है। ईसाई हरिजन व गरीब लोगो में अपना प्रचार का काम करते रहते हैं। यहा के मुख्य लोगो ने हमें अपना प्रचार करने हेतु बुलाया। बहुत से लोगों ने ईसाई धर्म त्याग कर स्वेच्छा पूर्वक वैदिक धर्म अपनाया। यज्ञ हवन में वैदिक धर्म को न त्यागने व ईसाई लोगों से (हिन्दू धर्म के प्रति) सतर्क रहने की आहुतियां डलवाई गई। धर्म उपदेश के उपरान्त श्री स्वामी जी ने इन गरीब लोगों में कपडा (श्री [illegible]) महात्मा प्रेम प्रकाश जी धूरी (पजाब) वाले ने प्रदान किया था) वितरण किया इस समारोह के आयोजन मे जिन मुख्य लोगो ने भाग लिया तथा सहयोग दिया उनके नाम यह हैं—

श्री राम सजीवन शुक्ला सरपच पारा गाव श्री रामप्रसाद जी दूबे। श्री शकर प्रसाद जी दूबे, श्री रमेश चन्द्र जी शर्मा, श्री राजेन्द्र प्रसाद जी शर्मा।

इस अवसर पर ग्राम पारागाव राजिम (मध्य प्रदेश) के 28 व्यक्तियो ग्राम—कोलियारी के 18 व्यक्तियो ग्राम—कोटा के 28 व्यक्तियो ने वैदिक धर्म हिन्दू धर्म स्वीकार किया। मध्य प्रदेश मे इस समिति की ओर से शुद्धि का कार्य जारी है शुद्धि के साथ-साथ इन गरीब लोगो में वस्त्र आदि भी बांटे जाते हैं।

—ओमप्रकाश प्रधान

अन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना

यह आवश्यक है कि हिन्दू अपनी सन्तानो की शादियां गुण कर्म, स्वभाव के आधार पर करे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे एक अन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना की गई? इस बात का ध्यान रखा जाता है कि विवाह मे दहेज बाधक न हो। अब तक लगभग 80 अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हो चुके है और सब दम्पत्ति सुखी हैं। आफिस का समय प्रात 11 से 5 बजे तक है। साय 5 बजे से 7 बजे तक व्यक्तिगत बातचीत के लिए सुरक्षित है। विवाह इच्छुक युवक युवती अथवा उनके सरक्षक निम्न पते पर सम्पर्क करें—सेवा निशुल्क है।

—डा मदनपाल वर्मा
अधिष्ठाता अन्तर्जातीय विवाह विभाग
आर्य समाज (अनारकली)
मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रचार यात्रा

ग्राम प्रचार शुद्धि जन सम्पर्क एव उद्देश्यो को लेकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती के नेतृत्व में प्रचार यात्रा कार्यक्रम 28 फरवरी से 3 मार्च 1986 तक का आयोजित किया गया। उनके साथ प सत्यदेव जी स्नातक, प चूनीलाल आर्य तथा प ज्योति प्रसाद जी थे। वे गाजियाबाद, मुरादनगर होते हुए मोदीनगर पहुचे। वहा लाला ओम प्रकाश जी गुप्ता और लाला रामानन्द जी गुप्ता ने उनका स्वागत किया।

वहा से चलकर खतौली होते हुए अन्ति ग्राम पहुचे जहा महाशय मामेराम जी ने वेद प्रचार हेतु वार्षिकोत्सव पर सुन्दर व्यवस्था की हुई थी। श्रोताओं के अनुरोध पर हमारे सगीत कलाकारो का सगीत रात्रि एक बजे तक चलता रहा। एक मार्च को श्री हरपाल शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ के पश्चात् ईश्वर भक्ति गीत हुए। दोपहर के वेद प्रचार कार्यक्रम में प बहादुरसिंह, प. बालकराम, प देवपाल शास्त्री के मनोहारी कार्यक्रम हुए। पुन रात्रि में कार्यक्रम हुआ। यहा के नगरवासियों का उत्साह एव श्रद्धा देखते ही बनता था।

2 मार्च को हरिजन बस्ती में देवपाल शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। पथ भ्रष्ट ईसाईयों को पुन वैदिक धर्म में संस्कारित किया गया। प देवपाल शास्त्री, स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने शुद्धि समिति के श्री रामलाल मलिक, श्री रामभज बना, द्वारकानाथ सहगल, प दीपचन्द शर्मा, श्रीमती शान्ति मलिक ने वैदिक धर्म मे संस्कारित बन्धुओं को [illegible] दीक्षित [illegible] उपस्थित सज्जनों का स्वागत किया।

[illegible] से चलकर 3 मार्च [illegible] [illegible] पहुचे, [illegible] उनकी [illegible] का स्वागत किया। [illegible] के ब्रह्मत्व में [illegible] [illegible] को [illegible] दिया। वहा से [illegible] रोड, [illegible], हापुड़ होते हुए पहुचे। इस प्रचार यात्रा में सभ [illegible] महानुभावों ने भरपूर [illegible] स्वागत सत्कार और पुन आने [illegible] निमन्त्रण प्राप्त किया। [illegible] इस प्रकार के वेद प्रचार कार्यक्रम [illegible] रहेंगे।

—राजेन्द्र [illegible]
[illegible], प्रचार [illegible]



श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस मेहरू गार्डन रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।